ग्रन्थ-पुष्प

श्री

के कर-कमलों में सस्नेह भेंट

भेंट-कर्ता ....

चित्र नं० १

अर्वाचीन जम्बूद्वीप

'सहस्रशीर्षा पुरुष सहस्राक्ष सहस्रपात्। सभूमिं सर्वतस्पृत्वात्यतिष्ठद्दशांगुलम् ॥"

शीर्ष = ऊर्ध्व-भाग। अक्ष = मध्य-भाग। पात् = अधो-भाग। [illegible] मील।

चित्र नं० २

प्राचीन जम्बूद्वीप

अन्तरंग १२०००]   [१००००० योजन]   [बाह्यांग ८८०००
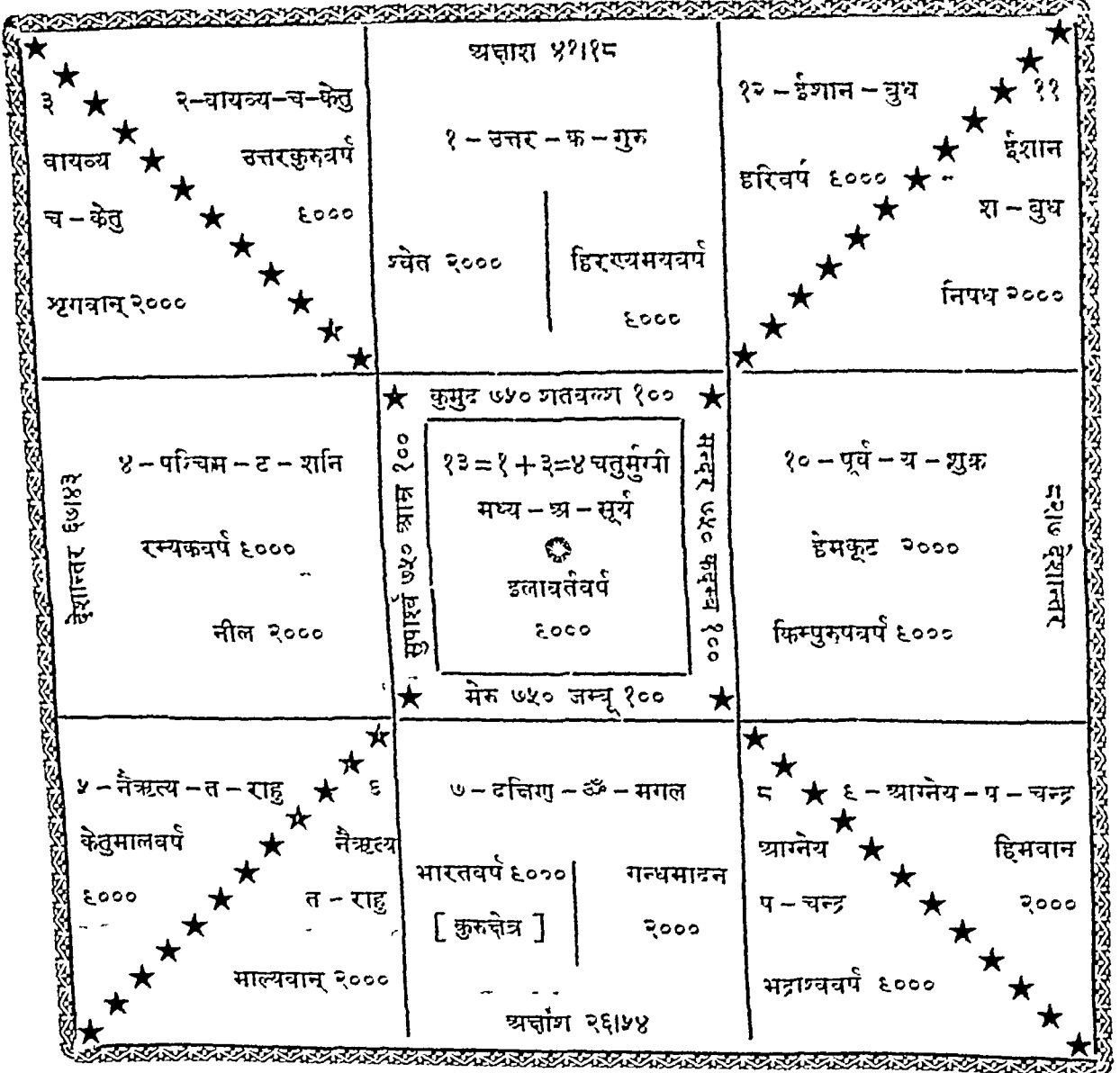
⊙ केन्द्र=श्रीनगर, कश्मीर। केन्द्र से ५०० मील चारों ओर। १००० वर्ग मील।

[परिचय पृष्ठ 'ठ']

समर्पण

जिन-जिन देशों के, प्राचीन-अर्वाचीन देवो, ऋषियों, महात्माओं

तथा विद्वानों द्वारा, 'प्रकाशित-ज्ञान'-जो, मुझे प्राप्त

हुआ है, जिसका, एकत्र संकलन कर, इस ग्रन्थ

का निर्माण हो सका है, उन्हे, अनेकशः

अभिवादन कर 'यह' उन्हीं के देश

और सन्तानों के करारविन्दों में

सादर समर्पित है।

"तुम्हारी वस्तु, गोविन्द! तुम्हारे पद चढ़ाते हैं।"

संकलन-कर्ता

प्रकाशकीय

पण्डितजी कहते हैं कि, प्रकाशक के नाते मैं भी जातक-दीपक के सम्बन्ध में दो शब्द लिखूँ। मेरा कहना था कि, जिस विषय में मैं निरक्षर-भट्टाचार्य हूँ, उस विषय की पुस्तक के सम्बन्ध में मैं कुछ क्यों लिखूँ।

पर पण्डित जी, जैसे उच्च-कोटि के विद्वान् अपने विषय-ज्ञान में पारंगत, परिश्रमी तथा लगन-शील हैं और इसीलिए अस्वस्थ हैं, वैसे ही वे, अपनी बात पर अड़ जाने वाले व्यक्तियों में से भी एक हैं। अतः भरसक चेष्टा करने पर भी, मैं टाल न सका और मेरे लिए कुछ न कुछ लिखना, अनिवार्य हो गया।

पण्डित जी ने जिस समय सर्व प्रथम (चार वर्ष पूर्व) मुझसे इस पुस्तक के प्रकाशनार्थ चर्चा की थी; उस समय मैंने नहीं सोचा था कि, यह कोई साधारण-सी पुस्तक न होकर ज्योतिष-ज्ञान का एक अभूतपूर्व ग्रन्थ होगा। आज तो इस ग्रन्थ को देखकर मैं स्वयं अत्यधिक प्रभावित हूँ और विशेष चकित हूँ इस बात से—कि, पण्डितजी स्वास्थ्य के धनी न होते हुए भी इतने बड़े ग्रन्थ की रचना का भार कैसे वहन कर सके, फिर कोई साधारण विषय नहीं ज्योतिष-सरीखे क्लिष्टतम विषय की ग्रन्थ-रचना! रही बात इस ग्रन्थ की उपयोगिता के सम्बन्ध में इसका निर्णय आप स्वयं करें क्योंकि अब तो ग्रन्थ आपके हाथों में है।

जैसा कि मैं ऊपर कह चुका हूँ—चार वर्ष पूर्व मैंने इसे एक साधारण-सी पुस्तक समझ कर छापना प्रारम्भ कर दिया था किन्तु 'जस-जस सुरसा बदन बढ़ावा' के अनुसार इस ग्रन्थ ने अपना कलेवर बढ़ाना प्रारम्भ किया और फिर समय-समय पर प्रेस में काम की अधिकता के कारण बहुधा प्रेस ने भी गति धीमी की तथा इसी प्रकार की अनेक अन्य अड़चनें भी उपस्थित होती रहीं; इस प्रकार अबेर-सबेर होती रही और अतिविलम्ब से आज यह ग्रन्थ मैं आपके सम्मुख उपस्थित कर सका।

मैं अपने उन प्रिय पाठकों के समक्ष विलम्ब के लिए विशेष क्षमा प्रार्थी हूँ जिन्होंने डेढ़-दो वर्ष पूर्व ही हमारे कैलेण्डर और पञ्चाङ्ग में इसका विज्ञापन देखकर ग्राहक-श्रेणी में अपना नाम अङ्कित करवा कर आज तक उत्सुकता-पूर्वक धैर्य धारण किया।

इस ग्रन्थ के मूल्य के सम्बन्ध में भी दो शब्द कहना आवश्यक है। जैसी कि मेरी धारणा थी, मैं समझता था कि यह पुस्तक पाँच सौ पृष्ठ के अन्तर्गत आ जायगी। किन्तु आज जबकि ग्रन्थ छपकर तैयार हुआ तो इसकी पृष्ठ संख्या साढ़े पाँच सौ के ऊपर पहुँच गयी। ग्रन्थ के अनुरूप इसे सजिल्द करना भी अनिवार्य हो गया। साथ ही इन दिनों न्यूनतम वेतन सम्बन्धी नियम भी सरकार-द्वारा प्रेसों पर लागू हो जाने के कारण इसकी छपाई का व्यय बढ़ गया। ऐसी दशा में इसके विज्ञापन के साथ जो सम्भावित मूल्य प्रकाशित होता रहा उसे रखने में हम समर्थ न हो सके और तब हमें बड़े ही संकोच के साथ इसका न्यूनतम मूल्य १२॥) साढ़े बारह रु० रखना पड़ा।

ज्योतिष सम्बन्धी अब तक जो भी पुस्तकें प्रकाश में आयी हैं, यदि वे थोड़ी भी उपयोगी हैं तो बहुधा उनका मूल्य इतना अधिक है कि, अधिकांश लोग उनका लाभ ही नहीं उठा पाते। ऐसी दशा में इस प्रकार की पुस्तकों को मैं निरुपयोगी समझता हूँ। इस विचार-धारा के अनुसार इस ग्रन्थ का मूल्य, कम से कम रखा गया है; जिससे कि, अधिक से अधिक ज्योतिष प्रेमी सज्जन, इससे द्वारा लाभ उठा सकें।

—रामकिशोर

संशोधन

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
अ	अन्तिम	सभी कार्य, सौर-मान से	सभी कार्य, सायन सौर-मास से
आ	४	भारत का	भारत की
उ	६	करना पड़ीं	करनी पड़ीं
उ	१६	डाक्टर-रजिस्टर	डाक्टर्स-रजिस्टर
ऊ	८	१ वर्प ३६	१ वर्प, ३६
औ	सत्र की १६	१००० (२७ वर्ष ६ मास सौर)	१०००० (२६ वर्ष १० मास)
ख	अयन की १४	अयनाश के द्वारा	अयनाश द्वारा
ख	सप्तर्षि की ३	लघु कल्प वष	लघु कल्प वर्ष
ग	३१	१६४६	१६५०
घ	१७	६ अक के	६ अकों के
ठ	८	४०	३६
ड	११	हयग्रीववतार	हयग्रीवावतार
त	११	दिगसहस्र	दिग्सहस्र
त	२८	कयोंकि	क्योंकि
द	५	ततगयोदशे	ततस्त्रयोदशे
फ	१८	रुधित्रर्धक	रुधिर-वर्धक
ब	१८	लदकमल	दलकमल
ब	२३		यादव=एक आकाशीय पदार्थोद्भूत पदार्थ (ऋग्वेद)
र	१७	सेकेण्ड	सेकण्ड
ल	१०	में)	मे,
व	३	आजायँगी	आ जाती हैं।
व	३	जायगा	जाता है।
स	७	ग्रन्थ के द्वारा	ग्रन्थ द्वारा
ह	३१	का और २	का तथा २
B	१४	वाम-दक्षिण	दक्षिण-वाम
C	२०	१८+६	१६+१५
७			[अन्तिम पंक्ति के ऊपर 'संख्या-क्रम-शोधन' नामक शीर्षक चाहिए]
८	३	दशपद्य	दशपद्म
८	६	सख्यनाम	सख्या-क्रम
१२	१४	स्पष्टीकरण	शिक्षा
१५	चक्र २	ल, व आदि ह्रस्व अक्षर	ला, वा आदि दीर्घ अक्षर
२५	३	पायेगी	पाएगी
२५	विवेचना		[२३।६।३६, शके में से २१८।८ घटाकर केतकी-मत से बनाइए तो, विश्व-पचाग का अयनाश बन जाएगा]

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
२५	विवेचना	२३।३।४८ (हपीकेश)	२३।११।२० (केतकी अपनांश)
२५	विवेचना	ॐ	इस ग्रन्थ में यही मान्य है [टिप्पणी]
२६	१	फरवरी क	फरवरी के
		[पृष्ठ ३३ से ६२ तक, प्रदेश-निर्माण के परिवर्तन पर ध्यान रखकर प्रान्त-शोधन करते जाइए]	
३५	१०	कटंगी (म० प्र)	[कटंगी (म० प्र०) २१-४७।७८ ५० और कटंगी (जबलपुर) २३-२५।७६-५]
३७	१४	कालाबाघ (पंजाब)	कालाबाघ (सीमाप्रान्त)
३८	२०	खापा के नीचे (बाद)	खापरखेड़ा (नागपुर) २१ १५।७६-१०
४	१६	गोधरा	गोधरा (पंचमहल)
४०	१४	चापम के नीचे (बाद)	चैंदुवारा (बाँदा) २५-२६।८०।३३
४२	५	दमाह का देशान्तर ७५।२६	दमोह का देशान्तर ७५।२६
४६	२७	नम्बर	नम्बर (नन्देड़)
४७	२७	पंचनद के नीचे (बाद)	पंचमहल (गोधरा) २२-४५।७३-४०
४८	६	सलीमपुर (उ प्र०) २५।५०	सलामपुर (उ प्र०) २७।८७
६२	नं० ६	कर्तौची ६७।३०	[छपन के बाद] ७७। कर लिया गया है।
६६	८	वर्सहत्व द् गृहात्	वर्सत्स्मृवाद् महात्
७५	ता ८	६।२८	६।३८
७७	२५	मधुन	मिथुन
८४	शीर्षक	सारस्यी	सारथी
१०३	६ ठा कोष्ठ	सह	सिंह
११६	११६ कवाह	६७	६
११८	शोपक	इष्टकाल तथा लग्न शोधन	शोधन के ११ भेद
११८	शीर्षक के नीचे	इनके शोधन की	इष्टकाल तथा लग्न के शोधन की
११६	१ के नीचे	x	चक्र १२
१३६	२४	इन्दुकुमार	इन्द्रकुमार या इन्दुकुमार
१३६	१६	मास्ट	शिखा
१४७	भौमसाधन	५।२२। ४	५।२२।१४
१४६	१२ १४	पारचास्य	पाश्चात्य
१४६	२१	केम्ब्रिज	केम्ब्रिज
१४६	२४	हुये	हुए
१४६	सन् से	तारीख में ५७।७।१६	तारीख में २६।७।१६
१४६	सन से	मार्च तक ५६।७।१६	मार्च तक ५७।७।१६
१४६	सन् से	यथा १—२ क्रम नं का	यथा २-१ क्रम नं से समझिए।
१६४	सन् १६३१	१।१८।४८	३।१८।४८
१६७	चक्र २८	विरवा चक्र	विरवा-फल-चक्र
१८४	शीर्षक	चक्र सहित सप्तवर्ग	सप्तवर्ग चक्र
२२६	६	राशिनाम के बाद	ता० १६।७।१६११ ई
२१७	१८	२१ मार्च से २७ मार्च तक	२१ मार्च से २८ मार्च तक

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
२२७	१८	२८ मार्च से १९ अप्रैल तक	२९ मार्च से २० अप्रैल तक
२२७	क्रम १ में (शुद्ध)	नं० १ में २० फरवरी से २१ मार्च तक। नं० ३ में २१ अप्रैल से २१ मई तक। नं० ५ मे २२ जून से २२ जुलाई तक। नं० ७ में २३ अगस्त से २२ सित० तक। नं० ९ मे २३ अक्टू० से २१ नव० तक। नं० ११ में २२ दिस० मे २० जन० तक।	नं० २ मे २२ मार्च से २० अप्रैल तक। नं० ४ मे २२ मई से २१ जून तक। नं० ६ मे २३ जुलाई मे २२ अगस्त तक। नं० ८ में २३ सित० से २२ अक्टू० तक। नं० १० में २२ नव० से २१ दिस० तक। नं० १२ मे २१ जन० से १९ फर० तक।
		[पृष्ठ २२७ से २६७ तक, पूर्वोक्त तारीखों-द्वारा मासों के ज्ञान का ध्यान रखिए।]	
२२७	क्रम २	[?] ×	चान्द्रमास के ऊपर नं० [२] समझिए
२२७	क्रम ३	नं० ७ मे	१६ सितम्बर मे १९ अक्टूबर तक
२२७	क्रम ३	न० ८ में	१७ अक्टूबर से १५ नवम्बर तक
२२८	१	× क-दीपक	[जातक-दीपक
२४८	३०	आसानी कर	आसानी से कर
२५१	२	१५।९	१५।१९
२६२	९	विमन्न	विभिन्न
२६३	२८	४ ·	४८
२७६	न० ४	कठोर होता	कठोर होता है
२९४	१३	नोट	भाव-दिशा
३०८	२३	नोट	ग्रहों के ज्योतिषी
३५२	१६	पाश्चात्य	पाश्चात्त्य
३६८	नं० १	लग्नस्थ	यदि नेपच्यून, लग्नेश हो तो, (लग्नस्थ के आगे की तीन पक्ति, पृष्ठ ३६७ के अन्त में रखिए और पृष्ठ ३६८ का 'लग्नेश नेपच्यून फल' नामक शीर्षक काट दीजिए, अर्थात अनावश्यक समझिए)।
४१९		सम्पूर्ण देश-चक्र के नीचे (बाद) × ×	'नाम और स्थान का अंक' शीर्षक चाहिए। तदनंतर 'आगे, आपके नाम के अंक से'—आदि लेख पढ़िए।
४७५	शीर्षक	लग्न का २२ वाँ	अष्टमस्थ
४८१	धनु	उच्छवग	उच्छवग
ग्रन्थमें	यत्र-तत्र	[सकलन करने की धुन मे किसी एक विषय के कई-कई शीर्षक रखकर विभिन्न प्रकार के आवश्यक लेख हैं। जो कि दूसरे सस्करण में एकत्र कर दिये जायँगे (जावेंगे)। कहीं अबाध (उदण्ड) लेखनी का उपयोग हो गया है [यही व्यावहारिक भूल होती है], उसमें प्रथम तो आप, अपने ज्ञान का सदुपयोग कर संशोधन कराइए [देश के कल्याण के लिए, साहित्य का निर्माण होना, अत्यावश्यक है], तदुपरान्त क्षमा-कोश का प्रयोग कीजिए, ऐसी विशेष प्रार्थना है।]	

विषय	पृष्ठ
उदाहरण स्थानीय-समय	२८
वेलान्तर	२८
इष्ट-काल-साधन	२९
एकत्रीकरण	२९
लग्न-साधन	२९
कलादि अनुपात	३०
लग्न-सारणी का परिचय	३१
उपकोष्टक का उपयोग	३१
उदाहरणार्थ चक्र ६	३२
अक्षांश-देशान्तर चक्र ७	३३
रेखान्तर देश	६३
रेखान्तर के समीपस्थ नगर	६३
स्टै० टाइम के समीपस्थ नगर	६३
निरक्ष देश	६४
मेरिडियन टाइम	६४
सूर्य-घडी	६४
पृथ्वी में स्टै० टाइम के देशान्तर	६५
स्टैण्डर्ड टाइम के स्थान	६५
पलभा-साधन	६७
अक्षांश-साधन	६८
पलभा-ज्ञान	६८
अक्षांश-ज्ञान	६८
अयनांश की गतियाँ	६९
सूर्यसिद्धान्त द्वारा	६९
मकरन्द द्वारा	६९
सिद्धान्तसम्राट् द्वारा	७०
ग्रहलाघव द्वारा	७०
अयनांश चक्र ८	७१
वेलान्तर चक्र ९ (क)	७२
वेलान्तर चक्र ९ (ख)	७३
वेलान्तर चक्र ९ (ग)	७४
ज्योतिष-प्रवर्तक	७५
सिद्धान्त	७५
संहिता	७५
वर्ष-मान	७५
चतुर्थ-वर्तिका	७६
चरखण्ड-साधन	७६
लग्न-मान साधन	७६
लग्न-साधन	७६
पलभा, चरखण्ड, चक्र १०	७८
दशम-सारणी	७९
भारत की लग्न-सारणियाँ	८०
उपकोष्टक चक्र ११	१०९
दिनमान-साधन चक्र	११६
दिनमान-साधन विधि	११७
पंचम-वर्तिका	११८
मध्यान्ह-छाया	११८
छाया द्वारा इष्ट-साधन	११८
शोधन के १६ भेद	११८
प्राणपद (प्रथम प्रकार)	११८
प्राणपद-साधन	११९
गुलिक (द्वितीय प्रकार)	१२०
गुलिकादि चक्र १३	१२०
गुलिक-साधन	१२१
चन्द्रद्वारा (तृतीय प्रकार)	१२१
तत्त्व द्वारा (चतुर्थ प्रकार)	१२१
तत्त्व-चक्र १४	१२२
ग्रह-तत्त्व	१२२
राशि-तत्त्व	१२२
तत्त्व-मिश्रण फल (आकृति)	१२३
नवांशद्वारा (पंचम प्रकार)	१२४
वर्ण	१२४
मान्दि-साधन (षष्ठ प्रकार)	१२५
दण्डेश-साधन (सप्तम प्रकार)	१२६
यामार्धेश	१२६
यामार्ध-चक्र १५	१२६
दण्ड-चक्र १६	१२७
दण्डेश-साधन (अष्टम प्रकार)	१२७
दण्डेश-साधन (नवम प्रकार)	१२७
नक्षत्र द्वारा (दशम प्रकार)	१२८
खण्डर्क्ष-चक्र १७	१२८
लग्न-शोधन (११ वाँ प्रकार)	१२९
सिद्धान्त-नियम	१२९
लग्न-शोधन (१२ वाँ प्रकार)	१२९
लग्न-शोधन (१३ वाँ प्रकार)	१३०
चतुर्दश प्रकार	१३०
जन्म-स्थान (१५ वाँ प्रकार)	१३१
प्रसूतिका-विचार(१६वाँ प्रकार)	१३१
प्रसूतिका-चक्र १८	१३२
पंचाग-संस्कार	१३३
फल घटी	१३३
भयात-भभोग-साधन	१३४
नक्षत्र-चरण-नाम	१३८
उदाहरण-गणित	१३९
कुण्डली लिखने का ढग	१३९
षष्ठ-वर्तिका	१४०
चालन-साधन	१४०
ग्रह-साधन	१४१
ग्रह-गणित-चक्र १९	१४२
चक्र १९ का परिचय	१४४
चन्द्र-स्पष्ट चक्र २०	१४५
चन्द्र-गति चक्र २१	१४६
राहु-गति चक्र २२	१४८
चन्द्र-गति साधन	१४८
चन्द्र-साधन	१४८
ग्रह-स्पष्ट चक्र २३	१५०
दशमभाव-साधन	१५०
द्वादशभाव-साधन	१५१
जन्म-चक्र २४	१५२
चलित-चक्र २५	१५२
विश्वा-साधन	१५२
राफेल्स द्वारा कार्य	१५५
राफेल्स् ग्रह	१५९
हर्शल, नेपच्यून, प्लूटो	१५९
हर्शल-साधन	१५९
सन् से संवत्-ज्ञान	१५९
सायन हर्शल चक्र २६ (क)	१६०
सायन नेप्च्यून चक्र २६ (ख)	१६२
सायन प्लूटो चक्र २६ (ग)	१६४
सायन चक्र २६	१६५
केतकी के सायन-ग्रह	१६५

विषय	पृष्ठ
पाश्चात्य साधन-चक्र २७	१६५
विभिन्न-देशों में लग्न-चक्र	१६५
विदशा-फल-चक्र ८	१६७
चालन-चक्र	१६८
चालन-चक्र का कार्य	१७२
दशवर्ग	१७४
होरा-द्रेष्काण-सप्तांश	१७४
नवांश-द्वादशांश-त्रिंशांश	१७५
सप्तवर्ग का परिचय	१७५
सप्तवर्ग-चक्र ३०	१७६
त्रिवर्ग-विचार	१७९
दशमांश-चक्र ३१	१७९
षोडशांश-चक्र ३२	१७९
षष्ठ्यंश-चक्र ३३	१८
षष्ठ्यंश	१८२
पारिजातादि-संज्ञा	१८२
मैत्रि-चक्र ३५, ३६, ३७	१८३
सप्तवर्ग-बल-चक्र ३८	१८४
दशवर्ग-चक्र ३९	१८५
उदाहरण दृष्टि-चक्र ४०-४१	१८६
पद-ज्ञान	१८६
कारक-सिद्धान्त	१८८
चलित कारक साधन	१८९
शरीर में ग्रह	१९०
अंश कुण्डली	१९५
पद-लग्न	१९५
उपपद-लग्न	१९६
होरा-लग्न	१९६
अष्टकवर्ग	१९७
रेखा-फल	२
समुदायाष्टकवर्ग चक्र ५७	२००
लग्न-रेखा चक्र ५८	२०
भाव-रेखा चक्र ५९	२ ०
दिशा-रेखा	२०१
अवस्था-रेखा	२०१
अष्टकवर्ग-शोधन	२०१
त्रिकोण-शोधन	२ १
एकाधिपत्य-शोधन	२ ०
सप्तम-वर्तिका	**२०५**
महादशायें	२०५
विंशोत्तरी महादशा	२०५
दशा-ज्ञान-चक्र ७३	२०५
अन्तर्दशायें	२०७
प्रत्यन्तर्दशायें	२ ७
अन्तर-प्रत्यन्तर चक्र ७५	२०८
सूक्ष्मदशायें	२१७
प्राणदशायें	२१७
चन्द्र द्वारा दशा साधन	२१९
अष्टोत्तरी महादशा	२२
अन्तर्दशा चक्र ८३	२२१
योगिनी दशा	२२२
योगिनी के नाम आदि	२२२
अन्तर्दशा चक्र ८८	२२३
फलित-खण्ड	
लेखक-कुण्डली	२२६
अष्टम-वर्तिका	**२२७**
मास-फल	२२७
मास-ज्ञान	२२७
२ फर. से २१ मार्च तक	२२८
चैत्र मास	२२८
२२ मार्च से २ अप्रैल तक	२३०
वैशाख मास	२३१
२१ अप्रैल से २१ मई तक	२३३
ज्येष्ठ मास	२३४
२२ मई से २१ जून तक	२३६
आषाढ़ मास	२३७
२२ जून से २२ जुलाई तक	२४०
श्रावण मास	२४
२३ जुला. से २२ अग. तक	२४२
भाद्रपद मास	२४४
२३ अग. से २२ सित. तक	२४७
आश्विन मास	२४८
२३ सित. से २२ अक्टू. तक	२५१
कार्तिक मास	२५२
२३ अक्टू. से २१ नव. तक	२५५
अगहन मास	२५५
२२ नव. से २१ दिस. तक	२५७
पौष मास	२५८
२२ दिस. से २० जन. तक	२६१
माघ मास	२६१
२१ जन. से १९ फर. तक	२६४
फाल्गुन मास	२६४
जन्म तारीख द्वारा फल	२६७
नवम-वर्तिका	**२६९**
जन्म-नक्षत्र-फल	२६९
जन्म-लग्न-फल	२७१
लग्न में विशेषता	२७५
भावपद	२७७
भावस्थ भावपद-फल	२७८
भावस्थ गुलिक-फल	२७८
ग्रह-युक्त गुलिक-फल	२७९
ग्रह	२७९
ग्रहों के शुभादि	२८०
भावों के शुभादि	२८
ग्रह-भाव-संयोग	२८०
अधिकार-प्राप्ति	२८०
भावेश-विधान	२८०
त्रिकोण-विचार	२८१
भाव-फल-विधान	२८२
ग्रह-युक्त भाव-फल-विधान	२८३
भावस्थ ग्रह-फल	२८५
सूर्य-फल	२८५
चन्द्र-फल	२८८
निष्फल-ग्रह	२८९
मंगल-फल	२९१
भाव-दिशा	२९४
बुध-फल	२९५
गुरु-फल	२९८
शुक्र-फल	३ ०
शनि-फल	३ ३
राहु-फल	३०५
केतु-फल	३ ७

विषय	पृष्ठ
ग्रहों के ज्योतिषी	३०८
राशिस्थ ग्रह-फल	३०६
सूर्य राशि फल	३०६
चन्द्र राशि फल	३१३
भौम राशि फल	३१७
बुध राशि फल	३१८
गुरु राशि फल	३१६
शुक्र राशि फल	३२०
शनि राशि फल	३२१
राहु राशि फल	३२२
राहु में विशेषता	३२२
केतु राशि फल	३२२
भावेश भावस्थ फल	३२३
लग्नेश फल	३२३
धनेश फल	३२४
तृतीयेश फल	३२५
सुखेश फल	३२६
पुत्रेश फल	३२७
षष्ठेश फल	३२८
सप्तमेश फल	३२६
रन्ध्रेश फल	३३०
नवमेश फल	३३१
दशमेश फल	३३२
लाभेश फल	३३३
व्ययेश फल	३३४
भाव पर ग्रह-दृष्टि-फल	३३५
तनु ,, ,,	३३५
द्वितीय ,, ,,	३३५
तृतीय ,, ,,	३३६
चतुर्थ ,, ,,	३३६
पंचम ,, ,,	३३७
षष्ठ ,, ,,	३३७
सप्तम ,, ,,	३३८
अष्टम ,, ,,	३३८
नवम ,, ,,	३३६
दशम ,, ,,	३३६
लाभ ,, ,,	३४०
व्यय ,, ,,	३४०
ग्रहों पर ग्रह-दृष्टि-फल	३४१
सूर्य ,, ,,	३४१
चन्द्र ,, ,,	३४२
मंगल ,, ,,	३४४
बुध ,, ,,	३४६
गुरु ,, ,,	३४७
शुक्र ,, ,,	३४६
शनि ,, ,,	३५०
ग्रह-सम्बन्ध	३५१
स्थान-सम्बन्ध	३५०
दृष्टि-विवेचन	३५२
पाश्चात्य मत से दृष्टि	३५२
दीप्तांश	३५२
प्रधान दृष्टि के दीप्तांश	३५२
गौण दृष्टि के दीप्तांश	३५३
दृष्टि-सम्बन्ध	३५३
दृष्टि के भेद (पाश्चात्य)	३५३
ताजिक मत से दृष्टि	३५३
दृष्टि-साधन	३५३
दशम-वर्तिका	**३५४**
ग्रह-त्रय	३५४
हर्शल	३५४
भावस्थ हर्शल फल	३५६
राशिस्थ हर्शल फल	३६२
हर्शल की युति आदि	३६३
हर्शल का गोचर-भ्रमण	३६५
नेपच्यून	३६६
भावस्थ नेपच्यून फल	३६७
नेपच्यून के अनुभूत फल	३७१–३७३
राशिस्थ नेपच्यून फल	३७१
नेपच्यून की युति आदि	३७३
प्लूटो	३७६
प्रत्यक्ष अनुभव	३७८
भावस्थ प्लूटो का फल	३७८
प्लूटो का ग्रह-सम्बन्ध-फल	३८०
क्रिया में ग्रह	३८३
प्राणी का जन्म	३८४
आधानकाल ज्ञान	३८६
एकादश-वर्तिका	**३८६**
लाभदायक स्थान	३८६
लाभदायक दिशा-बोध	३८६
भू-परिधि-मान	३६०
योजन-मान	३६०
परिधि-मान-साधन	३६१
अक्षांश में समतल	३६२
देशान्तर में समतल	३६३
देशों की राशियाँ	३६३
ग्राम-चुनाव	३६४
काकिणी-चक्र	३६५
आपकी राशि ?	३६६
कूर्म-चक्र	३६६
मध्यदेश १	३६६
पूर्वदेश २	४०२
आग्नेयदेश ३	४०४
दक्षिण देश ४	४०५
नैऋत्य देश ५	४०६
पश्चिमदेश ६	४११
वायव्य देश ७	४१३
उत्तर देश ८	४१४
ईशान देश ९	४१७
अंक-विज्ञान	४१६
देश-चक्र	४१६
नाम और स्थान का अंक	४१६
अंकों के मित्रादि	४२१
जन्म का अंक	४२१
वर्ष का अंक	४२१
अंकों का गुण-योग	४२२
दिन का अंक	४२२
नक्षत्र-विज्ञान	४२३
नवांश-चक्र	४२४
ग्रह-गुण	४२५
बलिष्ठ भाव	४२५
फल-बोधक-नियम	४२५
योग-कारक	४२६
योगकारक-सिद्धान्त	४२६

विषय	पृष्ठ
ग्रह का जीव और शरीर	४२८
नक्षत्र-उदाहरण (क)	४३१
युग के राशि और ग्रह (ग)	४३१
ॐ चक्र	४३१
ग्रहों में दशाएँ	४३२
देह दशा क्रम	४३२
देह दशा कारक	४३३
नक्षत्र-चरण-क्रम	४३३
विंशोत्तरी में भारी-भ्रम	४३४
नक्षत्र दशा मान	४३६
द्वादश-वर्तिका	४३७
शरीर	४३७
शरीर-विभाग	४३७
शरीर में ग्रह कार्य	४३८
आरोग्यता	४३८
लग्न द्वारा रोग	४३८
लग्न-सम्बन्ध	४३९
दृष्टि द्वारा रोग	४४०
रोग स्थान	४४०
राशि-रोग	४४०
राशि-ग्रह-रोग	४४१
सिर रोग	४४३
अन्धांश चक्र	४४४
अन्ध योग	४४५
काण योग	४४६
नेत्र रोग	४४६
नेत्र के शुभ योग	४४७
कर्णरोग	४४७
दन्त रोग	४४७
नासिका रोग	४४८
वाणी रोग	४४८
वक्ता योग	४४८
कण्ठ रोग	४४८
वक्षस्थल रोग	४४८
उदर रोग	४४९
गुप्त रोग	४४९
नपुंसक योग	४५२

विषय	पृष्ठ
व्रण (घाव)	४४३
पित्तादि दोष	४४४
पिशाच दोष	४४४
ओष्ठ रोग	४४५
केश रोग	४४५
कुष्ट रोग	४४५
अंग-वैकल्य	४४६
भय-योग	४४७
कारागार-योग	४४८
चिन्ता-योग	४४९
जन्मर्क्ष द्वारा रोग	४६०
लग्न-चन्द्र द्वारा रोग	४६०
ग्रह द्वारा रोग	४६
द्रेष्काण द्वारा रोग	४६०
ग्रह-चिन्ह	४६१
अंग-द्रेष्काण	४६१
अंग-प्रमाण	४६३
विशेष रोग योग	४६४
(ग्रह-रोग का) सारांश	४६५
निर्णय-विधि	४६६
त्रिकेश-विचार	४६६
लग्नेश-षष्ठेश-युति	४६७
अपघात-योग	४६८
सवारी द्वारा	४६८
पशु द्वारा	४६८
विषघटी साधन	४६८
सर्प या विष द्वारा	४६८
विष अग्नि-शस्त्र द्वारा	४६९
वज्रपात-पतनादि द्वारा	४७०
भिन्न कारण से घाव	४७०
जल द्वारा	४७१
महानिद्रा का स्थान	४७१
राजकोप आदि द्वारा	४७२
अजीर्ण द्वारा	४७३
क्षय रोग द्वारा	४७३
विभिन्न योग द्वारा	४७३
बुद्धि रोग	४७४
रन्ध्रस्थ ग्रह द्वारा	४७४

विषय	पृष्ठ
रन्ध्रद्रष्टा ग्रह द्वारा	४७४
अष्टमस्थ द्रेष्काण	४७५
अष्टमस्थ द्वारा	४७६
लग्नेश-नवांश द्वारा	४७६
गुलिकांश द्वारा	४७६
पाश्चात्य मत	४७६
विविध योग	४७७
मेष	४७७
वृष-मिथुन	४७८
कर्क-सिंह-कन्या	४७९
तुला-वृश्चिक	४८०
धनु	४८१
मकर-कुम्भ-मीन	४८२
आप्रेशन (शल्य क्रिया)	४८३
चन्द्र-परिणाम	४८३
प्रश्न-लग्न द्वारा	४८३
सूर्य-परिणाम	४८४
स्वर-विज्ञान	४८५
स्वर-साक्षी	४८५
स्वरोदय-समय	४८५
स्वर-परिवर्तन	४८५
वाम स्वर के कार्य	४८६
दक्षिण स्वर के कार्य	४८६
सन्तान, भाग्य के स्वर	४८६
आपत्ति की सूचना	४८६
मृत्यु का ज्ञान	४८७
स्वर से औषधि	४८७
दीर्घायु के उपाय	४८८
स्वर से कार्य-प्रश्न	४८८
स्वर से गर्भ-प्रश्न	४८९
स्वर से प्रवासी प्रश्न	४८९
स्वर से युद्ध-प्रश्न	४८९
स्वर का तत्त्व-ज्ञान	४८९
जयतु जातक-दीपकः	४९०
आकांक्षा	क
लेखक-परिचय	ग
श्री मेहरू जी	घ

ॐ

—: आत्म-निवेदन :—

करारविन्देन पदारविन्द मुखारविन्दे विनिवेशयन्तम् ।
वटस्य पत्रस्य पुटे शयान वाल मुकुन्द हृदये स्मरामि ॥

वाणी! विराजो, पथ भी वताओ, जो सत्य हो, जातक-दीपकार्थ ।
ले लेखनी लेखक ग्रन्थ तेरा, आया यहाँ आत्म-निवेदनार्थ ॥

ज्योतिष यह शास्त्र, एक प्रमाण-दायक शास्त्र है। जिसके मुख्य कारण हैं, सूर्य और चन्द्र। ये दोनो ग्रह, गणित तथा फलित में, अपनी प्रधानता रखते हैं। अतएव, प्रथम प्रधानों के लिए, प्रणाम ??
[सूर्य की उपासना मे गणित-ज्ञान तथा चन्द्र की उपासना से फलित-ज्ञान होता है]

उपयोग इस शास्त्र द्वारा, कृषि-व्यापार-उद्योग-आचार-धर्म-गति आदि के लिए, जो 'योग्य-काल' का निर्णय किया जाता है, वह, सूर्य-चन्द्र द्वारा सम्पादित होता है। जिसे वताने के लिए, ग्रन्थ और पचाग, एक मात्र साधन हैं। गणित द्वारा पचाग-निर्माण तथा ग्रन्थ द्वारा, उसका उपयोग (फलित-निर्माण), वताया जा सकता है। यही कारण है कि, आज इस रूप में, आपके समक्ष आने का। हाँ तो, योग्य-काल जानने के पूर्व, काल-मान की परिभाषा जानना आवश्यक है। काल-मान के विभिन्न अग होते हैं। 'कव किस अग का, किस कार्य में उपयोग हुआ है, होता है, होना चाहिए।'—इसका निर्णय, इस शास्त्र द्वारा लिखने के लिए, इन पंक्तियों में, वैठ गया हूँ। जो भी काल-मान हैं, उनमें इतिहास (पुराण) वर्णित 'युग' शब्द, विवादास्पद तो नहीं, किन्तु, भ्रमात्मक अवश्य है। विचार करेंगे पाठक कि, किस ग्रन्थ में, किस विषय का 'आत्म-निवेदन' है। फलित का ग्रन्थ, उसमें युग की मीमासा, आश्चर्य? किन्तु नहीं। इस युग-मान के विचार-मध्यन्तर में, प्रकृत ग्रन्थाध्यायियों को, कई उपयोगी विषय, प्रकाश में आयेंगे। जिनका विवेचन, अभी तक नहीं किया गया। यह तो, ज्योतिष ग्रन्थ है, इसमें, सभी शास्त्रों की सहायता लेनी पडती है। मुख्यतया, इस क्षेत्र वाले ग्रन्थों के साथ, वेद, व्याकरण, तर्क, गणित, पुराण, इतिहास, भूगोल, खगोल, अध्यात्म, दैशिक साधारण ज्ञान, प्राणी-परिचय, साहित्य, प्राचीन-अर्वाचीन भाषा-भाव-ज्ञान, क्रमिक-पद्धति, परिभाषान्तर, कालान्तर, निमित्त-निदान, आयुर्वेद आदि, अनेक व्यवहार-योग्य क्षेत्र की आवश्यकता पडती है। इन सवों के द्वारा, कभी नयी खोज हो जाती है, जिसे, जनता के समक्ष रखना पडता है। यही कारण है कि, सर्व प्रथम 'युग' शब्द का उपयोग करना पडा। अस्तु। विकाश अर्थों में, ज्योतिष का आदि ग्रन्थ, सूर्य-सिद्धान्त है। उसमें जो, लम्वा-लम्वा युगमान दिया गया है।

यह युग-मान कहाँ उपयोगी है, कहाँ नहीं पुराणों के बड़ी-बड़ी संख्या वाले मान क्या हैं ?—आदि को एक संक्षेप-सूत्र में बताना चाहता हूँ। सर्व प्रथम एक सिद्ध बात है कि सूर्य-सिद्धान्त के उन लम्बे मान वाले युग-अहर्गण द्वारा संसार में कोई पंचांग नहीं निकलता। पाठक भ्रम में न रहें। क्योंकि उन युगमानों का उपयोग न करने के लिए, स्वयं सूर्यसिद्धान्तकार ने निषेध किया है। इसलिए नहीं कि वे अशुद्ध हैं। वरन् इसलिए कि "किं वृथा पवतत्पनेन।" व्यवहारोपयोगी युगमान दूसरे ही हैं। वे भी कार्य-क्षेत्र-कारण से भिन्न-भिन्न हैं। गीता-प्रेस के नारदपुराण-अनुवादक ने सूर्यसिद्धान्त के कथनानुसार, उन लम्बे युगमानों से उदाहरण नहीं दिखाया। फिर भी उसी अनुपयोगी युगमान का ध्यान, कुछ लोगों को बना ही रहता है। जब तक आध्यात्मिक ग्रन्थों में पुराण रखे जाते हैं तब तक किसी प्रकार की अव्यवस्था नहीं होती। किन्तु, जब ऐतिहासिक दृष्टि से देखे जाते हैं तब सम्भाव्य उपयोगी ग्रन्थों में ध्यान देना पड़ता है। ध्यान रहे कि कुछ साहित्य वर्णनात्मक रहता है उपयोगात्मक नहीं। किन्तु यदि किसी वस्तु को उपयोगात्मक बना दी जाय तो जहाँ तक मेरी समझ है अच्छी बात रहेगी। इस प्रकार की कई धाराओं की उपयोगी एवं उनके भ्रम-निवारण इस क्षेत्र से सम्बन्धित अनेक विषयों पर अनेक स्थलों में इस ग्रन्थ में लिखा गया है। जो वहाँ नहीं लिख सके उसे संक्षेप में यहाँ बता देना चाहता हूँ।

दिन

सर्वसाधारण में प्रसिद्धि है कि २४ घण्टे का दिन होता है। परन्तु, दिन के विभिन्न-प्रयोग से इसका भिन्न-मान हो जाता है। (१) रविवार आदि दिन २४ घण्टे का (२) एक सूर्योदय से दूसरे सूर्योदय तक होने वाले दिन वर्ष में क्रमशः दो दिन [२२ मार्च २४ सितम्बर], २४ घण्टे के होते हैं शेष दिन २३ घण्टे ५९ मिनट के या २४ घण्टे १ मिनट के होते रहते हैं। (३) नाक्षत्र-दिन (Sidereal-Day) २३ घण्टे ५६ मिनट का होता है। (४) भारतीय पञ्चाङ्गस्थ दिन ११ से १३ घण्टे तक (५) इंगलैण्ड पंचांगस्थ दिन कम से कम ७ घण्टे ५ मिनट और अधिक से अधिक १६ घण्टे ३८ मिनट तक (६) ध्रुव-स्थान (नार्थ-साउथ पोल) पर, ६ महीने (२४ घण्टे वाले १८ दिन) का एक दिन [१२ घण्टे वाला] अर्थात् एक वर्ष का एक अहोरात्र [२४ घण्टे वाला दिन] होता है। (७) अणु-दिन आपके (समस्त) एक सेकण्ड में ३२४ परमाणु। (८) पितृ-दिन आपका एक मास = उनका एक दिन [शुक्ल पक्ष में १२ घण्टे का दिन तथा कृष्ण पक्ष में १२ घण्टे की रात] ["मासदिवस कर दिवस भा मरमु न जानइ कोइ। रथसमेत रवि थाकेउ निसा कवन बिधि होइ ॥" गोस्वामी जी] आपके वार्ड वर्ष में पितरों का एक मास होता है [पितृलोक में शनि द्वारा गणना से दिन-मास-वर्ष का मान निश्चित किया गया है। क्योंकि शनि ही पितृलोक का निर्माता होता है] (९) ब्रह्मा-दिन इनका एक मास ३० दिन का होता है। किन्तु इनका २४ घण्टे वाला दिन आपके २ [सन्ध्यांश-रहित] वर्ष = ७२ दिन के समान है। [एक गणित आगे चल कर बतायेंगे जिसका अर्थ होगा कि हमारी ४५ वर्ष की आयु में १२ वें ब्रह्मा की सृष्टि चल रही है]

मास

८ घण्टे वाले दिन से ३ दिन का एक सावन-मास ३ दिन १ घण्टे का एक सौर-मास २९ दिन २२ घण्टे का एक नाक्षत्र-मास २९ दिन १२ घण्टे का एक चान्द्र-मास होता है। व्यावहारिक कार्यों में सावन-मास भारतीय विवाहादि कार्यों में तथा संसार के राजनैतिक कार्यों में सौर-मास खगोल-गणित [कुण्डली-निर्माण आदि] में नाक्षत्र-मास भारतीय व्रतोत्सवादि कार्यों में चान्द्र-मास का उपयोग किया जाता है। सम्भव है कि भविष्य में भारतीय सभी कार्य सौर-मास से होने लगेंगे।

वर्ष २४ घण्टे वाले दिन को, सावन या विषुव (Equinox) दिन कहते हैं। ३६० सावन दिन का एक सावन-वर्ष, ३५४ सावन दिन का एक चान्द्र-वर्ष, ३५६ सावन दिन का एक नाक्षत्र-वर्ष, ३६५.२४२२ सावन दिन का एक सौर-वर्ष होता है। १००० सावन दिन का एक सोम-वर्ष, १४६१ सावन दिन का एक अश्वमेध-वर्ष, १८२६ सावन दिन का एक सुधार-वर्ष होता है। [भारत का अर्वाचीन पचवर्षीय योजना, ता २।१०।१९५२ से प्रारम्भ हुई। किन्तु पचवर्षीय चुनाव-युग, फरवरी-मार्च १९५२ से प्रारम्भ हुआ। भविष्य में ये दोनों, २२ मार्च से प्रारम्भ किये जायँगे] "तस्य च त्रीणि शतानि च षष्टिश्च स्तोत्रीया तावती सवत्सरस्य च रात्रय।" शतपथ १०-४-२। तैत्तिरीय ७-५-१। २४ घण्टे वाले दिन से, ३००+६०=३६० दिन का, एक सवत्सर होता है। ऋग्वेद १ मण्डल १६४ सूक्त ११ मन्त्र में, ७२० नति-गति (३६० रात ३६० दिन) का सवत्सर बताया गया है। किन्तु एक सवत्सर में, दो वर्ष होते हैं। "सवत्सरे वर्षद्वय जायते। तथा हि—एकेन वर्षेण तृप्त शरदि व्रीह्याग्रायण करोति। अपरेण तृप्तौ वसन्ते यवाग्रायण करोति।।" रबी-खरीफ (उन्हारी-स्यारी) नामक, फसलो के अन्नोत्पादक-पोषक वर्षा-काल को, वासन्तिक-शारदीय नामक, दो वर्ष बताये गये हैं। एक सवत्सर के, ये दो वर्ष, फसली सन् द्वारा, राजनैतिक क्षेत्र में घुस गये हैं। जो कि, केवल कृषकों के लिए, ईश्वर-निर्मित हैं। इनकी अपेक्षा, एक तीसरा 'वर्ष' है। जो कि, पूरा राजनैतिक वर्ष है। जिससे, काल-माप नहीं की जाती। केवल, राज्य-भूमि की माप की जाती है। अति प्राचीन काल के एशिया को, ९ खण्डो में विभाजित कर, भारतवर्ष की भाँति, नाम-रूपों में प्रसिद्ध थे [देखिए जम्बूद्वीप]

अश्वमेध सवत्सर दिन ३६०×४=१४४०। सौर दिन ३६५.२४२२×४=१४६०.९६८८ (१४६१ दिन) १४६१—१४४०=२१ दिन। इस प्रकार, गणित द्वारा ४ वर्षों में, २१ दिन का अन्तर देखकर, एक मीटिंग की गयी। काग्रेस-अधिवेशन की भाँति, अश्वमेध यज्ञ का समारोह किया गया। यह समारोह २१ दिन तक हुआ। तब, सावन-सौर की समानता हो सकी। तदनुसार प्रत्येक ४ वर्ष में, एक अश्वमेध करने का विधान बना दिया गया। जिसे प्राचीन साहित्य में, सुन्दर अलकारिक भाषा में, वर्णन किया गया है। "प्रजापतिरकामयत्, महान् भूयान् स्यामिति। स एतावश्वमेधे महिमानौ ग्रहावपश्यत्। तावजुहोत्। ततो वै स महान् भूयानभवत्।।" शतपथ १३-२-११ और १३-४-४ भी। प्रजापति (सवत्सर) ने इच्छा किया कि, मैं पुन सौर वर्ष के समान बडा हो जाऊँ। अग्नि ने, सावन-सौर (दो) ग्रहों को, अश्वमेध में बढते हुए देखा। उन दोनों की पूर्णाहुति (समानता) की गयी। उस समय सवत्सर, (पूर्वोक्त प्रकार से) निश्चय ही, पुन बडा हो चुका था। ऐसा सयोग १४४०-१४६१ दिनों के मध्य, २१ दिनों में, अश्वमेध द्वारा किया जाता था। जिसमें २१ यूप (स्तम्भ) और २१ रस्सियाँ लगती थी। स्तम्भों में १ राज्जुदाल का, २ पीतदारु के, ६ बिल्व के, ६ खदिर के, ६ पलाश के =२१ स्तम्भ, २१ दिनो के प्रतिनिधि होते थे। प्रजापति=सवत्सर=अग्नि की—नासिका=राज्जुदाल, नेत्र=पीतदारु, कर्ण=बिल्व, मास=खदिर, अस्थि=पलाश रूपी प्रतिनिधि होते थे [Physical-Science]। इस यज्ञ तथा इन पदार्थों द्वारा, नवीन सवत्सर का जन्म (प्रारम्भ) होता था। यह वर्ष, उत्पन्न करने वाला वर्ष (राजनैतिक वर्ष) कहा जाता था, और गतवर्ष को, अधिक वर्ष (Intercalary-Year) कहते थे। इस १४६१ दिन वाले वर्ष को, अश्वमेध वर्ष, राजनैतिक वर्ष, मन्वन्तर, कल्प, चतुर्युग [४ वर्षों में, दो प्रकार (सौर-सावन) के वर्षों को जोडने वाला], ४ अर्कों का समुदाय (Quaternary) कहा जाता था। ऐसा यज्ञ, पारसियो में अभी भी होता है।

यह युग-मान कहाँ उपयोगी है, कहाँ नहीं पुराणों के बड़ी-बड़ी संख्या वाले मान क्या हैं ?—आदि की एक संक्षेप-सूत्र से बताना चाहता हूँ। सर्व प्रथम एक सिद्ध बात है कि, सूर्य-सिद्धान्त के उन लम्बे मान वाले युग-महर्गण द्वारा संसार में कोई पंचांग नहीं निकलता। पाठक भ्रम में न रहें। क्योंकि उन युगमानों का उपयोग न करने के लिए, स्वयं सूर्यसिद्धान्तकार ने निषेध किया है। इसलिए नहीं कि वे अशुद्ध हैं। वरन् इसलिए कि कि वृथा पवतनपनेन। कार्योपयोगी युगमान दूसरे ही हैं। वे भी कार्य-क्षेत्र-कारण से भिन्न-भिन्न हैं। गीता-प्रेस के मारतपुराण-अनुवादक ने सूर्यसिद्धान्त के कथनानुसार, उन लम्बे युगमानों से उदाहरण नहीं दिखाया। फिर भी उन्हीं अनुपयोगी युगमान का ध्यान, कुछ लोगों को बना ही रहता है। जब तक आध्यात्मिक चर्चा में पुराण देखे जाते हैं तब तक किसी प्रकार की अव्यवस्था नहीं होती। किन्तु, जब ऐतिहासिक दृष्टि से देखे जाते हैं तब सम्भाव्य उपयोगी चर्चा में ध्यान देना पड़ता है। ध्यान रहे कि कुछ साहित्य वर्णनात्मक रहता है उपयोगात्मक नहीं। किन्तु यदि किसी वस्तु को उपयोगात्मक बना दी जाय तो जहाँ तक मेरी समझ है, अच्छी बात रहेगी। इस प्रकार की कई धाराओं को उपयोगी एवं उनके भ्रम-निवारण इस क्षेत्र से सम्बन्धित अनेक विषयों पर अनेक स्थलों में इस ग्रन्थ में लिखा गया है। जो वहाँ नहीं लिख सके उसे संक्षेप में यहाँ बता देना चाहता हूँ।

दिन सर्वसाधारण में प्रसिद्धि है कि २४ घण्टे का दिन होता है। परन्तु, दिन के विभिन्न-प्रयोग से इसका भिन्न-मान हो जाता है। (१) रविवार आदि दिन २४ घण्टे का (२) एक सूर्योदय से दूसरे सूर्योदय तक होने वाले दिन वर्ष में केवल दो दिन [२२ मार्च २४ सितम्बर] २४ घण्टे के होते हैं शेष दिन २३ घण्टे ५९ मिनट के या २४ घण्टे १ मिनट के होते रहते हैं। (३) नाक्षत्र-दिन (Sidereal-Day) २३ घण्टे ५६ मिनट का होता है। (४) भारतीय पंचांगस्थ दिन ११ से १३ घण्टे तक (५) इंगलैण्ड पंचांगस्थ दिन कम से कम ७ घण्टे ५ मिनट और अधिक से अधिक १६ घण्टे ३८ मिनट तक (६) ध्रुव-स्थान (नार्थ-साउथ पोल) पर ६ महीने (२४ घण्टे वाले १८ दिन) का एक दिन [१२ घण्टे वाला] अर्थात् एक वर्ष का एक अहोरात्र [२४ घण्टे वाला दिन] होता है। (७) अणु-दिन आपके (समस्त) एक सेकण्ड में ३२४ परमाणु। (८) पितृ-दिन आपका एक मास = उनका एक दिन [शुक्ल पक्ष में १२ घण्टे का दिन तथा कृष्ण पक्ष में १२ घण्टे की रात] [मासदिवस कर दिवस भा मरमु न जानइ कोइ। रथसमेत रवि थाकेउ निसा कवन विधि होइ ।।' गोस्वामी जी] आपके ढाई वर्ष में पितरों का एक मास होता है [पितृलोक में शनि द्वारा मध्यमा से दिन-मास-वर्ष का मान निश्चित किया गया है। क्योंकि शनि ही पितृलोक का निर्माता होता है] (९) ब्रह्मा-दिन इनका एक मास २७ दिन का होता है। किन्तु इनका २४ घण्टे वाला दिन आपके २ [अन्त्यमास-रहित] वर्ष = ७२ दिन के समान है। [एक गणित आगे चल कर बतावेंगे जिसका अर्थ होगा कि, हमारी ४५ वर्ष की आयु में १२ वें ब्रह्मा की सृष्टि चल रही है]

मास ४ घण्टे वाले दिन से ३ दिन का एक सावन-मास ३ दिन १ घण्टे का एक सौर-मास २९ दिन २२ घण्टे का एक नाक्षत्र-मास २९ दिन १२ घण्टे का एक चान्द्र-मास होता है। व्यावहारिक कार्यों में सावन-मास भारतीय विवाहादि कार्यों में तथा संसार के राजनैतिक कार्यों में सौर-मास खगोल-गणित [कुण्डली-निर्माण आदि] में नाक्षत्र-मास भारतीय व्रतोत्सवादि कार्यों में चान्द्र-मास का उपयोग किया जाता है। सम्भव है कि भविष्य में भारतीय सभी कार्य सौर-मान में होने लगेंगे।

सोम तिथि वर्ष (चान्द्र) और सक्रान्ति वर्ष (सौर) का अन्तर [३२।१६।५ सौर = ३३।१६।५ चान्द्र] देखकर, एक सोमयाग द्वारा निश्चित किया गया कि, १००० दिनात्मक, पुरुषोत्तमवर्ष (मलमास = मल्लमास = वीरमास = हठात् दूसरे के समान हो जाने वाला मास) किया जाय। फलत सोमपान (चन्द्रामृत) के लोभ से, सम्पूर्ण जम्बूद्वीप के मत, केवल गोस्वामी–छाप–पेटी में आगये। ३५४ दिन का चान्द्रवर्ष, ३६५ दिन का सौर वर्ष = ३ वर्ष में, ३३ दिन का अन्तर हो जाता है। अश्वमेध की भाँति, सोमयाग द्वारा, ३३ चान्द्रमास = १००० दिन में, चान्द्र-सौर की समानता की गयी। सर्वप्रथम दैत्यों द्वारा सोमवर्ष का आविष्कार हुआ। [उपरान्त, होली पर्व की भाँति, सर्वव्यापी हो गया। प्रह्लाद के इन्द्रत्व काल में, होलिकोत्सव प्रारम्भ किया गया था]।

नैमिपारण्य "पच पचाशत त्रिवृत सवत्सरा, पच पचाशत पचदशा पच पचाशत सप्तदशा पंच पचाशत एकविंशा विश्वसृजा सहस्र सवत्सरम् ॥" ताण्ड्य २५–१८ [प्रथम वार]। "त्रयस्त्रिवृत सवत्सरा त्रय पचदशा त्रय सप्तदशा त्रय एकविंशा. प्रजापते द्वादशसवत्सरम् ॥" ताण्ड्य २५-६ [द्वितीय वार]। "लोमहर्षणपुत्र उग्रश्रवा. सौति पौराणिको नैमिषारण्ये शौनकस्य कुलपते द्वादशवार्षिके सत्रे अभ्यगच्छत् ॥ १–२ ॥" महाभारत, आदि पर्व १ [तृतीय वार]। तीनों यज्ञ इस प्रकार हैं—

(१)	१००० दिनान्त	प्रथम सोमवर्ष	प्रथम त्रिवृतष्टोम	= ५ × ५० =	२५० ऋषि
(२)	२००० "	२ रा "	द्वितीय "		
(३)	३००० "	३ रा "	तृतीय "		
(४)	४००० "	४ था "	प्रथम पचदशष्टोम	= ५ × ५० =	२५० ऋषि
(५)	५००० "	५ वाँ "	द्वितीय "		
(६)	६००० "	६ ठा "	तृतीय "		
(७)	७००० "	७ वाँ "	प्रथम सप्तदशष्टोम	= ५ × ५० =	२५० ऋषि
(८)	८००० "	८ वाँ "	द्वितीय "		
(९)	९००० "	९ वाँ "	तृतीय "		
(१०)	१०००० "	१० वाँ "	प्रथम एकविंशष्टोम	= ५ × ५० =	२५० ऋषि
(११)	११००० "	११ वाँ "	द्वितीय "		
(१२)	१२००० "	१२ वाँ "	तृतीय "		
	१२००० "	१२ "	= ३ × ४ = १२ यज्ञ	= ५ × २०० =	१००० ऋषि

[क] प्रथम वार, १००० दिनान्त वाली त्रिवृत को २५० ऋषियों ने किया, १००० दिनान्त वाली पचदश को २५० ने, १००० दिनान्त वाली सप्तदश को २५० ने तथा १००० दिनान्त वाली एकविंश को २५० ने किया। इस प्रकार १००० वाली को, १००० ने, ४ यज्ञ किया। जिसमें वैवस्वत-पुत्री (इला) ने पत्नी तथा तप ने मनु (यजमान) की भूमिका की थी।

[ख] द्वितीय वार, १२००० दिनान्त, १२ सोम वर्षों में, ४ प्रकार की, तीन-तीन बार से, १२ यज्ञ, पुरुरवा-काल में, नैमिषेय ऋषियों ने किया।

अन्तर, केवल इतना ही है कि यह ४ सौर-वर्षान्त में होता था किन्तु पारसी लोग प्रत्येक ३६० दिनों के बाद गा-था-गं-ब-र नामक ५ अक्षरों के रूप में ५ दिन मानकर (३६६ वें दिन से), नवीन संवत्सर प्रारम्भ करते हैं [यज्ञ का विधान (अग्नि-पूजा) उनके धर्मानुसार है] इसका पूर्णाङ्क ३६५× ४=१४६० दिन का होता है [४ सौर वर्ष की अपेक्षा इनके ४ वर्ष में एक दिन कम रहता है, जो कि, हमारे विलुप्त वर्ष की भाँति है]। ऐसे यज्ञ यौरोप में दो बार हुए। (१) ग्रीगोरी द्वारा ता ५ से १५ अक्टूबर १५८२ ई. में तथा (२) इंगलैंड द्वारा ता ३ से १४ सितम्बर १७५२ ई. में। य ११ दिन वाले यज्ञ थे। अभी भी प्रत्येक चौथे वर्ष फरवरी मास में एक दिन बढ़ाते हैं। अस्तु।

श्री राम

दशाश्वमेधानाजह्रे। वाल्मीकीय युद्धकाण्ड राम-राज्याभिषेक। इसका अनुवाद १० ० वर्ष हो गया है। कहीं ११०० वर्ष की अनुयुति है। १ अश्वमेध=१ ×४=४ सौर वर्ष। २५+१४+४ =७१ पूर्णायु। १ ००० वर्ष=२६।१० वय आदि सौर। २५+१४+२६।१ =६५।१० पूर्णायु। किन्तु, ग्रन्थकारों से पता चलता है कि श्री राम ८० वर्षायु में साकेत पधारे थे। अतएव १ अश्वमेध या १४६१० दिन राज्य करके यशस्वी हुए, निश्चित होता है। १००० वर्ष=सौर मासादि ३२।११।६।१५=चान्द्र मासादि ३३।१६।१५ होता है। मम भर्ता महातेजा वयसा पंचविंशक।" वाल्मीकीय ४७ आरण्य। २५ वर्षायु में वनयात्रा १४ वर्ष वनराज्य ४ वर्ष अयोध्याराज्य के उपरान्त ८ वर्षायु में पुनः विष्णु-ज्योति हो गये। इन्हें मर्यादा-पुरुषोत्तम एक विशेष लक्ष्य से कहा गया है। १ दिन का एक पुरुषोत्तम (सोमयाग) वर्ष होता है। जिस वर्ष में प्रादुर्भाव हुआ था वह पुरुषोत्तम वर्ष था तथा 'पुण्य-तिथि' होने वाले वर्ष में भी पुरुषोत्तम वर्ष था। राज्यकाल में १० अश्वमेध तथा १ सोमयाग किये थे। सोमयाग=भुज=भूलोकीय यज्ञ=धार्मिक योजना वर्ष। अश्वमेध=कोटि=स्वर्लोकीय यज्ञ= राजनैतिक योजना वर्ष। ज्यामिति द्वारा यज्ञ-संख्या की रेखा (भुज-कोटि की रेखा) समान थी। कोटिन्ह बाजिमेध प्रभु कीन्हें। गोस्वामी जी। अन्यथा १ ० वर्ष में एक करोड़ से अधिक बाजिमेध कैसे हुई होंगी जबकि १४६१ दिन का अश्वमेध वर्ष एवं २१ दिन में एक अश्वमेध का विधान था। अश्वमेध में घोड़ा छोड़ा जाता था भारत-भूमि में दिग्विजय की जाती थी। तत्पश्चात् ४ वर्ष में एक अश्वमेध योग्य समय आवश्यक था। किन्तु (१) १ अश्वमेध (२) १० सोमयाग (१ ० वर्ष राज्य), (३) कोटिन्ह बाजिमेध—ये तीनों वाक्य ४० वर्ष के राज्य-काल (भुज से कोटि रेखा विशेष) से पूर्ण सिद्ध अर्थ हो जाता है। देखिए, आप कहते हैं कि 'दो जीव अरु प्राण समाना'। अधिक मिलता रूप में गणित द्वारा १+१ कहा जायगा। १+१=दो मिल गये। यथा दूध+पानी=१+१ कर दिया जाता है। इसी प्रकार ज्यामिति द्वारा दूध+पानी को भुज कोटि की समान रेखा कहा जायगा। १×१=१ वर्ष स्क्वायर, कोटिन्ह। श्री राम जी का पूर्वार्द्ध ४ वर्ष का एवं उत्तरार्द्ध भी ४ वर्ष का था। ४ का अंक ४ से बनता है, जिसका अर्थ युगपुरुष के लिए, चतुर्दिशु, चतुर्मुखी होने का सूचक है। जितने दिन (४ वर्ष) तपस्या के उतने ही दिन [४ वर्ष] राज्य के। अतएव स्क्वायर (क्रॉस-राउण्ड) जीवन वाले युगपुरुष को 'कोटिन्ह' लिखकर, स्वयं सिद्ध कवि हो गया। ४ और १ का अंक (४×१) वेद और विद्या का प्रतिबिम्बित कर, क्रॉस-राउण्ड अर्थ को पूर्ण कर देते हैं। ११ का अंक-रूप पितृभक्ति-सूचक है [सब मिलि करहु परस्पर प्रेम जासो होय सुमंगल क्षेम। प्रेम-समान नाहिं बल कोय एक-एक मिलि ग्यारह होय] (१+१) =पिता (सूर्य) से उत्पन्न हुए और पिता (सूर्य) में लय हो गये। पुत्र नहीं। श्री राम की लीला वैष्णव कहते हैं म ाक प्रयत ? वेद में वेद। एकमात्र का होते हैं~ अतएव साकेतवासी नहीं, कैलासवासी हैं। ॐ।

विद्युत् इसका अर्थ, विषुव-दिन (२४ घण्टे वाला दिन) होता है। "अष्टाविंशतिर्ये कल्पा नामत परिकीर्तिता । तेपा पुरस्ताद् वक्ष्यामि कल्प-सज्ञा यथाक्रमम् ॥७॥" वायु २२ (२१ भी)। १ भव २ भुव ३ तप ४ भाव ५ रम्भ ६ ऋतु ७ क्रतु ८ वन्हि ९ हव्यवाहन १० सावित्र ११ भुव १२ कुशिक १३ गान्धार १४ ऋषभ १५ षड्ज १६ मार्जालीय १७ मध्यम १८ धैवत १९ वैराजक २० निषाद २१ पचम २२ मेघवाहन २३ चिन्तक २४ आकूति २५ विज्ञाति २६ मनोभव २७ भावन २८ वृहत [अब २१ अध्याय के आगे], २९ साम ३० रथन्तर ३१ श्वेतलोहित ३२ पीतकृष्ण [मतान्तर से, ३१ श्वेत ३२ लोहित ३३ पीत ३४ कृष्ण, ३५ विश्व-रूप ३६ सर्वरूप] नामक कल्प हैं। [३० रथन्तर के आगे, ३१ श्वेत = २ वर्ष, ३२ = २ वर्ण, ३३ = १ वर्ष, ३४ = १ वर्ष, ३५ = १ वर्ष ३६ = १ वर्ष का, स्पष्ट हो रहा है] २८ = ११२ वर्ष। ३० = १२० वर्ष। ३२ = १२८ वर्ष। ३६ = १२८ वर्ष। २८ वां कल्प, वृहत् नामक है। "चत्वारिंशत्सहस्राणि, शतान्यष्टौ च विद्युत । सप्तति चापि तत्रैव, नवविद्युद्विनिश्चये ॥१८०॥" वायु ५० । [इसमें 'नवति विद् विनिश्चये' का शुद्धपाठ 'नवविद्युद् विनिश्चये' कर दिया गया है । क्योंकि, यदि कहीं लिख दिया जाय कि, मगल के साथ, राहु-केतु हो तो, मगल के साथ, राहु-केतु (दोनों) नहीं हो सकते, तव मगल के साथ राहु होगा या केतु, समझना पडेगा। इसी प्रकार (१) नवतिं वा विनिश्चये—(२) नवविद्युद् विनिश्चये—दो पाठो में से, दूसरा शुद्धपाठ रहेगा। विद्युत विद्युत् [इतने से, इतना, न्यूनाधिक], दोनों शब्द, आवश्यक हैं। तव, सख्या-क्रम, स्वय ही गणित से सिद्ध हो जाता है। देखिए—] प्रथम श्लोकद्वारा २८ कल्प = ११२ वर्ष की (द्वि श्लोकद्वारा) विद्युत् = ४०००० + ८०० + ७० + ९ = ४०८७९ दिन (११२ वर्ष में) निश्चय मे आ रहे हैं। तव थे कितने ? सौर दिन ३६५·२४२२ × ४ = १४६० ९६८८ = १ अश्वमेध = १ कल्प। १४६० ९६८८ × २८ (११२ वर्ष) = ४०९०७ ०००४ थे। ४०९०७–४०८७९ = २८ दिन। २८ कल्प में, २८ दिन कम। तव एक कल्प में, एक दिन = १ मील में, एक मिनट। यही कारण है कि पारसी लोग, ४ सौर वर्ष से, १ दिन कम करके, अपने ४ वर्ष के दिन [१४६१–१ = १४६०] रखते हैं [देखिए, अश्वमेध]। ११२ वर्ष = २८ दिन = २८ पल = ११ मिनट १२ सेकण्ड। १० वर्ष = १ मिनट = १ मील। १० वर्षों में, सूर्यमण्डल का १ वर्ग मील भाग, ठण्डा होता जा रहा है। फलत १० वर्ण में १ मिनट, विद्युत्-प्रवाह कम हो जाता है। जिससे ११२ वर्ण = २८ कल्प में, २८ विषुव तथा २८ पल की कमी आ जाती है [इसे, कालान्तर सस्कार कहते हैं] अस्तु। वायु ९९ अध्याय द्वारा ज्ञात होता है कि, श्री सूत ने (शागपायन से), पाण्डुवशी अधिसीमकृष्ण (हस्तिनापुर), ऐक्ष्वाकु दिवाकर (अयोध्या), पौरवमागध सेनजित, (वृहत्सेन, राजगृह) के राज्यकाल में, वायुपुराण का यह प्रवचन, ११२ वर्ण का अन्तर वता रहा है। इसे, ई० पूर्व १११० वर्ण समझिए। [ई० पूर्व १२२२ में (७२ वर्षीय व्यास ने) वायुपुराण रचा था] इस विद्युत् पद (Para) में २८ कल्प का मान, दिखाया गया है। उसी प्रकार आगे, रथन्तर कल्प में ३० कल्प का एव प्रलय कल्प में ३२ कल्प का मान, दिखाया गया है।

रथन्तर विद्युत् पद (Para) में, रथन्तर नामक ३० वां कल्प वताया गया है। एक दिन में, दो नति-गति होती हैं। कल्पदिन × ३० × २ = १४६० ९६८८ × ६० = ८७६५८ १२८ नति-गति = १२० वर्ण (३० कल्प) में। ८८००० – ८७६५८ १२८ = ३४१ ८७२ नति (१७० ९३६ दिन = ५ मास २१ दिन) १२० + ५।२१ = १२० वर्ण ५ मास २१ दिन में ८८००० नति-गति = नैमिषारण्य के ऋषि। चान्द्रमान ४४००० × २ = ८८००० नति-गति। [नैमिपारण्य के ऋषि = नैमिपारण्य के यज्ञकाल में ८८००० नति-गति। जिसके अर्थ हैं कि, कल्पारम्भ से, ४४००० – १४६१ = १२० वर्ष ५ मास २१ दिन सौर = ४४ सोमवर्ष = ३० कल्प या

[ग] तृतीय बार (द्वितीय बार की भाँति सत्रान्तर में) कुलपति शौनक द्वारा की गयी थीं। इसीके दीक्षान्त-भाषण भी सूत द्वारा हुए थे। तीनों बार की सभाओं का स्थान नैमिषारण्य (षट्स्वन्ती नगरी) में था। १२ वीं सभा के बाद २२ वाँ दिन था ४ थी सभा थी ४ सभाओं के १०० ऋषि थे। अतएव २२×४ ×१०० = ८८००० ऋषि श्री सूत जी का (जो हैं सो का) प्रवचन सुनकर सोम-पान के नशे में उड़ गये [अन्तर्धान]

डॉक्टर

एक डाक्टर एक रोगी के पास १ ०० दिनात्मक वर्ष के मध्य दिन-रात आता-जाता रहा। साथ ही उसके कम्पाउण्डर ने तारीख क्रमसंख्या रोगी का नाम औषधि-विवरण आदि लिखकर, अपना 'रोगी-रजिस्टर' भरता रहा। रोगी धनी था। रोगी-दशा और २४ घण्टे का दिन आवश्यकतावश रोगी के पास ४४ डाक्टरों को आना पड़ता था। उसे ११ मोटरें डाक्टरों के आह्वान के लिए रिजर्व करना पड़ीं। प्रत्येक डाक्टर के पास एक-एक रोगी-रजिस्टर था। किन्तु रोगी-सेक्रेटरी के पास ४४ डाक्टर्स-रजिस्टर था। एक ड्राइवर को ४ ट्रिप दिन-रात करनी पड़ती थी। रोगी स्वस्थ हो गया। फलतः प्रथम पथ्य बिल द्वारा मिला।

डाक्टर्स-बिल = ४४ डाक्टर, १ रोगी १० ० दिन दिन-रात = ४४ × १ × १ × २ = ८८ ० फीस।
कम्पाउण्डर्स बिल = ४४ रोगी-रजिस्टर, १ दिन दिन-रात = ४४ × १ × १ × २ = ८८ रोगी।
मोटर्स-बिल = ११ मोटर, ४ ट्रिप १ दिन दिन-रात = ११ × ४ × १ × २ = ८८ ० ट्रिप।
सेक्रेटरी-बिल = ४४ डाक्टर-रजिस्टर, १ दिन दिन-रात = ४४ × १ × १ × २ = ८८ डाक्टर।

कितनी फीस कितने रोगी कितना पेट्रोल कितने डाक्टर"—के उत्तर में ८८ अंक देखकर डाक्टर, रोगी पेट्रोल कम्पनी एवं ड्राइवरों के दिमाग का पारा १२ डिग्री पर पहुँच गया। और तब डाक्टर (वैद्य नहीं) = विशेषज्ञ (पण्डित) अन्तर्धान।

पार्लियामेण्ट

यह Virtuous पार्लियामेण्ट प्राचीन काल में नैमिषारण्य [नीमसार, सीतापुर उत्तर-प्रदेश भारत] में थी। यहाँ एक बार, ८८ ऋषियों को बिना माइक-स्पीकर के एकस्पीकर ने एक साधारण वृक्ष के नीचे सुखधर्मासनस्थ होकर १२ वर्ष (निरन्तर) आकाश से पाताल तक धार्मिक से राजनैतिक तक देवता से मनु तक राजा से प्रजा तक खगोल से भूगोल तक कृषि से उद्योग तक सागर चींटी से हाथी तक के सभी विषयों पर, लेक्चर झाड़ा मत-दान लिया बहस किया समझाया तब कुछ तय हुआ। अन्ततोगत्वा एक विधान-ग्रन्थ प्रकाशित किया गया। *लोगों ने पढ़ा कुछ माना कुछ नहीं। जिन्होंने नहीं माना* उनके लिए संशोधित एडीशन प्रकाशित किया गया। किन्तु, एक विशेषता के साथ। प्रथम बार में हस्ताक्षर के स्थान पर लिखा था—'व्यास'। पर, द्वितीय बार में लिखा गया—'द्वारा ८८ ऋषि' (By 88000 Rishi) हिन्दी पढ़ने वाले तो पहिले से ही विरोध में न थे वरन् ८८ ० अथारिटी देखकर और भी अधिक मानने लगे। पर, इंगलिश में लिखा देखकर, शेष भी उसी गुट में शामिल हो गये। फिर भी एक मत शेष रह गया। उसके सामने इस प्रकार की धोखाधड़ी वर्तमान के सभी न्यूज-पेपर, बताते रहते हैं। किन्तु, कहने वाले कहते हैं कि 'बताते क्या झूठ हैं? जबकि ब्लाक-वालों के न्यूज हैं।" सुनकर पण्डित इस पार्लियामेण्ट से वाक-आउट हो गया [अन्तर्धान]।

में] सूर्य-स्थिति का हो जाना। ससार के क्रमिक ह्रास की भाँति, १० वर्ष में सूर्य-गोल का एक वर्गमील भाग, ठण्ढा होता जा रहा है। इस क्रम से, एक समय, ऐसा आ सकता है, जबकि, 'जगत्येकार्णवीकृत' का रूप बनकर, जल, आकाश, ईश्वर, शेष रह जाय। किन्तु, इसे न किसी ने देखा है और न देख सकता है। एक मात्र, लक्षणालकार की कल्पना है। गणित के द्वारा, कल्पदिन १४६० ६६८८ × ३२ (१२८ वर्ष) = ४६७५१ ००१६ = ६३५०२.००३२ नति अर्थात् १२८ वर्ष में, प्रलय, अपने व्यापक अर्थ द्वारा, एक चक्र पूर्ण कर [कल्पावयव-रहित] पुन चक्रारम्भ करता है। फलित-उपयोगी, परिवर्तन के वर्ष [मानवार्थ] ६,७,१०,१६,१७,१८,१६,२०, ४२,६०,७०,६६,१०२,१०८,११२,११४,११६,१२० [ससारार्थ] १२६, १३३,१४०,१६०,१७०,१८०, १६०,२००,३०६,३२३,३४०,३४३,३६० हैं। इसके दो मूलारम्भ हैं। (१) वर्तमान सृष्टि का प्रारम्भ, ई. पूर्व ३१०२ वर्ष = ३ + १ + ० + २ = ६ सूर्य वर्ष या षट्चक्र] तथा (२) मानवारम्भ, उसी के जन्म दिन से मानिए। मनुष्य में उपयोग करने के लिए ६ से १२० तक के अक-वर्ष तथा ससार के लिए १२० से ३६० तक के अक-वर्ष हैं। अभीष्ट युगमान ४३२००० = ४ + ३ + २ = ६ ग्रह। १२० = १ + २ = ३ में, ६ ग्रहों का पट् चक्र, त्रिकाल तक, त्रिलोक में, त्रिगुणात्मक रहता है [पृष्ठ १८८-१८६]। सूर्य से केतु पर्यन्त, ग्रहों के मण्डल से, केन्द्र तथा प्रलय, बनता रहता है। प्रलय शब्द से मृत्यु परिवर्तन, सूर्यास्त, राज्य-समाप्ति, परमानन्द-दर्शन आदि व्यापक रूप है। अच्छा, मार्कण्डेय-स्वरूप—पाठक ! आप, इस प्रलय से बाहर आइए।

ब्रह्मा प्रलय के बाद, सृष्टि के निर्माता, पितामह हैं। परन्तु, आपके पितामह, आपके ब्रह्मा, और ज्योतिष के पितामह, ज्योतिष के ब्रह्मा। निराकार ब्रह्मा, एक 'दीर्घ अवधि का समय' अथवा सहस्राब्दी। साकार ब्रह्मा, समय-समय पर, नाम कमाने वाले [सूर्यादि नवग्रह स्वरूप] (१) युगपुरुष, (२) श्रेष्ठ सत्र करने वाले (३) राजा (४) पार्लियामेण्ट का स्पीकर (५) गवर्नर (६) राष्ट्रपति (७) निर्माता (८) कर्ता-धर्ता, (६) शिलान्यास करने वाला, आदि अर्थों में, इस शब्द का उपयोग सर्वदा होता है। ब्रह्मा का ऑफिस = सुप्रीम कोर्ट इन दि स्टेट अथवा पार्लियामेण्ट [कुछ प्रान्तीय, कुछ विभागीय] सर्व प्रथम, यह ऑफिस, ब्रह्मावर्त [थानेसर, पजाब] में खोला गया। जाति इनकी, प्रजापति थी, जिन्हें वर्तमान युग में कुम्भकार (कुम्हार) कहते हैं [इस मध्य-प्रदेश में अधिक पाये जाते हैं। पहिले, प्राचीन मध्यदेश (पृष्ठ ३६६) में, एक थे, किन्तु वर्तमान में, कई ढल चुके हैं, उन्हीं का काम, जम्बूद्वीप में दिख रहा है] साधारण भाषा में, झटपट, घट बना देने वाले। अपना चाक, अपने डण्डे से घुमाया कि, बना। उसे, पट के एक सूत से कट (Cut) कर, आपकी सेवा में प्रस्तुत किया। चाक भी, अजब किस्म का था। जिसमे, किसी समुद्र मे घी भर दिया और किसी में सुरा। सेमल की पत्ती मे ईरान और जामुन का रस निचोडा कि, भारत तैयार। जिसमें, हम जो लिख रहे हैं, उसे, आप पढ रहे हैं। मानव-ढलाई का काम, पहिले कुछ ढीला-ढाला चला, पर अब तो, उन्नति के शिखर पर है। इस प्रकार आप, अपने को छोडकर, शेष पदार्थ निर्माण में, एक करोड, सत्तर लाख, चौसठ हजार वर्ष, ब्रह्मा को लगा—जान लीजिए [हमारे गणित से, लगभग १३० वर्ष हो रहे हैं]। तदनन्तर, हम हुए, फिर आप। किन्तु, जहाँ चार होते हैं, खटकते ही हैं, देखकर, ब्रह्मा ने ऑफिस खोला, [जिसका पता, आप को नोट करा चुका हूँ] और चुनाव आरम्भ किया। स्वय तो आ ही गये, कुछ और भी आये [ब्रह्मा, ऋषि, मनु, ऋत्विज्, पत्नी रूप में, दीपशलाका (मॉचिस) से, इला (अग्नि) भी बना लिया [ऋग्वेद १ मण्डल १३–१४ सूक्त]। अब कार्यारम्भ हुआ। सर्व प्रथम, गणितज्ञ से वार्तालाप हुआ। एक प्रश्न के उत्तर में, गणितज्ञ को कहना ही पडा कि, "ब्रह्मस्थानमिद चापि यदा प्राप्त त्वया विभो। तदा प्रभृति कल्पश्च त्रयस्त्रिंशत्तमो ह्यसौ ॥४८॥" वायु २३।

अस्सीमेष वर्ष + ४ मास २१ दिन = ८८००० नति-गति = विषुव-वर्ष १२०।४।२१ = सावनवर्ष १२२।२।२१ हुए। इस ८८००० नति-गति (रथन्तर) पर सौर-सावन-चान्द्र-नाक्षत्र का चक्र पूरा हुआ। ऐसा संयोग सौर-चान्द्र १२० वर्ष ४ मास २१ दिन = विषुव (विषुत) मान १२० वर्ष ४ मास २१ दिन पर, सूर्य का चक्र जिस स्थान में गिरा (पूर्ण हुआ) उसका नाम नैमिषारण्य पड़ा तथा जो ऋषि यज्ञ कर रहे थे वे ८८००० अंक से संबोधित हुए। तत्पश्चात ८८००० ऋषि न थे वे १२० वर्ष थे। 'ऋष गतौ' धातु से बने ऋषि शब्द के अर्थ हैं गति'। यही कारण था कि ८८००० ऋषि उड़ गये। साथ ही डाक्टर, रोगी डाक्टरों के दिमाग का पारा १२ डिग्री पर चढ़ गया। फलतः गणितज्ञ को पूर्वोक्त पार्लियामेण्ट से 'वाक-आउट' करना पड़ा। विषयान्तर से कक्षान्तर देकर, गणितज्ञ वायु-लोक में मारा-मारा फिरा तब ८८००० योजन वाले सूर्य के रथन्तर में जा पहुँचा। वहाँ क्या देखा ? पढ़िए। अष्टाशीतिसहस्राणां योजनानां प्रमाणतः। रथन्तरं तु विज्ञेयं परमं सूर्यमण्डलम् ॥७७॥" वायु ९१। ८८००० योजन का श्रेष्ठ सूर्यमण्डलीय रथन्तर कल्प जानिए [जिसका गणित पूर्वोक्त पंक्तियों में लिखा जा चुका है]।

	[क]	[ख]
य	= जो (रथन्तर कल्प)	= जो रथन्तर नामक कल्प
अष्टाशीतिसहस्राणां	= ८८०००	= ८८ ०
जनाना	= ऋषियों की	= गणितज्ञों की (मत वासी—)
प्रमाणतः	= अथारिटी से (संख्या से)	= नति-गति से
विज्ञेयम्	= जानने योग्य है।	= जानने योग्य है।

[यहाँ 'योजन' शब्द अन्तर्धान हो रहा है] 'योजनानां प्रमाणतः'—[योजन = जोड़ आदि गणित करने वाले] गणितज्ञों के प्रमाण से जानने योग्य है [न त्वन्यस्त्रमाणरपेति भाव]। चान्द्र-सावन-सौर मान से एक-सा रथन्तर (८८ ० नति) होने पर नैमिषारण्य में महामहोत्सव हुआ। ऐसी पवित्र भूमि पर, ऐ ऋषियो ! [जी सूत का प्रवचन सुनना है तो १८ पुराण पढ़िए, यह ज्योतिष का ग्रन्थ है]। × × × 'एक महोदय [भुक्त धातुविज्ञान विद्वान्] ने अथाशीति [अष्टाशीति के स्थान पर] शुद्ध-पाठ करके ८ ० विनाडी (नति-गति) निम्नोक्त-प्रकार से दिखाया—[अस्मदिन १४६ १६८८ × २८ (११२ वर्ष) = ४०१०७ सौरदिन × २ = ८१८१४ विनाडी] कहाँ अथाशीतिसहस्राणाम् और कहाँ ये विनाडी। यह सब सोमयाग के प्रसाद का प्रभाव है।

प्रलय व्याकरण-सूत्रीय 'हलन्त्यम्' फक्किका में हल्-हल् का सम्बन्ध ज्योतिष में इष्टकाल-सूर्य का सम्बन्ध बीज-वृक्ष का सम्बन्ध जिस प्रकार परस्पराश्रयी है उसी प्रकार सृष्टि-लय का सम्बन्ध भी अन्योन्याश्रयी है। एक क्रम-गति है। 'ऊँची-नीची व्रजति दशा चक्र-नेमी-क्रमेण।" ४९ उत्तर मेघदूत। जिसका स्पष्ट भाव है कि चक्र-नेमि की दशा नीचे से ऊपर की ओर है [सृष्टिवर्धन पुनर्जन्म स्त्री से पुरुष होना सूर्योदय होना आदि] किन्तु, क्रम के कारण ऊपर से नीचे की ओर भी हो जाती है [प्रलय मृत्यु, पुरुष से स्त्री हो जाना सूर्यास्त होना आदि]। प्रातः सूर्य ऊँचा होकर, पूर्वाह्न या पूर्वनत तथा मध्याह्नोत्तर सूर्य नीचे होकर, अपराह्न या पश्चिमनत की संज्ञा बनाता है। विज्ञान तथा पुराण में एक ही बात अन्यान्तर से कही गयी है [पृष्ठ १०४]। प्रलय-सृष्टि—११ वाँ दक्षलोहितवर्ण = अमूर्त रक्तवर्ण (Infra-Red) से क्रमशः १२ वाँ नीलकृष्णवर्ण (नीलकृष्ण) = अदृश्य नील-लोहित (Ultra Vollet) तक [स्पष्ट-क्रम श्वेत रक्त नील कृष्ण विश्वरूप उपरूप नामाओं

"भूव्यास में २२ का गुणा, ७ से भाग करने पर 'स्थूल-परिधि' होती है। इसमें चतुर्थांश व्यास का गुणा करने पर, 'क्षेत्रफल' होता है। इसमें ४ का गुणा करने पर, 'पृष्ठफल' होता है। इसमें षष्ठांश व्यास का गुणा करने पर 'गोलघनफल' होता है।"—लीलावती। यजुर्वेद के पुरुष-सूक्त [सहस्रशीर्ष] में, जो रमल-शास्त्रीय, दायरा-ए-मिजाज़ की आदम शक्ल है, उसके द्वारा, इस प्रकार से—

$$\text{१० अगुल की पृथ्वी का व्यास १००० योजन} = \left[\frac{१० \times २२ \times १० \times ४ \times १० \times २}{७ \times ४ \times ६}\right] \text{ प्राप्त है।}$$

भूव्यास १००० योजन = १० हजार मील = ५० करोड योजन = ५०० करोड मील [२५ हजार मील भू-अर्ध-व्यास (Diameter)। २५००० मील ÷ ३६० = लब्धि = १ अश में ४ मिनट के देशान्तर-गणित द्वारा, २४ घण्टे बाद, पुन सूर्योदय तथा ससार की चलती-फिरती घडियाँ, जनता-जनार्दन के कलाई की शोभा बढा रही हैं। [पृष्ठ २७, ६४, ३६१ इसी ग्रन्थ में]। गणित को नाचीज़ समझने वाले, ५० करोड योजन पृथ्वी को सुनकर, ५०० करोड मील को, १७६० गज वाले मील से, नापने को तैयार हो जाते हैं अथवा आकाश की ओर उडने लगते हैं। अभी तक, (अधिक से अधिक) २५२९८ मील और (कम से कम) २४८३० मील का अन्वेषण हो पाया है। जिसका मध्यम-मान २५००० मील (अर्ध-व्यास) के आधार पर, १० अगुल की भूमि की, सारे देशो के वायु-यान, नापते फिरते हैं, अन्यथा हमारी कमल-कर्णिका (साइकल-सीट) १० अगुल की है। इतना समीप, इस स्पष्ट-गणित का प्रतिरूप, टेलीग्राफ-रेडियो द्वारा, नित्य-सूचित 'टाइम' है। इसी गणित [पृष्ठ ३३ से ६६ तक] के ३४ पृष्ठीय कार्य में, कम्पोजीटर्स, सिनेमा-सगीत का स्वर निकाल रहे थे।

सत्र ऐसे लेखों को रुचिपूर्ण रखने के लिए, प्राचीन-अर्वाचीन साहित्य का सहारा लेना पडता है। विषय के साथ, भाषा भी चाहिए। गणित-व्याप्ति की भाँति, साहित्य-सरसता की आकाक्षा, जन-जन में है। अतएव, पुराण-रचना-शैली तथा रहस्यों का विकाश, उसी भाषा-विषय में [पहेलियों की बात, पहेलियों में] आवद्ध किया गया। इस प्रकार विवेचन करके, इन वस्तुओं के न रखने के कारण, गणित के स्थान पर, 'गोविन्दाय नमो नम' की हाँक लगाने वाले, वडी कठिनता भोगते हैं। उनका समझना और इस ग्रन्थ—योग्य, साहित्य का प्रकाश होना, 'एक पन्थ दो काज' का आनन्द दे रहा है। कोई जम्बू द्वीप के मेरु को, ध्रुव-स्थान में मान कर, लोगों को आकाश में उडा देते हैं अथवा पाताल में पटक देते हैं। पिछले पृष्ठों का, एक निष्कर्ष यह भी है कि, प्रयोगात्मक युग शब्द, अरबों की गणना में नहीं है। १ शिर = ५ करोड वालों वाले शब्द का उपयोग भी वताया गया। सर्व प्रथम, चतुर्युग शब्द के अर्थ हैं १४६१ दिन। इसमें अश्वमेध का विधान है। उसी प्रकार १००० वर्ष, केवल ३३ चान्द्रमास हैं, जिसे सोमवर्ष कहा गया है। [सोमकल्पलता = एफेड्रीन (Ephedrin) है। मुझे दमा रोग के कारण, इस सोम का स्वाद लेना पडा है] इस कारण १०००, १४६१ दिनों वाले, वर्षों का अधिक प्रचार हुआ [कहीं, सूर्य-चन्द्र के वर्षमान न होकर, मगल, गुरु, शनि, ध्रुव आदि के वर्षमान हैं। कहीं, त्रिसाप्ताहिक प्रलय वता दिया गया है। कहीं करोडों वर्ष का मानव, वता दिया गया। कहीं दो वर्षों का यज्ञ कह दिया, जिसके अर्थ हैं, भारतवर्ष और केतुमाल वर्ष सरीखे, दो वर्ष (न कि, ७२० दिन)। पुराणों को नवीन वनकर समझना कठिन है। 'धाता यथा पूर्वमकल्पयत्' को मूल-मन्त्र समझिए। यदि ब्रह्मा १०० वर्ष जीवन रखते हैं तो, सहस्रार्जुन ने ८५००० वर्ष राज्य कैसे किया ? (स्कन्द) [१००० (२७ वर्ष ६ मास सौर) वर्ष राज्य किया और ८५००० वर्ष (२२७ वर्ष सौर) हैहयवशी राज्य, हैहय से वीतिहोत्र तक

भगवन् [पृथ्वी-निर्माण हुए तो २ करोड़ वर्ष हो गये और आप (ब्रह्मा) उससे भी करोड़ों करोड़ वर्ष पहिले हुए थे। किन्तु,] जिस समय आप इस चुनाव में विजयी होकर इस ब्रह्म-स्थान को सुशोभित किया है, उस समय को (जो है सो) ३३ वाँ कल्प कहते हैं। पाठक की भाषा में ई० पूर्व २१७४२१७० वष। [३२ वे कल्प (१२८ वें वष) में प्रलय हुआ था क्या आप को स्मरण नहीं है ? कोई बात नहीं।]

सृष्टि धाता यथा पूर्वमकल्पयत्। के आधार पर– 'वर्णाश्रमव्यवस्थान तेषा ब्रह्मा तथाकरोत्। वायु ५७। अब ब्रह्मा ने मानव की क्लास (जाति प्रकार) बनाया। ब्राह्मण पहिले किन्तु वे ब्राह्मण क्रमश शूद्र तक हो गये। प्रात पय-पान से साय सिनेमा-निरीक्षण तक की व्यवस्था की गयी। क्योंकि कोई मेटमी-पौ बसन लगते थे। जिसे आयुर्वेद निषध मानता है। ब्रह्मा का परिचय था —आत्मभू गोत्रीय 'आनन्द' परमेष्ठी (परम इष्टि करने वाला)। आप परमानन्द' कह सकते हैं। इन्होने प्रलय के बाद सृष्टि की। 'ब्राह्मणोऽस्य मुखमासीद् बाहू राजन्य कृत । ऊरू तदस्य यद्वैश्य' । यजुर्वेद की छाया पर, वायु ८ अध्याय। १० युग (नर-नारी) [१ जोडी मौजे (Glove) की भांति] अपने मुखारविन्द से प्रकट किया। तदनन्तर इतने ही क्षत्री इतने ही वैश्य (उस समय शूद्र अनावश्यक थे)। जिनका जोड़ २ युग होता है। [यहाँ युग शब्द वायु-भाषा का है] इतना काम २ वर्ष [ई पूर्व २१७४ से २१६६ तक] में हुआ। सारांश यह कि एक अश्वमेध यज्ञ के चुनाव में ब्रह्मा भी होता था। जिसका कार्य यज्ञ तथा देश की सम्पूर्ण व्यवस्थाएँ करना मुख्य था। हाँ प्रथम यज्ञ वाले की अपेक्षा उत्तरोत्तर यज्ञों वाले ब्रह्मा का महत्त्व बढ़ता जाता था क्योंकि कार्य-भार भी बढ़ता जा रहा था। कभी वही ब्रह्मा श्री नेहरू की भांति पुन पुन चुनाव में आ जाता था। कभी दूसरी ही बार बदल जाता था। कोई ब्रह्मा बहुत अच्छा काम करता था और कोई दक्ष प्रजापति की भांति बिहारी-सतसई की रिसर्च करता रहता था। अस्तु, यह ब्रह्मा दो चुनावों में आने से ८ वर्ष रहा। ब्रह्मा अभी भी होते हैं। जो कि कुल सेकण्ड कम २ वर्ष की आयु पाते हैं [२ =१ वष १ मास सौर]। पूजे भी जाते हैं। किन्तु अन्धविश्वासी जनता नहीं मानते। सभी ब्रह्मा चतुर्मुखी (थॉम-राउण्ड-चक्कर) होते हैं। सभी ब्रह्मा वेद ज्ञान धर्मशास्त्र विधान बनाते बनाते पढ़ते रहते हैं। कमल-कर्णिका (केन्द्र) में उनका फ्लैट रहता है। कृष्ण-मन्दिर में तो रह चुके। अतएव अब राम-मन्दिर की भांति वर्तमान ब्रह्मा का मन्दिर भविष्य में अवश्य बनेगा (सामने किसी का मन्दिर नहीं बनता)। वाल्मीकि व्यास कालिदास गोस्वामी आदि के इतिहास की खोज मन्दिर पूजा आदि में आज भारत कटि-बद्ध है। सन् १८५७ में प्रथम वीर, कौन था ? सुभाष-प्रतीक्षा अभी भी की जा रही है। देखिए, ब्रह्मा की सीधी परिभाषा विधाता !?

पृथ्वी ब्रह्मा ने बनाया ५ करोड़ वर्षों में। कितनी ? के उत्तर में समुद्रान्तभाग का अभ्यास कीजिए। 'पंचाशत्कोटिविस्तीर्णा सशैलवनकानना। शिव भागवत आदि। दूसरी भाषा में (यजुर्वेद के पुरुष-सूक्त द्वारा) १ वर्षीय अयन-युग की भांति है। ब्रह्मा-निर्मित भूमि ब्रह्मा के १२ अष्ट के समान है। केवल १ अंगुल की जगह है (अतिष्ठद् दशांगुलम्)। वेद से पुराण तक की भाषा में १ अंगुल से ५ करोड़ योजन तक की भूमि है। जिसमें आज कई ब्रह्मा सहित ३ अरब मानव-भूत रहते हैं। इतनी छोटी-बड़ी संख्या वाली भूमि का माप छोटी संख्या का गणित स्लेट में और बड़ी संख्या का गणित गुरुतत्त्वरचनात्मक लेखनी पत्रमुद्री।" लेकर बनाये दे रहे हैं।

५ करोड़ योजन (योजनफल) = $\left[\frac{१ \quad \times २२ \times १ \quad \times ४ \times १}{७ \times ४ \times ६} \right]$ = १० योजन भूव्यास

दिन = ३२।१६।५ सौरमासादि = ३३।१६।५ चान्द्रमासादि । १४६१ दिन = अश्वमेध वर्ष = दिव्ययुग = ४८ सौर-सावन मास = ४६ चान्द्रमास । दिव्य = राजकीय योजना । मानुष = धार्मिक योजना । आज भी चान्द्रमास से व्रतोत्सव और सौरमास से राजकीय कार्य किया जाता है । इस प्रकार चतुर्युग शब्द से ४ वर्ष और १००० वर्ष का, लघु और मध्यम-मान है । द्विवर्ण = सौर-चान्द्र-युग १००० दिनात्मक । इन दोनो (४ और १०००) के सामञ्जस्य से, आगे के लेख मे, ऐतिहासिक गवेषणा की गई है । हाँ, ब्रह्मा की पूर्णायु १००० दिन की अथवा १४६१ दिन की अथवा १००० × २ × ३६० × १०० = ७२०००००० वर्ष की होती है ।

अयन ३६० अंश = १२ राशि = २७ नक्षत्र । एक नक्षत्र = १३ अंश, २० कला = ८०० कला । स्थूल रीति से ८०० कला = १००० वर्ष । ७१ ६ × १३।२० = ९५४ ६७ सौरवर्ष । १००० – ९५४ ६७ = ४५ ३३ (कालान्तर) । चूंकि केतकी द्वारा अयन के एक अंश में ७१ ६ सौर वर्ष होते हैं । तब १३ अंश २० कला में ९५४ ६७ सौर वर्ष होते हैं । इस प्रकार ४५ ३३ वर्ष, शेष रहते हुए भी, कालान्तर संस्कार से युक्त, यह काल १००० वर्षीय पूर्वोक्त (युगपद-वर्णित) कृतादि चतुर्युग की भाँति है । १००० वर्ष = २५० लघुकल्प = १ महाकल्प = १ महायुग = ब्रह्मा के १२ घण्टे = १००० नैमिषारण्य के ऋषि = १००० योजन भूव्याम = १००० युग (नर-नारी, ब्रह्मा-सृष्टि) । अयन के २७ नक्षत्र मे २७००० वर्ष (अयन महाकल्प में, सूक्ष्मता से २५७७६ वर्ष = ९५४ ६७ × २७) होते हैं । इस २७००० वर्ष की समाप्ति या रेवत्यन्त विन्दु पर, अयन-चक्र आने का समय, ई० पूर्व ३१०२ (ता० १८ फरवरी दिन के २।२७।३० वजे—वेली) वर्ष में हुआ था । यही २७००० वर्ष = २७ युग की समाप्ति तथा २८ वें युगारम्भ का समय था । प्रथम १००० वर्ष के मध्य, सप्तम पद्म-कल्प था । ई० पूर्व ३१०२–२९७४ तक, पद्म (पृथ्वी) का उद्भव एव वृद्धि होती रही । ३१०२ + १९५७ ई० = ५०५९ वर्ष गत । ५००० वर्ष = ५ अयन युग × १३।२० नक्षत्रमान = ६ अंश ४० कला + ४९।२४ (५९ वर्ष की अयन-गति) = ७।२९।२४–४४।५ (कालान्तर) = ६।४५।१९ [ज्योतिर्गणित, पचागाध्याय, पृष्ठ ६४] । ३० – ६।४५।१९ = २३।१४।४१ अयनांश [इस ग्रन्थ का पृष्ठ ७१ । शके १८७९ = ई० १९५७ । इसी अयनांश के द्वारा, भारत तथा इंगलैण्ड के पचागों का निर्माण, आज भी हो रहा है]

सप्तर्षि एक नक्षत्र में १०० वर्ष रहते हैं । "तेनैत ऋषयो युक्तास्तिष्ठन्त्यब्दशत नृणाम् । २८ ।" भागवत १२–२ । एक शताब्दी = सप्तर्षि का १ नक्षत्र । २७ नक्षत्र में २७०० वर्ष । यह भी २७ युग माने जाते हैं । कृतादि चतुर्युग = १००० वर्ष = १० सप्तर्षि-नक्षत्र = १ अयन-नक्षत्र = २५० लघु-कल्प-वर्ष (सौर-सावन-चतुर्युग) । २७०० वर्ष का, एक सप्तर्षि-महाकल्प होता है ।

कृतयुग	४०० वर्ष	= ४ सप्तर्षि नक्षत्र	= १०० अश्वमेधवर्ष	= ४ जीभ	= श्वेत मुख
त्रेता	३०० ,,	= ३ ,,	= ७५ ,,	= ३ ,,	= रक्त ,,
द्वापर	२०० ,,	= २ ,,	= ५० ,,	= २ ,,	= पिंगल ,,
कलि	१०० ,,	= १ ,,	= २५ ,,	= १ ,,	= कृष्ण ,,
१ महायुग =	१००० ,,	= १० ,,	= २५० ,,	= १ अयन–नक्षत्र	
५ ,, =	५००० ,,	= ५० ,,	= १२५० ,,	= ५ ,,	
२७ ,, =	२७००० ,,	= २७० ,,	= ६७५० ,,	= २७ ,,	

१४ पीढ़ी में रहा ।] इस क्रम से सोमयाग-अश्वमेध का योग-कॉल १२ वर्ष में (गाकाश-सौर-सावन-चान्द्र योग) होने से भारी महोत्सव किया गया। संसार का सबसे बड़ा यज्ञ था। आकाश-भूमि स्वर्ग-मर्त्य ईरान-भारत राजा-प्रजा राजनीति-धर्म सम्बन्धी सबका उत्सव एक साथ में था। इस महान् यज्ञ का वर्णन अनेक स्थलों में मिलता है। इस यज्ञ की सबसे बड़ी विशेषता यह मिली कि १२ वर्षीय (४ मास = १२ वर्ष) लेखनी चलने के बाद विरोतरी-दशा का निर्माण किया गया। हाँ जी' !

जी पाठक जी आपके सम्बोधन के आगे जी' अक्षर मिला देने से प्रसन्नता के साथ सुरुचि का आनन्द न मिला होगा। कारण जी' है। जी के अर्थ हैं जीव 'जी की जरन न जाय।' यह तो नहीं आप गोस्वामी-साहित्य में पढ़िए। हमारा जी खट्टा न कीजिए। ऋग्वेद १ मण्डल १३ सूक्त ८ मन्त्र में 'इन्द्र आर्य' शब्द का प्रयोग किया गया है। ऐसा आर्य शब्द सैकड़ों स्थलों में प्रयुक्त है। भारत-देवियाँ अपने ससुर को आर्य तथा पति को आर्य-पुत्र भी कहती रही हैं। [अब तो पति को 'बाबू' कहने का अभ्यास कर चुकी हैं] पिता के लिए आर्य पितृ-भूमि के लिए आर्य भूमि का प्रयोग किया गया है। फलतः आर्य शब्द श्रेष्ठ-वाची अर्थ में वैवस्वत-काल से भारत में उपयोग किया जाने लगा था। जैसे ष को ख औषधि को ओखधि शीर्षा को सीर्षा वेदों आरम्भ में कहना पड़ता है। वैसे ही हिन्दी में यमुना को जमना प्रयोग किया जा रहा है। आर्य आर्यो आरयी आरजी जी— क्रमशः आर्य शब्द का अपभ्रंश हो गया। [देखिए, अपभ्रंश प्रकाश]।

युग 'युग = योग = मीलन = जोड़ = १ + १ = चक्र = Cycle = मनु = मन्वन्तर = ऋषि = कल्प = ४ सौर वर्ष = १४६१ दिन। [एक युग = दो वर्ष = दो अयन = एक राज्यकाल = एक संस्कृतिकाल = एक Seasons = ऋतु = काल = अवसर]। ४ सौर वर्षों में १ अश्वमेध होता था' —समझ में आने के लिए, पिछले पृष्ठों में कई बार लिखा जा चुका है। इस चारवर्षीय काल को युग चतुर्युग कल्प मनु आदि इस लिये कहा गया है कि चार वर्ष में सौर-सावन को युग किया (जोड़ा) गया साथ ही चतुर्युग = चार वर्षों में युग (जोड़) हुआ। अश्वमेध में मनु और ऋषि का एकेकाल होकर, राज्य कार्य चलता था। ४ वर्ष के मनु-भेद से मन्वन्तर तथा ऋषि-भेद से कल्पान्तर होकर नव-निर्माण होता था। कुछ विषय पूर्ववत् रहते थे और कुछ विषय बदल जाते थे। प्रतिमन्वन्तरं चैव श्रुतिरन्या विधीयते। ऋचो यजूंषि सामानि यथावत् प्रति दैवतम् ॥५७॥ वायु ५१। मत्स्य १४५। 'मन्वन्तरे परावृत्ते स्थानान्युत्सृज्य सर्वशः। मन्त्रैः सहोर्ध्वं गच्छन्ति महर्लोकमनामयम् ॥११६॥" वायु ६१॥ 'महेति व्याहृतेनैव महर्लोकस्ततोऽभवत्। विनिवृत्ताधिकारणां देवानां यत्र वै क्षयः ॥२३॥ वायु १ १। ब्रह्मा द्वारा मह' (महान्) कह जाने के कारण वह स्थान महर्लोक हो गया। अधिकार की समाप्ति पर, देवता लोग वहीं निवास करते हैं। इस प्रकार अश्वमेधीय चुनाव का विशेष महत्त्व था। इसके द्वारा राजनैतिक कार्यों का विशेष सम्बन्ध था। १ दिनान्त को युग बताया गया है। इसके द्वारा धार्मिक कार्यों एवं सम्मेलनों का विशेष महत्त्व था। इसके बाद एक चतुर्युग शब्द और भी बताया गया है। एषा चतुर्युगावृत्तिरासहस्रात्प्रवर्तते। ब्राह्ममेतदहः प्रोक्तम् ॥११४॥" वायु ५८। सूर्यसिद्धान्त १ अध्याय २ श्लो.। महाभारत वनपर्व १८८। कृत त्रेता द्वापर कलि नामक चतुर्युग का चक्र १ सौर (दिव्य) वर्ष का होता है। इसी में ब्रह्मादिन का १२ घण्टा होता है। दो प्रकार के युग होते हैं। देव (दिव्य) और मानुष [महाभारत 'सौप्तिक पर्व २८ और ऋग्वेद] देव-भवन (ब्रह्मावर्त) में प्रयुक्त दिव्य-युग तथा मनु-प्रदेश (अयोध्या) में प्रयुक्त मानुष-युग होता था। दिव्य = सौर। मानुष = चान्द्र। १

दिन = ३२।१६।५ सौरमासादि = ३३।१६।५ चान्द्रमासादि। १४६१ दिन = अश्वमेघ वर्ष = दिव्ययुग = ४८ सौर-सावन मास = ४९ चान्द्रमास। दिव्य = राजकीय योजना। मानुष = धार्मिक योजना। आज भी चान्द्रमास से व्रतोत्सव और सौरमास से राजकीय कार्य किया जाता है। इस प्रकार चतुर्युग शब्द से ४ वर्ष और १००० वर्ष का, लघु और मध्यम-मान है। द्विवर्ण = सौर-चान्द्र-युग १००० दिनात्मक। इन दोनो (४ और १०००) के सामञ्जस्य से, आगे के लेख में, ऐतिहासिक गवेषणा की गई है। हाँ, ब्रह्मा की पूर्णायु १००० दिन की अथवा १४६१ दिन की अथवा १००० × २ × ३६० × १०० = ७२०००००० वर्ष की होती है।

अयन ३६० अंश = १२ राशि = २७ नक्षत्र। एक नक्षत्र = १३ अंश, २० कला = ८०० कला। स्थूल रीति से ८०० कला = १००० वर्ष। ७१ ६ × १३।२० = ९५४ ६७ सौरवर्ष। १००० − ९५४ ६७ = ४५ ३३ (कालान्तर)। चूंकि केलकी द्वारा अयन के एक अंश मे ७१ ६ सौर वर्ष होते हैं। तब १३ अंश २० कला में ९५४ ६७ सौर वर्ष होते हैं। इस प्रकार ४५ ३३ वर्ष, शेष रहते हुए भी, कालान्तर सस्कार से युक्त, यह काल १००० वर्षीय पूर्वोक्त (युगपद-वर्णित) कृतादि चतुर्युग की भाँति है। १००० वर्ष = २५० लघुकल्प = १ महाकल्प = १ महायुग = ब्रह्मा के १२ घण्टे = १००० नैमिषारण्य के ऋषि = १००० योजन भूव्यास = १००० युग (नर-नारी, ब्रह्मा-सृष्टि)। अयन के २७ नक्षत्र में २७००० वर्ष (अयन महाकल्प में, सूक्ष्मता से २५७७६ वर्ष = ९५४ ६७ × २७) होते हैं। इस २७००० वर्ष की समाप्ति या रेवत्यन्त विन्दु पर, अयन-चक्र आने का समय, ई० पूर्व ३१०२ (ता० १८ फरवरी दिन के २।२७।३० वजे—वेली) वर्ष में हुआ था। यही २७००० वर्ष = २७ युग की समाप्ति तथा २८ वें युगारम्भ का समय था। प्रथम १००० वर्ष के मध्य, सप्तम पद्म-कल्प था। ई० पूर्व ३१०२–२९७४ तक, पद्म (पृथ्वी) का उद्भव एव वृद्धि होती रही। ३१०२ + १९५७ ई० = ५०५९ वर्ष गत। ५००० वर्ष = ५ अयन युग × १३।२० नक्षत्रमान = ६ अंश ४० कला + ४९।२४ (५९ वर्ष की अयन-गति) = ७।२९।२४–४४।५ (कालान्तर) = ६।४५।१९ [ज्योतिर्गणित, पचागाध्याय, पृष्ठ ६४]। ३० − ६।४५।१९ = २३।१४।४१ अयनाश [इस ग्रन्थ का पृष्ठ ७१। शके १८७९ = ई० १९५७। इसी अयनाश के द्वारा, भारत तथा इगलैण्ड के पचागों का निर्माण, आज भी हो रहा है]

सप्तर्षि एक नक्षत्र में १०० वर्ष रहते हैं। "तेनैत ऋषयो युक्तास्तिष्ठन्त्यब्दशत नृणाम्। २८।" भागवत १२–२। एक शताब्दी = सप्तर्षि का १ नक्षत्र। २७ नक्षत्र में २७०० वर्ष। यह भी २७ युग माने जाते हैं। कृतादि चतुर्युग = १००० वर्ष = १० सप्तर्षि-नक्षत्र = १ अयन-नक्षत्र = २५० लघु-कल्प-वर्ष (सौर-सावन-चतुर्युग)। २७०० वर्ष का, एक सप्तर्षि-महाकल्प होता है।

कृतयुग	४०० वर्ष	= ४ सप्तर्षि नक्षत्र	= १०० अश्वमेधवर्ष	= ४ जीभ	= श्वेत मुख
त्रेता	३०० ,,	= ३ ,,	= ७५ ,,	= ३ ,,	= रक्त ,,
द्वापर	२०० ,,	= २ ,,	= ५० ,,	= २ ,,	= पिंगल ,,
कलि	१०० ,,	= १ ,,	= २५ ,,	= १ ,,	= कृष्ण ,,
१ महायुग =	१००० ,,	= १० ,,	= २५० ,,	= १ अयन-नक्षत्र	
५ ,, =	५००० ,,	= ५० ,,	= १२५० ,,	= ५ ,,	
२७ ,, =	२७००० ,,	= २७० ,,	= ६७५० ,,	= २७ ,,	

प्रयाग 'विस्तरयोऽप्युदितं संक्षेपाद् व्यावहारिकम्। मध्यमानयनं कार्यं ब्रह्मसामिष्टतो युगात् ॥"— सूर्यसिद्धान्त अध्याय १ ॥ सूर्यसिद्धान्त में स्पष्ट कहा गया है कि ४३२ वर्ष का कलियुग। ८६४ ० वर्ष का द्वापर। १२९६० ० वर्ष का त्रेता। १७२८ वर्ष का सत्युग नामक जो युगमान बताया है, वह, विस्तार से कहा गया है। किन्तु व्यावहारिक नहीं है। संक्षेप वाला व्यावहारिक है। संक्षेप वाला कौन ? इस प्रश्न के उत्तर में विस्तृत मध्यम लघु आदि तीनों प्रकार के प्रमाण द्वारा युगमानों का प्रयोग होना चाहिए। [कोई वाक्य खण्डित नहीं]। विस्तृत वाला युगमान ४३२० ० वर्ष का है। अवश्य ध्यान रखिए कि यह 'कला का वर्ष' है। जिसके वर्ष कला कम कला होते हैं। 'कलाख्यायां प्रवृत्तायां प्राप्ते त्रेतायुगे तदा। वर्णाश्रमव्यवस्थानं कृतवन्तस्तथ वै पुनः' ॥८७॥ वायु ५७ ॥ इसका कथासन्दर्भ इस प्रकार है कि शांशपायन ने श्री सूत जी से पूछा कि पूर्व काल में (स्वायम्भुव मनु के आदि त्रेताकाल में) यज्ञ का किस प्रकार से प्रचार हुआ। इसी बात को दूसरे प्रकार से पुन कहा गया कि 'जब सत्युग के साथ उसकी सन्धि भी समाप्त हो गयी और 'कलाख्या' (कलियुग) में त्रेतायुग आने पर ऋषियों तथा स्वायम्भुव मनु ने किस प्रकार पुन वर्णाश्रम-व्यवस्था की ? इस श्लोक में जो कलाख्या शब्द आया है। उसका स्पष्ट-रूप इस प्रकार है —

देखिए अयनपद। ८ कला=१ वर्ष (१२ मास २ कला में)। इस ८ को केवल 'कला' शब्द ध्यान में रखिए। कला=१ ० (अयनांश) वर्ष। १ का दशमांश आदि-अन्त में सन्धि काल=२ वर्ष। कला-वर्ष + २ =ससन्धि कला-वर्ष =१२ ० सौर वर्ष (दिव्य वर्ष)। १२ वर्ष (अयनांश ×३६ =(विकला)=४३२० ० वर्ष = [८ कला के वर्ष =कला के वर्ष =कले वर्षाब्धि ४३२] यह विस्तृत मान वाला वर्षारम्भ [सर्व सम्मति से] ई. पूर्व ३१ २ वर्ष से प्रारम्भ हुआ। 'शाको नवाद्रीन्दुकृशानुयुक्तः [शाके + ३१७९ = ई. + ३१०२] कलेर्भवेदब्दगणो व्यतीतः ॥ ई १९५७+ ३१ २=५ ५९ वर्ष [इसी मान से अयनपद में अयनांश लिखा जा चुका है]। प्रसिद्ध है कि २८ वाँ कलियुग है। २७ वर्षीय २७ महायुग (१ वर्षीय १ महायुग) ई. पूर्व ३१ २ में समाप्त हुए। और २७ महायुग के बाद २८ वाँ महायुग ई पूर्व ३१ २-२१ २ में रहा। २९ वाँ महायुग ई. पूर्व २१ २ ११ २। ३ वाँ महायुग ई पूर्व ११ २–१ २। ३१ वाँ महायुग ई. पूर्व १ २ से ८९८ ई तक। ३२ वाँ महायुग ८९८ १८९८ ई। यह युग अयन-पद में निर्दिष्ट १ वर्षीय मध्यम-मान का चतुर्युग है। (देखिए सप्तर्षि-पद)। लघुमान से ४ वर्षीय चतुर्युग अश्वमेध-पद में देखिए।

युगारम्भ के ३१ २ वर्ष बाद ई सन् के प्रचार होने के कारण अब आपको युग शब्द की कोई आवश्यकता नहीं रही। यहाँ ब्रह्मा से आज तक (ई पूर्व ३१ २ से १९५७ ई तक) एक संक्षेप से दिग्दर्शन कराने को प्रयत्नशील हैं। पुराणों के कारण ई पूर्व ३१ २ से ५९८ ई तक युग शब्द की विशेष आवश्यकता है। ई १८८५ से कांग्रेस युगारम्भ। ई १८९९ से तिलक युगारम्भ। ई १९२ अगस्त से गान्धी युगारम्भ। ['मीना एकादश तिथिम् ।३१। मौक्यमत्यध्ययनात्न्यकृ— मीथि ।३२। भागवत १२ १] वा २६।१। १९४९ को स्वतन्त्र-युगारम्भ हुआ। ई १८९८ से २२९८ तक षष्ठ-महायुग का सतयुग चल रहा है। इस प्रकार आपके समक्ष अर्थीपारमक 'युग' शब्द है। [ई. १९२० से मौन ८ बौद्ध-धर्मी युग प्रारम्भ हुआ]

(२८वां) सतयुग ई पूर्व ३१०२ – २७०२ वर्ष
त्रेता ,, २७०२ – २४०२ ,,
द्वापर ,, २४०२ – २२०२ ,,
कलि ,, २२०२ – २१०२ ,,
(३०वां) सतयुग ,, ११०२ – ७०२ ,,
त्रेता ,, ७०२ – ४०२ ,,
द्वापर ,, ४०२ – २०२ ,,
कलि ,, २०२ – १०२ ,,
(३२वां) सतयुग सन् ८९८ – १२९८ ई
द्वापर ,, १५९८ – १७९८ ,,

(२९वां) सतयुग ई पूर्व २१०२ – १७०२ वर्ष
त्रेता ,, १७०२ – १४०२ ,,
द्वापर ,, १४०२ – १२०२ ,,
कलि ,, १२०२ – ११०२ ,,
(३१वां) सतयुग ,, १०२ से २९८ ई
त्रेता सन् २९८ – ५९८ ,,
द्वापर ,, ५९८ – ७९८ ,,
कलि ,, ७९८ – ८९८ ,,
त्रेता ,, १२९८ - १५९८ ,,
कलि ,, १७९८ – १८९८ ,,

अणु "अणो अणीयान्महतो महीयान् ।" छोटे से छोटा और बडे से बडा रूप, परमात्मा, अणु, अक, लघुतम, महत्तम, ब्रह्मा आदि का होता है। २४ घण्टे में ८६४००० सेकण्ड होते हैं। एक सेकण्ड = ५४०००० तत्परस = १०८०००० त्रसरेणु = ३२४०००० परमाणु होते हैं। ८६४००० × ३२४०००० × ३६० × १००० × २ × १०० = ब्रह्मा परमाणु = २०१५५३९२ के आगे १३ शून्य [पृष्ठ ८ के द्वारा, २ ध्रुव १५ नील ५३ शख ९२ पद्म]। इसी की गति पर संसार है। इसे, अणु, तन्त्र, मन्त्र, सृष्टि, लय आदि में उपयोग किया जाता है। २०१५५३९२ = २ + ० + १ + ५ + ५ + ३ + ९ + २ = २७ = २ + ७ = ९ का अक स्थूल से सूक्ष्म तक व्याप्त है। इन्हीं ९ अक क प्रतीक, सूर्यादि नव-ग्रह हैं। २७ में २ का अक 'ऋण सज्ञक केतु' है और ७ का अक 'धन सज्ञक चन्द्र' है। लघु-महत्, परमात्मा है। इसी के मध्यम–मार्ग का उपयोग करके एक नयी बात, आपके समक्ष रखना चाहते हैं। किन्तु, बडी लम्बी सख्या, ज्ञानात्मक है, उपयोगी नहीं। २, ०, १, ५, ५, ३, ९, २ का लघुतम = २ × ५ × ३ × ३ = ९० = ९ + ० = ९ का अक, पूर्वोक्त की भाँति, लघु से लघु रूप में आ गया। यह ९ का अक, मन्त्र बन गया। × × × अभी यहाँ, दो महापुरुषों का महत्तम दिखा देना चाहते हैं। महाभारत, वनपर्व १८८ में, मानुषवर्ष १२०० में सतयुगादि ४ युगों का रहना, बताया गया है। यदि १२०० × ३६० = ४३२००० (दिव्य) वर्ष का एक मनु होता है तो, ४३२००० × ६८ (कहीं ७१) = २९३७६००० वर्ष का जीवन, वैवस्वत मनु का मान लिया जाय? कदापि नहीं। २ + ९ + ३ + ७ + ६ = २७ वर्षीय राज्यकाल (वैवस्वत मनु का) रहा था। एक बात ध्यान देने की है कि, वैवस्वत मनु से ६३ वीं पीढी में, श्रीराम हुए [भागवत, विष्णु आदि]। यदि समानता किया जाय तो, २९३७६००० ÷ ६३ = ४६६२९० वर्ष की आयु, श्री राम की हो जाती है। किन्तु इस प्रकार, इन दोनों महापुरुषों की आयु, विश्वस्त नहीं। वैवस्वत-कालीन वेद-निर्माण में, केवल शतायु का बोध कराया है। पुराणों के प्रति, दो शब्द ध्यान में रखिए कि, विषय का ठोस वर्णन, व्यास-कृत है, और जो, भ्रष्ट-वर्णन है। वह, बाद में ठूंसा गया है। [देखिए, विशेषता के लिए पुराण–पद]

भेद सबसे अधिक उपयोगी युग ४ और ५ वर्ष का है। १००० तिथ्यन्त, १४६१ दिन, १८२६ दिन में से, १४६१ दिन वाला युग, प्राचीन काल में तथा १८२६ दिन वाला अर्वाचीन काल में, राजनैतिक उपयोगी हुआ। "सवत्सरादय पच, चतुर्मान विकल्पिता. । १८२।" वायु ५०। १८२६ (५ वर्षीय), १४६१ (४ वर्षीय) युगमान ही वर्णित है। प्राचीन काल का पचवर्षीय युग—"माघमासस्यास्य पौषकृष्णा-

क्षय-मास होता है। संवत् २०२० में १४१ वें वर्ष वाला तथा सवत् २०३९ में १९ वर्ष वाला क्षय-मास होगा। चैत्र से आश्विन तक के मास ही बढते हैं [पुरुषोत्तम वर्ष]। माघ मास, क्षय-वृद्धि नहीं होता। इसीलिए पचवर्षीय युग, प्राचीन काल में, माघ शुक्ल प्रतिपदा से प्रारम्भ करते थे। शेष मास, क्षय हो सकते हैं। जिस वर्ष क्षय-मास होता है, उसी वर्ष में, दो पुरुषोत्तम मास होते हैं। १९ वर्षीय युग, ६९४० दिनात्मक, सौर-चान्द्र-ई० तारीख (तीनों) के सम्मेलन का रूप है। २०९ वर्ष के चक्र से, सौर-चान्द्र-दिन-ई० तारीख, (चारों) मिल जाते हैं। × × × ग्रहण का भी, लगभग १९ वर्षीय युग है। १९ वर्ष = १ युग = ७०-७१ ग्रहण = ४२ सूर्य के + २८-२९ चन्द्र के। जिसमें, एक ही स्थान पर दृश्य ७ सूर्य के + १८ चन्द्र के। शेष एक ही स्थान पर अदृश्य ३५ सूर्य के + १०-११ चन्द्र के। प्रत्येक ग्रहण, १८ वर्ष या १८ वर्ष ११ दिन या १८ वर्ष + १ मास में, अपना परावर्तन (टर्न) करता है। इस प्रकार, यह प्रभेद वर्ग है।

विंशति सामुद्रिक मत से, एक करागुलि-क्षेत्र का माप २० वर्षीय है। २० × ५ = १०० वर्ष = "शरद शतम्।" [दीर्घायुत्वाय वलाय वर्चसे, सुप्रजात्वाय। अथो जीव शरद शतम्]। इसे दूसरी भाषा में, प्रभवादि सवत्सरों की, ब्रह्मा-विष्णु-शिव नामक 'विंशति' कहते हैं। ई० पूर्व २६३७ वर्ष में, चीन में, इनका उपयोग हुआ और ई ७२० में ये, भारत में भी आ गये। यदि यहाँ के होते और ई ५०० के पूर्व के होते तो, पुराणों में, (कहीं युग के स्थान में) इनका उल्लेख अवश्य मिलता। [विंशति के साथ, ब्रह्मादि त्रिदेव तो, चिपक गये। पर, ब्रह्मादि त्रिदेवों के वर्णन-स्थल में, विंशति, चिपकी न दिखी] सख्या-गणना, १-२-३ आदि अगुलियों से की जाती है। अतएव करागुलि पर्व (पोर, पोरवा) एक विन्दु माना गया, १२ विन्दु × ५ = ६० विन्दु (वर्ष) के नाम, प्रभवादि है। पचाग में लिखे जाते हैं। सकल्प में, उच्चारण करने का आदेश है। पर, सध्या तो वर्तमान में ईश्वर करता है। ज्योतिषी, सूर्यास्त लिखते हैं। बस। इसे गुरुमानात्मक, ६० वर्षीय चक्र समझ लीजिए। × × × गोवी-मगोल, कल्कि-अवतार-भूमि है। [चीन के प्रसगवश लिखा गया]।

कृतयुग प्रचलित कृतयुग (सतयुग) से, यह दूसरा है। प्रचलित कृतयुग, १७२८००० वर्ण का है। इस ग्रन्थ में वर्णित, उपयोगी कृतयुग ४०० वर्ण का है। इस पद (Para) में लिखित कृतयुग, एक शताब्दी का है। ९०-१०० वर्ण के मध्य, इस कृतयुग का रूप आ जाता है।" यदा सूर्यश्च चन्द्रश्च यदा तिष्य वृहस्पती। एकराशौ समेष्यन्ति प्रपतस्यति तदा कृतम् ॥९०॥" महाभारत वनपर्व १९०। चान्द्रमास ११७५ = ९५ (९४ ८९) सौर वर्ष में, सूर्य-चन्द्र-गुरु (एक राशि में) आ सकते हैं [२३५ चान्द्र मास = १९ सौर वर्ष] ११३३ चान्द्र मास = सौर ९१ वर्ष ७ मास = १०८ अश (एक विन्दु) पर, सूर्य-चन्द्र-गुरु (श्लेषा के प्रथम चरण पर) आ सकते हैं। फिर ९२-९५ वर्ष को शताब्दी मान, क्यो लिखा ? 'क्षय सवत्सराणा च मासाना च क्षय तथा ।२०१।' महाभारत, शान्तिपर्व। जिस वर्ष में, तीन राशियों में, गुरु-भ्रमण होता है, उसे, लुप्त-सवत् कहते हैं [मुहूर्त-चिन्तामणि, शुभाशुभ प्रकरण ५३ श्लोक]। ता० ४-५ अगस्त (प्राय श्रावण मास) से, पूर्वोक्त कृतयुग प्रारम्भ हो सकता है। परन्तु कार्तिक शुक्ल ९ को कृतयुगारम्भ, बैशाख शुक्ल ३ को त्रेतारम्भ, माघ कृष्ण अमावास्या (प्रयाग-कुम्भ) को द्वापरारम्भ तथा भाद्रपद कृष्ण (उत्तरात्य आश्विन कृष्ण) १३ को कलि प्रारम्भ होता है। [मुहूर्त-चिन्तामणि, शुभाशुभ ५७]। इस कृतयुग के १०० वर्ष, सप्तर्षि नक्षत्र काल की भाँति है। ये, युगारम्भ तिथियाँ, १७२८००० आदि वर्षमान वालों की अवश्य हैं।

युक्ति सभी ग्रन्थ ही, युक्तियों के भाण्डार होते हैं। सत्य यह भी है, किन्तु आधुनिक भाषा में अपेक्षाकृत सुस्पष्ट। जिसमें पुराण साहित्य इतिहास गणित फलित आदि सम्बन्धी अनेक युक्तियाँ बतायी गयी हैं। युक्ति का बताना और समझना (दोनों) एक साथ हों तो युक्ति-प्रदर्शन उपयोगी है अन्यथा अरण्य रोदन है। सीधे से वेद (ज्ञान) देखा तो १ संख्या आयुर्वाची तथा १२ संख्या 'समवाची' है। (१) पश्येम शरदः शतम्। (२) नारकार्यं विषयपर्योविंशोत्तरी प्राह्या। (३) विस्तरेणैतदुदितं संक्षेपाद् व्यावहारिकम्।—आदि वाक्यों से केवल १००–१२ वर्ष ही आयुर्मान में ग्राह्य हैं। क्योंकि ४–५ वर्षीय युगों के महत्तम १ –१२० हैं। १ ० ÷ ४=२५=२+५=७ वाँ भाव आयु का पूर्ण। १२० ÷ ५ =२४=२+४=६ ठा भाव रोग का है। २५–७=२४–६=१८ वर्षायुर्मान का प्रतिफल (इस प्रकार) होता है। [भागवत द्वारा २ वर्ष से ३० वर्ष तक का आयुर्मान इसी ग्रन्थ-निवेदन में पढ़िए] १ ० वर्ष के दशमांश आद्यन्त सन्धिकाल से युक्त १ +१० +१०=१२ वर्ष हैं। १ ० सौर वर्ष से १२० चान्द्र वर्ष तक हैं। सौरमान से जन्मदिन वर्ष विवाह, आकाश-पाताल नाम गणित-कार्य जीवन में के कार्य किये जाते हैं। चान्द्रमान से मृत्यु के बाद वाले कार्य (पुण्य संचय कार्य और्ध्वदैहिक कार्य आदि) किये जाते हैं। क्योंकि योगियों (योग=जोड़ करने वाले गणितज्ञों) की गति सौर-मण्डल (सौर-मान) में होती है। किन्तु सांसारिक (साधारण) जन की गति चान्द्र-मण्डल (चान्द्र-मान) में है [गीता-पढ़िए। पंचाङ्ग-देखिए]। इसके प्रमाण प्रत्येक विद्वान्, जानते हैं। फलित-विज्ञान द्वारा सूर्य उष्ण एवं जीवनदायक उत्पादक कर्मठ है। किन्तु, चन्द्र का गुण शान्त (शीतलत्व=जड़त्व) बताया गया है। कर्मकाण्ड-विधान द्वारा मायकी-जन्म एवं जन्मोत्सव वर्षगाँठ आदि में सप्तर्षियों से शतायु का आशीर्वाद होने से सौरमण्डलीय है। गरुड़ पुराण द्वारा चान्द्र-सौर संस्कार के बाद चान्द्र-संस्कार (भूमि या जल में अस्थि-विसर्जन) मान्य होता है। अतएव यह चान्द्रमण्डलीय है। 'संवत्सरशते पूर्णे याति संवत्सरं क्षयम्। देहिनामायुषः काले यत्र यन्मानमिष्यते ॥' चरक विमान-स्थान ३ इत्यादि अनेक मतों से १००-१२ संख्या का यथा-स्थान उपयोग करना चाहिए।

वाराह १ वर्षीय प्रथम युग=प्रथममहायुग=सप्तम पद्म कल्प ई. पूर्व ३१ २ २१ २ के मध्य रहा था। [ई. पूर्व २१ २–११ २ में प्रथम वाराह कल्प रहा था]। इस पद्म कल्प में ई. पूर्व २१८६–२१८२ के मध्य ३ वाँ रथन्तर कल्प था। ई. पूर्व २१८२–२१७८ के मध्य ३१ वाँ श्वेत कल्प था। ई. पूर्व २१७४–२१७ के मध्य में नाभ्य गोमीय आनन्दाख्य ब्रह्मा द्वारा ब्रह्मावर्त (थानेसर-कुरुक्षेत्र पंजाब) का निर्माण प्रारम्भ किया गया। ई. पूर्व २१७०–२१६६ में स्वायम्भुव मनु हुए। प्रथम त्रेतायुग के नवम युग में अथवा ब्रह्मावर्त-निर्माण के १ वर्ष बाद स्वायम्भुव मनु हुए थे। वायु-पुराण के विभिन्न स्थल। "आसीत् सप्तम कल्प पद्मो नाम द्विजोत्तमः। वाराहः साम्प्रतस्तेषां तस्य वक्ष्यामि विस्तरम् ॥ १३॥" वायु २१। 'तत्र त्रेतायुगस्यादौ मनुः स्वायम्भुवोऽभवत् ॥ २१४ ४१ ॥" वायु ५७। यथा राज्य सप्तरुपसमायो कृतयुगेऽभवन्। — 'अथ त्रेतायुगमुखे यज्ञस्यासीत्प्रवर्तनम्। पूर्वं स्वायम्भुवे सर्गे यथावत् प्रवक्षीहि मे ॥८५–८६॥" वायु ५७। तथा 'प्रयोग' में युग-स्थिति देखिए। (१) स्वायम्भुव मनु का जीवन ७१ वर्ष रहा। ये ई. पूर्व २१७ –२१११ तक अश्वमेध के चुनाव में रहे। ये प्रथम मनु हुए थे। इन्होंने मैथुनी-सृष्टि प्रारम्भ किया था। इसके पूर्व का कोई ठीक पता नहीं चलता। (२) स्वारोचिष मनु ई. पूर्व २१११–२११२। (३) उत्तम मनु ई. पूर्व २११२ २१२८। (४) तामस मनु ई. पूर्व २१२८–२१२४। (५) रैवत मनु ई. २१२४ २११ । (६) चाक्षुष मनु ई. पूर्व २४२२–२४१८ [यह प्रथम त्रेता के ७१ वें युग में हुआ था]

इस स्वायम्भव मनु के वश में केवल ६ मनु हुए। प्रथम त्रेता के नववें युग में स्वायम्भव मनु तथा ७१ वें युग में चाक्षुष मनु हुआ। सप्तम वैवस्वत मनु ई० पूर्व २१५०–२१४६ के मध्य हुआ। चाक्षुष मनु से ६८ वें युग में वैवस्वत हुए थे। इन वैवस्वत के पिता, इसी चाक्षुष मन्वन्तर में उत्पन्न हुए थे। "विवंस्वानदिते पुत्रः सूर्यो वै चाक्षुषेऽन्तरे। विशाखासु (२२० अश) समुत्पन्न ग्रहाणा प्रथमो ग्रह ॥१०४॥" वायु ५३। ब्रह्माण्ड २४–१३२। स्वायम्भुव षट् मन्वन्तर [ई० पूर्व २६७०–२१५० = ५२० वर्ष]।

मनु स्वायम्भुव ई पूर्व २६७०-२६६६ [मन्वन्तर ५२० वर्ष में १८ राजा = २९ वर्ष में एक राजा] इनके दो पुत्र थे। प्रियव्रत और उत्तानपाद (वायु ६२-६३)।

१	प्रियव्रत	उत्तानपाद	ई पूर्व २६४३
२	अग्नीन्ध्र	ध्रुव	,, २६१६
३	नाभि	पुष्टि	,, २५८९
४	ऋषभदेव	प्राचीन गर्भ	,, २५६२
५	मनुर्भरत (जडभरत)	उदारधी	,, २५३५
६	सुमति	दिवंजय	,, २५०८
७	इन्द्रद्युम्न (तैजस) परमेष्ठी	रिपु	,, २४८१
८	प्रतिहार (प्रतीह)	चक्षुष्	,, २४५४
९	प्रतिहर्ता	चाक्षुष्	,, २४२७
१०	उन्नेता	ऊरु	,, २४००
११	भुव (भूमा)	अग	,, २३७३
१२	उद्ग्राम्य (उद्गीथ)	वेन	,, २३४६
१३	प्रस्तार (प्रस्तावि)	प्रथु	,, २३१९
१४	पृथु (विभु)	अन्तर्धि	,, २२९२
१५.	नक्त	हविर्धान	,, २२६५
१६	गय	प्राचीन–वर्हिष	,, २२३८
१७	नर (चित्ररथ)	प्रचेतस	,, २२२१
१८	विषग्ज्योति (शतजित्)	दक्ष (सती-पिता)	,, २२०६

इनमें अग्नीन्ध्र ने जम्बूद्वीप वसाया। परमेष्ठी नामक ब्रह्मा, अति प्रसिद्ध हुए। ध्रुव की प्रसिद्धि, जन-जन में है। ऊरु और उसके भाई तपस्वी, अतिरात्र, अभिमन्यु, अगिरा ने मिलकर, सिन्ध, अफगानिस्तान, ईराक, टर्की, अरब, सीरिया, आफ्रिका, मेडागास्कर को विजय किया। स्वर्गलोक बसाया। ट्राय-युद्ध के विजेता वायविल के शैतान, अवस्ता के अहरिमन, ग्रीक के मैन्यु, अरव के मेमना, आपके पुराणों के अगिरा-मन्यु थे। इनके समय में, कैस्पियन-सागर-समीप, वाँकू-ज्वालामुखी के फटने से, वर्फीले वाँध टूट गये। फलत प्रलय हो गया। ससार के सभी साहित्यों में, इस प्रलय का वर्णन मिलता है। हमारे पुराणों में "प्रलय के बाद वरुण (ब्रह्मा) ने क्या किया ?" लिखा पाया जाता है। स्वर्गलोक नष्ट हो गया। अग, चक्रवर्ती नरेश हुआ। वेन ने, ऋग्वेद की रचना की, पृथु ने कृषि प्रारम्भ किया। दक्ष तो, अत्यन्त प्रसिद्धि पायी। चाक्षुष–मनु वशी, खादियन [इतिहास प्रसिद्ध खाल्डियन] रवि-गण थे।

ऋग्वेद ई पूव २४८६ से १३ २ तक सिखा जाता रहा [११८४ वर्ष = २१६ लघुकल्प = १ महायुग + ४६ लघुकल्प [संसार का आदिम ग्रन्थ = ऋग्वेद। वेन-पृथु काल में इसका विकास प्रारम्भ हुआ। वही वेदोदयकाल कहा गया। किन्तु, इसके पूर्व की भी कुछ रचनाएँ हैं। उत्तरकुरु इलावृत रम्यक और भारत में इसकी रचना हुई। दूसरे शब्दों में स्वर्गलोक ब्रह्मलोक देवलोक भूमि आर्यावर्त ब्रह्ममण्डल सूर्यमण्डल में इसका निर्माण हुआ। स्थूल रीति से १२० वर्ष में रचना पूर्ण हुई। सबसे अधिक भाग भारतवर्ष में ही लिखा गया। अन्य वर्षों के भी कुछ वर्णन हैं। जिनकी भौगोलिक जानकारी करना प्रायः दुःसाध्य है। जैसे-जैसे जम्बूद्वीप की वृद्धि हुई, वैसे-वैसे वेद रचना परिवर्धित की जाती रही। दैत्य-देव काल से वशिष्ठ-विश्वामित्र काल तक का वर्णन अधिक मात्रा में है। शेष वर्णन साधारण है। देवकाल में खोज अधिक तथा आर्यकाल में विचार-विनिमय अधिक किया गया। उस काल में राजनैतिक-क्षेत्र की भाषा वेद-वाणी रूप में थी।

सप्तद्वीप इसके वर्णन दो प्रकार से मिलते हैं। किन्तु, कौन विश्वस्त है, इसे पाठक स्वयं विचार करेंगे। (१) जम्बूद्वीप (इसका विवरण जम्बूद्वीप में पढ़िए)। क्षारसमुद्र = कालासमुद्र। (२) प्लक्ष = जर्मनी। इक्षु समुद्र = अड्रियाटिक। (३) शाल्मली = ईराम। सुरासमुद्र = कैस्पियन सागर। (४) कुश = अफ्रीका। घृतसमुद्र = लालसागर। (५) क्रौंच = कश्मीर काबुल रशिया, चीन। क्षीरोद समुद्र = मानसरोवर, ब्रह्मपुत्र नद। (६) शाक = दक्षिणी रूस सीसतान से [स्यालकोट] सिन्धु तक। तक समुद्र = सिन्धनद पंचनद। (७) पुष्कर = अजमेर राजपूताना। शुद्धोद समुद्र = त्रिपुष्कर कुण्ड। इससे भी बहुत प्राचीन आर्य लिखे जा रहे हैं। (१) जम्बूद्वीप (अग्नीध्र राज्य) कश्मीर। जम्बूनद = चिनाब। क्षार समुद्र = लवण समुद्र = सैन्धव नमक के पर्वत (राजमपिण्डी)। क्षार = कषाय गुण युक्त या नमक को खान सिन्धुनद का प्रान्त है। क्षार, पाचक-वाची शब्द है। जम्बूफल का रस भी क्षार है (खारा नहीं)। झेलम-चिनाब के मध्य सेंधा नमक के पर्वत मास्यकार) हैं। (२) प्लक्षद्वीप (इध्मजिह्वराज्य) यमुना से काली नदी तक (मेरठ-रुहेलखण्ड)। इक्षुसमुद्र = इक्षुमती नदी (काली नदी) रुहेलखण्ड में। (३) शाल्मलिद्वीप (यज्ञबाहु राज्य) झेलम चिनाब के मध्य मदिरा समुद्र = मतवाला समुद्र (झेलम नद)। (४) कुशद्वीप (हिरण्यरेता राज्य) हरद्वार के आसपास का प्रदेश हरद्वार में कुशावर्त है। घृतसमुद्र = घृतसखा नामक सरोवर = पिहोवा (अम्बाला-पंजाब)। क्रौंचद्वीप का स्वामी घृतपृष्ठ था तब घृतमस्ति यस्मिन् पृष्ठेऽसौ घृतपृष्ठ' ।' (५) क्रौंचद्वीप (घृतपृष्ठ राज्य) = क्रौंच पर्वत = कैलाश की एक शाखा जिस पर मानसरोवर झील है। क्रौंचवास (सफेद कोह, सीमाप्रान्त) क्षीरोद समुद्र = ब्रह्मपुत्र (सांपू नदी तिब्बती भाषा में)। (६) शाकद्वीप (मेधातिथि राज्य) चिनाव-रावी का मध्यभाग। स्यालकोट राजधानी। तक्रसमुद्र = रावी नदी। एक बार यहाँ इन्द्र ने अभियान किया था किन्तु, परास्त होकर लौटना पड़ा। तब की मसल मशहूर है कि 'तक्र शक्रस्य दुर्लभम्।' (७) पुष्कर द्वीप (वीतिहोत्र राज्य) राजपूताना-अजमेर-पुष्कर। शुद्धोद समुद्र = त्रिपुष्कर कुण्ड। यह परिचय अधिक प्राचीन है। उस समय संसार का आदिम रूप था। अतएव स्वायम्भुव मनुपुत्र प्रियव्रत ने इस ससागरा सप्तद्वीपा पृथ्वी को बनाकर, पूर्वोक्त अपने सात पुत्रों में बाँट दिया था। इसके बाद जम्बूद्वीप राज्य में ही ये सभी द्वीपों के राज्य समा गये। अग्नीध्र ने जम्बूद्वीप जोकि बृहत् हो रहा था —के ९ खण्ड कर अपने पुत्रों में विभाजित कर दिया था।

उत्कल 'रेणुका शूकर काशी काली काल बटेश्वर। कालिञ्जरो महाकाल उत्कला नव कीर्तय॥'' रेणुका (आगरा के पास) शूकर (सोरों एटा उत्तरप्रदेश) काशी (वाराणसी) काल (कड़ा इलाहाबाद)

वटेश्वर (आगरा प्रान्त में), कालिञ्जर, (बाँदा में, उत्तरप्रदेश), महाकाल (उज्जैन), काली (कलकत्ता), कीर्ति (कीर्तिनगर, देवप्रयाग से १६ मील, गढवाल, उत्तरप्रदेश)। इन नव स्थानो को 'ऊखल-स्थान' कहा गया है। 'प्रलयकाल में, इन ऊखलों से, जल निकलकर सारी पृथ्वी को डुवा देगा।' किन्तु यदि, ध्यानपूर्वक देखा जाय तो, ये ६ स्थान केवल, गगा-यमुना के कछारों पर हैं। केवल, गगा-यमुना में वाढ आकर, सारी पृथ्वी अर्थात् अमेरिका आदि का डूवना, असम्भव है। हाँ, गंगा और यमुना एव मालवा के कछारों में हानि हो सकती है। तव, यह प्रलय हुआ और हस्तिनापुर वहकर, कौशाम्वी के किनारे जा लगा। साराश यह कि, 'सम्पूर्ण पृथ्वी शब्द' कह देने मात्र से, ५०००० मील की पृथ्वी, मत समझिए।ससागरा, सप्तद्वीपा पृथ्वी, वहुत छोटी थी, आदिम युग का, आदिम काल था। प्रारम्भिक काल में ४० करोड जन-सख्या का भारत कैसे होगा? विचार कीजिए।

जम्बूद्वीप देखिए चित्र नं २ ग्रन्थ के आदि में। यह आपका, प्राचीन एशिया है। स्वायम्भुव मनु ने, व्रह्मा-निर्मित, व्रह्मावर्त राज्य को परिवर्द्धित किया। इनके पुत्र प्रियव्रत ने, ससागरा-सप्तद्वीपा पृथ्वी का विकास किया। इनके पुत्र अग्नीन्ध्र ने, जम्बूद्वीप राज्य का विस्तार किया। (अ) जम्बूद्वीप = जम्मू-कश्मीर [चिनाव-सिन्धु के दोआवा में। सिन्धुनद नामक सागर का द्वीप है]। वायु ३४। जम्बूनद (शव्दार्थ) से (१) सिन्धुनद और (२) चिनाव। भावार्थ से, कश्मीर-भूभाग के नद। मेरु = पामीर-से टिव। वडवातीर्थ, मार्तण्ड-मन्दिर आदि, अग्नीन्ध्र एव आदित्य के चिन्ह हैं। कश्यपमेरु = कश्मीर का श्रीनगर = आदित्योदयाचल। इलावर्तवर्ष = कश्मीर। कुमुद = कैलास। शतवल्श = यारकन्द नदी (तराइन नदी)। सुपार्श्व = खैवर दर्रा। आम्र = आमू = आक्सस नदी। मन्दर = वदरीनाथ के समीप पश्चिम। कदम्ब = यमुना नदी।

(क) हिरण्यमयवर्ष = सिंक्याग, गोवी-मगोल। श्वेतपर्वत = थियेनशान (Tienshan)। (च) उत्तर-कुरुवर्ष = रशियन तुर्किस्तान। शृगवान् (सिन्धुकोश) = हिन्दूकुश। (ट) रम्यकवर्ष = अफगानिस्तान। नील = सुलेमान पर्वत। (त) केतुमालवर्ष = वलख से झेलम तक। माल्यवान् = झेलम के साल्ट रेंज (सैन्धव नमक के पर्वत)। यहीं लवण-समुद्र और क्षार-समुद्र था। अभी भी वहाँ की घाटियाँ सूचित करती हैं कि, यहाँ अनेक धाराएँ थीं। [भ्रमात्मक गगासागर, जवलपुर में है। किन्तु, यहाँ कपिलमुनि, कभी भी नहीं रहे और न, सगर की ६०००० सेना ही आयी थी] (ॐ) भारतवर्ष = सरस्वती, कुरुक्षेत्र (व्रह्मावर्त) यमुना-गगा। गन्धमादन = केदारमण्डल। (प) भद्राश्ववर्ष = वदरीनाथ धाम। हिमवान् = हिमालय। (य) हेमकूट = काराकोरम (कृष्णकूर्म)। किम्पुरुषवर्ष = तिव्वत, नैपाल। (श) निषध पर्वत = ईरेखा-विरगा पर्वत। हरिवर्ष = तार्तारी (मञ्चूरिया से पूर्व) देश। जम्बूद्वीप का माप, एक लाख योजन = दस लाख मील = १००० वर्ग मील = केन्द्र से ५०० मील चारो ओर है। जिसमें मध्य (अन्तरग) का १ वर्ण = १२००० योजन तथा वाह्य के ८ वर्ण = ८८००० योजन [११००० × ८]। १० वर्ग योजन = १०० योजन = १००० मील अर्धव्यास (Diameter)। श्रीनगर (कश्मीर) अक्षाश ३४।६ देशान्तर ७४।५५ है। किन्तु इसके पूर्व, जम्बूद्वीप का केन्द्र कुरुक्षेत्र में था तव, कुरुक्षेत्र का अक्षाश ३०।० देशान्तर ७५।५० है। यदि कुरुक्षेत्र को केन्द्र मानकर चारों ओर १००० मील माना जाय तो, अधिक सुभीता रहेगा। क्योंकि, इस मध्यकेन्द्र के मानने से ज्योतिष और पुराण में कोई भेद नहीं रह जाता। वेद-निर्माण का केन्द्र, पामीर से टिव और व्रह्मावर्त (दोनों) है। पामीर से टिव से प्रारम्भ; उत्तरकुरु-रम्यक में परिवर्धन होकर, व्रह्मावर्त में पूर्ण किया गया। किन्तु जम्बूद्वीप का केन्द्र, व्रह्मावर्त में था। व्रह्मावर्त केन्द्र के आधार पर, उत्तर अक्षाश २२।४८ से ३७।१२ तक तथा पूर्व देशान्तर

६८।३८ से ८३।२ तक था। भौगोल के आधार पर उत्तर अक्षांश २६।५४ से ४१।१८ तक तथा पूर्व देशान्तर ६७।४३ से ८२।७ तक था। अतएव मैप-चित्र नं० १ उत्तर अक्षांश २२।४८ से ४१।१८ तक तथा पूर्व देशान्तर ६७।४१ से ८३।२ तक से कुछ अधिक रखना आवश्यक समझा गया। चित्र २ में १ से १२ तक के अंक राशिबोधक हैं। उनमें यथा-स्थान ग्रह भी बैठे हैं, जो कि कर्मकाण्ड-क्षेत्रीय नवग्रह-पीठ है। देखिए कूर्मचक्र (बृहत्संहिता) की हैं। ग्रह और दिशा एवं राशि मिलाकर सभी ग्रहों की गति कुण्डली की भाँति देखिए। यदि सूर्य उत्तर में आय तो उच्च का हो गया अन्यथा भारत में रहेगा। उत्तर में बैसाख तथा दक्षिण में कार्तिक समझिए। गुरु दाहिने (पश्चिम) में आवे तो उच्च का और बायें (पूर्व) में आवे तो किम्पुरुष का मकर (जलचर) मिलगा इत्यादि। चित्र में अ-क' आदि वर्गांक हैं। अ = वासुदेव = विष्णु = सूर्य (शिव-गौरी)। क = कच्छपावतार। च = पृथ्वी (धरा) + वराहावतार [ज्योतिष के महाचार्य वराह-मिहिर भी यहीं के थे] ट = मत्स्यावतार [कश्मीर घाटी] त = लक्ष्मीनारायणावतार (क्रौञ्चद्वीप में)। ॐ = नर-नारायणावतार ब्रह्मस्थान वेद-यूप-स्तम्भ देव-निर्मित देश कृषि का आदिम क्षेत्र क्षीर-नीर-भूमि सरस्वती प्रकाशन, व्यास-क्षेत्र आदि। प = हयग्रीवतार (अश्वास्य)। य = सीतारामावतार (यज्ञकर्ता राजयोगी) श = नृसिंहावतार (शत्रुनाशक)। ज्योतिष में मंगल का आचरण सेनाध्यक्ष रूप में बताया गया है।

चौदह–भुवन

[देखिए पृष्ठ ५ पर मंगलाचरण और ऋग्वेद मण्डल १ सूक्त ३५ मन्त्र २]

सविता देवः	= भगवान् सूर्य
आकृष्णेन वर्तमानः	= कृष्ण-कक्ष्य से भी वर्तमान = अपनी चुम्बकीय आकर्षण शक्ति से
(वर्तमान) अमृतं मर्त्यं	= (वर्तमान) जीवित मानवों को
निवेशयन्	= रखते हुए (धारण किये हुए)
च	= और
हिरण्ययेन	= हिरण्यमयवर्ण के—
रथेन–रजसा (विन्दुना)	= कल्प-बिन्दु से
भुवनानि	= आठों दिशाओं को (८ खण्डों को)
पश्यन्	= देखते हुए (भ्रमण करते हुए)
याति	= गति करते रहते हैं।

ऊषा

ऊषा सूर्य से १०० मील आगे चलती है। जम्बू-द्वीप चित्र नं. २ के प्रत्येक खण्ड १०० योजन = १ वर्ग मील के हैं। जब सूर्य हरिवर्ष में पहुँचते हैं तब १० मील आगे पूर्व में ऊषा (अरुणोदय) काल हो जाता है [ऋग्वेद मण्डल १ सूक्त १२३ मन्त्र ८]

कालान्तर इसे बताने के लिए, मुझे भी विषयान्तर करना पड़ा। कालान्तर ही इतिहास का निर्माण करता है। अणु से महोत्सवादि तक का निर्माण इसी से होता है। यह सर्वत्र एकसा नहीं होता। "यथा यथा पूर्वमवस्थायत्।" के अनुसार स्थूल-दृष्टि में एक सा किन्तु सूक्ष्म दृष्टि से हमारे कालान्तर की भाँति भेद से बदल जाता है। इसे जानने के लिए, एक सीधासा उदाहरण देते हैं। प्रसिद्ध है कि १४ जनवरी को मकर-संक्रान्ति होती है। किन्तु क्या यह ? हमारा उत्तर, नहीं लोग मानते यही द बदल हैं। पिछले पन्ने उलटाकर देखा तो सन् १८८९ से १९०१ ई. तक १३ जनवरी को तथा सन् १९०४ ई से आज भी

१४ जनवरी को मकर-सक्राति का होना, दिखा। ऐसा कब से कब तक का उत्तर, विना गणित के नहीं दिया जा सकता, पर इतना तो निश्चय है कि, किसी काल में १३ जनवरी के स्थान में १२ जनवरी को और १४ जनवरी के स्थान में १५ जनवरी को मकर-संक्रान्ति, हुई और होगी। ठीक इसी प्रकार से, 'हुई-होगी' का अर्थ समझ कर, इतिहास का अनुसन्धान करना पड़ता है। यह तो, हुई कालान्तर की वात। किन्तु, अव विषयान्तर की सुनिए। जब कि, वर्तमान में १४ जनवरी को मकर-सक्राति होती है तब, भारत का एक ऐसा भी पचाग है, जो वर्तमान मे १० जनवरी को मकर-सक्राति लिखता है जिसे, सर्व साधारण नहीं जानते। क्योंकि, भारत भी, कालान्तर में, विषयान्तर कर रहा है। जिसके उदाहरण हैं, २३ जनवरी (सुभाष तिथि), २६ जनवरी (गणतन्त्र दिवस) ३० जनवरी (गान्धी तिथि), १५ अगस्त (स्वतन्त्रता दिवस), ता २ अक्टूबर (गान्धी जयन्ती), १४ नवम्बर (नेहरू जयन्ती), राष्ट्रीय-कलेण्डर इत्यादि। इस प्रकार इतिहास का निर्माता, 'कालान्तर' होते हुए भी, वेद से लेकर, आज तक केवल २४ घण्टे के दिन के आधार पर, १०० वर्ष = ३६००० दिनात्मक आयु का उल्लेख किया गया है।

अंक [कथानक रीति] इसका अर्थ 'चिन्ह' है। चिन्ह का सूचक 'विन्दु' होता है। निराकार विन्दु, 'व्रह्म' का सूचक। किन्तु साकार विन्दु, आकाश का सूचक है। साकार विन्दु के वाद, उसी विन्दु में लम्बा चिन्ह लगाने से, एक (१) चिन्ह, भूमि का सूचक हो गया। एक के वाद दो, स्त्री-पुरुष सूचक। दो के वाद तीन, प्रात-मध्यान्ह-सायम्, सन्धि का सूचक। तीन के वाद चार वेद-शाखा का सूचक। चार के वाद पाँच, वेद-शाखा और वेदज्ञ सूचक। पाँच के वाद छह, मधुरादि षट् रस सूचक अथवा षडग सूचक। छह के वाद सप्त, नग सूचक [हिमालय, निषध, विन्ध्य, माल्यवान्, पारियात्र, गन्धमादन, हेमकूट] अथवा एस्ट्रानॉमिकल सप्तर्षि सूचक। सप्त के वाद अष्ट, अष्टाध्यायी सूचक, अष्ट वसु सूचक, एस्ट्रालॉजिकल अष्टम भाव [वसुपति = यम का राज्य] सूचक। अष्ट के वाद, नव-शिक्षित [अक-शास्त्री] एक 'आर्य-शिकारी', अपने शिकार की खोज में, अकेला, दोनों नेत्रों से देखता हुआ, तीन प्रत्यचा से पुष्ट-वद्ध, धनुष लिए, चारों ओर का वेद (ज्ञान) करता हुआ, पाँच वाणों से युक्त 'भाथी' पृष्ठ पर लम्वायमान, नेत्र-कर्ण-हस्तादि षडगो में चेतना भरे, सप्त पर्वतों को लाँघता-लाँघता, अष्टवसु-वृद्धि (यम = क्रोध) से, एक के वाद एक, नव-अक (चिन्ह) वनाता-वनाता, सघन वन-प्रान्त देख, एक-विन्दु पर [अकेला] दिग्दृष्टि कर (चारों ओर देखकर) खड़ा हो गया। (शून्य और १ से ९ तक)।

अकेला शिकारी, दृष्टि-क्षेप द्वारा, अपने विन्दु पर, खडा होने के कारण, लम्वायमान विन्दु को, एक (भूमि) समझकर, अगले विन्दु को, अपने, एक पर रखकर 'दिग्' किया [दूर दिशा में देखा] किन्तु, शिकार न दिखा। तव, उसने, उससे भी अगला विन्दु, (दृष्टि-क्षेप द्वारा), अपने दिग् विन्दु पर, रख 'शत' किया। पर, शिकार न दिखा। क्रोध से, वाम-स्कन्धावलम्बित धनु पर, कराघात कर, धनु-स्थिति का प्रत्यय किया [२००० धनु का कोश होता है (पृष्ठ ३९०)। ४ हाथ का धनु होता है। एक हाथ = ५०० धनु २ हाथ = १००० धनु। ३ हाथ = १५०० धनु। ४ हाथ = २००० धनु। इस शिकारी के दो हाथ थे, जैसे हमारे-आपके। अतएव १००० धनु अक (एक हाथ, धनु पर रखने से) सहस्त-धनु का उच्चारण, सहस्र-धनु वन गया] शिकार न दिखने के कारण, शत विन्दु से आगे विन्दु रखकर, सहस्र से मिला दिया। सहस्र अक से अगला विन्दु, दिग्सहस्र वनाकर, ज्योंही अगला विन्दु वनाया कि, उसका 'लक्ष' शिकार-विन्दु पर पहुँच गया। फायरिंग-पोजीशन पर आते ही, उसका शिकार, प्रथम लक्ष-विन्दु से, अगले विन्दु पर पहुँचा हुआ देख, झट से, उधर दिग्लक्ष-विन्दु पर दृष्टि, इधर भुज में वाणयुक्त-धनु [भुज तथा ज्या-चापीय रेखा] और शीघ्र ही, अपने

और शिकार की कोटि रेखा पर बाण छोड़ दिया। किन्तु बाण के पहुँचते-पहुँचते, शिकार को, कोटि-बिन्दु से अगले-बिन्दु (दिग् कोटि बिन्दु) पर देखा। बाण को कोटि-बिन्दु पर, व्यर्थ गिरा देख विद्युत्गति से द्वितीय-बाण युक्त धनु को आकर्षित किया। उधर शिकार को अपने पीछे बाणपातोद्भूत-ध्वनि कर्णों में सुनाई दी। तब सशंकित झिझक कर, अस्त-व्यस्त हो एक तिरछे मार्ग पर, देह-समपार्श्व भागा। इधर शिकारी ने उसी चपलता से शिकार के कर्ण-मार्ग पर, अपने बाण को कोटि-मार्ग से पुनः छोड़ दिया फलतः गति-वैषम्य होते हुए, तीव्रगति वाले की विजय हुई। शिकारी का बहुत बड़ा काम हो गया था। शून्य एक से नव के बाद—एक, दश शत सहस्र दिग् सहस्र लक्ष दिग्लक्ष ध्रुव क्या आप कोटि कर्ण के अन्त्य बिन्दु पर शिकारी को शिकार तथा अंकशास्त्रियों को अंक का आकार प्राप्त था। दोनों के 'कर' में अंक (चिन्ह) आने पर, हर्षोन्माद से वस्तु पर टूट पड़े। काम-तमाम हो गया था शिकार का।

बड़ा ही हर्षोत्सव मनाया गया। आर्य-आर्यार्थी अपने शिशुओं की क्रीड़ा देख अपना-अपना अतीत-स्मरण किया। अल्पकालातीत इतना अतीत देखा कि एक दश शत सहस्र दिग्सहस्र (अयुत) लक्ष दिग्लक्ष (प्रयुत) कोटि दिक्कोटि की संख्याएँ न्यूनता में आ गयीं [जैसे कि ५ पृष्ठांकी बालक-दीपक के पृष्ठ ६ से पीछे देखने को आप से अनुरोध है। ६ से पीछे तो ८ गर्भ होता है] कुछ भी हो यहाँ तो न्यूनता आ चुकी थी। अगला अंक देखना था तो 'ऐसा गर्भ कहाँ देखा जाय ? प्रश्न के पूर्व 'आर्यार्थी' उत्तर थीं। अर्बुद (कमलीपरान्त = दिक्कोटि का अग्रिम बिन्दु) देखा। किन्तु, उसके आगे दिगर्बुदबिन्दु होगा [२ वर्ग = ३ संख्या अधिक = परन्तु देखने में कम = अर्बुद के पीछे लघु बिन्दु। किन्तु, दूर के कारण अधिक संख्या वाली दिगर्बुद बना अवश्य]। दिगर्बुद बिन्दु से दूर खर्व दिखा [लीलावती में अर्बुद के बाद अब्ज खर्व निखर्व महापद्म शंकु जलधि अन्त्य मध्य परार्ध बताया है। किन्तु स्कूली गणित-पुस्तकों में अरब के बाद खरब नील पद्म शंख लिखा गया है। इन दोनों में न्यास-क्रम ठीक नहीं। ठीक क्रम—लीलावती में अर्बुद खर्व निखर्व अब्ज महापद्म शंकु जलधि मध्य परार्ध अन्त्य के समनुरूप (=) हिन्दी में अरब खरब दशखरब पद्म दशपद्म शंख नील अन्तरिक्ष ध्रुव शृंग होना चाहिए। पृष्ठ ८ में स्पष्ट देखिए। ऐसा क्यों ?] दशअर्बुद के आगे खर्व चाहिए। कारण ? अर्बुद रूपी बिन्दु से सूक्ष्म खर्व होता है। खर्व के शब्दार्थ ही है 'छोटा' [गर्व – खर्व = गर्व–खण्ड] अर्बुद के पूर्व गर्भ का आदि बिन्दु। साथ ही अर्बुद के बाद खर्व एवं अब्ज के बाद महापद्म कहने में लय-गति है। आर्य को सूक्ष्म-निरीक्षण देरी तक करते देख आर्यार्थी उड़ गयीं (अन्तर्धान)। फलतः आर्य भी उड़े और दिक खर्व वर्षों के बाद क्षीर-सागर तट पर प्रकट हुए। देखा कि विष्णु-गार्डेन के अब्ज बड़े ही सुन्दर हैं। गजान्त जल में प्रविष्ट हो आर्य ने एक कमल-नाल पर कम्पा मारा कि करस्थ-कमल-गंध ने अतीतस्थ श्रम को मस्तिष्कातीत कर दिया। आर्य ने इसे दिक्खर्व बिन्दु का अग्रिम बिन्दु समझा [क्योंकि बहुत दूर दिक्खर्व वर्षों के उपरान्त इसकी प्राप्ति थी]। साथ में पद्म-नाल-मूल को दिग्पद्म (महापद्म) समझा। क्योंकि यह पद्म विष्णु के सेन्टर-प्वाइन्ट (नाभि) से उद्भूत था। महापद्म के मूल को जानने के लिए आर्य ने एक अंक पर १५ शून्य युक्त संख्यात्मक अणु लम्बा (ऊँचा) एक शंकु गाड़कर अन्वेषण की योजना बनायी। किन्तु, एक हिन्दुस्तानी गणित-मास्टर ने आर्य-ग्रीवा पर, कर-क्षेप कर, क्षीर-सागर में डुबा दिया। फलतः एक अपीरर्यांश आर्य के हाथ में आ टपका। कोई बात नहीं 'सन्त हृदय नवनीत समाना।' के कारण आर्य ने बिग पैसल के सूत्र से महापद्म के अग्रिम बिन्दु पर शंकु (शंख) को रखा। साथ ही इसके विविधबिन्दु-अन्वेषण-कार्यक्रम के प्राप्ति के अर्थ

क्षीर-सागर में गहरी डुबकी लगाया। ह्वेल-शार्क आदि पाताल-प्राणियों से बचते-बचाते पहुँचे तो, शकु का दिग्विन्दु और जलधि-विन्दु, कर-बद्ध हो, आर्य के स्वागतार्थ 'अटेन्शन' नजर आये। अस्तु। टी-पार्टी के मध्यावरण में, आर्य-प्रश्न का उत्तर देते हुए, जलधि बोले कि, मैं 'आकाश' में बहुत ऊँचाई पर रहता हूँ, इसलिए सागरीय गौरत्व के स्थान में 'नीलाम्बुजश्यामलकोमलागम्।' हूँ। तथा च देवलोक वाले आकाश के नील, वरुणलोक वाले जलधि के नील, भारत वाले एडम्स-ब्रिज-निर्मात। नील कहते हैं और हमारे पितृदेव, दशजलधि (दिग्जलधि) हैं। मेरे द्वारा, उनके शिर पर रखा, पाषाण-ब्रिज, उतराता रहा था। [देखिए, हिष्ट्री ऑफ लका-अभियान]। अब तक के काल में, सहस्रों स्क्वायर-योजन, क्षीर-समुद्र का क्षीर, आर्य के पेट में भर जाने के कारण, ऊब कर ४९ पवनवेग से आकाश की ओर उडे। उडते-उडते, दिग् जलधि वर्षों के वाद उनका उदर-जल बाहर निकल कर, पुन समुद्र में इकट्ठा होकर 'खारा' हो गया।

सर्वाङ्ग-स्वस्थता प्राप्त कर आर्य ने, देववाणी में देवलोक के लिए तथा हिन्दी में हिन्दुस्थान के लिए, क्रम से मध्य (अन्तरिक्ष), परार्ध (ध्रुव), अन्त्य (शृग) नामक ३-३ अक, दशजलधि के अग्रिम विन्दुओ का पता, दो अरब वर्ष तक, आकाश में उडते रहने के वाद लगा सके। इसके बाद हमें, उनका 'अर्जेण्ट-टेलीग्राम', प्राप्त हुआ। लिखा था, शीघ्र आइए, ता० २९।१०।१९५३ ई०, पुष्य-गुरुवार, अमृतसिद्धियोग"। आर्य का टेलीग्राम आया। पर, श्रीगणेश-एयरोप्लेन तक, मेरे पास न था। अन्ततोगत्वा, 'ल्यफ्ट, राइट, ल्यफ्ट' करते-करते पहुँचे। मार्ग में हम, भुनभुनाये भी। पर, वहाँ आर्य, आर्याणी से रहसि "आँख-मिचौनी" खेल रहे थे—देखकर, हम भी, सब कुछ भूल गये। [पुराण-छाया शैली से शून्य, एक, दो, तीन, चार, पाँच, छ, सात, आठ, नौ, दश, शत, सहस्र, लक्ष, भुज, कोटि, कर्ण, ज्या, चाप, अर्व, खर्व, निखर्व, अब्ज, महापद्म, शकु, जलधि, मध्य, परार्ध, अन्त्य का क्रम से अन्वेषण-हेतु-कल्पना]।

द्वितीय सत-त्रेता

ई० पूर्व २१०२–११०२ में से २१०२–१७०२ में द्वितीय सतयुग। १७०२–१४०२ में द्वितीय त्रेतायुग। १४०२–१२०२ में द्वितीय द्वापरयुग। १२०२–११०२ में द्वितीय कलियुग। (१) ई पूर्व २१२७–२१०५ में सूर्यवशी इक्ष्वाकु और २१४२–२१३८ में चन्द्रवशी पुरुरवा (ऐल)। (२) ई पूर्व १९९४–१९९० में नाभागादिष्टवशी तृणविन्दु (पुलस्त्य का ससुर = विश्रवा का मातामह)। (३) ई. पूर्व १६९०-१६७८ में हिरण्यकशिपु इन्द्र। ई पूर्व १६७८ में सावर्णिमनु, हिरण्यकशिपु-वध, बलि को इन्द्र-पद-प्राप्ति। 'बलिसस्थेपु लोकेपु त्रेताया सप्तमे युगे।' १७०२–६ × ४ = ई पूर्व १६७८–१६७४ में बलि को इन्द्र-पद रहा। इसके बाद प्रहलाद को इन्द्रपद ई पूर्व १६७४–१६५० में। 'इन्द्रास्त्रयस्ते विख्याता असुराणा महौजस। दैत्यसस्थमिद सर्वमासीद् दशयुग किल ॥६१॥' ९७ वायु। १० × ४ = ४० वर्ष (ई १६९०–१६५० में तीन इन्द्र) (४) 'त्रेतायुगे तु दशमे दत्तात्रेयो बभूव ह। धर्मे नष्टे चतुर्थश्च मार्कण्डेयपुरस्सर ॥ ८९ ॥' (श्लोक मे) १७०२–९ × ४ = ई पूर्व १६६६–१६६२ में दत्तात्रेय और मार्कण्डेय हुए।(५) 'पचम पचदश्या तु त्रेताया सम्बभूव ह। मान्धाता चक्रवर्ती च तदोत्तकपुरस्सर ॥९०॥' १७०२–१४ × ४ = ई. पूर्व १६४६–१६४२ में चक्रवर्ती मान्धाता और उत्तक हुए। [ई पूर्व १६५०–१६१० में इन्द्रपद, देवों के हाथ में रहा। "असपत्न तन सर्व राष्ट्र दशयुगं तथा। त्रैलोक्यमव्ययमिद महेन्द्रेण तु पाल्यते ॥९२॥" वायु ९७] ई पूर्व १६१०–१६०६ में मान्धाता को इन्द्र-पद मिला (६) 'एकोनविंशे त्रेताया सर्वक्षत्रान्तकोऽभवत्। जामदग्न्यस्तथा षष्ठो विश्वामित्र-पुरस्सर ॥९१॥' १७०२–१९ × ४ = ई पूर्व १६३०–१६२६ में परशुराम और विश्वामित्र हुए। (७) 'चतुर्विंशे युगे रामो वशिष्ठेन पु

और शिकार की कोटि रेखा पर बाण छोड़ दिया। किन्तु बाण के पहुँचते-पहुँचते, शिकार को कोटि-बिन्दु से अगले-बिन्दु (दिग् कोटि बिन्दु) पर देखा। बाण को कोटि-बिन्दु पर, व्यर्थ गिरा देख विद्युद्गति से द्वितीय-बाण युक्त धनु को आकर्ण ताना। उधर, शिकार को अपने पीछे बाणपातोद्भूत-ध्वनि कर्णों में सुनाई दी। तब सशंकित झिझक कर अस्त-व्यस्त हो एक तिरछे मार्ग पर, देह-रक्षणार्थ भागा। इधर शिकारी ने उसी चपलता से शिकार के कर्ण-मार्ग पर, अपने बाण को कोटि-मार्ग से पुन छोड़ दिया फलत गति-वैषम्य होते हुए, तीव्रगति वाले की विजय हुई। शिकारी का बहुत बड़ा काम हो गया था। शून्य एक से नव के बाद—एक, दश शत सहस्र दिग् सहस्र लक्ष दिग्लक्ष युत, क्या चाप कोटि कर्ण के अन्त्य बिन्दु पर शिकारी को शिकार तथा अंकशास्त्रियों को अंक का आकार, प्राप्त था। दोनों के 'कर' में अंक (चिन्ह) आने पर, हर्षोन्माद से वस्तु पर टूट पड़े। काम-तमाम हो गया था शिकार का।

बड़ाही हर्षोत्सव मनाया गया। आर्य-आर्याणी अपने शिशुओं की क्रीड़ा देख अपना-अपना अतीत-स्मरण किया। अत्यन्तातीत इतना अतीत देखा कि एक दश शत सहस्र दिग्सहस्र (अयुत) लक्ष दिग्लक्ष (प्रयुत) कोटि दिक्कोटि की संख्याएँ न्यूनता में आगयीं [जैसे कि ५ पृष्ठांकी आत्म-दीपक के पृष्ठ ६ से पीछे देखने को आप से अनुरोध है। ६ से पीछे तो ८ पर्व होता है] कुछ भी हो यहाँ तो न्यूनता आ चुकी थी। अगला अंक देखना था तो ऐसा गर्भ कहाँ देखा जाय ? प्रश्न के पूर्व 'आर्याणी' उत्तर दीं। अर्बुद (कलशीपरान्त = दिक्कोटि का अग्रिम बिन्दु) देखा। किन्तु, उसके आगे दिगर्बुदबिन्दु होगा [२ वर्ग = ४ संख्या अधिक = परन्तु देखने में कम = अर्बुद के पीछे लघु बिन्दु। किन्तु, दूर के कारण अधिक संख्या वाली दिगर्बुद बना अव्यय]। दिगर्बुद बिन्दु से दूर खर्व दिखा [लीलावती में अर्बुद के बाद अब्ज खर्व निखर्व महापद्म शंकु जलधि अन्त्य मध्य परार्ध बताया है। किन्तु स्कूली गणित-पुस्तकों में अरब के बाद खरब नील पद्म शंख लिखा गया है। इन दोनों में न्यास-क्रम ठीक नहीं। ठीक क्रम—लीलावती में अर्बुद खर्व निखर्व अब्ज महापद्म शंकु जलधि मध्य परार्ध अन्त्य के समतुल्य (=) हिन्दी में अरब खरब दशखरब पद्म दशपद्म शंख नील अन्तरिक्ष ध्रुव भूम होना चाहिए। पृष्ठ ८ में स्पष्ट देखिए। ऐसा क्यों ?] दशअर्बुद के आगे खर्व चाहिए। कारण ? अर्बुद रूपी बिन्दु से सूक्ष्म खर्व होता है। खर्व के शब्दार्थ ही है 'छोटा' [गर्व — खर्व = गर्व—खण्ड] अर्बुद के पूर्व गर्भ का आदि बिन्दु। साथ ही अर्बुद के बाद खर्व एवं अब्ज के बाद महापद्म करने में लय-गति है। आप को सूक्ष्म-निरीक्षण देरी तक करते देख आर्याणी उड़ गयीं (अन्तर्धान)। फलत आर्य भी उड़े और दिक् खर्व वर्षों के बाद क्षीर-सागर तट पर प्रकट हुए। देखा कि विष्णु-गार्डन के अब्ज बड़े ही सुन्दर हैं। गगनान्त जल में प्रविष्ट हो आर्य ने एक कमल-नाल पर झप्पा मारा कि करस्थ-कमल-गंध ने अतीतस्व-भ्रम को मस्तिष्कस्तीत कर दिया। आर्य ने इसे दिक्खर्व बिन्दु का अग्रिम बिन्दु समझा [क्योंकि बहुत दूर दिक्खर्व वर्षों के उपरान्त इसकी प्राप्ति थी]। आर्य ने पद्म-नाल-मूल को दिग्पद्म (महापद्म) समझा। क्योंकि यह पद्म विष्णु के सन्टर-प्वाइन्ट (नाभि) से उद्भूत था। महापद्म के मूल को जानने के लिए, आर्य ने एक अंक पर १५ शून्य युक्त संख्यात्मक बहु लम्बा (ऊँचा) एक शंकु गाड़कर अनुसंधान की योजना बनायी। किन्तु, एक हिन्दुस्तानी गणित-मास्टर ने आर्य-ग्रीवा पर, कर-क्षेप कर, क्षीर-सागर में डुबा दिया। फलत एक अपोरुषेय आर्य के हाथ में आ टपका। कोई बात नहीं, 'सन्त हृदय नवनीत समाना।' के कारण आर्य ने बिद पैक्स के सूत्र से महापद्म के अग्रिम बिन्दु पर शंकु (शंख) को रखा। साथ ही इसके दिग्बिन्दु-अम्बपदा-कार्यालय के प्राप्ति के पर्व

क्षीर-सागर में गहरी डुबकी लगायी। ह्वेल-शार्क आदि पाताल-प्राणियों से बचते-बचाते पहुँचे तो, शंकु का दिग्विन्दु और जलधि-विन्दु, कर-बद्ध हो, आर्य के स्वागतार्थ 'अटेन्शन' नज़र आये। अस्तु। टी-पार्टी के मध्यावरण में, आर्य-प्रश्न का उत्तर देते हुए, जलधि बोले कि, मै 'आकाश' में बहुत ऊँचाई पर रहता हूँ, इसलिए सागरीय गौरत्व के स्थान में 'नीलाम्वुजश्यामलकोमलागम्।' हूँ। तथा च देवलोक वाले आकाश के नील, वरुणलोक वाले जलधि के नील, भारत वाले एडम्स-ब्रिज-निर्माता नील कहते हैं और हमारे पितृदेव, दशजलधि (दिग्जलधि) हैं। मेरे द्वारा, उनके शिर पर रखा, पाषाण-ब्रिज, उतराता रहा था। [देखिए, हिस्ट्री ऑफ लका-अभियान]। अब तक के काल में, सहस्रों स्क्वायर-योजन, क्षीर-समुद्र का क्षीर, आर्य के पेट में भर जाने के कारण, ऊब कर ४६ पवनवेग से आकाश की ओर उडे। उडते-उडते, दिग् जलधि वर्षों के बाद उनका उदर-जल बाहर निकल कर, पुन समुद्र में इकट्ठा होकर 'खारा' हो गया।

सर्वाङ्ग-स्वस्थता प्राप्त कर आर्य ने, देववाणी में देवलोक के लिए तथा हिन्दी मे हिन्दुस्थान के लिए, क्रम से मध्य (अन्तरिक्ष), परार्ध (ध्रुव), अन्त्य (शृग) नामक ३-३ अक, दशजलधि के अग्रिम विन्दुओ का पता, दो अरब वर्ष तक, आकाश में उडते रहने के बाद लगा सके। इसके बाद हमें, उनका 'अर्जेण्ट-टेलाग्राम', प्राप्त हुआ। लिखा था, शीघ्र आइए, ता० २६।१०।१६५३ ई०, पुष्य-गुरुवार, अमृतसिद्धियोग"। आर्य का टेलीग्राम आया। पर, श्रीगणेश-एयरोप्लेन तक, मेरे पास न था। अन्ततोगत्वा, 'ल्यफट, राइट, ल्यफट' करते-करते पहुँचे। मार्ग में हम, भुनभुनाये भी। पर, वहाँ आर्य, आर्याणी से रहसि "आँख-मिचौनी" खेल रहे थे— देखकर, हम भी, सब कुछ भूल गये। [पुराण-छाया शैली से शून्य, एक, दो, तीन, चार, पाँच, छ, सात, आठ, नौ, दश, शत, सहस्र, लक्ष, भुज, कोटि, कर्ण, ज्या, चाप, अर्व, खर्व, निखर्व, अब्ज, महापद्म, शकु, जलधि, मध्य, परार्ध, अन्त्य का क्रम से अन्वेषण-हेतु-कल्पना]।

द्वितीय सत-त्रेता

ई० पूर्व २१०२–११०२ में से २१०२–१७०२ में द्वितीय सतयुग। १७०२–१४०२ में द्वितीय त्रेतायुग। १४०२–१२०२ में द्वितीय द्वापरयुग। १२०२–११०२ में द्वितीय कलियुग। (१) ई पूर्व २१२७–२१०५ में सूर्यवशी इक्ष्वाकु और २१४२–२१३८ में चन्द्रवशी पुरुरवा (ऐल)। (२) ई पूर्व १६६४–१६६० में नाभागादिष्टवशी तृणविन्दु (पुलस्त्य का ससुर = विश्रवा का मातामह)। (३) ई. पूर्व १६६०-१६७८ में हिरण्यकशिपु इन्द्र। ई पूर्व १६७८ में सावर्णिमनु, हिरण्यकशिपु-वध, वलि को इन्द्र-पद-प्राप्ति। 'वलिसस्थेषु लोकेषु त्रेताया सप्तमे युगे।' १७०२–६×४=ई पूर्व १६७८–१६७४ में वलि को इन्द्र-पद रहा। इसके बाद प्रह्लाद को इन्द्रपद ई पूर्व १६७४–१६५० में। 'इन्द्रास्त्रयस्ते विख्याता असुराणा महौजस। दैत्यसस्थमिद सर्वमासीद् दशयुग किल ॥६१॥' ६७ वायु। १०×४=४० वर्ष (ई १६६०–१६५० में तीन इन्द्र) (४) 'त्रेतायुगे तु दशमे दत्तात्रेयो बभूव ह। धर्मे नष्टे चतुर्थश्च मार्कण्डेयपुरस्सर ॥ ८६ ॥' (श्लोक मे) १७०२–६×४=ई पूर्व १६६६–१६६२ में दत्तात्रेय और मार्कण्डेय हुए।(५) 'पचम पचदश्या तु त्रेताया सम्बभूव ह। मान्धाता चक्रवर्ती च तदोत्तकपुरस्सर ॥६०॥' १७०२–१४×४ =ई. पूर्व १६४६–१६४२ में चक्रवर्ती मान्धाता और उत्तक हुए।-[ई पूर्व १६५०–१६१० में इन्द्रपद, देवों के हाथ में रहा। "असपत्न तत सर्वं राष्ट्र दशयुग तथा। त्रैलोक्यमव्ययमिद महेन्द्रेण तु पाल्यते॥६२॥" वायु ६७] ई पूर्व १६१०–१६०६ में मान्धाता को इन्द्र-पद मिला (६) 'एकोनविंशे त्रेताया सर्वक्षत्रान्तकोऽभवत्। जामदग्न्यस्तथा षष्ठो विश्वामित्र–पुरस्सर ॥६१॥' १७०२–१८×४= ई पूर्व १६३०–१६२६ में परशुराम और विश्वामित्र हुए। (७) 'चतुर्विंशे युगे रामो वशिष्ठेन पुरोधसा। सप्तमो रावणस्यार्थे जज्ञे दशरथात्मज ॥६२॥'

ई. पूर्व १६११ १६०६ श्री राम और वशिष्ठ हुए। (१७०२-२३×४=१६१०)। भागवत९ स्कन्ध १ के अनुसार, वैवस्वत से श्रीराम तक वशिष्ठ रहे, साथ ही मिथिलाधीश निमि (९ स्कन्ध १३) के समय वशिष्ठ की मृत्यु भी बतायी गयी पुन मित्रावरुण से उत्पन्न हुए। वेद से पता चलता है कि वशिष्ठ तो सुदास हरिश्चन्द्र दशरथ श्रीराम के समक्ष क्रमश रहे। ई. पूर्व १६ ६ वय में श्रीराम हुए थे। उपित्वा द्वादशसमा इक्ष्वाकूणां निवेशने। ततस्त्रयोदशे वर्षे राजामन्त्रयत प्रभु ॥५॥ मम भर्ता महातेजा वयसा पंचविंशक ॥१ ॥ वाल्मीकीय आरण्य ४७। ई. पूर्व १६६७ में श्रीराम का यज्ञोपवीत हुआ (१२ वर्षायु में)। ई. पूर्व १५८४ में वन-यात्रा। ई. पूर्व १५७१ में खर-युद्ध। ई पूर्व १५७१ वय ६ मास में किष्किन्धा से लंका-यात्रा। ई पूर्व १५७०।११ मास में रावण-वध। [ई. पूर्व १६२३ स १५७१ तक रावण-राज्य रहा। 'चतुर्युगानि राजान त्रयोदश स पार्थिव (४५। ७० वायु। १३×४=५२ वय रावण-राज्य] ई. पूर्व १५७ -१५२१ में राम-राज्य रहा। ई. पूर्व २११ -१५२१ (५२१ वय) वैवस्वत मनु से श्रीराम तक अयोध्या-राज्य (पुण त्रेता) रहा था।

द्वि द्वापर-कलि ई. पूर्व १४ २-१२ २ में द्वि. द्वापर। ई पूव १३३ -१३२६ में शाक्य-पुत्र मनु (मद)। ई पूर्व ११ २ में ऋग्वेद निर्माण पूर्ण। (८) अष्टमो द्वापरे विष्णुरष्टाविंशे पराशरात्। वेदव्यासस्ततो जज्ञे जातूकर्ण्यपुरस्सर. ॥१३॥ (श्लोक तक वायु १२ क हैं) २७×४=१ ८ (१४०२ १०८= १२६४) ई पूर्व १२६४-१२६ में वेदव्यास और जातूकर्ण्य हुए। (ई पूर्व ४ २ २०२ में द्वितीय व्यास भी हुए थे)। ई. पूर्व १२५५ में युधिष्ठिर। ई पूर्व १२५२ में श्रीकृष्ण और अर्जुन हुए। ई. पूर्व १२३८ में कंस-वध। ई. पूर्व १२१८ वर्ष १ मास में पाण्डव वन-दाह और अभिमन्यु जन्म। ई पूर्व १२११ में अभिमन्यु का यज्ञोपवीत। ई. पूर्व १२ २-११ २ में द्वितीय कलि। ई. पूर्व १२१ -११६८ तक पाण्डव वनवास। ई. पूर्व ११६७ वर्ष १ मास में भारत-युद्ध अभिमन्यु की वीर गति २१ वीं वर्ष में। 'अन्तरे चैव सम्प्राप्ते कलिद्वापरयोरभूत्। समन्तपञ्चके युद्धं कुरुपाण्डवसेनयो ॥१३॥" आदि पर्व २। प्राप्तं कलियुगं विद्धि।२५।" शल्यपर्व ६ । भारत-युद्ध के १८ वें दिन श्रीकृष्ण ने बलरामजी से शल्यपर्व का वाक्य कहा था। 'एतत्कलियुग नाम अचिरात् यत्प्रवर्तते ॥२८॥ वनपर्व १४९। जब अर्जुन इन्द्र के पास से लौट आये तब पाण्डव-वनवास के ६ वर्ष हो चुके थे। तभी हनुमान ने भीम स वनपर्व का वाक्य कहा था। पूर्वोक्त १३ २५ २८ श्लोकों के अर्थ से गणित द्वारा भारत-युद्ध क ४ वर्ष ९ मास पूव से कलियुगारम्भ हुआ। अभिमन्यु जन्म से कलियुगारम्भ तक (१६ वय हुए थे)। परीक्षित जन्म ई. पूर्व ११६७-११६६ वय। ई. पूर्व ११६६-११६४ में महाभारत-ग्रन्थ रचा गया। 'त्रिभिर्वर्षै सदोत्थायी कृष्णद्वैपायनो मुनि । महाभारतमाख्यानं कृतवान् इदमुत्तमम् ॥५॥ आदिपर्व ६२। भीष्म-मृत्यु के बाद (भीष्म-पर्व २) दो मास व्यतीत कर, ग्रन्थारम्भ करके तीन वर्ष में पूर्ण किया। भीष्म भारतयुद्धारम्भ से ९ वें दिन शर-शय्या में पड़े थे। वे शर-शय्या में ५८ दिन तक रहे। अष्टपंचाशतं रात्र्य शयानस्याद्य मे गता । शरेषु निशिताग्रेषु यथा वर्षशत तथा ॥२७॥ माघोऽयं समनुप्राप्तो मास सौम्यो युधिष्ठिर। त्रिभागशेष पक्षोऽयं शुक्लो भवितुमर्हति ॥२८॥ अनुशासन पर्व १६७। माघ कृष्ण ४ को भीष्म की वीर-गति हुई (माघ शुक्ल ८ को भीष्माष्टमी लिखते हैं वह तिथि भीष्मावतार की है।) मार्गशीर्ष शु. ११ १४ तिथि के मध्य युद्धारम्भ हुआ। ई. पूर्व ११८२ में धृतराष्ट्र का वन-गमन कार्तिक पूर्णिमा को हुआ। ई. पूर्व ११६५ ११७५ वर्ष में प्रभास-क्षेत्र में यादव-क्षय श्रीकृष्ण का गोलोक-वास [महाभारत मुसल पर्व १-२ श्लो १-१३-२१। स्त्री पर्व २५ श्लो ४४] पाण्डवों का स्वर्गारोहण परीक्षित (ई. पूर्व ११७५ ११६६) और वज्र (श्रीकृष्ण-पौत्र ई. पूर्व ११७५) का राज्यारम्भ हुआ। हस्तिनापुर क परीक्षित और इन्द्रप्रस्थ के वज्र राजा बनाये गये थ (मौसल पर्व)।

तृ. महायुग सप्तर्षि पद में लिखा जा चुका है कि, १०० वर्ष तक एक नक्षत्र में सप्तर्षि रहते हैं। ई पूर्व १२०२-११०२ के मध्य काल में द्वितीय कलियुग रहा था। तृतीय-चतुर्युगी (महायुग) काल ई पूर्व ११०२-१०२ [११०२-७०२ तृतीय सतयुग। ७०२-४०२ तृतीय त्रेता। ४०२-२०२ तृतीय द्वापर। २०२-१०२ तृतीय कलियुग] चतुर्थ चतुर्युगी काल ई. पूर्व १०२ से ८९८ ई तक [ई पूर्व १०२ से २९८ ई तक चतुर्थ सतयुग] "सप्तर्षयो मघायुक्ता काले पारिक्षितेऽभवन्। आन्ध्रान्ते ते चतुर्विंशे भविष्यन्ति मते मम ॥" मघा (१० वें) में पारीक्षित थे और २४ वें (शतभिषा) पर, सप्तर्षि आने से आन्ध्र वंश का अन्त हो जायगा। मघा पर सप्तर्षि के अर्थ = ९०० से १००० वर्ष तक का मध्यकाल [पारीक्षित (जन्मेजय)-काल] और शतभिषा पर सप्तर्षि के अर्थ = २३०० से २४०० वर्ष तक का मध्यकाल (आन्ध्रवंश का अन्तकाल) होंगे। (२४०० – १००० = १४०० वर्ष)। २२५-२२६ ई में आन्ध्रवंश का अन्त हुआ था (आधुनिक इतिहास-ग्रन्थ)। परीक्षित-पुत्र से २२५ ई तक १४०० वर्ष इस प्रकार होते हैं। ई पूर्व १२०२ से द्वितीय कलियुगारम्भ। ई पूर्व ११९७।३ में भारत-युद्ध काल में परीक्षित गर्भस्थ थे। ई पूर्व १११० में ऐक्ष्वाकु दिवाकर (अयोध्या में) ई पूर्व ११९७-६४८ पौरव-मागध-वंशी-राज्य (ई पूर्व ६४८ में रिपुंजय राजा, राजगृह में)। ई पूर्व ९५० ऐक्ष्वाकु सुपर्ण (अयोध्या में)। ई पूर्व ७०० पाणिनि व्याकरणाचार्य, पृष्ठ ४१३। [वाल्मीकि भी, लगभग ई पूर्व ६०० में थे]

ई पूर्व ६४८-३२३ शिशुनाग-वंशी राज्य (राजगृह)। ई पूर्व ५२८-५०० शिशुनाग वंशी बिम्बसार (विधिसार) राजगृह का राजा था। ई पूर्व ५००-४७३ में बिम्बसार + अम्बापाली (वैशाली-नगरवधू) का पुत्र (अजातशत्रु) का पाटलिपुत्र में (ई पूर्व ४९१ में) राज्याभिषेक हुआ। ई पूर्व ५६३-४८३ में शुद्धोदन-पुत्र (गौतम-बुद्ध) थे। अजात-शत्रु के समकाल में पाण्डुवंशी वत्सनरेश उदयन (कौशाम्बी में) और प्रद्योतवंशी चण्ड (उज्जैन में)। अयोध्यानरेश ऐक्ष्वाकु प्रसेनजित ई पूर्व ५३३-४७३ में था। ई पूर्व ४७३-४४९ में अजातशत्रु-पुत्र दर्भक (दर्शक) था। [उदयन को अजातशत्रु-कन्या पद्मावती और चण्ड-(प्रद्योत) कन्या वासवदत्ता विवाही थी। देखिए, भास कवि-कृत स्वप्नवासवदत्ता और कालिदास कवि-कृत मेघदूत] ई पूर्व ४०६-३२३ में नवनन्द राज्य (पाटलिपुत्र)। ई पूर्व ४०० में कात्यायन (पटना, कौशाम्बी, डल्ला सुल्तानपुर)। ई पूर्व ३३३-३२३ में महापद्म (नवमनन्द, पाटलिपुत्र) था। ई पूर्व ३२३-१८६ में मौर्य-राज्य। ई पूर्व १८६-७४ शुंग राज्य। ई पूर्व १८६-१४८ शुंगवंशी पुष्य-मित्र की अश्वमेध में पतञ्जलि थे। ई पूर्व ७४-२९ कण्व-राज्य। ई पूर्व ५७ में विक्रमी संवत् प्रवर्तक शकारि वीर विक्रमादित्य, कवि कालिदास (उज्जैन में) हुए। ई पूर्व २९ से २२५ ई तक आन्ध्र राज्य। पारीक्षित ई पूर्व ११७५ + २२५ ई आन्ध्रान्त = १४०० वर्ष का विवरण, पूर्वोक्त श्लोक द्वारा इस प्रकार हो गया।

पुराण ई पूर्व १४०२-१२०२ द्वितीय द्वापर। ई पूर्व १२९४-१२९० में पराशर-पुत्र वेद-व्यास और जातूकर्ण्य हुए। इसी द्वापर में १८ पुराणों की प्रथम रचनाएँ की गयी थीं। जिनका क्रम है—१ ब्रह्म २ पद्म ३ विष्णु ४ वायु (शिव) ५ भागवत ६ नारद ७ मार्कण्डेय ८ अग्नि ९ भविष्य (सौर) १० ब्रह्मवैवर्त ११ लिंग १२ वराह १३ स्कन्द १४ वामन १५ कूर्म (कश्यप) १६ मत्स्य १७ गरुड १८ ब्रह्माण्ड। "मद्वयं भद्वयं चैव ब्रत्रयं वचतुष्टयम्। अनापकूर्स्कलिंगानि पुराणानि विदुर्बुधा ॥" शाखा से मूल तक आरोह तथा मूल से शाखा तक अवरोह होता है। पूर्वोक्त १ से १० (ब्रह्म ब्रह्मवैवर्त) तक आरोह तथा ११ से १८ (लिंग ब्रह्माण्ड) तक अवरोह है। (१) दृश्य-जगत् किसने बनाया ? का उत्तर है ब्रह्म में। (२) ब्रह्मा कहाँ से आये या

किसने उन्हें बनाया ? का उत्तर है पद्म में। (३) पद्म कहाँ से आया ? का उत्तर है विष्णु में। (४) विष्णु कहाँ हैं ? का उत्तर है वायु (शिव) में। (५) शेष नाग, किस आधार पर हैं ? का उत्तर है भागवत में। (६) भगवान् के समीपवर्ती कौन ? का उत्तर है नारद में। [पुराणों का सिद्धान्त है कि (क) पृथ्वी ही कमल है (पद्मपुराण)। (ख) सूर्य ही भगवान् विष्णु हैं। (ग) सूर्य-चन्द्र ही नाभि है। (घ) अन्तरिक्ष ही कमल-नाल है। (च) पृथ्वी का, नाल के द्वारा सूर्य से सम्बन्ध है। महर्लोक ही शेष हैं। क्योंकि नैमित्तिक प्रलय में त्रिलोकी-क्षय के बाद 'महर्लोक' शेष रह जाता है। शेष नाग (सर्प) नहीं] मूल तत्त्व के ४ मत हैं। (७) प्रकृति ही समस्त ब्रह्माण्डों का मूल-तत्त्व है मार्कण्डेय में। (८) अग्नि ही समस्त ब्रह्माण्डों का मूल-तत्त्व है अग्नि में। (९) सूर्य ही समस्त ब्रह्माण्डों का मूल-तत्त्व है सौर=भविष्य में। (१०) ब्रह्म ही समस्त ब्रह्माण्डों का मूल-तत्त्व है ब्रह्मवैवर्त में। यहाँ तक आरोह-क्रम था। आगे अवरोह-क्रम इस प्रकार है। (११) सूक्ष्म से स्थूलता कैसे ? का उत्तर है लिंग में। (१२) स्थूल से मण्डल (विस्तृत) होने ? का उत्तर है वराह में। (१३) मण्डलों पर प्राण-रूप कुमाराग्नि है स्कन्द में। (१४) तीन पद (पृथ्वी-अन्तरिक्ष-सूर्य) वामन में। (१५) सूर्य-मण्डल से प्राण-रस द्वारा प्राणी होना ? कूर्म=कश्यप में। (१६) सूर्य-रस के साथ तीन रस=उत्तर में वशिष्ठ दक्षिण में अगस्त्य मध्य में मत्स्य ही प्रमुख है मत्स्य में। (१७) लोकान्तर-गति गरुड में। (१८) लोक-लोकान्तरों का विस्तार ब्रह्माण्ड में। पृथ्वी=भूलोक। अन्तरिक्ष=चन्द्रलोक (भुवः)। स्व=सूर्यलोक। महः=सूर्य से ऊपर। जन = परमेष्ठि मण्डल। तपः=परमेष्ठी का अन्तरिक्ष। सत्यम्=स्वयम्भूमण्डल। [विस्तृत-आमार्थ पुराण देखिए]

त्रिशंकु [तीन अंगुल के शंकु द्वारा विश्वामित्र ने वेध किया] वेद से लेकर पुराणों तक में ब्रह्मा इन्द्र विष्णु, विश्वामित्र वशिष्ठ वामदेव (नारद) के प्रसंगों से परिवर्तन' के सूत्र मिलते हैं। कभी राजनैतिक (पालिटिक्स) कभी खगोल-गणित-सम्बन्धी (एस्ट्रानॉमिकल) कभी धार्मिक (Virtuous) आदि परिवर्तन करना पड़ते हैं। प्रसिद्धि है कि त्रिशंकु-काण्ड के समय विश्वामित्र ने नयी सृष्टि की रचना प्रारम्भ की थी। 'चकारान्य च लोकं वै क्रुद्धो नक्षत्र-सम्पदा। प्रतिश्रवण-पूर्वाणि नक्षत्राणि चकार सः ॥१४॥ आदि पर्व ७१। क्रुद्ध होकर विश्वामित्र ने खगोल-गणित-सम्बन्धी परिवर्तन करना प्रारम्भ किया (न कि नारियल-वृक्ष से मानव-प्राणी का उत्पन्न करना प्रारम्भ किया। स्वायम्भुव मनु की सन्तति-काल में भूमि-योजना पूर्ण की गयी थी। 'मनो स्वायम्भुवस्यासन् दशपुत्रास्तु तत्समाः। यैरियं पृथिवी सर्वा सप्तद्वीपसमन्विता ।।४।। ससमुद्राकरवती प्रतिवर्षं नियोजिता। स्वायम्भुवेऽन्तरे पूर्वं आद्ये त्रेतायुगे तदा ॥५॥ वायु ३३। वर्णाश्रमव्यवस्थानं तथा ब्रह्मा तथाकरोत् ॥५५॥ तथा त्रेतायुगस्यादौ मनुसप्तर्षयश्च वै। श्रौतं स्मार्तं च धर्मं च ब्रह्मणा च प्रचोदितम् ॥३९॥ वायु ५७।

शब्दार्थ मूकं करोति वाचालं पंगुं लंघयते गिरिम्। यत्कृपा तमहं वन्दे परमानन्द-माधवम् ॥" मूक (गूंगे) को वाचाल (मुखर) करते हैं। लंगड़े को पर्वत पार कराते हैं। ऐसी कृपा के करने वाले उस परम आनन्ददायक माधव को मैं प्रणाम करता हूँ। 'मधुश्च माधवश्च वासन्तिकावृतू। ज्योतिष-शास्त्र में मधु-माधव (चैत्र-वैशाख या मीन-मेष के संक्रान्ति-काल) को वसन्त ऋतु कहा गया है। [ता० १५ मार्च से १२ एप्रिल तक चैत्र तथा १३ एप्रिल से १५ मई तक वैशाख होता है] इसमें १३ एप्रिल के पूर्व (मीन-संक्रान्ति या चैत्र) में यज्ञोपवीत तथा उपरान्त विवाह का नियम है। दूसरे शब्दों में मधु में यज्ञोपवीत तथा माधव में विवाह करना उपयुक्त है। तीसरे शब्दों में माधव-मास (वैशाख मास) वसन्त-ऋतु का प्रौढ़-काल होता है।

पूर्वोक्त श्लोकस्थ माधव शब्द के अर्थ हैं, श्रीकृष्ण, वैशाख मास, वसन्त-ऋतु का प्रौढकाल, विवाह-कर्म, माध्वीक, लवण, मधु-क्षार। 'मधोरपत्य पुमांश्चेन्माधव ।' (१) जब हमारा जन्म हुआ था तब हम, मूक और पगु (दोनो) थे। अरे भाई, मैं ही नहीं, सारा ससार था। पर कालान्तर में, ससार के साथ, हम-आप (सभी) बोलते एव चलते-फिरते हैं। तात्पर्य यह कि, मूकत्व-पगुत्व दूर हो गया। (२) यह बोलने एव चलने का प्रारम्भ, माधव के सभी अर्थों द्वारा होता है। (३) प्रलय के बाद सृष्टि, मृत्यु के बाद पुनर्जन्म, पतझड के बाद पल्लवित-पुष्पित करना, यज्ञोपवीत के बाद विवाह कर्म, खिन्नता के बाद माध्वीक सेवन, वातस्तम्भ के बाद लवण (क्षार) सेवन, (मधु दैत्य का पुत्र लवणासुर था। वाल्मीकीय) से मुखरता एव गति प्राप्त करना, माधव के सभी अर्थों द्वारा, सम्भव है। (४) आयुर्वेद द्वारा, मधु की औषधि के अर्थ होंगे, माधव औषधि। लवण युक्त औषधि, माधव औषधि कहाती है। यथा, मधुकल्प, मधूक-कल्प, मधु-मकरध्वज, लवण-भास्करादि चूर्ण, मृतसजीवनी सुरा, द्राक्षारिष्ट, द्राक्षासव आदि। मधु-रसात्मक पदार्थ, रसगुल्ला (गुटिका) आदि, शिशु से वृद्ध तक को, मुखरता एव गतिदायक [टॉनिक] हैं। (५) षोडश-सस्कार में से सर्वश्रेष्ठ सस्कार, विवाह है। यदि यह सस्कार हटा दिया जाय तो, निराकार ससार रह जायगा। अतएव यह सस्कार, समार को मुखरता एव गति देता है। इस सस्कार की अथवा समार की मूकत्व-पगुत्व-नाशिनी महान् औषधि, माधव है। (६) विवाह में मधुपर्क-सस्कार, जोकि वर्तमान में न खिला के, केवल नापित को पारिश्रमिक देकर, [ऑर्डर वाई सस्कार-विधायक-पण्डित] फेंक दिया जाता है। भावना है कि मधुपर्क, सुरा है, (टॉनिक नहीं)। सनातन-धर्मी विवाह-पद्धति में, वैद्रिक-धर्मी सस्कार-विधि (आर्य-स्वामी दयानन्द-विरचित) में, पारस्कर गृह्य-सूत्र के प्रथम काण्डीय तृतीय कण्डिका में मधुपर्क का विषय है। १२ तोले दही में ४ तोला मधु-मिश्रण से, यह दिव्य-टॉनिक बनकर, वाजीकरण, वातघ्न, श्वास-कास नाशक, रेचक-पाचक, रुधिरवर्धक, दीप्त-गुणी होता है। स्मरण आता है कि, मेरे दो विवाह करने पर भी, इस औषधि-सस्कार से क्यों वञ्चित रखे गये। माधव की अनकृपा से माधव (मधुपर्क) न मिला। जिसे, श्राद्धकर्म में पितृगण, मधु-गायत्री पाठ द्वारा, सर्वदा चाहते रहते हैं। जिसे, उपनिषद्कार मधु-विद्या कहते हैं। ऐसे ही कारण हैं, मूकता-पगुता न दूर होने के। इसके विरुद्ध अर्वाचीन माध्वीक, मुखर और गति-शील को, मूक और पगु बना देती है। इसका कारण, उसकी निर्माण विधि तथा उसकी मात्रा है। लोगों को, वेअर-हाउस का मार्ग, ज्ञात है। किन्तु, माधव-उपयोग की अनभिज्ञता है। ससार के सभी माधव का सदुपयोग एव आनन्द, अर्थ-भित्ति पर है। ॐ मधुव्वाता ऋतायते, मधु क्षरन्ति सिन्धव , माध्वीर्न सन्त्वोषधी । मधुनक्तमुतोषसो मधुमत्पार्थिव रज, मधु द्यौरस्तु न पिता। मधुमान्नो वनस्पतिर्मधुमान्नस्तु सूर्य , माध्वीर्गावो भवन्तु न ॥ पारस्कर गृह्य-सूत्र काण्ड १ कण्डिका ३। × × × वर्तमान में आनन्द ब्रह्मा की सृष्टि है। आप भी आनन्द से, वायु (शिव) पुराण को पढकर जान सकते हैं। परमानन्द माधव, अभी आपके समीप, पूर्वोक्त पक्तियो में हैं। हमारे ४६ वसन्त बीत गये। हो सकता है कि, आपके शत-वसन्त बीतें। आनन्द के समान, आनन्दित होकर, महात्मा गान्धी, युग-निर्माण में, किस माधव-ब्रह्मा से कम काम किया। जबकि, गणित से मोहन = माधव हैं। × × × सहस्राब्दी, शताब्दी, दशाब्दी, पञ्चाब्दी में किस क्रम से मूकत्व-पगुत्व दूर होकर, युग के साथ, हमारा-आपका निर्माण होता है। सभी प्रकार की अब्दियाँ, पचाब्दी के रूप में पुराण के पचवर्षीय युग, पातञ्जलिसूत्रस्थ यम (अहिंसा, सत्य, अस्तेय, ब्रह्मचर्य, अपरिग्रह) और नियम (शौच, सन्तोष, तप, स्वाध्याय, ईश्वर का प्रणिधान = ध्यान) नामक पच-पच साधनाएँ, तन्त्र के पञ्च-मकार, सिक्खो के पच-ककार, आयुर्वेद के पच-सकार, मन्त्र के पञ्चाक्षर, ज्योतिष के पचाग (तिथि, वार, नक्षत्र, योग, करण), योग के पञ्चाग्नि-तप, शरीर के पञ्च-तत्त्व, शिव के पंच-मुख, विष्णुशर्मा का पञ्च-तन्त्र, सत्यनारायण का पञ्चामृत(दूध-

दही-घी-मधु-गुड़) कर्मकाण्ड द्वारा प्रायश्चित्तार्थ पंच-गव्य (गोमूत्र गोबर, गोदुग्ध गोदधि गोघृत) पञ्च-रत्न (मोती लाल सुवर्ण मूंगा चांदी) पञ्चायती तन्त्र (गण-तन्त्र) पंचशील योग पंचवर्षीय योजना आदि को आप केवल 'पचवर्गी' कह सकते हैं। × × × सभी युग के अवतार काल में रूपान्तर से कुछ देवता इस पृथ्वी पर आ जाते हैं। (१) पदुम अठारह यूथप बन्दर। गोस्वामी जी। (२) 'लंका में ३२ करोड़ राक्षस।" श्री सीता-समक्ष रावण-वाक्य वाल्मीकीय आरण्य। इन दोनों वाक्यों से आप प्राचीन कूटालंकार-युक्त शाब्दकास्ट ७-११ अक्षौहिणी की भांति राम-रावण की सेना के गणित पर ध्यान दीजिए। गोस्वामी जी ने डबल कूटालंकार लगाकर, लंका में खलबली मचा दी। रावण ने राक्षस बताया तब इधर यूथप बताया गया। रावण ने ३२ अंक कहा तब इधर १८ अंक कहा गया। रावण ने कोटि कहा तब इधर पद्म कहा गया। साधारण जनता क्या रावण चकरा गया। किन्तु हम थे राक्षस अर्थात् लंका में। तुरन्त गणित लगाया। कोटि=करोड़=श्रेणी = राक्षस=१ ० × ३२=३२ ० रावण-सेना। पद्म=कर=यूथप=१ सेनाध्यक्ष। १ ×१८=१८ ० राम-सेना। राम=१८ यत् पाण्डव=७ अक्षौहिणी। रावण=३२ यत् कौरव=११ अक्षौहिणी। रामसेना में १८ यूथप। रावण सेना में ३२ श्रेणी राक्षस। यूथप=श्रेणी=१ । रावण-कौरव की हिम्मत बढ़ गयी और युद्ध का डंका बजा दिया गया। १८=१+८=९ भाग्यांक पर युद्ध। ३२=३+२=५ बुद्धि पर युद्ध। ७=स्त्री पर युद्ध। ११=१+१=२=पोंपर्टी पर युद्ध। परिणाम गलत निकला। इसका कारण था कि ज्योतिष को न रावण मानता था और न कौरव। अब हम बतावें क्या ?। हनुमान-अंगद रावण-सभा से तथा कृष्ण जी कौरव-सभा से बैरंग वापस आ गये थे। फलित में देखिए पृष्ठ २२१। गुप्त-कोटि वाली कोटि में एक लाइन रहती है। मूर्धा-सहस्र दलकमल में (योग) हृदय-कमल में (आयुर्वेद) जरायु-कमल में (गर्भ) मुख-कमल में (शृंगार) नेत्र-कमल में (भाव-माधुर्य) कर-कमल में (सेना की बाग-डोर) नाभि-कमल में (सृष्टि-रचना) चरण-कमल में (भक्ति) । × × × यादव शशिबिन्दु के एक अरब सन्तति थीं। दशलक्षसहस्राणि पुत्राणां तास्वजीजनत्। ३१। भागवत ९ २३। सहस्र सन्तति (किरण) वाले शशिबिन्दु (चन्द्रामृत) से दशों दिशाएँ व्याप्त हैं। दस लक्ष सहस्र (इसमें लक्ष शब्द यूथप बोधक भी है) = १ सेना=१ यूथप × सहस्र सेना। सूर्य-छाया से उद्भूत चन्द्र की सहस्रकिरणें जगत् में व्याप्त हैं। जिनसे ६ ऋतुएँ बनती हैं। यादव शशि-बिन्दु के मुख्य ६ पुत्र थे। चन्द्र-किरण १ ? का गूढार्थ सेना १ । प्रजा स्यात् सन्ततौ जने। अमर-कोष। सन्तति=पुत्र सेना जनसंख्या किरण। भारत की सेना=३६ करोड़ जन-संख्या है। सम्पूर्ण देश सैनिक होता है, उसमें भी स्थावर-जंगम सभी। सेना में सैनिक वाहन अन्न-शस्त्र आदि सब की गणना होती है। हमारा देश अपने राज्य की सम्पूर्ण सेना सर्वथा मानता चला आ रहा है। कुछ काम सर्कस वाले थोर पाले रहे। समझते थे वीर किन्तु स्वांग के लायक। पुराणों के शब्द का स्वांग दिखाते-दिखाते १२ ० वर्ष हो गये। तात्त्विक बात एक यह भी है कि लीलावती के अर्बुद शब्द के अर्थ हैं गर्भ के कललोपरान्त भ्रूण की स्थिति जो कि 'एक' होता है। इस एक को हिन्दी में अरब कह देते हैं। अब गिनते रहो संख्या ? × × × द्वीप=दोआबा=टापू=देश। तप=राज्य=प्रयत्न=संस्कृति=शिक्षा=मौसम। भगीरथ तप करके गंगा लाये। इसके अर्थ हैं कि भगीरथ ने अपने राज्य की प्रजा के सहयोग से कुदाली-फावड़ा लेकर नहर की भांति गंगा से हुगली नदी को मिलाया और अपने पितामह की रक्षी हुई ६ सेना को बसाया। समुद्रतीर्थ में अस्थि विसर्जन करने का स्वयं विधान है। बदरीनाथ=गंगोत्री से २ लोटा जल रामेश्वरम् को और रामेश्वरम् से २ लोटा जल बदरीनाथ की धारा भी चढ़ाई होता है। इसे आप दूसरे अर्थों में यों समझिए कि भीष्म में जाह्नवी-पार किया

(भागीरथी नहीं) । शकरजटा की गगा = कैलास गगा = गगोत्री से कन्नौज तक । जाह्नवी = कन्नौज से ब्रह्मपुत्र-सम्मेलन तक । भागीरथी = हुगली नदी । आज, सम्पूर्ण गगा भागीरथी है । × × × भारत = (१) ऋषभ-पुत्र (भरत) की राजधानी ब्रह्मावर्त (थानेसर-पंजाब) (२) दुष्यन्त-पुत्र (भरत) की राजधानी, प्रयाग का भूँमी किला [हस्तिनापुर असम्भव । देखिए पुराण में चन्द्रवशी बुध से, २५ वीं पाढी पर भरत और ३० वीं पीढी पर हस्ती ने हस्तिनापुर वसाया था] (३) श्रीराम-भ्राता (भरत) के पुत्र (पुष्कर = भारत) की राजधानी, पेशावर के पास पुष्करावती (चारसद्दा) में । इन तीन (भरत) शब्द से, भारत की रूपरेखा का अनुमान कीजिए । किन्तु, इन तीनो (भरत) में से, प्रथम भरत के भावार्थ द्वारा इस देश का नाम भारत, अपनी विशेषता के कारण हुआ । ऋषभपुत्र भरत था । ऋषभ-पिता नाभि था । भारत का नाभि-वर्ष (हिमाह्य) भी नाम देखने को मिला है । "हिमाह्व यस्य वै वर्षं नाभेरासीन्महात्मन ।" विष्णु २, २ । "भरणात्प्रजनाच्चैव मनुर्भरत उच्यते । निरुक्तवचनैश्चैव वर्षं तद्भारत स्मृतम् । तस्यर्षभोऽभवत्पुत्रो मेरुदेव्या महाद्युति । ऋषभाद् भरतो जज्ञे ज्येष्ठ पुत्रशतस्य स ॥ विष्णु २, ३ । मत्स्य ११४ । नाभि-पिता अग्नीन्ध्र था । इसके समय में जम्बूद्वीप के नव-खण्ड हुए और एक नवें खण्ड का नाम नाभिवर्ष हुआ । अग्नीन्ध्र-पिता प्रियव्रत था । इसके समय में ससागरा सप्तद्वीपा पृथ्वी हुई । जिसमें जम्बूद्वीप, अग्नीन्ध्र को मिला । क्रम-पद्धति के अनुसार, ब्रह्मावर्त (स्वायम्भुव राज्य) से वडा, सप्तद्वीप राज्य हुआ । सप्तद्वीप से वडा, नव-वर्ष राज्य हुआ । नव-वर्ष राज्य से वडा, भारतवर्ष राज्य हुआ । वर्तमान में तो, भारतवर्ष आधा रह गया है । प्राचीन भारत देखिए, पृष्ठ ३६६ से ४१८ तक । भरण तथा उत्पादन करने वाले मनु का नाम, भरत हुआ, जो कि ऋषभ-पुत्र था । इसने नाभि-वर्ष का नाम 'भारत' रखा । किसी पुराण को क्रम से देखने के लिए, 'पुराण-पद' देख लीजिएगा । मत्स्य की अपेक्षा, विष्णु प्राचीन है । × × × ५०० वर्ष वाद भारत, ठण्डा देश हो जायगा (भविष्यवाणी) । ऐसी भविष्यवाणी करने के लिए, ज्योतिष का एक अक्षर, पढने की आवश्यकता नहीं है । क्योंकि, आपके इस औदार्य-पूर्ण कार्य के लिए, तथ्यत राष्ट्र-नेता को कष्ट होता है । परन्तु, हमारी भविष्यवाणी ? ज्योतिष-शास्त्र से नहीं, गीता से है । लोगों ने पढा "सर्वस्य चाह हृदि सन्निविष्ट ।" सवों के हृदय में 'चाह' सन्निविष्ट है । तव, विना १० वार चाह (Tea) पिये, हार्ट में हीट नहीं आ रही है । ऐसी स्थिति में इस हार्ट के हार्ट (सन्तति), ५०० वर्षों मे कैसे निर्मित होंगे ? अनुमान लगाइए । चाय, औषधि है । मात्रा या निर्माण विधि का ध्यान रखिए तो आप, हमारी भविष्यवाणी को अक्षरश असत्य-सिद्ध कर सकते हैं । इसी प्रकार ज्योतिषियों की अनेक भविष्यवाणियाँ, योग्य देश-काल-पात्र वाले, नित्य असत्य-सिद्ध करते, त्रिकाल में मिलेंगे । । आपने प्रयत्न किया । प्रयत्न-विधियाँ, अर्थानुपूर्वी हैं । कभी द्रव्य-यज्ञ के द्वारा, कभी प्रार्थना द्वारा, कभी चचा कहके आप, अपना कार्य साधन करते रहिए । चाहे, तन्त्र-मन्त्र द्वारा, चाहे छाता लगाकर, शरीर रक्षार्थ, ग्रीष्म-वर्षा से वचते रहिए । साथ में, वचाते भी रहिए । आपके किसी कार्य द्वारा, किसी को कष्ट न हो, ऐसी शुभ-धारणा रखिए । × × × । भृगु-सन्तति = भार्गव । भृगुक्षेत्र (भडौच-गुजरात)-वासी = भार्गव । नाग = पर्वतीय जन और सर्प । नाग-पुत्री, लक्ष्मी, पार्वती, नर्मदा, हैं । 'ससर्पे च गृहे वासो मृत्युरेव न सशय ।' पचतत्र । जिस घर में सर्प रहता है, उसमें निवास करना, खतरे से खाली नहीं है । विष्णु, शिव, पुरुकुत्स के घरों में और मध्य-प्रदेश में, एक-एक नागिन रहती है । × × × अयोध्या में (रघु-काल में), कुवेर ने स्वर्ण-वृष्टि किया ।' रघुवशमहाकाव्य-पचमसर्ग । रूपान्तर से, भारत में पातालपुरी से सोना आता रहता है । भारत = ८२।३० पूर्वी देशान्तर । पातालपुरी = ६७।३० पश्चिमी देशान्तर । सोना = व्यापारिक सन्धि । अलास्का, कनाडा और समुद्र में डुवकी लगाकर, भारत में सोना, नहीं लाया जा रहा है । सुवर्ण = सुन्दर = Gold । पाताल-शब्दार्थ-

बाची कई स्थान हैं। इसके द्वारा केवल नीची–भूमि समझिए, किसी अथाह्य में गोता मत लगाइए। × × ×
राक्षस भालू वानर किन्नर (चारों) पुलस्त्य–सन्तति हैं। (दे० महाभारत पृष्ठ ७२ गीता–प्रेस)। अभी तक हनुमान जी के सींग एवं पूंछ देखते हैं। किन्तु, हनुमान जी ने मुझे अपनी तीन पूंछ दिखाया। जो कि त्रिगुणित रस्सी की भाँति बटी हुई एक दिखती है। श्री राम, भालू (भारतर पर्वतीय जन) वानर (किष्किन्धा पर्वतीय जन) नामक तीन महाराज्यों द्वारा निर्वाचित राजदूत (हनुमान) लंका में ।
लंका के पूंछ-काण्ड के बाद 'राजदूत-प्रबन्ध' नामक विभाग आज तक चला आ रहा है। पूंछ के अर्थ हैं स्वामी का स्वामित्व अथवा देश की शान। (राजस्थ में स्त्रियाँ और मीणा = भारत के एक खण्ड में स्त्रियाँ और मीणा)। इसलिए हनुमान जी की प्रमुख पूंछ, श्री राम जी का ध्यान कीजिए। लंका का पूंछ–काण्ड भूल जाइए। क्योंकि हनुमान जी के न पूंछ थी और न है। पुलस्त्य–सन्तति वानर हमारी–तुम्हारी भाँति पूंछ–रहित थे। पाठक पूंछ का पूंछना ही बन्द कर दीजिए। देवता को जानवर मत समझो। एक बार सनातन–धर्मी और आर्य समाजी लड़ पड़े हनुमान जी की पूंछ पर। तभी हनुमान जी ने दोनों को अपनी पूंछ से लपटकर दिन में आकाश के तारे दिखा दिये। उसी दिन से भारतीय-संस्कृति के सुधार का झण्डा उठाया गया। ठीक अर्थ समझो के मारे अघाये गये। जिसकी सुन्दराकृति पञ्चशील–योजना है। वही हमारे भगवान् सत्यनारायण का पञ्चामृत प्रसाद है। पुराणों के क्या सभी शास्त्रों के उनमें भी गणित–फलित के विशेष शब्दों का सम्भाव्य सन्देह–रहित, उपयोगी अर्थों द्वारा अनुसंधान–कार्य कीजिए।

वर्ग एका च मे तिस्रश्च मे तिस्रश्च मे पंच च मे पंच च मे सप्त च मे सप्त च मे नव च मे नव च मे ।२४।
चतस्रश्च मेऽष्टौ च मेऽष्टौ च मे ।२५। अष्टाध्यायी ८। द्विपदायाश्चतुष्पदाश्चिपदाय एव षट्पदा ।२।। अष्टाध्यायी प्रथम। ये मन्त्र सभी वेदाध्यायी स्वाध्याय करते हैं। इन्हें ही के द्वारा एक से नव तक का क्रमशः वर्ग (पहाड़ा) १ ४ ९ १६ २५ ३६ ४९ ६४ ८१ होकर सोपान-मार्ग द्वारा उतरता हुआ है। इन अङ्कों के पूर्व–पर अंक क्रमशः मूलांक की मध्य में से ऋणा का चढ़ा दिये गये तथा मध्य में धन करके उतार दिये गये हैं। यथा ५ का वर्ग २५ (मध्यकम का अक) तत्त्व है। इस २५ में से ५-५ घटाकर ५ तक ऊपर पहुंचे तथा उसी २५ में ५-५ जोड़कर ४५ तक उतार में आये। २५ = २ + ५ = ७ = केन्द्र। ४५ = ४ + ५ = ९ = भाग्य। मूलांक ५ = बुद्धि। जन्म कुण्डली के नवम भाव से (पूर्व जन्म से) लग्न (बुद्धि) तक (वर्तमान जन्म तक) आये। यह गति पूर्व–जन्म से ऋणात्मक तथा वर्तमान-जन्म के धनात्मक पथ पर रहेगी। तदनन्तर ५ = लग्न से पंचमभाव = वर्तमान जन्म से पंचम भाव अथवा नवम भाव से नवम (पंचम) भाव = मूल के भाग्यांक में पहुँचेंगे। यह गति वर्तमान-जन्म से ऋणात्मक तथा पुनर्जन्म के धनात्मक पथ पर रहेगी। यही वर्ग पहाड़ा सब व्यापकता जन्म और विंशोत्तरी के ग्रह-वर्ष-विभाजन का सिद्धान्त है। जब से लेकर, बालकों को पहाड़ा पढ़ाया गया तब बालकों को भी जानना चाहिए कि हम कहाँ से आये कहाँ हैं कहाँ जायेंगे [कोऽहं कस्त्वं कुत आयातः को मे जननी को मे तातः। इति परिभावय सर्वमसारं विश्वं त्यक्त्वा स्वप्न-विचारम् ।। चर्पट-पंजरिका ।।] ? का सहायक होगा कि ज्योतिष पढ़ने से मोक्ष ही जायगा। क्योंकि ऊर्ध्वमूल हो नीचा शाखा में उतरा तब क्या पुनः मूल पर नहीं चढ़ सकता ? अवश्यम्। हम वृक्ष पर चढ़े शाखा में पहुँचे वहाँ से आम लेकर, पुनः वृक्ष के मूल पर आ गये। नीचा तो वहीं पर था। गीता के १५ अध्याय में १ श्लोक। पृष्ठ ९ के पहाड़े का दूसरा रूप पृष्ठ १६ के होरा–चक्र में देखिए। ।

त्रिराट् "दीर्घतमा मामतेयो जुजुर्वान्दशमे युगे। ६।' ऋग्वेद मण्डल १ सूक्त १५८। इसका अर्थ, छोटे से छोटा कलियुग मान ४३२००० वर्ष × १० = ४३२०००० वर्षीय वृद्ध, दीर्घतमा मामतेय को समझना पड़ेगा? असम्भव। परमाणु मे ४३२००० वर्ष का कलियुग, एक पैर वाला बना (देखिए सप्तर्षि, प्रयोग)। १० सप्तर्षि का १००० वर्ष है। एक पैर वाला युग ४३२००० वर्ष का कलि, दो पैर वाला ८६४००० वर्ष का द्वापर, तीन पैर वाला १२९६००० वर्ष का त्रेता और चार पैर वाला १७२८००० वर्ष का सतयुग हो गया = ४३२००० × १० युग (पैर=सप्तर्षि) = ४३२०००० वर्ष का एक महायुग। ७१ महायुग = ३०६७२०००० वर्ष का एक मन्वन्तर। १४ मन्वन्तर = ४२९४०८०००० वर्ष + सतयुगमान × १५ (सन्धि) = ४३२००००००० वर्ष का एक कल्प, जो कि यह कल्प का मान = १०००० कलियुग है। ऐसे दो कल्प = ८६४००००००० वर्षीय काल = ब्रह्मा का एक अहोरात्र (आपके २४ घण्टे का दिन) होता है। ब्रह्मा-दिन × ३६० × १०० = ३११०४० अरब (पृष्ठ ८) वर्ष में एक ब्रह्मा का परिवर्तन होता है। इस प्रकार अकों का विराट् रूप होता जाता है। आप जिस प्रकार ४ वर्ष में, फरवरी के २८ दिन के स्थान मे २९ दिन मानते हैं। ठीक वैसे ही, एक करोड वर्ष में ७६ दिन की फरवरी होगी। किन्तु ४ वर्ष का ही विराट् रूप, एक करोड वर्ष है। अतएव, दीर्घतमा मामतेय १० × ४ = ४० वर्षाय वयोवृद्ध हुए। × × × पूर्वोक्त ३११०४० अर्बुद वर्षीय जरठ ब्रह्मा ने, जब अपना ऑफिस खोला। तब, केवल अकेले होने के कारण, महाश्रम द्वारा अपने आफिस के आस-पास १० अगुल की भूमि में सृष्टि बसाया। तदनन्तर एक, दश, शत, सहस्र, लक्ष, कोटि योजनो तक, सृष्टि का विस्तार किया, केवल एक परमाणु टाइम मे। फलत साकार ब्रह्मावर्त, सप्तद्वीप, जम्बूद्वीप, भारतवर्ष का रूप ५०० करोड मील का हो गया। जब सृष्टि की कोई वस्तु नहीं थी। तब भी ब्रह्मा, एक सेकेण्ड में ३२४०००० परमाणु युग (आई-ग्लास मे अदृश्य, नर-नारी) बनाते ही रहते थे। उसी के द्वादश-द्वादश नर-नारी द्वारा हम, ॐ के बिन्दु की भाँति, अहकार मे ओत-प्रोत, साढे तीन हाथ के समूचे लम्बे, बैठे लिख रहे हैं। इस प्रकार हमारे जैसे ३३ कोटि मे (केवल ३३ से = ३ × ३ = ९ ग्रहों मे) २ अरब जन्तु, वर्तमान पृथ्वी में गणना योग्य हैं। सो भी केवल, जन्तु-विशेष (द्विपद) मात्र। हमारे द्विपद-सजाध्यायी, पक्षिगण भी हैं। परन्तु, ब्रह्मा की सृष्टि में अपद, द्विपद, चतुष्पद, षट्पद, अष्टपद, शतपद, सहस्रपद के सिवाय, स्थावर-जगम भेद से, क्या-क्या और है? इसे, अपने आस-पास घूमकर देख लीजिए। ह्रस्व, दीर्घ, प्लुत स्वर मे बुलाकर, अपना हाजिरी रजिस्टर भर कर, पॉकिट में रख लीजिए। न ब्रह्मा गिन सकने हो, और न उनकी सृष्टि। देखा, जरठ ब्रह्मा की विराट् सृष्टि का निर्माण, परमाणु-युग में [और एक हम है। जो कि, डाक्टर के रोगी-रजिस्टर में यौवनायु लिखाने मात्र के लिए अवतरित हुए हैं।] ख ब्रह्म मे पूर्णमद तक निराकारी सृष्टि का शुमारी-कार्य होना, असम्भवम्। एकोऽहं द्वितीयो नास्ति मे अतिष्ठद् दशागुलम्, शरद शतम्, सहस्रशीर्षा आदि तक साकारी सृष्टि हो गयी है। देखिए रुद्राष्टाध्यायी द्वितीय अध्याय। 'पुरुष एवेद सर्वं यद्भूत यच्च भाव्यम्' इस ब्रह्मा की जितनी सृष्टि हो चुकी है या होगी, वह सब, प्रथमा का एक वचन 'इद सर्वं पुरुष एव' है, आदम-शक्ल है। 'एतावानस्य महिमातो ज्यायाँश्च पूरुष'।' से क्रमश बढती गयी सृष्टि की पुरुष-मूर्ति। बढते-बढते 'ततो विराडजायत' तदनन्तर विराट् हो गयी। फिर भी हम, एक हे। "गुणिगणगणनारम्भे न पतति कठिनी ससम्भ्रमाद्यस्य। तेनाम्बा यदि सुतिनी वद वन्ध्या कीदृशी नाम॥ एकश्चन्द्रस्तमो हन्ति न च तारागणशतान्यपि॥" आप, अपने 'एक' के साथ, अपने देश के कितने 'एक' देख रहे हैं। जिन एकों की सख्या ३६ करोड है। किन्तु एक दिन, जम्बूद्वीप के एक वर्ष (भारत) में, एक थे नाभि-प्रपौत्र, ऋषभ-पौत्र, भरत-पुत्र, शतशृग। [स्कन्द के कुमारिका-खण्ड में] जिनके ८ पुत्र और एक कन्या थी। जैसा प[illegible] भारत का विराट् स्वरूप किया गया था,

वैसा ही यतम्भ ग-सन्तति द्वारा भारत का विराट् स्वरूप किया गया। ६ वर्ष की भाँति इसमें ६ खण्ड थे। (१) गान्धर्वखण्ड (गान्धार=कन्धार) शतद्रु (सतलज) चन्द्रभागा (चिनाव) से युक्त। (२) कुमारिका-खण्ड (भरतखण्ड=स्तम्भतीर्थ=खम्भात की खाड़ी गुजरात) पारियात्र पर्वत (अर्बली पर्वत), वेद (सरस्वती नदी) स्मृति (महीनदी) निर्विन्ध्या (ग्वालियर की सिन्धु नदी) से युक्त। (३) सौम्यखण्ड (सोमनाथ पाटन काठियावाड़)। (४) कसेरुखण्ड (छत्तीसगढ़) महानदी (रायगढ़-सम्भलपुर) शुक्तिमती (महानदी की सहायक शुक्तिल नदी) से युक्त। (५) गभस्तिमान् खण्ड (मध्यप्रदेश) विन्ध्य पर्वत कुमारी नर्मदा नदी (उत्तर-दक्षिण भारत की सीमा पर, एक प्रसिद्ध नदी। इसी नदी के उत्तरी तट पर जबलपुर है) ऋक्ष (मानरेर पर्वत) से युक्त। (६) इन्द्रद्वीप (उड़ीसा) महेन्द्र पर्वत (मद्रास) ऋषिकुल्या (रिषि-कुलसिया नदी गंजाम में) से युक्त। (७) नागखण्ड (नागपुर, बम्बई) नागेशं दारुकावने' हैदराबाद की मदवा बस्ती में) सह्यपर्वत (अजन्ता की गुफायें, औरंगाबाद) तापी (ताप्ती मुलताई बैतूल) पयोष्णी (बैनगंगा Waingangā) कृष्णा-गोदावरी (मद्रास) भीमरथा (कृष्णा की सहायक भीमानदी) से युक्त। (८) ताम्रखण्ड (लंका-दक्षिण-मद्रास) मलयपर्वत (मलाबार) कृतमाला (वैगाइ Vaigai नदी=रामनद मद्रास) कावेरी (मद्रास-मैसूर) ताम्रपर्णी (टनकाशी तिन्निवेली मद्रास और लंका में) से युक्त। (९) वारुणखण्ड (बम्बई प्रान्त)।

कालान्तर में भारत की रूपरेखा परिवर्तित होती रही है। पुराणों के द्वारा कई बार विराट् विराट् रूप होता रहा है। इस विराट् भारत में सन् १८८५ ई० से कांग्रेस-युग प्रारम्भ हुआ। यह युग न तो ४ वर्ष के समान छोटा है और न कलियुग-नाम के समान लम्बे निश्चित वर्ष का है। जिसे निश्चित कहने में कोई बाधा नहीं है, वह युग पञ्चवर्षीय है। आपको बताया जा चुका है कि वर्ष कांग्रेस वालों की वस्तु ही नहीं है। इसमें तो पञ्च ही पञ्च हैं और वर्ष ही पञ्च हैं। स्पष्ट क्षिति १ जल २ पावक ३ गगन ४ समीरा ५ के रूप (१) श्री गान्धी (२) श्री पटेल (३) श्री नेहरू (४) श्री राजगोपालाचार्य (५) सब श्री डॉ० राजेन्द्रप्रसाद हैं। सभी चतुर्मुखी ब्रह्मा हैं। विराट् भारत के विराट् पुरुष विराट् पञ्चशील रूपी रत्न की बोंटमें भर-भर कर अमूल्य विराट् सृष्टि में वितरण कर रहे हैं। श्री इण्डिया का श्री उपहार। 'यज्ञेन यज्ञमयजन्त देवास्तानि धर्माणि प्रथमान्यासन्। ते ह नाकं महिमानः सचन्त यत्र पूर्वे साध्याः सन्ति देवाः॥ अष्टाध्यायी २ १६। पुष्पाञ्जलिं समर्पयामि। विराट् भगवान् से बड़ा विराट् भक्त होता है। भक्त भगवान् का मन (नारद) होता है। मानसिक मनन से बलिष्ठ मन 'अघट-घट-रोपी' हो जाता है। इसी मन को भाषान्तर में लोग मेनन (Menon) कहते जा रहे हैं। किष्किन्धा के राजकुमार, मेन-प्वाइन्ट (मन-रूपी मुख्य बिन्दु) को १९५७ ई० वाली दयामा को मेरा एक 'सुमन-स्तबक' सादर समर्पित " (*)

कुण्डली यह नवीनतम यज्ञ के द्वारा निर्मित होती है। ऐसा क्रिया-रूप में दृष्टि-गोचर होता है। परन्तु, कुण्डली के ग्रह आकाश वाले ग्रहों का एक छाया-रूप है। यथा कूप का जल एक घट में। प्रत्येक व्यक्ति के सिर का अन्तर्भाग ही आकाश है। उसमें भाल की ओर अगला भाग तथा शिखा की ओर पिछला भाग है। दोनों ओर कान के ऊपर पार्श्व-भाग है। इन तीनों भागों (अगला-पिछला-पार्श्व) में तीन-तीन खण्ड ही विस्तृत हैं। ये उच्च मध्य अध भाग से हैं। ये ९ खण्ड न होकर तीन भाग से सांसारिक

(*) चुनाव (स्वयंवर) में श्री मेनन के गले में वर माला (विजय-माला) आ पड़ी।
तेन मेनन-मङ्गलमभ्यर्चितं मया।

ज्ञान का तथा अधोभाग द्वारा शरीर का सम्बन्ध रहता है। स्पष्ट समझिए कि, शरीर की स्वस्थ-अस्वस्थ क्रिया, केवल अधोभाग को प्रभावित करती है, ऊर्ध्व-मध्य को कभी नहीं। ऊर्ध्व और मध्य से उतर कर, जो क्रियाएँ अधोभाग में आजायँगी, उनका रूप, शरीर द्वारा प्रत्यक्ष हो जायगा। योग-शास्त्र, आयुर्वेद, ज्योतिष, तन्त्र-शास्त्र के अध्ययन के बाद, पूर्वोक्त स्पष्ट-निर्णय किया जा सकता है। ज्ञानात्मक विस्तृत वर्णन के लिए तो, यह स्थान नहीं। अतएव क्रियात्मक रूप से, इसकी निर्माण-विधि इस ग्रन्थ के प्रारम्भ से बतायी गयी है। कुण्डली के बनाने में सर्वप्रथम, तीन बातों पर ध्यान रखने की आवश्यकता है। किस स्थान में जन्म हुआ (१) घड़ी का टाइम बताया गया जो कि, जन्म-स्थान से भिन्न स्थान का प्राय होता है (२) इन दोनों से भिन्न स्थान का पंचाग, जो आपके पास है (३)। ये, तीन बिन्दु विभिन्न होते हैं। इनमे तृतीय बिन्दु (पचाग), वहीं काम देगा जिसमें, आधुनिक कालोपयोगी 'कालान्तर-सस्कार' किया गया हो। वेधशाला और केतकी द्वारा बनाये गये तथा बनारस के श्री बापूदेव शास्त्री का पचाग, कुण्डली-निर्माण में उत्तम उपयोगी हैं। भारत-राज्य में 'सस्कारित-पचाग' बनाने का निर्णय हो चुका है।

वर्तमान में कुण्डली बनाते समय, 'घडी का टाइम' कठिनता डालता है। सूक्ष्म-ज्ञानी के लिए, कोई बात नहीं। पर सर्वसाधारण कुण्डली-निर्माता-वर्ग, 'घड़ी का टाइम और जन्म-स्थान'—इन दो विभिन्नताओ पर, लेश—मात्र ध्यान न देकर, कुण्डली-निर्माण-कार्य करता हुआ चला आ रहा है। किन्तु, इसमें उनका अपराध नहीं है। कारण, शिक्षा की कमी है। जिस गुरु-परम्परा से उन्हें, इस ज्ञान की प्राप्ति होती है, वही मूल की शिक्षा, अधूरी है। इस ग्रन्थ का मुख्य लक्ष्य है कि, कुण्डली-निर्माण की शुद्ध-पद्धति को सरलता में बताना। जिसे, आजतक किसी ग्रन्थ-विशेष द्वारा नहीं किया गया। गणना के लिए, ग्रन्थ निकलते गये पर, काम के समय, 'सर पर हाथ रख बैठ जाओ' की कहावत पूर्ण करते हैं। जो ग्रन्थ हैं भी, वे अधूरे, दुर्बोध एव क्रम-बद्ध स्थिति मे दूर हैं। किसी में फलित है तो, पता नहीं कि, किस गणित से, यह फल मिल सकेगा। किसी में गणित है तो, केवल आकाश नापिए, वहीं रहिए, खाइए, पीजिए, भूमि में आने की आवश्यकता नहीं। जनता को चाहिए, उसके उपयोगी फलित। फलित, किस गणित द्वारा ग्रन्थ मे लिखा गया है, स्पष्ट प्रदर्शन होना चाहिए। जिनमें गणित-फलित दोनों हैं। उनमें सर्वप्रथम त्रुटि, शुद्ध एवं सरल मार्ग बताने की न्यूनता है। किसी की भूमिका, अति सुन्दर, किन्तु २४ अश पृथ्वी का (ठीक) झुकाव मानते है उन ग्रन्थो द्वारा २३।५६ तक सूर्य-क्रान्ति पायी जाती है। २३ अश के आधार पर, लग्न-सारणी बनी है और अयनाश बनाते हैं ग्रहलाघवीय। उदाहरण, अधूरे। शुद्ध अयनाश कौन ? सीधी सी बात है कि, जिस अयनाश द्वारा, लग्न-सारणी, सूर्योदय-सूर्यास्त, ग्रहण-गणित, गुरु-शुक्रास्त आदि परमोपयोगी विषय-निर्माण किये जाते हैं, वह है २३ अयनाश।

केलका ग्रह-गणित अथवा ग्रीनविच-अब्जरवेटरी (वेध-शाला) के तुल्य (पृष्ठ २४ और ७१) अयनाश उपयोगी है। एक ग्रन्थ (मूल्य २० रुपये), ऐसा भी देखने में आया, जिसमें चू-चे-चो-ला (अनावश्यक) छन्द से प्रारम्भ कर, १९ और २३ अयनाश की लग्नसारणी देकर, शिक्षार्थी वर्ग को भटका दिया गया। जिसके द्वारा आप; वर्तमान में १० जनवरी और १४ जनवरी को मकर-सक्रान्ति मानकर, दिनद्वयात्मक धर्माचारी होकर, स्वर्ग की डबल-सीट रिजर्व करा सकते है। ऐसी दशा मे कुण्डली-निर्माता-वर्ग, भ्रमित एव अर्धांगाधारी होने से, घड़ी के टाइम और जन्मस्थान की कोई सस्कारित पद्धति न लेकर, अन्धाधुन्ध, कुण्डली के निर्माण में जुटा हुआ है। फलत ९८ प्रतिशत कुण्डलियाँ, अशुद्ध बन जाती हैं। तब,'हरित भूमि तृण सकुलित, समुझि परै नहि पथ' की कहावत चरितार्थ हो रही है। अतएव आधुनिक सर्वोत्तम प्रणाली से युक्त 'निर्माण-पद्धति' बताने वाला 'ग्रन्थ' बना और आज, आपके हाथ में है। भले ही आप इसे, टेबुल पर रख कर पढ रहे हो। योग्य अर्थ, योग्य-पद्धति,

योग्य समीप व्यक्ति या ग्रन्थ से जानना चाहिए। ब्रह्मचारी-स्वाध्याय का ज्ञान व्याकरणाचार्य की अपेक्षा प्राणायाम द्वारा उपयोगी रहेगा। इस प्रकार घड़ी का टाइम जन्म-स्थान और पंचांग इन उपयोगी पदार्थों के एक बिन्दु पर आकर श्री सूर्योदयात्+इष्टम्' बनाइए। जिसे यह ग्रन्थ क्रमशः बताता चला जायगा। पृष्ठ ५ से २२५ तक में गणित द्वारा कुण्डली का निर्माण करके (चाहे कोई भी कुण्डली याद पर उसे निश्चस्त न समझिए) इस ग्रन्थ में लिख फलित लिखना चाहिए। शिर में स्थित आकाश (हृदय) में २८ नक्षत्र बारह राशियाँ नवग्रह आदि का रूप ही 'जन्म पत्र' है।

फलित यह ग्रन्थ सरल-गम्भीर रूपक है। फलित देखने के पूर्व शान्ति ईश्वर-स्मरण कुण्डली-चक्र पर नवग्रह-ध्यान करना चाहिए। जब तक विश्वास न हो कि कुण्डली का गणित ठीक है या नहीं तब तक फलित के लिए मस्तिष्क-श्रम करना, व्यर्थ है। इसलिए प्रथम उसमें प्रथम-वर्तिका का फल सुनाइए। जब कुण्डली-शुद्धता का परिचय मिल जाय तब नवम-वर्तिका का फल सुनाइए। दशम-वर्तिका का फल सर्वस धारण में उपयोग न कीजिए। एकादश-वर्तिका का उपयोग अतिस्थिर (गम्भीर) वातावरण में होकर कम से कम कीजिए। आत्म-निवेदन तथा द्वादश-वर्तिका द्वारा स्वास्थ्य एवं आयु का एक दिशा-सूत्र स्थिर कीजिए। फलित लिखते समय आप ज्योतिषी से जज बन जाइए। स्थिति-भूमि को कोर्ट समझिए। जातक के प्रति न्याय के लिए साक्षी-स्वरूप ग्रह-फल लिखिए। ग्रन्थ को विधान-संग्रह समझिए। जिला कोर्ट की भाँति साक्षियों (ग्रहों) का बयान-संग्रह (ग्रहों का स्वाभाविक-फल) हाई कोर्ट की भाँति बहस (फल-विवेचन) और सुप्रीम कोर्ट की भाँति अन्तिम निर्णय (सम्यक् तथ्य फल) बताइए।

मूलाधार	= नारंगी रंग	सूर्य
स्वाधिष्ठान	= हरित	पूर्णचन्द्र
मणिपूर	= लाल	मंगल
अनाहत	= नील	बुध
विशुद्ध	= पीत	गुरु
आज्ञा	= बैंगनी	शुक्र
द्वादशारबिन्दु	= श्याम	शनि

फलित का सिद्धान्त है कि लाल-नील रंग समक्ष हैं, इनके मिलन में सारा रंग अदृश्य हो जायगा। पीत-बैंगनी रंग परस्पर समक्ष हैं, इनके मिलन से पीत रंग अदृश्य हो जायगा। नारंगी-श्याम रंग परस्पर समक्ष हैं, इनके मिलने से दोनों रंग अदृश्य हो जायेंगे। हरित के समीप कोई रंग नहीं है (इस फार्म्यूला में देखिए)। इस शत्रु-मित्र निर्णय द्वारा फलित का अनुसन्धान किया गया है। चन्द्र को प्रकृति और जगत् माना गया है। चन्द्र के वाम पार्श्व में उष्णमण्डल तथा दक्षिण पार्श्व में शीतमण्डल है।

पूर्वोक्त रंगों का आलोक (लाइट) 'सूर्यकोटिप्रतीकाशं चन्द्रकोटिसुशीतलम्। विद्युत्कोटिसमाभासमरूपं तत्पर महत् ॥' सूर्य-सम उज्ज्वलता चन्द्र-सम शीतलता विद्युत्-सम आभा से युक्त कुछ अरूप-वर्णी है। आलोक का पूर्णतः अभाव या पूर्ण अन्धकार तमो ग्रह राहु है और आलोक तथा अन्धकार का मिश्रण (सन्धि नामक स्थिति) केतु है। ३१ वाँ रूप धवललोहित केतु और ३२ वाँ रूप नील-कृष्ण राहु है। फलित बताने में सायन ग्रह काम नहीं देते। निरयण कार्य ही फलितोपयोगी है। धनु राशि का अग्नि-तत्त्व है। किन्तु, सायन गणना से धनु लग्न का व्यक्ति मोटा होगा। (क्योंकि निरयण गणना से वृश्चिक लग्न होगी) तब सायन-गणना में सैद्धान्तिक भेद हो जाता है। उदाहरणार्थ पृष्ठ १५२ के चक्र २४ पृष्ठ २१८ में राहु में चन्द्रान्तर (सं २ १२।८।१२ से सं २ १४।१।१२ तक) पृष्ठ ४९२ प्रेक्टिकल ११ के क्रम १६ के अंग आदि कारणों से मार्च १९५७ का समय हास्पिटल में बिताना पड़ रहा है [ध्यान रहे, दशान्तर्दशा (राहु—चन्द्र) का षडष्टक योग भी है]। हाँ तो इस ग्रन्थ को क्रम से पढ़िए और क्रम से कुण्डली बनाइए तथा क्रम से फल लिखिए। फल लिखने या बताने का क्रम इस प्रकार होना चाहिए कि जिस जातक की कुण्डली आपके सामने है। उसमें सर्व प्रथम उसकी आयु

हा। इस ग्रन्थ के पृष्ठ ३८३-३८६ का भी अध्ययन किया, 'शुचीना श्रीमता गेहे।' गीता पर भी ध्यान दिया। जातक-दीपक की नवम-वर्तिका (भाग्यरेखा=पूर्व जन्म का निर्णय) पर, तपस्या की सारी शक्ति लगाकर, एक सूची तयार किया। आवश्यकतावश ऋतुधर्म की अवधि, वशिष्ठानी द्वारा जाननी पड़ी। दुष्ट से दुष्ट की मित्रता तथा सज्जन से सज्जन की मित्रता का योग समझा। रावण के सभी ग्रह दवाने वाले ग्रहों की स्थिति को समझा। [दुष्ट से सज्जन का विरोध होगा तो, युद्ध में सज्जन न ठहर सकेगा। किन्तु, दुष्ट के साथ, कोई वलिष्ठ दुष्ट मिल जाय तो, दुष्ट को मैदान छोड देना पडेगा, यथा सर्प के लिए लाठी। वशिष्ठ ने ध्यान रखा कि, ऐसा दुष्ट भी न हो, जैसे चप्पल, अपने पृष्ठाग मे ही धूल झोंकते रहते है। चेला हो चेला, गुरु न वन जाय, किन्तु गुरुता रखे ही। रावण ने, सभी ग्रहों को अरेस्ट कर लिया है, उनमें से जो, हमारे पक्ष में आ सकते हैं। उन्हें मुक्त कराया जाय]—इत्यादि अनेक प्रकार से, जो है सो, वशिष्ठ ने तपस्या का अभ्यास करना, जारी रखा। उनकी, इतनी तपस्या करने में, १२ वर्ष के समय के साथ, उस समयोपयोगी नगद-दाम (Ready-Money) वहुत लगा। खडाऊँ से चन्दन तक का भारी-भरकम खर्च, साथ में १०० पुत्रो की गृहस्थी, कभी सिनेमा-वाक्स के लिए वशिष्ठानी का गतिक-आग्रह [वह तो हमी अच्छे हैं। जो कि, पुत्रों का खर्च नहीं, दासी की परवाह कौन करता है, चन्दन खर्च जीरो (ख ब्रह्म), खडाऊँ के योग्य नहीं, भोजन के लिए हवा काफी है] इस प्रकार वशिष्ठ, नाक घिसते-घिसते, तपस्या के हल पर आ ही से गये थे कि, अयोध्या नरेश का साकार प्रश्न ? [साकार कार्यकर्ता को साकार आशी चाहिए। किन्तु लोग, निराकार आशी देने में, अपनी मित्रता समझते हैं] "पुत्र चाहिए। ५२ वर्षायु व्यतीत हो गयी। एक बार, लुकिंग-ग्लास देखते समय, एक रजत-रोम भी दिख चुका है, अतएव, कृपा कीजिए मुनिवर जानी ?"—सुनकर, वशिष्ठ ने, 'आप, आश्रम-गार्डन की पुष्प-गन्ध लीजिए' नरेश से कहकर, स्वय जातक-दीपक पर ध्यानस्थ हो गये।

प्रश्नकर्ता की आयु ५२=५+२=७ तुलालग्न (भाग्याक)। कल्पारम्भ से वर्तमान सन् १४६२=१+४+६+२=१६=१+६=७ केन्द्राक। ई पूर्व १६०६ वर्ष (अगला वर्ष) होगा, तव १+६+६=१६=७ प्रश्न अक। जातक, २५ वर्ष में अभियान करेगा=२+५=७ भारत का मगल। तव प्रश्नकर्ता की आयु ७७ (५२+२५=७७=डवल सात) की होगी=७+७=१४=१+४=५=पुत्र प्रश्न (पचम भाव) तथा ५ ग्रह उच्च वाला जातक, कुल-दीपक वनेगा। क्योंकि, रावण के भी तुला लग्न में चन्द्र-शनि, मकर में मगल, मेष में सूर्य, कर्क में गुरु, मीन मे वुध-शुक्र प्रकार से स्थिति है [शेष, रावण की सेण्ट्रल जेल से निकालना कठिन है। अच्छा, उनकी आवश्यकता ही क्या है, अपने धर्म के नहीं, म्लेक्ष और ईसाई हो गये हैं]। हमारे स्थान का, भाग्य का, नाम का, सव ७ अक है, ठीक। जातक के, सुख स्थान में वर्तमान तुला लग्न होना चाहिए। किन्तु, चन्द्र का तुला में आना ठीक नहीं, जवकि, अष्टमेश शनि है। प्रश्न के दशवें भाव की लग्न हो तो जातक, प्रश्नकर्ता से अधिक प्रतापी होगा। प्रश्न लग्न के भाग्य में ३ राशि है, अतएव १४ वर्ष अभियान-टाइम रखना पडेगा=१+४=५ ग्रहवाला,५ ग्रह वाले के लिए, ठीक। हाँ, एक वात और, २५+१४=३६=३+६=१२=१+२=३ अक जाग्रत होगा, जवकि, रावण-राज्य का अक ५२=५+२=७ का अक होगा। ५२ में ५ अक मेरे प्रश्नकर्ता का और २ अक मेरा, प्रश्नकर्ता और रावण का, तीनों को मुक्ति चाहिए [मेरे इस जीवन से क्या, पञ्चामृत के धोखे में पचगव्य पीना तथा घर से वाहर तक पचाग देखना—] वर्तमान, ७ के लग्न की पूर्णाहुति, आज से ४० वर्ष वाद, ७ के अक पर होगी। उस समय कल्पारम्भ सन् १५३२=१+५+३+२=११=१+१=२ अक, वर्तमान लग्न तथा रावण (दोनों) का अष्टम भाव रहेगा। देशकार्य सिद्ध होगा। उस समय

चाहिए। किन्तु ज्ञान-मात्रा से अधिक फल सुनाने या लिखने की मात्रा न होना चाहिए। एक मिनट कुण्डली देखकर मारकेश मत बताइए। आप इस ग्रन्थ के अध्ययन के बाद सप्तमस्थ राहु को देखकर, झट से 'आपकी श्रीमती व्यभिचारिणी (कुटिला) है' कहने का दुःसाहस न कीजिए। चाहे थोड़ा कहो किन्तु, वह कहना ठोस एवं लाभदायक अवश्य होना चाहिए। पाठक (ज्योतिषी मात्र के लिए)— 'यदि आपके धनभाव में किसी प्रकार से अशुभग्रह का सम्बन्ध हो तो किसीके शुभ-फल न बताइए और यदि शुभग्रह का सम्बन्ध हो तो किसी के अशुभ-फल न बताइए। अन्यथा आपकी भविष्यवाणी असत्य-सिद्ध होगी।" फल-कथन का श्रीगणेश (जीवन में प्रथम बार) करने के पूर्व इस ग्रन्थ के द्वारा सर्वप्रथम अपनी कुण्डली का सम्पूर्ण गणित-फलित लिखकर रख लीजिए। फिर देखिए कि किस प्रकार से वे फल आप पर घटित हो रहे हैं। उसी ढंग से दूसरे के फल लिखिए या सुनाइए। द्वादश-वर्तिका विष्णु' है न द्वादशादित्यों में से एक आदित्य 'पालक-गुणी' हैं। औषधौ चिन्तयेद्विष्णुम्।" औषधिर्वाम्लिहर्कातोय वेषो, नारायणो हरिः। अर्थात् औषधिस्य = न औषधि द्वारा अपने रोग (पाप) का विसर्जन करना चाहिए।

तपस्या साधारण भाषा में प्रसिद्ध है कि बाल-बच्चों से दूर, नाक दाबकर अपनी साँस को अपनी झोपड़ी-झोपड़ी में बिठाकर स्थिर हो जाना तपस्या है। किन्तु, ऐसी बात नहीं। एक सेकण्ड भी ऐसा न कीजिए, तो भी तपस्या होती है। क्योंकि जिस कार्य के साधन में जिन साधक पदार्थों की आवश्यकता पड़ती है, उन साधनों को ['उद्योगिनं पुरुषसिंहमुपैति लक्ष्मी" अर्थात् प्रयत्नशील व्यक्ति को सिद्धि मिलती है—के नियम से] एकत्र या वर्तमान कर देना ही तपस्या की सिद्धि या वर-प्राप्ति है। स्कूल में बस्ता फेंककर, आप गाँधन की हवा खाएँ तो विद्या-प्राप्ति न होगी। अर्थ यह कि आपने विद्या-प्राप्ति के लिए, तपस्या करना बन्द कर दिया। महात्मा गान्धी ने २८ वर्ष=७ चतुर्युग तपस्या करने के बाद [सन् १९२०—१९४७ ई.] शत्रु को सात समुद्र पार [सप्तसिन्धु प्रदेश से बाहर, जो कि पुर्से ये पूर्वद्वार से उन्हें पश्चिमद्वार से बाहर] खदेड़ दिया। देखा तपस्या ? यदि आपने तपस्या करके इसे न पढ़ा तो मजा का ठीक आनन्द न मिल सकेगा। केवल क—का—कि की आदि अक्षर मात्र में ही यह लिखा गया है, जिसे मास्टर केवल १ वर्ष में लिखना-पढ़ना सिखा देता है। किन्तु, एक वर्ष क्या जब तक ५ युग = २ वर्ष की तपस्या न होगी तब तक तपस्या का समझ सकना असम्भव नहीं तो अत्यन्त कठिन अवश्य है। यह तो एक साधारण उदाहरण है। स्वयं तप का कहना है कि जो व्यक्ति मुझे अनन्यभाव से नित्य प्रयत्न पूर्वक करता है। उसे मैं (अहं) योग (सिद्ध) और क्षेम (फल) देता हूँ।—गीता ९. २२। इस अर्थ में मुझे दोनों मिल चुके होंगे जब कि किसी पाठक के हाथ में यह ग्रन्थ होगा। अस्तु। अनेक ऋषियों महात्माओं ने तपस्या किया है। भगीरथ ने अपने सहायकों के साथ कुदाली लेकर गंगा लाने में सफल हुए (न कि नाक दाब कर बैठने में)। इसी प्रकार एक बार वशिष्ठ ने अपनी कुण्डली दिखलायी प्रश्न था उनका कि मेरा अभीष्ट काम कैसे सिद्ध होगा ? ज्योतिषी ने कहा 'ज्योतिष सीखो और जातक-दीपक पढ़ो तदुपरान्त जातक-दीपक उत्पन्न करो तब तुम्हारा काम सिद्ध होगा। वशिष्ठ ने तपस्या प्रारम्भ की पढ़ा सीखा। अब जातक-दीपक उत्पन्न करने की तपस्या प्रारम्भ हुई। विषयान्तर में समझ लीजिए कि हमारे कल्याणार्थ के साथ-साथ देशहितार्थ एक वीर पुरुष की आवश्यकता वशिष्ठ को थी। क्योंकि प्रतिलय दक्षि चरम वै ग्लानी। परम भमीत बरा प्रकुलामी ।।' मीरस्वामी जी। रावण का राज्य था प्रजा कष्टित थी। ऐसी दशा में वशिष्ठ ने सोचा कि ऐसा प्राणी कहाँ है (किस लोक में है) उसे लाकर किस भूमि में उत्पन्न किया जाय। सारांश यह कि जन्म-योग्य सभी विशेष दृष्टि-कोण से देश-काल-पात्र का मन्थन विचार-धारा में दौड़ता

"प्रथम वन्दि खल-गनै सति भाएँ। जे बिनु काज, दाहिनेहु बाएँ ॥" करने के बाद, उन सभी लेखकों का, वात्सल्य-आभारी हूँ कि, जिनकी रचनाओं ('चाहे वे, किसी भाषा में हों) द्वारा ज्ञान प्राप्त कर,–'इसे'–लिख सके। संसार का प्रत्येक लेखक, इसे अपनी रचना समझे। केवल सङ्कलन-कर्ता, हम बन गये तो, इससे क्या ? "निमित्तमात्र भव सव्यसाचिन् ।" वाली आज्ञा थी।

विश्राम तर्क से बाहर रहकर, मैं हृदय से, यह अवश्य कहना चाहूँगा कि, जिस समय कुण्डली का निर्माण या फल-कथन करना है, उस समय इसे, अवश्य पास रखिए। पाकेटिक ढंग (Pocket Edition) का, यह एक अनूठा ग्रन्थ है। तर्क करने वाले भी इसे, एक बार देख लेने पर, कार्य-साधन की आवश्यकता के कारण, इसे रखेंगे अवश्य, ऐसा मेरा असीम विश्वास है। वर्तमान समय की प्राप्त, अच्छी से अच्छी पद्धति के द्वारा इसका निर्माण हुआ है। कुछ हठवादी छोडकर, शेष भारत के एक कोने से दूसरे कोने तक वाले, इस पद्धति को, प्रथम-स्थान देते हैं। कुण्डली-निर्माण में, ग्रह-स्पष्ट की आवश्यकता-पूर्ति उन पचांगों से कीजिए, जो गणित के नवीन सस्कारों से युक्त हों। प्राचीन गणित की भित्ति पर ही सस्कार किया जा सकता है; इसलिए किया भी गया है। 'प्राचीन गणना से ही, धर्म-साधन (व्रतोत्सवादि) करना ठीक है।'—ऐसी मान्यता भ्रमात्मक है। प्राचीन काल में भी, प्रत्येक अश्वमेधादि यज्ञ में, नवीन-सस्कार [सिंहावलोक-सुधार] किया ही जाता था। पाठकवर्ग से, यह भी कहना है कि,—"माना कि, बिना गुरु-उपदेश के (स्वकीय प्रयत्न से) शिक्षा-प्राप्ति करनी, कठिन है। फिर भी, जितनी कठिन है, उससे कहीं अधिक, लाभदायक भी है। अतएव, प्रत्येक ज्योतिष-प्रेमी, इसके द्वारा, बिना गुरु के भी, ज्योतिष-ज्ञान प्राप्त करने की चेष्टा करे तो, अपेक्षाकृत कठिनता कम एव लाभ अधिक का अनुभव पायेगा।"

ग्रन्थ का नाम 'जातक-दीपक' है। दीपक में वर्तिका होती हैं। अतएव इसकी द्वादश-वर्तिकाएँ, द्वादशादित्य के द्वादश-सक्रमण-वेला का प्रतिनिधित्व करती हुई, जातकों के द्वादश भावों का प्रकाश करेंगी। मेरा भी द्वादशवर्षीय युग, इस सेवा में व्यतीत हुआ, जिसमें, जन्म सार्थक हुआ। श्री पिता जी चाहते थे कि, 'पुत्र, भागवत पढ़े और व्यास-गद्दी में बठकर कथा सुनाए।'—किन्तु, ऐसा न हो सका। उनके पुत्र ने वह शिक्षा पायी, जिससे जन-सकुल के समक्ष में न रहकर, ग्रन्थ-सकुल के समक्ष में रहना पडा। इस ग्रन्थ के लिखने में एक भागवत क्या ? कौन प्राप्त-साहित्य न देखना पडा, इसे, कोई भी, इस ग्रन्थ के सम्पूर्ण पढते ही समझ जाएगा। 'गद्दी में न बैठ सका ?, जन-रुचि में न आसका ?'—इसका 'लेखा-जोखा' भविष्य बतायगा। ग्रन्थ में 'भूमिका' लिखी जानी चाहिए ? (ऐसी परिपाटी है)। किन्तु, 'भूमिका' कौन लिखता ? जबकि मेरे सामने हम और कुछ ग्रन्थ रहे। कौन, इस ग्रन्थ को पढकर, भूमिका लिखने में, समय अपव्यय करे और क्यों ?—'क्यों' का हल, हमारे पास भी नहीं, स्वय ही, 'क्यों' के हल में हैरान हैं। लेखक, सम्पादक, संकलन-कर्ता के रूप में, जब किसी ग्रन्थ-प्रकाशन का समय आता है, तब क्या, कठिनता होती है ? इस, 'बाँझ कि जान, प्रसव की पीरा।'—के कारण, सुनाना व्यर्थ है। निश्चित है कि, यदि प्रकाशक न होता तो, आपके हाथ 'यह' भी न होता। यही कारण है कि, लेखक-प्रकाशक का सम्बन्ध, सरस्वती-लक्ष्मी के समान है। जिसे, जल-वीचि की भाँति होना चाहिए। कैसा सम्बन्ध कर, प्रकाशन हुआ ? इसे, ग्रन्थ-निरीक्षण कर, देखा जा सकता है। अपेक्षा-कृत, रुचि-पूर्ण होगा। जिसके लिए, अग्रवाल-दीपक श्री रामकिशोर जी [हमारे महा-हठ के रक्षक] तथा उनके कर्मचारीगण का अवनत-आभारी होकर उन्हें, शुभाशीर्युक्त करता हूँ।

ई पूर्व १२७ रहेगा = १ + २ + ७ = १३ = १ + ३ = ४ अंक जातक की लग्न आजायगी [वर्तमान तुला का दशमभाव प्रकाशित होगा] हम उसका राज-तिलक करेंगे। [पृष्ठ २२६ में ७, ६ अंक तथा सम्पूर्ण आत्म-निवेदन लेख के साथ नवम-एकादश वर्तिकाएँ] हाँ अब यह वर्ष (ई पूव १९१) अश्वमेध का है, अत यज्ञ (सर्वमान) होना चाहिए। एकश्चन्द्रस्तमो हन्ति। कर्क राशि में सूर्य चन्द्र आने पर, भूमि में बीज-वपन किया जाय ठीक। तब नवम-मास में उच्च का सूर्य दशम भाव में तथा रवि-अवतार आजायगा। भारत की मकर राशि जातक की पत्नी बनेगी बहुत ठीक।

इतनी गवेषणा करने के उपरान्त वशिष्ठ ने नरेश को बुलाकर कहा कि शीघ्र यो पूर्णाहुति करो मध्यान्ह एवं मध्यरात्रि में। यज्ञ-फल मिलेगा। कालान्तर में एक दिन वशिष्ठ का अचानक बुलावा आ गया राज-भवन से। मास्टरी ने पाने की माँगि दक्षिणा के लोभ से वशिष्ठ ने चन्दन-खड़ाऊँ पर ध्यान न देकर सर पर पैर रखकर भागे। कुण्डली का चक्र बनाया कर्क लग्न में चन्द्र-गुरु दशम में सूर्य नवम में उच्च का शुक्र सप्तम में भारत के ग्रह का उच्च स्थान। चतुर्थ में आगया उसी जातक का शुभ = शनि [इस शनि में गुरु को दगा और झिझका। क्योंकि चन्द्र श्रीराम के पास गुरु दशा में है। जी कि भरत राम राहु—दशा में थे], वृष के बुध—चन्द्र (५ ग्रह उच्च) में श्रीराम का प्रादुर्भाव हुआ। वशिष्ठ ने ऊपर सिर उठाकर चाहा कि पहिले विश्व पता कर दिया जाय तब कुण्डली का फल बताया जाय। किन्तु, उसी समय मेरे हाथ से मेरा यह परीक्षा-प्रश्नोत्तर-पत्र (३ घण्टे हो जाने के कारण) परीक्षक ने खींच लिया।

शिक्षार्थी महोदय मेरा आपसे सविनय निवेदन है कि इस ग्रन्थ में द्वादश-वर्तिका हैं। यह इस ढंग से निर्माण किया गया है कि इसे आप केवल एक दिन में पूर्ण पढ़ सकते हैं। अधिक से अधिक एक वर्ष में पूर्ण पढ़ सकते हैं। दोनों बात एक ही है। यदि आप एक ही दिन-वर्ष जानना चाहते हैं तो नार्थ-साउथ पोल पर १२ घण्टे वाला दिन आपकी प्रसिद्ध तीन ऋतु = ६ मास = १८ दिन = १२ पक्ष = वासन्तिक या शारदीय वर्ष (२२ मार्च से २४ सितम्बर तक या २४ सितम्बर से २२ मार्च तक) होता है। स्पष्ट शब्दों में एक पक्ष (१५ दिन) में एक वर्तिका का अध्ययन कीजिए। यदि आपने मास-मास अधिक का अध्ययन नहीं किया तो सम्भव है कि दो ईस्वी सन् लग जायँ। अस्तु। पञ्च मासीय अध्ययन के बाद आप सरलता से इस ग्रन्थ द्वारा कुण्डली बना सकते हैं। हाँ इसके प्रत्येक शब्दों का स्पष्ट ज्ञान करना चाहें तो सम्भव है कि आशा से अधिक वर्ष लग जायेंगे। क्योंकि ता: १।४।१९५७ ई से मुद्रा-परिवर्तन के कारण अभी तक जो वस्तुएँ, ६४ पैसे में मिल जाती थीं वे अब १ नये पैसे में मिलेंगी। इस लिए आप प्राइमरी शाला में भर्ती होंगे तो इसके अध्ययन में केवल ६ मास लगेगा। अन्यथा कितने ही इसे ५ वर्ष तक पढ़ते रहेंगे तो भी इसी एक ग्रन्थ का अध्ययन पूरा न कर सकेंगे। तात्पर्य यह कि इतना सरस और अधिक ज्ञान भण्डार इस ग्रन्थ में है।

मार्ग दर्शक ज्योतिष के जिज्ञासुओं एवं मेरी कुण्डली के नायक श्री सूर्यदेव की कृपा से 'सरल मार्ग' बताने के लिए प्रेरणा हुई और इस ग्रन्थ-रूप में आपके समक्ष हम आप कुछ कह रहे हैं। जो यह सब कुछ कितना उपयोगी है इस बात को स्वयं समझ लेंगे। साथ ही इस ग्रन्थ के द्वारा कुण्डली-निर्माण में जो सरलता जिस जिस को मिलेगी वे सभी इस परिश्रम के उपयोग का सच्चा मूल्य स्वयं कूत लेंगे। कुछ लोग भी होते जो उपयोगी वस्तु का उपयोग कर   शुभ शौच-भाजन बनायेंगे। अन्यान्य

'प्रथम वन्दि खल-गनें सति भाएँ। जे बिनु काज, दाहिनेहु बाएँ ॥" करने के बाद, उन सभी लेखकों का, वात्सल्य-आभारी हूँ कि, जिनकी रचनाओं (चाहे वे, किसी भाषा में हों) द्वारा ज्ञान प्राप्त कर,–'इसे'–लिख सके। संसार का प्रत्येक लेखक, इसे अपनी रचना समझे। केवल संकलन-कर्ता, हम बन गये तो, इससे क्या? "निमित्तमात्रं भव सव्यसाचिन् ।" वाली आज्ञा थी।

विश्वास तर्क से बाहर रहकर, मैं हृदय से, यह अवश्य कहना चाहूँगा कि, जिस समय कुण्डली का निर्माण या फल-कथन करना है, उस समय इसे, अवश्य पास रखिए। पाकिटक ढंग (Pocket Edition) का, यह एक अनूठा ग्रन्थ है। तर्क करने वाले भी इसे, एक बार देख लेने पर, कार्य-साधन की आवश्यकता के कारण, इसे रखेंगे अवश्य, ऐसा मेरा असीम विश्वास है। वर्तमान समय की प्राप्त, अच्छी से अच्छी पद्धति के द्वारा इसका निर्माण हुआ है। कुछ हठवादी छोड़कर, शेष भारत के एक कोने से दूसरे कोने तक वाले, उस पद्धति को, प्रथम-स्थान देते हैं। कुण्डली-निर्माण में, ग्रह-स्पष्ट की आवश्यकता-पूर्ति उन पंचांगों से कीजिए, जो गणित के नवीन संस्कारों से युक्त हों। प्राचीन गणित की भित्ति पर ही संस्कार किया जा सकता है; इसलिए किया भी गया है। 'प्राचीन गणना से ही, धर्म-साधन (व्रतोत्सव दि) करना ठीक है।'—ऐसी मान्यता भ्रमात्मक है। प्राचीन काल में भी, प्रत्येक अश्वमेधादि यज्ञ में, नवीन-संस्कार [सिंहावलोक-सुधार] किया ही जाता था। पाठकवर्ग से, यह भी कहना है कि,—"माना कि, बिना गुरु-उपदेश के (स्वकीय प्रयत्न से) शिक्षा-प्राप्ति करनी, कठिन है। फिर भी, जितनी कठिन है, उससे कहीं अधिक, लाभदायक भी है। अतएव, प्रत्येक ज्योतिष-प्रेमी, इसके द्वारा, बिना गुरु के भी, ज्योतिष-ज्ञान प्राप्त करने की चेष्टा करे तो, अपेक्षाकृत कठिनता कम एवं लाभ अधिक का अनुभव पायेगा।"

ग्रन्थ का नाम 'जातक-दीपक' है। दीपक में वर्तिका होती हैं। अतएव इसकी द्वादश-वर्तिकाएँ, द्वादशादित्य के द्वादश-संक्रमण-वेला का प्रतिनिधित्व करती हुई, जातकों के द्वादश भावों का प्रकाश करेंगी। मेरा भी द्वादशवर्षीय युग, इस सेवा में व्यतीत हुआ, जिससे, जन्म सार्थक हुआ। श्री पिता जी चाहते थे कि, 'पुत्र, भागवत पढ़े और व्यास-गद्दी में बैठकर कथा सुनाए।—किन्तु, ऐसा न हो सका। उनके पुत्र ने वह शिक्षा पायी, जिससे जन-संकुल के समक्ष में न रहकर, ग्रन्थ-संकुल के समक्ष में रहना पड़ा। इस ग्रन्थ के लिखने में एक भागवत क्या? कौन प्राप्त-साहित्य न देखना पड़ा, इसे, कोई भी, इस ग्रन्थ के सम्पूर्ण पढ़ते ही समझ जाएगा। 'गद्दी में न बैठ सका?, जन-रुचि में न आसका?'—इसका 'लेखा-जोखा' भविष्य बतायगा। ग्रन्थ में 'भूमिका' लिखी जानी चाहिए? (ऐसी परिपाटी है)। किन्तु, 'भूमिका' कौन लिखता? जबकि मेरे सामने, हम और कुछ ग्रन्थ रहे। कौन, इस ग्रन्थ को पढ़कर, भूमिका लिखने में, समय अपव्यय करे और क्यों?—'क्यों' का हल, हमारे पास भी नहीं, स्वयं ही, 'क्यों' के हल में हैरान हैं। लेखक, सम्पादक, संकलन-कर्ता के रूप में, जब किसी ग्रन्थ-प्रकाशन का समय आता है, तब क्या, कठिनता होती है? इस, 'बाँझ कि जान, प्रसव की पीरा।'—के कारण, सुनाना व्यर्थ है। निश्चित है कि, यदि प्रकाशक न होता तो, आपके हाथ 'यह' भी न होता। यही कारण है कि, लेखक-प्रकाशक का सम्बन्ध, सरस्वती-लक्ष्मी के समान है। जिसे, जल-वीचि की भाँति होना चाहिए। कैसा सम्बन्ध कर, प्रकाशन हुआ? इसे, ग्रन्थ-निरीक्षण कर, देखा जा सकता है। अपेक्षाकृत, रुचि-पूर्ण होगा। जिसके लिए, अग्रवाल-दीपक श्री रामकिशोर जी [हमारे महा-हठ के रक्षक] तथा उनके कर्मचारीगण का अवनत-आभारी होकर उन्हें, शुभाशीर्युक्त करता हूँ।

इस ग्रन्थ के प्रसव में कई गुणों ने महान श्रम किया जिनका आभार-प्रदर्शन नाम-रूपों में किया गया है। केवल एक गुण शेष रह गया। उसका नाम तो आपको लेखक-परिचय में ढूंढने से मिल ही जायगा। मेरे प्रयत्न के साथ उसकी मूक-सेवाएं हैं। जिन्हें हम केवल अनन्य-दासी मानने के अभ्यासी बन गये हैं फिर भी हमारी धारणा के अनुसार, इस ग्रन्थ का सम्पूर्ण आशीर्वाद 'उसे' मिलना चाहिए और 'अखिल-शाप' मुझे। क्योंकि हम केवल लिखते रहे और सारी आपत्तियाँ भोगनी पड़ीं उसे। [यथा लेखनी का संगी मसी-पात्र]

मेरी बात अभी तक आत्म-निवेदन में सबकी बात थी और अब मेरी बात है ●। मेरा स्वाभाविक गुण है कि 'शक्ति का उपयोग भूल हुए रहना। मेरा आत्म—विश्वास है कि अभी तक रुचि-पूर्ण सत्य-निष्ठ होकर कार्य करके दिखा सका हूं। ऐसी दशा में स्वर्गीय सदर-बाजार-स्थित ओमर-वैश्य-वंशज श्री रोशनलाल जी (फलितज्ञ) ने मित्र के नाते शाहरेसाम किया। उन्होंने अपने नामानुरूप, 'रोशनी' दिखायी कि हम चल पड़े आपको 'जातक-दीपक' दिखाने। दीपक (सूर्य और चन्द्र की ज्योति) के बिना कोई क्या देख सकता है? यह बात दूसरी है कि एक ने पूछा कि 'सूर! दीपक दिखाया जाय?—सुनकर सूर ने उत्तर दिया कि 'आपके कष्ट करने का सदुपयोग न कर सकूंगा। अतएव सूरेतर जनों को दीपक की आवश्यकता होती है। उसे दिखाने, हमीं चल पड़े। क्योंकि मुझ भी सभी मालक दिखाते रहे हैं। हां एक नए ढंग से दिखाने का यह प्रथम अवसर है। जिसके कारण इसमें त्रुटियाँ भी होंगी। त्रुटियाँ ४ सेकण्ड में १ होती हैं। यदि हमारे लेख-क्रम के किसी सेकण्ड में कुछ 'त्रुटि' हो गयी हो तो आप उन्हें पकड़ने में 'त्रुटि' न कीजिए। साथ ही उदारता पूर्वक उन्हें सूचित करके मुझसे 'क्षमा' मंगवाइए। जिससे भविष्य में हम उस प्रकार की 'त्रुटि' न कर सकें। आशा है कि हमें आपको यह 'त्रुटि' पकड़ने का अवसर न मिलेगा। इसके अनन्तर श्री इष्टदेव की कृपाओं का ध्यान कर, विभिन्न नाम-रूप पदों (Paragraphs) में लिखित लक्ष को शेष करता हूं। ['निवेदनशेषो जयताच्चेष' ।] इत्यनुभवम्।

भागीरथ्या यमदिशि तटे कर्णपुर्नाम्नि प्रान्ते
पत्रस्यानञ्च तिमधहरी' ग्राम बोध्यं सुधीभिः।
रेवा—तीरे जबलपुरगे साम्प्रतं वै त्रिपाठी
शास्त्राभ्यासी सफल—गणको नाम बालो मुकुन्द ॥

—संकलन-कर्ता

● यह तक पृष्ठांक आ जाने के कारण विंशोत्तरी-सिद्धान्त का लेख, आगे रखना पड़ा।

विंशोत्तरी-सिद्धान्त

यह, शब्दार्थ द्वारा १२० वर्षीय है। इसी १२० वर्ष को ८८००० ऋषि, योजन, वर्ष, नति-गति, विद्युत, जम्बूद्वीप, वेद, सृष्टि, प्रलय, पूर्णायुर्मान, आदि प्रकार के नामों [विभिन्न स्थलों] में बताया गया है। यह, एक मनुष्य की आयु से लेकर, कल्प, महाकल्प, ब्रह्मायु तक में व्याप्त अंक है। योग-शास्त्र (षट्चक्र-भेदन-गति), अद्वैतवाद, द्वैतवाद, त्रैगुण्यमय, त्रिगुणातीत, निराकार, साकार, ब्रह्मा, विष्णु, महेश का रहस्य, आकाश-भूमि-पाताल (त्रिलोक), त्रिकाल, हम या हम-तुम या कुछ नहीं आदि अनेक भावाओं का सूचक १२० अंक है। इसे विस्तृत बताने के लिए, स्वतन्त्र ग्रन्थ चाहिए। १२०=१-२-०=१, १२०=१+२+०=३, १२०=१×२×०=०, १२०=१, २, ० आदि। ० से ३ तक और ३ से ० तक। इस सिद्धान्त पर यहाँ, यह बताना है कि, १२० वर्ष की विंशोत्तरी दशा, वर्तमान में ३६० वर्षीय कैसे बन गयी। कुल ९ ग्रह १२० वर्ष का त्रैराशिक द्वारा विभाग न करके =९, १२० का लघुतम =३×३×४०=३६० वर्षीय विंशोत्तरी दशा की परम्परा बना दी गयी। जो कि, युक्ति-सगत नहीं। यदि ९ ग्रह=२७ नक्षत्र=१२० वर्ष का त्रैराशिक किया जाय तो, शुद्ध-क्रम बना रहेगा। तब ग्रहों के वर्ष का न्यास, इस प्रकार रहेगा।

(१)	सूर्य	=	१२० − ८ = १५ [चक्र] − ९ ग्रह	=	६ वर्ष सूर्य दशा, शेष वर्ष ११४
(२)	चन्द्र	=	११४ − ७ = १६ − सूर्य-वर्ष	=	१० वर्ष चन्द्र दशा शेष वर्ष १०४
(३)	मगल	=	१०४ − ६ = १७ − चन्द्र-वर्ष	=	७ वर्ष मगल दशा, शेष वर्ष ९७
(४)	राहु	=	९७ − ५ = १९ − १ चक्र	=	१८ वर्ष राहु दशा, शेष वर्ष ७९
(५)	शुक्र	=	७९ − ५ = १५ + १ चक्र + ४ ऊपर	=	२० वर्ष शुक्रदशा, शेष वर्ष ५९
(६)	केतु	=	५९ − ४ = १४ + २ चक्र = १६ − ९	=	७ वर्ष केतुदशा, शेष वर्ष ५२
(७)	बुध	=	५२ − ३ = १७ [चक्र का अभाव]	=	१७ वर्ष बुधदशा, शेष वर्ष ३५
(८)	शनि	=	३५ − २ = १७ + २ चक्र	=	१९ वर्ष शनिदशा, शेष वर्ष १६
(९)	गुरु	=	१६ − १ = १६ + ० स्वय-सिद्ध ❀	=	१६ वर्ष गुरुदशा, शेष वर्ष पूर्ण

पाँच चक्रों का भेदन कर छठवें आज्ञा-चक्र में कुण्डलिनी, सद्गुरु से भेंट करती है। गुरु, शनि-चक्र में कुण्डलिनी को पहुँचा कर आगे, सहस्त्रारविन्द में ईश्वर-दर्शन [ज्ञान] कराता है। अध्यात्म-ज्योतिष।

चक्र कान्फ्रेंस के चित्र द्वारा—१२०=१+२+०=३। ९ (ग्रह) − ३=६ षट्चक्र। किन्तु सूर्य-केन्द्र (राहु=कुण्डलिनी) से ३ ग्रह ऊपर तथा ५ ग्रह नीचे है [सूर्य, चन्द्र, मगल (ऊपर के चक्र में) और राहु के विपरीत क्रम में शुक्र, केतु, बुध, शनि, गुरु (नीचे के चक्र में) तथा मध्य में राहु है]। २७ नक्षत्र =२+७=९ ग्रह=सूर्य से केतु तक २ ग्रह तथा केतु से सूर्य तक ७ ग्रह हैं। अन्तरांक-बाह्यांक द्वारा क्रम-न्यास देखिए। यदि न्यास, अन्यथा कर दिया जाय तो, प्रथम कारण [विंशोत्तरी-गणित] न बन सकेगा। द्वितीय कारण योग-शास्त्र में है। राहु से केतु तथा केतु से राहु का क्रम एव राहु के समक्ष ही केतु की स्थिति रहना, प्रसिद्ध है। जिसे, योग-शास्त्र एव खगोल-विद्या में एक-सा बताया गया है। राहु=कुण्डलिनी नाडी का निवास, मेरु-दण्ड के निम्नान्त में है। १ मूलाधार में बुध-राहु मेल। २ स्वाधिष्ठान में शुक्र-राहु मेल। ३ मणिपूर में सूर्य-राहु मेल। ४ अनाहत में मगल-राहु मेल। ५ विशुद्ध में चन्द्र-राहु मेल। ६ आज्ञा में गुरु-राहु मेल।

❀ श्री महेशप्रसाद धुराटिया का प्रश्न है कि, क्या इसका इस प्रकार का गणित, आज के पूर्व प्रकाशित हो चुका है? सम्पूर्ण ग्रन्थावलोकन के उपरान्त उत्तर दीजिए।

७ सहस्रारबिन्द में शनि-राहु मेल होता है। तब क्रम-न्यास में राहु के ऊपर = मंगल, चन्द्र, सूर्य तथा राहु के नीचे बुध, शनि बुध शुक्र हैं। चित्र में ध्यान दें, मूलाधार के स्वामी बुध के सम्ब-सूत्र में ऊपर मंगल तथा नीचे चन्द्र होने के कारण यहाँ मंगल के बाद वाला चन्द्र सूर्य के पास पहुँच जाता है। जब सूर्य १२० वर्ष से प्रारम्भ होता है तब केतु ६० वर्ष से प्रारम्भ होता है, फलत: बुध-शुक्र के मध्य में केतु आ जाता है। इस प्रकार चक्र-आसन द्वारा क्रम—सूर्य, चन्द्र, मंगल राहु गुरु शनि बुध केतु, शुक्र होकर १२० अंक पर, युद्ध करके, अपना-अपना प्रतिशत अधिकार जमा लेते हैं। यहीं विंशोत्तरी के वर्ष बन जाते हैं। सूर्य की चक्र-नेमि (केन्द्र) के समक्ष जब, जिन ग्रहोंकी चक्र-नेमि आजाती है उसके मध्यका काल ज्यामिति द्वारा साधन कर स्पष्ट समझिए।

कान्फ्रेंस यह 'राउण्ड-टेबुल-कान्फ्रेंस' है। चक्र-मध्यांक राहु-सहित केतु तक ५ ग्रह (केन्द्र बना) और केतु रहित राहु तक ५ ग्रह (केन्द्र बना) हैं। राहु के समक्ष केतु, सूर्य के समक्ष शनि गुरु के समक्ष शुक्र और बुध के सम्ब-सूत्र को चन्द्र-मंगल ने घेरकर 'कान्फ्रेंस' किया। ६ मेम्बर (चक्र-बाह्यांक) क्रम से बैठकर १२ अंक पर सबों ने दृष्टि स्थिर की। सूर्य ने (१ = ब्रह्म बनकर) सृष्टि किया तो शनि ने (= मृत्यु बनकर) लय किया। सूर्य के दक्षिण-हस्त शुक्र ने 'संसार' बसाया तो सूर्य के वाम-हस्त चन्द्र ने 'मन' बसाया। शनि के वाम-दक्षिण बैठकर, गुरु-बुध ने शून्य को समझा। गुरु ने शून्य को आकाश समझ कर 'आनन्द-ब्रह्म' की खोज में लग गये। बुध ने शून्य को अंक (बीज) समझ कर, उस पर चढ़ बैठा शून्य लम्बा होकर 'एक' बन गया (बुध गणित की खोज में लग गये)। गुरु-शुक्र की बहुत बकवाद हुई, फलत:
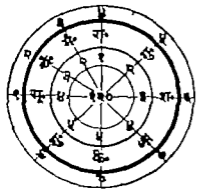
शु॰ का एक आँख पुराण में एक इतिहास बन गयी। एक राहु दो होकर राहु-केतु हो गये दोनों ने १२ का दो देखकर त्रिगुणित शनि द्वारा सूर्य चन्द्र से बदला लिया। मंगल मिलीटरी-ड्यूटी के सरकार बना दिये गये। चन्द्र-बुध-गुरु-शुक्र—ये चारों ग्रह प्रथम अपने आस पास पापग्रहों को देखकर, उनकी हाँ में हाँ मिलाते रहे। *इस कान्फ्रेंस का सारा महत्त्व सूर्य-शनि और राहु-केतु के हाथ रहा।* इसकी ७ रिपोर्ट 'संगम' में प्रकाशित की।

रिपोर्ट १ कान्फ्रेंस के राउण्ड-टेबुल में चक्र के बाह्य-अन्तरंग अंकों के क्रम से सीधा चक्र सूर्य से चन्द्र-मंगल-राहु तक है। शेष सभी में से शुक्र अंतरंग अंक से सीधे चक्र में तथा बाह्य अंक से उलट चक्र में आ गया है। केतु से राहु तथा राहु से केतु आमरु उलटे-सीधे चक्र हैं। यह स्थिति याम्योत्तर है। पूर्व-पश्चिम मान से सूर्य से शनि तक सीधा (ऊर्ध्व) चक्र तथा शनि से सूर्य तक उलटा (अध) चक्र है। कुल ग्रह ६ हैं अतएव १२ वर्ष के ८ खण्ड किये जायँ तो सूर्य या राहु चक्र द्वारा ६ ग्रहों का मध्यमान एक दूसरे से मिल जायगा। राहु से चक्र प्रारम्भ कीजिए और सूर्य के चक्र से मिलाइए। इस कल्पना द्वारा १२ - ८ = १५ [यह १४ = १ + ५ = ६ = षट् चक्र आया। कुल ६ ग्रहों के चक्र मिलाता है किन्तु सूर्य-चक्र पूर्ण शेष आठ रह गये अतएव] १२-६ = ६ वर्ष सूर्य के हुए और १२ - ६ = ११४ वर्ष शेष रहे। फिर चक्र चला पहिले आठ खण्ड किये थे अतएव

* स्पष्ट समझने के लिए हमारे श्रीगुरुदेवजी के सुपुत्र—"ज्योतिषाचार्य साहित्याचार्य पं॰ श्री रामेन्द्र झा शास्त्री 'विमल' बी॰ ए॰ [हिन्दी], प्राध्यापक संस्कृत-कॉलेज, वानाप्रस्थ, राजीपुर, पटना, बिहार।" का भौम देखिए। पं॰ मुझे बड़ा भाई मानते हैं। किन्तु मैं! "गुरुपुत्रं गुरुवत्मन्येत तत्पुत्रवत् आदृयात्। —का मार-भारी हैं।

इस वार ७ खण्ड करेंगे। ११४ ÷ ७ = १६ वर्ष लब्ध, शेष २ वर्ष रिजर्व रखिए। जैसे सूर्य में से ६ घटाया था, वैसे यहाँ सूर्य वर्ष (६) घटाना पड़ेगा। तव १६ - ६ = १० वर्ष चन्द्र के हुए। इसी क्रम से ११४ - १० = १०४ ÷ ६ = १७ वर्ष में से चन्द्र वर्ष (१०) घटाकर, शेष ७ वर्ष मगल के हुए। १०४ - ७ = ९७ ÷ ५ = १९ वर्ष हुए। [पुनः ध्यान दीजिए,—गतलब्धाक १५, १६, १७ के वाद १९ लब्धाक आया, किन्तु, १७ के वाद १८ चाहिए था, फिर १९ क्यों ? शेष वर्ष ६ + १६ + १७ + १९ = ५८ हुए। ७, ६, ५ से भागित करने पर, शेष दो वचता रहा था। इस दो शेष को, उलटे-सीधे चक्र में विभाजित करना पडेगा। अतएव शून्य में एक जोडो तथा शून्य में से एक घटाओ, तव दोनों 'एक' का अन्तर, दो होगा] यथा, रविवार को शून्य समझो, इसमें से एक घटाने पर शनिवार हुआ तथा रविवार में एक जोडने से सोमवार होगा। अब देखिए, शून्य मे एक कम शनिवार = - १ और शून्य मे एक अधिक सोमवार = + १ हुआ। किन्तु शनिवार मे सोमवार तक का अन्तर, दो हो गया। राहु तक ५८ हैं, यहाँ एक घटाओ = १९ - १ = १८ वर्ष राहु के हुए। तव १२० - ६ + १० + ७ + १८ = १२० - ४१ = ७९ वर्ष शेष रहे। यह सावे चक्र की रिपोर्ट हो गयी।

रिपोर्ट २ यह विपरीत (उलटे) चक्र की रिपोर्ट है। क्रम मे सूर्य, चन्द्र, मगल, राहु के वाद—विपरीत चक्र में शुक्र, केतु, बुध, शनि, गुरु रहे [देखिए कान्फ्रेंस की टेवुल]। लब्धाक के वाद, जो दो शेष थे, उसमें से एक राहु वर्ष में घटा दिया था। तव, दो शेष में से एक शेष (धन) रह गया था। पिछली रिपोर्ट का शेष ७९ + १ = ८० हुए। विपरीत क्रम में ५ ग्रह हैं अतः ४ खण्ड करना पड़ेगा = ८० ÷ ४ = २० वर्ष शुक्र के हुए [किन्तु राहु तक ५ ग्रह का चक्र हो गया था, शेष ५ ग्रह विपरीत क्रम में हैं। अतएव ८० - ५ = १६ वर्ष में (नीचे के ४ चक्र शेष रहने के कारण या ऊपर के ४ चक्र व्यतीत होने के कारण) ४ जोडकर = २० वर्ष शुक्र के मानिए, तभी गणित का क्रम वनेगा] अथवा ७९ + १ = ८० ÷ ५ = १६ + ४ = २० वर्ष शुक्र के हुए। तव ८० - २० = ६० वर्ष शेष रहे। पहिले शुक्र में ५ से भाग दिया था, अतएव अब ६० ÷ ४ = १५ [१ + ५ = ६ = चक्र आया] में से (सूर्य की भाँति) ९ घटाने स ६ शेष रहे। क्रम से ६ + १० + ७ + १८ + ६ = ५७ हुए। राहु तक ५८ हुए थे, तव वहाँ १९ में एक घटाया था। किन्तु यहाँ ५७ हैं अतएव एक जोडने से, राहु के ठीक सामने केतु हो सकेगा। अतएव ६ + १ = ७ वर्ष केतु के हुए। इसी क्रम से ६० - ७ = ५३ ÷ ३ = १७ [राहु-केतु में एक-एक ऋण-धन करने से यहाँ धनर्ण न होगा] अतएव १७ वर्ष, केतु के वाद बुध के हुए। ५३ - १७ = ३६ - २ = १८ [यहाँ १८ = १ + ८ = ९ सूर्य के समक्ष शनि–चक्र है। केतु में १ वर्ष अधिक करके राहु से चक्र-सूत्र मिलाया गया था, अतएव यहाँ भी एक वर्ष अधिक करके सूर्य से चक्र-सूत्र मिलाना चाहिए]। १८ + १ = १९ वर्ष शनि के हुए। इस प्रकार ६ + १० + ७ + १८ + २० + ७ + १७ + १९ = १०४ = सूर्य, चन्द्र, मगल, राहु, शुक्र, केतु, बुध, शनि के वर्ष जोडकर १२० वर्ष में घटाइए, १२० - १०४ = १६ वर्ष = १ + ६ = ७ = केन्द्र = १८० अंश = गुरु के वर्ष १६ स्वय-सिद्ध हुए। आध्यात्मिक- शास्त्र में स्वय-सिद्ध गुरु, राहु = कुण्डलिनी को षट्चक्र-भेदन कराकर सूर्य (ब्रह्म) से मिलाते हैं।

रिपोर्ट ३ पूर्वोक्त [गणित-सम्वन्धी] दो रिपोर्ट प्रकाशन के साथ, यह फलित-सम्वन्धी तीसरी रिपोर्ट भी थी। वरन् मंगल की यह रिपोर्ट, स्वय की है। किसी ग्रन्थ के उपयोगी नहीं, फिर भी फलित-ग्रन्थ में फलित-रिपोर्ट का रहना, अत्यावश्यक है। "मैं (मगल) और राहु, जव कभी एक साथ हो जाता हूँ और कान्फ्रेंस-चक्र के केतु-चक्र (केतु-दशा) में जिसका जन्म होता है, तब उसके लिए मैं, शुभाशुभ परिणाम देता हूँ। मैं (मगल का ध्यान रखिए), कान्फ्रेंस-चक्र में राहु के दाहिने तथा बुध के सामने से उत्तर में बैठकर, राहु

से मिलने के कारण केतु के सामने आ जाता हूँ। इस प्रकार मैं केतु-बुध दशान्तर्दशा में विरुद्ध-फल तथा राहु-दशा के आने पर पहिले शुभ बाद में (राहु के बुधान्तर में) अशुभ करता हूँ। कारण तो मेरे पास है, जिसे तुम मनुष्य नहीं जान सकते यह देवलोक का रहस्य है। अस्तु।—रिपोर्ट में आगे पढ़िए। घबड़ाइए नहीं केतु-बुध-राहु दशान्तर्दशा की बात बताकर मैं अपनी भी बताऊँगा। गमस्थिति के मध्यकाल (माघ कृष्ण पक्ष) में जब गुरु-राहु २१ वें अंश पर आएगा [१८०–१८८ अंश की दूरी पर पूर्ण-दृष्टि प्रभाव के कारण] तब तुम्हारी माता (श्रीजानकीदेवी) को कष्ट होगा। ठीक इसके १४ मास बाद राहु के कन्द्र में चन्द्र आने से चन्द्र-ग्रहण होगा। उसके बाद शीघ्र ही मातृ-मृत्यु होगी। क्योंकि जन्म चक्र में चन्द्र-राहु की दूरी केवल दो अंश की है। यह ग्रहण बुरा प्रभाव दिखाएगा [फलत: ता० १।४।१९१२ ई. में माता के लिए १२ के अंक परस्पर गुणित हो गये] अत राहु में बुधान्तर षष्ठ-भाव को प्रबल बनाकर, आठवें भाव की ओर शुभ-फल को ले जाएगा [क्योंकि कर्क के बुध में जन्म होगा और षष्ठेश चन्द्र का फल लग्नेश शनि की युति के कारण होगा] परन्तु इन फलों के मध्य में जब आऊँगा तब इस जातक को मिलीटरी में [अपने और राहु के अन्तर भर में] रखूँगा वहाँ भी सफल करेगा। तृतीय भाव में हमारे साथी (चन्द्र-शनि-राहु) हैं, ये इसका शरीर सुखा डालेंगे जिसका अनिष्ट होना हमारे डिपार्टमेण्ट में अत्यन्तावश्यक है। फिर भी ध्यानमग्न-बनारसकर (४४ पदाति का नायक) बनवा ही दूँगा। शरीर में 'मन्दाग्नि' मुख्य-रोग होकर, दमा आदि रोग होंगे। पर मैं तो इसे सबका बचाता ही रहूँगा।

आयु-ज्ञान

जन्म-दशा	मृत्यु-दशा	पूर्णायु-वर्ष
१ सूर्य दशान्तर्दशा	शनि दशान्तर्दशा	=५१–७६
२ चन्द्र	बुध	=६ –८७
३ मंगल	बुध	=५३–७७
४ राहु	केतु	=५२–७७
५ गुरु	शुक्र	=४३–७१
६ शनि	सूर्य	=४४–६६
७ बुध	चन्द्र या मंगल	=३३–६७
८ केतु	राहु	=४३–६८
९. शुक्र	गुरु	=४१–७७

यदि आप कम्पेरेस (Para.) को पढ़ें तो आयु-ज्ञान के निर्णय का सिद्धान्त स्पष्ट हो जायगा। जिसका स्पष्ट रूप पुनरुक्ति न मानकर पुन: पढ़िए—जबकि सूर्य का समस्त शनि है तो ६+१ +७+१८+१६+१९ =७६ वर्ष हुए, इसमें से ६+१९=२५ घटाकर=५१ से ७६ वर्ष तक की पूर्णायु समझी गयी।

इस प्रकार सूर्य दशान्तर्दशा में जन्म लेने वाला व्यक्ति शनिदशान्तर्दशा तक अपना आयु-चक्र पूर्ण करता है। [यदि इससे पूर्व ही आने वाली विरुद्ध दशान्तर्दशाओं में अरिष्ट योग हो जाय तो समझना चाहिए कि उसका असामयिक अरिष्ट-योग आ गया था] पूर्वोक्त विवरण केवल विरुद्ध-दशा के आने पर अरिष्ट-योग होना समझा जा रहा है। यदि चन्द्र महादशा के सूर्यान्तर में जन्म हो तो मंगल राहु गुरु शनि की महादशा में जब भी शान्यन्तर आ जायगा तभी अरिष्ट-योग उपस्थित कर सकता है अथवा चन्द्र महादशा में जन्म होने के कारण जब किसी महादशा में बुधान्तर आयगा तभी अरिष्ट-योग आ सकता है। इस प्रकार से उदाहृत चन्द्र महादशा वाला व्यक्ति किसी भी महादशा के शनि-बुध अन्तर में अरिष्ट-योग-फल-भोगी बन सकता है, इत्यादि।

—सम्पादक-कर्त्ता

गणित-खण्ड

॥ श्री गणेशाय नमः ॥

जातक-दीपक

प्रथम-भाग

प्रथमवर्तिका

ॐ आकृष्णेन रजसा वर्तमानो निवेशयन्नमृतं मर्त्यञ्च ।
हिरण्येन सविता रथेन देवो याति भुवनानि पश्यन् ॥

यद्गण्डमण्डलगलन्मधुवारिबिन्दु-पानालसालिविनिभृता ललितालिमाला ।
सद्गुम्फितेन विनिहन्ति नवेन्द्रनील शङ्काशनो गणपति शिवमावनोतु ॥

बालकृष्ण गुरु नत्वा मुकुन्दो घालपूर्वक ।
जातकाना फलार्थाय सौम्यज्ञातकदीपकम् ॥

ज्योतिष

ज्योतिष के दो विभाग हैं, एक तो गणित-ज्योतिष और दूसरा फलित-ज्योतिष। फलित ज्योतिष में, जितने अश, सिद्धान्त-ज्योतिष (गणित-ज्योतिष) के आवश्यक होते हैं, उतने ही अश को, पहिले लिखकर, तदुपरान्त फलित-ज्योतिष का वर्णन करना ही समुचित होगा।

गणित और फलित का परस्पर इतना निकट सम्बन्ध है, जितना कि शब्द और उसके अर्थ का, क्योंकि, फलित का ठीक घटित होना शुद्ध और सूक्ष्म-गणित पर ही निर्भर है। तब, परमावश्यक है, कि इस ग्रन्थ का आप अपने पास रक्खें, यदि आप ज्योतिष के फलित-विभाग मे रुचि रखते हों। हो सकता है कि, आप इसके विषयों में पारगत हों, तो भी, जब आप, जन्म-पत्र (कुण्डली) का कार्य करने बैठेंगे, तब, इसकी आवश्यकता, अपेक्षित होगी।

गणितज्ञ को त्रैराशिक गणित का इतना अभ्यास होना चाहिए, जितना 'मुख' तक भोजन ले जाने में 'हाथ' का अभ्यास होता है, अन्यथा, आपके किये हुए, जोड़, बाकी, गुणा और भाग का उत्तर ठीक है या नहीं, इसमें सन्देह रहेगा। त्रैराशिक का गणित—"श्री विष्णु की व्याप्ति, कण-कण में" के समान व्याप्त है। अतएव इसका अभ्यास अत्यन्तावश्यक है।

अब आप इस ग्रन्थ को पूर्व-भाग के साथ पठन-मनन करेंगे तो, कोई ऐसा स्थल नहीं जिसका उपयोग आप, सरलता से न कर सकें। फिर आप देखेंगे, कि ज्योतिष में फलित का क्या रहस्य है, और सांसारिक तथा आध्यात्मिक कार्यों में यह क्षेत्र कितना सहायक है।

हाँ, तो, अब आवश्यक है फलित निकालने वाला गणित; इसमें भी प्रथम आवश्यक है, काल-मान परिभाषा का ज्ञान।

काल-मान-परिभाषा

एक लघु अक्षर के उच्चारण के समय को 'मात्रा' या 'निमेष' कहते हैं। इस पर से काल-मान निम्न लिखित होता है—

२ निमेष = १ त्रुटि = २४ प्रतिसेकण्ड = १/१० असु = १ विपल
१० त्रुटि = १ प्राण = ४ सेकण्ड = १ असु = १ विपल
६ प्राण = १ पल = २४ सेकण्ड = ६ असु = ६ विपल
२½ पल = १ मिनट = ६ सेकण्ड = १५ असु
६ पल = १ घटी = २४ मिनट = ३६० असु
२½ घटी = १ घण्टा = ६० मिनट = ६० असु
६० घटी = २४ घण्टा = १ अहोरात्र (दिन-रात)
२½ विपल = १ सेकण्ड = ६० प्रतिसेकण्ड
६ विकला = १ कला
६० कला = १ अंश (भाग)
३ अंश = १ राशि
१२ राशि = १ भगण (नक्षत्र-समूह)

दिन—

चार प्रकार के होते हैं; चान्द्र सौर सावन और नाक्षत्र।

चान्द्र दिन = १ तिथि का भोग-समय
सौर दिन = सूर्य के १ अंश का भोग-समय
सावन दिन = सूर्योदय से सूर्योदय तक (२४ घंटे का समय)
नाक्षत्र दिन = नक्षत्रोदय से नक्षत्रोदय तक (एक नक्षत्र का भोग-समय)

मास

३० तिथि (एक अमावास्या के अन्त से दूसरी अमावास्या के अन्त तक या कृष्ण प्रतिपदा के प्रारम्भ से शुक्ल पूर्णिमान्त तक) का चान्द्र मास। एक संक्रान्ति के प्रारम्भ से दूसरी संक्रान्ति के प्रारम्भ तक सौर मास। ३० दिन का सावन मास (व्यवहार कार्य में)। २७ नक्षत्र के भोग-समय का नाक्षत्र मास।

वर्ष

१२ चान्द्र मास का एक वर्ष प्राय ३५४ दिन के लगभग का होता है, जब मलमास पड़ता है, तब प्राय वह वर्ष ३८४ दिन के लगभग का होता है, और इसका कारण है सौर वर्ष, क्योंकि सौर वर्ष (अर्थात १२ संक्रान्तियों का भोग-काल) प्राय ३६५¼ (३६५।१५।२२।५७) के लगभग दिनों का होता है। ३६५ – ३५४ = ११ दिन। ११ दिन प्रत्येक चान्द्र वर्ष में कम होने के कारण 'सामञ्जस्य' के लिए, तीन चान्द्र वर्षों के मध्य में एक मलमास करना पड़ता है। सावन वर्ष, १२ सावन मास अर्थात ३६० दिनों का होता है। १२ नाक्षत्र मासों का एक नाक्षत्र वर्ष होता है।

कुण्डली बनाने में, घड़ियों का समय सावनमान से और पंचांग चान्द्रमान से तथा लग्नादि का निर्माण नाक्षत्र काल मान से बनाना पड़ता है। सामञ्जस्य के लिए, विशेष ज्ञान-द्वारा ही शुद्ध कुण्डली का निर्माण हो सकता है।

अमान्त चान्द्रमास से दक्षिण भारत के पंचांग, पूर्णिमान्त चान्द्रमास से उत्तर भारत और बिहार के पंचांग तथा सौरमान से बंगाल के पंचांग बनाये जाते हैं।

गणित के संकेत

संकेत		सूचक	संकेत		सूचक
+	=	धन (जोड़)	°	=	अंश या दिन
−	=	ऋण (बाकी)	।	=	कला या घटी
×	=	गुणा (पुनरावृत्ति का जोड़)	॥	=	विकला या पल
÷	=	भाग (अंश, खण्ड)	॥।	=	प्रतिविकला या विपल
=	=	बराबर (समान)	"	=	पुनरावृत्ति (डिटो)

गणित-संज्ञा

योज्य, योजक, योगफल। वियोज्य, वियोजक, वियोगफल। गुण्य, गुणक, गुणनफल। भाज्य, भाजक, भागफल (लब्धि) और शेष।

जिसमें जोड़ा जाय, वह योज्य। जो जोड़ा जाय, वह योजक। जो फल (उत्तर) आवे, वह योगफल। जिसमें से घटाया जाय, वह वियोज्य। जो घटाया जाय, वह वियोजक। जो फल (उत्तर) आवे, वह वियोगफल (बाकी या शेष)। जिसमें गुणा किया जाय, वह गुण्य। जिसका गुणा किया जाय, वह गुणक। जो फल (उत्तर) आवे, वह गुणनफल। जिसका भाग किया जाय, वह भाज्य। जिससे भाग किया जाय, वह भाजक। जो फल (उत्तर) आवे, वह भागफल (लब्धि)। अन्त में बाकी करने के बाद जो रह जावे, उसे शेष कहते हैं।

संख्या की गणना, दायें से बायें की ओर की जाती है। जिसका प्रकार आगे लिखा जा रहा है।

यथा संख्या दस लाख = १००० ० है। इसका उपयोग वर्तमान में इस प्रकार करना चाहिए —

बायें की ओर— १ ० ०। ० ० ० ०। ० ० ० ०। ० ० ० ० ० ० ० ० —दायें से

[illegible]

वर्तमान समय की लीलावती में तथा प्रचलित स्कूली पुस्तकों में संख्याओं का मतभेद, अरब तक के संख्यनाम में नहीं है। आगे के मतभेद को पूर्वोक्त विधि से दूर करना चाहिए। ऐसा करने से दोनों के नामों में साम्यता आजायगी।

जोड़ और बाकी

यथा स्थानीय (इकाई के नीचे इकाई, दहाई के नीचे दहाई,) अंकों का योग (जोड़), या अन्तर (बाकी) करना चाहिए। यथा—

सैकड़ा	२५५		सैकड़ा	२७५ में से
दहाई	५० अथवा	{ २५५ + ५ + ७ = २६२ योगफल	दहाई	१५ घटाया
इकाई	७			२६ (अन्तर या बाकी या शेष)
	२६२			

गुणा

इसमें पहाड़ा-ज्ञान होना परमावश्यक है। विशेषतः ६ अंक तक का।

पहाड़ा

जितने अंक को, जितनी बार रखकर जोड़ते हैं उसका योग-फल उतने अंक का पहाड़ा हो जाता है। गुणा का अर्थ है पुनरावृत्ति का योग। यथा—

१ × १ = १	१ बार योग	= १ एक
१ × २ = १ + १	२ "	= २ दो
१ × ३ = १ + १ + १	३ "	= ३ तीन
१ × ४ = १ + १ + १ + १	४ "	= ४ चार
१ × ५ = १ + १ + १ + १ + १	५ "	= ५ पाँच
१ × ६ = १ + १ + १ + १ + १ + १	६ "	= ६ छह
१ × ७ = १ + १ + १ + १ + १ + १ + १	७	= ७ सात
१ × ८ = १ + १ + १ + १ + १ + १ + १ + १	८	= ८ आठ
१ × ९ = १ + १ + १ + १ + १ + १ + १ + १ + १	९ "	= ९ नौ

इसी प्रकार नीचे के चक्र में एक से नौ तक का पहाडा लिखा जा रहा है, इतना अभ्यास हो जाने पर गुणा, भाग करने में, आपको सहायता मिलेगी।

पहाड़ा चक्र

गुण्य	१	२	३	४	५	६	७	८	९	गुणक
१	१	२	३	४	५	६	७	८	९	
२	२	४	६	८	१०	१२	१४	१६	१८	
३	३	६	९	१२	१५	१८	२१	२४	२७	
४	४	८	१२	१६	२०	२४	२८	३२	३६	
५	५	१०	१५	२०	२५	३०	३५	४०	४५	पहाड़ा
६	६	१२	१८	२४	३०	३६	४२	४८	५४	
७	७	१४	२१	२८	३५	४२	४९	५६	६३	
८	८	१६	२४	३२	४०	४८	५६	६४	७२	
९	९	१८	२७	३६	४५	५४	६३	७२	८१	

गुणा का नियम

गुण्य की एकाई में गुणक की इकाई को गुणा करके रखे, गुण्य की दहाई में, गुणक की इकाई का गुणा करके रखे, गुण्य के सैकडा में गुणक की इकाई का गुणा करके रखे, अक का रखना यथा-स्थानीय होना चाहिए। इसी प्रकार गुण्य में, गुणक की सभी सख्या का गुणा करके जोडिए, तो गुणन-फल प्राप्त होगा।

गुणा का उदाहरण

पॉच सौ पैंतालीस ५४५ में ६ छह का गुणा करना है, तो,

```
गुण्य  ५४५ × ६  ( गुणक )
       ------
         ३०
        २४
       ३०
     -------
       ३२७०   ( गुणन फल )
```

अथवा

```
गुण्य  ५४५ × ६  ( गुणक )
       --------
         २३    ( हाथ लगा )
       ३०४०
      -------
       ३२७०   ( गुणन फल )
```

भाग

भाज्य सख्या के बायें अन्तिम अक में, भाजक का जितने वार गुणन करने पर गुणन-फल घट जावे (यदि एक वार का भी गुणन-फल न घट सके, तो, भाज्य के बायें अन्तिम अक के समीप, दाईं ओर का अक लेकर गुणनफल घटावे) तो उतने वार की सख्या भागफल (लब्धि) तथा भाज्याक-गुणनफलाक का अन्तर (शेप) होता है। यदि भाज्य के अक और भी शेप हों, तो शेष में, भाज्याक का एक अक आगे का उतार (ले) कर शेप के दायें इकाई के स्थान में रखे, फिर भाजक से (पूर्वोक्त रीति-द्वारा) भाग दे, इसी प्रकार भाज्याक के इकाई तक के अक ले-लेकर भाग देता जावे, तो लब्धि और शेप प्राप्त होंगे।

यथा ३२७१÷६

```
            भाज्य
भाजक ६ ) ३२७१ ( ५४५ लब्धि
          ३०
          ---
           २७
           २४
           ---
            ३१
            ३०
            ---
             १ शेष
```

भाग का स्पष्टीकरण

पहिले ६ से भाग, भाज्यांक के बायें अन्तिम अंक ३ में देना चाहा परन्तु एक बार भी न जासका, क्योंकि ६ से ३ कम अंक है अतः प्रथम बार ३२ में ६ से भाग दिया, तो लब्धि में ५ और शेष २ रहे। आगे का अंक ७ उतारा, तो २७ हुए। इसमें ६ से भाग दिया, तो द्वितीय बार लब्धि में ४ और शेष ३ रहे। फिर आगे का १ अंक उतारा, तो ३१ हुए, इसमें ६ से भाग दिया तो तृतीय बार लब्धि में ५ और शेष १ रहा। अब भाज्यांक के कोई अंक, शेष नहीं हैं, अतः ५४५ लब्धि एवं शेष १ प्राप्त हुआ।

त्रैराशिक

अभी तक, जोड़, बाकी गुणा और भाग में दो-दो राशियों (संख्याओं) का कार्य होरहा था। त्रैराशिक (तीन राशियों का कार्य) में प्रमाण इच्छा और फल राशि होती हैं। इनमें प्रमाण और इच्छा एक जातीय तथा फल अन्यजातीय होता है। आदि में प्रमाण, मध्य में फल एवं अन्त में इच्छा होती है। यदि फल में इच्छा का गुणा करके, प्रमाण से भाग दें, तो इच्छा का फल प्राप्त होता है। यथा—

१ दिन में (प्रमाण) १० रुपये (फल) मिलते हैं तो, ५ दिन में (इच्छा) कितने रुपये मिलेंगे?

अब यहाँ $= \dfrac{(\text{फल})\ १ \times ५० \ (\text{इच्छा})}{१\ (\text{प्रमाण})} =$ ५० रुपये (इच्छा का फल)

व्यस्त त्रैराशिक

[क] त्रैराशिक का विपरीत कार्य व्यस्त त्रैराशिक कहलाता है। यथा—

यदि ५ दिन में (प्रमाण) ५०० रुपये (फल) मिलते हैं, तो १ दिन में (इच्छा) कितने रुपये मिलेंगे?

अब यहाँ $= \dfrac{(\text{फल})\ ५० \times १\ (\text{इच्छा})}{५\ (\text{प्रमाण})} =$ १ रुपये (इच्छा का फल)

अथवा

१ दिन में (फल) १० रुपये (प्रमाण) मिलते हैं तो ५ रुपये (इच्छा) कितने दिन में मिलेंगे?

अब यहाँ $= \dfrac{(\text{फल})\ १ \times ५० \ (\text{इच्छा})}{१\ (\text{प्रमाण})} =$ ५० दिन (इच्छा का फल)

[ख] जहाँ इच्छा की वृद्धि और फल का ह्रास या इच्छा का ह्रास और फल की वृद्धि होती हो, वहाँ व्यस्त त्रैराशिक करना चाहिए। यथा—

१ दिन में, सूर्य ५९ कला चलता है तो १५ घटी में कितना चलेगा?

प्रमाण	फल	इच्छा	
१ दिन=६० घटी	५७ कला	१५ घटी	=त्रैराशिक की भाँति

अब यहाँ $\frac{५७ \times १५}{६०} = \frac{८५५}{६०}$ = १४ कला १५ विकला (इच्छा वृद्धि, फल ह्रास)

अथवा

सूर्य की ५७ कला-गति १ दिन में है, तो १४ कला १५ विकला कितने समय में ?

प्रमाण	फल	इच्छा
५७	१	१४ । १५

क० । वि० × घटी

अब यहाँ = $\frac{१४ । १५ \times ६० = (१ \text{ दिन})}{५७ \text{ कला}} = \frac{८५५}{५७}$ = १५ घटी (फलवृद्धि,इच्छाह्रास)

गोमूत्रिका-क्रम

भिन्न-गणित में इसका रूप त्रैराशिक की भाँति होता है, परन्तु सरल-गणित में खण्ड-गुणन की रीति से किया जाता है। यह क्रम ज्योतिष मे विशेष उपयोगी है। दिन-घटी-पल का राशि-अश-कला-विकला से गुणा करना पडता है, तब यही क्रम (गोमूत्रिका) सरल होता है। इसमें अलग-अलग (पृथक-पृथक) गुणा करके, जोड किया जाता है, फिर प्रमाण से भाग दिया जाता है, अर्थात् इच्छा का फल से गुणा और प्रमाण से भाग दिया जाता है। यथा—

यदि १ दिन में, सूर्य की गति ५७ कला ५ विकला है, तो, १ दिन ३० घटी ४० पल में कितनी गति होगी ?

गोमूत्रिका क्रम

$\frac{(\text{फल})\ ५७ । ५ \times १ । ३० । ४०\ (\text{इच्छा})}{(\text{प्रमाण})\ ६०\ \text{घटी} = (१\ \text{दिन})}$

ऐसे गणित को गोमूत्रिका क्रम से कीजिए, क्योंकि त्रैराशिक करने में अधिक समय लगेगा।

वारादि	सूर्यगति			
	कला	विकला	प्र० वि०	
१	५७	५	०	०
३०	५७	५	०	०
४०		१७१०	१५०	०
			२२८०	२००
योग लब्धि	५७ २६ (ल)	१७१५ ४० (ल)	२४३० ३ (ल)	२००÷६०
(ल) १ अश	८६÷६० २६ शेष	१७५५÷६० १५ शेष	२४३३÷६० ३३ शेष	२० शेष

उत्तर = १ अंश २६ कला, १५ विकला, ३३ प्रतिविकला, २० अनुविकला

अथवा

जब १ दिन में सूर्य की गति ५७।५ है तो १। २६।१५।३३।२० सूर्य की गति कितने समय में होगी?

इसे गणित में व्यस्त त्रैराशिक ही करना पड़ेगा। पहिले ५७।५ का विकला बनाओ; फिर १।२६।१५ के विकला बनाओ, इसमें १ दिन के गति वाले विकला से भाग दो, तो लब्धि में दिन, शेष में ६० का गुणाकर गति विकला से भाग दो तो लब्धि में घटी, फिर शेष में ६० का गुणाकर, गति विकला से भाग दो, तो लब्धि में पल प्राप्त होंगे, शेष को त्याग करो क्योंकि व्यवहार में इतना ही आवश्यक रहता है।

५७×६०+५=३४२५ गति विकला (१ दिन वाला)

१×६ +२६×६ +१५=५१७५ विकला भोग

```
३४२५) ५१७५ (१ दिन
       ३४२५
       १७५० ×६
३४२५) १०५० (३० घटी
       १०२७५
        २२५० ×६०
३४२५) १३५०० (३९ पल
       १ २७५
       ३२२५०
       ३ ०८२५
       १४२५  शेष
```

= १ दिन ३० घटी ३९ पल

१।२६।१५।३३।२० के स्थान में, मैंने १।२६।१५ मात्र ही ग्रहण किया था। अतएव १।३०।४० उत्तर न आकर, १।३०।३९ आया है। यह कोई त्रुटि नहीं है।

स्पष्टी-करण

इतने गणित का सदाभ्यासी व्यक्ति, इस ग्रन्थ का पूर्ण प्रयोग कर सकता है। विशेष 'गुरु बिन ज्ञान नहिं'। विद्यार्थी, दो प्रकार के होते हैं आशीर्वादी और अपानवादी। जो विद्यार्थी, श्री गुरुदेव जी के सम्मुख बैठकर विद्याभ्यास करता है, गुरु को प्रसन्न रखता है वह आशीर्वादी होता है; उसे 'अमृत-मयी विद्या प्राप्त होती है और जो विद्यार्थी किसी कारण-वश मुँह चुराकर श्री गुरुदेव जी के पृष्ठ-भाग में बैठकर विद्याभ्यास करता है, वह अपानवादी होता है, उसे 'अपानवायुमयी अविद्या प्राप्त होती है। ऐसा शिष्य बड़ी-बड़ी परीक्षाओं में उत्तीर्ण होकर भी वह सार्वजनिक उपयोगी नहीं हो पाता।

प्रथमवर्तिका = ज्योतिष का शरीर

—o—

द्वितीयवर्तिका

तिथि

पहिले लिखा जा चुका है कि तिथि का भोग-समय ही एक चान्द्र-दिन होता है। जब, सूर्य से १२ अंश आगे चन्द्र पहुँचता है, तब यह एक तिथि पूर्ण हो जाती है। इसी प्रकार बारह-बारह अंश की एक-एक तिथि होने से जब पूर्णिमा का अन्त होता है, तब सूर्य से ठीक १८० अंश आगे चन्द्र की स्थिति होती है तथा अमान्त में सूर्य से आगे ३६० अंश पर चन्द्रमा होता है और ३० तिथियाँ पूर्ण हो जाती हैं। ३६० मे १२ से भाग दें, तो लब्धि में ३० तिथियाँ प्राप्त होती हैं।

पचागों मे, प्रारम्भ में तिथि के अक १ (प्रतिपदा) से १५ 'पूर्णिमा' तक शुक्लपक्ष एवं १ (प्रतिपदा) से ३० (अमावास्या) तक कृष्णपक्ष होता है। तिथियों के नाम इस प्रकार हैं —

प्रतिपदा, द्वितीया, तृतीया, चतुर्थी, पचमी, षष्ठी, सप्तमी, अष्टमी, नवमी, दशमी, एकादशी, द्वादशी, त्रयोदशी, चतुर्दशी, पूर्णिमा को क्रमश, एक से पद्रह अक तक के द्वारा सकेत करते हैं। पुन इसी प्रकार १ (प्रतिपदा) से प्रारम्भ कर, चतुर्दशी तक १४ अक और अमावास्या को ३० तीस अक के द्वारा सकेत करते हैं।

वार

वार सात होते हैं, रविवार, सोमवार, मगलवार, बुधवार, गुरुवार, शुक्रवार और शनिवार। अन्य ग्रहों का घनत्व रूप न होने के कारण, उनके नाम के 'वार' नहीं होते। इन्हें वार, वासर, दिन और दिवस भी कहते हैं। इनका क्रम, इसी प्रकार, इसलिए होता है कि आकाश मण्डल मे पृथ्वी के समीप चन्द्र, उससे क्रमश दूर बुध, शुक्र, सूर्य, मंगल, गुरु और शनि ग्रह हैं। प्रलयान्त काल मे (सृष्टि-प्रारम्भ काल में) जब सूर्य का उदय हुआ, तब, पहिला होरा, सूर्य का हुआ। एक अहोरात्र (दिन रात) मे २४ होरा होते हैं और २५ वें होरा में सूर्योदय हो जाता है। 'अहोरात्र' का रूपांतर 'होरा' (हॉवर) सज्ञा का प्रारम्भ हुआ।

होरा-चक्र १

तत्त्व	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	होरा या घण्टा
प्रलयारम्भ	श	गु	मं	सू	शु	बु	चं	श	गु	मं.	सू	शु	बु	च	श	गु	म	सू	शु	बु	च.	श	गु	म	प्रलयान्त
सृष्टि प्रा०																									
१	र	शु	बु	चं	श	गु	मं	सू	शु	बु	च	श	गु	म	सू	शु	बु	चं	श	गु	म	सू	शु	बु	
२	च	श	गु	म	सू	शु	बु	च	श	गु	म	सू	शु	बु	चं	श	गु	म	सू	शु	बु	चं	श.	गु	
३	मं	सू	शु	बु	च	श	गु	म	सू	शु	बु	चं	श	गु	म	सू	शु	बु	चं	श	गु	म	सू	शु	
४	बु	चं	श	गु	म.	सू	शु	बु	च	श	गु	म	सू	शु	बु	च	श	गु	मं	सू	शु	बु	च	श	
५	गु	म	सू	शु	बु	च	श	गु	म	सू	शु	बु	चा	श	गु	म	सू	शु	बु	च	श	गु	म	सू	
६	शु	बु	च	श	गु	म	सू	शु	बु	चं	श	गु	म	सू	शु	बु	च	श	गु	म	सू	शु	बु	च	
७	श	गु	म.	सू	शु	ब	च.	श	गु	म	सू	शु	बु	च	श.	गु.	म	सू.	शु	बु	च	श	गु	मं	सप्ताहान्त

मुहूर्तचिन्तामणि के वार-प्रवृत्ति प्रसंग में जो कालहोरा का वर्णन किया गया है, उससे यह पूर्ण मिलता है। वर्तमान राजकीय ध्वज (अशोक-चक्र) का चिन्ह भी २४ खण्डों में विभाजित है। तत्त्व २५ होते हैं। २४ तत्त्व में एक अहोरात्र होने के बाद २५ वें तत्त्व पर सृष्टि या सूर्य आदि का उदय-काल होता है।

नक्षत्र

पंचांग में तिथि, वार के बाद, जो घटी, पल लिखे होते हैं, वे तिथि के अन्तिम मान को सूचित करते हैं। इसके बाद नक्षत्र और नक्षत्रान्त के घटी, पल लिखे होते हैं। नक्षत्र को 'दूरी सूचक स्तम्भ' भी कह सकते हैं। ये नक्षत्र कोस-मील की भाँति अंश, कला-द्वारा दूरी की सूचना देते रहते हैं। मेष-राशि के आदिबिन्दु से जब १३ अंश २० कला आगे चन्द्र पहुँचता है, तब एक नक्षत्र का स्तम्भ (माइल स्टोन) मिलता है। इसी प्रकार ३६ अंश + १३ अंश २ कला=२७ सन्धि (नक्षत्र) के समान 'दूरी सूचक स्तम्भ' होते हैं। सारांश यह कि नक्षत्र (भ या ऋक्ष) २७ होते हैं। ये कई तारा-पुंज से बनते हैं। इनके भी नाम इस प्रकार के हैं —

अश्विनी भरणी कृत्तिका रोहिणी मृगशिरा, आर्द्रा पुनर्वसु पुष्य श्लेषा मघा पूर्वाफाल्गुनी, उत्तराफाल्गुनी, हस्त चित्रा स्वाती विशाखा, अनुराधा, ज्येष्ठा, मूल पूर्वाषाढ़, उत्तराषाढ़, श्रवण, धनिष्ठा शतभिषा पूर्वाभाद्रपद उत्तराभाद्रपद, रेवती।

चरण

प्रत्येक नक्षत्र के चार चरण समान—(३ अंश २० कला के) भाग (खण्ड) के होते हैं और सभी को एक अक्षर के संकेत-द्वारा पुकारते हैं। यथा

अश्विनी के चार चरण=१ चू २ चे ३ चो ४ ला (एक-एक अक्षर का संकेत)

नोट—

ङ ञ ण पर नाम बनाने में कठिनता आती है, अतएव उसके समीप के अक्षर [जिससे न तो नक्षत्र बदले और न राशि] पर नाम रख लेना चाहिए। किन्तु नाम लिखने के पहिले नक्षत्र और उसका चरण स्पष्ट लिख देना चाहिए। अथवा 'सरलता से (हिन्दी में) वा सरलत्वेन (संस्कृत में) लिखकर, समीप के अक्षर पर बिना नक्षत्र तथा राशि बदले नाम रख लेना चाहिए। शेष अक्षरों में सभी वर्णों की वस्तुओं के नाम बन जायगे। केवल ङ्गलिश नाम त वर्ग पर न बनकर ट वर्ग पर ही बन सकते हैं। और भी उनके व्याकरण की भिन्नता के कारण भी 'निमोनिया' नामक रोग की राशि कन्या तथा ठ 'प' का तृतीय चरण रहेगा, क्योंकि निमोनिया (P) पी नामक अक्षर से प्रारम्भ होता है। क्रिश्चियन नामों में भी ऐसी ही गड़बड़ी पड़ती है। विशेषज्ञों का कहना है कि बर्फीले प्रदेश वाले व्यक्तियों के अधिक उष्ण चाय पीने के कारण' दाँत कमजोर होते हैं; अतः 'कुचुटुतुपु दन्त्या' वाले (छ त म द ध न ल स) वर्णोच्चारण में उन्हें कठिनता होती है।

राशि

पहिले लिखा जा चुका है कि, ३० अंश की एक राशि होती है, परन्तु यहाँ हम लिखते हैं कि ९ चरण अर्थात् २¼ नक्षत्र की एक राशि होती है। यह दो भेद न होकर एक ही भेद है। १ चरण=३ अंश २० कला×९ चरण=३० अंश=१ राशि। चाहे ९ चरण की एक राशि कहिए, चाहे ३० अंश की बात एक ही है।

राशियाँ १२ होती हैं। क्योंकि ३० अंश = १ राशि × १२ राशि = १२ राशि या ३६० अंश और पूर्ण २७ नक्षत्र ३६० अंशों के ही होते हैं। वार क्रम बताने में देखिए, कि मंगल में प्रलयान्त हुआ, अतः मंगल के कारण, प्रथम राशि का नाम मेष (मेढा का रूप) हुआ, इसी प्रकार क्रम से —

मेष, वृष, मिथुन, कर्क, सिंह, कन्या, तुला, वृश्चिक, धनु, मकर, कुम्भ और मीन, ये १२ राशियाँ हुईं। जिनका सरलता से ज्ञान कराने के लिए आगे चक्र २ दिया जा रहा है।

नक्षत्र, चरण, अक्षर, राशि आदि का चक्र २

नक्षत्र	अश्विनी				भरणी				कृत्तिका				रोहिणी				मृग–	
चरण	चू	चे	चो	ल	ली	लू	ले	लो	अ	इ	उ	ए	ओ	व	वी	वू	वे	वो
राशि	मेष									वृष								
नक्षत्र	शिरा		आर्द्रा				पुनर्वसु				पुष्य				आश्लेषा			
चरण	क	की	कु	घ	ङ	छ	के	को	ह	ही	हू	हे	हो	ड	डी	डू	डे	डो
राशि	मिथुन									कर्क								
नक्षत्र	मघा				पू फा				उ फा				हस्त				चि–	
चरण	म	मी	मू	मे	मो	ट	टी	टू	टे	टो	प	पी	पू	ष	ण	ठ	पे	पो
राशि	सिंह									कन्या								
नक्षत्र	त्रा		स्वाती				विशाखा				अनुराधा				ज्येष्ठा			
चरण	र	री	रु	रे	रो	ता	ती	तु	ते	तो	न	नी	नू	ने	नो	य	यी	यु
राशि	तुला									वृश्चिक								
नक्षत्र	मूल				पूर्वाषाढ़				उत्तराषाढ़				श्रवण				ध–	
चरण	ये	यो	भ	भी	भू	ध	फ	ढ	भे	भो	ज	जी	खी	खू	खे	खो	ग	गी
राशि	धनु									मकर								
नक्षत्र	निष्ठा		शतभिषा				पू भा				उ भा				रेवती			
चरण	गु	गे	गो	स	सी	सु	से	सो	द	दी	दु	थ	झ	ञ	दे	दो	च	ची
राशि	कुम्भ									मीन								

क्रम	संज्ञा	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
१	स्थान	गिरिम्	वनम्	ग्रामम्	जलम्	गिरिम्	ग्रामम्	वनम्	जलम्	गिरिम्	वनम्	ग्रामम्	जलम्
२	सौम्यादि	क्रूर	सौम्य	क्रूर	सौम्य	क्रूर	सौम्य	क्रूर	सौम्य	क्रूर	सौम्य	क्रूर	सौम्य
३	बली	दिवा	रात्रि	दिवा	रात्रि	दिवा	रात्रि	दिवा	रात्रि	दिवा	रात्रि	दिवा	रात्रि
४	समादि	विषम	सम	विषम	सम	विषम	सम	विषम	सम	विषम	सम	विषम	सम
५	दिशा	पूर्व	दक्षिण	पश्चिम	उत्तर	पूर्व	दक्षिण	पश्चिम	उत्तर	पूर्व	दक्षिण	पश्चिम	उत्तर
६	संततादि	अल्प	मध्यम	मध्यम	बहु	अल्प	अल्प	अल्प	बहु	अल्प	अल्प	मध्यम	बहु
७	कान्ति	रूक्ष	रूक्ष	स्निग्ध	स्निग्ध	रूक्ष	रूक्ष	स्निग्ध	स्निग्ध	रूक्ष	रूक्ष	स्निग्ध	स्निग्ध
८	जाति	क्षत्री	वैश्य	शूद्र	विप्र	क्षत्री	वैश्य	शूद्र	विप्र	क्षत्री	वैश्य	शूद्र	विप्र
९	उदय	पृष्ठ	पृष्ठ	शीर्ष	पृष्ठ	शीर्ष	शीर्ष	शीर्ष	शीर्ष	पृष्ठ	पृष्ठ	शीर्ष	उभय
१०	पुंसादि	पुंस	स्त्री	पुंस	स्त्री	पुंस	स्त्री	पुंस	स्त्री	पुंस	स्त्री	पुंस	स्त्री
११	चरादि	चर	स्थिर	द्विस्व	चर	स्थिर	द्विस्व	चर	स्थिर	द्विस्व	चर	स्थिर	द्विस्व
१२	पुष्ट्यादि	दृढ	दृढ	मृदु	मृदु	दृढ	कृश	दृढ	कृश	दृढ	दृढ	मृदु	दृढ
१३	दीर्घादि	ह्रस्व	ह्रस्व	सम	सम	दीर्घ	दीर्घ	दीर्घ	दीर्घ	सम	सम	लघु	लघु
१४	नरादि	पशु	पशु	नर	जलचर	पशु	नर	नर	कीट	नरपशु	जलपशु	जलनर	जलचर
१५	जलादि	शुष्क	शुष्क	शुष्क	जल	शुष्क	शुष्क	जल	जल	शुष्क	जल	जल	जल
१६	तत्त्व	अग्नि	भूमि	वायु	जल	अग्नि	भूमि	वायु	जल	अग्नि	भूमि	वायु	जल
१७	पद	चतुष्पद	चतुष्पद	द्विपद	अपद	चतुष्पद	द्विपद	द्विपद	बहुपद	द्विपद	चतुष्पद	अपद	अपद
१८	वर्ण	लाल	सफेद	हरा	गुलाबी	धूम्र	पीला	चित्रित	सफेद	स्वर्ण	पीला	कबरा	धूम्र
१९	गुण	उष्ण	शीत	उष्ण	शीत	उष्ण	शीत	उष्ण	शीत	उष्ण	शीत	उष्ण	शीत
२	धातु	पित्त	वायु	सम	कफ	पित्त	वायु	सम	कफ	पित्त	वायु	सम	कफ
२१	शब्द	अति	अति	दीर्घ	हीन	दीर्घ	अर्ध	हीन	हीन	अति	अति	अर्ध	हीन
२२	प्रजाकारक	अल्प	मध्यम	मध्यम	बहु	अल्प	अल्प	अल्प	बहु	अल्प	अल्प	मध्यम	बहु
२३	अंगभाग	सिर	मुख	भुजा बाहु	वक्ष	हृदय	उदर	कमर	गुप्तांग	जंघा	घुटना	पिण्डली	पाद
२४	राशीश	मंगल	शुक्र	बुध	चन्द्र	सूर्य	बुध	शुक्र	मंगल	गुरु	शनि	शनि	गुरु

राशियों की विभिन्न संज्ञाएँ

आध्यात्मिक = कर्क, सिंह, तुला, वृश्चिक।
धार्मिक = धनु, मकर, कुम्भ, मीन।
शास्त्रीय = मिथुन, तुला, कुम्भ।
अयन = कर्क, मकर।
विषुव (गोल) = मेष, तुला।
नर = मिथुन, कन्या, तुला, धनु पूर्वार्ध, कुम्भ ... =[लग्न में बली]
जलचर = कर्क, मकर उत्तरार्ध, मीन ... =[चतुर्थ में बली]
कीट = वृश्चिक (मतान्तर में कर्क) ... =[सप्तम में बली]
पशु = मेष, वृष, सिंह, धनु उत्तरार्ध, मकर पूर्वार्ध ... =[दशम में बली]
सरीसृप = वृश्चिक (मतान्तर से)
जलाश्रयी = वृष, मिथुन, कर्क, कन्या, वृश्चिक, मकर, कुम्भ, मीन।
धराश्रयी = मेष, सिंह, तुला, धनु।

विरोधी बल

लग्न में, चतुर्थ में, सप्तम में, दशम में } इन राशियों को इन स्थानों में बल प्राप्त होना, जातक-पारिजात में माना गया है। आगे लिखी हुई प्लव संज्ञा से, इसका विरोध पड़ता है। अत यह सर्व मान्य नहीं है।

राशियों का कोश

१ = मेष, अज, विश्व, क्रिय, आद्य। तुम्बुर।
२ = वृष, उक्ष, गो, गोकुल, द्वितीय। तावुरु।
३ = मिथुन, द्वन्द्व, नृयुग्म, यम, युग, तृतीय। जुतुम।
४ = कर्क, कर्कट, कर्कोटक, चतुर्थ। कुलीर।
५ = सिंह, कण्ठीरव, मृगेन्द्र, पचम। लेय।
६ = कन्या, रमणी, तरुणी, स्त्री, षष्ठ। पाथोन।
७ = तुला, तौलि, वाणिज्य, घट, सप्तम। जूक।
८ = वृश्चिक, अलि, कीट, अष्टम। कौर्पि।
९ = धनु, धन्वी, चाप, शरासन, नवम।
१० = मकर, मृग, मृगास्य, नक्र, दशम।
११ = कुम्भ, घट, तोयधर, एकादश।
१२ = मीन, मीनाली, मत्स्य, पृथुरोम, झष, द्वादश।

इनमें मेष से वृश्चिक तक के अन्तिम नाम 'ग्रीक' भाषा के हैं।

तिथीश

तिथि	ईश
१	वन्हि
२	ब्रह्मा
३	गौरी
४	गणेश
५	अहि
६	गुह (कार्तिक)
७	रवि
८	शिवा
९	दुर्गा
१०	यम
११	विश्वेदेवा
१२	हरि
१३	कामदेव
१४	शिव
१५	पूर्णचन्द्र
३०	पितर

[पृष्ठ १८ का शेष]

३० = त्रिंशत
४० = चत्वारिंशत्
५० = पञ्चाशत्
६० = षष्टि
७० = सप्तति
८० = अशीति
९० = नवति
५०० = पञ्चशत

नक्षत्रों का कोश

१=अश्विनी दास्र अश्वि आद्य, अश्व के नाम।

२=भरणी, यम अन्तक।

३=कृत्तिका, वह्नि।

४=रोहिणी ब्रह्म, ब्राह्म क धाता।

५=मृगशिरा, मृग, शशि (चन्द्र के सभी नाम)।

६=आर्द्रा शिव रुद्र ईश्वर।

७=पुनर्वसु अदिति।

८=पुष्य, ईज्य तिष्य।

९=श्लेषा, सर्प।

१०=मघा पितर।

११=पूर्वाफाल्गुनी भग।

१२=उत्तराफाल्गुनी अर्यमन्।

१३=हस्त कर अर्क, पतंग, सूर्य के सभी नाम।

१४=चित्रा त्वाष्ट्र विश्व।

१५=स्वाती, मारुत पवन वायु के सभी नाम।

१६=विशाखा, द्वीश (द्वीशाख्य का विशाखा) इन्द्राग्नी।

१७=अनुराधा मैत्र मित्र।

१८=ज्येष्ठा इन्द्र शाक्र।

१९=मूल राक्षस निऋति कव्य।

२०=पूर्वाषाढ़ जल।

२१=उत्तराषाढ़ वैश्व विश्वदेव।

२२=अभिजित, ब्रह्म। (सबका प्रयोग नहीं)

२३=श्रवण श्रुति कर्ण विष्णु, हरि।

२४=धनिष्ठा वसु वासव।

२५=शतभिषा, पाशि वरुण जलेश के सभी नाम।

२६=पूर्वाभाद्रपद अजैकपाद।

२७=उत्तराभाद्रपद अहिर्बुध्न्य।

२८=रेवती पूषन् पौष्ण अन्त्य।

अंक — रूढ़ि संकेत

१=भू चन्द्र और कमल के सभी नाम।	एक
२=यम, भुज, पक्ष और नेत्र के सभी नाम।	द्वि
३=शिवनेत्र, राम, अग्नि के सभी नाम।	त्रि
४=युग, वेद। समुद्र के सभी नाम।	चतु
५=बाण के सभी नाम।	पंच
६=रस, अंग, शास्त्र तर्क।	षट्
७=ऋषि। अश्व और पर्वत के सभी नाम।	सप्त
८=नाग वसु। गज के सभी नाम।	अष्ट
९=नन्द गो, अंक, दुर्गा, ग्रह।	नव
०=गगन के सभी नाम।	शून्य
१०=दिशा के सभी नाम (आशा, दिक् आदि)	दश
११=शिव और रुद्र के सभी नाम।	एकादश
१२=भूपक्ष। रवि के सभी नाम।	द्वादश
१३=विश्व। कामदेव के सभी नाम।	त्रयोदश
१४=इन्द्र, मनु, भुवन लोक शिव विद्या	चतुर्दश
१५=तिथि।	पंचदश
१६=शृंगार। भूप (भूप राजा आदि)	षोडश
१७=अत्यष्टि।	सप्तदश
१८=धृति। बधि।	अष्टादश
१९=अति धृति।	एकोनविंशति
२ =कृति। नख।	विंशति
२१=प्रकृति। वैरव।	एकविंशति
२४=जिन (जैनी तीर्थंकर)	चतुर्विंशति
२५=तत्त्व।	पंचविंशति
२७=नक्षत्र भ ऋक्ष आदि।	सप्तविंशति
३२=रद, दन्त।	द्वात्रिंशत
३३=सुर, अमर आदि देव के नाम	त्रयस्त्रिंशत्
६४=कला।	चतुःषष्टि

[शेष पृष्ठ १७ में]

मास

चान्द्र मासों के नाम १२ हैं। चैत्र, वैशाख, ज्येष्ठ, आपाढ, श्रावण, भाद्रपद, आश्विन (क्वाँर), कार्तिक, आग्रहायण (मार्गशीर्ष), पौष, माघ, फाल्गुन।

	मास	पूर्णिमा में नक्षत्र	मासों के अन्य नाम
१	चैत्र	चित्रा	मधु, चैत
२	वैशाख	विशाखा	माधव, राधेय, राधा, वैशाख
३	ज्येष्ठ	ज्येष्ठा	शुक्र, जेठ
४	आपाढ	पूर्वापाढ	शुचि, अपाढ़
५	श्रावण	श्रवण	नभस्, सावन
६	भाद्रपद	पूर्वाभाद्रपद	नभस्य, भादों
७	आश्विन	अश्विनी	इप, अश्वयुक्, क्वॉर
८	कार्तिक	कृत्तिका	ऊर्ज, वाहुल, कातिक
९	मार्गशीर्ष	मृगशिरा	सहस्, अगहन
१०	पौष	पुष्य	सहस्य, पूस
११	माघ	मघा	तपस्, माघ
१२	फाल्गुन	पूर्वाफाल्गुनी	वाप, तापस तपस्य, फागुन

नोट—

आज भी इसका प्रमाण प्रत्यक्ष रूप से पचागों में मिल जाता है। नक्षत्र और पूर्णिमा तिथि का सयोग प्राय हो ही जाता है। कभी एक दिन आगे-पीछे (पूर्णिमा के) नक्षत्र मिलता है और ऐसा अवसर वर्ष भर के केवल तीन ही किसी मासों में अधिकाश सम्भव रहता है।

प्लव-संज्ञा (यवनमत)

लग्न की पूर्व दिशा। चतुर्थ की उत्तर दिशा। सप्तम की पश्चिम दिशा। दशम की दक्षिण दिशा। यवन जातक ग्रन्थों में इसका उल्लेख पाया जाता है।

जो राशि अपने स्वामी की दिशा में स्थित हो, उस राशि की सव-सज्ञा होती है तथा श्रेष्ठ फल देती है। इस प्रकार पूर्व मे सिंह राशि (लग्न में) उत्तर में मिथुन, कन्या (चतुर्थ में) पश्चिम में मकर, कुम्भ (सप्तम में) दक्षिण में मेष, वृश्चिक (दशम मे) वलिष्ठ होती है।

क्या, इसी प्रकार मेप-सिंह-धनु का सूर्य लग्न में, वृप-कन्या-मकर का मगल दशाम में, कर्क-वृश्चिक-मीन का वुध चतुर्थ में, मिथुन-तुला-कुम्भ का शनि सप्तम में वलिष्ठ होगा?

हॉ, मेप, सिंह का सूर्य लग्न में, मकर का मगल दशम में, कर्क का वुध चतुर्थ में और तुला, कुम्भ का शनि सप्तम में वलिष्ठ होता है।

ग्रह संज्ञा का कोष्ठक ४

क्रम	संज्ञा		सूर्य	चन्द्र	भौम	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
१	कालपुरुषका		आत्मा	मन	पराक्रम	वाणी	ज्ञान	काम	दुःख	दुःख	दुःख
२	वर्ण		गुलाबी	सफेद	लाल	हरा	पीला	सफेद	काला	काला	काला
३	दिशा		पूर्व	वायव्य	दक्षिण	उत्तर	ईशान	आग्नेय	पश्चिम	नैऋत्य	नैऋत्य
४	पुंसादि		पुरुष	स्त्री	पुरुष	नपुंसक	पुरुष	स्त्री	नपुंसक	स्त्री	स्त्री
५	गुण		सत्व	सत्व	तम	रज	सत्व	रज	तम	तम	तम
६	प्रकृति		पित्त	कफ	पित्त	समधातु	समधातु	कफ	वात	वात	वात
७	तत्व		अग्नि	जल	अग्नि	भूमि	आकाश	जल	वायु	वायु	वायु
८	जाति		क्षत्री	वैश्य	क्षत्री	शूद्र	विप्र	विप्र	शूद्र	म्लेच्छ	म्लेच्छ
९	अवस्था		वृद्ध	युवा	युवा	बाल	वृद्ध	युवा	वृद्ध	वृद्ध	वृद्ध
१०	पद		चतुष्पद	सर्प	चतुष्पद	पक्षी	द्विपद	द्विपद	पक्षी	सर्प	पक्षी
११	स्थान		पशुभूमि	आर्द्र भूमि	दग्ध भूमि	श्मसान	ग्रामभू	जलभूमि	ऊसर	ऊसर	ऊसर
१२	रस		तिक्त	लवण	कटु	कटु	मधुर	अम्ल	तिक्त	तिक्त	तिक्त
१३	समय		मध्याह्न	पराह्न	मध्याह्न	पूर्वाह्न	पूर्वाह्न	पराह्न	सन्ध्या	रात्रि	रात्रि
१४	काष्ठ		चौकोन	स्थूल	चौकोन	गोल	गोल	लम्ब	दीर्घ	दीर्घ	ह्रस्व
१५	धातु		सुवर्ण	कांसा	गेरु तांबा	सुवर्ण	रत्न	चांदी	लोहा	लोहा	लोहा
१६	स्वभाव		स्थिर	चर	उग्र	मिश्र	मृदु	लघु	तीक्ष्ण	तीक्ष्ण	तीक्ष्ण
१७	उच्च राशि		मेष १	वृष ३	मकर २८	कन्या १५	कर्क ५	मीन २७	तुला २	वृष मिथुन १५	वृश्चिक, धनु १५
१८	नीच राशि		तुला १	वृश्चिक ३	कर्क २८	मीन १५	मकर ५	कन्या २७	मेष २	धनु १५	मिथुन १५
१९	मूलत्रिकोण		सिंह २	वृष	मेष १२	कन्या २०	धनु	तुला २	कुम्भ २०	कर्क कुम्भ	सिंह मम
२०	स्वगृही		सिंह	कर्क	मेष वृश्चिक	मिथुन कन्या	धनु मीन	वृष, तुला	मकर कुम्भ	कन्या	मीन
२१	नैसर्गिक मैत्री	मित्र	चं मं गु	सू, बु	सू चं गु	सू शु रा	सू चं मं	बु श रा	बु शु रा	बु शु श	बु शु श
		सम	बु	मं गु शु श	शु श	मं गु श	श रा	मं गु	गु	गु	गु
		शत्रु	शु श रा	रा	बु रा	चं	बु शु	सू, चं	सू चं मं	सू चं मं	सू चं मं
२२	मूलदशा मान त्रिपाद " अर्ध " एकपाद "		७ ५।८ ३।६ ३।१	७ ५।८ ३।६ ३।१०	५।३।८ × ३।६ ३।२	७ ५।८ ३।६ ३।२	३।७।६ ५।८ × ३।१	७ ५।८ ३।६ ३।१०	३।७।१ ५।८ ३।६ ×	३।६।१८ अल्प ३।१० ३।६	३।७।३।१८ अल्प ७।१ ३।६

ग्रहों का कोश

सूर्य = हेली, तपन, दिनकर, दिनकृत्, भानु, पूषन्, अरुण, अर्क, इन, तिग्मांशु, उष्णांशुमाली, तरणि।
चन्द्र = सोम, शीतद्युति, उडुपति, तारेश, ग्लौ, मृगाक, इन्दु, शीताशुमाली।
भौम = आर, वक्र, क्षितिज, भूतनय, रुधिर, अगारक, क्रूरनेत्र, धराज, कुपुत्र, भूपुत्र।
बुध = सौम्य, तारातनय, त्रिद्, बोधन, इन्दुपुत्र।
गुरु = मन्त्री, वाचस्पति, सुराचार्य, देवेज्य, ईज्य, अमरमन्त्री।
शुक्र = काव्य, सित, भृगुसुत, अच्छ, आस्फुजित, दानवेज्य, उशनस्, भार्गव, सूरि।
शनि = असित, छायासूनु, सौरि, तरणितनय, कोण, आर्कि, मन्द।
राहु = सर्प, असुर, फणि, तम, सैंहिकेय, अगु।
केतु = ध्वज, शिखी।

तात्कालिक--मित्रता

सभी ग्रह, अपने-अपने स्थान से २-३-४-१०-११-१२ वें भाव (स्थान) में स्थित ग्रहों से मित्रता रखते हैं। इसी प्रकार वे १-५-६-७-८-९ वें भावों के ग्रहों से शत्रुता रखते हैं।

पञ्चधा-मैत्री

चक्र ४ में, नैसर्गिक मैत्री के तीन भेद और तात्कालिक मैत्री के दो भेद होते हैं। दोनों को मिलाकर ग्रहों की मित्रता के पाँच भेद हो जाते हैं, अतिमित्र, मित्र, सम, शत्रु और अतिशत्रु। विद्वज्जन, इन्हीं पाँचों भेदों के द्वारा ग्रहों का दशवर्गी, प्राय सप्तवर्गी बल निकालकर, फलों का अनुसन्धान करते हैं। पञ्चधा-मैत्री का स्पष्टीकरण आगे चक्र ५ में किया गया है।

पञ्चधा-मैत्री का बल-चक्र ५

नैसर्गिक + तात्कालिक	पञ्चधामैत्री	कलादिबल
मित्र + मित्र में	अतिमित्र	२२।३०।०
मित्र + सम में	मित्र	१५। ० ।०
मित्र + शत्रु मे	सम	७।३०।०
सम + शत्रु में	शत्रु	३।४५।०
शत्रु + शत्रु में	अतिशत्रु	१।५२।३०
स्वगृही में	श्रेष्ठ	३०। ० ।०

भावों के नाम

लग्न (तनु), धन, भाई, सुख, पुत्र, शत्रु, स्त्री, धर्म, कर्म, लाभ और व्यय नामक बारह-भाव क्रमश होते हैं।

भाव-कोश

भाव
१ = लग्न = देह, तनु, कल्प, उदय, आद्य, जन्म विलग्न, होरा, अग। प्रथम।
२ = धन = द्रव्य, वाणी, अर्थ, भुक्ति, नयन, स्व, कुटुम्ब, कोश। द्वितीय।
३ = भाई = पराक्रम, भ्रातृ, दुश्चिक्य, विक्रम, सहोदर, वीर्य, धैर्य, कर्ण। तृतीय।
४ = सुख = सुहृद्, मित्र, पाताल, वृद्धि, हिबुक, क्षिति, माता, विद्या, वाहन, अम्बु, गेह, बन्धु। चतुर्थ।
५ = पुत्र = सुत, बुद्धि, देवराज, भक्ति, पितृनन्दन। पचम।
६ = शत्रु = शत्रु, रिपु, रोग, अश, मातुल, शस्त्र, भय, क्षत। षष्ठ।

७ = स्त्री = कलत्र, जामित्र, अंगना, दारा, भार्या, काम गमन, कलत्र, सम्पत, द्यून, मत्त । सप्तम ।

८ = आयु = मृति, नाश, रन्ध्र, रन्ध्र, विनाशन । अष्टम ।

९ = धर्म = शुचि, भाग्य, गुरु, शुभ, तप । नवम ।

१० = कर्म = व्यापार, मेषूरण, मध्य, मान, ज्ञान, राज, आस्पद, पद, पिता, आकाश, गगन । दशम ।

११ = लाभ = आय, उपान्त्य, भव । एकादश ।

१२ = व्यय = रिष्फ, अन्त्य । द्वादश ।

भाव-कार्य

१ = लग्न—शरीर का सुख-दुःख, उत्साह, प्रवास, महत्वाकांक्षा, सौभाग्य, जीवन, आयु, कार्यारम्भ, जन्म-स्थान की बात, शरीर के चिन्ह, आकृति, राजनीति उद्योग शिर मुख, आजीविका ।

२ = धन—द्रव्य कुटुम्ब, सन्तान, वंश आभूषण, वाणी, नेत्र, धन का सहायक, पड़ोसी समीपस्थ-जन, आजीविका लेन-देन, सहायक, आगमन उद्यम, खरीद-बिक्री साहूकार कंगाल, दाता, कृपण, सत्कार भक्ति, गला, कण्ठ, प्राप्तिस्थान, नष्ट-वस्तु का आशा ।

३ = भाई—बन्धु बहिन स्वप्न-विद्या लघुयात्रा किसी के भेजने से यात्रा, शय्या भाव, देह-कम्पन, सन्तोष, नौकर, धर्म देवस्थान कन्या हाथ पराक्रम कर्ण संगीत-स्वर, उद्योग महत्वाकांक्षा गुप्त-शत्रु ।

४ = सुख—घर, भूमि सवारी, पशु विद्या, कृषि पिता, खजाना पृथ्वी में गड़ी वस्तु डेरा, गृह सुखक, मातृ-धन माता स्थान, कार्य-परिणाम, परिवर्तन, समीपस्थ का प्रश्न यात्रा, कुक्षि, बाँध बन्ध राजकीय मैत्री मृत-मनुष्य का धन ।

५ = पुत्र—गर्भ वस्तु-लाभ गुप्त, लिंग उदर, आनन्द से मेले हुए व्यक्ति का विचार आगमन स्नेह, कृपालु-पत्र लौकिक-कार्य ईश्वर-भक्ति, बुद्धि विद्या अचानक-लाभ उत्पत्ति, मित्र-वार्ता पत्र, मंगल-कार्य प्रसन्नता आश्चर्य के कार्य शुभाशुभ शिल्प चिन्तन मादक-पदार्थ आप्त-मिलन, उद्योग-दिशा व्यापार का यश मातृ-धन पुत्र धन राजा द्वारा लाभ ।

६ = रिपु—रोग मामा मौसी गुप्तशत्रु, चाँव सेवक मित्र का मित्र मृत्यु लोक विरोध, ताप, शोक, चतुष्पद (पशु आदि), चक्र यातना सन्ताप चोरी-भय, शत्रु उदर नाभि पैर ।

७ = स्त्री—स्त्री, पति शत्रुता स्वीकृति नौकरी यातायात-व्यापार मार्ग साझा चार विवाद दो जन का उद्यम आगमन अस्थिर स्थित धन विक्रम मैथुन, परदेश विवाह, नष्ट-वस्तु मुकदमा प्रीति, प्रत्यक्ष-शत्रु, स्थानान्तर ट्रान्सफर (परिवर्तन) वैधक, गुप्तांग ।

८ = आयु—गण्डान्तर-कष्ट अपयश फौजदारी ससुराल की स्थिति स्त्री-सम्बन्ध से या विवाह से धन-लाभ अकस्मात्-लाभ मृत्यु-पत्र (वसीयतनामा) से धन लाभ सट्टा, लाटरी झूठी आशा का धन भय मृत्यु शोक चिन्ता दुःख-स्थिति ऋण देने का क्लेश दुर्नीति साझा नष्ट-धन पर्वत, कोट आलस्य मृत्युप्रवेश श्मशान, मृत्युकारण आलस्य दरिद्रता झूठी बात, इन्द्रिय-गुदा पैर ।

९ = धर्म—व्यभिचार सदाचार, तीर्थ-यात्रा दूर-यात्रा परोपकारी-यात्रा मंगल-यात्रा भाग्य दान स्वप्न विद्या अनुष्ठान जप योग, समाधि पति-धर्म देव-पूजा स्थापित-धन, संचित धन विश्वास सेवा धर्मार्थ सन्यास जंघा उद्यम उत्कर्ष यश गुरु, पिता समाज-सेवा सार्वजनिक-कार्य, राजकीय संस्था से सम्बन्ध मुद्रण-कला ।

१० = कर्म—व्यापार, सन्यास, ग्रेजुएट होना, महाविद्यालय की परीक्षा, परीक्षोत्तीर्णता, शास्त्रार्थ में विजय, नौकरी, खेती, अधिकार, योगी, राजदरबार, सामाजिक, सम्मान, पिता, प्रतिष्ठा, जायदाद, वैभव, अधिक शक्ति वाला शत्रु, चोरी का धन, ज्येष्ठ-बन्धु की मृत्यु, बल-तन्त्र, सेना, उद्यम, औषधि, गुरु, माता, मेघ, मन्त्र-यन्त्र, जाति-मुखिया, वैद्य, पैर।

११ = लाभ—पिंडुली, मित्र, बुद्धि, मन्त्री, सात्विक-स्वभाव, लाभ, सिद्धि, आशा, भाग्य, दीवान, जज, न्यायकर्ता, ईश्वर, सत्य, शान्ति, नियम-धारण, बन्धु, नवीन-योजना, पिता का धन, माता की मृत्यु, पुत्र का शत्रु।

१२ = व्यय—खर्च, शत्रु-पीड़ा, सकट, दूरयात्रा, वन-पर्वत-भ्रमण, पशु, उद्योग-नाश, ऋण, खून, आत्महत्या, पूर्वार्जित-सम्पत्ति, गुप्तशत्रु, जेलखाना, बन्धन, मुक्ति, व्याधि दूर होना, बैल आदि पशु का बन्धन, चाचा, राजमान, सुख-दुःख, परिणाम-फल, चरण, नेत्र।

त्रित्रिकोण-संज्ञा

लग्न से नवम पर्यन्त भावों को त्रित्रिकोण कहते हैं।

वर्गोत्तम-संज्ञा

जो ग्रह या भाव, जिस राशि का हो, यदि उसी राशि के नवांश में आ जावे, तो वर्गोत्तम संज्ञा होती है। परन्तु नीच-राशिस्थ-ग्रह, नीच-राशि के नवांश में आ जावे, तो, वर्गोत्तमी न होकर, परम-नीचांश वाला कहा जाता है। इसी प्रकार उच्च राशि वाला ग्रह, उच्च राशि के नवांश में आ जावे, तो वर्गोत्तमी न होकर, परम-उच्चांश वाला कहा जाता है।

भावों की संज्ञाएँ

१ = लग्न—आद्य, केन्द्र, कण्टक, चतुष्टय, गुप्त-त्रिकोण।
२ = धन—पणफर।
३ = भ्रातृ—आपोक्लिम, उपचय।
४ = सुख—केन्द्र, चतुरस्र, चतुष्टय, कण्टक, पाताल, विद्या।
५ = पुत्र—त्रिकोण, पणफर।
६ = रिपु—त्रिक, आपोक्लिम, उपचय।
७ = स्त्री—केन्द्र, कण्टक, चतुष्टय।
८ = आयु—चतुरस्र, त्रिक, पणफर।
९ = धर्म—त्रिकोण, आपोक्लिम।
१० = कर्म—केन्द्र, कण्टक, चतुष्टय, मध्य, उपचय।
११ = लाभ—पणफर, उपचय।
१२ = व्यय—आपोक्लिम।

ग्रहों का शुभाशुभत्व

शुभ—पूर्ण-चन्द्र, शुभ-युक्त बुध और गुरु तथा शुक्र।
अशुभ—सूर्य, क्षीण-चन्द्र, मंगल, पापयुक्त-बुध, शनि, राहु, केतु।
क्रूर—सूर्य, राहु
पाप—मंगल, शनि, केतु।

चन्द्र का शुभादि

शुक्ल एकादशी से कृष्ण-पंचमी तक पूर्ण-चन्द्र, कृष्ण षष्ठी से कृष्ण दशमी तक तथा शुक्ल षष्ठी से शुक्ल दशमी तक मध्यम-चन्द्र, कृष्ण एकादशी से शुक्ल पंचमी तक क्षीण-चन्द्र रहता है। तात्पर्य यह, कि—

शुक्ल एकादशी से कृष्ण पंचमी तक	=	पूर्ण-चन्द्र
कृष्ण एकादशी से शुक्ल पंचमी तक	=	क्षीण-चन्द्र
शेष समय में	=	मध्यम-चन्द्र
शुभ-दृष्ट चन्द्रमा	=	शुभ
अशुभ-दृष्ट चन्द्रमा	=	अशुभ

द्वितीय-वर्तिका = ज्योतिष का धन

---

७ = स्त्री = कलत्र, जामित्र, अंगना, दारा, भार्या, काम गमन, कलत्र, सम्पत्, धून, अस्त । सप्तम ।

८ = आयु = मृति, नाश, रन्ध्र, रन्ध्र, विनाशाम । अष्टम ।

९ = धर्म = शुचि, भाग्य, गुरु, शुभ, तप । नवम ।

१० = कर्म = व्यापार, मेषूरण, मध्य, मान, ज्ञान, राज, आस्पद, पद, पिता, आकाश, गगन । दशम ।

११ = लाभ = आय, उपान्त्य, भव । एकादश ।

१२ = व्यय = रिष्फ, अन्त्य । द्वादश ।

भाव-कार्य

१ = लग्न—शरीर का सुख-दुःख, उत्साह, प्रवास, महत्वाकांक्षा सौभाग्य, जीवन, आयु, कार्यारम्भ, जन्म-स्थान की बात, शरीर के चिन्ह, आकृति, राजनीति शोभा, शिर मुख, आजीविका ।

२ = धन —द्रव्य कुटुम्ब सन्तान, वैश्य आभूषण, वाणी नेत्र धन का सहायक, पड़ोसी समीपस्थ-जन आजीविका लेन-देन, सहायक, आगमन, उद्यम, खरीद-बिक्री, साहूकार, कंगाल, दाता, कृपण, सत्कार भक्ति, गला कण्ठ प्राप्तिस्थान नष्ट-वस्तु का आना ।

३ = भाई—बन्धु बहिन स्वप्न-विद्या लघुयात्रा किसी के भेजने से यात्रा शय्या धाय, देह-कम्पन सन्तोष, नौकर, धर्म देवस्थान कन्या हाथ पराक्रम कर्ण संगीत-स्वर, ज्योति, महत्वाकांक्षा, गुप्त-शत्रु ।

४ = सुख—घर भूमि सवारी, यश विद्या, कृषि पिता, तहखाना पृथ्वी में गड़ी वस्तु देश कूप, मृतक, मातृ-धन माता स्थान कार्य-परिणाम, परिवर्तन, समीपस्थ का प्रेम, यात्रा, कुक्षि, गर्भित वध राजकीय-कैदी मृत-मनुष्य का धन ।

५ = पुत्र —गर्भ, वस्तु-लाभ गुप्त लिंग उदर, आमन्त्र से भेजे हुए व्यक्ति का विचार, आगमन, स्नेह, कुशल-पत्र लौकिक-कार्य ईश्वर-भक्ति, बुद्धि, विद्या अचानक-लाभ दत्तक, मित्र-वार्ता वस्त्र, मंगल-कार्य प्रसन्नता आश्चर्य के कार्य शुभाशुभ, शिल्प, पितृधन मादक-पदार्थ आप्त-मिलन, उपोग-दिशा व्यापार का यश मातृ-धन पुत्र धन राजा द्वारा लाभ ।

६ = रिपु—रोग मामा मौसी गुप्तशत्रु, दाँत सेवक मित्र का मित्र मृत्यु, कार्य-विराम दोष, शोक, चतुष्पद (पश्वादि) क्षय याचना सन्ताप भारी-श्रम, शत्रु उदर नाभि पैर ।

७ = स्त्री —स्त्री, पति शत्रुता स्वीकृति, नौकरी यातायात-व्यापार मार्ग साझा चोर विवाद दो जन का उद्यम आगमन अन्यत्र स्थित धन विक्रय मैथुन परदेश विवाह नष्ट-वस्तु मुकदमा प्रीति, प्रत्यक्ष-शत्रु, स्थानान्तर ट्रान्सफर (परिवर्तन) वैद्यक, गुप्तांग ।

८ = आयु—गलान्तर-क्षय अपयश फौजदारी ससुराल की स्थिति स्त्री-सम्बन्ध से या विवाह से धन-लाभ अकस्मात्-लाभ, मृत्यु-पत्र (वसीयतनामा) से धन लाभ सट्टा लाटरी झूठी आशा का भ्रम भय मृत्यु शोक चिन्ता, दुष्ट-स्थिति ऋण देने का क्लेश दुर्नीति साझा नष्ट-धन पर्वत, कोट आलस्य, मृत्युप्रदेश श्मशान मृत्युकारक आलस्य दरिद्रता झूठी बात इन्द्रिय-सुख, पैर ।

९ = धर्म —व्यभिचार सदाचार, तीर्थ-यात्रा दूर-यात्रा, परोपकारी-यात्रा मंगल-यात्रा भाग्य दान स्वप्न, विद्या अनुष्ठान जप नाम समाधि पति-धर्म देव-पूजा स्थापित-धन, संचित धन विश्वास सेवा धर्मार्थ सन्यास कंपा उदय सत्कर्म यश गुरु पिता समाज-सेवा, सार्वजनिक-कार्य, राजकीय संस्था से सम्बन्ध मुद्रण-कला ।

१० = कर्म—व्यापार, सन्यास, ग्रेजुएट होना, महाविद्यालय की परीक्षा, परीक्षोत्तीर्णता, शास्त्रार्थ में विजय, नौकरी, खेती, अधिकार, योगी, राजदरबार, सामाजिक, सम्मान, पिता, प्रतिष्ठा, जायदाद, वैभव, अधिक शक्ति वाला शत्रु, चोरी का धन, ज्येष्ठ-बन्धु की मृत्यु, बल-तन्त्र, सेना, उद्यम, औषधि, गुरु, माता, मेघ, मन्त्र-यन्त्र, जाति-मुखिया, वैद्य, पैर।

११ = लाभ—पिंडुली, मित्र, बुद्धि, मन्त्री, सात्विक-स्वभाव, लाभ, सिद्धि, आशा, भाग्य, दीवान, जज, न्यायकर्ता, ईश्वर, सत्य, शान्ति, नियम-धारण, बन्धु, नवीन-योजना, पिता का धन, माता की मृत्यु, पुत्र का शत्रु।

१२ = व्यय—खर्च, शत्रु-पीडा, सकट, दूरयात्रा, वन-पर्वत-भ्रमण, पशु, उद्योग-नाश, ऋण, खून, आत्महत्या, पूर्वार्जित-सम्पत्ति, गुप्तशत्रु, जेलखाना, बन्धन, मुक्ति, व्याधि दूर होना, बैल आदि पशु का बन्धन, चाचा, राजमान, सुख-दुःख, परिणाम-फल, चरण, नेत्र।

त्रित्रिकोण-संज्ञा

लग्न से नवम पर्यन्त भावों को त्रित्रिकोण कहते हैं।

वर्गोत्तम-संज्ञा

जो ग्रह या भाव, जिस राशि का हो, यदि उसी राशि के नवांश में आ जावे, तो वर्गोत्तम संज्ञा होती है। परन्तु नीच-राशिस्थ-ग्रह, नीच-राशि के नवांश में आ जावे, तो, वर्गोत्तमी न होकर, परम-नीचांश वाला कहा जाता है। इसी प्रकार उच्च राशि वाला ग्रह, उच्च राशि के नवांश में आ जावे, तो वर्गोत्तमी न होकर, परम-उच्चांश वाला कहा जाता है।

भावों की संज्ञाएँ

१ = लग्न—आद्य, केन्द्र, कण्टक, चतुष्टय, गुप्त-त्रिकोण।
२ = धन—पणफर।
३ = भ्रातृ—आपोक्लिम, उपचय।
४ = सुख—केन्द्र, चतुरस्र, चतुष्टय, कण्टक, पाताल, विद्या।
५ = पुत्र—त्रिकोण, पणफर।
६ = रिपु—त्रिक, आपोक्लिम, उपचय।
७ = स्त्री—केन्द्र, कण्टक, चतुष्टय।
८ = आयु—चतुरस्र, त्रिक, पणफर।
९ = धर्म—त्रिकोण, आपोक्लिम।
१० = कर्म—केन्द्र, कण्टक, चतुष्टय, मध्य, उपचय।
११ = लाभ—पणफर, उपचय।
१२ = व्यय—आपोक्लिम।

ग्रहों का शुभाशुभत्व

शुभ—पूर्ण-चन्द्र, शुभ-युक्त बुध और गुरु तथा शुक्र।
अशुभ—सूर्य, क्षीण-चन्द्र, मगल, पापयुक्त-बुध, शनि, राहु, केतु।
क्रूर—सूर्य, राहु
पाप—मंगल, शनि, केतु।

चन्द्र का शुभादि

शुक्ल एकादशी से कृष्ण-पचमी तक पूर्ण-चन्द्र, कृष्ण षष्ठी से कृष्ण दशमी तक तथा शुक्ल षष्ठी से शुक्ल दशमी तक मध्यम-चन्द्र, कृष्ण एकादशी से शुक्ल पचमी तक क्षीण-चन्द्र रहता है। तात्पर्य यह, कि—

शुक्ल एकादशी से कृष्ण पचमी तक	=	पूर्ण-चन्द्र
कृष्ण एकादशी से शुक्ल पचमी तक	=	क्षीण-चन्द्र
शेष समय में	=	मध्यम-चन्द्र
शुभ-दृष्ट चन्द्रमा	=	शुभ
अशुभ-दृष्ट चन्द्रमा	=	अशुभ

द्वितीय-वर्तिका = ज्योतिष का धन

———

तृतीय-वर्तिका

कुण्डली-रचना

कुण्डली कैसे बने अर्थात् किस प्रकार से गणित किया जाय जिससे शुद्ध और सूक्ष्म तथा निश्चित फल घटित करने वाली कुण्डली (जन्म-पत्रिका) बन सके ?

शुद्ध कुण्डली बनाने के लिए, प्रथम शुद्ध इष्टकाल का बनाना परमावश्यक है। शुद्ध इष्टकाल तभी बन सकता है जब कि, आपको किसी शुद्ध घड़ी-द्वारा जन्म-समय बताया गया हो, फिर स्थानीय दिनमान स्थानीय सूर्योदय-सूर्यास्त और स्थानीय जन्म-समय बनाया जाय, तब कहीं, शुद्ध इष्टकाल बन सकता है तथा जब स्थानीय शुद्ध इष्टकाल द्वारा, स्थानीय अक्षांश की लग्नसारणी से लग्न बनायी जाय, तब शुद्ध लग्न बनेगी। इतने कार्यों के करने के लिए, जिस विधि की आवश्यकता पड़ती है, उसे हम क्रमशः लिखना प्रारम्भ करते हैं।

यहाँ से यदि कोई विधि शीघ्रता से समझ में न आवे, तो विशेष चिन्ता की बात नहीं है क्योंकि यह-स्पष्ट तक आते-आते, सभी बातें स्पष्ट समझ में आ जाती हैं।

अयनांश-साधन

जिस वर्ष का अयनांश बनाना हो, उस वर्ष के शाके में से १८० घटाकर शेष गतवर्ष को दो स्थानों में रखें प्रथम स्थान के शेष में ७० से भाग दें तो लब्धि में अंश। इसके शेष में ६ का गुणा कर पुनः ७० से भाग दें, तो लब्धि में कला। इसके शेष में ६ का गुणा कर पुनः ७० से भाग दें तो लब्धि में विकला प्राप्त होंगी। ये प्रथम शेष के अंशादि (लब्धि) होते हैं। द्वितीय स्थान में रखे हुए शेष (शाके में से १८० घटाकर जो शेष आवे हो) गतवर्ष में ५ से भाग दें तो लब्धि में कला। इसके शेष में ६ का गुणा कर पुनः ५ से भाग दें तो लब्धि में विकला प्राप्त होंगी। ये द्वितीय शेष के कलादि (लब्धि) होते हैं। प्रथम लब्धि की अंशादि में से द्वितीय लब्धि के कलादि घटाकर शेष में २२ अंश, ८ कला, ११ विकला जोड़ दें तो अयनांश बन जावेगा।

यथा—

शाके १८४२ में (जन्म) से	४२ + ७० = लब्धि अंशादि ०।३६। में से
१८०० घटाया	४२ + ५ = " कलादि ०।८ घटाया
शेष = ४२ गतवर्ष	।३६।१
	२२। ८।११
	शाके १८४२ का अयनांश २२।४३।४२ हुआ।

इसीको शाके १८ से लगभग २५ वर्ष के अयनांश बनाकर आगे चक्र भाग में दिखाया गया है जिससे उसका भी गणित न करना पड़े। एक वर्ष में अयनांश की गति ५० विकला के लगभग होती है। वर्ष में १२ मास होते हैं। अतएव १२ मास में ५० विकला अयनांश बढ़ता है तो एक मास में ४ विकला १० प्रतिविकला अयनांश की गति होगी। इसी प्रकार दो मास में ८ विकला २० प्रतिविकला गति होगी। इस प्रकार से शाके १८४२ के २।१ सूर्य पर अयनांश कितना होगा ?

शाके १८४२ का अयनांश	२२।४३।४२ म	
६।० (दो मास की गति)	८।२	
शाके १८४२।२।० पर अयनांश	२२।४३।५०।२	हुआ।

आगे जो उदाहरण, हम दिखाना चाहते हैं; उसमें २२।४३।५० ही अयनांश लेकर कार्य किया गया है। इसमें कोई त्रुटि न होगी। चाहे शके १८४२ के २२।४३।४३ पर से ही आप कार्य करें, तो भी कोई त्रुटि न आने पायेगी।

विवेचना

शके १८७५ में, मैं यह ग्रन्थ लिख रहा हूँ, अतएव इस वर्ष का अयनांश विभिन्न मतों से क्या होगा ?

ग्रह-लाघव	२३। ५१। ०	
दृग्तुल्यायनांश	२३। ८ । ६	[संशोधित-मकरन्द]
विश्व-पंचांग	२३। ६ । ३६	[हिन्दू-विश्वविद्यालय-सिद्ध]
हृषीकेश-पंचांग	२३। ३ । ४८	[चैत्र-पक्षीय]
सिद्धान्त-सम्राट्	२२। ४८। ५१	
सूर्य-सिद्धान्त या मकरन्द	२१। ४८। ३६	[त्रिंशत्कृत्यो युगेत्यादिना]
ॐ केतकी-अयनांश	२३। ११। २०	[हमारा भी यही मत है]

इनमें सबसे सुलभ एवं शुद्ध केतकी-अयनांश ही व्यवहार-योग्य है। दृग्तुल्य या वेध-सिद्ध बनाने में सर्व साधारण को अत्यन्त कठिनता है, किन्तु इन दोनों के समीप, केतकी का ही अयनांश आ रहा है। संवत् २०१० के हृषीकेश-पंचांग में लग्नसारणी के पास, केतकी-अयनांश बनाने की विधि भी दिखायी गयी है। अयनांश का चक्र आठ देने के अतिरिक्त, आगे-पीछे वर्षों के लिए, सोदाहरण विधि भी पृष्ठ २४ में लिख दी गयी है।

आगे पृष्ठ ३३ से (अक्षांश-देशान्तर-चक्र, अयनांश-चक्र, वेलान्तर-चक्र, पलभा-चरखण्डा लग्नमान चक्र, दशमसारणी, ८ अक्षांश से ३६ अक्षांश तक की लग्नसारणियाँ और उनके उपकोष्टक दिये गये हैं।

सायनार्क-साधन

अभीष्ट-काल के सूर्य में, अभीष्ट शके का अयनांश जोड़ देने से सायनार्क होता है। परन्तु ध्यान रहे कि, दिनमान बनाने में प्रातः सायनार्क और लग्न बनाने में तात्कालिक सायनार्क आवश्यक रहेगा। यथा—

दिनमान बनाने के लिए प्रातः सूर्य १। २६। ५१। २ है, इसमें
शके १८४२। २। ० का अयनांश २२। ४३। ५० जोड़ा, तो—
प्रातः सायनार्क = २। २२। ३४। ५२ हुआ

दिनमान-साधन

प्रातः सायनार्क में ६ राशि जोड़ने से, सायंकाल का सायनार्क होता है। अपने जन्म-स्थान के अक्षांश की लग्न-सारणी के द्वारा सायं सायनार्क के अंक में से प्रातः सायनार्क के अंक घटाओ, तो दिनमान बन जाता है। यथा—

जन्म-स्थान (जबलपुर) के अक्षांश २३। १० (२३) की लग्न-सारणी से—
प्रातः सायनार्क + ६ राशि = ८। २२। ३४। ५२ सायं सायनार्क के अंक ४५। २५। २५ में से
२। २२। ३४। ५२ प्रातः सायनार्क के अंक ११। ५५। ३६ घटाया
जबलपुर का दिनमान = ३३। २६। ४६

सूर्योदय-सूर्यास्त-साधन

दिनमान में ५ से भाग दे, तो लब्धि के घण्टा-मिनट में सूर्यास्त होता है। सूर्यास्त को १२ घण्टे में से घटाने पर, शेष, सूर्योदय के घण्टा-मिनट होते हैं। यथा—

दिनमान = ३३। २६। ४६ ÷ ५ = ६। ४१। ५७। १२ घण्टादि में सूर्यास्त। १२ घण्टे में से
सूर्यास्त = ६। ४१। ५७। १२ को घटाया तो, ५। १८। २। ४८ घण्टादि में सूर्योदय हुआ।

चर-पल, रेखान्तर और मिश्रमान-साधन की आवश्यकता इस ग्रन्थ में तो नहीं है; परन्तु इसमें लिखित लग्न-सारणियों से क्या-क्या उपयोग हो सकता है। यहाँ, उसे दिखाया जा रहा है।

चरपल-साधन

दिनमान को आधा करो। यह अर्धांश, १५ घटी से जितना अधिक या कम होगा; वही चर (घटी-पल) होता है। यदि अर्धांश, १५ घटी से कम हो तो दक्षिण (ऋण-संज्ञक) चर होता है और यदि अधिक हो, तो उत्तर (धन-संज्ञक) चर होता है। यथा—

दिनमान = ३३।२६।४६ ÷ २ = अर्धांश = १६।४४।५३ में से
१५। ०। ० घटी को घटाया
१५ घटी से अधिक होने से (चर-घट्यादि) उत्तर (धन-संज्ञक) १।४४।५३ हुए।

रेखान्तर

उज्जैन देशान्तर से अधिक देशान्तर (स्थल) में धन एवं कम देशान्तर में ऋण 'रेखान्तर' होता है। यथा—(देशान्तर अक्षांश के द्वारा)

	जबलपुर का	कानपुर का	काशी का	
देशान्तर	७९।५९	८०।१९	८३।०	
„ उज्जैन का	७५।५०	७५।५०	७५।५०	(वेधशाला-स्थल)
रेखान्तर	+४।९	+४।२९	+७।१०	(अंशादि)

रेखान्तर अंशादि में ४ का गुणा करने पर मिनिटादि अथवा अंशादि में १० का गुणा करने पर पलादि 'रेखान्तर' होता है। अतएव जबलपुर का १६।३६ मिनिटादि अथवा ४१।३० पलादि 'रेखान्तर' धन (उज्जैन से जबलपुर का देशान्तर अधिक होने से) हुआ। इसी प्रकार कानपुर का १७।५६ मिनिटादि अथवा ४४।५० पलादि एवं काशी का २८।४० मिनिटादि अथवा घट्यादि १।११।४० रेखान्तर धन हुआ।

मिश्रमान

स्थानीय दिनमान का आधा करने पर दिनार्ध होता है। दिनार्ध में ३ घटी जोड़ने से मध्यम मिश्रमान होता है। मध्यम मिश्रमान में 'रेखान्तर संस्कार (धन या ऋण) करने से स्पष्ट-मिश्रमान होता है। यथा—

दिनमान ३३।२६।४६ दिनार्ध १६।४४।५३ + ३ घटी + रेखान्तर जबलपुर का ४१।३ घट्यादि = ४७।२६।२३ = मिश्रमान।

नोट—

विश्व-पंचांग में छपे हुए उज्जैन का रेखान्तर घट्यादि ३।६ है, जो कि १।११।४ होना चाहिए। जैसा कि, अन्य स्थानों में (वेधविनोद में ७२ पल काशी का देशान्तर) लिखा है। हो सकता है कि, छापे की भूल हो। अस्तु—

काशी का ता० १५ जून १९५१ को विश्व-पंचांग में दिनार्ध १६।४७।२ + ३ घटी + रेखान्तर (३।६) = ४८।६।१२ = मिश्रमान काशी का।

परन्तु शुद्ध मिश्रमान ४८।७।१ ही होता है। इसी प्रकार विश्व-पंचांग में जबलपुर का देशान्तर १०।१ होने वाला १।२ छपा है। यह सब प्रूफ-शोधन की भूलें हो सकती हैं।

मेरी बनायी हुई लग्नसारणियों से शुद्ध दिनमान, चरपल मिश्रमान सूर्योदय सूर्यास्त तथा लग्न-साधन आदि कार्य होते हैं।

देशान्तर

सारे भूभाग के दो खण्ड किये गये हैं, जिनका नाम है, पूर्वी-गोलार्ध और पश्चिमी-गोलार्ध । लन्दन-स्थित, ग्रीनविच-वेधशाला, शून्य देशान्तर पर मानकर, सभी देशों के अन्तर निश्चित किये गये हैं । आकाश की भाँति पूरे भूभाग को भी ३६० खण्डों में बाँटा गया है। इस प्रकार शून्य से १८० अंश तक पूर्वी-गोलार्ध तथा १८० से शून्य अश तक पश्चिमी-गोलार्ध है । कुछ अन्य देशों के साथ भारत भी पूर्वी-गोलार्ध के ६८ से ९६ अश तक बसा हुआ है । अस्तु ३६० × ४ = १४४० मिनट = २४ घण्टा में पृथ्वी का भ्रमण, सूर्य के चारों ओर होता है । (ध्यान रहे कि, सूर्य की भी एक गति है, जिसे, अयनांश-द्वारा समीकरण करते हैं) यही २४ घण्टा, अर्थात् एक अश में ४ मिनट या १० पल के अनुपात (हिसाब) से, पृथ्वी पर देशान्तर होता है । अपने भारत में किस स्थान का, क्या देशान्तर है ? इसे, आगे चक्र सात में दिखाया गया है ।

स्टैण्डर्ड-टाइम

वर्तमान काल में, जिस समय (घड़ी के टाइम) के आधार पर कार्य होते हैं, वह सब स्टैण्डर्ड टाइम (किसी एक स्थान-द्वारा सम्पादित) होता है । आपका ज्योतिष-कार्य केवल लोकल (स्थानीय) टाइम पर अवलम्बित है । अत स्टैण्डर्ड-टाइम से लोकल-टाइम बनाना भी आवश्यक है ।

स्टैण्डर्ड-टाइम (घडी के टाइम) का देशान्तर है ८२।३० पूर्वी-गोलार्ध । जो कि भारत के सोनहाट (पूर्वी-राज्य) नामक स्थान के देशान्तर पर है, तथा गोलगुण्डा (मद्रास) के देशान्तर (८२।३१) के लगभग है । उत्तरप्रदेश के जिला मिर्जापुर के पश्चिम विन्ध्याचल रेलवे स्टेशन (८२।३०) के समीप है । स्टैण्डर्ड-टाइम (बृहत्पचाग-फलादर्श के अनुसार) ता १ जुलाई सन् १९०५ के पहिले समय में, मद्रास (८०।१७ देशान्तर) के आधार पर होता था । फिर ता १ जुलाई १९०५ से ३१।८।१९४२ तक ८२।३० देशान्तर के आधार पर हुआ था । फिर १।९।१९४२ से १४।१०।१९४५ तक ९७।३० देशान्तर करैन्नी (वर्मा) सालवीन नदी (वर्मा) पर से किया जाने लगा था । जिसे देखने वाले अभी अधिकाश व्यक्ति जीवित हैं । ९७।३० − ८२।३० = १५ अश = १ घण्टा टाइम बढा दिया गया था । ता १५।१०।१९४५ से पुन ८२।३० देशान्तर के आधार पर टाइम चल रहा है । भारत के रेलवे स्टेशन एवं तारघर की घडियाँ मिलाने के लिए, प्रत्येक दिन शाम को चार बजे ८२।३० देशान्तर के आधार पर 'कलकत्ता टेलीग्राफ ऑफिस' से सूचना आती है। घडी के टाइम लेने के अतिरिक्त, किसी अन्य प्रकार से टाइम लेना, सरल नहीं है । एक समय ऐसा था, जब कि लका, उज्जैन से टाइम लिया जाता था, क्योंकि इसीके आधार पर आजकल अनेक ज्योतिष-ग्रन्थ भी बने हुए मिलते हैं। आज भी लकोदय (राशिमान) द्वारा लग्न-साधन एव उज्जैन-द्वारा पचाग बनाना पडता है । बिना स्थानीय समय के जन्म कुण्डली आदि का कार्य शुद्ध नहीं हो सकता ।

	उज्जैन	जबलपुर	कानपुर	काशी	
(ग्रीनविच से पूर्व देशान्तर)	७५।५०	७९।५९	८०।१९	८३।०	
	× ४	× ४	× ४	× ४	
	+३०३।२०	+३१९।५६	+३२१।१६	३३२।०	मिनटादि
	+५।३।२०	+५।१९।५६	+५।२१।१६	+५।३२।०	घण्टादि

काशी से पश्चिम				
	५।३२।०	५।३२।०	५।३२।०	देशान्तर
	५।२१।१६ (कानपुर)	५।१९।५६ (जबलपुर)	५।३।२० (उज्जैन)	”
	—०।१०।४४	—०।१२।०४	—०।२८।४० घण्टादि	”

नोट—

पूर्व (अधिक) में धन, पश्चिम (कम) में ऋण होता है। चाहे उज्जैन से या काशी से या स्टैण्डर्ड टाइम से या जबलपुर से या कानपुर से या कहीं से बनाइये, देशान्तर एक सा निकलेगा।

लोकल-टाइम (स्थानीय-समय) की आवश्यकता

लोकल (स्थानीय) टाइम बनाने की आवश्यकता इसलिये है कि, कुण्डली में "श्री सूर्योदयादिष्टम्" लिखना पड़ता है, अर्थात् 'सूर्योदयात इष्टम्" के अर्थ हो हैं कि, 'स्थानीय सूर्योदय से इष्ट-काल। पर सूर्योदय बनारस आदि पंचांगों का, जन्म-समय स्टैण्डर्ड तथा बालक का जन्म देश अन्यत्र का होने से—"इष्टम्" न बनकर 'अष्टम्" बनता है। इन्हीं कारणों से वर्तमान में ९८ प्रतिशत कुण्डलियाँ अशुद्ध बन जाती हैं।

ए. एम और पी एम (भारत में)

इसे भी समझना सबके लिए आवश्यक है जिसमें ज्योतिषी को विरोध। जो भी व्यक्ति टाइम से कोई गणित करना चाहता हो, उसे चाहिए कि, १२ बजे रात से १२ बजे दिन तक ए. एम तथा १२ बजे दिन से १२ बजे रात तक पी एम शब्द का उपयोग स्टैण्डर्ड-टाइम लिखने के आगे कर दे। यथा—टाइम १।५० ए. एम या टाइम ११।२० पी एम। जिसके अर्थ १०।५ बजे दिन और ११।२ बजे रात होता है। क्योंकि भारत में तारीख का आरम्भ आधीरात से किया जाता है।

यथा, किसी स्थान में बुधवार को ५।५ पर सूर्य निकलता है और कोई व्यक्ति कुण्डली बनाने के लिए, ज्योतिषी से कहता है कि, बुधवार को ५।४५ प्रातः की लग्न बनाओ। किन्तु ५।४५ पर बुधवार ही नहीं है। बुधवार तो ५।५ से (सूर्योदय से) आरम्भ होगा और वह व्यक्ति ५।५० से पूर्व लगभग आधा घण्टा से उपेक्षा पाकर बुधवार ५।४५ पर भी समझ रहा है। अतः मंगलवार ५।४५ रात्रि लिखने से ठीक बोध होगा। अथवा यदि २० जून मंगलवार है और २१ जून बुधवार है, तो मंगलवार २१ जून ५।४५ ए. एम लिखना ही ठीक होगा।

उदाहरण स्थानीय-समय (लोकल-टाइम)

स्टैण्डर्ड-टाइम-देशान्तर (८२।३) जन्म-स्थानीय (जबलपुर) देशान्तर (७६।५६) का अन्तर = २।११ × ४ = १ मिनट, ४ सेकण्ड = देशान्तर। अथवा—

स्टैण्डर्ड-टाइम-देशान्तर ८२।३ म से [अधिक से]
जन्म-स्थानीय (जबलपुर) देशान्तर <u>७६।५६</u> को घटाया तब [कम होन पर ऋण]
ऋण देशान्तर २।११ = शेष अंशादि × ४ = १।४ मिनटादि
किसी का जन्म-समय ५।१० (पी एम है) इसमें से
स्थानीय देशान्तर − <u>।१।४</u> घटाया (क्योंकि स्टैण्डर्ड से जन्म स्थान पश्चिम है)
(मीन-लोकल-टाइम) ५। १।४६ मध्यम-स्थानीय-समय (पी एम या सायम्)

वेलान्तर (उदयान्तर या काल-समीकरण)

पृथ्वी की गति, सूर्यगति के सामञ्जस्य से पूरे २४ घण्टा की न होकर कुछ न्यूनाधिक होती है। यह प्रतिदिन बदलता रहता है। इसे वेलान्तर कहते हैं। मध्यम-मध्याह्न और स्पष्ट-मध्याह्न का अन्तर। आगे तीन प्रकार के वेलान्तर-चक्र ६ दिये गये हैं। एक तो चक्र ६ (क) सायनार्क-द्वारा और दूसरा चक्र ६ (ख) तारीख-द्वारा। दोनों ही के द्वारा वेलान्तर जानने में सरलता है। परन्तु कभी-कभी एक

पल=२४ सेकण्ड का अन्तर (२८-२६ दिन की फरवरी के कारण) पड़ता है। प्राय एक-सा मिलता है। अंग्रेजी पचागों के आधार पर मिनट-सेकण्ड वाला तीसरा वेलान्तर चक्र ६ (ग) दिया गया है। जो कि वेध-द्वारा निश्चित किया गया है। इसके चक्र भी आगे दिये गये हैं। यथा—

प्रात सायनार्क २।२२।३४।५२ = + १ पल वेलान्तर (प्रथम चक्र ६ क द्वारा)
ता १४ जून १६२० को = + ० पल " (द्वितीय चक्र ६ ख द्वारा)
" " " " " = +०।७ मिनटादि " (तृतीय चक्र ६ ग द्वारा)

स्टैण्डर्ड-टाइम से लोकल-टाइम बनाने में वेलान्तर-सस्कार को यथा-वश्य धन-ऋण (जैसा अंकित हो) कर देना चाहिए, तो, स्पष्ट-स्थानीय-समय होता है। यथा—

मध्यम-स्थानीय-समय ५।१।५६
वेलान्तर +०।०।२४ (सेकण्ड=१ पल)
स्पष्ट-स्थानीय-समय ५।२।२० हुआ

इष्टकाल-साधन

स्पष्ट-स्थानीय-समय में स्थानीय-सूर्योदय घटाइये, शेप घण्टा-मिनट के रूप वाला इष्टकाल (सेड्रियल-टाइम) होता है। इसमे यदि ढाई का गुणा कर दें तो, घटी-पल-रूप में इष्टकाल हो जावेगा। यदि जन्म-समय मे सूर्योदय न घट सके, तो दोपहर (मध्यान्ह) के बाद वाले समय मे १२ घण्टा तथा आधीरात के बाद वाले समय में २४ घण्टा जोडकर, सूर्योदय घटाया जावे।

यथा— १२ घण्टा
+
स्पष्ट-स्थानीय-समय ५।२ ।२०।० पी एम (सायकाल)
स्थानीय-सूर्योदय ५।१८।२ ।४८ ए एम (प्रात, जो कि सर्वदा रहेगा)
सूर्योदय से (सेड्रियल-टाइम) ११।४४।१७।१२ इष्टकाल (घण्टा-मिनट वाला)
×२½
"श्री सूर्योदयादिष्टम" २६।२०।४३।०० इष्टकाल (घटी-पल वाला)

एकत्रीकरण

(तृतीय-वर्तिका के प्रारम्भ से किये गये सभी गणित को यहाँ एकत्र किया गया है)

शाके १८४२ ता १४ जून १६२० प्रात सूर्य १।२६।५१।२ अयनाश २२।४३।५० सायनार्क २।२२।३४।५२ दिनमान ३३।२६।४६ सूर्योदय ५।१८।२।४८ चर पल १०४।५३ उत्तर, रेखान्तर +४१।३० स्टैण्डर्ड-टाइम ५।१२ पी एम। अक्षाश २३।१० देशान्तर ७६।५६ (-१०।४ मिनटादि) वेलान्तर +२४ सेकण्ड=१ पल, मध्यम-स्थानीय-समय ५।१।५६ स्पष्ट-स्थानीय-समय ५।२।२० सेड्रियल टाइम ११।४४।१७।१२ इष्टकाल २६।२०।४३ जन्म-स्थान जबलपुर।

लग्न-साधन

तात्कालिक सायनार्क के अनुपात से, अपने जन्म-स्थान के अक्षाश वाली लग्न-सारणी-द्वारा अक लेकर, इष्टकाल मे जोड दे, इसी योगफल अंक के समान, राशि-अश, सायन-लग्न के होते हैं। सायन-लग्न मे अयनाश घटा देने पर, लग्न-स्पष्ट हो जाती है। कला-विकला का ज्ञान अनुपात (त्रैराशिक या गोमूत्रिका) द्वारा होता है।

भारत के पचागों में निरयण लग्न-साधन तथा विदेशी पचांगों मे सायन लग्न-साधन करते हैं। हमारे भारतीय-फलित-ग्रन्थ, निरयण लग्न-मान में ही उपयोग किये जा सकते हैं, अतएव अयनाश-रहित (निरयण) लग्न-स्पष्ट का उपयोग करना चाहिए।

कलादि-अनुपात

कला-विकला किसी दो अंशों के मध्य की वस्तु होती है। यथा—मान सायनार्क ११२९१४५१ है, तो १४५१ कलादि, मिथुन राशि के २२ अंश और २३ अंश के मध्य की हैं। अत उन दोनों अंशों की गति में, इच्छित अनुपात वाली कला, विकला का गुणा करके ६० से भाग देने पर लब्धि में अनुपात मिल जावेगा। यथा—२६ अक्षांश पर तात्कालिक सायनार्क २।२३।२।४७ के द्वारा अंक, लग्न-सारणी से निकालना है, तो—

२।२४ का अंक १२।१० ० (२६ अक्षांश की लग्नसारणी द्वारा) इसमें से

२।२३ का अंक ११।५६।५० („ „) को घटाया, तो

०।१०।१० शेष, गति = एक अंश की

अब १ अंश = ६० कला में १०।१० गति है, तो २ कला ४७ विकला में कितनी गति होगी?

$$\frac{(\text{फल})\ १०।१० \times २।४७\ (\text{इच्छा})}{६०\ \ (\text{प्रमाण})}\ \Big\}\ \text{त्रैराशिक गणित कीजिए}$$

अथवा—

राश्यादि २।२३ = ११।५६।५०

कलादि २।४७ = । ०।२८

२।२३।२।४७ का १२। ।१८ (लग्नसारणी का अंक) २६ अक्षांश पर

इष्टकाल २६।२ ।४३ जोड़ा

४१।२१। १ योगफल समान लग्न-

सारणी के ८ पर ४१।१०। ० हैं (अत सायन लग्न ८ हुई)

०।११। १ शेष इतने पलादि में कितनी कलादि होगी?

जबकि, एक अंश की गति ११।१८ पलादि है तो—

$$\frac{११।१ \times ६ = \text{अंश } १}{११।१८} = \text{व्यस्त त्रैराशिक-द्वारा} = \frac{६६१ \times ६}{६७८} = \frac{३९६६}{६७८}$$

गोमूत्रिका द्वारा

	१	१०	गतिफल
२	२०	२०	
४७		४७०	४७०
	२ ८	४६ ७	४७० +६०
योग	२८	१७	५०

= पलादि ०।२८।१७।५ = २८

विपल (व्यवहार-साम्य)

६७८) ३९६६ (५८ कला
३३९०
५७६
४५२४
३३६×६
६७८) २०१६ (२६ विकला
१३५६
६६
३१०२
४८८ शेष (भाजक के अर्धभाग से अधिक होने पर लब्धि के २६ विकला में एक जोड़कर ३० विकला रखा गया है)

अब ४१।२१।१ सारणी अंक द्वारा सायन लग्न ८ ।५८।३ में से

अयनांश २२।४३।५ घटाया

स्पष्ट (निरयण) लग्न ७ ८।१४।४० (अक्षांश २६ पर)

यदि आप ८ ।५८।३ के स्थान में ८।१ लग्न भी मान लेते, तो प्रायः कोई त्रुटि न रहेगी। हाँ विशेष अन्तर नहीं होना चाहिए।

जबलपुर अक्षांश २३।१० है। अतएव २४ अक्षांश की लग्न-सारणी से इसी भाँति लग्नसाधन करके दोनों लग्नों का अन्तर निकालो उस अन्तर में २३।१ के १ मात्र का गुणा करो, गुणनफल में ६ से भाग दो, लब्धि के कलादि, सायनलग्न वा निरयण लग्न में घटाओ, क्योंकि आगे अक्षांश में लग्न के अंक कम ही होते जाते हैं। इस प्रकार २३।१ अक्षांश पर लग्न-स्पष्ट हो जावेगी। सर्वत्र अनुपात ही करना चाहिए। यथा—

२४ अक्षांश की लग्नसारणी से तात्कालिक सायनार्क २।२३।२।४७ का अनुपात ११।५५।३२
इष्टकाल २६।२०।४३

२४ अक्षांश पर सायनलग्न ८।०।१०।४० लगभग · · (अक पर) = ४१।१६।१५
२३ ,, ,, ,, ,, ८।०।५८।३०
— ४७।५० (ह्रास)

$\frac{४७।५० \times १०}{६०}$ = ७।५८ ऋण

२३° अक्षांश निरयण-लग्न	७।८।१४।४०
१०′ की गति ऋण	७।५८
२३।१० पर स्पष्ट-लग्न	७।८। ६ ।४२

यदि आगे अक्षांश की लग्न-सारणी से काम न लो, तो भी कोई विशेष त्रुटि न होगी। हाँ, अक्षांश की कलाएँ यदि ३०-३५ से अधिक हो तो, आगे अक्षांश की ही लग्न-सारणी से लग्न-स्पष्ट करो।

लग्न-सारणी का परिचय

कोई भी लग्न-सारणी देखिये, वाम भाग की (ऊपर से नीचे की ओर) प्रथम पक्ति में राशि, द्वितीय पक्ति में लग्नमान-पल और उपकोष्टक-खण्ड-संख्या लिखी गयी है। यथा—२३ अक्षांश की लग्नसारणी में मिथुन और मकर के नीचे ३०५।६५ है, तो लग्नमान ३०५ पल तथा उपकोष्टक-खण्ड ६५ हैं। तृतीय पक्ति से नीचे तक, लग्न-सारणी के अंक हैं। ऊपर प्रथम पक्ति में (बायें से दायें), शून्य से २६ अंश तक लिखे हुए हैं। यथा—सूर्य २।२३ (दो राशि तेइस अंश अर्थात मिथुन के २३ अंश) पर ११।५६।५० (२३ अक्षांश में) अंक हैं। इसी प्रकार सारणी के ४३।३ अक पर लग्न के राश्यादि ८।१० होते हैं। तात्पर्य यह कि, राशि के सामने (दाहिने) और अंश के नीचे, एक कोष्टक वाला अक या एक कोष्टक के अक से बाँयें राशि तथा ऊपर के अंश जानना, उपयोगी हैं।

विशेष—इन सारणियों में किसी अयनांश का उपयोग नहीं है, अत कभी दूषित होने वाली नहीं हैं। सर्वदा ठीक लग्नादि स्पष्ट करेंगी। आप सायनार्क बनाते समय जिस सिद्धान्त का अयनांश उपयोग करेंगे, उसी सिद्धान्त-विधि से लग्न-स्पष्ट हो जावेगी। हमने प्रत्येक सिद्धान्त से अयनांश बनाने की विधि, यहाँ इसलिए नहीं दी, जिससे शुद्ध-कार्य-कर्ता, भ्रम में न पड जावे। हाँ, आगे चलकर सभी प्रकार के अयनांश-साधन लिखे गये हैं।

उपकोष्टक का उपयोग

देखिये उपकोष्टक खण्ड ६५। ऊपर लग्न-पल और नीचे कला-विकला हैं।

जब कलादि ५।५४।६ में १ पल
तब ,, २।५७।३ में ½ पल = ·· ·· ३० विपल
इसलिए ,, २।४७।० में

(तब-इसलिए) शेष १०।३ में लगभग = −२ विपल (घटाया)

कलादि अनुपात के नीचे गोमूत्रिका-द्वारा यही अक निकला था = २८ विपल (पृष्ठ ३० में)

(२३ अक्षांश से) जब हमें २।२३ पर लग्नांक ११।५६।५० मिला, इसमें
२८ वि जोडा गया, तो—

सायनार्क २।२३।२।४७ के अनुपात पर =१२। ० ।१८ (देखिये पृष्ठ ३० में)

अथवा—

जन्मांक योगफल ४।२।११ पर लग्न रारयादि रखा, तो

८।० पर लग्नांक ४।११०।० है

०।१।१। शेष, पल पर कला बताओ ? ८।० वाले (धनु) उपकोष्टक

खण्ड नं ११ में देखा, तो ११ पल पर ४८।३४।१४ कलादि मिले, तथा—

१ विपल पर ३।२०।२८ जोड़ा गया

४८।३५।३४।२८ कलादि हुए। लग्नांक योगफल ४।२।११ पर लग्न

रारयादि ८।०।४८।३० को स्वल्पान्तर से रखा गया।

ये उपकोष्टक, सूक्ष्मता आवश्यकता एवं सरलता के लिए दिये गये हैं। त्रैराशिक का अच्छा अभ्यास हो जाने पर; ऐसे गणित मौखिक होते जाते हैं।

उदाहरणार्थ चक्र ६

पंचांग का एक पृष्ठ भाग (आवश्यक मात्र)

संवत् १९७७ शाके १८४२ आषाढ़ कृष्ण पक्ष सन् १९२० जुलमास ता १४ को जन्म दिन

[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	चन्द्र	मास-पीय
१	बुध	४४	११	श्ले	३६	५	मा	५१	२	२	धनु ११।५	
२	गुरु	५	७	मू	५४	३१	ध्रु	६०	०	३		मिथुने श
३	शुक्र	५४	४०	पूषा	५१	४६	ध्रु	०	१९	४		
४	शनि	५८	७	उषा	५७	१६	व	१	४८	५	मकर ८।८	श्रवण १
५	रवि	६०	०	श्र	६०		व्या.		९८	६		
५	चंद्र	१	४६	श्र	१	५८	ह	२	८	७	कुम्भ ११।४६	पुनर्वसु
६	मंगल	३	३७	ध	३	३५	वै	२२	९	८		रविश्चमे बुधोदय
७	बुध	४	१७	श	७	३५	सी	५६	४४	९	मीन २३।१८	कामदामणी
८	गुरु	३	१८	पूभा	८	४७	मा	५२	४५	१०		
९	शुक्र	२२	४६	उभा	८	५९	सौ	४८	४	११		
११	शनि	५४	३४	रे.	७	३६	शो	४७	२८	११	मेष ७।३३	कामिनी ११
१२	रवि	४५	२१	अ	५	३	अ	३६	१७	१३		
१३	चंद्र	४४	२१	भ	२२	३३	सु.	११	२३	१४	वृष १६।११	मिथुनेऽर्क मदोप.
१४	मंगल	३८	२	ती	५४	२६	ध.	२२	१४	१५		
३०	बुध	३२	१६	य.	५	२४	स.	१४	४३	१६	मिथुन २९।२४	दर्श १

३ बुध प्रात: कालकी स्पष्टग्रह ११ ०									
सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के	ग्रह
५	१	४	२	३	१	४	६	०	रा
१	२४	२८	२१	२४	२८	१६	२०	२०	अं
४५	२१	२५	१५	४६	११	४०	४५	४५	क.
१२	४	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	४५	वि
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	३	३	३		क्रां
५	[illegible]	[illegible]	६	[illegible]	११	११	११		

गोचर-ग्रह

४ गु
७ चं बु
५ श
३ सू. शु
१ क
६ मं
१२
रा ७
९
११
८
१०

अक्षांश–देशान्तर चक्र ७

[भारत स्टैण्डर्ड टाइम देशान्तर ८२।३०']

स्थान		अक्षांश		देशान्तर	
अकलकोट	(वम्बई)	१७	३१	७६	१५
अकबरपुर	(फैजाबाद, उ प्र)	२६	२६	८२	३३
अकयाब	(वर्मा)	२०	९	९२	२७
अकोला	(म. प्र)	२०	४२	७७	२
अर्कोट	(मद्रास)	१२	५६	७९	२४
अकोट	(म प्र.)	२१	६	७७	६
अकोट	(बम्बई)	१९	३०	७४	०
अकिलेश्वर	(वम्बई)	२१	३८	७३	३
अगुल	(मद्रास)	१५	३०	८०	६
अगुल	(उडीसा)	२०	४५	८५	३
अगरतला	(वंगाल)	२३	५०	९१	२३
अजमेर	(राजपूताना)	२६	२७	७४	४२
अजयगढ़	(म भा)	२४	५३	८०	१३
अञ्जार	(वम्बई)	२३	४	७०	१६
अजण्टा	(हैदराबाद)	२०	३३	७५	४८
अञ्जनगाँव	(ट्रावनकोर)	८	४०	७६	४८
अटमाकुर	(नीलोर)	१४	३७	७९	४०
अटक	(पजाब)	३३	५३	७२	१७
अट्टुर	(मदुरा)	१०	१६	७७	५३
अटुर	(सलेम)	११	३६	७८	३९
अड्डानकी	(मद्रास)	१५	४९	८०	१
अडोनी	(मद्रास)	१५	३८	७७	१६
अण्डमन	(द्वीप)	१२	०	९२	४०
अथगढ	(उडीसा)	२०	३२	८५	४१
अथमल्लिक	(उडीसा)	२०	४५	८४	३०
अथनी, अठनी	(वम्बई)	१६	४४	७५	६
अदीलाबाद	(हैदराबाद)	१९	३७	७८	३०
अनूपशहर	(उ प्र)	२८	२१	७८	२०
अनिरुद्धपुर	(लंका)	८	२२	८०	२३
अनाकपल्ली	(मद्रास)	१७	४१	८३	३
अन्तागढ	(बस्तर, म. प्र)	१९	४०	८१	१५
अनन्तपुर	(मद्रास)	१४	४१	७७	३६
अनागुण्डी	(हैदराबाद)	१५	२१	७६	३३
अनूपगढ़	(बीकानेर)	२९	५	७३	६
अमरपुर	(वर्मा)	२१	५५	९६	४
अमरपुर	(काठियावाड)	२१	४८	६९	५०
अमृतसर	(पंजाब)	३१	३७	७४	४८
अमावाँ, टिकारी	(बिहार)	२५	९	८५	५०
अम्बिकापुर	(उड़ीसा)	२३	१०	८३	१५
अमरावती	(म प्र)	२०	५६	७७	४८
अमेठी	(उ. प्र)	२६	८	८१	५०
अम्बा	(हैदराबाद)	१८	४४	७६	२३
अम्बाला	(पजाब)	३०	२१	७६	५२
अम्बासमुद्रम	(मद्रास)	८	४३	७७	२९
अम्बर	(मद्रास)	१२	५०	७८	४५
अमेट	(राजपूताना)	२५	२०	७३	५९
अम्बर	(राजपूताना)	२६	५९	७५	५३
अमझेरा	(ग्वालियर)	२२	३२	७५	१०
अमीनगाँव	(वगाल)	२६	९	९१	३
अमलेखगंज	(नैपाल)	२७	१५	८५	०
अमरेली	(बडौदा)	२१	३६	७१	१५
अमरोहा	(उ प्र)	२८	५४	७८	३१
अयोध्या	(उ प्र)	२६	४८	८२	१४
अरनटाँगी	(मद्रास)	१०	१०	७९	२
अरकोनम	(मद्रास)	१३	५	७९	४३
अरमोरी, आर्मरी	(म प्र)	२०	२८	८०	२
अरमूर, आर्मर	(हैदराबाद)	१८	४८	७६	१६
अराकान	(वर्मा)	२०	२८	९३	२७
अरनी, अरणी	(मद्रास)	१२	४०	७९	१९
अराकान यामा	(वर्मा)	२०	०	९४	२०
अरूपपुक्कोट्टाई	(मद्रास)	९	३१	७८	८
अलवर	(राजपूताना)	२७	३४	७६	३८
अलीगढ़	(उ प्र)	२७	५४	७८	६
अलीगढ	(राजपूताना)	२५	५८	७६	७
अलीबाग	(बम्बई)	१८	३९	७२	५५
अलीगज	(छपुआ, बिहार)	२६	१२	८५	२४
अलीपुर	(वगाल)	२२	३२	८८	२४
अलीपुर	(वगाल)	२६	३०	८९	३५
अलीपुर	(पजाब)	२९	२३	७०	५७
अलीपुर	(म भा.)	२५	१०	७९	२०

अक्षांश-देशान्तर चक्र ७

[भारत स्टैण्डर्ड टाइम देशान्तर ८२।३०]

स्थान	अक्षांश		देशांतर		स्थान	अक्षांश		देशांतर	
उत्तरी लखीमपुर (आसाम)	२७	१४	६४	५	कगमार (काश्मीर)	३३	३०	७८	३०
उत्तुगराई (मद्रास)	१२	१६	७८	३५	कच्छ (माण्डवी)	२२	५०	७६	१२
उदयपुर (राजपूवाना)	२४	३०	७३	५०	कक्षहार (उड़ीसा)	२१	३०	८६	०
उदयपुर (त्रिपुरा)	२३	३१	६१	३१	कटक (उडीसा)	२०	२८	८५	५४
उदयपुर (सरगुजा)	२२	३१	८३	५	कटनी (जबलपुर)	२३	४७	८०	२७
उदयपुर (खण्डेला)	२७	४२	७५	३३	कटिहार (बिहार)	२५	३०	८७	४०
उदयपुर छोटा (बम्बई)	२२	१८	७४	३	कटगी (म प्र)	२१	४७	७६	५७
उदय्यारपलैयम् (मद्रास)	११	११	७६	२०	कटचिड़ना (म. प्र)	२१	३५	७८	३०
उदमालपेठ (मद्रास)	१०	३६	७७	१७	कठुवा (काश्मीर)	३२	१७	७५	३६
उदयगिरि (नीलोर)	१४	५२	७६	१६	कड़पी (मद्रास)	१४	२८	८०	१३
उदयगिरि (उड़ीसा)	१६	८	८४	२५	कर्णाटक (मद्रास)	१२	०	८०	०
उदगिर (हैदराबाद)	१८	२५	७७	१०	कर्णाटिक (मद्रास)	११	२०	७६	२०
उना, ऊना (पजाब)	३१	३२	७६	१८	कण्डी (लका)	७	१५	८०	३५
उन्नाव (उ प्र.)	२६	३२	८०	३२	कदौरा (म भा.)	२६	०	७६	५२
उमरिया (म भा).	२३	३०	८०	५३	कन्धस् (पूर्व)	२०	१२	८४	०
उमरकोट (सिन्ध)	२५	२२	६७	४७	कन्नानूर (मद्रास)	११	५२	७५	२५
उमरेड [नागपुर] (म प्र)	२०	१८	७६	२१	कनकनाडा (मद्रास)	१६	५७	८२	१५
उरई (उ प्र)	२६	०	७६	३०	कन्निग (बगाल)	२२	५	८८	४०
उसका (उ प्र)	२७	१४	८३	१२	कण्टाई, कन्ताई (बगाल)	२१	५०	८७	४८
उस्मानाबाद (हैदराबाद)	१८	८	७६	६	कण्टाई, कन्ताई (बिहार)	२६	१३	८५	२१
एकलिंगजी (राजपूताना)	२४	४३	७६	४६	कन्नूर (मद्रास)	११	२०	७६	५०
एटा (उ प्र)	२७	३५	७८	४०	कन्नौज (फर्रुखाबाद, उ प्र.)	२७	३	७६	५८
एटपाडी (बम्बई)	१७	३०	७४	५५	कन्दुकर (मद्रास)	१५	१२	७६	५७
एलिचपुर (म प्र)	२१	१८	७७	३३	कनलन (तिब्बत)	२५	४६	८६	३६
एलेनाबाद (पजाब)	२६	२६	७४	५४	कनलन (वर्मा)	२३	४	६८	७
एवरेस्ट माउण्ट (गौरीशकर)	२८	५	८६	५८	कनबालू (वर्मा)	२३	२०	६५	३५
एबटाबाद (सीमाप्रान्त)	३४	६	७३	१५	कनी (वर्मा)	२२	२५	६४	५५
एमहर्स्ट (बर्मा)	१६	४	६७	३५	कनलाँग (वर्मा)	२३	२०	६८	४३
ओकारा [उखडा] (पजाब)	३०	५०	७३	३०	कनलग (वर्मा)	२३	४	६८	७
ओंकारेश्वर (मान्धाता)	२१	३८	७३	३	कपाल (काश्मीर)	३५	१०	७६	२०
ओड़छा (म भा)	२५	२१	७८	३८	कपूरथला (पजाब)	३१	२३	७५	२५
औंगबन (बर्मा)	२०	३६	६७	६	कबरहरि (बिहार)	२४	०	८६	५
औंध (बम्बई)	१७	३३	७५	२३	कमासिन (उ. प्र)	२५	३१	८०	५६
औरंगाबाद (हैदराबाद)	१६	५३	७५	१५	कमेट (उ प्र)	३०	५६	७६	२६
औरंगाबाद (बिहार)	२४	४५	८४	२५	कम्पली (मद्रास)	१५	२५	७६	३६

अक्षांश-देशान्तर चक्र ७

[भारत स्टैण्डर्ड टाइम देशान्तर ८२।३०']

स्थान		अक्षांश		देशान्तर		स्थान		अक्षांश		देशान्तर	
कामठी	(नागपुर)	२१	१४	७९	१५	कुचबिहार	(बगाल)	२६	२०	८९	२९
काम्बे	(बम्बई)	२२	२८	७२	३०	कुर्ग	(दक्षिण)	१२	२०	७६	१०
कामरेडी	(हैदराबाद)	१८	१८	७८	२२	कुडवाई	(कोरवाई, ग्वालियर)	२४	७	७८	५
कारोमण्डल कास्ट	(मद्रास)	१२	०	८०	०	कुड्डालोर	(मद्रास)	११	१३	७५	४९
काराकोरम चोटी	(उत्तर)	३५	३०	७७	३०	कुड्डापाह	(मद्रास)	१४	२८	८०	५२
कारेटिव	(लका)	८	२२	७९	५२	कुण्डलवाड़ी	(हैदराबाद)	१८	१५	७७	४३
कारगिल	(काश्मीर)	३४	३०	७६	१३	कुन्नान	(आसाम)	२३	५७	९३	२०
कारीकल	(मद्रास)	१०	५५	७९	५२	कुम्भकोनम	(मद्रास)	१०	५८	७९	२५
कारोलाइन माउण्ट	(उत्तर)	३५	०	६५	०	कुमटा	(बम्बई)	१४	२६	७४	२७
कालपी	(उ प्र)	२६	८	७९	४८	कुरु गल	(लका)	७	३१	८०	१६
कालाडुग्गी	(बम्बई)	१६	९	७५	३६	कुरुक्षेत्र	(पजाब)	३०	०	७५	५०
कालाबाघ	(पजाब)	३२	५८	७१	३६	कुलाची	(सीमाप्रान्त)	३१	५६	७०	३०
कालाडन	(बर्मा)	२१	०	९३	०	कुलौरा	(आसाम)	२४	३०	९२	५
कालाहॉडी	(करौंद, पूर्व)	१९	४०	८३	०	कुलहाकॉगिरि	(तिब्बत)	२८	१५	९१	०
कालाहस्ती	(मद्रास)	१३	४५	७९	५४	कुलम	(लका)	८	४०	८०	३५
कालासकरी	(अफगानिस्तान)	३५	५५	६७	१०	कुशमा	(नैपाल)	२८	१६	८३	४०
कालिञ्जर	(उ प्र)	२५	५	८०	२२	केकरी, केकडी	(अजमेर)	२५	५६	७५	२०
कालका	(पजाब)	३०	४५	७७	२५	केप कामोरिन	(मद्रास)	८	४	७७	३६
कालापजा	(अफगानिस्तान)	३७	०	७२	४५	क्वेलन	(ट्रावनकोर)	८	५४	७६	३८
कालाअम्बा	(बम्बई)	२१	८	७३	५०	क्वेटा	(बलूचिस्तान)	३०	१२	६७	०
कालीकट	(मद्रास)	११	१२	७५	५०	कैथल	(पजाब)	२९	४८	७६	२६
कालाढ़ाख	(सीमाप्रान्त)	३५	३०	७१	५२	कैलास चोटी	(हिमालय)	३१	५०	८२	०
कालीमेर	(मद्रास)	१०	१८	७९	५२	कैल्लूर	(हैदराबाद)	१६	१२	७७	८
काश्मर	(सिन्ध)	२८	३३	६९	३०	कैमूर	(जबलपुर)	२४	३०	८१	३०
काशी	(उ प्र)	२५	१८	८३	०	कैरादा, खैरादा	(बम्बई)	१७	१५	७४	१२
किरकी	(खिड़की, बम्बई)	१८	३३	७३	५४	कैरा, खेडा	(बम्बई)	२२	४५	७२	४५
किलकराई	(मद्रास)	९	१४	७८	५०	कैण्ड्रापारा	(उडीसा)	२०	३०	८६	२८
किलर	(पजाब)	३३	०	७६	५८	कैम्पबेलपुर [सबलपुर]	(पजाब)	३३	४७	७२	२३
किस्तवार	(काश्मीर)	३३	१९	७५	४८	कोकनद	(मद्रास)	१६	५०	८२	१२
किस्तना	(मद्रास)	१५	५५	८१	१०	कोकोचान	(अण्डमन)	१३	५६	९२	५०
किशनगज	(बिहार)	२६	१०	८८	०	कोइलकुण्डा	(हैदराबाद)	१६	४५	७७	५०
किशनगढ	(राजपूताना)	२६	३५	७४	५६	कोइल	(अलीगढ)	२७	५४	७८	६
किशनगढ	(जैसलमेर)	२७	५३	७०	४७	कोंच	(जालौन)	२६	०	७९	२
किशोरगज	(बगाल)	२४	२६	९०	४९	कोचीन	(ट्रावनकोर)	९	५८	७६	१७
कुच	(पश्चिम)	२३	३०	७०	०	कोटा	(जयपुर)	२५	१८	७१	१६

अक्षांश–देशान्तर चक्र ७

[भारत स्टैण्डर्ड टाइम देशान्तर ८२।३०]

स्थान	अक्षांश		देशांतर		स्थान	अक्षांश		देशांतर	
खुशाद (पजाव)	३२	१८	७२	२४	गाडविन आस्टिन (काश्मीर)	३५	३०	७६	३२
खुशालगढ़ (पजाव)	३३	२८	७१	५९	गारो पर्वत (आसाम)	२५	३०	९०	३०
खेडवाडा, खेरवाडा (राजपूताना)	२४	४	७३	४०	ग्वालियर (म भा.)	२६	१४	७८	१०
खेडब्रह्म, खेरब्रह्म (वडौदा)	२४	३	७३	४	ग्वालपारा (वगाल)	२६	९	९०	३७
खेडलू, खेरलू (वड़ौदा)	२३	५४	७२	४०	गाविलगढ (म प्र)	२१	२२	७७	२५
खेडा, कैरा (वम्बई)	२२	४५	७२	४५	ग्यानगिस (तिव्वत)	२९	०	८९	४०
खेतरी (पजाव)	२८	०	७५	५०	ग्वा (वर्मा)	१७	३०	९४	५५
खैड़ा (वम्बई)	१८	५१	७३	५६	गण्टकल (मद्रास)	१५	११	७७	२५
खैबर घाटी (सीमाप्रान्त)	३४	६	७१	५	गण्टूर (मद्रास)	१४	१८	८०	२९
खैरागढ (पजाव)	२९	५५	७१	१२	गगाखेडा (हैदराबाद)	१८	५२	७६	४३
खैरागढ (म प्र)	२१	२६	८१	२	गंगापुर (जयपुर)	२६	२९	७६	४६
खैरपुर (पजाव)	२९	३४	७२	१७	गगावती (हैदराबाद)	१५	३०	७६	३६
खैरपुर (पजाव)	२७	२८	६८	४४	गगाउ (वर्मा)	२२	१०	९४	११
खैरडम (तिव्वत)	३०	२५	८१	२	गगराड (राजपूताना)	२३	५६	७५	४१
खैरादा (कराद, वम्बई)	१७	१५	७४	१२	गजाम (उडीसा)	१९	२२	८५	६
खैरादा (वम्बई)	१८	६	७५	५	गिद्धौर (वगाल)	२४	५१	८६	१०
गगोत्री (उ प्र.)	३१	०	७९	५	गिरहर (वम्बई)	२१	४०	७१	०
गज़नी (अफगानिस्तान)	३३	४४	६८	१८	गिरिडीह (विहार)	२४	१०	८६	२१
गर्टोक (तिव्वत)	३१	४५	८०	२१	गिलगिट एजेन्सी (काश्मीर)	३५	५५	७४	२२
गड्डुर (मद्रास)	१४	९	७९	५४	ग्रीनविच (लन्दन)	५१	३०	०	०
गण्डवा (वलूचिस्तान)	२८	५२	६७	३०	गुगरा (पजाव)	३०	५८	७३	२१
गढ़ा, गुरहा (जोधपुर)	२५	१२	७१	४८	गुजरात प्रान्त (वम्बई)	२३	०	७३	३०
गढा (ग्वालियर)	२४	२४	७८	३	गुजरात (पजाव)	३२	३६	७४	५
गढ़शकर (पजाव)	३१	१३	७६	१३	गुजरानवाला (पजाव)	३२	१०	७४	१४
गढ़ा, गरहवा (विहार)	२४	१०	८३	५२	गुर्जाला (मद्रास)	१६	३०	७८	५६
गढवाल (उ प्र)	३०	१५	७९	३०	गुड़गाँव (पजाव)	२८	२७	७७	४
गदाग (वम्बई)	१५	२५	७५	४०	गुड़ियाटम (मद्रास)	१२	५७	७८	५५
गया (विहार)	२४	४९	८५	१	गुना (ग्वालियर)	२४	४०	७७	२०
गरौंली (म प्र)	२५	५	७९	२४	गुरयास (काश्मीर)	३४	३८	७४	५६
गरसोप्पा फॉल (मैसूर)	१४	१८	७४	५५	गुरुदासपुर (पजाव)	३२	३	७५	२७
गॉंगटक (सिक्किम)	२७	१०	८८	३०	गुरखा (नैपाल)	२७	५५	८४	३०
गाज़ीपुर (उ प्र)	२५	३४	८३	३५	गुर्रमकुण्डा (मद्रास)	१३	४७	७८	३८
गाज़ियाबाद (उ प्र)	२८	४०	७७	२६	गुलबर्गा (हैदराबाद)	१७	१६	७६	५४
गाडरवारा (म प्र)	२२	५६	७८	५०	गुलिस्तान (वलूचिस्तान)	३०	५०	६६	३०
गाडवल, गडवल (हैदराबाद)	१६	१३	७७	४८	गूजरखाँ (पजाव)	३३	१६	७३	२०

अक्षांश-देशान्तर चक्र ७

[भारत स्टैण्डर्ड टाइम देशान्तर ८२।३०]

स्थान		अक्षांश		देशांतर		स्थान		अक्षांश		देशांतर	
चित्तौड	(राजपूताना)	२४	५४	७४	४२	छिन्दवाडा	(म. प्र.)	२२	३	७८	५९
चितड़ॉग	(वगाल)	२२	२१	९२	५३	छुई खदान	(म प्र)	२१	३०	८१	१५
चित्राल	(सीमाप्रान्त)	३५	५४	७१	४५	छोटी सदरी	(राजपूताना)	२४	२४	७४	३४
चित्तूर	(मद्रास)	१३	१३	७९	८	छोटा	(जयपुर)	२५	१८	७१	६
चित्तूर	(कोचीन)	१०	४२	७६	४५	छोटा नागपुर	(विहार)	२३	०	८५	०
चिदम्बरम्	(मद्रास)	११	२४	७९	४४	छोटा उदयपुर	(गुजरात)	२२	१८	७४	३
चिन्नी	(पजाव)	३१	३२	७८	१८	जकोवाबाद	(सिन्ध)	२८	१७	६८	२६
चिन्नूर	(हैदरावाद)	१९	७	७९	४३	जगन्नाथ, पुरी	(उडीसा)	१९	४८	८५	५२
चिन्तलनार	(पूर्व)	१८	२०	८१	१८	जगन्नाथगज	(वगाल)	२४	३६	८९	५०
चिन्नायकहल्ली	(मैसूर)	१३	२५	७६	४०	जगदलपुर	(वस्तर, म. प्र)	१९	५	८२	४
चिपडपल्ली	(मद्रास)	१७	३०	८३	१२	जग्गैयापेठ	(मद्रास)	१६	५२	८०	६
चिरमिरी	(म प्र)	२३	४	८२	५	जगतियल	(हैदरावाद)	१८	४८	७९	६
चिल्का लेक	(उड़ीसा)	१९	३५	८५	२०	जडियाला	(पजाव)	३१	५१	७५	३७
चिलास	(काश्मीर)	३५	२२	७४	१०	जनकपुर	(चगभखार, म भा)	२३	४३	८१	५०
चिलाव	(लका)	७	३५	७९	५५	जनकपुर	(नैपाल)	२६	५०	८६	०
चुंगकिंग	(चीन)	२९	३२	१०६	५०	जपूर, जैपुर	(उडीसा)	१८	५२	८२	३८
चुनारगढ़	(उ प्र)	२५	८	८२	५६	जवात	(म भा)	२२	२६	७४	३७
चुनियान	(पजाव)	३०	५८	७४	१	जवलपुर	(म प्र)	२३	१०	७९	५९
चुम्बी, चम्बी	(भूटान)	२७	३०	८९	०	जमुनिया	(वरेला, जवलपुर)	२३	१०	८०	२
चुमालारी	(तिब्बत)	२८	०	८९	३०	जमालपुर	(विहार)	२५	१९	८६	३२
चुरू, चूरू	(बीकानेर)	२८	१९	७५	१	जमालपुर	(वगाल)	२४	५६	९०	०
चेरापूंजी	(आसाम)	२५	१७	९१	४७	जमैका	(पश्चिम)	१८	०	७७	०
चैत्र	(विहार)	२४	१२	८४	५६	जमखेड़	(वम्बई)	१८	४३	७५	२४
चैत्रपुर	(उडीसा)	१९	२१	८५	३	जम्मालमडगू	(मद्रास)	१४	५१	७८	२५
चैत्सू	(जयपुर)	२६	३६	७६	०	जम्मू	(काश्मीर)	३२	४४	७४	५४
चैनसुर	(वगाल)	२२	५३	८८	२७	जमराव	(वम्बई)	२५	२८	६९	८
चैनोट	(पजाव)	३१	४४	७३	१	जमपुर	(पजाव)	२९	३९	७०	३८
चैवासा, चौवासा	(विहार)	२२	३३	८५	५१	जमरूद	(सीमाप्रान्त)	३४	२	७१	२४
चोपड़ा, चौपुरा	(वम्बई)	२१	१५	७५	२०	जमसेदपुर	(टाटा, विहार)	२२	५०	८६	१०
चोमू, चमू	(जयपुर)	२७	८	७५	४७	जमला	(नैपाल)	२९	१७	८२	१३
चण्डीगढ	(पजाव)	३०	४४	७६	२५	जयनगर	(विहार)	२६	३५	८६	९
छतरपुर	(उ प्र)	२४	५४	७९	३८	जयपुर	(आसाम)	२७	१५	९५	२६
छबरौली	(पजाव)	३०	१८	७७	२७	जयपुर	(विहार, पूर्व)	१८	५७	८२	३८
छपरा	(उ प्र)	२५	४७	८४	४७	जयपुर	(राजपूताना)	२६	५५	७५	५२
छावरा	(राजपूताना)	२४	४०	७६	५४	जयन्ती	(वगाल)	२६	५२	८२	३८

अक्षांश—देशान्तर चक्र ७

[भारत स्टैण्डर्ड टाइम देशान्तर ८२।३०]

स्थान		अक्षांश		देशांतर		स्थान		अक्षांश		देशांतर	
टनकपुर	(उ प्र)	२९	१०	८०	१८	डभोल	(बम्बई)	१७	३०	७३	१०
टँगैल	(बंगाल)	२४	१४	८९	५६	डमडम, दमदम	(बंगाल)	२२	३८	८८	२८
टाउनसा, तानसा	(पंजाब)	३०	४४	७०	४०	डलहौजी	(पंजाब)	३२	३५	७६	०
टाँक	(सीमाप्रान्त)	३२	२०	७०	२८	डलमऊ	(उ प्र)	२६	७	८१	५
टाँकसी-टैन काशी	(मद्रास)	८	५८	७७	२१	डहानू, दहानू	(बम्बई)	१९	५८	७२	४५
टॉगला	(आसाम)	२६	३०	९२	०	डक्कन-पास	(पूर्व)	११	०	९३	०
टॉगसा	(भूटान)	२७	१५	९०	२७	डाकौर, डाँखर	(पंजाब)	३२	१०	७८	३०
टाउनगू	(बर्मा)	१८	५७	७६	३१	डाग, दाग	(राजपूताना)	२३	५६	७५	५२
टाँड़ा	(ग्वालियर)	२६	३३	८२	४२	डायमण्ड-हरदौर	(बंगाल)	२२	११	८८	१४
टॉडी	(मद्रास)	९	४५	७९	४	डायमण्ड	(बर्मा)	१५	५२	९४	१९
टाँड़ो-आर्मर	(पंजाब)	३१	४०	७५	४९	डाल्टनगंज	(बिहार)	२४	२	८४	४
टाँड मुहम्मदखाँ	(सिन्ध)	२५	८	६७	३४	डालमियाँ दादरी [चर्खी]	(पंजाब)	२८	४१	७६	२०
ट्रावनकोर	(मद्रास)	९	०	७७	०	ड्रास	(काश्मीर)	३४	१८	७५	४९
टिकारी, अमावाँ	(बिहार)	२४	५७	८४	५३	डिगरी	(तिब्बत)	२८	३०	८६	३०
टिर्घारिया	(पूर्व)	२०	२८	८४	३४	डिडवाना	(जोधपुर)	२७	१७	७४	२५
टिपरा, कोमिल्ला	(बंगाल)	२३	३५	९१	१३	डिण्डीगल	(मद्रास)	१०	२२	७८	०
टीकमगढ़, टेहरी	(म भा)	२४	४५	७८	५३	डिण्डोरी	(म प्र)	२२	५७	८१	१४
टीडीवनम	(मद्रास)	१२	१४	७९	४२	डिब्रूगढ	(आसाम)	२७	३०	९५	०
टुना	(बम्बई)	२३	०	७०	५	डीग, डीघ	(राजपूताना)	२७	२८	७७	२०
टुनी	(मद्रास)	१७	२१	८२	३२	डीघ	(कराँची)	२४	५२	६७	७
टुरा	(आसाम)	२५	२६	९०	१६	डुगरी	(राजपूताना)	२५	४०	७५	५०
टेंगरीनार	(तिब्बत)	३०	३०	८६	०	डुमरिया	(चम्पारन)	२७	८	८४	३१
टेरमकाँगिरि चोटी	(काश्मीर)	३५	४५	७८	०	डुमरॉव	(बिहार)	२५	३३	८४	२१
टेहरी	(उ प्र)	३१	३०	७८	५०	डगरपुर, डोंगरपुर	(राजपूताना)	२३	५०	७३	५०
टेहरी	(टीकमगढ)	२४	४५	७८	५३	डूँगरगढ, डोंगरगढ	(म प्र)	२१	१२	८०	५०
टैंक	(सीमाप्रान्त)	३२	१४	७०	२५	डयू पर्वत	(हैदराबाद)	२०	४३	७०	४८
टैक्सपुर	(आसाम)	२६	३०	९२	५८	डेगलर	(हैदराबाद)	१८	३४	७७	३३
ट्रैन्कोवर, त्रिन्कोवर	(मद्रास)	११	१	७९	५४	डेगसाही	(पंजाब)	३०	५३	७७	६
ट्वैण्टी, टटी	(बर्मा)	१६	४२	९६	१	डेरा-इस्माइलखाँ	(सीमाप्रान्त)	३१	५१	७०	५७
टोंक	(राजपूताना)	२६	११	७५	५०	डेरा-गाजीखाँ	(पंजाब)	३०	४	७०	४९
टोकियो	(जापान)	३५	४०	१३८	४५	डेरा-बाबानानक	(पंजाब)	३२	२	७५	४
टोडी, टॉडी	(मद्रास)	९	४५	७९	४	डोंगरगढ	(म प्र)	२१	१२	८०	५०
टोरी-फैयपुर	(म भा)	२५	२८	७९	८	डोंगरपुर	(राजपूताना)	२३	५०	७३	५०
ठडवाई	(बर्मा)	१८	२८	९४	२७	डोटी	(नैपाल)	२८	५६	८०	३०
डभोई	(बड़ौदा)	२२	११	७३	२५	डोंड-बल्लापुर	(मैसूर)	१३	१४	७७	२३

अक्षांश–देशान्तर चक्र ७

[भारत स्टैण्डर्ड टाइम देशान्तर ८२।३०]

स्थान		अक्षांश		देशान्तर		स्थान		अक्षांश		देशान्तर	
दमका	(विहार)	२४	०	८७	१५	देगलर, डेगलर	(हैदराबाद)	१८	३४	७७	३३
दमोह	(म प्र.)	२३	५०	७५	२९	देवकुट्टी	(मद्रास)	९	५७	७८	५३
दरसी	(मद्रास)	१५	५०	७९	४४	देवगढ़	(म प्र)	२१	५१	७८	५०
दरवानकलॉ	(सीमाप्रान्त)	३१	४३	७०	२२	देवगढ	(उडीसा)	२१	३२	८४	४६
दरगाही	(सीमाप्रान्त)	३४	३०	७१	५३	देवगढ़	(उड़ीसा)	२३	३०	८२	३०
दरभगा	(विहार)	२६	१०	८५	५७	देवघर, वैद्यनाथ	(विहार)	२४	३०	८६	४५
दर्दिस्तान	(काश्मीर)	३५	३०	७४	०	देवदी मुण्डा चोटी	(उड़ीसा)	१८	२०	८२	३०
दहानू, डहानू	(वम्बई)	१९	५८	७२	४५	देवदुर्ग	(हैदराबाद)	१६	२५	७७	०
दाग	(म भा)	२३	५६	७५	५०	देवभोग	(म प्र)	१९	५८	८२	४५
दागसाई	(पजाव)	३०	५३	७७	६	देवरकुण्डा	(हैदराबाद)	१६	४२	७८	५८
दाई लेक	(नैपाल)	२८	४५	८१	५६	देवरी	(म प्र)	२३	२३	७९	४
द्राजिन्दा	(सीमाप्रान्त)	३१	४७	७०	५	देवली	(म प्र)	२०	३९	७८	३२
दार्जिलिंग	(वगाल)	२७	३	८८	१८	देवली	(अजमेर)	२५	४६	७५	२५
दादावेटा चोटी	(मद्रास)	११	४	७६	७	देवलाली	(वम्बई)	१९	५८	७३	५७
दामन	(वम्बई)	२०	२५	७२	५३	देवलिया	(राजपूताना)	२४	३	७४	४२
दासका	(पजाव)	३२	१७	७४	२५	देववॉध	(उ प्र)	२९	४२	७७	४३
दासुया	(पजाव)	३१	४०	७५	४२	देवास	(म भा)	२२	५८	७६	६
दासपल्ला	(विहार)	२०	१९	८४	५६	देवागिरि	(आसाम)	२६	५१	९१	२६
दासपुर	(पूर्व)	२१	५८	८६	७	देवीकोट	(जैसलमेर)	२६	३८	७१	७
द्वारिकापुरी	(वड़ौदा)	२२	१४	६९	१	देहरादून	(उ. प्र)	३०	१९	७८	४
दिनाजपुर	(वगाल)	२५	३७	८८	४०	दोआव	(पजाव)	३५	२५	६७	५२
दिमचौक	(तिव्वत)	३२	३५	७९	३१	दोआव	(पजाव)	३२	०	७३	०
दिमला	(वगाल)	२६	८	८८	४८	दोमण्डी	(सीमाप्रान्त)	३२	५	६९	१५
दिमापुर	(आसाम)	२५	५१	९३	४८	दोरण्डा	(विहार)	२३	२२	८५	२२
दिर	(सीमाप्रान्त)	३५	१४	७१	४७	दोहद	(वम्बई)	२२	५३	७४	१९
दिल्ली	(भारत-राजधानी)	२८	३८	७७	१२	दोहरीघाट	(उ प्र.)	२६	८	८३	२७
दिलावर	(पजाव)	२८	५७	७१	२६	दौलताबाद	(हैदराबाद)	१९	५७	७५	१५
दीननगर	(पजाव)	३२	८	७५	३१	धनुपकडी	(मद्रास)	९	१०	७९	२८
दीनापुर, पटना	(विहार)	२५	३८	८५	५	धमतरी	(म. प्र)	२०	४२	८१	३४
दीपालपुर	(पजाव)	३०	३८	७३	३४	धमरा	(उडीसा)	२०	४८	८६	५६
दीसा	(राजपूताना)	२४	१४	७२	१३	धर्मकोट	(पजाव)	३०	५६	७५	१४
दुर्ग, द्रुग	(म प्र)	२१	११	८१	२०	धर्मजयगढ	(पूर्व)	२२	२८	८३	१५
दुर्गापुर	(वगाल)	२३	३०	८७	२०	धर्मपुर	(गुजरात)	२०	३२	७३	१३
दुजाना	(पजाव)	२८	४१	७६	४०	धर्मपुरम्	(मद्रास)	१०	४५	७७	३४
डूमका	(विहार)	२४	३०	८७	२०	धर्मपुरी	(मद्रास)	१२	८	७८	१३

अक्षांश-देशान्तर चक्र ७

[भारत स्टैण्डर्ड टाइम देशान्तर ८२।३०]

स्थान	अक्षांश		देशांतर		स्थान	अक्षांश		देशांतर	
नागर (मद्रास)	१८	१५	८०	३५	नूरपुर (पंजाब)	३२	१८	७५	५६
नागर (पजाब)	३२	१०	७७	२०	न्यू मेक्सिको (उ अमेरिका)	३५	०	१०६प.	
नागौर (जोधपुर)	२७	११	७३	४६	न्यू यार्क (उ. अमेरिका)	४०	४३	७४	१प
नागौध (उचेहरा, म भा)	२४	३३	८०	३७	नेकोवार (द्वीप)	७	३०	९३	३०
नागपुर (म प्र)	२१	९	७९	६	नेत्रकोण (वगाल)	२४	५३	९०	४७
नागापत्तन (मद्रास)	१०	४६	७९	५३	नेमावार (इन्दौर)	२२	३०	७७	०
नागापर्वत, नगापर्वत (काश्मीर)	३५	२०	७४	४०	नैनपुर (म प्र)	२३	८	८०	२०
नागा चोटी (आसाम)	२६	०	९४	२०	नैनपारा (उ प्र.)	२७	५२	८१	३३
नाचना, नचाना (जैसलमेर)	२७	२१	७१	४५	नैनवा (राजपूताना)	२५	४५	७५	५७
नाटोर, नाटौर (वगाल)	२४	२७	८९	०	नैनीताल (उ प्र)	२९	२३	७९	३०
नाथद्वारा (राजपूताना)	२४	५६	७३	५२	नैपालगज (उ प्र.)	२८	०	८१	४०
नानकिंग (चीन)	३२	७	११८	४७	नैलागढ (पजाब)	३०	५७	७६	२२
नाभा (पजाब)	३०	२५	७६	९	नैरोवी (कन्या, अफ्रीका द)	द१	१८	३६	५२
नामाक्कल (मद्रास)	११	१३	७८	१३	नोवाखाली, सुधाराम (वंगाल)	२२	४८	९१	८
नामडॉग (आसाम)	२७	४	९५	५०	नौशेरा (काश्मीर)	३३	१३	७४	१७
नामलिंगजग (भूटान)	२६	३०	८८	५६	पकौर (विहार)	२४	४८	८७	५४
नारनौल (पजाब)	२८	२	७६	१४	पगन (वर्मा)	२१	१	९४	९
नारोवाला (पंजाब)	३२	६	७४	५५	पचाई-मलाई (मद्रास)	११	१५	७८	३०
नारवाडा, नारवार (ग्वालियर)	२५	३९	७७	५३	पचधादर (जोधपुर)	२५	५५	७२	२१
नासिक (वम्बई)	२०	२	७३	५०	पचमढी (म प्र)	२२	३०	७८	२२
नाहर (राजपूताना)	२९	११	७४	४९	पचौरा (वम्वई)	२०	३८	७५	२९
निकोवार (द्वीप)	७	३०	९३	३०	पचपहाड़ (राजपूताना)	२४	२५	७५	५०
निवासन (उ प्र)	२८	१४	८०	५५	पचगछिया (विहार)	२५	५५	८६	३४
निजगढ़ (उडीसा)	२१	४२	८५	४८	पचनद (पजाव)	२९	०	७०	४८
निजामावाद (हैदरावाद)	१८	४०	७८	१०	पञ्जिम (नवागोवा)	१५	३०	७३	५५
निजामपत्तन (मद्रास)	१५	५४	८०	४३	पटकाई चोटी (वर्मा)	२८	०	९७	०
निपानी (वम्वई)	१६	२५	७४	२३	पटना (विहार)	२५	३७	८५	१३
निवहरा (राजपूताना)	२४	३७	७४	४५	पटना (उड़ीसा)	२०	४३	८३	८
निमगिरि (उड़ीसा)	१९	४०	८३	०	पटियाला (पजाव)	३०	२०	७६	२५
निर्मल (हैदरावाद)	१९	६	७८	२५	पट्टीकुण्डा (मद्रास)	१५	२४	७७	४
नीमच (ग्वालियर)	२४	२७	७४	५२	पट्टुक्कुट्टाई (मद्रास)	१०	२६	७९	२२
नीलोर (मद्रास)	१४	२७	८०	२	पटुआखाली (वंगाल)	२२	२०	९०	२२
नीलगिरि (उड़ीसा)	२१	२७	८६	४९	पटौदी (पजाव)	३२	१७	७५	४२
नीलगिरि चोटी (मद्रास)	११	२४	७६	४७	पट्टालम (लका)	८	२	७९	५०
न्यू चमन (वलूचिस्तान)	३१	०	६६	३०	पठानकोट (पजाव)	३२	२५	७५	५३

अक्षांश-देशान्तर चक्र ७

[भारत स्टैंडर्ड टाइम देशान्तर ८२।३०]

स्थान		अक्षांश	देशान्तर	स्थान		अक्षांश	देशान्तर
पद्मनाभपुरम्	(ट्रावनकोर)	८ ६	७७ २०	पाकपठान	(पंजाब)	३० २१	७३ २६
पडरौना	(स. प्र)	२६ ५४	८४ १	पाटन	(बड़ौदा)	२३ ५०	७२ १०
पडरिया	(म प्र)	२२ १४	८१ २५	पाटन	(जयपुर)	२७ ४१	७६ २
पड्डापुरम्	(मद्रास)	१७ ५	८२ ११	पाटन	(बम्बई)	१७ १०	७३ ५८
पण्ढरपुर	(बम्बई)	१७ ४१	७५ २३	पाटन	(नेपाल)	२७ ३८	८५ ११
प्रतापगढ़	(राजपूताना)	२४ २	७४ ४०	पाटन, सोमनाथ	(पश्चिम)	२१ ४	७० २६
प्रतापगढ़	(स प्र)	२५ ५४	८२ ०	पाटन, भिरू	(हैदराबाद)	१७ १६	७८ २०
प्रतापगंजघाट	(बिहार)	२६ २७	८७ १५	पाबना	(बंगाल)	२४ १	८९ १८
प्रतापपुर	(बिहार)	२३ २०	८३ १८	पाडम	(काश्मीर)	३३ २८	७६ ५४
प्रतापपुर	(म प्र)	२० ८	८० ५०	पाडरा	(बड़ौदा)	२२ १४	७३ ७
पथरीगढ़	(म भा)	२३ ५६	७८ १५	पावडुचेरी	(मद्रास)	११ ५६	७९ ५१
पथरी	(हैदराबाद)	१९ १०	७६ २१	पान	(बर्मा)	१६ ५६	९७ ४२
पन्ना	(म भा)	२४ ४३	८० १४	पानो	(बम्बई)	२१ ४	७३ ४
पनरुटी	(मद्रास)	११ ४७	७९ ३५	पानीपत	(पंजाब)	२९ २३	७७ १
पनवेल	(बम्बई)	१९ १	७३ ७	पापुन	(बर्मा)	१८ १०	९७ २०
पन्तनाव	(बर्मा)	१६ २६	९५ २७	पाबना पबना	(बंगाल)	२४ २८	८९ १
पन्थपिपलौदा	(म भा)	२३ २७	७५ २०	प्यापल्ली	(मद्रास)	१५ १५	७७ ५७
प्रयाग	(इलाहाबाद)	२५ २०	८१ ५६	पारसनाथ	(बिहार)	२४ ०	८६ ११
परभनी	(हैदराबाद)	१९ ८	७६ ५०	पारलाकिमडी	(बिहार)	१८ ४७	८४ ८
परान पहाम	(ग्वालियर)	२४ ३७	७६ ५०	पारसाकोट	(म प्र)	१९ ५५	८० ४८
परमगुडी	(मद्रास)	९ ३१	७८ २५	पारली	(हैदराबाद)	१८ ५१	७६ ३१
परासिया	(म प्र)	२२ ०	७८ १५	पारो, पैरू	(भूटान)	२७ २४	८९ १४
परेंडा	(हैदराबाद)	१८ १६	७५ ३०	पालमपुर	(बम्बई)	२४ १८	७२ ४
पलाव	(बर्मा)	१२ ५५	९८ ४५	पालाकोल्लू	(मद्रास)	१६ ३१	८१ ४४
पलासी, प्लासी	(बंगाल)	२३ ४७	८८ १७	पालसरू	(बिहार)	२३ ५९	८५ ४७
पलानपुर	(राजपूताना)	२४ १९	७२ २८	पालमकोटा	(मद्रास)	८ ४३	७७ ४१
पलेटना	(बम्बई)	२१ ३१	७१ २५	पालघाट	(मद्रास)	१० ४६	७६ ४८
पल्लावम	(मद्रास)	९ ५५	७७ २०	पाली	(राजपूताना)	२५ ४६	७३ २५
पल्लावरम्	(मद्रास)	१२ २८	८० ११	पालकुण्डा	(मद्रास)	१८ ३६	८३ ४८
पल्लीपालयम	(मद्रास)	११ २२	७७ [illegible]	पालकोट	(बिहार)	२२ ५७	८४ ४१
पल्लीकन्ड	(मद्रास)	१२ २४	७८ २१	पालपा	(नेपाल)	२७ ५१	८३ ३५
पल्लीवेरला	(मद्रास)	१४ २६	७९ १६	पालना	(राजपूताना)	२७ ५२	७३ ११
पसरूर	(पंजाब)	३२ १६	७४ ४५	पालमी	(मद्रास)	१० ३६	७७ ११
पाकचान	(बर्मा)	१० २०	९८ ३७	पालवा	(बर्मा)	२१ १५	९४ २०
पाकला	(मद्रास)	१३ १०	७९ ०	प्लासी, पलासी	(बंगाल)	२३ ४७	८८ १७

अक्षांश – देशान्तर चक्र ७

[भारत स्टैण्डर्ड टाइम देशान्तर ८२।३०]

स्थान		अक्षांश		देशांतर	
पार्वतीपुरम्	(मद्रास)	१८	४७	८३	२८
पिटिहरा, पेटहरा	(म प्र)	२३	४	७९	२०
पिण्डदादाखाँ	(पजाव)	३२	५५	७३	४७
पिण्डीघेप	(पजाव)	३३	१५	७२	१८
पिनमानू	(वर्मा)	१९	४४	९६	९
पिरुवा	(राजपूताना)	२४	१२	७६	६
पिरामिड	(मद्रास)	९	३०	७७	२
पीठपुरम्	(मद्रास)	१७	७	८२	१९
पीपर, पेपर	(राजपूताना)	२६	२२	७३	३५
पीर	(पजाव)	३३	३०	७४	३०
पीरपजल घाटी	(काश्मीर)	३३	३६	७४	२२
पीलीभीत	(उ प्र)	२८	३८	७९	५१
पुगल	(राजपूताना)	२८	३१	७२	५१
पुंगानूर	(मद्रास)	१३	२५	७८	३७
पुदुकुट्टाई	(मद्रास)	१०	२३	७८	५२
पुनाखा	(भूटान)	२७	३२	८९	५३
पुरी, जगन्नाथ	(उड़ीसा)	१९	४८	८५	५२
पुरुलिया	(विहार)	२३	२०	८६	२५
पुरहट	(विहार)	२२	३६	८५	२८
पुसाद	(म. प्र.)	१९	५५	७७	३०
पुष्करक्षेत्र	(राजपूताना)	२६	२९	७४	३७
पूँछ, पूँच	(काश्मीर)	३३	५१	७४	८
पूर्णिया, पुरनिया	(विहार)	२५	४९	८७	३१
पूना	(वम्बई)	१८	३०	७३	५८
प्यू	(वर्मा)	१८	२०	९६	२८
पे, प्रोम	(वर्मा)	१८	४७	९५	२०
पेकिंग, पेपिंग	(चीन)	३९	५५	११६	२४
पेगू	(वर्मा)	१७	२०	९६	२९
पेगूयामा	(वर्मा)	२०	०	९६	०
पेटलाद	(वडौदा)	२२	२९	७२	५०
पेण्ड्रारोड	(म प्र)	२२	३०	८३	०
पेनूकुण्डा, वेणुकुण्ड	(मद्रास)	१४	५	७७	३८
पेन्नाना	(वर्मा)	१९	५८	९६	२४
पेपन	(वर्मा)	१६	१२	९५	४०
पेरू, पारो	(भूटान)	२७	२४	८९	१४
पेरण्टिज	(कर्क रेखा, वम्बई)	२३	२७	७२	५५
पेरण्टिज	(कर्क रेखा, म प्र)	२३	२७	८०	०
पेरण्टिज	(कर्क रेखा, वंगाल)	२३	२७	९०	०
पेरमबलूर	(मद्रास)	११	१४	७८	५६
पेरियाकुलम	(मद्रास)	१०	७	७७	३५
पेरिस	(फ्रान्स)	४८	५०	२	२०
पेरियार	(मद्रास)	१०	०	७६	५२
पेशावर	(पजाव)	३४	२	७१	३०
पेहुवा	(पंजाव)	२९	५७	७६	३७
पैकाक	(वर्मा)	२१	४२	९५	७
पैठण, पठान	(हैदरावाद)	१९	२९	७५	२६
पोकरन, पोखरान	(राजपूताना)	२६	५५	७१	५८
पोखरा	(नैपाल)	२८	१७	८३	५८
पोगण्डा	(वर्मा)	१८	२८	९५	३४
पोड़िली	(मद्रास)	१५	३६	७९	३९
पोन्नानी	(मद्रास)	१०	४७	७५	५८
पोन्नेरी	(मद्रास)	१३	२०	८०	१५
पोरहाट, पुरहट	(विहार)	२२	३६	८५	२८
पोरवन्दर	(वम्वई)	२१	३७	६९	४९
पोर्टओखा	(वड़ौदा)	२२	१५	६९	१०
पोर्टब्लेयर	(अण्डमन)	११	३०	९२	५०
पोर्टोनोवो	(मद्रास)	११	३०	७९	४८
पोल्लाची	(मद्रास)	१०	३९	७७	३
पोलूर	(मद्रास)	१२	३१	७९	१०
प्रोड्डाटुर	(मद्रास)	१४	४५	७८	३५
प्रोम, पे	(वर्मा)	१८	४७	९५	२०
पौंडी	(उ प्र)	३०	८	७८	४८
पौनी, पोनी	(म प्र)	२०	४८	७९	४०
पौनड़ा	(वर्मा)	१८	२८	९५	३४
फतेहगढ	(फर्रुखावाद)	२७	२३	७९	४०
फतहपुर	(जयपुर)	२८	०	७५	२
फतेहपुर, हसवा	(उ प्र)	२५	५५	८०	५२
फतेहावाद, फटहावाद	(पजाव)	२९	३१	७५	३०
फरीदकोट	(पजाव)	३२	४०	७४	५७
फरीदपुर	(वगाल)	२३	३६	८९	५३

अक्षांश – देशान्तर चक्र ७

[भारत स्टैण्डर्ड टाइम देशान्तर ८२।३०]

स्थान		अक्षाय		देशांतर	
वलसर	(वम्वई)	२०	३६	७३	०
वस्ती	(उ. प्र)	२६	४८	८२	४६
वस्तर	(जगदलपुर)	१९	१०	८१	३०
वसिया	(विहार)	२२	५२	८४	५३
वसवा	(जयपुर)	२७	६	७६	३२
वहादुरावाद	(वगाल)	२५	६	८९	५७
वहराइच	(उ प्र)	२७	३४	८१	३८
वहावलपुर	(पजाव)	२८	२४	७१	४७
वाँकी	(उडीसा)	२०	२१	८५	३३
वाँका पहाडी	(म भा)	२५	१४	८०	५०
वाँकोट	(वम्वई)	१७	५८	७३	५
वाँकुरा	(वगाल)	२३	१४	८७	७
वाकरगज	(वगाल)	२२	२९	९०	१८
वाँकीपुर	(पटना)	२५	४०	८५	१२
वागलकोट	(वम्वई)	१६	१२	७५	४८
वागरकोट	(वगाल)	२६	४०	८८	३०
वाँगनापल्ली	(मद्रास)	१५	१९	७८	१७
वागवेदी	(वम्वई)	१६	३३	७६	५
वागरा	(वगाल)	२४	५१	८९	२६
वाघरहाट	(वगाल)	२२	४०	८९	५०
वाटला	(पजाव)	३१	४९	७५	१४
वाँटवाल, वुटवल	(मद्रास)	१२	५३	७५	५
वाँदा	(उ प्र)	२५	२८	८०	२२
वाँदरा, भान	(वम्वई)	१९	३	७२	५२
वादामी	(वम्वई)	१५	५५	७५	४५
वादिन	(सिन्ध)	२४	३९	६८	५४
वादाखाँ	(अफगानिस्तान)	३७	१	७०	६
वादला	(राजपूताना)	२५	२०	७३	४५
वादुल्ला	(लका)	७	०	८०	५८
वाप	(जैसलमेर)	२७	२२	७२	२२
वापटला	(मद्रास)	१५	५४	८०	५०
वाविल्ली, वावली	(मद्रास)	१८	३४	८३	२५
वारीसाल	(वगाल)	२२	४३	९०	२४
वारामती	(वम्वई)	१८	३	७४	२६
वाराबकी	(उ. प्र)	२६	५६	८१	१३
वारीपाडा	(उड़ीसा)	२१	५४	८६	४२
वारालचा, वड़ालचा	(पजाव)	३२	४९	७७	२८
वारी	(राजपूताना)	२६	३६	७७	४२
वारी दोआव	(पजाव)	३०	३०	७३	२०
वारसी	(वम्वई)	१८	१३	७५	५०
वारमेर	(राजपूताना)	२६	०	७०	४०
वारपेटा	(आसाम)	२६	२०	९१	३
वारमूला	(काश्मीर)	३४	१०	७४	३०
वालापुर खामगाँव	(म. प्र)	२०	४२	७६	५२
वालाघाट	(म प्र)	२१	५५	८०	१५
वालासोर, वालेश्वर	(उड़ीसा)	२१	३०	८६	५४
वालकुण्डा	(हैदरावाद)	१९	५	७८	२०
वालमेर	(जोधपुर)	२५	४५	७१	२५
वालीपाडा	(आसाम)	२६	९	९२	९
वाल्टिस्तान	(काश्मीर)	३५	३०	७६	१०
वालनगर, वोलनगिरि	(पूर्व)	२०	४०	८३	३०
वाव लेक	(वर्मा)	१९	०	९७	१५
वावर, ब्यावर	(अजमेर)	२६	६	७४	२१
वावली	(मद्रास)	१८	३४	८३	२५
वासिम	(म. प्र)	२०	५	७७	१०
वासौदा, नवाव	(म भा)	२३	३७	७८	१४
वाँसवाडा	(राजपूताना)	२३	३०	७४	२४
वाँसदा, वशादा, वाँसड़ा	(वम्वई)	२०	४५	७३	२८
वासमेट	(हैदरावाद)	१९	२२	७७	१२
वासिन, वेसिन	(वम्वई)	१९	२२	७२	५६
वासिन, पाथिन	(वर्मा)	१६	५४	९४	५०
वाशहर	(पजाव)	३१	३०	७८	३०
ब्राह्मण दरिया	(वगाल)	२३	५८	९१	९
विक्रमपुर	(वगाल)	२३	३४	९०	२८
विकनाथोरी	(विहार)	२७	३०	८४	३८
विजनौर	(उ प्र)	२९	२३	७३	१०
विज्जी	(पूर्व)	१८	२	८१	२४
विजन	(म. भा)	२५	२७	७९	५
विजावर	(म भा)	२४	३८	७९	३२
विठूर, ब्रह्मावर्त	(कानपुर)	२६	३७	८०	१९

अक्षांश–देशान्तर चक्र ७

[भारत स्टैण्डर्ड टाइम देशान्तर ८२।३०]

स्थान		अक्षांश	देशान्तर	स्थान		अक्षांश	देशान्तर
फर्रुखाबाद	(उ प्र)	२७ २४	७९ ३४	बड़ासबाघाटी	(पंजाब)	३२ ४५	७५ ५८
फलेरा	(राजपूताना)	२६ ५५	७५ १५	बड़वाहा	(म भा)	२२ २४	७६ ३८
फलोदी	(राजपूताना)	२७ १	७२ २४	बड़ासमुद्रम्	(उड़ीसा)	२० ५८	८२ ०
फगवाड़ा	(पंजाब)	३१ ६	७५ ४०	बैतूल, बैतूल	(म प्र)	२१ ५५	७७ ५०
फाजिल्का	(पंजाब)	३० २४	७४ ४	बदरीनाथ धाम	(उ प्र)	३० ४४	७९ ३२
फलटा	(बंगाल)	२२ ८	८८ ५	बदायूँ	(उ प्र.)	२८	७९ १०
फालटन	(दक्षिण)	१८ ०	७४ २१	बनारस	(उ प्र)	२५ २०	८३ ०
फालम	(बर्मा)	२ ५८	९३ ४५	बनाड़	(पंजाब)	३१ २०	७५ २५
फिल्लौर	(पंजाब)	३१ ५८	७५ ५	बन्नू	(सीमाप्रान्त)	३३ ०	७० ३६
फीरोजाबाद	(उ प्र)	२७ ६	७८ ४	बंगलौर	(मैसूर)	१२ ५८	७७ ३८
फीरोजपुर झिरका	(पंजाब)	२७ ४५	७७ ०	बन्टन	(मलाया)	६ ५	१०१ १७
फीरोजपुर	(पंजाब)	३० ५५	७४ ४०	बम्बई	(पश्चिम)	१८ ५५	७२ ५४
फुजीयामा	(जापान)	३५ ३०	१३८ ४५	बर्दवान	(बंगाल)	२३ १४	८७ ५४
फुरीथंग	(भूटान)	२७ ४८	८९ ४	बन्दर शाहपुर	(ईरान)	३० ०	५१ २०
फूलबनी	(बंगाल)	२५ १९	८६ ४२	ब्रह्मपुरी	(म प्र)	२० ४०	७९ ५६
फूलझर फुलझर	(म प्र)	२१ १४	८२ ५४	बरहामपुर, ब्रह्मपुर	(बंगाल)	२४ ६	८८ १५
फूलपुर	(उ प्र)	२५ ३५	८२ ५	बरहामपुर ब्रह्मपुर	(उड़ीसा)	१९ १९	८४ ५१
फेनी	(बंगाल)	२३ ५५	९१ २६	बरेली [बॉम्]	(उ प्र)	२८ २२	७९ २७
फैजाबाद	(उ प्र)	२६ ४७	८२ १२	बराइच	(उ प्र)	२६ १६	८१ ४६
फोर्ट कार्ड	(मद्रास)	१३ ४	८० १७	बरही बर्ही	(म. भा)	२४ १०	८२ २६
फोर्ट डेविड	(मद्रास)	११ ४५	७९ ४०	बराम्बा बरम्बा	(पूर्व)	२० २५	८५ २१
फोर्ट मुनरो	(पंजाब)	२९ ५५	७० ३	बरन	(राजपूताना)	२५ ५	७६ ३१
फोर्ट सण्डामन	(बलूचिस्तान)	३१ २०	६९ २१	बरारखा	(म भा)	२५ ३	८० ४०
फोर्ट स्टेडमन	(बर्मा)	२० ३४	९७ ०	बरीपाड़ा	(पूर्व)	२१ ५६	८६ ४३
फोर्ट हाका	(बर्मा)	२२ ४०	९३ ४१	बरखाँ बरखाँ	(बलूचिस्तान)	२९ ५६	६९ ३३
फोर्ट व्हाइट	(बर्मा)	२३ १५	९३ ५०	बरवा	(मद्रास)	१८ ५१	८४ ३०
बस्सी बलेसर	(राजपूताना)	२४ ४६	७१ ६	बरवा	(बिहार)	२३ १०	८४ १६
बक्सर	(बिहार)	२५ ३४	८४ १	[illegible]	(बंगाल)	२५ १५	८८ ४०
बक्साडुआर	(बंगाल)	२६ ४५	८९ ३५	बदर	(बलूचिस्तान)	२६ ५	६५ ४१
बगहा	(बिहार)	२७ ५	८४ २५	बर्लिन	(जर्मन)	५२ ३२	१३ २५
बट्टीकलोआ	(लंका)	७ ४	८१ ४	बहादुराबाद	(म प)	२१ २५	७५ २१
बड़नेरा	(म प्र)	२० ५२	७७ ४५	बलिया	(उ प्र)	२५ ४५	८४ ११
बड़ौदा प्रान्त	(बम्बई)	२२ ०	७३ ३०	बलरामपुर	(उ प्र)	२७ २५	८२ १२
बड़ौदा शहर	(बम्बई)	२२ १७	७३ १	बलोतरा	(राजपूताना)	२५ ५१	७२ २१
बड़वानी	(म भा)	२२ २	७४ ५४	बलख	(बुखारा)	३६ ४०	६६ ५०

अक्षांश – देशान्तर चक्र ७

[भारत स्टैण्डर्ड टाइम देशान्तर ८२।३०]

स्थान		अक्षांश		देशान्तर		स्थान		अक्षांश		देशान्तर	
वलसर	(वम्वई)	२०	३६	७३	०	वारीपाडा	(उड़ीसा)	२१	५४	८६	४२
वस्ती	(उ. प्र)	२६	४८	८२	४६	वारालचा, वड़ालचा	(पजाव)	३२	४९	७७	२८
वस्तर	(जगदलपुर)	१९	१०	८१	३०	वारी	(राजपूताना)	२६	३६	७७	४२
वसिया	(विहार)	२२	५२	८४	५३	वारी दोआव	(पंजाव)	३०	३०	७३	२०
वसवा	(जयपुर)	२७	६	७६	३२	वारसी	(वम्वई)	१८	१३	७५	५०
वहादुरावाद	(वगाल)	२५	६	८९	५७	वारमेर	(राजपूताना)	२६	०	७०	४०
वहराइच	(उ प्र.)	२७	३४	८१	३८	वारपेटा	(आसाम)	२६	२०	९१	३
वहावलपुर	(पजाव)	२८	२४	७१	४७	वारमूला	(काश्मीर)	३४	१०	७४	३०
वाँकी	(उडीसा)	२०	२१	८५	३३	वालापुर खामगॉव	(म. प्र)	२०	४२	७६	५२
वाँका पहाड़ी	(म भा)	२५	१४	८०	५०	वालाघाट	(म. प्र.)	२१	५५	८०	१५
वॉकोट	(वम्वई)	१७	५८	७३	५	वालासोर, वालेश्वर	(उड़ीसा)	२१	३०	८६	५४
वाँकुरा	(वगाल)	२३	१४	८७	७	वालकुण्डा	(हैदरावाद)	१९	५	७८	२०
वाकरगज	(वगाल)	२२	२९	९०	१८	वालमेर	(जोधपुर)	२५	४५	७१	२५
वाँकीपुर	(पटना)	२५	४०	८५	१२	वालीपाड़ा	(आसाम)	२६	९	९२	९
वागलकोट	(वम्वई)	१६	१२	७५	४८	वाल्टिस्तान	(काश्मीर)	३५	३०	७६	१०
वागरकोट	(वगाल)	२६	४०	८८	३०	वालनगर, वोलनगिरि	(पूर्व)	२०	४०	८३	३०
वॉगनापल्ली	(मद्रास)	१५	१९	७८	१७	वाव लेक	(वर्मा)	१९	०	९७	१५
वागवेदी	(वम्वई)	१६	३३	७६	५	वावर, व्यावर	(अजमेर)	२६	६	७४	२१
वागरा	(वगाल)	२४	५१	८९	२६	वावली	(मद्रास)	१८	३४	८३	२५
वाघरहाट	(वगाल)	२२	४०	८९	५०	वासिम	(म प्र.)	२०	५	७७	१०
वाटला	(पजाव)	३१	४९	७५	१४	वासोदा, नवाव	(म भा)	२३	३७	७८	१४
वाँटवाल, वुटवल	(मद्रास)	१२	५३	७५	५	वाँसवाड़ा	(राजपूताना)	२३	३०	७४	२४
वाँदा	(उ प्र)	२५	२८	८०	२२	वाँसदा, वशदा, वाँसड़ा	(वम्वई)	२०	४५	७३	२८
वॉदरा, भान	(वम्वई)	१९	३	७२	५२	वासमेट	(हैदरावाद)	१९	२२	७७	१२
वादामी	(वम्वई)	१५	५५	७५	४५	वासिन, वेसिन	(वम्वई)	१९	२२	७२	५६
वादिन	(सिन्ध)	२४	३९	६८	५४	वासिन, पाथिन	(वर्मा)	१६	५४	९४	५०
वादाखाँ	(अफगानिस्तान)	३७	१	७०	६	वाशहर	(पजाव)	३१	३०	७८	३०
वादला	(राजपूताना)	२५	२०	७३	४५	ब्राह्मण दरिया	(वगाल)	२३	५८	९१	९
वादुल्ला	(लका)	७	०	८०	५८	विक्रमपुर	(वगाल)	२३	३४	९०	२८
वाप	(जैसलमेर)	२७	२२	७२	२२	विकनाथोरी	(विहार)	२७	३०	८४	३८
वापटला	(मद्रास)	१५	५४	८०	५०	विजनौर	(उ प्र)	२९	२३	७३	१०
वाविल्ली, वावली	(मद्रास)	१८	३४	८३	२५	विज्ली	(पूर्व)	१८	२	८१	२४
वारीसाल	(वगाल)	२२	४३	९०	२४	विजन	(म. भा)	२५	२७	७९	५
वारामती	(वम्वई)	१८	३	७४	२६	विजावर	(म भा)	२४	३८	७९	३२
वारावकी	(उ. प्र)	६	५६	८१	१३	विठूर, ब्रह्मावर्त	(कानपुर)	२६	३७	८०	१९

अक्षांश – देशान्तर चक्र ७

[भारत स्टैण्डर्ड टाइम देशान्तर ८२।३०]

स्थान		अक्षांश		देशांतर		स्थान		अक्षांश		देशांतर	
भवानीपत्तन	(पूर्व)	१९	५८	८३	१२	भ्योरा	(म भा)	२३	५५	७९	५७
भागलपुर	(विहार)	२५	१५	८७	२	भोर	(वम्वई)	१८	९	७३	५४
भागीरथी	(गढवाल)	३०	१	७९	१	भोरघाट	(वम्वई)	१८	४८	७३	२२
भाटपारा	(वगाल)	२२	५४	८८	२५	भौन	(पजाव)	३२	५४	७२	५१
भाटियापारा	(वगाल)	२३	१३	८९	४६	भण्डारा	(म प्र)	२१	९	७९	४२
भादरजान	(राजपूताना)	२५	३६	७२	५४	मऊ	(म प्र)	२२	१५	८०	१३
भादरा	(वीकानेर)	२९	१५	७५	३	मऊ	(उ प्र)	२५	५७	८३	३६
भादरवाह	(काश्मीर)	३३	४	७५	५०	मऊगज	(म भा)	२४	४०	८१	५६
भानपुर	(राजपूताना)	२४	३२	७५	५१	मऊ रानीपुर	(उ प्र)	२५	१५	७९	११
भामो	(वर्मा)	२४	१६	९७	१५	मऊ विन	(वर्मा)	१६	४४	९५	२१
भालकी	(हैदरावाद)	१८	४	७७	१०	मकरान	(वलूचिस्तान)	२५	१०	६४	०
भावनगर	(पश्चिम)	२१	४६	७२	११	मकडी	(म प्र)	१९	४५	८१	५८
भिकनाथोरी	(विहार)	२७	२०	८४	५८	मकडाई	(म भा)	२२	४	७७	८
भिण्ड	(ग्वालियर)	२६	२५	७८	५६	मकडाइन	(पजाव)	३२	०	७५	५४
भिल	(म भा)	२२	४०	७४	३०	मकसूदावाद	(वगाल)	२४	११	८८	१८
भिलसा, विदिशा	(ग्वालियर)	२३	३२	७७	५१	मगवी	(वर्मा)	२०	१०	९५	१
भिवानी	(पजाव)	२८	४६	७६	१८	मगोरी	(वम्वई)	२३	१८	७३	२४
भीनमल	(राजपूताना)	२५	०	७२	१९	मछलीपट्टम	(मद्रास)	१६	९	८१	१२
भीर	(हैदरावाद)	१९	०	७५	५०	मछलीशहर	(उ प्र)	२५	४१	८२	२७
भीलवाडा	(राजपूताना)	२५	२१	७४	४०	मजीठा	(पजाव)	३१	४६	७५	१
भीपमपुर	(राजपूताना)	२७	४५	७२	१०	ममलागॉव	(हैदरावाद)	१९	८	७६	१३
भुज	(वम्वई)	२३	१५	६९	४९	मटरा	(लका)	५	५५	८०	३०
भुण्डेश्वर	(विहार)	१९	५०	८३	१६	मटरडम	(मद्रास)	११	५२	७७	५०
भुवन	(पूर्व)	२१	५	८५	५२	मड़केरा, मरकरा	(कुर्ग)	१२	२०	७५	४८
भुवाली	(नैनीताल)	२९	२३	७९	३५	मढी	(पजाव)	३२	५०	७१	४०
भुसावल	(वम्वई)	२१	२	७५	४९	मढेपुर, मधेपुर	(विहार)	२५	५७	८६	५१
भूपालपत्तन	(पूर्व)	१८	५०	८०	२४	मत्तॉचेरी	(कोचीन)	९	५७	७६	१७
भेडा, भाडा	(पजाव)	३२	२९	७२	५७	मर्तवान	(वर्मा)	१६	३०	९७	४०
भेलसा	(ग्वालियर)	२३	३२	७७	५१	मथुरा	(उ प्र)	२७	२८	७७	४१
भैरववाजार	(वगाल)	२४	५	९१	०	मदारीपुर	(वगाल)	२३	१४	९०	१५
भैंसदेही	(म प्र)	२१	३९	७७	४०	मद्रास	(भारत)	१३	४	८०	१७
भैंसा	(हैदरावाद)	१९	१०	७७	५८	मदय	(वर्मा)	१७	५८	९६	५७
भैंसरार	(राजपूताना)	२४	५८	७५	३६	मदुरा	(मद्रास)	९	५८	७८	१०
भोजपुर	(विहार)	२७	१०	८६	५६	मदवच्ची	(लका)	८	३०	८०	३०
भोपाल	(म प्र)	२३	१६	७७	१८	मदुरान्तकम्	(मद्रास)	१२	३०	७९	५६

अक्षांश—देशान्तर चक्र ७

[भारत स्टैण्डर्ड टाइम देशान्तर ८२।३०]

स्थान		अक्षांश		देशांतर		स्थान		अक्षांश		देशांतर	
मिनबू	(वर्मा)	२०	७	९४	५८	मुरतग	(नैपाल)	२९	९	८३	५५
मिनहला	(वर्मा)	१९	५७	९५	५	मुहम्मदगढ	(म भा)	२३	३९	७८	१३
मियानी	(पजाव)	३२	३२	७३	८	मूल	(म प्र)	२०	४	७९	४३
मियाँवाली	(पजाव)	३२	३५	७१	३३	मूलवगल	(मैसूर)	१३	११	७८	१४
मिरज	(वम्बई)	१६	४९	७४	४३	मेकलचोटी	(म प्र.)	२२	३०	८१	३०
मिरामशाह	(सीमाप्रान्त)	३३	५	७०	४	मेक्सिको ओल्ड	(उत्तरी अमेरिका)	१९	५६	१००	१५
मिसमिस	(तिब्बत)	२८	०	९७	०	मेगजीन	(नैपाल)	२९	३५	८७	०
मिश्रिख, नैमिषारण्य	(उ प्र)	२७	२४	८०	३७	मेडक	(हैदरावाद)	१८	३	७८	१८
मीठी	(वम्बई)	२४	४०	६९	५७	मेडकसिर	(मद्रास)	१३	५७	७७	१९
मीरपुर	(काश्मीर)	३३	१२	७३	५१	मेदिनीपुर	(वगाल)	२२	२५	८७	२१
मीरपुर खास	(सिन्ध)	२५	३०	६९	१०	मेरट	(राजपूताना)	२६	३९	७४	६
मुकुन्दवाडा	(राजपूताना)	२४	५७	७६	६	मेरठ	(उ प्र.)	२९	१	७७	४५
मुकर	(हैदरावाद)	१८	४२	७७	२४	मेरवाडा, मारवाड	(राजपूताना)	२६	१	७४	१
मुगलभीम	(सिन्ध)	२४	२२	६४	१९	म्येम्यो, मेयोमेयो	(वर्मा)	२२	५	९६	३०
मुगलसराँय	(उ प्र)	२५	१७	८३	११	मेहर, लरकाना	(सिन्ध)	२७	३०	६७	५२
मुगेर	(विहार)	२५	२३	८६	३०	मेहरपुर	(वगाल)	२३	४७	८८	४०
मुजफ्फरगढ़	(पजाव)	३०	५	७१	१४	मेहसना	(वडौदा)	२३	४२	७२	३७
मुजफ्फरनगर	(उ प्र)	२९	२८	७७	४४	मैंगकवाँ	(वर्मा)	२६	२०	९६	४०
मुजफ्फरपुर	(विहार)	२६	७	८५	२७	मैनी	(वम्बई)	२२	०	६९	२५
मुजफ्फरावाद	(काश्मीर)	३४	२४	७३	२२	मैनपुरी	(उ प्र)	२७	१४	७९	३
मुडासा	(वम्बई)	२३	२८	७३	२१	मैमनसिंह	(वगाल)	२४	४६	९०	२७
मुडकी	(पजाव)	३०	५६	७४	५८	मैस्खल	(वगाल)	२१	३०	९२	०
मुड़वारा	(जवलपुर)	२३	४१	८०	१८	मैसूर	(मद्रास)	१२	१८	७६	४२
मुक्तिनाथ	(नैपाल)	२८	५४	८३	४९	मैहर	(म प्र)	२४	१६	८०	४९
मुक्तिसर	(पजाव)	३०	२९	७४	३३	मोकामाघाट	(विहार)	२५	२४	८५	५५
मुद्दाविहल	(वम्बई)	१६	२०	७६	१०	मोगक	(वर्मा)	२२	५५	९६	३५
मुदगल	(हैदरावाद)	१६	०	७६	२५	मोगएड	(वर्मा)	२५	२०	९६	५५
मुन्दर	(सीमाप्रान्त)	२२	४९	६९	५२	मोतीहारी	(विहार)	२६	४०	८१	५७
मुराद	(दक्षिण)	१८	१८	७३	०	मोमिनावाद	(हैदरावाद)	१८	४४	७६	२३
मुरादावाद	(उ प्र)	२८	५१	७८	४९	मोरवी	(वम्बई)	२२	४९	७०	५४
मुरार	(ग्वालियर)	२६	१३	७८	१४	मोहनगढ	(जैसलमेर)	२७	१७	७१	१८
मुर्री	(पजाव)	३३	५५	७३	२७	मोहपानी	(म प्र)	२२	७	७८	९
मुर्शिदावाद	(वगाल)	२४	११	८८	१९	मौकमाई	(वर्मा)	२०	१०	९७	५२
मुल्लाईटिव	(लका)	९	१५	८०	५३	मगर्किग	(वर्मा)	२१	३९	९७	३६
मुलतान	(पजाव)	३०	१२	७१	३१	मगापेठ	(हैदरावाद)	१८	१३	८०	३५

अक्षांश-देशान्तर चक्र ७

[भारत स्टैंडर्ड टाइम देशान्तर ८२।३०]

स्थान		अक्षांश		देशांतर	
रानी वन्नूर	(वम्बई)	१४	३३	७५	४१
रावर्टसनपेठ	(मैसूर)	१२	५८	७८	१६
रामकोला	(म प्र, पूव)	२३	४०	८३	८
रामगढ़	(विहार)	२३	३८	८५	३४
रामगढ	(जयपुर)	२८	१०	७५	०
रामगढ	(म प्र)	२३	०	८१	०
रामगिरि	(मद्रास)	१९	४	८३	५५
रामटेक	(म प्र)	२१	२४	७९	२०
रामदुर्ग	(दक्षिण)	१५	५८	७५	२२
रामनगर	(म भा)	२४	११	८१	१२
रामनगर	(म प्र)	२२	३६	८०	३३
रामनगर	(काश्मीर)	३२	५२	७५	२२
रामनगर	(पजाव)	३२	१९	७३	५०
रामनद	(मद्रास)	९	२२	७८	५२
रामपा	(मद्रास)	१७	२०	८१	५८
रामपुर	(पजाव)	३१	२०	७८	०
रामपुर	(उडीसा)	२१	५	८४	२२
रामपुर	(विहार)	२८	४८	७९	५
रामपुर	(ग्वालियर)	२३	२८	७५	३०
रामपुर	(उ प्र)	२८	५४	७९	२६
रामपुर, वोलिया	(वगाल)	२४	२२	८८	२९
रामल्लाकोट	(मद्रास)	१५	३५	७८	२
रामेश्वर	(मद्रास)	९	१७	७९	२२
रायगढ	(म प्र)	२१	५४	८३	२६
रायचूर	(हैदरावाद)	१६	१२	७७	२१
रायचोटी	(मद्रास)	१४	४	७८	५०
रायजादा	(उडीसा)	१९	९	८३	२७
रायदुर्ग	(मद्रास)	१४	४२	७६	५३
रायनगर	(वगाल)	२३	२	८८	१
रायपुर	(म प्र)	२१	१५	८१	४१
रायपुर	(वगाल)	२३	०	९०	५०
रायविन्द	(पजाव)	३१	१०	७४	९
रायवरेली	(उ प्र)	२६	१४	८१	१६
रावकाका	(धर्मजयगढ)	२२	२८	८३	१५
रावतसर	(राजपूताना)	२९	१६	७४	२६

स्थान		अक्षांश		देशांतर	
रावनावाद	(वगाल)	२१	५०	९०	३०
रावलपिण्डी	(पजाव)	३३	३७	७३	६
राहुन	(पजाव)	३०	५०	७६	२०
राहुरी	(वम्बई)	१९	२३	७४	४२
रिमा	(तिब्वत)	२८	१४	९७	१२
रीवाँ	(म भा)	२४	३१	८१	१९
रीचना	(राचना-दोआव)	३१	३०	७३	१५
रुक्मकोट	(नैपाल)	२८	३४	८२	४०
रुडकी	(उ प्र)	२९	५२	७७	५३
रुडोल्फ लेक	(कन्या)	४	०	३५	४०
रुहेलखण्ड	(उ प्र)	२८	३०	७९	०
रूपनगर	(राजपूताना)	२६	४८	७४	५४
रेकपल्ली	(मद्रास)	१७	३४	८१	२०
रेनी	(राजपूताना)	२८	४१	७५	५
रेपल्ली	(मद्रास)	१६	२	८०	५३
रेवाडी	(पजाव)	२८	१२	७६	४०
रेहली	(म प्र)	२३	३८	७९	५
रैपर	(पश्चिम)	२३	३२	७०	४०
रैपर	(मद्रास)	१५	१२	७९	३६
रोडी	(पजाव)	२९	४४	७५	१७
रोम	(इटली)	४१	५५	१२	२८
रोहतक	(पजाव)	२९	०	७६	८
रोहितास	(विहार)	२४	३६	८३	५२
रोहरी	(सिन्ध)	२७	४१	६४	५७
रौजा, खुलदावाद	(हैदरावाद)	२०	१	७५	१५
रगून	(वर्मा)	१६	४५	९६	१३
रगपुर	(वगाल)	२५	४५	८९	१८
रगमती	(वगाल)	२२	३८	९२	१५
रगैया	(आसाम)	२६	३०	९१	५०
लक्की	(सीमाप्रान्त)	३२	३७	७०	५७
लक्खी सरॉय	(विहार)	२५	१०	८६	५
लक्सम	(वगाल)	२३	[illegible]	९१	२
लख्तर	(पश्चिम)	२२	५६	७१	५४
लखनऊ	(उ प्र)	२६	५५	८१	०
लखनादौन	(म प्र)	२२	३६	७९	३९

अक्षांश–देशान्तर चक्र ७

[भारत स्टैण्डर्ड टाइम देशान्तर ८२।३०]

स्थान		अक्षांश		देशान्तर		स्थान		अक्षांश		देशान्तर	
रानी वन्नूर	(बम्बई)	१४	३३	७५	४१	रावनाबाद	(बगाल)	२१	५०	९०	३०
रावर्टसनपेठ	(मैसूर)	१२	५८	७८	१६	रावलपिण्डी	(पजाब)	३३	३७	७३	६
रामकोला	(म प्र, पूव)	२३	४०	८३	८	राहुन	(पजाब)	३०	५८	७६	२०
रामगढ	(बिहार)	२३	३८	८५	३४	राहुरी	(बम्बई)	१९	२३	७४	४२
रामगढ	(जयपुर)	२८	१०	७५	०	रिमा	(तिब्बत)	२८	१४	९७	१२
रामगढ	(म प्र)	२३	०	८१	०	रीवाँ	(म भा)	२४	३१	८१	१९
रामगिरि	(मद्रास)	१९	४	८३	५५	रीचना	(राचना-दोआब)	३१	३०	७३	१५
रामटेक	(म प्र)	२१	२४	७९	२०	रुक्मकोट	(नैपाल)	२८	३४	८२	४०
रामदुर्ग	(दक्षिण)	१५	५८	७५	२२	रुडकी	(उ प्र)	२९	५२	७७	५३
रामनगर	(म भा)	२४	११	८१	१२	रुडोल्फ लेक	(कन्या)	४	०	३५	४०
रामनगर	(म प्र)	२२	३६	८०	३३	रुहेलखण्ड	(उ प्र)	२८	३०	७९	०
रामनगर	(काश्मीर)	३२	५२	७५	२२	रूपनगर	(राजपूताना)	२६	४८	७४	५४
रामनगर	(पजाब)	३२	१९	७३	५०	रेकपल्ली	(मद्रास)	१७	३४	८१	२०
रामनद	(मद्रास)	९	२२	७८	५२	रेनी	(राजपूताना)	२८	४१	७५	५
रामपा	(मद्रास)	१७	२०	८१	५८	रेपल्ली	(मद्रास)	१६	२	८०	५३
रामपुर	(पजाब)	३१	२०	७८	०	रेवाडी	(पजाब)	२८	१२	७६	४०
रामपुर	(उडीसा)	२१	५	८४	२२	रेहली	(म प्र)	२३	३८	७९	५
रामपुर	(बिहार)	२८	४८	७९	५	रैपर	(पश्चिम)	२३	३२	७०	४०
रामपुर	(ग्वालियर)	२३	२८	७५	३०	रैपर	(मद्रास)	१४	१२	७९	३६
रामपुर	(उ प्र)	२८	५४	७९	२६	रोडी	(पजाब)	२९	४४	७५	१७
रामपुर, बोलिया	(बगाल)	२४	२२	८८	३९	रोम	(इटली)	४१	५५	१२	२८
रामल्लाकोट	(मद्रास)	१५	३५	७८	२	रोहतक	(पजाब)	२९	०	७६	८
रामेश्वर	(मद्रास)	९	१७	७९	२२	रोहितास	(बिहार)	२४	३६	८३	५२
रायगढ	(म प्र)	२१	५४	८३	२६	रोहरी	(सिन्ध)	२७	४१	६८	५७
रायचूर	(हैदराबाद)	१६	१२	७७	२१	रौजा, खुलदाबाद	(हैदराबाद)	२०	१	७५	१५
रायचोटी	(मद्रास)	१४	४	७८	५०	रगून	(बर्मा)	१६	४५	९६	१३
रायजादा	(उडीसा)	१९	६	८३	२७	रगपुर	(बगाल)	२५	४५	८९	१८
रायदुर्ग	(मद्रास)	१४	४२	७६	५३	रगमती	(बगाल)	२२	३८	९२	१५
रायनगर	(बगाल)	२३	२	८८	१	रगैया	(आसाम)	२६	३०	९१	५०
रायपुर	(म प्र)	२१	१५	८१	४१	लक्की	(सीमाप्रान्त)	३२	३७	७०	५७
रायपुर	(बंगाल)	२३	०	९०	५०	लक्खी सरॉय	(बिहार)	२५	१०	८६	५
रायविन्द	(पजाब)	३१	१०	७४	६	लक्सम	(बगाल)	२३	२	९१	२
रायबरेली	(उ प्र)	२६	१४	८१	१६	लग्नर	(पश्चिम)	२२	५९	७१	५४
रावकाका	(धर्मजयगढ)	२२	२८	८३	१५	लखनऊ	(उ प्र)	२६	५५	८१	०
रावतसर	(राजपूताना)	२९	१६	७४	२६	लग्नादौन	(म प्र.)	२२	३६	७९	३६

अक्षांश-देशान्तर चक्र ७

[भारत स्टैण्डर्ड टाइम देशान्तर ८२।३०]

स्थान		अक्षांश		देशान्तर		स्थान		अक्षांश		देशान्तर	
वेंकटपरम	(मद्रास)	१८	१७	८०	३६	सम्बलपुर, कैम्पवेलपुर	(पजाब)	३३	४७	७२	२३
वेंगरला	(बम्बई)	१५	५२	७३	४०	समथर	(ग्वालियर)	२५	५१	७८	४६
वेरावल	(बम्बई)	२०	५३	७०	२६	समरकन्द	(अफगानिस्तान)	३६	३०	६६	५०
वेल्लूर	(मद्रास)	१२	५५	७९	११	सरगुजा	(म भा)	२२	३१	८३	५
वेल्लूपुरम	(मद्रास)	११	५७	७९	३२	सरायकेला	(पूर्व)	२२	४२	८५	५८
वैकम	(ट्रावनकोर)	९	५०	७६	३०	सरांदा	(बिहार)	२२	१६	८५	१५
वृद्धाचलम	(मद्रास)	११	३२	७९	२४	सरदारशहर	(राजपूताना)	२८	२७	७३	४८
वन्दीवास	(मद्रास)	१२	३०	७९	३०	सरगोधा	(पजाब)	३२	२	७२	४०
वशाधारा	(मद्रास)	१९	०	८३	५०	सरैला	(म भा)	२५	४६	७९	४३
सकेसर	(पजाब)	३२	३२	७२	२	सरहिन्द	(पजाब)	३०	३८	७६	२९
सकोली	(म प्र)	२१	५	८०	१	सरकार्स	(मद्रास)	१८	०	८३	०
सकाजंग	(तिब्बत)	२९	२७	८५	८	सरगना	(गुजरात)	२०	३३	७३	२०
सकरदो	(काश्मीर)	३५	१२	७५	३५	सलवाड़	(म भा)	२५	५१	७८	१९
सक्खर	(सिन्ध)	२७	४२	६४	५५	सलेना	(नैपाल)	२८	२५	८२	१५
सगोली	(बिहार)	२६	४७	८४	४८	सलेम	(मद्रास)	११	३९	७८	१२
सगाइग	(बर्मा)	२१	५४	९६	२	सलूर	(मद्रास)	१८	३१	८३	१५
संगमनेर	(बम्बई)	१९	३५	७४	१६	सवाईमाधोपुर	(राजपूताना)	२५	५८	७६	३०
सच्चर, सिलचर	(आसाम)	२४	५०	९२	५१	ससरामा	(बिहार)	२४	५७	८४	३
सचिन	(बम्बई)	२१	५	७३	०	सहारनपुर	(उ प्र)	२९	५८	७७	२३
सतारा, सितारा	(बम्बई)	१७	४२	७४	२	सहर्प	(बिहार)	२५	५६	८६	५०
सतना	(म भा)	२४	३४	८०	५५	सहपुरा	(म प्र.)	२३	१०	८०	४५
सत्तीनपल्ली	(मद्रास)	१६	२४	८०	११	सकरनायनरकाविल	(मद्रास)	९	१०	७७	३५
सत्तुर	(मद्रास)	९	२१	७७	५८	सागर, हुगली	(बंगाल)	२१	४०	८८	१०
सत्यमगलम्	(मद्रास)	११	३०	७७	१७	सागर	(म प्र)	२३	५०	७८	५०
सन्थाल परगना	(बिहार)	२४	३०	८७	०	सागर	(हैदराबाद)	१६	३७	७६	५१
सदाशिवपेठ	(हैदराबाद)	१७	४५	७७	५८	साँगानेर	(जयपुर)	२६	४९	७५	४९
सदिया	(आसाम)	२७	५०	९५	४२	सॉगरूर	(पजाब)	३०	१२	७५	५३
सनोवर	(पटियाला)	३०	१८	७६	३०	सॉगारेड्डीपेठ	(हैदराबाद)	१७	३५	७८	२
सनहवे	(बर्मा)	१८	२८	९४	२७	सॉगली	(दक्षिण)	१६	५२	७४	३६
सपाटू	(पजाब)	३०	५८	७७	०	सॉगसूप	(बर्मा)	२४	२४	९४	४४
समना	(पजाब)	३०		७६	१६	साँचर	(जोधपुर)	२४	३६	७१	५४
समस्ता	(पजाब)	२९	२०	७१	३३	सातपगोडा	(मद्रास)	१२	३७	८०	१४
समस्तीपुर	(बिहार)	२५	५५	८५	५०	सादरा	(गुजरात)	२३	२०	७३	४७
सम्भल	(उ प्र)	२८	३५	७८	३७	साँभर	(राजपूताना)	२६	५४	७५	१३
सम्भलपुर	(उडीसा)	२१	२८	८४	१	सामका	(बर्मा)	२०	८	९७	१

अक्षांश – देशान्तर चक्र ७

[भारत स्टैण्डर्ड टाइम देशान्तर ८२।३०]

स्थान		अक्षांश		देशांतर		स्थान		अक्षांश		देशांतर	
सेन्दुर	(मद्रास)	१५	२	७६	३६	शाहपुर	(दक्षिण)	१५	५०	७४	३४
सेनवी	(वर्मा)	२३	१८	६८	०	शाहपुरा	(राजपूताना)	२७	२३	७५	१
सेलम, सलेम	(मद्रास)	११	३६	७८	१२	शाहबन्दर	(बम्बई)	२४	१०	६७	५६
सेवाग्राम [गांधी-आश्रम]	(वर्धा)	२०	४५	७८	३७	शाहाबाद	(उ. प्र)	२७	३०	८०	५
सेहडा	(बिहार)	२५	२८	८४	४५	शाहाबाद	(उ प्र)	२०	३६	७८	५६
सेहवॉ	(सिन्ध)	२६	२६	६७	५४	शाहाबाद	(पजाब)	३०	१०	७६	५५
सैगॉव [कोचीन]	(चीन)	१०	४६	१०६	४१	शाहाबाद	(हैदराबाद)	१७	१०	७८	११
सैदपुर	(उ प्र)	२५	३२	८३	१६	शिकार	(राजपूताना)	२७	३६	७५	१५
सैदापेठ	(मद्रास)	१३	२	८०	१६	शिकारपुर	(मैसूर)	१४	१६	७५	२४
सैयदवाला	(पजाब)	३१	६	७३	३१	शिकारपुर	(सिन्ध)	२७	५७	६८	४०
सैलाना	(म भा)	२३	३१	७५	१	शिनकोटा	(ट्रावनकोर)	६	०	७७	१८
सोनाखान	(म प्र)	२१	३६	८२	३६	शिमला	(पंजाब)	३१	६	७७	१३
सोनपुर	(बिहार)	२५	४२	८५	१३	शिमोगा	(मैसूर)	१३	५६	७५	३८
सोनपुर	(उड़ीसा)	२०	५१	८४	०	शिलॉग	(आसाम)	२५	३४	९१	५६
सोनारपुर	(उ प्र.)	२८	२७	८०	५७	शिलगढी	(नैपाल)	२९	१२	८१	६
सोनेपेठ	(हैदराबाद)	१९	३	७६	३०	शिलगढ़ी	(बगाल)	२६	४२	८८	२५
सोनहाट	(पूर्व)	२३	२८	८२	३०	शिवगंगा	(मद्रास)	९	५१	७८	३०
सोपुर	(काश्मीर)	३४	१९	७४	३०	शिवपुर	(म भा)	२५	३९	७६	४१
सोबरन	(पंजाब)	३१	५	७४	३२	शिवपुरी	(ग्वालियर)	२५	४०	७७	४४
सोमनाथ [पाटन]	(पश्चिम)	२१	४	७०	२६	शिवसमुद्रम	(मद्रास)	१२	१६	७७	१३
सोरों, शूकरक्षेत्र	(उ प्र)	२७	५२	७८	४८	शिवसागर	(आसाम)	२७	०	९४	४१
सोलन	(पजाब)	३०	५५	७७	९	शिवरायचोटी	(मद्रास)	११	०	७८	०
सोहागपुर	(म प्र)	२२	४२	७८	१७	शुजाबाद	(पजाब)	२९	५३	७१	२०
सोहागपुर	(म भा)	२३	२०	८१	२४	शुभराम	(बगाल)	२२	४८	९१	९
सोहावल	(म भा)	२४	३५	८०	५०	शेखावटी	(जयपुर)	२७	५५	७४	५०
सोहिला	(उड़ीसा)	२१	१८	८३	२६	शेखूपुरा	(बिहार)	२५	९	८५	५३
सौंसर [छिन्दवाड़ा]	(म प्र)	२१	५२	७८	५०	शेखूपुरा	(पजाब)	३१	३०	७४	०
शक्ति	(म प्र)	२२	१	८३	०	शेगाँव [यौतमाल]	(म प्र)	२०	४८	७६	४६
शान्तीपुर	(बगाल)	२३	१४	८८	२९	शेजापुर	(ग्वालियर)	२३	२६	७६	१८
शारकपुर	(पजाब)	३१	२७	७४	६	शेरगढ	(राजपूताना)	२४	४०	७६	३२
शाहगढ	(राजपूताना)	२७	८	६९	५७	शेरपुर	(बगाल)	२४	४०	८९	२८
शाहजहाँपुर	(उ प्र)	२७	५५	७९	५७	शेपाचलम्	(मद्रास)	१४	१०	७८	३०
शाहडेरी	(पजाब)	३३	१७	७२	४९	श्वेगियन	(बर्मा)	१७	५५	९६	५८
शाहदरा	(पंजाब)	२८	४०	७७	२०	श्वेडो	(बर्मा)	२२	२३	९५	४५
शाहपुर	(पजाब)	३२	१६	७२	३१	श्वेडाउन	(बर्मा)	१८	४२	९५	१८

अक्षांश–देशान्तर चक्र ७

[भारत स्टैण्डर्ड टाइम देशान्तर ८२।३०]

स्थान		अक्षांश		देशान्तर	
शोरकोट	(पंजाब)	३०	५०	७२	६
शोरनपुर	(मद्रास)	१०	५०	७६	४६
शोलापुर	(बम्बई)	१७	४	७५	५२
शृंगपट्टम	(मैसूर)	१२	२६	७६	४३
शृंगेरी	(मैसूर)	१३	२५	७५	१५
श्रीगांडा	(बम्बई)	१८	४१	७४	४४
श्रीनगर	(काश्मीर)	३४	६	७४	५०
श्रीनगवराप्पुकोट	(मद्रास)	१८	६	८३	११
श्रीमाधोपुर	(राजपूताना)	२७	२५	७५	२५
श्रीरामपुर	(बंगाल)	२२	४५	८८	२४
श्रीरंगम्	(मद्रास)	१०	५२	७८	४०
श्रीरंगपत्तन	(मद्रास)	१२	२५	७६	४८
श्रीवर्धन	(बम्बई)	१८	२	७३	०
श्रीविल्लीपुर	(मद्रास)	९	३१	७७	४०
श्रीहरिकोट	(मद्रास)	१३	४५	८०	१५
हजारीबाग	(बिहार)	२४	०	८५	२५
हटा	(म प्र)	२४	७	७९	१८
हड़पनाहल्ली	(मद्रास)	१४	४७	७५	५८
हनामकुण्डा	(हैदराबाद)	१८	३	७९	३२
हनुमानगढ़	(भटनेर)	२९	३५	७४	१
हमीरपुर	(उ प्र)	२५	५८	८०	१०
हरीज	(बम्बई)	२३	५७	७१	३४
हरदा	(म प्र)	२२	२१	७७	८
हरदोई	(उ प्र)	२७	२५	८०	१०
हरिद्वार	(उ प्र)	२९	५८	७८	१३
हरिनघाट नदी	(बंगाल)	२२		९०	०
हरनहल्ली	(मैसूर)	१३	१५	७६	१६
हरौंड	(पंजाब)	३०	३५	७०	५८
हरिहरक्षेत्र	(बिहार)	२५	४०	८५	१४
हरिहर	(मैसूर)	१४	३१	७५	५८
हसन हार्स	(मैसूर)	१३	१	७६	१०
हसनअब्दुल	(पंजाब)	३३	४८	७२	४५
हसनपार्ती	(हैदराबाद)	१८	१०	७९	३६
हसूर, हासुर	(मद्रास)	१२	४४	७७	५०
हाँगकाँग	(चीन)	२२	१६	११४	९
हाजरा	(पंजाब)	३३	५५	७२	३५

स्थान		अक्षांश		देशान्तर	
हाजीपुर	(बिहार)	२५	४१	८५	१४
हाथरस	(उ प्र)	२७	३६	७८	६
हानोबर	(बम्बई)	१४	१७	७५	८
हापुड़	(उ प्र)	२८	४३	७७	४७
हबीगञ्ज	(आसाम)	२४	२४	९१	२५
हाला	(सिन्ध)	२५	४९	६८	२५
हालेनरसीपुर	(मैसूर)	१२	४७	७६	१४
हावड़ा	(कलकत्ता)	२२	३५	८८	२१
हाँसी	(पंजाब)	२९	६	७६	०
हासपेठ	(मद्रास)	१५	१६	७६	२६
हिंगलाज	(बलूचिस्तान)	२५	३०	६५	३१
हिंगोली	(हैदराबाद)	१९	४०	७७	११
हिण्डौन	(राजपूताना)	२६	४४	७७	२
हिपकास	(पूप)	२	३६	९८	१४
हिन्दूमाली	(पंजाब)	३१	४८	७२	४२
हिन्दूपुर	(मद्रास)	१३	४	७७	११
हिन्दूबाग	(बलूचिस्तान)	३०	२६	६७	४५
हिमालय पर्वत	(पूप)	२८	०	८८	
हिरात	(अफगानिस्तान)	३४	२८	६२	८
हिरोशिमा	(जापान)	३४	२८	१३२	२८
हिसार	(पंजाब)	२९	९	७५	४३
हिसारग्लेशियर	(काश्मीर)	३६	४	७५	२
हींगनघाट	(म प्र)	२०	३४	७८	५१
हुगली	(बंगाल)	२२	५४	८८	२६
हुबली	(बम्बई)	१५	२०	७५	११
हुमनाबाद	(हैदराबाद)	१७	४७	७७	१२
हैदराबाद	(दक्षिण)	१७	२	७८	
हैदराबाद	(सिन्ध)	२५	२३	६८	२८
होशंगाबाद	(म प्र)	२२	४६	७७	४५
होशियारपुर	(पंजाब)	३१	३१	७५	५०
होनार	(बम्बई)	१४	१५	७४	२२
हुंजा	(गिलगित)	३६	२१	७४	४२
हेनाडा	(बर्मा)	१७	३५	९५	२७
हसाली	(मैसूर)	१४	१३	७६	४१
हंसदुर्ग	(मैसूर)	१३	४८	७६	१९
हंसर	(मैसूर)	१०	१२	७६	१६

रेखान्तर-देश

[ग्रह-गणित-द्वारा]

स्थान		अक्षांश		देशांतर		स्थान		अक्षांश		देशांतर	
जालन्धर	(पंजाब)	३१	१६	७५	५०	शोलापुर	(बम्बई)	१७	४०	७५	५२
जयपुर	(राजपूताना)	२६	५५	७५	५२	बागलकोट	(बम्बई)	१६	१२	७५	४८
टोंक	(राजपूताना)	२६	११	७५	५०	हरिहर	(मैसूर)	१४	३१	७५	५२
कोटा	(राजपूताना)	२५	१०	७५	५२	चिकमगलूर	(मैसूर)	१३	१०	७५	४६
उज्जैन	(म भा)	२३	६	७५	५०	मडकेरा	(कुर्ग)	१२	२०	७५	४८
भुसावल	(बम्बई)	२१	२	७५	४६	कालीकट	(मद्रास)	११	१२	७५	५०
अस्साये	(हैदराबाद)	२०	१५	७५	५२	देवकन्या	(केप कामोरिन)	८	४	७५	५०
बीड [भास्करपुर]	(बम्बई)	१८	५८	७५	४८	लंका	(दक्षिण)	०	०	७५	५०

उज्जैन-रेखान्तर-समीपस्थ-नगर

[वर्तमान समय में]

स्थान		अक्षांश		देशांतर		स्थान		अक्षांश		देशांतर	
द्रास	(काश्मीर)	३४	१८	७५	४६	उज्जैन	(म भा)	२३	६	७५	५०
भादरवाह	(काश्मीर)	३३	४	७५	५०	महू	(म भा)	२२	४५	७५	४६
टॉडा आर्मर	(पंजाब)	३१	४०	७५	४६	भुसावल	(बम्बई)	२१	२	७५	४६
जालन्धर	(पंजाब)	३१	१६	७५	५०	जामनेर	(बम्बई)	२०	३२	७५	५०
फागवाडा	(पंजाब)	३१	६	७५	५०	भीर	(हैदराबाद)	१६	०	७५	५०
फिल्लौर	(पंजाब)	३०	५८	७५	५०	बीड	(बम्बई)	१८	५८	७५	४६
सुनाम	(पंजाब)	३०	८	७५	५१	बारसी	(बम्बई)	१८	१३	७५	५०
जाख	(पंजाब)	२६	४५	७५	५०	शोलापुर	(बम्बई)	१७	४०	७५	५२
लुहारू	(पंजाब)	२८	१६	७५	५०	बीजापुर	(बम्बई)	१६	५०	७५	४६
खेवरी	(पंजाब)	२८	०	७५	५०	बागलकोट	(बम्बई)	१६	१२	७५	४८
जयपुर	(राजपूताना)	२६	५५	७५	५२	हरिहर	(मैसूर)	१४	३१	७५	५२
सांगानेर	(जयपुर)	२६	४६	७५	४६	ताडीकरि	(मद्रास)	१३	४२	७५	५१
टोंक	(जयपुर)	२६	११	७५	५०	चिकमगलूर	(मैसूर)	१३	१०	७५	४६
डुंगरी	(राजपूताना)	२५	४०	७५	५०	मडकेरा	(कुर्ग)	१२	२०	७५	४८
कोटा	(राजपूताना)	२५	१०	७५	५२	कुड्डालोर	(मद्रास)	११	१३	७५	४६
भानपुर	(राजपूताना)	२४	३२	७५	५१	कालीकट	(मद्रास)	११	१२	७५	५०
खाटरी	(म. भा.)	२३	५६	७५	५०	वेदपुर	(मद्रास)	११	१०	७५	५०
धार	(म. भा)	२३	५६	७५	५०	लंका	(दक्षिण)	०	०	७५	५०

भारत स्टैण्डर्ड टाइम समीपस्थ नगर		अक्षांश		देशांतर	
विन्ध्याचल स्टेशन	(पूर्वी रेलवे)	२५	१०	८२	३०
सोनहाट	(मध्यप्रदेश)	२३	२८	८२	३०
गोलगुण्डा	(मद्रास)	१७	४१	८२	३१

निरक्ष-देश		अक्षांश		देशान्तर	
पोर्निया	(पूर्वी गोलार्ध)	०	०	११५	० पूर्व
सुमात्रा	(डच ईस्ट इण्डिया)	०	०	१०२	० पू
लंका	(भारत-दक्षिण)	०	०	७५	५० पू
मिस्समेया	(इटालियन सोमालीलैंड)		३ द.	४५	३० पू
इस्टेम्बी	(उगान्डा)		२ द.	३२	३० पू.
स्टेनले फाल्स	(बेल्जियन कांगो)		०	२५	२ पू
फ्रेंच इक्वटोरियल	(अफ्रीका)		०	१६	० पू.
मेकापा	(दक्षिण अमेरिका)	०		५१	२ प
क्वीटो	(इक्वेडर)	०	१० द.	७८	३५ प

मरीडियन टाइम

पृथ्वी घूमती हुई जब १६ अंश का मार्ग पार करती है, तब सूर्य भी अपनी धुरी पर घूमता हुआ, एक अंश का मार्ग पार करता है। अतएव पृथ्वी-गति (भू-भ्रमण) के कारण जब अमेरिका में ६ बजे प्रातः होता है तब ठीक उसी समय—

लन्दन में = १२ बजे दिन होता है।
भारत में = ६ बजे शाम होती है।
फिजीद्वीप में = १२ बजे रात होती है।

समय-घड़ी

मध्य रात्रि से तारीख बदलना

स्थान	अंश			तारीख	समय		समय
समस्तपुर (बंगाल) अस्त्र्यों (तिब्बत) भूटान स्टेट	६		पू	२४ तारीख	६ बजे प्रात	अथवा	१२ बजे रात
रूस, चीन स्याम मलाया साइबेरिया फिलकाया पैनान	१ ५		पू		७ बजे दिन	"	१ बजे रात
डच ईस्ट इण्डिया चीन	१२		पू		८ बजे दिन	"	२ बजे रात
रूस, जापान, आस्ट्रेलिया	१३५		पू		९ बजे दिन	"	३ बजे रात
न्यू साउथ वेल्स पैसिफिक सागर	१५	०	पू		१ बजे दिन	'	४ बजे रात
रूस सालमन द्वीप, कैलेडोनिया न्यूजीलैंड	१६५		पू.		११ बजे दिन	'	५ बजे रात
फिजीद्वीप रूस	१८०	०	पू प		१२ बजे मध्याह्न		६ बजे प्रात
पश्चिमी अलास्का प्रान्त (उ. अमेरिका) पोलीनिसिया	१६५	०	प	२३ तारीख	१ बजे दिन		७ बजे दिन
पूर्वी अलास्का प्रान्त (उत्तरी अमरिका)	१५०	०	प		२ बजे दिन	'	८ बजे दिन
पश्चिमी कनाडा उत्तरी अमेरिका सेनफ्रान्सिस्को	१३५	०	प		३ बजे दिन	"	९ बजे दिन
यूकन आइसलैंड, नार्थवेस्टटेरेटरी (उत्तरी अमेरिका)	१२		प		४ बजे दिन	'	१० बजे दिन
डेनवर कनाडा मेक्सिको (उत्तरी अमरिका)	१ ५		प		५ बजे दिन	"	११ बजे दिन
कनाडा संयुक्त अमेरिका, इक्वेडर (दक्षिणी अमरिका)	९	०	प		६ बजे शाम		१२ बजे मध्याह्न
	७५		प		७ बजे रात		१ बजे दिन
बफाइन नार्थ-वेस्ट टैरेटरी (उत्तरी अमेरिका) ब्राज़ील	६०		प		८ बजे रात		२ बजे दिन
ग्रामलान ग्रेन लाको, आइसलैंड ग्रीनलैंड	४५		प		९ बजे रात	"	३ बजे दिन
डेनमार्क स्ट्राट (ग्रीनलैंड) दक्षिणी जार्जिया	३		प		१० बजे रात	'	४ बजे दिन
आइसलैंड, पश्चिमी गम्बिया सेंट हेलना अटलान्टिक	१५		प		११ बजे रात	"	५ बजे दिन
ग्रीनविच मेड्रिड फ्रेंच वेस्ट अफ्रीका अलजीरिया			प पू		१२ बजे रात	'	६ बजे शाम
स्वीडन रोम नाइजीरिया, फ्रान्स कोडान्गया	१५		पू.	२४ तारीख	१ बजे रात	"	७ बजे रात
बेल्जियम, टर्की सूडान, इजिप्ट	३०	०	पू.		२ बजे रात	'	८ बजे रात
रूस परसिया अरबिया इथोपिया मेडागास्कर	४५	०	पू		३ बजे रात	"	९ बजे रात
रूस परसिया हिन्द-महासागर	६		पू		४ बजे रात	"	१० बजे रात
करांची प्रान्त का पूर्वी भाग (पाकिस्तान)	६७	३	पू		४½ बजे रात	"	१०½ बजे रात
भटिंडा (पंजाब) चुरू (बीकानेर)	७५		पू.		५ बजे रात	"	११ बजे रात
स्टैन्डर्ड टाइम विन्ध्याचल स्टेशन (पूर्वरिक्षि) गाजीपुरवा	८२	३	पू		५½ बजे रात		११½ बजे रात
समस्तपुर (बंगाल) अस्त्र्यों (तिब्बत) भूटान स्टेट	८०		पू		६ बजे प्रात		१२ बजे रात

देशों के स्टैण्डर्ड-टाइम का देशान्तर

(१) चाथम आइसलैंड, न्यूजीलैंड, फिजीद्वीप	१८०	०पूर्वीगोलार्ध
(२) लार्डहाउ आइसलैंड	१७५	३० पू.
(३) आट्रेलियन केपिटल टेरेटरी, मखलिन (उत्तरी उत्तर अक्षाश ५०।० वाला)	१५०	० पू.
(४) मलूकस आइसलैंड, नान्यो गुण्ड्ट्, ओम्बे, पेण्टर, सखलिन [शेष २१ नं० पर] ❀	१३५	० पू
(५) वाली, वेलीटॉग, वोर्नियो (डच) इण्डोचाइना, जावा, मदुरा, लम्बलिम, लम्बक	१२०	० पू
(६) फेड्रटेड मलाया स्टेट, स्ट्रेट्स् सेटिलमेण्ट्स	११२	३० पू
(७) चीन (यॉगकिंग, चुगकिंग से शाञ्से तक) रियो आइसलैंड, सुमात्रा, रसिया (पूर्वी)	१०५	० पू
(८) भारत (विन्ध्याचल-स्टेशन, उत्तर-प्रदेश) कलकत्ता (ईस्ट इण्डिया कम्पनी)	८२	३० पू.
(९) करॉची (पाकिस्तान) सिन्ध, बलूचिस्तान	६७	३० पू
(१०) वहराइन, ओमन (मसीरा, सलाला) ट्रसियल ओमन (सर्जा)	६०	० पू
(११) अदन, कन्या (दक्षिण अफ्रीका), जजीबार, उगण्डा, टॉगानयिका, ब्रिटिश सोमालीलैंड	४५	० पू
(१२) लीविया (क्रिनाइका) मास्को (पश्चिमी रसिया)	३०	० पू
(१३) लीबिया (ट्रिपोलीटानिया), हॉलैण्ड, जर्मन	१५	० पू
(१४) गेम्बिया, ग्रीनविच (इगलैण्ट) सिर्रालिनो, स्टेट हेलन, फ्रांस	०	० प गोलार्ध
(१५) चाइल (दक्षिण अमेरिका) डोमीनिकन रीपब्लिक, कोलम्बिया, पेरू	७५	० पश्चिम
(१६) मेक्सिको (उत्तर अमेरिका) एक्जिम्प, सोनोरा स्टेट, सिनालो, नयारिट	९०	० प
(१७) लोअर केलीफोर्निया की टेरेटरी, क्लिच कीप	१०५	० प
(१८) अलास्का,(द. पू कास्ट इन्क्लूडिंग क्रास साउण्ड) डगलस,जनेवा,फिरमारमकोव,पीटर्सवर्ग	१२०	० प
(१९) अलास्का, (उ प कास्ट ऑफ क्रास साउण्ड और इन्क्लूडिंग प्रिंस विलियम साउण्ड)	१३५	० प
(२०) हवाइयन आइसलैंड	१५०	० प
(२१) मिड वे आइसलैंड ❀[दक्षिणी उत्तर अक्षाश ५०। ०वाला, साबू, टिमर(डच), वेट्रा]	१६५	० प

स्टैण्डर्ड-टाइम के स्थान

स्थान		अक्षांश		देशान्तर		स्टैण्डर्ड टाइम देशान्तर
(१) चाथम आइसलैण्ड	(न्यूजीलैण्ड)	४४	० द	१७६	३५ प	१८०।० पूर्व
फिजी द्वीप		१६	० द	१८०	० पू	,,
(२) लार्ड हाउ आइसलैण्ड	(पैसफिक सागर)	३१	४६ द	१५६	८ पू	१५७।३० पूर्व
(३) आस्ट्रेलियन देश	(केपिटल टेरेटरी)	३३	२७ द	१५०	० पू.	१५०।० पूर्व
सखलिन उत्तरी	(रसियन-जापानी)	५०	० उ	१४३	० पू	,,
(४) मलूकस आइसलैण्ड	(नान्योगुण्ड्ट्, ओम्बे, पेण्टर)	२	० द	१२८	० पू	१३५।० पूर्व
सखलिन दक्षिणी (साबू, वेट्रा)		५०	० उ	१४३	० पू	,,
टिमर (मलक्का आइसलैण्ड)	(इस्ट इण्डीज)	१०	० द	१२५	० पू	,,
(५) वाली द्वीप (वेलीटॉग)	(डच इस्ट इण्डीज)	८	२० द	११५	० पू	१२०।० पूर्व
वोर्नियो	,,	०	०	११५	० पू	,
लम्बक (लम्बलिम)	,,	८	३० द	११६	२० पू	,,
जावा (वटाविया)	,,	७	३० द	११०	० पू	,,
मदुरा (जावा)		७	० द	११३	० पू	,,
इण्डोचाइना और श्याम (स्याम)		१५	० द.	१०५	० पू	,,

(भूल) आक्सफोर्ड मे (उ प्र) कानपुर का अक्षाश २४।२८ (है) (सशोधन की भूल)
(ठीक) लॉगमैन में " २६।२८ (है)
(ठीक) आक्सफोर्ड में (बम्बई) धूलिया का अक्षाश २०।५८ (है)
(भूल) लॉगमैन में " १२। ० (है) २१।० होना चाहिए। इत्यादि।

अतएव किसी भी एटलास की छपाई पर निश्चित (पूर्ण प्रमाण) नहीं किया जा सकता। इसमें २१०० स्थानों के अक्षाश-देशान्तर लिखे गये हैं। मुझे लिखते समय यह अवश्य आभास हुआ कि, अपेक्षा-कृत आक्सफोर्ड एटलास मे मैप (नाप) की अधिक शुद्धता एव सूक्ष्मता से कार्य किया गया है। अस्तु।

पलभा-साधन चक्र ८ (क)

अक्षाश	अंक	अक्षाश	अंक	अक्षाश	अंक	अक्षाश	अंक	अक्षाश	अंक	अक्षाश	अंक	अक्षाश	अंक
१	०१७५	१४	२४६३	२७	५०९५	४०	८३९१	५३	१ ३२७०	६६	२ २४६०	७९	५ १४४६
२	०३४९	१५	२६७९	२८	५३१७	४१	८६९३	५४	१ ३७६४	६७	२ ३५५९	८०	५ ६७१३
३	०५२४	१६	२८६७	२९	५५४३	४२	९००४	५५	१ ४२८१	६८	२ ४७५१	८१	६ ३१३८
४	०६९९	१७	३०५७	३०	५७७३	४३	९३२५	५६	१·४८२६	६९	२ ६०५१	८२	७ ११५४
५	०८७५	१८	३२४९	३१	६००९	४४	९६५७	५७	१ ५३९९	७०	२ ७४७५	८३	८ १४४३
६	१०५१	१९	३४४३	३२	६२४९	४५	१ ००००	५८	१ ६००३	७१	२ ९०४२	८४	९ ५१४४
७	१२२८	२०	३६४०	३३	६४९४	४६	१ ०३५५	५९	१ ६६४३	७२	३ ०७७७	८५	११ ४३०१
८	१४०५	२१	३८३९	३४	६७४५	४७	१ ०७२४	६०	१ ७३२१	७३	३ २७०९	८६	१४ ३००७
९	१५८४	२२	४०४०	३५	७००२	४८	१ ११०६	६१	१ ८०४०	७४	३ ४८७४	८७	१९ ०८११
१०	१७६३	२३	४२४५	३६	७२६५	४९	१ १५०४	६२	१ ८८०७	७५	३ ७३२१	८८	२८ ६३६२
११	१९४४	२४	४४५२	३७	७५३६	५०	१ १९१८	६३	१ ९६२६	७६	४ ०१०८	८९	५७ २९००
१२	२१२६	२५	४६६३	३८	७८१३	५१	१ २३४९	६४	२ ०५०३	७७	४ ३३१५	९०	अनन्त
१३	२३०९	२६	·४८७७	३९	८०९८	५२	१ २७९९	६५	२ १४४४	७८	४ ७०४६		

चक्र ८ (क) से पलभा-साधन

चक्र ८ (क) में अक्षाश के सामने (दाहिने) वाले अक (स्पर्शरेखा) मे १२ का गुणा करने पर पलभा होती है। यथा—

२३ अक्षाश के सामने का अक ४२४५ × १२ = पलभा (५ ०९४०) अगुल (५ + ०९४०)

नोट—

दशमलव चिन्ह ( ) के दाहिनी ओर वाली सख्या में ६ का गुणा करने से पलभा के व्यगुलादि बन जाते हैं। यथा— पलभा ५ ०९४० है तो—

०९४० × ६	= ५ ६४०	= पलभा ५।५।३८।२४ हुई।
६४० × ६	= ३८ ४०	
४० × ६	= २४ ०	

चक्र ८ (क) से अक्षांश-साधन

पलभा के अन्तिम अंक में ६ से भाग दीजिये क्रमशः दशमलव बनता जाता है। इस प्रकार पलभा को दशमलव बनाकर १२ से भाग दीजिए, लब्धि के अंक-समान चक्र ८ (क) के द्वारा अक्षांश जानिए। यथा—

पलभा ५।५।३८।२४ ÷ ६ = ५।५।३८.४

५।५।३८.४ ÷ ६ = ५।५.६४

५।५.६४ ÷ ६ = ५.०९४ (दशमलव)

५.०९४ (दशमलव) ÷ १२ = .४२४५ लगभग (अंक)

अंक (.४२४५) के समान चक्र ८ (क) में २३ अक्षांश हैं।

चक्र १० से पलभा-ज्ञान

चक्र १ में ८ अक्षांश से ३६ अक्षांश तक की पलभा बतायी गयी है। अनुपात (त्रैराशिक) द्वारा अपने अक्षांश की पलभा जानिए। प्रत्येक स्थानों के अक्षांश, अंश-कला के रूप में लिखे गये हैं। अपने (अक्षांश के) अंश और आगे के अंश की पलभा का अन्तर कीजिए, शेष में अपने (अक्षांश के) कला का गुणा कर ६ से भाग दीजिए लब्धि को अपने (अक्षांश के) अंश की पलभा में जोड़ दीजिए तो, आपके स्थान की पलभा हो जायगी। यथा—

जबलपुर का अक्षांश २३।१० है। चक्र १ में २३ अंश की पलभा ५।५।३७ है और २४ अंश की पलभा ५।२०।२२ है दोनों का अन्तर (शेष) ०।१४।४६ अंगुलादि हुआ। ।१४।४६ में अक्षांश की कला (१०) का गुणा किया तो २।२८।२० हुआ इसमें ६० से भाग दिया तो लब्धि ।२।२८।२० अंगुलादि में ५।५।३७ (२३ अक्षांश की पलभा) को जोड़ने से ५।८।६।२० स्पष्ट पलभा (५।८ अंगुलादि व्यवहार योग्य) जबलपुर अक्षांश (२३।१०) के आधार पर हुई।

पलभा द्वारा अक्षांश-ज्ञान

(१) 'अक्षाख्याभा पंचगुण्यभाया कृतिदशमलवोनापमाशा पलांशा ।" ग्रह-लाघव

अर्थात् पलभा में ५ का गुणा कीजिए फिर पलभा के वर्ग का दशमांश घटाइए, तो अक्षांश बन जाता है। किन्तु इस नियम से स्थूल अक्षांश बन पाता है। इसमें ५ का गुणा करना तथा पलभा के वर्ग दशमांश भी समान रूप में न होना ही स्थूलता है। "समद्विघातः कृतिरुच्यते। लीलावती। अर्थात् किसी भी संख्या का उसी संख्या से गुणा करने पर वर्ग होता है। यथा—

१ का वर्ग १ २ का वर्ग ४ ३ का वर्ग ९ ४ का वर्ग १६ ५ का वर्ग २५ इत्यादि।

उदाहरण

जबलपुर की पलभा ५।८।६।२ है इसमें ५ का गुणा किया तो = २५।४०।३१।४० हुए।

पलभा के वर्ग (५।८ × ५।८ = २६।२१।४) का दशमांश = २।३८ घटाया

जबलपुर का अक्षांश (स्थूल) = २३। २।३२ शेष

(२) एक महोदय ने पलभा में ८०३ का गुणा करके १८१ से भाग देने पर अक्षांश हो जाना लिखा है। परन्तु यह नियम तो अत्यन्त स्थूलता लाता है। यथा—

चक्र १ में ८ अक्षांश की पलभा १।४१।११ लिखी गयी है तो १।४१।११ में ८०३ का गुणा करने पर १३५४।१ ।१३ हुए, इसमें १८१ से भाग देने पर लब्धि में ७।२९ ही अक्षांश आ रहा है। हाँ यह नियम केवल ग्वालियर अक्षांश २६।१४ पर ही घटित हो रहा है—

ग्वालियर पलभा ५।५४।५ है; इसमें ८०३ का गुणा करने पर लगभग ४७४५ होता है, इस गुणनफल में १८१ से भाग देने पर २६।१४ आकर ४६ मात्र शेष रह जाते हैं। पूर्वोक्त नियम सर्वत्र लागू न होने का कारण गुणज्या-कोटिज्या का असमान रूप ही है, क्योंकि ८ अक्षांश की गुणज्या ११८१७ को दो से गुणा करने पर २३६३४ न होकर केवल २७५६४ ही गुणज्या (८ × २ = १६ अक्षांश की) हो पाती है। अस्तु।

(३) यदि पलभा में ५ का गुणा कर, पलमार्ध को अंशादि मानकर घटा दें तो, पूर्वोक्त दोनों नियमों में भी अधिक सूक्ष्म एव शुद्ध अक्षाश, जबलपुर के समीपस्थ स्थानों का निकल आता है। परन्तु यह नियम सार्वत्रिक ठीक नहीं हो पाता। विभिन्न प्रकार से ऐसे-ऐसे नियम, केवल अपने स्थान के लिए, सभी गणितज्ञ बना सकते हैं, किन्तु सर्वदा चक्र ८ (क) के द्वारा सार्वत्रिक शुद्ध-नियम का उपयोग कीजिए।

अयनांश की गतियाँ

सूर्यसिद्धान्त-द्वारा

त्रिंशत्कृत्यो युगे भाना चक्र प्राक्परिलम्बते। तद्गुणाद्भूदिनैर्भक्ता द्युगणाद्यदवाप्यते ॥
तद्दोस्त्रिघ्ना दशाप्ताशा विज्ञेया अयनाभिधा। तत्संस्कृताद् ग्रहात्क्रान्तिच्छायाचरदलादिकम् ॥

युगादि अहर्गण को, युग-अयनाश-भगण (६००) का गुणा करके युगकुदिन (१५७७९१७८२८) से भाग दें, तो लब्धि मे अयनाश के गतभगण, शेष मे १२ का गुणा कर युगकुदिन से भाग दे, तो लब्धि में राशि, शेष में ३० का गुणा करके युगकुदिन से भाग दें तो, लब्धि मे अश, इसी प्रकार शेष मे ६०-६० का गुणाकर, युगकुदिन से भाग दें, तो लब्धि में कला-विकला मिलेंगे। इस लब्धि राश्यादि का भुज बनाकर, ३ का गुणा करके १० से भाग दें तो, लब्धि में अयन के अंश (अयनाशादि) प्राप्त होंगे।

यथा—शके १८७४ मेषार्क दिन में अयनाश क्या होगा?

शके	१८७० = ८।३२।१६।३०	॥ ३ ॥	(मकरन्द-द्वारा)
	+५ = ०। ०।३०।२६	॥ ६ ॥	(,,)
शके	१८७५ में ८।३२।४६।५६	अहर्गण-वल्ली दिन २ = सोमवार।	

८।३२।४६।५६ = अहर्गण १८४६०१६ युगादि (मेषार्क में)

$$\frac{१८४६०१६ \times ६००}{युगकुदिन (१५७७९१७८२८)} = ० \text{ भगण} + \frac{११०७६०६६००}{युगकुदिन} = ८।१२।४१।५६$$

यथा—　११०७६०६६०० × १२
१५७७९१७८२८) १३२९१३१५२०० (८
　　　　१२६२३३४२६२४
　　　　　६६७९७२५७६ × ३०
१५७७९१७८२८) २००३९१७७२८० (१२
　　　　१८९३५०१३९३६
　　　　　११०४१६३३४४ × ६०
१५७७९१७८२८) ६६२४९८००६४० (४२
　　　　६३११६७१३१२
　　　　　३१३३०८७५७०
अधिक = ३१५५८३५६५६
अधिकाश = २२७४८१३६ (स्वल्प)
अत ४२।० के स्थान में ४१।५६ रखा।

८।१२।४१।५६ = लब्धि (राश्यादि)

$$\text{भुजाश} \quad \frac{७२।४१।५६ \times ३}{१०}$$

$$= \frac{२१८।५।४८}{१०}$$

$$= २१।४८।३५।४२ = \text{अयनाश}$$

रवि-सिद्धान्त-मजरी का भी यही अयनाश होता है। इसी को मकरन्दकार ने कितनी सरलता से बताया है। देखिये—

मकरन्द-द्वारा

शके में से ४२१ घटाकर, शेषवर्ष का दशांश, शेषवर्ष में से घटाकर, शेष में ६० से भाग दें, तो लब्धि में अयनाश होता है। यथा—

शाक १८७५ − ४२१ = १४५४ शेषवर्ष

१४५४ ÷ १० = १४५। ४ (शेषवर्ष का दशांश)

१४५४ − १४५।२४ = १३०८।३६ अयनांश (कलादि)

१३०८।३६ ÷ ६० = २१।४८।३६ अयनांश (अंशादि)

इस अयनांश की वार्षिक गति ५४ विकला है। यथा—

(वर्ष दिन) $\frac{३६० \times ९}{१}$ = प्रतिविकला ३२४० = ५४ विकला; अर्थात्—

एक मास = ३० दिन में ४½ विकला गति एवं १० दिन में १½ विकला गति।

नियम

वार्षिक सूर्यांश में ३ का गुणाकर २० से भाग दें तो लब्धि में वार्षिक-गति होती है। यथा—

वार्षिक सूर्यांश $\frac{३६ \times ३}{२०} = \frac{१०८}{२०}$ = ५४ विकला (वार्षिक-गति)

सिद्धान्तसम्राट्-द्वारा

शाके में से १९८ घटाकर शेष में ७० से भाग दें तो लब्धि में अयनांश होता है। यथा—

शाके $\frac{१८७५ - १९८}{७०} = \frac{१६७७}{७०}$ = २३।५७।२५$\frac{५}{७}$ अयनांश

वार्षिक-गति $\frac{१}{७०} = \frac{१ \times ६०}{७०} = \frac{६}{७} = ५१\frac{३}{७}$ विकला

ग्रहलाघव-द्वारा (स्थूल-मान)

शाके में से ४४४ घटाकर शेष में ६० से भाग दें तो लब्धि में अयनांश होता है। यथा—

शाके $\frac{१८७५ - ४४४}{६०} = \frac{१४३१}{६०}$ = २३।५१।० अयनांश। वार्षिक-गति १ कला।

ग्रह-लाघव से ६० विकला, सूर्य-सिद्धान्त और मकरन्द से ५४ विकला, सिद्धान्त-सम्राट् से ५१$\frac{३}{७}$ विकला, केतकी गणित से ५०$\frac{१}{४}$ विकला अयनांश की वार्षिक-गति है। अयनांश के स्वीकृत मान एवं गति में भिन्नता है। अतएव भ्रम से दूर रहकर सर्वदा केतकी का अयनांश ग्रहण कर कार्य कीजिए। जिसे पृष्ठ ७१ (चक्र ८) में लिखा गया है।

अयनांश – चक्र ८

शकवर्ष	अयनांश			शकवर्ष	अयनांश			शकवर्ष	अयनांश			शकवर्ष	अयनांश			शकवर्ष	अयनांश		
१८००	२२	८	३३	१८४६	२२	४७	३	१८९२	२३	२५	३४	१९३८	२४	४	५	१९८४	२४	४२	३६
१८०१	२२	९	२३	१८४७	२२	४७	५३	१८९३	२३	२६	२५	१९३९	२४	४	५५	१९८५	२४	४३	२६
१८०२	२२	१०	१३	१८४८	२२	४८	४४	१८९४	२३	२७	१५	१९४०	२४	५	४५	१९८६	२४	४४	१६
१८०३	२२	११	४	१८४९	२२	४९	३४	१८९५	२३	२८	५	१९४१	२४	६	३५	१९८७	२४	४५	६
१८०४	२२	११	५४	१८५०	२२	५०	२४	१८९६	२३	२८	५५	१९४२	२४	७	२५	१९८८	२४	४५	५७
१८०५	२२	१२	४४	१८५१	२२	५१	१५	१८९७	२३	२९	४५	१९४३	२४	८	१६	१९८९	२४	४६	४७
१८०६	२२	१३	३४	१८५२	२२	५२	५	१८९८	२३	३०	३६	१९४४	२४	९	६	१९९०	२४	४७	३७
१८०७	२२	१४	२४	१८५३	२२	५२	५६	१८९९	२३	३१	२६	१९४५	२४	९	५६	१९९१	२४	४८	२७
१८०८	२२	१५	१५	१८५४	२२	५३	४६	१९००	२३	३२	१६	१९४६	२४	१०	४६	१९९२	२४	४९	१७
१८०९	२२	१६	५	१८५५	२२	५४	३६	१९०१	२३	३३	६	१९४७	२४	११	३६	१९९३	२४	५०	८
१८१०	२२	१६	५५	१८५६	२२	५५	२६	१९०२	२३	३३	५६	१९४८	२४	१२	२७	१९९४	२४	५०	५८
१८११	२२	१७	४५	१८५७	२२	५६	१६	१९०३	२३	३४	४७	१९४९	२४	१३	१७	१९९५	२४	५१	४८
१८१२	२२	१८	३५	१८५८	२२	५७	७	१९०४	२३	३५	३७	१९५०	२४	१४	८	१९९६	२४	५२	३८
१८१३	२२	१९	२६	१८५९	२२	५७	५७	१९०५	२३	३६	२७	१९५१	२४	१४	५८	१९९७	२४	५३	२८
१८१४	२२	२०	१६	१८६०	२२	५८	४७	१९०६	२३	३७	१७	१९५२	२४	१५	४८	१९९८	२४	५४	१९
१८१५	२२	२१	६	१८६१	२२	५९	३७	१९०७	२३	३८	७	१९५३	२४	१६	३९	१९९९	२४	५५	९
१८१६	२२	२१	५६	१८६२	२३	०	२७	१९०८	२३	३८	५८	१९५४	२४	१७	२९	२०००	२४	५६	०
१८१७	२२	२२	४६	१८६३	२३	१	१८	१९०९	२३	३९	४८	१९५५	२४	१८	१९	२००१	२४	५६	५०
१८१८	२२	२३	३७	१८६४	२३	२	८	१९१०	२३	४०	३८	१९५६	२४	१९	९	२००२	२४	५७	४०
१८१९	२२	२४	२७	१८६५	२३	२	५८	१९११	२३	४१	२८	१९५७	२४	१९	५९	२००३	२४	५८	३१
१८२०	२२	२५	१७	१८६६	२३	३	४८	१९१२	२३	४२	१८	१९५८	२४	२०	५०	२००४	२४	५९	२१
१८२१	२२	२६	७	१८६७	२३	४	३८	१९१३	२३	४३	९	१९५९	२४	२१	४०	२००५	२५	०	११
१८२२	२२	२६	५७	१८६८	२३	५	२९	१९१४	२३	४३	५९	१९६०	२४	२२	३०	२००६	२५	१	१
१८२३	२२	२७	४८	१८६९	२३	६	१९	१९१५	२३	४४	४९	१९६१	२४	२३	२०	२००७	२५	१	५१
१८२४	२२	२८	३८	१८७०	२३	७	९	१९१६	२३	४५	३९	१९६२	२४	२४	१०	२००८	२५	२	४२
१८२५	२२	२९	२८	१८७१	२३	७	५९	१९१७	२३	४६	२९	१९६३	२४	२५	१	२००९	२५	३	३२
१८२६	२२	३०	१८	१८७२	२३	८	४९	१९१८	२३	४७	२०	१९६४	२४	२५	५१	२०१०	२५	४	२२
१८२७	२२	३१	८	१८७३	२३	९	४०	१९१९	२३	४८	१०	१९६५	२४	२६	४१	२०११	२५	५	१२
१८२८	२२	३१	५९	१८७४	२३	१०	३०	१९२०	२३	४९	०	१९६६	२४	२७	३१	२०१२	२५	६	२
१८२९	२२	३२	४९	१८७५	२३	११	२०	१९२१	२३	४९	५०	१९६७	२४	२८	२१	२०१३	२५	६	५३
१८३०	२२	३३	४०	१८७६	२३	१२	१०	१९२२	२३	५०	४०	१९६८	२४	२९	१२	२०१४	२५	७	४३
१८३१	२२	३४	३०	१८७७	२३	१३	०	१९२३	२३	५१	३१	१९६९	२४	३०	२	२०१५	२५	८	३३
१८३२	२२	३५	२०	१८७८	२३	१३	५१	१९२४	२३	५२	२१	१९७०	२४	३०	५२	२०१६	२५	९	२३
१८३३	२२	३६	११	१८७९	२३	१४	४१	१९२५	२३	५३	११	१९७१	२४	३१	४२	२०१७	२५	१०	१३
१८३४	२२	३७	१	१८८०	२३	१५	३२	१९२६	२३	५४	१	१९७२	२४	३२	३२	२०१८	२५	११	४
१८३५	२२	३७	५१	१८८१	२३	१६	२२	१९२७	२३	५४	५१	१९७३	२४	३३	२३	२०१९	२५	११	५४
१८३६	२२	३८	४१	१८८२	२३	१७	१२	१९२८	२३	५५	४२	१९७४	२४	३४	१३	२०२०	२५	१२	४४
१८३७	२२	३९	३१	१८८३	२३	१८	३	१९२९	२३	५६	३२	१९७५	२४	३५	३	२०२१	२५	१३	३४
१८३८	२२	४०	२२	१८८४	२३	१८	५३	१९३०	२३	५७	२२	१९७६	२४	३५	५३	२०२२	२५	१४	२४
१८३९	२२	४१	१२	१८८५	२३	१९	४३	१९३१	२३	५८	१२	१९७७	२४	३६	४३	२०२३	२५	१५	१५
१८४०	२२	४२	२	१८८६	२३	२०	३३	१९३२	२३	५९	२	१९७८	२४	३७	३४	२०२४	२५	१६	५
१८४१	२२	४२	५२	१८८७	२३	२१	२३	१९३३	२३	५९	५३	१९७९	२४	३८	२४	२०२५	२५	१६	५५
१८४२	२२	४३	४२	१८८८	२३	२२	१४	१९३४	२४	०	४४	१९८०	२४	३९	१४	२०२६	२५	१७	४५
१८४३	२२	४४	३३	१८८९	२३	२३	४	१९३५	२४	१	३४	१९८१	२४	४०	५	२०२७	२५	१८	३५
१८४४	२२	४५	२३	१८९०	२३	२३	५४	१९३६	२४	२	२४	१९८२	२४	४०	५५	२०२८	२५	१९	२६
१८४५	२२	४६	१३	१८९१	२३	२४	४४	१९३७	२४	३	१४	१९८३	२४	४१	४६	२०२९	२५	२०	१६

शाके १८७५ − ४२१ = १४५४ शेषवर्ष

१४५४ + १० = १४५।२४ (शेषवर्ष का दशांश)

१४५४ − १४५।२४ = १३०८।३६ अयनांश (कलादि)

१३०८।३६ + ६० = २१।४८।३६ अयनांश (अंशादि)

इस अयनांश की वार्षिक गति ५४ विकला है। यथा—

(वर्ष दिन) $\frac{३६ \times ९}{१}$ = प्रतिविकला ३२४० = ५४ विकला अर्थात्—

एक मास = ३० दिन में ४½ विकला गति एवं ६ दिन में ९ विकला गति।

नियम

वार्षिक सूर्यांश में ३ का गुणाकर २० से भाग दे तो लब्धि में वार्षिक-गति होती है। यथा—

वार्षिक सूर्यांश $\frac{३६० \times ३}{२०} = \frac{१०८०}{२०}$ = ५४ विकला (वार्षिक-गति)

सिद्धान्तसम्राट्-द्वारा

शाके में से २८८ घटाकर शेष में ७० से भाग दें तो लब्धि में अयनांश होता है। यथा—

शाके $\frac{१८७५ - २८८}{७०} = \frac{१५८७}{७०}$ = २२।४८।५१$\frac{३}{७}$ अयनांश

वार्षिक-गति $\frac{१}{७०} = \frac{१ \times ६}{७०} = \frac{६}{७}$ = ५१$\frac{३}{७}$ विकला

ग्रहलाघव-द्वारा (स्थूल-मान)

शाके में से ४४४ घटाकर शेष में ६० से भाग दे तो लब्धि में अयनांश होता है। यथा—

शाके $\frac{१८७५ - ४४४}{६०} = \frac{१४३१}{६०}$ = २३।५१। अयनांश। वार्षिक-गति १ कला।

ग्रह-लाघव से ६ विकला सूर्य-सिद्धान्त और मकरन्द से ५४ विकला सिद्धान्त-सम्राट से ५१$\frac{३}{७}$ विकला केतकी-गणित से ५०$\frac{१}{२}$ विकला अयनांश की वार्षिक-गति है। अयनांश के वर्षारम्भ और गति में भिन्नता है। अतएव अनेक भ्रम से दूर रहकर सर्वदा केतकी का अयनांश ग्रहण कर कार्य कीजिए। जिसे पृष्ठ ७१ (चक्र ८) में लिखा गया है।

अयनांश – चक्र ८

शकवर्ष	अयनांश			शकवर्ष	अयनांश			शकवर्ष	अयनांश			शकवर्ष	अयनांश			शकवर्ष	अयनांश		
१८००	२२	८	३३	१८४६	२२	४७	३	१८९२	२३	२५	३४	१९३८	२४	४	५	१९८४	२४	४२	३६
१८०१	२२	९	२३	१८४७	२२	४७	५३	१८९३	२३	२६	२५	१९३९	२४	४	५५	१९८५	२४	४३	२६
१८०२	२२	१०	१३	१८४८	२२	४८	४४	१८९४	२३	२७	१५	१९४०	२४	५	४५	१९८६	२४	४४	१६
१८०३	२२	११	४	१८४९	२२	४९	३४	१८९५	२३	२८	५	१९४१	२४	६	३५	१९८७	२४	४५	६
१८०४	२२	११	५४	१८५०	२२	५०	२४	१८९६	२३	२८	५५	१९४२	२४	७	२५	१९८८	२४	४५	५७
१८०५	२२	१२	४४	१८५१	२२	५१	१४	१८९७	२३	२९	४५	१९४३	२४	८	१६	१९८९	२४	४६	४७
१८०६	२२	१३	३४	१८५२	२२	५२	५	१८९८	२३	३०	३६	१९४४	२४	९	६	१९९०	२४	४७	३७
१८०७	२२	१४	२४	१८५३	२२	५२	५६	१८९९	२३	३१	२६	१९४५	२४	९	५६	१९९१	२४	४८	२७
१८०८	२२	१५	१५	१८५४	२२	५३	४६	१९००	२३	३२	१६	१९४६	२४	१०	४६	१९९२	२४	४९	१७
१८०९	२२	१६	५	१८५५	२२	५४	३६	१९०१	२३	३३	६	१९४७	२४	११	३६	१९९३	२४	५०	८
१८१०	२२	१६	५५	१८५६	२२	५५	२६	१९०२	२३	३३	५६	१९४८	२४	१२	२७	१९९४	२४	५०	५८
१८११	२२	१७	४५	१८५७	२२	५६	१६	१९०३	२३	३४	४७	१९४९	२४	१३	१७	१९९५	२४	५१	४८
१८१२	२२	१८	३५	१८५८	२२	५७	७	१९०४	२३	३५	३७	१९५०	२४	१४	८	१९९६	२४	५२	३८
१८१३	२२	१९	२६	१८५९	२२	५७	५७	१९०५	२३	३६	२७	१९५१	२४	१४	५८	१९९७	२४	५३	२८
१८१४	२२	२०	१६	१८६०	२२	५८	४७	१९०६	२३	३७	१७	१९५२	२४	१५	४८	१९९८	२४	५४	१९
१८१५	२२	२१	६	१८६१	२२	५९	३७	१९०७	२३	३८	७	१९५३	२४	१६	३९	१९९९	२४	५५	९
१८१६	२२	२१	५६	१८६२	२३	०	२७	१९०८	२३	३८	५८	१९५४	२४	१७	२९	२०००	२४	५६	०
१८१७	२२	२२	४६	१८६३	२३	१	१८	१९०९	२३	३९	४८	१९५५	२४	१८	१९	२००१	२४	५६	५०
१८१८	२२	२३	३७	१८६४	२३	२	८	१९१०	२३	४०	३८	१९५६	२४	१९	९	२००२	२४	५७	४०
१८१९	२२	२४	२७	१८६५	२३	२	५८	१९११	२३	४१	२८	१९५७	२४	१९	५९	२००३	२४	५८	३१
१८२०	२२	२५	१७	१८६६	२३	३	४८	१९१२	२३	४२	१८	१९५८	२४	२०	५०	२००४	२४	५९	२१
१८२१	२२	२६	७	१८६७	२३	४	३८	१९१३	२३	४३	९	१९५९	२४	२१	४०	२००५	२५	०	११
१८२२	२२	२६	५७	१८६८	२३	५	२९	१९१४	२३	४३	५९	१९६०	२४	२२	३०	२००६	२५	१	१
१८२३	२२	२७	४८	१८६९	२३	६	१९	१९१५	२३	४४	४९	१९६१	२४	२३	२०	२००७	२५	१	५१
१८२४	२२	२८	३८	१८७०	२३	७	९	१९१६	२३	४५	३९	१९६२	२४	२४	१०	२००८	२५	२	४२
१८२५	२२	२९	२८	१८७१	२३	७	५९	१९१७	२३	४६	२९	१९६३	२४	२५	१	२००९	२५	३	३२
१८२६	२२	३०	१८	१८७२	२३	८	४९	१९१८	२३	४७	२०	१९६४	२४	२५	५१	२०१०	२५	४	२२
१८२७	२२	३१	८	१८७३	२३	९	४०	१९१९	२३	४८	१०	१९६५	२४	२६	४१	२०११	२५	५	१२
१८२८	२२	३१	५९	१८७४	२३	१०	३०	१९२०	२३	४९	०	१९६६	२४	२७	३१	२०१२	२५	६	२
१८२९	२२	३२	४९	१८७५	२३	११	२०	१९२१	२३	४९	५०	१९६७	२४	२८	२१	२०१३	२५	६	५३
१८३०	२२	३३	४०	१८७६	२३	१२	१०	१९२२	२३	५०	४०	१९६८	२४	२९	१२	२०१४	२५	७	४३
१८३१	२२	३४	३०	१८७७	२३	१३	०	१९२३	२३	५१	३१	१९६९	२४	३०	२	२०१५	२५	८	३३
१८३२	२२	३५	२०	१८७८	२३	१३	५१	१९२४	२३	५२	२१	१९७०	२४	३०	५२	२०१६	२५	९	२३
१८३३	२२	३६	११	१८७९	२३	१४	४१	१९२५	२३	५३	११	१९७१	२४	३१	४२	२०१७	२५	१०	१३
१८३४	२२	३७	१	१८८०	२३	१५	३२	१९२६	२३	५४	१	१९७२	२४	३२	३२	२०१८	२५	११	४
१८३५	२२	३७	५१	१८८१	२३	१६	२२	१९२७	२३	५४	५१	१९७३	२४	३३	२३	२०१९	२५	११	५४
१८३६	२२	३८	४१	१८८२	२३	१७	१२	१९२८	२३	५५	४२	१९७४	२४	३४	१३	२०२०	२५	१२	४४
१८३७	२२	३९	३१	१८८३	२३	१८	३	१९२९	२३	५६	३२	१९७५	२४	३५	३	२०२१	२५	१३	३४
१८३८	२२	४०	२२	१८८४	२३	१८	५३	१९३०	२३	५७	२३	१९७६	२४	३५	५३	२०२२	२५	१४	२४
१८३९	२२	४१	१२	१८८५	२३	१९	४३	१९३१	२३	५८	१३	१९७७	२४	३६	४३	२०२३	२५	१५	१५
१८४०	२२	४२	२	१८८६	२३	२०	३३	१९३२	२३	५९	३	१९७८	२४	३७	३४	२०२४	२५	१६	५
१८४१	२२	४२	५२	१८८७	२३	२१	२३	१९३३	२३	५९	५४	१९७९	२४	३८	२४	२०२५	२५	१६	५५
१८४२	२२	४३	४२	१८८८	२३	२२	१४	१९३४	२४	०	४४	१९८०	२४	३९	१५	२०२६	२५	१७	४५
१८४३	२२	४४	३३	१८८९	२३	२३	४	१९३५	२४	१	३४	१९८१	२४	४०	५	२०२७	२५	१८	३५
१८४४	२२	४५	२३	१८९०	२३	२३	५४	१९३६	२४	२	२४	१९८२	२४	४०	५५	२०२८	२५	१९	२६
१८४५	२२	४६	१३	१८९१	२३	२४	४४	१९३७	२४	३	१४	१९८३	२४	४१	४६	२०२९	२५	२०	१६

पलान्तर-पल चक्र ९ (क)

(सायनार्क द्वारा)

अंश	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
०	– १८	+ ४	+ ९	– ३	– १५	– ७	+ १७	+ ३८	+ ३५	+ ४	– २९	– ३५
१	१७	४	९	४	१५	६	१८	३९	३४	३	३०	३५
२	१६	५	९	४	१५	६	१९	३९	३३	२	३१	३५
३	१५	५	९	५	१५	५	२०	३९	३१	+ ०	३१	३४
४	१४	६	८	५	१५	४	२०	३९	३०	– २	३०	३४
५	१३	६	८	६	१५	४	२१	४०	३१	३	३३	३३
६	१२	७	८	६	१५	३	२२	४०	३	४	३३	३३
७	१२	७	८	७	१५	२	२३	४	२९	६	३३	३२
८	११	८	७	८	१५	१	२४	४	२९	७	३४	३२
९	१०	८	७	८	१५	– ०	२५	४	२८	८	३४	३१
१	१०	८	७	९	१५	+ १	२६	४०	२७	९	३४	३१
११	९	९	६	९	१५	२	२७	४१	२६	१	३५	३०
१२	८	९	६	१	१४	२	२८	४१	२५	११	३५	३०
१३	७	९	५	१०	१४	३	२८	४१	२४	१२	३५	२९
१४	६	९	५	१०	१४	४	२९	४	२३	१३	३६	२९
१५	६	९	४	११	१४	५	३०	४०	२२	१५	३६	२८
१६	५	९	४	११	१३	५	३१	४०	२१	१६	३६	२७
१७	४	९	३	१२	१३	६	३१	४०	२	१७	३६	२७
१८	३	१	३	१२	१३	७	३२	४०	१९	१८	३६	२६
१९	३	१	२	१२	१२	८	३२	४०	१८	१९	३६	२६
२०	२	१०	२	१३	१२	९	३३	४०	१६	२	३७	२५
२१	२	१	२	१३	११	१	३४	३९	१५	२१	३७	२४
२२	१	१	१	१३	११	१	३४	३९	१४	२२	३७	२४
२३	– ०	१	१	१४	११	११	३५	३९	१३	२३	३७	२३
२४	+	१	+	१४	१०	१२	३५	३८	१२	२४	३७	२२
२५	१	१	–	१४	१०	१३	३६	३८	१०	२५	३६	२२
२६	१	१०	१	१४	९	१४	३६	३७	९	२६	३६	२१
२७	२	१०	२	१५	८	१५	३७	३७	८	२७	३६	२१
२८	३	९	२	१५	८	१५	३७	३६	७	२७	३६	२
२९	+ ३	+ ९	– ३	– १५	– ७	+ १६	+ ३८	+ ३५	+ ६	– २८	– ३६	– १९

वेलान्तर-पल चक्र ६ (ख)

तारीख	जनवरी	फरवरी	मार्च	एप्रिल	मई	जून	जुलाई	अगस्त	सितम्बर	अक्टूबर	नवम्बर	दिसम्बर
१	− ८	−३४	−३१	−१०	+ ७	+ ६	− ९	−१५	+ ०	+२५	+४१	+२७
२	९	३४	३१	९	८	५	९	१५	१	२६	४१	२६
३	१०	३५	३०	८	८	५	१०	१५	२	२७	४१	२५
४	१२	३५	३०	७	८	५	१०	१५	२	२८	४१	२४
५	१३	३५	२९	७	९	४	११	१४	३	२९	४१	२३
६	१४	३५	२८	६	९	४	११	१४	४	३०	४१	२२
७	१५	३६	२८	५	९	३	१२	१४	५	३०	४१	२१
८	१६	३६	२७	४	९	३	१२	१४	६	३१	४०	२०
९	१७	३६	२७	४	९	२	१२	१३	७	३२	४०	१९
१०	१८	३७	२६	३	९	२	१३	१३	७	३२	४०	१८
११	१९	३७	२५	२	१०	१	१३	१३	८	३३	४०	१७
१२	२०	३७	२४	२	१०	१	१३	१२	९	३३	४०	१५
१३	२१	३७	२४	१	१०	+ ०	१४	१२	१०	३४	३९	१४
१४	२२	३६	२३	१	१०	− ०	१४	११	११	३५	३९	१३
१५	२३	३६	२२	− ०	१०	१	१४	११	१२	३५	३८	१२
१६	२४	३६	२२	+ ०	१०	१	१४	१०	१३	३६	३८	११
१७	२५	३५	२१	१	१०	२	१५	१०	१४	३६	३७	९
१८	२६	३५	२०	२	१०	२	१५	१०	१५	३७	३७	८
१९	२६	३५	२०	२	९	३	१५	९	१५	३७	३६	७
२०	२७	३५	१९	३	९	३	१५	९	१६	३८	३५	६
२१	२८	३५	१८	३	९	४	१५	८	१७	३८	३५	५
२२	२९	३५	१७	४	९	४	१५	७	१८	३८	३४	३
२३	२९	३४	१६	४	८	५	१५	७	१९	३९	३४	२
२४	३०	३४	१६	५	८	६	१५	६	२०	३९	३३	+ १
२५	३१	३३	१५	५	८	६	१५	५	२१	३९	३२	− ०
२६	३१	३३	१४	५	८	७	१५	५	२१	४०	३१	१
२७	३२	३३	१३	६	७	७	१५	४	२२	४०	३१	२
२८	३२	३२	१३	६	७	८	१५	३	२३	४०	३०	४
२९	३३	−३१	१२	७	७	८	१५	२	२३	४०	२९	५
३०	३३		११	+ ७	७	− ८	१५	२	+२४	४०	+२८	७
३१	−३४		−१०		+ ६		−१५	− १		+४१		− ८

वेलान्तर-चक्र ६ (ग)

तारीख	जन		फर		मार्च		अप्रि		मई		जून		जुला		अग		सित		अक्टू		नव		दिस	
	मि	से	मि	से	मि	से	मि	से	मि	से	मि	से	मि	से	मि	से	मि	से	मि	से	मि	से	मि	से
	−		−		−		−		+		+		−		−		+		+		+		+	
१	३	२८	१३	४१	१२	३६	४	७	२	५४	२	२९	३	२९	६	११		७	१	७	१६	१९	११	५
२	३	५६	१३	४९	१२	२४	३	४९	३		२	२०	३	४१	६	८		११	१	२६	१६	२	१	४२
३	४	२४	१३	५६	१२	१	३	३१	३	९		१	३	५२	६	३	०	३	१०	४५	१६	२१	१०	१९
४	४	५२	१४	३	११	४९	३	१३	३	१७	२	१	४	३	५	५९		५	११	४	१६	२१	९	४६
५	५	१९	१४	८	११	४६	२	५५	३	९	१	५१	४	१४	५	५३	१	१०	११	२२	१६	२	९	३१
६	५	४६	१४	१३	११	३३	२	३८	३	२६	१	४०	४	२४	५	४७	१	३०	११	४	१६	१८	९	७
७	६	१३	१४	१७	११	१८	२	२१	३	३१	१	२९	४	३४	५	४१	१	५०	११	५८	१६	१६	८	४१
८	६	३८	१४	२०	११	४	२	३	३	३५	१	१८	४	४४	५	३३	२	१	१२	१५	१६	१३	८	१५
९	७	४	१४	२२	१०	४९	१	४७	३	३९	१	७	४	५३	५	२४	२	२१	१२	३३	१६	८	७	४९
१०	७	८	१४	२३	१०	३४	१	३	३	४२		५६	५	२	५	१७	२	५१	१२	४८	१६	३	७	२२
११	७	५३	१४	२४	१०	१८	१	१३	३	४५		४४	५	१	५	८	३	१२	१३	४	१५	५७	६	५५
१२	८	१६	१४	२४	१०	२		५७	३	४७		३२	५	१८	४	५९	३	३३	१३	१९	१५	५१	६	२७
१३	८	३९	१४	२३	९	४६		४१	३	४८		२	५	२६	४	४९	३	५४	१३	३४	१५	४३	५	५९
१४	९	२	१४	२१	९	२९		२६	३	४९		७	५	३३	४	३८	४	१५	१३	४८	१५	३४	५	३१
											±													
१५	९	२३	१४	१९	९	१२	०	११	३	४९		५	५	४०	४	२७	४	३६	१४	२	१५	२५	५	२
							∓																	
१६	९	४४	१४	१६	८	५५	०	४	३	४९		१८	५	४६	४	१६	४	५८	१४	१५	१५	१५	४	३३
१७	१	५	१४	१२	८	३८	०	१८	३	४८		३१	५	५२	४	४	५	१९	१४	२८	१५	४	४	४
१८	१०	२४	१४	७	८	२	०	३	३	४६		४४	५	५७	३	५१	५	४	१४	४	१४	५२	३	३४
१९	१	४३	१४	२	८	३		४६	३	४४		५७	६	२	३	३८	६	१	१४	५१	१४	३९	३	४
२	११	२	१३	५६	७	४५	०	५९	३	४१	१	१	६	६	३	२४	६	२२	१५	२	१४	२५	२	३४
२१	११	१९	१३	५	७	२७	१	१२	३	३८	१	२३	६	९	३	१	६	४३	१५	१२	१४	११	२	५
२२	११	३६	१३	४३	७	९	१	२५	३	३४	१	३६	६	१३	२	५६	७	४	१५	२	१३	५५	१	३५
२३	११	५२	१३	३५	६	५१	१	३६	३	३	१	४९	६	१५	२	४१	७	२५	१५	३१	१३	३९	१	५
२४	१२	७	१३	२७	६	३३	१	४८	३	२५	२	२	६	१७	२	२५	७	४६	१५	३९	१३	२३		३५
																							±	
२५	१२	२२	१३	१८	६	१४	१	५९	३		२	१५	६	१८	२	९	८	७	१५	४६	१३	५		५
२६	१२	३६	१३	८	५	५६	२	९	३	१४	२	२८	६	१९	१	५३	८	२७	१५	५३	१२	४७		२४
२७	१२	४९	१२	५८	५	३८	२	१९	३	७	२	४	६	१९	१	३७	८	४७	१५	५९	१२	२८	१	३
२८	१३	१	१२	४७	५	२	२	२९	३	१	२	५३	६	१९	१	२	९	८	१६	५	१२	८	१	३२
२९	१३	१२	१२	४१	५	१	२	३८	२	५३	३	५	६	१८	१	२	९	८	१६	९	११	४८	२	१
३	१३	२३	− ■		४	४३	२	४६	२	४५	३	१७	६	१६		४४	९	४७	१६	१३	११	२७	२	३
३१	१३	३२	■		४	२५	+ ■		२	३७	− ■		६	१४		२६	+ ■		१६	१६	+ ■		२	५९
	−				−				+				−		−				+				−	

ज्योतिष-शास्त्र के प्रवर्तक

नारद और कश्यप ने १८ प्रवर्तक तथा पराशर ने २० प्रवर्तक बताये हैं। पितामह, सूर्य, बृहस्पति, वशिष्ठ, मनु, अत्रि, पुलस्त्य, लोमश, पौलिश, मरीचि, अंगिरा, व्यास, नारद, शौनक, भृगु, च्यवन, यवन गर्ग, कश्यप और पराशर।

सिद्धान्त

सूर्यसिद्धान्त, सोमसिद्धान्त (शौनकसिद्धान्त) ब्रह्मसिद्धान्त [ब्रह्मसिद्धान्त, पितामहसिद्धान्त, ब्रह्मगुप्तकृत-ब्रह्मस्फुटसिद्धान्त—(पृथूदकी, भट्टोत्पली)], वशिष्ठसिद्धान्त (लघु, वृद्ध) लोमशसिद्धान्त (रोमकसिद्धान्त) व्यासासिद्धान्त, भृगुसिद्धान्त और पराशरसिद्धान्त।

संहिता

ब्रह्मसहिता, बृहस्पतिसंहिता, वशिष्ठसहिता, लोमशसहिता, नारदसहिता, भृगुसंहिता और गर्गसहिता।

वर्ष–मान

	मत	दिन घटी पल विपल प्र वि
१	प्रथम आर्यसिद्धान्त	३६५। १५। ३१। १५। ०
२	द्वितीय आर्यसिद्धान्त (वराहमिहिर)	३६५। १५। ३१। ३०। ०
३	सूर्यसिद्धान्त	३६५। १५। ३१। ३१। २४
४	पितामहसिद्धान्त	३६५। २१। २५। ०। ०
५	रोमक (लोमश) सिद्धान्त	३६५। १४। ४८। ०। ०
६	पौलिशसिद्धान्त	३६५। १५। ३०। ०। ०
७	ब्रह्मगुप्तसिद्धान्त	३६५। १५। ३०। २२। ३०
८	सिद्धान्तशिरोमणि	३६५। १५। ३०। २२। ३०
९	ग्रह-लाघव	३६५। १५। ३१। ३०। ०
१०	आधुनिक शोधानुसार	३६५। १५। २२। ५६ ८७

तृतीय-वर्तिका = ज्योतिष का परिश्रम

चतुर्थ-वर्तिका

पलभा-द्वारा चरखण्ड-साधन

पलभा में क्रमशः १०, ८, १०/३ का गुणा करने पर चरखण्ड होता है। रविसिद्धान्तमञ्जरी में आठ के स्थान पर [illegible] लिखा है। यथा—

५।५।३८।२४ × १०	=५०।५६।२४।०	=५१	प्रथम	चरखण्ड
५।५।३८।२४ × ८	=४०।४५।७।१२	=४१	द्वितीय	,,
५।५।३८।२४ × १०/३	=१६।५८।४८।०	=१७	तृतीय	,,

इस प्रकार चरखण्ड के ३ अंक (५१।४१।१७) निकालना चाहिए। ५०।५६।२४ का ५१ वाँ अंक, ४०।४५।७।१२ का ४१ वाँ अंक और १६।५८।४८ का १७ वाँ अंक ग्रहण करना चाहिए।

स्थानीय लग्न-मान का साधन

लंकोदय (इक्वेटर लाइन पर) राशि-मान (लग्न-मान) वेध द्वारा मेष-मीन-कन्या-तुला का २७९ पल वृष-कुम्भ-सिंह-वृश्चिक का २९९ पल और मिथुन-मकर-कर्क-धनु का ३२३ पल है। लंकोदय मेष-मीन में प्रथम चरखण्ड ऋण तथा कन्या-तुला में धन वृष कुम्भ में द्वितीय चरखण्ड ऋण तथा सिंह-वृश्चिक में धन और मिथुन-मकर में तृतीय चरखण्ड ऋण तथा कर्क-धनु में धन करना चाहिए। इस प्रकार का नियम उत्तर अक्षांश में है। दक्षिण अक्षांश में इसका विपरीत कार्य करना चाहिए। इस प्रकार करने से स्थानीय लग्न-मान होता है। यथा—

		वेधोपलब्ध लंकोदय	चरखण्ड			२१ अक्षांश का लग्न-मान
मेष-मीन	=	२७९	—५१	(१)	=	२२८
वृष-कुम्भ	=	२९९	—४१	(२)	=	२५८
मिथुन-मकर	=	३२३	—१७	(३)	=	३०६
कर्क-धनु	=	३२३	+१७	(४)	=	३३६
सिंह-वृश्चिक	=	२९९	+४१	(२)	=	३४
कन्या-तुला	=	२७९	+५१	(१)	=	३३

१ राशि = १८० पल = ३ घटी

१२ ,, = ३६ पल = ६ घटी (एक दिन-रात)

चक्र १० में शून्य अक्षांश और ८ से ३६ अक्षांश तक की पलभा चरखण्ड एवं लग्न-मान के पल लिखे गये हैं। इसी चक्र १ के आधार पर आगे लग्न-सारणियों का निर्माण किया गया है। जिन स्थानों की लग्न-सारणियाँ नहीं बनाया उन स्थानों के लिए भी लग्न-साधन इस प्रकार करना चाहिए—

सार्वत्रिक लग्न-साधन

किसी भी स्थान का लग्न-साधन करने लिए, उस स्थान का अक्षांश पलभा चरखण्ड लग्न-मान (उदय-पल), इष्टकाल सूर्य-स्पष्ट और अयनांश एक स्थान पर क्रमशः लिख लेना चाहिए। फिर 'तत्काले सायनार्कस्य' नियम के द्वारा भुक्तप्रकार और भोग्यप्रकार नामक दो विधियों से लग्न-साधन, ग्रन्थकारों ने लिखा है। दोनों प्रकारों से उत्तर (फल) एक-सा आता है। अतएव यहाँ केवल भोग्य-प्रकार से लग्न-साधन का नियम लिखा जा रहा है।

इष्टकालिक (तात्कालिक) सूर्य में अयनांश जोड़ने से तात्कालिक सायनार्क होता है। सायनार्क के शेष अंशादि 'भुक्तांश' होते हैं। भुक्तांश को एक राशि (३० अंश) में से घटाकर 'भोग्यांश'

बनाइए। भोग्यांश में सायनार्क राशि के स्थानीय लग्न-मान (पलों) का गुणा कर ३० से भाग दें तो, लब्धि में 'भोग्य-पल' होते हैं।

इष्टकाल के घटी-पलों को पल बनाइए (घटी × ६० + पल)। इन इष्ट के पलों में से भोग्य-पल घटाइए, शेष में सायनार्क राशि के अग्रिम राशि-मान (लग्न-मान) पलों को क्रमशः घटाते जाइए। अन्त्वतो गत्वा जिस राशि-मान के पल न घट सकें, उसी राशि की अशुद्ध-संज्ञा होती है और शेष में अशुद्ध-संज्ञक राशि के भुक्त-पलादि होते हैं।

इसके बाद भुक्त-पलादि में ३० का गुणा कर, अशुद्ध-संज्ञा वाली राशि के पलों से भाग दें तो, लब्धि में अंशादि प्राप्त होंगे। इस अंशादि के साथ अशुद्ध-संज्ञा वाली राशि का पिछला अंक, राशि के स्थान में रखना चाहिए। इस राश्यादि में से अयनांश घटाने पर, शेष राश्यादि रूप में निरयण-लग्न स्पष्ट होती है। अयनांश न घटाने से सायन-लग्न स्पष्ट होती है। यथा—

स्थान जबलपुर, अक्षांश २३।१०, पलभा ५।८।६।२० चरखण्ड ५१।४१।१७ लग्न-मान, मेष-मीन =२२८ वृष-कुम्भ =२५८ मिथुन-मकर =३०५ कर्क-धनु =३३६ सिंह-वृश्चिक =३४० कन्या-तुला = ३३० पल हैं। इष्टकाल २६।१८।५३ सूर्य-स्पष्ट २।०।१८।५७ अयनांश २२।४३।५०

भोग्य-प्रकार

सूर्य-स्पष्ट २।०।१८।५७ में
अयनांश २२।४३।५० जोड़ा
सायनार्क २।२३।२।४७ योगफल = भुक्तांश २३।२।४७ (मिथुन के)
१ राशि= ३०।०।० (अंशादि) में से
भुक्तांश = २३।२।४७ घटाया
भोग्यांश = ६।५७।१३ × ३०५ (सायनार्क राशि मिथुन के पल का गुणा)
भोग्यांश ६।५७।१३ × ३०५ = २१२०।५१।५ गुणनफल।
२१२०।५१।५ ÷ ३० = लब्धि ७०।४१।४२।१० (मिथुन के भोग्य-पल)

इष्टकाल २६।१८।५३ (२६ × ६० + १८) = पलादि १५७८।५३
इष्ट पलादि १५७८।५३। ०। ० में से
मिथुन के भोग्य पल ७०।४१।४२।१० घटाया
१६८८।११।१७।५० शेष में से

कर्क – सिंह – कन्या – तुला – वृश्चिक
३३६ + ३४० + ३३० + ३३० + ३४० = १६७६ राशि-मान का योगफल घटाया
अशुद्ध-संज्ञक धनु के भुक्त पलादि = ६।११।१७।५०
अशुद्ध-संज्ञक धनु के भुक्त पलादि ६।११।१७।५० × ३० = २७५।३८।३२।३० गुणनफल
गुणनफल २७५।३८।३२।३० ÷ ३३६ = लब्धि ०।४८।४७ (धनु के भुक्तांश)
अशुद्ध-राशि (धनु) के पिछले अंक (८ राशि) से युक्त भुक्तांश = ८।०।४८।४७ (सायन-लग्न) में से
अयनांश = २२।४३।५० घटाया
स्पष्ट निरयण लग्न = ७।८।४।५७ शेष

समालोचना

इस प्रकार लग्न-स्पष्ट ७।८।४।५७ है और २३ अक्षांश की लग्न-सारणी द्वारा, लग्न-साधन करने पर, पृष्ठ ३१ में ७।८।६।४२ आया है। जो कि प्राय समान रूप से है। पलभा, चरखण्ड, इष्टकाल, सूर्य-स्पष्ट, लग्न-साधन आदि कार्यों के गुणा-भाग आदि करने में कुछ शेषादि रह जाने की सूक्ष्मता का अन्तर लग्न-साधन में दिखायी दे रहा है। जो कि उपेक्ष्य है। लग्न-साधन की इस विधि से सारे संसार के किसी भी स्थान की लग्न-स्पष्ट की जा सकती है।

चतुर्थ-वर्तिका

पलभा-द्वारा चरखण्ड-साधन

पलभा में क्रमशः १०, ८, $\frac{10}{3}$ का गुणा करने पर चरखण्ड होता है। रविसिद्धान्त-मञ्जरी में आठ के स्थान पर $\frac{49}{6}$ लिखा है। यथा—

५।५।३८।२४ × १०	= ५०।५६।२४	= ५१	प्रथम	चरखण्ड
५।५।३८।२४ × ८	= ४०।४५।७।१२	= ४१	द्वितीय	„
५।५।३८।२४ × $\frac{10}{3}$	= १६।५८।४८	= १७	तृतीय	„

इस प्रकार चरखण्ड के ३ अंक (५१।४१।१७) निकालना चाहिए। ५०।५६।२४ का ५१ वाँ अंक, ४०।४५।७।१२ का ४१ वाँ अंक और १६।५८।४८ का १७ वाँ अंक ग्रहण करना चाहिए।

स्थानीय लग्न-मान का साधन

लंकोदय (इक्वेटर लाइन पर) राशि-मान (लग्न मान) क्रम द्वारा मेष-मीन-कन्या-तुला का २७८ पल वृष-कुम्भ-सिंह-वृश्चिक का २९९ पल और मिथुन-मकर-कर्क-धनु का ३२३ पल है। लंकोदय मेष-मीन में प्रथम चरखण्ड ऋण तथा कन्या-तुला में धन वृष कुम्भ में द्वितीय चरखण्ड ऋण तथा सिंह-वृश्चिक में धन और मिथुन-मकर में तृतीय चरखण्ड ऋण तथा कर्क धनु में धन करना चाहिए। इस प्रकार का नियम उत्तर अक्षांश में है। दक्षिण अक्षांश में इसका विपरीत कार्य करना चाहिए। इस प्रकार करने से स्थानीय लग्न-मान होता है। यथा—

		यथोपलब्ध लंकोदय	चरखण्ड			२५ अक्षांश का लग्न-मान
मेष-मीन	=	२७८	—५१	(१)	=	२२८
वृष-कुम्भ	=	२९९	—४१	(२)	=	२५८
मिथुन-मकर	=	३२३	—१७	(३)	=	३०६
कर्क-धनु	=	३२३	+१७	(४)	=	३४०
सिंह-वृश्चिक	=	२९९	+४१	(२)	=	३४०
कन्या-तुला	=	२७८	+५१	(१)	=	३२९

१ राशि = ३०० पल = ५ घटी

१२ „ = ३६०० पल = ६० घटी (एक दिन-रात)

चक्र १० में शून्य अक्षांश और ८ से ३६ अक्षांश तक की पलभा चरखण्ड एवं लग्न-मान के पल लिखे गये हैं। इसी चक्र १ के आधार पर आगे लग्न-सारणियों का निर्माण किया गया है। जिन स्थानों की लग्न-सारणियाँ नहीं बनायी उन स्थानों के लिए भी लग्न-साधन इस प्रकार करना चाहिए—

सार्वत्रिक लग्न-साधन

किसी भी स्थान का लग्न-साधन करने लिए, उस स्थान का अक्षांश, पलभा चरखण्ड लग्न-मान (उदय-पल), इष्टकाल सूर्य-स्पष्ट और अयनांश एक स्थान पर क्रमशः लिख लेना चाहिए। फिर 'तत्काले सायनार्कस्य' नियम के द्वारा भुक्तप्रकार और भोग्यप्रकार नामक दो विधियों से लग्न-साधन, ग्रन्थकारों ने लिखा है। दोनों प्रकारों से उत्तर (फल) एक-सा आता है। अतएव यहाँ केवल भोग्य-प्रकार से लग्न-साधन का नियम लिखा जा रहा है।

इष्टकालिक (तात्कालिक) सूर्य में अयनांश जोड़ने से तात्कालिक सायनार्क होता है। सायनार्क के राशि को छोड़कर शेष अंशादि 'भुक्तांश' होते हैं। भुक्तांश को एक राशि (३० अंश) में से घटाकर 'भोग्यांश'

बनाइए। भोग्यांश में सायनार्क राशि के स्थानीय लग्न-मान (पलों) का गुणा कर ३० से भाग दे तो, लब्धि में 'भोग्य-पल' होते हैं।

इष्टकाल के घटी-पलों को पल बनाइए (घटी × ६० + पल)। इन इष्ट के पलों में से भोग्य-पल घटाइए, शेष में सायनार्क राशि के अग्रिम राशि-मान (लग्न-मान) पलों को क्रमश घटाते जाइए। अन्ततो गत्वा जिस राशि-मान के पल न घट सकें, उसी राशि की अशुद्ध-संज्ञा होती है और शेष में अशुद्ध-संज्ञक राशि के भुक्त-पलादि होते हैं।

इसके बाद भुक्त-पलादि में ३० का गुणा कर, अशुद्ध-संज्ञा वाली राशि के पलों से भाग दें तो, लब्धि में अंशादि प्राप्त होंगे। इस अंशादि के साथ अशुद्ध-संज्ञा वाली राशि का पिछला अंक, राशि के स्थान में रखना चाहिए। इस राश्यादि में से अयनांश घटाने पर, शेष राश्यादि रूप में निरयण-लग्न स्पष्ट होती है। अयनांश न घटाने से सायन-लग्न स्पष्ट होती है। यथा—

स्थान जबलपुर, अक्षांश २३।१०, पलभा ५।८।६।२० चरखण्ड ५१।४१।१७ लग्न-मान, मेष-मीन =२२८ वृष-कुम्भ =२५८ मिथुन-मकर =३०५ कर्क-धनु =३३६ सिंह-वृश्चिक =३४० कन्या-तुला = ३३० पल हैं। इष्टकाल २६।१८।५३ सूर्य-स्पष्ट २।०।१८।५७ अयनांश २२।४३।५०

भोग्य-प्रकार

सूर्य-स्पष्ट २।०।१८।५७ में
अयनांश २२।४३।५० जोड़ा
सायनार्क २।२३।२।४७ योगफल = भुक्तांश २३।२।४७ (मिथुन के)
१ राशि= ३०।०।० (अंशादि) में से
भुक्तांश = २३।२।४७ घटाया
भोग्यांश = ६।५७।१३ × ३०५ (सायनार्क राशि मिथुन के पल का गुणा)
भोग्यांश ६।५७।१३ × ३०५ = २१२०।५१।५ गुणनफल।
२१२०।५१।५ ÷ ३० = लब्धि ७०।४१।४२।१० (मिथुन के भोग्य-पल)
इष्टकाल २६।१८।५३ (२६ × ६० + १८) = पलादि १५७८।५३
इष्ट पलादि १५७८।५३। ०। ० में से
मिथुन के भोग्य पल ७०।४१।४२।१० घटाया
१५०८।११।१७।५० शेष में से
कर्क – सिंह – कन्या – तुला – वृश्चिक
३३६ + ३४० + ३३० + ३३० + ३४० = १६७६ राशि-मान का योगफल घटाया
अशुद्ध-संज्ञक धनु के भुक्त पलादि = ६।११।१७।५०
अशुद्ध-संज्ञक धनु के भुक्त पलादि ६।११।१७।५० × ३० = २७५।३८।३२।३० गुणनफल
गुणनफल २७५।३८।३२।३० ÷ ३३६ = लब्धि ०।४८।४७ (धनु के भुक्तांश)
अशुद्ध-राशि (धनु) के पिछले अंक (८ राशि) से युक्त भुक्तांश = ८। ०।४८।४७ (सायन-लग्न) में से
अयनांश = २२।४३।५० घटाया
स्पष्ट निरयण-लग्न = ७।८।४।५७ शेष

समालोचना

इस प्रकार लग्न-स्पष्ट ७।८।४।५७ है और २३ अक्षांश की लग्न-सारणी द्वारा, लग्न-साधन करने पर, पृष्ठ ३१ में ७।८।६।४२ आया है। जो कि प्राय समान रूप से है। पलभा, चरखण्ड, इष्टकाल, सूर्य-स्पष्ट, लग्न-साधन आदि कार्यों के गुणा-भाग आदि करने में कुछ शेषादि रह जाने की सूक्ष्मता का अन्तर लग्न-साधन में दिखायी दे रहा है। जो कि उपेक्ष्य है। लग्न-साधन की इस विधि से सारे संसार के किसी भी स्थान की लग्न-स्पष्ट की जा सकती है।

शून्य अक्षांश की लग्न-सारणी अथवा दशम-सारणी

अंश	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९
मेष	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२	२	३	३	३	३	३	३	४	४	४	४
	०	९	१८	२७	३७	४६	५५	५	१४	२३	३३	४२	५१	०	१०	१९	२८	३८	४७	५६	६	१५	२४	३३	४३	५२	१	११	२०	२९
२७९।४८	०	१८	३६	५४	१२	३०	४८	६	२४	४२	०	१८	३६	५४	१२	३०	४८	६	२४	४२	०	१८	३६	५४	१२	३०	४८	६	२४	४२
वृष	४	४	४	५	५	५	५	५	५	६	६	६	६	६	६	७	७	७	७	७	७	८	८	८	८	८	८	९	९	९
	३९	४८	५८	८	१८	२८	३८	४८	५८	८	१८	२८	३८	४८	५८	८	१८	२८	३८	४८	५८	८	१८	२८	३८	४८	५८	८	१८	२८
२९९।४९	०	५८	५६	५४	५२	५०	४८	४६	४४	४२	४०	३८	३६	३४	३२	३०	२८	२६	२४	२२	२०	१८	१६	१४	१२	१०	८	६	४	२
मिथुन	९	९	९	१०	१०	१०	१०	१०	११	११	११	११	११	११	१२	१२	१२	१२	१२	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१४	१४	१४	१४	१४
	३८	४८	५९	१०	२०	३१	४२	५३	३	१४	२५	३६	४६	५७	८	१९	२९	४०	५१	१	१२	२३	३४	४४	५५	६	१७	२७	३८	४९
३२२।८२	०	४४	२८	१२	५६	४०	२४	८	५२	३६	२०	४	४८	३२	१६	०	४४	२८	१२	५६	४०	२४	८	५२	३६	२०	४	४८	३२	१६
कर्क	१५	१५	१५	१५	१५	१५	१६	१६	१६	१६	१६	१६	१७	१७	१७	१७	१७	१८	१८	१८	१८	१८	१८	१९	१९	१९	१९	१९	२०	२०
	०	१०	२१	३२	४२	५३	४	१५	२५	३६	४७	५८	८	१९	३०	४१	५१	२	१३	२३	३४	४५	५६	६	१७	२८	३९	४९	०	११
३२२।८२	०	४४	२८	१२	५६	४०	२४	८	५२	३६	२०	४	४८	३२	१६	०	४४	२८	१२	५६	४०	२४	८	५२	३६	२०	४	४८	३२	१६
सिंह	२०	२०	२०	२०	२१	२१	२१	२१	२१	२१	२२	२२	२२	२२	२२	२२	२३	२३	२३	२३	२३	२३	२४	२४	२४	२४	२४	२४	२५	२५
	२२	३१	४१	५१	१	११	२१	३१	४१	५१	१	११	२१	३१	४१	५१	१	११	२१	३१	४१	५१	१	११	२१	३१	४१	५१	१	११
२९९।४९	०	५८	५६	५४	५२	५०	४८	४६	४४	४२	४०	३८	३६	३४	३२	३०	२८	२६	२४	२२	२०	१८	१६	१४	१२	१०	८	६	४	२
कन्या	२५	२५	२५	२५	२५	२६	२६	२६	२६	२६	२६	२७	२७	२७	२७	२७	२७	२७	२८	२८	२८	२८	२८	२८	२९	२९	२९	२९	२९	२९
	२१	३०	३९	४८	५८	७	१६	२६	३५	४४	५४	३	१२	२१	३१	४०	४९	५९	८	१७	२७	३६	४५	५४	४	१३	२२	३२	४१	५०
२७९।४८	०	१८	३६	५४	१२	३०	४८	६	२४	४२	०	१८	३६	५४	१२	३०	४८	६	२४	४२	०	१८	३६	५४	१२	३०	४८	६	२४	४२
तुला	३०	३०	३०	३०	३०	३०	३०	३१	३१	३१	३१	३१	३१	३२	३२	३२	३२	३२	३२	३२	३३	३३	३३	३३	३३	३३	३४	३४	३४	३४
	०	९	१८	२७	३७	४६	५५	५	१४	२३	३३	४२	५१	०	१०	१९	२८	३८	४७	५६	६	१५	२४	३३	४३	५२	१	११	२०	२९
२७९।४८	०	१८	३६	५४	१२	३०	४८	६	२४	४२	०	१८	३६	५४	१२	३०	४८	६	२४	४२	०	१८	३६	५४	१२	३०	४८	६	२४	४२
वृश्चिक	३४	३४	३४	३५	३५	३५	३५	३५	३५	३६	३६	३६	३६	३६	३६	३७	३७	३७	३७	३७	३७	३८	३८	३८	३८	३८	३८	३९	३९	३९
	३९	४८	५८	८	१८	२८	३८	४८	५८	८	१८	२८	३८	४८	५८	८	१८	२८	३८	४८	५८	८	१८	२८	३८	४८	५८	८	१८	२८
२९९।४९	०	५८	५६	५४	५२	५०	४८	४६	४४	४२	४०	३८	३६	३४	३२	३०	२८	२६	२४	२२	२०	१८	१६	१४	१२	१०	८	६	४	२
धनु	३९	३९	३९	४०	४०	४०	४०	४०	४१	४१	४१	४१	४१	४१	४२	४२	४२	४२	४२	४३	४३	४३	४३	४३	४३	४४	४४	४४	४४	४४
	३८	४८	५९	१०	२०	३१	४२	५३	३	१४	२५	३६	४६	५७	८	१९	२९	४०	५१	१	१२	२३	३४	४४	५५	६	१७	२७	३८	४९
३२२।८२	०	४४	२८	१२	५६	४०	२४	८	५२	३६	२०	४	४८	३२	१६	०	४४	२८	१२	५६	४०	२४	८	५२	३६	२०	४	४८	३२	१६
मकर	४५	४५	४५	४५	४५	४५	४६	४६	४६	४६	४६	४६	४७	४७	४७	४७	४७	४८	४८	४८	४८	४८	४८	४९	४९	४९	४९	४९	५०	५०
	०	१०	२१	३२	४२	५३	४	१५	२५	३६	४७	५८	८	१९	३०	४१	५१	२	१३	२३	३४	४५	५६	६	१७	२८	३९	४९	०	११
३२२।८२	०	४४	२८	१२	५६	४०	२४	८	५२	३६	२०	४	४८	३२	१६	०	४४	२८	१२	५६	४०	२४	८	५२	३६	२०	४	४८	३२	१६
कुम्भ	५०	५०	५०	५०	५१	५१	५१	५१	५१	५१	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५५	५५
	२२	३१	४१	५१	१	११	२१	३१	४१	५१	१	११	२१	३१	४१	५१	१	११	२१	३१	४१	५१	१	११	२१	३१	४१	५१	१	११
२९९।४९	०	५८	५६	५४	५२	५०	४८	४६	४४	४२	४०	३८	३६	३४	३२	३०	२८	२६	२४	२२	२०	१८	१६	१४	१२	१०	८	६	४	२
मीन	५५	५५	५५	५५	५५	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५९	५९	५९	५९	५९	५९
	२१	३०	३९	४८	५८	७	१६	२६	३५	४४	५४	३	१२	२१	३१	४०	४९	५९	८	१७	२७	३६	४५	५४	४	१३	२२	३२	४१	५०
२७९।४८	०	१८	३६	५४	१२	३०	४८	६	२४	४२	०	१८	३६	५४	१२	३०	४८	६	२४	४२	०	१८	३६	५४	१२	३०	४८	६	२४	४२

९ अक्षांश की लग्न-सारणी

अंश	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९
मेष	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२	२	३	३	३	३	३	३	३	४	४
२६०।३८	०	८	१७	२६	३४	४३	५२	०	९	१८	२६	३५	४४	५२	१	१०	१८	२७	३६	४४	५३	२	१०	१९	२८	३६	४५	५४	२	११
	०	४०	२०	०	४०	२०	०	४०	२०	०	४०	२०	०	४०	२०	०	४०	२०	०	४०	२०	०	४०	२०	०	४०	२०	०	४०	२०
वृष	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	६	६	६	६	६	६	७	७	७	७	७	७	७	८	८	८	८	८	८
२८४।५१	२०	२९	३८	४८	५७	७	१६	२६	३५	४५	५४	४	१३	२३	३२	४२	५१	०	१०	१९	२९	३८	४८	५७	७	१६	२६	३५	४५	५४
	०	२८	५६	२४	५२	२०	४८	१६	४४	१२	४०	८	३६	४	३२	०	२८	५६	२४	५२	२०	४८	१६	४४	१२	४०	८	३६	४	३२
मिथुन	९	९	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	१०	१०	११	११	११	११	११	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१३	१३	१६	१३	१३	१३	१४
३१६।७६	४	१४	२५	३५	४६	५६	७	१७	२८	३८	४९	५९	१०	२०	३१	४२	५२	३	१३	२४	३४	४५	५५	६	१६	२७	२७	४८	५६	९
	०	३२	४	३६	८	४०	१२	४४	१६	४८	२०	५२	२४	५६	२८	०	३२	४	३६	८	४०	१२	४४	१६	४८	२०	५२	२४	५६	२८
कर्क	१४	१४	१४	१४	१५	१५	१५	१५	१५	१५	१६	१६	१६	१६	१६	१७	१७	१७	१७	१७	१७	१८	१८	१८	१८	१८	१९	१९	१९	१९
३२८।८८	२०	३०	४१	५२	३	१४	२५	३६	४७	५८	९	२०	३१	४२	५३	४	१५	२५	३६	४७	५८	९	२०	३१	४२	५३	४	१५	२६	३७
	०	५६	५२	४८	४४	४०	३६	३२	२८	२४	२०	१६	१२	८	४	०	५६	५२	४८	४४	४०	३६	३२	२८	२४	२०	१६	१२	८	४
सिंह	१९	१९	२०	२०	२०	२०	२०	२१	२१	२१	२१	२१	२१	२२	२२	२२	२२	२२	२२	२३	२३	२३	२३	२३	२३	२४	२४	२४	२४	२४
३१४।७४	४८	५८	८	१९	२९	४०	५०	१	११	२२	३२	४३	५३	४	१४	२५	३५	४५	५६	६	१७	२७	३८	४८	५९	९	२०	३०	४१	५१
	०	२८	५६	२४	५२	२०	४८	१६	४४	१२	४०	८	३६	४	३२	०	२८	५६	२४	५२	२०	४८	१६	४४	१२	४०	८	३६	४	३२
कन्या	२५	२५	२५	२५	२५	२५	२६	२६	२६	२६	२६	२६	२७	२७	२७	२७	२७	२७	२८	२८	२८	२८	२८	२८	२९	२९	२९	२९	२९	२९
२९८।५८	२	११	२१	३१	४१	५१	१	११	२१	३१	४१	५१	१	११	२१	३१	४०	५०	०	१०	२०	३०	४०	५०	०	१०	२०	३०	४०	५०
	०	५६	५२	४८	४४	४०	३६	३२	२८	२४	२०	१६	१२	८	४	०	५६	५२	४७	४४	४०	३६	३२	२८	२४	२०	१६	१२	८	४
तुला	३०	३०	३०	३०	३०	३०	३०	३१	३१	३१	३१	३१	३१	३२	३२	३२	३२	३२	३२	३३	३३	३३	३३	३३	३३	३४	३४	३४	३४	३४
२९८।५८	०	९	१९	२९	३९	४९	५९	९	१९	२९	३९	४९	५९	९	१९	२९	३८	४८	५८	८	१८	२८	३८	४८	५८	८	१८	२८	३८	४८
	०	५६	५२	४८	४४	४०	३६	३२	२८	२४	२०	१६	१२	८	४	०	५६	५२	४८	४४	४०	३६	३२	२८	२४	२०	१६	१२	८	४
वृश्चिक	३४	३५	३५	३५	३५	३५	३६	३६	३६	३६	३६	३६	३८	३७	३७	३७	३७	३७	३८	३८	३८	३८	३८	३८	३९	३९	३९	३९	३९	४०
३१४।७४	५८	८	१८	२९	३९	५०	०	११	२१	३२	४२	५३	३	१४	२४	३५	४५	५५	६	१६	२७	३७	४८	५८	९	१९	३०	४०	५१	१
	०	२८	५६	२४	५२	२०	४८	१६	४४	१२	४०	८	३६	४	३२	०	२८	५६	२४	५२	२०	४८	४४	१६	१२	४०	८	३६	४	३२
धनु	४०	४०	४०	४०	४०	४१	४१	४१	४१	४१	४२	४२	४२	४२	४२	४२	४३	४३	४३	४३	४३	४४	४४	४४	४४	४४	४४	४५	४५	४५
३२८।८८	१२	२२	३३	४४	५५	६	१७	२८	३९	५०	१	१२	२३	३४	४५	५६	६	१७	२८	३९	५०	१	१२	२३	३४	४५	५६	७	१८	२९
	०	५६	५२	४८	४४	४०	३६	३२	२८	२४	२०	१६	१२	८	४	०	५६	५२	४८	४४	४०	३६	३२	२८	२४	२०	१६	१२	८	४
मकर	४५	४५	४६	४६	४६	४६	४६	४६	४७	४७	४७	४७	४७	४७	४८	४८	४८	४८	४८	४९	४९	४९	४९	४९	४९	५०	५०	५०	५०	५०
३१६।७६	४०	५०	१	११	२२	३२	४३	५३	४	१४	२५	३५	४६	५६	७	१८	२८	३९	४९	०	१०	२१	३१	४१	५२	३	१३	२४	३४	४५
	०	३२	४	३६	८	४०	१२	४४	१६	४८	२०	५२	२४	५६	२८	०	३२	४	३६	८	४०	१२	४४	१६	४८	२०	५२	२४	५६	२८
कुम्भ	५०	५१	५१	५१	५१	५१	५१	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५५	५५	५५	५५
२८४।५१	५६	५	१४	२४	३३	४३	५२	२	११	२१	३०	४०	४९	५९	८	१८	२७	३६	४६	५५	५	१४	२४	३३	४३	५२	२	११	२१	३०
	०	२८	५६	२४	५२	२०	४८	१६	४४	१२	४०	८	३६	४	३२	०	२८	५६	२४	५२	२०	४८	१६	४४	१२	४०	८	३६	४	३२
मीन	५५	५५	५५	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५९	५९	५९	५९	५९	५९
२६०।३८	४०	४८	५७	६	१४	२३	३२	४०	४९	५८	६	१५	२४	३२	४१	५०	५८	७	१६	२४	३३	४२	५०	५९	८	१६	२५	३४	४२	५१
	०	४०	२०	०	४०	२०	०	४०	२०	०	४०	२०	०	४०	२०	०	४०	२०	०	४०	२०	०	४०	२०	०	४०	२०	०	४०	२०

११ अक्षांश की लग्न-सारणी

अंश	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९
मेष	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२	२	३	३	३	३	३	३	३	४
२५६।३६	०	८	१७	२५	३४	४२	५१	५९	८	१६	२५	३३	४२	५०	५९	८	१६	२५	३३	४२	५०	५९	७	१६	२४	३३	४१	५०	५८	७
	०	३२	४	३६	८	४०	१२	४४	१६	४८	२०	५२	२४	५६	२८	०	३२	४	३६	८	४०	१२	४४	१६	४८	२०	५२	२४	५६	२८
वृष	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	६	६	६	६	६	६	७	७	७	७	७	७	८	८	८	८	८	८
२८१।४६	१६	२५	३४	४४	५३	२	१२	२१	३०	४०	४९	५९	८	१७	२७	३६	४५	५५	४	१३	२३	३२	४२	५१	०	१०	१९	२८	३८	४७
	०	२२	४४	६	२८	५०	१२	३४	५६	१८	४०	२	२४	४६	८	३०	५२	१४	३६	५८	२०	४२	४	२६	४८	१०	३२	५४	१६	३८
मिथुन	८	९	९	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	१०	११	११	११	११	११	११	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१३	१३	१३	१३	१३	१४
३१४।७४	५७	७	१७	२८	३८	४९	५९	१०	२०	३१	४१	५२	२	१३	२३	३४	४४	५५	५	१५	२६	३६	४७	५७	८	१८	२९	३९	५०	०
	०	२८	५६	२४	५२	२०	४८	१६	४४	१२	४०	८	३६	४	३२	०	२८	५६	२४	५२	२०	४८	१६	४४	१२	४०	८	३६	४	३२
कर्क	१४	१४	१४	१४	१४	१५	१५	१५	१५	१५	१६	१६	१६	१६	१६	१६	१७	१७	१७	१७	१७	१७	१८	१८	१८	१८	१८	१९	१९	१९
३३०।६०	११	२२	३३	४४	५५	६	१७	२८	३९	५०	१	१२	२३	३४	४५	५६	७	१८	२९	४०	५१	२	१३	२४	३५	४६	५७	८	१९	३०
	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
सिंह	१९	१९	२०	२०	२०	२०	२०	२०	२१	२१	२१	२१	२१	२१	२२	२२	२२	२२	२२	२३	२३	२३	२३	२३	२३	२४	२४	२४	२४	२४
३१७।७७	४१	५१	२	१२	२३	३३	४४	५४	५	१६	२६	३७	४७	५८	८	१९	३०	४०	५१	१	१२	२२	३३	४४	५४	५	१५	२६	३६	४७
	०	३४	८	४२	१६	५०	२४	५८	३२	६	४०	१४	४८	२२	५६	३०	४	३८	१२	४६	२०	५४	२८	२	३६	१०	४४	१८	५२	२६
कन्या	२४	२५	२५	२५	२५	२५	२५	२६	२६	२६	२६	२६	२६	२७	२७	२७	२७	२७	२७	२८	२८	२८	२८	२८	२८	२९	२९	२९	२९	२९
३०२।६२	५८	८	१८	२८	३८	४८	५८	८	१८	२८	३८	४८	५८	८	१८	२९	३९	४९	५९	९	१९	२९	३९	४९	५९	९	१९	२९	३९	४९
	०	४	८	१२	१६	२०	२४	२८	३२	३६	४०	४४	४८	५२	५६	०	४	८	१२	१६	२०	२४	२८	३२	३६	४०	४४	४८	५२	५६
तुला	३०	३०	३०	३०	३०	३०	३१	३१	३१	३१	३१	३१	३२	३२	३२	३२	३२	३२	३३	३३	३३	३३	३३	३३	३४	३४	३४	३४	३४	३४
३०२।६२	०	१०	२०	३०	४०	५०	०	१०	२०	३०	४०	५०	०	१०	२०	३१	४१	५१	१	११	२१	३१	४१	५१	१	११	२१	३१	४१	५१
	०	४	८	१२	१६	२०	२४	२८	३२	३६	४०	४४	४८	५२	५६	०	४	८	१२	१६	२०	२४	२८	३२	३६	४०	४४	४८	५२	५६
वृश्चिक	३५	३५	३५	३५	३५	३५	३६	३६	३६	३६	३६	३६	३७	३७	३७	३७	३७	३८	३८	३८	३८	३८	३८	३९	३९	३९	३९	३९	३९	४०
३१७।७७	२	१२	२३	३३	४४	५४	५	१५	२६	३७	४७	५८	८	१९	२९	४०	५१	१	१२	२२	३३	४३	५४	५	१५	२६	३६	४७	५७	८
	०	३४	८	४२	१६	५०	२४	५८	३२	६	४०	१४	४८	२२	५६	३०	४	३८	१२	४६	२०	५४	२८	२	३६	१०	४४	१८	५२	२६
धनु	४०	४०	४०	४०	४१	४१	४१	४१	४१	४१	४२	४२	४२	४२	४२	४३	४३	४३	४३	४३	४३	४४	४४	४४	४४	४४	४५	४५	४५	४५
३३०।६०	१९	३०	४१	५२	३	१४	२५	३६	४७	५८	९	२०	३१	४२	५३	४	१५	२६	३७	४८	५९	१०	२१	३२	४३	५४	५	१६	२७	३८
	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
मकर	४५	४५	४६	४६	४६	४६	४६	४७	४७	४७	४७	४७	४७	४८	४८	४८	४८	४८	४८	४९	४९	४९	४९	४९	५०	५०	५०	५०	५०	५०
३१४।७४	४९	५९	९	२०	३०	४१	५१	२	१२	२३	३३	४४	५४	५	१५	२६	३६	४६	५७	७	१८	२८	३९	४९	०	१०	२१	३१	४२	५२
	०	२८	५६	२४	५२	२०	४८	१६	४४	१२	४०	८	३६	४	३२	०	२८	५६	२४	५२	२०	४८	१६	४४	१२	४०	८	३६	४	३२
कुम्भ	५१	५१	५१	५१	५१	५१	५१	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५५	५५	५५	५५
२८१।४६	३	१२	२१	३१	४०	४९	५९	८	१७	२७	३६	४६	५५	४	१४	२३	३२	४२	५१	०	१०	१९	२८	३८	४७	५७	६	१५	२५	३४
	०	२२	४४	६	२८	५०	१२	३४	५६	१८	४०	२	२४	४६	८	३०	५२	१४	३६	५८	२०	४२	४	२६	४८	११	३२	५४	१६	३८
मीन	५५	५५	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५९	५९	५९	५९	५९	५९	५९
२५६।३६	४४	५२	१	९	१८	२६	३५	४३	५२	०	९	१७	२६	३४	४३	५२	०	९	१७	२६	३४	४३	५१	०	८	१७	२५	३४	४२	५१
	०	३२	४	३६	८	४०	१२	४४	१६	४८	२०	५२	२४	५६	२८	०	३२	४	३६	८	४०	१२	४४	१६	४८	२०	५२	२४	५६	२८

१३ अक्षांश की लग्न-सारणी

अंश	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९
मेष	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२	२	३	३	३	३	३	३	३	४
२५१।३३	०	८	१६	२५	३३	४१	५०	५८	६	१५	२३	३२	४०	४८	५७	५	१३	२२	३०	३८	४७	५५	४	१२	२०	२९	३७	४५	५४	२
	०	२२	४४	६	२८	५०	१२	३४	५६	१८	४०	२	२४	४६	८	३०	५२	१४	३६	५८	२०	४२	४	२६	४८	१०	३२	५४	१६	३८
वृष	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	६	६	६	६	६	६	६	७	७	७	७	७	७	८	८	८	८	८
२७७।४७	११	२०	२९	३८	४७	५७	६	१५	२४	३४	४३	५२	१	११	२०	२९	३८	४७	५७	६	१५	२४	३४	४३	५२	१	११	२०	२९	३८
	०	१४	२८	४२	५६	१०	२४	३८	५२	६	२०	३४	४८	२	१६	३०	४४	५८	१२	२६	४०	५४	८	२२	३६	५०	४	१८	३२	४६
मिथुन	८	८	९	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	१०	१०	११	११	११	११	११	११	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१३	१३	१३	१३	१३
३१३।७३	४८	५८	८	१९	२९	४०	५०	१	११	२१	३२	४२	५३	३	१४	२४	३४	४५	५५	६	१६	२७	३७	४७	५८	८	१९	२९	४०	५०
	०	२६	५२	१८	४४	१०	३६	२	२८	५४	२०	४६	१२	३८	४	३०	५६	२२	४८	१४	४०	६	३२	५८	२४	५०	१६	४२	८	३४
कर्क	१४	१४	१४	१४	१४	१४	१५	१५	१५	१५	१५	१६	१६	१६	१६	१६	१६	१७	१७	१७	१७	१७	१८	१८	१८	१८	१८	१८	१९	१९
३३१।६१	१	१२	२३	३४	४५	५६	७	१८	२९	४०	५१	२	१३	२४	३५	४६	५७	८	१९	३०	४१	५२	३	१४	२५	३६	४७	५८	९	२०
	०	२	४	६	८	१०	१२	१४	१६	१८	२०	२२	२४	२६	२८	३०	३२	३४	३६	३८	४०	४२	४४	४६	४८	५०	५२	५४	५६	५८
सिंह	१९	१९	१९	२०	२०	२०	२०	२०	२०	२१	२१	२१	२१	२१	२२	२२	२२	२२	२२	२२	२३	२३	२३	२३	२३	२३	२४	२४	२४	२४
३२१।८१	३२	४२	५३	४	१४	२५	३६	४६	५७	८	१९	२९	४०	५१	१	१२	२३	३३	४४	५५	६	१६	२७	३८	४८	५९	१०	२०	३१	४२
	०	४२	२४	६	४८	३०	१२	५४	३६	१८	०	४२	२४	६	४८	३०	१२	५४	३६	१८	०	४२	२४	६	४८	३०	१२	५४	३६	१८
कन्या	२४	२५	२५	२५	२५	२५	२५	२६	२६	२६	२६	२६	२६	२७	२७	२७	२७	२७	२७	२८	२८	२८	२८	२८	२८	२९	२९	२९	२९	२९
३०७।६७	५३	३	१३	२३	३३	४४	५४	४	१४	२५	३५	४५	५५	६	१६	२६	३६	४६	५७	७	१७	२७	३८	४८	५८	८	१९	२९	३९	४९
	०	१४	२८	४२	५६	१०	२४	३८	५२	६	२०	३४	४८	२	१६	३०	४४	५८	१२	२६	४०	५४	८	२२	३६	५०	४	१८	३२	४६
तुला	३०	३०	३०	३०	३०	३०	३१	३१	३१	३१	३१	३१	३२	३२	३२	३२	३२	३२	३३	३३	३३	३३	३३	३३	३४	३४	३४	३४	३४	३४
३०७।६७	०	१०	२०	३०	४०	५१	१	११	२१	३२	४२	५२	२	१३	२३	३३	४३	५३	४	१४	२४	३४	४५	५५	५	१५	२६	३६	४६	५६
	०	१४	२८	४२	५६	१०	२४	३८	५२	६	२०	३४	४८	२	१६	३०	४४	५८	१२	२६	४०	५४	८	२२	३६	५०	४	१८	३२	४६
वृश्चिक	३५	३५	३५	३५	३५	३६	३६	३६	३६	३६	३६	३७	३७	३७	३७	३७	३७	३८	३८	३८	३८	३८	३९	३९	३९	३९	३९	३९	४०	४०
३२१।८१	७	१७	२८	३९	४९	०	११	२१	३२	४३	५४	४	१५	२६	३६	४७	५८	८	१९	३०	४१	५१	२	१३	२३	३४	४५	५५	६	१७
	०	४२	२४	६	४८	३०	१२	५४	३६	१८	०	४२	२४	६	४८	३०	१२	५४	३६	१८	०	४२	२४	६	४८	३०	१२	५४	३६	१८
धनु	४०	४०	४०	४१	४१	४१	४१	४१	४१	४२	४२	४२	४२	४२	४३	४३	४३	४३	४३	४३	४४	४४	४४	४४	४४	४५	४५	४५	४५	४५
३३१।६१	२८	३९	५०	१	१२	२३	३४	४५	५६	७	१८	२९	४०	५१	२	१३	२४	३५	४६	५७	८	१९	३०	४१	५२	३	१४	२५	३६	४७
	०	२	४	६	८	१०	१२	१४	१६	१८	२०	२२	२४	२६	२८	३०	३२	३४	३६	३८	४०	४२	४४	४६	४८	५०	५२	५४	५६	५८
मकर	४५	४६	४६	४६	४६	४६	४७	४७	४७	४७	४७	४७	४८	४८	४८	४८	४८	४८	४९	४९	४९	४९	४९	४९	५०	५०	५०	५०	५०	५१
३१३।७३	५९	९	१९	३०	४०	५१	१	१२	२२	३२	४३	५३	४	१४	२५	३५	४५	५६	६	१७	२७	३८	४८	५८	९	१९	३०	४०	५१	१
	०	२६	५२	१८	४४	१०	३६	२	२८	५४	२०	४६	१२	३८	४	३०	५६	२२	४८	१४	४०	६	३२	५८	२४	५०	१६	४२	८	३४
कुम्भ	५१	५१	५१	५१	५१	५१	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५५	५५	५५	५५	५५
२७७।४७	१२	२१	३०	३९	४८	५८	७	१६	२५	३५	४४	५३	२	१२	२१	३०	३९	४८	५८	७	१६	२५	३५	४४	५३	२	१२	२१	३०	३९
	०	१४	२८	४२	५६	१०	२४	३८	५२	६	२०	३४	४८	२	१६	३०	४४	५८	१२	२६	४०	५४	८	२२	३६	५०	४	१८	३२	४६
मीन	५५	५५	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५९	५९	५९	५९	५९	५९	५९
२५१।३३	४९	५७	५	१४	२२	३०	३९	४७	५५	४	१२	२१	२९	३७	४६	५४	२	११	१९	२७	३६	४४	५३	१	९	१८	२६	३४	४३	५१
	०	२२	४४	६	२८	५०	१२	३४	५६	१८	४०	२	२४	४६	८	३०	५२	१४	३६	५८	२०	४२	४	२६	४८	१०	३२	५४	१६	३८

१३ अक्षांश की लग्न-सारणी

अंश	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९
मेष	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२	२	३	३	३	३	३	३	३	४
	०	८	१६	२५	३३	४१	५०	५८	६	१५	२३	३२	४०	४८	५७	५	१३	२२	३०	३८	४७	५५	४	१२	२०	२९	३७	४५	५४	२
२५१|३३	०	२२	४४	६	२८	५०	१२	३४	५६	१८	४०	२	२४	४६	८	३०	५२	१४	३६	५८	२०	४२	४	२६	४८	१०	३२	५४	१६	३८
वृष	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	६	६	६	६	६	६	६	७	७	७	७	७	७	८	८	८	८	८
	११	२०	२९	३८	४७	५७	६	१५	२४	३४	४३	५२	१	११	२०	२९	३८	४७	५७	६	१५	२४	३४	४३	५२	१	११	२०	२९	३८
२७७|४७	०	१४	२८	४२	५६	१०	२४	३८	५२	६	२०	३४	४८	२	१६	३०	४४	५८	१२	२६	४०	५४	८	२२	३६	५०	४	१८	३२	४६
मिथुन	८	८	९	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	१०	१०	११	११	११	११	११	११	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१३	१३	१३	१३	१३
	४८	५८	८	१९	२९	४०	५०	१	११	२१	३२	४२	५३	३	१४	२४	३४	४५	५५	६	१६	२७	३७	४७	५८	८	१९	२९	४०	५०
३१३|७३	०	२६	५२	१८	४४	१०	३६	२	२८	५४	२०	४६	१२	३८	४	३०	५६	२२	४८	१४	४०	६	३२	५८	२४	५०	१६	४२	८	३४
कर्क	१४	१४	१४	१४	१४	१४	१५	१५	१५	१५	१५	१६	१६	१६	१६	१६	१६	१७	१७	१७	१७	१७	१८	१८	१८	१८	१८	१८	१९	१९
	१	१२	२३	३४	४५	५६	७	१८	२९	४०	५१	२	१३	२४	३५	४६	५७	८	१९	३०	४१	५२	३	१४	२५	३६	४७	५८	९	२०
३३१|६१	०	२	४	६	८	१०	१२	१४	१६	१८	२०	२२	२४	२६	२८	३०	३२	३४	३६	३८	४०	४२	४४	४६	४८	५०	५२	५४	५६	५८
सिंह	१९	१९	१९	२०	२०	२०	२०	२०	२०	२१	२१	२१	२१	२१	२२	२२	२२	२२	२२	२२	२३	२३	२३	२३	२३	२३	२४	२४	२४	२४
	३२	४२	५३	४	१४	२५	३६	४६	५७	८	१९	२९	४०	५१	१	१२	२३	३३	४४	५५	६	१६	२७	३८	४८	५९	१०	२०	३१	४२
३२१|८१	०	४२	२४	६	४८	३०	१२	५४	३६	१८	०	४२	२४	६	४८	३०	१२	५४	३६	१८	०	४२	२४	६	४८	३०	१२	५४	३६	१८
कन्या	२४	२५	२५	२५	२५	२५	२५	२६	२६	२६	२६	२६	२६	२७	२७	२७	२७	२७	२७	२८	२८	२८	२८	२८	२८	२९	२९	२९	२९	२९
	५३	३	१३	२३	३३	४४	५४	४	१४	२५	३५	४५	५५	६	१६	२६	३६	४६	५७	७	१७	२७	३८	४८	५८	८	१९	२९	३९	४९
३०७|६७	०	१४	२८	४२	५६	१०	२४	३८	५२	६	२०	३४	४८	२	१६	३०	४४	५८	१२	२६	४०	५४	८	२२	३६	५०	४	१८	३२	४६
तुला	३०	३०	३०	३०	३०	३०	३१	३१	३१	३१	३१	३१	३२	३२	३२	३२	३२	३२	३३	३३	३३	३३	३३	३३	३४	३४	३४	३४	३४	३४
	०	१०	२०	३०	४०	५१	१	११	२१	३२	४२	५२	२	१३	२३	३३	४३	५३	४	१४	२४	३४	४५	५५	५	१५	२६	३६	४६	५६
३०७|६७	०	१४	२८	४२	५६	१०	२४	३८	५२	६	२०	३४	४८	२	१६	३०	४४	५८	१२	२६	४०	५४	८	२२	३६	५०	४	१८	३२	४६
वृश्चिक	३५	३५	३५	३५	३५	३६	३६	३६	३६	३६	३६	३७	३७	३७	३७	३७	३७	३८	३८	३८	३८	३८	३९	३९	३९	३९	३९	३९	४०	४०
	७	१७	२८	३९	४९	०	११	२१	३२	४३	५४	४	१५	२६	३६	४७	५८	८	१९	३०	४१	५१	२	१३	२३	३४	४५	५५	६	१७
३२१|८१	०	४२	२४	६	४८	३०	१२	५४	३६	१८	०	४२	२४	६	४८	३०	१२	५४	३६	१८	०	४२	२४	६	४८	३०	१२	५४	३६	१८
धनु	४०	४०	४०	४१	४१	४१	४१	४१	४१	४२	४२	४२	४२	४२	४३	४३	४३	४३	४३	४३	४४	४४	४४	४४	४४	४५	४५	४५	४५	४५
	२८	३९	५०	१	१२	२३	३४	४५	५६	७	१८	२९	४०	५१	२	१३	२४	३५	४६	५७	८	१९	३०	४१	५२	३	१४	२५	३६	४७
३३१|६१	०	२	४	६	८	१०	१२	१४	१६	१८	२०	२२	२४	२६	२८	३०	३२	३४	३६	३८	४०	४२	४४	४६	४८	५०	५२	५४	५६	५८
मकर	४५	४६	४६	४६	४६	४६	४७	४७	४७	४७	४७	४७	४८	४८	४८	४८	४८	४८	४९	४९	४९	४९	४९	४९	५०	५०	५०	५०	५०	५१
	५९	९	१९	३०	४०	५१	१	१२	२२	३२	४३	५३	४	१४	२५	३५	४५	५६	६	१७	२७	३८	४८	५८	९	१९	३०	४०	५१	१
३१३|७३	०	२६	५२	१८	४४	१०	३६	२	२८	५४	२०	४६	१२	३८	४	३०	५६	२२	४८	१४	४०	६	३२	५८	२४	५०	१६	४२	८	३४
कुम्भ	५१	५१	५१	५१	५१	५१	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५५	५५	५५	५५	५५
	१२	२१	३०	३९	४८	५८	७	१६	२५	३५	४४	५३	२	१२	२१	३०	३९	४८	५८	७	१६	२५	३५	४४	५३	२	१२	२१	३०	३९
२७७|४७	०	१४	२८	४२	५६	१०	२४	३८	५२	६	२०	३४	४८	२	१६	३०	४४	५८	१२	२६	४०	५४	८	२२	३६	५०	४	१८	३२	४६
मीन	५५	५५	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५९	५९	५९	५९	५९	५९	५९
	४९	५७	५	१४	२२	३०	३९	४७	५५	४	१२	२१	२९	३७	४६	५४	२	११	१९	२७	३६	४४	५३	१	९	१८	२६	३४	४३	५१
२५१|३३	०	२२	४४	६	२८	५०	१२	३४	५६	१८	४०	२	२४	४६	८	३०	५२	१४	३६	५८	२०	४२	४	२६	४८	१०	३२	५४	१६	३८

१५ अक्षांश की लग्न-सारणी

अंश	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९
मेष	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२	२	३	३	३	३	३	३	३	३
	०	८	१६	२४	३२	४१	४९	५७	५	१४	२२	३०	३८	४७	५५	३	११	१९	२८	३६	४४	५२	१	९	१७	२५	३४	४२	५०	५८
२४७।२९	०	१४	२८	४२	५६	१०	२४	३८	५२	६	२०	३४	४८	२	१६	३०	४४	५८	१२	२६	४०	५४	८	२२	३६	५०	४	१८	३२	४६
वृष	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	६	६	६	६	६	६	७	७	७	७	७	७	७	८	८	८	८
	७	१६	२५	३४	४३	५२	१	१०	२०	२९	३८	४७	५६	५	१४	२४	३३	४२	५१	०	९	१८	२७	३७	४६	५५	४	१३	२२	३१
२७४।४५	०	८	१६	२४	३२	४०	४८	५६	४	१२	२०	२८	३६	४४	५२	०	८	१६	२४	३२	४०	४८	५६	४	१२	२०	२८	३६	४४	५२
मिथुन	८	८	९	९	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	१०	१०	११	११	११	११	११	११	१२	१२	१२	१२	१२	१३	१३	१३	१३	१३
	४१	५१	१	१२	२२	३२	४२	५३	३	१४	२४	३५	४५	५५	६	१६	२६	३७	४७	५७	८	१८	२९	३९	४९	०	१०	२०	३१	४१
३११।७१	०	२२	४४	६	२८	५०	१२	३४	५६	१८	४०	२	२४	४६	८	३०	५२	१४	३६	५८	२०	४२	४	२६	४८	१०	३२	५४	१६	३८
कर्क	१३	१४	१४	१४	१४	१४	१४	१५	१५	१५	१५	१५	१६	१६	१६	१६	१६	१७	१७	१७	१७	१७	१७	१८	१८	१८	१८	१८	१९	१९
	५२	३	१४	२५	३६	४७	५८	९	२०	३१	४३	५४	५	१६	२७	३८	४९	०	११	२२	३४	४५	५६	७	१८	२९	४०	५१	२	१३
३३३।९३	०	६	१२	१८	२४	३०	३६	४२	४८	५४	०	६	१२	१८	२४	३०	३६	४२	४८	५४	०	६	१२	१८	२४	३०	३६	४२	४८	५४
सिंह	१९	१९	१९	१९	२०	२०	२०	२०	२०	२१	२१	२१	२१	२१	२१	२२	२२	२२	२२	२२	२३	२३	२३	२३	२३	२३	२४	२४	२४	२४
	२५	३५	४६	५७	८	१९	२९	४०	५१	२	१३	२३	३४	४५	५६	७	१७	२८	३९	५०	१	११	२२	३३	४४	५५	५	१६	२७	३८
३२४।८४	०	४८	३६	२४	१२	०	४८	३६	२४	१२	०	४८	३६	२४	१२	०	४८	३६	२४	१२	०	४८	३६	२४	१२	०	४८	३६	२४	१२
कन्या	२४	२४	२५	२५	२५	२५	२५	२६	२६	२६	२६	२६	२६	२७	२७	२७	२७	२७	२७	२८	२८	२८	२८	२८	२८	२९	२९	२९	२९	२९
	४९	५९	९	२०	३०	४०	५१	१	११	२२	३२	४३	५३	३	१४	२४	३४	४५	५५	५	१६	२६	३७	४७	५७	८	१८	२८	३९	४९
३११।७१	०	२२	४४	६	२८	५०	१२	३४	५६	१८	४०	२	२४	४६	८	३०	५२	१४	३६	५८	२०	४२	४	२६	४८	१०	३२	५४	१६	३८
तुला	३०	३०	३०	३०	३०	३०	३१	३१	३१	३१	३१	३१	३२	३२	३२	३२	३२	३२	३३	३३	३३	३३	३३	३३	३४	३४	३४	३४	३४	३५
	०	१०	२०	३१	४१	५१	२	१२	२२	३३	४३	५४	४	१४	२५	३५	४५	५६	६	१६	२७	३७	४८	५८	८	१९	२९	३९	५०	०
३११।७१	०	२२	४४	६	२८	५०	१२	३४	५६	१८	४०	२	२४	४६	८	३०	५२	१४	३६	५८	२०	४२	४	२६	४८	१०	३२	५४	१६	३८
वृश्चिक	३५	३५	३५	३५	३५	३६	३६	३६	३६	३६	३६	३७	३७	३७	३७	३७	३८	३८	३८	३८	३८	३८	३९	३९	३९	३९	३९	४०	४०	४०
	११	२१	३२	४३	५४	५	१५	२६	३७	४८	५९	९	२०	३१	४२	५३	३	१४	२५	३६	४७	५७	८	१९	३०	४१	५१	२	१३	२४
३२४।८४	०	४८	३६	२४	१२	०	४८	३६	२४	१२	०	४८	३६	२४	१२	०	४८	३६	२४	१२	०	४८	३६	२४	१२	०	४८	३६	२४	१२
धनु	४०	४०	४०	४१	४१	४१	४१	४१	४२	४२	४२	४२	४२	४२	४३	४३	४३	४३	४३	४४	४४	४४	४४	४४	४५	४५	४५	४५	४५	४५
	३५	४६	५७	८	१९	३०	४१	५२	३	१४	२६	३७	४८	५९	१०	२१	३२	४३	५४	५	१७	२८	३९	५०	१	१२	२३	३४	४५	५६
३३३।९३	०	६	१२	१८	२४	३०	३६	४२	४८	५४	०	६	१२	१८	२४	३०	३६	४२	४८	५४	०	६	१२	१८	२४	३०	३६	४२	४८	५४
मकर	४६	४६	४६	४६	४६	४६	४७	४७	४७	४७	४७	४८	४८	४८	४८	४८	४८	४९	४९	४९	४९	४९	४९	५०	५०	५०	५०	५०	५०	५१
	८	१८	२८	३९	४९	५९	१०	२०	३०	४१	५१	२	१२	२२	३३	४३	५३	४	१४	२४	३५	४५	५६	६	१६	२७	३७	४७	५८	८
३११।७१	०	२२	४४	६	२८	५०	१२	३४	५६	१८	४०	२	२४	४६	८	३०	५२	१४	३६	५८	२०	४२	४	२६	४८	१०	३२	५४	१६	३८
कुम्भ	५१	५१	५१	५१	५१	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५५	५५	५५	५५	५५
	१९	२८	३७	४६	५५	४	१३	२२	३२	४१	५०	५९	८	१७	२६	३६	४५	५४	३	१२	२१	३०	३९	४९	५८	७	१६	२५	३४	४३
२७४।४५	०	८	१६	२४	३२	४०	४८	५६	४	१२	२०	२८	३६	४४	५२	०	८	१६	२४	३२	४०	४८	५६	४	१२	२०	२८	३६	४४	५२
मीन	५५	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५९	५९	५९	५९	५९	५९	५९
	५३	१	९	१७	२५	३४	४२	५०	५८	७	१५	२३	३१	४०	४८	५६	४	१२	२१	२९	३७	४५	५४	२	१०	१८	२७	३५	४३	५१
२४७।२९	०	१४	२८	४२	५६	१०	२४	३८	५२	६	२०	३४	४८	२	१६	३०	४४	५८	१२	२६	४०	५४	८	२२	३६	५०	४	१८	३२	४६

१७ अक्षांश की लग्न-सारणी

अंश	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९
मेष	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२	२	२	३	३	३	३	३	३	३
२४२।२५	०	८	१६	२४	३२	४०	४८	५६	४	१२	२०	२८	३६	४४	५२	१	९	१७	२५	३३	४१	४९	५७	५	१३	२१	२९	३७	४५	५३
	०	४	८	१२	१६	२०	२४	२८	३२	३६	४०	४४	४८	५२	५६	०	४	८	१२	१६	२०	२४	२८	३२	३६	४०	४४	४८	५२	५६
वृष	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	६	६	६	६	६	६	७	७	७	७	७	७	७	८	८	८
२७०।४३	२	११	२०	२९	३८	४७	५६	५	१४	२३	३२	४१	५०	५९	८	१७	२६	३५	४४	५३	२	११	२०	२९	३८	४७	५६	५	१४	२३
	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
मिथुन	८	८	८	९	९	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	१०	१०	११	११	११	११	११	११	१२	१२	१२	१२	१२	१३	१३	१३	१३
३१०।७०	३२	४२	५२	३	१३	२३	३४	४४	५४	५	१५	२५	३६	४६	५६	७	१७	२७	३८	४८	५८	९	१९	२९	४०	५०	०	११	२१	३१
	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०
कर्क	१३	१४	१४	१४	१४	१४	१४	१४	१५	१५	१५	१५	१५	१६	१६	१६	१६	१६	१७	१७	१७	१७	१७	१७	१८	१८	१८	१८	१८	१९
३३४।९४	४२	५३	४	१५	२६	३७	४८	५९	११	२२	३३	४४	५५	६	१७	२९	४०	५१	२	१३	२४	३५	४६	५८	९	२०	३१	४२	५३	४
	०	८	१६	२४	३२	४०	४८	५६	४	१२	२०	२८	३६	४४	५२	०	८	१६	२४	३२	४०	४८	५६	४	१२	२०	२८	३६	४४	५२
सिंह	१९	१९	१९	१९	१९	२०	२०	२०	२०	२०	२१	२१	२१	२१	२१	२२	२२	२२	२२	२२	२२	२३	२३	२३	२३	२३	२४	२४	२४	२४
३२८।८८	१६	२६	३७	४८	५९	१०	२१	३२	४३	५४	५	१६	२७	३८	४९	०	१०	२१	३२	४३	५४	५	१६	२७	३८	४९	०	११	२२	३३
	०	५६	५२	४८	४४	४०	३६	३२	२८	२४	२०	१६	१२	८	४	०	५६	५२	४८	४४	४०	३६	३२	२८	२४	२०	१६	१२	८	४
कन्या	२४	२४	२५	२५	२५	२५	२५	२५	२६	२६	२६	२६	२६	२७	२७	२७	२७	२७	२७	२८	२८	२८	२८	२८	२८	२९	२९	२९	२९	२९
३१६।७६	४४	५४	५	१५	२६	३६	४७	५७	८	१८	२९	३९	५०	०	११	२२	३२	४३	५३	४	१४	२५	३५	४६	५६	७	१७	२८	३८	४९
	०	३२	४	३६	८	४०	१२	४४	१६	४८	२०	५२	२४	५६	२८	०	३२	४	३६	८	४०	१२	४४	१६	४८	२०	५२	२४	५६	२८
तुला	३०	३०	३०	३०	३०	३०	३१	३१	३१	३१	३१	३१	३२	३२	३२	३२	३२	३२	३३	३३	३३	३३	३३	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३५
३१६।७६	०	१०	२१	३१	४२	५२	३	१३	२४	३४	४५	५५	६	१६	२७	३८	४८	५९	९	२०	३०	४१	५१	२	१२	२३	३३	४४	५४	५
	०	३२	४	३६	८	४०	१२	४४	१६	४८	२०	५२	२४	५६	२८	०	३२	४	३६	८	४०	१२	४४	१६	४८	२०	५२	२४	५६	२८
वृश्चिक	३५	३५	३५	३५	३५	३६	३६	३६	३६	३६	३७	३७	३७	३७	३७	३८	३८	३८	३८	३८	३८	३९	३९	३९	३९	३९	४०	४०	४०	४०
३२८।८८	१६	२६	३७	४८	५९	१०	२१	३२	४३	५४	५	१६	२७	३८	४९	०	१०	२१	३२	४३	५४	५	१६	२७	३८	४९	०	११	२२	३३
	०	५६	५२	४८	४४	४०	३६	३२	२८	२४	२०	१६	१२	८	४	०	५६	५२	४८	४४	४०	३६	३२	२८	२४	२०	१६	१२	८	४
धनु	४०	४०	४१	४१	४१	४१	४१	४२	४२	४२	४२	४२	४२	४३	४३	४३	४३	४३	४४	४४	४४	४४	४४	४५	४५	४५	४५	४५	४५	४६
३३४।९४	४४	५५	६	१७	२८	३९	५०	१	१२	२४	३५	४६	५७	८	१९	३१	४२	५३	४	१५	२६	३७	४८	०	११	२२	३३	४४	५५	६
	०	८	१६	२४	३२	४०	४८	५६	४	१२	२०	२८	३६	४४	५२	०	८	१६	२४	३२	४०	४८	५६	४	१२	२०	२८	३६	४४	५२
मकर	४६	४६	४६	४६	४६	४७	४७	४७	४७	४७	४८	४८	४८	४८	४८	४८	४९	४९	४९	४९	४९	४९	५०	५०	५०	५०	५०	५०	५१	५१
३१०।७०	१८	२८	३८	४९	५९	९	२०	३०	४०	५१	१	११	२२	३२	४२	५३	३	१३	२४	३४	४४	५५	५	१५	२६	३६	४६	५७	७	१७
	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०
कुम्भ	५१	५१	५१	५१	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५५	५५	५५	५५	५५	५५
२७०।४३	२८	३७	४६	५५	४	१३	२२	३१	४०	४९	५८	७	१६	२५	३४	४३	५२	१	१०	१९	२८	३७	४६	५५	४	१३	२२	३१	४०	४९
	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
मीन	५५	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५९	५९	५९	५९	५९	५९	५९
२४२।२५	५८	६	१४	२२	३०	३८	४६	५४	२	१०	१८	२६	३४	४२	५०	५९	७	१५	२३	३१	३९	४७	५५	३	११	१९	२७	३५	४३	५१
	०	४	८	१२	१६	२०	२४	२८	३२	३६	४०	४४	४८	५२	५६	०	४	८	१२	१६	२०	२४	२८	३२	३६	४०	४४	४८	५२	५६

१९ अक्षांश की लग्न–सारणी

अंश	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९
मेष	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२	२	३	३	३	३	३	३	३
२३८।२२	०	७	१५	२३	३१	३९	४७	५५	३	११	१९	२७	३५	४३	५१	५९	६	१४	२२	३०	३८	४६	५४	२	१०	१८	२६	३४	४२	५०
	०	५६	५२	४८	४४	४०	३६	३२	२८	२४	२०	१६	१२	८	४	०	५६	५२	४८	४४	४०	३६	३२	२८	२४	२०	१६	१२	८	४
वृष	३	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	६	६	६	६	६	६	६	७	७	७	७	७	७	७	८	८
२६९।४१	५८	६	१५	२४	३३	४२	५१	०	९	१७	२६	३५	४४	५३	२	११	१९	२८	३७	४६	५५	४	१३	२१	३०	३९	४८	५७	६	१५
	०	५२	४४	३६	२८	२०	१२	४	५६	४८	४०	३२	२४	१६	८	०	५२	४४	३६	२८	२०	१२	४	५६	४८	४०	३२	२४	१६	८
मिथुन	८	८	८	८	९	९	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	१०	१०	११	११	११	११	११	११	१२	१२	१२	१२	१२	१३	१३	१३
३०८।६८	२४	३४	४४	५४	५	१५	२५	३५	४६	५६	६	१६	२७	३७	४७	५८	८	१८	२८	३९	४९	५९	९	२०	३०	४०	५०	१	११	२१
	०	१६	३२	४८	४	२०	३६	५२	८	२४	४०	५६	१२	२८	४४	०	१६	३२	४८	४	२०	३६	५२	८	२४	४०	५६	१२	२८	४४
कर्क	१३	१३	१३	१४	१४	१४	१४	१४	१५	१५	१५	१५	१५	१५	१६	१६	१६	१६	१६	१७	१७	१७	१७	१७	१८	१८	१८	१८	१८	१८
३३६।९६	३२	४३	५४	५	१६	२८	३९	५०	१	१२	२४	३५	४६	५७	८	२०	३१	४२	५३	४	१६	२७	३८	४९	०	१२	२३	३४	४५	५६
	०	१२	२४	३६	४८	०	१२	२४	३६	४८	०	१२	२४	३६	४८	०	१२	२४	३६	४८	०	१२	२४	३६	४८	०	१२	२४	३६	४८
सिंह	१९	१९	१९	१९	१९	२०	२०	२०	२०	२०	२०	२१	२१	२१	२१	२१	२२	२२	२२	२२	२२	२३	२३	२३	२३	२३	२३	२४	२४	२४
३३२।९२	८	१९	३०	४१	५२	३	१४	२५	३६	४७	५८	९	२०	३१	४२	५४	५	१६	२७	३८	४९	०	११	२२	३३	४४	५५	६	१७	२८
	०	४	८	१२	१६	२०	२४	२८	३२	३६	४०	४४	४८	५२	५६	०	४	८	१२	१६	२०	२४	२८	३२	३६	४०	४४	४८	५२	५६
कन्या	२४	२४	२५	२५	२५	२५	२५	२५	२६	२६	२६	२६	२६	२६	२७	२७	२७	२७	२७	२८	२८	२८	२८	२८	२८	२९	२९	२९	२९	२९
३२०।८०	४०	५०	१	१२	२२	३३	४४	५४	५	१६	२६	३७	४८	५८	९	२०	३०	४१	५२	२	१३	२४	३४	४५	५६	६	१७	२८	३८	४९
	०	४०	२०	०	४०	२०	०	४०	२०	०	४०	२०	०	४०	२०	०	४०	२०	०	४०	२०	०	४०	२०	०	४०	२०	०	४०	२०
तुला	३०	३०	३०	३०	३०	३०	३१	३१	३१	३१	३१	३१	३२	३२	३२	३२	३२	३३	३३	३३	३३	३३	३३	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३५
३२०।८०	०	१०	२१	३२	४२	५३	४	१४	२५	३६	४६	५७	८	१८	२९	४०	५०	१	१२	२२	३३	४४	५४	५	१६	२६	३७	४८	५८	९
	०	४०	२०	०	४०	२०	०	४०	२०	०	४०	२०	०	४०	२०	०	४०	२०	०	४०	२०	०	४०	२०	०	४०	२०	०	४०	२०
वृश्चिक	३५	३५	३५	३५	३६	३६	३६	३६	३६	३६	३७	३७	३७	३७	३७	३८	३८	३८	३८	३८	३९	३९	३९	३९	३९	३९	४०	४०	४०	४०
३३२।९२	२०	३१	४२	५३	४	१५	२६	३७	४८	५९	१०	२१	३२	४३	५४	६	१७	२८	३९	५०	१	१२	२३	३४	४५	५६	७	१८	२९	४०
	०	४	८	१२	१६	२०	२४	२८	३२	३६	४०	४४	४८	५२	५६	०	४	८	१२	१६	२०	२४	२८	३२	३६	४०	४४	४८	५२	५६
धनु	४०	४१	४१	४१	४१	४१	४१	४२	४२	४२	४२	४२	४३	४३	४३	४३	४३	४४	४४	४४	४४	४४	४४	४५	४५	४५	४५	४५	४६	४६
३३६।९६	५२	३	१४	२५	३६	४८	५९	१०	२१	३२	४४	५५	६	१७	२८	४०	५१	२	१३	२४	३६	४७	५८	९	२०	३२	४३	५४	५	१६
	०	१२	२४	३६	४८	०	१२	२४	३६	४८	०	१२	२४	३६	४८	०	१२	२४	३६	४८	०	१२	२४	३६	४८	०	१२	२४	३६	४८
मकर	४६	४६	४६	४६	४७	४७	४७	४७	४७	४८	४८	४८	४८	४८	४८	४९	४९	४९	४९	४९	४९	५०	५०	५०	५०	५०	५०	५१	५१	५१
३०८।६८	२८	३८	४८	५८	९	१९	२९	३९	५०	०	१०	२०	१९	४१	५१	२	१२	२२	३२	४३	५३	३	१३	२४	३४	४४	५४	५	१५	२५
	०	१६	३२	४८	४	२०	३६	५२	८	२४	४०	५६	१२	२८	४४	०	१६	३२	४८	४	२०	३६	५२	८	२४	४०	५६	१२	२८	४४
कुम्भ	५१	५१	५१	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५५	५५	५५	५५	५५	५५
२६९।४१	३६	४४	५३	२	११	२०	२९	३८	४६	५५	४	१३	२२	३१	४०	४९	५७	६	१५	२४	३३	४२	५१	५९	८	१७	२६	३५	४४	५३
	०	५२	४४	३६	२८	२०	१२	४	५६	४८	४०	३२	२४	१६	८	०	५२	४४	३६	२८	२०	१२	४	५६	४८	४०	३२	२४	१६	८
मीन	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५९	५९	५९	५९	५९	५९	५९
२३८।२२	२	९	१७	२५	३३	४१	४९	५७	५	१३	२१	२९	३७	४५	५३	१	८	१६	२४	३२	४०	४८	५६	४	१२	२०	२८	३६	४४	५२
	०	५६	५२	४८	४४	४०	३६	३२	२८	२४	२०	१६	१२	८	४	०	५६	५२	४८	४४	४०	३६	३२	२८	२४	२०	१६	१२	८	४

२१ अक्षांश की लग्न-सारणी

अंश	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९
मेष	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२	२	२	३	३	३	३	३	३
२३३।१८	०	७	१५	२३	३१	३८	४६	५४	२	९	१७	२५	३३	४०	४८	५६	४	१२	१९	२७	३५	४३	५०	५८	६	१४	२२	३०	३८	४६
	०	४६	३२	१८	४	५०	३६	२२	८	५४	४०	२६	१२	५८	४४	३०	१६	२	४८	३४	२०	६	५२	३८	२४	१०	५६	४२	२८	१४
वृष	३	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	६	६	६	६	६	६	६	७	७	७	७	७	७	७	८
२९२।३९	५३	१	१०	१९	२७	३६	४५	५४	२	११	२०	२९	३७	४६	५५	४	१२	२१	३०	३८	४७	५६	५	१३	२२	३१	४०	४८	५७	६
	०	४४	२८	१२	५६	४०	२४	८	५२	३६	२०	४	४८	३२	१६	०	४४	२८	१२	५६	४०	२४	८	५२	३६	२०	४	४८	३२	१६
मिथुन	८	८	८	८	८	९	९	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	१०	१०	११	११	११	११	११	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१३	१३
३०७।६६	१५	२५	३५	४५	५५	६	१६	२६	३६	४७	५७	७	१७	२८	३८	४८	५८	८	१९	२९	३९	४९	०	१०	२०	३०	४१	५१	१	११
	०	१४	२८	४२	५६	१०	२४	३८	५२	६	२०	३४	४८	२	१६	३०	४४	५८	१२	२६	४०	५४	८	२२	३६	५०	४	१८	३२	४६
कर्क	१३	१३	१३	१३	१४	१४	१४	१४	१४	१५	१५	१५	१५	१५	१५	१६	१६	१६	१६	१६	१७	१७	१७	१७	१७	१८	१८	१८	१८	१८
३३७।६७	२२	३३	४४	५५	६	१८	२९	४०	५१	३	१४	२५	३६	४८	५९	१०	२१	३२	४४	५५	६	१७	२९	४०	५१	२	१४	२५	३६	४७
	०	१४	२८	४२	५६	१०	२४	३८	५२	६	२०	३४	४८	२	१६	३०	४४	५८	१२	२६	४०	५४	८	२२	३६	५०	४	१८	३२	४६
सिंह	१८	१९	१९	१९	१९	१९	२०	२०	२०	२०	२०	२१	२१	२१	२१	२१	२१	२२	२२	२२	२२	२२	२३	२३	२३	२३	२३	२४	२४	२४
३३६।६६	५९	१०	२१	३२	४३	५५	६	१७	२८	३९	५१	२	१३	२४	३५	४७	५८	९	२०	३१	४३	५४	५	१६	२७	३९	५०	१	१२	२३
	०	१२	२४	३६	४८	०	१२	२४	३६	४८	०	१२	२४	३६	४८	०	१२	२४	३६	४८	०	१२	२४	३६	४८	०	१२	२४	३६	४८
कन्या	२४	२४	२४	२५	२५	२५	२५	२५	२६	२६	२६	२६	२६	२६	२७	२७	२७	२७	२७	२८	२८	२८	२८	२८	२८	२९	२९	२९	२९	२९
३२५।८५	३५	४५	५६	७	१८	२९	४०	५०	१	१२	२३	३४	४५	५५	६	१७	२८	३९	५०	०	११	२२	३३	४४	५५	५	१६	२७	३८	४९
	०	५०	४०	३०	२०	१०	०	५०	४०	३०	२०	१०	०	५०	४०	३०	२०	१०	०	५०	४०	३०	२०	१०	०	५०	४०	३०	२०	१०
तुला	३०	३०	३०	३०	३०	३०	३१	३१	३१	३१	३१	३१	३२	३२	३२	३२	३२	३३	३३	३३	३३	३३	३३	३४	३४	३४	३४	३४	३५	३५
३२५।८५	०	१०	२१	३२	४३	५४	५	१५	२६	३७	४८	५९	१०	२०	३१	४२	५३	४	१५	२५	३६	४७	५८	९	२०	३०	४१	५२	३	१४
	०	५०	४०	३०	२०	१०	०	५०	४०	३०	२०	१०	०	५०	४०	३०	२०	१०	०	५०	४०	३०	२०	१०	०	५०	४०	३०	२०	१०
वृश्चिक	३५	३५	३५	३५	३६	३६	३६	३६	३६	३७	३७	३७	३७	३७	३८	३८	३८	३८	३८	३८	३९	३९	३९	३९	३९	४०	४०	४०	४०	४०
३३६।६६	२५	३६	४७	५८	९	२१	३२	४३	५४	५	१७	२८	३९	५०	१	१३	२४	३५	४६	५७	९	२०	३१	४२	५३	५	१६	२७	३८	४९
	०	१२	२४	३६	४८	०	१२	२४	३६	४८	०	१२	२४	३६	४८	०	१२	२४	३६	४८	०	१२	२४	३६	४८	०	१२	२४	३६	४८
धनु	४१	४१	४१	४१	४१	४१	४२	४२	४२	४२	४२	४३	४३	४३	४३	४३	४४	४४	४४	४४	४४	४४	४५	४५	४५	४५	४५	४६	४६	४६
३३७।६७	१	१२	२३	३४	४५	५७	८	१९	३०	४२	५३	४	१५	२७	३८	४९	०	११	२३	३४	४५	५६	८	१९	३०	४१	५३	४	१५	२६
	०	१४	२८	४२	५६	१०	२४	३८	५२	६	२०	३४	४८	२	१६	३०	४४	५८	१२	२६	४०	५४	८	२२	३६	५०	४	१८	३२	४६
मकर	४६	४६	४६	४७	४७	४७	४७	४७	४७	४८	४८	४८	४८	४८	४९	४९	४९	४९	४९	४९	५०	५०	५०	५०	५०	५०	५१	५१	५१	५१
३०७।६६	३८	४८	५८	८	१८	२९	३९	४९	५९	१०	२०	३०	४०	५१	१	११	२१	३१	४२	५२	२	१२	२३	३३	४३	५३	४	१४	२४	३४
	०	१४	२८	४२	५६	१०	२४	३८	५२	६	२०	३४	४८	२	१६	३०	४४	५८	१२	२६	४०	५४	८	२२	३६	५०	४	१८	३२	४६
कुम्भ	५१	५१	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५५	५५	५५	५५	५५	५५	५५
२९२।३९	४५	५३	२	११	१९	२८	३७	४६	५४	३	१२	२१	२९	३८	४७	५६	४	१३	२२	३०	३९	४८	५७	५	१४	२३	३२	४०	४९	५८
	०	४४	२८	१२	५६	४०	२४	८	५२	३६	२०	४	४८	३२	१६	०	४४	२८	१२	५६	४०	२४	८	५२	३६	२०	४	४८	३२	१६
मीन	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५९	५९	५९	५९	५९	५९	५९
२३३।१८	७	१४	२२	३०	३८	४५	५३	१	९	१६	२४	३२	४०	४७	५५	३	११	१९	२६	३४	४२	५०	५७	५	१३	२१	२८	३६	४४	५२
	०	४६	३२	१८	४	५०	३६	२२	८	५४	४०	२६	१२	५८	४४	३०	१६	[illegible]	[illegible]	३४	२०	६	५२	३८	२४	१०	५६	४२	२८	१४

२५ अक्षांश की लग्न-सारणी

अंश	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९
मेष	०	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२	२	२	३	३	३	३	३
	०	७	१४	२२	२९	३७	४४	५२	५९	६	१४	२१	२९	३६	४४	५१	५८	६	१३	२१	२८	३६	४३	५०	५८	५	१३	२०	२८	३५
२२३।१२	०	२६	५२	१८	४४	१०	३६	२	२८	५४	२०	४६	१२	३८	४	३०	५६	२२	४८	१४	४०	६	३२	५८	२४	५०	१६	४२	८	३४
वृष	३	३	३	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	६	६	६	६	६	६	६	७	७	७	७	७	७
	४३	५१	५९	८	१६	२५	३३	४२	५०	५९	७	१६	२४	३३	४१	५०	५८	६	१५	२३	३२	४०	४९	५७	६	१४	२३	३१	४०	४८
२५४।३५	०	२८	५६	२४	५२	२०	४८	१६	४४	१२	४०	८	३६	४	३२	०	२८	५६	२४	५२	२०	४८	१६	४४	१२	४०	८	३६	४	३२
मिथुन	७	८	८	८	८	८	८	९	९	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	१०	१०	११	११	११	११	११	११	१२	१२	१२	१२	१२
	५७	७	१७	२७	३७	४७	५७	७	१७	२७	३८	४८	५८	८	१८	२८	३८	४८	५८	८	१९	२९	३९	४९	५९	९	१९	२९	३९	४९
३०३।६२	०	६	१२	१८	२४	३०	३६	४२	४८	५४	०	६	१२	१८	२४	३०	३६	४२	४८	५४	०	६	१२	१८	२४	३०	३६	४२	४८	५४
कर्क	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१४	१४	१४	१४	१४	१५	१५	१५	१५	१५	१६	१६	१६	१६	१६	१६	१७	१७	१७	१७	१७	१८	१८	१८
	०	११	२२	३४	४५	५६	८	१९	३०	४२	५३	५	१६	२७	३९	५०	१	१३	२४	३५	४७	५८	१०	२१	३२	४४	५५	६	१८	२९
३४१।१०१	०	२२	४४	६	२८	५०	१२	३४	५६	१८	४०	२	२४	४६	८	३०	५२	१४	३६	५८	२०	४२	४	२६	४८	१०	३२	५४	१६	३८
सिंह	१८	१८	१९	१९	१९	१९	१९	२०	२०	२०	२०	२०	२०	२१	२१	२१	२१	२१	२२	२२	२२	२२	२२	२३	२३	२३	२३	२३	२४	२४
	४१	५२	३	१५	२६	३८	४९	१	१२	२४	३५	४७	५८	१०	२१	३३	४४	५५	७	१८	३०	४१	५३	४	१६	२७	३९	५०	२	१३
३४४।१०४	०	२८	५६	२४	५२	२०	४८	१६	४४	१२	४०	८	३६	४	३२	०	२८	५६	२४	५२	२०	४८	१६	४४	१२	४०	८	३६	४	३२
कन्या	२४	२४	२४	२४	२५	२५	२५	२५	२५	२६	२६	२६	२६	२६	२७	२७	२७	२७	२७	२७	२८	२८	२८	२८	२८	२९	२९	२९	२९	२९
	२५	३६	४७	५८	९	२०	३२	४३	५४	५	१६	२७	३९	५०	१	१२	२३	३४	४६	५७	८	१९	३०	४१	५३	४	१५	२६	३७	४८
३३५।९५	०	१०	२०	३०	४०	५०	०	१०	२०	३०	४०	५०	०	१०	२०	३०	४०	५०	०	१०	२०	३०	४०	५०	०	१०	२०	३०	४०	५०
तुला	३०	३०	३०	३०	३०	३०	३१	३१	३१	३१	३१	३२	३२	३२	३२	३२	३२	३३	३३	३३	३३	३३	३४	३४	३४	३४	३४	३५	३५	३५
	०	११	२२	३३	४४	५५	७	१८	२९	४०	५१	२	१४	२५	३६	४७	५८	९	२१	३२	४३	५४	५	१६	२८	३९	५०	१	१२	२३
३३५।९५	०	१०	२०	३०	४०	५०	०	१०	२०	३०	४०	५०	०	१०	२०	३०	४०	५०	०	१०	२०	३०	४०	५०	०	१०	३०	३०	४०	५०
वृश्चिक	३५	३५	३५	३६	३६	३६	३६	३६	३७	३७	३७	३७	३७	३८	३८	२८	३८	३८	३९	३९	३९	३९	३९	३९	४०	४०	४०	४०	४०	४१
	३५	४६	५७	९	२०	३२	४३	५५	६	१८	२९	४१	५२	४	१५	२७	३८	४९	१	१२	२४	३५	४७	५८	१०	२१	३३	४४	५६	७
३४४।१०४	०	२८	५६	२४	५२	२०	४८	१६	४४	१२	४०	८	३६	४	३२	०	२८	५६	२४	५२	२०	४८	१६	४४	१२	४०	८	३६	४	३२
धनु	४१	४१	४१	४१	४२	४२	४२	४२	४२	४३	४३	४३	४३	४३	४३	४४	४४	४४	४४	४४	४५	४५	४५	४५	४५	४६	४६	४६	४६	४६
	१९	३०	४१	५३	४	१५	२७	३८	४९	१	१२	२४	३५	४६	५८	९	२०	३२	४३	५४	६	१७	२९	४०	५१	३	१४	२५	३७	४८
३४१।१०१	०	२२	४४	६	२८	५०	१२	३४	५६	१८	४०	२	२४	४६	८	३०	५२	१४	३६	५८	२०	४२	४	२६	४८	१०	३२	५४	१६	३८
मकर	४७	४७	४७	४७	४७	४७	४८	४८	४८	४८	४८	४८	४९	४९	४९	४९	४९	४९	५०	५०	५०	५०	५०	५०	५१	५१	५१	५१	५१	५१
	०	१०	२०	३०	४०	५०	०	१०	२०	३०	४१	५१	१	११	२१	३१	४१	५१	१	११	२२	३२	४२	५२	२	१२	२२	३२	४२	५२
३०३।६३	०	६	१२	१८	२४	३०	३६	४२	४८	५४	०	६	१२	१८	२४	३०	३६	४२	४८	५४	०	६	१२	१८	२४	३०	३६	४२	४८	५४
कुम्भ	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५५	५५	५५	५५	५५	५५	५५	५६	५६
	३	११	१९	२८	३६	४५	५३	२	१०	१९	२७	३६	४४	५३	१	१०	१८	२६	३५	४३	५२	०	९	१७	२६	३४	४३	५१	०	८
२५४।३५	०	२८	५६	२४	५२	२०	४८	१६	४४	१२	४०	८	३६	४	३२	०	२८	५६	२४	५२	२०	४८	१६	४४	१२	४०	८	३६	४	३२
मीन	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५९	५९	५९	५९	५९	५९	५९	५९
	१७	२४	३०	३९	४६	५४	१	९	१६	२३	३१	३८	४६	५३	१	८	१५	२३	३०	३८	४५	५३	०	७	१५	२२	३०	३७	४५	५२
२२३।१२	०	२६	५२	१८	४४	१०	३६	२	२८	५४	२०	४६	१२	३८	४	३०	५६	२२	४८	१४	४०	६	३२	५८	२४	५०	१६	४२	८	३४

२५ अक्षांश की लग्न–सारणी

अश	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९
मेप	०	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२	२	२	३	३	३	३	३
२२३।१२	०	७	१४	२२	२९	३७	४४	५२	५९	६	१४	२१	२९	३६	४४	५१	५८	६	१३	२१	२८	३६	४३	५०	५८	५	१३	२०	२८	३५
	०	२६	५२	१८	४४	१०	३६	२	२८	५४	२०	४६	१२	३८	४	३०	५६	२२	४८	१४	४०	६	३२	५८	२४	५०	१६	४२	८	३४
वृप	३	३	३	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	६	६	६	६	६	६	६	७	७	७	७	७	७
२५४।३५	४३	५१	५९	८	१६	२५	३३	४२	५०	५९	७	१६	२४	३३	४१	५०	५८	६	१५	२३	३२	४०	४९	५७	६	१४	२३	३१	४०	४८
	०	२८	५६	२४	५२	२०	४८	१६	४४	१२	४०	८	३६	४	३२	०	२८	५६	२४	५२	२०	४८	१६	४४	१२	४०	८	३६	४	३२
मिथुन	७	८	८	८	८	८	८	९	९	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	१०	१०	११	११	११	११	११	११	१२	१२	१२	१२	१२
३०३।६२	५७	७	१७	२७	३७	४७	५७	७	१७	२७	३८	४८	५८	८	१८	२८	३८	४८	५८	८	१९	२९	३९	४९	५९	९	१९	२९	३९	४९
	०	६	१२	१८	२४	३०	३६	४२	४८	५४	०	६	१२	१८	२४	३०	३६	४२	४८	५४	०	६	१२	१८	२४	३०	३६	४२	४८	५४
कर्क	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१४	१४	१४	१४	१४	१५	१५	१५	१५	१५	१६	१६	१६	१६	१६	१६	१७	१७	१७	१७	१७	१८	१८	१८
३४१।१०१	०	११	२२	३४	४५	५६	८	१९	३०	४२	५३	५	१६	२७	३९	५०	१	१३	२४	३५	४७	५८	१०	२१	३२	४४	५५	६	१८	२९
	०	२२	४४	६	२८	५०	१२	३४	५६	१८	४०	२	२४	४६	८	३०	५२	१४	३६	५८	२०	४२	४	२६	४८	१०	३२	५४	१६	३८
सिंह	१८	१८	१९	१९	१९	१९	१९	२०	२०	२०	२०	२०	२०	२१	२१	२१	२१	२१	२२	२२	२२	२२	२२	२३	२३	२३	२३	२३	२४	२४
३४४।१०४	४१	५२	३	१५	२६	३८	४९	१	१२	२४	३५	४७	५८	१०	२१	३३	४४	५५	७	१८	३०	४१	५३	४	१६	२७	३९	५०	२	१३
	०	२८	५६	२४	५२	२०	४८	१६	४४	१२	४०	८	३६	४	३२	०	२८	५६	२४	५२	२०	४८	१६	४४	१२	४०	८	३६	४	३२
कन्या	२४	२४	२४	२४	२५	२५	२५	२५	२५	२६	२६	२६	२६	२६	२७	२७	२७	२७	२७	२७	२८	२८	२८	२८	२८	२९	२९	२९	२९	२९
३३५।९५	२५	३६	४७	५८	९	२०	३२	४३	५४	५	१६	२७	३९	५०	१	१२	२३	३४	४६	५७	८	१९	३०	४१	५३	४	१५	२६	३७	४८
	०	१०	२०	३०	४०	५०	०	१०	२०	३०	४०	५०	०	१०	२०	३०	४०	५०	०	१०	२०	३०	४०	५०	०	१०	२०	३०	४०	५०
तुला	३०	३०	३०	३०	३०	३०	३१	३१	३१	३१	३१	३२	३२	३२	३२	३२	३२	३३	३३	३३	३३	३३	३४	३४	३४	३४	३४	३५	३५	३५
३३५।९५	०	११	२२	३३	४४	५५	७	१८	२९	४०	५१	२	१४	२५	३६	४७	५८	९	२१	३२	४३	५४	५	१६	२८	३९	५०	१	१२	२३
	०	१०	२०	३०	४०	५०	०	१०	२०	३०	४०	५०	०	१०	२०	३०	४०	५०	०	१०	२०	३०	४०	५०	०	१०	३०	३०	४०	५०
वृश्चिक	३५	३५	३५	३६	३६	३६	३६	३६	३७	३७	३७	३७	३७	३८	३८	३८	३८	३८	३९	३९	३९	३९	३९	३९	४०	४०	४०	४०	४०	४१
३४४।१०४	३५	४६	५७	९	२०	३२	४३	५५	६	१८	२९	४१	५२	४	१५	२७	३८	४९	१	१२	२४	३५	४७	५८	१०	२१	३३	४४	५६	७
	०	२८	५६	२४	५२	२०	४८	१६	४४	१२	४०	८	३६	४	३२	०	२८	५६	२४	५२	२०	४८	१६	४४	१२	४०	८	३६	४	३२
धनु	४१	४१	४१	४१	४२	४२	४२	४२	४२	४३	४३	४३	४३	४३	४३	४४	४४	४४	४४	४४	४५	४५	४५	४५	४५	४६	४६	४६	४६	४६
३४१।१०१	१९	३०	४१	५३	४	१५	२७	३८	४९	१	१२	२४	३५	४६	५८	९	२०	३२	४३	५४	६	१७	२९	४०	५१	३	१४	२५	३७	४८
	०	२२	४४	६	२८	५०	१२	३४	५६	१८	४०	२	२४	४६	८	३०	५२	१४	३६	५८	२०	४२	४	२६	४८	१०	३२	५४	१६	३८
मकर	४७	४७	४७	४७	४७	४७	४८	४८	४८	४८	४८	४८	४९	४९	४९	४९	४९	४९	५०	५०	५०	५०	५०	५०	५१	५१	५१	५१	५१	५१
२०३।६३	०	१०	२०	३०	४०	५०	०	१०	२०	३०	४१	५१	१	११	२१	३१	४१	५१	१	११	२२	३२	४२	५२	२	१२	२२	३२	४२	५२
	०	६	१२	१८	२४	३०	३६	४२	४८	५४	०	६	१२	१८	२४	३०	३६	४२	४८	५४	०	६	१२	१८	२४	३०	३६	४२	४८	५४
कुम्भ	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५५	५५	५५	५५	५५	५५	५५	५६	५६
२५४।३५	३	११	१९	२८	३६	४५	५३	२	१०	१९	२७	३६	४४	५३	१	१०	१८	२६	३५	४३	५२	०	९	१७	२६	३४	४३	५१	०	८
	०	२८	५६	२४	५२	२०	४८	१६	४४	१२	४०	८	३६	४	३२	०	२८	५६	२४	५२	२०	४८	१६	४४	१२	४०	८	३६	४	३२
मीन	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५९	५९	५९	५९	५९	५९	५९	५९
२२३।१२	१७	२४	३०	३९	४६	५४	१	९	१६	२३	३१	३८	४६	५३	१	८	१५	२३	३०	३८	४५	५३	०	७	१५	२२	३०	३७	४५	५२
	०	२६	५२	१८	४४	१०	३६	२	२८	५४	२०	४६	१२	३८	४	३०	५६	२२	[illegible]	[illegible]	४०	६	३२	५८	२४	५०	१६	४२	८	३४

२७ अक्षांश की लग्न-सारणी

अंश	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९
मेष	०	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२	२	२	३	३	३	३	३
२१८।१०	०	७	१४	२१	२९	३६	४३	५०	५८	५	१२	१९	२७	३४	४१	४९	५६	३	१०	१८	२५	३२	३९	४७	५४	१	८	१६	२३	३०
	०	१६	३२	४८	४	२०	३६	५२	८	२४	४०	५६	१२	२८	४४	०	१६	३२	४८	४	२०	३६	५२	८	२४	४०	५६	१२	२८	४४
वृष	३	३	३	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	५	६	६	६	६	६	६	६	७	७	७	७	७
२५०।३२	३८	४६	५४	३	११	१९	२८	३६	४४	५३	१	९	१८	२६	३४	४३	५१	५९	८	१६	२४	३३	४१	४९	५८	६	१४	२३	३२	३९
	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०
मिथुन	७	७	८	८	८	८	८	८	९	९	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	१०	१०	११	११	११	११	११	११	१२	१२	१२	१२
३०२।६२	४८	५८	८	१८	२८	३८	४८	५८	८	१८	२८	३८	४८	५८	८	१९	२९	३९	४९	५९	९	१९	२९	३९	४९	५९	९	१९	२९	३९
	०	४	८	१२	१६	२०	२४	२८	३२	३६	४०	४४	४८	५२	५६	०	४	८	१२	१६	२०	२४	२८	३२	३६	४०	४४	४८	५२	५६
कर्क	१२	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१४	१४	१४	१४	१४	१५	१५	१५	१५	१५	१६	१६	१६	१६	१६	१७	१७	१७	१७	१७	१७	१८	१८
३४२।१०२	५०	१	१२	२४	३५	४७	५८	९	२१	३२	४४	५५	६	१८	२९	४१	५२	३	१५	२६	३८	४९	०	१२	२३	३५	४६	५७	९	२०
	०	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६
सिंह	१८	१८	१८	१९	१९	१९	१९	१९	२०	२०	२०	२०	२०	२१	२१	२१	२१	२१	२२	२२	२२	२२	२२	२२	२३	२३	२३	२३	२३	२४
३४८।१०८	३२	४३	५५	६	१८	३०	४१	५३	४	१६	२८	३९	५१	२	१४	२६	३७	४९	०	१२	२४	३५	४७	५८	१०	२२	३३	४५	५६	८
	०	३६	१२	४८	२४	०	३६	१२	४८	२४	०	३६	१२	४८	२४	०	३६	१२	४८	२४	०	३६	१२	४८	२४	०	३६	१२	४८	२४
कन्या	२४	२४	२४	२४	२५	२५	२५	२५	२५	२६	२६	२६	२६	२६	२६	२७	२७	२७	२७	२७	२८	२८	२८	२८	२८	२९	२९	२९	२९	२९
३४०।१००	२०	३१	४२	५४	५	१६	२८	३९	५०	२	१३	२४	३६	४७	५८	१०	२१	३२	४४	५५	६	१८	२९	४०	५२	३	१४	२६	३७	४८
	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०
तुला	३०	३०	३०	३०	३०	३०	३१	३१	३१	३१	३१	३२	३२	३२	३२	३२	३३	३३	३३	३३	३३	३३	३४	३४	३४	३४	३४	३५	३५	३५
३४०।१००	०	११	२२	३४	४५	५६	८	१९	३०	४२	५३	४	१६	२७	३८	५०	१	१२	२४	३५	४६	५८	९	२०	३२	४३	५४	६	१७	२८
	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०
वृश्चिक	३५	३५	३६	३६	३६	३६	३६	३७	३७	३७	३७	३७	३	३८	३८	३८	३८	३८	३९	३९	३९	३९	३९	४०	४०	४०	४०	४०	४१	४१
३४८।१०८	४०	५१	३	१४	२६	३८	४९	१	१२	२४	३६	४७	५९	१०	२२	३४	४५	५७	८	२०	३२	४३	५५	६	१८	३०	४१	५३	४	१६
	०	३६	१२	४८	२४	०	३६	१२	४८	२४	०	३६	१२	४८	२४	०	३६	१२	४८	२४	०	३६	१२	४८	२४	०	३६	१२	४८	२४
धनु	४१	४१	४१	४२	४२	४२	४२	४२	४२	४३	४३	४३	४३	४३	४४	४४	४४	४४	४४	४५	४५	४५	४५	४५	४६	४६	४६	४६	४६	४६
३४२।१०२	२८	३९	५०	२	१३	२५	३६	४७	५९	१०	२२	३३	४४	५६	७	१९	३०	४१	५३	४	१६	२७	३८	५०	१	१३	२४	३५	४७	५८
	०	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६
मकर	४७	४७	४७	४७	४७	४८	४८	४८	४८	४८	४८	४९	४९	४९	४९	४९	४९	५०	५०	५०	५०	५०	५०	५१	५१	५१	५१	५१	५१	५२
३०२।६२	१०	२०	३०	४०	५०	०	१०	२०	३०	४०	५०	०	१०	२०	३०	४१	५१	१	११	२१	३१	४१	५१	१	११	२१	३१	४१	५१	१
	०	४	८	१२	१६	२०	२४	२८	३२	३६	४०	४४	४८	५२	५६	०	४	८	१२	१६	२०	२४	२८	३२	३६	४०	४४	४८	५२	५६
कुम्भ	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५५	५५	५५	५५	५५	५५	५५	५६	५६
२५०।३२	१२	२०	२८	३७	४५	५३	२	१०	१८	२७	३५	४३	५२	०	८	१७	२५	३३	४२	५०	५८	७	१५	२३	३२	४०	४८	५७	५	१३
	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०
मीन	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५९	५९	५९	५९	५९	५९	५९	५९
२१८।१०	२२	२९	३६	४३	५१	५८	५	१२	२०	२७	३४	४१	४९	५६	३	११	१८	२५	३२	४०	४७	५४	१	९	१६	२३	३०	३८	४५	५२
	०	१६	३२	४८	४	२०	३६	५२	८	२४	४०	५६	१२	२८	४४	०	१६	३२	४८	४	२०	३६	५२	८	२४	४०	५६	१२	२८	४४

२७ अक्षांश की लग्न-सारणी

अंश	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९
मेष	०	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२	२	२	३	३	३	३	३
	०	७	१४	२१	२९	३६	४३	५०	५८	५	१२	१९	२७	३४	४१	४९	५६	३	१०	१८	२५	३२	३९	४७	५४	१	८	१६	२३	३०
२१८।१०	०	१६	३२	४८	४	२०	३६	५२	८	२४	४०	५६	१२	२८	४४	०	१६	३२	४८	४	२०	३६	५२	८	२४	४०	५६	१२	२८	४४
वृष	३	३	३	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	५	६	६	६	६	६	६	६	७	७	७	७	७
	३८	४६	५४	३	११	१९	२८	३६	४४	५३	१	९	१८	२६	३४	४३	५१	५९	८	१६	२४	३३	४१	४९	५८	६	१४	२३	३२	३९
२५०।३२	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०
मिथुन	७	७	८	८	८	८	८	८	९	९	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	१०	१०	११	११	११	११	११	११	१२	१२	१२	१२
	४८	५८	८	१८	२८	३८	४८	५८	८	१८	२८	३८	४८	५८	८	१९	२९	३९	४९	५९	९	१९	२९	३९	४९	५९	९	१९	२९	३९
३०२।६२	०	४	८	१२	१६	२०	२४	२८	३२	३६	४०	४४	४८	५२	५६	०	४	८	१२	१६	२०	२४	२८	३२	३६	४०	४४	४८	५२	५६
कर्क	१२	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१४	१४	१४	१४	१४	१५	१५	१५	१५	१५	१६	१६	१६	१६	१६	१७	१७	१७	१७	१७	१७	१८	१८
	५०	१	१२	२४	३५	४७	५८	९	२१	३२	४४	५५	६	१८	२९	४१	५२	३	१५	२६	३८	४९	०	१२	२३	३५	४६	५७	९	२०
३४२।१०२	०	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६
सिंह	१८	१८	१८	१९	१९	१९	१९	१९	२०	२०	२०	२०	२०	२१	२१	२१	२१	२१	२२	२२	२२	२२	२२	२२	२३	२३	२३	२३	२३	२४
	३२	४३	५५	६	१८	३०	४१	५३	४	१६	२८	३९	५१	२	१४	२६	३७	४९	०	१२	२४	३५	४७	५८	१०	२२	३३	४५	५६	८
३४८।१०८	०	३६	१२	४८	२४	०	३६	१२	४८	२४	०	३६	१२	४८	२४	०	३६	१२	४८	२४	०	३६	१२	४८	२४	०	३६	१२	४८	२४
कन्या	२४	२४	२४	२४	२५	२५	२५	२५	२५	२६	२६	२६	२६	२६	२६	२७	२७	२७	२७	२७	२८	२८	२८	२८	२८	२९	२९	२९	२९	२९
	२०	३१	४२	५४	५	१६	२८	३९	५०	२	१३	२४	३६	४७	५८	१०	२१	३२	४४	५५	६	१८	२९	४०	५२	३	१४	२६	३७	४८
३४०।१००	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०
तुला	३०	३०	३०	३०	३०	३०	३१	३१	३१	३१	३१	३२	३२	३२	३२	३२	३३	३३	३३	३३	३३	३३	३४	३४	३४	३४	३४	३५	३५	३५
	०	११	२२	३४	४५	५६	८	१९	३०	४२	५३	४	१६	२७	३८	५०	१	१२	२४	३५	४६	५८	९	२०	३२	४३	५४	६	१७	२८
३४०।१००	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०
वृश्चिक	३५	३५	३६	३६	३६	३६	३६	३७	३७	३७	३७	३	३	३८	३८	३८	३८	३८	३९	३९	३९	३९	३९	४०	४०	४०	४०	४०	४१	४१
	४०	५१	३	१४	२६	३८	४९	१	१२	२४	३६	४७	५९	१०	२२	३४	४५	५७	८	२०	३२	४३	५५	६	१८	३०	४१	५३	४	१६
३४८।१०८	०	३६	१२	४८	२४	०	३६	१२	४८	२४	०	३६	१२	४८	२४	०	३६	१२	४८	२४	०	३६	१२	४८	२४	०	३६	१२	४८	२४
धनु	४१	४१	४१	४२	४२	४२	४२	४२	४२	४३	४३	४३	४३	४३	४४	४४	४४	४४	४४	४५	४५	४५	४५	४५	४६	४६	४६	४६	४६	४६
	२८	३९	५०	२	१३	२५	३६	४७	५९	१०	२२	३३	४४	५६	७	१९	३०	४१	५३	४	१६	२७	३८	५०	१	१३	२४	३५	४७	५८
३४२।१०२	०	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६
मकर	४७	४७	४७	४७	४७	४८	४८	४८	४८	४८	४८	४९	४९	४९	४९	४९	४९	५०	५०	५०	५०	५०	५०	५१	५१	५१	५१	५१	५१	५२
	१०	२०	३०	४०	५०	०	१०	२०	३०	४०	५०	०	१०	२०	३०	४१	५१	१	११	२१	३१	४१	५१	१	११	२१	३१	४१	५१	१
३०२।६२	०	४	८	१२	१६	२०	२४	२८	३२	३६	४०	४४	४८	५२	५६	०	४	८	१२	१६	२०	२४	२८	३२	३६	४०	४४	४८	५२	५६
कुम्भ	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५५	५५	५५	५५	५५	५५	५५	५६	५६
	१२	२०	२८	३७	४५	५३	२	१०	१८	२७	३५	४३	५२	०	८	१७	२५	३३	४२	५०	५८	७	१५	२३	३२	४०	४८	५७	५	१३
२५०।३२	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०
मीन	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५९	५९	५९	५९	५९	५९	५९	५९
	२२	२९	३६	४३	५१	५८	५	१२	२०	२७	३४	४१	४९	५६	३	११	१८	२५	३२	४०	४७	५४	१	९	१६	२३	३०	३८	४५	५२
२१८।१०	०	१६	३२	४८	४	२०	३६	५२	८	२४	४०	५६	१२	२८	४४	०	१६	३२	४८	४	२०	३६	५२	८	२४	४०	५६	१२	२८	४४

२७ अक्षांश की लग्न-सारणी

अंश	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९
मेष	०	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२	२	२	३	३	३	३	३
	०	७	१४	२१	२९	३६	४३	५०	५८	५	१२	१९	२७	३४	४१	४९	५६	३	१०	१८	२५	३२	३९	४७	५४	१	८	१६	२३	३०
२१८।१०	०	१६	३२	४८	४	२०	३६	५२	८	२४	४०	५६	१२	२८	४४	०	१६	३२	४८	४	२०	३६	५२	८	२४	४०	५६	१२	२८	४४
वृष	३	३	३	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	५	६	६	६	६	६	६	६	७	७	७	७	७
	३८	४६	५४	३	११	१९	२८	३६	४४	५३	१	९	१८	२६	३४	४३	५१	५९	८	१६	२४	३३	४१	४९	५८	६	१४	२३	३२	३९
२५०।३२	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०
मिथुन	७	७	८	८	८	८	८	८	९	९	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	१०	१०	११	११	११	११	११	११	१२	१२	१२	१२
	४८	५८	८	१८	२८	३८	४८	५८	८	१८	२८	३८	४८	५८	८	१९	२९	३९	४९	५९	९	१९	२९	३९	४९	५९	९	१९	२९	३९
३०२।६२	०	४	८	१२	१६	२०	२४	२८	३२	३६	४०	४४	४८	५२	५६	०	४	८	१२	१६	२०	२४	२८	३२	३६	४०	४४	४८	५२	५६
कर्क	१२	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१४	१४	१४	१४	१४	१५	१५	१५	१५	१५	१६	१६	१६	१६	१६	१७	१७	१७	१७	१७	१७	१८	१८
	५०	१	१२	२४	३५	४७	५८	९	२१	३२	४४	५५	६	१८	२९	४१	५२	३	१५	२६	३८	४९	०	१२	२३	३५	४६	५७	९	२०
३४२।१०२	०	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६
सिंह	१८	१८	१८	१९	१९	१९	१९	१९	२०	२०	२०	२०	२०	२१	२१	२१	२१	२१	२२	२२	२२	२२	२२	२२	२३	२३	२३	२३	२३	२४
	३२	४३	५५	६	१८	३०	४१	५३	४	१६	२८	३९	५१	२	१४	२६	३७	४९	०	१२	२४	३५	४७	५८	१०	२२	३३	४५	५६	८
३४८।१०८	०	३६	१२	४८	२४	०	३६	१२	४८	२४	०	३६	१२	४८	२४	०	३६	१२	४८	२४	०	३६	१२	४८	२४	०	३६	१२	४८	२४
कन्या	२४	२४	२४	२४	२५	२५	२५	२५	२५	२६	२६	२६	२६	२६	२६	२७	२७	२७	२७	२७	२८	२८	२८	२८	२८	२९	२९	२९	२९	२९
	२०	३१	४२	५४	५	१६	२८	३९	५०	२	१३	२४	३६	४७	५८	१०	२१	३२	४४	५५	६	१८	२९	४०	५२	३	१४	२६	३७	४८
३४०।१००	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०
तुला	३०	३०	३०	३०	३०	३०	३१	३१	३१	३१	३१	३२	३२	३२	३२	३२	३३	३३	३३	३३	३३	३३	३४	३४	३४	३४	३४	३५	३५	३५
	०	११	२२	३४	४५	५६	८	१९	३०	४२	५३	४	१६	२७	३८	५०	१	१२	२४	३५	४६	५८	९	२०	३२	४३	५४	६	१७	२८
३४०।१००	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०
वृश्चिक	३५	३५	३६	३६	३६	३६	३६	३७	३७	३७	३७	३७	३७	३८	३८	३८	३८	३८	३९	३९	३९	३९	३९	४०	४०	४०	४०	४०	४१	४१
	४०	५१	३	१४	२६	३८	४९	१	१२	२४	३६	४७	५९	१०	२२	३४	४५	५७	८	२०	३२	४३	५५	६	१८	३०	४१	५३	४	१६
३४८।१०८	०	३६	१२	४८	२४	०	३६	१२	४८	२४	०	३६	१२	४८	२४	०	३६	१२	४८	२४	०	३६	१२	४८	२४	०	३६	१२	४८	२४
धनु	४१	४१	४१	४२	४२	४२	४२	४२	४२	४३	४३	४३	४३	४३	४४	४४	४४	४४	४४	४५	४५	४५	४५	४५	४६	४६	४६	४६	४६	४६
	२८	३९	५०	२	१३	२५	३६	४७	५९	१०	२२	३३	४४	५६	७	१९	३०	४१	५३	४	१६	२७	३८	५०	१	१३	२४	३५	४७	५८
३४२।१०२	०	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६
मकर	४७	४७	४७	४७	४७	४८	४८	४८	४८	४८	४८	४९	४९	४९	४९	४९	४९	५०	५०	५०	५०	५०	५०	५१	५१	५१	५१	५१	५१	५२
	१०	२०	३०	४०	५०	०	१०	२०	३०	४०	५०	०	१०	२०	३०	४१	५१	१	११	२१	३१	४१	५१	१	११	२१	३१	४१	५१	१
३०२।६२	०	४	८	१२	१६	२०	२४	२८	३२	३६	४०	४४	४८	५२	५६	०	४	८	१२	१६	२०	२४	२८	३२	३६	४०	४४	४८	५२	५६
कुम्भ	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५५	५५	५५	५५	५५	५५	५५	५६	५६
	१२	२०	२८	३७	४५	५३	२	१०	१८	२७	३५	४३	५२	०	८	१७	२५	३३	४२	५०	५८	७	१५	२३	३२	४०	४८	५७	५	१३
२५०।३२	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०
मीन	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५९	५९	५९	५९	५९	५९	५९	५९
	२२	२९	३६	४३	५१	५८	५	१२	२०	२७	३४	४१	४९	५६	३	११	१८	२५	३२	४०	४७	५४	१	९	१६	२३	३०	३८	४५	५२
२१८।१०	०	१६	३२	४८	४	२०	३६	५२	८	२४	४०	५६	१२	२८	४४	०	१६	३२	४८	४	२०	३६	५२	८	२४	४०	५६	१२	२८	४४

२७ अक्षांश को लग्न–सारणी

अंश	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९
मेष	०	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२	२	२	३	३	३	३	३
२१८।१०	०	७	१४	२१	२९	३६	४३	५०	५८	५	१२	१९	२७	३४	४१	४९	५६	३	१०	१८	२५	३२	३९	४७	५४	१	८	१६	२३	३०
	०	१६	३२	४८	४	२०	३६	५२	८	२४	४०	५६	१२	२८	४४	०	१६	३२	४८	४	२०	३६	५२	८	२४	४०	५६	१२	२८	४४
वृष	३	३	३	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	५	६	६	६	६	६	६	६	७	७	७	७	७
२५०।३२	३८	४६	५४	३	११	१९	२८	३६	४४	५३	१	९	१८	२६	३४	४३	५१	५९	८	१६	२४	३३	४१	४९	५८	६	१४	२३	३१	३९
	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०
मिथुन	७	७	८	८	८	८	८	८	९	९	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	१०	१०	११	११	११	११	११	११	१२	१२	१२	१२
३०२।६२	४८	५८	८	१८	२८	३८	४८	५८	८	१८	२८	३८	४८	५८	८	१९	२९	३९	४९	५९	९	१९	२९	३९	४९	५९	९	१९	२९	३९
	०	४	८	१२	१६	२०	२४	२८	३२	३६	४०	४४	४८	५२	५६	०	४	८	१२	१६	२०	२४	२८	३२	३६	४०	४४	४८	५२	५६
कर्क	१२	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१४	१४	१४	१४	१४	१५	१५	१५	१५	१५	१६	१६	१६	१६	१६	१७	१७	१७	१७	१७	१७	१८	१८
३४२।१०२	५०	१	१२	२४	३५	४७	५८	९	२१	३२	४४	५५	६	१८	२९	४१	५२	३	१५	२६	३८	४९	०	१२	२३	३५	४६	५७	९	२०
	०	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६
सिंह	१८	१८	१८	१९	१९	१९	१९	१९	२०	२०	२०	२०	२०	२१	२१	२१	२१	२१	२२	२२	२२	२२	२२	२२	२३	२३	२३	२३	२३	२४
३४८।१०८	३२	४३	५५	६	१८	३०	४१	५३	४	१६	२८	३९	५१	२	१४	२६	३७	४९	०	१२	२४	३५	४७	५८	१०	२२	३३	४५	५६	८
	०	३६	१२	४८	२४	०	३६	१२	४८	२४	०	३६	१२	४८	२४	०	३६	१२	४८	२४	०	३६	१२	४८	२४	०	३६	१२	४८	२४
कन्या	२४	२४	२४	२४	२५	२५	२५	२५	२५	२६	२६	२६	२६	२६	२६	२७	२७	२७	२७	२७	२८	२८	२८	२८	२८	२९	२९	२९	२९	२९
३४०।१००	२०	३१	४२	५४	५	१६	२८	३९	५०	२	१३	२४	३६	४७	५८	१०	२१	३२	४४	५५	६	१८	२९	४०	५२	३	१४	२६	३७	४८
	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०
तुला	३०	३०	३०	३०	३०	३०	३१	३१	३१	३१	३१	३२	३२	३२	३२	३२	३३	३३	३३	३३	३३	३३	३४	३४	३४	३४	३४	३५	३५	३५
३४०।१००	०	११	२२	३४	४५	५६	८	१९	३०	४२	५३	४	१६	२७	३८	५०	१	१२	२४	३५	४६	५८	९	२०	३२	४३	५४	६	१७	२८
	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०
वृश्चिक	३५	३५	३६	३६	३६	३६	३६	३७	३७	३७	३७	३	३	३८	३८	३८	३८	३८	३९	३९	३९	३९	३९	४०	४०	४०	४०	४०	४१	४१
३४८।१०८	४०	५१	३	१४	२६	३८	४९	१	१२	२४	३६	४७	५९	१०	२२	३४	४५	५७	८	२०	३२	४३	५५	६	१८	३०	४१	५३	४	१६
	०	३६	१२	४८	२४	०	३६	१२	४८	२४	०	३६	१२	४८	२४	०	३६	१२	४८	२४	०	३६	१२	४८	२४	०	३६	१२	४८	२४
धनु	४१	४१	४१	४२	४२	४२	४२	४२	४२	४३	४३	४३	४३	४३	४४	४४	४४	४४	४४	४५	४५	४५	४५	४५	४६	४६	४६	४६	४६	४६
३४२।१०२	२८	३९	५०	२	१३	२५	३६	४७	५९	१०	२२	३३	४४	५६	७	१९	३०	४१	५३	४	१६	२७	३८	५०	१	१३	२४	३५	४७	५८
	०	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६
मकर	४७	४७	४७	४७	४७	४८	४८	४८	४८	४८	४८	४९	४९	४९	४९	४९	४९	५०	५०	५०	५०	५०	५०	५१	५१	५१	५१	५१	५१	५२
३०२।६२	१०	२०	३०	४०	५०	०	१०	२०	३०	४०	५०	०	१०	२०	३०	४१	५१	१	११	२१	३१	४१	५१	१	११	२१	३१	४१	५१	१
	०	४	८	१२	१६	२०	२४	२८	३२	३६	४०	४४	४८	५२	५६	०	४	८	१२	१६	२०	२४	२८	३२	३६	४०	४४	४८	५२	५६
कुम्भ	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५५	५५	५५	५५	५५	५५	५५	५६	५६
२५०।३२	१२	२०	२८	३७	४५	५३	२	१०	१८	२७	३५	४३	५२	०	८	१७	२५	३३	४२	५०	५८	७	१५	२३	३२	४०	४८	५७	५	१३
	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०
मीन	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५९	५९	५९	५९	५९	५९	५९	५९
२१८।१०	२२	२९	३६	४३	५१	५८	५	१२	२०	२७	३४	४१	४९	५६	३	११	१८	२५	३२	४०	४७	५४	१	९	१६	२३	३०	३८	४५	५२
	०	१६	३२	४८	४	२०	३६	५२	८	२४	४०	५६	१२	२८	४४	०	१६	३२	४८	४	२०	३६	५२	८	२४	४०	५६	१२	२८	४४

२७ अक्षांश को लग्न-सारणी

अंश	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९
मेष	०	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२	२	२	३	३	३	३	३
	०	७	१४	२१	२९	३६	४३	५०	५८	५	१२	१९	२७	३४	४१	४९	५६	३	१०	१८	२५	३२	३९	४७	५४	१	८	१६	२३	३०
२१८।१०	०	१६	३२	४८	४	२०	३६	५२	८	२४	४०	५६	१२	२८	४४	०	१६	३२	४८	४	२०	३६	५२	८	२४	४०	५६	१२	२८	४४
वृष	३	३	३	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	५	६	६	६	६	६	६	६	७	७	७	७	७
	३८	४६	५४	३	११	१९	२८	३६	४४	५३	१	९	१८	२६	३४	४३	५१	५९	८	१६	२४	३३	४१	४९	५८	६	१४	२३	३२	३९
२५०।३२	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०
मिथुन	७	७	८	८	८	८	८	८	९	९	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	१०	१०	११	११	११	११	११	११	१२	१२	१२	१२
	४८	५८	८	१८	२८	३८	४८	५८	८	१८	२८	३८	४८	५८	८	१९	२९	३९	४९	५९	९	१९	२९	३९	४९	५९	९	१९	२९	३९
३०२।६२	०	४	८	१२	१६	२०	२४	२८	३२	३६	४०	४४	४८	५२	५६	०	४	८	१२	१६	२०	२४	२८	३२	३६	४०	४४	४८	५२	५६
कर्क	१२	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१४	१४	१४	१४	१४	१५	१५	१५	१५	१५	१६	१६	१६	१६	१६	१७	१७	१७	१७	१७	१७	१८	१८
	५०	१	१२	२४	३५	४७	५८	९	२१	३२	४४	५५	६	१८	२९	४१	५२	३	१५	२६	३८	४९	०	१२	२३	३५	४६	५७	९	२०
३४२।१०२	०	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६
सिंह	१८	१८	१८	१९	१९	१९	१९	१९	२०	२०	२०	२०	२०	२१	२१	२१	२१	२१	२२	२२	२२	२२	२२	२२	२३	२३	२३	२३	२३	२४
	३२	४३	५५	६	१८	३०	४१	५३	४	१६	२८	३९	५१	२	१४	२६	३७	४९	०	१२	२४	३५	४७	५८	१०	२२	३३	४५	५६	८
३४८।१०८	०	३६	१२	४८	२४	०	३६	१२	४८	२४	०	३६	१२	४८	२४	०	३६	१२	४८	२४	०	३६	१२	४८	२४	०	३६	१२	४८	२४
कन्या	२४	२४	२४	२४	२५	२५	२५	२५	२५	२६	२६	२६	२६	२६	२६	२७	२७	२७	२७	२७	२८	२८	२८	२८	२८	२९	२९	२९	२९	२९
	२०	३१	४२	५४	५	१६	२८	३९	५०	२	१३	२४	३६	४७	५८	१०	२१	३२	४४	५५	६	१८	२९	४०	५२	३	१४	२६	३७	४८
३४०।१००	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०
तुला	३०	३०	३०	३०	३०	३०	३१	३१	३१	३१	३१	३२	३२	३२	३२	३२	३३	३३	३३	३३	३३	३३	३४	३४	३४	३४	३४	३५	३५	३५
	०	११	२२	३४	४५	५६	८	१९	३०	४२	५३	४	१६	२७	३८	५०	१	१२	२४	३५	४६	५८	९	२०	३२	४३	५४	६	१७	२८
३४०।१००	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०
वृश्चिक	३५	३५	३६	३६	३६	३६	३६	३७	३७	३७	३७	३	३	३८	३८	३८	३८	३८	३९	३९	३९	३९	३९	४०	४०	४०	४०	४०	४१	४१
	४०	५१	३	१४	२६	३८	४९	१	१२	२४	३६	४७	५९	१०	२२	३४	४५	५७	८	२०	३२	४३	५५	६	१८	३०	४१	५३	४	१६
३४८।१०८	०	३६	१२	४८	२४	०	३६	१२	४८	२४	०	३६	१२	४८	२४	०	३६	१२	४८	२४	०	३६	१२	४८	२४	०	३६	१२	४८	२४
धनु	४१	४१	४१	४२	४२	४२	४२	४२	४२	४३	४३	४३	४३	४३	४४	४४	४४	४४	४४	४५	४५	४५	४५	४५	४६	४६	४६	४६	४६	४६
	२८	३९	५०	२	१३	२५	३६	४७	५९	१०	२२	३३	४४	५६	७	१९	३०	४१	५३	४	१६	२७	३८	५०	१	१३	२४	३५	४७	५८
३४२।१०२	०	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६
मकर	४७	४७	४७	४७	४७	४८	४८	४८	४८	४८	४८	४९	४९	४९	४९	४९	४९	५०	५०	५०	५०	५०	५०	५१	५१	५१	५१	५१	५१	५२
	१०	२०	३०	४०	५०	०	१०	२०	३०	४०	५०	०	१०	२०	३०	४१	५१	१	११	२१	३१	४१	५१	१	११	२१	३१	४१	५१	१
३०२।६२	०	४	८	१२	१६	२०	२४	२८	३२	३६	४०	४४	४८	५२	५६	०	४	८	१२	१६	२०	२४	२८	३२	३६	४०	४४	४८	५२	५६
कुम्भ	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५५	५५	५५	५५	५५	५५	५५	५६	५६
	१२	२०	२८	३७	४५	५३	२	१०	१८	२७	३५	४३	५२	०	८	१७	२५	३३	४२	५०	५८	७	१५	२३	३२	४०	४८	५७	५	१३
२५०।३२	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०
मीन	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५९	५९	५९	५९	५९	५९	५९	५९
	२२	२९	३६	४३	५१	५८	५	१२	२०	२७	३४	४१	४९	५६	३	११	१८	२५	३२	४०	४७	५४	१	९	१६	२३	३०	३८	४५	५२
२१८।१०	०	१६	३२	४८	४	२०	३६	५२	८	२४	४०	५६	१२	२८	४४	०	१६	३२	४८	४	२०	३६	५२	८	२४	४०	५६	१२	२८	४४

२७ अक्षांश की लग्न-सारणी

अंश	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९
	०	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२	२	२	३	३	३	३	३
मेष	०	७	१४	२१	२९	३६	४३	५०	५८	५	१२	१९	२७	३४	४१	४९	५६	३	१०	१८	२५	३२	३९	४७	५४	१	८	१६	२३	३०
२१८।१०	०	१६	३२	४८	४	२०	३६	५२	८	२४	४०	५६	१२	२८	४४	०	१६	३२	४८	४	२०	३६	५२	८	२४	४०	५६	१२	२८	४४
	३	३	३	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	५	६	६	६	६	६	६	६	७	७	७	७	७
वृष	३८	४६	५४	३	११	१९	२८	३६	४४	५३	१	९	१८	२६	३४	४३	५१	५९	८	१६	२४	३३	४१	४९	५८	६	१४	२३	३२	३९
२५०।३२	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०
	७	७	८	८	८	८	८	८	९	९	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	१०	१०	११	११	११	११	११	११	१२	१२	१२	१२
मिथुन	४८	५८	८	१८	२८	३८	४८	५८	८	१८	२८	३८	४८	५८	९	१९	२९	३९	४९	५९	९	१९	२९	३९	४९	५९	९	१९	२९	३९
३०२।६२	०	४	८	१२	१६	२०	२४	२८	३२	३६	४०	४४	४८	५२	५६	०	४	८	१२	१६	२०	२४	२८	३२	३६	४०	४४	४८	५२	५६
	१२	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१४	१४	१४	१४	१४	१५	१५	१५	१५	१५	१६	१६	१६	१६	१६	१७	१७	१७	१७	१७	१७	१८	१८
कर्क	५०	१	१२	२४	३५	४७	५८	९	२१	३२	४४	५५	६	१८	२९	४१	५२	३	१५	२६	३८	४९	०	१२	२३	३५	४६	५७	९	२०
३४२।१०२	०	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६
	१८	१८	१८	१९	१९	१९	१९	१९	२०	२०	२०	२०	२०	२१	२१	२१	२१	२१	२२	२२	२२	२२	२२	२२	२३	२३	२३	२३	२३	२४
सिंह	३२	४३	५५	६	१८	३०	४१	५३	४	१६	२८	३९	५१	२	१४	२६	३७	४९	०	१२	२४	३५	४७	५८	१०	२२	३३	४५	५६	८
३४८।१०८	०	३६	१२	४८	२४	०	३६	१२	४८	२४	०	३६	१२	४८	२४	०	३६	१२	४८	२४	०	३६	१२	४८	२४	०	३६	१२	४८	२४
	२४	२४	२४	२४	२५	२५	२५	२५	२५	२६	२६	२६	२६	२६	२६	२७	२७	२७	२७	२७	२८	२८	२८	२८	२८	२९	२९	२९	२९	२९
कन्या	२०	३१	४२	५४	५	१६	२८	३९	५०	२	१३	२४	३६	४७	५८	१०	२१	३२	४४	५५	६	१८	२९	४०	५२	३	१४	२६	३७	४८
३४०।१००	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०
	३०	३०	३०	३०	३०	३०	३१	३१	३१	३१	३१	३२	३२	३२	३२	३२	३३	३३	३३	३३	३३	३३	३४	३४	३४	३४	३४	३५	३५	३५
तुला	०	११	२२	३४	४५	५६	८	१९	३०	४२	५३	४	१६	२७	३८	५०	१	१२	२४	३५	४६	५८	९	२०	३२	४३	५४	६	१७	२८
३४०।१००	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०
	३५	३५	३६	३६	३६	३६	३६	३७	३७	३७	३७	३	३	३८	३८	३८	३८	३८	३९	३९	३९	३९	३९	४०	४०	४०	४०	४०	४१	४१
वृश्चिक	४०	५१	३	१४	२६	३८	४९	१	१२	२४	३६	४७	५९	१०	२२	३४	४५	५७	८	२०	३२	४३	५५	६	१८	३०	४१	५३	४	१६
३४८।१०८	०	३६	१२	४८	२४	०	३६	१२	४८	२४	०	३६	१२	४८	२४	०	३६	१२	४८	२४	०	३६	१२	४८	२४	०	३६	१२	४८	२४
	४१	४१	४१	४२	४२	४२	४२	४२	४२	४३	४३	४३	४३	४३	४४	४४	४४	४४	४४	४५	४५	४५	४५	४५	४६	४६	४६	४६	४६	४६
धनु	२८	३९	५०	२	१३	२५	३६	४७	५९	१०	२२	३३	४४	५६	७	१९	३०	४१	५३	४	१६	२७	३८	५०	१	१३	२४	३५	४७	५८
३४२।१०२	०	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६
	४७	४७	४७	४७	४७	४८	४८	४८	४८	४८	४८	४९	४९	४९	४९	४९	४९	५०	५०	५०	५०	५०	५०	५१	५१	५१	५१	५१	५१	५२
मकर	१०	२०	३०	४०	५०	०	१०	२०	३०	४०	५०	०	१०	२०	३०	४१	५१	१	११	२१	३१	४१	५१	१	११	२१	३१	४१	५१	१
३०२।६२	०	४	८	१२	१६	२०	२४	२८	३२	३६	४०	४४	४८	५२	५६	०	४	८	१२	१६	२०	२४	२८	३२	३६	४०	४४	४८	५२	५६
	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५५	५५	५५	५५	५५	५५	५५	५६	५६
कुम्भ	१२	२०	२८	३७	४५	५३	२	१०	१८	२७	३५	४३	५२	०	८	१७	२५	३३	४२	५०	५८	७	१५	२३	३२	४०	४८	५७	५	१३
२५०।३२	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०
	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५९	५९	५९	५९	५९	५९	५९	५९
मीन	२२	२९	३६	४३	५१	५८	५	१२	२०	२७	३४	४१	४९	५६	३	११	१८	२५	३२	४०	४७	५४	१	९	१६	२३	३०	३८	४५	५२
२१८।१०	०	१६	३२	४८	४	२०	३६	५२	८	२४	४०	५६	१२	२८	४४	०	१६	३२	४८	४	२०	३६	५२	८	२४	४०	५६	१२	२८	४४

२७ अक्षांश की लग्न-सारणी

अश.	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९
मेष	०	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२	२	२	३	३	३	३	३
२१८।१०	०	७	१४	२१	२९	३६	४३	५०	५८	५	१२	१९	२७	३४	४१	४९	५६	३	१०	१८	२५	३२	३९	४७	५४	१	८	१६	२३	३०
	०	१६	३२	४८	४	२०	३६	५२	८	२४	४०	५६	१२	२८	४४	०	१६	३२	४८	४	२०	३६	५२	८	२४	४०	५६	१२	२८	४४
वृष	३	३	३	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	५	६	६	६	६	६	६	६	७	७	७	७	७
२५०।३२	३८	४६	५४	३	११	१९	२८	३६	४४	५३	१	९	१८	२६	३४	४३	५१	५९	८	१६	२४	३३	४१	४९	५८	६	१४	२३	३२	३९
	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०
मिथुन	७	७	८	८	८	८	८	८	९	९	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	१०	१०	११	११	११	११	११	११	१२	१२	१२	१२
३०२।६२	४८	५८	८	१८	२८	३८	४८	५८	८	१८	२८	३८	४८	५८	८	१९	२९	३९	४९	५९	९	१९	२९	३९	४९	५९	९	१९	२९	३९
	०	४	८	१२	१६	२०	२४	२८	३२	३६	४०	४४	४८	५२	५६	०	४	८	१२	१६	२०	२४	२८	३२	३६	४०	४४	४८	५२	५६
कर्क	१२	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१४	१४	१४	१४	१४	१५	१५	१५	१५	१५	१६	१६	१६	१६	१६	१७	१७	१७	१७	१७	१७	१८	१८
३४२।१०२	५०	१	१२	२४	३५	४७	५८	९	२१	३२	४४	५५	६	१८	२९	४१	५२	३	१५	२६	३८	४९	०	१२	२३	३५	४६	५७	९	२०
	०	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६
सिंह	१८	१८	१८	१९	१९	१९	१९	१९	२०	२०	२०	२०	२०	२१	२१	२१	२१	२१	२२	२२	२२	२२	२२	२२	२३	२३	२३	२३	२३	२४
३४८।१०८	३२	४३	५५	६	१८	३०	४१	५३	४	१६	२८	३९	५१	२	१४	२६	३७	४९	०	१२	२४	३५	४७	५८	१०	२२	३३	४५	५६	८
	०	३६	१२	४८	२४	०	३६	१२	४८	२४	०	३६	१२	४८	२४	०	३६	१२	४८	२४	०	३६	१२	४८	२४	०	३६	१२	४८	२४
कन्या	२४	२४	२४	२४	२५	२५	२५	२५	२५	२६	२६	२६	२६	२६	२६	२७	२७	२७	२७	२७	२८	२८	२८	२८	२८	२९	२९	२९	२९	२९
३४०।१००	२०	३१	४२	५४	५	१६	२८	३९	५०	२	१३	२४	३६	४७	५८	१०	२१	३२	४४	५५	६	१८	२९	४०	५२	३	१४	२६	३७	४८
	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०
तुला	३०	३०	३०	३०	३०	३०	३१	३१	३१	३१	३१	३२	३२	३२	३२	३२	३३	३३	३३	३३	३३	३३	३४	३४	३४	३४	३४	३५	३५	३५
३४०।१००	०	११	२२	३४	४५	५६	८	१९	३०	४२	५३	४	१६	२७	३८	५०	१	१२	२४	३५	४६	५८	९	२०	३२	४३	५४	६	१७	२८
	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०
वृश्चिक	३५	३५	३६	३६	३६	३६	३६	३७	३७	३७	३७	३	३	३८	३८	३८	३८	३८	३९	३९	३९	३९	३९	४०	४०	४०	४०	४०	४१	४१
३४८।१०८	४०	५१	३	१४	२६	३८	४९	१	१२	२४	३६	४७	५९	१०	२२	३४	४५	५७	८	२०	३२	४३	५५	६	१८	३०	४१	५३	४	१६
	०	३६	१२	४८	२४	०	३६	१२	४८	२४	०	३६	१२	४८	२४	०	३६	१२	४८	२४	०	३६	१२	४८	२४	०	३६	१२	४८	२४
धनु	४१	४१	४१	४२	४२	४२	४२	४२	४२	४३	४३	४३	४३	४३	४४	४४	४४	४४	४४	४५	४५	४५	४५	४५	४६	४६	४६	४६	४६	४६
३४२।१०२	२८	३९	५०	२	१३	२५	३६	४७	५९	१०	२२	३३	४४	५६	७	१९	३०	४१	५३	४	१६	२७	३८	५०	१	१३	२४	३५	४७	५८
	०	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६
मकर	४७	४७	४७	४७	४७	४८	४८	४८	४८	४८	४८	४९	४९	४९	४९	४९	४९	५०	५०	५०	५०	५०	५०	५१	५१	५१	५१	५१	५१	५२
३०२।६२	१०	२०	३०	४०	५०	०	१०	२०	३०	४०	५०	०	१०	२०	३०	४१	५१	१	११	२१	३१	४१	५१	१	११	२१	३१	४१	५१	१
	०	४	८	१२	१६	२०	२४	२८	३२	३६	४०	४४	४८	५२	५६	०	४	८	१२	१६	२०	२४	२८	३२	३६	४०	४४	४८	५२	५६
कुम्भ	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५५	५५	५५	५५	५५	५५	५५	५६	५६
२५०।३२	१२	२०	२८	३७	४५	५३	२	१०	१८	२७	३५	४३	५२	०	८	१७	२५	३३	४२	५०	५८	७	१५	२३	३२	४०	४८	५७	५	१३
	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०
मीन	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५८	५७	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५९	५९	५९	५९	५९	५९	५९	५९
२१८।१०	२२	२९	३६	४३	५१	५८	५	१२	२०	२७	३४	४१	४८	५६	३	११	१८	२५	३२	४०	४७	५४	१	९	१६	२३	३०	३८	४५	५२
	०	१६	३२	४८	४	२०	३६	५२	८	२४	४०	५६	१२	२८	४४	०	१६	३२	४८	४	२०	३६	५२	८	२४	४०	५६	१२	२८	४४

२७ अक्षांश को लग्न-सारणी

अंश	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९
मेष	०	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२	२	२	३	३	३	३	३
२१८।१०	०	७	१४	२१	२९	३६	४३	५०	५८	५	१२	१९	२७	३४	४१	४९	५६	३	१०	१८	२५	३२	३९	४७	५४	१	८	१६	२३	३०
	०	१६	३२	४८	४	२०	३६	५२	८	२४	४०	५६	१२	२८	४८	०	१६	३२	४८	४	२०	३६	५२	८	२४	४०	५६	१२	२८	४४
वृष	३	३	३	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	५	६	६	६	६	६	६	६	७	७	७	७	७
२५०।३२	३८	४६	५४	३	११	१९	२८	३६	४४	५३	१	९	१८	२६	३४	४३	५१	५९	८	१६	२४	३३	४१	४९	५८	६	१४	२३	३२	३९
	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०
मिथुन	७	७	८	८	८	८	८	८	९	९	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	१०	१०	११	११	११	११	११	११	१२	१२	१२	१२
३०२।६२	४८	५८	८	१८	२८	३८	४८	५८	८	१८	२८	३८	४८	५८	८	१९	२९	३९	४९	५९	९	१९	२९	३९	४९	५९	९	१९	२९	३९
	०	४	८	१२	१६	२०	२४	२८	३२	३६	४०	४४	४८	५२	५६	०	४	८	१२	१६	२०	२४	२८	३२	३६	४०	४४	४८	५२	५६
कर्क	१२	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१४	१४	१४	१४	१४	१५	१५	१५	१५	१५	१६	१६	१६	१६	१६	१७	१७	१७	१७	१७	१७	१८	१८
३४२।१०२	५०	१	१२	२४	३५	४७	५८	९	२१	३२	४४	५५	६	१८	२९	४१	५२	३	१५	२६	३८	४९	०	१२	२३	३५	४६	५७	९	२०
	०	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६
सिंह	१८	१८	१८	१९	१९	१९	१९	१९	२०	२०	२०	२०	२०	२१	२१	२१	२१	२१	२२	२२	२२	२२	२२	२२	२३	२३	२३	२३	२३	२४
३४८।१०८	३२	४३	५५	६	१८	३०	४१	५३	४	१६	२८	३९	५१	२	१४	२६	३७	४९	०	१२	२४	३५	४७	५८	१०	२२	३३	४५	५६	८
	०	३६	१२	४८	२४	०	३६	१२	४८	२४	०	३६	१२	४८	२४	०	३६	१२	४८	२४	०	३६	१२	४८	२४	०	३६	१२	४८	२४
कन्या	२४	२४	२४	२४	२५	२५	२५	२५	२५	२६	२६	२६	२६	२६	२६	२७	२७	२७	२७	२७	२८	२८	२८	२८	२८	२९	२९	२९	२९	२९
३४०।१००	२०	३१	४२	५४	५	१६	२८	३९	५०	२	१३	२४	३६	४७	५८	१०	२१	३२	४४	५५	६	१८	२९	४०	५२	३	१४	२६	३७	४८
	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०
तुला	३०	३०	३०	३०	३०	३०	३१	३१	३१	३१	३१	३२	३२	३२	३२	३२	३३	३३	३३	३३	३३	३३	३४	३४	३४	३४	३४	३५	३५	३५
३४०।१००	०	११	२२	३४	४५	५६	८	१९	३०	४२	५३	४	१६	२७	३८	५०	१	१२	२४	३५	४६	५८	९	२०	३२	४३	५४	६	१७	२८
	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०
वृश्चिक	३५	३५	३६	३६	३६	३६	३६	३७	३७	३७	३७	३	३॥	३८	३८	३८	३८	३८	३९	३९	३९	३९	३९	४०	४०	४०	४०	४०	४१	४१
३४८।१०८	४०	५१	३	१४	२६	३८	४९	१	१२	२४	३६	४७	५९	१०	२२	३४	४५	५७	८	२०	३२	४३	५५	६	१८	३०	४१	५३	४	१६
	०	३६	१२	४८	२४	०	३६	१२	४८	२४	०	३६	१२	४८	२४	०	३६	१२	४८	२४	०	३६	१२	४८	२४	०	३६	१२	४८	२४
धनु	४१	४१	४१	४२	४२	४२	४२	४२	४२	४३	४३	४३	४३	४३	४४	४४	४४	४४	४४	४५	४५	४५	४५	४५	४६	४६	४६	४६	४६	४६
३४२।१०२	२८	३९	५०	२	१३	२५	३६	४७	५९	१०	२२	३३	४४	५६	७	१९	३०	४१	५३	४	१६	२७	३८	५०	१	१३	२४	३५	४७	५८
	०	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६
मकर	४७	४७	४७	४७	४७	४८	४८	४८	४८	४८	४८	४९	४९	४९	४९	४९	४९	५०	५०	५०	५०	५०	५०	५१	५१	५१	५१	५१	५१	५२
३०२।६२	१०	२०	३०	४०	५०	०	१०	२०	३०	४०	५०	०	१०	२०	३०	४१	५१	१	११	२१	३१	४१	५१	१	११	२१	३१	४१	५१	१
	०	४	८	१२	१६	२०	२४	२८	३२	३६	४०	४४	४८	५२	५६	०	४	८	१२	१६	२०	२४	२८	३२	३६	४०	४४	४८	५२	५६
कुम्भ	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५५	५५	५५	५५	५५	५५	५५	५६	५६
२५०।३२	१२	२०	२८	३७	४५	५३	२	१०	१८	२७	३५	४३	५२	०	८	१७	२५	३३	४२	५०	५८	७	१५	२३	३२	४०	४८	५७	५	१३
	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०
मीन	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५८	५७	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५९	५९	५९	५९	५९	५९	५९	५९
२१८।१०	२२	२९	३६	४३	५१	५८	५	१२	२०	२७	३४	४१	४८	५६	३	११	१८	२५	३२	४०	४७	५४	१	९	१६	२३	३०	३८	४५	५२
	०	१६	३२	४८	४	२०	३६	५२	८	२४	४०	५६	१२	२८	४४	०	१६	३२	४८	४	२०	३६	५२	८	२४	४०	५६	१२	२८	४४

२६ अक्षांश की लग्न-सारणी

अंश	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९
मेष	०	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२	२	२	२	३	३	३	३
२१३।८	०	७	१४	२१	२८	३५	४२	४९	५६	३	११	१८	२५	३२	३९	४६	५३	०	७	१४	२२	२९	३६	४३	५०	५७	४	११	१८	२५
	०	६	१२	१८	२४	३०	३६	४२	४८	५४	०	६	१२	१८	२४	३०	३६	४२	४८	५४	०	६	१२	१८	२४	३०	३६	४२	४८	५४
वृष	३	३	३	३	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	६	६	६	६	६	६	६	६	७	७	७	७
२४६।२८	३३	४१	४९	५७	५	१४	२२	३०	३८	४६	५५	३	११	१९	२७	३६	४४	५२	०	८	१७	२५	३३	४१	४९	५८	६	१४	२२	३०
	०	१२	२४	३६	४८	०	१२	२४	३६	४८	०	१२	२४	३६	४८	०	१२	२४	३६	४८	०	१२	२४	३६	४८	०	१२	२४	३६	४८
मिथुन	७	७	७	८	८	८	८	८	८	९	९	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	१०	१०	११	११	११	११	११	११	१२	१२	१२
३००।६०	३९	४९	५९	९	१९	२९	३९	४९	५९	९	१९	२९	३९	४९	५९	९	१९	२९	३९	४९	५९	९	१९	२९	३९	४९	५९	९	१९	२९
	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
कर्क	१२	१२	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१४	१४	१४	१४	१५	१५	१५	१५	१५	१५	१६	१६	१६	१६	१६	१७	१७	१७	१७	१७	१८	१८
३४४।१०४	३९	५०	१	१३	२४	३६	४७	५९	१०	२२	३३	४४	५६	८	१९	३१	४२	५३	५	१६	२८	३९	५१	२	१४	२५	३७	४८	०	११
	०	२८	५६	२४	५२	२०	४८	१६	४४	१२	४०	८	३६	४	३२	०	२८	५६	२४	५२	२०	४८	१६	४४	१२	४०	८	३६	४	३२
सिंह	१८	१८	१८	१८	१९	१९	१९	१९	१९	२०	२०	२०	२०	२०	२१	२१	२१	२१	२१	२२	२२	२२	२२	२२	२३	२३	२३	२३	२३	२४
३५२।११२	२३	३४	४६	५८	९	२१	३३	४५	५६	८	२०	३२	४३	५५	७	१९	३०	४२	५४	५	१७	२९	४१	५२	४	१६	२८	३९	५१	३
	०	४४	२८	१२	५६	४०	२४	८	५२	३६	२०	४	४८	३२	१६	०	४४	२८	१२	५६	४०	२४	८	५२	३६	२०	४	४८	३२	१६
कन्या	२४	२४	२४	२४	२५	२५	२५	२५	२५	२५	२६	२६	२६	२६	२६	२७	२७	२७	२७	२७	२८	२८	२८	२८	२८	२९	२९	२९	२९	२९
३४५।१०५	१५	२६	३८	४९	१	१२	२४	३५	४७	५८	१०	२१	३३	४४	५६	७	१९	३०	४२	५३	५	१६	२८	३९	५१	२	१४	२५	३७	४८
	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०
तुला	३०	३०	३०	३०	३०	३०	३१	३१	३१	३१	३१	३२	३२	३२	३२	३२	३३	३३	३३	३३	३३	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३५	३५	३५
३४५।१०५	०	११	२३	३४	४६	५७	९	२०	३२	४३	५५	६	१८	२९	४१	५२	४	१५	२७	३८	५०	१	१३	२४	३६	४७	५९	१०	२२	३३
	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०
वृश्चिक	३५	३५	३६	३६	३६	३६	३६	३७	३७	३७	३७	३७	३८	३८	३८	३८	३८	३९	३९	३९	३९	३९	४०	४०	४०	४०	४०	४१	४१	४१
३५२।११२	४५	५६	८	२०	३१	४३	५५	७	१८	३०	४२	५४	५	१७	२९	४१	५२	४	१६	२७	३९	५१	३	१४	२६	३८	५०	१	१३	२५
	०	४४	२८	१२	५६	४०	२४	८	५२	३६	२०	४	४८	३२	१६	०	४४	२८	१२	५६	४०	२४	८	५२	३६	२०	४	४८	३२	१६
धनु	४१	४१	४१	४२	४२	४२	४२	४२	४३	४३	४३	४३	४३	४४	४४	४४	४४	४४	४५	४५	४५	४५	४५	४६	४६	४६	४६	४६	४६	४७
३४४।१०४	३७	४८	५९	११	२२	३४	४५	५७	८	२०	३१	४३	५४	६	१७	२९	४०	५१	३	१४	२६	३७	४९	०	१२	२३	३५	४६	५८	९
	०	२८	५६	२४	५२	२०	४८	१६	४४	१२	४०	८	३६	४	३२	०	२८	५६	२४	५२	२०	४८	१६	४४	१२	४०	८	३६	४	३२
मकर	४७	४७	४७	४७	४८	४८	४८	४८	४८	४८	४९	४९	४९	४९	४९	४९	५०	५०	५०	५०	५०	५०	५१	५१	५१	५१	५१	५१	५२	५२
३००।६०	२१	३१	४१	५१	१	११	२१	३१	४१	५१	१	११	२१	३१	४१	५१	१	११	२१	३१	४१	५१	१	११	२१	३१	४१	५१	१	११
	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
कुम्भ	५२	५२	५२	५२	५२	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५५	५५	५५	५५	५५	५५	५५	५६	५६	५६
२४६।२८	२१	२९	३७	४५	५३	२	१०	१८	२६	३४	४३	५१	५९	७	१५	२४	३२	४०	४८	५६	५	१३	२१	२९	३७	४६	५४	२	१०	१८
	०	१२	२४	३६	४८	०	१२	२४	३६	४८	०	१२	२४	३६	४८	०	१२	२४	३६	४८	०	१२	२४	३६	४८	०	१२	२४	३६	४८
मीन	५६	५६	५६	५६	५६	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५९	५९	५९	५९	५९	५९	५९	५९
२१३।८	२७	३४	४१	४८	५५	२	९	१६	२३	३०	३८	४५	५२	५९	६	१३	२०	२७	३४	४१	४९	५६	३	१०	१७	२४	३१	३८	४५	५२
	०	६	१२	१८	२४	३०	३६	४२	४८	५४	०	६	१२	१८	२४	३०	३६	४२	४८	५४	०	६	१२	१८	२४	३०	३६	४२	४८	५४

३१ अक्षांश की लग्न-सारणी

अंश	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९
मेष	०	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२	२	२	२	३	३	३
	०	६	१३	२०	२७	३४	४१	४८	५५	२	९	१५	२२	२९	३६	४३	५०	५७	४	११	१८	२४	३१	३८	४५	५२	५९	६	१३	२०
२०७।६	०	५४	४८	४२	३६	३०	२४	१८	१२	६	०	५४	४८	४२	३६	३०	२४	१८	१२	६	०	५४	४८	४२	३६	३०	२४	१८	१२	६
वृष	३	३	३	३	३	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	६	६	६	६	६	६	६	६	७	७	७
	२७	३५	४३	५१	५९	७	१५	२३	३१	३९	४७	५५	३	११	१९	२८	३६	४४	५२	०	८	१६	२४	३२	४०	४८	५६	४	१२	२०
२४२।२५	०	४	८	१२	१६	२०	२४	२८	३२	३६	४०	४४	४८	५२	५६	०	४	८	१२	१६	२०	२४	२८	३२	३६	४०	४४	४८	५२	५६
मिथुन	७	७	७	७	८	८	८	८	८	८	९	९	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	१०	१०	११	११	११	११	११	११	१२	१२
	२९	३८	४८	५८	८	१८	२८	३८	४८	५८	८	१८	२८	३८	४८	५८	७	१७	२७	३७	४७	५७	७	१५	२७	३७	४७	५७	७	१७
२९८।५८	०	५६	५२	४८	४४	४०	३६	३२	२८	२४	२०	१६	१२	८	४	०	५६	५२	४८	४४	४०	३६	३२	२८	२४	२०	१६	१२	८	४
कर्क	१२	१२	१२	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१४	१४	१४	१४	१४	१५	१५	१५	१५	१५	१६	१६	१६	१६	१६	१७	१७	१७	१७	१७	१८
	२७	३८	५०	१	१३	२४	३६	४७	५९	१०	२२	३३	४५	५६	८	२०	३१	४३	५४	६	१७	२९	४०	५२	३	१५	२६	३८	५९	१
३४६।१०६	०	३२	४	३६	८	४०	१२	४४	१६	४८	२०	५२	२४	५६	२८	०	३२	४	३६	८	४०	१२	४४	१६	४८	२०	५२	२४	५६	२८
सिंह	१८	१८	१८	१८	१९	१९	१९	१९	१९	१९	२०	२०	२०	२०	२०	२१	२१	२१	२१	२१	२२	२२	२२	२२	२२	२३	२३	२३	२३	२३
	१३	२५	३६	४८	०	१२	२४	३६	४७	५९	११	२३	३५	४७	५९	११	२२	३४	४६	५८	१०	२२	३४	४५	५७	९	२१	३३	४५	५७
३५६।११४	०	५२	४४	३६	२८	२०	१२	४	५६	४८	४०	३२	२४	१६	८	०	५२	४४	३६	२८	२०	१२	४	५६	४८	४०	३२	२४	१६	८
कन्या	२४	२४	२४	२४	२४	२५	२५	२५	२५	२५	२६	२६	२६	२६	२६	२७	२७	२७	२७	२७	२८	२८	२८	२८	२८	२९	२९	२९	२९	२९
	९	२०	३२	४४	५५	७	१९	३०	४२	५४	६	१७	२९	४१	५२	४	१६	२७	३९	५१	३	१४	२६	३८	४९	१	१३	२४	३६	४८
३५१।१११	०	४२	२४	६	४८	३०	१२	५४	३६	१८	०	४२	२४	६	४८	३०	१२	५४	३६	१८	०	४२	२४	६	४८	३०	१२	५४	३६	१८
तुला	३०	३०	३०	३०	३०	३०	३१	३१	३१	३१	३१	३२	३२	३२	३२	३२	३३	३३	३३	३३	३३	३४	३४	३४	३४	३४	३५	३५	३५	३५
	०	११	२३	३५	४६	५८	१०	२१	३३	४५	५७	८	२०	३२	४३	५५	७	१८	३०	४२	५४	५	१७	२९	४०	५२	४	१५	२७	३९
३५१।१११	०	४२	२४	६	४८	३०	१२	५४	३६	१८	०	४२	२४	६	४८	३०	१२	५४	३६	१८	०	४२	२४	६	४८	३०	१२	५४	३६	१८
वृश्चिक	३५	३६	३६	३६	३६	३६	३७	३७	३७	३७	३७	३८	३८	३८	३८	३८	३९	३९	३९	३९	३९	४०	४०	४०	४०	४०	४०	४१	४१	४१
	५१	२	१४	२६	३८	५०	२	१४	२५	३७	४९	१	१३	२५	३७	४९	०	१२	२४	३६	४८	०	१२	२३	३५	४७	५९	११	२३	३५
३५६।११४	०	५२	४४	३६	२८	२०	१२	४	५६	४८	४०	३२	२४	१६	८	०	५२	४४	३६	२८	२०	१२	४	५६	४८	४०	३२	२४	१६	८
धनु	४१	४१	४२	४२	४२	४२	४२	४३	४३	४३	४३	४३	४४	४४	४४	४४	४४	४५	४५	४५	४५	४५	४६	४६	४६	४६	४६	४६	४७	४७
	४७	५८	१०	२१	३३	४४	५६	७	१९	३०	४२	५३	५	१६	२८	४०	५१	३	१४	२६	३७	४९	०	१२	२३	३५	४६	५८	९	२१
३४६।१०६	०	३२	४	३६	८	४०	१२	४४	१६	४८	२०	५२	२४	५६	२८	०	३२	४	३६	८	४०	१२	४४	१६	४८	२०	५२	२४	५६	२८
मकर	४७	४७	४७	४८	४८	४८	४८	४८	४८	४९	४९	४९	४९	४९	४९	५०	५०	५०	५०	५०	५०	५१	५१	५१	५१	५१	५१	५२	५२	५२
	३३	४२	५२	२	१२	२२	३२	४२	५२	२	१२	२२	३२	४२	५२	२	११	२१	३१	४१	५१	१	११	२१	३१	४१	५१	१	११	२१
२९८।५८	०	५६	५२	४८	४४	४०	३६	३२	२८	२४	२०	१६	१२	८	४	०	५६	५२	४८	४४	४०	३६	३२	२८	२४	२०	१६	१२	८	४
कुम्भ	५२	५२	५२	५२	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५५	५५	५५	५५	५५	५५	५५	५५	५६	५६	५६
	३१	३९	४७	५५	३	११	१९	२७	३५	४३	५१	५९	७	१५	२३	३२	४०	४८	५६	४	१२	२०	२८	३६	४४	५२	०	८	१६	२४
२४२।२५	०	४	८	१२	१६	२०	२४	२८	३२	३६	४०	४४	४८	५२	५६	०	४	८	१२	१६	२०	२४	२८	३२	३६	४०	४४	४८	५२	५६
मीन	५६	५६	५६	५६	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५९	५९	५९	५९	५९	५९	५९	५९
	३३	३९	४६	५३	०	७	१४	२१	२८	३५	४२	४८	५५	२	९	१६	२३	३०	३७	४४	५१	५७	४	११	१८	२५	३२	३९	४६	५३
२०७।६	०	५४	४८	४२	३६	३०	२४	१८	१२	६	०	५४	४८	४२	३६	३०	२४	१८	१२	६	०	५४	४८	४२	३६	३०	२४	१८	१२	६

३३ अक्षांश की लग्न सारणी

अंश	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९
मेष	०	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२	२	२	२	३	३	३
२०।१४	०	६	१३	२०	२६	३३	४०	४६	५३	०	७	१३	२०	२७	३३	४०	४७	५३	०	७	१४	२०	२७	३४	४०	४७	५४	०	७	१४
	०	४२	२४	६	४८	३०	१२	५४	३६	१८	०	४२	२४	६	४८	३०	१२	५४	३६	१८	०	४२	२४	६	४८	३०	१२	५४	३६	१८
वृष	३	३	३	३	३	४	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	५	६	६	६	६	६	६	६	७	७
२३७।२१	२१	२८	३६	४४	५२	०	८	१६	२४	३२	४०	४७	५५	३	११	१९	२७	३५	४३	५१	५९	६	१४	२२	३०	३८	४६	५४	२	१०
	०	५४	४८	४२	३६	३०	२४	१८	१२	६	०	५४	४८	४२	३६	३०	२४	१८	१२	६	०	५४	४८	४२	३६	३०	२४	१८	१२	६
मिथुन	७	७	७	७	७	८	८	८	८	८	८	९	९	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	१०	१०	११	११	११	११	११	११	१२
२९६।५६	१८	२७	३७	४७	५७	७	१७	२७	३६	४६	५६	६	१६	२६	३६	४६	५५	५	१५	२५	३५	४५	५५	४	१४	२४	३४	४४	५४	४
	०	५२	४४	३६	२८	२०	१२	४	५६	४८	४०	३२	२४	१६	८	०	५२	४४	३६	२८	२०	१२	४	५६	४८	४०	३२	२४	१६	८
कर्क	१२	१२	१२	१२	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१४	१४	१४	१४	१४	१५	१५	१५	१५	१५	१६	१६	१६	१६	१६	१७	१७	१७	१७	१७
३४८।१०८	१४	२५	३७	४८	०	१२	२३	३५	४६	५८	१०	२१	३३	४४	५६	८	१९	३१	४२	५४	६	१७	२९	४०	५२	४	१५	२७	३८	५०
	०	३६	१२	४८	२४	०	३६	१२	४८	२४	०	३६	१२	४८	२४	०	३६	१२	४८	२४	०	३६	१२	४८	२४	०	३६	१२	४८	२४
सिंह	१८	१८	१८	१८	१८	१९	१९	१९	१९	१९	२०	२०	२०	२०	२०	२१	२१	२१	२१	२१	२२	२२	२२	२२	२२	२३	२३	२३	२३	२३
३६१।११८	२	१४	२६	३८	५०	२	१४	२६	३८	५०	२	१४	२६	३८	५०	२	१४	२६	३८	५०	२	१४	२६	३८	५०	२	१४	२६	३८	५०
	०	२	४	६	८	१०	१२	१४	१६	१८	२०	२२	२४	२६	२८	३०	३२	३४	३६	३८	४०	४२	४४	४६	४८	५०	५२	५४	५६	५८
कन्या	२४	२४	२४	२४	२४	२५	२५	२५	२५	२५	२६	२६	२६	२६	२६	२७	२७	२७	२७	२७	२८	२८	२८	२८	२८	२९	२९	२९	२९	२९
३५७।११५	३	१४	२६	३८	५०	२	१४	२६	३८	५०	२	१३	२५	३७	४९	१	१३	२५	३७	४९	१	१२	२४	३६	४८	०	१२	२४	३६	४८
	०	५४	४८	४२	३६	३०	२४	१८	१२	६	०	५४	४८	४२	३६	३०	२४	१८	१२	६	०	५४	४८	४२	३६	३०	२४	१८	१२	६
तुला	३०	३०	३०	३०	३०	३०	३१	३१	३१	३१	३१	३२	३२	३२	३२	३२	३३	३३	३३	३३	३३	३४	३४	३४	३४	३४	३५	३५	३५	३५
३५७।११५	०	११	२३	३५	४७	५९	११	२३	३५	४७	५९	१०	२२	३४	४६	५८	१०	२२	३४	४६	५८	९	२१	३३	४५	५७	९	२१	३३	४५
	०	५४	४८	४२	३६	३०	२४	१८	१२	६	०	५४	४८	४२	३६	३०	२४	१८	१२	६	०	५४	४८	४२	३६	३०	२४	१८	१२	६
वृश्चिक	३५	३६	३६	३६	३६	३६	३७	३७	३७	३७	३७	३८	३८	३८	३८	३८	३९	३९	३९	३९	३९	४०	४०	४०	४०	४०	४१	४१	४१	४१
३६१।११८	५७	९	२१	३३	४५	५७	९	२१	३३	४५	५७	९	२१	३३	४५	५७	९	२१	३३	४५	५७	९	२१	३३	४५	५७	९	२१	३३	४५
	०	२	४	६	८	१०	१२	१४	१६	१८	२०	२२	२४	२६	२८	३०	३२	३४	३६	३८	४०	४२	४४	४६	४८	५०	५२	५४	५६	५८
धनु	४१	४२	४२	४२	४२	४२	४२	४२	४३	४२	४२	४४	४४	४४	४४	४४	४५	४५	४५	४५	४५	४६	४६	४६	४६	४६	४६	४७	४७	४७
३४८।१०८	५८	९	२१	३२	४४	५६	७	१९	३०	४२	५४	५	१७	२८	४०	५२	३	१५	२६	३८	५०	१	१३	२४	३६	४८	५९	११	२२	३४
	०	३६	१२	४८	२४	०	३६	१२	४८	२४	०	३६	१२	४८	२४	०	३६	१२	४८	२४	०	३६	१२	४८	२४	०	३६	१२	४८	२४
मकर	४७	४७	४८	४८	४८	४८	४८	४८	४९	४९	४९	४९	४९	४९	५०	५०	५०	५०	५०	५०	५१	५१	५१	५१	५१	५१	५२	५२	५२	५२
२९६।५६	४६	५५	५	१५	२५	३५	४५	५५	४	१४	२४	३४	४४	५४	४	१४	२३	३३	४३	५३	३	१३	२३	३२	४२	५२	२	१२	२२	३२
	०	५२	४४	३६	२८	२०	१२	४	५६	४८	४०	३२	२४	१६	८	०	५२	४४	३६	२८	२०	१२	४	५६	४८	४०	३२	२४	१६	८
कुम्भ	५२	५२	५२	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५५	५५	५५	५५	५५	५५	५५	५५	५६	५६	५६	५६
२३७।२१	४२	४९	५७	५	१३	२१	२९	३७	४५	५३	१	८	१६	२४	३२	४०	४८	५६	४	१२	२०	२७	३५	४३	५१	५९	७	१५	२३	३१
	०	५४	४८	४२	३६	३०	२४	१८	१२	६	०	५४	४८	४२	३६	३०	२४	१८	१२	६	०	५४	४८	४२	३६	३०	२४	१८	१२	६
मीन	५६	५६	५६	५६	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५९	५९	५९	५९	५९	५९	५९	५९
२०।१४	३९	४५	५२	५९	५	१२	१९	२५	३२	३९	४६	५२	५९	६	१२	१९	२६	३२	३९	४६	५३	५९	६	१३	१९	२६	३३	३९	४६	५३
	०	४२	२४	६	४८	३०	१२	५४	३६	१८	०	४२	२४	६	४८	३०	१२	५४	३६	१८	०	४२	२४	६	४८	३०	१२	५४	३६	१८

३५ अक्षांश की लग्न-सारणी

अश	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९
मेष	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२	२	२	२	३	३
१९५।२	०	६	१३	१९	२६	३२	३९	४५	५२	५८	५	११	१८	२४	३१	३७	४४	५०	५७	३	१०	१६	२३	२९	३६	४२	४९	५५	२	८
	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०
वृष	३	३	३	३	३	३	४	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	५	६	६	६	६	६	६	६	६
२३२।१७	१५	२२	३०	३८	४५	५३	१	९	१६	२४	३२	४०	४७	५५	३	११	१८	२६	३४	४१	४९	५७	५	१२	२०	२८	३६	४३	५१	५९
	०	४४	२८	१२	५६	४०	२४	८	५२	३६	२०	४	४८	३२	१६	०	४४	२८	१२	५६	४०	२४	८	५२	३६	२०	४	४८	३२	१६
मिथुन	७	७	७	७	७	७	८	८	८	८	८	८	९	९	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	१०	१०	११	११	११	११	११	११
२९४।५४	७	१६	२६	३६	४६	५६	५	१५	२५	३५	४५	५४	४	१४	२४	३४	४३	५३	३	१३	२३	३२	४२	५२	२	१२	२१	३१	४१	५१
	०	४८	३६	२४	१२	०	४८	३६	२४	१२	०	४८	३६	२४	१२	०	४८	३६	२४	१२	०	४८	३६	२४	१२	०	४८	३६	२४	१२
कर्क	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१३	१३	१३	१३	१३	१४	१४	१४	१४	१४	१५	१५	१५	१५	१५	१६	१६	१६	१६	१६	१७	१७	१७	१७
३५०।११०	१	१२	२४	३६	४७	५९	११	२२	३४	४६	५७	९	२१	३२	४४	५६	७	१९	३१	४२	५४	६	१७	२९	४१	५२	४	१६	२७	३९
	०	४०	२०	०	४०	२०	०	४०	२०	०	४०	२०	०	४०	२०	०	४०	२०	०	४०	२०	०	४०	२०	०	४०	२०	०	४०	२०
सिंह	१७	१८	१८	१८	१८	१८	१९	१९	१९	१९	१९	२०	२०	२०	२०	२०	२१	२१	२१	२१	२१	२२	२२	२२	२२	२२	२३	२३	२३	२३
३६६।१२१	५१	३	१५	२७	३९	५२	४	१६	२८	४०	५३	५	१७	२९	४१	५४	६	१८	३०	४२	५५	७	१९	३१	४३	५६	८	२०	३२	४४
	०	१२	२४	३६	४८	०	१२	२४	३६	४८	०	१२	२४	३६	४८	०	१२	२४	३६	४८	०	१२	२४	३६	४८	०	१२	२४	३६	४८
कन्या	२३	२४	२४	२४	२४	२४	२५	२५	२५	२५	२५	२६	२६	२६	२६	२६	२७	२७	२७	२७	२७	२८	२८	२८	२८	२८	२९	२९	२९	२९
३६३।११९	५७	९	२१	३३	४५	५७	९	२१	३३	४५	५८	१०	२२	३४	४६	५८	१०	२२	३४	४६	५९	११	२३	३५	४७	५९	११	२३	३५	४७
	०	६	१२	१८	२४	३०	३६	४२	४८	५४	०	६	१२	१८	२४	३०	३६	४२	४८	५४	०	६	१२	१८	२४	३०	३६	४२	४८	५४
तुला	३०	३०	३०	३०	३०	३१	३१	३१	३१	३१	३२	३२	३२	३२	३२	३३	३३	३३	३३	३३	३४	३४	३४	३४	३४	३५	३५	३५	३५	३५
३६३।११९	०	१२	२४	३६	४८	०	१२	२४	३६	४८	१	१३	२५	३७	४९	१	१३	२५	३७	४९	२	१४	२६	३८	५०	२	१४	२६	३८	५०
	०	६	१२	१८	२४	३०	३६	४२	४८	५४	०	६	१२	१८	२४	३०	३६	४२	४८	५४	०	६	१२	१८	२४	३०	३६	४२	४८	५४
वृश्चिक	३६	३६	३६	३६	३६	३७	३७	३७	३७	३७	३८	३८	३८	३८	३८	३९	३९	३९	३९	३९	४०	४०	४०	४०	४०	४१	४१	४१	४१	४१
३६६।१२१	३	१५	२७	३९	५१	४	१६	२८	४०	५२	५	१७	२९	४१	५३	६	१८	३०	४२	५४	७	१९	३१	४३	५५	८	२०	३२	४४	५६
	०	१२	२४	३६	४८	०	१२	२४	३६	४८	०	१२	२४	३६	४८	०	१२	२४	३६	४८	०	१२	२४	३६	४८	०	१२	२४	३६	४८
धनु	४२	४२	४२	४२	४२	४३	४३	४३	४३	४३	४४	४४	४४	४४	४४	४५	४५	४५	४५	४५	४६	४६	४६	४६	४६	४७	४७	४७	४७	४७
३५०।११०	९	२०	३२	४४	५५	७	१९	३०	४२	५४	५	१७	२९	४०	५२	४	१५	२७	३९	५०	२	१४	२५	३७	४९	०	१२	२४	३५	४७
	०	४०	२०	०	४०	२०	०	४०	२०	०	४०	२०	०	४०	२०	०	४०	२०	०	४०	२०	०	४०	२०	०	४०	२०	०	४०	२०
मकर	४७	४८	४८	४८	४८	४८	४८	४९	४९	४९	४९	४९	४९	५०	५०	५०	५०	५०	५०	५१	५१	५१	५१	५१	५१	५२	५२	५२	५२	५२
२९४।५४	५९	८	१८	२८	३८	४८	५७	७	१७	२७	३७	४६	५६	६	१६	२६	३५	४५	५५	५	१५	२४	३४	४४	५४	४	१३	२३	३३	४३
	०	४८	३६	२४	१२	०	४८	३६	२४	१२	०	४८	३६	२४	१२	०	४८	३६	२४	१२	०	४८	३६	२४	१२	०	४८	३६	२४	१२
कुम्भ	५२	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५५	५५	५५	५५	५५	५५	५५	५५	५६	५६	५६	५६	५६
२३२।१७	५३	०	८	१६	२३	३१	३९	४७	५४	२	१०	१८	२५	३३	४१	४९	५६	४	१२	१९	२७	३५	४३	५०	५८	६	१४	२१	२९	३७
	०	४४	२८	१२	५६	४०	२४	८	५२	३६	२०	४	४८	३२	१६	०	४४	२८	१२	५६	४०	२४	८	५२	३६	२०	४	४८	३२	१६
मीन	५६	५६	५६	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५९	५९	५९	५९	५९	५९	५९	५९	५९
१९५।२	४५	५१	५८	४	११	१७	२४	३०	३७	४३	५०	५६	३	९	१६	२२	२९	३५	४२	४८	५५	१	८	१४	२१	२७	३४	४०	४७	५३
	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	[illegible]	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०

लग्न-सारणी के उपकोष्टक ११

१	खंड	१	२	३	४	५	६	६/२४	लग्नपल
	६/२४	९	१८	२८	३७	४६	५६	६०	कला
		२२	४५	७	३०	५२	१५	०	विकला
		३०	०	३०	०	३०	०	०	प्रतिविकला

२	खंड	१	२	३	४	५	६	६/३०	लग्नपल
	६/३०	९	१८	२७	३६	४६	५५	६०	कला
		१३	२७	४१	५५	९	२३	०	विकला
		५१	४२	३३	२४	१५	६	०	प्रतिविकला

३	खंड	१	२	३	४	५	६	६/३६	लग्नपल
	६/३६	९	१८	२७	३६	४५	५४	६०	कला
		५	१०	१६	२१	२७	३२	०	विकला
		२७	५४	२१	४८	१५	४२	०	प्रतिविकला

४	खंड	१	२	३	४	५	६	६/४२	लग्नपल
	६/४२	८	१७	२६	३५	४४	५३	६०	कला
		५७	५४	५१	४९	४६	४३	०	विकला
		१९	३८	५७	१६	३५	५४	०	प्रतिविकला

५	खंड	१	२	३	४	५	६	६/४८	लग्नपल
	६/४८	८	१७	२६	३५	४४	५२	६०	कला
		४९	३८	२८	१७	७	५६	०	विकला
		२५	५०	१५	४०	५	३०	०	प्रतिविकला

६	खंड	१	२	३	४	५	६	६/५४	लग्नपल
	६/५४	८	१७	२६	३४	४३	५२	६०	कला
		४१	२३	५	४६	२८	१०	०	विकला
		४४	२८	१२	५६	४०	२४	०	प्रतिविकला

७	खंड	१	२	३	४	५	६	७	लग्नपल
	७/०	८	१७	२५	३४	४२	५१	६०	कला
		३४	८	४२	१७	५१	२५	०	विकला
		१७	३४	५१	८	२५	४२	०	प्रतिविकला

८	खंड	१	२	३	४	५	६	७	७/६	लग्नपल
	७/६	८	१६	२५	३३	४२	५०	५९	६०	कला
		२७	५४	२१	४८	१५	४२	९	०	विकला
		२	४	६	८	१०	१२	१४	०	प्र. वि.

९	खंड	१	२	३	४	५	६	७	७/१०	लग्नपल
	७/१०	८	१६	२५	३३	४१	५०	५८	६०	कला
		२२	४४	७	२९	५१	१४	३६	०	विकला
		२०	४०	०	२०	४०	०	२०	०	प्रतिविकला

१०	खंड	१	२	३	४	५	६	७	७/१६	लग्नपल
	७/१६	८	१६	२४	३३	४१	४९	५७	६०	कला
		१५	३०	४६	१	१७	३२	४७	०	विकला
		२५	५०	१५	४०	५	३०	५५	०	प्रतिविकला

११	खंड	१	२	३	४	५	६	७	७/२२	लग्नपल
	७/२२	८	१६	२४	३२	४०	४८	५७	६०	कला
		८	१७	२६	३४	४३	५२	०	०	विकला
		४१	२२	३	४४	२५	६	४७	०	प्रतिविकला

१२	खंड	१	२	३	४	५	६	७	७/२६	लग्नपल
	७/२६	८	१६	२४	३२	४०	४८	५६	६०	कला
		४	८	१२	१७	२१	२५	३०	०	विकला
		१८	३६	५४	१२	३०	४८	६	०	प्रतिविकला

१३	खंड	१	२	३	४	५	६	७	७/३२	लग्नपल
	७/३२	७	१५	२३	३१	३९	४७	५५	६०	कला
		५७	५५	५३	५१	४९	४७	४५	०	विकला
		५२	४४	३६	२८	२०	१२	४	०	प्रतिविकला

१४	खंड	१	२	३	४	५	६	७	७/३६	लग्नपल
	७/३६	७	१५	२३	३१	३९	४७	५५	६०	कला
		५३	४७	४१	३४	२८	२२	१५	०	विकला
		४१	२२	३	४४	२५	६	४७	०	प्रतिविकला

१५	खंड	१	२	३	४	५	६	७	७/३८	लग्नपल
	७/३८	७	१५	२३	३१	३९	४७	५५	६०	कला
		५१	४३	३४	२६	१८	९	१	०	विकला
		३७	१४	५१	२८	५	४२	१९	०	प्रतिविकला

१६	खंड	१	२	३	४	५	६	७	७/४२	लग्नपल
	७/४२	७	१५	२३	३१	३८	४६	५४	६०	कला
		४७	३५	२२	१०	५७	४५	३२	०	विकला
		३२	४	३६	८	४०	१२	४४	०	प्रतिविकला

लग्न-सारणी के उपकोष्टक ११

३३	खंड	१	२	३	४	५	६	७	८	८ २२	लग्नपल
	८ २२	७	१४	२१	२८	३५	४३	५०	५७	६०	कला
		१०	२०	३०	४१	५१	१	११	२२	०	विकला
		१६	३२	४८	४	२०	३६	५२	८	०	प्र वि

३४	खंड	१	२	३	४	५	६	७	८	८ २४	लग्नपल
	८ २४	७	१४	२१	२८	३५	४२	४९	५७	६०	कला
		८	१७	२५	३४	४२	५१	५९	८	०	विकला
		३४	८	४२	१६	५०	२४	५८	३२	०	प्र वि

३५	खंड	१	२	३	४	५	६	७	८	८ २८	लग्नपल
	८ २८	७	१४	२१	२८	३५	४२	४९	५६	६०	कला
		५	१०	१५	२०	२५	३१	३६	४१	०	विकला
		११	२२	३३	४४	५५	६	१७	२८	०	प्र वि

३६	खंड	१	२	३	४	५	६	७	८	८ ३२	लग्नपल
	८ ३२	७	१४	२१	२८	३५	४२	४९	५६	६०	कला
		१	३	५	७	९	११	१३	१४	०	विकला
		५२	४४	३६	२८	२०	१२	४	५६	०	प्र वि

३७	खंड	१	२	३	४	५	६	७	८	८ ३६	लग्नपल
	८ ३६	६	१३	२०	२७	३४	४१	४८	५५	६०	कला
		५८	५७	५५	५४	५३	५१	५०	४७	०	विकला
		३६	१२	४८	२४	०	३६	१२	४८	०	प्र वि

३८	खंड	१	२	३	४	५	६	७	८	८ ४०	लग्नपल
	८ ४०	६	१३	२०	२७	३४	४१	४८	५५	६०	कला
		५५	५१	४७	४२	३७	३३	२८	२४	०	विकला
		२३	४६	९	३२	५५	१८	४१	४	०	प्र वि

३९	खंड	१	२	३	४	५	६	७	८	८ ४४	लग्नपल
	८ ४४	६	१३	२०	२७	३४	४१	४८	५४	६०	कला
		५२	४५	३७	२९	२२	१४	६	५८	०	विकला
		१३	२६	३९	५२	५	१८	३१	४४	०	प्र वि

४०	खंड	१	२	३	४	५	६	७	८	८ ४८	लग्नपल
	८ ४८	६	१३	२०	२७	३४	४०	४७	५४	६०	कला
		४९	३८	२७	१६	५	५४	४३	३२	०	विकला
		५	१०	१५	२०	२५	३०	३५	४०	०	प्र वि

४१	खंड	१	२	३	४	५	६	७	८	८ ५२	लग्नपल
	८ ५२	६	१३	२०	२७	३३	४०	४७	५४	६०	कला
		४६	३२	१८	४	५०	३६	२२	८	०	विकला
		१	२	३	४	५	६	७	८	०	प्रतिविकला

४२	खंड	१	२	३	४	५	६	७	८	८ ५६	लग्नपल
	८ ५६	६	१३	२०	२६	३३	४०	४७	५३	६०	कला
		४३	२६	९	५२	३५	१८	१	४४	०	विकला
		०	०	०	०	०	०	०	०	०	प्रतिविकला

४३	खंड	१	२	३	४	५	६	७	८	९	लग्नपल
	९ ०	६	१३	२०	२६	३३	४०	४६	५३	६०	कला
		४०	२०	०	४०	२०	०	४०	२०	०	विकला
		०	०	०	०	०	०	०	०	०	प्रतिविकला

४४	खंड	१	२	३	४	५	६	७	८	९	९ ४	लग्नपल
	९ ४	६	१३	१९	२६	३३	३९	४६	५२	५९	६०	कला
		३७	१४	५१	२८	५	४२	१९	५६	३३	०	विकला
		३	६	९	१२	१५	१८	२१	२४	२७	०	प्र वि

४५	खंड	१	२	३	४	५	६	७	८	९	९ ८	लग्नपल
	९ ८	६	१३	१९	२६	३२	३९	४५	५२	५९	६०	कला
		२४	८	४२	१६	५०	२४	५९	३३	७	०	विकला
		९	१८	२७	३६	४५	५४	३	१२	२१	०	प्र वि

४६	खंड	१	२	३	४	५	६	७	८	९	९ १०	लग्नपल
	९ १०	६	१३	१९	२६	३२	३९	४५	५२	५८	६०	कला
		३२	५	३८	१०	४३	१६	४९	२१	५४	०	विकला
		४४	२८	१२	५६	४०	२४	८	५२	३६	०	प्र वि

४७	खंड	१	२	३	४	५	६	७	८	९	९ १४	लग्नपल
	९ १४	६	१२	१९	२५	३२	३८	४५	५१	५८	६०	कला
		२९	५९	२९	५९	२९	५९	२९	५९	२८	०	विकला
		५३	४६	३९	३२	२५	१८	११	४	५७	०	प्र वि

४८	खंड	१	२	३	४	५	६	७	८	९	९ १८	लग्नपल
	९ १८	६	१२	१९	२५	३२	३८	४५	५१	५८	६०	कला
		२७	५४	२१	४८	१५	४२	९	३६	३	०	विकला
		६	१२	१८	२४	३०	३६	४२	४८	५४	०	प्र वि

लग्न-सारणी के उपकोष्टक ११

६५	खं	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	१०/१०	ल प.
	१०/१०	५	११	१७	२३	२९	३५	४१	४७	५३	५९	६०	कला
		५४	४८	४२	३६	३०	२४	१८	१२	६	१	०	वि
		६	१२	१८	२४	३०	३६	४२	४८	५४	०	०	प्र वि

६६	खं	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	१०/१२	ल प
	१०/१२	५	११	१७	२३	२९	३५	४१	४७	५२	५८	६०	कला
		५२	४५	३८	३१	२४	१७	१०	३	५६	४९	०	त्रि
		५६	५२	४८	४४	४०	३६	३२	२८	२४	२०	०	प्र त्रि

६७	खं	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	१०/१४	ल प
	१०/१४	५	११	१७	२३	२९	३५	४१	४६	५२	५८	६०	कला
		५१	४३	३५	२७	१८	१०	२	५४	४६	३७	०	त्रि
		४७	३४	२१	८	५५	४२	२९	१६	३	५०	०	प्र त्रि

६८	ख	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	१०/१६	ल प
	१०/१६	५	११	१७	२३	२९	३५	४०	४६	५२	५८	६०	कला
		५०	४१	३१	२२	१३	३	५४	४५	३५	२६	०	त्रि
		३९	१८	५७	३६	१५	५४	३३	१२	५१	३०	०	प्र त्रि

६९	खं	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	१०/१८	ल प
	१०/१८	५	११	१७	२३	२९	३४	४०	४६	५२	५८	६०	कला
		४९	३९	२८	१८	७	५७	४६	३६	२५	१५	०	त्रि
		३१	२	३३	४	३५	६	३७	८	३९	१०	०	प्र त्रि

७०	ख	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	१०/२०	ल प
	१०/२०	५	११	१७	२३	२९	३४	४०	४६	५२	५८	६०	कला
		४८	३६	२५	१३	१	५०	३८	२७	१५	३	०	त्रि
		२३	४६	९	३२	५५	१८	४१	४	२७	५०	०	प्र त्रि

७१	ख	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	१०/२२	ल प
	१०/२२	५	११	१७	२३	२८	३४	४०	४६	५२	५७	६०	कला
		४७	३४	२१	९	५६	४३	३०	१८	५	५२	०	वि
		१६	३२	४८	४	२०	३६	५२	८	२४	४०	०	प्र त्रि

७२	खं	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	१०/२४	ल प
	१०/२४	५	११	१७	२३	२८	३४	४०	४६	५२	५७	६०	कला
		४६	३२	१८	४	५०	३६	२३	९	५५	४१	०	वि
		९	१८	२७	३६	४५	५४	३	१२	२१	३०	०	प्र वि

७३	खं	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	१०/२६	ल प
	१०/२६	५	११	१७	२३	२८	३४	४०	४६	५१	५७	६०	कला
		४५	३०	१५	०	४५	३०	१५	०	४५	३०	०	त्रि
		२	४	६	८	१०	१२	१४	१६	१८	२०	०	प्र त्रि

७४	खं	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	१०/२८	ल प
	१०/२८	५	११	१७	२२	२८	३४	४०	४५	५१	५७	६०	कला
		४३	२७	११	५५	३९	२३	७	५१	३५	१९	०	त्रि
		५७	५४	५१	४८	४५	४२	३९	३६	३३	३०	०	प्र त्रि

७५	खं.	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	१०/३०	ल प
	१०/३०	५	११	१७	२२	२८	३४	४०	४५	५१	५७	६०	कला
		४२	२५	८	५१	३४	१७	०	४२	२५	८	०	वि
		५२	४४	३६	२८	२०	१२	४	५६	४८	४०	०	प्र त्रि

७६	खं	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	१०/३२	ल प
	१०/३२	५	११	१६	२२	२८	३४	३९	४५	५१	५६	६०	कला
		४१	२३	५	४७	२८	१०	५२	३४	१५	५७	०	वि
		४६	३२	१८	४	५०	३६	२२	८	५४	४०	०	प्र त्रि

७७	खं	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	१०/३४	ल प
	१०/३४	५	११	१७	२२	२८	३४	३९	४५	५१	५६	६०	कला
		४०	२१	२	४२	२३	४	४४	२५	६	४६	०	त्रि
		४१	२२	३	४४	२५	६	४७	२८	९	५०	०	प्र त्रि

७८	खं	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	१०/३६	ल प
	१०/३६	५	११	१६	२२	२८	३३	३९	४५	५०	५६	६०	कला
		३९	१९	५८	३८	१८	५७	३७	१६	५६	३६	०	वि
		३७	१४	५१	२८	५	४२	१९	५६	३३	१०	०	प्र त्रि

७९	ख	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	१०/३८	ल प
	१०/३८	५	११	१६	२२	२८	३३	३९	४५	५०	५६	६०	कला
		३८	१७	५५	३४	१२	५१	२	८	४६	२५	०	त्रि
		३३	६	३९	१२	४५	१८	५१	२४	५७	३०	०	प्र त्रि

८०	खं	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	१०/४०	ल प
	१०/४०	५	११	१६	२२	२८	३३	३९	४५	५०	५६	६०	कला
		३७	१५	५२	३०	७	४५	२२	०	३७	१५	०	त्रि
		३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	०	प्र त्रि

लग्न-सारणी के उपकोष्टक ११

९७	खं	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	११/१४	ल प
	११/१४	५	१०	१६	२१	२६	३२	३७	४२	४८	५३	५८	६०	कला
		२०	४०	१	२१	४२	२	२३	४३	४	२४	४५	०	वि
		२८	५६	२४	५२	२०	४८	१६	४४	१२	४०	८	०	प्र. वि

९८	ख	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	११/१६	ल प
	११/१६	५	१०	१५	२१	२६	३१	३७	४२	४७	५३	५८	६०	कला
		१९	३९	५८	१८	३७	५७	१६	३६	५५	१५	३४	०	वि
		३१	२	३३	४	३५	६	३७	८	३९	१०	४१	०	प्र वि

९९	ख	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	११/१८	ल प
	११/१८	५	१०	१५	२१	२६	३१	३७	४२	४७	५३	५८	६०	कला
		१८	३७	५५	१४	३२	५१	९	२८	४७	५	२४	०	वि
		३४	८	४२	१६	५०	२४	५८	३२	६	४०	१४	०	प्र वि

१००	ख	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	११/२०	ल प
	११/२०	५	१०	१५	२१	२६	३१	३७	४२	४७	५२	५८	६०	कला
		१७	३५	५२	१०	२८	४५	३	२१	३८	५६	१४	०	वि
		३९	१८	५७	३६	१५	५४	३३	१२	५१	३०	९	०	प्र वि

१०१	खं	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	११/२२	ल प
	११/२२	५	१०	१५	२१	२६	३१	३६	४२	४७	५२	५८	६०	कला
		१६	३३	५०	६	२३	४०	५७	१३	३०	४७	३	०	वि
		४३	२६	९	५२	३५	१८	१	४४	२७	१०	५३	०	प्र वि

१०२	ख	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	११/२४	ल प
	११/२४	५	१०	१५	२१	२६	३१	३६	४२	४७	५२	५७	६०	कला
		१५	३१	४७	२	१८	३४	५०	६	२२	३७	५३	०	वि
		४७	३४	२१	८	५५	४२	२९	१६	३	५०	३७	०	प्र वि

१०३	ख	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	११/२६	ल प
	११/२६	५	१०	१५	२०	२६	३१	३६	४१	४७	५२	५७	६०	कला
		१४	२९	४४	५९	१४	२९	४३	५७	१२	२७	४२	०	वि
		५२	४४	३६	२८	२०	१२	४	५६	४८	४०	३२	०	प्र वि

१०४	ख	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	११/२८	ल प
	११/२८	५	१०	१५	२०	२६	३१	३६	४१	४७	५२	५७	६०	कला
		१३	२७	४१	५५	९	२३	३७	५१	५	१९	३३	०	वि
		५७	५४	५१	४८	४५	४२	३९	३६	३३	३०	२७	०	प्र वि

१०५	ख	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	११/३०	ल प
	११/३०	५	१०	१५	२०	२६	३१	३६	४१	४६	५२	५७	६०	कला
		१३	२६	३९	५२	५	१८	३१	४४	५७	१०	२३	०	वि
		२	४	६	८	१०	१२	१४	१६	१८	२०	२२	०	प्र वि

१०६	खं	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	११/३२	ल प
	११/३२	५	१०	१५	२०	२६	३१	३६	४१	४६	५२	५७	६७	कला
		१२	२४	३६	४८	०	१२	२४	३७	४९	१	१३	०	वि
		८	१६	२४	३२	४०	४८	५६	४	१२	२०	२८	०	प्र वि

१०७	ख	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	११/३४	ल प
	११/३४	५	१०	१५	२०	२५	३१	३६	४१	४६	५१	५७	६०	कला
		११	२२	३३	४४	५६	७	१८	२९	४१	५२	३	०	वि
		१४	२८	४२	५६	१०	२४	३८	५२	६	२०	३४	०	प्र वि

१०८	ख	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	११/३६	ल प
	११/३६	५	१०	१५	२०	२५	३१	३६	४१	४६	५१	५६	६०	कला
		१०	२०	३१	४१	५१	२	१२	२२	३३	४३	५३	०	वि
		२१	४२	३	२४	४५	३	२७	४८	९	३०	५१	०	प्र वि

१०९	ख	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	११/३८	ल प
	११/३८	५	१०	१५	२०	२५	३०	३६	४१	४६	५१	५६	६०	कला
		९	१८	२८	३७	४७	५६	६	१५	२५	३४	४४	०	वि
		२८	५६	२४	५२	२०	४८	१६	४४	१२	४०	८	०	प्र वि

११०	ख	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	११/४०	ल प
	११/४०	५	१०	१५	२०	२५	३०	३५	४१	४६	५१	५६	६०	कला
		८	१७	२५	३४	४२	५१	५९	८	१७	२५	३४	०	वि
		३४	८	४२	१६	५०	२४	५८	३२	६	४०	१४	०	प्र वि

१११	ख	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	११/४२	ल प
	११/४२	५	१०	१५	२०	२५	३०	३५	४१	४६	५१	५६	६०	कला
		७	१४	२२	२९	३६	४५	५२	०	८	१५	२३	०	वि
		४१	२२	३	४४	२५	६	४७	२८	९	५०	३१	०	प्र वि

११२	ख	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	११/४४	ल प
	११/४४	५	१०	१५	२०	२५	३०	३५	४०	४६	५१	५६	६०	कला
		६	१३	२०	२७	३४	४०	४७	५४	१	८	१४	०	वि
		४९	३८	२७	१६	५	५४	४३	३२	२१	१०	५९	०	प्र वि

दिनमान – साधन – चक्र

२३ अक्षाश

ध्रुवाक	राशि		एकाशगति		राशि	ध्रुवाक
३०।०	मेप	+	३।२४	+	मीन	२८।१८
३१।४२	वृप	+	२।४४	+	कुम्भ	२६।५६
३३।४	मिथुन	+	१।८	+	मकर	२६।८२
३३।३८	कर्क	–	१।८	–	धनु	२६।५६
३३।४	सिंह	–	२।४४	–	वृश्चिक	२८।१८
३१।४२	कन्या	–	३।२४	–	तुला	३०।०

२४ अक्षांश

ध्रवाक	राशि		एकाशगति		राशि	ध्रुवांक
३०।०	मेप	+	३।३२	+	मीन	२८।१४
३१।४६	वृप	+	२।५२	+	कुम्भ	२६।४८
३३।१२	मिथुन	+	१।१२	+	मकर	२६।१२
३३।४८	कर्क	–	१।१२	–	धनु	२६।४८
३३।१२	सिंह	–	२।५२	–	वृश्चिक	२८।१४
३१।४६	कन्या	–	३।३२	–	तुला	३०।०

२५ अक्षाश

ध्रुवांक	राशि		एकाशगति		राशि	ध्रुवांक
३०।०	मेप	+	३।४४	+	मीन	२८।८
३१।५२	वृप	+	३।०	+	कुम्भ	२६।३८
३३।२२	मिथुन	+	१।१६	+	मकर	२६।०
३४।०	कर्क	–	१।१६	–	धनु	२६।३८
३३।२२	सिंह	–	३।०	–	वृश्चिक	२८।८
३१।५२	कन्या	–	३।४५	–	तुला	३०।०

२६ अक्षाश

ध्रुवाक	राशि		एकाशगति		राशि	ध्रुवाक
३०।०	मेप	+	३।५२	+	मीन	२८।४
३१।५६	वृप	+	३।८	+	कुम्भ	२६।३०
३३।३०	मिथुन	+	१।१६	+	मकर	२५।५२
३४।८	कर्क	–	१।१६	–	धनु	२६।३०
३३।३०	सिंह	–	३।८	–	वृश्चिक	२८।४
३१।५६	कन्या	–	३।५२	–	तुला	३०।०

२७ अक्षाश

ध्रुवाक	राशि		एकाशगति		राशि	ध्रुवाक
३०।०	मेप	+	४।४	+	मीन	२७।५८
३२।२	वृप	+	३।१६	+	कुम्भ	२६।२०
३३।४०	मिथुन	+	१।२०	+	मकर	२५।४०
३४।२०	कर्क	–	१।२०	–	धनु	२६।२०
३३।४०	सिंह	–	३।१६	–	वृश्चिक	२७।५८
३२।२	कन्या	–	४।४	–	तुला	३०।०

२८ अक्षाश

ध्रुवाक	राशि		एकाशगति		राशि	ध्रुवाक
३०।०	मेप	+	४।१६	+	मीन	२७।५२
३२।८	वृप	+	३।२४	+	कुम्भ	२६।१०
३३।५०	मिथुन	+	१।२४	+	मकर	२५।०८
३४।३२	कर्क	–	१।२४	–	धनु	२६।१०
३३।५०	सिह	–	३।२४	–	वृश्चिक	२७।५२
३२।८	कन्या	–	४।१६	–	तुला	३०। ०

दिनमान–साधन–विधि

पृष्ठ ११६-११७ के द्वारा जिन स्थानों का अक्षाश २१, २२, २३, २४, २५, २६, २७, २८ हो, उन्हीं स्थानों का दिनमान–साधन हो सकता है। सर्वत्र का नहीं। ध्रुवाक मे घटी–पल और एकाशगति मे पल–विपल हैं। प्रात' सायनार्क साधन पृष्ठ २५ और ७१ के द्वारा कीजिए। सायनार्क (राशि-अश-कला) के अश-कला मात्र में एकाशगति का गुणा कर, राशि के ध्रुवाक में धन या ऋण (जैसा सकेत हो) करने से दिनमान होता है। यथा—

प्रात सायनार्क २।२२।३४।५२ (पृष्ठ २५ में है)

सायनार्क अश–कला = २२।३५ × १।८ (२३ अक्षाश के मिथुन में एकाशगति)

= २५।३५।४० पलादि + ३३।४ (२३ अक्षाश के मिथुन का ध्रुवाक)

= ३३।२६।३५।४० = (३३।३० व्यवहार योग्य) दिनमान।

इस गणित के द्वारा ३३।२६।३५।४० घट्यादि दिनमान है, और पृष्ठ २५ में ३३।२६।४६ आया है। दोनों ही के द्वारा व्यवहार योग्य ३३।३० दिनमान होता है।

चतुर्थ–वर्तिका = ज्योतिष का गृह

पंचम–वर्तिका

मध्याह्न–छाया–साधन

दिनं त्रयस्त्रिंशदधिकं घटस्थं रसेन पंचघ्ना निहृतं शरघ्नम् ।
हीनं घनं देशपलप्रभायां छाया च सा स्याद्दिनमध्यभागे ॥

अर्थात् दिनमान, ३० घटी में से जितना अधिक या कम हो तो, उसने अधिक शेष में ६ का और कम शेष में १ का गुणाकर ५ से भाग दे, लब्धि को पलभा में (३० घटी से अधिक दिनमान हो तो ऋण अथवा ३ घटी से कम दिनमान हो तो धन) संस्कार करने से मध्याह्न–छाया होती है। यथा—

उदाहरण

दिनमान ३३।२८।४६ – ३० घटी = अधिक शेष ३।२८।४६ में ६ का गुणा किया तो २०।५२।३६ हुए। इसमें ५ से भाग देने पर, लब्धि (४।११।४२) को पलभा (५।४६ जबलपुर) में से घटाने पर शेष ०।५४।२२ मध्याह्न–छाया हुई।

छाया–द्वारा इष्ट–साधन

छाया निजेष्टा दिनमध्यभागच्छायोनिता विरूपसहिता यथासा ।
दिने शरघ्ने गतगम्यनाडी श्रीमद् वराहो वदति स्वयुक्त्या ॥

अर्थात् श्रीमद्वराहमिहिराचार्य ने अपनी युक्ति द्वारा इस प्रकार बताया है कि, इष्ट–कालिक छाया में से मध्याह्न छाया घटाकर १ जोड़िए। इस योगफल से पंचगुणित दिनमान में भाग देने पर लब्धि (१२ बजे के पहिले पूर्वाह्न में गत घटी, १२ बजे मध्याह्न के बाद गम्य [शेष] घटी) होती है। अर्थात् गत घटी, (सूर्योदय से इष्टकाल) गम्य (शेष) घटी को दिनमान में से घटाने पर शेष घटी, सूर्योदय से इष्टकाल होता है। यथा—

उदाहरण

इष्ट–छाया ३ ।५८।२७ में से मध्याह्न–छाया ।५६।२३ को घटाने पर शेष ३ ।३।१४ हुए। इसमें १० जोड़ने से ४ ।३।१४ हुए। यही भाजक है। तथैव दिनमान ३३।२८।४६ में ५ का गुणा करने पर १६७।२३।५० हुए। यही भाज्य है। अर्थात् १६७।२३।५० में ४ ।३।१४ से भाग देने पर (समान राशि ६ २९३० + १४४१६४) लब्धि ४१ ।५१ गम्य (शेष) घटी हुई। दिनमान ३३।२८।४६ में से गम्यघटी ४।१०।५१ घटाने पर शेष २९।१८।५१ घटी सूर्योदय से इष्टकाल हुआ।

नोट—

इष्टकाल बनाने का एक प्रकार यह भी है। सारांश यह है कि, इष्टकाल का साधन अत्यन्त सूक्ष्म प्रकार से करना चाहिए। विधि कोई भी हो। यही मूल आधार है। "छिन्ने मूले नैव शाखा न पत्रम् ।" अस्तु।

इष्ट–काल तथा लग्न शोधन

इसके शोधन की सोलह विधि बतायी गयी हैं। इनमें पहिले मुख्य पाँच विधियों का ही उल्लेख किया जा रहा है। प्राणपद गुलिक, चन्द्र लग्न और नवांश, ये पाँच प्रकार हैं। इन्हें प्रत्येक कुण्डली में उपयोग अवश्य करना चाहिए।

प्राणपद (प्रथम–प्रकार)

किसी का मत है कि, प्राणपद से विषम भाव में ही लग्न होना चाहिए; किन्तु यह आवश्यक नहीं है। हाँ आवश्यक है इसका एक मुख्य अङ्ग जो कि 'लग्नांश और प्राणांश की समानता' का रूप है। अनुभव में आया है कि, इसमें पल्ली के टाइम की कुछ अशुद्धि का पता लग जाता है। प्राणपद के बारहों भावों का फल, लिखा हुआ पाया जाता है, अतः प्राणपद से सम या विषम भाव में जन्म–लग्न हो, तो भी लग्न शुद्ध मानना चाहिए।

प्राणपद-साधन

सूर्योदय से १५-१५ पल में एक-एक राशि होती है, अर्थात् १ घटी में ४ राशि, तथा ३ घटी में १२ राशि (१ भगण) होकर, क्रमशः पुनरावृत्ति होती है। अथवा ६ मिनट में एक राशि तथा १ घण्टा १२ मिनट में १२ राशियाँ पूर्ण होती हैं। अतएव इष्टकाल की घटी मात्र में ३ से भाग दे, तो लब्धि के गत भगण, त्याग दीजिए, शेष घटी मात्र में ४ का गुणा कर, राशि रखिए। पल में २ का गुणा कर, अंश रखिए। विपल में २ का गुणा कर कला रखिए। फिर इसमें 'चर राशिवाला सूर्य' जोड़ दीजिए तो, स्पष्ट प्राणपद हो जायगा। प्राणपद, इष्ट-शोधन में अत्यन्त सहायक होता है।

चर राशि वाला सूर्य

यदि चर राशि का सूर्य न हो, स्थिर या द्विस्वभाव राशि का सूर्य हो, तो, उस स्थिर या द्विस्वभाव राशि से पाँचवाँ या नवाँ---जो चर राशि होती हो—उसी का सूर्य समझ कर जोड़ना चाहिए। यथा—

द्विस्वभाव सूर्य २।०।१८।५५ (इष्टकालिक निरयण)
४
जोड़ने वाला तुला ६।०।१८।५५ (पाँचवाँ सूर्य) चर हो गया।

तद्राशिचरान क्रमेण	
जन्म का सूर्य	जोड़ने वाला सूर्य
१ - ५ - ६	१
२ - ६ - १०	१०
३ - ७ - ११	७
४ - ८ - १२	४

उदाहरण प्राणपद

(पृष्ठ २६) इष्ट २६।२०।४३ ÷ ३ = ६ भगण गत त्याज्य।
शेष २ × ४ = ८ राशि ।० ।०
पल २०।४३ × २ = १ राशि ।११।२६
चर सूर्य = ६ राशि ।० ।१६
स्पष्ट प्राणपद ३ ।११।४५ मे से
(पृष्ठ ३१) स्पष्ट लग्न ७ ।८ ।६ ।४२ घटाया
(लग्न राशि छोड़) अन्तराशादि = शेष ३ ।३८।१८

३।३८ ÷ २ = १।४६ पलादि = ४४ सेकण्ड (लगभग)

यदि ४४ सेकण्ड समय, इष्ट समय में कम कर दिया जाय, तो लग्नांश, प्राणांश समान हो जायँगे। यथा—

इष्ट समय २६।२०।४३
४४ सेकण्ड के— - १ ।४६ पलादि घटाया
२६।१८।५४=स्पष्ट प्राणपद ३।८।६।५५ लग्न ७।८।६।४२ (लग्नांश-प्रणांश समान)

पद-ऐक्य नियम

जब लग्नांश-प्राणांश, एक समान न हों तब, अनुपात द्वारा, समय मे अन्तर करना चाहिए। अन्तर, न्यूनाधिक, दोनों हो सकता है। जब प्राणपद अधिक हो, तब इष्ट में ऋण। जब प्राणपद कम हो, तब, इष्ट में धन होता है। लग्न-प्राण के अन्तर में २ से भाग देकर लब्धि को ऋण-धन करना चाहिए। जैसा कि, पहिले दोनों का अन्तर ३।३८ मे २ से भाग देकर, लब्धि १।४६ को इष्ट में ऋण किया, क्योंकि लग्न से प्राणपद अधिक है। पुनश्च—

पृष्ठ २८ में स्टैण्डर्ड टाइम ५।१२ - ४४ सेकण्ड = ५ ।११।१६ = प्राणपद से शुद्ध स्टैण्डर्ड टाइम।
देशांतर, वेलान्तर संस्कार (-१०।४+२४ सेकण्ड)= - ६ ।४० = स्टैण्डर्ड संस्कार
सायंकाल ५ ।१ ।३६ = स्थानीय समय मे से
सूर्योदय ५ ।१८।२ ।४८ = घण्टादि घटाया
११।४३।३३।१२ इष्टकाल घण्टादि
व्यवहार योग्य (२६।१६) = २६।१८।५३ इष्टकाल घटी आदि

अर्थात्

५४ सेकण्ड टाइम कम करने से इष्ट २६।१।८।२३ सूर्य २।०।१६ लग्न ७।८।२ प्राणपद ३।८।२ होकर "लग्नांश-प्राणांश" की समता हो गयी एवं लग्न के अंश-कला में कोई अन्तर भी न हुआ। एक-दो सेकण्ड या एक-दो कला का अन्तर उपेक्ष्य होता है। यथा—सूर्य २। ।१८।२५ को २।०।१६ मानकर कार्य करना या इष्ट २६।१।८।२३ को २६।१६ मानना व्यवहार योग्य है। लग्न और प्राण के अंश मात्र ही समान होना चाहिए, राशि-कला-विकला की समानता हो या न हो, कोई त्रुटि नहीं।

प्राय: अनुभव में आया है कि यदि घड़ी का टाइम शुद्ध बताया जाय अर्थात् घण्टा मिनट ठीक हीं [सेकण्ड की बात नहीं] तब प्राणपद मिलान के लिए न्यूनाधिकता नहीं करना पड़ती। एक बार एक महाशय ने अपने बालक का जन्म समय बताया, तब इसी प्रकार प्राणपद बनाया, तब मैंने कहा कि, आपकी घड़ी दो मिनट लेट (धीमी) है। वे महोदय तारघर की घड़ी से अपनी घड़ी मिलाया, तो, पूर्वोक्त बात सत्य निकली। परन्तु, साधारण घड़ियाँ, केवल 'कलाई की शोभा' बढ़ाने के लिए हैं, न कि ज्योतिष-विज्ञान के लिए।

गुलिक (द्वितीय-प्रकार)

यह लग्न-शोधन में बहुत सहायक होता है। कहा गया है कि "विना प्राणपदाच्छुद्धो गुलिकाद् वा निशाकरात्। तदशुद्धं विजानीयात् स्थावराणां सदैव हि। इयोर्निवक्षेऽप्येवं गुलिकात्परिचिन्तयेत्॥" अर्थात् विना प्राणपद या गुलिक या चन्द्रेश से शुद्ध हुए, वह इष्ट और लग्न अशुद्ध होती है। अब प्राणपद और चन्द्रेश द्वारा शुद्धि न हो सके, तब गुलिक द्वारा विचार करना चाहिए।

गुलिक से विषम स्थान में अथवा गुलिक नवांश से १।५।६ वें भाव में जन्म-लग्न शुद्ध होती है; एवं वह लग्न मनुष्य जन्म होने की सूचना करती है। अन्यथा २।६।१० में पशु का जन्म ३।७।११ में पक्षी का जन्म, ४।८।१२ में कीट, सर्प जल-जन्तु इत्यादि का जन्म समझना चाहिए। इसका यह भी तात्पर्य है कि, पूर्वोक्त २।६।१ ३।७।११, ४।८।१२ में भाव में लग्न, (प्राणपद या गुलिक या चन्द्रेश से) होने पर भी पशु, पक्षी कीटादि स्वभाव वाले मनुष्य का जन्म हो सकता है। क्योंकि, प्राणपद, गुलिक और चन्द्र—इन तीनों का द्वादश भावस्थ फल भी लिखा पाया जाता है। तब कैसे हो सकता है कि, इन तीनों से विषम स्थान में ही लग्न हो, सम में न हो। हाँ, 'सन्देहे लग्ननिर्णयः, अर्थात् सन्देह होने पर ही लग्न-निश्चय में यह सहायक है, सर्वदा नहीं। परन्तु, प्राणपद की उपयोगिता 'लग्नांश-प्राणांश' समान करने में सर्वदा आवश्यक है।

गुलिकादि-चक्र १२

गुलिक	दिन के खण्ड								गुलिक	रात्रि के खण्ड							
ध्रुवांक	वार	१	२	३	४	५	६	७	ध्रुवांक	वार	१	२	३	४	५	६	७
७	रवि	सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	३	रवि	गु	शु	श	सू	चं	मं	बु
६	सोम	चं	मं	बु	गु	शु	श	सू	२	सोम	शु	श	सू	चं	मं	बु	गु
५	मंगल	मं	बु	गु	शु	श	सू	चं	१	मंगल	श	सू	चं	मं	बु	गु	शु
४	बुध	बु	गु	शु	श	सू	चं	मं	७	बुध	सू	चं	मं	बु	गु	शु	श
३	गुरु	गु	शु	श	सू	चं	मं	बु	६	गुरु	चं	मं	बु	गु	शु	श	सू
२	शुक्र	शु	श	सू	चं	मं	बु	गु	५	शुक्र	मं	बु	गु	शु	श	सू	चं
१	शनि	श	सू	चं	मं	बु	गु	शु	४	शनि	बु	गु	शु	श	सू	चं	मं

शनि-खण्ड गुलिक, गुरु-खण्ड यमकण्टक, भोम-खण्ड मृत्यु, सूर्य-खण्ड काल और बुध-खण्ड अर्ध-प्रहर (यामार्ध) होता है। प्रत्येक दिन में, दिन के खण्ड, अपने ही ग्रह से तथा रात्रि मे, रात्रि के खण्ड, अपने ग्रह से पाँचवें ग्रह का प्रारम्भ करते हैं। गुलिक ध्रुवाक पर ध्यान दीजिए, तो प्रत्येक दिन, शनि खण्ड का ही अङ्क दिया गया है।

गुलिक-साधन

दिनमान में आठ से भाग दीजिए, लब्धि के अष्टमाश में, अभीष्ट वार के ध्रुवाक का गुणा कीजिए, तो सूर्योदय से गुलिक का इष्टकाल होता है। जब रात्रि मे जन्म हो, तब, ६० घटी मे से दिनमान घटाकर, रात्रिमान बनाइये। रात्रिमान मे आठ से भाग दीजिए, लब्धि में (रात्रि के अष्टमाश मे) रात्रि के गुलिक ध्रुवाक का गुणाकर, दिनमान जोड़ दीजिए, तो रात्रि मे, सूर्योदय से गुलिक का इष्टकाल होता है। इस इष्टकाल पर, सूर्य बनाकर, लग्न स्पष्ट कीजिए, तो गुलिक-लग्न होती हे। यथा—

दिनमान ३३।२६।४६ ÷ ८ = ४।११।१३।१५ = लब्धि = अष्टमाश

अष्टमाश × ६ (सोमवार का गुलिक ध्रुवाक) = २५।७ ।१६।३० गुलिकेष्ट काल में

गुलिकेष्टकालिक-सायनार्क २।२२।५८।४६ द्वारा सारणी का अङ्क = ११।५६।३७।२८ जोड़ा

(निरयण लग्न ६।१५।५२)   गुलिक स्पष्ट =(३७।६ ।५६।५८) योगाक

अर्थात्

गुलिक-लग्न (तुला) से, द्वितीय, जन्म लग्न वृश्चिक, एवं गुलिक नवाश (कुम्भ) से दशम, जन्म-लग्न वृश्चिक है। प्रत्यक्षत है तो यह मनुष्य, परन्तु २।६।१० वें पशु का जन्म, अथवा पशु स्वभाव वाला मनुष्य है या नहीं, यह ईश्वर जाने। किन्तु प्राणपद (कर्क) से, पचम, वृश्चिक लग्न होने से मनुष्य की ही जन्म लग्न, निश्चित हो रही है।

चन्द्र-द्वारा शोधन (लग्न-शोधन में तृतीय-प्रकार)

चन्द्र लग्नेश से, विषम भाव में, जन्म-लग्न होना चाहिए।

"चन्द्रलग्नेश्वरो यत्र तत्त्रिकोणमथापि वा।
तत्सप्तमे त्रिलाभे वा सन्देहे लग्ननिर्णय ॥"

यथा—

वृष का चन्द्र है, इसका स्वामी शुक्र हुआ, शुक्र भी वृष मे ही है, और वृष से सप्तम, वृश्चिक-लग्न है, अतएव वृश्चिक-लग्न शुद्ध है।

तत्त्व-द्वारा शोधन (इष्ट तथा लग्न शोधन में चतुर्थ-प्रकार)

पृथ्वी, तेज, आकाश तत्त्व में पुरुष का जन्म होता है तथा जल, वायु तत्त्व में कन्या का जन्म होता है। ३ घटी ४५ पल में सभी तत्त्वों का एक बार भ्रमण हो जाता है। पृथ्वी १५ पल, जल ३० पल, तेज ४५ पल, वायु १ घटी और आकाश १ घटी १५ पल रहता है। रवि, भौम वारों में तेज, बुधवार को भूमि, सोम, शुक्र वारों में जल, गुरुवार को आकाश, शनिवार को वायु तत्त्व का प्रारम्भ होता है। इन्हीं सबों को स्पष्ट करने के लिये तत्त्व-चक्र १४ देखिए।

तत्त्व-चक्र १४

जन्म	तत्त्व-क्रम					स्थिति
वार	१	२	३	४	५	पल
रवि	तेज	जल	भूमि	आ	वायु	६०
सोम	जल	भूमि	आ	वायु	तेज	४५
मंगल	तेज	जल	भूमि	आ	वायु	६०
बुध	भूमि	आ	वायु	तेज	जल	३०
गुरु	आ	वायु	तेज	जल	भूमि	१५
शुक्र	जल	भूमि	आ	वायु	तेज	४५
शनि	वायु	तेज	जल	भूमि	आ	७५

उदाहरण

प्राणपद से शुद्ध इष्ट २९।१८।५३ में से

३।४५ × ७ बार भ्रमण = २६।१५। ० घटाया

शेष ३ ।३ ।५३

सोमवार

जल + भूमि + आकाश + वायु
३० + १५ + ७५ + ६० } = ३। ।०

तेज (४५ पल) तत्त्व में जन्म होने से = ०।३।५३ = पुरुष

पीछे बताया जा चुका है कि ३ घटी ४५ पल में एक बार पाँचों तत्त्वों का भ्रमण हो जाता है। अतएव इष्टकाल में ३।४५ से भाग दिया, तो, लब्धि में (३।४५ × ७ = २६।१५) प्राप्त अङ्क को इष्टकाल म घटाकर, जन्म दिन के क्रम से जल, भूमि, आकाश, वायु तत्त्व भुक्त होकर, शेष तेज तत्त्व में जन्म हुआ। तेज तत्त्व में पुरुष का जन्म होता है अत इष्ट शुद्ध है।

चक्र ४ द्वितीय वर्तिका में ग्रहों के तत्त्व बताये गये हैं। इसी प्रकार चक्र ३ में राशियों के भी तत्त्व बराम किये गये हैं। जिनका यहाँ पुन स्पष्टीकरण किया जाता है।

ग्रह-तत्त्व

सूर्य	शुष्क	तेज
चन्द्र	जल	जल
मंगल	शुष्क	तेज
बुध	जल	भूमि
गुरु	जल	आकाश (तेज)
शुक्र	जल	जल
शनि	शुष्क	वायु

राशि-तत्त्व

मेष	तेज	पादजल
वृष	भूमि	अर्धजल
मिथुन	वायु	निर्जल
कर्क	जल	पूर्णजल
सिंह	तेज	निर्जल
कन्या	भूमि	निर्जल
तुला	वायु	पादजल
वृश्चिक	जल	अर्धजल
धनु	तेज	पादजल
मकर	भूमि	पूर्णजल
कुम्भ	वायु	अर्धजल
मीन	जल	पूर्णजल

ग्रह और राशि के तत्त्व इस प्रकार होते हैं। तेज—पतला चिकना। जल—चिकना मोटा। भूमि—मोटा, रूखा। वायु—पतला रूखा। आकाश—तेज के समान हैं। निर्जल—रूखा। पादजल—कुछ चिकना। अर्धजल—कुछ अधिक चिकना। पूर्णजल—स्पूलता पिल-पिल गिल-गिल ढिल-ढिल। भूमि में ढड़-ढड़। वायु और शुष्क म निर्जलता।

यह जानने के उपरान्त—लग्न राशि, लग्नस्थ ग्रह, लग्नेशस्थ राशि, लग्न और लग्नेश पर दृष्टि डालने वाले ग्रह तथा इसके साथ वाले ग्रह, गुरु की स्थिति सबसे बली ग्रह का तत्त्व जानना चाहिए।

इस प्रकार तत्त्व-ज्ञान करने से, लग्न-शुद्धि निश्चित प्रकार से की जा सकती है। आगे उदाहरण कुण्डली बनायी जायगी, उसी के आधार पर हम यहाँ, जातक का आकार, एक धारा में प्रदर्शित करना चाहते हैं। उदाहरण कुण्डली द्वारा—

लग्न राशि	(वृश्चिक)	जल तत्त्व	(अर्धजल)
लग्नेशस्थ राशि	(कन्या)	भूमि तत्त्व	(निर्जल) (तत्त्व मिश्रण का २३ वाँ योग)
लग्नदृष्ट ग्रह	(गुरु)	आकाश	(जल)
गुरुस्थ राशि	(कर्क)	जल	(पूर्णजल)
ग्रह दृष्ट लग्न	(चं शु)	जल	(जल)
सबसे बली	(गुरु)	आकाश	(जल) (तत्त्व-मिश्रण का २२ वाँ योग)

इतनी बातों के इकट्ठा करने पर पता चलता है कि मोटा और चिकना मनुष्य होगा। सबसे बली ग्रह गुरु है अत भव्यता भी रहेगी। गम्भीर होगा। इत्यादि। वास्तव में यह मनुष्य, ऐसी ही आकृति का है भी। होना ही चाहिए।

तत्त्व-मिश्रण

(१) लग्न में जलराशि, जलग्रह की स्थिति से मोटापन।
(२) लग्न और लग्नेश, जलराशि मे होने मे अति मोटापन।
(३) लग्न अग्निराशि, अग्निग्रह की स्थिति से बली, पुष्ट, किन्तु मोटेपन से रहित।
(४) लग्न, तेज या वायु हो, लग्नेश भूमि मे हो तो हड्डी पुष्ट, साधारण दृढ़-देह।
(५) लग्न, अग्नि या वायु हो, तो ठोस शरीर (पिल-पिल नहीं)।
(६) लग्न, अग्नि या वायु हो, लग्नेश जल में हो तो साधारण मोटापन।
(७) लग्न, वायु मे, वायुग्रह भी हो, साथ में यदि शनि हो तो, दुबला, किन्तु तीक्ष्ण बुद्धि युक्त।
(८) लग्न, भूमि में, भूमिग्रह भी हो तो, नाटा तथा दृढ़-देह।
(९) लग्न, भूमि में, लग्नेश भूमि में होने से दृढ़ हड्डी तथा स्थूल।
(१०) लग्न, भूमि मे, लग्नेश जल में होने से दृढ हड्डी, शरीर साधारण स्थूल।
(११) लग्न, भूमि में, लग्नेश अग्नि या वायु में होने से आन्तरिक बली, दृढ हड्डी, कृश शरीर।
(१२) लग्न में शुष्क ग्रह होने से कृश, दुर्बल।
(१३) लग्न में निर्जल राशि होने से कृश।
(१४) लग्नेश, निर्जल में या शुष्क ग्रह के साथ हो तो, कृश।
(१५) लग्नेश, ६।८।१२ वें भाव मे हो तो दुर्बल।
(१६) लग्नेश का नवांशेश, शुष्कग्रह के साथ हो तो दुर्बल।
(१७) लग्न में निर्जल राशि, पापग्रह युक्त हो तो दुर्बल।
(१८) लग्न, जल में, शुभग्रह युक्त हो तो मोटापन।
(१९) लग्नेश जलग्रह हो, बली हो, शुभग्रह के साथ हो तो पुष्ट शरीर।
(२०) लग्नेश, जलराशि में, शुभ या जलग्रह के साथ हो या लग्नेश पर जलग्रह की दृष्टि हो, पुष्ट शरीर।
(२१) लग्नेश का नवांशेश जलराशि में, तथा लग्न में शुभराशि हो तो मोटापन।
(२२) लग्न में गुरु हो, या लग्न पर जलस्थ गुरु की दृष्टि हो या लग्न पर शुभग्रह की दृष्टि या संयोग हो तो असाधारण मोटापन।
(२३) लग्नस्थ कन्या के बुध मे असाधारण स्थूल-काय।

(२४) समेरा शुष्क हो, शुष्क ग्रह के साथ हो, शुष्कग्रह की राशि में हो, शुष्कराशि में हो, अग्नि या वायु राशि में हो तो दुर्बल और रूखापन।

(२५) सूर्य में तेजस्विता, चन्द्र में कोमलता, भौम में दृढ़ता, बुध में चतुरता, गुरु में गम्भीरता (भव्यता), शुक्र में चंचलता और शनि में रूक्षता होती है।

नवांश–द्वारा शोधन (लग्न–शोधन में पंचम–प्रकार)

लग्न के नवांशेश अथवा सबसे बली ग्रह का प्रभाव, मुखाकृति और गठन पर विशेष होता है।

(१) सूर्य —मोटापन, चिपटी आकृति।

(२) चन्द्र —लम्बा शरीर, सुन्दर नेत्र, कोई श्याम वर्ण, कुछ घुँघराले बाल।

(३) भौम —कुछ नाटा, नेत्र लाल या पीले, दृढ़ शरीर मजबूत बनावट।

(४) बुध —मध्यम कद, देखने में आनन्द, नेत्र कोण लाल, नसें निकली हुई।

(५) गुरु —गम्भीर, नेत्र कुछ पीले, गहरी वाणी, कद ऊँचा-चौड़ा, मध्यम उन्नत।

(६) शुक्र —प्रलम्ब भुजा, मुख गोल स्थूल, विलासी चंचल नेत्र, मोटा पंजर।

(७) शनि —धसी आँख दुबला, लम्बा, नस-नस स्थूल और कड़े, कटि से नीचे छरा।

कभी-कभी लग्नस्थ ग्रह, या लग्न पर दृष्टि वाले ग्रह का प्रभाव देखने को भी मिलता है। किसी उच्च या बली ग्रह का भी प्रभाव पड़ता है।

वर्ण

जन्म समय में शरीर की स्थूलता आदि तथा वर्ण भी होता है, उसमें किसी-किसी का परिवर्तन हो जाता है। इसका कारण दशायें, देश, स्थिति है। प्राय: १८ वर्ष में कन्या और २४ वर्ष में पुरुष पूर्णता को प्राप्त करता है। आयुर्वेद में लिखा है कि १८–२४ वर्ष में स्त्री और पुरुष— "आकृति समाप्मानम्" अर्थात् शरीर की लम्बाई-चौड़ाई स्थिर हो जाती है।

चन्द्र के प्रभाव से कंजी आँख होती है, वर्फीले प्रान्त में चन्द्र का प्रभाव विशेष होता है। शनि के प्रभाव से श्यामता आती है। अफ्रीका देश इसका उदाहरण है। सूर्य के प्रभाव से गर्म देश और पसिष्ठ पुरुष होते हैं। बुध के प्रभाव से व्यापार और कूटनीति की वृद्धि होती है। भौम के प्रभाव से भिड़ जाने वाले लोग होते हैं। शुक्र के प्रभाव से कामुकता एवं गुरु के प्रभाव से सदाचारी, विद्वान और भव्य लोग होते हैं।

ग्रहों के वर्ण, लग्न में स्थिति या दृष्टि द्वारा बनते हैं। इसमें देश विशेष का अवश्य ध्यान रखना चाहिए। लग्न के अति निकटवर्ती ग्रह भी वर्ण बनाता है।

चन्द्र के नवांशेश द्वारा वर्ण का रूप विशेष होता है।

चन्द्र नवांशेश		वर्ण	लग्नस्थ ग्रह द्वारा
(१) सूर्य	—	श्यामवर्ण (गुलाबी)	ताम्र
(२) चन्द्र	—	गौर वर्ण (मक्खन)	गौर
(३) भौम	—	रक्त-गौर (ताम्र)	रक्त-गौर
(४) बुध	—	श्याम (हरा)	स्वच्छ श्याम
(५) गुरु	—	तप्त स्वर्णाभ (पीत भव्य)	तप्त-काञ्चन
(६) शुक्र	—	श्याम (चित्ताकर्षक सफेद)	चित्ताकर्षक श्याम
(७) शनि	—	कृष्ण रूप	कृष्ण

जब लग्न–स्पष्ट के समीप कोई ग्रह हो, तब उस ग्रह तथा चन्द्र–नवांशेश का मिश्रित प्रभाव पड़ता है।

इस प्रकार परिश्रम करके गणित और फलित द्वारा इष्ट तथा लग्न का निश्चय करना चाहिए। मेरे विचार से यही पाँच प्रकार का शोधन करना उचित है। जब घण्टों के अन्तर से जन्म–समय बताया गया हो, तो उस समय के लिए ग्यारह प्रकार के अन्य शोधन भी आवश्यक हैं, जिन्हें आगे लिखा जा रहा है।

मान्दि–साधन (इष्ट-शोधन में षष्ठ-प्रकार)

किसी का मत है कि, गुलिक और मान्दि नामक एक ही छाया–ग्रह है। परन्तु, मान्दि स्पष्ट करने की विधि, गुलिक से भिन्न प्रकार की बतायी है, अत भिन्नता रखते हैं। सूर्य की प्रधान दो सन्तति—शनि और यम हैं। शनि से गुलिक की उत्पत्ति एवं यम से मान्दि की उत्पत्ति हुई है, अर्थात् सूर्य के पौत्र गुलिक और मान्दि हैं। मान्दि को प्राणहर या अतिपापी भी कहते है। किन्तु, ये दोनों ही—राहु–केतु की भाँति—छाया-ग्रह (घनत्व–रहित) ही हैं।

मान्दि–ध्रुवाक

वार	रवि	सोम	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	वार
दिन	२६	२२	१८	१४	१०	६	२	घटी
रात	१०	६	२	२६	२२	१८	१४	घटी

यदि दिन में जन्म हो तो जन्म दिन के दिनमान में, जन्मवार के दिन वाले ध्रुवाक का गुणा करके ३० से भाग दे, लब्धि में मान्दि का (सूर्योदय से) इष्टकाल होता है।

यदि रात मे जन्म हो तो रात्रिमान मे, जन्मवार के रात वाले ध्रुवाक का गुणाकर, ३० से भाग दे, लब्धि में दिनमान जोड़ दे, तो मान्दि का सूर्योदय से इष्टकाल होता है। इस इष्ट–द्वारा लग्न बनाने से मान्दि-लग्न होती है। यथा—

दिनमान $\frac{३३।२६।४६ \times ११ \text{ (सोम ध्रुवांक २२)}}{१५ \text{ (३०)}} = \frac{३६८।२७।२६}{१५} = $ २४।३३।५० मान्दीष्ट

तात्कालिक सायनार्क २।२२।५७ द्वारा २३ अक्षांश की सारणी का अङ्क = ११।५६। ०

निरयण मान्दि लग्न ६।१३।५१ = योगाक = ३६।३२।५०

गुलिक इष्टकाल २५।७।२० (पृष्ठ १२१) मान्दीष्ट २४।३३।५० है। यथा—मान्दीष्ट में २२ गुणित और गुलिक में लगभग २३ गुणित (सोमवार) रखा गया है। यथा—

	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	मुहूर्त
	२	४	६	८	१०	१२	१४	१६	१८	२०	२२	२४	२६	२८	३०	३२	घटी
(गुलिक)		१		२		३		४		५		६		७		८	खण्ड

गुलिक में १६ मुहूर्त तथा मान्दि मे १५ मुहूर्त, दिनमान के मानकर, दोनों को विभिन्न प्रकार से स्पष्ट किया गया है। अत पूर्वोक्त सामञ्जस्य उदाहरण में २४ गुणित न रखकर, यदि मध्य का अर्थात् २३ (२२–२४) का गुणा करें तो, मान्दीष्ट के लगभग समान गुलिकेष्ट होगा। यथा—

$\frac{३३।२६।४६ \times २३}{३०} = \frac{७७०।२४।३८}{३०} = $ २५।४०।४६ (गुलिकेष्ट २५।७।२० के लगभग)

इसी भिन्नता से गुलिक और मान्दि, दो विभिन्न ग्रह हैं। शनि और गुलिक ज्येष्ठ अपत्य तथा यम और मान्दि कनिष्ठ अपत्य हैं। गुलिक-लग्न ६।१५।५२ और मान्दि-लग्न ६।१३।५१ में २ अंश का अन्तर है।

दण्ड चक्र १६

	दिन दण्डेश					रात्रि दण्डेश			
र्धके ण्ड	१	२	३	४	यामार्ध के खण्ड	१	२	३	४
र्य	सू	रा	बु	चं	सूर्य	सू.	शु.	बु.	च.
न्द्र	चं.	सू	रा.	बु	चन्द्र	चं	श.	गु	मं
ौम	म	सू	रा.	बु	भौम	म	सू	शु	बु
ुध	बु	च	सू	रा	बुध	बु	च	श	गु
गुरु	गु	चं	सू	रा.	गुरु	गु.	मं	सू	शु.
शुक्र	शु.	म	सू	रा	शुक	शु	बु	च	श
शनि	श.	मं	सू	रा	शनि	श	गु	मं.	सू.

उदाहरण

दिनमान का अष्टमांश ४।११।१३।१५ यामार्ध

इष्टकाल २६।१८।५३ में से

४।११।१३।१५ × ७ गत २६।१८।३३ घटाया

सोम का ८वाँ यामार्धेश ० ।० ।२०

चन्द्र (यामार्धेश) यामार्ध का चतुर्थांश १।२।४६ के पूर्व ही इष्ट होने से चन्द्र यामार्धेश का प्रथम (चन्द्र) ही दण्डेश भी हुआ। यह प्रथम प्रकार का दण्डेश होता है। अब आगे लिखे शोधन प्रकार, स्थूल ढंग के हैं।

दण्डेश-साधन (इष्ट-शोधन में अष्टम-प्रकार)

जन्म नक्षत्र की संख्या को, उसी संख्या से गुणाकर—(यदि दिन में जन्म हो, तो ८ से और यदि रात्रि में जन्म हो तो ७ से)—भाग दे, शेष १ में सूर्य, २ में चन्द्र, ३ मे भौम, ४ में बुध, ५ में गुरु, ६ में शुक्र, ७ मे शनि, शून्य से दिन में राहु दण्डेश होता है।

जब सप्तम प्रकार के समान, अष्टम प्रकार से भी एक ही दण्डेश हो तो, इष्ट-काल शुद्ध माना जाता है, अन्यथा इष्ट-काल को न्यूनाधिक करके समान करना चाहिए। परन्तु कभी-कभी समान न आकर एक आगे या एक पीछे वाला (विभिन्न) दण्डेश आ जाता है, तथापि न्यूनाधिक न करके, वही इष्ट-काल शुद्ध रहता है। जब दो आगे-पीछे हो, तब इष्ट दण्डादि मे न्यूनाधिकता करना आवश्यक रहेगा। न्यूनाधिकता भी इतनी करना चाहिए, जितने मे पीछे के सभी शोधन लागू हो सकें, अन्यथा व्यर्थ है। क्योंकि यह दण्डेश-साधन, स्थूल-किया से है। यथा—

जन्म-नक्षत्र कृत्तिका = ३ × ३ = ९ (दिन का जन्म समय)। ९ ÷ ८ = शे १ दण्डेश सूर्य हुआ, कि जो चन्द्र से एक पीछे है। क्योंकि सप्तम प्रकार से दण्डेश 'चन्द्र' ही हुआ है। एक आगे-पीछे होने पर भी इष्ट-काल मे न्यूनाधिकता नहीं की गयी।

दण्डेश-साधन (इष्ट-शोधन में नवम-प्रकार)

जन्म नक्षत्र को दूना कर, और मास की संख्या जोड़ दे, १३ क्षेपक भी जोडकर ४ से भाग दे, तो शेष १ मे प्रथम, २ में द्वितीय, ३ मे तृतीय और शून्य में चतुर्थ यामार्धेश का दण्डेश होता है। कभी-कभी, इससे भी, एक अन्तर, आगे-पीछे का हो जा सकता है। यथा—

जन्मर्क्ष कृत्तिका = ३ × २ + ३ रा (सौर-मास) + १३ क्षेपक ÷ ४ = शेष २ होने से यामार्धेश (चन्द्र) का द्वितीय दण्डेश (सूर्य) ही हुआ। अत इष्ट-काल २६।१८।५३ शुद्ध हैं। क्योंकि एक अन्तर में भी शुद्ध रहता है।

दण्डेश-द्वारा इष्ट-शोधन की तीन विधियाँ (सप्तम-अष्टम-नवम-प्रकार की) बतायी गयी हैं। जिनमें सप्तम-प्रकार से भिन्न, किन्तु अष्टम और नवम प्रकार से एक समान ही दण्डेश आ रहा है।

एक मुहूर्त, दो घटी का होता है। एक अहोरात्र में ३० मुहूर्त होते हैं। गुलिक में अहोरात्र के १६ भाग कर एक-एक खण्ड बनाया है; और मान्दि को भी २-२ घटी का एक-एक खण्ड बनाया है। गुलिक और मान्दि में इतना ही अन्तर है कि गुलिक-स्पष्ट, खण्डान्त द्वारा तथा मान्दि-स्पष्ट खण्ड-मध्य द्वारा किया जाता है। गुलिक में अष्टमांश लिया है। मान्दि में पंचदशांश लिया है। देखिए रविवार का दिन-ध्रुवांक। गुलिक के अष्टमांश में ७ वाँ खण्ड शनि का होने से ध्रुवांक ७×४=२८ घटी (स्थूलता से) हुई। मान्दि के २६ घटी अर्थात् १३ वें मुहूर्त का अन्त। सारांश यह कि गुलिक में २८ का गुणा, तथा मान्दि में २६ का गुणा। मान्दि में ध्रुवांक स्थिर कर दिया गया है। किन्तु, गुलिक में दिनमान का क्षय-वृद्धि सम्मत हुए खण्ड बनाया है। अतएव गुलिक साधन में सूक्ष्मता है। गुलिक के समान इससे भी लग्न-शोधन करना चाहिए।

दण्डेश-साधन (इष्ट-शोधन में सप्तम-प्रकार)

एक अहोरात्र के १६ भाग अर्थात् दिन के ८ भाग तथा रात्रि के ८ भाग होने से एक भाग यामार्ध होता है। अर्ध-प्रहर तथा यामार्ध के अर्थ तो एक ही हैं, परन्तु अर्ध-प्रहर की क्षम शुभ के खण्ड पर होती है। शुभखण्ड के समान ही अर्ध-प्रहर का रूप बनता है। किन्तु यामार्ध में अपने हो जन्म के इष्टकाल पर, किस ग्रह का आधिपत्य है—यह जानना पड़ता है। दण्ड के अर्थ घटी हैं, किन्तु एक अहोरात्र में ६४ दण्डेश होते हैं। दिनमान में ३२ एवं रात्रिमान में ३२। सात ग्रहों के साथ राहु को भी गणना करके आठ ग्रहों को ८-८ दण्ड का अधिपतित्व सौंपा गया है। रात्रि तथा दिन एक समान न होने से, इनका दण्ड अर्थात् घटी का प्रमाण, ६ पल का न होकर कुछ घटता-बढ़ता रहता है।

यामार्धेश

बताया जा चुका है, कि एक दिन में आठ यामार्धेश होते हैं और एक यामार्ध में ४ दण्डेश होते हैं। प्रत्येक दिन में अपने ही वारेश से प्रारम्भ होकर षड्क्रमण (होरा-चक्र की भाँति) से यामार्धेश होते हैं। प्रत्येक को लिखने में उतना स्पष्ट न होगा जितना कि, आगे लिखे चक्र द्वारा यामार्धेश का ज्ञान शीघ्र होगा।

दिनमान या रात्रिमान (जब जन्म हो) के अष्टमांश में एक-एक यामार्धेश होता है। अपने इष्टकाल पर कौन यामार्धेश है, यही जानना है। अपने यामार्ध का चतुर्थांश एक-एक दण्ड होता है, तथा अपने यामार्धेश के किस दण्ड में अपना इष्टकाल है—यह जानना है, जो कि आगे के चक्रों से स्पष्ट होगा।

यामार्ध-चक्र १५

दिन यामार्धेश									रात्रि यामार्धेश								
वार का खण्ड	१	२	३	४	५	६	७	८	वार का खण्ड	१	२	३	४	५	६	७	८
रवि	सू	शु	बु	चं	श	गु.	मं	सू.	रवि	सू.	गु	चं	शु	मं	श.	बु	सू.
सोम	चं	श	गु	मं	सू.	शु	बु	चं	सोम	चं	शु	मं	श	बु	सू.	गु	चं.
मंगल	मं	सू.	शु	बु	चं	श	गु.	मं	मंगल	मं	श	बु	सू.	गु.	चं	शु	मं.
बुध	बु	चं	श	गु	मं	सू.	शु	बु	बुध	बु	सू.	गु	चं	शु	मं	श	बु.
गुरु	गु.	मं	सू.	शु	बु	चं	श	गु	गुरु	गु	चं	शु	मं	श.	बु	सू.	गु.
शुक्र	शु	बु	चं	श.	गु	मं	सू.	शु	शुक्र	शु	मं	श.	बु	सू.	गु	चं	शु.
शनि	श.	गु	मं	सू.	शु	बु	चं	श.	शनि	श	बु	सू.	गु.	चं	शु	मं	श.

दण्ड चक्र १६

दिन दण्डेश					रात्रि दण्डेश				
यामार्ध के दण्ड	१	२	३	४	यामार्ध के दण्ड	१	२	३	४
सूर्य	सू.	रा	बु	च.	सूर्य	सू	शु	बु	चं
चन्द्र	चं	सू	रा.	बु	चन्द्र	चं	श	गु	मं
भौम	मं	सू	रा.	बु	भौम	म	सू	शु	बु
बुध	बु	च	सू	रा.	बुध	बु	च	श	गु
गुरु	गु	चं	सू	रा	गुरु	गु	मं.	सू	शु.
शुक्र	शु.	मं	सू	रा	शुक्र	शु	बु	च	श
शनि	श	मं	सू	रा	शनि	श	गु	म	सू

उदाहरण

दिनमान का अष्टमांश ४।११।१३।१५ यामार्ध

इष्टकाल २६।१८।५३ में से

४।११।१३।१५ × ७ गत २६।१८।३३ घटाया

सोम. का ८वाँ यामार्धेश ० ।० ।२०

चन्द्र (यामार्धेश) यामार्ध का चतुर्थांश १।२।४९ के पूर्व ही इष्ट होने से चन्द्र यामार्धेश का प्रथम (चन्द्र) ही दण्डेश भी हुआ। यह प्रथम प्रकार का दण्डेश होता है। अब आगे लिखे शोधन प्रकार, स्थूल ढंग के हैं।

दण्डेश–साधन (इष्ट-शोधन में अष्टम-प्रकार)

जन्म नक्षत्र की सख्या को, उसी सख्या से गुणाकर—(यदि दिन मे जन्म हो, तो ८ से और यदि रात्रि में जन्म हो तो ७ से)—भाग दे, शेष १ में सूर्य, २ में चन्द्र, ३ में भौम, ४ मे बुध, ५ मे गुरु, ६ मे शुक्र, ७ में शनि, शून्य से दिन में राहु दण्डेश होता है।

जब सप्तम प्रकार के समान, अष्टम प्रकार से भी एक ही दण्डेश हो तो, इष्ट-काल शुद्ध माना जाता है, अन्यथा इष्ट-काल को न्यूनाधिक करके समान करना चाहिए। परन्तु कभी–कभी समान न आकर एक आगे या एक पीछे वाला (विभिन्न) दण्डेश आ जाता है, तथापि न्यूनाधिक न करके, वही इष्ट-काल शुद्ध रहता है। जब दो आगे–पीछे हो, तब इष्ट दण्डादि में न्यूनाधिकता करना आवश्यक रहेगा। न्यूनाधिकता भी इतनी करना चाहिए, जितने मे पीछे के सभी शोधन लागू हो सकें, अन्यथा व्यर्थ है। क्योंकि यह दण्डेश-साधन, स्थूल-क्रिया से है। यथा—

जन्म-नक्षत्र कृत्तिका = ३ × ३ = ९ (दिन का जन्म समय)। ९ ÷ ८ = शे १ दण्डेश सूर्य हुआ, कि जो चन्द्र से एक पीछे है। क्योंकि सप्तम प्रकार मे दण्डेश 'चन्द्र' ही हुआ है। एक आगे–पीछे होने पर भी इष्ट-काल में न्यूनाधिकता नहीं की गयी।

दण्डेश–साधन (इष्ट–शोधन में नवम–प्रकार)

जन्म नक्षत्र को दूना कर, सौर मास की सख्या जोड़ दे, १३ क्षेपक भी जोडकर ४ से भाग दे, तो शेष १ में प्रथम, २ में द्वितीय, ३ में तृतीय और शून्य में चतुर्थ यामार्धेश का दण्डेश होता है। कभी–कभी, इससे भी, एक अन्तर, आगे–पीछे का हो जा सकता है। यथा—

जन्मर्क्ष कृत्तिका = ३ × २ + २ रा (सौर-मास) + १३ क्षेपक ÷ ४ = शेष २ होने से यामार्धेश (चन्द्र) का द्वितीय दण्डेश (सूर्य) ही हुआ। अत इष्ट-काल २६।१८।५३ शुद्ध है। क्योंकि एक अन्तर में भी शुद्ध रहता है।

दण्डेश-द्वारा इष्ट-शोधन की तीन विधियाँ (सप्तम-अष्टम-नवम-प्रकार की) बतायी गयी हैं। जिनमें सप्तम-प्रकार से भिन्न, किन्तु अष्टम और नवम प्रकार से एक समान ही दण्डेश आ रहा है।

यह नियम भी प्राय ठीक न होगा। क्योंकि २ घटी का ही स्थूलता से एक नक्षत्र माना गया है। कुण्डलीदर्पण के १० वें प्रकार में ३० पल जोडने से तथा ११ वें प्रकार में ६० पल घटाने से नियम ठीक हो पाता है। इसलिए अन्धाधुन्ध न्यूनाधिकता करना उचित नहीं।

सिद्धान्त–नियम (एकादश–प्रकार में)

दिनमान में दो का गुणाकर २७ से भाग दे, तो लब्धि में एक नक्षत्र की गति के घटी–पल प्राप्त होंगे। फिर इष्टकाल पर देखिए अर्थात् इष्टकाल मे एक नक्षत्र–गति से भाग दीजिए, लब्धि मे गत नक्षत्र-सख्या प्राप्त होगी। यदि शेष बचे तो, लब्धि में एक जोड दे, अन्यथा नहीं। फिर लब्धि में सूर्यर्क्ष जोड दे, इसी योग सख्या के नक्षत्र राशि की जन्म लग्न होती है सर्वदा ही। क्योंकि सूर्योदय के समय से (सूर्यर्क्ष विन्दु से) १३½ नक्षत्र मात्र पूर्ण दिनमान में, तथा १३½ नक्षत्र मात्र पूर्ण रात्रिमान में हो सकते हैं। दिन और रात मे एक नक्षत्र की गति भी विभिन्न–प्रकार की होगी। अत. जब रात्रि का इष्टकाल हो तो, इष्टकाल में से दिनमान को घटावे, शेष रात्रीष्टकाल होता है। ६० घटी मे से दिनमान घटाने पर रात्रिमान होता है। रात्रिमान मे दो का गुणाकर २७ से भाग दे, तो लब्धि में एक नक्षत्र की गति प्राप्त होगी। नक्षत्र गति से रात्रीष्टकाल से भाग दे, तो लब्धि मे रात्रि के गत नक्षत्र होते हैं। यदि शेष बचे तो, लब्धि में एक और जोड ले। इस योगफल मे सूर्यर्क्ष और १३½ नक्षत्र जोडे। इसी योगफल वाली राशि (नक्षत्र की राशि) ही रात्रि मे जन्म लग्न होती है। *यह नियम सर्वदा ठीक उत्तर देगा। यथा—*

दिनमान $\frac{३३।२६।४६ \times २}{२७} = \frac{६६।५८।३२}{२७}$ = २।२८।५२ = नक्षत्र गति

इष्टकाल २६।१८।५३
नक्षत्रगति २।२८।५२ × ११ लब्धि = २७।१७।३२
शेप २। १।२१ के कारण ११ लब्धि मे एक जोडकर १२ माना
सशेप लब्धि = १२। ०। ० में
सूर्य २।०।१६ × २६⁄४ = सूर्यर्क्ष = ४।३०।४३ जोडा
१६।३०।४३ = १७ वाॅ नक्षत्र अनुराधा = वृश्चिक लग्न

अथवा

लब्धि १२ + ५ सूर्यर्क्ष (मृगशिरार्ध वृषराशि) = १७ वाॅ नक्षत्र = अनुराधा नक्षत्र

अत्र आप देखिए, एकादश प्रकार तथा सिद्धान्त–नियम मे क्या अन्तर है। सिद्धान्त नियम के द्वारा ठीक जन्म–लग्न वृश्चिक आ जाती है। इस सिद्धान्त–नियम से सर्वदा ठीक लग्न मिलती रहेगी।

लग्न–शोधन (द्वादश–प्रकार)

इष्टकालो हत षड्भि सूर्यांशेन समन्वित। त्रिंशद्भक्त सैकलब्धितुल्य लग्न रवे. परम्॥

—कुण्डली दर्पण

इष्टकाल में ६ का गुणाकर सूर्य के (राशि छोड़कर) अश मात्र जोडकर ३० से भाग दे, यदि शेष रहे तो, लब्धि में एक और जोड दे, अन्यथा नहीं। फिर सूर्य राशि से लब्धि संख्या तक गिने, तो लग्न की राशि प्राप्त होती है। यथा—

इष्ट २६।१८।५३ × ६ = १७५।५३।१८ में
सूर्य (२।०।१६) के अंश मात्र = ० जोड़ा
= १७५।५३।१८ में ३० से भाग दिया तो,
लब्धि में = ५ और शेष २५।५३।१८ रहे।

शेष होने से लब्धि ५ को ६ माना अर्थात् लब्धि में एक जोड़ा। सूर्य (२।०।१६) मिथुन में है, अतः ज्ञात हुआ कि, मिथुन से ६ ठी जन्म-लग्न होगी। मिथुन से ६ ठो राशि, वृश्चिक लग्न ही इस जातक की है। यह नियम प्रायः ठीक मिलता रहेगा।

स्त्री या पुरुष (लग्न-शोधन, त्रयोदश-प्रकार)

अमुक लग्न की कुण्डली, स्त्री की है या पुरुष की? ऐसा जानने के लिए अपने जन्मदिन की घटी (ध्रुवांक) पर लग्न बनाइए, तो दिन में पुरुषलग्न और रात्रि में स्त्रीलग्न होती है, इसके आगे-पीछे विपरीत की लग्नें होती हैं। रात्रि का नियम तो लिखा नहीं पाया जाता परन्तु है इसका नियम, मान्दि-साधन से विपरीत ढंग का।

घटी-ध्रुवांक

वार	रवि	सोम	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	वार
दिन	२	६	१०	१४	१८	२२	२६	घटी
रात	१	६	२	२६	२२	१८	१४	घटी

यथा—सोमवार को दिन में वृश्चिक लग्न पर सूर्य २।०।१६ में पुरुष का जन्म है और बुधवार को रात्रि में कुम्भ लग्न पर सूर्य ३।३।२ में पुरुष का जन्म है, तो बताओ क्या उनकी जन्मलग्न ठीक है? हाँ ठीक हैं, क्योंकि सोमवार के दिन में ६ घटी पर सूर्य २।०।१६ के द्वारा कर्क आती है और बुधवार को रात्रि में २६ घटी पर सूर्य ३।३।२ के द्वारा वृश्चिक लग्न आती है। देखिए—

सोमवार दिन की लग्नें

सूर्योदय से						सूर्यास्त	
मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	(दिनविभाग)
स्त्री	पुरुष	स्त्री	पुरुष	स्त्री	पुरुष	स्त्री	

बुधवार की लग्नें

सूर्योदय से						सूर्यास्त	
कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	
स्त्री	पुरुष	स्त्री	पुरुष	स्त्री	पुरुष	स्त्री	(दिनविभाग)
मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	(रात्रिविभाग)
रात्रि प्रारम्भ						रात्रि अन्त	

यदि बुधवार के दिन के ध्रुवांक १४ घटी पर सूर्य ३।३।२ के द्वारा लग्न बनाया तो, कन्यालग्न आती है, जो कि रात्रि के कारण स्त्रीलग्न मानी जाती है। ध्यान रहे कि, जब पुरुष के जन्म में समराशि (२।४।६।८।१०।१२) हो आ जावे तब सम राशि में पुरुषजन्म एवं विषमराशि में स्त्रीजन्म दिन में समझिए। रात्रि में इसका विपरीत जानना चाहिए।

पुत्र या पुत्री (चतुर्दश-प्रकार)

यह तीन प्रकार से जाना जाता है। कुण्डली द्वारा गणित कीजिए।

(१) जन्म-पत्र में से सूर्य लग्न मंगल और राहु की चारों राशियाँ जोड़कर, तीन से भाग दे, शेष दो में पुत्र तथा शेष एक या शून्य में पुत्री की कुण्डली होती है।

(२) पूर्वोक्त नियम में मंगल को त्याग कर सूर्य राहु और लग्न की राशियाँ जोड़ कर तीन से भाग दे शेष दो में पुत्री अन्यथा शेष एक या शून्य में पुत्र की कुण्डली होती है।

(३) शनि और राहु विषम राशिस्थ हों अथवा बलिष्ठ बुध दशवें या ग्यारहवें हो अथवा बलिष्ठ सूर्य और [illegible] राशि में हो तो, पुत्र की; अन्यथा पुत्री की पत्रिका जानिए। यथा—

उदाहरण कुण्डली द्वारा

(१) सूर्य+लग्न+राहु+मंगल=३ + ८ + ७ + ६=२४÷३=शेष शून्य होने से 'पुत्री'
(२) ३+८+७=१८÷३=शेष शून्य होने से 'पुत्र'
(३) शनि (५) राहु (७) सूर्य (३) में (विषम में) 'पुत्र'

सारांश यह है कि, पुत्र की ही पत्रिका होना चाहिए, और है भी ऐसा ही।

जन्म-स्थान का निश्चय (पंचदश-प्रकार)

बताया गया है कि, मेष, वृष आदि राशियों की दिशा में सूर्यादि रहने से जन्म-स्थान के चारों ओर के चिह्न, यदि मिलते हों तो, लग्न ठीक है। यह अति साधारण (अति स्थूल) नियम है।

राशि-दिशा	ग्रह	चिह्न
१-५-६=पूर्व	सूर्य	= कोई ऊँचा वृक्ष या पवित्र वृक्ष।
२-६-१०=दक्षिण	चन्द्र	= जलाशय या दूधदार वृक्ष।
३-७-११=पश्चिम	भौम	= मन्दिर, मसजिद, जला-घर, कण्टक-वृक्ष।
४-८-१२=उत्तर	बुध	= खण्डहर या बाल-क्रीडा-स्थल।
	गुरु	= देव-स्थान, द्विजघर, वट या पिप्पल का वृक्ष।
	शुक्र	= कुटुम्बी का घर या घर का मुख्य-द्वार।
	शनि	= अथवना घर, या म्लेच्छ-वास।
	राहु	= मार्ग या नीच जाति का घर।
	केतु	= पगदण्डी या नीच जाति का घर।

उदाहरण—

सूर्य ३ (पश्चिम में)—नीम वृक्ष
चन्द्र २ (दक्षिण में)—तालाब (पक्के घाटों से बँधा)
मंगल ६ (दक्षिण में)—काली जी का मन्दिर
बुध ३ (पश्चिम में)— ×
गुरु ४ (उत्तर में)—पीपल वृक्ष है।

शुक्र २ (दक्षिण में)—मुख्य द्वार है।
शनि ५ (पूर्व में)—म्लेच्छवास।
राहु ७ (पश्चिम में)—मार्ग, स्वर्णकार का मकान
केतु १ (पूर्व में)— ×
तथ्यत कुल इतने ही चिह्न मिल पा रहे हैं।

प्रसूतिका-विचार (षोडश-प्रकार)

इसके द्वारा भी लग्न-निश्चय का प्रयोग होता है प्रायः जन्म-समय के समीप समय में ही इससे विचार हो सकेगा। कालान्तर में विस्मृति हो जाती है। चक्र १८ के द्वारा जिस लग्न के लक्षण मिलें, वही लग्न समझें। यह भी लग्न-सन्देह में ही विचार करें, सर्वदा नहीं। पहिले लग्न बनाइये, यदि लग्न का आदि-अन्त भाग हो, सन्धि में हो, लग्न-सन्देह हो, तब इसके द्वारा लक्षण मिलाइये, जिसके अधिक लक्षण मिलें, वही लग्न निश्चित करें, सर्वदा प्रयोग करना व्यर्थ है। ग्राम में, जहाँ [illegible] हो, वहाँ इसका प्रयोग हो सकता है।

प्रसूतिका-चक्र १८ (पाठशा-प्रकार का)

जन्मलग्न	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
बालक शिर	पूर्व या पश्चिम	दक्षिण	पश्चिम	उत्तर	पूर्व या पश्चिम	दक्षिण	पूर्व या पश्चिम	उत्तर या दक्षिण	पूर्व या पश्चिम	दक्षिण	पश्चिम	उत्तर
सूति-गृह	पूर्व	पूर्व या पश्चिम	उत्तर या आग्नेय	पूर्व या दक्षिण	दक्षिण	उत्तर या नैऋत्य	पूर्व या पश्चिम	पूर्व या पश्चिम	उत्तर या वायव्य	उत्तर या दक्षिण	पूर्व या पश्चिम	उत्तर या ईशान
सूति-द्वार	पूर्व	पूर्व दक्षि.	पश्चिम	उत्तर	पूर्व	दक्षिण	पश्चिम	उत्तर	पूर्व	दक्षिण	पश्चिम	उत्तर
बालक मुख	अधः	अधः	ऊर्ध्व	अधः	ऊर्ध्व	ऊर्ध्व	ऊर्ध्व	ऊर्ध्व	अधः	अधः	ऊर्ध्व	तिर्यक्
दीपक अँधेरे में	सम्मुख	उठाया	सम्मुख	उठाया	उठाया	उठाया	स्थिर	स्थिर	उठाया	उठाया	स्थिर	उठाया
स्थान	भूमि	भूमि	खट	भूमि	भूमि	खट	भूमि	भूमि	उत्तम या नवीन	पुरानी भूमि	भूमि	खट
प्रसव	पैर से कष्ट से	पैर से सुख से	शिर से सुख से	पैर से कष्ट से	शिर से सुख से	शिर से सुख से	शिर से कष्ट से	शिर से कष्ट से	पैर से सुख से	पैर से सुख से	शिर से कष्ट से	हाथ से सुख से
सूतिका शिर	पूर्व	पश्चिम	उत्तर	पूर्व	दक्षिण	उत्तर	पूर्व	पूर्व	उत्तर	दक्षिण	पूर्व	उत्तर
पिता	बाहर	घर	घर	बाहर	घर	बाहर	बाहर	घर	घर	बाहर	भ्रमण	घर
नाल	फँसा	फँसा	छूटा	छूटा	फँसा	छूटा	छूटा	छूटा	फँसा	छूटा	फँसा	फँसा
दाई	माया	साधारण	नीच	सज्जन	साधारण	साधारण	साधारण	नीच दुष्ट	सज्जन	नीच	नीच	उत्तम
सूतिका वस्त्र	लाल भूषण युता	सफेद	सफेद गुलाबी पुराना फटा	नवीन काला सफेद	मलिन लाल पीला स्वर्णयुता	हरा सफेद लाल पीला	पुराना सफेद कबरा	पुराना पीला लाल	पीला लाल	पुराना काला कबरा	पुराना काला कबरा	दृढ़ स्वच्छ लाल पीला
रुदन	शीघ्र बहुत	शीघ्र कम	देर में बहुत	देर में थोड़ा	शीघ्र बहुत	देर में कम	कुछ देर साधारण	देर में थोड़ा	देर में बहुत	कुछ देर थोड़ा	कुछ देर साधारण	देर में साधारण
खाट	टूटा पाया	पैतान का पाया टूटा	सुन्दर	सिरहाने का पाया टूटा	पैताने का पाया टूटा	सुन्दर	सुन्दर	सुन्दर	पैताने का पाया टूटा	साधारण	पैतान का पाया टूटा	दाहिना पाया टूटा
उपचारिकाएँ	३ या ४ या ५ मलिन वस्त्र	३ या ५ दो पीछे आईं	३ या ५	४ दो पीछे आईं	१-२-३-४ या ६	३ ५ ६	४ या ८ एक कुमारी	३ या ४ एक गर्भिणी	१-२ ३ एक गर्भिणी	२ या ३	२ ३-६ एक गर्भिणी	२ ३ ५

जन्म-लग्न	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुंभ	मीन
भोजन	लाल मीठा पतला	कडा मीठा रूखा शाक	नमकीन कई प्रकार का थोडा	ठण्डा मीठा पतला थोडा	मीठा दूध शुष्क खट्टा	दही वडे या रस वस्तु	सफेद क्रोध से मोटा अन्न ठंडा जल	लाल क्रोध से मोटा अन्न	पक्वान्न पीला रसयुक्त दही वड़ा	काला शुष्क खट्टा दूध मीठा जल	ठण्डा मीठा तरल	कई प्रकार का थोड़ा
बालक की विशेषता	श्याम वर्ण लाल नेत्र श्लेष्म प्रकृति कान्ति युक्त	गौरवर्ण कांतियुक्त दो बार दीपक जलाया	नेत्ररोगी पित्त प्रकृति पित्तरोगी दायें अंग में चिह्न	वामाग में चिह्न लहसुन गौरवर्ण कोमल नाक वडी	वहुकेश लहसुन सुलोचन पीठ में चिह्न नाक वडी	गौरवर्ण सुन्दर जघा मे चिह्न कठ मे चिह्न	गौरवर्ण नेत्ररोगी रक्त विस्फोट रोग माता को पीडा	अधिक वाल माता पिता को कष्ट, पीठ या वाम अंग मे चिह्न	हृदय मे चिह्न सुन्दर पिता की उन्नति गुणवान्	श्याम वर्ण अल्प केश नाक मोटी	वामाग मे चिह्न छोटी देह नेत्ररोग कम वाल	माता को कष्ट जुकाम; कन्या हो तो गुणवती सुरूपा

सभी प्रकार के शोधनों का यथा समय उपयोग कीजिए। इनमें मुख्य हैं, प्रथम पाँच विधियाँ। फिर आठ विधि (६-७-८-९-१०-११-१२-१३ वीं) तक मध्यम प्रकार और १४-१५-१६ वें प्रकार के शोधन कभी मिलते हैं, और कभी नहीं भी मिलते। मुख्य शोधन द्वारा सर्वदा देखना चाहिए, और गौण (साधारण) शोधन द्वारा तभी देखे, जबकि, लग्न मे निश्चित सन्देह हो।

पचाग-संस्कार

जब इष्टकाल आदि का सूक्ष्म विवेचन किया, तब जिस पंचाग द्वारा आपने गणित किया है, उसी पचाग के तिथ्यादि में संस्कार करके स्थानीय तिथ्यादि-मान बनाना, अधिक उपयोगी है। इस सस्कार को 'फल-घटी' कहते हैं।

फल-घटी-साधन

इसमे देशान्तर और चरान्तर का संयोग करना पडता है। अपने स्थान का तथा पचाग के स्थान का देशान्तर और अक्षाश जानिए। दोनों स्थानों के देशान्तर का अन्तर कर, दशगुणित पलादि रूप मे देशान्तर होता है। दोनो स्थानों के दिनमान का अन्तर जानकर, शेष का अर्धभाग ही चरान्तर होता है। फिर देशान्तर और चरान्तर का निम्न-लिखित प्रकार से सयोग करके 'फल-घटी' बनाइए।

पचाग के स्थान से अभीष्ट स्थान का देशान्तर यदि पूर्व (अधिक) हो तो देशान्तर धन एव पश्चिम (कम) हो तो देशान्तर ऋण कीजिए। इसी प्रकार सायन मेषादि सूर्य (लगभग २२ मार्च से २२ सितम्बर तक) मे पचाग-स्थानीय अक्षाश से उत्तर (अधिक) अक्षाश वाले स्थान के लिए चरान्तर धन, एवं दक्षिण (कम) अक्षाश वाले मे चरान्तर ऋण कीजिए। इसी प्रकार सायन तुलादि सूर्य (लगभग २३ सितम्बर से २१ मार्च तक) मे, पचाग-स्थानीय अक्षाश से उत्तर (अधिक) अक्षाश वाले स्थान के लिए चरान्तर ऋण, एवं दक्षिण (कम) अक्षाश वाले स्थान के लिए चरान्तर धन कीजिए; तो स्पष्ट तिथ्यादि मान हो जाता है। यथा—

जबलपुर के भुवन-मार्तण्ड-पचाग सवत् २०११ चैत्र कृष्ण अमावास्या गुरुवार को तिथिमान ५।३५ उभा नक्षत्र ४०।८ शुक्ल योग १९।४१ दिनमान ३०।१६ ता. २५ मार्च १९५४ ई० देशान्तर ८८।४८

(८०।) अक्षांश २३।१० है। इसके द्वारा काशी का पंचांग बनाना है तो, काशी का देशान्तर ८३।० अक्षांश २५।१८ दिनमान ३०।७ है।

देशान्तर=८३।० − ७९।५९=३।१ × १० = ३०।१ पलादि जबलपुर से पूर्व (अधिक) में काशी होने से धन होगा। चरान्तर=दिनमान ३०।६−३०।७=०।२+२=१ पल सायनमेषार्क तथा काशी का अक्षांश अधिक होने से धन होगा। फल घटी=देशान्तर+चरान्तर (३०।१ + १।०)=३१।१० पलादि धन होंगे।

		तिथि	नक्षत्र	योग	
घट्यादि मान	=	७।३५	४०।८	१७।४१	में (जबलपुर पंचांग द्वारा)
फल घटी	=	०।३१।१०	०।३१।१	०।३१।१	जोड़ा
घट्यादि मान		८। ६।१	४ ।३६।१०	१३।१२।१	(काशी में हुआ)

यह एक स्थूल प्रकार है, स्वल्प अन्तर से प्राय यह मिलता-जुलता रहेगा। इस सूक्ष्म विधि से मिलाने का प्रयत्न कभी न कीजिए। क्योंकि सिद्धान्त-भेद एवं स्थान-भेद का अन्तर अवश्य ही आता रहेगा।

भयात-भभोग-साधन

भयात को गतर्क्ष भभोग को सर्वर्क्ष और शेषर्क्ष को भोग्यर्क्ष कहते हैं। किसी नक्षत्र के पूर्णमान इष्ट तक गतमान और इष्ट से नक्षत्रान्त तक या गतर्क्ष से सर्वर्क्ष तक भोग्यमान जानना पड़ता है। यह एक ही नियम से न बनकर प्रायः सात नियमों से बनता है।

नियम (१)

गत नक्षत्र को ६० घटी में से घटाकर शेष को दो स्थानों में रखे, प्रथम स्थान के शेष में इष्ट जोड़ने से गतर्क्ष एवं द्वितीय स्थान के शेष में वर्तमान नक्षत्र जोड़ने से सर्वर्क्ष होता है। यदि सर्वर्क्ष से अधिक गतर्क्ष हो तो गतर्क्ष की घटी में से ६० घटी घटा दीजिए। शेष गतर्क्ष होता है। गतर्क्ष से सर्वर्क्ष तक तथा इष्टकाल से जन्म नक्षत्रान्त का समय (भोग्यर्क्ष) एक-सा होना चाहिए। ध्यान रहे कि, 'क' और 'ख' विधि से बनाये गये दोनों भोग्यर्क्ष 'समान' रहना चाहिए।

देखिए, चक्र ६ (पृष्ठ ३२) के द्वारा ही गतर्क्ष-सर्वर्क्ष के सभी उदाहरण दिये गये हैं। यथा—

उदाहरण (१)

यदि किसी का जन्म सं. १९७० शके १८३५ आषाढ़ कृष्ण ७ गुरुवार इष्ट २६।१९ पर है, तो भयात-भभोग क्या होगा?

	६० ।०	घटी में से
	३६।५	(गत नक्षत्र ज्येष्ठा का मान घटाया)
(क)	२३ ।५५	प्रथम शेष में
	२६।१९	इष्ट जोड़ा
गतर्क्ष	५० ।१४	हुआ
(मूल) जन्मर्क्ष	४२।३३	में से
इष्ट	२६।१९	इष्ट घटाया
(१) भोग्यर्क्ष	१६।१४	हुआ

(ख)	२३ ।५५	द्वितीय शेष में
	४२।३३	(जन्म नक्षत्र मूल) जोड़ा
सर्वर्क्ष	६६।२८	में से
	५०।१४	गतर्क्ष घटाया
(२) भोग्यर्क्ष	१६।१४	हुआ

दोनों भोग्यर्क्ष समान हैं

देखिए, दोनों प्रकार के भोग्यर्क्ष-मान 'समान' आने से आपका गतर्क्ष-सर्वर्क्ष-गणित शुद्ध है। अन्यथा अशुद्ध रहेगा। इसमे इष्ट २६।१६ है और मूलनक्षत्र ४५।३३ है अत मूलर्क्ष में ही जन्म है एवं गत नक्षत्र ज्येष्ठा ही है। इसी प्रकार इष्टकाल के आधार पर आगे-पीछे अर्थात् गत और वर्तमान नक्षत्र जानकर, भयात-भभोग बनाइए।

नियम (२)

जिस दिन जन्म हो, यदि उस दिन, नक्षत्र मान से अधिक इष्टकाल हो, तो इष्टकाल मे से गत नक्षत्र मान ही घटा देने से गतर्क्ष होता है। सर्वर्क्ष बनाने के लिए पूर्ववत् अर्थात् ६० घटी मे से, गत नक्षत्र-मान घटाकर, जन्म नक्षत्र-मान जोडने से सर्वर्क्ष होता है।

उदाहरण (२)

यदि उदाहरण (१) के दिन इष्टकाल ५०।२५ हो तो, गतर्क्ष-सर्वर्क्ष क्या होगा ?

गुरुवार को मूल नक्षत्र ४५।३३ तक है और इष्ट ५०।२५ है अत मूल के बाद पूर्वाषाढ में जन्म हुआ, एव गत नक्षत्र मूल हुआ, तो—

	६०। ०	घटी में से
	४५।३३	मूल घटाया
(क)	१४।२७	प्रथम शेष में
	५०।२५	इष्टकाल जोडा
	६४।५२	(सर्वर्क्ष से अधिक होने से)
	६०। ०	
(१) गतर्क्ष	४।५२	

अथवा

इष्ट	५०।२५	में से
मूल	४५।३३	घटाया
(२) गतर्क्ष	४।५२	

(ख)	१४।२७	द्वितीय शेष में
	५१।४६	जन्मर्क्ष पूर्वाषाढ
	६६।१३	सर्वर्क्ष

इन दोनों प्रकार से गतर्क्ष एक-सा हुआ।

	६०। ०	मे से
	५०।२५	
	९।३५	शेष मे
	५१।४६	पूर्वाषाढ जोडा
भोग्यर्क्ष	६१।२१	

सर्वर्क्ष	६६।१३	मे से
गतर्क्ष	४।५२	घटाया
भोग्यर्क्ष	६१।२१	

दोनों भोग्यर्क्ष समान है।

नियम (३)

जिस दिन नक्षत्र-मान ६०।० लिखा हो, उस दिन से पीछे दिन का नक्षत्र-मान, ६० घटी मे से घटाकर, प्रथम शेष मे इष्टकाल जोडने से भयात (गतर्क्ष) होता है। पुन द्वितीय शेष में, इष्टकाल के दूसरे दिन वाले नक्षत्र-मान के साथ ६० घटी मिलाकर, जोडने से भभोग (सर्वर्क्ष) होता है।

उदाहरण (३)

यदि उदाहरण (१) वाले वर्ष-मास-पक्ष के ५ रविवार को २९।१९ इष्टकाल हो तो गतर्क्ष-सर्वर्क्ष क्या होगा ?

५ रविवार को ६०।० घटी श्रवण नक्षत्र है, तथा गत नक्षत्र उत्तराषाढ़ा रहेगा।

	६०। ०	घटी में से
	५७।१६	उषा घटाया
(क)	२।४४	प्रथम शेष में
इष्ट	२९।१९	जोड़ा
गतर्क्ष	३२। ३	

वर्तमान दिन के श्रवण मान	६०।	में से
इष्ट	२९।१९	घटाया
	३०।४१	शेष में
दूसरे दिन का श्रवण मान	१।५८	जोड़ा
भोग्यर्क्ष	३२।३९	

(ख)	२।४४	द्वितीय शेष में
	६०। ०	जन्म दिन श्रवण (इष्टकाल दिन)
	१।५८	दूसरे दिन श्रवण
	६४।४२	सर्वर्क्ष में से
	३२। ३	गतर्क्ष घटाया
	३२।३९	भोग्यर्क्ष

दोनों भोग्यर्क्ष समान हैं।

नियम (४)

पहिले नियम (३) की भाँति सर्वर्क्ष (भभोग) बनाइए। फिर जन्म दिन के नक्षत्र-मान में से, इष्टकाल घटाकर शेष को सर्वर्क्ष में घटाने से गतर्क्ष होता है। अथवा सर्वर्क्ष बनाने वाले शेष में इष्टकाल के साथ ६०। भी जोड़ देने से गतर्क्ष होता है।

उदाहरण (४)

यदि उदाहरण (१) वाले वर्ष-मास-पक्ष में ५ सोमवार को इष्टकाल १।२ हो तो, भयात और भभोग क्या होगा ?

अब इसमें वर्तमान नक्षत्र श्रवण रहेगा क्योंकि ५ सोमवार को श्रवण १।५८ तक है और इष्टकाल १।२ ही है। गत नक्षत्र उषा रहेगा—क्योंकि श्रवण से पहिले (गत) उषा ही होता है। यथा—

	६०।	घटी में से
गत नक्षत्र उषा	५७।१६	घटाया
	२।४४	शेष (क) में
इष्ट	१।२	
पूर्वदिन का श्रवणमान	६०।	
गतर्क्ष	६३।४६	

शेष (क)	२।४४	में
	६०।	श्रवण (पहिले दिन)
	१।५८	श्रवण (जन्म दिन)
	६४।४२	सर्वर्क्ष

इसमें सर्वर्क्ष तो उदाहरण (३) की भाँति बनेगा। किन्तु, गतर्क्ष बनाने की दो क्रियायें हैं। जिनमें एक तो लिखा चुके, अब दूसरी क्रिया देखिए—

अथवा

जन्म दिन का श्रवण मान	१।५८	में से
इष्टकाल	१।२	घटाया
(भोग्यर्क्ष)	।५६	शेष

सर्वर्क्ष	६४।४२	में से
शेष	।५६	घटाया
गतर्क्ष	६३।४६	

जन्म दिन का श्रवण १।५८	सर्वर्क्ष ६४।४२
इष्ट १।२	गतर्क्ष ६३।४६
भोग्यर्क्ष ०।५६	०।५६ भोग्यर्क्ष

दोनों भोग्यर्क्ष समान हैं।

नियम (५)

जिस दिन का जन्म हो, उसके पहिले दिन नक्षत्र मान ६०।० लिखा हो, और जन्म दिन के लिखे हुए नक्षत्र मान मे अधिक इष्ट काल हो तो, ६०।० घटी में से इष्ट दिन लिखित गत नक्षत्र मान (यथा उदाहरण ५ में श्रवण) को घटाइए, शेष मे इष्ट काल जोडकर, ६०।० घटी घटाइए तो, शेष में गतर्क्ष होता है। अथवा इष्ट में से गत नक्षत्र मान घटाइए, तो शेष में गतर्क्ष होगा। सर्वर्क्ष तो, पूर्ववत् (उदाहरण [२] की भाँति) बनाया जाता है।

उदाहरण (५)

यदि उदाहरण (४) के दिन, इष्टकाल २।५ हो तो, भयात-भभोग क्या होगा ?

अब इसमे गत नक्षत्र (श्रवण) मान १।५८ मात्र ही रहेगा, और जन्म नक्षत्र धनिष्ठा रहेगा। यथा—

६०।० घटी में से
गत नक्षत्र १।५८ ही श्रवण घटाया
५८।२ शेष (क) मे
२।५ इष्टकाल जोडा
६०।७
६०।०
गतर्क्ष ०।७

अथवा

इष्ट २।५ में से
नक्षत्र १।५८ श्रवण घटाया
गतर्क्ष ०।७

दोनों प्रकार से गतर्क्ष समान है।

शेष (ख) ५८।२ मे
दूसरे दिन का ५।३५ धनिष्ठा मान
६३।३७ सर्वर्क्ष

६०।० में से
२।५ इष्ट घटाया
५७।५५ शेष में
धनिष्ठा ५।३५ जोड़ा
६३।३० भोग्यर्क्ष

सर्वर्क्ष ६३।३७
गतर्क्ष ०।७
भोग्यर्क्ष ६३।३०

दोनो भोग्यर्क्ष समान हैं।

नियम (६)

जिस दिन नक्षत्र का क्षय हो, और सूर्योदय समय लिखे नक्षत्र मान से अधिक इष्ट काल हो तो, यह दो प्रकार से बनाया जाता है।

[क]

प्रात नक्षत्र में, क्षय नक्षत्र मान जोड़ने से सर्वर्क्ष एव इष्ट काल ही गतर्क्ष होता है।

[ख]

इष्ट काल में गत नक्षत्र (प्रात नक्षत्र) घटाने से गतर्क्ष एव क्षय नक्षत्र मान ही सर्वर्क्ष होता है।

प्रधान-उदाहरण (६)

यदि उदाहरण (१) के वर्ष-मास-पक्ष मे १३ सोमवार को इष्ट २९।१९ हो, जब कि, इसी दिन जन्म नक्षत्र-क्षय हो, तो, गतर्क्ष-सर्वर्क्ष क्या होगा।

भरणी २।२१ और क्षय कृत्तिका-मान ५६।३३ है।

(१)

इष्ट २८।१९ में से
भरणी २।२१ घटाया
गतर्क्ष २५।५८

सर्वर्क्ष = क्षय-कृत्तिका-मान ५६।३३ ही रहेगा।

(२)

इष्ट ही गतर्क्ष २८।१९

भरणी + कृत्तिका = सर्वर्क्ष = { २।२१ भरणी, ५६।३३ कृत्तिका }

सर्वर्क्ष = ५८।५४ सर्वर्क्ष में से
२८।१९ गतर्क्ष घटाया
शेष ३०।३५ भोग्यर्क्ष

सर्वर्क्ष ५६।३३
गतर्क्ष २५।५८
भोग्यर्क्ष ३०।३५

दोनों भोग्यर्क्ष समान हैं।

नियम (७)

जिस दिन नक्षत्र-क्षय हो और उस दिन प्रातः नक्षत्र के, पूर्व ही का इष्ट काल हो, तो उदाहरण (१) के समान गतर्क्ष-सर्वर्क्ष बनेगा। प्रातः का नक्षत्र मान ही वर्तमान (जन्म) नक्षत्र माना जायगा। क्षय नक्षत्र या प्रातः और क्षय नक्षत्र मिलाकर, वर्तमान नक्षत्र न माना जायगा। यथा—

उदाहरण (७)

उदाहरण (६) के दिन इष्ट काल २।५ है, तो, गतर्क्ष-सर्वर्क्ष क्या होगा?

६०। घटी में से
अश्विनी ५।२२ घटाया
शेष (क) ५४।३८
इष्ट २।५
गतर्क्ष ५६।४३

भरणी २।२१ में से
इष्ट २।५ घटाया
।१६ भोग्यर्क्ष (भभोग्य)

शेष (क) ५४।३८ में
२।२१ भरणी (जन्म नक्षत्र)
५६।५९ सर्वर्क्ष
५६।४३ गतर्क्ष
।१६ भोग्यर्क्ष

दोनों भोग्यर्क्ष समान हैं।

इन्हीं ७ नियमों के द्वारा विभिन्न-स्थितियों में गतर्क्ष-सर्वर्क्ष बनाना चाहिए। सारांश यह कि, एक पूर्ण नक्षत्र मान सर्वर्क्ष। नक्षत्रारम्भ से इष्ट तक गतर्क्ष। गतर्क्ष से सर्वर्क्ष तक भोग्यर्क्ष (भभोग्य) होता है। इतना ठीक जान लेने पर—सभी नियम एक समान हैं—समझ में आ जायेंगे।

नक्षत्र के चरण और नाम

सर्वर्क्ष में ४ से भाग देने पर लब्धि में एक चरण का मान आ जाता है। एक चरण के मान के द्वारा गतर्क्ष से अनुपात करके चरण जानना चाहिए। यथा—

उदाहरण (६) का गतर्क्ष २६।५८ सर्वर्क्ष ५६।३३ है।

सर्वर्क्ष ५६।३३ ÷ ४ = १४।८।१५ = एक चरण का मान
०।० से १४।८।१५ तक एक चरण के मान में
१४।८।१५ एक चरण का मान जोड़ा
१४।८।१६ से २८।१६।३० तक दूसरा चरण रहेगा।

उपर्युक्त गतर्क्ष २६।५८ तो पहिले चरण के बाद और दूसरे चरणान्त के पूर्व में ही है। अत कृत्तिका का दूसरा चरण रहेगा। कृत्तिका नक्षत्र के [अ इ उ ए देखिए, चक्र २ में] द्वितीय अक्षर पर राशि नाम 'इन्दुकुमार' और वृष राशि हुई।

उदाहरण—गणित

श्री शुभ संवत् १९७७ शके १८४२ आषाढ कृष्ण १३ सोमवार ४४।२१ (तिथिमान) भरणी २।२१ (नक्षत्र मान) [उसी दिन में क्षय कृत्तिका मान ५६।३३] तारीख १४ जून १९२० ई० जबलपुर अक्षांश २३।१० देशान्तर ७९।५६ [चक्र ७ से] पलभा ५।८ [२३।१० अक्षांश के अनुपात पर चक्र १० से] चरखण्ड ५१।४१।१७ अयनांश २२।४३।५० प्रात सूर्य १।२६।५१।२ सायनार्क २।२२।३४।५२ दिनमान ३३।२६।४६ (३३।३०) वेलान्तर + १ पल, चरपल १।४४।५३ रेखान्तर + ४२।५० (उत्तर) प्राणपद से शुद्ध स्टैण्डर्ड टाइम ५।११।१६ (५।१२ था) लोकल (स्थानीय) टाइम ५।१।३६ सूर्योदय ५।१८।२।४८ (५।१८।३) इष्ट २६।१८।५३ (२६।१६) प्राणपद से शुद्ध, तात्कालिक सायनार्क २।२३।२।४५ [निरयण सूर्य २।०।१८।५५] लग्न स्पष्ट ७।८।५।० प्राणपद ३।८।५ गतर्क्ष २६।५८ सर्वर्क्ष ५६।३३ [अथवा गतर्क्ष २६।१६ सर्वर्क्ष ५८।५४] गुलिक लग्न ६।१५।५२, वृषभ राशि, राशीश शुक्र, कृत्तिका का द्वितीय चरण, इन्दुकुमार राशिनाम, तेज तत्त्व।

संस्कृत में कुण्डली लिखने का ढंग

श्री संवत् १९७७ शकाब्दा १८४२ आषाढमासे कृष्णपक्षे त्रयोदश्या सोमवासरे ४४।२१ भरणी २।२१ ता १४ जून १९२० ई० जबलपुराक्षांशा २३।१० दिनमानम ३३।३० स्टैण्डर्ड टाइम ५।११।१६ देशान्तरम् ७९।५६ [८०।०] वेलान्तरम् + १ पल, स्थानीयजन्मसमय ५।१।३६ इष्टम २६।१६ अयनांशा २२।४३।५० सूर्य २।०।१८।५५ लग्नम ७।८।५ प्राणम् ३।८।५ गुलिकम ६।१५ गतर्क्षम् २६।५८ सर्वर्क्षम् ५६।३३ एव शुभवेलाया श्री रोशनलाल जी ओमरवैश्यमहोदयाना जनिरभूत्। अस्य च कृत्तिकाद्वितीयपादे 'इन्दुकुमार' राशिनाम शुभम्। वृष राशि। श्रीरस्तु।

नोट—

इस प्रकार शुद्ध और स्वच्छ लिखने का अभ्यास कीजिए। अनेक व्यर्थ का (अनुपयुक्त) लेख न लिखना चाहिए, जिससे प्राय समझने में कठिनता पड़े। कोई-कोई पण्डित महोदय 'विचित्र कुण्डली' भी बना देते हैं। यथा—इषे (आश्विन) मासेऽर्यमन् नक्षत्रे (उफा) विश्व तिथौ, विश्व लग्ने, कर्णसद्मनि वक्रस्थिते (तृतीय भौम) इत्यादि। कृपया, ऐसी कुण्डली के बनाने का अभ्यास न रखिए। रँगाई और श्लोक भी कुछ कम कीजिए तो, अधिक अच्छा 'वराहरम्।' एक-दो श्लोक शुद्ध रीति से लिखना आवश्यक है। क्योंकि 'मंगलाचरण' करना, कभी बुरा नहीं होता। किसी-किसी की बनायी कुण्डली में रँगाई इतनी अधिक होती है कि, कुण्डली में स्थित सूर्य तक की चमक मारी जाती है, अन्य ग्रहों की तो बात ही क्या। अत पूर्व विधि से शुद्ध, सूक्ष्म और आवश्यक लेख लिखने का ही अभ्यास कीजिए। अक्षर, भाषा और गणित—तीनों ही शुद्ध होना चाहिए।

पंचम-वर्तिका = ज्योतिष का ज्ञान

———

षष्ठ-वर्तिका

चालन-साधन

किसी पंचांग में दैनिक, किसी में अष्टमी पूर्णिमा और अमावास्या के अर्थात् साप्ताहिक, किसी में अमावास्या-पूर्णिमा के अर्थात् पाक्षिक ग्रह-स्पष्ट होते हैं। अतः इष्टकाल के समीप, जो ग्रह-स्पष्ट-चक्र (पंक्ति या प्रस्तार) मिल सके, उसीसे चालन बनाना चाहिए।

सूर्य-चन्द्र सर्वदा मार्गी, राहु-केतु सर्वदा वक्री, शेष पाँच ग्रह (मंगल, बुध, गुरु, शुक्र और शनि) कभी मार्गी और कभी वक्री भी होते हैं। मार्गी=मा० वक्री=व० अक्षर, ग्रहों की गति के पास लिखा रहता है अथवा केवल वक्री का चिन्ह (+) बना रहता है। जिन पंचांग में दैनिक-ग्रह-स्पष्ट होते हैं; उसमें वक्री-मार्गी का कोई चिह्न नहीं होता पर वक्री ग्रह के राश्यादि पीछे (कम) होते जाते हैं।

पंक्ति में ग्रहों के राशि अंश कला और विकला तथा गति के कला और विकला क्रमशः लिखे रहते हैं। यदि पंचांग में गति न लिखी हो तो, दो दिनों के ग्रह-स्पष्ट के, राश्यादि का अन्तर ही 'गति' होता है। गोचर-ग्रह में अपनी अपनी राशि पर ग्रहों की स्थिति बतायी जाती है। पंचांग में पंक्ति का इष्ट ।० लिखा रहता है या मिश्रमान या कुछ घटी-पल।

यदि पंक्ति आगे हो और इष्टकाल पीछे हो तो ऋण-चालन होता है। यदि इष्टकाल आगे हो और पंक्ति पीछे हो तो, धन-चालन होता है। वक्री ग्रह में विपरीत चालन होता है।

ऋण-चालन के बनाने में पंक्ति के वार (रवि से शनि अर्थात् १ से ७ तक) और इष्ट (पंक्ति के कुछ घटी-पल या ०। या मिश्रमान) में से जन्म के वार और इष्ट के घटी पल 'यथा संख्यक राशि' घटाइए, शेष ऋण-चालन के वारादि होते हैं।

धन-चालन के बनाने में जन्म के वारादि में से पंक्ति के वारादि घटाइए, शेष धन-चालन के वारादि होते हैं।

उदाहरण

देखिए चक्र ६। पंक्ति ३ (अमावास्या) बुधवार प्रातः (इष्ट ०।) की बनी है। इसके नीचे क्रमशः ग्रहों के नाम स्पष्ट राश्यादि और गति है।

(१)

यदि आषाढ़ शुक्ल २ शुक्रवार इष्टकाल १५।२ में जन्म है तो कौनसा और कितना चालन होगा?

पंक्ति अमावास्या की और आगे (शुक्ल पक्ष) द्वितीया का इष्टकाल होने से धन-चालन होगा। यथा—

		वार	घटी	पल	
जन्म के वार और इष्ट	=	६	१५	२	(जन्म के शुक्रवार का ६)
पंक्ति के वार और इष्ट	=	४		०	(पंक्ति के बुधवार का ४)
धन चालन के वारादि	=	२	१५	२	

(२)

यदि आषाढ़ कृष्ण १३ सोमवार इष्ट २८।१६ हो तो कौनसा और कितना चालन होगा?

पंक्ति अमावास्या की और इष्टकाल 'कृष्ण पक्ष के' त्रयोदशी (पीछे) का होने से ऋण-चालन होगा। यथा—

पंक्ति के वारादि	=	४	०	०	(पंक्ति के बुधवार का ४) में से
जन्म के वारादि	=	२	२६	१६	(जन्म के सोमवार का २) घटाया
ऋण–चालन के वारादि	=	१	३०	४१	(सरलार्थ १।३०।४० लीजिए)

तथ्य यह है कि, पंक्ति से इष्टकाल आगे होने से धन चालन और पंक्ति से इष्टकाल पीछे होने से ऋण–चालन होता है। जब ग्रह वक्री हो, तब ऋण–चालन को धन–चालन तथा धन–चालन को ऋण–चालन मानकर कार्य कीजिए। चालन भी, त्रैराशिक का ही, दूसरा नाम है। वारांक—रवि का १, सोम का २, मंगल का ३ बुध का ४, गुरु का ५ शुक्र का ६ और शनि का ७ होता है।

ग्रह–साधन

ग्रह–गति में, चालन का गुणा कर, ६० से भाग दे, तो लब्धि में चालन के अंशादि होते हैं। फिर पंक्तिस्थ ग्रह की राशि आदि में—लब्धि (चालन) को—मार्गी ग्रह में, ऋण–चालन में ऋण, धन–चालन में धन कीजिए तो, ग्रह–स्पष्ट हो जाता है। वक्री ग्रहों में विपरीत संस्कार कीजिए। गुणा करने के लिए गोमूत्रिका गणित का उपयोग होगा। यथा—सूर्य गति ५७।५ (पृष्ठ ३२ में) चालन १।३०।४०

सूर्य-गति

चालनवारादि							
	१	५७	५			=	गति में
	३०	५७	५			=	गुणनफल १ का
	४०		१७१०	१५०		=	„ ३० का
				२२८०	२००	=	„ ४० का
		५७	१७१५	२४३०	२००	=	„ का योग (फलादि)

५७ । १७१५ । २४३० । २०० ÷ ६०
२६　　४०　　३ ल०
——————————————— = ल० = लब्धि
अंशादि १ । २६ । १५ । ३३ । २० शेष (ऋण–चालन)
(चक्र ६) पंक्तिस्थ सूर्य राश्यादि २ । १ । ४५ । १२ में से
१ । २६ । १६ चालन ऋण किया
२ । ० । १८ । ५६ (इष्ट २६।१८।५३ के कारण २।०।१८।५५ रखा)

इसी दिन प्रातःकाल का सूर्य क्या होगा ?

पंक्ति वार	४।०।०	सूर्यगति	५७।५ × २	पंक्तिस्थ सूर्य	२। १।४५।१२ में से
जन्म वार	२।०।०	चालनांश	१।५४।१०	चालनांश	१।५४।१० घटाया
ऋण चालन	२।०।०			प्रात सूर्य	१।२९।५१। २ हुआ (में)
				अयनांश	२२।४३।५० जोड़ा
				सायनार्क	२।२२।३४।५२ हुआ

इसी सूर्य १।२९।५१।२ सायनार्क २।२२।३४।५२ लेकर, तृतीय-वर्तिका के प्रारम्भ से कार्य किया गया है।

गोमूत्रिका, त्रैराशिक, व्यवहारगणित (लघु गुणन) का अभ्यास होने पर भी, यह 'चक्र' कभी-कभी उपयोगी हो सकेगा। पहाड़ा और गोमूत्रिका के अभ्यासी भ्रम इससे लाभ उठा सकेंगे। चन्द्र-साधन में यह चक्र विशेष उपयोगी होगा। जिसका नियम चक्र १९-२०-२१ रखने के उपरान्त लिखा जावेगा।

ग्रह-गणित-चक्र १६

गु	१			२			३			४			५			६			७			८			९			१०			२०		
१	०	०	१	०	०	२	०	०	३	०		४	०		५	०	०	६	०	०	७		०	८	०		९			१०	०	०	२०
२	०	०	२		०	४		०	६	०	०	८		०	१०		०	१		०	१४	०	०	१६	०	०	१८	०	०	२०		०	४०
३	०	०	३	०	०	६			९		०	१२	०	०	१५	०		१८	०		२१			२४		०	२७	०		३०		१	०
४	०	०	४		०	८	०	०	१२	०	०	१६		०	२			२४	०	०	२८	०	०	३२		०	३६	०	०	४०	०	१	२०
५	०		५		०	१०	०	०	१५			२०	०	०	२५	०		३०			३५	०	०	४०			४५	०		५०	०	१	४०
६		०	६	०	०	१२	०	०	१८		०	२४		०	३०	०	०	३६			४२	०		४८	०		५४	०	१	०	०	२	०
७			७	०	०	१४	०		२१	०	०	२८		०	३५	०	०	४२	०	०	४९	०		५६	०	१	३	०	१	१०		२	२०
८	०	०	८	०	०	१६	०		२४	०	०	३२		०	४०	०	०	४८	०	०	५६	०	१	४		१	१२	०	१	२०		२	४०
९	०	०	९		०	१८	०		२७	०	०	३६		०	४५		०	५४	०	१	३	०	१	१२		१	२१	०	१	३०	०	३	०
१०		०	१०	०	०	२०			३०		०	४०			५०		१	०	०	१	१०		१	२०	०	१	३०	०	१	४०		३	२०
११		०	११	०		२२	०	०	३३	०	०	४४	०	०	५५	०	१	६	०	१	१७		१	२८		१	३९	०	१	५०	०	३	४०
१२		०	१२	०	०	२४		०	३६	०	०	४८	०	१	०	०	१	१२	०	१	२४	०	१	३६	०	१	४८	०	२	०	०	४	०
१३	०	०	१३		०	२६	०		३९	०	०	५२	०	१	५		१	१८	०	१	३१	०	१	४४		१	५७		२	१०	०	४	२०
१४	०	०	१४		०	२८	०	०	४२			५६	०	१	१०		१	२४	०	१	३८	०	१	५२	०	२	६	०	२	२०		४	४०
१५	०		१५		०	३०	०		४५		१		०	१	१५	०	१	३०		१	४५		२	०		२	१५	०	२	३०		५	०
१६	०	०	१६	०		३२	०	०	४८		१	४	०	१	२०	०	१	३६		१	५२	०	२	८		२	२४	०	२	४०		५	२०
१७	०	०	१७	०		३४		०	५१	०	१	८	०	१	२५	०	१	४२		१	५९	०	२	१६		२	३३	०	२	५०	०	५	४०
२०	०	०	२०	०	०	४०		१	०		१	२०	०	१	४०	०	२	०	०		२०		२	४०		३	०		३	२०	०	६	४०
३०		०	३०	०	१	०		१	३०	०	२	०		२	३०		३	०	०	३	३०	०	४	०		४	३०	०	५	०		१०	०
४०	०		४०	०	१	२०		२	०	०	२	४०	०	३	२०	०	४	०		४	४०		५	२०		६		०	६	४०	०	१३	२०
५०		०	५०	०	१	४०		२	३०		३	२०	०	४	१०	०	५	०	०	५	५०		६	४०		७	३०		८	२०	०	१६	४०
६०	०	१	०	०	२	०	०	३	०	०	४	०		५	०		६	०		७	०	०	८	०	०	९	०	०	१०	०		२	०
६१		१	१	०	२	२		३	३		४	४		५	५	०	६	६	०	७	७	०	८	८	०	९	९		१	१०	०	२	२०
६२		१			२	४		३	६		४	८		५	१०		६	१२	०	७	१४		८	१६		९	१८	०	१	२०		२	४०
६३		१	३		२	६	०	३	९	०	४	१२	०	५	१५	०	६	१८		७	२१	०	८	२४		९	२७	०	१०	३०	०	२१	०
६४	०	१	४	०	२	८	०	३	१२		४	१६		५	२०		६	२४	०	७	२८		८	३२		९	३६	०	१	४०		२१	२०
६५		१	५		२	१०		३	१५		४	२०		५	२५		६	३०	०	७	३५		८	४०		९	४५		१०	५०		२१	४०
६६		१	६	०	२१			३	१८	०	४	२४		५	३०	०	६	३६	०	७	४२	०	८	४८		९	५४	०	११	०		२२	०
६७	०	१	७	०	२	१४	०	३	११		४	२८		५	३५	०	६	४२		७	४९	०	८	५६		१०	३	०	११	१०	०	२२	४०

ग्रह-गणित-चक्र १६ का शेष

घ पा	३०			४०			५०			६०			७०			८०			९०			१००			११०			७००			८००		
१	०	०	३०	०	०	४०	०	०	५०	०	१	०	०	१	१०	०	१	२०	०	१	३०	०	१	४०	०	१	५०	०	११	४०	०	१३	२०
२	०	१	०	०	१	२०	०	१	४०	०	२	०	०	२	२०	०	२	४०	०	३	०	०	३	२०	०	३	४०	०	२३	२०	०	२६	४०
३	०	१	३०	०	२	०	०	२	३०	०	३	०	०	३	३०	०	४	०	०	४	३०	०	५	०	०	५	३०	०	३५	०	०	४०	०
४	०	२	०	०	२	४०	०	३	२०	०	४	०	०	४	४०	०	५	२०	०	६	०	०	६	४०	०	७	२०	०	४६	४०	०	५३	२०
५	०	२	३०	०	३	२०	०	४	१०	०	५	०	०	५	५०	०	६	४०	०	७	३०	०	८	२०	०	९	१०	०	५८	२०	१	६	४०
६	०	३	०	०	४	०	०	५	०	०	६	०	०	७	०	०	८	०	०	९	०	०	१०	०	०	११	०	१	१०	०	१	२०	०
७	०	३	३०	०	४	४०	०	५	५०	०	७	०	०	८	१०	०	९	२०	०	१०	३०	०	११	४०	०	१२	५०	१	२१	४०	१	३३	२०
८	०	४	०	०	५	२०	०	६	४०	०	८	०	०	९	२०	०	१०	४०	०	१२	०	०	१३	२०	०	१४	४०	१	३३	२०	१	४६	४०
९	०	४	३०	०	६	०	०	७	३०	०	९	०	०	१०	३०	०	१२	०	०	१३	३०	०	१५	०	०	१६	३०	१	४५	०	२	०	०
१०	०	५	०	०	६	४०	०	८	२०	०	१०	०	०	११	४०	०	१३	२०	०	१५	०	०	१६	४०	०	१८	२०	१	५६	४०	२	१३	२०
११	०	५	३०	०	७	२०	०	९	१०	०	११	०	०	१२	५०	०	१४	४०	०	१६	३०	०	१८	२०	०	२०	१०	२	८	२०	२	२६	४०
१२	०	६	०	०	८	०	०	१०	०	०	१२	०	०	१४	०	०	१६	०	०	१८	०	०	२०	०	०	२२	०	२	२०	०	२	४०	०
१३	०	६	३०	०	८	४०	०	१०	५०	०	१३	०	०	१५	१०	०	१७	२०	०	१९	३०	०	२१	४०	०	२३	५०	२	३१	४०	२	५३	२०
१४	०	७	०	०	९	२०	०	११	४०	०	१४	०	०	१६	२०	०	१८	४०	०	२१	०	०	२३	२०	०	२५	४०	२	४३	२०	३	६	४०
१५	०	७	३०	०	१०	०	०	१२	३०	०	१५	०	०	१७	३०	०	२०	०	०	२२	३०	०	२५	०	०	२७	३०	२	५५	०	३	२०	०
१६	०	८	०	०	१०	४०	०	१३	२०	०	१६	०	०	१८	४०	०	२१	२०	०	२४	०	०	२६	४०	०	२९	२०	३	६	४०	३	३३	२०
१७	०	८	३०	०	११	२०	०	१४	१०	०	१७	०	०	१९	५०	०	२२	४०	०	२५	३०	०	२८	२०	०	३१	१०	३	१८	२०	३	४६	४०
२०	०	१०	०	०	१३	२०	०	१६	४०	०	२०	०	०	२३	२०	०	२६	४०	०	३०	०	०	३३	२०	०	३६	४०	३	५३	२०	४	२६	४०
३०	०	१५	०	०	२०	०	०	२५	०	०	३०	०	०	३५	०	०	४०	०	०	४५	०	०	५०	०	०	५५	०	५	५०	०	६	४०	०
४०	०	२०	०	०	२६	४०	०	३३	२०	०	४०	०	०	४६	४०	०	५३	२०	१	०	०	१	६	४०	१	१३	२०	७	४६	४०	८	५३	२०
५०	०	२५	०	०	३३	२०	०	४१	४०	०	५०	०	०	५८	२०	१	६	४०	१	१५	०	१	२३	२०	१	३१	४०	९	४३	२०	११	६	४०
६०	०	३०	०	०	४०	०	०	५०	०	१	०	०	१	१०	०	१	२०	०	१	३०	०	१	४०	०	१	५०	०	११	४०	०	१३	२०	०
६१	०	३०	३०	०	४०	४०	०	५०	५०	१	१	०	१	११	१०	१	२१	२०	१	३१	३०	१	४१	४०	१	५१	५०	११	५१	४०	१३	३३	२०
६२	०	३१	०	०	४१	२०	०	५१	४०	१	२	०	१	१२	२०	१	२२	४०	१	३३	०	१	४३	२०	१	५३	४०	१२	३	२०	१३	४६	४०
६३	०	३१	३०	०	४२	०	०	५२	३०	१	३	०	१	१३	३०	१	२४	०	१	३४	३०	१	४५	०	१	५५	३०	१२	१५	०	१४	०	०
६४	०	३२	०	०	४२	४०	०	५३	२०	१	४	०	१	१४	४०	१	२५	२०	१	३६	०	१	४६	४०	१	५७	२०	१२	२६	४०	१४	१३	२०
६५	०	३२	३०	०	४३	२०	०	५४	१०	१	५	०	१	१५	५०	१	२६	४०	१	३७	३०	१	४८	२०	१	५९	१०	१२	३८	२०	१४	२६	४०
६६	०	३३	०	०	४४	०	०	५५	०	१	६	०	१	१७	०	१	२८	०	१	३९	०	१	५०	०	२	१	०	१२	५०	०	१४	४०	०
६७	०	३३	३०	०	४४	४०	०	५५	५०	१	७	०	१	१८	१०	१	२९	२०	१	४०	३०	१	५१	४०	२	२	५०	१३	१	४०	१४	५३	२०

नक्षत्र-चरणान्त मे चन्द्र-स्पष्ट-चक्र २०

नक्षत्र	अश्विनी				भरणी				कृत्तिका				रोहिणी				मृग-	
चरण	१	२	३	४	१	२	३	४	१	२	३	४	१	२	३	४	१	२
राश्यादि	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	१	१	१	२
	३	६	१०	१३	१६	२०	२३	२६	०	३	६	१०	१३	१६	२०	२३	२६	०
	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०

नक्षत्र	शिरा		आर्द्रा				पुनर्वसु				पुष्य				आश्लेषा			
चरण	३	४	१	२	३	४	१	२	३	४	१	२	३	४	१	२	३	४
राश्यादि	२	२	२	२	२	२	२	२	३	३	३	३	३	३	३	३	३	४
	३	६	१०	१३	१६	२०	२३	२६	०	३	६	१०	१३	१६	२०	२३	२६	०
	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०

नक्षत्र	मघा				पूफा				उफा				हस्त				चि-	
चरण	१	२	३	४	१	२	३	४	१	२	३	४	१	२	३	४	१	२
राश्यादि	४	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	५	५	६
	३	६	१०	१३	१६	२०	२३	२६	०	३	६	१०	१३	१६	२०	२३	२६	०
	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०

नक्षत्र	त्रा		स्वाती				विशाखा				अनुराधा				ज्येष्ठा			
चरण	३	४	१	२	३	४	१	२	३	४	१	२	३	४	१	२	३	४
राश्यादि	६	६	६	६	६	६	६	६	७	७	७	७	७	७	७	७	७	८
	३	६	१०	१३	१६	२०	२३	२६	०	३	६	१०	१३	१६	२०	२३	२६	०
	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०

नक्षत्र	मूल				पूषा				उषा				श्रवण				ध-	
चरण	१	२	३	४	१	२	३	४	१	२	३	४	१	२	३	४	१	२
राश्यादि	८	८	८	८	८	८	८	८	९	९	९	९	९	९	९	९	९	१०
	३	६	१०	१३	१६	२०	२३	२६	०	३	६	१०	१३	१६	२०	२३	२६	०
	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०

नक्षत्र	निष्ठा		शतभिषा				पूभा				उभा				रेवती			
चरण	३	४	१	२	३	४	१	२	३	४	१	२	३	४	१	२	३	४
राश्यादि	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	११	११	११	११	११	११	११	११	११	०
	३	६	१०	१३	१६	२०	२३	२६	०	३	६	१०	१३	१६	२०	२३	२६	०
	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०

चक्र २१ का शेषांश

पल	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	२०	३०	४०	५०	स्थिर गति
६८	० १० १४	० २० २८	० ३० ४२	० ४० ५६	० ५१ १०	१ १ २४	१ ११ ३८	१ २१ ५२	१ ३२ ६	१ ४२ २०	३ २४ ४०	५ ७ ०	६ ४९ २०	८ ३१ ४०	११ ४५ ५३

भौम-साधन

(पृष्ठ ३२) गति ८।५० चालन १।३०।४०

दिन १ × ८।५० = ०।८।५० अंशादि
घटी ३० = १/२ × ८।५० = ०।४।२५ "
पल ४० = १/९० × ८।५० = ०।०। ५।५३।२० "
(०।१३।२१) =योग०।१३।२०।५३।२० " ऋण-चालनांश

पंक्तिस्थ भौम ५।२८।३६।३५ मे से
ऋण चालनांश ०।१३।२१ घटाया
स्पष्ट भौम = ५।२८।२६।१४ = शेष

बुध-साधन

६५।३२ = १।३५।३२ अंशादि गति। चालन १।३०।४०

१ × १।३५।३२ = १।३५।३२ अंशादि
३० = १/२ × १।३५।३२ = ०।४७।४६ "
४० = १/९० × १।३५।३२ = ०। १। ३।४१ "
ऋण चालनांश = २।२४।२१।४१ "

पंक्तिस्थ बुध २।२१।१३।५२ मे से
चालनांश २।२४।२२ घटाया
स्पष्ट बुध = २।१८।४९।३०

गुरु-साधन

१ × ९।६ = ०। ९। ६ अंशादि
३० = १/२ × ९।६ = ०। ४।३३ "
४० = १/९० × ९।६ = ०। ०। ६।४ "
ऋण चलनांश = ०।१३।४५।४ "

पंक्तिस्थ गुरु ३।२४।४६।५० में से
चालनांश ०।१३।४५ घटाया
स्पष्ट गुरु = ३।२४।३३। ५

शुक्र-साधन

१ × १।१४।५ = १।१४। ५ अंशादि
३० = १/२ × १।१४।५ = ०।३७। २।३० "
४० = १/९० × १।१४।५ = ०। ०।४९।२३ "
ऋण चलनांश = १।५१।५६।५३ "

पंक्तिस्थ शुक्र १।२८।११।५५ मे से
चालनांश १।५१।५७ घटाया
स्पष्ट शुक्र = १।२६।१९।५८

शनि-साधन

१ × ३।२२ = ०।३।२२ अंशादि
३० = १/२ × ३।२२ = ०।१।४१ "
४० = १/९० × ३।२२ = ०।०। २।१५ "
ऋण चालनांश = ०।५। ५।१५ "

पंक्तिस्थ शनि ४।१६।४२।४५ मे से
चालनांश ०। ५। ५ घटाया
स्पष्ट शनि = ४।१६।३७।४०

राहु-केतु-साधन

१ × ३।११ = ०।३।११ अंशादि
३० = ½ × ३।११ = ०।१।३५।३०
४० = ⅔ × ३।११ = ०।०।२।७

चालनांश ०।४।४८।३७

पंचिका राहु ६।२ ।४६।४६ में
चालनांश ०।४।४८ जोड़ा (ऋणी होने से विपरीत संस्कार)
स्पष्ट राहु = ६।२०।५४।३८
६ (छह राशि सदा जोड़िए)
केतु स्पष्ट = ।२०।५४।३८

दिन-घटी-पलादि में राहु-गति (सूक्ष्म रीति) चक्र २२

चालन के दिनादि		१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	२०	३०	४०	५०	६०
नियम	ऋण	०	०	०		०		०		०		१	१	२	२	३
दिन गुण में अंशादि		३	६	९	१२	१५	१९	२२	२५	२८	३१	३	३५	७	३९	१
घटी गुण में कलादि		१०	२१	३२	४३	५४	४	१५	२६	३७	४८	३६	२४	१२		४८
पल गुण में विकलादि		४८	३६	२५	१३	२	५	३८	२७	१५	४	८	१२	१६	२०	२५
विपल गुण में प्र० वि.		२५	५	१५	४०	५	३	५५	२०	४५	१	२	३	४०	५०	०

उदाहरण

चालन १।३ ।४ है, तो—
१ दिन = अंशादि = ।३।१०।४८।२५
३ घटी = कलादि = ०।१।३२।२४।१२।३०
४ पल = विकलादि = ।०। २। ७।१२।१६।४०
सूक्ष्म रीति द्वारा चालनांश = ।४।४८।११।५१।४६।४ (।४।४८ अंशादि)

चन्द्र-गति-साधन

देखिए चक्र २१। ऊपर की पंक्ति (बायें से दायें) में भभोग (सर्वर्क्ष) के पल हैं। वामभाग की प्रथम पंक्ति (ऊपर से नीचे तक) में भभोग (सर्वर्क्ष) की घटी हैं। दाहिने भाग की अन्तिम पंक्ति (ऊपर से नीचे तक) में स्थिर-गति अर्थात् भभोग के घटी मात्र की चन्द्र-गति है। अपने भभोग के घटी के सामने और भभोग के पल के नीचे गति-फल है। अब भभोग पल का गति-फल इकट्ठा कर (जोड़कर) स्थिर-गति में घटाने से चन्द्र की गति स्पष्ट होती है। यथा—भभोग ५६।३१ है, तो—

५६ के सामने ३ के नीचे कलादि ७।३१।२
५६ के सामने १ के नीचे „ ०।४५। ९
गति-फल ८।१६।३९

स्थिर गति १४।१७। ९ में से
गति फल ०। ८।१७ घटाया
चन्द्र गति स्पष्ट = १४। ८।५२ अंशादि
कलादि गति ८४८।५२

चन्द्र-साधन

भभोग में चार से भाग देकर एक चरण का मान जानिए। भयात में एक चरण मान से भाग देकर लब्धि से नक्षत्र के गत चरण तथा शेष भत-चालन ज्ञात जानिए। फिर चन्द्र-गति और चालन का अनुपात चक्र १९ के द्वारा करने पर आपको चालन-फल मिलेगा। फिर चक्र २० के द्वारा, नक्षत्र के गत चरण तुल्य चन्द्र-स्पष्ट में चालन-फल जोड़ने से चन्द्र-स्पष्ट होता है।

अथवा

यदि चक्र १६ के द्वारा अनुपात करने में कठिनता हो, तो शेष धन–चालन के घट्यादि का चन्द्र–गति से (गोमूत्रिका द्वारा) गुणा कर, ६० से भाग देकर, चालन–फल निकालिए। शेष विधि पूर्ववत् है।

उदाहरण

एक चरण का मान १४।८।१५ (पृष्ठ १३९) भयात २६।५५।० − १४।८।१५ = शेष १२।४६।४५ घट्यादि धनचालन तथा कृत्तिका का प्रथम चरण गत। चन्द्रगति ८४८।५२ है। चक्र १६ के द्वारा अनुपात—

८०० × १२ घटी	=	९।४०।० (पृष्ठ १४३)	
४० × १२ "	=	०।८।० "	
८ × १२ "	=	०।१।३६ (पृष्ठ १४२)	
८४८ × १२ "		९।४९।३६ =	२।४९।३६ घटी–फल
८०० × ४० पल		८।५३।२०	
८०० × ६ "		२।०।०	
४० × ४० "		०।२६।४०	
४० × ६ "		०।६।०	
८ × ४० "		०।५।२०	
८ × ६ "		०।१।१२	
८४८ × ४६ "		११।३२।३२ =	०।११।३२।३२ पल–फल
८०० × ४० विपल		८।५३।२०	
८०० × ५ "		१।६।४०	
४० × ४० "		०।२६।४०	
४० × ५ "		०।३।२०	
८ × ४० "		०।५।२०	
८ × ५ "		०।०।४०	
८४८ × ४५ "		१०।३९।० =	०।०।१०।३९।० विपल–फल

चालन–फल = ३। १।१९। ८ (८४८ मात्र पर)

इस चक्र १६ के द्वारा गणित का व्यर्थ वितान (फैलाव) हो गया। अतः इसे गोमूत्रिका द्वारा शीघ्रता से सिद्ध किया जा रहा है—

चन्द्र की अंशादि गति

	१२	१४।८।५२
शेष =	४६	१६८। ९६। ६२४
		६८
		६८६। ३६२। २४५
योग में	४५	। ६३०। ३६० [आगे उपेक्ष्य]
		१६८।७८२।१६४६।२६०८ ÷ ६०
		१३ २८ ४८ लब्धि
		१८१ ८१० १६९४
	लब्धि ३	१ ३० १४ शेष

ससन्धि द्वादश-भाव-साधन

दशम भाव की राशि में ६ जोड देने से चतुर्थ भाव बन जाता है। फिर चतुर्थ भाव में से लग्न भाव को घटावें, शेष में ६ से भाग दे, तो लब्धि में अंश, फिर शेष में ६० का गुणा कर, कला जोड के ६ से भाग दे, तो लब्धि में कला, फिर शेष में ६० का गुणा कर, विकला जोड के ६ से भाग दे, तो लब्धि मे विकला ग्रहण करे, फिर शेष त्याग देना चाहिए। यही अंश, कला और विकला को 'षष्ठांश' कहते हैं।

इस षष्ठांश को लग्न में जोडे, तो लग्न की विराम सन्धि या धनभाव की प्रारम्भ सन्धि होती है। इस सन्धि में षष्ठांश जोड़े, तो धनभाव होता है। इस धनभाव में षष्ठांश जोडने से धनभाव की विराम सधि या तृतीय भाव की प्रारम्भ सन्धि होती है। इस सन्धि में षष्ठांश जोड़ने से तृतीय भाव होता है। इस तृतीय भाव में षष्ठांश जोडने से तृतीय भाव की विराम सन्धि या चतुर्थ भाव की प्रारम्भ सन्धि होती है। इस सन्धि में षष्ठांश जोडने से चतुर्थ भाव होता है।

३० अंश में से षष्ठांश के अंशादि को घटाने से 'शेषांश' होता है। फिर चतुर्थ भाव में शेषांश जोड़ने से चतुर्थ भाव की विराम सन्धि या पंचम भाव की प्रारम्भ सन्धि होती है। इस सन्धि में शेषांश जोडने से पंचम भाव होता है। पंचम भाव में शेषांश जोडने से पंचम भाव की विराम सन्धि या षष्ठ भाव की प्रारम्भ सन्धि होती है। इस सन्धि में शेषांश जोडने से षष्ठ भाव होता है। इस षष्ठ भाव में शेषांश जोड़ने से षष्ठ भाव की विराम सन्धि या सप्तम भाव की प्रारम्भ सन्धि होती है। फिर ससन्धि लग्नादि भावों की राशि मात्र में ६ जोडते जाने से ससन्धि (सन्धि सहित) द्वादश-भाव-स्पष्ट हो जाते हैं।

दशम भाव + ६ = चतुर्थ भाव

चतुर्थ भाव − लग्न ÷ ६ = षष्ठांश (लब्धि के अंक)

लग्न + षष्ठांश = योगफल (१) = लग्न की विराम सन्धि या धनभाव की प्रारम्भ सन्धि।

योगफल (१) + षष्ठांश = योगफल (२) = धनभाव।

योगफल (२) + षष्ठांश = योगफल (३) = धनभाव की विराम सन्धि या तृतीय भाव की प्रारम्भ सन्धि।

योगफल (३) + षष्ठांश = योगफल (४) = तृतीय भाव।

योगफल (४) + षष्ठांश = योगफल (५) = तृतीय भाव की विराम सन्धि या चतुर्थ भाव की प्रारम्भ सन्धि।

योगफल (५) + षष्ठांश = चतुर्थ भाव।

३०।०।० − षष्ठांश = शेषांश

चतुर्थ भाव + शेषांश = योगफल (१) = चतुर्थ भाव की विराम सन्धि या पंचम भाव की प्रारम्भ सन्धि।

योगफल (१) + शेषांश = योगफल (२) = पंचम भाव।

योगफल (२) + शेषांश = योगफल (३) = पंचम भाव की विराम सन्धि या षष्ठ भाव की प्रारम्भ सन्धि।

योगफल (३) + शेषांश = योगफल (४) = षष्ठ भाव।

योगफल (४) + शेषांश = षष्ठ भाव की विराम सन्धि या सप्तम भाव की प्रारम्भ सन्धि।

ससन्धि लग्न से षष्ठ भाव तक + ६ राशि = क्रमश ससन्धि सप्तम से द्वादश भाव तक।

उदाहरण

दशम भाव ४।१३।१५।० + ६ राशि = चतुर्थ भाव १०।१३।१५।०

लग्न ७। ८। ५।०

षष्ठांश राश्यादि [०।१५।५१।४०] = ३। ५।१०।० ÷ ६

भाव	स्पष्ट				भाव	स्पष्ट
लग्न	७। ८। ५। ०	+	६ राशि	=	सप्तम	१। ८। ५।
	०।१५।५१।४०	षष्ठांश				
सन्धि	७।२३।५६।४०	+	६ राशि	=	सन्धि	१।२३।५६।४०
धन	८। ६।४८।२०	+	६ राशि	=	अष्टम	२। ६।४८।२०
सन्धि	८।२५।४०। ०	+	६ राशि	=	सन्धि	२।२५।४० । ०
तृतीय	६।११।३१।४०	+	६ राशि	=	नवम	३।११।३१।४०
सन्धि	६।२७।२३।२०	+	६ राशि	=	सन्धि	३।२७।२३।२०
चतुर्थ	१ ।१३।१५।	+	६ राशि	=	दशम	४।१३।१५। ०
	।१४। ८।२०	शेषांश				
सन्धि	१ ।२७।२३।२०	+	६ राशि	=	सन्धि	४।२७।२३।२०
पञ्चम	११।११।३१।४०	+	६ राशि	=	लाभ	५।११।३१।४
सन्धि	११।२५।४०। ०	+	६ राशि	=	सन्धि	५।२५।४०। ०
षष्ठ	। ६।४८।२०	+	६ राशि	=	व्यय	६। ६।४८।२०
सन्धि	०।२३।५६।४०	+	६ राशि	=	सन्धि	६।२३।५६।४०
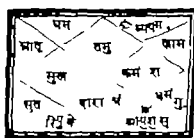
जन्म-चक्र २४

चलित-चक्र २५

चलित-चक्र को यदि आप त्रैराशिक-चक्र कहें, तो जहाँ तक मेरी समझ है—इसमें आप कोई भूल नहीं कर रहे हैं, इसका कारण आगे विस्वा-साधन से ही प्रगट होगा साथ ही चलित-चक्र में ग्रह-स्थापन का निश्चित ज्ञान भी हो जाता है।

विस्वा-साधन

सन्धि के राशि अंश कला और विकला के तुल्य जो ग्रह हो, वह ग्रह शून्य विस्वा फल देता है, तथा सन्धि में ही उस ग्रह को रखना चाहिए। जो ग्रह, भाव के राशि-अंश-कला-विकला के तुल्य हो, वह ग्रह २० विस्वा फल देता है, तथा भाव के मध्य में रखा जाता है। शेष ग्रह प्रारम्भ सन्धि से भाव तक या भाव से विराम सन्धि तक रहते हैं तथा वे ग्रह, भाव में ही रखे हुए, स्थूलतया दृष्टिगोचर होते हैं, सूक्ष्मतः भाव से न्यूनाधिक ग्रह रहने का ध्यान रखकर फल कहना चाहिए। स्पष्टतया समझने के लिए विस्वा-साधन करना आवश्यक है। जब सन्धि में शून्य विस्वा तथा भाव में २० विस्वा फलदायी ग्रह होता है तब, त्रैराशिक द्वारा जानना चाहिए कि, अमुक ग्रह, किस भाव में कितने विस्वा फल देगा?

सन्धि (शून्य विश्वा) से क्रमश बढते-बढते, भाव (२० विश्वा) तक फल देता है, इसी प्रकार भाव (२० विश्वा) से घटते-घटते, संधि (शून्य विश्वा) तक फल ग्रहो का होता है।

यदि भाव से ग्रह कम हो तो, ग्रह में से भाव की प्रारम्भ सन्धि को घटावे। यदि भाव से ग्रह अधिक हो तो, भाव की विराम सन्धि में से ग्रह को घटावे, शेष मे २० का गुणा करे, फिर जिस सन्धि के द्वारा शेष निकाला था, उस सन्धि और भाव का अन्तर जान लीजिए। उसी अन्तर से, २० गुणित शेष में, भाग दीजिए, तो, लब्धि में विश्वा प्राप्त हो जाते हैं।

साराश यह है, प्रारम्भ सन्धि से भाव तक रहनेवाला ग्रह 'चय–फल' करता है अर्थात प्रारम्भ सन्धि (शून्य विश्वा) से भाव (२० विश्वा) तक फल को एकत्र (इकट्ठा) करता है। तथैव भाव से विराम सन्धि तक रहनेवाला ग्रह 'क्षय–फल' करता है अर्थात भाव (२० विश्वा) से विराम सन्धि (शून्य विश्वा) तक फल को विनाश (क्षीण) करता है। इसी प्रकार सन्धि के समान राशि–अश–कला–विकला वाला ग्रह शून्य विश्वा तथा भाव के समान राशि–अंश–कला–विकला वाला ग्रह २० (बीस) विश्वा अर्थात् भाव का पूर्ण फल देता है।

भाव के प्रारम्भ सन्धि से, भाव के विराम सन्धि तक के मध्य में स्थित ग्रह, भाव में ही रखा जाता है तथा भाव की प्रारम्भ सन्धि से कम राश्यादि वाले ग्रह को पिछले भाव मे रखना चाहिए। इसी प्रकार भाव की विराम सन्धि से अधिक राश्यादि वाले ग्रह को अगले (अग्रिम) भाव में रखना चाहिए।

उदाहरणार्थ सूर्य ग्रह, अष्टम भाव की प्रारम्भ सन्धि (सप्तम भाव की विराम सन्धि) से आगे (अधिक) और अष्टम भाव से पीछे (कम) है। देखिए, अष्टम भाव की प्रारम्भ सन्धि १।२३।५६।४० है तथा सूर्य २।०।१८।५५ है एव अष्टम भाव की ओर जा रहा है। "भाव से ग्रह कम है"—के अनुसार।

अष्टम भाव	२। ६।४८।२०	मे से
अष्टम भाव की प्रारम्भ सन्धि (सप्तम की वि० स०)	१।२३।५६।४०	को घटाया
(२० विश्वा फल)	०।१५।५१।४०	शेष मे
सूर्य	२। ०।१८।५५	मे स
अष्टम भाव की प्रारम्भ सन्धि	१।२३।५६।४०	को घटाया
	०। ६।२२।१५	शेष में कितना विश्वा ?

$$= \frac{६।२२।१५ \times २०}{१५।५१।४०} = \text{लगभग ८ विश्वा फल (अष्टम भावस्थ)}$$

जब अंशादि १५।५१।४० में २० विश्वा फल होता है, तब अशादि ६।२२।१५ मे कितना विश्वा फल होगा। उत्तर मिलेगा, लगभग ८ विश्वा। इसी प्रकार विश्वा ज्ञान तथा भावस्थ ग्रह–स्थिति को स्पष्ट रीति से जानना चाहिए।

चन्द्र–विश्वा (भाव से कम ग्रह के अनुसार)

चन्द्र	१। ३। १।३३		सप्तम भाव	१। ८। ५। ०
सप्तम भाव की प्रारम्भ सन्धि	०।२३।५६।४०		सन्धि	०।२३।५६।४०
	६। ४।५३		२० विश्वा =	१४। ८।२०

$$= \frac{६।४।५३ \times २०}{१४।८।२०} = \text{लगभग ९३ विश्वा फल (सप्तम भावस्थ) क्षीण चन्द्र।}$$

स्पष्टीकरण

राहु सर्वदा वक्री रहता है। कुछ समय पूर्व, व्ययान्त सन्धि ६।२३।४६।४० पर था, तब शून्य विस्वा फल कर रहा था। फिर राहु, व्ययान्त सन्धि से व्ययभाव (६।९।३८।२०) की ओर वक्रगति से चला तब जन्म समय तक ६।२०।४४।३७ ही पर पहुंच पाया अभी इसे ६।९।३८।२० (व्यय भाव) तक पहुंचने में अधिक समय लगेगा। व्ययान्त सन्धि से व्ययभाव तक १४।८।२० का अन्तर है। व्ययान्त सन्धि से राहु तक का अन्तर ३।२।३ है अर्थात् १४।८।२० में २० विस्वा फल है, तो ३।२।३ में कितना फल होगा? स्थूल रीति से यदि ३×२०÷१४ करें अर्थात् १४ दिन में २० विस्वा, तो ३ दिन में कितना? यदि ३ में २० का गुणाकर, १४ से भाग दें, तो लब्धि में ४ अवश्य मिलेंगे। इसी भाँति सूक्ष्म-गणित करके विस्वा ४।१७ के लगभग निकाला गया है। यथा—

राहु–विस्वा (विपरीत-गति भाव से अधिक ग्रह के अनुसार)

व्ययान्त सन्धि = ६।२३।४६।४० } अन्तर ३।२।३
राहु = ६।२०।४४।३७

व्ययभाव = ६।९।३८।२० } अन्तर १४।८।२०

$$= \frac{३।२।३ \times २०}{१४।८।२०} = \frac{६०।४१।०}{१४।८।२०} = \frac{२१८४६०}{५०९००} = \frac{१०९२३}{२५४५}$$

```
२५४५) १०९२३ (४
       १०१८०
       ---------
         ७४३×६०
       ---------
२५४५) ४४५८० (१७
       २५४५
       -------
       १९१३०
       १७८१५
       -------
        १३१५
```

$$\frac{१३१५}{२५४५} = \frac{२६३}{५०९} = \text{विस्वा फल} = ४।१७\frac{२६३}{५०९}$$ (४ विस्वा व्यवहार योग्य व्ययभावस्थ)

राफेल्स् एफीमेरीज द्वारा कार्य

इसमें [ग्रीनविच (इंगलैण्ड) के १२ बजे मध्यान्ह अर्थात् भारत के ५।३० बजे (स्टैण्डर्ड) शाम के] ग्रह रखे गये हैं। इसी प्रकार ये ग्रह ०।० अक्षांश (विषुववृत्त) के हैं। इसमें वेलान्तर और चर (दो संस्कार) किये जायँ, तो आपके स्थानीय ग्रह बन जाते हैं। वेलान्तर संस्कार, २१ मार्च से २२ सितम्बर तक ऋण एवं २३ सितम्बर से २० मार्च तक धन करना चाहिए। चर संस्कार, देशान्तर ७५।५० (उज्जैन) से पूर्व (अधिक देशान्तर वाले) नगरों में ऋण एवं पश्चिम (कम देशान्तर वाले) नगरों में धन करना चाहिए। तब आपके स्थानीय-सायन-स्पष्ट-ग्रह होते हैं। इनमें से अयनांश घटाने पर निरयण ग्रह

ता २०।६।२० को ६४ वर्षीय पंचाग (मुरार, ग्वालियर) द्वारा सूर्य २। ६। ४
ता १३।६।२० को " " १।२९।२३
७ दिन ०। ६।४१ (साप्ताहिक गति)

६।४१ ÷ ७ = ५७।१७ कलादि गति (सूर्य की) होगी।

ता. १३।६।२० का सूर्य १।२९।२३
ता १४।६।२० का गति संस्कार + ५७।१७
ता १४।६।२० ई० को स्टै टा. ५।३० पी एम = २। ०।२०।१७ = सूर्य
१८।४४ मिनटादि का गति संस्कार = ०। ०। ०।४५ | यह अधिक स्थूल है क्योंकि ६४ वर्षीय पचाग
२। ०।१९।३२ | मे ग्रह की विकला नहीं रखी गयी।

हमारा निवेदन है कि, ६४ वर्षीय पंचाग (श्री प० गगाप्रसाद जी ज्योतिपाचार्य, मुरार, ग्वालियर से) मॅगाकर, प्रत्येक को रखना चाहिए। इसके ग्रह-स्पष्ट बड़े ही काम के हैं। आगे जब हम हर्शल और नेपच्यून का फल लिखेंगे, तब आपको जानने की आवश्यकता पड़ेगी, कि हमारी कुण्डली मे हर्शल और नेपच्यून कहाँ हैं? इस ग्वालियर पंचाग द्वारा आपको सरलता स हर्शल और नेपच्यून का ज्ञान (ई० सन १८९० से सन् १९५३ ई० तक का) निरयण विधि से हो जायगा। अस्तु।

पहिले (सूर्य-साधन मे) ऋण-चालन (घट्यादि २।३२।४३ बनाकर) दिखाया जा चुका है। इसी के द्वारा चन्द्र, मगल, बुध, गुरु, शनि, राहु, केतु, हर्शल और नेपच्यून स्पष्ट करके रखे जाते हैं।

चन्द्र-साधन

ता १४।६।२० के चन्द्र १।२३।४६।१७ मे से
ता १३।६।२० " १। ९।१०।५८ को घटाया
शेष १४।३८।१९ चन्द्र-गति

$$\frac{(\text{चन्द्र-गति } १४।३८।१९ \times २।३२।४३)}{६०} = ३७।१५।३३।३५।३७ = (३७।१६ \text{ व्यवहार योग्य})$$

ता १४।६।२० के चन्द्र १।२३।४६।१७ में से
३७।१६ घटाया
सायन चन्द्र १।२३।१२। १
अयनांश २२।४३।४३
निरयण चन्द्र १। ०।२८। ८

भौम-साधन

ता १४।६।२० का भौम ६।२२।२४
ता १३।६।२० का भौम ३।२२।२४
शेष १०

$$\text{चालन } \frac{२।३२।४३ \times १०}{६०} = ०।२५।२७ \text{ कलादि}$$

ता १४।६।२० का भौम ६।२२।२४ मे से
चालन ०। ०।२५ घटाया
सायन भौम ६।२१।२३।३५ मे से
अयनांश २२।४३।४३ घटाया
निरयण भौम ५।२८।३६।५२

बुध-साधन

ता. १४।६।२० का बुध ३।१३।१८
ता १३।६।२० का बुध ३।११।३८
१।४० अंशादि गति

$$\text{चालन } \frac{२।३२।४३ \times १।४०}{६०} = ४।१४।३१ \quad (४।१५)$$

ता १४।६।२० का बुध ३।१३।१८
०। ४।१५
सायन बुध ३।१३।१३।४५
अयनांश २२।४३।४३
निरयण बुध २।२०।२९।५२

राफेल्स-ग्रह

मत	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु	हर्शल	नेप	प्लूटो
सायन	२ २३ ३ २	१ २३ १२ १	६ २१ २३ ३५	३ १३ १३ ४५	४ १४ ५८ ३५	२ १७ ४४ ५२	५ ६ ३ ५२	७ १३ ३७ ८	१ १३ ३७ ८	११ ५ ४० ०	४ ६ ३३ ५५	३ ६ ५४ ३३
निरयण	२ ० १९ ६	१ ० २८ ८	५ २८ ३६ ४२	२ २० २६ ५२	३ २२ १४ ४२	१ २५ ० ५६	४ १३ १९ ५६	६ २० ५३ १५	० २० ५३ १५	१० १२ ५६ ७	३ १६ ५० २	२ १४ १० ४०

हर्शल, नेपच्यून और प्लूटो

हर्शल, नेपच्यून और प्लूटो (तीन ग्रहों) की खोज, पाश्चात्य खगोल वेत्ताओं की अपूर्व देन है। सूर्यादि नवग्रहों की पंक्ति में इन्हें भी रखकर द्वादश ग्रह कर दिये हैं। सन १७८१ के १३ मार्च को १० बजे रात्रि में पाश्चात्य खगोल वेत्ता मिस्टर विलियम हर्शल (इंगलैण्ड नरेश तृतीय जार्ज के राजपण्डित) ने, अपनी दूरबीन (दूरदर्शी यन्त्र) द्वारा 'हर्शल' को देखा। हर्शल के नामों में तो मतभेद बहुत हुआ और अभी भी कुछ अंश में वर्तमान भी हैं। अतएव हर्शल, यूरनस, प्रजापति और वरुण ये चार नाम वर्तमान में प्रचलित हैं, इनमें पूर्व के दो नाम अँग्रेजी भाषा के तथा उत्तर के दो नाम संस्कृत-भाषा के हैं। ज्योतिर्विद पं० श्री निवास महादेव जी पाठक (रतलाम) ने हर्शल का संस्कृत भाषा में प्रजापति नाम दिया है किन्तु केतकी ग्रह-गणित-कार केतकर महोदय ने हर्शल का नाम वरुण दिया है।

"यूरुपीयैरुपज्ञातो ह्यर्वाक्काले महाग्रहौ। वरुणेन्द्रेतिनामभ्या ज्योतिर्गणित ईरितौ ॥"

इसी प्रकार सन् १८२० में (हर्शल की पूर्व निश्चित गति में) कुछ अन्तर आने लगा, तब केंब्रिज के खगोल वेत्ता मि० एडम तथा फ्रान्स के खगोलवेत्ता मि० मानस्युअर लवीयर ने बर्लिन के खगोलवेत्ता डॉक्टर गॉल महोदय को सूचना दिया कि "आप ता० २३ सितम्बर १८४६ ई० के दिन कुम्भराशि के २६ अंश पर वेध (अब्जरवेशन) करके देखिए" तदनुसार डॉ० गॉल को नेपच्यून के दर्शन हुये। हर्शल के नामों की भाँति, इसे भी नेपच्यून, वरुण और इन्द्र कहते हैं। हर्शल का प्रजापति एवं नेपच्यून का वरुण नाम श्री जनार्दन बाला जी मोडक महोदय ने और नेपच्यून का इन्द्र नाम श्री केतकर महोदय ने दिया है जैसा कि पूर्वोक्त श्लोक में स्पष्ट है। प्लूटो के फलों का पूर्ण विवेचन अभी तक नहीं होसका।

हर्शल-साधन

पृष्ठ १६०-१६१ में एक चक्र है। लगभग ७ वर्ष में एक राशि एवं ८३ वर्ष ११ मास ४ दिन में एक भगण (बारहों राशि का भ्रमण) इस ग्रह का होता है। अतएव आप इसका एक भगण ८४ वर्ष का ही (लगभग) जानकर आगे दिये हुए चक्र के द्वारा इस ग्रह का राशि भ्रमण इस प्रकार जानिए। अभीष्ट ईस्वी सन् में ८४ का भाग दीजिए, शेष बचे हुए अंक के सामने (दाहिने), प्रत्येक अंग्रेजी मास की प्रथम तारीख के नीचे सायन राशि, अंश वाला स्पष्ट हर्शल जानिए। इसमें से अपने समय का अयनांश घटा देने पर, निरयण हर्शल प्राप्त होगा।

सन से संवत जानने की विधि

किसी सन, मास और तारीख में ५७।७।१६ जोड़ने से संवत् और सूर्य के राशि-अंश प्राप्त हो जाते हैं। प्रायः जनवरी से मार्च तक ५६।७।१६ ही जोड़िए। यथा—

(१) सन १९५३ । ४ । १३ (ता० १३ एप्रिल १९५३)
        ५७ । ७ । १६
        २०१० । ११ । २९ (संवत सूर्य राश्यंश सहित)

(२) सन १९५४ । १ । १४
        ५६ । ७ । १६
संवत २०१० । ९ । ०

इसी प्रकार किसी संवत् और सूर्य के राशि अंश में से ४।७।१६ घटाने पर सन्, मास और तारीख आ जाती है। प्राय: ८।१२ सूर्य से ११।१२ सूर्य तक के समय में ४।७।१६ ही घटाइए।

सायन—हर्शेल—चक्र

चक्र—परिचय

इसके प्रथम पंक्ति में शेषांक रखे गये हैं जो कि किसी भी सन में ८४ से भाग देकर शेष आते हैं। दूसरी पंक्ति में ८४ वर्षान्तर वाले सन रखे गये हैं (जो कि सन १८४८ से सन २१ तक अर्थात् ८४ वर्ष हैं) इनके आगे पीछे वर्षों के भी समान हर्शेल जाना जा सकता है (अर्थात् किसी सन में ८४ का भाग देकर शेषांक द्वारा) तीसरी पंक्ति से आठवीं पंक्ति तक दो-दो मासों के अन्तर से हर्शेल के राशि और अंश (सायनांश) बताये गये हैं। यथा—

सन् १९३२ के १ मई को सायन हर्शेल मेष के ० अंश पर है तथा १ जून को २१ अंश पर एवं एक जुलाई का २८ अंश पर है। इसी प्रकार यहाँ नहीं लिखे गये सन मास (फरवरी आदि) के भी राशि अंश अनुपात द्वारा जानिए। हाँ कभी-कभी अयनांश के समान हर्शेल के अंश आने पर (निरयण) राशि भेद हो सकता है, जिसे उसी वर्ष वाले साप्ताहिक भास्कर (वन्दन पंचांग) द्वारा या अपनी गणित द्वारा निश्चय किया जा सकता है।

शेषांक	सन			जन १	मार्च १	मई १	जुलाई १	सित १	नव १
०(८४)	१८४८	१९३२	२०१६	मेष १४	१६	०	२२	२२	२०
१	१८४९	१९३३	२०१७	मेष १८	२०	२१	२६	२१	२४
२	१८५०	१९३४	२०१८	मेष २२	२४	२७	वृष		मि. २८
३	१८५१	१९३५	२०१९	मेष २६	८	वृष १	४	४	२
४	१८५२	१९३६	२०२०	वृष ०	२	५	८	८	६
५	१८५३	१९३७	२०२१	वृष ५	६	९	१२	१३	११
६	१८५४	१९३८	२०२२	वृष ९	९	१२	१६	१७	१५
७	१८५५	१९३९	२०२३	वृष १३	१३	१६	२	१	१९
८	१८५६	१९४०	२०२४	वृष १७	१७	२०	२४	२५	२४
९	१८५७	१९४१	२०२५	वृष २१	२२	२४	२८	२९	२८
१	१८५८	१९४२	२०२६	वृष २६	२६	२८	मि २	३	२
११	१८५९	१९४३	२०२७	मिथुन		२	६	८	७
१२	१८६०	१९४४	२०२८	मिथुन ४	४	६	१	१२	११
१३	१८६१	१९४५	२०२९	मिथुन ९	८	१	१४	१६	१६
१४	१८६२	१९४६	२०३०	मिथुन१३	१२	१४	१८		२
१५	१८६३	१९४७	२०३१	मिथुन१८	१७	१९	२२	५	२५
१६	१८६४	१९४८	२०३२	मिथुन २	२१	२३	२६	२९	२९
१७	१८६५	१९४९	२०३३	मिथुन२७	२५	२७	क	३	४
१	१८६६	१९५०	२०३४	कर्क २		२	४	८	८
१९	१८६७	१९५१	२०३५	कर्क ६	४	५	९	१	१३
२	१८६८	१९५२	२०३६	कर्क ११	९	१	१३	१६	१७
२१	१८६९	१९५३	२०३७	कर्क १६	१४	१४	१७	२१	२
२२	१८७०	१९५४	२०३८	कर्क २२	१८	१९	२१	२५	२७
२३	१८७१	१९५५	२०३९	कर्क २५	२३	२३	२६	२९	सिं१
२४	१८७२	१९५६	२०४०	सिं	क.२८	२७	सिं	४	६
२५	१८७३	१९५७	२०४१	सिं ५	२	२	५	८	११
२६	१८७४	१९५८	२०४२	सिं १	७	७	९	१३	१५
२७	१८७५	१९५९	२०४३	सिं १५	१२	११	१३	१७	२
२८	१८७६	१९६०	२०४४	सिं १९	१७	१६	१८	२२	२४

सायन – हर्शल – चक्र

क्षेपांक	सन			जन १	मार्च १	मई १	जुलाई १	सित १	नव १	क्षेपांक	सन			जन १	मार्च १	मई १	जुलाई १	सित १	नव १
२९	१८७७	१९६१	२०४५	सि २४	२२	२१	२२	२६	२९	५७	१९०५	१९८९	२०७३	मकर ०	३	३	१	ध २९	म०
३०	१८७८	१९६२	२०४६	सि २९	२७	२५	२७	क ०	४	५८	१९०६	१९९०	२०७४	मकर ४	७	७	५	३	४
३१	१८७९	१९६३	२०४७	क ४	२	०	१	४	८	५९	१९०७	१९९१	२०७५	मकर ८	११	११	१०	८	८
३२	१८८०	१९६४	२०४८	कं ९	७	५	६	९	१३	६०	१९०८	१९९२	२०७६	म १२	१५	१६	१४	१२	१३
३३	१८८१	१९६५	२०४९	कं १४	१२	१०	११	१४	१७	६१	१९०९	१९९३	२०७७	म १६	१९	२०	१८	१६	१७
३४	१८८२	१९६६	२०५०	कं १९	१७	१५	१५	१८	२२	६२	१९१०	१९९४	२०७८	म १९	२३	२४	२३	२०	२१
३५	१८८३	१९६७	२०५१	कं २३	२२	१९	२०	२३	२६	६३	१९११	१९९५	२०७९	म २३	२७	२८	२७	२५	२५
३६	१८८४	१९६८	२०५२	कं २८	२७	२४	२४	२७	तु १	६४	१९१२	१९९६	२०८०	म २७	कुम्भ १	२	१	म २९	२९
३७	१८८५	१९६९	२०५३	तुला ३	२	कं २९	क २९	तुला २	६	६५	१९१३	१९९७	२०८१	कुम्भ १	४	६	५	३	३
३८	१८८६	१९७०	२०५४	तुला ८	७	४	४	६	१०	६६	१९१४	१९९८	२०८२	कुम्भ ५	८	११	१०	७	७
३९	१८८७	१९७१	२०५५	तु १२	१२	९	८	११	१४	६७	१९१५	१९९९	२०८३	कुम्भ ९	१२	१४	१४	११	११
४०	१८८८	१९७२	२०५६	तु १६	१७	१४	१३	१५	१९	६८	१९१६	२०००	२०८४	कु १३	१६	१८	१८	१६	१५
४१	१८८९	१९७३	२०५७	तु २२	२१	१९	१८	२०	२३	६९	१९१७	२००१	२०८५	कु १७	२०	२२	२२	२०	१९
४२	१८९०	१९७४	२०५८	तु २६	२६	२४	२३	२४	२८	७०	१९१८	२००२	२०८६	कु २०	२४	२६	२६	२४	२३
४३	१८९१	१९७५	२०५९	वृश्चिक १	१	तु २९	२७	२९	वृ २	७१	१९१९	२००३	२०८७	कु २४	२७	मीन ०	०	कु २८	२७
४४	१८९२	१९७६	२०६०	वृ ५	६	४	२	३	७	७२	१९२०	२००४	२०८८	कु २८	मीन १	४	४	२	१
४५	१८९३	१९७७	२०६१	वृ १०	१०	८	६	७	११	७३	१९२१	२००५	२०८९	मीन २	५	८	८	६	५
४६	१८९४	१९७८	२०६२	वृ १४	१५	१३	११	१२	१५	७४	१९२२	२००६	२०९०	मीन ६	९	१२	१२	११	९
४७	१८९५	१९७९	२०६३	वृ १९	२०	१८	१६	१५	१९	७५	१९२३	२००७	२०९१	मीन ९	१२	१५	१६	१५	१३
४८	१८९६	१९८०	२०६४	वृ २३	२४	२३	२१	२१	२४	७६	१९२४	२००८	२०९२	मी १३	१६	१९	२०	१९	१७
४९	१८९७	१९८१	२०६५	वृ २७	२९	२८	२५	२५	२८	७७	१९२५	२००९	२०९३	मी १७	२०	२३	२४	२३	२१
५०	१८९८	१९८२	२०६६	धनु २	४	२	०	वृ २९	ध १	७८	१९२६	२०१०	२०९४	मी २१	२४	२७	२८	२७	२५
५१	१८९९	१९८३	२०६७	धनु ५	७	६	४	३	५	७९	१९२७	२०११	२०९५	मी २५	२७	मेष १	२	१	मी २९
५२	१९००	१९८४	२०६८	धनु ९	११	१०	८	७	१०	८०	१९२८	२०१२	२०९६	मी २९	मेष १	४	६	५	३
५३	१९०१	१९८५	२०६९	ध १३	१६	१५	१३	१२	१४	८१	१९२९	२०१३	२०९७	मेष ३	५	८	१०	९	७
५४	१९०२	१९८६	२०७०	ध १७	२०	२०	१७	१६	१८	८२	१९३०	२०१४	२०९८	मेष ६	९	१२	१४	१५	११
५५	१९०३	१९८७	२०७१	ध २२	२४	२४	२२	२०	२२	८३	१९३१	२०१५	२०९९	मेष १०	१२	१६	१८	१८	१५
५६	१९०४	१९८८	२०७२	ध २६	२८	२८	२६	२५	२६	८४	१९३२	२०१६	२१००	मेष १४	१६	२०	२२	२२	२०

भौमादि ग्रहों की भाँति हर्शल आदि तीनों ग्रह, वक्री एवं मार्गी होते रहते हैं।

सायन-नेपच्यून-चक्र

सन्	जनवरी	मार्च	मई	जुला.	सित.	नव
१८८०	वृष ७	७	९	११	१२	११
१८८१	वृष ९	१०	१२	१४	१४	१३
१८८२	वृष १४	१४	१६	१८	१९	१७
१८८३	वृष १६	१६	१८	२०	२१	२
१८८४	वृष १८	१८	२०	२२	२३	२०
१८८५	वृष २१	२१	२३	२५	२५	२४
१८८६	वृष २३	२३	२५	२७	२८	२७
१८८७	वृष २५	२५	२७	२९	मि ०	वृ २९
१८८८	वृष २७	२७	२९	मि. १	२	१
१८८९	मिथुन ०	वृ २९	मि. १	३	४	४
१८९०	मिथुन २	२	३	५	७	६
१८९१	मिथुन ४	४	५	८	९	८
१८९२	मिथुन ५	६	८	१०	११	११
१८९३	मिथुन ९	८	१०	१२	१३	१३
१८९४	मिथुन ११	११	१२	१४	१६	१५
१८९५	मिथुन १४	१३	१४	१६	१८	१७
१८९६	मिथुन १६	१५	१६	१८	२०	२
१८९७	मिथुन १८	१७	१८	२१	२३	२
१८९८	मिथुन २१	२१	२२	२३	२४	२३
१८९९	मिथुन २३	२३	२४	२५	७	२५
१९००	मिथुन २६	२४	५	२७	२९	२९
१९०१	मिथुन २७	२६	२७	२९	क. १	१
१९०२	कर्क ०	मि २९	२९	क. १	३	४
१९०३	कर्क	१	२	४	६	६
१९०४	कर्क ४	३	४	६	८	८
१९०५	कर्क ५	५	६	८	९	९
१९०६	कर्क ९	८	८	९	१२	१३
१९०७	कर्क ११	९	१०	१२	१४	१५
१९०८	कर्क १४	१२	१२	१४	१६	१७
१९०९	कर्क १६	१४	१५	१६	१९	१९
१९१०	कर्क १८	१७	१७	१९	२१	२१

सन्	जनवरी	मार्च	मई	जुला.	सित.	नव
१९११	कर्क २०	१९	१९	२१	२३	२४
१९१२	कर्क २२	२१	२१	२३	२५	२६
१९१३	कर्क २४	२४	२३	२५	२७	२८
१९१४	कर्क २७	२६	६	२७	२९	सिं. ०
१९१५	सिंह	क. २९	२८	२९	सिं १	३
१९१६	सिंह			१	४	५
१९१७	सिंह ४	२	२	४	६	७
१९१८	सिंह ६	५	४	६	८	९
१९१९	सिंह ९	७	७	८	१	१२
१९२०	सिंह ११	९	९	१	१३	१४
१९२१	सिंह १३	११	११	१३	१५	१६
१९२२	सिंह १५	१४	१३	१५	१७	१८
१९२३	सिंह १८	१६	१६	१७	१९	२०
१९२४	सिंह २०	१८	१८	१९	२१	२३
१९२५	सिंह २३	२१	२०	२१	२३	२५
१९२६	सिंह २५	२३	२२	२४	२६	२७
१९२७	सिंह २७	२५	२४	२६	८	२९
१९२८	सिंह २९	२७	२७	२८	क ०	१
१९२९	कन्या १		सि. २९	क.	२	३
१९३०	कन्या ३	२	१	२	४	६
१९३१	कन्या ६	४	३	४	६	८
१९३२	कन्या ८	६	५	६	८	१०
१९३३	कन्या १०	९	७	८	९	१२
१९३४	कन्या १२	११	९	९	१२	१४
१९३५	कन्या १५	१३	१२	१२	१४	१६
१९३६	कन्या १७	१५	१४	१४	१६	१८
१९३७	कन्या १९	१७	१६	१६	१८	२०
१९३८	कन्या २१	२	१८	१८	२०	२२
१९३९	कन्या २३	२२	२०	२	२२	२४
१९४०	कन्या २६	२४	२३	२३	२४	२७
१९४१	कन्या २८	२६	२५	२५	२७	२९

यह यह १६५ वर्ष में १ भगण पूरा करता है अर्थात् १३ वर्ष ९ मास में १ राशि भोग करता है। किसी सन् में १८५ घटाकर शेष में १३ से भाग दें, तो लब्धि में आने से मीन एक आने से मेष दो आने से वृष इत्यादि जानिए, तथा १३ से भाग देने के बाद शेष में दो का गुणा करें तो, अंश जानिए। यह राशि और अंश सायन-नेपच्यून के होते हैं। यह एक स्थूल-प्रकार है।

मायन-नेपच्यून-चक्र

सन	जनवरी	मार्च	मई	जुला	सित	नव
१९४२	तुला ०	क २६	२७	२७	२६	तु १
१९४३	तुला २	१	०	कं २६	तु १	३
१९४४	तुला ४	३	२	१	३	५
१९४५	तुला ६	५	४	४	५	७
१९४६	तुला ८	८	६	६	७	९
१९४७	तुला १०	१०	८	८	१०	१२
१९४८	तुला १३	१२	१०	१०	१२	१४
१९४९	तुला १५	१४	१२	१२	१४	१६
१९५०	तुला १७	१६	१५	१४	१६	१८
१९५१	तुला १९	१८	१६	१६	१८	२०
१९५२	तुला २१	२०	१९	१८	२०	२२
१९५३	तुला २३	२३	२१	२०	२२	२४
१९५४	तुला २५	२५	२३	२२	२४	२६
१९५५	तुला २७	२७	२५	२५	२६	२८
१९५६	वृश्चिक ०	तु २९	२७	२७	२८	वृ ०
१९५७	वृ २	१	तु २९	२९	वृ ०	२
१९५८	वृ ४	३	२	१	२	४
१९५९	वृ ६	६	४	३	४	६
१९६०	वृ ८	८	६	५	६	८
१९६१	वृ १०	१०	९	८	८	१०
१९६२	वृ १३	१२	११	१०	१०	१२
१९६३	वृ १४	१४	१३	१२	१२	१४
१९६४	वृ १६	१६	१५	१४	१४	१६
१९६५	वृ १८	१८	१७	१६	१६	१८
१९६६	वृ २०	२०	१९	१८	१८	२०
१९६७	वृ २२	२३	२२	२०	२०	२२
१९६८	वृ २४	२५	२४	२२	२२	२४
१९६९	वृ २६	२७	२६	२५	२४	२६
१९७०	वृ २८	२९	२८	२७	२७	२८
१९७१	धनु ०	१	१	वृ २९	२९	धनु ०

सन	जनवरी	मार्च	मई	जुला	सित	नव
१९७२	धनु २	४	३	१	२	४
१९७३	धनु ५	६	५	४	३	५
१९७४	धनु ७	८	७	६	५	७
१९७५	धनु ९	१०	९	८	७	९
१९७६	धनु ११	१२	१२	१०	१०	११
१९७७	धनु १३	१४	१४	१२	१२	१३
१९७८	धनु १५	१७	१६	१५	१४	१५
१९७९	धनु १७	१९	१८	१७	१६	१७
१९८०	धनु १९	२१	२१	१९	१८	१९
१९८१	धनु २२	२३	२३	२१	२१	२३
१९८२	धनु २४	२५	२५	२४	२३	२४
१९८३	धनु २६	२७	२७	२६	२५	२६
१९८४	धनु २८	मकर ०	०	धनु २८	२७	२८
१९८५	मकर ०	२	२	०	धनु २९	मकर ०
१९८६	मकर २	४	४	३	२	२
१९८७	मकर ४	६	६	५	४	४
१९८८	मकर ६	८	८	७	६	६
१९८९	मकर ८	१०	११	९	८	८
१९९०	मकर १०	१२	१३	१२	१०	११
१९९१	मकर १३	१४	१५	१४	१२	१३
१९९२	मकर १५	१७	१७	१६	१५	१५
१९९३	मकर १७	१९	१९	१८	१७	१७
१९९४	मकर १९	२१	२२	२१	१९	१९
१९९५	मकर २१	२३	२४	२३	२१	२१
१९९६	मकर २३	२५	२६	२५	२४	२४
१९९७	मकर २५	२७	२८	२७	२६	२६
१९९८	मकर २७	२९	कुम्भ ०	०	म २८	२८
१९९९	मकर २९	कुम्भ २	३	२	०	०
२०००	कुम्भ २	४	५	४	३	२
२००१	कुम्भ ४	६	७	६	५	४

सायन-प्लूटो-चक्र

[प्रत्येक सन् के ता० १५ मार्च का]

सन	रा.	अं	क.		सन	रा.	अं	क.		सन्	रा.	अं	क.		सन्	रा.	अं	क.
१८९०	२	५	४		१९०६	२	२०	४२		१९२२	३	७	५६		१९३८	३	२८	
१८९१	२	६	०		१९०७	२	२१	४५		१९२३	३	९	६		१९३९	३	२९	५६
१८९२	२	६	५१		१९०८	२	२२	४९		१९२४	३	१०	१७		१९४०	४	०	४८
१८९३	२	७	५४		१९०९	२	२३	५०		१९२५	३	११	२९		१९४१	४	२	११
१८९४	२	८	५२		१९१०		२४	५१		१९२६	३	१२	४		१९४२	४	३	४२
१८९५	२	९	५१		१९११	२	२५	५३		१९२७	३	१३	५१		१९४३	४	५	१
१८९६	२	१	५		१९१२	२	२६	५६		१९२८	३	१५	२		१९४४	४	६	४
१८९७	२	११	४७		१९१३	२	२८	१		१९२९	३	१६	१६		१९४५	४	८	११
१८९८	२	१२	४५		१९१४	२	२९	६		१९३०	३	१७	३३		१९४६	४	९	४३
१८९९	२	१३	४३		१९१५	३		९		१९३१	३	१८	४८		१९४७	४	११	२०
१९००	२	१४	४२		१९१६	३	१	१४		१९३२	३	२०	४		१९४८	४	१२	५२
१९०१	२	१५	४३		१९१७	३	२	१९		१९३३	३	२१	२१		१९४९	४	१४	३०
१९०२	२	१६	४३		१९१८	३	३	२७		१९३४	३	२२	३५		१९५०	४	१६	९
१९०३	२	१७	४१		१९१९	३	४	३४		१९३५	३	२३	५७		१९५१	४	१७	५९
१९०४	२	१८	४१		१९२०	३	५	४२		१९३६	३	२५	१८		१९५२	४	१९	३
१९०५	२	१९	४२		१९२१	३	६	४७		१९३७	३	२६	३७		१९५३	४	२१	१५

यह बारहवाँ ग्रह है। इस 'नाग्निक अस्मनाक' में प्रदर्शित किया जाता है। इस पर अभी तक विशेष अन्वेषण किया जा रहा है। यह सन् १९१४ के सितम्बर में सायन कर्क का होकर वक्री-मार्गी होते हुए सन् १९४ के जनवरी में सायनसिंह का हुआ है। अतएव इसे एक राशि भोगने में लगभग २६ वर्ष का समय लगता है। तथैव इसके फलित का भी अभी अनुसन्धान किया जा रहा है। यह इतना मन्द गतिवाला है कि जन्म समय की राशि से तीसरी राशि भोगते समय जातक को प्राय: मोक्ष हो जाता है। शनि जितने समय में १ राशि (लगभग) भोग लेता है, उतने समय में यह ग्रह एक ही राशि भोग पाता है।

कलकी ग्रह गणित कार ने एक झाड़ी-धूमकेतु का भी नाम दिया है। इसे सन् १७५८ ई० में बारूप यशीय खगोल वेत्ता मि० हाले (Halley) ने देखा था। यह ७६ वर्ष ११ दिन में एक भगण (बारहों राशियाँ) भ्रमण करता है। पुनः इसे सन् १९१ ई० के मार्च में श्री केतकर महोदय ने समुद्रतीरस्थ कारवार ग्राम में देखा। श्री वेंकटेश बापू शास्त्री केतकर महोदय ने आगे लिखा है कि, सन् १९८६ ई० में यह पुनः दिखेगा। यह धूमकेतु अपने नीच स्थान पर आते ही एक-दो दिन में (पृथ्वी के समीप होने के कारण) भूमिवासियों को दिखाई देता है। इसी प्रकार जब भारत में वेधशाला होकर, वेध (अक्षर-वेधन) किया जायगा तभी इन सबों का सुनिश्चय हो सकेगा।

भारतीय विद्वान, भाव-स्पष्ट को भाव का मध्य-विन्दु मानते हैं और पाश्चात्य विद्वान् (सायन गणना द्वारा) भाव स्पष्ट को भाव का प्रारम्भ विन्दु मानते हैं। ये, सन्धि नहीं निकालते। दोनों का अन्तर क्या होता है—इसे आगे स्पष्ट करके, प्रदर्शित किया जा रहा है।

अपने इसी ग्रह और भाव में अयनाश जोडने से सायन गणना की कुण्डली हो जायगी। सन् १९२० के 'राफेल्स अल्मनाक' द्वारा देखने पर प्रतीत हुआ कि, ग्रहों मे अन्तर आता है किन्तु, भावों में १–२ विकला मात्र का अन्तर है।

मायन–चक्र २६

सायन–ग्रह		स्टैण्डर्ड टाइम ५।११ बजे शाम	सायन–भाव	
सूर्य	= २।२२।५६।४५		लग्न	= ८।०।४८।५०
चन्द्र	= १।२५।४२।२३		धन	= ९।२।३२।१०
भौम	= ६।२१। ७।२५		भ्रातृ	= १०।४।१५।३०
बुध	= ३।११।३०।२०	चक्र २३ के सायनाश ग्रह	सुख	= ११।५।५८।५०
गुरु	= ४।१७।१३।५५		सुत	= ०।४।१५।३०
शुक्र	= २।१९। ०।४८		रिपु	= १।२।३२।१०
शनि	= ५। ९।१८।३०			
राहु	= ७।१३।३५।२८			

केतकी द्वारा मायन–ग्रह (स्टै टाइम ५।११ पी एम)

सूर्य	चन्द्र	मगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु
२	१	६	३	४	२	५	७
२३	२३	२१	११	१७	१८	९	१३
०	४९	८	२४	१५	५८	२१	३८
८	३१	२९	२६	५५	२३	१४	४२

उदाहरण–सायन–चक्र २७
[पाश्चात्य–पद्धति]

कुम्भ ४।१५
मीन ५।५६
हर्शल ५।४०
मंगल २४।७
मेष ४।१५
वृष २।३२
केतु १३।३५
चन्द्र २५।४२
कर्क २।३२
बुध ११।३०

विशेष

यह एक प्रसंगवश लिखा है, कि, इनके ग्रह और भाव एक साथ कैसे रखे जाते हैं। इस गणना से सूर्य और चन्द्र की स्थिति देखिए, और पूर्वोक्त अपनी गणना से मंगल और शुक्र की स्थिति देखिए, शेष यथा स्थान मे तो हैं ही। राशि का फल कहना, राशिस्थ ग्रह का फल कहना, तो इनकी गणना से, एकदम विपरीत हो जाता है।

यथा—धनु लग्न आई धनु का तत्त्व है अग्नि, परन्तु, व्यक्ति है स्थूल। अतएव निरयण गणना मे वृश्चिक आकर, फलित का ठीक रूप आ जाता है।

विभिन्न देशों में लग्न-चक्र की आकृतियाँ

बिहार, उत्तरप्रदेश, मध्यभारत, मध्यप्रदेश, राजपूताना, पंजाब और बम्बई प्रान्तों में लग्न-चक्र 'जन्म चक्र नं० २७ क' की भाँति बनाने एवं लिखने की प्रथा है। इन देशों में कोई-कोई पण्डित 'चक्र नं० २७ ख' की भाँति भी बनाते हैं। जिस लग्न में जन्म होता है, उसी राशि का अंक, प्रथम स्थान में लिखकर क्रमशः उन-उन राशियों में ग्रहों को स्थापित करते हैं। राशि के अंक मेष का १ एवं वृष का २ इत्यादि। बंगाल में 'चक्र नं० २७ ग' की भाँति बनाकर, प्रथम स्थान में सर्वदा मेष नाम लिखते हैं, तथा जिस लग्न में जन्म होता है, उसी कोष्ठक में 'ल० या लग्न' लिख देते हैं। कभी-कभी कोई ग्रह के पास ग्रह का नक्षत्र अंक ही लिखते हैं यथा अश्विनी का १ भरणी का २ इत्यादि। यथा देखिए चक्र 'नं० २७ घ'। मद्रास प्रान्त में 'चक्र नं० २७ ङ' की भाँति बनाकर उसी कोष्ठक में 'ल या लग्न' लिख देते हैं। पाश्चात्य (इंगलैंड आदि) देशों में चक्र नं० २७ की भाँति बनाते हैं। अथवा 'चक्र नं० २७ च' की भाँति बनाकर, दशम भाव की राशि ही प्रथम स्थान (उत्तरी लाइन) के सामने लिखते हैं, और सायन पद्धति का उपयोग करते हैं। चक्र के मध्य में भाव के अंक भी लिखते हैं। तिरहुत और बिहार-बंगाल की सीमा पर चक्र नं० २७ क या ख की भाँति बनाकर प्रथम स्थान में मेष ही मानकर, जन्म लग्न राशि वाले घर में 'ल या लग्न' लिखते हैं।

उदाहरण चक्र नं० २७ क (सांकेतिक)

९
७ रा
१०
प्रथम स्थान ८ लग्न
६ म
११
५ श
१२
चं २ शु
४ गु
१ के
३ सू बु

चक्र नं० २७ ख (सांकेतिक)

९
प्रथम स्थान ८ ल.
७ रा
१०
६ मं
११
५ श
१२
४ गु
चं २ शु
१ के
३ सू बु

चक्र नं० २७ ग

वृष चं शु / मिथुन सू व	प्रथम स्थान मेष केतु	मीन / कुम्भ
कर्क गुरु	बंगाल	मकर
सिंह शनि / कन्या मं	तुला राहु	धनु / वृश्चिक लग्न

चक्र नं० २७ घ (ग्रह नक्षत्र सहित)

चन्द्र ३ शुक्र ४ / सूर्य ५ बुध ६	प्रथम स्थान के २	
गुरु ९	बंगाल	
श ११ / मं १४	रा १६	लग्न १७	

चक्र नं० २७ ङ

मीन	मेष के	वृष चं शु.	मिथुन सू. बु
कुम्भ	मद्रास		कर्क गु
मकर			सिंह श
धनु	वृश्चिक लग्न	तुला रा	कन्या मं

चक्र नं० २७ च

पाश्चात्य मत

लग्न

श.

गु ते

प्लू. बु.

मं. शु.

च के

ह.

मिथुन

कर्क

केन्द्रादि संज्ञा सबों के मत में समान रूप से जानिए। यथा—

"एतेन केन्द्रादिसंज्ञा भावानामेव, न राशीनामिति।" —होरारत्न

अर्थात केन्द्रादि संज्ञा, भावों की होती है, राशियों की नहीं।

इसी प्रकार ग्रहों का फलित-बल जानने के लिए, विश्वाक की आवश्यकता होती है। भावों में ग्रहों की क्रम-स्थिति का पूर्ण ज्ञान होता है। किसी ने द्वादश-भाव का पृष्ठ १५१ के प्रकार से गणित न करके केवल १५-१५ अंश जोड़कर, सन्धि और भाव निकालना बताया है। परन्तु यह उचित नहीं है। क्योंकि प्रत्येक राशिमान समान नहीं होता, तब १५-१५ अंश के समान विभाग करना युक्ति-सगत नहीं है।

विश्वा चक्र २८

ग्रह	भाव	विश्वा	लक्षण	फल
सू	८	८	रन्ध्रस्थ	दशमेश होकर, रन्ध्रस्थ, ८ विश्वा होने से पिता का सुख, व्यापार (जायदाद) सुख
च	७	१३	क्षीण	सप्तम भाव सम्बन्धी पीड़ा, स्त्री की चिरायु, रोगिणी, क्षीणदेहा भार्या
म	१२	४	व्ययस्थ	लग्नेश होने से अशुभ, ४ विश्वा मात्र ही अशुभता, शरीर निर्बल
बु	८	८	रन्ध्रस्थ	मध्यायु भोगी, लाभ की हानि, आयु वृद्धिकारक
गु	९	३	नवमस्थ	सर्वथा सुयोग्य होते हुए ३ विश्वा के कारण अप्रगतिशील
शु	८	३	सप्तमेश अस्त	स्त्री को सर्वथा कष्ट, दाम्पत्य सुख रहित
श	१०	१४	दशमस्थ	शत्रुग्रही तथा १४ विश्वा होने से व्यापार रहित, आलस्य, निरपेक्ष
रा	१२	४	व्ययस्थ	व्यय अधिक, भ्रमण, निरुत्साह, सुख रहित
के	६	४	षष्ठस्थ	शत्रु-रोग नाशक, औषधि में अधिक व्यय

चालन – चक्र

(अंश या घण्टा)

मिनट कला	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११
३०	१·६८१२	१ २०४१	० ९८२३	८३६१	७२७०	६३९८	५६७३	५०५१	४५०८	४०२५	३५९०	३१९५
३१	१·६६७०	१ १९९३	० ९७९४	८३४१	७२५४	६३८५	५६६२	५०४२	४४९९	४०१७	३५८३	३१८९
३२	१ ६५३२	१ १९४६	०·९७६५	८३२७	७२३८	६३७२	५६५१	५०३२	४४९१	४०१०	३५७६	३१८३
३३	१ ६३९८	१ १८९९	०·९७३७	८३००	७२२२	६३५९	५६४०	५०२३	४४८२	४००२	३५७०	३१७९
३४	१ ६२६९	१ १८५२	० ९७०८	८२७९	७२०६	६३४६	५६२९	५०१३	४४७४	३९९४	३५६३	३१७०
३५	१ ६१४३	१ १८०६	० ९६८०	८२५९	७१९०	६३३३	५६१८	५००३	४४६६	३९८७	३५५६	३१६४
३६	१ ६०२१	१ १७६१	० ९६५२	८२३९	७१७४	६३२०	५६०७	४९९४	४४५७	३९७९	३५४९	३१५७
३७	१ ५९०२	१ १७१६	० ९६२५	८२१९	७१५९	६३०७	५५९६	४९८४	४४४९	३९७२	३५४२	३१५१
३८	१ ५७८६	१ १६७१	० ९५९७	८१९९	७१४३	६२९४	५५८५	४९७५	४४४०	३९६४	३५३५	३१४५
३९	१ ५६७३	१ १६२७	० ९५७०	८१७९	७१२८	६२८२	५५७४	४९६५	४४३२	३९५७	३५२९	३१३९
४०	१ ५५६३	१ १५८४	० ९५४२	८१५९	७११२	६२६९	५५६३	४९५६	४४२४	३९४९	३५२२	३१३३
४१	१ ५४५६	१ १५४०	०·९५१५	८१४०	७०९७	६२५६	५५५२	४९४७	४४१५	३९४२	३५१५	३१२६
४२	१ ५३५१	१ १४९८	०·९४८८	८१२०	७०८१	६२४३	५५४१	४९३७	४४०७	३९३४	३५०८	३१२०
४३	१ ५२४९	१ १४५५	०·९४६२	८१०१	७०६६	६२३१	५५३१	४९२८	४३९९	३९२७	३५०१	३११४
४४	१ ५१४९	१ १४१३	० ९४३५	८०८१	७०५०	६२१८	५५२०	४९१८	४३९०	३९१९	३४९५	३१०८
४५	१ ५०५१	१ १३७२	० ९४०९	८०६२	७०३५	६२०५	५५०९	४९०९	४३८२	३९१२	३४८८	३१०२
४६	१ ४९५६	१ १३३१	० ९३८३	८०४३	७०२०	६१९३	५४९८	४९००	४३७४	३९०५	३४८१	३०९६
४७	१ ४८६३	१ १२९०	० ९३५६	८०२३	७००५	६१८०	५४८८	४८९०	४३६५	३८९७	३४७५	३०८९
४८	१ ४७७१	१ १२४९	० ९३३०	८००४	६९९०	६१६८	५४७७	४८८१	४३५७	३८९०	३४६८	३०८३
४९	१ ४६८२	१ १२०९	० ९३०५	७९८५	६९७५	६१५५	५४६६	४८७२	४३४९	३८८२	३४६१	३०७७
५०	१ ४५९४	१ ११७०	० ९२७९	७९६६	६९६०	६१४३	५४५६	४८६३	४३४१	३८७५	३४५४	३०७१
५१	१ ४५०८	१ ११३०	० ९२५४	७९४७	६९४५	६१३१	५४४५	४८५३	४३३३	३८६८	३४४८	३०६५
५२	१ ४४२४	१·१०९१	० ९२२८	७९२९	६९३०	६११८	५४३५	४८४४	४३२४	३८६०	३४४१	३०५९
५३	१ ४३४१	१ १०५३	० ९२०३	७९१०	६९१५	६१०६	५४२४	४८३५	४३१६	३८५३	३४३४	३०५३
५४	१ ४२६०	१ १०१५	० ९१७८	७८९१	६९००	६०९४	५४१४	४८२६	४३०८	३८४६	३४२८	३०४७
५५	१ ४१८०	१ ०९७७	० ९१५३	७८७३	६८८५	६०८१	५४०३	४८१७	४३००	३८३८	३४२१	३०४१
५६	१ ४१०२	१ ०९३९	० ९१२८	७८५४	६८७१	६०६९	५३९३	४८०८	४२९२	३८३१	३४१५	३०३४
५७	१ ४०२५	१ ०९०२	० ९१०४	७८३६	६८५६	६०५७	५३८२	४७९८	४२८४	३८२४	३४०८	३०२८
५८	१·३९४९	१·०८६५	० ९०७९	७८१८	६८४१	६०४५	५३७२	४७८९	४२७६	३८१७	३४०१	३०२२
५९	१·३८७५	१ ०८२८	० ९०५५	७८००	६८२७	६०३३	५३६१	४७८०	४२६८	३८०९	३३९५	३०१६

पालन – चक्र

(चौरा या पश्चा)

मिश्र कला	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३
०	३०१०	२६६३	२३४१	२०४१	१७६१	१४९८	१२८९	१०१५	७९२	०५८	०३७८	०१८५
१	३००४	२६५७	२३३१	२०३६	१७५६	१४९३	१२४५	१०११	७८८	५७७	०३७४	०१८२
२	२९९८	२६५२	२३३०	२०३२	१७५२	१४८९	१२४१	१००७	७८५	०५७२	०३७१	१७९
३	२९९२	२६४६	२३२५	२० २७	१७४७	१४८५	१२३७	१० ३	७८१	०५७०	३६८	१७५
४	२९८६	२६४०	२३	२०२२	१७४३	१४८१	१२३३	०९९९	७७७	०५६६	०३६५	०१७२
५	२९८०	२६३५	२३१५	२ १७	१७३८	१४७६	१२२९	०९९६	७७४	०५६३	०३६१	१६९
६	२९७४	२६२९	२३१०	२०१२	१७३४	१४७२	१२२५	९९२	०७७०	५५९	०३५८	०१६६
७	२९६८	२६२४	२३०५	२ ८	१७२९	१४६८	१२२१	९८८	०७६६	५५६	३५५	१६३
८	२९६२	२६१८	२३००	२० ३	१७२५	१४६४	१२१७	९८४	०७६३	५५२	०३५२	०१६
९	२९५६	२६१३	२२९५	१९९८	१७२०	१४६	१२१३	९८०	७५९	०५४९	३४८	०१५७
१०	२९५०	२६०७	२२९०	१९९३	१७१६	१४५५	१२ ९	०९७७	७५६	५४६	०३४५	०१५३
११	२९४४	२६०२	२२८४	१९८८	१७११	१४५१	१२ ५	०९७३	०७५२	०५४२	०३४२	१५
१२	२९३८	२५९६	२२७९	१९८४	१७०७	१४४७	१२ १	०९६९	०७४९	०५३९	०३३९	०१४७
१३	२९३३	२५९१	२२७४	१९७९	१७०२	१४४३	११९७	९६५	०७४५	०५३५	०३३५	०१४४
१४	२९२७	२५८५	२२६९	१९७४	१६९८	१४३८	११९३	०९६२	०७४२	५३२	३३२	०१४१
१५	२९२१	२५८०	२२६४	१९६९	१६९४	१४३४	११८९	९५८	०७३८	०५२९	३२९	१३८
१६	२९१५	२५७४	२२५९	१९६५	१६८९	१४३	११८५	९५४	७३४	५२५	३२६	१३५
१७	२९ ९	२५६९	२२५४	१९६	१६८५	१४२६	११८२	९५	०७३१	०५२२	३२२	१३२
१८	२९ ३	२५६४	२२४९	१९५५	१६८	१४२२	११७८	९४७	०७२७	०५१८	३१९	१२९
१९	२८९७	२५५८	२२४४	१९५	१६७६	१४१७	११७४	९४३	७२४	०५१५	३१६	१२५
२	८९१	२५५३	२२३९	१९४६	१६७१	१४१३	११७०	९३९	७२	०५११	३१३	१२२
२१	२८८५	२५४७	२२३४	१९४१	१६६७	१४ ९	११६६	९३५	०७१७	०५०८	३ ९	११९
२२	२८८	२५४२	२२२९	१९३६	१६६३	१४ ५	११६२	९३२	७१३	५०५	३ ६	११६
२३	२८७४	२५३६	२२२३	१९३२	१६५८	१४ १	११५८	९२८	७०९	०५ १	०३ ३	११३
२४	२८६८	२५३१	२२१८	१९२७	१६५४	१३९७	११५४	९२४	७०६	४९८	३	११
२५	२८६२	२५२६	२२१३	१९२२	१६४९	१३९३	११५	९२	०७०२	०४९५	०२९६	१०७
२६	२८५६	२५२	२२०८	१९१७	१६४५	१३८८	११४६	९१७	६९९	४९१	०२९३	१०४
२७	२८५०	२५१५	२२ ३	१९१३	१६४०	१३८४	११४२	९१३	६९५	४८८	०२९०	१ १
२८	२८४५	२५ ९	२१९८	१९०८	१६३६	१३८	११३८	९ ९	६९२	४८५	२८७	०९८
२९	२८३९	२५ ४	२१९३	१९ ३	१६३२	१३७६	११३४	९०५	६८८	४८१	२८३	० ९४

चालन – चक्र

(अंश या घण्टा)

मिनट कला	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३
३०	२८३३	२४९९	२१८८	१८९९	१६२७	१३७२	११३०	०९०२	०६८५	०४७८	०२८०	००९१
३१	२८२७	२४९३	२१८३	१८९४	१६२३	१३६८	११२६	०८९८	०६८१	०४७४	०२७७	००८८
३२	२८२१	२४८८	२१७८	१८८९	१६१९	१३६३	११२३	०८९४	०६७८	०४७१	०२७४	००८५
३३	२८१६	२४८३	२१७३	१८८५	१६१४	१३५९	१११९	०८९१	०६७४	०४६८	०२७१	००८२
३४	२८१०	२४७७	२१६८	१८८०	१६१०	१३५५	१११५	०८८७	०६७०	०४६४	०२६७	००७९
३५	२८०४	२४७२	२१६४	१८७५	१६०५	१३५१	११११	०८८३	०६६७	०४६१	०२६४	००७६
३६	२७९८	२४६७	२१५९	१८७१	१६०१	१३४७	११०७	०८८०	०६६४	०४५८	०२६१	००७३
३७	२७९३	२४६१	२१५४	१८६६	१५९७	१३४३	११०३	०८७६	०६६०	०४५४	०२५८	००७०
३८	२७८७	२४५६	२१४९	१८६२	१५९२	१३३९	१०९९	०८७२	०६५६	०४५१	०२५५	००६७
३९	२७८१	२४५१	२१४४	१८५७	१५८८	१३३५	१०९५	०८६८	०६५३	०४४८	०२५१	००६४
४०	२७७५	२४४५	२१३९	१८५२	१५८४	१३३१	१०९२	०८६५	०६४९	०४४४	०२४८	००६१
४१	२७७०	२४४०	२१३४	१८४८	१५७९	१३२७	१०८८	०८६१	०६४६	०४४१	०२४५	००५८
४२	२७६४	२४३५	२१२९	१८४३	१५७५	१३२२	१०८४	०८५७	०६४२	०४३७	०२४२	००५५
४३	२७५८	२४३०	२१२४	१८३८	१५७१	१३१८	१०८०	०८५४	०६३९	०४३४	०२३९	००५२
४४	२७५३	२४२४	२११९	१८३४	१५६६	१३१४	१०७६	०८५०	०६३५	०४३१	०२३५	००४८
४५	२७४५	२४१९	२११४	१८२९	१५६२	१३१०	१०७२	०८४६	०६३२	०४२८	०२३२	००४५
४६	२७४१	२४१४	२१०९	१८२५	१५५८	१३०६	१०६८	०८४३	०६२९	०४२४	०२२९	००४२
४७	२७३६	२४०९	२१०४	१८२०	१५५३	१३०२	१०६४	०८३९	०६२५	०४२१	०२२६	००३९
४८	२७३०	२४०३	२०९९	१८१६	१५४९	१२९८	१०६१	०८३५	०६२१	०४१८	०२२३	००३६
४९	२७२४	२३९८	२०९५	१८११	१५४५	१२९४	१०५७	०८३२	०६१८	०४१४	०२२०	००३३
५०	२७१९	२३९३	२०९०	१८०६	१५४०	१२९०	१०५३	०८२८	०६१४	०४११	०२१६	००३०
५१	२७१३	२३८८	२०८५	१८०२	१५३६	१२८६	१०४९	०८२४	०६११	०४०८	०२१३	००२७
५२	२७०७	२३८२	२०८०	१७९७	१५३२	१२८२	१०४५	०८२१	०६०८	०४०४	०२१०	००२४
५३	२७०२	२३७७	२०७५	१७९३	१५२८	१२७८	१०४१	०८१७	०६०४	०४०१	०२०७	००२१
५४	२६९६	२३७२	२०७०	१७८८	१५२३	१२७४	१०३७	०८१४	०६०१	०३९८	०२०४	००१८
५५	२६९१	२३६७	२०६५	१७८४	१५१९	१२७०	१०३४	०८१०	०५९७	०३९४	०२०१	००१५
५६	२६८५	२३६२	२०६१	१७७९	१५१५	१२६६	१०३०	०८०६	०५९४	०३९१	०१९७	००१२
५७	२६७९	२३५६	२०५६	१७७४	१५१०	१२६१	१०२६	०८०३	०५९०	०३८८	०१९४	०००९
५८	२६७४	२३५१	२०५१	१७७०	१५०६	१२५७	१०२२	०७९९	०५८७	०३८४	०१९१	०००६
५९	२६६८	२३४६	२०४६	१७६५	१५०२	१२५३	१०१८	०७९५	०५८३	०३८१	०१८८	०००३

चालन चक्र का कार्य

पृष्ठ १६८ से १७१ तक का चालन-चक्र दिया गया है, यह भारतीय पद्धति का है। इसमें ऊपर की पंक्ति मे शून्य से तेइस तक के अंक (अंश या घण्टा के) हैं; बायीं ओर प्रथम पंक्ति म शून्य से उनसठ तक के अंक (कला या मिनट के) हैं। चालन-चक्र के मध्य में शून्य घन्टे से दो घण्टे तक 'एक दशमलव' वा 'शून्य दशमलव' के चिन्ह दिखाये गये हैं। परन्तु तीन घण्टे से तेइस घण्टे तक के सभी संख्या के साथ 'शून्य दशमलव' समझना चाहिए। यथा—८ घण्टा ३० मिनट के कोष्ठ में ५२०८ संख्या है तो उसे ०.५२०८ संख्या समझना चाहिए। इस चक्र के द्वारा चालन बनाने की विधि इस प्रकार है कि—

"जो ग्रह स्पष्ट करना हो उस ग्रह की गति के अंश-कला (त्रैराशिक से विकला का भी) के द्वारा चालन-चक्र के अंक में चालन घण्टा-मिनट (त्रैराशिक से सेकेण्ड का भी) के द्वारा चालन चक्र के अंक जोड़िए; फिर इस योगफल के अंक चालन-चक्र म जितने अंश-कला (त्रैराशिक से विकला) पर मिलें उस अंश-कला-विकला का ऋण-चालन या धन-चालन की भाँति ग्रह में संस्कार करें तो ग्रह-स्पष्ट हो जायगा। "विशेष बात" एक यह भी है कि, जब योगफल, शून्य घण्टा शून्य मिनट के (चालन चक्र के) अंक ३ १८८४ से अधिक हो तब दोनों संख्याओं के जोड़ने का नियम पूर्ववत न होकर इस प्रकार रहेगा—

ग्रह की गति के अंक (चालन-चक्र के द्वारा) जो आवे; उसका प्रथम का एक अंक छोड़कर नीचे चालन घण्टा-मिनट के अंक घटाना चाहिए; फिर इस शेष फल के द्वारा चालन चक्र में जो अंक मिलें, उन्हें विकलादि समझिए और उन विकलादिकों का दूना करके ऋण-धन (उचित) चालन कीजिए, तो ग्रह-स्पष्ट हो जायगा।"

पृष्ठ १५६-१५७-१५८ में देखिए। सभी ग्रहों में १ घण्टा १ मिनट ५ सेकेण्ड (घट्यादि २।३२।४२) का ऋण-चालन किया गया है। सूर्य की गति अंशादि ।५७।१९ चन्द्र की गति अंशादि १३।३८।१९ मंगल और गुरु की गति अंशादि ०।१० बुध की गति अंशादि १।४० शुक्र की गति अंशादि १।१४ शनि की गति अंशादि ०।१ तथा राहु-केतु की गति अंशादि ०।३।११ (हर्शल की गति नहीं) और नेपच्यून की गति अंशादि ०।२ है। चालन चक्र पृष्ठ १६८ में एक घण्टा एक मिनट की संख्या १ ३७३० है तथा एक घण्टा दो मिनट की संख्या १ ३६६० है दोनों का अन्तर ऋण ७० है, अर्थात् यदि एक मिनट (६० सेकेण्ड) मे ऋण ७० अंक है तो ५ सेकेण्ड में कितना अंक होगा? त्रैराशिक द्वारा— $\frac{७० \times ५}{६०} = \frac{३५०}{६०} = \frac{३५}{६}$ =६ अंक ऋण होगा। अतएव १ ३७३० में से ६ घटाया तो १ ३७२४ अंक १ घण्टा १ मिनट ५ सेकेण्ड के हुए।

सूर्य

सूर्य की गति ।५७।१९ अंशादि है। पृष्ठ १६९ म शून्य के नीचे तथा ५७ के दाहिनी ओर १ ४०२५ संख्या मिली। अब १९ विकला का त्रैराशिक द्वारा अंक जानना है तो ।५८ अंशादि का अंक १ ३९४९ तथा (१४०२५-१३९४९) दोनों का अन्तर ७६ मिला अर्थात् एक कला (६० विकला) में ऋण ७६ है तो, १९ विकला में कितना होगा? त्रैराशिक द्वारा—

$$= \frac{७६ \times १९}{६०} = \frac{१९ \times १९}{१५} = \frac{३६१}{१५} = २४\frac{१}{१५} \text{ ऋणांक}$$

= ।५७ अंशादि के चालन चक्र के अंक १४०२५ में २४ ऋण किया तो, १ ४००१ अंक ।५७।१९ अंशादि के हुए। अब ग्रह-गति के अंक मे चालन के अंक जोड़िए।

१४००१ = सूर्य की गति अंशादि ।५७।१९ के (चालन-चक्र के) अंक में

१३७२४ = एक घण्टा एक मिनट पाँच सेकेण्ड के (चालन चक्र के) अंक जोड़ा

योगफल = २७७२५ = चालन चक्र में इस संख्या को देखा गया तो ।२ अंशादि में २८८०३ है और ।३ अंशादि में २६८१२ है, अतएव २७७२५, इन्हीं दो संख्याओं के मध्य की है इसे त्रैराशिक द्वारा इस प्रकार जानिए—

०।२ का = २ ८५७३
०।३ का = २ ६८१२
अन्तर ऋण १७६१

२ ८५७३ = ०।२ का
२ ७७२५ = योगफल
अन्तर ऋण ८४८

चूँकि १ कला = ६० विकला में अन्तर १७६१ अंक है
तो ८४८ में
$= \frac{८४८ \times ६०}{१७६१} = \frac{५०८८०}{१७६१} = २८\frac{१५७२}{१७६१}$

अतएव चालन अक अंशादि ०।२।२६ सूर्य का हुआ।

चन्द्र

चन्द्र की गति १४।३८।१६ के समान चालन चक्र पृष्ठ १७१ में देखा तो—

१४।३८ अंशादि = ० २१४६ मिला
१४।३६ " = ० २१४४ "
५

चूँकि १ कला = ६० विकला में अन्तर ५ अक है।
तो १६ विकला मे $= \frac{५ \times १६}{६०} = \frac{६५}{६०} = १\frac{३५}{६०} = २$ लगभग

१४।३८ अशादि = ० २१४६ मे २ ऋण किया तो—
१४।३८।१६ अंशादि = ० २१४७ मे
१ ।१ ।५ घण्टादि = १·३७२४ जोडा
१ ५८७१ = त्रैराशिक द्वारा अंशादि ०।३७।१६ पर मिला।

मंगल और गुरु

पृष्ठ १७२ मे लिखी "विशेष बात" का उदाहरण इसमें दिखाया जायगा। इन दोनो ग्रहों की गति अंशादि ०।१० है। अतएव—

०।१० अंशादि = २ १५८४ + १ ३७२४ (१ घं० १ मि० ५ से० का) = ३ ५३०८ योगफल, चालन–चक्र के शून्य घण्टा शून्य मिनट के अक ३ १५८४ से अधिक है। अतएव—

ग्रह–गति (०।१० अंशादि) = २ १५८४० में
१ घ० १ मि० ५ से० = ० १३७२४ घटाया (ऊपर की सख्या के प्रथम का अंक छोड़कर)
२ ०२११६

= ऋणफल २ ०२११६ = ४।५३ × २ = ६।२६ विकलादि ऋण–चालन।

बुध

गति १।४० = १ १५८४ + १ ३७२४ (१ घ० १ मि० ५ से० का) = २·५३०८ = ०।४।१५ अशादि ऋण-चालन

शुक्र

गति १।१४ = १ ७८६१ + १ ३७२४ (१ घं० १ मि० ५ से० का) = २ ६६१५ = ०।३।६ अशादि ऋण-चालन

शनि

गति ०।२ = २ ६८१२ – (म० गु० की भाँति) ० १३७२४ (१ घ० १ मि० ५ से० का) = २ ५४३८६ = ०।०।४ × २ = ०।०।८ अशादि ऋण–चालन।

राहु–केतु

गति ० । ३ । ११ = २ ६५८३ – ० १३७२४ (१ घं० १ मि० ५ से० का) = २ ५२१०६ = ०।४ = ०।०।४ × २ = ०।०।८ अशादि धन–चालन (वक्री ग्रह के

नपच्यून

गति ०।२ = २·८८७६ – ०।३३७२४ (१ घं १ मि० ५ स० का) = २·७२००६ = ०।२, =०।०।२२ × २ = ०।०।४४ अंशादि चालन।

नोट—

पृष्ठ १६८ से १७१ तक के चालन चक्र के द्वारा कितने ही व्यक्तियों को कठिनता पड़ेगी क्योंकि उन्हें त्रैराशिक गणित का अच्छा अभ्यास न होगा। किन्तु है यह विधि, अतिसूक्ष्म। क्योंकि यह निश्चित है कि, किसी ग्रह की गति समान नहीं होती। चूँकि गामूत्रिका में समान गति ही मानकर कार्य किया जाता है, किन्तु, इस चालन-चक्र के द्वारा वक्र-गति का अनुपात आ जाता है। अस्तु।

दशवर्ग

गृह, होरा द्रेष्काण सप्तांश नवांश, दशमांश, द्वादशांश षोडशांश, त्रिंशांश और षष्ट्यंश मिलकर दशवर्ग होता है। इसी प्रकार गृह, होरा, द्रेष्काण सप्तांश, नवांश, द्वादशांश और त्रिंशांश मिलकर सप्तवर्ग होता है। सप्तवर्ग का प्रयोग अधिक होता है, तथा दशवर्ग का कभी-कभी। अनेक विद्वान् नवांश-मात्र से अनेक कार्य करते हैं। अस्तु। सप्तवर्ग का वर्णन प्रारम्भ किया जा रहा है। हाँ राशीश ही गृहेश होते हैं।

होरा

इसमें प्रत्येक राशि के दो खण्ड १५-१५ अंश के होते हैं। विषम राशि में प्रथम १५ अंश तक सूर्य का होरा, तब १६ वें अंश से ३० अंश तक चन्द्र का होरा होता है, तथा समराशि में प्रथम १५ अंश तक चन्द्र का होरा तब सूर्य का होरा होता है। यथा—सूर्य २।०।११ है तो विषम (मिथुन) राशि में प्रथम सूर्य के होरा में सूर्य रहा।

द्रेष्काण

त्रिकोण-चिन्ह

१ ५ ९
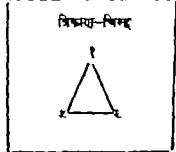
इसमें प्रत्येक राशि के तीन खण्ड १०-१० अंश के होते हैं। प्रत्येक राशि का प्रथम द्रेष्काण अपनी ही राशि से प्रारम्भ होता है, फिर दूसरा द्रेष्काण अपनी राशि से पाँचवीं राशि का, फिर तीसरा द्रेष्काण अपनी राशि से नववीं राशि का होता है। इस प्रकार के द्रेष्काण को त्रिकोणेश भी कह सकते हैं; क्योंकि अपनी ही राशि का त्रिकोण (१-५-९ वाँ) ही द्रेष्काण होता है। इसका दूसरा नाम 'दृक्काण' अर्थात् कानी आँख भी है। एक त्रिकोण रेखा पर दृष्टि देना दृक्काण का काम है। यथा—सूर्य २।०।११ है तो, मिथुन राशि के प्रथम द्रेष्काण मिथुन में सूर्य रहा।

सप्तांश

इसमें प्रत्येक राशि के सात खण्ड होते हैं। १—(४।१७।८ तक) २—(८।३४।१७ तक) ३—(१२।५१।२५ तक) ४—(१७।८।३४ तक) ५—(२१।२५।४२ तक) ६—(२५।४२।५१ तक) ७—(३० ।०।० तक) के होते हैं। विषम राशि में अपनी राशि से प्रारम्भ होकर क्रमशः; तथा समराशि में, अपने से सातवीं राशि से प्रारम्भ होकर क्रमशः गणना की जाती है। जिस ग्रह का सप्तांश जानना हो, उस ग्रह की राशि में ७ का गुणा कर १२ से भाग दें, तो शेष राशि के गत सप्तांश मिलेंगे, शेष अंशादि द्वारा ४।१७।८ का एक-एक खण्ड में शेष राशि की अग्रिम राशि के सप्तांश होते जाते हैं। यथा—सूर्य २।०।११ है, तो प्रथम विधि द्वारा, विषम (मिथुन) राशि का सप्तांश अपनी ही राशि से प्रारम्भ होने के कारण, तथा अंशादि (।११) प्रथम खण्ड (४।१७।८) के पूर्व होने के कारण—मिथुन के ही सप्तांश में सूर्य रहा। द्वितीय विधि के द्वारा सूर्य २।०।११ है, तो २ राशि में ७ का गुणा किया तो १४ हुए, इसमें १२ से भाग दिया शेष २ राशि गत सप्तांश हुए, दो राशि के आगे (०।११) अंशादि होने से शेष २ राशि के आगे ३ राशि अर्थात् मिथुन का सप्तांश हुआ।

नवांश

विभाग	राशि मे	नवांशारम्भ
१	१।५। ९	राशि १ से
२	२।६।१०	राशि १० से
३	३।७।११	राशि ७ से
४	४।८।१२	राशि ४ से

इसमें प्रत्येक राशि के नव खण्ड होते हैं, अर्थात् एक राशि के २¼ (सवा-दो) नक्षत्र, तथा इनके नव चरण होते हैं। प्रत्येक खण्ड ३ अंश २० कला का होता है। १—(३।२० तक) २—(६।४० तक) ३—(१०।० तक) ४—(१३।२० तक) ५—(१६।४० तक) ६—(२०।० तक) ७—(२३।२० तक) ८—(२६।४० तक) ९—(३०।० तक) खण्ड होते हैं। चर राशियों का नवांश, अपनी ही राशि से, स्थिर राशियों का नवांश, अपनी राशि के नवम राशि से, और द्विस्वभाव राशियों का नवांश, अपनी राशि के, पंचम राशि से आरम्भ-कर क्रमश' गणना की जाती है। यथा—सूर्य २।०।१९ है तो मिथुन का सूर्य, तुला से नवांशारम्भ और प्रथम खण्ड में होने से तुला के नवांश मे सूर्य रहा।

द्वादशांश

इसमे प्रत्येक राशि के बारह खण्ड होते हैं अर्थात २½ ढाई अंश का एक खण्ड। प्रत्येक राशि में, अपनी ही राशि से आरम्भ होकर क्रमश चलता है। यथा—सूर्य २।०।१९ है, तो मिथुन के प्रथम खण्ड में ही (मिथुन के) द्वादशांश में सूर्य रहा। १—(२।३० तक) २—(५।० तक) ३—(७।३० तक) ४—(१०।० तक) ५—(१२।३० तक) ६—(१५।० तक) ७—(१७।३० तक) ८—(२०।० तक) ९—(२२।३० तक) १०—(२५।० तक) ११—(२७।३० तक) १२—(३०।० तक) खण्ड होते हैं।

त्रिशांश

विषम राशि (१-३-५-७-९-११) मे प्रथम ५ अंश तक मंगल (१) राशि का, फिर १० अंश तक शनि (११) राशि का, फिर १८ अंश तक गुरु (९) राशि का, फिर २५ अंश तक बुध (३) राशि का, फिर ३० अंश तक शुक्र (७) राशि का त्रिशांश होता है। समराशि में इससे विपरीत होता है। इसे स्पष्ट समझाने के लिए, दो विभाग करके बताया जा रहा है।

चक्र २९

विषम राशि मे						सम राशि में					
योग ३० अंश मे	५	५	८	७	५	योग ३० अंश में	५	७	८	५	५
त्रिशांशेश की विषम राशि	म १	श ११	गु ९	बु ३	शु ७	त्रिशांशेश की समराशि	शु २	बु ६	गु १२	श १०	म ८

सप्तवर्ग—चक्र ३० का परिचय

पूर्वोक्त गृह, होरा, द्रेष्काण, सप्तांश, नवांश, द्वादशांश और त्रिशांश तक का ज्ञान एक साथ हो जाय, इसी के लिए आगे 'सप्तवर्ग—चक्र ३०' लिखा गया है। किसी ग्रह का राश्यादि, सप्तवर्ग—चक्र के राश्यादि-पर्यन्त के पूर्व (पहिले) का हो, उसी खण्ड के सामने दाहिनी ओर लिखे अंक (राशि) ही गृहादि होते हैं। यथा—सूर्य राश्यादि २।०।१९ हैं, तो सप्तवर्ग में राश्यादि-पर्यन्त खण्ड २।२।३०।० का मिला, क्योंकि इसी खण्ड के पूर्व सूर्य २।०।१९ है। इसी खण्ड के अंक (राशि) ही (३।५।३।३।७।३।१) अर्थात बुध, सूर्य, बुध, बुध, शुक्र, बुध, मंगल (गृहादि राशीश) पर, सूर्य की गृहादि-स्थिति है। हॉ, सप्तवर्ग-चक्र मे इससे पूर्व का खण्ड २।०।०।० है और सूर्य २।०।१९ है अतएव इस खण्ड के उपरान्त मे अर्थात २।२।३०।० वाले खण्ड मे ही सूर्य है। तात्पर्य यह है कि, ग्रह से कम वाले खण्ड में न देखिए, कम वाले के आगे वाले खण्ड मे ही देखिए, अन्यथा भूल होगी।

राश्यादि पर्यन्त				गृ	हो	द्रे	स	न	द्रा	त्रि	राश्यादि पर्यन्त				गृ	हो	द्रे.	स.	न	द्रा	त्रि	राश्यादि पर्यन्त				गृ	हो	द्रे.	स.	न.	द्रा	त्रि
३	२५	४२	५१	४	५	१२	३	११	२	८	५	७	३०	०	६	४	६	१	१२	८	६	६	१७	३०	०	७	४	११	११	१२	१	९
३	२६	४०	०	४	५	१२	४	११	२	८	५	८	३४	१७	६	४	६	१	१२	९	६	६	१८	०	०	७	४	११	११	१२	२	९
३	२७	३०	०	४	५	१२	४	१२	२	८	५	१०	०	०	६	४	६	२	१२	९	६	६	२०	०	०	७	४	११	११	१२	२	३
४	०	०	०	४	५	१२	४	१२	३	८	५	१२	०	०	६	४	१०	२	१	१०	६	६	२१	२५	४२	७	४	३	११	१	३	३
४	२	३०	०	५	५	५	५	१	५	१	५	१२	३०	०	६	४	१०	२	१	१०	१२	६	२२	३०	०	७	४	३	१२	१	३	३
४	३	२०	०	५	५	५	५	१	६	१	५	१२	५१	२५	६	४	१०	२	१	११	१२	६	२३	२०	०	७	४	३	१२	१	४	३
४	४	१७	८	५	५	५	५	२	६	१	५	१३	२०	०	६	४	१०	३	१	११	१२	६	२५	०	०	७	४	३	१२	२	४	३
४	५	०	०	५	५	५	६	२	६	१	५	१५	०	०	६	४	१०	३	२	११	१२	६	२५	४२	५१	७	४	३	१२	२	५	७
४	६	४०	०	५	५	५	६	२	७	११	५	१६	४०	०	६	५	१०	३	२	१२	१२	६	२६	४०	०	७	४	३	१	२	५	७
४	७	३०	०	५	५	५	६	३	७	११	५	१७	८	३४	६	५	१०	३	३	१२	१२	६	२७	३०	०	७	४	३	१	३	५	७
४	८	३४	१७	५	५	५	६	३	८	११	५	१७	३०	०	६	५	१०	४	३	१२	१२	७	०	०	०	७	४	३	१	३	६	७
४	१०	०	०	५	५	५	७	३	८	११	५	२०	०	०	६	५	१०	४	३	१	१२	७	२	३०	०	८	४	८	२	४	८	२
४	१२	३०	०	५	५	९	७	४	९	९	५	२१	२५	४२	६	५	२	४	४	२	१०	७	३	२०	०	८	४	८	२	४	९	२
४	१२	५१	२५	५	५	९	७	४	१०	९	५	२२	३०	०	६	५	२	५	४	२	१०	७	४	१७	८	८	४	८	२	५	९	२
४	१३	२०	०	५	५	९	८	४	१०	९	५	२३	२०	०	६	५	२	५	४	३	१०	७	५	०	०	८	४	८	३	५	९	२
४	१५	०	०	५	५	९	८	५	१०	९	५	२५	०	०	६	५	२	५	५	३	१०	७	६	४०	०	८	४	८	३	५	१०	६
४	१६	४०	०	५	४	९	८	५	११	९	५	२५	४२	५१	६	५	२	५	५	४	८	७	७	३०	०	८	४	८	३	६	१०	६
४	१७	८	३४	५	४	९	८	६	११	९	६	२६	४०	०	६	५	२	६	५	४	८	७	८	३४	१७	८	४	८	३	६	११	६
४	१७	३०	०	५	४	९	९	६	११	९	६	२७	३०	०	६	५	२	६	६	४	८	७	१०	०	०	८	४	८	४	६	११	६
४	१८	०	०	५	४	९	९	६	१२	९	६	०	०	०	६	५	२	६	६	५	८	७	१२	०	०	८	४	१२	४	७	१२	६
४	२०	०	०	५	४	९	९	६	१२	३	६	२	३०	०	७	५	७	७	७	७	१	७	१२	३०	०	८	४	१२	४	७	१२	१२
४	२१	२५	४२	५	४	१	९	७	१	३	६	३	२०	०	७	५	७	७	७	८	१	७	१२	५१	२५	८	४	१२	४	७	१	१२
४	२२	३०	०	५	४	१	१०	७	१	३	६	४	१७	८	७	५	७	७	८	८	१	७	१३	२०	०	८	४	१२	५	७	१	१२
४	२३	२०	०	५	४	१	१०	७	२	३	६	५	०	०	७	५	७	८	८	८	१	७	१५	०	०	८	४	१२	५	८	१	१२
४	२५	०	०	५	४	१	१०	८	२	३	६	६	४०	०	७	५	७	८	८	९	११	७	१६	४०	०	८	५	१२	५	८	२	१२
४	२५	४२	५१	५	४	१	१०	८	३	७	६	७	३०	०	७	५	७	८	९	९	११	७	१७	८	३४	८	५	१२	५	९	२	१२
४	२६	४०	०	५	४	१	११	८	३	७	६	८	३४	१७	७	५	७	८	९	१०	११	७	१७	३०	०	८	५	१२	६	९	२	१२
४	२७	२०	०	५	४	१	११	९	३	७	६	१०	०	०	७	५	७	९	९	१०	११	७	२०	०	०	८	५	१२	६	९	३	१२
५	०	०	०	५	४	१	११	९	४	७	६	१२	३०	०	७	५	११	९	१०	११	९	७	२१	२५	४२	८	५	४	६	१०	४	१०
५	२	३०	०	६	४	६	१२	१०	६	२	६	१२	५१	२५	७	५	११	९	१०	१२	९	७	२२	३०	०	८	५	४	७	१०	४	१०
५	३	२०	०	६	४	६	१२	१०	७	२	६	१३	२०	०	७	५	११	१०	१०	१२	९	७	२३	२०	०	८	५	४	७	१०	५	१०
५	४	१७	८	६	४	६	१२	११	७	२	६	१५	०	०	७	५	११	१०	११	१२	९	७	२५	०	०	८	५	४	७	११	५	१०
५	५	०	०	६	४	६	१	११	७	२	६	१६	४०	०	७	४	११	१०	११	१	९	७	२५	४२	५१	८	५	४	७	११	६	८
५	६	४०	०	६	४	६	१	११	८	६	६	१७	८	३४	७	४	११	१०	१२	१	९	७	२६	४०	०	८	५	४	८	११	६	८

त्रिवर्ग-विचार

दशवर्ग में से सप्तवर्ग तो बताया जा चुका, अब त्रिवर्ग अर्थात् दशमांश, षोड़शांश और षष्ठ्यंश शेष रह गये हैं। प्रायः इनका काम कम ही पडता है। फिर भी, कभी-कभी, किसी फलित-विचार मे आवश्यक होते ही हैं।

दशमांश-चक्र ३१

अंश तक	मे	वृ	मि	क	सिं	कं	तु	वृ	ध	म	कुं.	मी
३	१	१०	३	१२	५	२	७	४	९	६	११	८
६	२	११	४	१	६	३	८	५	१०	७	१२	९
९	३	१२	५	२	७	४	९	६	११	८	१	१०
१२	४	१	६	३	८	५	१०	७	१२	९	२	११
१५	५	२	७	४	९	६	११	८	१	१०	३	१२
१८	६	३	८	५	१०	७	१२	९	२	११	४	१
२१	७	४	९	६	११	८	१	१०	३	१२	५	२
२४	८	५	१०	७	१२	९	२	११	४	१	६	३
२७	९	६	११	८	१	१०	३	१२	५	२	७	४
३०	१०	७	१२	९	२	११	४	१	६	३	८	५

दशमांश-नियम

इसमे प्रत्येक राशि के दश खण्ड ३-३ अंश के होते हैं। विषम राशि में अपनी ही राशि से, तथा समराशि मे, अपनी राशि से, नवम राशि का, दशमांश प्रारम्भ होकर क्रमश अन्त होता है। यथा—सूर्य २।०।१९ है, तो विषम (मिथुन) राशि मे, अपनी ही (मिथुन) राशि से प्रारम्भ, तथा ३ अंश के अन्दर ही होने के कारण मिथुन के ही दशमांश मे सूर्य रहा। चक्र ३१ में स्पष्ट है।

षोड़शांश

इसमें प्रत्येक राशि के सोलह खण्ड, १।५२।३० अंशादि के एक-एक खण्ड होते हैं। चरराशि में मेष से, स्थिर राशि में सिंह से, द्विस्वभाव राशि में धनु से प्रारम्भ होकर क्रमश ४-८-१२ राशि पर समाप्त होते हैं। यथा—सूर्य २।०।१९ है तो द्विस्वभाव (मिथुन) राशि में धनु से प्रारम्भ, तथा १।५२।३० वाले प्रथम खण्ड मे होने के कारण, धनु के ही षोडशांश में सूर्य रहा। चक्र ३२ में स्पष्ट देखिए।

षोडशांश-चक्र ३२

खण्डान्त	अंश	१	३	५	७	९	११	१३	१५	१६	१८	२०	२२	२४	२६	२८	३०
	कला	५२	४५	३७	३०	२२	१५	७	०	५२	४५	३७	३०	२२	१५	७	०
	विकला	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०
चर राशि	१।४।७।१०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	२	३	४
स्थिर राशि	२।५।८।११	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	२	३	४	५	६	७	८
द्विस्वभाव राशि	३।६।९।१२	९	१०	११	१२	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२

त्रिवर्ग–विचार

दशवर्ग में से सप्तवर्ग तो बताया जा चुका, अब त्रिवर्ग अर्थात् दशमांश, षोड़शांश और षष्ट्यंश शेष रह गये हैं। प्रायः इनका काम कम ही पड़ता है। फिर भी, कभी-कभी, किसी फलित-विचार में आवश्यक होते ही हैं।

दशमांश–चक्र ३१

अंश तक	मे	वृ	मि	क	सिं	कं	तु	वृ	ध	म	कुं.	मी
३	१	१०	३	१२	५	२	७	४	९	६	११	८
६	२	११	४	१	६	३	८	५	१०	७	१२	९
९	३	१२	५	२	७	४	९	६	११	८	१	१०
१२	४	१	६	३	८	५	१०	७	१२	९	२	११
१५	५	२	७	४	९	६	११	८	१	१०	३	१२
१८	६	३	८	५	१०	७	१२	९	२	११	४	१
२१	७	४	९	६	११	८	१	१०	३	१२	५	२
२४	८	५	१०	७	१२	९	२	११	४	१	६	३
२७	९	६	११	८	१	१०	३	१२	५	२	७	४
३०	१०	७	१२	९	२	११	४	१	६	३	८	५

दशमांश–नियम

इसमें प्रत्येक राशि के दश खण्ड ३-३ अंश के होते हैं। विषम राशि में अपनी ही राशि से, तथा समराशि में, अपनी राशि से, नवम राशि का, दशमांश प्रारम्भ होकर क्रमशः अन्त होता है। यथा—सूर्य २।०।१६ है, तो विषम (मिथुन) राशि में, अपनी ही (मिथुन) राशि से प्रारम्भ, तथा ३ अंश के अन्दर ही होने के कारण मिथुन के ही दशमांश में सूर्य रहा। चक्र ३१ में स्पष्ट है।

षोड़शांश

इसमें प्रत्येक राशि के सोलह खण्ड, १।५२।३० अंशादि के एक–एक खण्ड होते हैं। चरराशि में मेष से, स्थिर राशि में सिंह से, द्विस्वभाव राशि में धनु से प्रारम्भ होकर क्रमशः ४–८–१२ राशि पर समाप्त होते हैं। यथा—सूर्य २।०।१६ है तो द्विस्वभाव (मिथुन) राशि में धनु से प्रारम्भ, तथा १।५२।३० वाले प्रथम खण्ड में होने के कारण, धनु के ही षोडशांश में सूर्य रहा। चक्र ३२ में स्पष्ट देखिए।

षोडशांश–चक्र ३२

खण्डान्त	अंश	१	३	५	७	९	११	१३	१५	१६	१८	२०	२२	२४	२६	२८	३०
	कला	५२	४५	३७	३०	२२	१५	७	०	५२	४५	३७	३०	२२	१५	७	०
	विकला	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०
चर राशि	१।४।७।१०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	२	३	४
स्थिर राशि	२।५।८।११	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	२	३	४	५	६	७	८
द्विस्वभाव राशि	३।६।९।१२	९	१०	११	१२	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२

त्रिवर्ग-विचार

दशवर्ग में से सप्तवर्ग तो बताया जा चुका, अब त्रिवर्ग अर्थात् दशमाश, षोड़शाश और षष्ट्यंश शेष रह गये हैं। प्राय: इनका काम कम ही पडता है। फिर भी, कभी-कभी, किमी फलित-विचार मे आवश्यक होते ही हैं।

दशमांश-चक्र ३१

अंश तक	मे	वृ	मि	क	सिं	कं	तु	वृ	ध	म	कुं.	मी
३	१	१०	३	१२	५	२	७	४	९	६	११	८
६	२	११	४	१	६	३	८	५	१०	७	१२	९
९	३	१२	५	२	७	४	९	६	११	८	१	१०
१२	४	१	६	३	८	५	१०	७	१२	९	२	११
१५	५	२	७	४	९	६	११	८	१	१०	३	१२
१८	६	३	८	५	१०	७	१२	९	२	११	४	१
२१	७	४	९	६	११	८	१	१०	३	१२	५	२
२४	८	५	१०	७	१२	९	२	११	४	१	६	३
२७	९	६	११	८	१	१०	३	१२	५	२	७	४
३०	१०	७	१२	९	२	११	४	१	६	३	८	५

दशमांश-नियम

इसमे प्रत्येक राशि के दश खण्ड ३-३ अंश के होते हैं। विषम राशि में अपनी ही राशि से, तथा समराशि में, अपनी राशि से, नवम राशि का, दशमांश प्रारम्भ होकर क्रमश अन्त होता है। यथा—सूर्य २।०।१६ है, तो विषम (मिथुन) राशि मे, अपनी ही (मिथुन) राशि से प्रारम्भ, तथा ३ अंश के अन्दर ही होने के कारण मिथुन के ही दशमाश मे सूर्य रहा। चक्र ३१ में स्पष्ट है।

षोड़शांश

इसमें प्रत्येक राशि के सोलह खण्ड, १।५२।३० अंशादि के एक-एक खण्ड होते हैं। चरराशि में मेष से, स्थिर राशि में सिंह से, द्विस्वभाव राशि में धनु से प्रारम्भ होकर क्रमश ४-८-१२ राशि पर समाप्त होते हैं। यथा—सूर्य २।०।१६ है तो द्विस्वभाव (मिथुन) राशि में धनु से प्रारम्भ, तथा १।५२।३० वाले प्रथम खण्ड मे होने के कारण, धनु के ही षोडशाश मे सूर्य रहा। चक्र ३२ मे स्पष्ट देखिए।

षोडशाश-चक्र ३२

खण्डान्त	अंश	१	३	५	७	९	११	१३	१५	१६	१८	२०	२२	२४	२६	२८	३०
	कला	५२	४५	३७	३०	२२	१५	७	०	५२	४५	३७	३०	२२	१५	७	०
	विकला	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०
चर राशि	१।४।७।१०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	२	३	४
स्थिर राशि	२।५।८।११	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	२	३	४	५	६	७	८
द्विस्वभाव राशि	३।६।९।१२	९	१०	११	१२	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२

षष्ठ्यंश—चक्र ३३

विषम देवता	भाग संख्या	अंशादि		मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	सम देवता
घोर	१	०	३०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	इन्दुरेखा
राक्षस	२	१	०	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	भ्रमण
देव	३	१	३०	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	—१	२	पयोधि
कुबेर	४	२	०	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	२	३	सुधा
यक्ष	५	२	३०	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	२	३	४	शीतल
किन्नर	६	३	०	६	७	८	९	१०	११	१२	१	२	३	४	५	अशुभ
भ्र०	७	३	३०	७	८	९	१०	११	१२	१	२	३	४	५	६	शुभ
कुलघ्न	८	४	०	८	९	१०	११	१२	१	२	३	४	५	६	७	निर्मल
गरल	९	४	३०	९	१०	११	१२	१	२	३	४	५	६	७	८	दण्डायुध
अग्नि	१०	५	०	१०	११	१२	१	२	३	४	५	६	७	८	९	कालाग्नि
माया	११	५	३०	११	१२	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१	प्रवीश
प्रेत पुरीश	१२	६	०	१२	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१	११	इन्दुमुख
जलपति	१३	६	३०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	दंष्ट्राकराल
देवगणेश	१४	७		२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	शीतल
काल	१५	७	३	३	४	५	६	७	८	९	१	११	१२	१	२	मृदु
अहि	१६	८		४	५	६	७	८	९	१	११	१२	१	२	३	सौम्य
अमृत	१७	८	३	५	६	७	८	९	१	११	१२	१	२	३	४	काल
चन्द्र	१८	९		६	७	८	९	१	११	१२	१	२	३	४	५	पातक
मृत्यु	१९	९	३	७	८	९	१०	११	१२	१	२	३	४	५	६	वंशक्षय
कमला	२	१	०	८	९	१	११	१	१	२	३	४	५	६	७	कुलनाश
पद्म	१	१	३	९	१०	११	१२	१		३	४	५	६	७	८	विष
लक्ष्मीश	२२	११		१	११	१२	१	२	३	४	५	६	७	८	९	पूर्णेन्दु
वागीश	२३	११	३	११	१२	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१	अमृत
दिगम्बर	२४	१		१२	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	सुधा
देव	२५	१२	३	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१	११	१२	कण्टक
आर्द्र	६	१३		२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	यम
कलिनाग	२७	१३	३	३	४	५	६	७	८	९	१	११	१२	१	२	घोर
भूप	८	१४		४	५	६	७	८	९	१	११	१२	१	२	३	दावाग्नि
समुद्र	२९	१४	३	५	६	७	८	९	१	११	१२	१	२	३	४	काल
मान्दि	३	१५		६	७	८	९	१	११	१२	१	२	३	४	५	मृत्यु

षष्ठ्यंश-चक्र ३२

विषम देवता	योग संख्या	अंशादि		मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	सम देवता
मृत्यु	३१	१५	३०	७	८	९	१०	११	१२	१	२	३	४	५	६	मान्दि
काल	३२	१६	०	८	९	१०	११	१२	१	२	३	४	५	६	७	समुद्र
दावाग्नि	३३	१६	३०	९	१०	११	१२	१	२	३	४	५	६	७	८	भूप
घोर	३४	१७	०	१०	११	१२	१	२	३	४	५	६	७	८	९	कलिनाश
अभय	३५	१७	३०	११	१२	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	आर्द्र
कण्टक	३६	१८	०	१२	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	दव
सुधा	३७	१८	३०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	दिगम्बर
अमृत	३८	१९	०	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	वागीश
पूर्णेन्दु	३९	१९	३०	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	२	लक्ष्मीश
विष	४०	२०	०	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	२	३	पद्म
कुलनाश	४१	२०	३०	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	२	३	४	कोमल
वंशक्षय	४२	२१	०	६	७	८	९	१०	११	१२	१	२	३	४	५	मृदु
पातक	४३	२१	३०	७	८	९	१०	११	१२	१	२	३	४	५	६	चन्द्र
काल	४४	२२	०	८	९	१०	११	१२	१	२	३	४	५	६	७	अमृत
सौम्य	४५	२२	३०	९	१०	११	१२	१	२	३	४	५	६	७	८	अहि
मृदु	४६	२३	०	१०	११	१२	१	२	३	४	५	६	७	८	९	काल
शीतल	४७	२३	३०	११	१२	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	देवगणेश
दंष्ट्राकराल	४८	२४	०	१२	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	जलपति
इन्दुमुख	४९	२४	३०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	प्रेतपुरीश
प्रवीण	५०	२५	०	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	माया
कालाग्नि	५१	२५	३०	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	२	अग्नि
दण्डायुध	५२	२६	०	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	२	३	गरल
निर्मल	५३	२६	३०	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	२	३	४	कुलघ्न
शुभ	५४	२७	०	६	७	८	९	१०	११	१२	१	२	३	४	५	भ्रष्ट
अशुभ	५५	२७	३०	७	८	९	१०	११	१२	१	२	३	४	५	६	किन्नर
शीतल	५६	२८	०	८	९	१०	११	१२	१	२	३	४	५	६	७	यन्त्र
सुधा	५७	२८	३०	९	१०	११	१२	१	२	३	४	५	६	७	८	कुबेर
पयोधि	५८	२९	०	१०	११	१२	१	२	३	४	५	६	७	८	९	देव
भ्रमण	५९	२९	३०	११	१२	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	राक्षस
इन्दुरश्मि	६०	३०	०	१२	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	घोर

षष्ठ्यंश

इसमें प्रत्येक राशि के साठ खण्ड, ३०-३० कला के होते हैं। प्रत्येक षष्ठ्यंश अपनी ही राशि से प्रारम्भ होकर, क्रमशः पाँच बार में पूर्ण होता है। इनके देवता भी बताये गये हैं। देवता तो सभी वर्गों के बताये गये हैं किन्तु इनके विशेष प्रचलित हैं। हाँ, देवताओं के नामों में कहीं-कहीं पाठ-भेद अवश्य पाया जाता है। यथा—

यक्षागण, रक्षागण यक्ष। देवगणेश, मरुत्वान्। यम-भाग, इन्द्र। लक्ष्मीश, वागीश ब्रह्म, विष्णु। अमृत, अधम यम। किन्तु अर्थों में समता है अर्थात् जन्म-स्थिति में शुभाशुभ का बोध यथा तथ्य है।

हाँ, तो, जो देवताओं के नाम दिये हैं उनका फल, उन्हीं नामों के शुभाशुभ अर्थ के समान बोध करना चाहिए। षष्ठ्यंश और देवता जानने की विधि सरलता तथा स्पष्ट रूप से चक्र १३ के द्वारा जानना सुलभ है। अथवा—

ग्रह के राशि को छोड़कर शेष अंश-कला के कलायें बनाइए, इसमें ३० से भाग दें यदि शेष (कला-विकलादि) रहे, तो लब्धि में एक और जोड़िए, इस लब्धि की (योगफल) संख्या के सामने राशि के नीचे षष्ठ्यंश राशि तथा विषम राशि में बायीं ओर के एवं समराशि में दाहिनी ओर के देवता, चक्र १३ के द्वारा जानिए। यथा—

सूर्य २।०।१९ है। इसमें ०।१९ अंशादि अर्थात् केवल १९ कला हैं, इसमें ३० से भाग दिया, तो लब्धि में शून्य एवं शेष १९ रहने के कारण लब्धि में एक जोड़ा तो +१=१ ही हुआ। योग संख्या १ के सामने मिथुन (क्योंकि सूर्य मिथुन 'विषम' में है) राशि के नीचे चक्र १३ में देखो, तो ३ (मिथुन) का षष्ठ्यंश मिला, तथा विषम राशि होने के कारण योग संख्या १ के बायीं ओर देखो चक्र १३ में तो 'घोर' देवता का नाम मिला। तात्पर्य यह है कि, सूर्य मिथुन के षष्ठ्यंश में तथा घोरांश में रहा।

पारिजातादि-संज्ञा

दशवर्ग चक्र में या सप्तवर्ग चक्र में, जो ग्रह, अपने गृह (स्वराशि) का हो या अतिमित्र गृह का हो, उसे स्ववर्गादि वर्गी ग्रह कहते हैं। यदि दो बार स्ववर्गादि वर्गी ग्रह हो तो दशवर्ग द्वारा पारिजात संज्ञा तथा सप्तवर्ग द्वारा किंशुक संज्ञा होती है। यही सब आगे वाले चक्र १४ में लिखा गया है जिसे देखकर आपको स्पष्ट-ज्ञान हो जायगा। जो ग्रह, दो बार अपने गृह में या दो बार अतिमित्र-गृह में या एक बार अपने गृह में और एक बार अतिमित्र-गृह में हो—अर्थात् दो बार स्ववर्गादि वर्गी हो, तो उसकी सप्तवर्ग द्वारा 'किंशुक संज्ञा' तथा दशवर्ग द्वारा 'पारिजात संज्ञा' होती है। इसी प्रकार सप्तवर्ग में सात बार (वर्ग) तथा दशवर्ग में दश बार (वर्ग) सम्भव है।

संज्ञा चक्र १४

वर्ग	सप्तवर्ग द्वारा	दशवर्ग द्वारा
२	किंशुक	पारिजात
३	व्यञ्जन	उत्तम
४	चामर	गोपुर
५	छत्र	सिंहासन
६	कुण्डल	पारावत
७	मुकुट	देवलोक
८		ब्रह्मलोक
९		ऐरावत
१०		वैशेषिक या श्रीधाम

उदाहरण

नैसर्गिक मैत्रि-चक्र ३५

सू	च	मं	बु	गु	शु	श	रा	ग्रहों के
चं म गु	सू बु	सू च गु	सू. शु रा	सू च मं	बु श रा	बु शु. रा	बु शु श	मित्र
बु	म गु शु श	शु श	मं गु श	श रा	म गु	गु	गु	सम
शु श रा	रा	बु रा	च	बु शु	सू चं	सू च म	सू चं म	शत्रु

पञ्चधा मैत्रि-चक्र ३७

सू	चं	मं	बु	गु.	शु	श	रा	ग्रहों के
चं मं गु	सू बु	सू गु	शु	सू चं मं	बु. श	बु शु रा	श	अति मित्र
×	गु श	श	मं गु श	श रा	गु	गु	गु	मित्र
शु श	×	चं बु रा	सू. चं रा	बु शु	सू रा	सू चं म	म बु शु	सम
बु	मं शु	शु.	×	×	मं	×	×	शत्रु
रा	रा	×	×	×	च	×	सू चं	अति शत्रु

तात्कालिक–मैत्रि–चक्र ३६

सू	च	म	बु	गु	शु	श	रा	ग्रहों के
च म गु शु श	सू बु गु श	सू बु गु श रा	च मं गु शु श	सू च म बु शु श रा	सू बु गु. श	सू चं म बु गु शु रा	म गु श	मित्र
बु रा	म शु रा	चं शु	सू रा	×	च मं रा	×	सू च बु शु	शत्रु

उदाहरण

दशवर्ग का उदाहरण लिखने के पूर्व, हमे, नैसर्गिक मैत्री, तात्कालिक मैत्री और पञ्चधा मैत्री का उदाहरण लिखना पडेगा। जिनका वर्णन द्वितीय वर्तिका में कर चुके है। चक्र ४ की क्रम सख्या २१, चक्र ५ और चक्र ७४ के द्वारा ही उदाहरण लिखा जा सकता है, अतएव, आप, इन चक्रों पर भी ध्यान देकर उदाहरण को स्पष्ट समझने का प्रयत्न कीजिए। नैसर्गिक मैत्री चक्र, सर्वदा, सभी के लिए, एक-सा ही होता है, परन्तु, तात्कालिक एव पञ्चधा वाले मैत्री-चक, सभी के भिन्न-भिन्न होते हैं।

उदाहरण

बल सहित सप्तवर्ग चक्र ३८

[चक्र १०-१७, ५ के द्वारा]

सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	लग्न	ग्रह वर्ग
३ शत्रु ३।४५	२ शत्रु ३।४५	६ सम ७।३	३ स्व ३।०	४ अ मि २२।३	७ स्व ३०।०	५ सम ७।३	७ सम ७।३०	८ सम ७।३०	गृह
५ स्व ३०।	४ स्व ३०।०	५ अ मि २२।३	४ सम ७।३०	५ अ मि २२।३	५ सम ७।३०	४ सम ७।३	४ अ श १।५२ ३	४ सम ७।३	होरा
३ शत्रु ३।४५	२ शत्रु ३।४५	७ शत्रु ३।४५	७ अ मि २२।३०	१२ स्व ३०।०	१० अ मि ७ ।३	६ मित्र १५।०	३ सम ७।३	८ स्व ३ ।	द्रेष्काण
३ शत्रु ३।४५	८ शत्रु ३।४५	६ सम ७।३	७ अ मि २२।३०	३ सम ७।३	७ स्व ३ ।०	८ सम ७।३०	११ अ मि ।२	३ सम ७।३	सप्तांश
७ सम ७	१ मित्र १५।	६ सम ७।३	१२ मित्र १५।	११ मित्र १५।	५ सम ७।३	५ सम ७।३	१ सम ७।३	६ सम ७।३	नवांश
३ शत्रु ३।४५	३ अ मि २२।३०	५ अ मि ७ ।३	१ मित्र १५।०	१ अ मि ७।३	१२ मित्र १५।०	११ स्व ३ ।०	३ सम ७।३	११ मित्र १५।०	द्वादशांश
१ अ मि २२।३	७ शत्रु ३।४५	८ स्व ३ ।	३ स्व ३ ।	१ मित्र १५।०	८ शत्रु ३।४५	६ मित्र १५।	३ सम ७।३	६ सम ७।३	त्रिंशांश
१ १५	१ ३ ०	१ ४१ १५	७ २२ ३	७ १५ ०	१ ५६ १५	१ ३	१ १ ५ ३०	१ ०० ३	अंशादि बलयोग
८	९	५	१	२	३	४	६	७	बली क्रम
७	७	३	४	४	३	१	१	१	वर्ग भेद
किंशुक	किंशुक	व्यंजन	चामर	चामर	व्यंजन		•		संज्ञा

नोट—

प्रस्तुत चक्र में ३-३ पंक्ति हैं। वर्ग मित्र बल क्रमशः तीनों में लिखे गये हैं। चक्र १० के द्वारा प्रथम पंक्ति चक्र १७ के द्वारा द्वितीय पंक्ति, चक्र ५ के द्वारा तृतीय पंक्ति बनाया है। फिर सबका बलयोग किया गया है। फिर बल का क्रम, फिर स्वर्गादि वर्गी ग्रह की वर्ग भेद संख्या, अंत में संज्ञा लिखकर इस चक्र ३८ को पूर्ण किया गया है।

बली क्रम का नियम

सबसे अधिक बली (१) इससे कम (२) इससे कम (३) क्रमशः हैं।

उदाहरण

दशवर्ग—चक्र ३६

[चक्र ३१ – ३२ – ३३ – ३७ – ५ के द्वारा]

सू.	चं	मं	बु	गु	शु	श.	रा	लग्न	ग्रहवर्ग
३ शत्रु ३।४५	११ मित्र १५।०	११ मित्र १५।०	६ मित्र १५।०	८ अ मि २२।३०	६ अ मि २२।३०	१० स्व ३०।०	१ सम ७।३०	६ सम ७।३०	दशमांश
६ अ मि २२।३०	६ अ मि २२।३०	१२ अ मि २२।३०	७ अ मि २२।३०	२ सम ७।३०	७ स्व. ३०।०	१ सम ७।३०	१२ मित्र १५।०	६ अ मि २२।३०	षोडशांश
३ शत्रु ३।४५	८ शत्रु ३।४५	२ शत्रु ३।४५	४ सम ७।३०	५ अ मि २२।३०	६ अ मि २२।३०	२ अ मि २२।३०	१२ मित्र १५।०	१२ अ मि २२।३०	षष्ट्यंश
घोर	शुभ	कुबेर	अमृत	माया	कुलघ्न	घोर	वंशक्षय	काल	देवता
० ३० ०	० ४१ १५	० ४१ १५	० ४५ ०	० ५२ ३०	१ १५ ०	१ ० ०	० ३७ ३०	० ५२ ३०	त्रिवर्ग बलयोग अंशादि
१ १५ ०	१ ३० ०	१ ४१ १५	२ २२ ३०	२ १५ ०	१ ५६ १५	१ ३० ०	१ १ ५२ ३०	१ २२ ३०	सप्तवर्ग बलयोग अंशादि
१ ४५ ०	२ ११ ५	२ २२ ३०	३ ७ ३०	३ ७ ३०	३ ११ १५	२ ३० ०	१ ३६ २२ ३०	२ १५ ०	दशवर्ग बलयोग अंशादि
१	१	१	१	२	३	२	०	२	त्रिवर्ग श्रेष्ठ
२	२	३	४	४	३	१	१	१	सप्तवर्ग श्रेष्ठ
३	३	४	५	६	६	३	१	३	दशवर्ग श्रेष्ठ
उत्तम	उत्तम	गोपुर	सिंहासन	पारावत	पारावत	उत्तम	०	उत्तम	संज्ञा
८	७	५	३	२	१	४	६	६	बली क्रम

ग्रहों पर ग्रह-दृष्टि-चक्र ४०
[चक्र ४ के द्वारा]

दृश्य ग्रह	सू.	चं.	मं	बु.	गु	शु	श	राहु	केतु	दृष्टा ग्रह
सूर्य			१	०	०	०	०	पूर्ण	१	[illegible]
चन्द्र	०	०	२	०	०	०	पूर्ण	अल्प	२	"
मंगल	३		०	३	१	०	०	पूर्ण	१	"
बुध	०	०	१	०	०	०	०	पूर्ण	१	"
गुरु		१	०			१	०	२	अल्प	"
शुक्र	०		२		०	०	पूर्ण	अल्प	२	"
शनि	१	३		१		२	०	०	पूर्ण	"
राहु	२		०	२	३		पूर्ण	०	पूर्ण	"
केतु	०	०	पूर्ण	५	१	०	२	पूर्ण		"

भावों पर ग्रह-दृष्टि-चक्र ४१ [चक्र ४ के द्वारा]

दृश्य भाव	सूर्य	चन्द्र	मं	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु	दृष्टा ग्रह
लग्न	०	पूर्ण	१	०	पूर्ण	पूर्ण	३	२	अल्प	[illegible]
धन	पूर्ण	३	पूर्ण	पूर्ण	०	२	०	१	पूर्ण	"
भ्रातृ	३		२	३	पूर्ण	१		अल्प	२	"
सुख		१	०	२	३	१	पूर्ण	पूर्ण	०	"
सुत	१		पूर्ण	१	पूर्ण		३	१	पूर्ण	"
रिपु	०	०	पूर्ण	०	१	०	०	पूर्ण	स्थित	"
दारा		स्थित	२	०		स्थित	पूर्ण	अल्प	२	"
आयु	स्थित	०	१	स्थित		०	०	पूर्ण	१	"
धर्म	०	१		०	स्थित	१		२	अल्प	"
कर्म	१	३	०	१	०	३	स्थित	०	पूर्ण	"
लाभ	३	२	स्थित	३	१	०		पूर्ण	१	"
व्यय	२	०	०	०	३	०	पूर्ण	स्थित	पूर्ण	"

दृष्टा = देखने वाला। दृश्य = जिसको देखा जावे।

सूक्ष्म-दृष्टि-साधन में गणित का इतना झमेला है कि, जिसे साधारण तो क्या, असाधारण विद्वानों को भी कठिनता होती है।

षड्बल ज्ञान (द्वितीय प्रकार)

षड्बल तो पूर्ण समझने की वस्तु है। जिसे सिद्धान्त-गणितज्ञ के सिवाय अन्य ज्योतिषी कर ही नहीं सकते; और हम तो इस पुस्तक को सर्वसाधारण के उपयोगार्थ लिख रहे हैं। "किं वृथा पल्लवग्रहणेन।" केशवी जातक में दिये गये षड्-बल-साधन का गणित सर्वदा एवं सर्वजनों के लिए, सुसाध्य नहीं अतएव, इसके जानने की विधि, दूसरी प्रकार से भी है, तथा सुसाध्य है। बल जानने के लिए, जैसे सप्तवर्ग या दशवर्ग बनाया जाता है उसी प्रकार इसमें षड्-बल बनाया जाता है अर्थात् सात या दश प्रकार का न होकर केवल छह प्रकार का होता है। स्थानबल दिग्बल कालबल नैसर्गिक बल चेष्टाबल और दृग्बल नामक छह प्रकार हैं।

स्थानबल

जो ग्रह उच्च स्वगृही, मित्रगृही मूलत्रिकोणस्थ स्वनवांशस्थ और स्वद्रेष्काणस्थ हो अथवा अष्टक वर्ग के द्वारा ग्रह-स्थित-राशि पर ४ रेखा से अधिक पा रहा हो तो वह स्थान-बली होता है।

दिग्बल

यह दिशाओं का बल है। लग्न (पूर्व) में बुध गुरु, चतुर्थ (उत्तर) में चन्द्र शुक्र, सप्तम (पश्चिम) में शनि दशम (दक्षिण) में सूर्य-मंगल होने से दिग्बली होते हैं।

काल-बल

रात्रि में चन्द्र मंगल शनि और दिन में सूर्य बुध शुक्र तथा सर्वकाल में गुरु बली होता है। तात्पर्य यह है कि, रात्रि या दिन के इष्टकाल वाली कुण्डली में—कथित-ग्रह—बली होते हैं।

नैसर्गिक-बल

शनि से अधिक भौम भौम से बुध बुध से गुरु, गुरु से शुक्र, शुक्र से चन्द्र चन्द्र से सूर्य बली होता है। तात्पर्य यह है कि शनि से दुगुना बली मंगल होता है इसी प्रकार शनि से तिगुना बली बुध होता

है, इसी प्रकार शनि से चौगुना गुरु, शनि से पचगुना शुक्र, शनि से छ गुना चन्द्र, शनि से सतगुना बली सूर्य होता है।

चेष्टाबल

मकर से मिथुन तक किसी राशि मे यदि सूर्य या चन्द्र हो तो, चेष्टाबली होता है अर्थात् उत्तरायण राशियों में बली होते हैं अथवा ऐसे चन्द्रमा के साथ—मगल, बुध, गुरु, शुक्र, शनि आदि रहे, तो, भौमादि पंचग्रह भी बली होते हैं।

दृष्टिबल

शुभ-दृष्ट ग्रह बली होता है।

बल ज्ञान (तृतीय प्रकार)

महर्षि जैमिनि मतानुसार बल ज्ञान की विधि इस प्रकार हैं, जिसमे गणित का उलझावा नहीं। आगे कारक स्थल में आत्मकारक जानने की विधि लिखी जायगी। हाँ, तो, जो ग्रह, आत्मकारक से प्रथम–चतुर्थ–सप्तम–दशम (केन्द्र) में हो, वह पूर्ण बली होता है। इसी प्रकार आत्मकारक से पणफर (२–५–८–११वें) स्थान में, जो ग्रह हो, वह अर्ध बली होता है। इसी प्रकार आपोक्लिम स्थानस्थ ग्रह दुर्बल होता है।

राशि बल ज्ञान के लिए, लिखा पाया जाता है कि, सग्रह राशि बली, अर्थात् ग्रह-हीन राशि की अपेक्षा, ग्रह–सहित वाली राशि बलिष्ठ होती है। यदि दोनों मे ग्रह हों तो, अधिक ग्रह वाली राशि बलिष्ठ रहेगी। यदि दोनों राशि में ग्रह–सख्या, समान हो तो, जिस राशि में उच्च, स्वगृही, या मित्रगृही ग्रह हो, वही राशि बलिष्ठ रहेगी। यह विचार सूर्य–चन्द्र की राशि मे नहीं किया जाता। केवल मेष–वृश्चिक, वृष–तुला, मिथुन–कन्या, धनु–मीन, मकर–कुम्भ मे किया जाता है। जिन दो राशियों का स्वामी एक ही ग्रह होता है, उन्ही राशियों का राशिबल देखा जाता है।

जैमिनि–दृष्टि (द्वितीय प्रकार)

एक प्रकार से (चक्र ४ में) बतायी जा चुकी है। वही सर्वदा कार्य में प्रयोग की जाती है। यह, जो, दूसरी प्रकार की, आपको, बताना चाहता हूँ, इसका कार्य, कुछ ही स्थलों पर पड़ता है। उदाहरणार्थ, नपुसक योग में इसका प्रयोग किया गया है। जहाँ किया जायगा, वहाँ आपको, सूचित भी किया जायगा। आगे चक्र ४२ देखिए।

दृष्टि–चक्र ४२

राशिस्थ ग्रह की दृष्टि	राशिस्थग्रह पर
१	५।८।११
२	४।७।१०
३	६।९।१२
४	२।११।८
५	१।१०।७
६	९।१२।३
७	११।२।५
८	१०।१।४
९	१२।३।६
१०	२।५।८
११	१।४।७
१२	३।६।९

स्पष्टीकरण

चरराशिस्थग्रह, अपने समीप वाली स्थिर राशि छोड़कर, शेष स्थिर राशिस्थ ग्रहों पर दृष्टि डालता है। इसी प्रकार स्थिर राशिस्थ ग्रह अपने समीप वाली चर राशि को छोड़कर, शेष चर राशिस्थ ग्रह को देखता है। समीप का अर्थ केवल २–१२ वाँ स्थान। अर्थात् दूसरे–बारहवें दृष्टि नहीं है। अच्छा, तो, द्विस्वभाव राशिस्थ ग्रह, अन्य द्विस्वभाव राशिस्थ ग्रहों को परस्पर देखता है। तात्पर्य यह है कि चतुर्थ–सप्तम–दशम को देखता है। यथा—

मिथुन राशिस्थ सूर्य–बुध की दृष्टि, कन्या राशिस्थ भौम पर है एव भौम की दृष्टि, सूर्य–बुध पर है। तथैव स्थिरराशिस्थ चन्द्र–शुक्र की दृष्टि, चर राशिस्थ गुरु और राहु पर है, एव राहु और गुरु की दृष्टि, चन्द्र–शुक्र पर है। स्थिर राशिस्थ शनि की दृष्टि, राहु–केतु पर है तथा राहु–केतु की दृष्टि, शनि पर है। देखिए चक्र २४।

कारक-सिद्धान्त

क्रम	(क)	(ख)	(ग)	(मत)
१	परमात्मा	माया	जीवात्मा	
२	चैतन्य	चैतन्य-जड़	जड़	
३	परमाणु	सूक्ष्म	स्थूल	
४	आदि	मध्य	अन्त	
५	स्वतन्त्र-आकाश	वृत्ति	परतन्त्र-आकाश	
६	मूल	शाखा	पत्र	
७	स्वर्लोक	भुवर्लोक	भूर्लोक	(त्रिलोक)
८	दिवा	सन्ध्या	रात्रि	(त्रिभाग)
९	अक्षर	स्वर	अर्थ	(त्रिविनियोग)
१०	ज्ञान	उपासना	कर्म	(त्रिकाण्ड)
११	शिर	उदर	चरण	(त्रिअवयव)
१२	प्रात	मध्य	सायम्	(त्रिसन्धि)
१३	भूत	भविष्य	वर्तमान	(त्रिकाल)
१४	पथिक	मार्ग	संसार	(त्रिसंयोग)
१५	प्रमाण	इच्छा	फल	(त्रैराशिक गणित)
१६	सत्व	रज	तम	(त्रिगुण)
१७	पित्त	वात	कफ	(आयुर्वेद)
१८	आकाश	अग्नि-वायु	जल-भूमि	(तत्व)
१९	ब्रह्मा	विष्णु	महेश	(त्रिदेव)
२०	सृजन	रक्षण	विनाशन	(त्रिकार्य)
२१	पिता	माता	पुत्र	(त्रिजीव)
२२	बीज	रज	जीव	(त्रिशक्ति)
२३	मन	मस्तिष्क	इन्द्रियाँ	(")
२४	कर्ता	करण	कर्म	(व्याकरण)
२५	अहं	तुम	यह	(")
२६	अन्यपुरुष	मध्यमपुरुष	प्रथमपुरुष	(")
२७	आत्म (स्वयं)	अमात्य	जातक	(जैमिनि)
२८	गुण	कोटि	कण	(व्यासिनि)
२९	आत्मिक	मानसिक	शारीरिक	(विज्ञान)
३०	इच्छा	तप	शक्ति	(सामुद्रिक)
३१	३	२	१	पुरुषमत
३२	१०	१ ५	६ ५	प्रतिशत
३३	१	२	३	स्त्रीमत
३४	६०	३ %	१०%	प्रतिशत
३५	स्त्री-१-पति	धन-२-पुत्र	१ स्वयम्	गर्हित
३६	१०%	३	६ ५	प्रतिशत
३७	धार्मिक-१	मानसिक-२	शारीरिक-३	पारलौकिक
३८	६	३ ३	१०	प्रतिशत

क्रम	(क)	(ख)	(ग)	(मत)
३६	सहायता	परिस्थिति	उपयोग	(विधि)
४०	स्त्री–पति	धन–पुत्र	स्वयम्	(पुरुष–स्त्री–मत)
४१	योगाध्याय	दशाध्याय	गोचराध्याय	(फलित खण्ड)
४२	सूर्य	चन्द्र	मंगल	(ग्रह) स्वाभाविक
४३	बुध	गुरु	शुक्र	(सहायक) स्वाभाविक
४४	शनि	राहु	केतु	(प्रति सहायक) स्वाभाविक
४५	नवम	पंचम	लग्न	(त्रिकोण)
४६	दशम	सप्तम	चतुर्थ	(केन्द्र)
४७	१२ वाँ	८ वाँ	६ ठा	(त्रिक)
४८	आपोक्लिम	पणफर	कण्टक	(यवनाचार्य)
४९	द्विस्वभाव	स्थिर	चर	(राशि)
५०	३–६–९–१२	२–५–८–११	१–४–७–१०	(भाव)
५१	६–१२	६–१२	३–१२	(आपोक्लिम में)
५२	५–११	२–११	८–११	(पणफर में)
५३	१०–७	४–७	१–७	(कण्टक में)
५४	वीर्य+रज	रज+वीर्य	शरीर+वीर्य	(चर)
५५	बुद्धि+लाभ	धन+लाभ	आयु+लाभ	(स्थिर)
५६	भाग्य+व्यय	रोग+मुक्ति	शक्ति+यात्रा	(द्विस्वभाव)
५७	दैविक	भौतिक	दैहिक	(त्रिवृत्ति)
५८	बाल्य	युवा	वृद्धा	(दशा)
५९	ऋक्	साम	यजु	(वेद)
६०	गुरु	विद्या	बुद्धि	(त्रिसंस्कार)
६१	देश	काल	पात्र	(नियम)

बलिष्ठ–कारक–साधन

पहिले कुण्डली के पाँच ग्रहों पर विशेष ध्यान दीजिए। १—लग्न–लग्नेश या इन पर विशेष प्रभाव डालने वाला ग्रह, २—सूर्य, ३—चन्द्र, ४—सप्तवर्ग में सर्वाधिक बली ग्रह, ५—आत्मकारक ग्रह। इनमें भी दोष-रहित तीन ग्रह छाँटिए। वे तीनों ग्रह बल-क्रम से शारीरिक, मानसिक, आत्मिक नामक तीन कारक होते हैं। 'कारक–सिद्धान्त' के अनुसार आत्मिक कारक के अधिष्ठाता (क) क्षेत्र वाले, मानसिक कारक के अधिष्ठाता (ख) क्षेत्रवाले तथा शारीरिक कारक के अधिष्ठाता (ग) क्षेत्र वाले होते हैं। ऐसा नियम पुरुष एवं ऐहिक व्यक्ति में होता है, तथा स्त्री एवं पारलौकिक (महात्मा) व्यक्ति के समन्वय में विपरीत नियम माना गया है। क्योंकि, सप्तवर्ग द्वारा सर्वाधिक बली ग्रह जब, पुरुष के लिए शारीरिक होता है। तब स्त्री के लिए आत्मिक (पतिकारक) (क) क्षेत्रवाला हो जाता है। इसी प्रकार, सप्तवर्ग में सर्वाधिक बली ग्रह जब, ऐहिक व्यक्ति के लिए (ग) क्षेत्र का निर्माण करता है, तब, पारलौकिक व्यक्ति के लिए (क) क्षेत्र का निर्माता बन जाता है।

त्रिकोण-पति ही होते है। यथा—वृश्चिक लग्न वाला व्यक्ति, यदि गुरु या चन्द्र या मगल की श्रेष्ठता पा जाय तो उसका जीवन अत्युत्तम रहता है। मगल से चन्द्र और चन्द्र से गुरु वाला व्यक्ति उत्तरोत्तर श्रेष्ठ होता जायगा। जो ग्रह, फलित खण्ड के अनेक नियमों से सर्वश्रेष्ठ होगा, उसी ग्रह के अनुसार शरीर, विद्या, व्यापार आदि का निर्माण होगा। यदि कुण्डली मे कोई शुभयोग बने, यदि उसी की दशा हो तो, अपने गोचर-बलिष्ठ-समय में निश्चित फलदायक हो जाता है।

स्थिर-कारक-चक्र ४३

कारकग्रह	आत्मादि के	राजादि के	पित्रादि के	भावों के	नोट—
सूर्य	आत्मा	राजा	पिता	लग्न, नवम, दशम	जिन भावों के कई कारक हों, उनमें बलवान ग्रह को ही कारक मानना चाहिए। कारक बली होने से आत्मादिक भी बली होते हैं, परन्तु शनि के बलवान होने पर, दुःख, नौकर, आयु की वृद्धि होती है। "विपरीत शने स्मृतम।"
चन्द्र	मन	रानी	माता	चतुर्थ	
भौम	सत्व	सेनापति	भाई	तृतीय, षष्ठ	
बुध	वाणी	राजकुमार	मातुल(मामा)	चतुर्थ, दशम	
गुरु	ज्ञान, सुख	मन्त्री	पुत्र	धन, पंचम, नवम, दशम, लाभ	
शुक्र	वीर्य	मन्त्री	स्त्री	सप्तम	
शनि	दुःख	नौकर	मृत्यु	षष्ठ, अष्टम, दशम, व्यय	

चर – कारक – साधन (प्रथम विधि)

ग्रह-स्पष्ट-चक्र २३ मे देखिए। राहु-केतु को छोडकर, शेष सूर्यादि सात ग्रहों मे, राशि छोडकर, अंशादि मात्र, सभी ग्रहों की अपेक्षा, किसके अधिक हैं ?

अधिक अंशवाला ग्रह आत्मकारक, इससे कम अमात्य, इससे कम भ्रातृ, इससे कम मातृ, इससे कम पुत्र, इससे कम जाति और इससे कम स्त्री का कारक होता है।

किसी मत से राहु-सहित आठ कारक माने गये हैं तब क्रमश आत्म, अमात्य (मन), भ्रातृ, माता, पिता, पुत्र, जाति और स्त्री के कारक होते हैं। अंशादि की न्यूनता से क्रम रहेगा। अर्थात सर्वाधिक अंशवाला आत्मा, इससे कम वाला अमात्य आदि क्रमश होते हैं। किन्तु, राहु के कम अंश ही अधिक माने जाते हैं, क्योंकि, वक्री ग्रह के भोग्य अंशों की गणना की जाती है।

उदाहरण

चर-कारक-चक्र ४४

सूर्य ८	चन्द्र ७	भौम १	बुध ५	गुरु ३	शुक्र २	शनि ६	राहु ४	ग्रह
०।१६	३।१	२८।२६	१८।४६	२४।३३	२६।१६	१६।३७	२०।५४	अंशादि (चक्र २३ से)
स्त्री	जाति	आत्मा	पिता	भाई	अमात्य	पुत्र	माता	आठ ग्रह द्वारा
स्त्री	जाति	आत्मा	माता	भाई	अमात्य	पुत्र	×	सात ग्रह द्वारा

सात या आठ कारक मानने से बात कुछ एक-सी दिखाई पड़ती है। सात मानने में पिता का कारक नहीं बताया गया, और माता-पिता का तो 'जल-वीची' के समान एक ही रूप होना है।

त्रिकोण-पति ही होते हैं। यथा—वृश्चिक लग्न वाला व्यक्ति, यदि गुरु या चन्द्र या मंगल की श्रेष्ठता पा जाय तो उसका जीवन अत्युत्तम रहता है। मंगल से चन्द्र और चन्द्र से गुरु वाला व्यक्ति उत्तरोत्तर श्रेष्ठ होता जायगा। जो ग्रह, फलित खण्ड के अनेक नियमों से सर्वश्रेष्ठ होगा, उसी ग्रह के अनुसार शरीर, विद्या, व्यापार आदि का निर्माण होगा। यदि कुण्डली से कोई शुभयोग बने, यदि उसी की दशा हो तो, अपने गोचर-बलिष्ठ-समय में निश्चित फलदायक हो जाता है।

स्थिर-कारक-चक्र ४३

कारकग्रह	आत्मादि के	राजादि के	पित्रादि के	भावों के
सूर्य	आत्मा	राजा	पिता	लग्न, नवम, दशम
चन्द्र	मन	रानी	माता	चतुर्थ
भौम	सत्व	सेनापति	भाई	तृतीय, षष्ठ
बुध	वाणी	राजकुमार	मातुल(मामा)	चतुर्थ, दशम
गुरु	ज्ञान, सुख	मन्त्री	पुत्र	धन, पंचम, नवम, दशम, लाभ
शुक्र	वीर्य	मन्त्री	स्त्री	सप्तम
शनि	दुःख	नौकर	मृत्यु	षष्ठ, अष्टम, दशम, व्यय

नोट—

जिन भावों के कई कारक हो, उनमें बलवान ग्रह को ही कारक मानना चाहिए।

कारक बली होने से आत्मादिक भी बली होते हैं, परन्तु शनि के बलवान होने पर, सुख, नौकर, आयु की वृद्धि होती है।

"विपरीत शने स्मृतम।"

चर – कारक – साधन (प्रथम विधि)

ग्रह-स्पष्ट-चक्र २३ मे देखिए। राहु-केतु को छोडकर, शेष सूर्यादि सात ग्रहों मे, राशि छोडकर, अंशादि मात्र, सभी ग्रहों की अपेक्षा, किसके अधिक हैं?

अधिक अंशवाला ग्रह आत्मकारक, इससे कम अमात्य, इससे कम भ्रातृ, इससे कम मातृ, इससे कम पुत्र, इससे कम जाति और इससे कम स्त्री का कारक होता है।

किसी मत से राहु-सहित आठ कारक माने गये हैं तब क्रमश आत्म, अमात्य (मन), भ्रातृ, माता, पिता, पुत्र, जाति और स्त्री के कारक होते हैं। अंशादि की न्यूनता से क्रम रहेगा। अर्थात सर्वाधिक अंशवाला आत्मा, इससे कम वाला अमात्य आदि क्रमश होते हैं। किन्तु, राहु के कम अंश ही अधिक माने जाते हैं, क्योंकि, वक्री ग्रह के भोग्य अंशों की गणना की जाती है।

उदाहरण

चर-कारक-चक्र ४४

सूर्य ८	चन्द्र ७	भौम १	बुध ५	गुरु ३	शुक्र २	शनि ६	राहु ४	ग्रह
०।१६	३।१	२८।२६	१८।४६	२४।३३	२६।१६	१६।३७	२०।५४	अंशादि (चक्र २३ से)
स्त्री	जाति	आत्मा	पिता	भाई	अमात्य	पुत्र	माता	आठ ग्रह द्वारा
स्त्री	जाति	आत्मा	माता	भाई	अमात्य	पुत्र	×	सात ग्रह द्वारा

सात या आठ कारक मानने से बात कुछ एक-सी दिखाई पडती है। सात मानने में पिता का कारक नहीं बताया गया, और माता-पिता का तो 'जल-वीची' के समान एक ही रूप होता है।

शरीर में ग्रह

प्रत्येक ज्ञान का माप दर्शन-शास्त्र के द्वारा किया जाता है। अध्यात्म-शास्त्र के मत से दृश्यमान सृष्टि, केवल नाम-रूप या कर्म की ही नहीं है, किन्तु इस नाम-रूपात्मक आवरण के लिए आधार-भूत, एक अरूपी स्वतन्त्र, अविनाशी नित्य चैतन्य 'आत्म-तत्त्व' है, जो कि, प्राणिमात्र में कर्मबन्धन के कारण परतन्त्र और विनाशी दिखायी देता है। कर्म के संचित प्रारब्ध और क्रियमाण नामक तीन भेद होते हैं। वर्तमान क्षण तक कृत-कर्म ही 'संचित' कहे जाते हैं। अनेक जन्म जन्मान्तरों के संचित कर्मों को एक साथ भोगना असम्भव है, क्योंकि उनके परिणाम स्वरूप मिलनेवाले फल परस्पर विरोधी भी होते हैं, अतएव एक के बाद एक भोगने का नियम हो गया है। संचित में से जितन का भोगना प्रारम्भ हो जाता है, उसे 'प्रारब्ध' कहते हैं। जो कर्म अभी हो रहे हैं या जो किये जायेंगे, वे 'क्रियमाण' होते हैं। इन तीन प्रकार के कर्मों के कारण आत्मा अनेक जन्मों (पर्यायों) को धारण कर संस्कार-अर्जन करता हुआ चल रहा है।

अनादि कालीन कर्म-प्रवाह के कारण लिंग-शरीर कर्मपथ-शरीर और भौतिक-शरीर से आत्मा का सम्पर्क रहता है। आत्मा, जब एक भौतिक-शरीर का परित्याग करता है तब, उसे लिंग-शरीर ही अन्य भौतिक-शरीर की प्राप्ति में सहायक होता है। विशेषता यह है कि, आत्मा अन्य भौतिक-शरीर में प्रवेश पाते ही जन्म-जन्मान्तरों के संस्कारों की निश्चित-स्मृति को भूल जाता है। मानव का भौतिक-शरीर भी ज्योति-उपशरीर (Astrals-Body) द्वारा नक्षत्र-जगत् से मानसिक-उपशरीर द्वारा मानसिक जगत् से और पौद्गलिक-उपशरीर द्वारा भौतिक-जगत् से सम्बन्धित है। मानव अपने भाव विचार एवं क्रिया द्वारा प्रत्येक जगत् को प्रभावित करता है। उसके वर्तमान शरीर में ज्ञान दर्शन, सुख, वीर्य आदि अनेक शक्तियों का आधार-भूत 'आत्मा सर्वत्र व्यापक है तथा शरीर-प्रमाण रहने पर भी अपनी चैतन्य क्रियाओं द्वारा विभिन्न-जगत् में अपना कार्य करता है। आत्मा की इस क्रिया-विशेष के कारण, मनोवैज्ञानिकों ने मानव के व्यक्तित्व को आन्तरिक और बाह्य दो भागों में विभक्त कर दिया है।

बाह्य-व्यक्तित्व—वह कहा जाता है जो आत्मा' इस भौतिक-शरीर के रूप में अवतार लेकर चैतन्य-क्रिया-विशेष के कारण अपने पूर्व जन्माजित निश्चित-प्रकार के, भाव-विचार-क्रिया के प्रति झुकाव रखता है तथा वर्तमान जीवन के अनुभव द्वारा इस व्यक्तित्व के विकास में वृद्धि होती है, एवं धीरे-धीरे विकसित होकर 'आन्तरिक-व्यक्तित्व' में मिलन का प्रयास करता रहता है।

आन्तरिक व्यक्तित्व—वह कहा जाता है, जो अनेक बाह्य-व्यक्तित्व की स्मृति अनुभव और प्रवृत्ति का संकलन अपने में रखता है।

व्यक्तित्व में बाह्य और आन्तरिक सम्बन्धी चेतना के विचार अनुभव और क्रिया नामक तीन-तीन भेद हैं, जिनसे भौतिक-मानसिक-आध्यात्मिक तीन जगत् का संचालन होता है, और मानव का अन्तःकरण आकर्षण और विकर्षण प्रवृत्ति द्वारा दोनों व्यक्तित्वों के, तीन-तीन भेदों का परस्पर सम्मिलन कराता रहता है। आकर्षण प्रवृत्ति बाह्य-व्यक्तित्व को और विकर्षण-प्रवृत्ति आन्तरिक-व्यक्तित्व को प्रभावित करती है, एवं इन दोनों के बीच में रहनेवाला अन्तःकरण उन्हें सन्तुलन देता है। मानव की उन्नति और अवनति इसी 'सन्तुलन' पर निर्भर है।

बाह्य और आन्तरिक व्यक्तित्व के तीन-तीन (छह) रूप तथा सातवाँ अन्तःकरण के सात प्रतीक, और जगत के सात-ग्रह हैं। इन सातों प्रतीकों ने प्रकट रूप आत्मिक-मानसिक-शारीरिक नामक

तीन-तीन भेद हो जाते हैं।

दर्शन में	भाव	विचार	क्रिया
	आध्यात्मिक	मानसिक	शारीरिक
ज्योतिष में	विचार	अनुभव	क्रिया
	१	२	३
वाह्य	गुरु (१)	मंगल (२)	चन्द्रमा (३)
आन्तरिक	शुक्र (४)	बुध (५)	सूर्य (६)
	आत्मिक	मानसिक	शारीरिक
	अन्तःकरण =	शनि (७)	

गुरु

वाह्य-व्यक्तित्व के प्रथम रूप 'विचार' का स्वामी गुरु है। यह प्राणिमात्र के शरीर का प्रतिनिधि होने से, शरीर-संचालन के लिए, रक्त-प्रदान करता है। जीवित प्राणी के रक्त में रहने वाले कीटाणुओं की चेतना से 'गुरु' का सम्बन्ध रहता है। यह आत्मिक रूप से, विचार और मनोभाव एवं इन दोनों का मिश्रण—'उदारता, अच्छा स्वभाव, सौन्दर्य-प्रेम, शान्ति, भक्ति और व्यवस्थापक-बुद्धि' के रूप में करता है। यही मानसिक रूप से गुरु के व्यापार (कार्य) अर्थात धर्म तथा न्याय के स्थान—मन्दिर, पुजारी, मन्त्री, न्यायालय, न्यायाधीश, विश्व-विद्यालय, धारा-सभाएँ, जनता के उत्सव, दान, सहानुभूति आदि का प्रतिनिधित्व करता है। शारीरिक रूप से—पैर, जंघा, हृदय, पाचन-क्रिया, रक्त एवं नसों का प्रतिनिधित्व करता है।

मंगल

वाह्य-व्यक्तित्व के द्वितीय रूप 'अनुभव' का स्वामी मंगल है। यह इन्द्रिय-ज्ञान, आनन्देच्छा, उत्तेजना और संवेदना द्वारा आवेग, वाह्य आनन्ददायक वस्तुओं के द्वारा क्रिया-शील, पूर्व की आनन्ददायक अनुभव-स्मृति को जगाने वाला, मनोरथ-पूर्ति एवं वस्तु-प्राप्ति वाले उपायों के कारणों की क्रिया का प्रधान उद्गम-स्थान है। विशेषतया इच्छा का कारक है। आत्मिक रूप से—साहस, वीरता, दृढता, आत्मविश्वास, क्रोध, साम्रामिक प्रवृत्ति, प्रभुत्व आदि विचारों एवं भावों का प्रतिनिधि है। मानसिक रूप से—सैनिक, डाक्टर, रासायनिक, नाई, बढई, लोहार, मशीन का कार्य-कर्ता, मकान-निर्माता, क्रीड़ा एवं क्रीडा के सामान का प्रतिनिधि है। शारीरिक रूप से—बाहिरी भाग, शिर, नाक, गला का प्रतिनिधि है। इसके द्वारा संक्रामक रोग, व्रण, खरोंच, आप्रेशन, रक्त-दोष, पीडा आदि प्रकट होते हैं।

चन्द्रमा

वाह्य-व्यक्तित्व के तृतीय रूप 'क्रिया' का स्वामी चन्द्रमा है। यह मानव पर शारीरिक प्रभाव, विभिन्न अंगों पर तथा उनके कार्यों में सुधार का प्रतिनिधि है। मानव के शिरोभाग में अगला और पिछला—दो खण्ड हैं। पिछला-चेतना एवं अगला=उपचेतना कहलाता है। वस्तु-जगत् से सम्बन्ध रखने वाली चेतना पर चन्द्र का प्रभाव रहता है। वाह्य-जगत् की वस्तु द्वारा होने वाली क्रियायें, चन्द्र से ही सम्बन्धित हैं। चन्द्र, स्थूल-शरीरस्थ चेतना पर प्रभाव डालता है और मस्तिष्क में उत्पन्न होनेवाले परिवर्तनशील भावों का प्रतिनिधि है। आत्मिक रूप से—संवेदना, आन्तरिक इच्छा, उतावलापन, भावना (घरेलू जीवन की भावना विशेष), कल्पना, सतर्कता एवं लाभेच्छा पर प्रभाव डालता है। मानसिक रूप से-श्वेतरंग, जहाज, बन्दरगाह, मछली, जल, तरल-पदार्थ, नर्स, दासी, भोजन, चाँदी एवं बैंगनी रंग की वस्तुओं का प्रतिनिधि है। शारीरिक रूप से—उदर, पाचन-शक्ति, दुग्धावयव, गर्भाशय, गुप्तेन्द्रिय और नेत्र का प्रतिनिधि है।

शरीर में ग्रह

प्रत्यक्ष ज्ञान का माप दर्शन-शास्त्र के द्वारा किया जाता है। अध्यात्म-शास्त्र के मत से दृश्यमान सृष्टि, केवल नाम-रूप या कर्म की ही नहीं है, किन्तु इस नाम-रूपात्मक आवरण के लिए आधार-भूत, एक अरूपी, स्वतन्त्र, अविनाशी, नित्य, चैतन्य 'आत्म-तत्त्व' है जो कि, प्राणिमात्र में कर्मबन्धन के कारण परतन्त्र और विनाशी दिखायी देता है। कर्म के संचित, प्रारब्ध और क्रियमाण नामक तीन भेद होते हैं। वर्तमान क्षण तक कृत-कर्म ही 'संचित' कहे जाते हैं। अनेक जन्म जन्मान्तरों के संचित कर्मों को एक साथ भोगना असम्भव है; क्योंकि उनके परिणाम स्वरूप मिलनेवाले फल परस्पर विरोधी भी होते हैं, अतएव एक के बाद एक भोगने का नियम हो गया है। संचित में से जितने का भोगना प्रारम्भ हो जाता है, उसे 'प्रारब्ध' कहते हैं। जो कर्म अभी हो रहे हैं या जो किये जायेंगे वे 'क्रियमाण' होते हैं। इन तीन प्रकार के कर्मों के कारण आत्मा अनेक जन्मों (पर्यायों) को धारण कर संस्कार-अर्जन करता हुआ चल रहा है।

अनादि कालीन कर्म-प्रवाह के कारण लिंग-शरीर, कारण-शरीर और भौतिक-शरीर से 'आत्मा' का सम्पर्क रहता है। आत्मा जब एक भौतिक-शरीर का परित्याग करता है तब, उसे लिंग-शरीर ही अन्य भौतिक-शरीर की प्राप्ति में सहायक होता है। विशेषता यह है कि आत्मा अन्य भौतिक-शरीर में प्रवेश पाते ही जन्म-जन्मान्तरों के संस्कारों की निश्चित-स्मृति को भूल जाता है। मानव का भौतिक-शरीर भी ज्योति-उपशरीर (Astralus-Body) द्वारा नक्षत्र-जगत् से, मानसिक-उपशरीर द्वारा मानसिक जगत् से और पौद्गलिक-उपशरीर द्वारा भौतिक-जगत् से सम्बन्धित है। मानव, अपने भाव विचार एवं क्रिया द्वारा प्रत्येक जगत् को प्रभावित करता है। उसके वर्तमान शरीर में ज्ञान, दर्शन, सुख, वीर्य आदि अनेक शक्तियों का आधार-भूत 'आत्मा' सर्वत्र व्यापक है तथा शरीर-प्रमाण रहने पर भी, अपनी चैतन्य क्रियाओं द्वारा विभिन्न-जगत् में अपना कार्य करता है। आत्मा की इस क्रिया-विशेष के कारण मनोवैज्ञानिकों ने मानव के व्यक्तित्व को आन्तरिक और बाह्य दो भागों में विभक्त कर दिया है।

बाह्य-व्यक्तित्व—यह कहा जाता है जो 'आत्मा' इस भौतिक-शरीर के रूप में अवतार लेकर, चैतन्य-क्रिया-विशेष के कारण अपने पूर्व जन्मार्जित, निश्चित-प्रकार के, भाव-विचार-क्रिया के प्रति झुकाव रखता है तथा वर्तमान जीवन के अनुभव द्वारा इस व्यक्तित्व के विकास में वृद्धि होती है, एवं धीरे-धीरे विकसित होकर 'आन्तरिक-व्यक्तित्व' में मिलने का प्रयास करता रहता है।

आन्तरिक व्यक्तित्व—यह कहा जाता है, जो अनेक बाह्य-व्यक्तित्व की स्मृति, अनुभव और प्रवृत्ति का संकलन अपने में रखता है।

ज्योतिष में बाह्य और आन्तरिक सम्बन्धी चेतना के विचार, अनुभव और क्रिया नामक तीन-तीन भेद हैं, जिनसे भौतिक-मानसिक-आध्यात्मिक तीन जगत् का संचालन होता है; और मानव का अन्तःकरण आकर्षण और विकर्षण प्रवृत्ति द्वारा, दोनों व्यक्तित्वों के, तीन-तीन भेदों का परस्पर सम्मिलन कराता रहता है। आकर्षण प्रवृत्ति बाह्य-व्यक्तित्व को और विकर्षण-प्रवृत्ति आन्तरिक-व्यक्तित्व को प्रभावित करती है, एवं इन दोनों के बीच में रहनेवाला अन्तःकरण उन्हें सन्तुलन देता है। मानव की उन्नति और अवनति इसी 'सन्तुलन' पर निर्भर है।

बाह्य और आन्तरिक व्यक्तित्व के तीन-तीन (छह) रूप तथा सातवाँ अन्तःकरण ये सात प्रतीक, सौर जगत के सात-ग्रह हैं। इन सातों प्रतीकों के प्रकट रूप आत्मिक-मानसिक-शारीरिक नामक

तीन-तीन भेद हो जाते हैं।

दर्शन मे	भाव	विचार	क्रिया
	आध्यात्मिक	मानसिक	शारीरिक
ज्योतिप में	विचार	अनुभव	क्रिया
	१	२	३
वाह्य	गुरु (१)	मगल (२)	चन्द्रमा (३)
आन्तरिक	शुक्र (४)	बुध (५)	सूर्य (६)
	आत्मिक	मानसिक	शारीरिक
	अन्तःकरण =	शनि (७)	

गुरु

वाह्य-व्यक्तित्व के प्रथम रूप 'विचार' का स्वामी गुरु है। यह प्राणिमात्र के शरीर का प्रतिनिधि होने से, शरीर-सचालन के लिए, रक्त-प्रदान करता है। जीवित प्राणी के रक्त मे रहने वाले कीटाणुओं की चेतना से 'गुरु' का सम्बन्ध रहता है। यह आत्मिक रूप मे, विचार और मनोभाव एवं इन दोनों का मिश्रण—'उदारता, अच्छा स्वभाव, सौन्दर्य-प्रेम, शान्ति, भक्ति और व्यवस्थापक-बुद्धि' के रूप मे करता है। यही मानसिक रूप मे गुरु के व्यापार (कार्य) अर्थात धर्म तथा न्याय के स्थान—मन्दिर, पुजारी, मन्त्री, न्यायालय, न्यायाधीश, विश्व-विद्यालय, धारा-सभाएँ, जनता के उत्सव, दान, सहानुभूति आदि का प्रतिनिधित्व करता है। शारीरिक रूप से—पैर, जघा, हृदय, पाचन-क्रिया, रक्त एव नसों का प्रतिनिधित्व करता है।

मगल

वाह्य-व्यक्तित्व के द्वितीय रूप 'अनुभव' का स्वामी मगल है। यह इन्द्रिय-ज्ञान, आनन्देच्छा, उत्तेजना और सवेदना द्वारा आवेग, वाह्य आनन्ददायक वस्तुओं के द्वारा क्रिया-शील, पूर्व की आनन्ददायक अनुभव-स्मृति को जगाने वाला, मनोरथ-पूर्ति एव वस्तु-प्राप्ति वाले उपायों के कारणों की क्रिया का प्रधान उद्गम-स्थान है। विशेपतया इच्छा का कारक है। आत्मिक रूप से-साहस, वीरता, दृढता, आत्मविश्वास, क्रोध, सांग्रामिक प्रवृत्ति, प्रभुत्व आदि विचारों एव भावों का प्रतिनिधि है। मानसिक रूप से—सैनिक, डाक्टर, रासायनिक, नाई, बढई, लोहार, मशीन का कार्य-कर्ता, मकान-निर्माता, क्रीडा एव क्रीडा के सामान का प्रतिनिधि है। शारीरिक रूप से—बाहिरी भाग, शिर, नाक, गला का प्रतिनिधि है। इसके द्वारा सक्रामक रोग, व्रण, खरोंच, आप्रेशन, रक्त-दोप, पीडा आदि प्रकट होते हैं।

चन्द्रमा

वाह्य-व्यक्तित्व के तृतीय रूप 'क्रिया' का स्वामी चन्द्रमा है। यह मानव पर शारीरिक प्रभाव, विभिन्न अगों पर तथा उनके कार्यों मे सुधार का प्रतिनिधि है। मानव के शिरोभाग में अगला और पिछला—दो खण्ड हैं। पिछला-चेतना एव अगला=उपचेतना कहलाता है। वस्तु-जगत् से सम्बन्ध रखने वाली चेतना पर चन्द्र का प्रभाव रहता है। वाह्य-जगत की वस्तु द्वारा होने वाली क्रियायें, चन्द्र से ही सम्बन्धित हैं। चन्द्र, स्थूल-शरीरस्थ चेतना पर प्रभाव डालता है और मस्तिष्क मे उत्पन्न होनेवाले परिवर्तनशील भावों का प्रतिनिधि है। आत्मिक रूप से—सवेदना, आन्तरिक इच्छा, उतावलापन, भावना (घरेलू जीवन की भावना विशेप), कल्पना, सतर्कता एव लाभेच्छा पर प्रभाव डालता है। मानसिक रूप से-श्वेतरंग, जहाज, बन्दरगाह, मछली, जल, तरल-पदार्थ, नर्स, दासी, भोजन, चाँदी एवं बैंगनी रग की वस्तुओं का प्रतिनिधि है। शारीरिक रूप मे—उदर, पाचन-शक्ति, दुग्धावयव, गर्भाशय, गुप्तेन्द्रिय और नेत्र का प्रतिनिधि है।

शुक्र

आन्तरिक-व्यक्तित्व के प्रथम रूप 'विचार' का स्वामी शुक्र है। यह सूक्ष्म-मानव-चेतना की विधेय-क्रिया का प्रतिनिधि है। पूर्णबली शुक्र निःस्वार्थ प्रेम से प्राणिमात्र के प्रति भ्रातृ-भावना रखता है। आत्मिक रूप से—स्नेह सौन्दर्य-ज्ञान, आराम आनन्द विशेष-प्रेम स्वच्छता परख-बुद्धि कार्य-क्षमता रखता है। मानसिक रूप से—सुन्दर वस्तुएँ आभूषण आनन्द-दायक चीजें—नाच गान बाजा सजावट की चीजें कलात्मकवस्तुएँ, भोग वस्तुओं पर प्रभाव डालता है। शारीरिक रूप से—गला, गुर्दे, आकृति, वर्ण, केश सौन्दर्य, शरीर-संचालन के अंग, लिंग आदि गुप्तांग का प्रतिनिधि है।

बुध

आन्तरिक-व्यक्तित्व के द्वितीय रूप 'अनुभव' का स्वामी बुध है। यह आध्यात्मिक शक्ति, आन्तरिक-प्रेरणा सहेतुक-निर्णयात्मक-बुद्धि वस्तु-परीक्षण-शक्ति समझ, बुद्धिमानी का प्रतिनिधि है। गम्भीरतापूर्वक-विचार करने में बड़ी सूझ रखता है। आत्मिक रूप से—समझ, स्मरण-शक्ति, खण्डन-मण्डन-शक्ति, सूक्ष्म कलाओं की उत्पादन शक्ति, वक्तृ-शक्ति देता है। मानसिक रूप से—स्कूल-कालेज, विज्ञान साहित्य प्रकाशन प्रकाशक, लेखक, सम्पादक पोस्टमास्टर व्यापारी, बुद्धि-जीवी पीलारंग पारा धातु पर प्रभाव डालता है। शारीरिक रूप से—मस्तिष्क स्नायु-क्रिया, जिह्वा वाणी, हाथ कलापूर्ण कार्योत्पादक अंगका प्रतिनिधि है।

सूर्य

आन्तरिक-व्यक्तित्व के तृतीय रूप 'क्रिया' का स्वामी सूर्य है। यह दैवत्व-चेतना इच्छा विकास का सहायक, तीनों चेतना इच्छा-शक्ति, ज्ञान-शक्ति सदाचार, विश्राम शान्ति, जीवन की उन्नति और विकास का प्रतिनिधि है। आत्मिक रूप से—प्रभुता परवश प्रेम, उदारता महत्वाकांक्षा आत्म-विश्वास, आत्म-नियन्त्रण, सहृदयता विचार और भावना का सन्तुलन करता है। मानसिक रूप से—राजा मन्त्री, सेनापति सर्दार प्रधान आविष्कारक, पुरातत्त्ववेत्ता का प्रतिनिधि है। शारीरिक रूप से—हृदय रक्त-संचालन नेत्र रक्त-वाहिनी धमनी नसें ऊपर के दाँत कान हड्डी आदि पर प्रभाव डालता है।

शनि

यह अन्तःकरण का स्वामी है। यह बाह्य और आन्तरिक व्यक्तित्व को मिलाने का काम पुल (सेतु) के समान करता है। 'अहम्' भावना का प्रतीक है। आत्मिक रूप से—तात्त्विक-ज्ञान विचार ध्यान-मग्न नायकत्व मननशीलता न्याय-परायणता आत्म-संयम धैर्य दृढ़ता गम्भीरता पातिव्रत-शुद्धि सतर्कता विचार-शीलता कार्य-क्षमता का प्रतिनिधि है। मानसिक रूप से—कृषक हलवाहक, पत्रवाहक, चरवाहा कुम्हार माली मठाधीश कृपणता पुलिस ऑफिसर उपवास व्रत पूजा समाधि साधु सन्यासी, पापी तान्त्रिक, पर्वत चट्टान बंजर वन श्मशान गुफा ध्वंसस्थान कब्रगाह बीरान मैदान का प्रतिनिधि है। शारीरिक रूप से—शरीर के बाहर हड्डियाँ मल-हड्डियाँ, नीचे के दाँत नसें चौत माँसपेशियों पर प्रभाव डालता है।

ग्रह-क्रम	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
व्यक्तित्व के रूप—	आन्तरिक ३	बाह्य ३	बाह्य २	आन्तरिक २	बाह्य १	आन्तरिक १	अन्तःकरण

वराह मिहिराचार्य के मत से शरीर-चक्र ही ग्रह-कक्षा-वृत्त है। मस्तक, मुख वक्ष हृदय उदर कटि वस्ति, लिंग जंघा, घुटना पिंडली और पैर में क्रमशः मेषादि द्वादशराशियाँ हैं। आत्मा (सूर्य) मन (चन्द्रमा) धैर्य (मंगल) वाणी (बुध) विवेक (गुरु) वीर्य (शुक्र) संवेदन (शनि) है। अतएव ज्योतिष द्वारा निर्दिष्ट वर्गों का मानव-जीवन से पूर्ण-सम्बन्ध है।

अंश-कुण्डली

इसके तीन भेद हैं: नवांश, कारकांश और स्वांश।

(१) नवांश—लग्न के नवांश को लग्न मानकर, प्रत्येक ग्रह, अपनी-अपनी नवांश-राशि में रखकर, यह कुण्डली बनायी जाती है।

(२) कारकांश—आत्मकारक ग्रह की नवांश-राशि को, लग्न मानकर, शेष ग्रह, जन्म पत्र की भाँति ही, राशियों में रखिए। यह कारकांश कुण्डली होती है।

(३) स्वांश—आत्मकारक ग्रह की नवांश-राशि को, लग्न मानकर, शेष ग्रह, अपनी-अपनी नवांश राशि में रखिये। इसे स्वांश-कुण्डली कहते हैं।

उदाहरण

नवांश-चक्र ४५

सू. के ७ | शु श ५
८ | ६ म | ४
९ | ३
१० चं | बु १२ | २
११ गु | १ रा

कारकांश-चक्र ४६
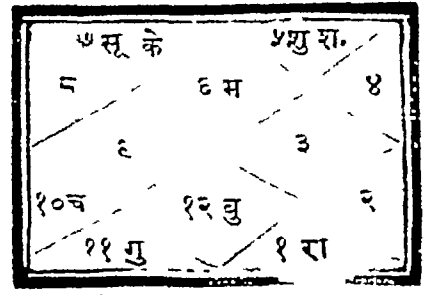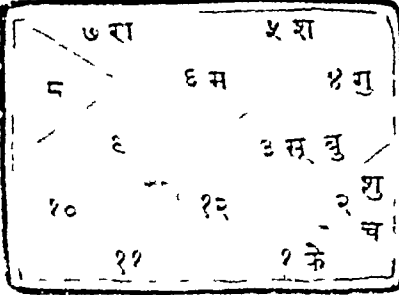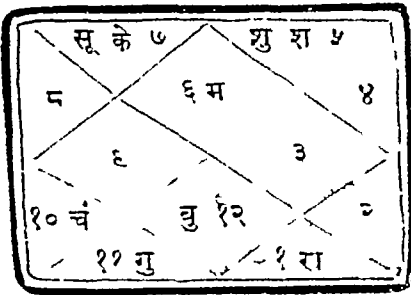
स्वांश-चक्र ४७

इस उदाहरण में नवांश और स्वांश चक्र ४५-४७ एक-से हैं, परन्तु, सर्वदा ऐसा न हो सकेगा। जन्म से मृत्यु पर्यन्त प्राय तीन बार परिवर्तन होता है, जिसमें १८ वर्ष की स्त्री में तथा २५ वर्ष के पुरुष में विशेष परिवर्तन होता है। इन वर्षों के पूर्व व्यक्ति, शारीरिक, इन वर्षों के बाद व्यक्ति, मानसिक, किन्तु तृतीय परिवर्तन ४० वर्षायु में आत्मिक—विरला ही व्यक्ति हो पाता है। हाँ, तो यह उदाहरण पुरुष-जातक का है, तथा २५ वें वर्ष के परिवर्तन पर, फल लिखिए, भौम के आधार पर, क्योंकि, जन्म लग्न वृश्चिक, तथा नवांश, कारकांश और स्वांश चक्र के लग्न में स्थित भौम, आत्मकारक भौम, आदि कारण से असफल जीवन या निरीह भाव वाला व्यक्ति बनाकर, इसके मानसिक क्रियाओं का विकाश कर रहा है। जिसका स्पष्ट बोध, आपको, आगे लिखे हुए फलित-क्षेत्र के पढ़ने के उपरान्त होगा।

पद-लग्न

इसे कोई आरूढ लग्न या विषम लग्न भी कहते हैं। लग्न से लग्नेश, जिस स्थान में हो, उसमें, उतने ही स्थान पर पद-लग्न होती है। उदाहरण कुण्डली का लग्नेश, लाभ भाव (कन्या राशि) में है, अत कन्या राशि से ग्यारहवाँ स्थान नवम (कर्क) है, अतएव पद-लग्न नवम भाव में रहेगी। स्पष्टतया निम्न प्रकार से समझिए—

यदि लग्नेश	लग्न में हो तो	पद—लग्न	लग्न में रहती है
,,	धन ,,	तृतीय	,,
,,	तृतीय ,,	पंचम	,,
,,	चतुर्थ ,,	सप्तम	,,
,,	पंचम ,,	नवम	,,
,,	षष्ठ ,,	लाभ	,,
,,	सप्तम ,,	लग्न	,,
,,	अष्टम ,,	तृतीय	,,
,,	नवम ,,	पंचम	,,
,,	दशम ,,	सप्तम	,,
,,	लाभ ,,	नवम	,,
,,	व्यय ,,	लाभ	,,

उपपद-लग्न

पहिले द्वादश भावेश की पद-लग्न निकालिए, वही उपपद-लग्न या सम-लग्न होती है। यथा—उदाहरण कुण्डली का द्वादशेश (शुक्र), द्वादश स्थान से अष्टम एवं लग्न से सप्तम में है, तो लग्न के सप्तम स्थान से अष्टम—अर्थात् धन भाव में उपपद-लग्न होगी। स्पष्टतया यों समझिए।

यदि द्वादशेश व्यय भाव में हो तो उपपद-लग्न व्यय भाव में ही रहेगी।

,,	लग्न	,,	धन	
,,	धन	,,	चतुर्थ	,,
,,	भ्रातृ	,,	षष्ठ	,,
,,	सुख	,,	अष्टम	,,
,,	सुत	,,	दशम	,,
,,	रिपु	,,	व्यय	,,
,,	दारा	,,	धन	,,
,,	आयु		चतुर्थ	,,
,,	धर्म	,,	षष्ठ	,,
,,	कर्म	,,	अष्टम	,,
,,	लाभ	,	दशम	

होरा-लग्न

इष्ट काल के घटी-पल में, दो का गुणाकर पाँच से भाग दे तो लब्धि में राशि, शेष में ६० का गुणाकर, पल जोड़कर, १० से भाग दे तो, लब्धि में अंश, फिर शेष में छह का गुणा कर कला रखिए। इसमें सूर्य के राश्यादि जोड़ देने से स्पष्ट होरालग्न होती है। तथ्य यह है कि २½—२½ ढाई-ढाई घटी की एक-एक राशि होती है। ६० घटी (अहोरात्र) की २४ राशि (होरा लग्न) होती है। तात्कालिक स्पष्ट सूर्य में जोड़ने से 'सूर्योदयात्' होरालग्न हो जाती है। यथा—

इष्ट २८।१९×२+५ = ११ राशि लब्धि शेष ३।३८
३×६०+३८+१ = २१ अंश लब्धि शेष ८
८×६ = ४८ कला (गुणनफल)
सूर्य स्पष्ट १।०।१९+११।२१।४८ = स्पष्ट होरालग्न = १।२२।७ राश्यादि

मतान्तर

'समलग्ने समभात् विषम लग्ने सूर्यभात्' अर्थात् यदि जन्म लग्न सम हो तो, लग्न स्पष्ट जोड़े और यदि विषम हो तो सूर्य स्पष्ट जोड़े—ऐसा लिखा पाया जाता है। तब अन्य विद्वानों ने लिखा कि, लग्न सम हो या विषम सर्वदा लग्न स्पष्ट ही जोड़ना चाहिए। जब दोनों लग्न जोड़ने का कहते हैं तब ध्यान देने की बात है कि, लग्नाय मान सर्वत्र का २½ ढाई घटी ही न हो सकेगा। जिससे कि, होरा-गति ठीक आसके। सूर्य का एक अंश (गति), एक दिन (२४ होरा) में होती है, अतः सूर्य जोड़ना उपयुक्त होगा, क्योंकि सूर्य गति एक अंश पर होरा लग्न बनेगी। परन्तु लग्न की गति—सूर्य के एक अंश में लग्न के ३६ अंश होजाते हैं। लग्न के जोड़ने से, होरा-लग्न में महान् अन्तर रहेगा। किन्तु सूर्य के जोड़ने से शुद्ध होरा-लग्न का स्पष्ट मिलेगा। प्रत्येक लग्न की प्रवृत्ति सूर्य से है एवं सूर्योदय काल में सूर्य स्पष्ट ही, लग्न स्पष्ट होता है; अतएव सूर्य का ही जोड़ना 'युक्ति संगत' है।

उदाहरण

पद लग्न चक्र ४८

४ रा ३ म बु चं
६ श ४ गु २ शु
७ रा १ के.
८ १ १०
९ ११

उपपद लग्न चक्र ४९

१ ८
११ ९ ७ रा
१२ ६ मं
१ के गु ३ बु
२ गु. चं ४ सू

होरा लग्न चक्र ५०

गु ३ बु १ के
४ गु २ चं गु १२
५ रा. ११
६ मं ८ १
७ रा ९
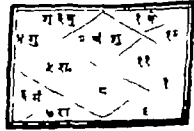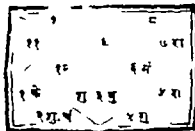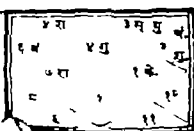
अष्टक-वर्ग

लग्न सहित, सूर्यादि सप्त ग्रह का अष्टक वर्ग वनाया जाता है। दाक्षिणात्य विद्वानों ने लग्न को छोड, शेष सात ही ग्रहों का अष्टक वर्ग कर दिया है। किन्तु, यह मानना ही पडेगा कि, 'सूक्ष्मता का अभाव' लग्न के विना, सात ग्रहों का ही अष्टक वर्ग रहेगा। साथ ही प्रत्येक अष्टक वर्ग से लग्न-खण्ड निकल जायगा, अयुक्ति संगत वात है। अस्तु।

कोई आचार्य शुभ सूचक 'रेखा' देते हैं, तो कोई 'विन्दु'। किन्तु विन्दु तो शून्यता का सूचक होता है और रेखा, उपस्थिति-सूचक। अतएव, शुभ-सूचक 'रेखा' वनाने का ही अभ्यास डालिए।

सूर्यादि सप्तग्रह, अपने स्थान से, जिन स्थानों मे, 'वल' देता है, उन्हीं स्थानों के अङ्क, आगे, अष्टक-वर्ग-चक्र मे लिखे गये हैं, और जिन स्थानों के अङ्क हैं, उन्हीं स्थानों मे रेखा (/) लगाइये, फिर रेखाओं का योग कर फल लिखिए।

सूर्याष्टक वर्ग ४८ — ५१

सू	च	मं	बु	गु	शु	श	ल
१	३	१	३	५	६	१	३
२	६	२	५	६	७	२	४
४	१०	४	६	९	१२	४	६
७	११	७	९	११		७	१०
८		८	१०			८	११
९		९	११			९	१२
१०		१०	१२			१०	
११		११				११	

चन्द्राष्टक वर्ग ४९ — ५२

च	म	बु	गु	शु	श	ल	सू
१	२	१	१	३	३	३	३
३	३	३	४	४	५	६	६
६	५	४	७	५	६	१०	७
७	६	५	८	७	११	११	८
१०	९	७	१०	९			१०
११	१०	८	११	१०			११
	११	१०	१२	११			
		११					

मङ्गलाष्टक वर्ग ३९ — ५३

म	बु	गु	शु	श	ल	सू	च
१	३	६	६	१	१	३	३
२	५	१०	८	४	३	५	६
४	६	११	११	७	६	६	११
७	११	१२	१२	८	१०	१०	
८				९	११	११	
१०				१०			
११				११			

बुधाष्टक वर्ग ५४ — ५४

बु	गु	शु	श	ल	सू	च	म
१	६	१	१	१	५	२	१
३	८	२	२	२	६	४	२
५	११	३	४	४	९	६	४
६	१२	४	७	६	११	८	७
९		५	८	८	१२	१०	८
१०		८	९	१०		११	९
११		९	१०	११			१०
१२		११	११				११

गुर्वष्टक वर्ग ५६ — ५५

गु	शु	श	ल	सू	चं	म	बु
१	२	३	१	१	२	१	१
२	५	५	२	२	५	२	२
३	६	६	४	३	७	४	४
४	९	१२	५	४	९	७	५
७	१०		६	७	११	८	६
८	११		७	८		१०	९
१०			९	९		११	१०
११			१०	१०			११
			११	११			

शुक्राष्टक वर्ग ५२ — ५६

शु	श	ल	सू	च	म	बु	गु
१	३	१	८	१	३	३	५
२	४	२	११	२	५	५	८
३	५	३	१२	३	६	६	९
४	८	४		४	९	९	१०
५	९	५		५	११	११	११
८	१०	८		८	१२		
९	११	९		९			
१०		११		११			
११				१२			

शन्यष्टक वर्ग ३९ — ५७

श	ल	सू	च	म	बु	गु	शु
३	१	१	३	३	६	५	६
५	३	२	६	५	८	६	११
६	४	४	११	६	९	११	१२
११	६	७		१०	१०	१२	
	१०	८		११	११		
	११	१०		१२	१२		
		११					

लग्नाष्टक वर्ग ४९ — ५८

ल	सू	चं	म	बु	गु	शु	श
३	३	३	१	१	१	१	१
६	४	६	३	२	२	२	३
१०	६	१०	६	४	४	३	४
११	१०	११	१०	६	५	४	६
	११		११	८	६	५	१०
	१२			१०	७	८	११
				११	९	९	
					१०	११	
					११		

उदाहरण

गुर्वष्टक वर्ग   ५६ रेखा

६३

राशि	गु	शु	श	ल	सू	च	म	बु	योग	फल
४	/		/	/	/		/	/	६	धनागम
५	/			/	/	•			३	क्लेश
६	/	/		/	/	/	/	/	७	परमानन्द
७	/	/	/				/	/	५	सौख्य
८				/		/		/	३	क्लेश
९	•		/	/	/		/		४	समता
१०	/	/	/		/	/			५	सौख्य
११	/	/		/	/			/	५	सौख्य
१२		/		/	/	/	/	/	६	धनागम
१	/			/	/		/	/	५	सौख्य
२	/			/					२	अर्थक्षय
३		/			/	/	/	/	५	सौख्य

शुक्राष्टक वर्ग   ५२ रेखा

६४

राशि	शु.	श	ल	सू	च	म	बु	गु	योग	फल
२	/	/		/	/	/		/	६	धनागम
३	/	/	/		/				४	समता
४	/	•	/	•	/	/			४	समता
५	/				/	/	/		४	समता
६	/		/		/			•	३	क्लेश
७		/					/		२	अर्थक्षय
८		/	/	•	•	/	/	/	५	सौख्य
९	/	/	/	•	/				४	समता
१०	/		/	/	/	/			५	सौख्य
११	/		/			/	/	/	५	सौख्य
१२	/	/	/		/			/	५	सौख्य
१	•	/	•	/	/		/	/	५	सौख्य

शन्यष्टक वर्ग   ३९ रेखा

६५

राशि	श	ल	सू.	च	म	बु	गु	शु	योग	फल
५		/			/				२	अर्थक्षय
६		/	/						२	अर्थक्षय
७	/			/				/	३	क्लेश
८		/			/	/	/		४	समता
९	/		/				/		३	क्लेश
१०	/	/	/		/	/	-		५	सौख्य
११		/			/	/			३	क्लेश
१२			/	/		/		/	४	समता
१		/	/			/		/	४	समता
२					•	/	/		२	अर्थक्षय
३	/		/		/		/		४	समता
४	•		/	/	/				३	क्लेश

लग्नाष्टक वर्ग   ४९ रेखा

६६

राशि	ल	सू.	च	म	बु.	गु	शु	श	योग	फल
८		/		/	/	/		/	५	सौख्य
९			•			/	/		२	अर्थक्षय
१०	/				/	/	/	/	५	सौख्य
११			/	/		•			२	अर्थक्षय
१२	•	/	/		/	/	/		५	सौख्य
१	/	/			/	/			४	समता
२		/				/	/	/	४	समता
३				/	/	•	/	/	४	समता
४			/	/	/	/	/		५	सौख्य
५	/	/				/	/	/	५	सौख्य
६	/	/		/	/		/	•	५	सौख्य
७			/			/		/	३	क्लेश

उदाहरण

पहिले लिखा जा चुका है कि, १–५–९, २–६–१०, ३–७–११ और ४–८–१२ राशियाँ परस्पर त्रिकोण राशियाँ हैं। आगे देखिए, चक्र ७२ के सूर्याष्टकवर्ग शोधन मे। इसमें कर्क के नीचे ३ रेखा, वृश्चिक के नीचे ४ रेखा, मीन के नीचे ६ रेखा हैं, तो इनमें से कर्क में अन्य दो राशियों की अपेक्षा, ३ रेखा (अल्प-सख्या) हैं, अतएव कर्क के नीचे शून्य तथा कर्क संख्या (३) घटाकर, वृश्चिक के नीचे १ एवं मीन के नीचे ३ रेखा, त्रिकोण-शोधन कोष्टक मे रखा। उसी प्रकार, त्रिकोण–शोधन के बाद धनु के नीचे शून्य आने से—एकाधिपत्य नियम (१) के अनुसार, मीन और धनु के नीचे शून्य ही, एकाधिपत्य शोधन कोष्टक मे रखा। इसी प्रकार दोनों शोधन करने के बाद, त्रिकोण–शोधन में वृष के नीचे दो रेखा रहने से वृष राशि गुणक १० का गुणाकर, राशि गुणक मे वृष के नीचे २० रखा। इसी प्रकार राशि-गुणक रखने के बाद, एकाधिपत्य-शोधन मे वृष के नीचे दो रेखा आने से तथा वृष में चन्द्र-शुक्र दो ग्रह होने से ग्रह–गुणक ५+७ (चं शु का) =१२ हुए। फिर १२ में २ (रेखा) का गुणाकर २४ अंक ग्रह–गुणक मे रखा। इस प्रकार राशि–पिण्ड १२९ और ग्रह–पिण्ड २४ को जोडकर योग–पिण्ड १५३ रखा। इस योग–पिण्ड का उपयोग फलित–क्षेत्र में लिखा जायगा।

उदाहरण शोधन–चक्र ७२

सूर्याष्टक–वर्ग–शोधन

ग्रह	सू बु	गु	श	म		ल						च शु	योग पिण्ड
राशि	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	२	१५३
रेखा	३	३	३	४	५	४	३	२	५	६	६	४	
त्रि शो.	०	०	०	२	२	१	०	०	२	३	३	२	
एका शो	०	०	०	०	०	१	०	०	०	०	२	२	रा पिं
रा गु				१०	१४	८			२२	३६	२१	२०	१२९
ग्र गु												२४	ग्र पि २४

चन्द्राष्टक–वर्ग–शोधन

	च शु	सू बु	गु	श	म		ल						योग पिण्ड
राशि	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	४९
रेखा	३	४	४	४	३	५	४	३	७	४	४	४	
त्रि शो.	०	०	०	१	०	१	०	०	४	०	०	१	
एका शो	०	०	०	१	०	०	०	०	०	०	०	०	रा पिं
रा गु				१०		७			२०			७	४४
ग्र गु				५									ग्र- पिं. ५

भौमाष्टक–वर्ग–शोधन

ग्रह	म		ल						च शु	सू बु	गु	श	योग पिण्ड
राशि	६	७	८	९	१०	११	१२	१	२	३	४	५	१८९
रेखा	२	५	४	३	१	१	५	७	२	३	२	४	
त्रि शो	१	४	२	०	०	०	३	४	१	२	०	१	
एका शो	१	३	२	०	०	०	०	२	१	२	०	१	रा पि
रा गु	५	२८	१६				३६	२८	१०	१६		१	१४४
ग्र गु	८								१२	२०		५	ग्र पिं ४५

बुधाष्टक–वर्ग–शोधन

	सू बु	गु	श	म		ल						च शु	योग पिण्ड
राशि	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	२	२१७
रेखा	७	२	५	४	४	४	५	१	६	५	५	६	
त्रि शो	३	०	०	३	०	२	०	०	२	३	०	५	
एका शो	३	०	०	३	०	०	०	०	०	०	०	०	रा पिं
रा गु	२४			१५		१६			२२	३६		५०	१६३
ग्र गु	३०			२४									ग्र पिं ५४

(२) यदि त्रिकोण की एक राशि में रेखा शून्य हो, तो शून्य वाली के नीचे शून्य तथा अन्य दोनों राशियों के नीचे यथा (वही) संख्या रख देना चाहिए।

(३) यदि त्रिकोण की दो या तीन राशि की रेखा संख्या समान हो तो दो या तीन के नीचे शून्य रखना चाहिए। आगे उदाहरण देखने से स्पष्ट ज्ञान हो जायगा।

एकाधिपत्य – शोधन

त्रिकोण-शोधन के उपरान्त ही एकाधिपत्य-शोधन करना चाहिए। हाँ, कर्क और सिंह राशि का एकाधिपत्य-शोधन नहीं किया जाता क्योंकि, इनके स्वामियों की दो-दो राशियाँ नहीं है, शेष दो-दो राशियों के एक-एक स्वामी होते हैं।

त्रिकोण-शोधन के उपरान्त

(१) यदि किसी एक राशि में शून्य आ जाय तो दोनों ही में शून्य रखना चाहिए। चाहे दोनों ग्रह-हीन हों या दोनों ग्रह-युक्त हों अथवा एक ग्रह-युक्त हो और एक ग्रह-हीन हो।

(२) यदि दोनों राशियों में ग्रह न हो तो अल्प रेखा संख्या को, अधिक रेखा संख्या में घटाकर शेष, अधिक रेखा संख्या के नीचे रखें; और अल्प संख्या का यद्वत् (वही) रखना चाहिए।

(३) यदि एक राशि में ग्रह हो और दूसरी राशि ग्रह-हीन हो, तथा ग्रह-युक्त राशि वाली रेखा-संख्या, ग्रह हीन राशि वाली रेखा-संख्या से अल्प हो तो अल्प-संख्या वही रहेगी, एवं ग्रह-हीन-संख्या में अल्प संख्या घटाकर, शेष ग्रह-हीन राशि के नीचे रखना चाहिए।

(४) यदि ग्रह-युक्त में संख्या अधिक हो और ग्रह-हीन में संख्या कम हो, तो, ग्रह-हीन में शून्य तथा ग्रह-युक्त में वही संख्या रहेगी।

(५) यदि दोनों राशियों में ग्रह हो तो वही (यद्वत्) संख्या रहेगी।

(६) यदि दोनों ग्रह-हीन हों और संख्या भी समान हो तो दोनों के नीचे शून्य रहेगा।

(७) यदि एक ग्रह-युक्त और एक ग्रह-हीन हो तथा संख्या भी समान हो तो ग्रह-हीन के नीचे शून्य एवं ग्रह-युक्त के नीचे वही संख्या रहेगी।

गुणक

त्रिकोण-शोधन में राशि-गुणक, तथा एकाधिपत्य-शोधन में ग्रह-गुणक के द्वारा पूर्वागत संख्या में गुणाकार रखना चाहिए। राशि-गुणक का योग राशि-पिण्ड तथा ग्रह-गुणक का योग ग्रह-पिण्ड; एवं दोनों (राशि-ग्रह) पिण्ड का योग, योग-पिण्ड होता है।

राशि-गुणक-चक्र ७०

मे	वृ	मि	क	सिं	क	तु	वृ	ध	म	कु	मी	राशि
७	१०	८	४	१०	५	७	८	९	५	११	१२	गुणक

ग्रह-गुणक-चक्र ७१

सू.	चं	मं	बु.	गु.	शु	श	ग्रह
५	५	८	५	१०	७	५	गुणक

जब किसी राशि में एक से अधिक ग्रहों का योग हो तो, सभी ग्रहों का गुणक जोड़कर रखना चाहिए। आगे अष्टकवर्ग-शोधन के उदाहरण-चक्र लिखे जा रहे हैं। फिर त्रिकोण-शोधन के उपरान्त कर्क और सिंह के नीचे जो संख्या आवे वही संख्या एकाधिपत्य-शोधन में रखना चाहिए।

सप्तम – वर्तिका

महादशाएँ

दशाओं के अनेक भेद हैं, किन्तु, कारक और मारक का समय जानने के लिए तथा उत्तर–भारत में विंशोत्तरी महादशा का ही विशेष प्रचार है। विशेष आचार्यों ने आयु विचार में विंशोत्तरी दशा को ही श्रेष्ठ माना है, क्योंकि "लघु पाराशरी में—फलानि नक्षत्रदशाप्रकारेण विवृण्महे। दशा विंशोत्तरी ग्राह्या नाष्टोत्तरी मता॥" तथाच—"मारकार्थं विचक्षणैः" आदि वाक्यों में विंशोत्तरी दशा ही 'विशेष मान्य' है। प्राय देखा जाता है कि, उत्तर भारत में विंशोत्तरी दशा, दक्षिण–भारत में अष्टोत्तरी दशा, हिमाचल प्रदेश में योगिनी दशा का विशेष प्रचार है। अन्य प्रकार की दशाओं का रूप, केवल पुस्तकों में ही निहित है। इच्छा तो होती है कि, एक बार एक पुस्तक के रूप में सभी प्रकार की दशाओं की साधन–विधि लिखी जाय—किन्तु, वर्तमान में अरण्य–रोदन मात्र रहेगा। अस्तु।

विंशोत्तरी–महादशा

अपने (जन्म) नक्षत्र के द्वारा, दशा-ज्ञान-चक्र ७३ में ग्रह-दशा तथा उसके वर्ष जानिए। फिर भयात-भभोग और दशावर्ष के अनुपात से भुक्त-भोग्य दशा जानिए। स्पष्ट विधि यह है कि—भयात के घटी-पल को पल बनाइये, फिर भभोग के घटी-पल को पल बनाइये। भयात पल में नक्षत्र द्वारा प्राप्त हुए दशा-वर्ष का गुणाकर, भभोग पल से भाग दीजिए, तो लब्धि में वर्ष प्राप्त होंगे, शेष में १२ का गुणाकर भभोग पल से भाग दीजिए तो, लब्धि में मास प्राप्त होंगे, शेष में ३० का गुणाकर भभोग पल से भाग दीजिए तो, लब्धि में दिन प्राप्त होंगे, शेष में ६० का गुणाकर भभोग पल से भाग दीजिए तो, लब्धि में घटी प्राप्त होंगी, शेष में ६० का गुणाकर भभोग पल से भाग दीजिए तो, लब्धि में पल प्राप्त होंगे। यदि दशा तथा अन्तर्दशा-मात्र जानना हो तो, ज्योंही लब्धि में दिन प्राप्त हों, त्योंही शेष का त्याग कीजिए, क्योंकि आगे घटी-पल निकालना व्यर्थ-सा है। वर्ष-मास-दिन-घटी-पल, ये पाँच वस्तु निकालने (जानने) के लिए, भभोग से पाँच बार भाग देना पडता है, और लब्धि में भुक्त दशा के वर्षादि होते हैं।

दशा – ज्ञान – चक्र ७३

सू	च	म	रा	गु	श	बु	के	शु	ग्रह-दशा
६	१०	७	१८	१६	१९	१७	७	२०	वर्ष
कृ	रो	मृ	आ	पुन	पु	श्ले	म	पूफा	जन्म
उफा	ह	चि	स्वा	वि	अनु	ज्ये	मू	पूषा	के
उषा	श्र	ध	श	पूभा	उभा	रे	अ	भ	नक्षत्र

नक्षत्र – द्वारा दशा – ज्ञान

कृत्तिका से जन्म-नक्षत्र तक गिनकर ९ से भाग दीजिए तो शेष—

१ में सूर्यदशा वर्ष ६	२ में चन्द्रदशा वर्ष १०
३ में भौमदशा वर्ष ७	४ में राहुदशा वर्ष १८
५ में गुरुदशा वर्ष १६	६ में शनिदशा वर्ष १९
७ में बुधदशा वर्ष १७	८ में केतुदशा वर्ष ७

० में शुक्रदशा वर्ष २० होते हैं। देखिये चक्र ७३

गुर्वष्टक—वर्ग—शोधन

ग्रह	गु.	श.	मं.		ल						च. बु.	सू. शु.	योग पिण्ड
राशि	४	५	६	७	८	९	१	११	१२	१	२	३	१४१
रेखा	६	३	७	५	३	४	५	५	६	५	०	५	
त्रि शो	३	०	५	०		१	३	०	३	२	०	०	
एका शो.	३		०	०	०	१	०		२	०	०	०	रा पि
रा गु	१२		२५			९	१५		१६	१४			१११
म गु	३												म पि ३

शुक्राष्टक—वर्ग—शोधन

शु. च.	सू. बु.	गु	श	मं		ल						योग पिण्ड
२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	११६
६	४	४	४	३	०	५	४	५	५	५	५	
३	२	०	०			१	०	२	३	१	१	
०	०		०		०	०	०	०	१	०	०	रा पि
१०	१६					८		१	३३	१२	७	११६
												म पि ०

शन्यष्टक—वर्ग—शोधन

ग्रह	श.	मं.		ल						च. शु.	सू. बु.	गु.	योग पिण्ड
राशि	५	६	७	८	९	१	११	१२	१	२	३	४	७६
रेखा	२	२	३	४	३	५	३	४	४	२	४	३	
त्रि शो	०	०		१	१	३		१	२		१		
एका शो.	०			१	०			०	१	०		०	रा पि
रा गु				८	९	१५		१२	१४		८		६६
म गु											१		म पि १

लग्नाष्टक—वर्ग—शोधन

ल						च. शु.	सू. बु.	गु	श	मं		योग पिण्ड
८	९	१	११	१२	१	२	३	४	५	६	७	१२
५	०	५	०	५	४	४	४	५	५	५	३	
	०	१			२		२		३	१	१	
							२		२	१		रा पि
		५			१४		१६		१०	५	७	७७
							७		१२	८		म पि ४१

षड्—वर्तिका = ज्योतिष का मातृ—कुल

जब प्रश्न उपस्थित होता है कि, जैसे सूर्य की दशा ६ वर्ष तक रहेगी तो, क्या ६ वर्ष तक, सूर्य के फलानुसार, एक-सा फल चलता रहेगा? नहीं, प्राय ऐसा सम्भव नहीं; तब आचार्यों ने महादशा से अन्तर्दशा का गणित निकाला (आविष्कार किया) जिससे, एक महादशा के दीर्घकाल में नवग्रहों का फल-समय ज्ञात होने लगा। फिर उससे भी सूक्ष्म-गणित निकाला, जिसका नाम 'प्रत्यन्तर' रखा। फिर उसमें भी सूक्ष्मता किया, जिसका नाम 'सूक्ष्मदशा' रखा। फिर इसे तक सूक्ष्म कर डाला, जिसका नाम 'प्राणदशा' रख दिया। इनमें अन्तर्दशा तक के फल विस्तार-पूर्वक तथा प्रत्यन्तर्दशा के साधारण-फल तो, ग्रन्थों में पाये जाते हैं। परन्तु सूक्ष्म एवं प्राणदशा का फल, कहीं देखने को नहीं मिलता। या तो कालान्तर में नष्ट हो गया या बनाया ही नहीं गया। अस्तु।

वर्तमान में कोई-कोई (बहुत कम) विद्वान सूक्ष्मदशा या प्राणदशा का उपयोग करते हैं या कर पाते हैं। प्राय दशा-अन्तर्दशा तक का प्रयोग सभी करते हैं। हाँ, कोई-कोई (अपेक्षाकृत कम ही) विद्वान प्रत्यन्तर्दशा का प्रयोग करते हैं किन्तु प्रत्यन्तर्दशा के फल का विस्तृत विवेचन न मिलकर सूक्ष्म ही मिल पा रहा है। अर्थमूलक कला का विकास, पूर्ण नहीं हो पाता। आर्थिक दृष्टि से दिनों-दिन, यह क्षेत्र क्षीण होता जा रहा है। *साधारण जन तो भला क्षम्य हैं किन्तु धनी व्यक्ति भी—सवा रुपया की कुण्डली बनवा* कर कहते हैं, बताओ, महराज! कि कोई 'अलप' (अपमृत्यु योग) तो नहीं है? एक महाशय आये, बोले कि अरे, तुम्हारे बाप तो हमारे बड़े मित्र थे,—जिसका अर्थ यह कि, सवा रुपया भी देने की, इनकी इच्छा नहीं। बस, सब फल, सब गणित हो गया। 'गुरुआवा' तो चवन्नी में ही सब बता देते हैं। परन्तु जब फल घटित नहीं हो पाता, तब 'ज्योतिष' एक ढकोसला है—की दुहाई फिरने लगती है। अस्तु।

अन्तर्दशाएँ

दशावर्ष में, दशावर्ष का गुणाकर, इस गुणन-फल की इकाई में ३ का गुणाकर दिन, शेष (दहाई-सैकड़ा) मास की संख्या, अन्तर्दशा के प्राप्त होते हैं। यथा—

सूर्य में भौमान्तर्दशा बताइये?

सूर्य दशावर्ष ६×७ भौम दशावर्ष = ४२। ४२ में २ इकाई है अत २×३=६ दिन तथा दहाई के ४ अंक, ४ मास हुए। उत्तर —४ मास ६ दिन हुए।

प्रत्यन्तर्दशाएँ

अन्तर्दशा वाले वर्ष-मास-दिन के दिन बनाइए अर्थात वर्ष में १२ का गुणाकर, मास जोड के, ३० का गुणाकर, दिन जोडने से दिन होंगे। इस अन्तर्दशा दिनों में, दशार्ध (अर्थात सूर्य ३ चन्द्र ५ भौम ३½ राहु ६ गुरु ८ शनि ९½ बुध ८½ केतु ३½ शुक्र १०) का गुणा करे, फिर ६० से भाग दे, तो लब्धि में दिन तथा शेष में घटी प्राप्त होते हैं। यथा—

सूर्य में भौमान्तर ४ मास ६ दिन है, इसमें चन्द्र प्रत्यन्तर कितना रहेगा?

४×३०+६=१२६ दिन में ६० से भाग दिया, तो लब्धि में २ दिन, शेष में ६ घटी मिले, इसमें दशार्ध ५ (चन्द्र) का गुणा किया, तो, १० दिन ३० घटी हुए। अथवा—

१२६ दिन में ५ का गुणाकर, ६० से भाग दिया, तो, लब्धि में १० दिन, शेष में ३० घटी मिले।

अन्तर्दशा तथा प्रत्यन्तर्दशा के सम्पूर्ण-चक्र, आगे बनाये गये हैं।

उदाहरण

जन्म नक्षत्र कृत्तिका, अतएव सूर्यदशा वर्ष ६, भयात २६।५८ भभोग ५६।३३ है।

२६×६०+५८ = भयात पल = १६१८ पल (गतर्क्ष)

५६×६०+३३ = भभोग पल = ३३९३ पल (सर्वर्क्ष)

भयात पल × दशावर्ष

१६१८ × ६

भभोग पल = ३३९३) ९७०८ (२ वर्ष
६७८६
२९२२ × १२
३३९३) ३५०६४ (१० मास
३३९३०
११३४ × ३०
३३९३) ३४०२० (१० दिन
३३९३०
९० × ६०
३३९३) ५४०० (१ घटी
३३९३
२००७ × ६०
३३९३) १२०४२० (३५ पल
१०१७९०
१८६३०
१६९६५
१६६५ शेष का त्याग

पूर्ण दशा वर्षों में से भुक्त दशा वर्षों को घटाकर शेष में जन्म संवत् और सूर्य जोड़िए जो जन्म समय की दशा प्राप्त होगी फिर आगे के दशा–वर्ष इतने जोड़िए जो लगभग ६ वर्ष से कम न होने पावें।

उदाहरण दशा–चक्र ७४

भुक्त सू	भोग्य सू	च	मं	रा	गु	श	ग्रह दशा
२ १० १० १ ३५	३ १ १९ ५८ २५	१	७	१८	१६	१९	वर्ष मास दिन घटी पल
१९ ७७	१९ ८०	१९ ८१	१९ ८८	२० ०६	२० २२	२० ४१	संवत्
० ० १८ २	३ ० १७ २०	३ २ १७ ५०	३ २० १७ ५०	३ २ १७ २	३ २ १७ २०	३ २ १७ २	सूर्य

स्पष्टीकरण

पूर्ण दशावर्ष	६। ।०।०।	म स
भुक्त दशावर्ष	२।१०।१०।१।३५	घटाया
भोग्य दशावर्ष	३।१।१९।५८।२५	शेष में
जन्म संवत्-सूर्य	१९७७।०। ।१८।२४	जोड़ा
सूर्यदशा	१९८०।३।२।१७।२	तक
चन्द्र के	१	दशावर्ष
चन्द्र दशा	१९८१।३।२।१७।२	तक
भौम के	७	
भौमदशा	१९८८।३।२।१७।२	तक
राहु के	१८	दशावर्ष
राहु दशा	२००६।३।२।१७।२०	तक
गुरु के	१६	दशावर्ष
गुरुदशा	२०२२।३।२।१७।२	तक
शनि के	१९। । । ।	दशावर्ष
शनिदशा	२०४१।३।२।१७।२	तक

इसी प्रकार आगे के दशावर्ष—'अपेक्षा'—तक जोड़ना चाहिए। जब कि, १२० वर्ष की आयु हो, तब वहीं तक ग्रहों की दशाएँ मिल सकें; किन्तु ऐसा वर्तमान (डाउन क्वालिटी टाइम) में असम्भव नहीं तो अत्यन्त कठिन अवश्य है।

इस प्रकार 'विंशोत्तरी महादशा' का चक्र (७४ की भाँति) बनाकर रखना चाहिए। स्पष्टीकरण की भाँति जोड़ना चाहिए। जब भुक्त दशावर्ष दिन पर्यन्त निकालें, अर्थात् घटी-पल न निकाला हो तो सूर्य के राशि-अंश मात्र ही जोड़ना चाहिए।

सूर्य में चन्द्र प्रत्यन्तर

च	मं	रा.	गु	श	बु	के	शु	सू	दशा
०	०	०	०	०	०	०	१	०	मास
१५	१०	२७	२४	२८	२५	१०	०	६	दिन
०	३०	०	०	३०	३०	३०	०	०	घटी

सूर्य में भौम प्रत्यन्तर

मं	रा.	गु.	श	बु	के.	शु	सू	चं.	दशा
०	०	०	०	०	०	०	०	०	मास
७	१८	१६	१६	१७	७	२१	६	१०	दिन
२१	५४	४८	५७	५१	२१	०	१८	३०	घटी

सूर्य में राहु प्रत्यन्तर

रा	गु	श	बु	के	शु	सू.	च.	म	दशा
१	१	१	१	०	१	०	०	०	मास
१८	१३	२१	१५	१८	२४	१६	२७	१८	दिन
३६	१२	१८	५४	५४	०	१२	०	५४	घटी

सूर्य में गुरु प्रत्यन्तर

गु	श	बु	के	शु.	सू.	चं	मं.	रा	दशा
१	१	१	०	१	०	०	०	१	मास
८	१५	१०	१६	१८	१४	२४	१६	१३	दिन
२४	३६	४८	४८	०	२४	०	४८	१२	घटी

सूर्य में शनि प्रत्यन्तर

श	बु	के	शु	सू	च	म	रा	गु	दशा
१	१	०	१	०	०	०	१	१	मास
२४	१८	१६	२७	१७	२८	१६	२१	१५	दिन
६	२७	५७	०	६	३०	५७	१८	३६	घटी

सूर्य में बुध प्रत्यन्तर

बु	के	शु.	सू	चं	म	रा	गु	श	दशा
१	०	१	०	०	०	१	१	१	मास
१३	१७	२१	१५	२५	१७	२५	१०	१८	दिन
२१	५१	०	१८	३०	५१	५४	४८	२७	घटी

सूर्य में केतु प्रत्यन्तर

के	शु	सू	च	म	रा	गु	श	बु	दशा
०	०	०	०	०	०	०	०	०	मास
७	२१	६	१०	७	१८	१६	१६	१७	दिन
२१	०	१८	३०	२१	५४	४८	५७	५१	घटी

सूर्य में शुक्र प्रत्यन्तर

शु	सू	च	म	रा	गु	श	बु	के	दशा
०	०	१	०	१	१	१	१	०	मास
०	१८	०	२१	२४	१८	२७	२१	२१	दिन
०	०	०	०	०	०	०	०	०	घटी

चन्द्र में चन्द्र प्रत्यन्तर

च	म	रा	गु	श	बु	के	शु	सू	दशा
०	०	१	१	१	१	०	१	०	मास
२५	१७	१५	१०	१७	१२	१७	२०	१५	दिन
०	३०	०	०	३०	३०	३०	०	०	घटी

चन्द्र में भौम प्रत्यन्तर

म.	रा	गु	श	बु	के	शु	सू	चं	दशा
०	१	०	१	०	०	१	०	०	मास
१२	१	२८	३	२६	१८	५	१०	१७	दिन
१५	३०	०	१५	४५	१५	०	३०	३०	घटी

अन्तर-प्रत्यन्तर-चक्र ७५

सूर्यान्तर्दशा ६ वर्ष

सू	च	मं	रा	गु	श	बु	के	शु	दशा
०	०	०	०	०	०	०	०	१	वर्ष
३	६	४	१	९	११	१०	४	०	मास
१८	०	६	२४	१८	१२	६	६	०	दिन

चन्द्रान्तर्दशा १० वर्ष

च	मं	रा	गु	श	बु	के	शु	सू	दशा
०	०	१	१	१	१		१	०	वर्ष
१०	७	६	४	७	५	७	८	६	मास
०		०	०	०				०	दिन

भौमान्तर्दशा ७ वर्ष

मं	रा	गु	श	बु	के	शु	सू	च	दशा
०	१	०	१			१	०	०	वर्ष
४	०	११	१	११	४	२	४	७	मास
२७	१८	६	९	२७	२७		६	०	दिन

राहन्तर्दशा १८ वर्ष

रा	गु	श	बु	फ	शु	सू	च	मं	दशा
२	२	२	२	१	३		१	१	वर्ष
८	४	१	६			१	६		मास
१२	२४	६	१८	१८		२४	०	१८	दिन

गुर्वन्तर्दशा १६ वर्ष

गु	श	बु	के	शु	सू	च	मं	रा	दशा
२	२	२		२		१		२	वर्ष
१	६	३	११	८	९	४	११	४	मास
१८	१२	६	६	०	१८		६	२४	दिन

शन्यन्तर्दशा १९ वर्ष

श	बु	के	शु	सू	च	मं	रा	गु	दशा
३	२	१	३		१	१	२	२	वर्ष
	८	१	२	११	७	१	१	६	मास
३	९	९		१२		९	६	१२	दिन

बुधान्तर्दशा १७ वर्ष

बु	के	शु	सू	च	मं	रा	गु	श	दशा
[illegible]	[illegible]	२		१		२	२	२	वर्ष
[illegible]	[illegible]	[illegible]	१	५	११	६	३	८	मास
[illegible]	[illegible]	[illegible]	६		२७	१८	६	९	दिन

केत्वन्तर्दशा ७ वर्ष

के	शु	सू	च	मं	रा	गु	श	बु	दशा
	१				१	०	१		वर्ष
४	२	४	७	४		११	१	११	मास
२७		६		२७	१८	६	९	२७	दिन

शुक्रान्तर्दशा २० वर्ष

शु	सू	च	मं	रा	गु	श	बु	के	दशा
३	१	१	१	३	२	३	२	१	वर्ष
४	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	२	१०	२	मास
			०		०				दिन

सूर्य में सूर्य प्रत्यन्तर

सू	च	मं	रा	गु	श	बु	के	शु	दशा
							०		मास
५	९	६	१६	१४	१७	१५	६	१८	दिन
५४		१८	१२	४५	६	१८	१८		घटी

भौम में शनि प्रत्यन्तर

श	बु	के	शु	सू	चं.	म	रा.	गु.	दशा
२	१	०	२	०	१	०	१	१	मास
३	२६	२३	६	१६	३	२३	२६	२३	दिन
१०	३१	१६	३०	५७	१५	१६	५१	१२	घटी
३०	३०	३०	०	०	०	३०	०	०	पल

भौम में बुध प्रत्यन्तर

बु	के	शु.	सू.	च	मं.	रा	गु.	श	दशा
१	०	१	०	०	०	१	१	१	मास
२०	२०	२६	१७	२६	२०	२३	१७	२६	दिन
३४	४६	३०	५१	४५	४६	३३	३६	३१	घटी
३०	३०	०	०	०	३०	०	०	३०	पल

भौम में केतु प्रत्यन्तर

के	शु	सू	चं	म	रा	गु	श	बु	दशा
८	२४	७	१२	८	२२	१६	२३	२०	दिन
३४	३०	२१	१५	३४	३	३६	१६	४६	घटी
३०	०	०	०	३०	०	०	३०	३०	पल

भौम में शुक्र प्रत्यन्तर

शु	सू	चं.	म	रा.	गु	श	बु	के	दशा
२	०	१	०	२	१	२	१	०	मास
१०	२१	५	२४	३	२६	६	२६	२४	दिन
०	०	०	३०	०	०	३०	३०	३०	घटी

भौम में सूर्य प्रत्यन्तर

सू	च	म	रा	गु	श	बु	के	शु	दशा
०	०	०	०	०	०	०	०	०	मास
६	१०	७	१८	१६	१६	१७	७	२१	दिन
१८	३०	२१	५४	४८	५७	५१	२१	०	घटी

भौम में चन्द्र प्रत्यन्तर

च	म.	रा	गु.	श	बु	के.	शु	सू	दशा
०	०	१	०	१	०	०	१	०	माम
१७	१२	१	२८	३	२६	१२	५	१०	दिन
३०	१५	३०	०	१५	४५	१५	०	३०	घटी

राहु में राहु प्रत्यन्तर

रा	गु	श	बु	के	शु	सू	च	म	दशा
४	४	५	४	१	५	१	२	१	मास
२५	६	३	१७	२६	१२	१८	२१	२६	दिन
४८	३६	५४	४२	४२	०	३६	०	४२	घटी

राहु मे गुरु प्रत्यन्तर

गु	श	बु	के	शु	सू.	च	मं	रा	दशा
३	४	४	१	४	१	२	१	४	मास
२५	१६	२	२०	२४	१३	१२	२०	६	दिन
१२	४८	२४	२४	०	१२	०	२४	३६	घटी

राहु मे शनि प्रत्यन्तर

श	बु.	के	शु	सू	चं	म	श	गु	दशा
५	४	१	५	१	२	१	५	४	माम
१२	२५	२६	२१	२१	२५	२६	३	१६	दिन
२७	२१	५१	०	१८	३०	५१	५४	४८	घटी

राहु मे बुध प्रत्यन्तर

बु	के	शु	सू	च	म	रा	गु	श	दशा
४	१	५	१	०	१	४	४	४	मास
१०	२३	३	१५	१६	२३	१७	२	२५	दिन
३	३३	०	५४	३०	३३	४२	२४	२१	घटी

चन्द्र में राहु प्रत्यन्तर

रा	गु	श	बु	के	शु	सू	चं	मं	दशा
२	२	२	२	१	२	०	१	१	मास
२१	१२	२४	१६	१		२७	१५	१	दिन
	०	३	३०	३		०	०	३०	घटी

चन्द्र में शनि प्रत्यन्तर

श	बु	के	शु	सू	चं	मं	रा	गु	दशा
३	२	१	३	०	१	१	२	२	मास
	२०	३	५	२८	१७	३	२५	१६	दिन
१५	४५	१५	०	३	३०	१५	३०	०	घटी

चन्द्र में केतु प्रत्यन्तर

के	शु	सू	चं	मं	रा	गु	श	बु	दशा
	१				१	०	१		मास
१२	५	१०	१७	१२	१	२८	३	२९	दिन
१५		३०	३	१५	३	०	१५	४५	घटी

चन्द्र में सूर्य प्रत्यन्तर

सू	चं	मं	रा	गु	श	बु	के	शु	दशा
								१	मास
३	१५	१०	२७	२४	२८	२४	१		दिन
		३		०	३	३	३		घटी

भौम में राहु प्रत्यन्तर

रा	गु	श	बु	के	शु	सू	चं	मं	दशा
१	१	१	१	०	२	०	१		मास
३१	२०	२६	२३	२२	३	१८	१	२	दिन
४५	४	४७	३३	३	०	५४	३	३	घटी

चन्द्र में गुरु प्रत्यन्तर

गु	श	बु	के	शु	सू	चं	मं	रा	दशा
२	२	२		२		१	०	२	मास
४	१६	८	२८	९	४	१	८	१२	दिन
	०		०	०	०	०	०		घटी

चन्द्र में बुध प्रत्यन्तर

बु	के	शु	सू	चं	मं	रा	गु	श	दशा
२		२		१		२	२	२	मास
१२	२६	२५	२४	१२	२१	१६	८	२	दिन
१५	४५	०	३०	३	४५	३	०	४५	घटी

चन्द्र में शुक्र प्रत्यन्तर

शु	सू	चं	मं	रा	गु	श	बु	के	दशा
३	१	१	१	३	२	३	२	१	मास
१			५		२०	५	२५	५	दिन
०	०				०			०	घटी

भौम में भौम प्रत्यन्तर

मं	रा	गु	श	बु	के	शु	सू	चं	दशा
८	२२	१९	२३	२०	८	२४	७	१२	दिन
३४	३	३६	१६	५९	३४	३	२१	१४	घटी
३			३	३	३		०		पल

भौम में गुरु प्रत्यन्तर

गु	श	बु	के	शु	सू	चं	मं	रा	दशा
१	१	१	०	१	०	०		१	मास
१८	२३	१७	१९	२६	१६	२८	१९	२	दिन
४८	१	३६	३६	०	४८		३६	२४	घटी

भौम में शनि प्रत्यन्तर

श	बु	के	शु.	सू.	चं	म.	रा	गु.	दशा
२	१	०	२	०	१	०	१	१	मास
३	२६	२३	६	१६	३	२३	२६	२३	दिन
१०	३१	१६	३०	५७	१५	१६	५१	१२	घटी
३०	३०	३०	०	०	०	३०	०	०	पल

भौम में बुध प्रत्यन्तर

बु	के	शु.	सू.	च.	म.	रा	गु.	श	दशा
१	०	१	०	०	०	१	१	१	मास
२०	२०	२६	१७	२६	२०	२३	१७	२६	दिन
३४	४६	३०	५१	४५	४६	३३	३६	३१	घटी
३०	३०	०	०	०	३०	०	०	३०	पल

भौम में केतु प्रत्यन्तर

के	शु	सू.	चं	म	रा	गु	श	बु	दशा
८	२४	७	१२	८	२२	१६	२३	२०	दिन
३४	३०	२१	१५	३४	३	३६	१६	४६	घटी
३०	०	०	०	३०	०	०	३०	३०	पल

भौम में शुक्र प्रत्यन्तर

शु	सू	चं.	म	रा.	गु	श	बु	के	दशा
२	०	१	०	२	१	२	१	०	मास
१०	२१	५	२४	३	२६	६	२६	२४	दिन
०	०	०	३०	०	०	३०	३०	३०	घटी

भौम में सूर्य प्रत्यन्तर

सू	चं	मं	रा	गु	श	बु	के	शु	दशा
०	०	०	०	०	०	०	०	०	मास
६	१०	७	१८	१६	१६	१७	७	२१	दिन
१८	३०	२१	५४	४८	५७	५१	२१	०	घटी

भौम में चन्द्र प्रत्यन्तर

च	म.	रा	गु.	श	बु	के	शु	सू.	दशा
०	०	१	०	१	०	०	१	०	मास
१७	१२	१	२८	३	२६	१२	५	१०	दिन
३०	१५	३०	०	१५	४५	१५	०	३०	घटी

राहु में राहु प्रत्यन्तर

रा	गु	श	बु	के	शु	सू	च	म	दशा
४	४	५	४	१	५	१	२	१	मास
२५	६	३	१७	२६	१२	१८	२१	२६	दिन
४८	३६	५४	४२	४२	०	३६	०	४२	घटी

राहु में गुरु प्रत्यन्तर

गु	श	बु	के	शु	सू	च	म	रा.	दशा
३	४	४	१	४	१	२	१	४	मास
२५	१६	२	२०	२४	१३	१२	२०	६	दिन
१२	४८	२४	२४	०	१२	०	२४	३६	घटी

राहु में शनि प्रत्यन्तर

श	बु.	के	शु	सू	चं	मं	श	गु	दशा
५	४	१	५	१	२	१	५	४	मास
१२	२५	२६	२१	२१	२५	२६	३	१६	दिन
२७	२१	५१	०	१८	३०	५१	५४	४८	घटी

राहु में बुध प्रत्यन्तर

बु	के	शु	सू	चं	म	रा	गु	श	दशा
४	१	५	१	२	१	४	४	४	मास
१०	२३	३	१५	१६	२३	१७	२	२५	दिन
३	२३	०	५४	३०	३३	४२	२४	२१	

राहु में केतु प्रत्यन्तर

के.	शु.	सू.	चं	मं	रा	गु.	श	बु.	दशा
०	२	०	१	०	१	१	१	१	मास
२२	३	१८	१	२२	२६	२०	२९	२३	दिन
३	०	५४	३०	३	४२	२४	५१	३३	घटी

राहु में सूर्य प्रत्यन्तर

सू	चं	मं	रा	गु.	श	बु	के	शु.	दशा
०	०	०	१	१	१	१	०	१	मास
१६	२७	१८	१८	१३	२१	१५	१८	२४	दिन
१२	०	५४	३६	१२	१८	४५	५४	०	घटी

राहु में भौम प्रत्यन्तर

मं	रा	गु	श	बु	के.	शु.	सू.	चं	दशा
	१	१	१	१	०	२	०	१	मास
२२	२६	७	२९	२३	२२	३	१८	१	दिन
३	४२	२४	५१	३३	३		५४	३	घटी

गुरु में शनि प्रत्यन्तर

श	बु	के.	शु	सू	चं	मं	रा	गु.	दशा
५	४	१	५	१	२	१	४	४	मास
२४	६	२३	०	१५	१६	२१	११	१	दिन
२४	१२	१२		३६		१	४८	३६	घटी

गुरु में केतु प्रत्यन्तर

के	शु	सू	चं	मं	रा	गु.	श	बु	दशा
	१		०		१	१	१	१	मास
१६	२६	१६	२८	१६	२०	१७	२३	१७	दिन
३६	०	४८		३६	५४	४८	१२	३६	घटी

राहु में शुक्र प्रत्यन्तर

शु	सू	चं	मं	रा	गु.	श	बु	के	दशा
६	१	१		५	४	५	५	२	मास
०	४	०	३	१२	२४	२१	५	३	दिन
०	०		०		०			०	घटी

राहु में चन्द्र प्रत्यन्तर

चं	मं	रा	गु	श	बु	के	शु.	सू	दशा
१	१	२	२	२	२	१	३	०	मास
१५	१	२१	१२	२५	१६	१	०	२७	दिन
	३०		०	३०	३०	३			घटी

गुरु में गुरु प्रत्यन्तर

गु	श	बु	के.	शु.	सू	चं	मं	रा	दशा
३	४	३	१	४	१	२	१	३	मास
१	६	१८	१४	८	८	४	१४	२५	दिन
४	३६	४८	५८		२४		४८	१२	घटी

गुरु में बुध प्रत्यन्तर

बु	के	शु.	सू	चं	मं	रा.	गु	श	दशा
३	१	४	१	२	१	४	३	४	मास
५	१७	१६	१	८	१७	०	१८	९	दिन
३६	३६	०	४८		३६	२४	४८	१२	घटी

गुरु में शुक्र प्रत्यन्तर

शु	सू	चं	मं	रा	गु	श	बु	के	दशा
५	१	२	१	४	४	५	४	१	मास
१	१८	१०	२६	२४	८	०	१६	२६	दिन
०	०				०	०		०	घटी

गुरु में सूर्य प्रत्यन्तर

सू	च	म	रा	गु	श	बु	के	शु.	दशा
०	०	०	१	१	१	१	०	१	मास
१४	२४	१६	१३	८	१५	१०	१६	१८	दिन
२४	०	४८	१२	२४	३६	४८	४८	०	घटी

गुरु मे चन्द्र प्रत्यन्तर

चं	मं	रा	गु	श	बु	के	शु	सू.	दशा
१	०	२	२	२	२	०	२	०	मास
१०	२८	१२	४	१६	८	२८	२०	२४	दिन
०	०	०	०	०	०	०	०	०	घटी

गुरु में भौम प्रत्यन्तर

मं	रा	गु	श	बु	के	शु	सू.	चं	दशा
०	१	१	१	१	०	१	०	०	मास
१६	२०	१४	२३	१७	१६	२६	१६	२८	दिन
३६	२४	४८	१२	३६	३६	०	४८	०	घटी

गुरु में राहु प्रत्यन्तर

रा	गु	श	बु	के.	शु	सू.	च	मं	दशा
४	३	४	४	१	४	१	२	१	मास
६	२५	१६	२	२०	२४	१३	१२	२०	दिन
३६	१२	४८	२४	२४	०	१२	०	२४	घटी

शनि में शनि प्रत्यन्तर

श.	बु	के	शु	सू.	च	मं	रा	गु	दशा
५	५	२	६	१	३	२	५	४	मास
२१	३	३	०	२४	०	३	१२	२४	दिन
२८	२५	१०	३०	६	१५	१०	२७	२४	घटी
३०	३०	३०	०	०	०	३०	०	०	पल

शनि मे बुध प्रत्यन्तर

बु	के.	शु	सू.	च	मं	रा	गु	श	दशा
४	१	५	१	२	१	४	४	५	मास
१७	२६	११	१८	२०	२६	२५	६	३	दिन
१६	३१	३०	२७	४५	३१	२१	१२	२५	घटी
३०	३०	०	०	०	३०	०	०	३०	पल

शनि में केतु प्रत्यन्तर

के	शु	सू.	च	म	रा	गु	श	बु	दशा
०	२	०	१	०	१	१	२	१	वर्ष
२३	६	१६	२	२३	२६	२३	३	२६	मास
१६	३०	५७	१५	१६	५१	१२	१०	३१	दिन
३०	०	०	०	३०	०	०	२०	३०	पल

शनि मे शुक्र प्रत्यन्तर

शु	सू.	चं	म	रा	गु	श	बु	के	दशा
६	१	३	२	५	५	६	५	२	मास
१०	२७	५	६	२१	२	०	११	६	दिन
०	०	०	३०	०	०	३०	३०	३०	घटी

शनि में सूर्य प्रत्यन्तर

सू.	च	म	रा	गु	श	बु	के	शु	दशा
०	०	०	१	१	१	१	०	१	मास
१७	२८	१६	२१	१५	२४	१८	१६	२७	दिन
६	३०	५७	१८	३६	६	२७	५७	०	घटी

शनि में चन्द्र प्रत्यन्तर

च	मं	रा.	गु	श	बु	के	शु	सू.	दशा
१	१	२	२	३	२	१	३	०	मास
१७	३	२५	१६	०	२०	३	५	२८	दिन
३०	१५	३०	०	१५	४५	१५	०	३०	घटी

शनि में भौम प्रत्यन्तर

मं	रा	गु	श.	बु	के.	शु	सू	चं	दशा
०	१	१	२	१	०	२	०	१	मास
२३	२६	२३	३	२६	२३	६	१६	३	दिन
१६	५१	१२	१	३१	१६	३०	४७	१५	घटी
३		०	३	३०	३०	०	०	०	पल

शनि में राहु प्रस्यन्तर

रा	गु	श	बु	के.	शु	सू	चं	मं	दशा
५	४	५	४	१	५	१	२	१	मास
३	१६	१२	२५	२६	२१	२१	२६	२६	दिन
५४	४८	२७	२१	५१		१८	३	५१	घटी

शनि में गुरु प्रत्यन्तर

गु	श	बु	के	शु.	सू	चं	मं	रा	दशा
४	४	४	१	५	१		१	४	मास
१	२५	५	२३	२	१५	१६	२३	१६	दिन
३६	२४	१२	१२	०	३६		१२	४८	घटी

बुध में बुध प्रत्यन्तर

बु	के	शु	सू	चं	मं	रा	गु.	श	दशा
४	१	४	१	२	१	४	३	४	मास
८	२	२५	१३	१२	६	१०	२५	१७	दिन
४५	३४	३	२१	१५	३४	३	३६	१६	घटी
३	३०				३	०		३०	पल

बुध में केतु प्रत्यन्तर

के	शु	सू	चं	मं	रा	गु	श.	बु	दशा
	१		०		१	१	१	१	मास
२०	२६	१७	६	२	२३	१७	२६	२	दिन
५७	३	५१	५७	५६	३३	३६	३१	३४	घटी
३०	०	०		३	०	०	३	३	पल

बुध में शुक्र प्रस्यन्तर

शु	सू	चं	मं	रा	गु	श	बु	के.	दशा
५	१	२	१	५	४	५	४	१	मास
२	२१	२५	२८	३	१६	११	२४	२६	दिन
			३			३	३०	३	घटी

बुध में सूर्य प्रस्यन्तर

सू	चं	मं	रा	गु.	श	बु	के.	शु	दशा
	०	०	१	१	१	१		१	मास
१५	२७	१७	१५	१	१८	१३	१७	२१	दिन
१८	३	५१	५४	४८	२७	२१	५१		घटी

बुध में चन्द्र प्रस्यन्तर

चं	मं	रा	गु.	श.	बु	के	शु	सू.	दशा
१		२	२		२		२	०	मास
१२	२६	१६	८	२०	१२	२६	२५	२५	दिन
३	४५	३		४७	१७	४५	०	३	घटी

बुध में भौम प्रत्यन्तर

मं	रा	गु	श	बु	के.	शु	सू	चं	दशा
	१	१	१	१		१	०	०	मास
२	२३	१७	२६	०	२०	२६	१७	२६	दिन
५६	३३	३६	३१	३४	५६	३	५१	५७	घटी
								०	पल

बुध में राहु प्रस्यन्तर

रा	गु	श	बु	के.	शु	सू	चं	मं	दशा
४	४	४	४	१	५	१	०	१	मास
१७	९	२२	१०	२३	३	१५	१३	२३	दिन
४२	५४	२१	३	३३	०	५४	३	३३	घटी

बुध मे गुरु प्रत्यन्तर

गु	श	बु	के	शु	सू	चं	मं	रा	दशा
३	४	३	१	४	१	२	१	४	मास
१८	६	२५	१७	१६	१०	८	१७	२	दिन
४८	१२	३६	३६	०	४८	०	३६	२४	घटी

बुध में शनि प्रत्यन्तर

श	बु	के	शु	सू	चं	मं	रा	गु	दशा
५	४	१	५	१	२	१	४	४	मास
३	१७	२६	११	१८	२०	२६	२५	६	दिन
२५	१६	३१	३०	२७	४५	३१	२१	१२	घटी
३०	३०	३०	०	०	०	३०	०	०	पल

केतु में केतु प्रत्यन्तर

के	शु	सू	च	मं	रा	गु	श	बु	दशा
०	०	०	०	०	०	०	०	०	मास
८	२४	७	१२	८	२२	१६	२३	२०	दिन
३४	३०	२१	१५	३४	३	३६	१६	४६	घटी
३०	०	०	०	३०	०	०	३०	३०	पल

केतु में शुक्र प्रत्यन्तर

शु	सू	च.	म	रा	गु	श	बु	के	दशा
२	०	१	०	२	१	२	१	०	मास
१०	२१	५	२४	३	२६	६	२६	२४	दिन
०	०	०	३०	०	०	३०	३०	३०	घटी

केतु में सूर्य प्रत्यन्तर

सू	चं.	मं	रा	गु	श	बु	के	शु	दशा
०	०	०	०	०	०	०	०	०	मास
६	१०	७	१८	१६	१६	१७	७	२१	दिन
१८	३०	२१	५४	४८	५७	५१	२१	०	घटी

केतु में चन्द्र प्रत्यन्तर

च	मं.	रा	गु	श	बु	के	शु	सू	दशा
०	०	१	०	१	०	०	१	०	मास
१७	१२	१	२८	३	२६	१२	५	१०	दिन
३०	१५	३०	०	१५	४५	१५	०	३०	घटी

केतु में भौम प्रत्यन्तर

म	रा	गु	श	बु	के	शु	सू	च	दशा
०	०	०	०	०	०	०	०	०	मास
८	२२	१६	२३	२०	८	२४	७	१२	दिन
३४	३	३६	१६	४६	३४	३०	२१	१५	घटी
३०	०	०	३०	३०	३०	०	०	०	पल

केतु में राहु प्रत्यन्तर

रा	गु	श	बु	के	शु	सू	चं	मं	दशा
१	१	१	१	०	२	०	१	०	मास
२६	२०	२६	२३	२२	३	१८	१	२२	दिन
४२	२४	५१	३३	३	०	५४	३०	३	घटी

केतु में गुरु प्रत्यन्तर

गु	श	बु	के	शु	सू	च	म	रा	दशा
१	१	१	०	१	०	०	०	१	मास
१४	२३	१७	१६	२६	१६	२८	१६	२०	दिन
४८	१२	३६	३६	०	४८	०	३६	२४	घटी

केतु में शनि प्रत्यन्तर

श	बु	के	शु	सू	चं	म	रा	गु.	दशा
२	१	०	२	०	१	०	१	१	मास
३	२६	२३	६	१६	३	२३	२६	२३	दिन
१०	३१	१६	३०	५७	१५	१६	५१	१२	घटी
३०	३०	३०	०	०	०	३०	०	०	पल

केतु में बुध प्रत्यन्तर

बु	के	शु	सू	चं	मं	रा	गु	श	दशा
१	०	१		०	०	१	१	१	मास
२०	२०	२६	१७	२६	२०	३	१७	२६	दिन
३४	४६	३	५१	५२	४६	३३	३६	३१	घटी
३०	३	०	०	०	३	०		३	पल

शुक्र में शुक्र प्रत्यन्तर

शु	सू	चं	मं	रा	गु	श	बु	के	दशा
६	२	३	२	६	५	६	५	२	मास
२	०	१०	१		१०	१	१०	१	दिन
०	०		०		०			०	घटी

शुक्र में सूर्य प्रत्यन्तर

सू	चं	मं	रा	गु	श	बु	के	शु	दशा
	१	०	१	१	१	१	०	२	मास
१८		२१	२४	१८	२७	२१	२१		दिन
				०	०	०	०		घटी

शुक्र में चन्द्र प्रत्यन्तर

चं	मं	रा	गु	श	बु	के	शु	सू	दशा
१	१	३	२	३	२	१	३	१	मास
२	५		२०	५	५	५	१०	०	दिन
	०								घटी

शुक्र में भाम प्रत्यन्तर

मं	रा	गु	श	बु	के	शु	सू	चं	दशा
	२	१	२	१	०	२		१	मास
२४	३	२६	६	२९	२४	१	२१	५	दिन
३०			३	३०	३०				घटी

शुक्र में राहु प्रत्यन्तर

रा	गु	श	बु	के	शु	सू	चं	मं	दशा
५	४	५	५	२	६	१	३	२	मास
१२	२४	२१	३	३		२४		३	दिन
०									घटी

शुक्र में गुरु प्रत्यन्तर

गु	श	बु	के	शु	सू	चं	मं	रा	दशा
४	५	४	१	५	१	२	१	४	मास
८	२	१६	२६	१	१८	२	२६	२४	दिन
०	०								घटी

शुक्र मे शनि प्रत्यन्तर

श	बु	के	शु	सू	चं	मं	रा	गु	दशा
६	५	२	६	१	३	२	५	५	मास
	११	६	१	२७	५	६	२१	२	दिन
३	३	३			०	३		०	घटी

शुक्र में बुध प्रत्यन्तर

बु	के	शु	सू	चं	मं	रा	गु	श	दशा
४	१	५	१	२	१	५	४	५	मास
२४	२९	२	२१	२५	२९	३	१६	११	दिन
३	३		०		३			३	घटी

शुक्र मे केतु प्रत्यन्तर

के	शु	सू	चं	मं	रा	गु	श	बु	दशा
	२	०	१		२	१	२	१	मास
२४	१	२१	५	२४	३	२६	६	२९	दिन
३	०	०	०	३			३	३	घटी

सूक्ष्मदशाएँ

प्रत्यन्तर्दशा के मास-दिन-घटी को घटी बनाकर दो से भाग दे, लब्धि मे अपने-अपने दशावर्ष का गुणा करे तो, सूक्ष्मदशा के पल प्राप्त होते हैं। यथा—

सूर्य महादशा ६ वर्ष में, सूर्यान्तर्दशा ३ मास १८ दिन रहेगी और सूर्यान्तर्दशा ३ मास १८ दिन मे सूर्य की प्रत्यन्तर्दशा ५ दिन २४ घटी रहेगी। इस ५ दिन २४ घटी के ३२४ घटी हुई। इनमे दो से भाग दिया, तो, लब्धि मे १६२ पल, एक वर्ष की गति हुई। इस १६२ मे सूर्य दशा वर्ष ६ का गुणा किया तो ९७२ पल के १६ घटी १२ पल सूर्य की सूक्ष्म दशा हुई।

प्राणदशाएँ

सूक्ष्म दशा के दिन-घटी-पल को पल बनाओ, दो से भाग दो, तो लब्धि मे एक वर्ष की गति के विपल प्राप्त होंगे। फिर अपने-अपने दशा वर्ष का गुणा करो, तो प्राण दशा के विपल हो जाते हैं। यथा—

सूर्य सूक्ष्म दशा के १६ घटी १२ पल हैं। इनमे दो से भाग दिया, तो ८ पल ६ विपल एक वर्ष की गति, प्राण दशा की होगी। इस ८।६ में सूर्य दशा वर्ष ६ का गुणा किया तो, ४८।३६ पलादि सूर्य प्राण दशा के हो गये। उदाहरणार्थ कुछ चक्र आगे लिखे जा रहे हैं।

सूर्य महादशा, सूर्य अन्तर, सूर्य प्रत्यन्तर मे सूक्ष्म दशाएँ चक्र ७६

सूर्य सूक्ष्म

सू	च	मं	रा	गु	श	बु	के	शु	दशा
०	०	०	०	०	०	०	०	०	दिन
१६	२७	१८	४८	४३	५१	४५	१८	५४	घटी
१२	०	५४	३६	१२	१८	५४	५४	०	पल

चन्द्र सूक्ष्म

चं	म	रा	गु	श	बु	के	शु.	सू.	दशा
०	०	१	१	१	१	०	१	०	दिन
४५	३१	२१	१२	२५	१६	३१	३०	२७	घटी
०	३०	०	०	३०	३०	३०	०	०	पल

भौम सूक्ष्म

म	रा	गु	श	बु	के	शु	म	चं	दशा
०	०	०	०	०	०	१	०	०	दिन
२२	५६	५०	५६	५३	२२	३	१८	३१	घटी
३	४२	२४	५१	३३	३	०	५४	३०	पल

राहु सूक्ष्म

रा	गु	श	बु	के	शु	सू	च	म	दशा
२	२	२	२	०	२	०	१	०	दिन
२५	६	३३	१७	५६	४२	४८	२१	५६	घटी
४८	३६	५४	४२	४२	०	३६	०	४२	पल

गुरु सूक्ष्म

गु	श	बु	के	शु	सू	चं	म	रा	दशा
१	२	२	०	२	०	१	०	२	दिन
५५	१६	२	५०	२४	४३	१२	५०	६	घटी
१२	४८	२४	२४	०	१२	०	२४	३६	पल

शनि सूक्ष्म

श	बु	के	शु	सू	च	म	रा	गु	दशा
२	२	०	२	०	१	०	२	२	दिन
४२	२५	५६	२१	५१	२५	५६	३३	१६	घटी
२७	२१	५१	०	१८	३०	५१	५४	४८	पल

सूक्ष्म और दशा-प्राण दशा की दूसरी विधि

प्रत्यन्तरदशा दशा के घटी तथा सूक्ष्म दशा के पल बनाकर, दशाप का गुणा कर, ६० से भाग दे, जो लब्धि में घटी शेष में पल सूक्ष्मदशा के तथा लब्धि में पल शेष में विपल प्राणदशा के होते हैं। उदाहरणार्थ प्राण दशा के भी कुछ चक्र लिखे जाते हैं।

सूर्य महादशा, सूर्य अन्तर्दशा सूर्य प्रत्यन्तरदशा सूर्य सूक्ष्मदशा की प्राणदशाएँ चक्र ७७

सूर्य प्राण

सू	चं	मं	रा	गु.	श	बु	के.	शु	दशा
०	१	०	२	२	२	२	०	२	घटी
४८	५१	५६	२५	६	३३	१७	५६	४	पल
३६	०	४	४८	३६	२४	४	४७		विपल

चन्द्र प्राण

चं	मं	रा	गु	श	बु	के	शु	सू	दशा
२	१	४	३	४	३	१	५	१	घटी
१५	३४	३	३३	१६	४६	३४	५०	२१	पल
०	२०	०		३०	३०	३०	०	०	विपल

भौम प्राण

मं	रा	गु	श	बु	के.	शु	सू	चं	दशा
१	२	२	२	२	१	३	०	१	घटी
६	५	५१	५६	४०	७	६	५६	१४	पल
६	६	१२	३३	३१	६	०	४२	३	विपल

राहु प्राण

रा	गु.	श	बु	के	शु.	सू.	चं	मं	दशा
७	६	७	६	२	८	२	४	२	घटी
१७	२८	४१	४३	५	६	२५	३	४०	पल
२४	४८	४२	६	६		४८		६	विपल

गुरु प्राण

गु	श	बु	के	शु.	सू	चं	मं	रा	दशा
५	६	६	२	५	२	३	२	६	घटी
४८	५०	५	३१	१२	६	३६	३१	२८	पल
३६	२४	१	१२		३६		१२	४८	विपल

शनि प्राण

श	बु	के.	शु	सू	चं	मं	रा	गु.	दशा
८	७	३	८	२	४	२	७	६	घटी
७	१४	५६	३३	३२	१४	५६	४१	५	पल
२१	३	३२		५४	६	३३	४२	२४	विपल

उदाहरण राहु अन्तर्दशा चक्र ७८

रा	गु.	श	बु	के.	शु	सू	चं	मं	दशा
२	२	२	२	१	३		१	१	वर्ष
८	४	१	६			१०	६		मास
१२	२४	६	१८	१८		२४		१८	दिन
२	२००२	२००५	२००७	२००८	२०११	२०१२	२०१४	२०१५	संवत्
२ १७ २८	४ २६ १७ २०	३ २ १७ २	३ २ १७ २	१ ८ १७ २	१ ८ १७ २०	३ २ १७ २	३ २ १७ २	३ २ १७ २	सूर्य

उदाहरण शुक्र प्रत्यन्तर्दशा चक्र ७९

शु	सू	चं	मं	रा	गु.	श	बु	के	दशा
६	१	३	२	५	४	४	५	२	मास
	२४		३	१२	२४	२१	३	३	दिन
							०		घटी
२ ९	२ ९	२ ९	२० ९	२ १०	२ १०	२ ११	२० ११	२ ११	संवत
४ ८ १७ २०	५ २ १७ २०	६ २ १७ २०	११ ५ १७ २०	४ १७ १७ २०	६ ११ १७ २०	३ २ १७ २०	८ ५ १७ २०	१ ८ १७ २०	सूर्य

राहु महादशा १९९७।३।२०।१७।२० से प्रारम्भ है। इसके अन्तर्दशा और प्रत्यन्तर्दशा के उदाहरण चक्र ७८-७९ लिखे जा चुके हैं, अब सूक्ष्म और प्राणदशा के भी उदाहरण चक्र ८०-८१-लिखे जा रहे हैं।

उदाहरण सूक्ष्म तथा प्राण दशा

राहु सूक्ष्म चक्र ८०

रा	गु	श	बु	के	शु	सू.	च.	मं	दशा
२४	२१	२५	२२	९	२७	८	१३	९	दिन
१८	३६	३९	५७	२७	०	६	३०	२७	घटी
०	०	०	०	०	०	०	०	०	पल
२० ०९	२० १०	२० १०	२० १०	२० १०	२० १०	२० १०	२० १०	२० १०	संवत्
११ २९ ३५ २०	० २१ ११ २०	१ १६ ५० २०	२ ९ ४७ २०	२ १९ १४ २०	३ १६ १४ २०	३ २४ २० २०	४ ७ ५० २०	४ १७ १७ २०	सूर्य

शुक्र प्राण चक्र ८१

शु	सू	चं	मं	रा	गु	श	बु	के	दशा
४	१	२	१	४	३	४	३	१	दिन
३०	२१	१५	३४	३	३६	१६	४९	३४	घटी
०	०	०	३०	०	०	३०	३०	३०	पल
२० १०	२० १०	२० १०	२० १०	२० १०	२० १०	२० १०	२० १०	२० १०	संवत्
२ २३ ४४ २०	२ २५ ५ २०	२ २७ २० २०	२ २८ ५४ ५०	३ २ ५७ ५०	३ ६ ३३ ५०	३ १० ५० २०	३ १४ ३९ ५०	३ १६ १४ २०	सूर्य

साराश यह है कि, सवत १९९७।३।२०।१७।२० से सवत् २०१५।३।२०।१७।२० तक राहु की महादशा रहेगी। इसके मध्य में सवत् २००८।१०।८।१७।२० से २०११।१०।८।१७।२० तक शुक्र की अन्तर्दशा रहेगी। इसके मध्य में संवत् २००९।११।५।१७।२० से संवत् २०१०।४।१७।१७।२० तक राहु की प्रत्यन्तर्दशा रहेगी। इसके मध्य में सवत् २०१०।२।१९।१४।२० से सवत् २०१०।३।१६।१४।२० तक शुक्र की सूक्ष्मदशा रहेगी। इसके मध्य में सवत २०१०।३।२।५७।५० से सवत् २०१०।३।६।३३।५० (अर्थात् ३ दिन ३६ घटी) तक गुरु की प्राणदशा रहेगी, अर्थात् सवत् २०१०।३।५ पर राहु महादशा, शुक्रान्तर्दशा, राहु प्रत्यन्तर्दशा, शुक्रसूक्ष्मदशा एव गुरुप्राणदशा है।

चन्द्र द्वारा दशा-साधन

स्पष्ट चन्द्र की कला बनाकर, ८०० से भाग दे, तो, लब्धि में गत नक्षत्र तथा शेष वर्तमान नक्षत्र की भुक्त कला-विकला रहती हैं। वर्तमान नक्षत्र के अनुसार (चक्र ७३ से) ग्रह दशावर्ष को, शेष वर्तमान नक्षत्र की भुक्त कला-विकला में गुणा करे, ८०० से भाग दे, तो, लब्धि मे वर्ष प्राप्त होंगे। शेष में १२ का गुणाकर, ८०० से भाग दे, तो, लब्धि में मास प्राप्त होंगे। शेष मे ३० का गुणा कर ८०० से भाग दे, तो लब्धि मे दिन प्राप्त होंगे। इन भुक्त वर्षादिकों को पूर्ण दशावर्ष में से घटावे शेष भोग्य वर्षादि प्राप्त होंगे। यथा—

स्पष्ट चन्द्र १।३।१।३० [चक्र ७३ मे]। $१ \times ३० + ३ \times ६० + १ = १९८१$ कला ३० विकला।

८००) १९८१। ३० (२ गत नक्षत्र
१६००
३८१। ३० शेष वर्तमान तीसरे नक्षत्र (कृत्तिका) की भुक्त कला [चक्र ७३ से सूर्य दशावर्ष ६]

३८१।३० × ६
८००) ७२८८ (२ वर्ष
१६ ०
६८८ × १२
८) ८२६८ (१० मास
८०००
२६८ × ३०
८०) ८ ४ (१० दिन
८०००
४० शेष का त्याग

पूर्णदशा वर्ष ६। । सें स

भुक्त दशावर्ष २।१ ।१० मन्यथा

भोग्य दशावर्ष ३।१ ।२ बुध। चक्र ७२ में भी इसी ही भोग्य वर्षादि आये हैं। दोनों में एक-सा गणित आता है।

अष्टोत्तरी महादशा

श्री नर्मदा नदी से दक्षिण (भारत) में इसका विशेष प्रचार है। मुख्यतः महाराष्ट्र, तैलंग (मद्रास) गुजरात (बम्बई) में तो केवल अष्टोत्तरी दशा का ही उपयोग करते हैं। अतः इसके भी बनाने की विधि लिखना आवश्यक है। स्वरशास्त्र में लिखा है कि, जिसका शुक्ल पक्ष में जन्म हो तो अष्टोत्तरी दशा— अन्यथा विंशोत्तरी दशा (कृष्ण पक्ष में जन्म वाले को) उचित है। गुजर, कच्छ, मराठा, पंजाब और सिन्धुपवत पर ही उचित है।

अष्टोत्तरी जैसा कि नाम है, १०८ वर्ष पूर्ण, सभी महादशा होती हैं। इनमें सूर्य ६ वर्ष, चन्द्र १५ वर्ष, भौम ८ वर्ष बुध १७ वर्ष शनि १० वर्ष गुरु १९ वर्ष राहु १२ वर्ष शुक्र २१ वर्ष क्रम से होते हैं। इसमें केतु की दशा नहीं होती अभिजित् सहित आर्द्रा से पापग्रह में चार एवं शुभग्रह में तीन नक्षत्र होते हैं।

नक्षत्रद्वारा ग्रह दशाचक्र ८२

सूर्य ६ वर्ष	चन्द्र १५ व	मङ्गल ८ वर्ष	बुध १७ व	शनि १० वर्ष	गुरु १९ व	राहु १२ व	शुक्र २१ व.
आर्द्रा	मघा	हस्त	अनु	पूषा	धनि	उभा	कृ
पुन०	पूफा	चित्रा	ज्येष्ठा	उषा	शत	रे	रो
पुष्य	उफा	स्वाती	मूल	अभिजित	पूभा	अ	मृ
श्ले		विशाखा		श्रवण		भ	

भयात, भभोग द्वारा या चन्द्र द्वारा पूर्ववत (विंशोत्तरी की भाँति) साधन करना चाहिए। उदाहरण वाले जातक का जन्म 'प्रबलपुर (नर्मदोत्तर भाग) में एवं कृष्ण पक्ष में हुआ है। अत विंशोत्तरी दशा ही उपयुक्त है। किन्तु, उदाहरण के लिए इसके द्वारा भी दशा-साधन बता रहे हैं।

भयात पल १६१८ भभोग पल ३३६३ जन्मर्क्ष कृत्तिका होने से शुक्रदशा में जन्म हुआ।

१६१८ (भयातपल) × २१ (शुक्रदशा वर्ष)
१६१८
३२३६
३३६३) ३३९७८ (१ वर्ष
३३६३
४८ × १२
३३६३) ५७६ (मास
× ३
३३६३) १७२८ (५ दिन
१६८१५
९१५
× ६
३३६३) ९८८ (५ घटी
१६८१५
१६४५ शेष का त्याग

२१। । । शुक्रदशा वर्ष

१ । ।५ ।५ भुक्त शुक्रदशा

वर्षादि २०।११।२४।५५ भोग्य शुक्रदशा

इसमें अन्तर्दशा तक ही विशेष प्रचार है। अन्यथा त्रैराशिक द्वारा प्रत्यन्तर्दशा, सूक्ष्मदशा और प्राणदशा निकाली जा सकती है।

अन्तर्दशा-साधन

दशावर्ष में दशावर्ष का गुणा करे, १०८ से भाग दे, तो, लब्धि में वर्ष, शेष मे १२ का गुणा कर १०८ से भाग दे, तो, लब्धि मे मास, शेष मे ३० का गुणाकर १०८ से भाग दे, तो, लब्धि में दिन; शेष में ६० का गुणाकर १०८ से भाग दे, तो, लब्धि में घटी प्राप्त होकर शेष शून्य ही रहता है। इसी नियम से अन्तर्दशा-चक्र बनाये गये हैं।

अष्टोत्तरी-अन्तर्दशा-चक्र ८३

सूर्यान्तर्दशा

सू.	चं.	म.	बु	श.	गु	रा.	शु.	ग्रह
०	०	०	०	०	१	०	१	वर्ष
४	१०	५	११	६	०	८	२	मास
०	०	१०	१०	२०	२०	०	०	दिन
०	०	०	०	०	०	०	०	घटी

चन्द्रान्तर्दशा

चं	मं	बु	श	गु	रा.	शु	सू.	ग्रह
२	१	२	१	२	१	२	०	वर्ष
१	१	४	४	७	८	११	१०	मास
०	१०	१०	२०	२०	०	०	०	दिन
०	०	०	०	०	०	०	०	घटी

भौमान्तर्दशा

मं	बु.	श	गु.	रा	शु	सू	चं	ग्रह
०	१	०	१	०	१	०	१	वर्ष
७	३	८	४	१०	६	५	१	मास
३	३	२६	२६	२०	२०	१०	१०	दिन
२०	२०	४०	४०	०	०	०	०	घटी

बुधान्तर्दशा

बु	श	गु	रा	शु.	सू.	चं	मं	ग्रह
२	१	२	१	३	०	२	१	वर्ष
८	६	११	१०	३	११	४	३	मास
३	२६	२६	२०	२०	१०	१०	३	दिन
२०	४०	४०	०	०	०	०	२०	घटी

शन्यन्तर्दशा

श	गु	रा	शु	सू.	च	म	बु	ग्रह
०	१	१	१	०	१	०	१	वर्ष
११	६	१	११	६	४	८	६	मास
३	३	१०	१०	२०	२०	२६	२६	दिन
२०	२०	०	०	०	०	४०	४०	घटी

गुर्वन्तर्दशा

गु	रा	शु	सू	च	म	बु	श	ग्रह
३	२	३	१	२	१	२	१	वर्ष
४	१	८	०	७	४	११	९	मास
३	१०	१०	२०	२०	२६	२६	३	दिन
२०	०	०	०	०	४०	४०	२०	घटी

राहु अन्तर्दशा

रा	शु	सू.	च	म	बु	श	गु	ग्रह
१	२	०	१	०	१	१	२	वर्ष
४	४	८	८	१०	१०	१	१	मास
०	०	०	०	२०	२०	१०	१०	दिन
०	०	०	०	०	०	०	०	घटी

शुक्रान्तर्दशा

शु	सू.	चं	म	बु.	श	गु	रा	ग्रह
४	१	२	१	३	१	३	२	वर्ष
१	२	११	६	३	११	८	४	मास
०	०	०	२०	२०	१०	१०	०	दिन
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	०	०	०	०	घटी

उदाहरण अष्टोत्तरी महादशा चक्र ८४

भु. शु	भो. शु	सू.	चं	मं	बु	श.	दशा
१०	१०	६	१५	८	१७	१०	वर्ष
०	११						मास
५	२४						दिन
५	५५						घटी
१९ ७७	१९ ८८	१९ ९४	२० ०९	२० १७	२० ३४		संवत्
२ ० १८ ५५	१ २५ १३ ५५	१ २५ १३ ५५	१ २५ १३ ५५	१ २५ १३ ५५	१ २५ १३ ५५		सूर्य

भौमान्तर्दशा चक्र ८५

मं	बु	श	गु	रा	शु	सू.	चं	दशा
०	१	०	१	०	१	०	१	वर्ष
७	३	८	४	१०	६	५	१	मास
३	३	२६	२६	२०	२०	१०	१०	दिन
४०	२०	४०	४०	०	०	०	०	घटी
२० ०९	२० ११	२० ११	२० १३	२० १४	२० १५	२० १६	२० १७	संवत्
८ २८ १३ ५५	० १ ४३ ५५	८ २८ १३ ५५	१ २५ १३ ५५	० १५ १३ ५५	७ ५ १३ ५५	० १५ १३ ५५	१ २५ १३ ५५	सूर्य

सारांश यह है कि, उदाहरण कुण्डली की अष्टोत्तरी दशा द्वारा संवत् २००९।१।२५।१३।५५ से संवत् २०१७।१।२५।१३।५५ तक भौम की महादशा रहेगी। इसके मध्य में संवत् २००९ के ८।२८।१३।५५ (सूर्य) से संवत् २०११ के ।१।४३।५५ (सूर्य) तक बुध की अन्तर्दशा रहेगी।

योगिनी—दशा

इसमें ८ दशायें ३६ वर्ष में पूर्ण हो जाती हैं। किसी का मत है कि इन्हीं की पुनः आवृत्ति होती रहती है। परन्तु मात्र इनका फल ३६ वर्ष तक ही मिल पाता है। आगे निष्फल हो जाती हैं। हिमाचल तथा उत्तर प्रदेश में इनका विशेष प्रचार है।

योगिनी के नाम

मंगला १ पिंगला २ धान्या ३ भ्रामरी ४, भद्रिका ५ उल्का ६, सिद्धा ७, और संकटा ८ हैं। और ये क्रमशः एक से आठ वर्ष तक ही रहती हैं।

योगिनी के स्वामी

चन्द्र सूर्य गुरु, मंगल, बुध शनि, शुक्र तथा संकटा के पूर्वार्ध में राहु एवं उत्तरार्ध में केतु स्वामी—क्रमशः मंगला आदि दशाओं के—होते हैं।

योगिनी—साधन

जन्म नक्षत्र में ३ जोड़कर ८ से भाग दें तो शेष १ आदि में क्रमशः मंगला आदि की दशायें होती हैं। यहाँ सब बातें आगे एक ही चक्र में स्पष्ट की गयी हैं। भयात-भभोग के द्वारा—विंशोत्तरी के समान—इसका

योगिनी-दशा-ज्ञान-चक्र ८६

मं.	पिं.	धा.	भ्रा.	भ.	उ	सि	सं.	दशा
चं	सू.	गु.	म	बु.	श.	शु	रा के	ईश
आ. चि. श्र.	पुन. स्वा ध	पु. वि श	श्ले अनु. पूभा. श्र	म ज्ये उभा. भ	पूफा मू रे कृ	उफा पूषा रो.	ह उषा मृ.	जन्म का नक्षत्र
१	२	३	४	५	६	७	८	वर्ष

उदाहरण

भयात १६१८ भभोग ५८ ३३।६३ कृत्तिका में उल्का वर्ष ६ (विंशोत्तरी के सूर्य दशा समान वर्ष होने के कारण) भुक्त उल्का दशा वर्षादि २।१०।१० एवं भोग्य दशा वर्षादि ३।१।२० हुए।

उदाहरण योगिनी-दशा-चक्र ८७

भुक्त उ	भो उ	सि	सं	मं	पिं	धा.	भ्रा.	भ.	दशा
श	श	शु.	रा. के.	चं.	सू	गु.	मं	बु	ईश
२ १० १०	३ १ २०	५	८	१	२	३	४	५	वर्ष मास दिन
१९ ७७	१९ ८०	१९ ८७	१९ ९५	१९ ९६	१९ ९८	२० ०१	२० ०५	२० १०	संवत्
२ ०	३ २०	३ २०	३ २०	३ २०	३ २०	३ २०	३ २०	३ २०	सूर्य

अन्तर्दशा-साधन

दशा वर्ष में दशा वर्ष का गुणाकर, ३६ से भाग दे, तो लब्धि में वर्षादि प्राप्त होते हैं। इसी प्रकार साधन कर आगे अन्तर्दशा चक्र लिखे गये हैं।

योगिनी-अन्तर्दशा-चक्र ८८

मङ्गलान्तर्दशा

मं	पिं	धा	भ्रा	भ	उ	सि	सं.	दशा
०	०	०	०	०	०	०	०	वर्ष
०	०	१	१	१	२	२	२	मास
१०	२०	०	१०	२०	०	१०	२०	दिन

पिंगलान्तर्दशा

पिं	धा	भ्रा	भ	उ.	सि	सं	मं	दशा
०	०	०	०	०	०	०	०	वर्ष
१	२	२	३	४	४	५	०	मास
१०	०	२०	१०	०	२०	१०	२०	दिन

धान्यान्तर्दशा

धा	भ्रा.	भ	उ.	सि	सं	मं	पिं.	दशा
०	०	०	०	०	०	०	०	वर्ष
३	४	५	६	७	८	१	२	मास
०	०	०	०	०	०	०	०	दिन

भ्रामर्यन्तर्दशा

भ्रा	भ	उ	सि.	सं.	म	पिं	धा	दशा
०	०	०	०	०	०	०	०	वर्ष
५	६	८	९	१०	१	२	४	मास
१०	२०	०	१०	२०	१०	२०	०	दिन

भद्रिकान्तर्दशा

भ	उ.	सि	सं	मं	पिं	धा	भ्रा	दशा
०	०	०	१	०	०	०	०	वर्ष
८	१०	११	१	१	३	५	६	मास
१०	०	२०	१०	२०	१०	०	२०	दिन

उल्कान्तर्दशा

उ	सि	सं	मं	पिं	धा.	भ्रा	भ	दशा
१	१	१	०	०	०	०	०	वर्ष
०	२	४	२	४	६	८	१०	मास
०	०	०	०	०	०		०	दिन

सिद्धान्तर्दशा

सि	सं	मं	पिं	धा	भ्रा	भ	उ.	दशा
१	१	०	०	०	०	०	१	वर्ष
४	६	१	४	७	९	११	२	मास
१०	२०	१०	२०	०	१०	२०	०	दिन

संकटान्तर्दशा

सं	मं	पिं	धा	भ्रा	भ	उ.	सि	दशा
१	०	०	०	०	१	१	१	वर्ष
९	२	५	८	१०	१	४	६	मास
१०	२	१०	०	२	१०	०	२०	दिन

उदाहरण भद्रिकान्तर्दशा चक्र ८६

भ	उ	सि	सं	मं	पिं	धा	भ्रा	दशा
०	०	०	१	०	०	०		वष
८	१०	११	१	१	३	५	६	मास
१०	०	२०	१०	२०	१०	०	२०	दिन
२० ६	२ ०६	२ ०७	२० ०८	२० ०९	२० ०९	२० ०९	२० १०	संवत
० ०	१० ०	९ २०	११ ०	० २०	५ ०	९	२ ३०	सूर्य

सारांश यह है कि संवत् २००५।३।२० से सं० २०१ ।३।२० तक भद्रिका की महादशा रहेगी। इसके मध्य में सं० २००९।५।० से सं० २०१०।३।२० तक भ्रामरी की अन्तर्दशा रहेगी।

मानस-वर्तिका = ज्योतिष की महत्ता

फलित - खण्ड

अष्टम-वर्तिका

अब यहाँ से फलित लिखना प्रारम्भ किया जा रहा है। इसके पहिले आप, जन्मपत्री की ज्ञातव्य बातें क्रम से जानकारी कीजिए। संवत्, मास, पक्ष, तिथि, वार, नक्षत्र, तारीख, माह, सन्, लग्न, प्राणपद, गुलिक, ग्रह, भाव, राशि, राशीश, भावेश, दृष्टि (पौर्वात्य, पाश्चात्य), सम्बन्ध, षड्वर्ग और अष्टकवर्ग आदि क्रियाओं के द्वारा, किसी भी कुण्डली का फल-अनुसन्धान कीजिए। तात्पर्य यह है कि, हम अभी इस भाग में, इतने ही पदार्थों को लेकर, फलित वर्णन करना चाहते हैं। आप जब, इनके द्वारा कार्य करने बैठेंगे, तब आपको उस कुण्डली वाले के जीवन का एक स्पष्ट निष्कर्ष दृष्टि-गोचर होगा; इसमें कोई सन्देह नहीं। इसमें से पौर्वात्य तथा पाश्चात्य सम्बन्ध एवं पाश्चात्य-दृष्टि का निर्देशन, आवश्यक स्थल पर आपको, आगे लिखा हुआ मिलेगा। शेष ज्ञातव्य-विषय, सप्तम-वर्तिका पर्यन्त, प्रस्तुत हैं। जो फलित विषय, इस ग्रन्थ में न आ सकेगा, वह, इसी ग्रन्थ के दूसरे भाग में लिखा जायगा।

मास-फल

जिनकी जन्म-पत्रिका नहीं है, केवल अँग्रेजी तारीख, मास और सन् स्मरण है, उन्हें यह मास-फल, स्थूल होते हुए, बड़ा ही उपयोगी सिद्ध होगा। इसके देखने की तीन विधियाँ हैं।

(१) सायन सौरमास के आधार पर।
(२) चान्द्रमास के आधार पर।
(३) निरयण सौरमास के आधार पर।

मास-ज्ञान

२० फरवरी से २७ फरवरी तक कुम्भ-मीन = २८ फरवरी से २० मार्च तक मीन
२१ मार्च से २७ मार्च तक मीन-मेष = २८ मार्च से १६ अप्रैल तक मेष

एवं सर्वत्र

क्रम	राशि	[१] = मत सायन सौर मास	[२] = चान्द्र मास	[३] = निरयण सौर मास
(१)	मीन	= २० फरवरी से २० मार्च तक	= चैत्र	= १४ मार्च से १२ अप्रैल तक
(२)	मेष	= २१ मार्च से १९ अप्रैल तक	= वैशाख	= १३ अप्रैल से १३ मई तक
(३)	वृष	= २० अप्रैल से २० मई तक	= ज्येष्ठ	= १४ मई से १४ जून तक
(४)	मिथुन	= २१ मई से २० जून तक	= आषाढ़	= १५ जून से १५ जुलाई तक
(५)	कर्क	= २१ जून से २१ जुलाई तक	= श्रावण	= १६ जुलाई से १५ अगस्त तक
(६)	सिंह	= २२ जुलाई से २१ अगस्त तक	= भाद्रपद	= १६ अगस्त से १५ सितम्बर तक
(७)	कन्या	= २२ अगस्त से २२ सितम्बर तक	= आश्विन	= १६ सितम्बर से १५ अक्टूबर तक
(८)	तुला	= २३ सितम्बर से २१ अक्टूबर तक	= कार्तिक	= १६ अक्टूबर से १५ नवम्बर तक
(९)	वृश्चिक	= २२ अक्टूबर से २२ नवम्बर तक	= मार्गशीर्ष	= १६ नवम्बर से १४ दिसम्बर तक
(१०)	धनुः	= २३ नवम्बर से २१ दिसम्बर तक	= पौष	= १५ दिसम्बर से १३ जनवरी तक
(११)	मकर	= २२ दिसम्बर से १९ जनवरी तक	= माघ	= १४ जनवरी से १२ फरवरी तक
(१२)	कुम्भ	= २० जनवरी से १९ फरवरी तक	= फाल्गुन	= १३ फरवरी से १३ मार्च तक

२० फरवरी से २ मार्च तक

यदि आपका जन्म हुआ हो तो, मकान के उत्तरी भाग में जन्म लिया होगा। कमर में दो व्यक्ति थे, जन्म पाकर आप रोये नहीं, कुछ समय लगा। आपके विचारों का पता, दूसरों को नहीं लग सकता परन्तु आप कभी-कभी बहुत अधीर हो जाते हैं। किसी का निर्दयी बर्ताव करते देखकर आपका चित्त, दया से भर जाता है। पशुओं के प्रति आप स्नेही हैं। सामाजिक कार्य या अन्य ऐसा ही उपकार वाला कार्य, आप बड़ी संलग्नता से करते हैं। प्रायः विचार धार्मिक रहेंगे। कभी रहस्यवाद या छायावाद की ओर झुक जा सकते हैं। अगम्य स्थान या पद या भाव में डूब जाने की अभिलाषा रहती है। यदि आप चाहें तो इसे बढ़ा भी सकते हैं। सदा शान्त, किन्तु उत्साह का त्याग नहीं सकते। हाँ, कभी-कभी आप अत्यधिक निराश होकर, अपने स्वास्थ्य को हानि पहुँचा देते हैं। इसलिए तब आपको ऐसे मित्र चाहिए, जो सदा प्रसन्न-चित्त रहते हों। कभी मुक्त-वायु (खुली हवा) में या सूर्य प्रकाश में जाकर बैठिए, जिससे आपकी आशा-लता लहरा उठेगी। आप तब एक सौम्य व्यक्ति की भाँति दिखेंगे। ध्यान रहे कि, रक्त-शुद्धि-पदार्थ का सेवन हितकर है, क्योंकि चर्म-रोग होने का भय रहेगा। आपको मीन वृत्त या मीन राशि के स्थानों में जीविका-कार्य हितकर है। गुरुवार शुभ। सफेद रंग एवं अंक ४।५।६ भाग्य-वर्धक हैं। ५ वें वर्ष जल से, ८ वें वर्ष ज्वर से १८, २२, ३२ वें वर्ष रोगों से ४९-५१-५६ वें वर्ष किसी अन्य कारणों से अनुकूल नहीं हो पाते। आपको गहरे जल के स्नानादि से सर्वदा बचते रहने का प्रयत्न करना चाहिए। पूर्णायु ७१ वर्ष तक की हो सकती है। जहाँ तक मित्र-शत्रु का प्रश्न है वहाँ समान ही संख्या सम्भव है। प्रायः जो भी मित्र होंगे उनकी बात को आप, उत्साही होने के कारण, बहुत शीघ्र मान लेते हैं। क्योंकि आप समाज-प्रिय हैं। गीत-नृत्यादि में विशेष अभिरुचि प्रायः अच्छा स्वभाव एवं धैर्यवान् हैं। हाँ, कभी-कभी आप अपनी प्रशंसा अवश्य करना चाहते हैं। यन्त्र-विभाग या साहित्य-क्षेत्र भी लाभदायक हो सकता है। २१ जून से २१ जुलाई तक या २२ अक्टूबर से २२ नवम्बर तक या २२ अगस्त से २२ सितम्बर तक के मध्य में जन्म पाने वाले व्यक्तियों के साथ आप शीघ्र ही मित्रता करना चाहेंगे (चाहे मित्र स्त्री हो या पुरुष)। तथा च २१ मार्च से १६ अप्रैल तक, या २१ जुलाई से २१ अगस्त तक या २४ नवम्बर से २१ दिसम्बर तक के मध्य में जन्म पाने वाले व्यक्तियों के साथ, आप भूल कर भी मित्रता न कीजिए। आपके उत्साह एवं दयालुता मुख्य गुण होंगे। कभी कोई हठीले हो जाते हैं, उन्हें मनमानी करने में सहायता देना चाहिए।

चैत्र-मास

इस मास में जन्म लेनेवाले पुरुष—भावुक, मिलनसार कार्य-परायण, उद्योगी, विघ्न-बाधाओं को शीघ्र दूर करने वाले एकान्त-प्रिय सार्वजनिक कार्य-कर्ता, नेता या प्रमुख प्रचारक, शिक्षा साधारण होने पर भी कार्य-कुशलता से प्रसिद्ध प्रायः ५० प्रतिशत व्यक्ति शिक्षित १४ प्रतिशत उच्च शिक्षित, शेष ३६ प्रतिशत साधारण शिक्षित होते हैं। कला-कौशल के प्रेमी। कृष्ण पक्ष की अपेक्षा शुक्ल पक्ष में जन्म लेने वाले अधिक भाग्यवान मननशील और उत्तरदायी होते हैं। चैत्र शुक्ल पूर्णिमा में जन्म लेने वाले प्रायः धनी, कला के परीक्षक, विशेषतः बलवत्-पुरुष (कार्य संचालक या प्रगतिशील) होते हैं। चैत्र कृष्ण पक्ष के १-२-४-७ तिथियों के दोपहर के बाद जन्म लेने वाले व्यक्ति कृषि कार्य में विशेष निपुण होते हैं, किन्तु कुछ व्यक्ति व्यापार में प्रवीण हो जाते हैं। चैत्र शुक्ल ६-१०-११ तिथि में जन्म लेने वाले व्यक्ति प्रायः महान् पुरुष होते हैं।

इस मास में जन्म लेने वाले व्यक्ति शिक्षक, मैनेजर साधारण नौकर जिलाधीश, पुलिस ऑफिसर और साधारण चिकित्सक होते हैं। प्रायः इसमें जन्म लेने वाले यदि उद्योग-धन्धों के विकास में लगते हैं तो, उन्हें अधिक सफलता मिलती है। तात्पर्य यह है कि, व्यवसाय की बुद्धि स्वाभाविक होती है। यदि ये थोड़ा सा ही सहयोग पा जाते हैं त्योंही ये प्रगति कर जाते हैं।

जिनका जन्म चैत्र कृष्ण ६ शनिवार को दोपहर के दो बजे लगभग हो, उन्हें अधिक सफलता, उन्नति-शील एवं यशस्वी होकर धन्य होना पड़ता है। वे अन्तरराष्ट्रीय कार्यों में ख्याति पाते है। प्राय मंगलवार या शनिवार को जन्म होने से मल्ल, लड़ाकू और सफल सैनिक होते हैं। इनका शरीर ऊँचा, रंग-गोरा, इकहरा वदन, रूक्ष-स्वभाव होने से ये अभिमानी हो जाते हैं।

धन

इस मास मे जन्म होने पर व्यक्ति सर्वदा धन की कमी का अनुभव करते हैं इनमें तृष्णा इतनी अधिक होती है जिससे विपुल परिमाण में धन होने पर भी, ये अपने को तुच्छ समझते हैं। १० प्रतिशत अधिक धनी, २५ प्रतिशत मध्यम वर्ग के, १५ प्रतिशत साधारण धनी, शेष ५० प्रतिशत दरिद्र (निर्धन) होते हैं। इस मास की विषम (१-३-५-७-६-११-१३-३० शुक्ल या कृष्ण पक्ष) तिथियो मे जन्म पाने वाले प्राय दरिद्र होते हैं परन्तु इन्हे धातु व्यापार द्वारा साधारण धन-लाभ हो ही जाता है। मतान्तर से चैत्र शुक्ल पक्ष के १-५-६-१०-१३-१५ तिथियों मे जन्म लेने पर अच्छे धनी और यशस्वी हो जाते है। प्राय ३० वर्षायु के लगभग अकस्मात् धन की प्राप्ति (व्यापार से, राज्य मे, ससुराल आदि सम्बन्ध-स्थानों मे) होती है।

जिनका जन्म गुरुवार या सोमवार की रात मे होता है वे २२ वर्षायु के लगभग से धन कमाने लगते हैं, किन्तु जिनका जन्म इन्हीं दिनो के दिन में होता है ये २५ वर्षायु के लगभग से धन कमा पाते हैं। मंगल, बुध, शुक्रवार को दिन मे जन्म लेने पर किसी को कभी कोई आर्थिक कष्ट नहीं हो पाता, वे २४ वर्षायु के लगभग से अपने-अपने व्यवसाय मे लग जाते है जिससे आवश्यकतावश धन अर्जित करते रहते हैं। तथा मंगल, बुध, शुक्रवार की रात मे जन्म लेने पर पूर्वार्ध जीवन मे आर्थिक कष्ट, उत्तरार्ध जीवन मे धन-लाभ होता है। प्राय इस मास वालों को २०-२२-२३-२४-२८-३२-३५-४१-४६-६४ वें वर्ष में आर्थिक दृष्टि से अनुकूल समय रहता है।

विवाह

इस मास मे जन्म लेने वालो का विवाह प्राय शीघ्र, अल्प-वय मे या सरलता से होता है। बहुधा १०-११-१२-१४-१६-१८-१६-२२ वें वर्ष में विवाह होना सम्भव होता है। पाश्चात्यमत से विवाह २१ वर्ष से ३० वर्षायु तक सम्भव होता है। ३२ प्रतिशत अल्पावस्था मे, २८ प्रतिशत युवावस्था में, १५ प्रतिशत प्रौढ़ावस्था मे विवाहित हो जाते हैं किन्तु शेष २५ प्रतिशत अविवाहित ही रह जाते हैं। जिनका जन्म चैत्र कृष्ण पक्ष की तृतीया तिथि के सायकाल मे होता है, उनके दो या तीन विवाह तक तथा शुक्ल पक्ष की सम (२-४-६-८-१०-१२-१४-१५) तिथियों मे जन्म पाने पर दो विवाह तक सम्भव होते हैं।

मित्रता

इस मास मे जन्म लेने वालो की मित्रता अधिक लोगो से होती है, ये जहाँ रहते हैं वहीं अपने मित्र बना लेते हैं। प्राय इनके शत्रु कम ही हो पाते हैं। ४० वर्षायु में एक भारी शत्रु का भय होता है, जिससे इन्हे जीवन-पर्यन्त लड़ना पड़ता है। शुक्ल पक्ष वाले व्यक्तियों को यह शत्रु-भय, प्राय सम्भव नहीं हो पाता।

स्वास्थ्य

प्राय अच्छा ही रहता है, परन्तु २३ वर्ष के उपरान्त अचानक रोगोत्पत्ति होती है जिससे कष्ट भोगते हैं। ४-५-७-६-१०-१४-१६-१६-२०-२३-२८-४०-४२-४४-४८-५०-५१-५४-५७-६७ वें वर्ष कष्टकारक हो सकते हैं। इन वर्षों में स्वास्थ्य पर अवश्य ध्यान रखिए, जिसमे ५४-५७-६७ वर्ष तो मारक-फल देने वाले हो जाते हैं। इन्हे वात रोग, गठिया, लकवा, चर्म-रोग, सक्रामक-रोग आदि सम्भव होते हैं। पूर्णायु ७१ वर्ष की है।

चरित्र

इस मास में जन्म वालों का चरित्र प्रायः अच्छा ही रहता है, वे सत्य-निष्ठ और विश्वस्त होते हैं। चरित्र रक्षा करने में कठोर होते हैं। इनका नैतिक-जीवन सहवासियों के लिए आदर्श हो जाता है। शुक्लपक्ष वाले तो धर्मात्मा, दयालु, सत्यवक्ता एवं अपने आचरण बल से नेता तक बन जाते हैं किन्तु कृष्णपक्ष वाले व्यक्तियों में आचरण-हीनता पायी जाती है।

भाग्योदय समय

इस मास में जन्म वालों का भाग्योदय १६ या १८ वर्ष से प्रारम्भ हो जाता है। हाँ, २२ वर्ष से २० वर्ष तक का समय तो अत्यन्त महत्वपूर्ण होता है। इसी समय इनके भाग्य-निर्माण की नींव जमती है। यदि इस समय इन्हें सहयोग मिल जाय, तो फिर आजीवन सुखी रहते हैं। इसी प्रकार ३१ वर्ष से ३६ वर्ष की आयु तक एक दूसरा शुभावसर आता है। तीसरा अवसर ५५ से ५६ वर्ष तक आता है। तथा १७-१६-१८-२४-३०-३१-४२-४४-४६-५१ वें वर्ष भाग्यनाशक समय उपस्थित होता है। ११-१७-२७-३०-४२ वें वर्ष शरीर कष्ट या अत्यन्त सुखमय समय रहता है। चैत्र, श्रावण कार्तिक, माघ फाल्गुन मास में सभी कार्य एवं नवीन कार्य प्रारम्भ करने से शुभ होता है। रविवार गुरुवार भी शुभ (अनुकूल) माने गये हैं। ६-१ -१३-१५ तिथियाँ शुभ होती हैं। अंक ४-५-६ शुभ हैं।

नाट—

अंकों के उपयोग करने की विधि इस प्रकार है कि किसी भी (बड़ी-छोटी) संख्या का जोड़ करके एक इष्ट अंक बना लेना चाहिए। यथा—हमारी परीक्षा का रोल नम्बर ४२७ है तो ४+२+७=१४ हुए। फिर १+४=५ हुए। यह ५ का अंक शुभ है अर्थात् ४२७ नम्बर अनुकूल है। इनका उपयोग रजिस्टर्ड नम्बर, रोल नम्बर लाटरी, रेस सट्टा, मोटर का नम्बर, मकान नम्बर आदि नम्बर वाले पदार्थों में शुभ संख्या का उपयोग करना चाहिए।

सन्तान

इस मास में जन्म वालों को सन्तान सुख प्रायः अच्छा होता है। प्रथम सन्तान १७-२२-२५-२८-३२ वर्षायु में सम्भव होता है। जिनका जन्म सोमवार आर्द्रानक्षत्र में होता है उन्हें सन्तान सुख नहीं हो पाता। जिनका जन्म गुरुवार को १५ घटी १ पल इष्ट पर होता है, उन्हें ३८ वर्ष की आयु में सन्तान होती है। कृष्णपक्ष वालों को कन्याएँ अधिक तथा शुक्लपक्ष वालों को पुत्र अधिक होते हैं। कुल ८ सन्तान तक सम्भव हैं। जिनका जन्म रोहिणी नक्षत्र के चतुर्थ चरण में होता है उन्हें कुल ४ सन्तान तक सम्भव हैं।

विशेष फल

इस मास वाले प्रायः परोपकारी ३ वर्षायु में सम्मानित (राजमान्य देशमान्य स्वजन-मान्य) होते हैं। यह फल प्रायः चैत्र शुक्ल १३ तिथि तक जन्म लेने वालों में ही घटता है। ३ वें वर्ष इन्हें जब अकस्मात् धन मिलता है, तब बाधाओं का सामना करना पड़ता है। बाधा शान्ति के लिए मंगल की आराधना करना चाहिए। क्योंकि सायन-सौर मत से मेष संक्रान्ति हो जाती है। ४८ वर्ष से ५२ वर्ष तक व्यापार-वृद्धि होने की सम्भावना रहती है इस व्यापार में हजारों रुपयों की आय होती है।

२१ मार्च से १८ अप्रैल तक

यदि आपका जन्म हुआ हो, तो आप मकान के पूर्वी भाग में जन्म लिया होगा आपके कमरे में दो व्यक्ति थे जन्म होते ही आप रो उठे थे और सम्भव है, कि आपका जन्म खाट पर ही हुआ हो। इस समय उत्पन्न होने वालों पर मंगल का प्रभाव रहता है, जिससे दुबले-पतले (इकहरे शरीर) चौड़े कन्धे और पीले नेत्र होते हैं। आपको अधिक श्रम करना स्वास्थ्य के लिए हानिकारक है। किसी भी रोग होने के कारण पीड़ा या अन्य शिरो रोग होते हैं। रुधिर-विकार और सबसे बड़ा-कष्ट (बदहजमी) रहती है।

मस्तिष्क को शक्ति देने वाले पदार्थ सेवन करना चाहिए। आपको सफेद और लाल रंग शुभ सूचक है। प्रवाल (मूँगा) धारण कीजिये। मंगलवार शुभ। शुक्रवार अशुभ। अंक १–८–३–७–६ शुभ। ८–३–१२–१८ वें वर्ष जल से, ७–१६–१७ वें वर्ष अन्य रोग से, ५० वें वर्ष चोर से हानिकारक है। पूर्णायु ७५ वर्ष की है। आप सर्वदा अपने ही विचार वाले मनुष्यों के साथ मित्रता चाहते हैं, क्योंकि आप सत्य–प्रिय (नियम–प्रिय) होने के कारण, अपने मित्र को, सत्यता का वर्ताव न करने के कारण छोड़ सकते हैं, फिर भी शत्रुओं से मित्रों की संख्या आपके अधिक ही हैं। आप २३ अक्टूबर से २२ नवम्बर तक या २२ दिसम्बर से १६ जनवरी तक या १६ फरवरी से २० मार्च तक के मध्य में जन्म पाने वाले व्यक्तियों के साथ, मित्रता न कीजिये, ये आपके पक्के शत्रु होंगे। आप २२ जुलाई से २३ अगस्त तक या २२ नवम्बर से २१ दिसम्बर तक के मध्य में जन्म पाने वाले व्यक्तियों के साथ, अवश्य ही मित्रता कीजिए। कृषि या शिल्प कला भी लाभप्रद हो सकती है। १८–२४–३२ वे वर्ष, विवाह के लिए शुभ हैं। चित्त के उधेड़–बुन वाली वृत्ति को दूर करने के लिए किसी काम मे स्थिर–मना बैठिए। आप एक ढंग से नटखटीपन वाले स्वभाव के हो सकते हैं, परन्तु, आप भय या धमकी से, इस स्वभाव को बढा ही देते हैं, जिससे बचिए।

वैशाख–मास

इस मास मे उत्पन्न व्यक्ति बडे ही परोपकारी, साहसी, मिलनसार, उद्योगी, सदा कार्य संलग्न, स्वप्न–विचार (हवाई महल बनाने) से रहित, वीरता युक्त कार्यों मे समय बिताने वाले, भविष्य को उज्वल बनाने की प्रबल इच्छा, इच्छा पूर्ति के लिए सदा प्रयत्नशील, कठिनाइयो का सामना करने मे धैर्यवान्, स्थिर–चित्त वाले, अनेक बाधाएँ तो आती ही हैं और ऐसा भासित होने लगता है कि सफलता नहीं मिलेगी, किन्तु इनकी इच्छा–शक्ति (विल पॉवर) इतनी अधिक प्रबल होती है, जिससे अन्त मे जाकर सफलता मिलती है। इनकी शारीरिक एवं मानसिक शक्ति बलिष्ठ होती है। चापलूसी करने वाले व्यक्तियों से, इन्हे, घृणा होती है। स्वभाव कुछ रूखा और अक्खड़ दिखेगा। कृष्ण पक्ष वालो का स्वभाव कुछ चिडचिड़ा भी हो जाता है। परन्तु शुक्ल पक्ष वाले व्यक्ति स्नेही होते हैं। स्नेह करने के लिए अपना परिवार और अन्य लोगों को समान समझते हैं। ४–७–८–१३ तिथियो मे उत्पन्न व्यक्ति, अधिक महत्त्वाकांक्षी होते हैं। ये सब कार्यों मे अपनी ही प्रधानता रखना चाहते हैं। कभी–कभी इनका, यह स्वभाव, इन्हे कष्टदायक भी हो सकता है।

इस मास वाले व्यक्ति प्राय वैद्य, डॉक्टर, हकीम, कम्पाउण्डर, सैनिक, साधारण व्यापारी, मन्त्री, मुशी, मोख्तार, नाविक और असफल शिक्षक होते हैं। प्राय औषधि के कार्य-कर्ता विशेष सफलता पाते हैं, यों तो व्यापार करते है, परन्तु धन–सञ्चय की प्रवृत्ति कम रहती है, जिससे सफल व्यापारी नहीं हो सकते हैं। कृषक भी (इस मास वाले) सफल नहीं होते यद्यपि वे, जी-तोड श्रम करते हैं, परन्तु कृषि का मर्म न जानने के कारण, उसमे, सिद्ध–हस्त नहीं हो सकते। इस मास में उत्पन्न व्यक्तियों मे धनोपार्जन की योग्यता अच्छी रहती है तथा अच्छे कार्यों मे मुक्त–हस्त से धन–व्यय करना भी खूब जानते हैं, इनके हाथ सदा खुले रहते हैं, जिससे धन–सग्रह मे कठिनता आती है। कोई इतने हठी होते हैं कि, कठिन से कठिन कार्यो में भी बिना परिणाम सोचे, कूद पड़ते हैं। शुक्ल पक्ष वाले अधिक वीर एव साहसी होते हैं। कृष्ण पक्ष वाले प्राय उच्च शिक्षित या अर्ध–शिक्षित होते हैं। शुक्ल पक्ष की ३–४–५–८–१४–१५ तिथियो वाले व्यक्ति शिक्षित और शेष तिथियों वाले अर्ध–शिक्षित या अशिक्षित रह जाते हैं। शुक्ल पक्ष की प्रतिपदा रविवार मे उत्पन्न व्यक्ति, अपने जीवन मे बडे ऊँचे–ऊँचे कार्य करते हैं, विदेश–यात्री भी अवश्य होते हैं। यों तो प्राय सभी (इस मास वाले) यात्रा–प्रेमी होते हैं। कृष्ण पक्ष १–२–६–८–१०–१४–३० तिथियों में उत्पन्न व्यक्ति शिक्षा–प्रेमी होते हैं। शेष तिथियों वाले (कृष्ण पक्ष के) अर्ध–शिक्षित या अशिक्षित होते हैं। इनकी शिक्षा–वृद्धि मे बाधाएँ आती है। कभी किसी को साक्षरता प्राप्त होने पर भी ज्ञानात्मक उन्नति नहीं हो पाती।

धन

इस मास वालों की आर्थिक स्थिति में तीन भेद हो सकते हैं। भोजन-वस्त्र तक की चिन्ता में मग्न मध्यम वर्ग और बड़ों से प्राप्त (स्वोपार्जित) विपुल सम्पत्ति के अधिकारी। इस मास के प्रारम्भिक चार दिनों में उत्पन्न व्यक्ति, प्रायः अधिक खर्च होने के कारण कभी-कभी भोजन-वस्त्र तक के लिए चिन्ता-ग्रस्त हो जाते हैं। कृष्ण पक्ष की ४ से ८ तिथि तक तथा शुक्ल पक्ष के ७ से १० तिथि तक (इन ८ दिनों में) उत्पन्न व्यक्ति, मध्यम परिस्थिति में रहते हैं। इनके पास भी धन-सञ्चय नहीं हो पाता। कृष्ण पक्ष की ९ से १२ तिथि तक तथा शुक्ल पक्ष की १२-१३ तिथि में उत्पन्न व्यक्तियों को स्वोपार्जित धन मिलना सम्भव रहता है। वह धन चाहे पैतृक हो या स्वोपार्जित किन्तु इन्हें धन मिलने का सुयोग आता है। प्रायः इस मास वाले बहुत कम धनी हो पाते हैं। हाँ अपने पुरुषार्थ से पैसा खूब कमाते हैं, और आनन्द-पूर्ण जीवन व्यतीत करते हैं।

विवाह और मित्रता

इस मास वालों का विवाह, प्रायः विलम्ब से हो पाता है। बहुधा २० वर्ष से २८ वर्ष तक के मध्य वर्षों में सम्भव रहता है। विशेष गुण (इस मास वालों का) यही है कि ये एकाकी जीवन बिताने से घबड़ाते हैं, अतएव इन्हें कोई आश्रय (साथी) की आवश्यकता पड़ती है। यद्यपि इनका स्वभाव मित्रता करने लायक नहीं होता फिर भी जिसके साथ इनकी मित्रता हो जाती है ये उसका साथ अन्त तक देते हैं। स्वाधीन प्रकृति वाले होने के कारण प्रायः मिलना-जुलना कम ही पसन्द करते हैं। कृष्ण पक्ष की ४ तिथि से शुक्ल पक्ष की ८ तिथि तक उत्पन्न व्यक्तियों में गुप्त प्रेम की परिस्थिति बन जाती है, तथा तीन विवाह तक सम्भव होते हैं। पूर्णिमा को उत्पन्न व्यक्ति, एक उप-पत्नी (द्वितीय स्त्री) रखते हैं। २१ वर्ष से २८ वर्ष तक का समय (इस मास वालों का) बहुत सावधानी का होता है। प्रायः इसी समय कुप्रवृत्तियाँ उत्पन्न होती हैं। कृष्ण पक्ष की १-३-८-१०-११ तिथि वाले 'हस्त-मैथुन' रोग के रोगी हो सकते हैं इस महीने की ये तिथियाँ, अप्राकृतिक मैथुनेच्छा को उत्पन्न करती हैं। इस मास वाले प्रेम का महत्व भली प्रकार नहीं जान पाते।

स्वास्थ्य

इस मास वालों का प्रायः शारीरिक स्वास्थ्य अच्छा रहता है। हाँ, सर्दी-गर्मी को विशेष सहन नहीं कर पाते। रक्त-चाप (ब्लड प्रेशर) आकस्मिक घटना (जलना डूबना शस्त्रास्त्र भय एवं अन्य कारणों द्वारा) वद्धकोष्ठता (कब्जियत) कटि-वात रोग शिर रोग आदि सम्भव होते हैं। इस मास वालों को कम से कम सात घण्टे अवश्य ही शयन करना चाहिए। कफ जन्य व्याधि भी किसी-किसी को सम्भव है, इन्हें दही खटाई समान पदार्थ हानिकर और दूध रोटी लाभदायक होती हैं। ३-४-६-८-१०-११-१४-२१-२४-३४-३८ ४२-४८ वें वर्षायु में शरीर कष्ट सम्भव रहता है। पूर्णायु ७५ वर्ष तक की होती है। इस मास वालों की अकाल-मृत्यु, प्रायः बहुत ही कम हो पाती है। कार्तिक, माघ चैत्र मास कष्टदायक हैं। कृष्ण पक्ष में उत्पन्न लोगों का अगहन और माघ मास हानिकर बताये गये हैं। वैशाख ज्येष्ठ सुखदायक होते हैं। गर्मी के दिनों में (इस मास वालों को) लू लग जाने का भय रहता है। मेष राशि में सूर्य के ७ वें अंश में जन्म लेने वालों तथा वैशाख के शुक्ल पक्ष २ या ४ तिथि में जन्म लेने वालों को प्रायः लू लगने से मृत्यु-भय होता है।

चरित्र

इस मास वाले प्रायः नैतिक होते हैं। स्वभावतः परिपालक (जिससे जैसा कहें वैसा करें) होते हैं। व्यावहारिक असमय के सिवाय सदा असत्याचारी (सफेद झूठ) नहीं होते। धर्म भीरु होते हैं। स्वामी या गुरुजन का सम्मान करते हुए उनके आज्ञा-पालन (डिसिप्लिन) में रहते हैं। स्वच्छ हृदय वाले होते हैं। हाँ, कृष्णपक्ष के व्यक्ति कुछ कुटिल तथा गम्भीर स्वभाव होने के कारण अपने मन की बात को गुप्त रखते हैं। नैतिक शैथिल्य (कामातुर) प्रायः शुक्लपक्ष के व्यक्तियों में अधिक होता है। कृष्णपक्ष की प्रतिपदा वाले पेट के कपटी किन्तु गुप्तेन्द्रिय आचरण के शुद्ध होते हैं। इनकी बात का पता लगाना सुगम नहीं होता। कोई-कोई २८ वर्ष से ३३ वर्ष तक (इस मास वाले) किसी अपराध में जेल भी जाते हैं, फिर भी नैतिक आचरण प्रायः (इस मास वालों का) अच्छा ही होता है।

भाग्योदय

इस मास वालों का २१ वर्ष से २८ वर्ष तक का समय परिवर्तन–शील (लाइफ–चेञ्ज) रहता है। इस समय अपने स्थान को छोडकर अन्यत्र जाना पडता है। ३५ वर्षायु मे सुखी होते हैं। २२ वर्ष से ३५ वर्ष तक का समय भाग्योदय का होता है। क्योंकि इसी समय मे जीवन पूर्ण विकसित होता है। ५–७–११–३४ वें वर्ष कष्ट कारक (प्रतिकूल) होते हैं। प्राय शरीर कष्ट होता है। १५–२२–३१–४८ वें वर्ष आर्थिक सङ्कट होता है। ५५–५६–५८ वें वर्ष सुखी होते हैं। क्योंकि इन वर्षों मे घर मे उत्सव या मङ्गल–कार्य होते हैं। २८ से ३५ वर्ष का समय, स्वर्ण अवसर का होता है। इसी समय पुरुषार्थी व्यक्ति अधिक से अधिक उन्नति कर सकता है। आषाढ, भाद्रपद, अगहन और पौष मास सर्वदा अच्छे बीतते हैं इन मासो में प्रत्येक कार्य सफल हो सकते हैं। मङ्गलवार शुभ। गहरा चमकदार रङ्ग की वस्तुएँ सुखदायक। हीरा धारण करने से अशुभ ग्रहों का प्रभाव कम हो जाता है। अङ्क १–३–६–८ शुभ सूचक हैं।

विशेष–फल

इस मास वालों को, माता–पिता का सुख, प्राय अच्छा रहता है। भाइयों की सख्या ६ तक हो सकती है, परन्तु कृष्ण पक्ष वालों के दो भाई से अधिक होना, कम ही सम्भव है। सन्तान तो खूब उत्पन्न हो सकती है। हाँ, भाई तथा माँ का सुख कम होता है। माँ की अपेक्षा (इस मास वाले) पिता के अधिक प्रेमी होते हैं। चाचा-चाची से अधिक भयभीत रहते हैं। चचेरे भाइयों का सुख कम ही होता है। इस मास वालों का जीवन प्राय सुखमय व्यतीत होता है। इस मास मे कम ही मूर्ख व्यक्ति उत्पन्न होते हैं। जो मूर्ख भी रह जाते हैं, वे अपने व्यवसाय में प्रवीण होते हैं। जीवन का मध्यभाग सुखकर होता है। स्त्रियों के प्रति आकर्षण अधिक होता है। कोई–कोई अपने जीवन मे अनेक उत्थान–पतन देखते हैं। इनका जीवन कठोरता की आग मे सदा तपा रहता है। अपने साहसी और ढीठ (हठी) स्वभाव के कारण किसी से नहीं डरते। कठिन से कठिन कार्यों मे भी ये, साहस नहीं खोते। इस मास का पूर्ण प्रभाव शुक्ल पक्ष की तृतीया से दिखता है। प्राय (इस मास वाले) किसी न किसी बात मे ख्याति प्राप्त करते हैं।

२० एप्रिल से २० मई तक

यदि आपका जन्म हुआ हो तो, मकान के दक्षिणी या पूर्वी भाग में जन्म हुआ होगा। जन्म समय ४ व्यक्ति उपस्थित थे। आपका जन्म नीची भूमि में (खाट आदि पर नहीं) हुआ है। आप दृढ प्रतिज्ञ, हठीले, सन्तोषी और परिश्रमी स्वभाव के हैं। सर्वदा गले और हृदय रोग का भय रहता है। पाचन–क्रिया ठीक रहे, अतएव हल्का भोजन करना चाहिए। किसी भी रोग होने के पूर्व, गले मे पीडा होती है। आपको तीसरे वर्ष अग्नि से, ६–१० वें वर्ष उच्च स्थान (वृक्षादि) से पतन भय, १६ वें वर्ष सर्प से, २५ वें वर्ष जल मे और ३०–३३–४६–५२–५३ वे वर्ष, विभिन्न कारणों से शरीर कष्ट हो सकता है। पूर्णायु ८५ वर्ष की है। नवीन–विचार वाले व्यक्तियों मे मित्रता होगी। मित्रों पर शासन करने वाले स्वभाव से सर्वदा बचते रहना चाहिए, जो कि मित्रों को शत्रुता में परिणत कर देगा। व्यर्थ बोलने वाले एव गुप्तचर (सी आई डी) व्यक्तियों से आपकी मित्रता कभी नहीं हो सकती। आपका, मित्रों के प्रति, प्रेम–पूर्वक वर्ताव रहेगा। आप सर्वदा ऐसे व्यापारादि कार्य करेंगे, जिनसे केवल उदर–पोषण ही हो सकेगा किन्तु धन–सग्रह नहीं। आप सङ्गीत–कला में निपुण हो सकते हैं। आप अपने उद्योग मे साहस–पूर्ण प्रयत्न कर सकते हैं। जिससे धन सग्रह की आशा है। कोई राजकीय कार्य में आप, जीवन व्यतीत कर सकते हैं। प्रेम के कारण आप सर्वस्व खो देने के लिए तत्पर रहेंगे। आपको ३१–३५–४२ वें वर्ष में स्त्री सौख्य के विशेष योग हैं। २० एप्रिल से २० मई तक या २२ अगस्त से २२ सितम्बर तक या २० जनवरी से १६ फरवरी तक के मध्य में उत्पन्न व्यक्तियों के साथ, आपकी प्रगाढ मैत्री रहेगी। सफेद रङ्ग, हीरा या सुवर्ण–धारण शुभ, शुक्रवार शुभ, अक २–३–६–७ शुभ। आपको गीत–नृत्यादि पर विशेष अभिरुचि रहेगी।

ज्येष्ठ–मास

इस मास वाले व्यक्ति स्थिर, धीर (गम्भीर) तथा सावधान होते हैं। शान्तिमय जीवन में सुखी होते हैं। व्यवहार–कुशलता मुख्य गुण है। शुक्ल पक्ष के व्यक्ति अधिक व्यवहार–पटु होते हैं। इस मास वाले प्रेम, सौन्दर्य एवं शिष्टता के व्यवहार पर अधिक रुचि रखते हैं। ग्रामीण व्यक्ति भी सौन्दर्योपासक होते हैं, फिर नागरिकजन तो अधिक भावुक एवं सौन्दर्य प्रिय हो जाते हैं। प्रायः शीघ्र क्रोधित नहीं हो पाते, परन्तु जिस समय इनका क्रोध भड़क पड़ता है, उस समय उग्र रूप धारण कर लेता है। प्रायः इस मास वाले पुरानी व्यवस्था के पक्षपाती होते हैं। नवीन सुधार इन्हें रुचिकर नहीं हो पाता। कभी–कभी सुधारकों से इनकी मुठभेड़ (भाभिड़ना) हो जाती है। गायन विद्या में अच्छी दक्षता प्राप्त कर सकते हैं। इस मास वालों के विचारों में यदि परिवर्तन हो गया तो, फिर ये पक्के सुधारक एवं समाजवाद के पोषक बन जाते हैं। अधिकांश में कम्युनिस्ट भी इसी मास वाले हो पाते हैं। परिस्थिति के परिवर्तन से (इस मास वाले) अधिक लाभ उठाते हैं। कृषि कर्म में दक्ष एवं अपने परिवार वाले व्यक्तियों के सुख–स्वार्थ के लिए सब कुछ त्यागने वाले होते हैं। स्वार्थ की भावना इनमें अधिक पायी जाती है। जब तक अपनी स्वार्थ–पूर्ति नहीं कर पाते, तभी तक ये मित्रता का निर्वाह कर सकते हैं। सफल वक्ता कुशल–लेखक और योग्य चिकित्सक प्रायः इसी मास वाले होते हैं। यदि इन्हें सहयोग मिल जाता है तो फिर ये पुलिस–विभाग या शिक्षा कार्य सम्पन्न करते हैं। गुप्तचर के कार्य सफलता–पूर्वक कर सकते हैं। क्योंकि इस मास वालों में ऐसी क्षमता होती है कि वे किसी गूढ़–रहस्य की खोज सरलता से कर सकते हैं। स्वभाव अस्थिर (तुनुक मिजाजी) इन्हें थोड़ी सी भी उपेक्षा असह्य हो जाती है। आवेश–शील (सनकी) होने के कारण ये किसी बात का निर्णय शीघ्र कर लेते हैं; जिससे इन्हें कभी–कभी भारी विपत्ति का सामना करना पड़ता है।

इस मास वाले श्रम–साध्य कार्यों में रुचि नहीं रखते, किन्तु धनोपार्जन वाले कार्य शीघ्र कर लेते हैं। इनमें व्यावसायिक मौलिकता अधिक होती है अतएव सामयिक आविष्कारों के द्वारा धनोपार्जन करते हैं। १०–११–१ तिथि में उत्पन्न व्यक्ति अच्छे व्यापारी होते हैं। ये स्टाक–एक्सचेंज का काम बड़ी योग्यता से करते हैं। नौकरी से इन्हें, आवश्यक लाभ नहीं हो पाता। ४–६ तिथि वाले आपत्ति से शीघ्र व्याकुल हो जाते हैं। किसी–किसी का स्वभाव स्त्रैण (जनाना) होता है बोल–चाल का ढंग भी स्त्री–समान हो जाता है। शुक्ल पक्ष की प्रतिपदा को रविवार या मंगलवार में तथा आर्द्रा नक्षत्र के चतुर्थ चरण में जन्म हो तो विशेष कामातुर होते हैं और तब ये संसार का कोई बड़ा कार्य नहीं कर सकते। इन्हें पैतृक (परिवार वाली) सम्पत्ति मिलती है परन्तु ये काम प्रवृत्ति के कारण सम्पत्ति का सदुपयोग नहीं कर पाते। षष्ठी बुधवार में उत्पन्न व्यक्ति, बड़े उद्योगी एवं श्रम–शील होते हैं विघ्न–बाधाओं से इनका काम रुकता नहीं, अनुशासन (डिसिप्लिन) के पक्के अनुयायी होते हैं।

इस मास वालों में चारित्रिक तारतम्यता की विषमता पायी जाती है क्योंकि एक महान् सदाचारी और दूसरा महान् दुराचारी देखने में आता है। ७–३–४ तिथि वाला सदाचारी एवं स्वभाव मिलनसार होता है, हाँ, साथ ही मायावीपन अवश्य रहता है। ये किसी बात का सहन नहीं कर सकते, सदा अपनी ही बात पर डटे रहते हैं। जब ये रोगी होते हैं तब छोटे से रोग में भी इतने व्याकुल हो जाते हैं कि, इनके साथ दूसरा व्यक्ति भी कष्ट पाता है। शुक्ल पक्ष की ९–११–१२ तिथि में उत्पन्न व्यक्ति बड़े भाग्यशाली होते हैं। इनका भी स्वभाव मिलनसार होता है और संसार की किसी भी शक्ति से नहीं डरते। सदा सद्गुणी व्यक्ति की संगति करते हैं। अधिक मानसिक श्रम करने के कारण इन पर स्नायु–रोग का आक्रमण होता है। स्नायु एवं मस्तिष्क सम्बन्धी परिश्रम करने के कारण स्नायु–प्रवाह के साथ–साथ इनकी आँखों तथा चेहरे पर झुर्रियाँ पड़ जाती हैं। अन्तिम अवस्था रक्त–चाप (ब्लड–प्रेशर) या पक्षाघात (लकवा) होने का भय रहता है। कृष्ण पक्ष की ७–८–१ तिथि वाले राजसम्मान प्राप्त करते हैं तथा अष्टमी को २९–३ इष्टकाल पर या भरणी नक्षत्र में उत्पन्न व्यक्ति अवश्य ही राजकर्मचारी होते हैं। हस्तिका नक्षत्र वाले जब जाते हैं इनके ऊपर इस्ता का

अभियोग लगता है, जिससे इन्हे कठोर कारावास भोगना पडता है। कृष्ण पक्ष की एकादशी से शुक्ल पक्ष की चतुर्थी तक वाले देश-भक्त होते हैं तथा देश को उन्नति-शील करने में सहायक होते हैं। इनके शत्रु अधिक होते हैं, किन्तु ये, उन शत्रुओं को हत-प्रभ करते ही रहते हैं। इनका अधिकाश समय आमोद-प्रमोद मे व्यतीत होता है। कृष्ण पक्ष की चतुर्थी वाले प्राय व्यसनी होते हैं। भाग्य से एकाध व्यक्ति सदाचारी मिलेगा। हाँ, इस चतुर्थी वाले कुछ व्यक्ति सफल कहानी लेखक या वक्ता हो सकते हैं। साहित्य-सेवा में बडी लगन रखते हैं। शुक्ल पक्ष पचमी वाले व्यक्ति कलाकार और गायक होते हैं। इन्हे कलाओं मे अधिक प्रेम रहता है और आजीवन कला की ही आराधना करते रहते हैं।

धन

इस मास वाले प्राय उपार्जन शील (कर्मवीर, कमाऊ) होते हैं। ये जिस कार्य मे लग जाते हैं, उसी से धन लाभ कर लेते हैं। नौकरी की अपेक्षा व्यापार मे अधिक लाभ उठा सकते हैं। २२-२६-२८-३१-३७-४७ वें वर्ष में प्राय भाग्योदय होता है। आर्थिक स्थिति साधारण अच्छी होती है। कृष्णपक्ष की १-२-५-६ तिथियों के पूर्वार्ध में उत्पन्न, मध्य वित्त वाले, तथा उत्तरार्ध मे उत्पन्न पूँजीपति या निर्धनी होते हैं। कृष्ण पक्ष पचमी के उत्तरार्ध मे उत्पन्न, साधु या सन्यासी होते हैं यदि इस तिथि मे मगलवार हो तो, वह व्यक्ति व्यर्थ भटकने वाला (आवारह) होता है। इस मास वाले, जीवन के प्रारम्भ मे कुछ आर्थिक कष्ट पाते हैं, परन्तु मध्य जीवन तथा अन्तिम जीवन में, इन्हे आर्थिक चिन्ता कम ही रह पाती है। शुक्ल पक्ष की एकादशी से पूर्णिमा तक वाले धनी होते हैं, ये, प्राय मिल या अन्य बडे कारखाने के व्यवसाय मे उन्नति करते हैं। कृष्ण पक्ष की पचमी से अमावास्या तक वाले प्राय मध्यम धनी होते हैं। इनका जीवन उत्तरोत्तर (स्टेप बाई स्टेप) उन्नति करता है। इनका भाग्योदय २८ वर्ष से ४६ वर्ष तक के मध्य मे सम्भव होता है। प्राय २५ वर्ष के उपरान्त भाग्योदय के सुअवसर दिखने लगते हैं।

इस मास के मेष राशि वाले अल्प धनी, वृष राशि वाले अधिक धनी, मिथुन वाले मध्यम धनी, कर्क वाले अधिक धनी, सिंह वाले बडे व्यापारी (मिल-मालिक) कन्या वाले अल्प धनी या दरिद्र, तुला वाले अल्प धनी, वृश्चिक वाले निर्धनी, धनु वाले मध्यम धनी मकर वाले साधारण धनी कुम्भ वाले अधिक धनी और मीन वाले मध्यम धनी होते हैं। प्राय (इस मास वालो का) अन्तिम जीवन सुखकर होता है। कृष्ण पक्ष की त्रयोदशी को १३।०० इष्टकाल पर उत्पन्न व्यक्ति, भूमि के नीचे से धन-लाभ करते हैं। इन्हे, कभी-कभी जुआँ, सट्टा, लाटरी आदि से भी धन मिल सकता है। इस समय के बुधवार, गुरुवार, शुक्रवार वाले व्यक्ति अपने बुद्धि-बल से और रविवार, मगलवार, शनिवार वाले शारीरिक बल से तथा सोमवार वाले शारीरिक और बौद्धिक (दोनो) बल से धनोपार्जन करने वाले होते हैं।

विवाह और मित्रता

इस मास वालो को, दूसरों से मित्रता, प्राय कम ही रहती है क्योंकि इस मास वाले अपने स्वार्थ के पक्के होते हैं। इसलिए इनके मित्र कम रहते हैं। हाँ, यदि कभी किसी से मित्रता हो जाती है तो फिर ये, उसका आजीवन निर्वाह करते हैं। विवाह तो शीघ्र ही हो जाता है, प्राय कम ही लोगो को कठिनता होती है। पंचमी तिथि, सोमवार वालों का विवाह नहीं हो पाता, यदि किसी प्रकार विवाह हो गया तो फिर विवाह के कुछ ही दिन बाद स्त्री की मृत्यु हो जाती है। कृष्ण पक्ष की दशमी से शुक्ल पक्ष की पचमी तक वाले एक से अधिक (दो या तीन) विवाह कर लेते हैं। कृष्ण पक्ष की त्रयोदशी वाले प्राय. एक उपपत्नी भी रखते हैं। प्राय विवाह का समय (इस मास वालों का) १८ वर्ष से २६ वर्ष तक रहता है। शुक्ल पक्ष वाले अधिकाश व्यक्तियों के दो विवाह तक सम्भव होते हैं।

सन्तान

इस मास वालों के ११ सन्तान तक हो सकती हैं। जिनका जन्म सन्ध्यावेला (सन्धि समय) में होता है, उनके पुरुषार्थ द्वारा सन्तान-सौभाग्य मिलता है। कृष्ण पक्ष की १-३-५-६-७-८-६ तिथि वाले अधिक सन्तान वाले हो जाते हैं। शुक्ल पक्ष की १-२-४-५-७-८-११-१०-१३ तिथि वालों के पुत्र अधिक कन्या कम। कृष्ण पक्ष की -४ १ -११-१२-१३ तथा शुक्ल पक्ष की ३-६-६-१०-१४ तिथि वालों के कन्यायें अधिक होती हैं। साधारण तौर से (इस मास वालों का) सन्तान-सुख अच्छा रहता है।

स्वास्थ्य

इस मास वालों का स्वास्थ्य प्रायः अच्छा रहता है। पूर्णायु ८२ वर्ष की होती है। कृष्ण पक्ष की १४-६-८-१० तिथि वालों को क्षय-रोग। शुक्ल पक्ष की १-२-५-११-१४ तिथि वालों को मुटापा रोग (गठिया आदि) फायलेरिया होना सम्भव है। शेष तिथि वालों का स्वास्थ्य प्रायः ठीक रहता है। अंक २-३-६-७ शुभ होते हैं।

(४)

२१ मई से २ जून तक

यदि आप का जन्म हुआ हो तो मकान के आग्नेय कोण (पूर्व-दक्षिण) में जन्म हुआ होगा। जन्म समय ५ व्यक्ति उपस्थित थे। आप मिश्रित (गर्म-नर्म) स्वभाव के हैं। आपके विचार हमेशा स्थिर रहते हैं। एक स्थान से आप कभी सन्तुष्ट न रहकर सर्वदा एक ही समय में बहुतेरे काम करने का प्रयत्न करेंगे। आप व्याख्या करने या व्याख्यान देने में निपुण हो सकते हैं। कोई भी बौद्धिक कठिनता वाला काम कर सकते हैं। केवल आपका एकाग्र-चित्त होना चाहिए। आपकी स्मरण-शक्ति तीव्र है और बहुधा आप साहित्यिक ज्ञानोपार्जन करने का प्रयत्न करते हैं। शिल्प कला के प्रेमी हैं। दुबला शरीर (इकहरी काठी) दृष्टि तीव्र कंजे या पीले नेत्र होते हैं। सर्वदा आप किसी न किसी विचार में मग्न रहते हैं। आपको हृदय रोग का भय है। अनेक उलझनों के कारण आप चिन्तित रहते हैं तथा कभी-कभी आप अधीर हो जाते हैं। आपको तीक्ष्ण-पदार्थ (मद्य आदि) सेवन हानिकर है। मुक्त वायु (खुली हवा) में साधारण व्यायाम हितकर है। आपका सफेद या हरा रंग कमल-पुष्प हलका लाल रंग बुधवार गुरुवार अंक ३-४-५-६ लाभदायक हैं। ५-६-१०-११-१४-१८-२०-२८-४६-५३-६३ वें वर्ष आपको प्रतिकूल समय (शरीर कष्ट कारक) रहेंगे। पूर्णायु ८५ वर्ष की है। आप दूसरे को शीघ्र ही आकर्षित कर लेते हैं इसलिए आपके मित्र अधिक होंगे। साथ ही स्नेही दयालु और परोपकारी होंगे। कभी आप अपनी प्रशंसा भी कराना चाहते हैं इससे आपकी बौद्धिक प्रगति भी होती है। आप सर्वदा किसी विषय पर अधिक वाद-विवाद करते रहते हैं। इससे सम्भव है कि, आपके मित्रों के हृदय पर आघात होता हो। ? जनवरी से १८ फरवरी तक के मध्य में उत्पन्न व्यक्ति आपके मित्र रहेंगे। अन्य मित्रों पर अधिक विश्वास करना हानिकारक है। इस समय वाले प्रायः एक से अधिक धंधे करते हैं। परन्तु आपका चित्त स्थिर न रहने के कारण जब एक धंधे को उपेक्षा से छोड़कर दूसरा धंधा करेंगे तब आपको दुःखदायी होगा। दान या विवाहादि मंगल कार्यों द्वारा भी आपको लाभ हो सकेगा। रुई के व्यापारी किन्तु सट्टे से भारी हानि उठाने वाले (इस समय के व्यक्ति) होते हैं। २४-३०-३१ वें वर्ष स्त्री-सौख्य के विशेष सुअवसर मिलेंगे। आपके विवाह सम्बन्धी या स्त्री के कारण घरेलू झगड़े उपस्थित होंगे। स्फूर्तिमान (फुर्तीले) चतुर एवं कार्य पटु होते हैं। एकाग्र चित्त होने पर नई खोज करते रहते हैं। इस मास वालों में काम को पूरा करने की रुचि (अभ्यास) वाली जाय तो अधिक अच्छा होता है। [illegible]रिक काम भी रुचि-वर्धक है।

आषाढ़-मास

इस मास वाले व्यक्ति, बडे विलक्षण होते हैं। ये, सदा शरीर की अस्वस्थता के कारण वडे बेचैन रहते हैं। प्राय ये साहित्यिक, विद्वान, कवि और लेखक होते हैं। इनका स्वभाव अक्खड होता है। अपने हाथ मे एक साथ अनेक कार्य ले लेने से इन्हे, कभी-कभी हानि उठाना पडती है। "क्षणे रुष्टा क्षणे तुष्टा" (क्षण ही मे प्रसन्न-अप्रसन्न होना) वाली कहावत इनमे ही चरितार्थ होती है। कभी-कभी इनका क्रोध, इतना अधिक बढ जाता है कि ये, शत्रु का नाश किये विना सुख-शान्ति की साँस नहीं ले पाते।

इस मास वाले प्राय लम्बे, दुबले-पतले एवं गौर वर्ण के होते हैं। ये, अपने को, आवश्यकता से अधिक चालाक सिद्ध करने का प्रयत्न करते हैं। शुक्ल पक्ष वाले असाधारण प्रतिभाशाली पाये जाते हैं। ये अपनी झंझटो एव कष्टों को वहुत बढकर कहते हैं। कृष्ण पक्ष वाले त्यागी एवं स्नेही होते हैं। इनकी प्रतिभा अत्यन्त अद्भुत होती है। ये कठिन से कठिन विषय को भी सरलता से दूसरों को समझा सकते हैं। ये शास्त्र-कीट (किताबी कीडे) होते हैं, तथा प्रयत्न करने पर सफल कलाकार वन सकते हैं। इन्हे, अपने कुटुम्बीजनों का स्नेह, बहुत कम ही मिल पाता है। हाँ, जहां रहते हैं, वहाँ, इनके अनेक मित्र हो जाते हैं, जिससे, कुटुम्बियों का अभाव इन्हें, खटकता नहीं। कुछ विद्वानों का मत है कि इस मास वाले, देश भक्त, साहित्य-सेवी और परोपकारी होते हैं। इनके द्वारा प्रत्येक कार्य बुद्धिमानी से किया जाता है। ये, विपत्ति से घवडाने वाले नहीं होते। संघर्ष से ही इनके जीवन का विकाश हो पाता है। इनका स्वभाव भी सघर्ष-प्रिय होता है। जैसे सोने का रंग तपाने मे खिलता है, उसी प्रकार संघर्ष-मय परिस्थिति से इनकी उन्नति होती हैं। इनका चरित्र प्राय. मध्यम श्रेणी का होता है। कृष्ण पक्ष वाले कामुक एव क्रोधी। शुक्ल पक्ष वाले भावुक एव शान्ति-प्रिय। रात्रि मे उत्पन्न व्यक्ति, अपने वचनों के पक्के नहीं हो पाते। इनके विचार, क्षण-भगुर होते हैं, तथा विश्वास-पात्र भी नहीं होते। परन्तु, दिन मे उत्पन्न व्यक्ति भक्त, गायक, कवि और विषय-वासना के दास होते देखे जाते हैं। इनका चित्त सदा अशान्त रहता है। मन मे कल्पनाओ के भूचाल आते हैं। राजा, विद्वान् तथा वडे पुरुषों के द्वारा इनका सम्मान है। कभी कभी घरेलू झगडो से ऊब कर, ये त्याग या आत्महत्या तक कर लेते हैं। इनका दाम्पत्य-जीवन सुखी नहीं हो पाता, पत्नी से मतभेद होना, अनिवार्य है।

प्राय (इस मास वाले) स्फूर्तिमान तथा चचल होते हैं, और हर किसी से शीघ्र ही अपना परिचय कर लेते है वे, इनके प्रति वडे अच्छे विचार रखते हैं। ये लोग, वडे दृढ विचार के होते हैं, जब इन्हे कोई ध्वस-कार्य करना होता है या प्रतिस्पर्धा (काम्पटीश्न) करना पडता है। इनको भुलावे मे डालना कठिन होता है। इस मास वाले वडे मातृ-भक्त होते हैं। इनकी प्रवृत्ति भी प्रेम एव आदर्श की ओर रहती है। ये, सौन्दर्य-उपासक होते हैं। ये, सुन्दर गृह-निर्माण की कामना रखते हैं। यदि परिस्थिति अनुकूल मिली तो ये, मित्रों, विद्वानो और कलाविदों के प्रति वडी उदारता वर्तते हैं। आनन्द-मय वातावरण के प्रेमी तथा अपमान् एव द्रोह से घृणा करते हैं। उत्तेजित किये जाने पर ये प्रवल विरोध का सामना, अपनी अन्तिम श्वास तक, करने को तैयार रहते हैं, एवं अन्त तक अपने पक्ष का समर्थन करते रहते हैं।

पाश्चात्य मत से इस मास वाले प्राय स्वस्थ एव वलिष्ठ होते हैं। कभी-कभी सौन्दर्योपासना से इन्हे, वड़ा धोखा होता है। कारण यह है कि ये, अपनी सौन्दर्योपासना-प्रवृत्ति के कारण सुन्दर स्त्रियों के वश मे शीघ्र हो जाते हैं, जिससे इन्हें, अनेक कष्ट सहन करने पडते हैं। ये, भोग लिप्सा की तृप्ति के लिए, नीच-कर्म करने को भी तत्पर हो जाते हैं, तथा झूठी वातें वनाना इनके, वायें हाथ का खेल होता है।

इस मास के कृष्ण पक्ष की १-४-६-१३-१४ तिथि वाले सदा सुखी, यशस्वी तथा सम्मानित होते हैं। इनके पास अतुल-धन होता है, परन्तु ये, अपने भोग के लिए ही विशेष धन-व्ययी (खर्चीले) होते हैं।

दान-पुण्यादि कार्यों में एक पैसा भी व्यय करना उचित नहीं समझते। इन्हीं तिथि वालों का स्वभाव कुछ चिड़चिड़ा गुस्से व्यवहार, कभी किसी को पुंसत्व-शक्ति की क्षीणता दिखती है। बाल्यावस्था से ही कुछ दोष आ जाते हैं, जिससे पुरुषत्व का ह्रास होता जाता है। इसी मास के अश्विनी कृत्तिका, रोहिणी श्रवण और धनिष्ठा नक्षत्र में उत्पन्न व्यक्ति प्रतापी, शूर-वीर एवं कार्य-कुशल होते हैं। इनका मस्तिष्क, कल्पना-शक्ति-प्रधान होता है। ये, सदा अपने सम्बन्धियों (सहयोगियों) से स्नेह करते हैं इनका प्रारम्भिक जीवन उन्नति-शील होता है, मध्य जीवन में अनेक संघर्ष करना पड़ते हैं, तथा कभी अपमान आदि भी मिलता है, अन्तिम जीवन में उदासीनता आ जाती है तथा घर से विरक्त होकर वन या मठों में निवास करते हैं।

शुक्लपक्ष की २ ३-४-७-८-११ १२ तिथि वाले शस्त्रास्त्र-धारक, सैनिक सेनापति डाक्टर और पुलिस-विभाग के पदाधिकारी होते हैं। शासन-विभाग का काम सुचारु ढंग से कर पाते हैं। इनका प्रधान लक्ष्य, सेवा-वृत्ति की ओर रहता है। जैसे कृष्ण पक्ष वाले व्यसनी देश-भक्त और राष्ट्र-सेवक होते हैं, वैसे शुक्ल पक्ष वाले शासन-विभागीय कार्य करने में प्रवीण होते हैं। शुक्ल पूर्णिमा वाले विद्या-व्यसनी, सफल शिक्षक, कृषि-कुशल या विमान-चालक होते हैं। विमान द्वारा क्षति होना, इसी मास से प्रभावित (शुभ दूषित होने के कारण) व्यक्तियों के पक्ष है। जब सप्तमेश [जन्म चक्र द्वारा] विंशोत्तरी दशा वाले जिस ग्रह के नक्षत्र में हो उस ग्रह की जीव संज्ञा तथा वह जिस राशि में हो उस राशि का स्वामी (जीवेश) यदि पापग्रह के साथ हो तब विमान द्वारा क्षति होती है—यह जानना सर्वदा सुगम नहीं है, कुछ अटपट सा है; परन्तु, हम यहाँ पर कम से कम इस भाग को यों प्रकाशित करते हैं—जैसे सप्तमेश मंगल, रोहिणी नक्षत्र का (जन्म-चक्र में) हो तो विंशोत्तरी के आधार पर रोहिणी का स्वामी चन्द्र होता है अतएव यदि चन्द्रमा कन्या राशि में हो तो, चन्द्रमा की जीव संज्ञा होगी और जीवेश होगा बुध। वह बुध, सूर्य-राहु (किसी पापग्रह) के साथ होने से विमान द्वारा क्षति कराता है) अस्तु। इनका जीवन विशेष रूप से परदेश में व्यतीत होता है। कभी कोई अपने स्थान पर ही प्रतिष्ठा प्राप्त करते हैं। इनमें एक दुर्गुण 'स्वार्थ-भावना' का रहता है जिससे अन्य लोग इन पर अविश्वास का प्रस्ताव लाते हैं।

धन

इस मास वालों की आर्थिक स्थिति साधारण होती है। रविवार वाले धना-मानी होते हैं। इन्हें, लाटरी आदि से अचानक धन मिलता है। पैतृक सम्पत्ति न होने पर भी ये अपनी आर्थिक-स्थिति अच्छी कर लेते हैं। जिस व्यापार को ये करते हैं उसमें ये सफल हो जाते हैं। सोमवार वाले प्रायः नौकरी करते हैं, इनका मार्ग अच्छा होता है और उद्योग करने पर भी इन्हें धन-लाभ होता है, किन्तु ये पूँजीपति कभी नहीं हो पाते। मिल व्यापार एवं कारखाने के कार्य भी (सोमवार वाले) योग्यता-पूर्वक नहीं कर सकते। इनमें धनोपार्जन की शक्ति कम ही होती है। कदाचित अनुकूल सहयोग मिले तो ये कुशल डाक्टर या जौहर सीखकर धनार्जन कर लेते हैं। मंगलवार वाले दरिद्र या साधारण-परिस्थिति के व्यक्ति होते हैं, किन्तु मंगलवार को १ ४-७-८ ११ १३ तिथि वाले नियमित रूप से धनाढ्य होते हैं। बुधवार वाले, मध्यम परिस्थिति के होते हैं। गुरुवार तथा शुक्रवार वाले प्रायः व्यवसायी होते हैं। शनिवार वाले साधक, भिक्षु, सन्यासी या पुरोहित होते हैं, इनके पास कुछ धन-संचय हो पाता है। प्रायः इस मास वालों का लाभ व्यय की अपेक्षा, अधिक ही होता है। २३। २४ इष्ट काल पर जन्म पाने वाले मर्यादित अधिक होते हैं। प्रायः इस मास वाले कामी एवं परिमित-व्ययी पाये जाते हैं। हाँ अवसर आने पर अधिक व्यय कर डालते हैं। इनका प्रधान काम नौकरी (सेवा-वृत्ति) ही है। कुछ व्यक्ति व्यापार भी करते हैं किन्तु उन्हें, लाभ कम होता है।

इस मास वाले प्रारम्भ मे अल्प धनी होते हैं। ये, अपने पुरुषार्थ-बल के पश्चात् अच्छा द्रव्योपार्जन कर लेते है, इन्हे प्राय सहयोग नहीं मिलता या कम ही मिल पाता है, फिर भी धनोपार्जन कर लेते हैं। यों तो प्राय (इस मास वाले) कम ही व्यक्तियों को धन-लिप्सा होती है क्योंकि ये, अल्प-धन-सतोषी होते पाये गये है। किन्तु, चालाक और कार्य कुशल, प्रथम श्रेणी के, अपने को मानते हैं। कृष्ण पक्ष की ३-६-१२ तिथि वाले, नौकरी में उच्च-पदस्थ (असेम्बली के मेम्बर, धारा सभाओं के मन्त्री या सदस्य, आई सी एस आदि) तथा धन-लाभ का साधन भी इनका राजनैतिक-क्षेत्री होता है। कम धनी होते हुए (इस मास वाले) यश लाभ करते हैं। सभी इन्हे, अपना समझ कर, सौहार्द प्रकट करते है। किसी को मित्रो द्वारा धनागम होता है। आर्थिक दृष्टि से इस मास वालो को कभी कष्ट नहीं होता है। हाँ, जो लोग सम्पादक, लेखक और चित्रकार होते हैं, उन्हें ३६ वर्षायु मे कष्ट होता है। १८-२४-२८-३०-३२-३८-३६-४०-४२-४८-६२-६४-६५-६७ वे वर्ष मे आर्थिक दृष्टि से प्रतिकूल समय रहता है। इस मास वालो को भोजन वस्त्रादि का कष्ट नहीं होने पाता, १० प्रतिशत ही व्यक्ति पराश्रित जीवन व्यतीत करते है।

विवाह और मित्रता

इस मास वालो का विवाह १६, १८, २०, २१, २३, २५, २८, ३२, ३६, ३७ वें वर्ष मे सम्भव होता है। कृष्णपक्ष की ३।६।६।११ तिथि वाले, दो विवाह करते हैं। कृष्ण पक्ष की १-५ तिथि में २७।३३ इष्ट काल पर उत्पन्न व्यक्ति, तीन विवाह करते हैं। शुक्ल पक्ष की २-६-८-६-१२-१३ तिथि वालो का निश्चित विवाह होता है, कृष्णपक्ष की त्रयोदशी तिथि वाले दो या तीन तक विवाह करते हैं। इस मास के १-१२-१४ तिथि वालों का विवाह नहीं होता। यों तो प्राय इस मास वालों के मित्र नहीं होते, पर इनके स्वभाव मे इतनी विशेषता होती है कि, ये, जहाँ रहते हैं वहाँ इनके, दो चार हितैषी अवश्य बने रहते हैं, तथा इनके शत्रु को भी नत-मस्तक होना पडता है।

भाग्योदय

इस मास वालो का २४-२६-२७-२६-३१-३३-३४-३८-४२-४४-४५-४८-४६-६२-६४-६६ वें वर्षों मे भाग्योदय होना सम्भव है। पुर्णायु ७५ वर्ष की होती है। ४-६-६-१०-११-१३-१६-१७-१८-२४-२८-२६-३०-४५-४७-५५-५७-६१-६२-६३ वें वर्षों मे ऐसे अवसर आते हैं जिनमे इन्हें, अनेक प्रकार की बाधाएँ आती हैं, तथा अपने-अपने व्यवसाय में हानि उठाते हैं। इन्हीं अशुभ वर्षों में इन्हे, दूसरों के द्वारा विश्वास घात (धोखा) भी दिया जा सकता है, अतएव आपको, इन वर्षों मे सजग रहना चाहिए। प्राय इस मास वालों का भाग्योदय ३२ वर्षायु से पूर्ण दिखाई देता है।

स्वास्थ्य

इस मास वालों के १-२-४-५-७-११-१६-१६-२४-२६-३४-३८-४४-४५-४७-४८-५४-५५-५७-६२-६४-६६-७१ वें वर्षों मे रोग द्वारा पीड़ा होती है। २७-३४-३८-४८-५५-५७-६६-६७ वे वर्षों मे विशेष कष्टप्रद रोग-परिस्थिति रहती है, जिससे ये वर्ष घातक होते हैं। जीवन का विकाश २६ वे वर्ष मे आरम्भ होता है। १६ वें वर्ष मे परिस्थितियों का ऐसा चक्कर (साइकल) आता है, जिससे (इस मास वालों के) जीवन-विकाश मे विभिन्न-प्रकार की अडचनें आती हैं। परन्तु, जो भी इन परिस्थितियों को पार कर आगे बढते हैं वे, निश्चित रूप से अपने जीवन को विकसित कर लेते हैं। जीवन के विकाश का समय २६ वें वर्ष से ३४ वें वर्ष तक के मध्य में ही आता है। जो व्यक्ति, अपने इस समय का सदुपयोग कर लेते हैं, वे, निश्चित रूप से आगे बढ जाते हैं। इस मास वालों पर सत्सगति का प्रभाव शीघ्र ही पडता है, अतएव जीवन-विकाश मे, इन्हे, सगीत का प्रधान स्थान समझना चाहिए। क्वाँर, कातिक, पौष, माघ मास शुभ, बुधवार शुभ, अंक [illegible] तियाँ शुभ दायक होती हैं।

सन्तान

इस मास वालों को सन्तान सुख साधारण होता है। गुरुवार को ५।३० इष्ट काल पर वाले पुत्र-सुखी होते हैं। शनिवार को २६।३४ इष्ट काल पर वाले पुत्र-रहित होते हैं। शुक्रवार का रात वाले, कन्या-सुखी होते हैं। १-३-५-८-११-१३ तिथि वालों को सन्तान सुख अच्छा और २-४-६-१४-१५ तिथि वालों को सन्तान सुख साधारण या अल्प होता है। किसी का जन्म (इस मास में) कर्क, वृश्चिक, मीन लग्न को छोड़कर, शेष लग्नों में हो और वृष का नवांश हो तो, अधिक पुत्र वाले होते हैं तथा इनकी सन्तान भाग्य, शिक्षित और चरित्रवान् होती हैं। किन्तु, वृश्चिक लग्न में जन्म (इस मास में) हो, मेष नवांश की लग्न में जन्म हो या पंचम में मीन का नवांश हो तो, उनके सन्तान का अभाव होता है। ऐसे लोगों की स्त्री प्रायः रोगिणी रहती है तथा वे, स्वयं भी अल्प वीर्यवान होते हैं जिससे सन्तानोत्पत्ति नहीं होती है।

२१ जून से २१ जुलाई तक

यदि आपका जन्म हुआ हो तो, मकान के दक्षिणी भाग में जन्म लिया होगा। कमरे में ४ व्यक्ति उपस्थित थे आप जन्मते ही नहीं रोये कुछ समय बाद रोये। आपकी बात यदि कोई काटता है तो, आपके हृदय में भारी आघात पहुँचता है। आपकी स्मरण-शक्ति तीव्र है। बचपन की भी बातों का आप स्मरण करते रहेंगे भविष्य के सोचने की भाँति आप व्यतीत समय पर भी दृष्टि डालते रहेंगे। आप, किसी बात को एक बार समझ जाने पर कभी भी भूल नहीं सकते। आपका स्वास्थ्य अच्छा नहीं रह पाता है। आप चिन्ता का त्याग करते रहिए, अन्यथा आपकी पाचन-शक्ति ठीक न रहने के कारण आपको रोग घेर लेंगे। उदर रोग का भय है। आपको बगीचे में घूमना और प्राकृतिक दृश्य देखना लाभदायक है। आपको सदा धन-संग्रह की चिन्ता रहती है और इसके फल-स्वरूप आपको अनपच (डायरिया) रोग से दुःख भोगना पड़ेगा। हरा सफेद बैंगनी रङ्ग शुभ अङ्क १-२-४-५-७ शुभ सोमवार शुभ। ७-६-१२-१८-२८-३१-३७-४४-४५-६२ वें वर्ष नेष्ट फल होते हैं। पूर्णायु ७० वर्ष की है। आप अति चंचल ग्रह के प्रभाव में आ गये हैं; अतएव मित्रों के साथ आपके भाव सदा स्थायी न रह सकेंगे। आप कुछ स्वार्थी स्वभाव के हैं। जिससे समय-समय पर आपको मित्रों से हानि होगी। आपकी मित्रता २ अप्रिल से ० मई तक, २२ दिसम्बर से १६ जनवरी तक १६ फरवरी से माच तक के मध्य में उत्पन्न व्यक्तियों से हो सकेगी। सम्भव है कि आप कुछ पुस्तकों के लेखक हों। आप किसी भी काम को दत्त-चित्त होकर करते हैं और अपने ऊपर आपत्ति आने पर भी उसे नहीं छोड़ते चाहे उसका अन्तिम फल भले ही हानिकारक हो। कोई भी सामाजिक कार्य से आपका नाम होगा जैसे सैलून कमान आदि। कच्चे पुल पर स्थित नदी में व्यापार (जीविका पाना) करना अति उत्तम है। आपके विचार स्थिर नहीं हैं। २० फरवरी से २ माच तक के मध्य में उत्पन्न कन्याओं से विवाह करना सुखदायी होगा। २६-३२-३६-४१ वें वर्षों में विवाह एवं स्त्री-सौख्य के विशेष योग उपस्थित होंगे। आपका स्वभाव अभिमानी उदार और अन्तः ज्ञानी है। आप दयालु और उदार हैं। इस समय वाले व्यक्ति बहुधा कल्पना शक्ति वाले होते हैं। इन्हें दाह-क्रिया आदि में न जाना चाहिए। वृद्ध पुरुषों के साथ या समीप में मोन रहना चाहिए। अत्यधिक मोह करना उन्नति को रोकता है; इससे बचिए।

श्रावण-मास

इस मास वाले अधिक भावुक और संवेदनशील होते हैं। इनकी इच्छा और कल्पना शक्ति ही बड़ी होती है। ये बहुधा अपनी मन स्थिति के प्रभाव में बहते रहते हैं। कभी-कभी ये अपनी भावुकता के कारण, दूसरों के लिए कष्टदायक हो जाते हैं। घर तथा परिवार इन्हें प्रिय होता है। परन्तु निन्दा के भय से अपनी गम्भीरता से मुंह मोड़ लेते हैं। इनकी आत्मा अधिक पवित्र नहीं होती इनका शरीर साधारण पुष्ट होता है। कृष्ण पक्ष वाले (शुक्ल पक्ष वालों की अपेक्षा) अधिक मिलनसार स्वभाव के

होते हैं। कृष्णपक्ष की प्रतिपदा को ११।२० इष्ट-काल वाले, बड़े भाग्यशाली तथा धर्म प्रचारक होते हैं। ये, संसार में एक नई क्रान्ति लाते हैं और साधारण जनता के लिए एक आदर्श पन्थ बताते हैं। परन्तु, इसी तिथि के १७।३५ इष्ट-काल वाले, समाज के लिए कष्टदायक होते हैं, प्राय इस समय वाले डाकू, चोर और व्यभिचारी होते पाये जाते हैं, इनकी आजीविका हिंसा के प्रधान साधनों से होती है। जिनका जन्म ३१।५४ इष्ट-काल पर होता है वे, पक्के राजनीतिज्ञ होते हैं। शासन-व्यवस्था चलाने में पटु होते हैं। कृष्णपक्ष की द्वितीया को या अनुराधा नक्षत्र के दिन २२।५६ इष्ट-काल वाले डाक्टर, प्रोफेसर, लेखक और स्पीकर होते हैं, कोई-कोई कवि भी हो जाते हैं या कविता में अभिरुचि होती है। २५।२७ इष्ट-काल के बाद में जन्म लेने वाले निश्चित ही कवि होते हैं कोई अनेक भाषाओं में कविता करते हैं। इनकी प्रतिभा विलक्षण होती है, कभी-कभी ये, पक्के दार्शनिक बन जाते हैं। अनुभव में आता है कि, इस मास की ग्रह-स्थिति कुछ ऐसी ही हो पाती है जिससे, इस मास वाले, सफल दार्शनिक या नैयायिक नहीं बन सकते। हाँ, कदाचित कोई साधारण दार्शनिक हो जाते हैं। पाश्चात्य मत में कृष्ण पक्ष की ७।८ तिथि और शुक्ल पक्ष की १३ तिथि वाले गणितज्ञ और वैज्ञानिक होते हैं, तथा इन्हीं तिथि वाले, ज्योतिर्विद और वैदिक (वेद-ज्ञाता) भी होते हैं। इस मास वाले संस्थाओं के अधिष्ठाता, जहाजों के कप्तान, दर सजाने वाले और पारिवारिक आवश्यकता की वस्तुओं के व्यापार में कुशल व्यवसायी होते हैं। इनका स्वभाव सकी (हठी) होता है, इन्हें सदा अपनी ही बात सच्ची जँचती है। मजदूर विभाग वाले कार्य कुशल होते हैं। कोई कला के मर्मज्ञ होते हैं। ये, अपने अधिकारी की सदा उपेक्षा करते रहते हैं और अवसर मिलने पर अधिकारियों के विरोध में विद्रोह (बगावत) भी करते हैं।

पौर्वात्य मत में (इस मास वाले) दलाल, कबाडी (पुरानी वस्तुओं के विक्रेता), शिक्षक, डाक्टर या वैद्य, कवि या लेखक होते हैं। जो व्यक्ति मैनेजर हो, उन्हें सदा घरेलू वस्तुओं के व्यवसाय की मैनेजरी करनी चाहिए। इसमें उन्हें, अच्छी सफलता मिलने की सम्भावना है। इस मास वाले व्यक्ति, कल्पनाशील होने के कारण बड़े-बड़े व्यवसायों की स्कीम सुन्दर बना सकते हैं, तथा सफल प्रबंधक हो सकते हैं। परन्तु, अपने हठी (सक्की) स्वभाव के कारण कभी इन्हें, बडी भारी हानि उठानी पडती है। इनका स्वभाव नम्र होने के साथ-साथ क्रोधी भी होता है। अपनी आलोचना या निन्दा, ये तनिक भी नहीं सह पाते। सदा ये, अपनी हल-चल में ही लगे रहते हैं। कोई-कोई भी के व्यवसाय में भी सफलता पाते हैं।

मकान बनाने वाले (मजदूर) विशेष सफल हो सकते हैं और शिल्प कला में पूर्ण योग्यता भी प्राप्त कर सकते हैं। परिश्रम और व्यवसाय करने में ये, किसी से पीछे नहीं रहते। कुछ लोग, इनके अनुयायी (लघु कार्य कर्ता) बन जाते हैं। प्राय इस मास वाले साहसी और कार्य-कुशल होते हैं। अपने ऊपर किसी का अकुंश नहीं सहन करते, व्यवसाय में सदा उच्च श्रेणी से रहते हैं। यदि किसी विभाग के मैनेजर या अधिकारी हो जाते हैं तो, उस कार्य को बडा योग्यता के साथ सँभालते हैं। हाँ, इस मास वालों की उन्नति, प्राय सहयोगियों पर आश्रित रहती है। इनका स्वभाव 'क्षणे रुष्टा क्षणे तुष्टा' वाली कहावत चरितार्थ करता है। बुद्धिमान और भावुक होने के साथ-साथ, भीरु भी होते हैं। रात में अकेले कहीं आना-जाना, इन्हें, अधिक भय प्रद होता है। इनका मस्तिष्क ४० वर्षायु के बाद कुछ विकृत-सा हो जाता है, क्योंकि, इनको अपने पूर्वार्ध जीवन में स्नेह की पूर्ण प्राप्ति या परिश्रम का पूर्ण पारितोष नहीं मिल पाता। समय आने पर अपने सक्की स्वभाव के कारण, लोगों के कुछ अप्रिय हो जाते हैं।

सामान्यतया समस्त जीवन पर दृष्टि डालने से ज्ञात होता है कि, इस मास वाले उद्योगी और परिश्रमी अवश्य होते हैं। इनका जीवन मन्थर गति से (धीरे-धीरे, क्रमश.) उन्नति की ओर बढ़ता चला जाता है। कृष्ण पक्ष की १।२।४।७।८।६।११।१३ तिथि वाले प्राय नौकरी करते हैं। यदि ये, कभी कोई व्यवस्था करते भी हैं तो, इन्हें पूर्ण सफलता नहीं मिलती। कृष्ण पक्ष की ३।५।६।१०।१२।१४।३० तिथि वाले व्यवसाय में अधिक सफल होते हैं। यदि ये, कदाचित नौकरी करते भी हैं तो, ये नौकरी छोडकर व्यवसाय की ओर अ

रुचि रखते हैं। शुक्ल पक्ष की १।८।४।८।११।१२।१३ तिथि वाले अच्छे व्यापारी हो सकते हैं। जिसमें ११।१३ तिथि वाले तो मिल के मालिक हो सकते हैं। शुक्ल पक्ष की ३।४।६।७।६।१०।१३।१५ तिथि वाले, नौकरी से ही लाभ उठा सकते हैं।

धन

इस मास वालों की आर्थिक-स्थिति, मध्यम श्रेणी की होती है। इनका प्रधान व्यवसाय व्यापार होता है। नौकरी से कम ही लाभ उठा पाते हैं। १६।२८।२६।३०।३४।३८।४ ।४२।४८।४६।४७।४८।५१।६ ।६३।६७ में वर्ष में लाभ अधिक, तथा १८।२०। ।१४०।४३।४४।४६ में वर्ष में धन-हानि वाले कारण उपस्थित होते हैं। माघ फाल्गुन श्रावण ये तीन मास शुभ, अगहन, कार्तिक ये दो मास अनिष्टकर शेषमास सामान्य रविवार, सोमवार शुभ, किसी भी संक्रान्ति का प्रारम्भ समय शुभ २।३।६।७।११।१२ तिथियाँ शुभ अङ्क १।८।४।५।७ शुभ होते हैं।

स्वास्थ्य

इस मास वालों का शारीरिक-स्वास्थ्य प्रायः बिगड़ा रहता है, जिससे इनके, दैनिक कार्यों में बाधा पहुँचती है। जन्म से ३।५।६।७।८।११ वें मास कष्ट कारक होते हैं। अश्विनी मघा स्वाती रोहिणी श्रवण और हस्त नक्षत्र वाले प्रायः अल्पायु या सर्वदा रोगी रहते हैं। १।२।३।४।७।६।१ ।११।१४।१६।१७।१६।२ ।२४।२६।२८। २६।३०।३२।३८।४४।४७।४६।५५।५६।५७।६२।६५।६८।७२।७५ वें वर्ष रोगोत्पत्ति होना सम्भव रहता है। पूर्णायु ७५ वर्ष की होती है। इस मास वालों को बालारिष्ट होता है। अतएव ८ वर्ष की आयु तक अनेक रोग उत्पन्न होते हैं। ३।२८।३२।३६।३८।४७।४६।५४।५८।६४।७० में वर्ष विशेष रोग होते हैं। कृष्ण पक्ष की २।३।५।११।१४ तिथि वाले २८ वें वर्ष में विशेष रोगी होते हैं। शुक्ल पक्ष की १।८।७।८।१२।१५ तिथि वाले ११ वर्ष की आयु तक विशेष कष्टित रहते हैं इन्हें, ५४।५८।६४ में वर्ष विशेष कष्ट होता है।

भाग्योदय

इस मास वालों का १७।१८।१६।२२।२४।२६।२८। ।३१।३२।३३।३४।३६।३८।४१।४४।४५।४८।५२।५४।५६।५८।६१।६२।६६।७० में वर्ष में विशेष उन्नति का वातावरण रहता है। इन्हीं किन्हीं वर्षों में भाग्य चमकता है। १५।१६। ।२१।३२।३५।३८।४०।४२।४६।५०।६३ वें वर्ष में कुछ आर्थिक कष्ट रहता है। इस मास वाले जो मेष, मिथुन कर्क, तुला राशि के होते हैं वे ३१ वर्षायु में सुख-शान्ति प्राप्त करते हैं। इनका समय ३ वर्षायु से अच्छा व्यतीत होने लगता है। प्रायः (इस मास वालों का) ३४ वाँ वर्ष (अशुभ ग्रहों के प्रभाव से) अनिष्टकर होता है, जिसका अशुभ प्रभाव दानादि द्वारा कम करना चाहिए। इस मास वालों का विकास २३ वर्ष से प्रारम्भ होता है। २८ वर्ष से ३५ वर्ष तक का समय विशेष महत्त्व पूर्ण होता है। इन्हीं समयों में अनुकूल साधन मिलने पर ये अपना (शारीरिक, मानसिक, आर्थिक, आध्यात्मिक) विकास करपाते हैं। ४२ वर्ष से ४३ वर्ष तक की आयु का समय विशेष सावधानी का होता है। इसी समय में अनेक उत्थान-पतन सामने आ सकते हैं। यदि इस समय का सदुपयोग हुआ तो फिर आजीवन सुख रहता है। इस मास वालों पर दूसरे का प्रभाव कुछ नहीं पड़ता। स्वतन्त्र विचारक होने के कारण ये स्वयं ही अपने पुरुषार्थ द्वारा अपने मार्ग को प्रशस्त करते हैं। ३१ वाँ वर्ष प्रायः परिवर्तन (लाइफ चेञ्ज) का आता है। इसमें घबड़ाना नहीं चाहिए। जो व्यक्ति ३१ वें वर्ष को अच्छी तरह बिता देते हैं, उनका भाग्योदय पूर्ण रूप से ३८ वें वर्ष तक अवश्य हो जाता है। ३१ वें वर्ष में तो कुछ ऐसी परिस्थितियाँ आ जाती हैं जिससे विकास स्थगित हो जाता है। कुछ व्यक्ति १८ वें वर्ष की आयु से विकास की ओर बढ़ते हैं, परन्तु २३ वें वर्ष तक (शत्रु का प्रभाव) इनके समक्ष रहने के कारण अनेक बाधाएँ आती हैं जिससे उन्नति के समस्त मार्ग रुद्ध हो जाते हैं। इसीलिए (इस मास वालों को) १८ वर्षायु से २७ वर्षायु तक दृढ़ अध्यवसाय (कठोर प्रयत्न) करना चाहिए जिससे उन्नति के मार्ग रुद्ध न हों। यदि अपने स्वभाव में (इस मास वाले) कुछ सुधार कर लें तो, इनकी सारी कठिनाइयाँ दूर हो सकती हैं। विश्वास-पात्र एवं सदाचारी होना आवश्यक है। प्रायः २४ वर्ष के उपरान्त भाग्योदय हो ही जाता है।

विवाह और मित्रता

इस मास वालों का विवाह ६।१२।१४।१६।१७।१८।२०।२१।२४।२६।२८।३२।४२ वर्षायु में सम्भव रहता है। कृष्ण पक्ष की १।२।३।५।८।११।१२।३० तिथि वालों का विवाह युवावस्था के प्रारम्भ में ही हो जाता है; तथा इनका दाम्पत्य जीवन सुख-मय व्यतीत होता है। मतान्तर से कृष्ण पक्ष की ३।५।८ तिथि के उत्तरार्ध समय वालों का दो या तीन विवाह भी होते हैं, तथा इनकी पत्नियाँ चतुर एवं सुन्दर होती हैं। कोई व्यक्ति अपनी भावुकता के कारण कुटनी (दुराचारिणी या स्त्रियों को फँसाकर लाने वाली) स्त्रियों के पंजे में भी फँस जाते हैं, तथा आचरण-हीन हो जाते हैं। शुक्ल पक्ष की २।६।१०।१२।१५ तिथि वालों का विवाह, प्राय छोटी ही अवस्था में हो जाता है। शुक्ल पक्ष की १।३।४।५।७।८।६।११।१३।१४ तिथि वालों का विवाह प्रौढावस्था में होता है। श्रावणी पूर्णिमा वालों के प्राय दो विवाह होते हैं। क्योंकि, पूर्णिमा वाले विशेष कामुक होते हैं। इस मास की किसी तिथि को १६।४७ इष्ट-काल वाले, विवाह रहित ही रह जाते हैं।

इस मास वालों के मित्र कम होते हैं, तथा इनके रूखे व्यवहार के कारण शत्रु अधिक होते हैं। इनके शत्रुओं की संख्या ३ से ३० तक हो सकती है। जो इन्हें, समय-समय पर हानि पहुँचा सकते हैं। शत्रु के अभाव में रोगों की संख्या होती है। सनकी स्वभाव के कारण इनके मित्र भी, इनसे परेशान रहते हैं और हार्दिक मित्रता रखने वाले, इनके लिए बहुत कम होते हैं। कभी-कभी ये, अपने व्यवहार के कारण अनेकों मित्र पैदा कर लेते हैं, परन्तु कुछ ही समय बाद, वे सब मित्र, इनका साथ छोड देते हैं और कारणवश शत्रु का कार्य करने लगते हैं। कृष्ण पक्ष की ११ तिथि एवं रोहिणी नक्षत्र वाले बडे मिलनसार होते हैं। इनसे, इनके परिवार के लोग सन्तुष्ट और प्रसन्न रहते हैं। शुक्ल पक्ष की १० तिथि वाले व्यवहार-कुशल होते हैं, और अपनी चतुराई के कारण जहाँ रहते हैं, वहाँ के वातावरण को अपने अनुकूल बनाये रखने का प्रयत्न करते हैं। यदि इस तिथि वाले, किसी शिक्षा-संस्था में प्रविष्ट हो जाँय तो, निश्चित रूप से ये, उस संस्था की उन्नति कर सकते हैं। शिक्षा-प्रिय होने के साथ-साथ सदाचार-प्रिय भी होते हैं और अवसर मिलने पर इस दिशा में अधिक प्रगति कर सकते हैं।

सन्तान

इस मास वालों को सन्तान-सुख अच्छा होता है। इस मास के रविवार को १७।४६ इष्ट-काल वालों के ७ पुत्र, २ कन्याएँ। १६।२० इष्ट-काल वालों के सन्तान अभाव। २१।४१ इष्ट-काल वालों के ४ कन्याएँ, २ पुत्र। २४।३० इष्ट वालों के ३ पुत्र, २ कन्याएँ। २६।३१ इष्ट वालों के ४ पुत्र, ७ कन्याएँ। ३२।५४ इष्ट वालों के १ पुत्र, १ कन्या। ३७।४३ इष्ट वालों के ४ पुत्र, ३ कन्याएँ। ३६।१४ इष्ट वालों के ५ पुत्र, ४ कन्याएँ। ४४।४८ इष्ट वालों के सन्तान अभाव। ५१।३७ इष्ट वालों के २ पुत्र, ५ कन्याएँ। ५५ घटी से अधिक इष्ट वालों के प्राय ५ सन्तानें होती हैं। सोमवार को १६।१६ इष्ट वालों के सन्तान अभाव और इससे कम या अधिक इष्ट वालों को सन्तान सुख होता है। प्राय अधिक से अधिक ११ सन्तान और कम से कम ४ सन्तान होती हैं। मगलवार को २३।४८ इष्ट वालों के सन्तान-अभाव और इससे अधिक इष्ट वालो को अच्छा सन्तान-सुख होता है। बुधवार को ११।१४ इष्ट वालों के सन्तान-अभाव और इससे अधिक इष्ट वालों को सन्तान-सुख होता है। गुरुवार और शुक्रवार को ४१।५२ इष्ट वालों के सन्तान का अभाव या अल्प-सन्तान-सुख और इससे अधिक या कम इष्ट वालों के सन्तान-सुख होता है। शनिवार वालों को सामान्य सन्तान-सुख होता है। इस मास की १।२।३।५।६।८।१०।११ तिथि वाले सन्तान-सुख साधारण पाते हैं, शेष तिथि वालों को अच्छा सन्तान-सुख होता है।

२२ जुलाई से २१ अगस्त तक

यदि आपका जन्म हुआ हो तो, मकान के दक्षिणी भाग में जन्म लिया होगा। कमरे में ३ व्यक्ति उपस्थित थे। जन्मते ही आप रो उठे थे। आपके उच्च विचार रहेंगे। आप, तृष्णावान तथा दृढ

प्रतिज्ञ हैं। आप, किसी भी बात का निर्णय बहुत शीघ्र करते हैं। आप दयावान एवं शूर-वीर हैं। धार्मिक भावनाओं में रुचि रखते हैं। सदा सच में विश्वास करते हैं। स्वास्थ्य साधारण ठीक रहेगा। हृदय-रोग का भय है। कभी-कभी खाँसी रोग का भी भय सम्भव है। प्रतिदिन कुछ समय के लिए पूर्ण विश्राम करना चाहिए। जीवन में कभी-कभी अग्नि द्वारा कष्ट हो सकता है। उष्ण पदार्थों का भोजन हानिकर हैं। आपको सर्वदा रुधिर स्वच्छ करने की वस्तुओं का सेवन करना चाहिए। पूर्णायु ७२ वर्ष की है। लाल और हरा रंग शुभ हीरा या कस्तूरी धारण शुभ रविवार शुभ, अंक १।२।३।४।७।८ शुभ हैं। मित्र अधिक होंगे किन्तु, सच्चे मित्र कम ही मिल सकेंगे। मित्रों से हृदय की बातें न बताइये अन्यथा हानि होने का भय है। कभी आप, कोई काम बिना विचार ही कर डालते हैं बहुधा तहरीरों (प्रतिज्ञा-पत्र) पर बिना सोचे-समझे हस्ताक्षर न कीजिए द्रव्य आपको अधिक मिलता है किन्तु संचित नहीं रह पाता अधिक खर्चीले स्वभाव के होंगे। इस समय वालों को लाटरी-रेस आदि से भी द्रव्य मिलना सम्भव होता है। आप किसी कम्पनी के संचालक, मैनेजर डाक्टर फौजी ऑफिसर हो सकते हैं। दुर्गम या दुस्साध्य स्थानों (खतरनाक जगहों) में आपका काम करना रुचिकर है। आप अधिक प्रेमी होंगे। आपको सदा कामी इच्छाओं का त्याग करना चाहिए। आपका विवाह किसी भी राशि वाली कन्या से सुखकर रहेगा; परन्तु, २२ जून से २८ जुलाई तक और १९ फरवरी से ५ मार्च तक के मध्य में उत्पन्न कन्या के साथ विवाह अशुभ रहेगा। आपके विचार शान्ति पूर्ण वातावरण में अधिक स्वस्थ हो सकते हैं। आपका स्वभाव पूर्ण प्रेमी एवं मिलनसार है। आप आत्म विश्वासी तथा आत्म सहायवान हैं। दयालु भी हैं। परन्तु, इस समय वाले व्यक्ति प्रायः दूसरों पर शासन ही करते पाये गये हैं और स्वयं आज्ञा-पालक नहीं होते। यदि किसी को आज्ञा-पालन की शिक्षा मिल जाती है तो वे एक आदर्श पुरुष होते हैं। ये बहुत आराम-प्रिय होते हैं। यदि इन पर ध्यान न दिया गया तो आलसी हो जा सकते हैं। इनके साथ दया एवं प्रेम का बर्ताव रखना लाभदायक है।

भाद्रपद–मास

इस मास वाले व्यक्ति, विशाल-हृदय एवं उदार-विचार वाले होते हैं। ये किसी वस्तु को अल्प मात्रा में लेना उचित नहीं समझते वृहत् रूप में ग्रहण करते हैं। अनेक कार्यों के आविष्कारक होते हैं, सम्पादन-शक्ति इनमें अच्छी मात्रा में पायी जाती है। नई व्यवसायों को चलाने या प्रचार करने वाले (इसी मास के उत्पन्न व्यक्ति) होते हैं। इनकी इच्छा-शक्ति (विल-पावर) प्रबल होती है। विचार इतने दृढ़ होते हैं कि, एक बार किसी कार्य के सम्बन्ध में निश्चय कर लेने पर फिर ये उसे बदलना नहीं चाहते, अनेक विघ्न बाधाओं के आने पर भी अपने लक्ष्य तक ये पहुँच ही जाते हैं। इनमें आकर्षण इतना अधिक होता है कि, दूसरे व्यक्ति इनकी ओर बिना किसी प्रलोभन के आकृष्ट हो जाते हैं, और इनके प्रभाव में आकर अनुयायी बन जाते हैं।

स्वभावतः ये बड़े विश्वसनीय होते हैं कभी किसी को धोखा नहीं देते। इनका लक्ष्य बहुत ऊँचा रहता है और कष्ट सहकर भी अपने लक्ष्य-स्थान को प्राप्त करना ये अपना प्रधान कर्तव्य समझते हैं। प्रायः स्वभाव के गर्वित और लोलुप होते हैं। उदार होते हुए भी स्वार्थ की पूर्ति में कोई त्रुटि नहीं आने देते। प्रायः देश भक्त और राज-भक्त (इसी मास वाले) होते हैं। इनका हृदय अत्यन्त कोमल होता है। कुसमय में भी ये दूसरों के काम आते हैं। जहाँ तक सम्भव होता है ये अन्य लोगों की सहायता करते हैं। स्वभाव से कृपण होते हुए भी अवसर आने पर सहस्रों खर्च कर सकते हैं। ये अवसर वादी होते हैं, जैसा अवसर आता है वैसे ही बन जाते हैं। अपनी मान-मर्यादा की रक्षा के लिए ये सब कुछ करने को तैयार रहते हैं। साथ में नीच और ऊँच से ऊँच सभी प्रकार के काम ये कर सकते हैं।

व्यवसाय की दृष्टि से (इस मास वाले) प्राय ऊँचे व्यापार करने वाले होते हैं। चोर, डाकू, अध्यापक, कृषक, डाक्टर-वैद्य, जहाज संचालक, वैज्ञानिक और लायब्रेरियन हो सकते हैं। यद्यपि शिक्षक के समस्त-गुण, नैतिकता आदि इनमें नहीं होते, फिर भी इस क्षेत्र में कुछ कार्य कर सकते हैं। पाश्चात्य मत से (इस मास वाले) व्यापार में अधिक उन्नति कर सकते हैं। लक्ष्मी, इनकी दासी होकर रहती है, और आर्थिक सकट का सामना इन्हे, नहीं करना पडता, परन्तु, कुछ ऐसे भी दुर्भाग्य-शाली होते हैं, जो सदा अन्न-वस्त्र के लिए, दूसरों का मुँह ताकते रहते हैं। ऐसे व्यक्तियों का जन्म २१।३६ इष्ट-काल के आस-पास का होता है अथवा जिसके, शनि और मंगल (गोचर द्वारा या जन्म लग्न से) अष्टम में रहते हैं—इसीलिए, इन्हे प्राय कष्ट उठाना पड़ता है। इस मास वालों की पूर्ण सफलता, किसी वस्तु के स्वामी पर ही निर्भर करती है, जब ये, किसी काम के मैनेजर या सचालक बन जाते हैं तब, उस काम की चरम उन्नति करके ही सुख की सास लेते हैं। गीत और वाद्य से भी इन्हे प्रेम होता है, मनोरजन की सामग्री सदा ढूँढते रहते हैं।

चरित्र इनका दृढ नहीं रहता, क्योंकि कोई सदाचारी, कोई दुराचारी देखने में आता है। पर इतना निश्चित है कि, इनका जीवन प्राय वासनात्मक होता है। वासना की पूर्ति के लिए ये, हर-प्रकार के कार्य में प्रस्तुत हो जाते हैं। ये, अपने उद्योग और अध्यवसाय से प्रधान-सेनापति, शिक्षा-मंत्री तक हो जाते हैं। अर्थ-मन्त्री, बैंक, इन्स्योरेन्स के कामों मे भी सफलता मिलती है, क्योंकि ये, अर्थ-शास्त्र के ज्ञाता हो सकते हैं। अन्य कार्यों की अपेक्षा ये, इस महत्वपूर्ण कार्य को बडी योग्यता के साथ सम्पन्न करते हैं। इनके स्वभाव मे एक विशेषता, यह भी होती है कि ये, विचारों को बडा महत्व देते हैं। प्रत्येक लौकिक-कार्य को सोच-समझ कर करते हैं, और जब तक साधक-बाधक (उपाय-अपाय) कारणों का समुचित विचार नहीं कर लेते, तब तक आगे नहीं बढते। कभी-कभी इनके स्वभाव में झक्कीपना भी (कार्य-व्यस्तता के कारण) पाया जाता है और ये, अपनी सनक मे आकर (कर्तव्यानुरोधी होकर) असाध्य कार्यों को भी प्रारम्भ कर देते हैं।

इस मास के प्रथम सप्ताह मे उत्पन्न व्यक्ति, प्राय परिश्रमी, विचारवान और विवेक-शाली होते हैं। शिक्षित एव कर्तव्य-परायण होते हैं। उत्तराभाद्रपद के तृतीय चरण मे या तृतीया तिथि में जन्म पाने वाले अत्यन्त भाग्यशाली होते हैं। इनके आश्रित अनेक व्यक्ति काम करते रहते हैं तथा ये, बडे-बडे व्यापारों मे अच्छी सफलता प्राप्त करते हैं। देश, समाज और जाति की उन्नति के लिए बहुत कार्य करते हैं। इनका जीवन, अच्छे कार्यों मे व्यतीत होता है। इन्ही दिनो के ४१।५७ इष्ट-काल वाले, तपस्वी एव संसार के लिए मान्य होते हैं। किन्तु वे फक्कड़, मौलामस्त तथा अनुत्तरदायी होते हैं। अधिकाश भिक्षुक या याचक होते हैं। २१।३६ इष्ट-काल वाले, निजभुजार्जित धन का सुख भोगते हैं, परन्तु, इनकी आधी अवस्था दु खमय व्यतीत होती है। उत्तरार्ध जीवन मे सुख-शान्ति के दिन मिलते हैं।

इस मास के द्वितीय सप्ताह वाले, प्राय विचारक होते हैं। अनुकूल साधनों के मिलने पर इनका अच्छा विकाश होता है। कृष्ण पक्ष की ८ तिथि के रोहिणी नक्षत्र वाले, महान् पुरुष होते हैं, इनकी कीर्ति अमर रहती है। कृष्ण पक्ष की ११ और १३ तिथि या आश्लेषा एव मघा नक्षत्र मे ३६।४१ इष्ट-काल वाले, राज मान्य या पुलिस ऑफिसर होते हैं। यदि त्याग की ओर, इनका जीवन झुका, तो ये, सच्चे त्यागी होते हैं। इस सप्ताह वाले, कोई कृषि-विशेषज्ञ या सफल-प्रचारक होते हैं। मघा नक्षत्र के प्रथम चरण में ११।१३ इष्ट-काल वाले, सफल-शिक्षक और शिक्षा-क्षेत्र के प्रचारक होते हैं। इस सप्ताह वाले, कोई सुधार कार्य (नवीन क्रांति) की ओर प्रगति करते हैं, क्रान्ति की लहर एक किनारे से, दूसरे किनारे तक पहुँचा देना, इनका मुख्य कार्य होता है, इनमें, कार्य करने की अपूर्व क्षमता होती है। काम करना ही इनका व्यसन होता है ये, कभी व्यर्थ बैठे नहीं रह सकते, शान्ति और विवेक के साथ काम करने से इन्हे अच्छी सफलता मिलती है ये, ससार के सभी क्षेत्रों में प्रगति कर जाते हैं।

इस मास के तीसरे सप्ताह वाले साहसी, शूर-वीर और परिश्रमी होते हैं। प्राय: ये शारीरिक-श्रम द्वारा ही जीविका अर्जन करते हैं, इन्हें मानसिक (बौद्धिक) क्षेत्र में कम सफलता मिलती है। इसमें लगभग ५० प्रतिशत शिक्षित एवं ५ प्रतिशत अशिक्षित व्यक्ति पाये गये हैं। पर, इतनी विशेषता अवश्य पायी जाती है कि ये लौकिक कार्य में अधिक निपुण होने से अपने काम, शिक्षितों की अपेक्षा उत्तम रूप से करते हैं। प्राय: (इस सप्ताह वाले) विश्वास-पात्र, और शालीनता-युक्त होते हैं।

इस मास के तीसरे सप्ताहान्तर्गत २ ५ तिथि को उत्तराफाल्गुनी एवं अनुराधा नक्षत्र वाले साम्यवादी एवं राज्याधिकारी होते हैं, इन्हीं तिथियों के १८।४५ इष्टकाल पर वाले सहकारी कार्यों के मिलने से अन्तिम जीवन में विरक्त हो जाते हैं। ये अत्यन्त धार्मिक, उदार-चरित्र एवं सहन-शील होते हैं। सेवा-भाव, इनमें, मुख्य-गुण होता है।

इस मास के चतुर्थ सप्ताह वाले परास्थी और महापुरुष होते हैं। इनकी वृत्ति अत्यन्त मन्द और संसार से उदासीन पायी जाती है। इस सप्ताह के शनिवार मङ्गलवार में होने वालों का स्वभाव उदण्ड और सनकी होता है। वैसे तो सहानुभूति की मात्रा इनमें भी अधिक होती है परन्तु, कभी-कभी अपने सनकीपन में आकर ये, अनुचित कार्य भी कर डालते हैं। ४३ वर्षायु में इन लोगों को सङ्कटों का सामना करना पड़ता है। इनका मस्तिष्क बहुत बड़ा होता है और ये अपने व्यापार (जीवन-कार्य) में पूर्ण सफल होते हैं।

इस मास वाले प्राय: विभिन्न प्रकार के स्वभाव-सम्पन्न पाये जाते हैं। सहानुभूति उदारता, अभिमान शालीनता प्रेम और दया आदि गुण, न्यूनाधिक रूप से सभी में पाये जाते हैं।

स्वास्थ्य

इस मास वालों के १।२।३।४।५।८।११।१३।१५।१६।२४।२६।२८।३०।४२।४७।५५।५६।५८।६१।६२।६३।६५।६० वें वर्ष में रोग-आक्रमण होता है। हृदय रोग गले के रोग अधिकतर होते हैं। पूर्णायु ७५ वर्ष की होती है। रक्त चाप (ब्लड-प्रेशर) का प्रकोप ४२ वर्षायु से प्रारम्भ होता है। किसी-किसी को पक्षाघात (लकवा) या अपस्मार (मृगी) का आक्रमण होता है। दमा या शीत-जन्य अन्य रोगों का भय रहता है। इस मास वालों को असाध्य रोग प्राय: नहीं होते। ५८ वर्ष से ६२ वर्ष तक की आयु के मध्य में अवश्य ही रोग द्वारा पीड़ा होती है।

धन

इस मास वालों के १६।१८।१६।२१।२३।२४।२५।२७।२८।३०।३१।३२।३४।३८।४५।४६।५३।६५।६६ वें वर्ष में विशेष उन्नति होती है और इन्हीं वर्षों में आर्थिक सुख प्राप्त होता है। जिनकी सिंह, कन्या, वृश्चिक, धनु, कुम्भ और मीन राशियाँ होती हैं, उन्हें २७।२८।३३।४१ वें वर्ष में कुछ आर्थिक सङ्कट का सामना करना पड़ता है, साथ ही मानसिक चिन्ताएँ अन्यान्य सङ्कटों के साथ होती हैं। शुक्रवार बुधवार अशुभ, रविवार शुभ लाल रङ्ग शुभ अङ्क १।२।३।७।८ शुभ हैं। आषाढ़ सावन, माघ, फाल्गुन मास शुभ कार्तिक, पौष मास अशुभ शेष मास साधारण २।३।८।६।१३।१४।१५ तिथियाँ शुभ ४।५।६ तिथियाँ अशुभ शेष तिथियाँ मध्यम, जन्म के लिए बुधवार और शुक्रवार इतने शुभ नहीं जितने इस मास वालों को रविवार गुरुवार शुभ है। प्राय: २२ वर्ष के उपरान्त आर्थिक पूर्णता पर आ पहुँचता है।

विवाह और मित्रता

इस मास वालों का विवाह ८।६।११।१२।१५।१६।१७।१८।२२।२४।२७।३२।४२ वें वर्ष में सम्भव होता है। इस मास के १।२।३।५।६।८।६।११।१३।१४ तिथि वाले प्राय: दो, तीन या अधिक विवाह करते हैं। इनके सह बाग २-३ स्त्रियों के समागम के होते हैं। प्राय: ये अपने प्रेम से आकृष्ट कर विवाह करते हैं। मतान्तर से शुक्ल पक्ष की ७।५।८।११।१२।१३।१४ तिथि वाले दो विवाह करते हैं तथा इनका दाम्पत्य-जीवन

सुखमय बीतता है। २४ वर्षायु में इनके दाम्पत्य-जीवन में कुछ मलिनता आ जाती है पर, वह शीघ्र ही दूर हो जाती है। रविवार-पुष्य के जन्म पाने वालों से, प्रेम करने वाली अनेक नारियाँ होती हैं, तथा ऐसे व्यक्ति, अपने सदाचार से, सबके ऊपर विजय प्राप्त करते हैं। शुक्ल पक्ष १३ तिथि वाले अतिभावुक होते हैं ये, अपनी भावुकता के कारण, दुराचारिणी नारियों के जाल में फँस जाते हैं। प्रारम्भिक जीवन, इनका, गन्दा होता है। परन्तु प्रौढावस्था में पहुँचने पर ये, अपनी थोथी भावुकता को छोडकर, वास्तविक जगत में प्रविष्ट हो जाते हैं।

इस मास वालों का स्वभाव प्रेमी होता है। मित्रता करने के लिए सदा इच्छुक रहते हैं। इनके मित्रों की संख्या अधिक न रहने पर भी इन्हे, सच्चे मित्र मिल ही जाते हैं। इनसे, जो भी एक बार मित्रता कर लेता है, फिर छोडने का नाम नहीं लेता। जिनका जन्म कृष्ण पक्ष की २।३।४।६।८।१०।११।१४ तिथि को होता है वे, अपनी व्यवहार पटुता के कारण, जहाँ रहते हैं, वहाँ अपने मित्रों का एक समूह एकत्र कर लेते हैं। कृष्ण पक्ष की १३।३० तिथि वाले मित्र-रहित होते हैं, इन्हे सच्चे मित्र नहीं मिल पाते, परन्तु शत्रु-संख्या भी अधिक नहीं बढती। हाँ, कुछ लोग इनकी उन्नति देखकर डरते रहते हैं और बिना प्रयोजन ही, इनसे ईर्षा करने लगते हैं। इनके, मिलने-जुलने वाले अधिक रहते हैं। भाई-बन्धु भी हृदय में इनसे, द्वेष रखते हैं और अवसर मिलने पर इनका, अनिष्ट करने को तैयार रहते हैं। साधारण जनता में इनकी, प्रतिष्ठा अच्छी रहती है, जिससे, सब लोग, प्राय प्रेम का व्यवहार करते हैं। जिन व्यक्तियों का जन्म (इस मास के) अन्त में होता है वे, अपने मित्रों से शङ्कित रहते हैं, तथा मित्रों के द्वारा ही व्यसनों में फँसते हैं, इनके ऐसे मित्र बहुत कम होते हैं, जो समय पर इन्हे, काम (सहायता) दे सकें।

सन्तान

इस मास वालों को सन्तान-सुख, मध्यम-श्रेणी का होता है। रविवार वालों के अधिक सन्तान। सोमवार वालों के अल्प सन्तान या कन्याएं अधिक। मङ्गलवार और शनिवार वालों के अधिक सन्तान, अधिक पुत्र। बुधवार, शुक्रवार वालों के प्राय सन्तान का अभाव या कन्याएँ अधिक। गुरुवार वालों के पुत्र अधिक, शुभ गुण युक्त सन्तति होती हैं। २।३।४।५।६।१०।१३।१४ तिथि वालों को सन्तान सुख, मध्यम-श्रेणी का होता है। इस मास की किसी भी तिथि को ५।१।१४ इष्ट-काल वाले सन्तान-रहित होते हैं। हाँ, इन्हे, दूसरा विवाह करने पर सन्तान-सुख होता है। १६।४८ इष्ट-काल वाले सन्तान-रहित होते हैं, प्राय इन्हें दत्तक-पुत्र ही लेना पड़ता है। कृष्ण पक्ष की ६ तिथि के ४८।४७ इष्ट-काल वाले १२ सन्तान तक उत्पन्न करते हैं तथा अधिकाश पुत्र ही होते हैं। शुक्ल पक्ष की ७ तिथि के १८।२१ इष्ट-काल पर वाले ८ सन्तान तक उत्पन्न करते हैं।

२२ अगस्त से २२ सितम्बर तक

यदि आपका जन्म हुआ हो तो, मकान के नैॠत्य कोण (दक्षिण-पश्चिम) में जन्म हुआ होगा। कमरे में ३ व्यक्ति उपस्थित थे, और जन्मते ही थोडे रोये थे। आप, प्रत्येक काम में बहुत अधिक नुक्ता-चीनी (मीन-मेष, खोद-विनोद, छिद्रान्वेषण) करते हैं। यहाँ तक कि आप, स्वय अपने काम से ही (दूसरे समय) प्रसन्न नहीं होते, क्योंकि आप, उससे भी अच्छा काम करना चाहते हैं। आप, बहुत सावधानी से और प्रत्येक कार्य बहुत सोच-विचार कर करते हैं। धर्म-सम्बन्धी (परोपकारी) कार्यों में आप, अच्छी उन्नति कर सकते हैं। यदि आप चाहे तो, ब्रह्मचारी का जीवन व्यतीत कर सकते हैं। मादक पदार्थों से सर्वदा दूर रहने का प्रयत्न कीजिए। क्योंकि ऐसी वस्तुएँ आप पर शीघ्र प्रभाव करके स्वास्थ्य को हानि पहुँचायेंगी। एकान्त वास में रहना, प्राकृतिक दृश्य देखना, आपको लाभदायक है। सर्वदा एक-सा भोजन करने और मुक्त-वायु में घूमने से, जीवन पर्यन्त आपकी, युवावस्था बनी रह सकती है। सङ्गीत के प्रेमी होंगे। नीला मिश्रित काला रङ्ग या हरा रङ्ग, सुनहला रङ्ग, बुधवार, अङ्क १।४।५।६ आपको शुभ कारक हैं। ३।५।८।१३।१५।२६।३०।३३।४३।५१।५६। ६५।७४।७६ वाँ वर्ष अशुभ हैं इन्हीं वर्षों में किसी प्रकार का शरीर कष्ट हो सकता है। पूर्णायु ८३ वर्ष की है।

आपको सर्वदा दो बातों से बचना चाहिए—(१) मित्रों पर अत्यधिक विश्वास करना (२) किसी भी प्रतिज्ञा-पत्र (तहरीर) पर एकाएक हस्ताक्षर करना। २० एप्रिल से २० मई तक या २२ दिसम्बर से १६ जनवरी तक के मध्य में उत्पन्न व्यक्तियों के साथ मित्रता रहेगी। आपको लेन-देन (बैंक) के व्यापार से लाभ रहेगा। प्रायः वाणिज्य में आपका जीवन बीतेगा और उसी में आपको आर्थिक लाभ होगा। आप एजेण्ट, क्रय-विक्रय, प्रबन्ध कार्य, संचालक, चित्रकार, पत्रकार वर्क-क्षेत्र और न्याय-विभाग में सफलता प्राप्त कर सकते हैं। शिक्षा की अपेक्षा आप, अनुभव से ज्ञानोपार्जन अधिक करेंगे। रूपवती स्त्री के मिलने से आपका जीवन, सुख से व्यतीत होगा। १६ फरवरी से २० मार्च तक के मध्य में उत्पन्न कन्या के साथ विवाह करने से उत्तम होगा। इस मास में जन्म पाने वाले सर्वदा विवाद-प्रिय होते हैं अतएव इन्हें व्यापार सम्बन्धी बातें सीखना चाहिए। रोगावस्था में मुक्त-वायु में घूमना तथा एकान्त वास करना अधिक लाभदायक रहेगा।

आश्विन (क्वाँर) मास

इस मास वाले अत्यन्त दयालु, परोपकारी और मनन-शील होते हैं। इनकी बुद्धि इतनी तीक्ष्ण होती है कि दुःसाध्य एवं असम्भव कार्यों को भी बात की बात में (स्वल्प काल में) सुसाध्य और सम्भव बना लेते हैं। मिल और बड़े-बड़े कार्यालयों के संस्थापक होते हैं। प्रत्येक वस्तु की आलोचना निष्पक्ष दृष्टि से करते हैं। यद्यपि इन्हें संग्रह (थोक) वस्तु-विक्रय करने की अपेक्षा खदरा (फुटकर) विक्रय में अधिक लाभ होता है एवं सुविधा मिलती है, परन्तु, प्रायः ये बड़े-बड़े व्यापार करते हैं। ये सर्वदा क्रम-बद्ध और शान्ति-पूर्वक काम करना चाहते हैं अस्त-व्यस्त विधि में ये रुचि नहीं रखते। कठोरता इन्हें, अच्छी लगती है, इसीलिए प्रत्येक काम को व्यवस्थित ढंग से करने का प्रयत्न करते हैं। दूसरों को आदेश देना तथा उस आदेश का पालन कराना इनका स्वाभाविक गुण होता है, ऐसा कराने की इनमें क्षमता होती है। अच्छे स्कालर (विद्यार्थी), पुरातत्ववेत्ता, दार्शनिक, नैयायिक, ज्योतिर्विद और विज्ञान-वेत्ता होते हैं। समझदार सावधान अनुभव-शील तथा कोमल-प्रकृति के (इस मास वाले) होते हैं। समाचार पत्रों का सम्पादन भाषण-शक्ति एवं विभिन्न-प्रकार के सूचना-पत्र (पम्फलेट) आदि लिखकर, जनता को अपने अनुकूल करने की कला में अत्यन्त निपुण होते हैं। इनका स्वभाव अच्छा (उत्तम) और परोपकारी होता है दूसरे के दुःख को देखकर ये शीघ्र ही द्रवित हो जाते हैं। यद्यपि इनका स्वभाव भीरु होता है परन्तु ये, दूसरे लोगों को निर्भय बनाने का प्रयत्न करते हैं। पुस्तकें संचय करना अध्ययन-मनन में व्यस्त होना इनमें बड़ी भारी लालसा रहती है। अपने निकट सदा एक पुस्तकालय रखना चाहते हैं। इनका जीवन गति-शील होता है। अवसर आने पर ये बड़े-से-बड़े काम अपने ही हाथों कर डालते हैं। ये परीक्षा-प्रधान गुणी होते हैं और अपनी सूक्ष्म दृष्टि से दूसरे व्यक्तियों की परीक्षा बहुत शीघ्र कर लेते हैं। इनका प्रारम्भिक जीवन दरिद्रता पूर्ण या दुःख-पूर्ण होता है तथा आगे जाकर इनकी अच्छी स्थिति होती है। आवेग-शील होने के कारण ये शीघ्र ही किसी बात का निर्णय कर लेते हैं। परिश्रम-साध्य कार्यों में रुचि नहीं रखते और अर्थोपार्जन बहुत आसानी कर लेते हैं।

इस मास वालों का मस्तिष्क बहुत तेज होता है, और ये इतने प्रभाव-शाली होते हैं कि, संसार में इनकी समानता का या इनके प्रभाव से प्रभावित न हो सके—नहीं मिलता। इनके वाक्य प्रमाणित माने जाते हैं। सत्य अहिंसा आदि नैतिकवादों को, ये अपने जीवन में पूर्ण रूप से उतारते हैं। यद्यपि वासना का प्रभाव इन्हें भी अछूता नहीं छोड़ता, परन्तु तो भी इनकी सारी बातें विलक्षण होती हैं। इनकी आकृति सुलक्षण-मय होती है। मस्तिष्क बड़ा एवं ज्ञान-विज्ञान का भाण्डार होता है। धर्म-शास्त्र, कानून (न्याय) और राजनीति के, ये पूर्ण-ज्ञाता होते हैं। इनके अनुयायियों की संख्या अपरिमित होती है। ये किसी मार्ग के प्रवर्तक भी हो सकते हैं। देश समाज और राष्ट्रों के महा-स्तम्भ भी हो सकते हैं।

कृष्ण पक्ष की ११४१६ तिथि वाले, बडे भारी प्रभाव-शाली होते हैं। ये, अन्य लोगों के भाग्य-विधाता और विद्या-प्रेमी होते हैं। इनके समक्ष, बडी से बड़ी शक्ति भी झुक जाती है। मंगलवार, शनिवार, गुरुवार को जन्म पाने वाले महापुरुष होते हैं। लोग, देव एव आराध्य के समान पूजते हैं। इनके सकेत पर चलने के लिए अनेकों व्यक्ति तैयार रहते हैं। ये, साहित्य के भी मर्मज्ञ होते हैं। इनके द्वारा नवीन साहित्य का भी सृजन होता है। कभी-कभी इन लोगों का स्वभाव भी मक्की होता देखा गया है, इसलिए ये, अपनी धुन में आकर, अनुचित कार्य भी कर डालते हैं, परन्तु इनके सम्बन्ध मे इतना निश्चित है कि ये, धुन के पक्के होते हैं। ससार में किसी की अपेक्षा (परवाह) नहीं करते, जो इन्हे, उचित जँचता है, तथा जो न्याय-सगत होता है, उसी का ये, प्रचार करते हैं। इनके जीवन मे, एक यह भी विशेषता पायी जाती है कि ये, विचारक होने के साथ-साथ, कभी-कभी भावुकता मे बह जाते हैं, और कुछ अनुचित कार्य भी कर डालते हैं। मतान्तर से ये, (इस मास वाले) "वज्र से भी अधिक कठोर तथा पुष्प से भी अधिक कोमल" होते हैं। इनमे असीमित विश्वास होता है। ये, प्राय सभी का विश्वास करते हैं। इस मास के अन्त मे उत्पन्न होने वाले और भी अधिक पराक्रमी होते हैं।

इनका (इस मास वालों का) जीवन, एक बृहत् दैविक गुणों का समुदाय होता है, यह जीवन के प्रथम क्षण से लेकर मृत्यु तक, लगातार चलता ही जाता है। ये, भगवान के बडे भारी भक्त होते हैं। पक्के सुधारक भी, इन्हे, कहा जा सकता है। इनका जीवन, वस्तुत सत्य की प्रयोग-शाला होता है, और इनके, सारे प्रयत्न, मोक्ष की प्राप्ति के लिए होते हैं। यदि अर्थोपार्जन के क्षेत्र मे, ये, प्रविष्ट हो जाते हैं तो, उस क्षेत्र में भी, इनकी समानता कोई भी नहीं कर सकता। इनकी दृढ़ता (कार्य-सल्लग्नता) से, व्यापारिक क्षेत्र में, इन्हें, अपूर्व सफलता मिलती है। बाजार मे इनका बोल-बाला होता है। इनकी साख सर्वत्र मानी जाती है। "*नामी नर होत, गरुड-नामी के हेरे ते।*" के प्रभाव मे व्यस्त रहते हैं।

यदि ज्ञान के क्षेत्र में इनका (इस मास वालों का) झुकाव हुआ तो, फिर उस क्षेत्र मे भी इन्हे, अपूर्व सफलता मिलती है। आजीवन ज्ञान की साधना में, ये लोग, रहते हैं, और ससार के ख्याति-प्राप्त ज्ञानियों मे इनका स्थान होता है। विवेक और विचार (दोनों ही) इनके प्रौढ (पुष्ट) होते हैं, और ये, सर्वदा अपने कार्य की सिद्धि मे, सब कुछ छोड़कर लग जाते हैं। इनका उत्तरार्ध जीवन बड़ा महत्त्वपूर्ण होता है, और उनमें सुमेरु की भाँति अडिग (स्थिर) रहकर, अपने कार्यों को सम्पन्न करते हैं। स्वभाव से तो, भीरु (डरपोक) होते हैं परस्थितियाँ इन्हे, इतना साहसी और निडर बना देती हैं, जिससे इनकी, सारी भीरुता, 'कपूर-सम' उड जाती है।

इस मास वालों की एक विशेषता और भी होती है कि, यदि ये, अच्छे कार्यों मे लगे रहें तो, अन्त तक, अच्छे ही कार्य करते रहेंगे, और कदाचित बुरे कार्यों की ओर प्रवृत्ति हो गयी तो, अन्त तक उसी कुख्यात कार्य में लिप्त रहते हैं। इनके स्वभाव पर दूसरों के उपदेशों का प्रभाव नहीं पडता, वरन दूसरे ही इनके प्रभाव में आ जाते हैं। हाँ, अधिक श्रम करने के कारण इन लोगों को स्नायु-सम्बन्धी (नर्वस सिस्टम) रोग भी हो जाते हैं। हाथों, आखों और चेहरे पर झुर्रिया (सिकुडनें) पड जाती हैं, और अन्त में रक्त-प्रवाह तथा पक्षाघात होने का भय रहता है। इन्हें, पूर्ण विश्राम लेना तथा पर्याप्त शयन करना, अधिक लाभ-दायक होता है।

इस मास वाले कृषि-कार्य में भी निपुण होते हैं। ये, इस दिशा में भी उन्नति कर सकते हैं तथा इनका भी इतना प्रभावशाली व्यक्तित्व होता है कि, अन्य लोग, इन्हे, अधिक मानते हैं तथा जहाँ ये, रहते हैं, वहाँ की पचायत या आपुसी-झगड़ों का निपटारा करते हैं। इनके पैर में एक चिह्न (रेखा रूप में) रहता है, जिससे, सदा इन्हे, सवारी की सुविधा रहती है। कभी पैदल चलने का मौका नहीं आता और ये, सदा सुख-शान्ति मे अपना जीवन व्यतीत करते हैं। प्राय इस मास वाले ६० प्रतिशत शिक्षित, २० प्रतिशत मजदूर एव २० प्रतिशत कृषक होते हैं।

इस मास वाले १५ प्रतिशत व्यापारी, ८ प्रतिशत वकील ४ प्रतिशत प्रोफेसर, १८ प्रतिशत साधारण शिक्षक, ४ प्रतिशत महापुरुष, १० प्रतिशत लड़ाकू (युद्ध प्रिय) डाकू, चोर आदि १५ प्रतिशत सेनापति या पुलिस ऑफिसर, १७ प्रतिशत जहाज-चालक, मोटर ड्राइवर या अन्य सवारियों के चालक, १५ प्रतिशत भ्रमण शील (आवारा) होते हैं।

इस मास की एक मुख्य विशेषता यह है कि, वे एक ही कार्य में प्रवीण हो सकते हैं। जिनका जीवन स्वार्थ की ओर झुक जाता है वे पक्के स्वार्थी होते हैं। व्यापारी वर्ग, डाक्टर वकील आदि जब अपराधी होते हैं। तब इसी मास के स्वामी (बुध) का दूषित प्रभाव जानना चाहिए। इस मास के १०।१० से १६।१८ दृष्काण तक के मध्य वाले बड़े ही विलक्षण होते हैं इनके हृदय का पता लगाना बड़ा ही कठिन होता है इनके सारे कार्य, राजनीति की नींव के आधार पर चलते हैं। कार्य का प्रारम्भ तो बड़े उत्साह से करते हैं, लेकिन अन्त होते समय इनका सारा उत्साह समाप्त हो जाता है। इनका जीवन निश्चित दिशा की ओर जाता है और सहयोगियों की सहायता से, ये अपने अभीष्ट कार्यों में अधिक सफलता प्राप्त करते हैं इस मास के कुछ व्यक्ति महात्मा भी हो जाते हैं।

विवाह और मित्रता

इस मास वालों का विवाह बहुत शीघ्र (छोटी आयु में) हो जाता है। इनमें प्रारम्भ में वासना अधिक होती है, तथा छोटी आयु में कुसंगति के प्रभाव से बिगड़ जाते हैं। १।११।१३।१७।२१।२८।३१।३२।३४।३७।३८।४२ वें वर्ष की आयु में विवाह के प्रबल योग आते हैं। कृष्ण पक्ष की ४।६।७।८।९।१०।११ तिथि वालों का वैवाहिक सुख कम होता है, तथा ये व्यभिचार मार्ग के प्रवर्तक होते हैं। परन्तु शक्ल (शुक्ल पक्ष की ३।५।७।१२।१३।१४।१५) तिथि वालों के दो या तीन विवाह तक होते हैं। जिनके हाथ में तिल का चिह्न होता है। उनके प्रायः दो विवाह होते हैं वे एक उपपत्नी भी रखते हैं। इन्हें, प्रेम के जाल में फँसकर कष्ट उठाने पड़ते हैं, और कभी-कभी प्रेम के कारण इन्हें, आत्म-हत्या भी करनी पड़ती है। प्रेम के पक्ष में इन्हें, सफलता कम मिलती है परन्तु, इनके सम्बन्ध में इतना सुनिश्चित है कि, जब इनका प्रेम-मार्ग, वासना से हटकर, विशुद्ध रूप में आ जाता है, उस समय वे पक्के भगवद्भक्त हो जाते हैं। करुणा दया और सहानुभूति—ये तीनों गुण इनमें विशेष रूप से भरे रहते हैं तथा ये सदा सर्व-प्रिय होकर रहते हैं। ८ वर्ष से १४ वर्ष तक के मध्य इनके जीवन में भयंकर बवंडर उठते हैं, और वे अपनी प्रेमिकाओं को ढूँढ़ते हैं। विचारक होने के कारण ये दुश्चरित्र स्त्रियों के फन्दे में नहीं पड़ते पर कभी-कभी अपनी स्वार्थ की निर्बलता के कारण प्रेम के गढ्ढे में गिर जाते हैं। एकान्त स्थान की भावना, बड़ी हितकर हो सकती है।

इनके (इस मास वालों के) मित्रों की संख्या अधिक होती है। अलौकिक प्रभाव के कारण अधिकांश जनता इनकी मित्र हो जाती है। चतुराई और व्यवहार कुशलता इनमें इतनी अधिक होती है कि जिससे ये सदा अपने चारों ओर शान्ति का वातावरण बनाये रखते हैं। इनके प्रायः शत्रु नहीं होते और जो होते भी हैं वे भी अपनी शत्रुता छोड़कर मित्र बन जाते हैं। मंगलवार और गुरुवार वाले अपने सुधारक, अपने वचनों के अमृतमयी प्रभाव के कारण शिक्षित और अशिक्षित (सभी प्रकार की) जनता के मित्र बन जाते हैं। शनिवार और सोमवार वालों के, शत्रु भी अनेक होते हैं, प्रायः इनके शत्रु, अवसर वादी होते हैं; और अवसर आने पर कुछ अनिष्ट कर देते हैं। ३२।३४।३६।३८।४१ वें वर्ष में इन्हें शत्रु द्वारा अधिक अनिष्ट होने की सम्भावना रहती है।

भाग्योदय

इस मास वालों का भाग्योदय १६ वर्षायु से प्रारम्भ होता है। १७।१८।२०।२२।२३।२४।२५।२६।२७।२८।३२।७२।७४ वें वर्षों में उन्नति होती है। ७७ वें वर्ष में गुरु का प्रभाव अधिक पड़ने के कारण दश-दिशा में (चारों तरफ) कीर्ति-कौमुदी फैल जाती है और यह अवसर इतना महत्व-पूर्ण होता है कि, इस मास वाले इससे लाभ

उठाकर अपनी उन्नति कर सकते हैं। यदि इस समय का सदुपयोग नहीं किया गया, तो फिर, जीवन में उन्नति का अवसर मिलना, कठिन ही समझना चाहिए। १५।१२२।२६।३१।४५।४६।५४।५८।६२।६५।६८।७४ वें वर्ष कुछ कष्टकारक होते हैं इनमें आर्थिक एव शारीरिक कष्ट उठाने पड़ते हैं। प्राय ३२ वर्ष के उपरान्त शुभ ग्रहों का योग अच्छा रहता है जिससे, इनकी उन्नति होती चली जाती है। अङ्क १।४।५।६ शुभ, बुधवार शुभ, हरा रङ्ग और सफेद रङ्ग शुभदायक है।

स्वास्थ्य

इस मास वालों के १।२।४।५।७।१०।१४।१८।२२।२६।२६।३५।३७।४६।५३।५४।५८।६२।६६।६७।७१।७४।७८ ८२।६०।६४।६७ वे वर्ष मे रोग उत्पन्न हो सकते हैं। इनकी प्राय चिरायु होती है। ये ११० वर्ष तक जीवित रह सकते हैं। मतान्तर से पूर्णायु ८३ वर्ष की है। असाध्य रोग इन्हें कम होते है। रक्त चाप (ब्लड-प्रेशर) स्नायु-निर्बलता (नर्वस् सिस्टम) के रोग प्राय हो सकते हैं। शुक्ल पक्ष की १।३।४।५ तिथि वालों को राजयक्ष्मा हो जाने का भय रहता है, प्रमेह और धातु-क्षय के रोग (३५ वें वर्ष) आक्रमण करते हैं। २६ वाँ वर्ष रोग कारक अधिक होता है, आयुनाश वाले वर्ष (२३।२८।३७।४६।५३।६७।७१।७४।८५।६३।६७) वताये गये हैं। अन्य व्यक्तियों के आक्रमण द्वारा (शस्त्रास्त्र द्वारा) भी (इस मास वालों की) मृत्यु होती है।

सन्तान

इस मास वालों को सन्तान-सुख अच्छा होता है। परन्तु, सन्तान निकम्मी या जी-जलाने वाली होती है। इस मास वालों को सन्तान-सख्या ६ से १६ तक हो सकती है। कृष्ण पक्ष की २।४।७ तिथि वालों के सन्तान-अभाव, या सन्तान के दुश्चरित्र होने से मानसिक सताप रहता है। शुक्ल पक्ष की ७।८।१०।१२।१४।१५ तिथि वालों के ५ कन्याएँ, ६ पुत्र तक हो सकते हैं तथा कन्याएँ सुशील एव सद्गुणी होती हैं। परन्तु, पुत्रों मे अधिकाश, स्वार्थी एव पिता को दु ख-दायक होते हैं। रविवार, गुरुवार और शुक्रवार वालों के २ कन्याएँ, ५ पुत्र होते हैं, तथा अन्य स्त्री से प्रेम हो जाने पर २ कन्याएँ, ३ पुत्र, उससे भी हो सकते हैं।

अनुकूल समय

प्राय सभी मास (इस मास वालों को) अनुकूल रहते हैं, पर, वैशाख, ज्येष्ठ और भाद्रपद विशेष लाभदायक होते हैं। इन मासों में कार्यारम्भ करने से शीघ्र सफलता मिलती है। बुधवार शुभ, मतान्तर से शुक्रवार, मंगलवार शुभ, २।३।४।७।१०।११।१३।१५ तिथियाँ शुभकारक होती है।

२३ सितम्बर से २१ अक्टूबर तक

यदि आपका जन्म हुआ है तो, मकान के पूर्वी भाग में उत्पन्न हुए होंगे। कमर में ३ व्यक्ति उपस्थित थे। जन्मते ही आप थोड़े रोये थे। आप देश-भक्त और मौजी हैं। स्वभाव से निष्पक्षपाती हैं। आप बहुत दयावान् हैं, और किसी का भी दु ख देखकर आप, भरसक सहायता करने को तैयार रहते हैं। अनुभव-शक्ति अच्छी है। स्वास्थ्य साधारण तौर से ठीक रहेगा। शीत से आपको बचना चाहिए। आपको पर्वतादि जैसे ऊँचे स्थानों पर नहीं जाना चाहिए। गुलाबी और नीला रङ्ग शुभ, शुक्रवार शुभ, अङ्क ५।६।८ शुभ, हीरा या दूधिया (स्फटिक) पत्थर, आपको कवच के समान लाभदायक है। २।४।७।८।१२।१६।२०।२१।३३।४१।५१।६१ वें वर्ष में अनिष्ट कर समय रहेगा। पूर्णायु ८५ वर्ष की है। आपकी मित्रता बहुतेरे लोगों से होगी। धनी पुरुष और पढ़े-लिखे लोग आपका सम्मान करेंगे। आपको मनुष्य जाँचकर, मित्रता करना चाहिए। आपका स्वभाव दयालु होने के कारण, आप, अनजान मनुष्यों से भी शीघ्र ही मित्रता कर लेते हैं। मित्र, आपको बहुधा झुकायेंगे। २३ जुलाई से २२ अगस्त तक, २३ नवम्बर से २१ दिसम्बर तक के मध्य उत्पन्न व्यक्ति, आपके अच्छे, मित्र होंगे। किसी मित्र के साथ कठोरता (सख्ती) का व्यवहार न कीजिए। व्यापार या शिक्षा-सम्बन्धी विषयों

में आप उन्नति करेंगे। शिल्प-कला और सङ्गीत-विद्या में भी आप निपुण हो सकते हैं। द्रव्य अधिक खर्च करेंगे। आप द्रव्य-संचय नहीं कर सकेंगे। आप में, किसी काम का दूसरे दिन के लिए टालने की बुरी आदत है। यदि आप दूसरों से ऋण लें तो, उसे शीघ्र लौटा दें अन्यथा इस विषय में मित्र भी आपके, दुःख के कारण हो जाँयगे। आपका विवाह २० जनवरी से १८ फरवरी तक या २१ मई से २१ जून तक के मध्य में उत्पन्न कन्या के साथ शुभकारक रहेगा। इस समय वाले व्यक्ति, बहुत तीव्र स्वभाव वाले तथा मनमानी करने वाले होते हैं। यदि शिथिलता की गयी तो व निष्कपट नहीं रह सकते।

कार्तिक-मास

इस मास वाले विशेष रूप से सौन्दर्य प्रेमी होते हैं। ये, मितव्ययी बुद्धिमान कलाकार, न्याय शील और संवेदन-शील होते हैं। इनका स्वभाव प्रसन्नता और उदासीनता का मिश्रित रूप होता है। प्रायः ये आनन्द-प्रदान करने वाले तथा मधुर-प्रिय होते हैं। सदा ये आनन्द की खोज में रहते हैं। इनका हृदय सर्वदा उत्साह भरा (उत्साह से भरा) रहता है। ये, सदा मग्न रहते हैं। हास्य-मुखी मानव का सूक्ष्म निरीक्षण और प्रेम करना इनके सहज गुण होते हैं। किसी कार्य की अधिक छान-बीन करना इन्हें रुचिकर नहीं होता प्रायः परिश्रम से भी डरते हैं। जहाँ ये जाते हैं वहीं इनके सहयोगी तैयार हो जाते हैं। दूसरे को अपनाना इनका प्रधान गुण होता है। प्रेम और आनन्द इनके जीवन के, प्रधान लक्ष्य होते हैं। इनका जीवन अच्छे कार्यों में ही लगता है। सार्वजनिक जीवन में इन्हें, अच्छी ख्याति मिलती है, इनका सर्वत्र सम्मान होता है, लोग इनके चरणों की पूजा करते हैं। ये अपनी नैतिकता के कारण कुछ अपने ऐसे अनुयायी बना लेते हैं, जिनसे इन्हें, यश और सम्मान मिलते रहते हैं। इनका स्वभाव मिलनसार होते हुए भी कुछ चिड़चिड़ा होता है, तथा छोटी सी बात को लेकर झुँझलाने लगते हैं। कभी-कभी ये, मौजी स्वभाव (आनन्द-मस्त-भाव) में आकर अपने हृदय की सारी बातें कह डालते हैं, किन्तु प्रायः गम्भीर रहते हैं।

ललित कलाओं में इनकी रुचि आरम्भ से होती है। नाटक के पात्र लेखक, गायक चित्रकार और वक्ता ये, अच्छे हो सकते हैं। प्रायः स्वस्थ रहने पर भी उदर या पाचन-शक्ति पर विशेष ध्यान रखना पड़ता है। ये यात्रा-प्रेमी होते हैं। इन्हें यात्रायें, अधिक करना पड़ती हैं तथा यात्राओं से इन्हें, लाभ ही होता है, हानि नहीं। इनका सहज झुकाव विलास की ओर रहता है, पर अपनी विवेक-बुद्धि के कारण जहाँ तक सम्भव होता है, जितेन्द्रिय होने का प्रयत्न करते हैं। विचारक और प्रचारक (दोनों ही) ये अच्छे हो सकते हैं। प्रयत्न करने पर जज (व्यवस्थापक) डाक्टर (पशु-चिकित्सा) के व्यवसाय ग्रहण कर सकते हैं, पर इनका स्वाभाविक झुकाव शिक्षा की ओर विशेष रहता है। इस मास वाले ८ प्रतिशत शिक्षित तथा २ प्रतिशत ही अशिक्षित होते हैं। किन्तु विद्वानों की संख्या कम होती है। कुछ व्यक्ति संगीतज्ञ होते हैं, और इस व्यवसाय में उन्हें अच्छी सफलता मिलती है। इस मास वालों में आलस्य की मात्रा विशेष रूप से पायी जाती है। यदि आलस्य को छोड़कर ये परिश्रम करने लगें तो फिर देश और समाज के लिए बड़े काम के होते हैं। चरित्र इनका प्रारम्भ में मलिन, प्रौढ़ावस्था में उत्तम (अच्छा) रहता है। धर्म और नीति पर इनकी महत्व-पूर्ण दृष्टि रहती है, लोग इनको उच्च कोटि की वस्तु मानते हैं। कभी-कभी ये संसार के समक्ष नयी वस्तु रखते हैं। प्रारम्भ में तो लोग इनकी वस्तुओं की हँसी उड़ाते हैं किन्तु, कुछ समय बाद इनकी वस्तुओं का बड़ा भारी सम्मान होता है। इस मास वाले कुछ व्यक्ति बड़े स्फूर्तिमान तथा चंचल होते हैं। एक बार जो इनसे परिचित हो जाता है, वह कभी इन्हें, भूल नहीं सकता तथा सदा के लिए इनका बड़ा भक्त हो जाता है।

ये (इस मास वाले) स्वयं बड़े दृढ़-विवेकी होते हैं इसलिए इन्हें प्रभावित करना, बड़ा कठिन कार्य होता है। इनकी जितनी अभिरुचि मातृ प्रेम की ओर रहती है उतनी वनिता-प्रेम की

ओर नहीं। आदर्श-मार्ग को स्थिर रखना भी ये, चाहते हैं तथा आदर्श की पूर्ति के लिए नवीन-नवीन उपाय एवं विधियों को भी प्रचलित करते हैं। ये, अपने जीवन में, अपने हाथ से, सुन्दर गृह-निर्माण कराते हैं तथा स्वयं ऐतिहासिक पात्र एवं प्रात स्मरणीय होते हैं। इनका स्वभाव, इतना कोमल होता है कि, तनिक-सी कड़वी बात भी इन्हें, बाण की भाँति खटकती है। वास्तव मे ये, बडे भारी भावुक होते हैं। अपनी निन्दा, इन्हे, सहन नहीं होती। जो निन्दक होता है, उस पर इनके, प्रतिहिंसा के भाव रहते हैं। जब तक उससे बदला नहीं ले लेते, तब तक इन्हे, सन्तोष नहीं होता। घर्षित किये जाने पर, प्रबल विरोध का भी सामना करने को तैयार रहते हैं और अन्तिम साँस तक, अपने पक्ष का समर्थन करते हैं। कभी-कभी कर्तव्य से प्रेरित होकर भी इन्हें, अपने पक्ष का समर्थन करना पडता है। इस मास वाले कृषक, कृषि मे सफल नहीं हो पाते. क्योंकि, इनसे शारीरिक श्रम अधिक नहीं हो सकता। वैसे तो ये, कृषि करते हैं, पर उसमें इन्हें, न तो आनन्द ही आता है, और न उसमे रुचि-विशेष ही रख पाते है। हाँ, शाक-भाजी की उपज ये, अच्छी कर सकते हैं तथा वाटिका-कार्य भी निपुणता-पूर्वक कर सकते हैं। इनमें, विविध प्रकार के पुष्प, वृक्ष आदि लगाने की अच्छी योग्यता होती है। अपनी प्रखर बुद्धि के कारण, बगीचे की शोभा को, अल्प खर्च मे तथा अल्प समय में चमका देते हैं।

कृष्ण पक्ष की द्वितीया को २११४६ इष्ट-काल वाले, बडे भाग्यशाली होते हैं, या इन्हे, नाना प्रकार के सासारिक भोग उपलब्ध होते हैं। इसी तिथि को ४६।१४ से ५४।३८ इष्ट-काल तक के मध्य वाले, प्राय दुर्भाग्य-शाली होते है। यों तो, ये भी कर्मठ होते हैं तथा चुपचाप, अपने काम को पूरा करते है। प्राय ये, कपडा, किराना और घी के व्यापार करते हैं, इन्हे, कपडा, शक्कर और रुई के मिलों मे अधिक लाभ हो सकता है। जिनका भाग्य अच्छा होता है, वे, अपने सहयोगियों की सहायता से रंग-व्यापार मे अच्छा लाभ उठाते हैं। सोना-चाँदी के व्यापार मे कम आय होती है। रेश, सट्टा, लाटरी से २७ वर्ष की आयु में, कुछ लाभ हो जाता है परन्तु ३८।३६।४० वें वर्ष मे (अशुभ ग्रहों के प्रभाव से) सट्टा-जुआँ आदि मे धन-हानि होती है। कृष्ण पक्ष की १२।१३।१४ तिथि वाले, अच्छे व्यापारी होते हैं। ये, दान, पुण्य और परोपकार के अनेक कार्य करते हैं तथा ये, प्राय असाधारण-पुरुष होते हैं, और समाज या देश के भीतर, एक नई स्फूर्ति उत्पन्न कर देते हैं। इनके द्वारा, जीवन में अनेक महत्त्व-पूर्ण कार्य होते हैं, परन्तु, शुक्ल पक्ष वाले, अधिक भाग्य-शाली होते हैं। भयानक विपत्ति के आने पर भी व्याकुल नहीं होते, और विघ्न बाधाओं को पार करते हुए, अपने लक्ष्य को प्राप्त कर लेते है। इनका जीवन, समाज और देश के लिए, बड़ा लाभदायक होता है। इस मास वालो का भाग्य, विद्या के द्वारा जागृत होता है। पडोसी व्यक्ति भी इनसे, प्रसन्न रहते हैं, और समय पडने पर इनकी सहायता करते है। यों तो इस मास वालों मे, किसी को जीवन में, कठिनाइयाँ, अधिक से अधिक उठानी पड़ती है, परन्तु फिर भी ये, प्रसन्न और गति-शील रहते हैं। काम करने की इनमें, अपूर्व शक्ति होती है, और कुछ व्यक्ति, इस प्रकार से, महापुरुष भी हो जाते है।

विवाह और मित्रता

इस मास वाले, विवाह और मित्रता करने में, बडे चतुर होते है। इनके, मित्रों की एक मण्डली रहती है। परन्तु, इनके, प्राय सबके सब मित्र, स्वार्थी होते हैं। समय पडने पर एक भी मित्र, काम नहीं आता, और आवश्यकता के समय, मुँह छिपाकर भाग जाते हैं। इस मास वालों का, अधिकाश धन, मित्रों के स्वागत मे, खर्च होता है। जो व्यक्ति, मित्रों से सजग रहते हैं वे, अवश्य उन्नति करते हैं। इनका विवाह प्राय शीघ्र हो जाता है। २।४।६।८।१०।१२।१४।३० तिथि वालो का कुछ देर से, तथा १।३।५।७।६।११।१३।१५ तिथि वालों का शीघ्र (अल्पावस्था मे) विवाह हो जाता है। विवाह के वर्ष ८।११।१३।१४।१५।१७।१८।१६।२०।२४।२५।२७।२८।३०। ३२।३४।४२।४६।५२ हैं। रविवार को १६।४६ इष्ट-काल वालों के दो विवाह अवश्य होते हैं। इसी दिन २७।४५ इष्ट-काल वालों के तीन विवाह होते हैं। सोमवार को १७।४१ इष्ट-काल वालों का एक विवाह होता है।

सम घटी तथा विषम पल इष्टकाल वालों का विवाह नहीं होता। हाँ वे अपना अनुचित सम्बन्ध अवश्य ही रखते हैं। मङ्गलवार और बुधवार वालों का वैवाहिक सुख अच्छा होता है तथा इन्हीं दोनों दिनों में ४२।४६ इष्ट-काल वाले, निश्चित रूप से, एक ही विवाह करते हैं। परन्तु ४३।४७ इष्ट-काल वाले बहु-विवाह करते हैं या अनेक स्त्रियों से सम्बन्ध रखते हैं। शुक्रवार को १४।१६ इष्ट-काल वाले, एक ही विवाह से सन्तुष्ट रहते हैं। गुरुवार को २६।११ इष्ट-काल वाले संयमी होते हैं और वैवाहिक वार्ता संवाद को ठुकरा देते हैं। २६।४४ इष्ट-काल वाले विवाह करने पर भी, सुखी नहीं होते। शनिवार की रात वाले, प्रायः एक उपपत्नी रखते हैं तथा प्रत्यक्ष रूप से दो विवाह करते हैं। इनका दाम्पत्य-जीवन, कलह-पूर्ण होता है कभी-कभी वे विरक्त भी हो जाते हैं। २३।२८ इष्ट-काल वालों का दाम्पत्य जीवन सुखी होता है पत्नी अत्यन्त प्रेम करती है, तथा सदा आज्ञा का अनुसरण करती है।

भाग्योदय

इस मास वालों का भाग्य अच्छा होता है, अतएव समस्त जीवन में, कठिनाइयाँ कम ही आती हैं। प्रायः भाग्योदय २४ वर्षायु से होता है। मतान्तर से ५ वर्षायु बतायी गयी है। पूर्ण भाग्योदय ३५ वर्ष की आयु में हो पाता है। इनकी उन्नति प्रायः १६।१७।१६।२२।२५।२७।२८।३०।३३।३७।३६।४०।४१।४५।४७।४८।५२।५४।५७ ६७।६८।६६।७१ वें वर्षों में विशेष होती है। १५।१८।२०।३१।३४।४३।४४।४६।४६।५५।६३।६६।६७।७८ वें वर्षों में कुछ कठिनाइयाँ आती हैं। विशेष रूप से ३४ और ३६ वें वर्ष अधिक कष्ट होता है, इन दोनों वर्षों में चिन्ताओं के साथ-साथ नाना प्रकार की अन्य भी बाधायें आती हैं जिससे वे अपने व्यापार में पिछड़ जाते हैं और इस बार के धक्के से कुछ पीछे हट भी जाते हैं। यद्यपि ३८।३९ वें वर्ष, उन्नति के योग हैं, परन्तु, प्रतिकूल परिस्थिति के कारण, ये दोनों वर्ष भी कष्टदायक हो सकते हैं। क्योंकि वे, सारे कारबार बन्द हो जाते हैं और वे ऐसे गोरख-धंधे में फँस जाते हैं कि जिससे इन्हें, निकलने का मार्ग ही नहीं मिलता। कुछ लोग इस परिस्थिति से उद्विग्न-चित्त होकर आत्म-हत्या तक कर लेते हैं। इसलिए ३८।३६ वें वर्ष को सतर्कता से बिताना चाहिए। यों तो, इस मास वाले धनी होते हैं, इन्हें, पैतृक सम्पत्ति भी मिलती है। इनके लिए २।२४।२५।२८।३।३६।४०।४२। ४५।४६।५३।५७।६५ वें वर्ष में विशेष धन-लाभ होता है। २१।२३।२७।३६।४१।४३।५।५६।६ वें वर्ष में आर्थिक सङ्कट के हैं। अचानक लाभ वाले कार्यों से ४५ से ५६ वर्ष के मध्य में आय होती है पर एक बार धन-हानि भी उठानी पड़ती है। चैत्र वैशाख भाद्रपद पौष मास उत्तम शुक्रवार शुभ मङ्गलवार अशुभ २।४।७।८।११। १३।१४।१५ तिथियाँ शुभ १।३ तिथियाँ अशुभ एवं शेष ६।६।१।१२।३ तिथियाँ मध्यम ५।६।८ अङ्क शुभ होते हैं।

स्वास्थ्य

इस मास वालों को हैजा-प्लेग जैसे संक्रामक रोगों का भय रहता है। इनका बाल्यकाल तो, कुछ आरोग्य ही बीतता है। १४।१५।१७।१८।२२।२४।२६।३८।४२।४४।४७।४६।५३।५७।५६।६०।६८।६१।६३।६४।६७।७२। ७३।७५ वें वर्ष में रोगों से कष्ट उठाने पड़ते हैं। इन्हीं वर्षों में अल्पायु सरीखे घातक योग भी होते हैं। आयु मध्यम होती है। पूर्णायु ८५ वर्ष की हो सकती है। परन्तु ६५ वर्ष से अधिक, कुछ-एक लोग आयु बढ़ा पाते हैं।

सन्तान

इस मास वालों को, सन्तान-सुख होता है। प्रायः ६ पुत्र और तीन कन्यायें तक, उत्पन्न हो सकती हैं। रविवार की रात वालों को पुत्र-सुख उत्तम और कन्या-सुख अल्प होता है। रविवार सोमवार और बुधवार वालों को, सन्तान-सुख साधारण होता है। मङ्गलवार को दिन वाले २ पुत्र २ कन्या से सम्पन्न रात वाले ४ पुत्र, १ कन्या से सम्पन्न होते हैं। शुक्रवार को रात वाले प्रायः सन्तान-सुख नहीं पाते। शनिवार वालों को, ३ पुत्र २ कन्या तक, सन्तान हो सकती हैं।

२२ अक्टूबर से २२ नवम्बर तक

यदि आपका जन्म हुआ हो तो, मकान के पश्चिमी भाग में उत्पन्न हुए होंगे। कमरे में ३ व्यक्ति उपस्थित थे। आप, जन्मते ही रोये नहीं; कुछ समय लगा। भय और दुःख के समय आप, अधीर नहीं होते, और उसके बन्धन से निकलने का उपाय सोचते हैं। आपको, स्वास्थ्य ठीक रखने के लिए, सर्वदा शीतल जल का उपयोग करना चाहिए। जल से आपको घात है, अतः जलाशय से दूर रहिए। मङ्गलवार, गुरुवार शुभ, अङ्क १।२।४।७।६ शुभ है। १।१३।१५।२५।३५।४५ वें वर्ष अशुभ योग है। पूर्णायु ७५ वर्ष की है। मित्र और शत्रु आपके, दोनों समान संख्यक हैं। आपके मित्र, अधिकतर चापलूस हैं, इसलिए उनमें अपनी गुप्त बात न बताइए। २२ जून से २२ जुलाई तक, २० अप्रैल से २० मई तक, २२ दिसम्बर से १६ जनवरी तक के मध्य में उत्पन्न व्यक्तियों से, आपकी मित्रता रहेगी। २० जनवरी से १६ फरवरी तक, २३ जुलाई से २२ अगस्त तक जन्म वाले, आपके शत्रु होंगे। प्रायः आप गर्वशील होंगे। आपके जीवन के पूर्वार्ध में अधिक सफलता मिलेगी। जीवन में पर्याप्त रूप से धन्धे करने के पहिले समय में आप, बहुत से धन्धे करेंगे, किन्तु वे, सभी एक-एक करके नष्ट हो जायेंगे। पैतृक धन की प्राप्ति होगी। परन्तु, उस पर बहुतेरे झगडे (अदालती) होंगे। आप, बहुत यात्राएँ करेंगे। आप, सामाजिक कार्यों में सफलता प्राप्त कर सकते हैं। आप, डाक्टर या इन्जीनियर हो सकते हैं। शिक्षा-कार्य में विशेष रुचि रहेगी। २२ जून से २२ जुलाई तक, १६ फरवरी से २० मार्च तक के मध्य में उत्पन्न कन्या के साथ विवाह करना उत्तम होगा। दूसरों की कही हुई बातों पर विश्वास न कर बैठिए। कोई गर्म स्वभाव के तथा दृढ-प्रतिज्ञ होते हैं। आपको गहरे पानी से नहाने में सतर्क रहना चाहिए। आप पर प्रेम-बर्ताव द्वारा विजय पायी जा सकती है।

अगहन (मार्गशीर्ष) मास

इस मास वाले, चुम्बकीय आकर्षण-शक्ति वाले होते हैं। इनकी शक्ति का विकाश, चरम रूप से हो सकता है। डिक्टेटरशिप इन्हे, अधिक प्रिय होती है और सब कार्यों में ये, अपनी ही बात रखना चाहते हैं। कृष्णपक्ष वाले, पराक्रमी होते हैं। ज्ञान-विज्ञान, राजनीति आदि अनेक विषयों के पण्डित होते हैं। इस मास वालों के पराक्रम के समक्ष, बड़ी से बडी शक्ति झुक जाती है। धैर्य और गतिशीलता, इनके जीवन में कूट-कूटकर भरी होती है। प्रारम्भिक जीवन में विलासी होते हैं, परन्तु, अचानक इनका जीवन ऐसा बदलता है कि, जिससे इन्हें, त्यागमय परिश्रमी-जीवन बिताना पडता है। कुछ लोग, महान पुरुष तक हो जाते हैं, इनके चमत्कारी भाग्य के समक्ष, ससार को आश्चर्यान्वित होना पड़ता है। कुछ लोगों में ईर्षा-द्वेष की भावना, अधिक प्रबल होती है। कभी-कभी ये, अन्य लोगों के लिए कष्टदायक (खतरनाक) होते हैं, तथा इनसे रक्षा पाना, सरल काम नहीं होता। एक बार जिसके ऊपर, इनकी वक्र-दृष्टि (टेढ़ी नजर) हो जाती है फिर उसे, बिना नष्ट किये, नहीं छोड़ते हैं। यद्यपि ये, दृढ-प्रतिज्ञ होते हैं पर, अवसर पड़ने पर, कभी-कभी अपनी प्रतिज्ञा छोड़ भी देते हैं, अपेक्षा कृत, वैशाख वालों से कुछ मृदु होते हैं। इनकी शक्ति, इतनी अधिक होती है जिससे, शत्रु, बिना ननु नच (चूँ चपड़) किए नम्रीभूत हो जाते हैं। इनका चरित्र, साधारणतया दृढ होता है। परन्तु, कृष्णपक्ष वालों का चरित्र, उतना अच्छा भी नहीं होता। वासना इनमें, इतनी अधिक प्रबलता से रहती है जिससे इन्हे, कभी दुराचार की ओर झुकना पड़ता है। इस मास वाले, स्वय अपने ही प्रभु (स्वामी) होते हैं। किसी के होकर रहने में, इनकी रुचि नहीं होती। प्रशसा एव चाटुकारिता (चापलूसी) से दूर भागते हैं क्योंकि ये, स्पष्ट-वादिता-प्रिय होते हैं। ये मन्त्री, अभिनेता, सर्जन, प्रोफेसर, शिक्षक, वैज्ञानिक, कृषक और साधारण व्यापारी होते हैं। प्रबन्ध-कार्य (आई सी एस) में बहुत सफलता पाते हैं। यदि आत्म-संयम तथा आत्म-नियन्त्रण रखना, सीख जायँ तो इन्हें, व्यापार में भी सफलता मिल सकती है। मद्दन-शीलता, प्रचुर मात्रा में, इनमें, पायी जाती है।

कठोर से कठोर विपत्ति में भी ये उद्विग्न नहीं हो पाते। अवसर पड़ने पर छोटे से छोटे कार्य भी, प्रसन्नता से कर डालते हैं। आदर की आकांक्षा अधिक होती है। तनिक सा अपमान होने पर इनकी अन्तरात्मा विद्रोह कर उठती है। यात्रा अधिक करना पड़ता है। देश-विदेशों में परिभ्रमण कर, अपने ज्ञान-भाण्डार की वृद्धि करते हैं।

शुक्ल पक्ष वाले, गणित तथा भूगोल (ज्योतिष) में प्रवीणता प्राप्त करते हैं। छात्रवर्ग या कर्मचारियों पर अपना अनुशासन, सुन्दर ढंग से चला सकते हैं। प्राचीन भाषा के प्रचारक होकर विदेश में भी जाते हैं। ये दूसरों की भलाई के लिए बड़े-बड़े कष्ट उठाते हैं। और ये, कभी-कभी दूसरों को उन्हीं की भलाई के लिए, उन्हें हो, कष्ट पहुँचाते हैं तथा कष्ट भोगकर काम करने की रुचि विशेष होती है। परन्तु, हाथ-पर हाथ धर कर बैठे रहना इन्हें रुचिकर नहीं होता। ये, चुभती हुई या हास्य-युक्त बातें कहते हैं और कठिनता के समय बड़ी शान्ति के काम-कर्ता होते हैं। इनका स्वभाव कुछ क्रोधी, स्वाभिमानी एवं निर्भीक होता है। इस मास वालों का स्वास्थ्य अच्छा होता है, बहुत कम रोगी होते हैं। लोग इन्हें, अधिक प्रेम करते हैं, और अवसर पड़ने पर इनके, सहायक होते हैं। इनकी कार्य-प्रवीणता के आगे, असफलता को भी झुकना पड़ता है। इनके हाथ से अनेक कार्यों का श्रीगणेश होता है तथा इन्हें, गड़ा धन या भूमि के नीचे होने वाले कार्यों (खनिज) से धन मिलता है। कृष्ण पक्ष की १।३।८।११।१३।१४ तिथि वाले मध्यम कोटि के धनी तथा ७।१०।१ तिथि वाले, उच्च कोटि के धनी एवं ४।५।६ तिथि वाले अल्प धनी या दरिद्री होते हैं। शुक्ल पक्ष की १।२।३।७।१०।११।१२।१४।१५ तिथि वाले साधारण धनी तथा ३।४ तिथि वाले, महा दरिद्र शेष तिथि (६।८।९।१३) वाले, धनी होते हैं। हाँ इस मास वालों का एक मुख्य गुण है कि, इनके सम्पर्क (प्रभाव) में आकर उदण्ड व्यक्ति इनका आदेश-पालन करने लगता है। जिस पर इनकी कृपा होती है, उसका ये सदा साथ देते हैं। यद्यपि इनका घरेलू जीवन सुख-शान्ति का नहीं होता, पर सामाजिक जीवन बड़ा आदर्श-मय होता है। सदा ये समाज के मुखिया बनकर उनका संचालन करते हैं।

इस मास वाले जो कृषक हो जाते हैं वे भी अपने यहाँ की पंचायत के सर्वे-सर्वा होते हैं; और समाज का संचालन सुन्दर ढंग से करते हैं। इस मास वाले उग्र स्वभाव के तथा इन्जीनीयर होते हैं। गृह-निर्माण कला में अपनी समानता नहीं रखते। प्रतिभा इनकी विलक्षण होती है और दस्तकारी के कार्मों में अपनी प्रतिभा का सदुपयोग करते हैं। मतान्तर से इस मास वाले शारीरिक या बौद्धिक योद्धा होते हैं और इनका प्रारम्भिक जीवन बड़ी कठिनता से बीतता है। अपने साहस और दृढ़-संकल्प के कारण अन्त में इन्हें सफलता मिलती है। ये बड़े आवेगशील स्वतन्त्र एवं शीघ्र काम करने वाले होते हैं। स्वतंत्रता इन्हें इतनी अधिक प्रिय होती है कि ये लौकिक परतन्त्रता तो क्या पारलौकिक परतन्त्रता की बेड़ी तोड़ फेंकने का भरसक प्रयत्न करते हैं, विरक्त या परमहंस के रूप में अपना जीवन सफल करते हैं। जब गोचर में मंगल-शनि अष्टम में इनके, आते हैं तब इनका कलह-मय समय रहता है। प्रोफेसरी (शिक्षा-कार्य) में ये सफल नहीं हो पाते पर सफल कवि या दार्शनिक अवश्य हो सकते हैं। कविता इन्हें अधिक-प्रिय होती है। ये लोग, सफल सैनिक बनते हैं और अपने *साहस से किसी आन्दोलन के नेता बन जाते हैं।* इनकी पहुँच संसार के प्रभावशाली व्यक्तियों के पास तक हो जाती है इन्हें, स्त्रियों से सावधान रहने की आवश्यकता पड़ती है। जब ये किसी नारी के प्रेम में फँस जाते हैं तब अपना सर्वस्व विनाश कर डालते हैं।

इस मास वालों की भावना सदा अपनी महत्ता प्रदर्शित करने की होती है। ये सदा यही चाहते हैं कि लोग इन्हें स्वामी या श्रेष्ठ समझें। इनकी दृष्टि में अपना गौरव सबसे बड़ा होता है। इसलिए इन्हें अपनी आलोचना सुनना प्रिय नहीं है। ये स्वयं अच्छे आलोचक होते हैं। न्यूनाधिक रूप में आत्मश्लाघा इनमें सब से अधिक पाई जाती है। इनके जीवन में अनेक दुर्घटनायें होती हैं अग्नि या बारूद से जलने का इन्हें सदा भय रहता है। जरा भी असावधानी में बड़ी हानि हो जा सकती है, ये कुछ ऐसे काम करते हैं, जिनमें आत्म-रक्षा की बड़ी आवश्यकता पड़ती है विशेष रूप से ज्वलन पदार्थ हानि

पहुँचाते हैं। इनमें नपुंसकता, समय से पहिले ही आ जाती है। कुछ लोग, मादक वस्तु के विशेष व्यसनी होते हैं, तथा कुछ की मृत्यु भी, मादक पदार्थों के कारण हो जाती है।

विवाह और मित्रता

इस मास वालों का विवाह ११-१३-१७-१८-१६-२०-२२-२३-२५-२७-२८-३०-३२-३३-३५-३६-३८-४२-४६ वें वर्ष की आयु में होता है। कृष्ण पक्ष की १।३।४।५।६।११।१४।३० तिथि वाले, दो विवाह करते हैं, २।४।६।७।८।१०।१२।१३ तिथि वाले, एक विवाह करते हैं। रविवार, सोमवार, मंगलवार और गुरुवार वालों का विवाह अवश्य होता है। शुक्रवार की रात वालों को, पत्नी का वियोग शीघ्र होता है। तथा आधी रात के बाद वालों को, दो विवाह करना पड़ता है। शुक्रवार को मध्यान्ह वाले, एक विवाह कर पाते हैं, तथा ये, पर-स्त्री से भी प्रेम करते हैं। बुधवार और शनिवार वाले दो विवाह करते हैं। इस मास वालों की, मित्र-संख्या अधिक होती है। ये, जहाँ रहते हैं वहीं, प्रेम का वातावरण बनाये रखते हैं। इनके, सच्चे मित्र भी कई हो सकते हैं। शत्रु की संख्या भी अधिक होती है पर उनसे, इन्हें, हानि नहीं पहुँचती।

भाग्योदय

इस मास वालों का जीवन, प्राय आनन्द-पूर्वक व्यतीत होता है। भाग्योदय १६ या १८ वर्ष से प्रारम्भ हो जाता है। १४-१८-२०-२१-२३-२४-४२-४५-५५-५७-५६-६१-६२-६३-७४ वें वर्ष में विशेष दुःख होता है। २८ वर्ष से ३५ वर्ष तक की आयु का समय, विशेष महत्त्वपूर्ण होता है जीवन का पूर्ण निर्माण, प्राय इसी समय में हो पाता है। ३५ वर्ष स ४२ वर्ष तक का जीवन सफलता का होता है। ४६ वर्ष से ५६ वर्ष तक का जीवन, स्वास्थ्य के लिए कुछ हानिकारक होता है तथा आर्थिक, सामाजिक और राजनैतिक कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। मंगलवार शुभ, १-२-४-७-६ अंक शुभ, वैशाख, श्रावण, कार्तिक, अगहन मास शुभ, ४।५।७।११।१३।१५ तिथियाँ अशुभ, २।६।८।६।१०।१२।१४।३० तिथियाँ मध्यम होती है। इस मास वालों की, प्राय आर्थिक स्थिति अच्छी होती है। प्राय ये लोग, अच्छे धनी होते हैं। युवावस्था में, अच्छा लाभ कर पाते हैं। वृद्धावस्था में, आर्थिक-संकट उत्पन्न होता है। २४-२७-२८-३२-३५-३६-४०-४८-५६ वें वर्ष में, विशेष लाभ होता है। ३६-३८-४४-४६-६४ वें वर्ष में, आर्थिक-संकट हो सकता है।

स्वास्थ्य

इस मास वालों की पूर्णायु होती है। बहुत कम व्यक्तियों का अकाल-मरण होता है। हाँ, रोग उत्पन्न होते हैं। एलोपैथिक (डाक्टरी) चिकित्सा स लाभ नहीं होता। आयुर्वेदिक लाभदायक होता है। ३-८-१०-१२-१३-१६-२०-२२-२३-२५-२६-२७-२६-३१-३३-३८-४२-४५-४६-४६-५२-५४-५५-५७-५६-६५-७२-७४-७६ वें वर्ष में, रोग द्वारा कष्ट की सम्भावना होती है। शुक्ल पक्ष वालों को, बालारिष्ट होता है। इसलिए मतान्तर से ८।२१।२८ वें दिन, १।३।६।७।६।११ वें मास, कष्ट कारक माने गये हैं। वात-कफ-कारक वस्तुओं का सेवन, त्याग करना चाहिए।

सन्तान

इस मास वालों को, पुत्र की अपेक्षा, कन्या-सुख अधिक होता है। शुक्ल पक्ष वालों को, ६ पुत्र ५ कन्याएँ तक हो सकती हैं। कृष्ण पक्ष वालों को, ४ कन्या २ पुत्र तक हो सकते हैं।

२३ नवम्बर से २१ दिसम्बर तक

यदि आपका जन्म हुआ हो तो, मकान के वायव्य कोण (पश्चिमोत्तर) में उत्पन्न हुए होंगे। कमरे में ४ व्यक्ति उपस्थित थे। जन्मते ही आप, नहीं रोये, कुछ समय लगा। अवसर आने पर आपको, किसी भी अच्छे काम में चूकना नहीं चाहिए। व्यापार में लाभ होगा। प्रत्येक कार्य में आपको, सफलता मिलेगी। आप, दूर दर्शी, किन्तु क्रोधी हैं। सम्भव है कि, कभी-कभी, तीव्र शब्द बोलने के कारण, आपको,

कठोर से कठोर विपत्ति में भी ये उद्विग्न नहीं हो पाते। अवसर पड़ने पर छोटे से छोटे काम भी, प्रसन्नता से कर डालते हैं। आदर की आकांक्षा अधिक होती है। तनिक सा अपमान होने पर इनकी अन्तरात्मा, विगड़ कर उठती है। यात्रा अधिक करना पड़ता है। देश-विदेशों में परिभ्रमण कर, अपने ज्ञान-भाण्डार की वृद्धि करते हैं।

शुक्ल पक्ष वाले, गणित तथा भूगोल (ज्यामिती) में प्रवीणता प्राप्त करते हैं। छात्रवर्ग या कर्मचारियों पर अपना अनुशासन सुन्दर ढंग से चला सकते हैं। प्राचीन भाषा के प्रचारक होकर विदेश में भी जाते हैं। ये दूसरों की भलाई के लिए बड़े-बड़े कष्ट उठाते हैं। और ये, कभी-कभी, दूसरों को, उन्हीं की भलाई के लिए उन्हें ही कष्ट पहुँचाते हैं तथा कष्ट भोगकर श्रम करने की रुचि विशेष होती है। परन्तु, हाथ-पर हाथ धर कर बैठे रहना इन्हें रुचिकर नहीं होता। ये बुभती हुई या हास्य-युक्त बातें करते हैं और कठिनता के समय बड़ी शान्ति के काम-कर्ता होते हैं। इनका स्वभाव कुछ क्रोधी, स्वाभिमानी एवं निर्भीक होता है। इस मास वालों का स्वास्थ्य अच्छा होता है बहुत कम रोगी होते हैं। लोग इन्हें अधिक प्रेम करते हैं, और अवसर पड़ने पर इनके, सहायक होते हैं। इनकी कार्य-प्रवीणता के आगे, असफलता को भी झुकना पड़ता है। इनके हाथ से अनेक कार्यों का श्रीगणेश होता है तथा इन्हें, गड़ा धन या भूमि के नीचे होने वाले कार्यों (खनिज) से धन मिलता है। कृष्ण पक्ष की १।३।८।११।१३।१४ तिथि वाले मध्यम कोटि के धनी तथा ७।६।१ तिथि वाले, उच्च कोटि के धनी एवं ४।५।६ तिथि वाले अल्प धनी या दरिद्री होते हैं। शुक्ल पक्ष की १।७।४।७।१०।११।१२।१४।१५ तिथि वाले साधारण धनी तथा ३।४ तिथि वाले, प्रायः दरिद्र शेष तिथि (६।८।६।१३) वाले धनी होते हैं। हाँ इस मास वालों का एक मुख्य गुण है कि, इनके सम्पर्क (प्रभाव) में आकर उद्दण्ड व्यक्ति इनका आदेश-पालन करने लगता है। जिस पर इनकी कृपा होती है उसको ये सदा साथ देते हैं। यद्यपि इनका घरेलू जीवन सुख-शान्ति का नहीं होता, पर सामाजिक जीवन बड़ा आदर्श-मय होता है। सदा से, समाज के मुखिया बनकर उसका संचालन करते हैं।

इस मास वाले जो कृषक हो जाते हैं वे भी अपने यहाँ की पंचायत के सर्वे-सर्वा होते हैं; और समाज का संचालन सुन्दर ढंग से करते हैं। इस मास वाले उग्र स्वभाव के तथा इन्जीनीयर होते हैं। गृह-निर्माण कला में अपनी समानता नहीं रखते। प्रतिभा इनकी विलक्षण होती है और दस्तकारी के कामों में अपनी प्रतिभा का सदुपयोग करते हैं। मतान्तर से इस मास वाले शारीरिक या बौद्धिक योद्धा होते हैं और इनका प्रारम्भिक जीवन बड़ी कठिनता से बीतता है। अदम्य साहस और दृढ़-संकल्प के कारण अन्त में इन्हें, सफलता मिलती है। ये बड़े आवेगशील स्वतन्त्र एवं शीघ्र काम करने वाले होते हैं। स्वतंत्रता इन्हें इतनी अधिक प्रिय होती है कि ये लौकिक परतन्त्रता तो क्या पारलौकिक परतन्त्रता की बेड़ी तोड़ फेंकने का भरसक प्रयत्न करते हैं, विजयी या परमहंस के रूप में अपना जीवन सफल करते हैं। जब गोचर में मंगल-शनि अष्टम में इनके आते हैं तब इनका कलह-मय समय रहता है। प्रोफेसरी (शिक्षा-काम) में ये सफल नहीं हो पाते पर सफल कवि या दार्शनिक अवश्य हो सकते हैं। कविता इन्हें अधिक-प्रिय होती है। ये लोग सफल सैनिक बनते हैं और अपने साहस से किसी आन्दोलन के नेता बन जाते हैं। इनकी पहुँच, संसार के ख्यातिप्राप्त व्यक्तियों के पास तक हो जाती हैं इन्हें, स्त्रियों से सावधान रहने की आवश्यकता पड़ती है। जब ये किसी नारी के प्रेम में फँस जाते हैं तब अपना सर्वस्व विनाश कर डालते हैं।

इस मास वालों की भावना, सदा अपनी महत्ता प्रदर्शित करने की होती है। ये सदा यही चाहते हैं कि लोग इन्हें स्वामी या श्रेष्ठ समझें। इनकी दृष्टि में अपना गौरव सबसे बड़ा होता है। इसलिए इन्हें, अपनी आलोचना सुनना प्रिय नहीं है। ये स्वयं अच्छे आलोचक होते हैं। न्यूनाधिक रूप में अहम्मन्यता इनमें सब से अधिक पायी जाती है। इनके जीवन में अनेक दुर्घटनाएँ होती हैं, अग्नि या बारूद से जलने का इन्हें सदा भय रहता है। जरा सी असावधानी से बड़ी हानि हो जा सकती है, ये कुछ ऐसे कार्य करते हैं जिसमें आत्म-रक्षा की बड़ी आवश्यकता पड़ती है विशेष रूप से ज्वलन पदार्थ हानि

पहुँचाते हैं। इनमें नपुंसकता, समय से पहिले ही आ जाती है। कुछ लोग, मादक वस्तु के विशेष व्यसनी होते हैं, तथा कुछ की मृत्यु भी, मादक पदार्थों के कारण हो जाती है।

विवाह और मित्रता

इस मास वालों का विवाह ११-१३-१७-१८-१६-२०-२२-२३-२५-२७-२८-३०-३२-३३-३५-३६-३८-४२-४६ वें वर्ष की आयु में होता है। कृष्ण पक्ष की १।३।४।५।६।११।१४।३० तिथि वाले दो विवाह करते हैं, २।४।६।७।८।१०।१२।१३ तिथि वाले, एक विवाह करते हैं। रविवार, सोमवार, मंगलवार और गुरुवार वालों का विवाह अवश्य होता है। शुक्रवार की रात वालों को, पत्नी का वियोग शीघ्र होता है। तथा आधी रात के बाद वालों को, दो विवाह करना पड़ता है। शुक्रवार को मध्यान्ह वाले, एक विवाह कर पाते हैं, तथा ये, पर-स्त्री से भी प्रेम करते हैं। बुधवार और शनिवार वाले दो विवाह करते हैं। इस मास वालों की, मित्र-संख्या अधिक होती है। ये, जहाँ रहते हैं वहीं, प्रेम का वातावरण बनाये रखते हैं। इनके, सच्चे मित्र भी कई हो सकते हैं। शत्रु की संख्या भी अधिक होती है पर उनसे, इन्हें, हानि नहीं पहुँचती।

भाग्योदय

इस मास वालों का जीवन, प्राय आनन्द-पूर्वक व्यतीत होता है। भाग्योदय १६ या १८ वर्ष से प्रारम्भ हो जाता है। १४-१८-२०-२१-२३-२४-४२-४५-५५-५७-५६-६१-६२-६३-७४ वें वर्ष में विशेष दुःख होता है। २८ वर्ष से ३५ वर्ष तक की आयु का समय, विशेष महत्त्वपूर्ण होता है जीवन का पूर्ण निर्माण, प्राय इसी समय में हो पाता है। ३५ वर्ष से ४२ वर्ष तक का जीवन सफलता का होता है। ४६ वर्ष से ५६ वर्ष तक का जीवन, स्वास्थ्य के लिए कुछ हानिकारक होता है तथा आर्थिक, सामाजिक और राजनैतिक कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। मंगलवार शुभ, १-२-४-७-६ अंक शुभ, वैशाख, श्रावण, कार्तिक, अगहन मास शुभ, ४।५।७।११।१३।१५ तिथियाँ अशुभ, २।६।८।६।१०।१२।१४।३० तिथियाँ मध्यम होती हैं। इस मास वालों की, प्राय आर्थिक स्थिति अच्छी होती है। प्राय ये लोग, अच्छे धनी होते हैं। युवावस्था में, अच्छा लाभ कर पाते हैं। वृद्धावस्था में, आर्थिक-संकट उत्पन्न होता है। २४-२७-२८-३२-३५-३६-४०-४८-५६ वें वर्ष में, विशेष लाभ होता है। ३६-३८-४४-४६-६४ वें वर्ष में, आर्थिक-संकट हो सकता है।

स्वास्थ्य

इस मास वालों की पूर्णायु होती है। बहुत कम व्यक्तियों का अकाल-मरण होता है। हाँ, रोग उत्पन्न होते हैं। एलोपैथिक (डाक्टरी) चिकित्सा से लाभ नहीं होता। आयुर्वेदिक लाभदायक होता है। ३-८-१०-१२-१३-१६-२०-२२-२३-२५-२६-२७-२६-३१-३३-३८-४२-४५-४६-४६-५२-५४-५५-५७-५६-६५-७२-७४-७६ वें वर्ष में, रोग द्वारा कष्ट की सम्भावना होती है। शुक्ल पक्ष वालों को, बालारिष्ट होता है। इसलिए मतान्तर से ८।२१।२८ वें दिन, १।३।६।७।६।११ वें मास, कष्ट कारक माने गये हैं। वात-कफ-कारक वस्तुओं का सेवन, त्याग करना चाहिए।

सन्तान

इस मास वालों को, पुत्र की अपेक्षा, कन्या-सुख अधिक होता है। शुक्ल पक्ष वालों को, ६ पुत्र ५ कन्याएँ तक हो सकती हैं। कृष्ण पक्ष वालों को, ४ कन्या २ पुत्र तक हो सकते हैं।

२३ नवम्बर से २१ दिसम्बर तक

यदि आपका जन्म हुआ हो तो, मकान के वायव्य कोण (पश्चिमोत्तर) में उत्पन्न हुए होंगे। कमरे में ५ व्यक्ति उपस्थित थे। जन्मते ही आप, नहीं रोये, कुछ समय लगा। अवसर आने पर आपको, किसी भी अच्छे काम में चूकना नहीं चाहिए। व्यापार में लाभ होगा। प्रत्येक कार्य में आपको, सफलता मिलेगी। आप, दूर दर्शी, किन्तु क्रोधी हैं। सम्भव है कि, कभी-कभी, तीव्र शब्द बोलने के कारण, आपको,

हानि उठाना पड़े। प्रायः आपका स्वास्थ्य अच्छा रहेगा। फेफड़े का रोग होने का भय रहेगा। प्रातः काल घूमना और साधारण व्यायाम करना आपके, स्वास्थ्य को लाभदायक है, इससे आपके मस्तिष्क को, शक्ति मिलेगी। ऊँचे स्थानों पर रहना आपको लाभदायक है। प्रायः मार्च तथा दिसम्बर में स्वस्थ रहोगे। सोमवार गुरुवार, रविवार, शुभ शुक्रवार अशुभ अंक १-२-४-५-६ शुभ हैं। इस समय वालों को चाहिए कि, स्वयं सोचकर कोई भी काम करें न कि दूसरों के कहने पर। सूर्य-प्रकाश आपको बहुत प्रिय है। पीला रंग सुवर्ण-धारण से आपके स्वास्थ्य को लाभ होता है। ६-११-१२-१६-२४-३६-४०-४५-६० वें वर्ष अशुभ योग हैं। पूर्णायु ८२ वर्ष की है। मित्र अधिक होंगे और वे आपके ऊपर विश्वास करेंगे। असत्य-व्यवहार होने के कारण मित्रों से विरोध होने का भय है। आप बहुधा दूसरों की हार्दिक-इच्छाओं को शीघ्र समझ लेते हैं। आप अन्याय के विरोधी हैं। तीव्रता लिए, धार्मिक-विचार करेंगे। मित्रों के लिए आप स्वयं, आपत्ति सहने को तत्पर रहते हैं। २१ मार्च से १६ अप्रैल तक, २३ जुलाई से २७ अगस्त तक २३ नवम्बर से १ दिसम्बर तक के मध्य में उत्पन्न होने वालों से मित्रता रहेगी। आपकी आशाएँ बहुत बड़ी हैं। आप तीर्थ यात्रा करेंगे, माता-पिता के भक्त हैं। आप ऐसे स्थान में काम करेंगे जहाँ द्रव्य का लेन देन अधिक हो (बैंक, इन्स्योरेन्स एजेन्ट निर्माता कोषाध्यक्ष या आपके हस्ताक्षर से द्रव्य लिया जा सकता हो)। आपके ऑफिसर आपके ऊपर दबाव न रख सकेंगे। आप सेनापति चित्रकार बैंकर शिक्षक हो सकते हैं। बहुधा आप भविष्य के लिए अच्छे-अच्छे विचार (मसौदे प्लान) बनाते रहते हैं। आप आत्माभिमानी भी हैं। आपका विवाह २४।२८।३१ वर्षायु में सम्भव है। २१ मार्च से १६ अप्रैल तक, २३ जुलाई से २७ अगस्त तक के मध्य में उत्पन्न कन्या के साथ आपका विवाह होना उत्तम है। आप स्पष्ट-वादी हैं। आप को, किसी के दबाव में रहना रुचिकर नहीं। आपका स्वभाव कुछ लड़ाकू है। आपको, सदैव झगड़े बचाने की आदत डालना चाहिए। साथ ही परम दयालु भी हैं। इसलिए दूसरों का दुःख दूर करने के लिए, इस समय वाले, स्वयं कष्ट भोगने को तैयार रहते हैं। सहवासियों को चाहिए कि। इन पर विश्वास करें ये दूर दर्शी होते हैं, इन्हें अपनी मनमानी करने देना चाहिए।

पाप-मास

इस मास वाले आशावादी दार्शनिक और प्रभावशाली होते हैं। ये स्वतन्त्रता के उपासक तथा अपने विचारों को व्यक्त करने वाले होते हैं। कभी-कभी कोई आवेश में आकर अनुचित काम भी कर डालते हैं। जिसका इन्हें पीछे पछतावा रहता है। धर्म और राजनीति के ये जानकार होते हैं। बहस करने में इनका सामना दूसरे व्यक्ति, सरलता से नहीं कर सकते। ये तार्किक और गणितज्ञ होते हैं, विचार इनके स्थिर नहीं होते और समय तथा परिस्थिति के कारण अपने विचारों को एकाएक बदल डालते हैं। इनकी अनुभूति अत्यन्त गहरी होती है। काम का संचय और वितरण स्पष्ट-रूप से कर सकते हैं। व्यापार और दिखावा इन्हें, अधिक-प्रिय होता है अनेक विषयों में सम्बन्ध रखते हुए भी किसी एक विषय के ये पूर्ण पण्डित होते हैं तथा उस अभीष्ट विषय की ओर इनकी अभिरुचि सदा बनी रहती है। ये परिश्रमी होते हैं। इनका बचपन विशेष अच्छा नहीं होता। पिता का सुख कम मिलता है। पैतृक सम्पत्ति भी अधिक नहीं मिलती। इन्हें, शान्ति अधिक-प्रिय है। प्रत्येक काम का सुव्यवस्थित ढंग से सम्पन्न करना अभीष्ट होता है। दूसरों पर अनुशासन का काम भी ये अच्छी तरह कर सकते हैं। इनका स्वभाव साधारणतः मिलनसार होता है। हाँ अस्थिरता के कारण ये सदा अपने ध्येय का बदला करते हैं। यदि ये अपने ध्येय का निश्चय कर लें और उसके ऊपर सारी शक्ति लगा कर चलें तो इन्हें आशातीत सफलता मिलती है, तथा जनता के सम्माननीय हो सकते हैं। अपनी योग्यता का प्रदर्शन ये कानून धर्म दर्शन गणित इतिहास ज्योतिष लोक-व्यवहार तथा नीति द्वारा करते हैं। शिक्षक, एकाउन्टेन्ट आइमेटिशन पेन्टर लेखक इन्जीनियर शिल्पकार, मुनीम लेखक, वक्ता वकील जज सभापति वैज्ञानिक, योगी

के व्यापारी, रबर के व्यापारी होते हैं। प्राय धर्म, दर्शन शास्त्र और उपदेश द्वारा धन-लाभ करते हैं। सबसे अधिक सफलता, वस्त्र व्यापार मे मिलती है। सिल्क के व्यापार में इन्हें, खूब लाभ होता है। रंग के व्यापारी होते हैं। नोकरी करने वाले, किसी काम के प्रबन्ध में अधिक सफल होते हैं। ये, अपने विवेक और चतुराई के कारण सफल प्रबन्धक होते हैं। ये, जिस काम को हाथ में लेते हैं, उसे पूरा करके छोडते हैं। किसी खान या मिल की नौकरी वाले भी सफल होते हैं, और धन-सचय भी, इन्हीं कार्यों से कर सकते हैं। इसी मास वाले, घूस लेने में परहेज नहीं करते, तथा इधर-उधर वाले, किसी ढग से पैसा खींचते हैं, खर्चीले होते हैं, और धन-संचय करने में ये, असफल हो जाते हैं।

शुक्ल पक्ष वाले, प्राय धनी होते हैं। कृष्ण पक्ष वालों के पास, अपेक्षा कृत धन कम रहता है, तथा सदा आय-व्यय का ब्यौरा बराबर रहता है। इनके चरित्र में शिथिलता रहती है, तथा कुसंगति मे पडकर ये, बिगड जाते हैं, और इनका मानसिक विकाश भी अच्छा नहीं हो पाता। कृष्ण पक्ष की १-२-४-७-१०-११-१२-१४-३० तिथि वाले, मध्यम परिस्थिति के होते हैं और इनका जीवन सुखमय बीतता है। रविवार को २१।१७ इष्ट-काल वाले, बडे भाग्य-शाली होते हैं, और सहकारी निमित्तों के मिलने पर, बहुत बडे आदमी हो सकते हैं। इसी दिन ३३।४० इष्टकाल वाले, प्रमादी और जुआडी होते हैं। पराधीन रहकर, अपनी जीविका चलाते हैं तथा इनके बालबच्चे भी, इनके स्वभाव और दुर्गुणों मे परेशान हो जाते हैं, और फल-स्वरूप इनका जीवन भार-रूप हो जाता है। सोमवार को ६।१६ इष्ट-काल वाले, सिल्क के व्यापार द्वारा, खूब धन-लाभ करते हैं। ऊन और पटुवा के व्यापार मे उन्नति कर सकते हैं। इसी दिन २४।३६ इष्ट-काल वाले, शिक्षा-कार्य या सैन्य-सचालन मे निपुणता प्राप्त कर लेते हैं। इस समय वाले, व्यक्ति का यश, अन्तर्राष्ट्रीय होता है, तथा सम्मान इन्हे, सब जगह से मिलता है। स्वभाव इनका, नम्र और विनयी होता है, जहाँ रहते हैं, वहाँ इन्हे आदर और सम्मान मिलता है। ये, मन्त्र-तन्त्रादि के भी जानकार हो सकते हैं। लोकोपयोगी अनेक विद्याओं के ज्ञाता होते हैं तथा अपने अदम्य उत्साह द्वारा, समाज में एक नया सुधार उपस्थित करते हैं। प्रारम्भ में तो, इनका विरोध होता है, पर अन्त मे, इन्हीं की विजय होती है। मंगलवार की रात वाले, अत्यन्त धूर्त और चतुर होते हैं, ये, व्यापार में इतने निपुण होते हैं कि, बिना धन के, अच्छा व्यापार बढा लेते हैं तथा थोडे ही दिनों में धनी हो जाते हैं। इसी दिन के मध्याह्न वाले, बडे अच्छे तार्किक होते हैं। इनकी प्रतिमा विलक्षण होती है तथा इनके द्वारा साहित्य का सृजन होता है, कवि भी ये हो सकते हैं, तथा मानव-मन की कोमल एव सूक्ष्म भावनाओं का निरूपण भी ये, करते हैं। बुधवार की रात वाले, चालाक और कामुक होते हैं, इनका चरित्र दूषित हो सकता है, विश्वास-पात्र बनने में इन्हें कठिनता होती है।

इस मास के शुक्ल पक्ष (मासोत्तरार्ध) वाले शिक्षित और मिलनसार होते हैं। यों तो इस मास वाले, प्राय एकान्त-प्रिय होते हैं, इनका व्यक्तित्व-विशाल होता है, और ये, अपने जीवन में बडे-बडे कार्य करते हैं। इनके विचार, बडे दृढ होते हैं धार्मिकता, इनमे अवश्य होती है। दीन और दरिद्रों के प्रति, इनके हृदय मे, बडी भारी सहानुभूति होती है। प्राय ये, शान्त और गम्भीर होते हैं। इन्हें देखकर कोई, सहसा अनुमान नहीं कर सकता कि ये, कभी विचलित हो सकते हैं। विचारों को दबाकर ये, ऐसा रखते हैं कि, औरों को उसका वास्तविक पता चलना, दुष्कर हो जाता है। इन लोगों को या तो पूर्ण सफलता मिलती है या पूर्ण विफलता। कार्यपटु होने के कारण, प्राय सफलता ही मिलती है, पर इनमे, साहस अधिक नहीं होता। यदि कदाचित ये, साहस कर बैठें तो, बडे से बडे कार्यों को, विघ्न-बाधाओं के आने पर भी, कर ही डालते हैं। प्राय जब तक ये, जीवित रहते हैं, इनके कार्यों का जनता, अभिनन्दन नहीं करती। मृत्यु के पश्चात्, इनके कार्य-कलाप, बडे आदर से देखे जाते हैं। इस मास वालों का स्वभाव, एक-सा नहीं होता। कुछ लोग क्रान्तिकारी, विप्लवी और स्वेच्छाचारी होते हैं तथा कुछ लोग, जीवन मे सयत, शान्त और व्यवस्थित कार्य करने वाले होते हैं।

विवाह और मित्रता

इस मास वालों का विवाह प्रायः युवावस्था में होता है। इन्हें पत्नियाँ, अच्छी मिलती हैं। विवाह के वर्ष १७।१६।२०।२१।२२।२४।२७।२६।३०।३१।३६ बताये गये हैं। प्रायः इस मास वालों के, दो विवाह होते हैं। इनमें वासना इतनी तीव्र रहती है कि ये सरलता से उसे दबा नहीं पाते, फलतः इनका, इधर उधर अनुचित सम्बन्ध भी देखा जाता है। प्रायः ये मुँह-फट होते हैं, अपने हृदय की सारी बातें कह डालते हैं। १।४।७।८।१ ।११।१२। १४।१५ तिथि वाले अधिक कामुक होते हैं, इनका स्वभाव अधिक प्रेमिल होता है तथा प्रेम के कारण ये अनुचित कार्य भी कर डालते हैं। ६।११ तिथि वालों के तीन विवाह या एक विवाह के साथ दो उप-पत्नियाँ होती हैं। मित्रता अधिक लोगों से रहती है। सच्चे और हितैषी मित्र, प्रायः इन्हें, नहीं मिलते। मनोरञ्जन के लिए इनके मित्र, सदा इन्हें घेरे रहते हैं। शत्रुओं की संख्या भी अधिक होती है। इनका स्वभाव जिद्दी होने के कारण प्रायः सर्वत्र, शत्रुओं का वातावरण रहता है।

भाग्योदय

इस मास वालों का जीवन साधारण सुखमय बीतता है। ३६ वर्ष से ४० वर्ष तक के मध्य का समय बड़ा महत्त्वपूर्ण होता है। इनके १७।३६।४४।४६ वें वर्ष में विशेष परिवर्तन (लाइफ चेञ्ज) होता है तथा इन वर्षों का सदुपयोग होने से जीवन सुखी होता है। विशेष रूप से विचार करने पर २४।३४।३८।३६।४२।४४।४६। ४७।४८।५ ।५१।५३।५७।५६।६२।६५।६७।७२ वें वर्ष सुखमय जाते देखे गये हैं। इन वर्षों में उन्नति ही प्रायः होती है। यश-वृद्धि के, यही वर्ष बताये गये हैं। १६।१८।२२।२३।२६।४१।४३।५२।५६।६१।७१।७७ वें वर्ष, हानिकारक योगों के हैं। इन वर्षों में आर्थिक क्षति या कौटुम्बिक कष्ट होते हैं। कृष्ण पक्ष की १५ तिथि वाले १६ वर्ष की आयु तक पराश्रित (अन्याश्रित) रहते हैं। इनका २४ वर्षायु में भाग्योदय होता है। कृष्ण पक्ष की ३।६।८।६। १०।११ तिथि वालों की अन्तिम अवस्था सुखमय बीतती है तथा मध्यावस्था में कुछ कष्ट होता है। शुक्लपक्ष की ४।६।११।१२।१४ तिथि वालों को ४२ वर्ष से ४८ वर्ष तक के मध्य का समय विशेष लाभदायक रहने का होता है। अगहन माघ श्रावण चैत्र मास शुभ १।३।८।१३।१४ तिथियाँ शुभ, ४।६ तिथियाँ अशुभ गुरुवार शुभ अङ्क १।२।४।७।६ शुभ होता है। २७ वें वर्ष तथा ३१ वर्ष से ३६ वर्ष तक के मध्य का समय उन्नति के लिए स्वर्णावसर बताया गया है। २४ वें या ३२ वें वर्ष से विशेष धन-लाभ होता है। प्रारम्भ में इन्हें (इस मास वालों को) आर्थिक सङ्कट रहता है। २४।२८।३ ।३३।४ ।४४।४८।५४।६० वें वर्ष में विशेष लाभ होता है। प्रारम्भ के १६ वर्ष साधारण रहते हैं। २३।२६।३१ ।४३।४६।४८।६४।६७।७० वें वर्ष आर्थिक-सङ्कट होता है। इस मास वाले व्यापार में कम तथा नौकरी द्वारा अधिक व्यक्ति आजीविका चलाते हैं।

स्वास्थ्य

इस मास वालों का ३।६ वर्ष की आयु तक, प्रायः शरीर-कष्ट बना ही रहता है; और १२।१७।१८।३ ४३।४८।५०।५८।६४।६७० ।७४ वें वर्ष अकाल-मृत्यु का भय रहता है। ४४ वर्ष की आयु में ही स्वास्थ्य में गिरावट के लक्षण आने लगते हैं। यदि इस वर्ष को व्यक्ति सावधानी से व्यतीत कर दे तो, फिर उनका स्वास्थ्य प्रायः जीवन भर के लिए अच्छा बना रहता है, पुनः ५८ वें वर्ष में सावधानी रखनी चाहिए।

सन्तान

इस मास वालों का सन्तान-सुख साधारण रहता है। शुक्लपक्ष वालों का प्रायः सन्तान-सुख अधिक अच्छा होता है। कृष्णपक्ष वालों के, सन्तान कम होती है। कृष्णपक्ष की १।८।३।४।७।११ ।१५।१३।३० तिथि वालों को ३ पुत्र १ कन्या तथा इन्हीं तिथियों के संध्या समय वालों के प्रायः सन्तान का अभाव होता है। शुक्ल पक्ष की ३।७।१०।१४ तिथि वालों के ४ सन्तानें होती हैं। सोमवार मङ्गलवार गुरुवार और शनिवार वालों को सन्तान सुख एवं रविवार शुक्रवार और बुधवार की रात वालों को, अल्प सन्तान-सुख तथा इन्हीं वारों के दिन वालों को अच्छा सन्तान-सुख होता है।

२२ दिसम्बर से १६ जनवरी तक

यदि आपका जन्म हुआ हो तो, मकान के उत्तरी भाग में जन्म लिया होगा। कमरे में ५ व्यक्ति उपस्थित थे। आप, जन्म के बाद थोडी देर में रोये थे। किसी भी बात पर अधिक मनन करने पर, आपको, रोग-भय है। सर्वदा शान्ति और धैर्य-पूर्वक, प्रत्येक कार्य करना चाहिए। आपको, सर्वदा सादा भोजन ही लाभदायक है। शनिवार शुभ, अङ्क ५।६।८ शुभ। नीला या काला रङ्ग शुभ। नीलम धारण करना चाहिए, जिससे, आपको सारे कष्टों से मुक्ति मिलेगी। ७।१०।१२।२०।२५।३५।४२।४८ वें वर्ष, अशुभ योग हैं, इन्हीं वर्षों में शरीर कष्ट के अवसर आ सकते हैं या किसी कारण से महादु.ख होता है। आप, मधुर-भाषी हैं। आलस्य का त्याग कीजिए। आप, सामाजिक नेता हो सकते हैं। किसी धार्मिक संस्था के संचालक बन सकते हैं। आपको, अधिक भाषण नहीं करना चाहिए। २० अप्रैल से २० मई तक, २३ अगस्त से २३ अक्टूबर तक के मध्य में उत्पन्न व्यक्ति, आपके मित्र होंगे। आप, स्वातंत्र-प्रिय, किंतु लालची हैं। आप, राजदूत या सेनापति हो सकते हैं। पोष्ट-ऑफिस, टेलीग्राफ के वर्क, सूचना-विभाग, गुप्त-कार्य, अँधेरे के कार्य, काली वस्तु के कार्य कर सकते हैं। आपको, साहसी एवं धैर्यवान् बनने का प्रयत्न करना चाहिए। आपका विवाह २० एप्रिल से २० मई तक, २३ अगस्त से २३ अक्टूबर तक के मध्य में उत्पन्न कन्याओं के साथ उत्तम रहेगा। धैर्य से ही आपको, प्रत्येक कार्य में सफलता मिल सकेगी। आप, उदासीन या त्यागी वृत्ति के कहे जा सकते हैं। किसी-किसी को तो, विवाह चर्चा तक में अरुचि होती है। आप, दुर्बल या लज्जावान् होंगे। आपके प्रति, प्रेम-पूर्वक बर्ताव करने से, आपमें, अधिक अच्छाई आ सकती है। उचित दबाव पडना, आपके लिए आवश्यक है, अन्यथा सम्भव है कि, आपका स्वभाव, नटखटी हो जाय। आपकी यात्राएँ अधिक तथा दूरदेश की होंगी। आप एकान्त या गुप्त-वास करना चाहते हैं और अवसर मिलने पर आप, करेंगे भी।

माघ-मास

इस मास वाले, कुशल कार्य-कर्ता होते हैं। ये लोग, सत्यनिष्ठ, विचारवान्, राजनीतिज्ञ, व्यापारी और धर्मात्मा होते हैं। शिक्षा विभाग के लिए, अधिक उपयुक्त हो सकते हैं। भूमि के प्रबन्ध में भी पटु होते हैं। इस मास वाले ५ प्रतिशत भूमि के स्वामित्व का कार्य करते हैं। ये, किसी भी कार्य को नियमित रूप से करते हैं। उतावलापन इनमें, नहीं होता। हाँ, आलस्य होता है। ये, महत्वाकांक्षी होते हैं तथा जीवन में अपना, एक उपयुक्त स्थान बनाना चाहते हैं। परिश्रम से ये, जी नहीं चुराते और बैठे-बठे ही, किसी भी कार्य को पूरा करने की उत्कट इच्छा रखते हैं। इनका जीवन, प्राय कर्तव्य-परायण होता है। कोई मन्त्र-तन्त्रादि के साधक होते हैं। बैठकर करने वाले कार्यों में ये, पटु होते है एवं धैर्य-युक्त रहते हैं। आत्मकल्याण की ओर अधिक झुकते हैं। धैर्य, इनमें ऊँचे शिखर-सा उन्नत एव सधा हुआ होता है। कठिन से कठिन विपत्ति के आने पर भी धैर्य को नहीं छोडते हैं, ये साहस से तो नहीं, सहन-शीलता से, धैर्य रखते हैं। इनके जीवन में अनेक परिवर्तन होते हैं तथा परिवर्तन इच्छुक होना, इनका स्वाभाविक गुण होता है। नियम पालने में ये, शिथिल नहीं होते, विपत्ति के समय में भी आचार-विचार को नहीं छोडते हैं। संसार से, ४० वर्ष की आयु में इन्हें, विरक्ति हो जाती है और ऐसे अवसर की खोज में रहते हैं कि, कब हमें एकान्त-वास या गुप्त-वास मिल जाय। ये, उदासीन-जीवन बिताने में रुचि रखते हैं। किसी-किसी को विवाह की चर्चा तक अप्रिय होती है, और जब इस मास के स्वामी (शनि) का पूर्ण सहयोग होता है तभी, उन्हें विरक्ति में सहायता मिलती है। स्वात्मानुभूति के ये, बडे प्रेमी होते हैं। कोई कवि भी होते हैं तथा इनकी कविता, बड़े ऊँचे दर्जे की होती है। प्राय दर्शनिक कवि होते हैं। विदूषक भी, इसी मास वाले हो सकते हैं। ये, दूसरों को तो, हँसा सकते हैं पर-स्वयं, उस मनोरंजन से उदास रहते हैं। इनको, हँसी

का आनन्द नहीं हो पाता। जो कवि हो जाते हैं व शृंगार में करुणा एवं शान्तरस के प्रेमी होते हैं। ये, गायक होते हैं जिससे, अपनी कविता गाकर, लोगों के हृदय पर, उसका प्रभाव डालते हैं तथा गीत सुनने के लिए बहुत लालायित रहते हैं नृत्य, उतना तो नहीं चाहते, जितना कि संगीत।

इस मास वाले १० प्रतिशत शिक्षक होते हैं। ८० प्रतिशत शिक्षित, २० प्रतिशत अशिक्षित होते होते हैं। शिक्षक गण अपने कार्य में अटूट श्रम करते हैं, यदि शिक्षा विभाग का कुछ भार, इन पर छोड़ दिया जाता है तो ये बड़े उत्तरदायित्व के साथ उसका निर्वाह करते हैं। ये, प्रबन्धक भी अच्छे हो जाते हैं। विचार-शील होने के कारण इनकी प्रत्येक बात बड़ी उपयोगी होती है। कार्य की प्रगति करने में बड़े कुशल व्यक्ति होते हैं। इन्हें भाग्य कागज और कपड़े के मिलों में अच्छा लाभ हो सकता है। १० प्रतिशत बड़े व्यापारी होते हैं। संगमरमर के कार्य, सौदागरी विभक्त-वस्तु के व्यापार, फल-मेवा आदि का क्रय-विक्रय (इसी मास वाले) कर सकते हैं। मिल-व्यवस्था या अन्य बड़े-बड़े फर्मों में हाथ बँटाने वाले हो सकते हैं। इनका (इस मास वालों का) स्वभाव मिलनसार होता है। य लौकिक उत्कट प्रेमी नहीं हो सकते। पर, अपने से बड़ों के आज्ञा-पालक होते हैं और उनका आदर करते हैं। किन्तु, इनका अदृष्ट (भविष्य) ऐसा होता है कि, *जितना पैसा यह कमाना चाहते हैं उतना ही, अधिक खर्च होता है फिर भी वे धनी होते हैं,* आवश्यकता पूर्ति के लिए धन-लाभ कर ही लेते हैं और इनका रहन-सहन उच्च श्रेणी का होता है। इस मास वाले अधिकांश व्यक्ति, मध्यम वर्ग के धनी होते हैं। हाँ, इस मास वाले प्रायः दरिद्री नहीं होते अन्न, वस्त्रादि की विकट-समस्या इनके पास नहीं आने पाती, तथा आवश्यकता के लिए इन्हें, धन मिल ही जाता है। इनका स्वभाव आकर्षक होता है तथा ये विनोद-प्रिय होते हैं। शुक्ल पक्ष वाले, प्रायः सफल वैज्ञानिक, व्यापारी और बैरिस्टर होते हैं। ये कानून के इतने अच्छे जानकर होते हैं कि, अच्छे-अच्छे लोग इनकी समानता नहीं कर पाते। नवीन आविष्कारों के पश्चात् ये भी कुछ वस्तुओं का नव-निर्माण और नवीन-व्यवस्था ऐसी करते हैं, जिससे सारा संसार आश्चर्य में पड़ जाता है। पंचायती निबटारा करना तथा लोक-हित की बात करना इनका, नैसर्गिक (स्वाभाविक) गुण होता है।

इनका भाग्य बड़ा अच्छा होता है, और जहाँ ये जाते हैं, वहीं इनका आदर होता है। कृष्ण पक्ष की ११।१३ तिथि की रात्रि वाले आलसी किन्तु, आत्म-कल्याण के इच्छुक होते हैं। शुक्ल पक्ष की ४।७।१२।१४ तिथि वाले डाक्टर होते हैं तथा नवीन पैटेन्ट औषधियाँ निकालते हैं; सर्जरी में निपुण होते हैं एवं इसमें सफलता मिलती है और ख्याति प्राप्त करते हैं। इस मास वालों को, जुआँ खेलने का अभ्यास हो जाने से अपनी सम्पत्ति का सत्यनाश करना पड़ता है। ४५ वर्ष की आयु से इनकी (इस मास वालों की) आय बहुत बढ़ जाती है, लक्ष्मी इनकी दासी होती है। रविवार और सोमवार वाले कार्य-कुशल व्यापारी और राजमान्य होते हैं। मंगलवार की रात वाले अधिक भाग्यवान् और परिश्रम-शील होते हैं। मंगलवार को पूर्वाह्न समय वाले अध्ययन-शील और गणितज्ञ होते हैं, इनके अन्वेषण का कार्य अच्छा होता है। इतिहास और दर्शन-शास्त्र के सम्बन्ध में नवीन प्रकाश डालते हैं। बुधवार और गुरुवार वाले साहित्यिक होते हैं तथा अनुसन्धानात्मक कार्य करने में भी प्रवीण होते हैं। शुक्रवार वाले भावुक होते हैं तथा अपनी भावुकता में आकर कभी-कभी अनुचित कार्य भी कर डालते हैं, इनका चित्त चंचल होता है और एक वस्तु पर एक-सा ध्यान नहीं रख सकते। शनिवार वाले मल्ल (पहलवान) मोटर ड्राइवर आदि (ड्राइवर=वाहन-चालक) हल-वाहक (कृषक के हरवाहे) या अन्य किसी मशीन के संचालक होते हैं। इनका स्वभाव कठोर होता है, शारीरिक श्रम-साध्य कार्यों को योग्यता-पूर्वक कर सकते हैं।

विवाह और मित्रता

इस मास वालों का विवाह १६ वर्षायु में होता है। कुछ लोगों का १०-११ वर्ष में हो सकता। प्रायः १५-१६-१७-१८-२०-२१-२४-२५-२६-२८-३२-३१ वें वर्ष विवाह-योग आता है। इस मास

के किसी दिन ४।१५ इष्ट-काल वालों का प्राय. विवाह नहीं होता, या विवाह होने पर स्त्री का सुख अल्प काल ही रह पाता है। १।३।५।७।८।१३ तिथि वालों के, दो विवाह होते हैं। १।७ तिथि वाले, तीन विवाह तक करते हैं। चरित्र साधारण होता है। कुछ लोग, गुप्त-प्रेम अन्य स्त्रियों से भी रखते हैं, और इनकी बात प्राय प्रकट हो जाती हैं। मित्रता, ज्येष्ठ, आषाढ़ और अगहन मास वालों के साथ अच्छी रहती है। इनकी मित्रता तो, देर में होती है। परन्तु, सच्ची मित्रता होती है। ये, अपने मित्रों की सदा सहायता करते हैं, तथा मित्रों के काम में मन लगाकर उनका, हित-साधन करते हैं। इनका स्वभाव, मिलनसार होता है, जिससे इनके मित्र, अधिक होते हैं, प्राय: धनी लोगों से मित्रता होती है और ये मित्र, अनैतिक होते हैं। शनिवार की रात वालों के शत्रु, अधिक होते हैं और वे शत्रु, सदा इन्हे, कष्ट पहुँचाते हैं। इनके मित्र, स्वार्थी या दिखावटी होते हैं और समय आने पर हानि-कार्य करते हैं। श्रावण-आश्विन मास वाले व्यक्ति, शत्रु होते हैं, किन्तु आप, व्यवहार-कुशल होने के कारण, अपने चारों ओर के वातावरण को, शान्त बनाये रखने का प्रयत्न करते हैं। किसी महात्मा के शिष्य रूप में, स्वार्थी मित्रों का अनैतिक जीवन देखते ही बनता है, किन्तु, इस मास में जन्म पाने वाला महात्मा, अपने उन मित्रों को, सन्मार्ग में लगाकर, उनका हित करता है।

भाग्योदय

इस मास वालों का भाग्योदय, देर से होता है। १८।२४।२७।२६।३२।३७।४५।४६।५०।४६।५३।५८।६४।६८। ७४ वें वर्ष, भाग्योदय-योग उपस्थित होते हैं। प्राय ३६ वर्ष के उपरान्त ही पूर्ण सफलता मिल पाती है। फिर भी पूर्वोक्त वर्षों में आर्थिक एवं सामाजिक वातावरण अनुकूल रहता है। १७।१६।२३।२६।३०।३५।३७।४०।४४। ५१।५२।५६।६३।६५ वें वर्ष में, कुछ विपत्तियाँ आती हैं, तथा इन वर्षों में मानसिक-कष्ट विशेष होता है। ४५।४६ वें वर्षों में गठिया, लकवा, रक्त चाप और चर्म रोग सम्भव होता है। ५३ वाँ वर्ष मानसिक अशान्तिदायक होता है। वैशाख, ज्येष्ठ, कार्तिक, अगहन और माघ मास शुभ, शनिवार शुभ, गुरुवार अशुभ, रविवार और मङ्गलवार मध्यम, शेष सोमवार, बुधवार और शुक्रवार साधारण शुभ, २।७।११।१३ तिथियाँ शुभ, ४।६ तिथियाँ अशुभ, शेष तिथियाँ साधारण शुभ, अङ्क ५।६।८ शुभ (आपको ४ और ६ से बना अङ्क ४६।६४ अशुभ) आस्मानी (स्काई) रङ्ग, काले रङ्ग की वस्तुएँ धारण करने से अशुभ ग्रहों का प्रभाव दूर हो जाता है। आपको, अपने १६ वर्ष से २७ वर्ष का समय, श्रेष्ठ बनाने का प्रयत्न करना चाहिए, जिससे, समस्त आयु सुख-पूर्वक व्यतीत हो सकती है। प्राय इस मास वालों को पैतृक सम्पत्ति मिलती है, और ये, इसका सदुपयोग कर, धन की वृद्धि करते हैं। पिता की अपेक्षा, माता का सुख अधिक होता है। इस मास वाले, प्राय धन से सुखी होते हैं। हाँ, कोई व्यसनों के कारण धन और यश की हानि करते हैं। २३।३७।३६।४८।६३ वें वर्ष, हानिकर बताये गये हैं। २७।२६।३२।४२।४५।४६।४०।५०।५५।५७।६८ वें वर्ष में, विशेष धन-लाभ होता है। सफेद वस्तु के व्यापार में अधिक लाभ होने की सम्भावना रहती है।

स्वास्थ्य

इस मास वालों को गुर्दे तथा पाचन-क्रिया के रोग अधिकतर होते हैं। शीत लगने के कारण गठिया, लकवा, निमोनिया (सन्निपात), खाँसी होना सम्भव है। १८ वर्ष की आयु से २५ वर्ष की आयु तक के मध्य समय में हैजा, चेचक रोग होते हैं। जन्म के प्रारम्भिक २१ दिन कष्ट कारक होते हैं। ३।५।१५।१७।२४।३६।४०।४५। ५२।५४।५५।५६।५६।६३।७२ वें वर्ष अनिष्ट कारक होते हैं। १।७ तिथि वालों को १६।१७।२४।२६।२६।३४।३६।४०। ४१।४५।५४।५६।६३।७२।७४ वाँ वर्ष, अनिष्ट कारक होता है। ३।६।११।१२ तिथि वालों को १६।२४ वाँ वर्ष, अनिष्ट कारक। भौमवार तथा शनिवार वालों को १।७।११।१६।१६।२६।३२।३५।३७।४०।४२।४५।४७।४६।५५।५७।६४ वाँ वर्ष, अकाल-मृत्युदायक होता है। गुरुवार, बुधवार और सोमवार वालों को १।२।४।७।१०।१२।१७।१६।२४।२७।३२। ३४।३६।४२।४५।४६।५७।६२।६३।६७ वाँ वर्ष, अनिष्ट कारक हैं तथा इन्हें, चर्म-रोग विशेष होता है।

का आनन्द नहीं हो पाता। जो कवि हो जाते हैं वे शृंगार में कटाक्ष एवं शान्तरस के प्रेमी होते हैं। ये गायक होते हैं जिससे, अपनी कविता गाकर लोगों के हृदय पर, उसका प्रभाव डालते हैं तथा गीत सुनने के लिए बहुत लालायित रहते हैं, नृत्य उतना तो नहीं चाहते, जितना कि संगीत।

इस मास वाले १० प्रतिशत शिक्षक होते हैं। ८० प्रतिशत शिक्षित, २० प्रतिशत अशिक्षित होते होते हैं। शिक्षक गण, अपने कार्य में अटूट श्रम करते हैं, यदि शिक्षा विभाग का कुछ भार, इन पर छोड़ दिया जाता है तो ये बड़े उत्तरदायित्व के साथ उसका निर्वाह करते हैं। ये, प्रबन्धक भी अच्छे हो जाते हैं। विचार-शील होने के कारण, इनकी प्रत्येक बात बड़ी उपयोगी होती है। कार्य की प्रगति करने में बड़े कुशल व्यक्ति होते हैं। इन्हें, आटा कागज और कपड़े के मिलों में अच्छा लाभ हो सकता है। १ प्रतिशत बड़े व्यापारी होते हैं। संगमरमर के काम, सौदागरी विभव-वस्तु के व्यापार फल-मेवा आदि का क्रय-विक्रय (इसी मास वाले) कर सकते हैं। मिल-व्यवस्था या अन्य बड़े-बड़े फर्मों में हाथ बँटाने वाले हो सकते हैं। इनका (इस मास वालों का) स्वभाव मिलनसार होता है। ये लौकिक उत्कृष्ट प्रेमी नहीं हो सकते। पर, अपने से बड़ों के आज्ञा-पालक होते हैं और उनका आदर करते हैं। किन्तु, इनका अदृष्ट (भविष्य) ऐसा होता है कि जितना पैसा बचाना चाहते हैं उतना ही, अधिक खर्च होता है फिर भी ये धनी होते हैं, आवश्यकता पूर्ति के लिए धन-लाभ कर ही लेते हैं और इनका रहन-सहन उच्च श्रेणी का होता है। इस मास वाले अधिकांश व्यक्ति, मध्यम वर्ग के धनी होते हैं। हाँ, इस मास वाले प्रायः दरिद्री नहीं होते अत, धनादि की विकट-समस्या इनके पास नहीं आने पाती तथा आवश्यकता के लिए इन्हें, धन मिल ही जाता है। इनका स्वभाव आकर्षक होता है, तथा ये विनोद-प्रिय होते हैं। शुक्ल पक्ष वाले, प्राय सफल वैज्ञानिक, व्यापारी और बैरिष्टर होते हैं। ये कानून के इतने अच्छे जानकार होते हैं कि, अच्छे-अच्छे लोग, इनकी समानता नहीं कर पाते। नवीन आविष्कारों के पश्चात् ये भी, कुछ वस्तुओं का नव-निर्माण और नवीन-व्यवस्था ऐसी करते हैं, जिससे सारा संसार आश्चर्य में पड़ जाता है। पंचायती निबटारा करना तथा लोक-हित की बात करना इनका, नैसर्गिक (स्वाभाविक) गुण होता है।

इनका भाग्य बड़ा अच्छा होता है, और जहाँ ये जाते हैं, वहीं इनका आदर होता है। कृष्ण पक्ष की १।५।११ तिथि की रात्रि वाले आलसी किन्तु आत्म-कल्याण के इच्छुक होते हैं। शुक्ल पक्ष की ४।८।१३।१६ तिथि वाले, डाक्टर होते हैं तथा नवीन पेटेन्ट औषधियाँ निकालते हैं; सर्जरी में निपुण होते हैं एवं इसमें सफलता मिलती है और ख्याति प्राप्त करते हैं। इस मास वालों को जुआ खेलन का अभ्यास हो जाने से अपनी सम्पत्ति का सत्यनाश करना पड़ता है। ४४ वर्ष की आयु से इनकी (इस मास वालों की) आय बहुत बढ़ जाती है, लक्ष्मी इनकी दासी होती है। रविवार और सोमवार वाले कार्य-कुशल व्यापारी और राजमान्य होते हैं। मंगलवार की रात वाले अधिक भाग्यवान् और परिश्रम-शील होते हैं। मंगलवार को पूर्वाह्न समय वाले अध्ययन-शील और गणितज्ञ होते हैं, इनके अन्वेषण का कार्य अच्छा होता है। इतिहास और दर्शन शास्त्र के सम्बन्ध में नवीन प्रकाश डालते हैं। बुधवार और गुरुवार वाले, साहित्यिक होते हैं तथा अद्भुत धा-नात्मक काम करने में भी प्रवीण होते हैं। शुक्रवार वाले भावुक होते हैं तथा अपनी भावुकता में आकर कभी-कभी अनुचित काम भी कर डालते हैं, इनका चित्त चंचल होता है और एक वस्तु पर एक-सा ध्यान नहीं रख सकते। शनिवार वाले मल्ल (पहलवान), मोटर ड्राइवर आदि (ड्राइवर=वाहन-चालक) हल-वाहक (कृषक के हरवाह) या अन्य किसी मशीन के संचालक होते हैं। इनका स्वभाव कठोर होता है, शारीरिक श्रम-साध्य कार्यों का योग्यता-पूर्वक कर सकते हैं।

विवाह और मित्रता

इस मास वालों का विवाह ११ वर्षों में होता है। कुछ लोगों का १०-११ वर्ष में हो सकता या १४-१६-१७-१८-२०-२१-२४-२५-२६-२८-३२-४१ में वर्ष विवाह-योग आता है। इस मास

हैं; परन्तु कभी-कभी, गोचर द्वारा अष्टम केतु होने से इनकी बुद्धि, तर्क-हीन हो जाती है तथा मोह का आवेग, इतनी तीव्रता से बढ़ता है कि, जिससे इनका पतन भी हो जाता है। मानसिक स्थिति में ये, भावुक और संवेदन-शील होते हैं। सहानुभूति की तरंगें, इनके विचारों में कम्पन उत्पन्न करती रहती हैं। इनकी भावनाएँ अच्छी, पर विचार बिखरे हुए और शिथिल होते हैं। कभी-कभी बुरे विचारों की तरंगें, इन्हें, पराजित कर लेती हैं। तात्पर्य यह है कि, इनके बुद्धि के स्थान में गोचर द्वारा शनि या राहु आने पर मन दुर्बल, विचार शिथिल और शक्ति-हीन भावनाएँ, ऊँची-नीची होती रहती हैं। इनका लहराता हुआ हृदय होता है। इस अवस्था में, इन व्यक्तियों के ऊपर, अन्य लोगों का प्रभाव, बहुत सरलता से चढ़ता है जिससे इनका, चारित्रिक पतन भी हो सकता है।

इस मास वाले, भाषा-विज्ञान, कला, दर्शन, समाज-शास्त्र, भूगोल, पुरातत्त्व, चिकित्सा एवं अर्थ-शास्त्र के ज्ञाता हो सकते हैं। १० प्रतिशत शिल्पज्ञ, १४ प्रतिशत चिकित्सक, १६ प्रतिशत प्रोफेसर, शिक्षक, पुस्तकालयाध्यक्ष, सम्पादक, लेखक, १८ प्रतिशत अन्वेषक, वैज्ञानिक, नवीन वस्तुओं के आविष्कर्ता, तथा शेष ४० प्रतिशत अशिक्षित होते हैं। कृषक-वर्ग के व्यक्ति (इस मास वाले) धनसम्पत्ति-विज्ञान में निपुण हो सकते हैं, कृषि के उतार-चढ़ाव का ज्ञान, इनमें अच्छा रहता है। यदि इन्हें, कृषि की शिक्षा दी जाय तो ये, उसमें अच्छी सफलता प्राप्त कर सकते हैं। इनके विचार, स्वतन्त्र होते हैं। ग्राम-पंचायत में इनका प्राधान्य रहता है। मस्तिष्क परिष्कृत और कार्य करने की शक्ति अधिक होती है। आलस्य को ये, अपने पास, फटकने नहीं देते। यद्यपि सामाजिक सुधार करने की ओर इनकी, रुचि रहती है परन्तु ये, इसमें सफल नहीं हो सकते। पुराने रूढ़िवादी लोग, इनसे, असन्तोष रखते हैं पर इन्हें, किसी की चिन्ता नहीं रहती, जितना संघर्ष, इनके सामने आता है, उतने ही ये, विचारों के पक्के होते हैं। एक वर्ग-विशेष पर, इनका प्रभुत्व रहता है। न्याय और तर्क के ये, बड़े कायल होते हैं, बिना न्याय के ये, एक कदम भी आगे नहीं बढ़ना चाहते। कार्य करने की लगन, इनमें, अपूर्व होती है, ये, जहाँ रहते हैं, वहां का वातावरण सदा गति-शील रहता है। इनके जीवन में, एक दो अवसर आते हैं, जिनमें इन्हें, अधिक मान मिलता है। यदि, इनके साथ कड़ाई का व्यवहार किया जाता है तो ये, उसे सहन नहीं करते हैं और शीघ्र विद्रोह खड़ा कर देते हैं। वैसे तो इन्हें, सादा व्यवहार रुचिकर है, परन्तु, विशेष अवसरों पर चाटुकारिता (खुशामदीपन) भी रुचिकर है। जो व्यक्ति, इनकी चाटुकारी करता है वही इन्हें ठग सकता है, वही अपना काम, इनके द्वारा, बना सकता है। तहसीलदार आदि भूमि से सम्बन्धित व्यक्ति होते हैं।

इस मास वाले, किसी भी कार्य का प्रारम्भ, बड़ी तत्परता से करते हैं, परन्तु, मध्य में विघ्न आने पर, कार्य को अधूरा ही छोड़ देते हैं, अन्त तक करने की क्षमता, इनमें, कम ही पायी जाती है। अध्ययन-अध्यापन, अन्वेषण, और कला के कार्यों में इन्हें, अधिक सफलता मिल सकती है। ये कार्य, इनकी अभिरुचि के अनुकूल हो जाने के कारण, अधिक सफलता के साधन माने गये हैं। मतान्तर में, इस मास वाले, महत्वा-कांक्षी होते हैं, इन्हें साधारण पद से सन्तोष नहीं होता। ये, सदा उत्तरदायी पद के अभिलाषी रहते हैं। दूसरों पर अधिकार करने की चिन्ता, इन्हें, सदा लगी रहती है। अपने व्यवसाय में, इन्हें, पूर्ण लाभ होता है। जो, छोटे-छोटे व्यापार करते हैं उन्हें, अच्छा लाभ होता जाता है। बड़े व्यापारियों को मशीनरी के कार्य में अधिक सफलता मिलती है। यों तो इन्हें, प्राय अच्छी आय होती है, व्यय भी इनका आय के समान ही होता है। धन-संग्रह की प्रवृत्ति होते हुए भी ये, संचित करना नहीं जानते हैं। एक तरह से, इन्हें, धन बचाना, आता ही नहीं है। यद्यपि ये, मितव्ययिता (किफायतसारी) से काम लेना चाहते हैं, परन्तु, अपने अभ्यास से विवश होने के कारण, मितव्ययी कार्य, इनसे, होता नहीं है। रविवारी ५ तिथि वाले भद्र-परिणामी, कार्य-कुशल और देश-सेवक बनते हैं, इन्हें, सासारिक कार्यों में अपूर्व सफलता मिलती है। मंगलवार को भरणी नक्षत्र वाले खूँख्वार (हिंसक) और लड़ाकू (कलह-प्रिय) होते हैं। गुरुवारी पुष्य

सन्तान

इस मास वाले, सन्तानोत्पत्ति अत्यधिक करते हैं। हस्त–रोहिणी वाले ५ पुत्र १ कन्यायें। मृगशिरा श्रवण वाले ४ पुत्र ५ कन्यायें। धनिष्ठा रेवती वाले २ पुत्र, ७ कन्यायें। भरणी–शतभिषा वाले ५ कन्यायें। अश्विनी तथा अभिजित वाले अल्प सन्तान (या सन्तान अभाव)। पुष्य–स्वाती वाले ५ पुत्र १ कन्या। कृत्तिका–पुनर्वसु वाले ४ पुत्र, ३ कन्यायें। आश्लेषा–मघा वाले १ पुत्र ४ कन्यायें। विशाखा–ज्येष्ठा वाले १ पुत्र, या २ कन्यायें। अनुराधा पूर्वाफाल्गुनी, पूर्वाषाढ़ पूर्वाभाद्रपद वाले अल्प सन्तान। मूल, उत्तराफाल्गुनी, उत्तराषाढ़ उत्तराभाद्रपद वाले बहु सन्तान। चित्रा–आर्द्रा वाले ५ सन्तान। मतान्तर से हस्त–चित्रा वाले निःसन्तान। जिनका जन्म किसी भी नक्षत्र के तृतीय चरण में हो वे भी, निःसन्तान रहते हैं, यदि वे, प्रयत्न करके सफलता पाते हैं तो २ पुत्र १ कन्या। प्राय इस मास वालों का ६ पुत्र और १ या २ कन्यायें होती हैं।

२० जनवरी से १६ फरवरी तक

यदि आपका जन्म हुआ था, मकान के ईशान कोण (पूर्वोत्तर) में जन्म लिया होगा। कमरे में ४ व्यक्ति उपस्थित थे। आप जन्मते ही रो उठे थे। आप प्रत्येक बात पर अधिक विचार करते रहते हैं। आप चाहें तो, ब्रह्मचारी जीवन व्यतीत कर सकते हैं। आपको स्त्री-चर्चा से घृणा होगी। प्राय आपका स्वास्थ्य ठीक रहेगा। शीत से आपको सर्वदा बचते रहना चाहिए। साहित्यिक अध्ययन करते रहने से और सर्वदा नवीन विचारों पर मनन करने से आपका स्वास्थ्य ठीक रहेगा। नेत्र रोग पर शीघ्र ध्यान दीजिए। ५।१२।१८ २८।३२।४०।४५।५६।६१ वें वर्ष में रोगों का आक्रमण हो सकता है। पूर्ण आयु ८१ वर्ष की है। शुक्रवार बुधवार, शनिवार शुभ, नीला रंग शुभ, अंक ५।६।८ शुभ हैं। धनवान मनुष्य से आपकी शीघ्र मित्रता होती है। आप, सामाजिक जीवन व्यतीत करेंगे। शत्रुओं से, मित्रों की संख्या अधिक रहेगी परन्तु, आपके मित्र, अधिकतर स्वार्थी हैं। आप, सत्य-प्रिय हैं, परन्तु आप, कभी इस प्रकार का सत्य न बोलें, जो आपके मित्रों के हृदय पर आघात करके, उन्हें, शत्रु में परिणत कर दे। २३ जुलाई से २२ अगस्त तक, २४ सितम्बर से २३ अक्टूबर तक के मध्य में उत्पन्न लोगों के साथ आपकी मित्रता रहेगी। आप, गीत और शिल्प-कला के प्रेमी हैं। साहित्य से प्रेम होने के कारण आप कुछ पुस्तकों के लेखक हो सकते हैं। किसी संघ के संचालक होकर आप धनोपार्जन कर सकते हैं। एकाग्र चित्त होने का प्रयत्न कीजिए अन्यथा आपके हाथ कुछ न लगेगा। २४ सितम्बर से २३ अक्टूबर तक के मध्य में उत्पन्न कन्या के साथ, आपका विवाह उत्तम रहेगा। समाज की पुरानी रूढ़ियों के आप, विरोधी हैं। मित्रों पर बहुत सोच विचार के बाद विश्वास कीजिए। आपका शत्रु पराक्रमी है। आप पर दया के द्वारा विजय पायी जा सकती है। स्वास्थ्य के लिए साधारण व्यायाम (यौगिक रीति का) कीजिए। यात्रा तथा संक्रान्ति कार्य से आपको सहायता मिलेगी। यदि आप दूरदर्शिता से काम लेंगे तो, आपका कल्याण रहेगा। आप दृष्टा रूप में लोगों से ख्याति प्राप्त कर सकते हैं, क्योंकि आपकी दार्शनिक प्रगति अच्छी है। धर्म याग समाधि जप पूजा-पाठ द्वारा आप अपनी उन्नति कर सकेंगे।

फाल्गुन–मास

इस मास वाले मिलनसार स्वभाव के होते हैं। ये आवश्यकता के समय अपना रूप (गिरगिट के भाँति) बहुत शीघ्र बदल लेते हैं। इनके मन की थाह पाना बड़ा कठिन होता है। मनुष्य को यदि शासन की शक्ति, इनमें अधिक होती है। ये अवसरवादी होते हैं और अवसर पाते ही बहुत आगे बढ़ जाते हैं। सामाजिक भावना इनमें अधिक रहती है। सभा-सोसाइटी में अधिक भाग लेते हैं सभा-पूर्ति भी पायी जाती है। ये प्राय मानव-जीवन के लक्ष्य को हृदयंगम कर अनुकूल जीवन का विशिष्ट लक्ष्य चुन कर रहता के साथ प्राप्त करते हैं। आत्म-विश्वास की भावना, बलवती रहती है। इनके जीवन में, आशा का लघु-दीपक झिलमिल-झिलमिल प्रकाश कर जीवन-मार्ग को अलंकृत और आनन्द-पूर्ण करता रहता है, परन्तु इनके साथ एक कठिनाई यह रहती है कि, संगति के प्रभाव के कारण इनका सर्वनाश भी हो जाता है। हृदय इनका इतना कोमल होता है कि, दूसरे का रंग बहुत सरलता से चढ़ जाता है। यद्यपि ये स्वतन्त्र विचार के होते

३४।३८।५३ वें वर्ष, शरीर-कष्टदायक हैं। गुरुवार वालों को १४।१८।२७।२६।४३।४६।६२।६८ वें वर्ष, शरीर-कष्टसूचक होते हैं। शुक्रवार वालों को ११।२१।२६।४३।४८।५३।५५।५६।६५ वें वर्ष, घातक होते हैं तथा शनिवार वालों को २८।४२।४६।५२।५७।६२।६८।७१ वें वर्ष, अशुभ माने गये हैं। इन्हें, वायु-वर्धक वस्तुएँ, हानि-प्रद हैं।

सन्तान

इस मास वालो को सन्तान-सुख साधारण होता है। इन्हे १८।२०।२२।२३।२५।२७।२६।३३।३४।३६।३७।३६।४२।४३।४५।४६ वें वर्ष में, सन्तान लाभ होता है। शुक्ल पक्ष की २।४।५ तिथि के मध्याह्नोत्तर समय वालों को ३ पुत्र, २ कन्या का सयोग। शुक्ल पक्ष की ७।८ तिथि के निशार्धोत्तर वालों को ५ पुत्र, ३ कन्याएँ। इन्हीं तिथियो के पूर्वाह्न वालों को तीन पुत्र होते हैं। कृष्ण पक्ष को १।३।४।७ तिथि के अपराह्न वालो का सन्तान अभाव तथा पूर्वाह्न वालो को ४ पुत्र, १ कन्या एव मध्य रात्रि के पूर्व समय वालो को १ पुत्र, ३ कन्याएँ और निशार्धोत्तर वालों को ४ पुत्र होते हैं। इसी पक्ष की ५।८।११।१३ तिथि के प्रात दो घण्टे (५ घटी) तक वालों को ४ पुत्र, ३ कन्याएँ—पुन ५ घटी इष्ट से १२।३० इष्ट तक के मध्य वालो को केवल ५ कन्याएँ। मध्याह्न (छाया अभाव समय) वालों को सन्तान अभाव या अल्प सन्तान। मध्याह्न के बाद आधा घण्टा तक वालों को बहु सन्तान। रात वालो को २ पुत्र, ५ कन्या। इसका स्पष्टीकरण, यों समझिए कि—

कृष्ण पक्ष की ५।८।११।१३ तिथि को	= ५ घटी इष्टकाल तक वालों को	= ४ पुत्र, ३ कन्याएँ।
” ” ”	= ५ घटी से १२।३० इष्ट काल वालों को	= केवल ५ कन्याएँ।
” ” ”	= मध्याह्न (छाया अभाव समय) वालों को	=सन्तान अभाव या अल्प।
” ” ”	= मध्याह्नोत्तर आधा घण्टा तक वालों को	= बहु सन्तान।
” ” ”	= रात वालों को	= २ पुत्र, ५ कन्याएँ।

यों तो प्राय इस मास वालों को अल्प सन्तान सुख या सन्तान अभाव होता है। अत इन्हें चाहिए कि, प्रतिदिन पीपल या तुलसी वृक्ष के पास कुछ समय पूजा करना चाहिए। ऐसा करने से सन्तान-सुख प्राप्त होता है।

इस प्रकार, इन बारह मासों का फल लिखा गया। ये, फल सायन सौर मास के द्वारा तारीखों में, एव चान्द्र-मास द्वारा चैत्रादि मासों में लिखे गये हैं। इन दोनों से मिला हुआ फल ही, जीवन में घटित होगा। यथा—सवत् १६८१ कार्तिक शुक्ल ५ शनिवार ता एक नवम्बर १६२४ को वृश्चिक लग्न में पं० रामकिंकर उपाध्याय का जन्म है। तब '२४ अक्टूबर से २२ नवम्बर तक' वाला फल एव कार्तिक मास का फल (संयोग) घटित हो सकेगा। दूसरी बात, आधुनिक विचार धारा वाले व्यक्तियों में, इन फलों का विकाश हो सकेगा। मध्यम वर्ग के लिए, ये फल प्राय कम ही घट पाते हैं। क्योंकि, इन फलों के एकत्र करने में उच्च-स्तर का अधिक ध्यान रखा गया है। तीसरी बात यह है (जिसे लिख भी चुके हैं) कि, जिनके जन्म पत्रिका नहीं, जन्म समयादि का बोध नहीं, उनके लिए, ये फल (स्थूल होते हुए भी) उपयोगी हैं। आगे, तारीखों के आधार पर, शुभाशुभ लिखा जायगा। आपको, अपनी जन्म तारीख स्मरण रखना चाहिए। क्योंकि उपयोगी है।

जन्म तारीख द्वारा फल

(१) किसी वर्ष के किसी मास की ता १।१०।१६।२८ में से, किसी तारीख मे आपका जन्म हो तो, आपके लिए रविवार शुभ। अङ्क १ या शुभ। प्रत्येक मास की १।१०।१६।२८ तारीखें शुभ। जन्म से १।१०।१६।२८।३७।४६।५५।६४ वें वर्षों में उन्नति, लाभ, सुख और यश प्राप्त होता है।

नक्षत्र वाले विद्या-प्रेमी, धनी सुन्दर और स्वस्थ होते हैं। गुरुवारी या सोमवारी श्रवण नक्षत्र वाले धर्मात्मा शान्त-परिणामी, परोपकारी और उत्कृष्ट अध्यात्म-प्रेमी होते हैं। इनकी विचार-धारा मौलिक और जगत के लिए सुखकर होती है। श्रवण के प्रथम चरण वाले वाद्य-प्रिय और विलासी होते हैं। सोमवार ११ तिथि वाले, धनी होते हैं तथा इन्हें कहीं से धन की प्राप्ति होती है। इसी दिन २७।२६ इष्ट-काल वाले लाटरी से या भूमि में गड़े धन की प्राप्ति होती है। इनका भाग्य अच्छा होता है। जहाँ रहते हैं वहाँ के निवासी, इनके, प्रेमी होते हैं। इनमें, एक विशेषता यह भी पायी जाती है कि ये, अपने वार्तालाप के चातुर्य से अन्य लोगों को, शीघ्र ही अपने अनुकूल बना लेते हैं।

विवाह और मित्रता

इस मास वालों के मित्र अधिक होते हैं। प्रायः इनके, सभी मित्र हँसमुख और मिलनसार होते हैं। बचपन के साथी भी, जीवन के अन्त तक मित्रता निभाते हैं। विवाह इनका, अच्छी सुन्दर स्त्री से होता है। ६७ प्रतिशत विवाहित होते हैं, ३३ प्रतिशत अविवाहित ही रह जाते हैं। विवाह के वर्ष ८-१४-१५-२०-२१-२२-२४-२६-३२-३८-४२ बताये गये हैं। इन्हें, कौटुम्बिक सुख अच्छा मिलता है। दाम्पत्य-जीवन सुख-मय बीतता है। १-७-२-६-८-११-१५ तिथि वालों के दो या तीन विवाह होते हैं, यदि इष्ट-काल की घड़ियाँ सम और पल विषम हों तो इस तिथि फल में व्यतिक्रम हो सकता है। वासना और नैतिकता की दृष्टि से इस मास वाले प्रायः दृढ़-चरित्र वाले होते हैं। बहुत कम अनैतिक मिलेंगे। इनकी आत्मा, कुपथ में जाने से बहुत मना करती है और सदा न्याय-पथ पर चलना ही इन्हें अभीष्ट होता है। ३५ वर्ष की आयु के बाद (शुक्ल पक्ष वाले) कुछ मस्ती और वासना-मग्न होते हैं। दोशाङ्क वाले प्रायः कार्य-कुशल होते हैं परन्तु इनका गुप्तेन्द्रिय आचरण शिथिल होता है। इनकी एक या दो उपपत्नियाँ भी रहती हैं। किसी को स्त्री की अपमृत्यु भोगना पड़ती है।

भाग्योदय

इस मास वाले साधारण धनी होते हैं। नौकरी की अपेक्षा, प्रायः व्यापार करके, धन-लाभ करते हैं। ४ वर्षायु से भाग्योदय होता है। ३।२८।४।३४।४१।६३ वें वर्षों में लाभ अच्छा होता है। हाँ खर्चे के लिए इन्हें, कभी कष्ट नहीं होता है पर विशेष धनी, कम हो व्यक्ति हो पाते हैं। पैतृक-सम्पत्ति इन्हें, अवश्य कुछ मिलती है। माघ चैत्र अगहन और वैशाख शुभ। गुरुवार, शुक्रवार, मंगलवार शुभ। शनिवार और १७ तिथि अशुभ है किन्तु पौषमास मध्य में शनिवार शुभ अन्य सभी वार अशुभ। ९।३।७।८।११।१३।१५ तिथियाँ शुभ। अंक ५-६-८ शुभ। काला रंग शुभ। २८ वर्ष से ३४ तक का समय विशेष सावधानी का है। इस समय का सदुपयोग करने से सारी जिन्दगी सुधर जाती है। ३१-३३-४३-४७ वें वर्ष आर्थिक तथा मानसिक-कष्ट होते हैं इन वर्षों में अधिक परिश्रम करना आवश्यक है। जहाँ तक सम्भव हो इन अशुभ वर्षों में न्यायालय में जाना पड़े, ऐसा प्रयत्न करना चाहिए। ४२ वर्षायु में एक बड़ा संकट सामने आता है, इससे बचने के लिए रविवार का व्रत करना चाहिए।

स्वास्थ्य

इस मास वालों का स्वास्थ्य साधारण अच्छा रहता है। रक्त-चाप बवासीर प्रमेह और स्नायु-विकार के रोग हो सकते हैं। [illegible] वें वर्ष अशुभ होते हैं शरीर कष्ट के सूचक बताए हैं। रविवार वालों को १७ वें वर्ष अकाल मृत्युभय तथा [illegible] वें वर्ष, अशुभ होते हैं। सोमवार वालों को ३१ वें वर्ष बड़ा संकट आता है इसमें शरीर-कष्ट होता है। [illegible] वें वर्ष भी, अशुभ माने जाते हैं। मंगलवार वालों को [illegible] वें वर्ष कष्टदायक बताये गये हैं। बुधवार वालों को [illegible]

३४।३८।५३ वें वर्ष, शरीर-कष्टदायक हैं। गुरुवार वालों को १४।१८।२७।२६।४३।४६।६२।६८ वें वर्ष, शरीर-कष्टसूचक होते हैं। शुक्रवार वालों को ११।२१।२६।४३।४८।५३।५५।५६।६५ वें वर्ष, घातक होते हैं तथा शनिवार वालों को २८।४२।४६।५१।५७।६२।६८।७१ वें वर्ष, अशुभ माने गये हैं। इन्हें, वायु-वर्धक वस्तुएँ, हानि-प्रद हैं।

सन्तान

इस मास वालों को सन्तान-सुख साधारण होता है। इन्हे १८।२०।२२।२३।२५।२७।२६।३३।३४।३६।३७ ३६।४२।४३।४५।४६ वें वर्ष में, सन्तान लाभ होता है। शुक्ल पक्ष की २।४।५ तिथि के मध्याह्नोत्तर समय वालों को ३ पुत्र, २ कन्या का सयोग। शुक्ल पक्ष की ७।८ तिथि के निशार्धोत्तर वालों को ५ पुत्र, ३ कन्याएँ। इन्हीं तिथियों के पूर्वाह्न वालों को तीन पुत्र होते हैं। कृष्ण पक्ष को १।३।४।७ तिथि के अपराह्न वालों का सन्तान अभाव तथा पूर्वाह्न वालों को ४ पुत्र, १ कन्या एव मध्य रात्रि के पूर्व समय वालों को १ पुत्र, ३ कन्याएँ और निशार्धोत्तर वालों को ४ पुत्र होते हैं। इसी पक्ष की ५।८।११।१३ तिथि के प्रात दो घण्टे (५ घटी) तक वालों को ४ पुत्र, ३ कन्याएँ—पुन ५ घटी इष्ट से १२।३० इष्ट तक के मध्य वालों को केवल ५ कन्याएँ। मध्याह्न (छाया अभाव समय) वालों को सन्तान अभाव या अल्प सन्तान। मध्याह्न के बाद आधा घण्टा तक वालों को बहु सन्तान। रात वालों को २ पुत्र, ५ कन्या। इसका स्पष्टीकरण, यों समझिए कि—

कृष्ण पक्ष की ५।८।११।१३ तिथि को = ५ घटी इष्टकाल तक वालों को = ४ पुत्र, ३ कन्याएँ।
" " " = ५ घटी से १२।३० इष्ट काल वालों को = केवल ५ कन्याएँ।
" " " = मध्याह्न (छाया अभाव समय) वालों को=सन्तान अभाव या अल्प।
" " " = मध्याह्नोत्तर आधा घण्टा तक वालों को = बहु सन्तान।
" " " = रात वालों को = २ पुत्र, ५ कन्याएँ।

यों तो प्राय इस मास वालों को अल्प सन्तान सुख या सन्तान अभाव होता है। अत इन्हें चाहिए कि, प्रतिदिन पीपल या तुलसी वृक्ष के पास कुछ समय पूजा करना चाहिए। ऐसा करने से सन्तान-सुख प्राप्त होता है।

इस प्रकार, इन बारह मासों का फल लिखा गया। ये, फल सायन सौर मास के द्वारा तारीखों में, एव चान्द्र-मास द्वारा चैत्रादि मासों में लिखे गये है। इन दोनों से मिला हुआ फल ही, जीवन में घटित होगा। यथा—सवत् १६८१ कार्तिक शुक्ल ५ शनिवार ता एक नवम्बर १६२४ को वृश्चिक लग्न में पं० रामकिंकर उपाध्याय का जन्म है। तब '२४ अक्टूबर स २२ नवम्बर तक' वाला फल एव कार्तिक मास का फल (सयोग) घटित हो सकेगा। दूसरी बात, आधुनिक विचार धारा वाले व्यक्तियों में, इन फलों का विकाश हो सकेगा। मध्यम वर्ग के लिए, ये फल प्राय कम ही घट पाते हैं। क्योंकि, इन फलों के एकत्र करने में उच्च-स्तर का अधिक ध्यान रखा गया है। तीसरी बात यह है (जिसे लिख भी चुके हैं) कि, जिनके जन्म पत्रिका नहीं, जन्म समयादि का बोध नहीं, उनके लिए, ये फल (स्थूल होते हुए भी) उपयोगी हैं। आगे, तारीखों के आधार पर, शुभाशुभ लिखा जायगा। आपको, अपनी जन्म तारीख स्मरण रखना चाहिए। क्योंकि उपयोगी है।

जन्म तारीख द्वारा फल

(१) किसी वर्ष के किसी मास की ता १।१०।१६।२८ में से, किसी तारीख मे आपका जन्म हो तो, आपके लिए रविवार शुभ। अङ्क १ या शुभ। प्रत्येक मास की १।१०।१६।२८ तारीखें शुभ। जन्म से १।१०।१६।२८।३७।४६।५५।६४ वें वर्षों में उन्नति, लाभ, सुख और यश प्राप्त होता है।

(२) किसी वर्ष के किसी मास की ता० २।११।२०।२९ में से किसी तारीख में आपका जन्म हो तो, आपके लिए सोमवार शुभ। अंक २ शुभ। प्रत्येक मास की २।११।२०।२९ तारीखें शुभ। जन्म से २।११।२०।२९।३८।४७।५६।६५ वें वर्षों में लाभ, भाग्योदय, सम्मान और सुख लाभ होता है।

(३) किसी वर्ष के किसी मास की ता० ३।१२।२१।३० में से, किसी तारीख में आपका जन्म हो तो, आपके लिए गुरुवार शुभ। अङ्क ३ शुभ। प्रत्येक मास की ३।१२।२१।३० तारीखें शुभ। जन्म से ३।१२।२१।३०।३९।४८।५७ वें वर्ष में लाभ, यश, भाग्योदय सफलता, पद और राज-सम्मान मिलता है।

(४) किसी वर्ष के किसी मास की ता० ४।१३।२२।३१ में से किसी तारीख में आपका जन्म हो तो, आपके लिए रविवार शुभ। अङ्क ४ शुभ। प्रत्येक मास की ४।१३।२२।३१ तारीखें शुभ। जन्म से ४।१३।२२।३१।४०।४९।५८ वें वर्षों में भाग्योन्नति, लाभ अधिक यश वृद्धि प्रतिष्ठा तथा पद का लाभ होता है।

(५) किसी वर्ष के किसी मास की ता० ५।१४।२३ में से, किसी तारीख में आपका जन्म हो तो, आपके लिए बुधवार शुभ। अङ्क ५ शुभ। प्रत्येक मास की ५।१४।२३ तारीखें शुभ। जन्म से ५।१४।२३।३२।४१।५०।५९ वें वर्षों में, भाग्य लाभ यश मान और पद-वृद्धि होती है।

(६) किसी वर्ष के किसी मास की ता० ६।१५।२४ में से किसी तारीख में आपका जन्म हो तो आपके लिए शुक्रवार शुभ। अङ्क ६ शुभ। प्रत्येक मास की ६।१५।२४ तारीखें शुभ। जन्म से ६।१५।२४।३३।४२।५१।६० वें वर्षों में लाभ उन्नति मान्य पद और यश-लाभ होता है।

(७) किसी वर्ष के किसी मास की ता० ७।१६।२५ में से, किसी तारीख में आपका जन्म हो तो आपके लिए सोमवार शुभ। अङ्क ७ शुभ। प्रत्येक मास की ७।१६।२५ तारीखें शुभ। जन्म से ७।१६।२५।३४।४३।५२।६१ वें वर्षों में सुख यश, भाग्योदय, धन-लाभ आदि होते हैं।

(८) किसी वर्ष के किसी मास की ता० ८।१७।२६ में से, किसी तारीख में आपका जन्म हो तो, आपके लिए शनिवार शुभ। अङ्क ८ शुभ। प्रत्येक मास की ८।१७।२६ तारीखें शुभ। जन्म से ८।१७।२६।३५।४४।५३।६२ वें वर्षों में लाभ अधिक, भाग्योदय पद या प्रतिष्ठा की वृद्धि यश-प्राप्ति और सुख मिलेगा।

(९) किसी वर्ष के किसी मास की ता० ९।१८।२७ में से किसी तारीख में आपका जन्म हो तो, आपके लिए मंगलवार शुभ। अङ्क ९ शुभ। प्रत्येक मास की ९।१८।२७ तारीखें शुभ। जन्म से ९।१८।२७।३६।४५।५४।६३ वें वर्षों में धन भाग्य यश पद-प्रतिष्ठा आदि की उन्नति होती है।

इस प्रकार के ये नव (९) फल, नौ अङ्क के द्वारा स्थिर किये गये हैं। पूर्णाङ्क ९ का ही संयोग करके इन फलों का अनुसन्धान किया गया है। किसी कार्य की पूर्णता, इन्हीं नौ के अङ्कों पर निर्भर है। अपने-अपने पूर्णाङ्कों पर सफलता की पूर्णता दृष्टि-गोचर होगी।

प्रत्यक्ष-गणित = ज्योतिष का प्रकल्पित-लाभ

नवम-वर्तिका

जन्म-नक्षत्र-फल

अश्विनी— आभूषण-प्रिय, लोक-मित्रता, रूपवान्, कोई स्थूल काय (प्राय क्षीण शरीर) बुद्धिमान् , चतुर, धन-सुख, विनयी, सुखी, यशस्वी, कार्य-दक्ष, पशु या वाहनों के विशेषज्ञ, मानसिक स्थिरता, परन्तु व्यवहार मे खरा (कोई-कोई विश्वासघाती), अधीर, किन्तु करुणामय, चापलूसी द्वारा राजा के कृपा-पात्र और किसी स्त्री की कृपा से कृतार्थ होता है।

भरणी— विकलांग, परदारासक्ति, क्रूर, कृतघ्न, स्वार्थ मे लिप्त, विजयी, सत्यवादी, निरोग, चतुर, सुखी, भाग्य पर भरोसा रखने वाला, धनाढ्य, भोजनादि पदार्थों के विशेषज्ञ, परदेश वासी, रोगों की प्रबलता नहीं होने पाती और कभी-कभी अनिश्चित विचार का होता है।

कृत्तिका— बहु-भोजी, परस्त्रीगामी, तेजस्वी, प्रसिद्ध, देखने में भव्य (बड़े लोगों के समान), मूर्ख नहीं, किसी न किसी विद्या का जानने वाला, आशा के आधार पर रहने वाला, परन्तु कुछ कृपण, क्रोधी, शत्रुओं से पीडित, ख्यातिमान् , स्त्रियों के संग बैठने वाला (नपुंसक या कामुक) मुखाकृति और गाल चौड़े होते हैं।

रोहिणी— पवित्रता-युक्त, सभ्य एवं मिष्ट-भाषी, दृढ़-प्रतिज्ञ, स्वरूपवान् , परछिद्रान्वेषी, कृश शरीर, बुद्धिमान् , परन्तु परस्त्री गामी, कामी, कार्य-पटु, भोगी, धनी, स्मरण-शक्ति अच्छी, जिससे, सदा कार्य मे तत्पर, कारीगरी या बुद्धि-कार्य में प्रेम, नेत्र बडे और ललाट चौडा होता है।

मृगशिरा— चचल, चतुर, वक्ता, भीरु, उत्साही, भोगी, कोमल-चित्त, सौम्य, भ्रमण-शील, कामातुर, रोगी, पुष्ट शरीर, सुन्दर, किन्तु कोई विकल नेत्र (ऐंचाताना) साहसी, शान्त, विवेकी, धन-पुत्र-मित्रादि से सुखी, विद्वान् होते हुए भी चित्त में चचलता और कभी-कभी स्वार्थी या अभिमानी होता है।

आर्द्रा— मूर्ख, अभिमानी, दूसरे के पदार्थों का नाशक, परदु:खदायक, पापी, धन-रहित, चचल-चित्त, अतिबली, क्षुद्र-विचार-युक्त क्रिया-शील, हँसमुख, धार्मिक और सार्वजनिक कार्यों में चित्त लगाने वाला होता है।

पुनर्वसु— जितेन्द्रिय, सुखी, सुशील, बुद्धिहीन, रोगी, अधिक जल पीने वाला, सतोषी, कवि, प्रसिद्ध धनी, कामुक, धार्मिक, स्वकार्य-लिप्त, मातृ-पितृ-भक्त और परदेश-वासी होता है।

पुष्य— शान्त-स्वभाव, रूपवान , चतुर, धनवान् , धार्मिक, ईश्वर-गुरु-भक्त, बुद्धिमान् , वाक्पटु, राजा से माननीय, बडे कुटुम्ब वाला तथा उसका मुखिया, सत्य-प्रेमी, कार्य-कुशल, दृढ़ गठन का शरीर और करुणामय चित्त वाला होता है।

आश्लेषा— मूर्ख, खाद्याखाद्य-भोजी, पापी, कृतघ्न, धूर्त, शठ, मूढ, क्रोधी, दुराचारी, शत्रु-विजयी, असत्यभाषी, अपरिणामदर्शी (नि शक) कार्य-कर्ता, अविश्वासी, पशु-फल और औषधि का व्यापार करने वाला होता है।

मघा— धनी, भोगी, देव-पितृ-भक्त, उद्योगी, सेवक-सम्पन्न, चपल, स्त्री में आसक्त, कामी, परन्तु धार्मिक, अभिमानी, कलहकारी, साहसी, बात का शीघ्र अनुमान करने वाला, बड़े-बडे कार्यों में हाथ डालने वाला और राजकर्मचारी होता है।

पूर्वाफाल्गुनी—प्रिय-भाषी, दानी सुन्दर भ्रमण-शील चपल, कुकर्मी किन्तु त्यागी दृढ़-शरीर, स्त्री के वशीभूत शत्रु कम सहवासियों पर कृपालु नृत्य-गीतादि का प्रेमी, चित्त की अच्छी वृत्ति वाला और राजद्वार से अनुग्रहीत होता है।

उत्तराफाल्गुनी—सर्व-प्रिय विद्या द्वारा धन-लाभ, भोगी सुन्दर मानी, बुद्धिमान्, कामासक्त, मधुर-भाषी, संगति-प्रिय कला-कौशल की उन्नति करने में अभिरुचि काव्य-प्रेमी और धन-सन्तान आदि से सुखी होता है।

हस्त— उत्साही, ढीठ, निर्दयी चोर, मद्यपी, कामातुर विद्वानों का प्रेमी धनी, प्रभाव-शाली सुन्दर नेत्र वाला और नौकरी या किसी महीन कारीगरी द्वारा धन-लाभ करता है।

चित्रा— सुन्दर वस्त्र-सुगन्धादि से सुखी अपने मत का गुप्त रखने वाला, चतुर, शीलवान्, धनाढ्य प्रतिष्ठित परदारभोगी रूपवान्, सुन्दर नेत्र वाला चित्रकारी या अद्भुत कला जानने वाला बहुमूल्य वस्तुओं का व्यापारी और लेखक या गणित-विद्या या औषधि द्वारा धन-लाभ करता है।

स्वाती— जितेन्द्रिय सज्जनशील वाणिज्य-प्रेमी दयालु, धार्मिक, प्रियभाषी भोगी, धनी गुरु और ईश्वर आदि का भक्त परन्तु मन्द-बुद्धि तथा अपने ही घर में रहने का इच्छुक होता है।

विशाखा—दूसरे मनुष्यों को सन्ताप देने वाला लोभी बोलने में चतुर गर्वित, क्रोधी, शत्रु-विजयी, स्त्री के वशीभूत सुन्दर कान्ति युक्त सुन्दर दाँत वाला परदेश में ही रहने का अभिलाषी, क्रय-विक्रय में चतुर, प्रसिद्ध होते हुए भी कलह-प्रिय और युद्ध-वेत्ता होता है।

अनुराधा—धनवान् बाल्यावस्था से परदेश-वासी भ्रमण-शील अति-प्रिय-भाषी, सुखी पूज्य, यशस्वी, शक्तिशाली राजद्वार से अनुगृहीत, देखने में सुन्दर या नहीं होता परन्तु, दृढ़-शरीर वाला तथा हास्य-प्रिय, एवं भूख देर तक भूख नहीं सहन कर पाता है।

ज्येष्ठा— अतिक्रोधी परन्तु सन्तोषी धर्म-निरत न्याय-प्रिय कभी-कभी परस्त्री में आसक्त बहु सन्तान वाला कलह-प्रिय षड्यन्त्र करने में चतुर विद्या तथा काव्य में अभिरुचि, पर छिद्रान्वेषी नेत्र और मुख सुन्दर होते हैं।

मूल— अभिमानी भोगी सुखी दृढ़-प्रतिज्ञा वाला अहिंसक, बोलने में चतुर, परन्तु कृतघ्न धूर्त विश्वास-घाती जलने वाला अनेक प्रकार की कारीगरी में प्रेम रखने वाला औषधि का व्यापारी और बाग-इत्यादि का प्रेमी होता है।

पूर्वाषाढ़— अभिमानी परन्तु अच्छे मित्रों वाला इसकी स्त्री बड़ी आनन्द-दायिनी, स्वयं चतुर सुन्दर शान्त सुखी बुद्धिमान सब-प्रिय शत्रुओं को बड़ा भयकारक, परोपकारी कार्यों में चित्त लगाने वाला सत्य में विश्वासी कार्य-कुशल और प्रसिद्ध तथा भाग्यवान् होता है।

उत्तराषाढ़—नम्र धार्मिक, बहु-मित्र-युक्त, कृतज्ञ सर्व-प्रिय विनीत मानी शान्त-प्रकृति वाला, सुखी, विद्वान् धनी बुद्धिमान सन्तान-युक्त, काम में सफलता प्राप्त करने वाला परन्तु पढ़ा-लिखा होने पर भी कुसंगति-प्रिय स्त्री-अनुयायी दुबला-शरीर और अच्छे कार्य द्वारा जीविका होती है।

श्रवण— शोभा-युक्त विद्वान् धनी प्रसिद्ध ईश्वर तथा गुरुजनों का भक्त उच्चपदाधिकारी धार्मिक, बहु सन्तान युक्त दीर्घ-सखी इसकी स्त्री उदार-चित्ता अजन तथा अच्छी वाणी-शक्ति वाला महाविवेकी और परोपकारी होता है।

धनिष्ठा— धनी, शूर, साहसी, सगति-प्रिय, भोला-भाला, परन्तु लोभी, पुस्तकादि का प्रकाशक, बड़े परिवार वाला, प्रसिद्ध, उदार, स्त्रियों के संग रहते हुए भी, उनकी ओर इसकी, रुचि नहीं हो पाती, कभी-कभी कलह-कारी, लम्बा शरीर और कफ प्रकृति वाला होता है।

शतभिषा— सत्यवादी, किन्तु, द्यूतादि-व्यसन-युक्त, शत्रु-विजयी, साहसी, शान्त, बिना विचारे काम करने वाला (निर्भय) कालज्ञ या ज्योषित-प्रेमी, बहुत बोलने वाला, कभी-कभी कोई, मद्य-माँस-मछली आदि का व्यापारी और इस पर प्रभाव डालना कठिन होता है।

पूर्वाभाद्रपद—मानसिक दु खी, चतुर, धनवान् , परन्तु कृपण, स्त्रियों के वशीभूत, बोलने में ढीठ, धूर्त किन्तु भीरु-हृदय, निर्बली और अच्छी मनोवृत्ति वाला, परन्तु कभी-कभी अपनी मनोवृत्ति के विरुद्ध भी कार्य कर बैठता है।

उत्तराभाद्रपद—उचित-भाषी, सुखी, सन्तान-युक्त, शत्रु-विजयी, धार्मिक, वक्ता, सुशील, उदार, विद्वान् , धनाढ्य, कार्य-संल्लग्न, सुकर्म में सहयोग कारक, सुजनों से माननीय, किन्तु, कभी-कभी इसकी क्रोधाग्नि प्रज्वलित हो जाती है और शरीर सुडौल होता है।

रेवती— सर्वांग-पुष्ट, साहसी, सर्व-प्रिय, पवित्र, धनी, कामातुर, प्रेमी-प्रेम-निमग्न, सुन्दर, चतुर, सलाह देने योग्य, पुत्र, मित्र, परिवार से युक्त, चिर-स्थायी लक्ष्मी-भोगी, कुशाग्र-बुद्धि, विद्वान् , सद्विचार-शील और सुन्दर चिन्ह युक्त शरीर वाला होता है।

जन्म लग्न का फल

(मेष)

आपको, पित्त विकार से रोग, स्वजनो से अपमान, दुष्ट जन द्वारा किसी का वियोग-दु ख, कलह, शस्त्राघात, धन-हानि, कभी कृषि द्वारा लाभ, पशु सुख, रत्नादि लाभ, सुन्दर वाहन सुख, बडा कुटुम्ब और राज-सम्मान मिलता है। आपकी इच्छा, कुसगति से दूर रहने की रहती है। आप, स्त्री-प्रिय, उदार-मना, रूपवान् , भाग्यवान् , सुशील, स्त्री की सम्पत्ति से कार्यानुरागी, गुण-युक्त, विद्या-विनयी और मनुष्यों के प्रिय होते हैं। आपके सन्तान, क्रूर-स्वभाव वाले, नम्रता-रहित, माँस-भोजी, अनाचारी, नीति हीन, तीव्र-चेष्टा वाले, विदेश वासी तथा क्षुधा-लोलुप होते हैं। कन्या-सुशील होती हैं। आप, कलह-पूर्ण, अपने ही घर के निवासी, धार्मिक, साधु जनों के कार्य-कर्ता, बन्धु द्वारा पालित, किन्तु किसी बडे रोग से पीडित एव आपके शत्रु, अधिक बली होते हैं। आपकी पत्नी का स्वभाव, गुणी होने से गर्व युक्त, तथा पुण्य आत्मा, धर्मपरायण, सुन्दर दात वाली, बहु सन्तान युक्ता, स्थूल अग या दीर्घ भगवाली और कामातुरा होती है। आपकी स्त्री मे, शुक्र के गुण पाये जाते हैं। आपकी मृत्यु—मुख रोग, कीटाणु द्वारा उत्पन्न रोग, अपने ही घर में अथवा अपने कुलज मानव द्वारा सम्भव होती है। आप, स्वय द्विज-देव-भक्त, स्वेच्छाचारी, विनम्र, सतोपी, प्रसिद्ध, प्रतापी, निर्दयी, बन्धु के विनाशक, धर्मानुष्ठानादि क्रिया रहित, दुष्टों के बहकावे मे आ जाने वाले (भीरु) जल-विभाग से या पशु मे या त्याग-धर्म-पराक्रम-विद्या-सत्सगति-मित्रादि द्वारा धन-लाभ करने वाले होते हैं। आपकी कर्म-प्रधान-बुद्धि होती है। आपका धन-खर्च—जलयात्रा, दुष्टसगति, कुमित्र, विवाद आदि द्वारा हो सकता है।

(वृप)

आप, गौर-वर्ण, कफ-प्रकृति, क्रोधी, कृतघ्न, स्थिरता युक्त, अन्य से पराजित, स्त्री के सेवक, धनसुखी, मन्द बुद्धि वाले, कन्या सन्तति वाले, चाँदी, सुवर्णादि से सम्पन्न, दयालु, स्नेही, सद्गुण-ग्राहक, कृपि-कर्ता, धर्म-कथा के अनुरागी, शीलवान् , माननीय, विश्वास-पात्र, मातादि सुख-रहित, कुसगति वाले और कभी शील-हीन होते हैं। आपकी कन्या-सन्तान होती है तथा वह कन्या—सन्तान-रहित, पति-प्रिया, पुण्यपरायण, अधिक बोलने वाली, पाप कर्म से दूर एव भूपण-प्रिया होती है। आप, अपने स्वामी के विरोधी, दुश्चरित्र स्त्री

या वेश्या के प्रेमी साथ ही धार्मिक, प्रतापी (धर्म से ही प्रतापी) पण्डित गुरु-कुटुम्ब आदि के पक्ष-पाती पश्चात् स्त्री से विरक्त रहने वाले, दूसरे को ठगने के लिए बड़ी दौड़-धूप करने वाले पाखण्ड-धर्म से वा स्वार्थ से कार्य करने वाले कभी अविश्वस्त तथा जन-विरोधी काम करते हैं। आपकी पत्नी—कृपण, कला जानने वाली या मायाविनी निन्दनीय, रूप-रहिता कठोर-मतिवाली अनेक दुर्भाग्य दोषों से युक्त होती है। आपको धन-लाभ—अनेक प्रकार से मित्र से राजसम्मान से जल से, विचित्र वाणी से नम्रता से, पशु से और कृषि से हो सकता है। आपका धन व्यय—शरीर-पीड़ा में होता है तथा प्रायः आप बुरे-बुरे स्वप्न देखते हैं। आपकी मृत्यु—अपने स्थान ही के निवासी से, गुप्त रोग से गुदारोग से कीट (सर्पादि) से पशु से सम्भव है।

(मिथुन)

आप गौर-वर्ण, कामी स्त्री तथा धन की चिन्ता से व्यग्र, पीड़ित-शरीर प्रसन्न-चित्त प्रिय-भाषी नम्रता युक्त धनाढ्य योगी, चतुर, द्यूत-व्यसन द्वारा धन लाभ करने वाले स्त्री सुख भोगी कूटनीति-द्वारा धन-संग्रही सफल मनोरथ वाले सन्तान के प्रेमी, कभी शत्रुवत् व्यवहार करने वाले पर-धन-लोभी हिंसक, पाप-कथा में लिप्त स्वार्थी निन्दनीय कुमित्र के समान आचरण वाले, पिशुन (चुगल खोर) की संगति से सुखी चोर कर्म या युद्ध कर्म या साहस कर्म करने वाले सर्पादि जन्तु द्वारा कष्ट-भोगी, स्त्री-विरोधी वन्य-पशु या चोर द्वारा धन-हानि उठाने वाले विद्वान माननीय गुणी कामी, शूर-वीर विलास वस्त्र-व्यसन वाले शास्त्रार्थ-द्वारा उचित धर्मानुरागी (विधि-धर्मी) बाग आर जलाशयादि के निर्माता कुल-धर्मानुरागी तथा गुरुजनों की आज्ञा से कार्य-सम्पादक, यश से स्थिरता से आदरयुक्त विप्रादि की सेवा से कार्य-कर्ता होते हैं। आपके पुत्र—सुशील मनोहर रूपवान् कर्म-शील, शुभ-दृष्टि वाले होते हैं। आपकी पत्नी—पुष्पाकृति वाली निष्ठुर भक्ति एवं नीति से रहित मन्द-बुद्धि वाली शान्ति-सुख से रहित होती है। आपको धन लाभ—पशु से राजा से (राज्य से) परदेश से हो सकता है। आपका धन-खर्च—विचित्र स्त्रियों के संयोग में धातु-काय में ज्ञानी मनुष्यों के समागम में होता है। आपकी मृत्यु-प्रसव विकार से रक्त-स्राव से वाहन से सम्भव है।

(कर्क)

आप गौर-वर्ण पित्ताधिक प्रकृति पुष्ट-शरीर (दोहरा बदन), वाचाल जल-प्रेमी बुद्धिमान् पवित्र क्षमाशील धार्मिक सुखी धन-युक्त लोगों की सहायता पाने वाले परोपकारी अपने पराक्रम (बुद्धि-बल) से उन्नति-शील शास्त्रज्ञ अनेक मित्र-युक्त, अल्प-कामी देव-गुरु-अतिथि के पूजक, काम-रत, विद्या-विनयी प्रसन्न-चित्त वाले पशु भय युक्त, ठग-मनुष्य के विरोधी, मन्दिर बाग जलाशयादि के निर्माता तीर्थ-यात्री यज्ञादि-कर्ता श्रेष्ठ-कर्मानुरागी पिशुनता (चुगुलखोरी) से युक्त राजाज्ञापालक, निन्दनीय किन्तु साधु-सेवक होते हैं। आपकी सन्तान भी शस्त्र-धारी पशु से भय युक्त, ठग मनुष्य के विरोधी होती हैं। आपकी पत्नी—धार्मिका अच्छी कन्याओं की जननी पतिव्रता गुणवती और सौभाग्य-शीला होती है। आपको धन-लाभ—स्त्रियों से पशु से सज्जनों से बड़े भाई से हो सकता है। आपका धन व्यय—स्त्री में व्यसन में स्वकार्यों में प्रेत-कार्य में अधर्म में पापाचारी व्यक्तियों के समागम में होता है। आपकी मृत्यु—अग्नि से संक्रामक रोग से शत्रु से रक्त विकार से भ्रम से तथा अन्य पुरुष के द्वारा हो सकती है।

(सिंह)

आप पाण्डु (गौर-पीला) शरीर वाले पित्त-वात-रोगी, माँसाहारी, तीक्ष्ण-स्वभाव वाले शूर-वीर, प्रगल्भ (ढीठ) राजद्वार से धन-लाभ-कर्ता, सुवर्ण चाँदी मणि मुक्ता वाहन आदि से सम्पन्न, पापी मनुष्यों के मित्र त्यागी आत्म-कथानुरागी मित्र सेवक, सन्तान धन से सुखी, भय-युक्त, सदा वृत्ति वाले, निर्बली, गुण-रहित दूसरे की छाया में रहने वाले धन के निमित्त बहुत समय तक मित्र साधु साहूकार एवं पर से बैर करने वाले पशु के प्रति (दान से दया से पालन पोषण से) धर्म-बुद्धि वाले, साधु जनों के लिए

कृपालु होकर, धन-खर्च करने वाले, देव-अतिथि के पूजक, ज्ञानी, सत्पुरुषों के प्रेमी, प्रसिद्ध, स्त्री के अभिलाषी वस्त्र, आसन (स्थान या पद), वाहन आदि से सम्पन्न होते हैं। आपकी सन्तान—पापी, दुष्ट, मतिहीन, कुरूप, गम्भीर, सत्य-भाषी तथा प्रसिद्ध होती हैं। आपकी पत्नी—स्थिर-स्वभाव वाली, पति-आज्ञानुसारिणी, देव-विप्रादि की भक्ति करने वाली, धार्मिका और गुणवती होती है। आपको धन लाभ—धूर्तता से, बुद्धि की चतुरता से, दो व्यक्ति की सन्धि से, विवाह या मैथुन से, वीरता से, राजकार्य से हो सकता है। आपका धन-खर्च—द्विज-देव-यज्ञादि धर्म-क्रिया में तथा प्रशंसा-प्राप्ति वाले कार्यों में होता है। आपकी मृत्यु—अतिसार रोग से, वात या पित्त विकार से, शस्त्र से सम्भव है।

(कन्या)

आप, कफ-प्रकृति वाले, सुखी, कान्ति युक्त, श्लेष्मा विकार के रोगी, स्त्री-वियोगी, भीरु हृदय वाले, मायावी, काम-सन्तप्त, पापात्मा, राज-मित्रता युक्त, तथा म्लेच्छ, कृतघ्न, कलह-प्रिय, निर्लज्ज एवं क्रूर आदि जनों से मित्रता करने वाले, सुखी, युद्ध-विजयी, यशस्वी, ईश्वर-परायण, सद्भाव-युक्त, धन के निमित्त—राजा, जल-जीव, क्षेत्र-सम्बन्ध में, एवं सुशील-पुरुषों से वैर करने वाले, प्रत्येक वस्तु की परीक्षा करने में चतुर, धनाढ्य, किन्तु अनेक उपद्रवों से पीडित, वडे-वचन-भाषी, विचित्र (वस्त्र-भूषण-भोजन) दान-कर्ता, गुरुजनों के अनुगामी, श्रेष्ठ या प्रधान कर्मानुरागी, यशस्वी, लोगों को आनन्द-दायक, प्रेमी, प्रभाव-शील और कृपक होते हैं। आपकी सन्तान-वाहन के विचित्र आरोही, लक्ष्य-साधक, शस्त्रधारी, शत्रु-नाशक, सेवा-वृत्ति-युक्त, राजा से पूज्य होती हैं। आपकी पत्नी—विकृत-कुमति-कुपुत्रों से युक्त, अधार्मिका, नम्रता-रहित, कलह-कारिणी होती है। आपको धन लाभ—स्त्रियों से, सेवा से, कृषि से, जल से, विद्या से, किसी का गला दवाने से (हठ-पूर्वक) साधु-जनों के उपकार से हो सकता है। आपका धन खर्च—दुष्ट कर्मों में, कुकर्म में, विद्या-विलास में, राज-धन की चोरी में होता है। आपकी मृत्यु—परदेश में हो सकती है।

(तुला)

आप, श्लेष्मा विकार से युक्त, सत्यवादी, पुण्यात्मा, राजा से पूजित, देव-विप्रादि भक्त, वली, धार्मिक, स्त्रियों में आसक्ति वाले, विचित्र-भाषण-कर्ता, श्रेष्ठ-जन, शूर-वीर तथा राज-सेवक जनों से मित्रता करने वाले, धनाढ्य, प्रसन्न-चित्त, कृपालु, सुख-भोगी, मानसिक-चिन्ता-युक्त, वाग, जलाशय, घाट, सगम (पुल) के निर्माता, मित्रों से सहायता पाने वाले, रति-पण्डित, पुत्र, स्त्री या ऐसी ही वस्तु के कारण राजद्रोही या प्रिय-जन और पिता को छोडकर, अन्य लोगों से वैर करने वाले, अतिथि-सेवक, विप्रों को, दीनों को भोजन देने वाले, दीनों पर दयालु, वृक्ष या जलाशय कर्म में तल्लीन रहते हैं। आपकी सन्तान—प्रसन्न-मूर्ति, सन्तान-विहीन, धन-धान्य-युक्त और गुणवान् होती हैं। आपकी पत्नी—क्रूर या चपल-स्वभाव-वाली, दुराचारिणी, दुष्टों से प्रशंसनीया, धन चाहने वाली और स्वार्थिनी होती है। आपको धन लाभ—निन्दित कर्म से, वध-वधनादि से, व्यायाम से, दूसरे देश के मनुष्यों से हो सकता है। आपका धन खर्च—विवाहादि उत्सव में, स्त्री कन्या में, मगल-कार्य में, यज्ञ में, अन्न-दान में, सभा में, साधु-सम्मेलन आदि में होता है। आपको भय—प्रेत द्वारा, पशु से, दुष्टों से, रात्रि समय में होता है। आपकी मृत्यु—घर में कफ रोग से हो सकती है।

(वृश्चिक)

आप, क्रोधी, असत्यवादी, राजा से माननीय, गुणवान्, शस्त्रास्त्र के व्यापारी, पशु-युक्त, धर्म रीति से या युद्ध द्वारा अनेक प्रकार से धन लाभ करने वाले, सदा सुखी, मित्र, गुरु, देवादि के प्रेमी, धनाढ्य, पण्डित, श्रेष्ठ, स्त्री के अनेक सुख पाने वाले, मिष्ठान्न प्रिय, फल-शाकादि के भोजी, वाक्य-चतुर, क्लेश-सहन-शील, हास्य-युक्त, स्त्री के अनुरोधी वाक्य सहने वाले, प्रसन्न-चित्त, संतोषी, शत्रु के कार्य-नाशक, विचित्र व्रत तथा उपवासादि करने वाले, तीर्थ-सेवी, एकान्त-प्रिय, रौद्र तथा पाप-युक्त विचित्र-कर्म-कर्ता,

पुरुषार्थ से धन-लाभ-युक्त वध-बन्धनादि हिंसा-कर्म करने वाले होते हैं। आपके पुत्र—श्रेष्ठ, निरोगी तथा रूपवान होते हैं। आपकी पत्नी—रूपवती सुन्दर दाँत वाली, नम्र एवं शान्त—स्वभाव वाली, पतिव्रता गुणवती धनाढ्या देव-विप्र-भक्ता, किन्तु रोगिणी होती है। आपका धन लाभ—स्त्री से, कन्या से कुल से, पाप से, प्रबन्ध कार्य से, सुभाषण से, परस्पर शून्य विचारों से (अनेक विचित्र उपायों से) हो सकता है। आपका धन व्यय—देवता व विप्र में बन्धु में श्रुति-स्मृति व यम-नियम व तीर्थ-यात्रा में और या रौद्र कार्य में होता है। आपकी मृत्यु—छोटे भाई आदि (कनिष्ठसंगात) के संग से क्षीण रोग से, रस-भक्षण से गुदा से, प्रमाद से सम्भव है।

(धनु)

आप राज्य-युक्त, कार्य करने में ढीठ, द्विज-देव-भक्त, अश्वादि-वाहन-युक्त मित्र-सुखी सुरम्य-जंघ (सुडौल पैर वाले), अनेक उद्योग या प्रबंध द्वारा धन-लाभ करने वाले स्वेच्छा से राजा को प्रसन्न करने में आसक्त कृषि या परदेश से धन पाने वाले, धनी, यशस्वी क्षमा-शील सत्यवादी सुशील, सहित कविता-प्रिय साधुजन तथा दुर्जन से मैत्री पूर्ण जलाशय से सुखी यदि शनि भी चौथे भाव में स्थित हो तो देवता के द्वारा, वस्त्र-वाहनादि अनेक धन पाने वाले पशु के कारण सन्तान या बन्धु से वैर करने वाले स्त्रियों के संयोग का अभिमान करने वाले, दूसरे का धर्मानुष्ठान करने वाले, स्वयं धर्म-क्रिया से हीन अथवा अध्ययन-शील विशेष तीर्थ में अभिरुचि रखने वाले विनय या दीनता से रहित (सिंहवत् स्वभाव-धर्म) कर्मवीर श्री-राज्य के भार वाही वेगवान रोग-रहित, सुन्दर स्त्री से सुखी तथा धनाढ्य होते हैं। आपकी सन्तान—धन-हीन दयता से सुखी प्रसन्न-कर्मचारी पाप में रुचि रखने वाले तथा पैतृक-धन के भागी होते हैं। आपकी पत्नी—सुचरित्रा धनवती, रूपवती गुण-युक्ता और नम्र होती है। आपको धन लाभ—उत्तम पदार्थों से तुलाधर के कार्य से साधु-सेवा से विनय से धर्म-क्रिया से और स्त्री से हो सकता है। आपका धन व्यय—प्रमाद से चोर-ठगादि सम्बन्ध में (पहिले चोर द्वारा धन-हानि, पश्चात् उसके बन्धनादि में धन-हानि) कुनिन्दा में कुमित्र की सभा में होता है। आपकी मृत्यु—जल से, अखाद्य-पदार्थ से, जल जन्तु से भीषण-वस्तु से दूसरे के हाथ से परदेश में होती है।

(मकर)

आप सन्तापी तीव्र-स्वभाव वाले भीरु-हृदय पाप में प्रीति वाले धूर्त, कफ-वात से पीड़ित दीन कार्य दूसरे को ठगने या आकर्षण करने वाले फल पुष्प उत्तम-वस्तु आदि से धन पाने वाले साधु-भक्त, परोपकार में धन-व्यय करने वाले धनाढ्य पुत्रवान् पुण्य-शाली अतिथि-प्रेमी सर्व-प्रिय पशु-युक्त, स्त्री-सुखी, मानी मर्यादा में पूर्ण पराक्रम से द्रव्य-वर्धक, स्त्री के कारण—लोगों के विरोधी (यदि पापग्रह षष्ठ भाव में हो तो) वैरम वृत्ति वाले तथा नीच जनों के प्रेमी स्त्री के पक्षपाती स्त्री धर्म से सेवक, भक्ति से रहित विजयी (सफल मनोरथ वाले) पाखण्ड में दूसरे के आश्रमी अनेक व्यापार करने वाले धर्मात्मा नीति-युक्त सत्पुरुषों से मनोरथ सफल करने वाले परम-पद के अधिकारी होते हैं। आपके—भाग्यशाली, रूपवती कन्याएँ होती हैं परन्तु वे कन्याएँ, सन्तान-हीना कान्ति-युक्ता तथा पति-परायणा होती हैं। आपकी पत्नी—मनोहारिणी सौभाग्य-शीला गुणवती कलह-रहिता शान्त-स्वभाव वाली और प्रशंसनीया होती है। आपका धन-लाभ—पद शास्त्र से विनय से, किसी का वध मारने से (बलात् कराने से) नित्य स्नान से अनेक प्रकार से हो सकता है। आपका धन व्यय—हिंसा कार्य में ध्वंस-कार्य में पापप्रसंग में दूसरे को ठगने में सज्जनों में व्यापार में कृषि में होता है। आपकी मृत्यु—विषधर आदि विषैले पदार्थ से बालक या शिष्य से वन निवास से पशु से चोर से सम्भव है।

(कुम्भ)

आप स्थिर-वृत्ति वाले वाताधिक प्रकृति-युक्त, परद्रव्य-हरण करने में चतुर, स्नेही शत्रु तथा मित्र के प्रिय मित्रों में अनुरक्त कुटुम्ब-प्रिय नियम, उपवास पूजा-पाठ से या विद्या द्वारा अथवा अचानक

धन-प्राप्ति से धन-सुखी, मातृ-प्रिय, धन के भोगी, द्विज-मित्र, परोपकारी, चतुर, विद्वान्, राज-पूज्य, सुखी, माननीय, शूरता से, राज सेवा से, विप्र-सेवा से धन लाभ करने वाले, स्वामी-द्वारा सुखी, संगीत-प्रिय, गुणवान्, प्रतापी, बली, भाई, सन्तानादि से युक्त, राजा या श्रेष्ठ-विप्र के समान, प्रतिष्ठित या साहूकार या श्रेष्ठ जनो के विरोधी, स्त्रियों के नाशक, विषम-स्थिति मे रहने वाले, प्रसिद्ध, धार्मिक, देव-विप्रादि को सन्तोष-दायक, मनुष्यो के प्रेमी, अद्भुत-चरित्र वाले, अच्छे दुष्ट जनो के समान कार्य-कर्ता, कभी देव-विप्रादि के पीडक, दया एव नीति से रहित (कठोर कर्मचारी) होते हैं। आपको सन्तान—अल्पायु, पश्चात् कन्या-पुत्रादि से सुखी, नीति युक्त, धार्मिक, रूप-युक्त सन्तानें होती हैं। आपकी पत्नी—तीव्र स्वभाव वाली, चपला, दुष्टा, दुर्वेष वाली पर गृहाभिलाषिणी, सुस्वर रहिता, निर्बल तथा अल्प सन्तान वाली होती है। आपको धन लाभ—शस्त्रास्त्र से, लक्ष्य-साधन से वृहस्पति के समान गुण-धर्मों से, राजद्वार से, सुसेवा से, अपने पुरुषार्थ से, दूसरों की आराधना से, अश्व कर्म से हो सकती है। आपका धन खर्च—खान-पानादि में, सत्कार मे, कृषि मे होता है। आपकी मृत्यु—विलास से, अपने धन के कारण से, स्त्री से, अपने घर के आश्रित-जन से सम्भव है।

(मीन)

आप, पापात्मा, सुरति-प्रिय, अच्छी स्त्री के इच्छुक, श्रेष्ठ, पण्डित, स्थूल-शरीर (दोहरं वदन) वाले प्रचण्ड-स्वभाव-युक्त, पित्ताधिक-प्रकृति-पूर्ण, यशस्वी, धनाढ्य, अनेक सन्तान से सुखी, भाग्यशाली, बडे कुटुम्ब वाले, पशु-युक्त, गुणवान्, प्रतापी, दानी, शूर-वीर, कवि, विप्र तथा धन के रक्षक, राजा के मित्र, स्त्रियों से सुखी, जलज पदार्थ एव वन-सेवन के प्रेमी, सुगन्ध-पदार्थ, वस्त्र तथा सेवकादि से सुखी, शान्त-स्वभाव, जल-विहार के इच्छुक, अधिक काम चेष्टा वाले, पाखण्ड-धर्मी, लोगों को दुःखदायक काम करने वाले, भक्ति या परितोष से प्रसन्न होने वाले, सेवा-वृत्ति या चोरों के कर्मचारी होते हैं। आपका विरोध—धन के कारण, पुत्र तथा बन्धु जनों से, हारे हुए आर्त-जन से, श्रेष्ठ स्त्री या वेश्या से होता है। आपकी पत्नी—रूपवती, सन्तान हीना, सौभाग्य-शीला, भोगवती, नीति-युक्ता, प्रिय-भाषिणी, सत्यवादिनी तथा ढीठ-स्वभाव वाली होती है। आपको धन लाभ—जलज पदार्थ से, जल-यान से, विदेश-वास मे, राज सेवा से हो सकता है किन्तु खर्च भी खूब (भूरितरो व्यय सदा) होता रहता है। आपका धन खर्च—प्राय देव-साधु-विप्र-तपस्वी-वन्दी-जन मे, साधुजनों के अनुरोध मे, शास्त्रोक्त कार्य मे होता है। आपकी मृत्यु—विष से, औषधि से, पशु से, उपवास से, प्रलाप से, रात्रि में सम्भव है।

लग्न मे विशेषता

प्रत्येक जन्म-चक्र में स्थित, राशि-वर्ग के गुण के धर्मानुसार, जन्म लग्न के फल होते हैं। कभी-कभी लग्न में ग्रह-स्थिति से या लग्न-राशि की निर्बलता से फलो में परिवर्तन दिखाई देता है, किन्तु, मुख्य-धर्म, परिभाषान्तर से, सर्वो मे विद्यमान रहता है। कुल १२ राशियों के, ७ ही ग्रह, स्वामित्व ले रहे हैं। इनमें कोई ग्रह, दो-दो राशियों का स्वामी हो गया है, परन्तु, स्वामी एक होने पर भी, राशि-गुण मे भेद हो गया है। यथा—

(१) मेष लग्न का स्वामी कठोर मगल है। इस राशि में विशेषता है कि, 'भिड़ जाने वाला'। मेष का अर्थ ही है 'भेड' नामक पशु। यह तमोगुणी, अग्नि तत्त्व का है, अतएव प्रत्यक्ष गुण युद्ध, साहस, अग्नि का है। इस राशि (लग्न) से प्रभावित व्यक्ति, वीर, युद्ध या विवाद मे अभिरुचि, बिना सोचे-समझे भिड़ जाने की धुन, विजयी, राजगुणी, धनाढ्य, कड़ा स्वभाव, कुछ अश में दम्भी, स्पष्ट वक्ता, उद्यमी, प्राय उद्धत-चित्त, कभी मेधावी, स्वतन्त्रता-प्रिय, उदार-प्रकृति, सहायता करने में शीघ्र प्राण-पण से लग जाने वाला और शिर में चोट के चिन्ह होते हैं।

(२) वृषभ लग्न का स्वामी कठोर शुक्र है। इस राशि की विशेषता है कि, बैल के समान'। वृषभ का अर्थ है 'बैल' नामक पशु। यह राजगुणी पृथ्वी तत्त्व का है अतएव वृषभ-स्कन्ध (गठीला बदन), अधिकार-प्रिय, शान्ति-प्रिय वीर सहिष्णु (दुःख में भी धैर्य-धारक), दयालु, सदाशय, गम्भीर चित्त का गाढ़ा (छिपाने की कला में निपुण), संग्राम-मय जीवन (कोल्हू के बैल) धी-मुखी योगी घोर, वीर विद्वान् युग-निर्माता (कृषक के बैल) शुभ-भाषी और प्रचलित पद्धति के विरोधी होते हैं।

(३) मिथुन लग्न का स्वामी कठोर बुध है। इस राशि में विशेषता है कि, 'द्वन्द्वात्मक-स्थिति'। मिथुन का अर्थ ही है दो विभिन्न-स्थिति'। यह सत्त्व-सम गुणी वायु-तत्त्व का है, अतएव दूसरे के साथ तमोगुणी किन्तु अपने लिए सतोगुणी रहता है। विद्वान और चोर दोनों बनाता है। बुद्धिमान चातुर्य-कला में निपुण, बुद्धि-मात्र कार्यों में प्रमुख, कला कौशल का प्रेमी लेख वाद-विवाद, तीक्ष्णधी-प्रसन्नता-युक्त भाव इन्द्रियों के वशीभूत सदा परिवर्तन शील व्याख्या सांगोपांग सोचना और अधीरता आदि मुख्य गुण हैं।

(४) कर्क लग्न का स्वामी चन्द्र है। कृष्ण चन्द्र, कठोर और शुक्ल चन्द्र, कोमल होता है। पूर्वार्द्ध लग्न में, पूर्णिमा के आगे-पीछे एक-एक सप्ताह में, शुभ ग्रह के सम्बन्ध में कोमल और शेष में कठोर होता। इस राशि की विशेषता कछुए के समान है। कर्क का अर्थ ही है 'केकड़ा' नामक जलचर प्राणी। पानी के भीतर मृदु (ठंडा) और पानी के बाहर कठोर (क्रुद्ध) भाव-शुष्क की भाँति गुण कर्क या चन्द्र का है। यह रजोगुणी जल तत्त्व का है। धार्मिक, सत्यवादी वीर धनाढ्य, विजयी, प्रातः स्मरणीय मर्यादा-युक्त प्रशंसनीय युक्ति-वादी, संकेत-आविष्कर्ता विविध कोमल प्रकाशमय और कठोर अंधकार-युक्त होता है।

(५) सिंह लग्न का स्वामी सूर्य है। उच्च का वैशाख में कठोर और नीच का कार्तिक में सज्जन-प्रिय, कोमल सूर्य होता है। पूर्वार्द्ध लग्न में कठोर और उत्तरार्द्ध लग्न में कोमल होता है। यह रजोगुणी अग्नितत्त्व का है। वीर प्रतापी तेजस्वी स्वतन्त्रता-प्रेमी राजगुणी नियम-साधक, कठोर-व्रती भयानक महान् विभूति-सम्पन्न मांसी हिंसक, किन्तु क्षुद्र तथा लोलुप नहीं गम्भीर सत्य-प्रिय निर्भीक, निष्कपट स्पष्टवादी धैर्यवान् उदार साहसी नीच कर्म से घृणा मित्रता में अटल तथा विश्वास-पात्र शान्ति पूर्वक व्यवहार-प्रिय होता है।

(६) कन्या लग्न का स्वामी कोमल बुध है। यह सतोगुणी तथा पृथ्वी तत्त्व का है। इस राशि में विशेषता है कि, प्रबन्ध-कुशलता। कन्या के व्यावहारिक अर्थ में प्रबन्ध-कुशलता का मुख्य स्थान है। मुनीम मुंशी आदि से लेकर बाई सी. एस. तक के प्रबन्ध कार्य-कर्ता इसी के प्रभाव से हैं। सिंह जैसे प्रभु माना गया है वैसे ही इसे अनुगामी प्रधान के बाद द्वितीय पद माना गया है। इसकी मशीन परिचालित बुद्धि, बड़े काम की होती है। धनाढ्य प्रबन्ध-कुशल राय रूपा मुन, कोई अत्याचारी राम्य-श्री-हरण-कर्ता पुत्र आई सी एस या पी सी एस आदि होना, मुख्य गुण हैं।

(७) तुला लग्न का स्वामी कोमल शुक्र है। यह रजोगुणी तथा जल-तत्त्व का है। इस राशि की विशेषता है कि, 'सन्तुलन-शक्ति'। तुला के अर्थ ही हैं 'तराजू'। वर्तमान के बड़े बड़े राजनीतिज्ञ इसी तुला या शुक्र से प्रभावित व्यक्ति पाये गये हैं। इनमें घोर वीर, परिहास रसिक-स्वभाव साधक (कोई पापाचारी), स्वदेश-भक्त होते हैं। बड़ा आशावादी, थकान रहित पुनः पुनः परिवर्धित अध्ययन या अनुभव-युक्त, कार्यारम्भ में अनिश्चय की भावना सबसे अधिक, न्याय-प्रिय और सभी बातों पर पूर्वापर-विवेचना करने वाले होते हैं।

षष्ठ में—शत्रु नाशक, प्रेतादि साधन में तत्पर, पुष्ट शरीर, शूर-वीर एवं तेजस्वी होता है।

सप्तम में—कलह-प्रिय, लोगों से विरोध, कृतघ्न और मन्द-बुद्धि वाला होता है तथा इसकी स्त्री, सन्ताप देनेवाली या जारिणी होती है। किसी के कई स्त्रियाँ भी होती हैं।

अष्टम में—मुख या नेत्र दोष के कारण कुरूपवान्, गुणरहित, क्रोधी और क्रूर-स्वभाव-वाला होता है।

नवम में—कुकर्मी, माता-पिता तथा गुरुजन की हत्या करने वाला, बहुत जीवों को क्लेश देने वाला, तथा असत्य-भाषी होता है।

दशम में—कुल-धर्म-आचार से भ्रष्ट, निर्लज्ज, ढीठ, आत्माभिमानी एवं प्रतिष्ठा से रहित होता है।

लाभ में—सुखी, धनी, तेजस्वी, रूपवान्, प्रजावर्ग का पालक और बन्धु-प्रिय होता है, किन्तु ज्येष्ठज की मृत्यु सम्भव होती है।

व्यय में—विषय-रहित वेष वाला (साधु समान), दीन-भाषण-पटुता से धन-संग्रह करने में प्रवीण होता है, अर्थात् भिक्षुक होता है।

ग्रह-युक्त गुलिक फल

सूर्य के साथ—पिता आदि श्रेष्ठ जनों का विरोधी एव राजद्रोही होता है।
चन्द्र के साथ—माता आदि पूज्य तथा पुण्यात्मा जनों का विरोधी होता है।
भौम के साथ—प्राय अनुज (छोटे भाई) का अभाव या कष्ट होता है।
बुध के साथ—उन्मत्त, पागल, मति-भ्रम, बुद्धि के विकार होते हैं।
गुरु के साथ—पाखण्डी या दूपित अर्थात् धार्मिक विचारों से हीन होता है।
शुक्र के साथ—जननेन्द्रिय रोग से पीडित, नीच स्त्रियों का भर्ता होता है।
शनि के साथ—कुष्टादि व्याधि से दु खी, आजन्म रोगी शरीर रहता है।
राहु के साथ—कारागार आदि के बन्धन सम्भव, किसी विप-पदार्थ द्वारा रोगी होता है।
केतु के साथ—आग लगाने वाला या झगडा पैदा कर देने वाला, सन्ताप-दायक होता है।
विष घटिका में गुलिक हो तो—राजघराने में जन्म लेने पर भी भिक्षुक हो जाता है।

ग्रह

सूर्य, चन्द्र, मंगल, बुध, गुरु, शुक्र और शनि-सात हैं। राहु-केतु, देवपक्ष के न होकर, दैत्यपक्ष वाले, (दोनों) छाया-ग्रह हैं। मिहिराचार्य ने इनका उपयोग फलित में ले लिया है। आज तो, पौर्वात्य-पाश्चात्य दोनों मतों में राहु-केतु का उपयोग होने लगा है। पाश्चात्य मत से तीन ग्रहों का और भी प्रचार किया जा रहा है—(१) हर्शल (२) नेपच्यून और (३) प्लूटो। परन्तु ये तीनों अतिमन्दगति ग्रह होने के कारण, सर्व-साधारण में प्रकाश न करके, विशेष-विशेष स्थानों में अपना प्रभाव प्रगट करते हैं। इस प्रकार वर्तमान समय में द्वादश ग्रहों का प्रचार होता जा रहा है। हाँ, नव-ग्रहों का एक खण्ड, तीन-ग्रहों का एक खण्ड मान कर, आगे इन फलों का अनुसन्धान किया जा रहा है। अस्तु।

द्वितीय वर्तिका में ग्रहादि का शुभत्व, पापत्व और क्रूरत्व बताया गया है। जिनका यहाँ पुन स्मरण दिलाया जाता है—

प्राणपद का बलाबल देखकर, बलिष्ठ ग्रह (चन्द्र-गुलिक-प्राणपद) से विषम भाव में जन्म लग्न होने पर लग्न-शुद्धि मानी गयी है। अर्थात् इन तीन में से बलिष्ठ के अनुसार १।५।९ वें भाव में जन्म-लग्न होने से मनुष्य का जन्म, २।६।१० वें जन्म लग्न होने से पशु का जन्म, ३।७।११ वें होने से पक्षी का जन्म ४।८।१२ वें होने से कीट (सर्पादि) का जन्म जानना चाहिए। परन्तु पराशर मुनि का अभिप्राय कुछ और भी है। अर्थात् इन तीन में से किसी भी स्थान में जन्म लग्न हो तो विभिन्न फल होते हैं और वे फल, मनुष्य को ही घटित हो सकते हैं। सारांश यह है कि, पशु आदि स्वभाव-युक्त, मानव भी हो सकते हैं।

भावस्थ-प्राणपद-फल

लग्न में—गूँगा, उन्मत्त शिथिलांग हीनांग दुःखी, कृश और रोगी शरीर वाला होता है।

धन में—सुन्दर, धनाढ्य, सेवक-युक्त अनेक मनुष्यों पर अधिकार तथा अनेक प्रकार से सुखी होता है।

भ्रातृ में—गर्वित हिंसक, क्रूर मलिन, निष्ठुर एवं गुरु तथा श्रेष्ठजनों का विरोधी होता है।

सुख में—सुखी, सुन्दर, कुटुम्ब तथा मित्रादि का प्रिय, शीलवान् और सत्यभाषी होता है।

पुत्र में—सुखी धार्मिक, परोपकारी तथा कार्य-कुशल होता है।

रिपु में—बन्धु तथा शत्रुओं के आधीन, मन्दाग्नि से पीड़ित निर्दयी, रोगी एवं अल्पायु-भोगी होता है।

जाया में—ईर्ष्या करने वाला कामी, कठोर और बुद्धिहीन होता है।

आयु में—रोग सन्ताप राजा, कुटुम्ब नौकर और पुत्रादि से पीड़ित होता है।

धर्म में—पुत्रवान्, धनवान्, भाग्यवान्, सुन्दर और चतुर होता है।

कर्म में—बलवान्, बुद्धिमान्, दक्ष, देव-भक्त एवं राजकार्य में प्रवीण होता है।

लाभ में—गौरवर्ण माननीय विख्यात गुणज्ञ विद्वान्, धनाढ्य और भोगी होता है।

व्यय में—हीनांग, दुष्ट, क्षुद्र बन्धु और गुरुजनों से द्वेष करने वाला तथा नेत्ररोगी या काना होता है।

भावस्थ-गुलिक-फल

लग्न में—रोगी, कामी चोर, क्रूर विनय-हीन वेद-शास्त्र-रहित दुर्बल नेत्र-रोगी दुःखी, सम्पत्त अल्पमति और अल्पायु वाला होता है। पापयुक्त होने से शठ दुराचारी और विश्वास-घाती होता है।

द्वितीय में—व्यसनी दुःखी क्षुद्र भ्रमण-शील कलही धन-हीन प्रवासी और कटुभाषी होता है। पापग्रह से युक्त हो तो निर्धनी एवं विद्या-विहीन होता है।

तृतीय में—बड़े बोल वाला (वाचाल, शेखीबाज) सबसे दूर-दूर रहने वाला, मादक-पदार्थ-सेवी क्रोधी किन्तु शोक एवं भय से रहित राजा से माननीय सज्जनों का प्रिय ग्रामादि का नायक और धार्मिक होता है। इसे भाई या बहिन का सुख नहीं हो पाता तथा धन-संग्रह के लिए व्याकुल रहता है।

चतुर्थ में—विद्या-रहित गृह, धन भूमि वाहनादि से रहित, भ्रमण-शील रोगी वात-पित्तादि के विकार से पीड़ित तथा पापी होता है।

पंचम में—शील-रहित, अव्यवस्थित चित्त क्षुद्र स्त्रियों के आधीन नपुंसक या अल्पसन्तान वाला, अल्पायु या नास्तिक विचार वाला होता है।

(४) पचम से अधिक वलवान् नवम भाव माना गया है। (परमार्थ)

(५) लग्न या लग्नेश की शुभता पर अनेक दोप दूर होते हैं। (वलवत्ता)

(६) द्वितीय-द्वादश (द्विर्द्वादश) भाव के स्वामियों को अस्थिर अधिकार रहते हैं। जिसमे तीन बातों का ध्यान रखना पडता है—(क्योंकि यह दोनों भाव नपुसक सज्ञक हैं.)

[क] द्विर्द्वादशेश किस भाव (शुभाशुभ) में हैं।

[ख] द्विर्द्वादशेश किस ग्रह (शुभाशुभ) के साथ में हैं।

[ग] द्विर्द्वादशेश, जिस राशि में बैठे हैं, उस राशि का स्वामी किस भाव (शुभाशुभ) में हैं।

(७) अष्टमेश शुभग्रह हो तो शुभ फल, अशुभ ग्रह हो तो अशुभ फल देना, एक साधारण नियम है। परन्तु यदि सूर्य-चन्द्र अष्टमेश हो या लग्नेश-अष्टमेश एक ही ग्रह हो (यथा मंगल-शुक्र) अथवा अष्टमेश स्वगृही हो तो शुभफल देता है, अन्यथा अष्टमेश शुभ हो या पाप, सदैव अशुभ फलदायक ही माना गया है, क्योंकि अष्टम भाव, क्रूर संज्ञक है। व्यय भाव-मध्यम। षष्ठ भाव पाप सज्ञक माना गया है। अष्टम भाव ऐसा ही है जैसे कोई वधिक, एक बकरे को पालता और नष्ट करता है। अतएव अष्टमभावेश पालनकर्ता एव सहारकर्ता दोनों ही माना गया है। (स्वार्थी)

(८) तृतीय, षष्ठ, एकादश भाव के स्वामी, अशुभ फल देते हैं। प्राय इनकी दशाएँ तो निश्चित रीति से अशुभफलकारक होती हैं। तृतीयभाव द्वारा परिश्रम अधिक कराना, षष्ठभाव द्वारा वाधक होना, लाभभाव द्वारा शरीरकष्ट मिलना—अशुभ फल होते हैं। तीसरे से अधिक षष्ठ, षष्ठ से अधिक लाभ भाव का स्वामी पापफल (अशुभ) करते हैं।

(९) केन्द्रेश के शुभफल का परिणाम, परिश्रम के बाद ही हो पाता है, किन्तु लग्नेश एव त्रिकोणेश का का शुभफल विना परिश्रम (सरलता) होता रहता है।

(१०) त्रिकेश, त्रिक भाव में ही हो तो शुभफल, अन्यथा त्रिकेश, जिस भाव में वैठते हैं, उस भाव की हानि होती है। तथा जिस भाव का स्वामी, त्रिक भाव में वैठता है तो भी उसी भाव की हानि होती है (जिस भाव का स्वामी त्रिक में आया होगा)।

त्रिकेश विचार

कोई ग्रह, कोई राशि, कोई भाव, ऐसा न मिला, जिसके विना, रोग-विचार किया जा सके—अर्थात् सभी ग्रह, सभी राशि, सभी भाव—सबसे पहिले, शरीर पर, स्वस्थ (शुभ) या अस्वस्थ (अशुभ) प्रभाव डालते हैं, यही कारण है कि, न्यूनाधिकता से सभी रोगी हैं। परन्तु प्राय रोगी—(डाक्टर या जेल के निमित्त) त्रिकेश के कारण ही हो पाते हैं। अन्य कारणों के रोगी, अपने-अपने घर मे, प्रकृति द्वारा स्वस्थ होते रहते हैं, अथवा स्वल्पकाल के लिए या साधारण ढग के रोगी—अल्पकष्टमात्र पाने के लिए, यम-सहोदर (डाक्टर आदि) यम-मन्दिर (जेल आदि वन्धन स्थान) के दर्शन-सुख के सौभाग्य-शाली (दुर्भाग्य-भोगी) होते हैं। अस्तु।

(१) षष्ठ, अष्टम, द्वादश भाव को त्रिक कहा गया है। इनके स्वामी, जिन भावों में वैठें या जिन भावों के स्वामी, त्रिक में वैठें तो उस-उस भाव-फल में न्यूनता (अशुभता) होती है।

ग्रहों के शुभादि

सूर्य राहु क्रूर (अति क्रूर, पापत्व)। मंगल, शनि, केतु पाप। *गुरु, शुक्र शुभ।* बुध अकेला होने पर शुभ परन्तु पापग्रह के साथ होने से पाप, अस्त होने पाप, शुभग्रह के साथ होने से शुभ माना जाता है। क्षीण या पापग्रह से युक्त या दृष्ट चन्द्रमा, पाप होता है। पूर्ण-चन्द्र या शुभ युक्त वा दृष्ट चन्द्रमा शुभ होता है। गुरु, राहु या केतु के साथ होने से 'चाण्डाल-प्रकृति' वाला *माना जाता है।* क्षीण, नीच, अस्त, शत्रु गृही, त्रिकेश(पाप)या शत्रुग्रह से दृष्ट या युक्त और वक्री ग्रह, पाप (अशुभ) माने जाते हैं। वक्री उच्च, बलित, मित्रगृही, अतिमित्रगृही स्वगृही, मूलत्रिकोणस्थग्रह, मार्गीग्रह, इनसे दृष्ट या युक्त ग्रह, शुभ माने जाते हैं। इसी प्रकार—

भावों के शुभादि

त्रिकोण (*५।९ वाँ भाव*) सर्वोत्तम। केन्द्र (*१।४।७।१०*) उत्तम। त्रिक (*६।८।१२ वाँ भाव*) अशुभ। शेष (२।३।११ वाँ भाव) मध्यम माने जाते हैं। पुन —

ग्रह-भाव-संयोग

इन दोनों से मिलकर पूर्वोक्त शुभत्व-पापत्व में अन्तर पड़ जाता है अर्थात् ग्रह और भाव की शुभता या अशुभता से मिश्रता आ जाती है। शुभ भावपति शुभ ग्रह। अशुभ भावपति, अशुभ ग्रह। शुभ भावपति, अशुभ ग्रह। अशुभ भावपति शुभ ग्रह। यथा—जन्म-चक्र २४

(१) शुभ भावपति शुभ ग्रह (पंचमेश गुरु) = शुभ भावेश शुभग्रह ।

(२) अशुभ भावपति, अशुभ ग्रह (षष्ठेश मंगल) = अशुभ भावेश अशुभग्रह ।

(३) शुभ भावपति अशुभ ग्रह (सुखेश शनि) = शुभ भावेश अशुभग्रह ।

(४) अशुभ भावपति शुभ ग्रह (व्ययेश शुक्र) = अशुभ भावेश शुभग्रह ।

अधिकार-प्राप्ति

स्वाभाविक शुभ-अशुभ ग्रह, शुभ-अशुभ भावेश होकर, शुभ-अशुभ फल देने के अधिकारी होते हैं। इसी अधिकार के कारण शुभ या अशुभ ग्रह (परिस्थिति वश) अपने स्वभाव से विपरीत फल देने वाले बन जाते हैं। ग्रह तो, अपने स्वभाव (प्रकृति या तत्त्व) के अनुसार सदैव रहते ही हैं, किन्तु भावेश-विधान के कारण विपरीत (अनुकूल या प्रतिकूल) फल देने लगते हैं।

भावेश-विधान

(१) त्रिकोण के स्वामी शुभ हों या पाप, सर्वदा शुभ ही फल देते हैं। (परोपकारी)

(२) केन्द्र के स्वामी पाप हो तो शुभफल। शुभग्रह हो तो अशुभ फल देते हैं। (अवसरवादी) पाराशरी मत से केन्द्रेश पापग्रह तभी शुभफल देगा जब वह त्रिकोणेश भी हो।

(३) लग्न से अधिक चतुर्थेश चतुर्थेश से अधिक सप्तमेश सप्तमेश से अधिक दशमेश; फल (शुभ या अशुभ) करने में बलवान् होता है।

(३) जिस भाव का स्वामी स्वगृही (या उच्च का हो अथवा उच्च, स्वगृही, मूलत्रिकोणी, मित्रगृही ग्रह के साथ हो तो उस भाव का शुभफल होता है (जिस भाव का स्वामी हो)। यथा—सप्तमेश सप्तम में या सप्तमेश शुक्र, मीन राशि मे अथवा सप्तमेश—अन्य किसी उच्चादि स्थित ग्रह के साथ हो तो सप्तम भाव का शुभफल होता है।

(४) लाभ भाव तो शुभ माना गया है, किन्तु लाभेश अशुभ (शरीरकष्टकारक, अपनी दशान्तर्दशा में) होता है। अतएव सब किसी भाव के स्वामी, लाभ भाव मे जाने से शुभफल देते हैं। इसी प्रकार उपचय (३ । ६ । १० । ११) भाव में, सभी पाप या क्रूरग्रह, शुभफल दायक होते हैं।

(५) यदि कोई भावेश, पापग्रह होकर, तृतीय मे हो तो शुभफल, तथैव शुभग्रह हो तो मध्यमफल होता है।

(६) जिस भाव में शुभग्रह हो, उस भाव का शुभफल। जिस भाव मे पापग्रह हो, उस भाव का अशुभफल होता है यह एक साधारण नियम है।

(७) त्रिक में शुभग्रह हों तो उस भाव के अशुभफल का ह्रास तथैव पापग्रह हों तो उस भाव के अशुभफल की वृद्धि होना एक साधारण नियम-सा है। परन्तु प्राय: त्रिकेश (शुभ या पाप) कोई भी हो, यदि वे त्रिकस्थ हों तो अशुभफल का ह्रास ही माना गया है।

(८) बहुमत से त्रिकस्थ पापग्रह शुभफलदायक, तथैव त्रिकस्थ शुभग्रह, अशुभफलदायक होते हैं। किन्तु इस नियम के द्वारा (नं० ७ से) भिन्न फल न समझिए। क्योंकि त्रिकस्थ शुभग्रह, त्रिकभाव के लिए अशुभ फलदायक होकर (अर्थात् दोष नाश कर) जातक के लिए शुभफलकारक (अनुकूलता दायक) होते हैं।

ग्रह-युक्त-भाव-फल-विधान

(१) केन्द्र-त्रिकोण मे शुभग्रह हों तो शुभफल दायक (यदि वह शुभग्रह केन्द्रेश न हो। केन्द्रेश गुरु-शुक्र ही विशेष अशुभ होता है। परन्तु लग्नेश गुरु-शुक्र हो तो इतने अशुभ नहीं होते, जितने अन्य ग्रह, केन्द्रेश होकर अशुभ होते हैं।

(२) केन्द्र-त्रिकोण में शुभ-पाप (क्रूर) दोनों हों तो मिश्रित (शुभाशुभ) फलदायक होते हैं।

(३) ३।६।११ वें भाव में पापग्रह होना, शुभदायक है।

(४) जिस भाव के दूसरे-बारहवें 'पापग्रह' हों तो उस भाव का 'फलनाश'। शुभग्रह हों तो 'फल-वृद्धि' होती है। पापकर्तरी में पापफल। शुभकर्तरी मे शुभफल जानिए।

(५) जिस भाव के दूसरे-बारहवें भाव से से एक में शुभग्रह, एक में पापग्रह हो तो उस भावफल की 'ह्रास-वृद्धि' नहीं होती अथवा मिश्रित (शुभाशुभ) फल होता है।

(६) यदि सभी ग्रह, राहु-केतु के मध्य मे हों तो 'काल-सर्प' नामक योग होता है। इसका अशुभफल—धनहानि, दरिद्रता, राज्य-नाश, अल्पायु, रोगी शरीर होना—आदि हैं। अनुभव मे आया है कि, धन-हानि के उदाहरण अधिक, अल्पायु के उदाहरण कम ही हैं। साथ ही विचित्रता भी देखने को मिली है कि, सब कुछ होते हुए, किसी का कुछ सुख नहीं (यह कृपण या दरिद्री योग के लक्षण हैं अथवा भावों के सुखों का बन्धन (बाधा) करता है) इसी प्रकार कुछ न होते हुए यदि सब कुछ मिलता है परन्तु अस्थिर-सुख रहता है। प्राय धनी लोगों के या उनके साथियों के यह योग पाया जाता है। सभी ग्रहों के व्यय (पृष्ठ) में राहु या केतु हो जाने से योग बन जाता है। तब यदि व्यय

(२) त्रिकेश जिस भाव में हों, यदि उस (त्रिकेशास्य) भाव का स्वामी, त्रिक में हो तो उस भाव की अधिक हानि होती है। (जिसमें त्रिकेश बैठा होता है)

(३) त्रिकेश त्रिकस्थ हो अथवा स्वगृही होकर त्रिकस्थ हो तो अशुभ न होकर प्रायः उन्नति शील (शुभ) फल होते हैं। अथवा त्रिकेश, त्रिकस्थ तो हों किन्तु इनके साथ अन्य कोई ग्रह न हो, स्वगृही हो या अन्यत्रिक भावों में हों, सारांश यह है कि, त्रिकेश अकेले या त्रिकेश ही के साथ त्रिकस्थ हों तो सर्वथा शुभ ही फल होता है। प्रायः कम ही अशुभ फल होता है। प्रायः शब्द हमने इसलिए उपयोग किया कि, सूर्य-चन्द्र को छोड़, अन्य कोई ग्रह जब त्रिकों का स्वामी होता है, तब साथ ही किसी दूसरे भाव भी स्वामी होता है अतएव ऐसी स्थिति में कभी कुछ अशुभ फल भी दे सकता है।

(४) त्रिकेश, त्रिकस्थ न होकर, अन्य भाव में हो स्वगृही भी न हो, किन्तु त्रिकेश–स्थित–भावेश ही यदि स्वगृही हो तो चिरस्थायी अशुभफल नहीं होता। यथा, चक्र ६ में व्ययेश शनि एवं षष्ठेश चन्द्रमा (दोनों ही) तृतीयेश भौम के साथ तृतीयस्थ हैं। अतएव शनि–चन्द्र द्वारा अशुभफल चिरस्थायी नहीं हो सकेंगे।

(५) त्रिकेश, त्रिकस्थ न होकर, अन्य भाव में हो, और यदि त्रिकेश–स्थित–राशि का स्वामी, त्रिकस्थ न होकर, त्रिकेश–स्थित भाव पर दृष्टि डालता हो तो स्वामी अशुभ फल नहीं हो पाता। यथा, कुम्भ लग्न में जन्म हो और शनि–चन्द्र–तृतीयस्थ हो, मंगल नवम भाव में हो तो ऐसी स्थिति में त्रिकेश का स्वामी अशुभ फल न होगा।

(६) *मंगल–शुक्र–शनि को त्रिकेश दोष कम ही होता है। यथा मेष–वृश्चिक लग्न में मंगल को, वृष–तुला लग्न में शुक्र को* (लग्नेश होने के कारण), मिथुन–कन्या लग्न में शनि को (त्रिकोणेश) होने के कारण, त्रिकेश दोष की क्षीणता मानी गयी है।

(७) जब त्रिकेश–स्थित–राशीश अथवा त्रिकेश के साथ बैठने वाले जितने ग्रह, जितने भाव, उनकी दृष्टि या युति में आजाते हैं उन सबों पर त्रिकेश का दोष–स्पर्श होता ही है।

भाव–फल–विधान

(१) त्रिकेश को छोड़कर किसी भाव का स्वामी लग्न से केन्द्र या त्रिकोण में स्थित हो, तो उस भाव के लिए शुभफल होता है। (जिस भाव का स्वामी केन्द्र–त्रिकोण में आजाता है)।

(२) जिस भाव का स्वामी अपने भाव से, केन्द्र–त्रिकोण में स्थित हो तो शुभफल। त्रिक में हो तो अशुभफल। २, ३, ११ वें भाव में हो तो मध्यम (शुभाशुभ) फल होता है।

नोट—

पूर्वोक्त दोनों नियमों से जब शुभता आती है तब अधिक शुभफल तथा दोनों से अशुभता होने पर अधिक अशुभ फल होता है। सारांश यह है कि, किसी भाव का स्वामी (त्रिकेश को छोड़कर) लग्न से तथा अपने भाव से केन्द्र–त्रिकोण में जाने पर शुभफल विशेष देता है। इसी प्रकार लग्न एवं अपने भाव से त्रिक में जाने पर अशुभफल विशेष देता है। यथा—पंचमेश–नवमेश, पंचम या नवम में हों तो लग्न से या अपने भाव से केन्द्र–त्रिकोण में ही रहकर शुभफल विशेष देंगे; तथैव लाभेश, षष्ठ में जाने पर लग्न से षष्ठ एवं लाभ से अष्टम (त्रिकस्थ) होने से अशुभफल विशेष देगा।

द्वादश-भावस्थ-ग्रह-फल

[सूर्य-फल]

(१) लग्नस्थ होने से—विचित्र रूप, नेत्ररोगी, लाल या गुलाबी नेत्रवाला, कण्ठ या गुदा में व्रण अथवा तिलयुक्त, शूर-वीर, चंचल, प्रवासी, कृशदेही, उन्नत नासिका, विशाल ललाट, क्षमाशील, घृणा-रहित, कुशाग्रबुद्धि, उदार-प्रकृति, साहसी, आत्मसम्मानी, परन्तु निर्दयी, क्रोधी, अस्थिर सम्पत्ति, सनकी, वात-पित्त प्रकोप, आकार में लम्बा, कर्कस, गर्मशरीर, थोड़ेकेश (अल्पकेश, केशरोगी) बाल्यावस्था में अनेक पीड़ाएँ, शिर में चोट लगने की सम्भावना, तीसरे वर्ष ज्वर-भय, १५ वर्षायु में अंगपीड़ा होती है। यदि सूर्य के साथ पापग्रह हो, सूर्य नीचस्थ या शत्रुगृही हो तो ये अनिष्टफल होते हैं। शुभग्रह की दृष्टि-युति से दुष्ट-फल नहीं हो पाते। मानी, बन्धु-विरोध, विदेश में धनलाभ, कामी, सन्तान-कष्ट होता है। मेषस्थ सूर्य में नेत्र रोगी, परन्तु धनवान् और यशस्वी होता है। साथ ही उच्चस्थ-लग्नस्थ सूर्य पर, किसी बलिष्ठ ग्रह की दृष्टि हो तो विद्वान् होता है। तुलास्थ सूर्य में, नेत्र में फूली अथवा तिल, निर्धन, मान-रहित होता है, परन्तु शुभदृष्ट होने से अनिष्ट-फल नहीं हो पाते। मकर या सिंह में रहने से रतौंधी (निशान्धता) एवं हृदय-रोग होता है। कर्कस्थ सूर्य में, नेत्र में फूली, शरीर में रोग, परन्तु ज्ञानी होता है। सिंह अथवा सिंह राशि के नवांश में सूर्य रहने से किसी स्थान का 'स्वामित्व' प्राप्त होता है, और शुभदृष्ट या युक्त होने से निरोगी होता है।

(२) धनस्थ होने से—बुद्धि-रहित, मित्र-विरोधी, वाहन-रहित, विषयादि सुख-रहित, नेत्र, कर्ण, दन्त का रोगी, राजभीरु, स्त्री के लिए कुटुम्ब का विरोधी, पुत्रवान्, राजकोप से कष्ट, मुखरोग, नेत्रविकार, सम्पत्तिवान्, भाग्यवान्, झगड़ालू, शरीर में रोग, शिक्षा में बाधा (रुकावट), हठी, चिड़-चिड़ा स्वभाव और दृढ-प्रतिज्ञ होता है। राहुयुति से धन-धान्य का सुख। शनि-दृष्टि-रहित सूर्य, प्राय 'धन-सुख' करता है। शनि-दृष्टि-युक्त, शुभ-दृष्टि से रहित सूर्य, निर्धनी करता है। प्राय राजकोप से या चोर द्वारा धन-हानि सम्भव है। प्रतिष्ठा अधिक, धन संख्या कम, विद्या-द्वारा मान-गौरव की प्राप्ति। अस्थिर धन। १७-२४ वें वर्षायु में धन-हानि सम्भव है। प्रवासी या अधिक यात्राएँ होती हैं।

(३) तृतीयस्थ होने से—कुशाग्रबुद्धि, पराक्रमी, बली, प्रिय-भाषी, स्वच्छ-चित्त, वाहन और सेवकों से सुखी, राजमान्य, कवि, बन्धुहीन, लब्धप्रतिष्ठ, अनुचर-विशिष्ट (अनुयायी या शिष्य युक्त) तेजस्वी तथा नैतिक-साहस-युक्त, भ्रातृ-संख्या कम, अग्रज हानि, सहोदर भाइयों की अल्पता, चचेरे भाई अनेक होते हैं। ज्येष्ठ बन्धु की हानि, धनी, सुकर्मी और यशस्वी होता है। यदि अशुभ सूर्य हो तो भाई से या कुटुम्ब से अल्प-सुख, विष-अग्नि-चर्मरोग-हड्डी टूटने का भय रहता है। यदि सूर्य, किसी पापग्रह से दृष्ट या युक्त हो तो किसी भाई-बहिन की मृत्यु, अथवा भाई, पुत्र-रहित, अथवा बहिन, विधवा होती है। कभी-कभी किसी भाई की मृत्यु, विष या शस्त्र द्वारा होती है और भाई-बहिन को सन्तान-सम्बन्धी दुःख होता है। प्राय. ऐसा जातक धन से सुखी होता है। ५ वीं वर्षायु में पशुभय। २० वीं वर्षायु में धन-लाभ-सम्भव होता है।

(४) चतुर्थस्थ होने से—दुर्बल, विकृत-अवयव अथवा अङ्ग-हीन, मानसिक-चिन्ता-युक्त, अकारण-विवाद-प्रिय, आत्मीय जनों से घृणा (उपेक्षा), गर्वित, कपटी, संग्राम में स्थिर, बहु-स्त्री-लोलुप, सुन्दरता युक्त, प्रतिष्ठित, विख्यात, गुप्त विद्या में रुचि किन्तु सुख-धन-वाहन से रहित, कठोर, पितृ-धन का अपव्ययी अथवा पितृधनापहारी, भ्रमण-शील, बन्धु-बान्धवों की हानि, बन्धु से वैर, वाहन-विनाश और गृह-सुख-रहित होता है। १४ वें वर्ष में विरोध। २२ वें वर्ष में उन्नति।

में केतु हो तो धन होना किन्तु धन का सुख न होना। इसी प्रकार व्यय में राहु रहने से धन न होना, सुख मिल जाना (अन्याश्रय द्वारा)। दशम में राहु हो तो पिता को कष्ट, मृत्यु तक सम्भव रहती है। चतुर्थ में राहु हो तो माता-पिता दोनों का जीवन (आयु) सुख मिलता है, राहु माता की मृत्यु का कष्ट न देकर, चतुर्थ भाव के सुखादि अन्य फलों में दुष्परिणाम करता है।

(७) जो भाव, अपने स्वामी या शुभग्रह द्वारा युक्त या दृष्ट हो और पापयुक्त या दृष्ट न हो तो शुभफल।

(८) जो भावेश, शुभयुक्त या दृष्ट हो, अथवा जिस भाव में शुभग्रह हो अथवा जिस भाव पर शुभग्रह की या शुभभावेश की दृष्टि हो, उसका शुभफल होता है।

(६) जिस भाव का स्वामी या भाव पापयुक्त या दृष्ट हो तो उसका अशुभफल होता है।

(१०) जिस भाव म शुभ या पापग्रह, नीच राशि का या शत्रु राशि का हो तो उस भाव की हानि होती है (जिस भाव में बैठता है)। किन्तु जब यही (शुभ या पापग्रह) उच्च, स्वगृही, मूलत्रिकोणी, मित्रगृही होकर, जिस भाव में बैठते हैं, उसकी वृद्धि (शुभफल) करते हैं।

(११) भावेश, अस्त या नीचस्थ होकर, केन्द्र-त्रिकोण में हो तो शुभफल विशेष रूप से नहीं हो पाता हाँ मरूस्थल और कष्ट के बाद कुछ शुभफल देता है।

(१२) चतुर्थ-दशम भावेश सुखदायक, पंचम-नवम भावेश धनदायक, लग्नेश-सप्तमेश धन और सुख दोनों देते हैं। परन्तु सप्तमेश की दशान्तदशा कष्टकारक भी होती है।

(१३) भावेशस्थ-राशीश, त्रिकस्थ होने से कुछ निबलता एवं भावेशस्थ-राशीश, उच्चादि होने कुछ बलवत्ता—भाव के लिए प्रदान करता है।

(१४) भावेश अनिष्टकारक होने पर भावस्थ ग्रह उतना उपकारी नहीं हो पाता। जितना भावेश शुभकारक होनेपर उपकारी होता है। भावस्थ ग्रह (किरायेदार=अस्थिर अधिकारी)। तात्पर्य यह है कि, भावस्थ ग्रह यदि शुभकारक हुआ भी तो केवल कुछ बाहिरी चमक दिखा देगा और भावेश सच्चे (ठोस) स्थिर-फल का सूचक होता है।

(१५) जब राहु या केतु, त्रिकोण में किसी केन्द्रेश के साथ बैठते हैं तब शुभफलदायक माने गये हैं। इसी प्रकार जब राहु या केतु, केन्द्र में, किसी त्रिकोणेश के साथ बैठते हैं तब भी शुभफल देते हैं। तथैव ३।६।१ ।११ में भाव में स्थित राहु या केतु शुभफल देते हैं।

नोट—

किसी भी एक ग्रह के शुभाशुभत्व की शक्ति द्वारा भावफल में ह्रासोन्नति हुआ करती है। अतएव भावस्थ ग्रह फल, राशिस्थ ग्रह फल भावेश भावस्थ फल भाव पर ग्रह-दृष्टि फल, राशिस्थ ग्रह पर ग्रह-दृष्टि फल के सामञ्जस्य से सभी जीवों को, मिश्रण-फल ही प्राप्त होता है। मिश्रण-फल एक साथ म लिखकर कोई ग्रन्थ नहीं रचा जा सकता। सुनते हैं, भृगुसंहिता म ऐसा ही एक साथ फल है। परन्तु अद्यावधि यह ग्रन्थ-विशेष देखने को नहीं मिला। दुष्प्राप्य है, जैसे सर्पमणि हंस गरुड़ पीना कमल उदुम्बर-पुष्प आदि। आगे पूर्वोक्त प्रकार से फलों का अनुसन्धान, (एकत्र-संकलन) दिखाया जायगा। जिसके अनेक योग बनकर देश-काल-पात्र से सम्भावित एवं परिमाणान्तर फल जातक के जीवन में विकसित होंगे। अस्तु।

उत्कृष्ट विषय और सूर्य-मण्डल की अद्भुत घटनावली से प्रेम, योगी, तपस्वी, सदाचारी, नेता, ज्योतिषी, साहसी, उदार, साधारण-सम्पत्ति, अच्छी सूझ-बूझ वाला, पैतृक सम्पत्ति का त्यागी, भृत्य तथा वाहन का सुख, निज उपार्जित धन से धनी, कलही, गिल्टी की बीमारी, कृषि-विद्या में कुशल, १-१० वें वर्ष में तीर्थयात्रा। सिंहस्थ सूर्य भ्रातृनाशक, यदि कोई भाई जीवित रह जाय तो वह भाई, बड़ा भाग्यवान् होता है। मित्रगृही सूर्य, सात्विक, अनुष्ठान-शील और धार्मिक बनाता है। सूर्य उच्च या स्वगृही होने से पिता की दीर्घायु होती है, जातक भी ईश्वर-भक्त, विनयी और देव-गुरु-पूजक होता है। नीचस्थ सूर्य, भाग्य तथा धर्मानुष्ठान के लिये विरोधक, चिन्ता तथा विरक्ति देता है। यदि सूर्य, पाप या शत्रु के घर में या दृष्ट या युक्त हो तो पिता के लिए अनिष्ट होता है। परन्तु यदि सूर्य, शुभग्रह से दृष्ट या युक्त हो तो, पिता दीर्घायु भोगता है।

(१०) दशमस्थ होने से—स्वस्थ, शूर-वीर, प्रतापी, कार्यारूढ, श्रेष्ठ-बुद्धि, परकार्यकर्ता (नौकरी) राजानुगृहीत, साधु-जन में रुचि, प्रसिद्ध, धनोपार्जन में चतुर, व्यवसाय-कुशल, राजमान्य, लब्धप्रतिष्ठ, राजमन्त्री, उदार, अतिसाहसी, संगीत-प्रिय, नवीन वासस्थल का स्थापक, नगर-निर्माता, पुत्रवान्, ऐश्वर्य-सम्पन्न, लोकमान्य, वाहन-भूषण, मणि आदि का सौख्य, १८ वें वर्ष के बाद विद्या-प्रभाव से प्रसिद्ध, १६ वें वर्ष में किसी प्रियवस्तु से वियोग होता है। यदि सूर्य पर, तीन ग्रह की दृष्टि हो तो, राजा (स्वामी) का प्रिय, अच्छा काम करने में चतुर, पराक्रमी और प्रसिद्ध होता है। यदि सूर्य, उच्च या स्वगृही हो तो बली, यशस्वी, प्रसिद्ध (बावली, मकान, देव-प्रतिष्ठा के कारण प्रसिद्ध) होता है। यदि सूर्य, पाप युक्त या दृष्ट हो तो कार्य में विघ्न-बाधाएँ, नीच तथा भ्रष्टाचारी, पापी एव दुष्ट-स्वभाव करता है। २८ वें वर्ष मे पिता को कष्ट होता है।

(११) लाभस्थ होने से—रूपवान्, निरोगी, ज्ञानी, योगी, सदाचारी, अल्पसंतति, विनीत, संगीतप्रिय, यशस्वी, सत्कर्मी, राजानुगृहीत, स्थिर, प्रसिद्ध, धनी, बलवान्, सुखी, स्वाभिमानी, मितभाषी, तपस्वी, वाहन-सुख, बहु-शत्रु-युक्त, धन-धान्य का सुख, राजद्वार से लाभ-सुख, सेवकों पर दयालु, उदर-रोगी, २०-२४ वें वर्ष में सन्तान-लाभ, २५ वें वर्ष में वाहन-लाभ होता है। यदि सूर्य, स्वगृही या उच्च हो तो, राजा-चोर-कलह (मुकदमा के बाद) से और पशु द्वारा धनवान, सदुपाय से धन-लाभ होता है। बली भी होता है। यदि सूर्य के साथ, सुखेश हो तो अनेक पदार्थ या धन का अधिकारी, किन्तु अल्प-भाग्यशाली होता है।

(१२) द्वादशस्थ होने से—लम्बे-लम्बे अंग, परकार्यकर्ता (नौकर), बहुव्ययी (खर्चीला), राजकोप से धनहानि, पिता से विरोध या मनोमालिन्य, उदासीन, वामनेत्र या मस्तक में रोग, आलसी, परदेश-वासी, मित्रद्रोही, कृशशरीर, विरुद्ध-बुद्धि, पापी, पतित, चोर, धननाशक, प्रवासी, परस्त्री-गामी (किसी प्रकार का विरुद्धाचारी), लोक-विरोधी, नेत्ररोगी, कुक्षि-पीडा, दरिद्र और कृपण होता है। ३६ वें वर्ष में गुप्तरोग, ३८ वें वर्ष में धनहानि होती है। यदि व्ययेश, बलीग्रह से युक्त हो तो, देव द्वारा सिद्धिकर्ता तथा शय्या आदि का सुख होता है। यदि सूर्य के साथ पापग्रह हो तो, अपव्ययी (दुष्टस्थान में खर्च करनेवाला), शय्या-सुख-रहित, यात्रा अधिक (अस्थिर निवासी) करता है। यदि सूर्य, षष्ठेश युक्त हो तो, कुष्टरोग का भय रहता है। परन्तु यदि सूर्य, शुभग्रह से दृष्ट या युक्त हो तो कुष्ट-भय नहीं होता।

नोट—

इसी प्रकार सभी ग्रहों के फल, अनुसन्धान करके विचार किया जाना चाहिए। नेत्र मूँद कर (बिना सोचे समझे) कोई फल न तो बताना चाहिए, और न लिखना ही चाहिए। भावस्थ ग्रहों के फल, 'शुभ-अशुभ' मिलाकर लिखे गये हैं। यथा सम्भव, शुभ सयोग से शुभफल, अशुभ सयोग से अशुभफल—जातक के जीवन में घटित होते हैं। केवल लग्नादि भावस्थ-ग्रह-मात्र से फल की पूर्ति नहीं हो पाती।

१२ वें वर्ष में कार्य-योग्यता होती है। पिता का अल्प सुख। इसी प्रकार यदि सूर्य स्वगृही हो या चतुर्थेश, बलीग्रह युक्त या केन्द्र या त्रिकोण में हो तो वाहन आदिक का सुख होता है। यदि चतुर्थ-भाव में पापग्रह की दृष्टि हो तो साधारण प्रकार की सवारी का सुख होता है। घर में निवास कम तथा परदेश-भ्रमण अधिक होता है।

(५) पंचमस्थ होने से—सत्क्रियाशील, उद्भ्रान्त-चित्त, रोगी, दुःखी, बुद्धिमान्, सुतसन्तान का अन्त या अल्प सन्तानवान् मोटा शरीर, सदाचारी, शिव-शक्ति-दुर्गा आदि देव-पूजक, भक्त, श्रेष्ठ कार्य से विमुख, शीघ्र-क्रोधी, सन्तान तथा धन से रहित, दीन, दुःखी, असफलता, वात-स्वास में पीड़ा, *पिता से भय और वंचक होता है। सूर्य यदि स्थिरराशि में हो तो प्रथम सन्तति की मृत्यु, चरराशि* में सन्तान सुख, द्विस्वभावराशि में सन्तान-हानि, स्वगृही में भी प्रथम सन्तान की हानि कभी-कभी स्त्री का गर्भपात होना भी सम्भव है। पंचमेश, बलवान् ग्रहों के साथ हो तो पुत्र-सुख होता है। यदि पापग्रह के साथ या दृष्ट हो तो कन्या-सन्तति का सुख होता है। पंचमस्थ सूर्य पर शुभग्रह की दृष्टि या युति हो तो पुत्र-सुख होता है। ७ वें वर्ष में पिता को रोगादि भय, नवम वर्ष में पिता को शारीरिक-कष्ट होता है।

(६) षष्ठस्थ होने से—विख्यात गुणवान्, बलवान्, शत्रुविजयी, सतोगुणी निरोगी, राजा के समान, (सुखियापन) अथवा राजा का मन्त्री (प्रधान के बाद द्वितीय पद), दण्ड देने के अधिकारी (आलोचक), सुन्दर वाहनों से युक्त (यात्रा सुख), न्यायवान्, सुखी, तेजस्वी, बुद्धिमान् निन्याय, शत्रु को भयदायक, किन्तु शत्रु-युक्त, धन-धान्य की वृद्धि और तीव्र जठराग्नि होती है। आर्द्रकामों से भरा मस्तिष्क वाला होता है। यदि सूर्य शुभयुक्त दृष्ट हो तो नेत्ररोग नहीं होता अन्यथा २ वें वर्ष के बाद नेत्र में फूली आदि रोग-भय होता है। यदि षष्ठेश, शुभग्रह-दृष्ट या युक्त हो तो निरोगी। यदि षष्ठेश निर्बल हो तो शत्रु का नाश तथा पिता निर्बल होता है। प्रायः षष्ठेश की निर्बलता से पिता, आर्थिक-दृष्टि से निर्बल होता है। षष्ठस्थ सूर्य ७ वें वर्ष में पिता को रोग भय देता है, मातुल-कष्ट-कारक होता है।

(७) सप्तमस्थ होने से—दुर्बल शरीर, स्त्री को कष्टदायक, स्वाभिमानी कठोर-चित्त आलस्य मझोला कद भूरे नेत्र या केश से युक्त, शील-रहित, चञ्चल पापी मय-युत *स्त्री-संग भोगादि में लिप्त, स्त्रियों* से विरोध करनेवाला स्त्रियों से अनादर पाने वाला परस्त्री-लोभी परगृह-भोजी हो की सम्भव (द्विभार्या योग) विलम्ब से विवाह विवाह में बाधायें, धनहीन, राज्य से अपमानित, राजकोप का दुःख कुटुम्ब की हानि चिन्तायुक्त कदन्न-भोजी (कुभोजी) १४-२४ वें वर्ष में स्त्री को कष्ट, २५ वें वर्ष में परदेश-यात्रा होती है। यदि सिंहस्थ सूर्य या बली सूर्य हो तो एक ही स्त्री होती है। यदि सूर्य, *पाप या शत्रु ग्रह से दृष्ट या युक्त हो तो स्त्री-लोलुप या कई स्त्रियों से सम्बन्ध हो सकता है।*

(८) अष्टमस्थ होने से—दुर्बलशरीर छोटे नेत्र, रोग-युक्त, निर्बुद्धि क्रोधी व्यय-निष्फल कार्य-समय में बुद्धि-विवेचना से रहित २३ वर्ष तक कार्य में असफलता, अल्पसन्तान वाला नेत्ररोग उदार-प्रकृति पित्तरोगी चिन्तायुक्त, अधीर चिरायु-भोगी, धन-न्यूनता का अनुभव, गौ-भैंस आदि पशु का अभाव या विनाश १ वें वर्ष में शिर में व्रण १४-२४ वें वय में स्त्री को कष्ट। सूर्य के साथ शुभग्रह हो तो शिर में व्रण नहीं होते। यदि अष्टमेश, बलीग्रह के साथ हो तो इच्छा के अनुसार कृषि-भूमि की प्राप्ति होती है। यदि सूर्य उच्च या स्वगृही हो तो दीर्घायु होती है।

(९) नवमस्थ होने से—धार्मिक, श्रेष्ठबुद्धि, मय-क्रिया-रत कुभाग्य, मित्र-विरोध, भ्रमण मातृकुल के सुख से रहित पुत्रवान्, सुखी मित्रादि की सहायता से सुख-युक्त सूर्य-शिव आदि देवपूजक, पिता से विरोध,

उत्कृष्ट विषय और सूर्य-मण्डल की अद्भुत घटनावली से प्रेम, योगी, तपस्वी, सदाचारी, नेता, ज्योतिषी, साहसी, उदार, साधारण-सम्पत्ति, अच्छी सूझ-बूझ वाला, पैतृक सम्पत्ति का त्यागी, भृत्य तथा वाहन का सुख, निज उपार्जित धन से धनी, कलही, गिल्टी की बीमारी, कृषि-विद्या में कुशल, ९-१० वें वर्ष में तीर्थयात्रा। सिंहस्थ सूर्य भ्रातृनाशक, यदि कोई भाई जीवित रह जाय तो वह भाई, बड़ा भाग्यवान् होता है। मित्रगृही सूर्य, सात्विक, अनुष्ठान-शील, और धार्मिक बनाता है। सूर्य उच्च या स्वगृही होने से पिता की दीर्घायु होती है, जातक भी ईश्वर-भक्त, विनयी और देव-गुरु-पूजक होता है। नीचस्थ सूर्य, भाग्य तथा धर्मानुष्ठान के लिये विरोधक, चिन्ता तथा विरक्ति देता है। यदि सूर्य, पाप या शत्रु के घर में या दृष्ट या युक्त हो तो पिता के लिए अनिष्ट होता है। परन्तु यदि सूर्य, शुभग्रह से दृष्ट या युक्त हो तो, पिता दीर्घायु भोगता है।

(१०) दशमस्थ होने से—स्वस्थ, शूर-वीर, प्रतापी, कार्यारूढ, श्रेष्ठ-बुद्धि, परकार्यकर्ता (नौकरी) राजानुगृहीत, साधु-जन मे रुचि, प्रसिद्ध, धनोपार्जन में चतुर, व्यवसाय-कुशल, राजमान्य, लब्धप्रतिष्ठ, राजमन्त्री, उदार, अतिसाहसी, संगीत-प्रिय, नवीन वासस्थल का स्थापक, नगर-निर्माता, पुत्रवान्, ऐश्वर्य-सम्पन्न, लोकमान्य, वाहन-भूषण, मणि आदि का सौख्य, १८ वें वर्ष के बाद विद्या-प्रभाव से प्रसिद्ध, १९ वें वर्ष में किसी प्रियवस्तु से वियोग होता है। यदि सूर्य पर, तीन ग्रह की दृष्टि हो तो, राजा (स्वामी) का प्रिय, अच्छा काम करने में चतुर, पराक्रमी और प्रसिद्ध होता है। यदि सूर्य, उच्च या स्वगृही हो तो बली, यशस्वी, प्रसिद्ध (बावली, मकान, देव-प्रतिष्ठा के कारण प्रसिद्ध) होता है। यदि सूर्य, पाप युक्त या दृष्ट हो तो कार्य में विघ्न-बाधाएँ, नीच तथा भ्रष्टाचारी, पापी एव दुष्ट-स्वभाव करता है। २८ वें वर्ष में पिता को कष्ट होता है।

(११) लाभस्थ होने से—रूपवान्, निरोगी, ज्ञानी, योगी, सदाचारी, अल्पसंतति, विनीत, संगीतप्रिय, यशस्वी, सत्कर्मी, राजानुगृहीत, स्थिर, प्रसिद्ध, धनी, बलवान्, सुखी, स्वाभिमानी, मितभाषी, तपस्वी, वाहन-सुख, बहु-शत्रु-युक्त, धन-धान्य का सुख, राजद्वार से लाभ-सुख, सेवकों पर दयालु, उदर-रोगी, २०-२४ वें वर्ष में सन्तान-लाभ, २५ वें वर्ष में वाहन-लाभ होता है। यदि सूर्य, स्वगृही या उच्च हो तो, राजा-चोर-कलह (मुकदमा के बाद) से और पशु द्वारा धनवान, सदुपाय से धन-लाभ होता है। बली भी होता है। यदि सूर्य के साथ, सुखेश हो तो अनेक पदार्थ या धन का अधिकारी, किन्तु अल्प-भाग्यशाली होता है।

(१२) द्वादशस्थ होने से—लम्बे-लम्बे अंग, परकार्यकर्ता (नौकर), बहुव्ययी (खर्चीला), राजकोप से धनहानि, पिता से विरोध या मनोमालिन्य, उदासीन, वामनेत्र या मस्तक में रोग, आलसी, परदेश-वासी, मित्रद्रोही, कृशशरीर, विरुद्ध-बुद्धि, पापी, पतित, चोर, धननाशक, प्रवासी, परस्त्री-गामी (किसी प्रकार का विरुद्धाचारी), लोक-विरोधी, नेत्ररोगी, कुक्षि-पीड़ा, दरिद्र और कृपण होता है। ३६ वें वर्ष में गुप्तरोग, ३८ वें वर्ष में धनहानि होती है। यदि व्ययेश, बलीग्रह से युक्त हो तो, देव द्वारा सिद्धिकर्ता तथा शय्या आदि का सुख होता है। यदि सूर्य के साथ पापग्रह हो तो, अपव्ययी (दुष्टस्थान में खर्च करनेवाला), शय्या-सुख-रहित, यात्रा अधिक (अस्थिर निवासी) करता है। यदि सूर्य, षष्ठेश युक्त हो तो, कुष्टरोग का भय रहता है। परन्तु यदि सूर्य, शुभग्रह से दृष्ट या युक्त हो तो कुष्ट-भय नहीं होता।

नोट—

इसी प्रकार सभी ग्रहों के फल, अनुसन्धान करके विचार किया जाना चाहिए। नेत्र मूँद कर (बिना सोचे समझे) कोई फल न तो बताना चाहिए, और न लिखना ही चाहिए। भावस्थ ग्रहों के फल, 'शुभ-अशुभ' मिलाकर लिखे गये हैं। यथा सम्भव, शुभ संयोग से शुभफल, अशुभ सयोग से अशुभफल—जातक के जीवन में घटित होते हैं। केवल लग्नादि भावस्थ-ग्रह-मात्र से फल की पूर्ति नहीं हो पाती।

[चन्द्र-फल]

(१) लग्नस्थ होने से—कोमल तथा सुन्दर शरीर चञ्चल-स्वभाव, प्रायः गौर वर्ण, वातरोगी, शिरो-व्यथा श्वास-कास या गुप्तांग रोग, सनकी हठी, बासी भोजन में भी रुचि अथवा या जल या शीत रोग का भय, १५ वें वर्ष में यात्रा, २७ वें वर्ष में रोग होता है। मेष वृष कर्कस्थ चन्द्र में, बलवान्, ऐश्वर्यशाली, सुखी, व्यवसायी, गान-वाद्यप्रिय मोटा शरीर शान्त रूपवान्, धनी, दयालु भोगी, गुणी, तेजस्वी तथा बहु सन्तान युक्त होता है। यदि चन्द्रमा पूर्ण हो तो सुन्दर, आकर्षक, उदार, सहानुभूति-पूर्ण, विद्वान् तथा स्वस्थ होता है, अन्यथा दरिद्र, व्याधियुक्त, गूँगा, नेत्ररोगी नीचता बधिरता, उन्मादयुक्त हो जा सकता है। यदि चन्द्र पर शुभग्रह की दृष्टि हो तो बली निरोगी धनी, किन्तु कपट-भरी वाणी होती है। लग्नेश निर्बल होने से रोगी। लग्नेश शुभ दृष्ट होने से निरोग करता है। प्रवासी कलहयुक्त, युद्ध या मुकदमा के बाद धन-लाभ होता है।

(२) धनस्थ होने से—विनीत, तेजस्वी मधुरभाषी, सुन्दर, भोगी, परदेशवासी सहनशील, शासक द्वारा सम्मानित हठी धनी, सुवर्ण-चाँदी धातु का लाभ, शान्तिप्रिय, भाग्यवान्, बहुकुटुम्बयुक्त, उदार किन्तु सन्तोष की मात्रा कम तथा बहन या कन्या के धन की हानि होती है। यदि पूर्ण चन्द्रमा हो तो सुखी, पुत्रवान् धनी अनेक विद्याओं का ज्ञाता होता है। यदि क्षीण चन्द्र हो तो रुक-रुक कर (तोतला) बोलनेवाला धनहीन अल्पबुद्धि, रूखी बातों का व्यवहार करने वाला होता है। यदि भवमेश चन्द्र, धनस्थ हो तो वक्ता होता है। क्षीण या पूर्ण चन्द्र के अनुपात से शुभाशुभफल की न्यूनाधिकता होती है। *साधारणतया धन-धान्य सुख लोक में धन की अपेक्षा, प्रशंसा अधिक मिलती है।* द्वितीयस्थ चन्द्र होने से १८ वें वर्ष में राजा द्वारा, सेना विभाग या अन्य इसी प्रकार के किसी अधिकार की प्राप्ति होती है और २७ वें वर्ष में द्रव्य-लाभ होता है। मंगल युक्त चन्द्र हो तो चर्मरोग और दरिद्रता होती है। चन्द्र-मंगल योग में 'चन्द्र-मांगल्य' योग होता है जिसको विद्वानों ने सर्वथा शुभ कहा है, परन्तु यह भी कहा गया है कि, द्वितीयस्थ मंगल निष्फल तथा साथ में चन्द्र भी निष्फल हो जाता है। हाँ, चन्द्र-मंगल योग में कोई अन्य शुभ ग्रह हो तो सम्भव है कि शुभता करे अन्यथा चन्द्रमा मन एवं रक्त का कारक तथा मंगल दोष और विकलता तथा उष्णता का कारक होने से दरिद्रता, मानसिक व्यथा चर्मरोग (रक्त-प्रकोप) आदि द्वारा पीड़ा ही सम्भव है। मेष-वृष-कर्क वृश्चिक, मकर के चन्द्र-मांगल्य योग का विभिन्न (शुभकारक) फल मिलेगा। सारांश यह है कि, कभी चन्द्र, कभी मंगल अपने विशेष गुण द्वारा शुभ फल दिखावेगा तथा विशेष अवगुण द्वारा अशुभफल दिखावेगा हाँ, जब धन कारक चन्द्र या मंगल अपनी निष्फलता से धनकष्ट एवं सफलता से धन-सुख देगा तब इसी प्रकार धनभाव सम्बन्धी अन्य फलों पर भी शुभाशुभ प्रभाव डालेगा। जब चन्द्र को छोड़कर अन्य अशुभग्रह के साथ होगा तब मर्दित-शिखा सद्देश सुन्दर, मिष्टभाषी तिरछी नजर (ऐंचाताना) वाला हो सकता है। यदि क्षीण चन्द्र पर बुध की दृष्टि हो तो पूर्वार्जित धन का नाश होता है और अन्य प्रकार के धन का अभाव होता है। पूर्ण चन्द्र या शुभता युक्त चन्द्र विद्वान् तथा धनाढ्य करता है।

(३) तृतीयस्थ होने से—दुबला-पतला विद्वान् साहसी निर्भीक, निरोग निर्दयी अल्पबुद्धि, हिंसक (बदला लेने की भावना) कृपण बन्धु (भाई) के आधीनस्थ एवं बन्धुवर्ग (मित्रादि) का आश्रय-दाता, कोई प्रसन्नचित्त तपस्वी आस्तिक, मधुरभाषी कफरोगी प्रेमी भाई से सुखी तथा निरोगी कभी-कभी दो सहोदर (भाई-बहिन) मात्र माता के दुग्ध-पान का कम अवसर, (विमाता युक्त या अन्य माता का दुग्ध-पान करने वाला) वायु-विकार, अर्शरोग-युक्त, तीसरे या पाँचवें वर्ष में धनलाभ १५ वें वर्ष में

किसी अपराध-वश राजदण्ड का भोगी, अथवा कलह, धनहानि, चोरभय, गौ-महिष आदि पशु तथा भाइयों के नाश होने के कारण दु:ख होता है। यदि चन्द्रमा, राहु या केतु से युक्त हो तो लक्ष्मीवान् (धनी) होता है, किन्तु भाई को कष्ट होता है। शुक्रयुक्त होने से बहिन का सुख। तृतीयस्थ चन्द्र, लग्नेश-षष्ठेश योग से श्वास-रोगी करता है। कण्ठ या पाचनस्थल में रोग होता है।

(४) चतुर्थस्थ होने से—विद्वान, मिलनसार, स्त्री, सेवक और वाहन से सम्पन्न होता है। दानी, मानी, सुखी, उदार, निरोगी, रागद्वेषवर्जित, कृपक, विवाह के बाद भाग्योदय, जलजीवी, धन, मन्दिर (गृह) आदि का सुख, देव-विप्र-पूजक, अनेक जनों के पालन करने की क्षमता, बुद्धिमान्, अश्व, सुगन्ध-पदार्थ, वस्त्र, धन-धान्य और दुग्धादि का सुख, नम्र-स्वभाव, जलज वस्तुओं की प्राप्ति, कृषिसुख, मिष्ठान्न से पूर्ण, बाल्यावस्था मे अन्य माता का दुग्ध पीने वाला, २२ वें वर्ष मे सन्तान-लाभ। यदि कर्कस्थ चन्द्र, क्षीण न हो तो, माता की चिरायु। क्षीण या पाप चन्द्र होने से माता-वाहन-गृहादि का कष्ट। बलवान् ग्रह से युक्त चन्द्र, मे सवारी सुख। सुखेश, उच्च होने से अनेक सवारी का सुख। बुध के साथ चन्द्र होने से गुणों पर निष्फलता का प्रभाव पड़कर सुख हानि करता है। यदि पूर्ण चन्द्र, शनियुक्त हो तो राजयोग करता है। ३६ वर्ष के बाद माता को कष्ट होता है।

निष्फल-ग्रह

द्वितीय में मगल, चतुर्थ में बुध, पचम में गुरु, षष्ठ मे शुक्र, सप्तम मं शनि होने से निष्फल (प्रभाव-रहित) होते हैं। यदि इन्हीं ग्रहों के साथ, इन्हीं स्थानों मे चन्द्र हो तो ग्रहों की निष्फलता के साथ-साथ चन्द्र भी निष्फलता करता है। इसी प्रकार सूर्य के साथ, किसी भी भाव मे, कोई भी ग्रह, अस्त होने के कारण निष्फल (अशुभ कारक) हो जाते हैं। सन्धिगत ग्रह भी निष्फल होता है।

ज्योतिष के गणित या फलित स्थल मे 'चन्द्र' का जितना विवाद (मतभेद) है, उतना अन्य किसी भी ग्रह का नहीं है। इसी कारण चन्द्र (मन) की शुभता-अशुभता का सूक्ष्म विवेचन करना भी कठिन है। चन्द्र की निष्फलता पर अनेक मत हैं, किन्तु चन्द्र की निष्फलता, भौमादि युक्त भावों में, प्रकट होती रहती है। किसी विशेष शुभस्थिति में ही निष्फलता का अभाव रह सकता है।

(५) पचमस्थ होने से—जितेन्द्रिय, सत्यवादी, सदाचारी, शीलवान्, प्रथम सन्तान की हानि, प्रसन्न-चित्त, चञ्चल, धूर्त, तान्त्रिक, सफलतायुक्त, विद्याज्ञान, आडम्बर-युक्त, प्रतिहत-शिक्षा (अधूरा अध्ययन) वाला, परिश्रमी, स्त्री और देवों को वशीभूत करनेवाला, पशु-सुखी, प्रेमी, अनेक वस्तु-सग्रही, कभी कोई सट्टे से धन कमाने वाला, क्षमाशील, स्त्री सुन्दर, दो स्त्री तक सम्भव (द्विभार्या योग), किसी-किसी की स्त्री, क्रोधवती और उसके स्तन पर चिह्न हो सकता है। कन्याएँ विशेष होती हैं। गुरु के साथ, चन्द्र होने से, निष्फलता के कारण, पुत्र-सुख का बाधक होता है। पूर्ण चन्द्र मे, बलिष्ठ तथा अन्नादि दान-कर्ता, अनेक विद्वानों का आशीर्वाद और ऐश्वर्य युक्त, सुकर्मी, भाग्यवान्, ज्ञानी, राजयोग वाला होता है। क्षीण चन्द्र में कन्याएँ चञ्चला (अस्थिर वृत्ति वाली) होती हैं। शुभ ग्रह से दृष्ट या युक्त चन्द्र हो तो दयालु तथा नम्र होता है। परन्तु पापग्रह से दृष्ट—युक्त चन्द्र हो तो, सन्तान रहित, दुष्ट-स्वभाव, ५२ वर्ष के बाद पुत्र सुख होता है। पचमस्थ चन्द्र मात्र—छठवें वर्ष में, अग्नि-भय कारक है। वृष का चन्द्र, वस्त्र और स्त्री-पुत्र का विशेष सुख देता है।

(६) षष्ठस्थ होने से—कोमल तथा दुर्बल शरीर, मन्दाग्निरोगी, कफरोगी, अल्पायु, अशक्त, आलसी, क्रूर, निष्ठुर, उग्र तथा दुष्ट स्वभाव, क्रोधी, खर्चीले स्वभाव का, नेत्ररोगी, भृत्य-प्रिय, अकारण लोगों से घृणित, कामाग्नि से पीड़ित, शीघ्र मैथुन करने वाला, आलस्य और क्रोध के कारण अनेक शत्रुयुक्त, चचेरे भाई या शत्रु द्वारा सन्तप्त, परन्तु बुद्धिमान् होता है। ६ या २३ वें वर्ष शरीर कष्ट या अरिष्ट योग

[चन्द्र–फल]

(१) लग्नस्थ होने से—कोमल तथा सुन्दर शरीर, चञ्चल–स्वभाव, प्रायः गौर वर्ण, वातरोगी, शिरो–व्यथा, श्वास–कास या गुप्तांग रोग, सनकी, हठी, बासी भोजन में भी रुचि अरण्य या जल या शीत रोग का भय, १५ वें वर्ष में यात्रा, २७ वें वर्ष में रोग होता है। मेष-वृष कर्कस्थ चन्द्र में, बलवान् ऐश्वर्यशाली, सुखी, व्यवसायी, गान–वाद्यप्रिय मोटा शरीर शासक रूपवान्, धनी, दयालु, मानी, गुणी, तेजस्वी तथा बहु सन्तान युक्त होता है। यदि चन्द्रमा पूर्ण हो तो सुन्दर, आकर्षक, उदार, सहानुभूति-पूर्ण, विद्वान् तथा स्वस्थ होता है। अन्यथा दरिद्र, व्याधियुक्त, गूँगा मन्दरोगी नीचता बधिरता, उन्मादयुक्त हो या सकता है। यदि चन्द्र पर शुभग्रह की दृष्टि हो तो यशी, निरोगी धनी किन्तु कपट–भरी वाणी होती है। लग्नेश निर्बल होने से रोगी। लग्नेश शुभ दृष्ट होने से निरोग करता है। प्रवासी, उत्साहयुक्त, पुत्र या मुकदमा के बाद धन-लाभ होता है।

(२) धनस्थ होने से—विनोद, तेजस्वी मधुरभाषी, सुन्दर, भोगी परदेशवासी सहनशील शासक द्वारा सम्मानित हठी, धनी, सुवर्ण–चाँदी धातु का लाभ, शान्तिप्रिय भाग्यवान्, बहुकुटुम्बयुक्त, उदार किन्तु सन्तोष की मात्रा कम तथा बहन या कन्या के धन की हानि होती है। यदि पूर्ण चन्द्रमा हो तो सुखी पुत्रवान्, धनी अनेक विद्याओं का ज्ञाता होता है। यदि क्षीण चन्द्र हो तो रुक–रुक कर (तोतला) बोलनेवाला धनहीन अल्पबुद्धि रूखी बातों का व्यवहार करने वाला होता है। यदि नवमेश चन्द्र धनस्थ हो तो वक्ता होता है। क्षीण या पूर्ण चन्द्र के अनुपात से शुभाशुभफल की न्यूनाधिकता होती है। साधारणतया धन–धान्य युक्त लोक में धन की अपेक्षा प्रशंसा अधिक मिलती है। द्वितीयस्थ चन्द्र होने से १८ वें वर्ष में राजा द्वारा सेना विभाग या अन्य उसी प्रकार के किसी अधिकार की प्राप्ति होती है और २७ वें वर्ष में द्रव्य–लाभ होता है। मंगल युक्त चन्द्र हो तो चर्मरोग और दरिद्रता होती है। *चन्द्र–मंगल योग में 'चन्द्र–मांगल्य' योग होता है जिसको विद्वानों ने सर्वदा शुभ कहा है* परन्तु यह भी कहा गया है कि *द्वितीयस्थ मंगल, निष्फल तथा साथ में चन्द्र भी निष्फल* हो जाता है। हाँ, चन्द्र–मंगल योग में कोई अन्य शुभ ग्रह हो तो सम्भव है कि शुभता करे अन्यथा चन्द्रमा मन एवं रक्त का कारक तथा मंगल ताप और विकलता तथा उष्णता का कारक होने से दरिद्रता मानसिक व्यथा, चर्मरोग (रक्त–प्रकोप) आदि द्वारा पीड़ा ही सम्भव है। मेष–वृष–कर्क वृश्चिक, मकर के चन्द्र–मांगल्य योग का विभिन्न (शुभकारक) फल मिलेगा। सारांश यह है कि, कभी चन्द्र, कभी मंगल अपने विशेष गुण द्वारा शुभ फल दिखायेगा तथा विशेष अवगुण द्वारा अशुभफल दिखायेगा हाँ जब धन कारक चन्द्र या मंगल अपनी निष्फलता से धनकष्ट एवं चञ्चलता से धन–सुख देगा तब उसी प्रकार धनभाव सम्बन्धी *अन्य फलों पर भी शुभाशुभ प्रभाव डालेगा।* जब चन्द्र को छोड़कर अन्य अशुभग्रह के साथ होगा तब अविहित–शिक्षा, सदेश सुन्दर मिष्टभाषी विरली मकर (ऐंचाताना) वाला हो सकता है। यदि क्षीण चन्द्र पर बुध की दृष्टि हो तो पूर्वार्जित धन का नाश होता है और अन्य प्रकार के धन का अभाव होता है। पूर्ण चन्द्र या शुभता युक्त चन्द्र विद्वान् तथा धनाढ्य करता है।

(३) तृतीयस्थ होने से—बुद्धि–चतुर विद्वान् साहसी निःशंक, निरोग निर्दयी, अल्पबुद्धि, हिंसक (वध करने की भावना) कृपण बन्धु (भाई) के आधीनस्थ एवं बन्धुवर्ग (मित्रादि) का आश्रय–दाता कोई प्रसन्नचित्त तपस्वी आस्तिक, मधुरभाषी कफरोगी प्रेमी भाई से सुखी तथा निरोगी कभी–कभी दो सहोदर (भाई-बहिन) मात्र, माता के दुग्ध-पान का कम अवसर, (विमाता युक्त या अन्य माता का दुग्ध-पान करने वाला) वायु-विकार अर्शरोग–युक्त, तीसरे या पाँचवें वर्ष में धनलाभ २४ वें वर्ष में

अनिष्ट होता है। यदि शुभग्रह से युक्त हो तो शुभफल और दीर्घायु वाला होता है। क्षीणचन्द्र होने से भाग्यहीन। नवमस्थ चन्द्र होने से १४ या २० वें वर्ष में पिता को अरिष्ट होता है। प्राय. अल्प भ्रातृवान् होता है।

(१०) दशमस्थ होने से—शूर-वीर, पराक्रमी, कार्यकुशल, दयालु, निर्मलबुद्धि, व्यापारी, कार्यपरायण, यशस्वी, नम्र, शीलयुक्त, बुद्धिमान्, सम्मानी, उत्कट प्रेमी, धनी, वाहनसुखी, वैद्य या डाक्टर, औषधि-निर्माता, विद्वान, कुलदीपक, महत्त्वाकांक्षी, सज्जनों का आज्ञाकारी, चतुर, पवित्र कार्य में तत्पर, अस्थिर वृत्ति (व्यापार या नौकरी), राजा द्वारा अतुल लाभवान्, लोकहितैषी, मानी, प्रसन्न-चित्त, संतोष, सौम्यमूर्ति, चिरायुभोगी, जलाशय, मंदिर, गृहादि का स्वामित्व-सुख मिलता है। पापयुक्त चन्द्र में, पापकर्मा, २७ वें वर्ष विधवा-संग, जिससे समाज-वैर (इसका बहुत ही ध्यान रखिए) हो सकता है। यदि दशमेश बली ग्रहों से युक्त हो तो अनेक पवित्र-कर्म-कर्ता होता है। दशमस्थ चन्द्र में २७ या ४३ वें वर्ष में धनलाभ का विशेष सुयोग तथा ३६ से ४० वर्ष तक पिता को महाकष्ट सम्भव है। शनि युक्त चन्द्र, राजयोगकारक होता है।

(११) लाभस्थ होने से—गौरवर्ण, चंचल बुद्धि, लोकप्रिय, चिरायु, मन्त्रज्ञ, प्रवासी, राजकार्यदक्ष, माननीय, यशस्वी, गुणी, विख्यात, सुशिक्षित, दानी, भोगी, सन्ततिवान्, भूमिपति, धनी, सद्गुण-ग्राही, सर्वदा प्रसन्न-चित्त, मनुष्यों पर प्रेम करनेवाला, सदुपाय से धनोपार्जन करनेवाला, कभी किसी को पड़े हुए (लावारिस) धन की प्राप्ति और शास्त्र-पुराणादि में अभिरुचि होती है। ५० वर्षायु में भी पुत्र होना सम्भव। २०-२४-४५ वें वर्ष में बाग-वाटिका तथा धनलाभ होता है। यदि स्वगृही हो तो जलाशय, सवारी, स्त्री की वृद्धि-सुख, किन्तु क्षीण होने से विपरीत फल। एकादशेश निर्बल होने से खर्चीला स्वभाव। यदि चन्द्र, बलिष्ठग्रह से युक्त हो तो बहुत धनागम होता है। चन्द्र-शुक्र योग में पालकी की सवारी एवं अनेक विद्याओं का अध्ययन करता है। बहुत मनुष्यों का पालक, भाग्यशाली, राजगुणी होता है। शनि युक्त चन्द्र, राजयोग कारक, किन्तु पुत्रकष्ट होता है।

(१२) व्ययस्थ होने से—नीच स्वभाव, कृपण, किन्तु नीच कार्मों में खर्चीला, क्रोधी, झगड़ालू, अविश्वस्त एकान्त-प्रिय, चिन्ताशील, मृदुभाषी, अधिक खर्चीला, दुर्व्यसनी, अन्न-मित्र-सद्बन्धु से रहित, नेत्ररोगी चंचल, कफरोगी, शत्रु अधिक, स्त्री रोगिणी, अनेक चचेरे भाइयों से युक्त, जिनमें कोई विकलांग भी होते हैं। शुभग्रहयुक्त होने से विद्वान, पण्डित, दयालु। पाप या शत्रुग्रह से युक्त हो तो पापकर्मी, नरकगामी। शुभ या मित्रग्रह के साथ हो तो शुभकर्मी और स्वर्ग-भोगी होता है।

नोट—

युति और प्रतियोग (सप्तमदृष्टि, पूर्णदृष्टि) का समान प्रभाव होता है। अनेक स्त्री सयोग के अर्थ, व्यभिचार ही हैं। द्विभार्यायोग में स्त्री-शोक होता है। यदि अन्य कारण से स्त्रीशोक न हो सके तो स्वयं को शरीरकष्ट या भाग्य का विनाश, स्थानपरिवर्तन, नौकरी या यात्रा-सम्बन्ध में अड़चनें होती हैं।

[मङ्गल-फल]

(१) लग्नस्थ होने से—साहसी, उग्र, क्रूर, चपल, विचाररहित, महत्त्वाकांक्षी, गुप्तरोगी, यात्री, मतिभ्रम, चोरप्रकृति, रक्तवर्ण, बड़ी नाभि (लिंगादि वृद्धि), तेजस्वी, बली, क्रोधी, लोह-धातु या व्रण-द्वारा कष्ट, व्यवसाय में हानि, मूर्ख, चञ्चल, धनी, पिता की अचानक मृत्यु, शिरोभाग में चोट, राजकोप-द्वारा मृत्यु-भय, राजकोप-भाजन, कारागार आदि भोग, स्त्री को कष्ट, शरीर में व्रण,

होता है। २६ वें वर्ष में विषमेष्णुक (जिससे सावधान रहिए) हो सकता है। शुक्रयुक्त चन्द्र होने से, निष्फलता के कारण वीर्य-मूत्राशय रोग, कीकम आदि षष्ठस्थानीय-दुष्कर्मों की वृद्धि होती है। हस्त मैथुनादि अनाचार में प्रवृत्ति भी हो सकती है। चन्द्र यदि पापग्रह से युक्त या दृष्ट हो तो नीच या पाप कर्मी होता है। चन्द्र के साथ राहु या केतु हो तो धन-रहित तथा भयंकर शत्रु से झगड़ा होता है। राजकोप, भ्रातृ-सुख का अभाव मन्दाग्नि जलगण्डरोग। जलमय, जलोदर रोग सम्भव हैं। शुभ चन्द्र जातकी कुओं आदि का स्वामी निरोग और बलिष्ठ बनाता है।

(७) सप्तमस्थ होने से—सुन्दर तथा कृश या दुर्बल शरीर मधुर वाणी सभ्य धैर्यवान्, नेता विचारक, प्रवासी की सुन्दरी तथा चञ्चला अत्यन्त जल यात्रा करने वाला व्यापारी, वकील कीर्तिमान शीतल स्वभाव स्फूर्तिवान् स्त्री-प्रिय स्त्री के कारण रोग शत्रु या शस्त्र से भय कामातुर, अभिमानी धर्म और नम्रता से रहित सदैरामारी राज-कृपा से लाभवान् होता है। वृष के चन्द्र में प्राय स्थूल शरीर एवं धार्मिक प्रकृति के कारण स्त्री-सम्बन्धी दोष न होकर शीतयुक्त (उष्णता रहित जीवन शक्ति रहित) होन से वीर्य या मूत्राशय रोग युक्त अथवा स्त्री-कष्ट के कारण स्त्री के प्रति निरीह (इच्छा रहित) होता है। हाँ वृष का पूर्ण चन्द्र हो तो काम शक्ति अधिक एवं अत्यन्त स्त्री-प्रिय होना सम्भव है। यदि चन्द्र क्षीण या पापदृष्ट-युक्त हो तो स्त्रीसुखरहित या सुख रहित तथा स्त्री रोगिणी होती है। यदि पूर्ण चन्द्र, शुभग्रह के साथ हो अथवा वृष में हो तो एक ही स्त्री होती है। यदि सप्तमेश बलवान् ग्रहों से युक्त हो तो दो स्त्रियाँ होती हैं। राहु युक्त होने से साला से रहित (स्त्री के भाई का अभाव)। यदि चन्द्र, सम राशि में हो तो स्त्री का स्वभाव 'स्त्रीवत् अर्थात् कोमल और विषम राशि में 'पुरुषवत्' स्वभाव अर्थात् कठोर होता है। सप्तमस्थ चन्द्र क्रमश ८ वर्ष, १४ वें वर्ष में अत्यन्त दुःख ३२ वें वर्ष में स्त्रीसुख होता है। यदि शनि से दृष्ट या युक्त हो तो वैवाहिक कष्ट (विवाह में बाधायें क्षयरोग नपुंसकता स्त्री को रोग दाम्पत्यकलह, स्त्रीवियोग आदि) होते हैं। वृष राशि के चन्द्र-शुक्र योग की अपेक्षा तुला के शुक्र चन्द्र योग में काम-वासना अधिक होती है। चन्द्र-शनि योग में विवाह होना ही कठिन हो जाता है। प्राय २५ या ३५ वर्ष के बाद विवाह सम्भव होता है, वह भी कठिनाई के साथ।

(८) अष्टमस्थ होने से—रोग के कारण दुर्बल शरीर विकारग्रस्त प्रमेहरोगी कामी किन्तु व्यापार से लाभ पित्तप्रकृति नेत्ररोगी, मूत्राशय रोग जल (नदी-कूप-तडागादि से) भय वाचाल स्वाभिमानी, बन्धन से दुःखी ईर्ष्यालु स्त्री के कारण बन्धु-धन-त्यागी निर्धन चोर शत्रु, अग्नि शस्त्र और राजा से सन्त्रस्त चित्तोद्वेग से व्याकुलता अल्पसन्तति तथा भ्रातृकुल से पूजित होता है। यदि चन्द्र शुभ युक्त दृष्ट या कर्क या वृष का हो तो चिरायुभोगी अन्यथा पापयुक्त-दृष्ट हो तो अकाल-मृत्यु-भय होता है। क्षीण चन्द्र में कभी अल्पायु, कभी बालारिष्ट होता है। त्रिदोष ज्वर का भय। जलराशिस्थ गुरु-चन्द्र अष्टमस्थ तथा पापदृष्ट होने से क्षयरोग होता है। अष्टमस्थ चन्द्र में छठवें-आठवें वर्ष में अरिष्टयोग होता है। ८६ वर्ष की पूर्णायु, ३६-४० वें वर्ष में महाकष्ट होता है।

(९) नवमस्थ होने से—भाग्यवान् धनी स्त्री-सुखी सुसन्तवियुक्त वा द्रव्य-सुख विशिष्ट मेधकर्मी पुराणादि श्रवण धर्मात्मा तीर्थयात्रा सुशिक्षित बुद्धिमान् कूप-तडाग-किला-विलास-स्थान का निर्माता प्रवास प्रिय न्यायी चंचल विद्वान् विद्या प्रिय साहसी विमादि द्वारा आदरणीय तथा योद्धा होता है। पूर्ण चन्द्र होने से सामान्य भाग्यवान् साधारण विचारवान् यज्ञादि कर्ता। यदि पूर्ण चन्द्र, बली ग्रहों से युक्त हो तो बड़ा भाग्यशाली तथा पिता भी दीर्घायु होती है। यदि चन्द्र अशुभग्रह से दृष्ट या युक्त हो तो अकाल-मृत्यु-भय भाग्य-हीन माता-पिता के लिए

होती है। रोगों से घिरा रहता है। यदि अष्टमेश युक्त हो तो पापी किन्तु वीर होता है एवं पोष्य-पुत्र का योग होता है। पचमस्थ भौम मे, ५ वें वर्ष मे बन्धु-हानि, छठवें वर्ष मे शत्रुभय होता है। प्राय: पुत्रसुखाभाव और दुराचारी होता है। कोई कन्या सन्ततिवान् होता है। किसी के एक ही सन्तान होती है।

(६) षष्ठस्थ होने से—क्रोधी, कामातुर, अधिक व्यय करनेवाला, शत्रुविजयी, कार्य में व्यस्त, बलवान्, वीरों का मुखिया, बन्धु-बान्धव से सुखी, भूमि का अधिकारी, धैर्ययुक्त, प्रचण्ड-शक्तिमान्, बहु स्त्री युक्त, चचेरे भाई तथा शत्रुओं से युद्ध, कलह, प्रबल जठराग्नि, भूख अच्छी, अन्न-पचाने की शक्ति-युक्त, ऋणदुःखी, पुलिस आफिसर, दादरोगी, क्रोधी, व्रण, और रक्तविकार से युक्त होता है। यदि मगल, पापग्रह की राशि में या पापग्रह-युक्त-दृष्ट हो तो अपना फल, पूर्ण रीति से देता है; तथैव वात-शूल-रोग से पीड़ित होता है। यदि मंगल, बुध की राशि (३।६) में, शुभग्रह से अदृष्ट हो तो कुष्ट रोग का भय होता है। २१ या ३७ वें वर्ष में कलह या शत्रुभय। २७ वें वर्ष में कन्या का जन्म तथा सवारी का सुयोग होता है। प्राय. रक्तविकार का भय होता है।

(७) सप्तमस्थ होने से—दुबला शरीर, सक्लेशवान्, निर्धन, रोगी, वातरोगी, राजभीरु, शीघ्रकोपी, कटुभाषी, धूर्त, मूर्ख, व्यर्थ-चिन्तित, स्त्री पक्ष से खिन्न, स्त्री दुःखी, शत्रु से पीड़ित, घातकी, ईर्षालु, धननाशक, स्त्री से अनादर पाने वाला होता है। पापग्रह की राशि में होने से स्त्री का नाश। शुभग्रह के साथ होने से भी, अपने सामने ही स्त्री की मृत्यु होती है। मंगल-शनि युक्त हो तो निन्दित कर्मी। केतु युति मे—रजस्वला स्त्री-सग की प्रवृत्ति। शत्रुग्रह की युति मे कई स्त्रियों की क्रमश मृत्यु, किन्तु शुभग्रह से दृष्ट हो तो ऐसा फल नहीं हो पाता। यदि मगल, उच्च या स्वगृही तो स्त्री चपला, अथवा सुन्दरी अथवा दुष्टचिता और एक ही स्त्री होती है। यदि पापग्रह से युक्त हो तो स्त्री को कष्ट, दो स्त्रियाँ तथा कमर में दर्द होता है। सप्तमस्थ भौम, ३७ वें वर्ष में स्त्री-शोक देता है। मेष-वृश्चिक-मकर का मगल, स्त्री सुख देता है।

(८) अष्टमस्थ होने से—नेत्ररोगी, रक्त-पीड़ित, व्याधिग्रस्त, व्यसनी, मद्यपी, कठोरभाषी, उन्मत्त, दुर्बल, पित्तप्रकृति, मूत्राशय और वातशूलादि रोग, चोर, शस्त्र और अग्नि से भय, नीच-कर्म-कर्ता, सकोची, रक्तविकार युक्त, धनचिन्तित, व्याकुल-चित्त, ईर्षालु, निन्दक, दुर्बुद्धि, उदग्र सज्जनों तक का निन्दक, कुल से घृणित तथा अल्प सन्ततिवान् होता है। शुभयुक्त भौम में निरोगी तथा चिरायु भोगी होता है। स्वगृही भौम आयु-वर्धक है। पापयुक्त भौम मे—मूत्ररोग, क्षय, वातरोग से अधिक पीड़ित। रन्ध्रेश शुभयुक्त हो तो चिरायु। अष्टमस्थ भौम मे—२५ वें वर्ष में मृत्युभय होता है। ५८ वर्ष की पूर्णायु, ५४ से ५६ वर्ष तक महाकष्ट, किन्तु १८ वर्षायु में चातुर्यगुणयुक्त हो जाता है।

(९) नवमस्थ होने से—हिंसक-वृत्ति, द्वेषी, अभिमानी, क्रोधी, बदला लेने की भावना, नेता, राजकीय उच्चाधिकारी, सुशिक्षित, ईर्षालु, बुद्धिमान्, जलाशय-किला-विलास-स्थान-नगर आदि का निर्माता, अल्पलाभ करने वाला, भाग्यहीन, धनहीन, असन्तुष्ट, सन्तानयुक्त, विप्रादि द्वारा आदरणीय, भ्रातृविरोधी, अन्न-धन से युक्त, यशस्वी, शैवमतानुयायी, उग्रदेवपूजक होता है। यदि मंगल, किसी दुर्बल या अशुभग्रह के साथ हो तो दीर्घायु। उच्च भौम में—गुरु-पत्नी से अनाचार कारक। नवमस्थ भौम में—१६-२६ वें वर्ष में पिता को अरिष्ट होता है। शुभग्रह युक्त-दृष्ट, मित्रग्रह दृष्ट-युक्त भौम में शुभ (अनुकूल) फल होते हैं। रक्तवर्ण या उग्रदेव या शिव का भक्त किन्तु भाग्य से विरोध होता है।

सिर-कण्ठ-गुदा में रोग या भय, चर्मरोग (खुजली आदि) लोहा या पाषाण से चोट, रक्तविकार, रक्तन्यूनता, वात-रक्त रोग। ५ वें वर्ष अरिष्ट। यदि मंगल मकर-मेष-वृश्चिक का हो तो निरोग, पुष्टशरीर, राजा से सम्मान, यशस्वी, दीर्घायु भोगी होता है, किन्तु स्त्री को कष्ट अवश्य होता है। यदि मङ्गल के साथ, पाप या शत्रुग्रह हो तो अल्पायु, सम्मान कम, दुर्मुख (कुरूप या गाली बकने वाला), नेत्र रोगी और वात-शूल पीड़ा होती है। मकर का मङ्गल होने से विद्वान् तथा कलाकार होता है। तुला का मंगल स्त्री का सुख देता है।

(२) द्वितीयस्थ होने से—निर्दयी निर्धन बुद्धिहीन सबसे विरोध पशुपालक, कुटुम्ब में क्लेश, कटुभाषी, अपव्ययी व्यभिचारी, क्रोधी अपरिमित (नीम हकीम, खतरे जान), कटु तिक्त रस प्रिय, धनलाभ अवश्य भी और बन्धुवर्ग से कलह, कृषि या वाणिज्य करनेवाला १६ वर्ष के बाद वेतन (नौकरी) द्वारा सुख। परदेशवासी, निन्दित-स्वभाव, मौजी (कुमौजी) जुआरी (सट्टा-लाटरी का शौकीन), चोर का सहायक, धार्मिक, शारीरिक तथा नेत्र-कर्णपीड़ा का भय होता है। द्वितीयस्थ मङ्गल, निष्फल होने के कारण राजयोग होते हुए भी विशेष धन-सुख नहीं हो पाता, किन्तु पैतृक धन तथा आभूषण का बाहुल्य होता है। उच्च या स्वगृही मङ्गल शुभ होता है—अचानक राज्य का धन देता है, नेत्र अच्छे तथा विद्वान् होता है। बारहवें वर्ष द्रव्यनाश। षष्ठेश युक्त भौम, नेत्ररोग नेत्र में फुली। पापयुक्त-दृष्ट शत्रुग्रह युक्त-दृष्ट या पापगृही हो तो नेत्ररोग होता है, अन्यथा नेत्ररोग नहीं होता। वृश्चिक का मङ्गल राजयोग देता है। किसी को स्त्रीकष्ट होता है।

(३) तृतीयस्थ होने से—राजा की कृपा, प्रसिद्ध, शूरवीर धैर्यवान् साहसी सर्वगुणी, बन्धुहीन बली, प्रदीप्त जठराग्नि सुखी उदार पराक्रमी, बुद्धिमान भ्रातृ सुख कम पाप दृष्ट या युक्त होने से अग्रज-पृष्ठज का विनाश कटुभाषी। मेष का मंगल होने से गणितज्ञ या ज्योतिषी। शुभग्रह दृष्ट न हो तो स्त्री कुलटा। गुरु या चन्द्र दृष्टि हो तो एक भाई, दो बहिनें अथवा दो-तीन भाई-बहिन का सुयोग। पापदृष्ट-युक्त भौम में भाई बहिनों की मृत्यु, विष अग्नि चर्मरोग-हड्डी टूटने का भय रहता है। मित्रगृही भौम में धैर्यवान। उच्च, स्वगृही शुभदृष्ट-युत आदि होने से कोई भाई—दीर्घायु, गम्भीर एवं प्रतापी होता है। राहु-युत भौम में वेश्यागमन। तृतीयस्थ भौम से १८ १३ वें वर्ष में भाई या बहिन का जन्म-सौभाग्य सम्भव होता है। सूर्य-भौम-बुध युति में बड़ी बहिन का सुख बड़े भाई की मृत्यु, बहिन के पुत्र की हानि होती है।

(४) चतुर्थस्थ होने से—परदेशवासी निर्बल शरीर, रोगी बन्धुहीन या बन्धुविरोध माता-गृह-कोश-सवारी आदि पदार्थों के सुख में बाधा पीड़ित मित्र और वाहन से कष्ट पिता को अरिष्ट माता का रोग भूमि द्वारा भी धनलाभ घर में (स्त्री पिता माता भाई-बहिन द्वारा) कलह होता है। यदि मंगल शुभग्रह से युक्त हो तो रोग-रहित। परगृह-वासी, पुराने घर में रहनेवाला कुटुम्बियों से बैर स्वदेश का त्याग स्त्री-ईर्ष्या योग स्त्री की अनाचार में प्रवृत्ति स्त्री द्वारा व्याकुलता स्त्री द्वारा मातृभय रोग, विफलता आठवें वर्ष से पिता को अरिष्ट माता का अल्प-सुख-सौभाग्य भाई की हानि सुखाभाव सम्भव होता है। सिंह या मकर का मंगल होने से स्त्री या पति का सुख होता है। चतुर्थ भौम में कोई वाहन सुखी सन्ततिवान् मातृसुखहीन प्रवासी, अग्निभय युक्त, अल्पायु या अपमृत्यु कृषक, लाभयुक्त और मातृहानि होती है।

(५) पंचमस्थ होने से—कृशशरीर गुप्तांगरोगी चंचल अल्पबुद्धि बदमाश कपटी व्यसनी रोगी उदररोगी स्त्री-पुत्र-मित्र-सुख-रहित राजा से कलंकित, धन-रहित होता है। कफ-वायु रोग सन्तति क्लेश, कभी स्त्री का गर्भपात-सम्भव है। यदि उच्च या स्वगृही हो तो पुत्रसुख चतुर राज्य में अधिकार करनेवाला एवं धन-दाता होता है। पापराशिस्थ या पापग्रह युक्त हो तो पुत्रनाश और बुद्धि-भ्रष्ट

होती है। रोगों से घिरा रहता है। यदि अष्टमेश युक्त हो तो पापी किन्तु वीर होता है एवं पोष्य-पुत्र का योग होता है। पंचमस्थ भौम में, ५ वें वर्ष में बन्धु-हानि, छठवें वर्ष में शस्त्रभय होता है। प्रायः पुत्रसुखाभाव और दुराचारी होता है। कोई कन्या सन्ततिवान् होता है। किसी के एक ही सन्तान होती है।

(६) षष्ठस्थ होने से—क्रोधी, कामातुर, अधिक व्यय करनेवाला, शत्रुविजयी, कार्य में व्यस्त, बलवान्, वीरों का मुखिया, बन्धु-बान्धव से सुखी, भूमि का अधिकारी, धैर्ययुक्त, प्रचण्ड-शक्तिमान्, बहु स्त्री युक्त, चचेरे भाई तथा शत्रुओं से युद्ध, कलह, प्रबल जठराग्नि, भूख अच्छी, अन्न-पचाने की शक्ति-युक्त, अण्डदुःखी, पुलिस आफिसर, दादरोगी, क्रोधी, व्रण, और रक्तविकार से युक्त होता है। यदि मंगल, पापग्रह की राशि में या पापग्रह-युक्त-दृष्ट हो तो अपना फल, पूर्ण रीति से देता है, तथैव वात-शूल-रोग से पीडित होता है। यदि मगल, बुध की राशि (३।६) में, शुभग्रह से अदृष्ट हो तो कुष्ट रोग का भय होता है। २१ या ३७ वें वर्ष में कलह या शत्रुभय। २७ वें वर्ष में कन्या का जन्म तथा सवारी का सुयोग होता है। प्राय रक्तविकार का भय होता है।

(७) सप्तमस्थ होने से—दुबला शरीर, सद्वेशवान्, निर्धन, रोगी, वातरोगी, राजभीरु, शीघ्रकोपी, कटुभाषी, धूर्त, मूर्ख, व्यर्थ-चिन्तित, स्त्री पक्ष से खिन्न, स्त्री दुःखी, शत्रु से पीडित, घातकी, ईर्षालु, धननाशक, स्त्री से अनादर पाने वाला होता है। पापग्रह की राशि में होने से स्त्री का नाश। शुभग्रह के साथ होने से भी, अपने सामने ही स्त्री की मृत्यु होती है। मंगल-शनि युक्त हो तो निन्दित कर्मी। केतु युति में—रजस्वला स्त्री-संग की प्रवृत्ति। शत्रुग्रह की युति में कई स्त्रियों की क्रमश मृत्यु, किन्तु शुभग्रह से दृष्ट हो तो ऐसा फल नहीं हो पाता। यदि मगल, उच्च या स्वगृही तो स्त्री चपला, अथवा सुन्दरी अथवा दुष्टचिता और एक ही स्त्री होती है। यदि पापग्रह से युक्त हो तो स्त्री को कष्ट, दो स्त्रियाँ तथा कमर में दर्द होता है। सप्तमस्थ भौम, ३७ वें वर्ष में स्त्री-शोक देता है। मेष-वृश्चिक-मकर का मंगल, स्त्री सुख देता है।

(८) अष्टमस्थ होने से—नेत्ररोगी, रक्त-पीडित, व्याधिग्रस्त, व्यसनी, मद्यपी, कठोरभाषी, उन्मत्त, दुर्बल, पित्तप्रकृति, मूत्राशय और वातशूलादि रोग, चोर, शस्त्र और अग्नि से भय, नीच-कर्म-कर्ता, सकोची, रक्तविकार युक्त, धनचिन्तित, व्याकुल-चित्त, ईर्षालु, निन्दक, दुर्बुद्धि, उदग्र सज्जनों तक का निन्दक, कुल से घृणित तथा अल्प सन्ततिवान् होता है। शुभयुक्त भौम मे निरोगी तथा चिरायु भोगी होता है। स्वगृही भौम आयु-वर्धक है। पापयुक्त भौम मे—मूत्ररोग, क्षय, वातरोग से अधिक पीडित। रन्ध्रेश शुभयुक्त हो तो चिरायु। अष्टमस्थ भौम में—२५ वें वर्ष में मृत्युभय होता है। ५८ वर्ष की पूर्णायु, ५४ से ५६ वर्ष तक महाकष्ट, किन्तु १८ वर्षायु में चातुर्यगुणयुक्त हो जाता है।

(९) नवमस्थ होने से—हिंसक-वृत्ति, द्वेषी, अभिमानी, क्रोधी, बदला लेने की भावना, नेता, राजकीय उच्चाधिकारी, सुशिक्षित, ईर्षालु, बुद्धिमान, जलाशय-किला-विलास-स्थान-नगर आदि का निर्माता, अल्पलाभ करने वाला, भाग्यहीन, धनहीन, असन्तुष्ट, सन्तानयुक्त, विप्रादि द्वारा आदरणीय, भ्रातृविरोधी, अन्न-धन से युक्त, यशस्वी, शैवमतानुयायी, उग्रदेवपूजक होता है। यदि मगल, किसी दुर्बल या अशुभग्रह के साथ हो तो दीर्घायु। उच्च भौम में—गुरु-पत्नी से अनाचार कारक। नवमस्थ भौम में—१६-२६ वें वर्ष में पिता को अरिष्ट होता है। शुभग्रह युक्त-दृष्ट, मित्रग्रह दृष्ट-युक्त भौम मे शुभ (अनुकूल) फल होते हैं। रक्तवर्ण या उग्रदेव या शिव का भक्त किन्तु भाग्य से विरोध होता है।

(१०) दशमस्थ होने से—प्रतापी, उद्योगी, शूर-वीर, धनवान्, कुलदीपक, सुखी यशस्वी वाहनसुख, स्वाभिमानी, पराक्रमी सन्तोषी साहसी परोपकारी, उग्र प्रेमी दृढ़-संकल्पी, महात्वाकांक्षी धार्मिक, मकान बगीचादि का स्वामी सज्जनों का आज्ञाकारी शत्रु से अपराजित राजा-तुल्य सुखी धनसंग्रही, भूषणादि से युक्त, पुत्रवान सन्तानकष्ट या सन्तान की मृत्यु होती है। दशमेश शुभग्रह से युक्त हो तो माता की दीर्घायु, भाग्यशाली ईश्वरभक्त और गुरुसेवक होता है। यदि भौम, शुभ युक्त-दृष्ट शुभग्रहराशिस्थ हो तो कार्य में सफलता, यशस्वी और प्रतिष्ठित होता है। १८ वें वर्ष में पिता की मृत्यु के बाद धन संग्रह का सौभाग्य तथा पुष्ट-शरीर होता है। यदि भौम पाप-ग्रह की राशिस्थ, या दृष्ट या युक्त हो तो कार्य में विघ्न-बाधायें उपस्थित रहती हैं। यदि गुरु युक्त भौम हो तो बड़ा भाग्यशाली एवं हाथी की सवारी पाता है। दशमस्थ भौम २४ वें वर्ष में राज्य या शत्रु भय करता है। वृष-कन्या-मकर-मेष-वृश्चिक का भौम, उत्कृष्ट शुभफलदायक होता है। कर्क का भौम होने से जातक के समक्ष आने वाले व्यक्तियों पर जातक का प्रभाव तो पड़ता है किन्तु, परोक्ष में जातक, अपयश या दुर्वाक्य पाता है। गर्भपात होना सम्भव है।

नोट—

लग्न की पूर्व	चतुर्थ की उत्तर	सप्तम की पश्चिम	दशम की दक्षिण दिशा है।
सूर्य पूर्व	बुध उत्तर	शनि पश्चिम	मंगल दक्षिण दिशा का स्वामी है।
सिंह	मिथुन-कन्या	मकर-कुम्भ	मेष-वृश्चिक ।

सारांश यह कि, यदि लग्न में सिंह हो या चतुर्थ में मिथुन-कन्या हो अथवा सप्तम में मकर-कुम्भ हो अथवा दशम में मेष-वृश्चिक राशि-मात्र (ग्रह-रहित) ही हों तो ये राशियाँ उत्कृष्ट शुभसूचक फल कारक होती हैं। "फलवर्दं स्वाम्याशाक्रम्।" इसी प्रकार—

	ईशान	आग्नेय	नैऋत्य	वायव्य
	गुरु	शुक्र	राहु	चन्द्र
(ये राशियाँ)	धनु-मीन	वृष-तुला	२।३।४।५।६।१२	कर्क
(इन भावों में)	द्वितीय-तृतीय	लाभ-व्यय	अष्टम-नवम	पंचम-षष्ठ (उत्कृष्ट फलद)

नोट—

मेष सिंह-धनु पूर्व (लग्नस्थ), वृष-कन्या-मकर दक्षिण (दशमस्थ) मिथुन-तुला-कुम्भ पश्चिम (सप्तमस्थ) और कर्क-वृश्चिक-मीन उत्तर में (चतुर्थस्थ) होने से उत्कृष्ट फल-सूचक होती हैं, अर्थात् लग्न में सूर्य मंगल, गुरु, चतुर्थ में चन्द्र मंगल गुरु सप्तम में बुध शुक्र, शनि दशम में चन्द्र, मंगल गुरु की स्थिति श्रेष्ठ प्रकार की फलदायक हो सकती है। ऐसी ग्रह-स्थिति में प्रायः सुखों का बाहुल्य रहेगा। इनकी शुभ स्थिति से राजयोग तथा अशुभ योगों से मध्यम-श्रेणी रहेगी। प्रायः निम्न-श्रेणी का अभाव रहेगा।

(११) लाभस्थ होने से—कटुभाषी दम्भी सदाचारी, क्रोधी लाभ-युक्त, साहसी प्रवासी, न्यायवान्, धैर्यवान्, कार्य सफलकर्ता दृढ़-प्रतिज्ञ पराक्रमी शूर-वीर यशस्वी मित-भाषी, सुशिक्षित परिश्रमशील धनी मानी राजानुगृहीत संगीत प्रेमी ताँबा सोना, मूँगा आदि पदार्थ-युक्त या इनका व्यापारी वाहन-सुख रसिक दुर्बल शरीर सन्तति-सुख, विस्तृत कृषि क्रम उत्तम भूमि (निवासादि) सुख पद-सुख चोरादि द्वारा धनहानि। लाभेश युक्त होने से राजयोग। दो शुभ ग्रह की युति से महाराज-योग। जातक का भाई धनी। लाभस्थ भौम से ४५ वें वर्ष में धन-सन्तान-सुखादि का अतुलनीय सुयोग आता है। कभी गर्भपात होना सम्भव है।

(१२) व्ययस्थ होने से—विमल शरीर, क्रोधी, स्त्रीकष्ट, स्त्रीनाशक, उग्र, ऋणी, झगडालू, मूर्ख, कामी, अंगहीन, बन्धुवर्ग से वैर-उपेक्षा-मतभेद, कभी धर्माचार के विरुद्ध, पतित, मित्रद्रोही, नीचप्रकृति, खर्चीला, वायुरोग, नेत्ररोग, बन्धन या रोगादि भय होता है। यदि भौम, पायुक्त हो तो पाखण्डी। केतु के साथ हो तो गृह में अग्निभय, स्त्री की मृत्यु। शुभ युक्त हो तो स्त्री का सुख होता है। व्ययस्थ भौम में शस्त्र-घात होना सम्भव है।

नोट—

लग्न, द्वितीय, चतुर्थ, सप्तम, अष्टम, व्ययस्थ भौम में स्त्री-सम्बन्धी पीडा होती है। मेपस्थ लग्न में, मकर राशिस्थ सप्तम मे, वृश्चिक राशिस्थ चतुर्थ में, कर्क राशिस्थ अष्टम में, धनुराशिस्थ व्यय मे भौम होने से प्राय स्त्री को पीडा नहीं होती। मेप-कन्या का भौम व्यय मे, वृप-तुला का लग्न मे, सिह-मकर का चतुर्थ में, मेष-वृश्चिक-मकर का सप्तम मे मगल होने से भी स्त्री-सुख होता है।

[बुध-फल]

(१) लग्नस्थ होने से—शरीर में मस्सा, तिल, फोडा-फुन्सी, गुल्म रोगादि द्वारा शरीर कष्ट, अल्प-भोगी, विनीत, उदार, दीर्घायु, आस्तिक, विनोदी, वैद्य, स्त्री-प्रिय, मितव्ययी, शान्तप्रकृति, विद्वान, धीर, श्रेष्ठ आचारवान्, सदाचारी, बहु सन्तति युक्त प्रेत-बाधा-निवारण मे चतुर (तन्त्रशास्त्री अथवा ज्योतिप-शास्त्र का प्रेमी, धूर्त, मानी, सभाचतुर, कार्य-पटु, अनेक शास्त्रज्ञाता, गणितज्ञ, मधुर भापी, प्रतिष्ठित, राजसम्मान-युक्त, विलम्ब में या मध्यजीवन मे विवाह योग होता है। यदि बुध, पापरहित हो तो चतुर, शात, मेधावी, प्रिय-भापी और दयालु होता है। पापयुक्त होने से या पापराशिस्थ होने से पित्त या पाण्डु रोग से पीडित, क्षुद्र देवता (प्रेतादि) का उपासक, शय्या आदि भोगादि का सुखाभाव। शुभराशिस्थ या शुभग्रह-युक्त होने से आरोग्यता तथा शरीर-कान्ति 'स्वर्णवत्' होती है। धन-धान्य से युक्त, धार्मिक, तर्कशास्त्र का पण्डित, परन्तु अगहीन, नेत्ररोगी, कपटी होता है। उच्च या स्वगृही हो तो भाई का सुख होता है। शनि-युक्त बुध मे वाम नेत्र में कष्ट। यदि बुध के साथ गुरु या षष्ठेश हो तो नेत्र कष्ट नहीं होता। लग्नस्थ बुध से १० वें वर्प में कान्तिवृद्धि, १७ वें वर्प में गृह-कलह, २७ वें वर्ष में तीर्थ यात्रा, लाभ, विद्याध्ययन का सुयोग मिलता है। कन्या-मकर का बुध होने से स्थूल होता है अथवा कोई नपुसक होता है।

(२) धनस्थ होने से—विद्वान, वेदज्ञ, विज्ञान-कुशल, दृढ-सकल्पी (हठी), मिष्टभापी, वक्ता, उत्तमशीलवान्, सुन्दर, मिष्ठान्नभोजी, दलाल या वकील, मितव्ययी, संग्रही, सत्कर्मी, साहसी, सुखी, सन्तानयुक्त, गुरु का प्रिय, राज सम्मान युक्त, अनेक प्रकार से धनलाभ, धननष्ट होने पर पुन धन की प्राप्ति, स्वार्जित धन-सुख विशेष, विद्या द्वारा धनोपार्जन में कुशल, उन्नति शील, उच्चपदाधिकारी (अग्रगण्य), विशेपज्ञ। चन्द्र दृष्टि होने से धनहानि, चर्मरोग। पाप या शत्रुराशिस्थ में या पाप-शत्रु-ग्रह युक्त-दृष्ट, नीचस्थ बुध मे—विद्यारहित, दुष्टस्वभाव, वायुरोग से पीडित। शुभ ग्रह दृष्ट-युक्त में विद्वान, धनी। गुरु युक्त या दृष्ट होने से गणितज्ञ। द्वितीयस्थ बुध में २५ वे वर्प तक अनेक विद्या-सौभाग्य, २६ वें वर्प में विशेप द्रव्य-व्यय होता है। कन्या का बुध, धनभावस्थ हो तो व्यापार द्वारा उन्नति होती है।

(३) तृतीयस्थ होने से—हठी, चित्त-शुद्धि रहित, सुखनाश, कार्यदक्ष, परिश्रमी, साहसी किन्तु मनमानी करने वाला, अपनी इच्छा के अनुसार शुभकार्य करने वाला (सनकी), उग्रप्रकृति, भीरु, बाल्यावस्था में रोगी, भ्रातृ-संख्या अधिक, भाई-बहिन का सुख। पापदृष्ट होने से किसी भाई-बहिन की मृत्यु। मगल युक्त या दृष्ट होने से तीन बहिनें विधवा (पति का कष्ट)। तृतीयेश, बलीग्रह-युक्त हो तो गम्भीर, दीर्घायु। तृतीयेश निर्बल हो तो डरपोक (लीचड), भाइयों को पीडा। बुध, बली-ग्रह-युक्त

हो तो भाई की दीर्घायु। तृतीयस्थ बुध में २५ वें वर्ष के बाद, धन-भूमि-सन्तान का सुख, गुणों की प्राप्ति। २७ वें वर्ष में पुत्र-कष्ट होता है। बहिनें, विधवा या पतिकष्ट या बहिनों को संतान-कष्ट होता है। प्रायः लेखक, सामुद्रिक ज्ञाता सम्पादक, कवि विलासी, अल्पभ्रातृवान्, चंचल, व्यवसायी, यात्राशील धर्मात्मा, मित्रप्रेमी, और सद्गुणी होता है।

(४) चतुर्थस्थ होने से—विशालाक्ष, माता-पिता के सुख से युक्त, धन-धान्य-वाहनादिक का सुख, नृत्य गीतादि का प्रेमी, पण्डित भाग्यवान्, वाहनसुखी, दानी स्थूलशरीर, आलसी, गीतप्रिय उदार, उत्कृष्ट विद्या विभूषित, उत्तम गृह भूपसादिक का स्वामी, बागवानी या कृषि-विद्या का प्रेमी विद्वान् लेखक, बन्धु प्रेमी, नीतिज्ञ होता है। चतुर्थस्थ बुध निष्फल माना गया है। चतुर्थ स्थान को पैतृक धन से सम्बन्ध है। इस कारण चतुर्थस्थ बुध पैतृक धन की प्राप्ति में अनेक बाधायें देना सम्भव है। किसी-किसी को तो, पैतृक-धन का अभाव ही हो जाता है। गृह-माता-वाहन-सुखादि में बाधायें भी आती हैं। प्रवास, मातृ-वियोग, वाहनकष्ट आदि दुष्फल चतुर्थस्थ बुध की निष्फलता के कारण होते हैं। यदि बुध के साथ कोई पापग्रह न हों तो, अनेक मित्र होते हैं, तथा विलास प्रिय एवं धनी होता है। चतुर्थ में कन्या या मीन का बुध-शुक्र उत्कृष्ट शुभफल देता है। यदि बुध गुरु या शुक्र से दृष्ट-युक्त हो तो अनेक प्रकार के वाहन का सुख होता है। यदि सुखेश बली या बली ग्रह से युक्त हो तो पालकी (रिक्शा—अर्थात् नर वाहन) का सुख होता है। यदि राहु या केतु या शनि से युक्त हो तो वाहनसुख से रहित स्वजनों से विरोध और कपटी-स्वभाव होता है। चतुर्थस्थ बुध में, २६ वें वर्ष के बाद किसी के धन-हरण द्वारा लाभ। ३२ वें वर्ष में सन्तान-धनादि की वृद्धि होती है।

नोट—

सर्वत्र 'वर्ष-प्रमाण' पर विशेष विश्वास न करना चाहिए। कभी-कभी कथित वर्ष के आगे-पीछे भी फलों का प्रभाव दिखता है। प्रायः वर्ष-प्रमाण कम ही ठीक घटित होते पाये गये हैं।

(५) पंचमस्थ होने से—मामा (मातुल माता का भ्राता) को गण्डरोग से भय माता से सुखी, पुत्रवान्, प्रसन्न कुशाग्रबुद्धि गणमान्य, सुखी सदाचारी, वाद्य-प्रिय, कवि, विद्वान्, उद्यमी, मित्रयुक्त, बुद्धिमान् मधुर-भाषी सुशील कार्य में प्रवीण विद्वान्, सुबुद्धि या आडम्बरयुक्त कभी झगड़ालू स्वभाव, मन्त्र-विद्या में रुचि। यदि अस्त या शत्रुग्रह से दृष्ट हो तो पुत्रशोक २५ वर्ष के उपरान्त पुत्रसुख नौकरी से लाभ। पंचमेश निर्बल या पापयुक्त होने से कभी किसी को पुत्र-शोक के कारण पोष्य-पुत्र का सुयोग आता है। पापकर्मों में निरत मन्त्र-विधि जानने वाला २१ वें वर्ष में माता को पीड़ा होती है। बुध-राहु योग से सट्टा खेलने वाला होता है।

(६) षष्ठस्थ होने से—धूर्त, कलह-चतुर वादप्रिय रोगी अभिमानी परिश्रमी दुर्बल कामी, स्त्री-प्रिय निष्ठुर-चित्त आलसी अर्धशिक्षित, कटुभाषी व्याधियुक्त हाथ-पैर का रोग, अनेक शत्रु परन्तु राजद्वार से सम्मानित विवेकी और पत्रादि लेखन-कला में प्रवीण होता है। यदि बुध बली या शुभयुक्त हो तो पीड़ा-कारक। मेष-वृश्चिक का बुध हो तो नील कुष्ठ रोग भय। बुध के साथ शनि-राहु या केतु हो तो शत्रु-कलह में तत्पर वातशूलादि रोग-युक्त। षष्ठेश, बली ग्रह युक्त हो तो कुटुम्ब या जाति वर्ग में प्रबल (मुखिया) होता है। सूर्य के साथ बुध हो तो शुभकारक। बुध नीच या शत्रुराशि में हो तो जाति वर्ग का नाश या अल्पजातिमान् (लघुकुटुम्बी) होता है। षष्ठस्थ बुध में ३१ या ३७ वें वर्ष में कलह तथा शत्रु से पीड़ा होती है। कर्क का बुध, मद्य तथा पाण्डुरोगी के रोग करता है।

(७) सप्तमस्थ होने से—सुन्दर स्वभाव विद्वान् कुलीन, व्यवसाय कुशल, धनी लेखक, सम्पादक, उदार सत्यवादी ऐश्वर्यवान् माता-पिता का सुख, धर्मज्ञ शीलवान् न्याय-प्रिय, सुखी धार्मिक अल्पवीर्य

चिरायु भोगी, स्वस्थ, स्त्री-पुत्र-धनादि का सुख, वैभवयुक्त, निर्मल, किन्तु चंचल-बुद्धि, राजा से पूजनीय, यशस्वी, अपनी स्त्री के अनुकूल बुद्धिवाला, स्त्री का आज्ञाकारी, अभक्ष्य-भक्षी, किंतु पर स्त्री-सग में रुचि, (इससे सर्वदा सचेत रहिए) । बुध के साथ शुभग्रह हो तो २४ वें वर्ष में पालकी की सवारी, (नरवाहन-सुख) । सूर्य-बुध योग में स्त्रीनाश । सप्तमेश, बली ग्रह से युक्त हो तो एक ही स्त्री से (विवाह) सयोग रहता है । सप्तमेश, निर्बल, पापयुक्त, पापराशिस्थ हो तो स्त्री का नाश । यदि स्त्री की कुण्डली में ऐसा (सप्तमेश निर्बलादि) योग हो तो पतिनाश, कुष्टरोग का भय और कुरूपा होती है ।

(८) अष्टमस्थ होने से—प्रसिद्ध, गुणी, लब्धप्रतिष्ठ, अभिमानी, कृपक, राजमान्य, मानसिक दुःखी गर्व युक्त, दीर्घायु, अनेकों से विरोध, धनी, यशस्वी, परधन का हरण करने वाला, कवि, वक्ता, न्यायाधीश, मनस्वी, धर्मात्मा, सन्तान कम, जघा और पेट के रोग । अष्टमेश, बली ग्रह से युक्त हो या बुध उच्च, स्वगृही, शुभ युक्त हो तो पूर्णायु । रन्ध्रेश, नीच, शत्रुगृही, पापयुक्त हो तो अल्पायु या रोग पीडित । अष्टमस्थ बुध, २५ वें वर्ष मे प्रतिष्ठा, विख्यात-यश, १४ वर्ष में द्रव्य-हानि करता है । ६२ वर्ष की पूर्णायु । २८।३२।३५ वें वर्ष में महाकष्ट होता है ।

(९) नवमस्थ होने से—उपकारी, सन्तान सुख, सेवकादि सुख, विद्वान्, दानी, यशस्वी, सदाचारी, कवि, गायक, सम्पादक, लेखक, ज्योतिषी, धर्मभीरु, व्यवसाय-प्रिय, भाग्यवान्, सगीतप्रेमी, गान-नृत्य मे रुचि, धनादि का इच्छुक (लोभी), धर्मज्ञ, शास्त्रज्ञ, सभा में सत्कार, उपहार की प्राप्ति, पिता की चिरायु, मुक्ति का इच्छुक, ईश्वर-भक्तियुक्त होता है । परन्तु जब बुध पापयुक्त हो तो मन्द-भाग्य, पितृमत से अन्य धार्मिकमतानुयायी, बौद्ध-मत-प्रिय होता है । शुभ युक्त हो तो भाग्यवान् तथा धर्मात्मा होता है । नवमस्थ बुध, २६ वर्ष में माता को कष्ट देता है । शुभ बुध में, वाहन-सुख होता है ।

(१०) दशमस्थ होने से—ज्ञानवान्, उत्तमाचारी, बुद्धिमान्, सात्विक विचार युक्त, धार्मिक, दृढ़-सकल्पी, बोलने तथा द्रव्योपार्जन में चतुर, सत्यवादी, विद्वान्, लोकमान्य, मनस्वी, व्यवहार कुशल, धना-भूषण-युक्त, बली, सुखी, राजा से माननीय, कवि, लेखक, न्याय-प्रिय, भाग्यवान्, मातृ-पितृभक्त, भूमिपति, अनेक प्रकार के वाणी-विलास में व्यस्त और नेत्ररोगी होता है । उच्च या स्वगृही हो या गुरु युक्त हो तो अग्निष्टोम यज्ञ (अनेक यज्ञ) करता है । यदि बुध, पाप या शत्रुग्रह से युक्त हो तो मूर्ख, नीच-कर्मा और भ्रष्टाचारी होता है । दशमस्थ बुध, १७ वें वर्ष में द्रव्यलाभ तथा २८ वें वर्ष में नेत्र-रोग करता है । पिता के धन द्वारा तीर्थ-यात्रा होती है ।

(११) लाभस्थ होने से—दीर्घायु, योगी, सदाचारी, प्रसिद्ध, विद्वान्, गायक, सरदार, विश्वस्त, सुन्दर, नम्र, धनी, आनन्दित, श्रेष्ठ-स्वभाव, मंगलाचार में व्यस्त, अतिगुणी, बुद्धिमान्, प्रसन्न-चित्त, शीलवान्, पुत्रवान्, विचार युक्त, शत्रुनाशक, स्त्री प्रिय, भूमिस्वामी, मित्र-सुखी, अनेक विद्याओं का अभ्यासी, विद्वान्, विद्याकार्य में यशस्वी, किन्तु मन्दाग्नि रोग से पीड़ित होता है । पापयुक्त या पापराशिस्थ बुध में नीच-कर्म द्वारा धनहानि । उच्च या स्वगृही हो तो शुभकार्य द्वारा धनलाभ । लाभस्थ बुध में, १२-१६-१६ वें वर्ष के लगभग भाई, मित्र, धन, पुत्र, भूमि आदि का सुयोग मिलता है ।

(१२) व्ययस्थ होने से—शुभ कार्य-प्रवीण, विजयी, अभ्यासी, कार्य में निपुण, बन्धु का विरोधी, आत्मीय या स्वकुलजनों से परित्यक्त, निर्दयी धूर्त, क्रूर और मलिन-चित्तवाला होता है । साथ ही वेदान्त में रुचि तथा राजकोप से पीड़ित होता है । सूर्य युक्त होने से सहायक, दयावान्, जोशीला (सनकी) अल्प सन्तान । पापयुक्त बुध में चञ्चल-चित्त, राजादि से विरोध, व्यग-वाची । यदि शुभग्रह युक्त

हो तो धर्म-कार्य में धन का व्यय होता है। द्वादशस्थ बुध में ४८ वें वर्ष में स्त्री को पीड़ा होती है। प्रायः विद्वान्, आलसी, मस्तभाषी, शास्त्रज्ञ, लेखक, सुन्दर वकील, और धर्मात्मा होता है।

[गुरु-फल]

(१) लग्नस्थ होने से—ज्ञानी, ध्यानी, सुखी, चिरायुभोगी कार्यपरायण, विद्वान्, चतुर, रूपवान्, उदार, दानी, देवभक्ति रत, माह, राजसम्मान, तेजस्वी स्पष्टवक्ता, स्वाभिमानी सुन्दर विनीत धनी राजा को प्रसन्न करने वाला, कविता कला, व्याकरण ज्योतिष आदि का ज्ञाता सत्त्वविधान, धर्मात्मा सुख-सम्पन्न, प्रायः गौरवर्ण, वात-कफरोग से पीड़ा होती है। यदि गुरु क्रूरग्रह से दृष्ट हो तो साधारण शारीरकष्ट और सारी विघ्न-बाधायें शीघ्र दूर होती हैं। शत्रुगृही पापगृही नीचस्थ गुरु हो तो नीच-कर्म करने वाला, सन्तान के लिए लालायित, कुटुम्ब से वियोग अनेकों से वैर-कर्ता, दम्भी दुःखी मध्यायु वाला होता है। स्वगृही मित्रगृही होने से विद्वान्, व्याकरणादि शास्त्रज्ञ बहुपुत्रवान् सुखी सम्मानित, दीर्घायु। उच्चस्थ होने से सभी शुभफलों का पूर्णाधिकारी १६ वें वर्ष से राजयोग। लग्नस्थ गुरु, ८ वा १६ वें वर्ष से सुबुद्धि का उदय करता है। जलराशिस्थ गुरु स्थूल-शरीर करता है। शनि-राहु से दृष्ट-युक्त गुरु, कृश-शरीर करता है। लग्नस्थ गुरु, प्रायः स्त्री की रक्षा सन्तान धन भाग्य, विद्या बुद्धि और ज्ञान की वृद्धि करता है।

(२) धनस्थ होने से—नेत्र बड़े, राजमान्य लोकमान्य, सदाचारी, पुण्यात्मा, विद्वान् गुणी यशस्वी बुद्धिमान्, धनी, सर्व-प्रिय उत्साही, गम्भीर, सुशील वैभव-त्यागी भाग्यवान्, शत्रुनाशक, चिरायु भोगी, व्यवसायी शत्रु-रहित स्पष्टवक्ता परन्तु मधुर-भाषी रूपवान्, कुल में प्रमुख संगृहीत धन का लाभ होता है। यदि बुध से दृष्ट हो तो निर्धनी। उच्च, स्वगृही हो तो महाधनी। पापयुक्त या नीच हो तो विद्याध्ययन में बाधायें, मिथ्याभाषी क्रूर-भाषी, ठग-वृत्ति मद्यपान-कर्ता भ्रष्ट परस्त्री-गामी पुत्र-रहित या कुटुम्बनाशक होता है। धनभावस्थ गुरु, १६ वें वर्ष के बाद धन-धान्य और प्रभाव की वृद्धि २ वें वर्ष में लाभ होता है।

(३) तृतीयस्थ होने से—कृपण कृतघ्न किन्तु भाग्यवान्, कामयुक्त जितेन्द्रिय शास्त्रज्ञ लेखक, प्रवासी, स्त्री-पुत्र से प्रेम-रहित लोभी अनेक स्त्रियों का पालक, योगी आस्तिक, ऐश्वर्यवान्, कामी, स्त्रीप्रिय, व्यवसायी, पर्यटनशील वाहनयुक्त आश्रय-दाता मन्दाग्नि रोग। ऐसे जातक को भाई-बहिनों का सुख और वे उत्तम प्रकृति के होते हैं। कभी पाँच भाई तक होते हैं। कई लघु-भाई। प्रायः कृपि-वृत्ति। पापदृष्ट गुरु में किसी भाई की मृत्यु, असंतोषी, धन हीन। यदि पाप-शुभ दोनों से दृष्ट हो तो भ्रातृ-सुख में कमी। तृतीयेश बलीग्रह से युक्त हो तो भाई दीर्घायु। २ वें वर्ष में राजद्वार से सुख-प्राप्ति होती है।

(४) चतुर्थस्थ होने से—सम्माननीय भोगी सुन्दर देही कार्यरत उद्योगी ज्योतिर्विद सन्तानपोषक, धनी राजानुगृहीत वाहनादिसम्पन्न बुद्धिमान् गृहाधिपति बालकों से स्नेह, उत्तम-वस्त्रादि सुख मित्रतापूर्ण व्यवहारी पुत्रादि की अधिकता होती है। चतुर्थेश यदि बलीग्रह युक्त या शुक्र-चन्द्र से युक्त शुभग्रह के वर्ग में हो तो वाहनादि का सुख होता है। मकान बड़ा होता है। चतुर्थेश पापयुक्त हो तो पाप-कर्मा। चतुर्थेश पापदृष्ट हो तो गृह-वाहन आदि से रहित परगृहवासी मायावी से कपटी माता के लिए अनिष्टकारी कभी कभी माता की मृत्यु सम्भव है। सुखस्थ गुरु से १० या २ वें वर्ष में बन्धु (भाई) का सुख-सुयोग होता है।

(५) पचमस्थ होने से—चतुर, तेजस्वी, आस्तिक, ज्योतिषी, लोकप्रिय, कुलश्रेष्ठ, सट्टे द्वारा धन लाभयुक्त, व्यवहार-कुशल, पिता से अधिक उन्नति-शील, दानी, भोगी, सुखी, मिष्ट-भाषी, वार्तालाप में चतुर, अनेक धन-वाहनादि से सम्पन्न, कुटुम्ब-प्रिय, सन्ततिवान्, नीति विशारद, जज या वकील और सद्बुद्धिमान् होता है। पंचमस्थ गुरु की निष्फलता के कारण, प्राय. सन्तान-सम्बन्धी अल्पसुख, नेत्र-बडे होते हैं। पंचमेश, पापगृही, शत्रुगृही, नीच, त्रिकस्थ हो तो पुत्र का नाश, एक ही पुत्र का सुख, किन्तु धनी, राजकीय कारण से धन का व्यय होता है। पंचमेश, राहु-केतु युक्त होने से पुत्रशोक, परन्तु शुभग्रह की दृष्टि से पुत्रसुख। वक्री ग्रह की राशि में गुरु हो तो पीड़ाकारक, सन्तान-कष्ट होता है। पंचमस्थ गुरु, ७ वें वर्ष में माता को पीडा कारक होता है। स्वगृही या उच्च के गुरु में सन्तान-निरोध होता है।

(६) पष्ठस्थ होने से—विद्वान्, सुकर्मरत, जाति-विरोध, दन्तरोग, उदार, लोकमान्य, निरोगी, प्रतापी, आलसी, दुर्बल, कीर्ति का इच्छुक, शत्रु-रहित, विजयी, हास्य-प्रिय (मसखरा), पुत्र-पौत्रादि सुख, अनेक चचेरे भाइयों से युक्त, अजीर्ण-रोग-पीडित, प्रारब्ध पर भरोसा करने वाला, शरीर में व्रण के चिन्ह होते हैं। शुभयुक्त हो तो निरोगी। पापयुक्त, पापगृही हो तो वात या शीत रोग। शनि राशिस्थ-राहु युक्त गुरु में किसी भयकर रोग से पीड़ा, प्राय क्षयरोग सम्भव। पष्ठस्थ गुरु में, ४० वें वर्ष में शत्रु-शस्त्र-रोग भय होता है। प्राय मधुरभाषी, ज्योतिषी, विवेकी और प्रसिद्ध होता है।

(७) सप्तमस्थ होने से—भाग्यवान्, वक्ता, प्रधान पुरुष, नम्र, ज्योतिषी, धैर्यवान्, प्रवासी, सुन्दर, स्त्री प्रेमी, विद्वान्, शास्त्रज्ञ, शास्त्रानुयायी, काव्य-कर्ता, गौरव पूर्ण, उच्च वंशी, अमृतभाषी, विनयी, मत्रणा-कुशल, राजतुल्य सुखी, राजा का मत्री (प्रधान से द्वितीय पद), विख्यात, विषयादि सुख, मर्यादा इत्यादि में पिता से अधिक, व्यापार में उन्नति-शील, धनी, तीर्थाटन करने वाला, स्त्री पतिव्रता और धार्मिक होती है। किन्तु ऐसे जातक को सन्तान तथा स्त्री-सम्बन्धी विशेष चिंता रहती है। गुरु, जहाँ बैठता है, उस भाव के लिए, कभी बड़ा ही दुष्परिणाम दिखाता है। स्त्री या पति सम्बध में संशयात्मक बुद्धि देता है। स्त्री से कलह, स्त्री की दुर्वृत्ति, स्त्री से वियोग (कलह-पूर्ण) हो जाता है। गुरु की स्थिति अशुभ किन्तु दृष्टि शुभ होती है। विशेष—मकर-कुम्भ का गुरु जहाँ बैठता है तथा धनु-मीन का शनि, जहाँ बैठता है। वहाँ गुरु अशुभकारक, और शनि शुभकारक होता है। साधारणतया गुरु की स्थिति और शनि की दृष्टि वाले स्थान की हानि तथा गुरु-दृष्टि और शनि स्थिति वाले स्थान की वृद्धि होती है। यदि सप्तमेश, निर्बल या पापयुक्त या दृष्ट हो तो अन्य-स्त्री-भोगी। यदि सप्तमेश, शुभग्रह से युक्त, दृष्ट, उच्च, स्वगृही हो तो एक ही स्त्री होती है। स्त्री द्वारा धनलाभ या स्त्री से सुखी होता है। १२-२२-३४ वें वर्ष में स्त्री सुख, विवाह, प्रतिष्ठादि सुफल होते हैं।

(८) अष्टमस्थ होने से—दीर्घायु, शीलवान्, सुखी, शान्त, मधुरभाषी, विवेकी, ग्रन्थकार, कुलदीपक, कृश शरीर, नीच या दूत-कार्य-कर्ता, मलिन, दीन, विवेक-हीन, उद्धत-स्वभाव, ज्योतिषप्रेमी, लोभी, गुप्त रोगी, मित्रों-द्वारा धननाश, नीच, पतित, अप्रतिष्ठित, वायु-शूल रोगी, विधवा-सग, भृत्यों का अधिपति (सर्दार)। पापयुक्त गुरु में भ्रष्टाचारी। अष्टमेश निर्बल होने से अल्पायु। रन्ध्रेश, यदि पापग्रह हो तो १७ वर्ष के बाद विधवा से सग (व्यभिचार वृत्ति)। यदि गुरु, उच्च या स्वगृही हो तो निर्बल होते हुए भी निरोग, दीर्घायु, उद्योगी, विद्वान्, वेदशास्त्रज्ञ, ज्ञानपूर्वक अच्छे स्थान (तीर्थादि) में सुखपूर्वक अन्तिम समय (निधन) होता है। अन्य राशिस्थ गुरु में कष्ट से मृत्यु। ३१ वें वर्ष में रोग या अकाल-मरण होता है।

(९) नवमस्थ होने से—ज्योतिर्विद, भाग्यवान्, विद्वान्, राजपूज्य, पराक्रमी, बुद्धिमान्, पुत्रवान्, धर्मात्मा, यज्ञकर्ता, शास्त्र-प्रेमी, व्रतावलम्बी, तपस्वी, धनी, गुणी, परमार्थी, यशस्वी, ईश्वर-भक्त,

मन्द-ज्ञान परायण सत्कर्मशील सनातनी, उदार, प्रतिष्ठित, जनता तथा देवस्थानादि का रक्षक या कर्मचारी, पिता की चिरायु। १५ वें वर्ष में पिता को अरिष्ट, ३५ वें वर्ष में यज्ञादि करता है। प्रायः धार्मिक दृष्टि से कम सुख देने वाला, नवमस्थ गुरु है। उच्च, स्वगृही, अन्य शुभ योग में धनादि का पूर्ण सुख होता है। जब कोई शुभग्रह, शुभग्रह की राशि में हो या पापग्रह, पापग्रह की राशि में हो तो वह ग्रह 'हर्षित' (अपने शुभाशुभ फल देने में उदार) होता है। गुरु, राहु या केतु से युक्त हो, शनि से दृष्ट हो तो प्रायः अशुभफल, अधार्मिक, परिश्रम के बाद भी असफलता होती है। नवम या दशम भाव गत गुरु, यदि शुभ योग में हो तो प्रायः अन्य पुरुष के धन का सुख (बिना परिश्रम) प्राप्त होता है अथवा अधिक धनी होता है। प्रायः भाइ, सेवक, पराक्रम, शरीर, विद्या, बुद्धि की उन्नति करता है।

(१०) दशमस्थ होने से—सत्कर्मी, सदाचारी, पुण्यात्मा, ऐश्वर्यवान् साधु चतुर, प्रसन्नमूर्ति, मित्र पुत्र, धनादि का सुख, धर्मात्मा, शुभ-कर्मा, यशस्वी, सत्यभाषी, वैभव-युक्त, ज्योतिर्विद शत्रुहन्ता स्वतन्त्र विचारक, मातृ पितृभक्त, कार्य में सफलता, राज्याधिकारी भोजन में नमक का अधिक प्रयोग अथवा बड़ा कुटुम्ब अथवा सन्तान अधिक, संगृहीत धन-लाभ, सम्पत्ति-लाभ, राज-चिन्ह-युक्त, पदाधिकारी, न्याय-कर्त्ता ग्रन्थ-रचक, उत्तम वाहन-सुख, दृढ़-संकल्प वाला होता है। दशमेश, बली ग्रह से युक्त हो तो यज्ञ-कर्त्ता। पापयुक्त हो तो कार्य में विघ्न-कर्त्ता तथा दुष्कर्मी होता है। ३।१२।१६ वें वर्ष में धनलाभ होता है।

(११) लाभस्थ होने से—सुन्दर निरोगी लाभवान्, व्यवसायी, धनिक, संतोषी सन्तति युक्त, अल्प सन्ततिवान्, विद्वान्, अनेक शास्त्रज्ञ, धनोपार्जन में समर्थ वाहनादि सुख दृढ़-पराक्रमी, क्षमावान् आरोग्य राजसम्मान, प्रतिष्ठित संगृहीत धन का लाभ, ज्येष्ठ का सहायक बहु स्त्री युक्त सद्व्ययी। शुभ-पाप युक्त गुरु श्रेष्ठवाहन-सुखदायक। चन्द्रयुक्त होने से महाभाग्यवान्, लाभारिम धन की प्राप्ति २४ वे वर्ष के बाद धनादि सुख होता है। अचानक धन का लाभ होता है।

(१२) व्ययस्थ होने से—आलसी, उद्विग्न-चित्त क्रोधी, निर्लज्ज बुद्धिहीन, बाल्यावस्था में पिता की मृत्यु अथवा छोटी आयु से गृहस्थी का भार होना, सद्व्यय-कर्त्ता मितभाषी सुखी, मितव्ययी योगाभ्यासी, परोपकारी उदार शास्त्रज्ञ सम्पादक, गायक, सदाचारी लोभी, यात्री मानहीन पापी निर्धन अल्प-सन्तान सुख दरिद्र गिल्टी-व्रणादि रोग, दुष्ट चित्त। शय्या-सुखादि युक्त सावर, गणितज्ञ। शुभयुक्त, उच्च स्वगृही गुरु हो तो स्वर्गाधिकारी अन्यथा नरकभोगी या दुर्व्यसनी होता है।

नाट—

जिस भाव में गुरु बैठता है उस भाव-सम्बन्धी किसी कार्य का विचारा अवश्य करता है। जहाँ देखता है उस भाव की वृद्धि अवश्य करता है। हाँ, २।४।५।११ वें भाव में अकेला गुरु हानिकारक होता है।

शुक्र-फल

(१) लग्नस्थ होने से—गौरवर्ण सुन्दर शरीर, कमर-कपोल-पेट-गुप्तांग में चिन्ह या तिल होता है। दीर्घायु ऐश्वर्यवान् सुखी मधुरभाषी, प्रवासी, सोगी विलासी कामी वात-पित्त रोग अनेककला का अभिज्ञाता विद्वान् काव्य में रुचि, वार्ता में कुशल गणितज्ञ विनम्र धर्मात्मा, धनी स्त्री-प्रिय, विलासी राजसम्मान मधुर तथा सुगंध-पदार्थ पर विशेष रुचि। शुभयुक्त शुक्र होने से स्वयं

तुल्य कान्तिमान् शरीर, अनेक वस्त्राभूषण से अलंकृत। अस्त या पाप-दृष्ट-युक्त शुक्र, वातश्लेष्मा का विकार करता है। ऐसे योग में लग्नेश, राहु-युक्त हो तो अण्डकोश में जल संचय से पीड़ित। चतुर्थ भाव में शुभग्रह हो तो अत्यन्त प्रतापी, हाथी रखने वाला। स्वगृही शुक्र हो तो राजयोग। यदि शुक्र, त्रिकेश हो अथवा निर्बल हो तो द्विभार्या योग, भाग्य में न्यूनाधिकता, बुद्धि में दुर्वृत्ति। लग्नस्थ शुक्र से १७ वें वर्ष में पर स्त्री-संग होना सम्भाव्य है।

(२) द्वितीयस्थ होने से—विद्वान्, मिष्ठान्नभोजी, लोकप्रिय, जौहरी, सुखी, समज्ञ, कुटुम्बयुक्त, कवि, विचित्र विद्याओं का ज्ञाता, मनोहर-भाषी, सभा में चतुर, चिरायु, साहसी, भाग्यवान्, धनी, विद्या-धन विशेष, स्त्री द्वारा धन-लाभ, सुस्वादु-उत्तम-भोजनादि का सुख, उत्तम वस्त्राभूषण से सुशोभित, बड़ा कुटुम्ब, वाहनादि सुख, स्त्री अच्छी, किन्तु स्त्री के प्रति प्रेम का अभाव, आँखें सुन्दर तथा विशाल होती हैं। धनेश, निर्बल या दुःस्थानगत हो तो नेत्र में फूली (टेंटर) अथवा अन्य नेत्र-रोग होता है। शुक्र, चन्द्र-युक्त हो तो रतौंधी, नेत्ररोग, कुटुम्बरहित, धन-नाश होता है। चन्द्र से दृष्ट शुक्र, धन-लाभ में अत्यन्त कठिनता। शुभगृही, शुभदृष्ट शुक्र में धन की प्राप्ति। अशुभग्रह युक्त-दृष्ट हो तो राजा या चोर आदि द्वारा धनहानि, प्राय मार्ग में आपत्ति। छठवें वर्ष में लाभ। ३२ वें वर्ष में सुन्दर स्त्री का संयोग होता है।

(३) तृतीयस्थ होने से—सुखी, धनी, कृपण, आलसी, चित्रकार, पराक्रमी, विद्वान्, भाग्यवान, पर्यटन-शील, दुष्ट, उत्तम जनों का विरोधी, निर्धन, काम-सन्तप्त होता है। भाई, तो कई होते हैं, किन्तु बाद में कई भाइयों की मृत्यु हो जाती है, साथ ही जीवित भाई, स्वस्थ एव सज्जन होते हैं। बहिन की भी सख्या अधिक होती है। शुक्र, पापयुक्त या दृष्ट हो तो सौतेले भाई भी होते हैं, जिनमें कुछ की मृत्यु, कुछ जीवित रह जाते हैं। तृतीयेश, बलीग्रह से युक्त-दृष्ट हो अथवा शुक्र, स्वगृही या उच्च हो तो भाई-बहिन की सख्या अधिक का सुयोग, परन्तु तृतीयेश, पापयुक्त, दुःस्थानस्थ हो तो भाइयों का नाश होता है। तृतीयस्थ शुक्र होने से १० वें वर्ष में तीर्थ-यात्रा का सौभाग्य होता है।

(४) चतुर्थस्थ होने से—रूपवान्, बुद्धि-युक्त, पराक्रमी, तेजस्वी, विद्वान्, सुखी, क्षेत्र, ग्राम, वाहनादि-से युक्त, परोपकारी, आस्तिक, सुखी, व्यवहार-दक्ष, विलासी, भाग्यवान्, पुत्रवान्, चिरायुभोगी, दुग्ध तथा भोजनादि का उत्तम सुख, सर्व-प्रिय, स्त्री-अच्छी, भोग-शक्ति अधिक, धनलाभ, उच्च-स्थिति, माता की चिन्ता या माता को कष्ट, ईश्वर-भक्त, राजा से पूज्य होता है। चतुर्थेश, बलीग्रह से युक्त हो तो रथादि उत्तम वाहन सुख। यदि शुक्र के साथ पापग्रह हो या शुक्र पापराशिस्थ, नीच, शत्रुगृही, निर्बल हो तो परस्त्रीगामी, माता दुःखिनी या विधवा (पितृ-कष्ट), वाहनादि क्लेश होता है। चतुर्थस्थ शुक्र से १२, २० वें वर्ष में बन्धु सुख, ३० वें वर्ष में वाहनादि सुख होता है।

(५) पंचमस्थ होने से—सुखी, गुणी, भोगी, आस्तिक, दानी, उदार, प्रतिभाशाली, वक्ता, कवि, विद्वान्, काव्य-प्रेमी, तर्क-शास्त्र का व्यवसायी, शिक्षित, तेजस्वी, सुखी, धन, वाहन, पुत्रादि का सुख, लाभयुक्त, व्यवसायी, शत्रुनाशक, मंत्री, सेनापति, शासक आदि उच्च पदाधिकारी, राजा से सम्मानित, गौरवान्वित होता है। आदर्श-स्त्री का सहयोग। पापयुक्त, नीच, अस्त, शत्रुगृही, पापगृही शुक्र होने से बुद्धि-रहित, पुत्राभिलाषी (पुत्र भाव पीड़ित) होता है। शुभ शुक्र में पुत्रवान्, नीतिज्ञ, वाहनादि का सुख होता है। ४ या ५ वें वर्ष में धन-लाभ होता है।

(६) षष्ठस्थ होने से—स्त्रीप्रिय, शत्रुनाशक, मितव्ययी, असावधान, डरपोक, काम-शक्ति-हीन या दुष्टकर्मा, स्त्री से मतभेद, गुप्तांगरोगी, स्त्री-सुखहीन, बहुमित्रवान्, मूत्ररोगी, वैभवहीन, दुःखी,

गुप्तरोगी शरीर दुर्बल अन्य स्त्री पर भी प्रीति शत्रु से पीड़ित बहुरागानुमान् किन्तु शत्रु पर विजयी, अनेक चचेरे भाई, पुत्र-पौत्रादि युक्त किन्तु अपात्र में धन-व्यय होता है। यदि शुक्र अस्त नीच, शत्रुगृही हो तो रोग, कलह, शत्रुओं की वृद्धि होती है। यदि उच्च स्वगृही मित्रगृही हो तो शत्रु पर विजयी, चकोरवत् दृष्टि (एकटक देखने की रुचि) होती है। षष्ठस्थ शुक्र, निष्फलता के कारण मामा या मातृकुल का विनाश २० या ४१ वें वर्ष में स्वयं को कष्ट होता है। स्त्री-सम्बन्धी चिन्ता विवाहादि में बाधा, वियोग, स्त्री को कष्ट और वीर्यादि रोग होते हैं।

(७) सप्तमस्थ होने से—स्त्री से सुखी, उदार, लोकप्रिय, धनी चिन्तित विवाह के बाद भाग्योदय साधु प्रेमी, कामी परस्त्रीगामी अल्प-व्यभिचारी, सुन्दर शरीर स्त्रियों से अधिक प्रेम, रति-परिवृत, वेश्या-मित्र जननेन्द्रिय चुम्बन की बुरी आदत, दुर्व्यसन से वीर्यनाश, निर्बलता स्त्री कुलीन, धन पुत्रादि सुख जल-क्रीड़ा में निपुण, कुटुम्बादि सुख भाई से मित्रता। हानि युक्त शुक्र हो तो स्त्री व्यभिचारिणी या द्विभार्यायोग। शुक्र के साथ, एक से अधिक ग्रह हों तो अधिक विवाह तथा पुत्रहीन। स्वगृही या उच्च शुक्र हो तो स्त्री के ग्राम-कुल-द्वारा धन-लाभ का सुयोग स्त्री के प्रताप से तेजस्वी, स्त्रियों से घिरे रहना १४ वें वर्ष के बाद स्त्री-सुख होता है। प्रायः चंचल विलासी गानप्रिय और भाग्यवान् होता है।

(८) अष्टमस्थ होने से—प्रसन्न-मूर्ति, निराहू मानने वाला, नीच-कर्मा, अहंकारी शठ पापाचारी, परन्तु आडम्बरी धार्मिक चौथे वर्ष में माता को गण्डमाला रोग सुखी माता को भयदायक विदेशवासी, विषयी रोगी क्रोधी,ज्योतिषी मनस्वी दुःखी, गुप्तरोगी पर्यटक, परस्त्रीरति स्त्री द्विवैविध्यी कामी स्त्री-पुत्र के प्रति उद्विग्न-चित्त, चिन्तायुक्त राजसम्मानित, ऋण-रहित पिता का सुख बीच में मृत्यु योग। पापयुक्त शुक्र में अल्पायु। अष्टमस्थ शुक्र में १ वयायु तक, दुःख भोगने के बाद सुखी होता है।

(९) नवमस्थ होने से—आस्तिक, गुणी गृहसुखी प्रेमी दयालु, राजप्रिय धर्मात्मा सौम्यमूर्ति वरस्वी गुणी क्रोध-रहित, भाग्यवान स्वार्थी स्त्री पुत्र, धन वाहनादि से सुखी देव-विप्र-पूजक तपस्वी, धर्मकर्ता तीर्थ एवं धार्मिक कार्यों में व्ययकर्ता, स्वयमार्जित द्रव्यवान् पैदल (पदाति) सेना का स्वामी। यदि शुक्र, कृत्तिका (वृष) स्वाती (तुला) पुष्य (कर्क) में हो तो विशेष भाग्यवान्। पापयुक्त शुक्र पिता का अरिष्टकारक। अशुभ शुक्र में सम्पत्ति की बरबादी। शुभ शुक्र-भाग्यवर्धक, राजयोग-कारक। चतुर्थेश या सप्तमेश से युक्त शुक्र भाग्यवान, सवारी सुख और वस्त्राभूषण से अलंकृत करता है। १४ वें वर्ष में धन-लाभ होता है।

(१०) दशमस्थ होने से—विलासी ऐश्वर्यवान न्यायाधीश ज्योतिषी विजयी लोभी धार्मिक, गानप्रिय कीर्तिमान् तेजस्वी बुद्धिमान विख्यात पूजा-ध्यानादि परायण, धनी सौभाग्यवान् धार्मिक, भाग्यवान्, गुणवान्, दयालु कर्मशिक्षित की पुत्रों से अधिक प्रेम देव-पितृ काज में श्रद्धालु, वाद-विवाद से धन तथा मर्यादा की प्राप्ति की पुत्र का सुख एक बड़ा भाई और एक बहिन होती है। शुभयुक्त शुक्र में धर्मकर्ता, यशस्वी भाग्यशाली, चतुर और वक्ता होता है।

(११) लाभस्थ होने से—स्वस्थ शोक-हीन सत्कर्मी विद्वान् धनी विस्तृत-भूसम्पत्ति वाहनादि सुखी धर्म-तत्पर, विलासी स्थिर लक्ष्मीवान् लोकप्रिय परोपकारी जौहरी बलवान् गुणज्ञ कामी, पुत्रवान् दयालु, सुन्दर स्त्री सुख संगीत-प्रिय, प्रायः यात्रा चिन्ता, सर्वदा चिन्ता युक्त गीतप्रिय कभी संगीत द्वारा लाभ। शुभ शुक्र में वाहनादि सुख। पापयुक्त शुक्र में पापकर्म से, शुभयुक्त शुक्र में शुभकर्म से धन-लाभ। शुक्र नीच या रन्ध्रेश युक्त हो तो लाभ नहीं होता। लाभस्थ शुक्र २४ वें वर्ष में लाभ कराता है।

(१२) व्ययस्थ होने से—न्यायशील, आलसी, पतित, धातु-विकारी, परस्त्रीरत, बहुभोजी, धनवान, मितव्ययी, स्थूलशरीर, रोगी, कामातुर, इन्द्रिय-लोलुप, मानसिक चिन्ता मे व्यस्त, श्रद्धा-रहित, शत्रुनाशक, सत्य तथा दया से रहित, कार्य-बाधक, कृपण, नेत्ररोग, धनहीन, नरकगामी होता है। ५ वें वर्ष में धनलाभ। धनी, शय्यादि का सुख, स्वर्ग-लोक का भोग, सत्कार्य में व्यय, घाट, गोशाला आदि का निर्माता, वेश्या-निवास, सिनेमाघर, संगीतालय, नृत्यभवन आदि का स्थापक होता है। कुम्भ-मीन लग्न में जन्म होने से व्ययस्थ शुक्र, विशेष अशुभ फल देता है, शेष मे शुभफल देता है।

[शनि-फल]

(१) लग्नस्थ होने से—प्राय शरीर रोगी, व्रण, चर्मरोग, वातरोग, कफप्रकृति, बाल्यावस्था मे रुग्ण, सर्वदा चिन्तित, कामी, मूर्ख, दरिद्र, मलिन, कटुवक्ता, राजकोपयुक्त होता है। स्वार्थी, सेवावृत्ति। यदि शनि (७।६।१०।११।१२ राशिस्थ) हो तो सुडौल शरीर, विद्वान्, ग्रामाधिपति, राजा के समान, दृढ-जानु (पुष्ट शरीर), उच्च विचारवान्, राजा या शासक, पितृवत् धर्मशील होता है। चतुर्थेश या दशमेश शनि हो तो बडा भाग्यवान्, प्रबल राजयोग। शनि, चन्द्र से दृष्ट हो तो भिक्षुक। शुभ ग्रह से दृष्ट शनि से भिक्षुक नहीं होता, ५ वें वर्ष में महाकष्ट होता है। तुला-मकर के शनि में धनाढ्य और सुखी तथा अन्य राशि मे होने से दरिद्री होता है।

(२) धनस्थ होने से—प्राय दुखी, धनहीन, निष्ठुर, कुकर्मी, भाइयो से त्यक्त, साथियों से विश्वास-घात, मुखरोग, साधुद्वेषी, कटुभाषी, परगृहवासी, लोहा, काष्ठ, राजकोप, शस्त्रादि भय, शरीरपीडा, राजकोप मे धननाश, देशान्तर मे सवारी द्वारा (राजप्रसन्नता से) सम्मानित, अधूरी शिक्षा, (शिक्षा-कार्य में महान बाधाएँ)। पापग्रह से दृष्ट या युक्त होने से अर्ध-शिक्षित, स्त्रियों को ठगने वाला, नेत्ररोगी। शुभयुक्त शनि में धार्मिक, सत्यप्रिय, दयालु। पापयुक्त-दृष्ट शनि से, बहिन आदि का गर्भपात, मृतसन्तान का जन्म। कभी-कभी पडोस या सम्पर्कजन के गृह मे (जहाँ जातक-चरण की कृपा हो वहाँ) गर्भपात या मृतसन्तान का जन्म होता है। ऐसे व्यक्ति के कारण, कभी लाखों व्यक्तियों का नाश होता है। लोक-निन्दा-युक्त व्यक्ति होता है। तुला या कुम्भ का शनि हो तो धनी, लाभवान, कुटुम्ब तथा भ्रातृविरोधी होता है। बुधदृष्ट शनि से असत्यकर्म द्वारा महाधनी, व्यसनी, अन्त में बन्धुवर्ग द्वारा परित्यक्त, निकृष्ट विद्या में रत, मानसिक दुख से पीडित और १२ वें वर्ष में द्रव्य का विनाश होता है।

(३) भ्रातृस्थ होने से—निरोगी, योगी, विद्वान्, शीघ्रकार्यकर्ता, मल्ल, सभाचतुर, विवेकी, शत्रुहन्ता, चचल, पराक्रमी, बुद्धिमान्, प्रधान मनुष्य, बहुत मनुष्यों का पालक, अनेक दास-दासी युक्त (सेवक सुख), साहसी, कृषक, राजसम्मान, पृष्ठज का नाश, भ्रातृ-सुख मे कमी। उच्च या स्वगृही होने से भाइयों की वृद्धि। नीच या अस्त होने से अग्रज-पृष्ठज का विनाश तथा कई पापग्रहों के साथ होने से माता की मृत्यु, स्वय को शरीर कष्ट, भाग्यरहित। भाइयों से कलह। राहु दृष्टि-युति से बाहुरोग। दाहिने हाथ में चोट। ३।६।११ वें भाव में मगल-शनि-राहु एकत्र या पृथक् हों तो अनेक अरिष्टों का विनाश, रोगयुक्त किन्तु शरीर चचल, तीव्रगति, और साहसी होता है। शुभदृष्ट शनि न होने से अपने (सनातन) धर्म से प्रतिकूल, १२-१३ वें वर्ष में भाई-बहिन का सुख होता है।

(४) सुखस्थ होने से—बलहीन, अपयशी, कृशदेही, शीघ्रकोपी, कपटी, धूर्त, भाग्यवान, वात-पित्त-प्रकृति, उदासीन, दुष्टभाव, आलस्य, कलही, मलिन, कृपण, राजकोप, नेत्ररोग, चोट, पूर्वार्जित धन-सम्पत्ति की हानि, माता को विपत्ति, कभी दो माताएं। उच्च या स्वगृही शनि में पूर्वोक्त दोष न होकर धनी,

सुखी वाहनादि युक्त। यदि शनि लग्नेश होकर सुखस्थ हो तो माता की दीर्घायु जातक सुखी। प्राय लग्नेश जिस भाव में बैठता है, उस भाव वाली वस्तुओं की विशेष वृद्धि विशेष सुख विशेष संयोग अवश्य होता है। रन्ध्रेश-युक्त शनि हो तो माता और जातक को अरिष्ट। चतुर्थस्थ शनि में कृष्ण-वस्तु अश्वादि-प्रिय वात-पित्त का कोप ८ वें वर्ष में माता की हानि होती है। मकान गिरना सम्भव रहता है। रोग शत्रु पिता और शरीर को कष्टदायक। क्रूरदृष्ट शनि में अभ्यस्त योग किन्तु धार्मिक अनुष्ठान करने वाला होता है।

(५) पुत्रस्थ होने से – वातरोगी भ्रमणशील विद्वान् उदासीन संतानयुक्त आलसी चंचलचित्त पुत्र-शोक रोगवश क्षीण शरीर। शत्रुराशिस्थ हो तो पुत्रनाश। उच्च हो तो एक पुत्र। स्वगृही हो तो तीन कन्या। यदि पंचम भाव में एक से अधिक ग्रह हों या दृष्टि करते हों तो स्वयं ही दत्तक बनता है या स्वयं ही दत्तक-पुत्र ग्रहण करता है। स्वगृही या बलीग्रह से युक्त हो तो एक ही स्त्री होती है। गुरुदृष्ट शनि में द्विभार्यायोग—इसमें पहिली संतानरहित दूसरी संतान-युक्त होती है। ५ वें वर्ष में बन्धु-हानि।

(६) रिपुस्थ होने से—भोगी कवि योगी कण्ठरोग श्वासरोगी जातिविरोधी व्रणयुक्त बलवान् आचार-हीन हठी गुणग्राही अनेक जन-पालक श्रेष्ठ-कर्मा शूर-वीर पुष्ट शरीर, जठराग्नि तीव्र धन-धान्य सम्पन्न पुत्र का आज्ञाकारी शत्रु पर विजयी, कई चचेरे या विमातृक (सौतेले) भाइयों से युक्त। नीचस्थ होने से निकृष्ट जाति से शत्रुता। नीचस्थ न हो तो इसके शत्रु अनायास पराजित होते हैं। उच्चस्थ होने से मनोकामना पूर्ण होती है। अन्य राशि में शत्रुनाशक। मंगल युक्त होने से कुछ राजयोग देशान्तर-भ्रमण। यदि रन्ध्रेश शनि हो तो वातशूल या नया रोग। षष्ठस्थ शनि में २१ या ३७ वें वर्ष में शत्रु या शस्त्र से भय होता है।

(७) दारस्थ होने से—क्रोधी, धन-सुख हीन भ्रमणशील, नीचकर्मरत आलसी स्त्री-प्रिय विलासी कामी कपटी अंगहीन रोग से दुर्बल नीच कार्य में प्रवृत्ति ठग ज्वररोगी वचन का कच्चा (बहकावे म आजाना) मनुष्यों से कम मेल-जोल स्त्रियों से अनादर स्त्री तथा पद सम्बन्ध से चिन्तित कभी वेश्यागामी परस्त्रीगामी दासी-गामी स्त्री की मृत्यु, द्विभार्यायोग। कोई यदा ही धार्मिक, आचार्य, त्यागी। शुक्रयुक्त शनि में पुरुष परस्त्रीगामी एवं स्त्री व्यभिचारिणी तथा जननेन्द्रिय चुम्बन करने वाली होती है। स्वगृही उच्च गुरुराशिस्थ शनि में काम-वासना अधिक। भौम युक्त शनि में पुरुष, जननेन्द्रिय-चुम्बन-कर्ता। सप्तमस्थ शनि म ३० वें वर्ष में स्त्री का नाश होता है।

(८) रन्ध्रस्थ होने से—कपटी वाचाल कुष्ठरोगी डरपोक, धूर्त गुप्तरोग विद्वान् स्थूल शरीर, उदार-प्रकृति नीचवृत्ति (नौकरी आदि) धर्मद्वेषी, आलसी दुर्बल देह, रक्त-विकार चर्मरोग, धनहीन, अल्पसन्तान, शूद्रा-गामी हृदय-रोग खाँसी हैजा का भय। प्राय विदेश में मृत्यु। शुक्रयुक्त—व्यभिचारी, भ्रमणशील। भौमयुक्त—गुप्तांगरोग रोगी। राहुयुक्त—जल अग्नि विष, काष्ठ, पत्थर का भय। राहु-सूर्य-शनियुक्त सतत निराशा अपयशवान् प्रेमहीन पितृपीडक भ्रातृरहित, पत्नी-कुल का मानहानि-कर्ता असत् प्रयोग से धन-लाभवान् कुपुत्रयुक्त, कृपण अर्श, दमा, क्षयरोग होते हैं। उच्च या स्वगृही हो तो दीर्घायु, प्राय ७२ वर्षायु। रन्ध्रेश नीच या शत्रुराशिस्थ हो तो अल्पायु। रन्ध्रस्थ शनि से २५ वें वर्ष में अरिष्ट होता है।

(९) भाग्यस्थ होने से—रोगी वातरोगी भ्रमणशील, वाचाल क्रूरदेही प्रवासी भीरु, साहसी कपटी, भाग्यहीन, कृपण धर्मध्वजधारी, स्मारक या संग्रहालय का निर्माता भ्रातृहीन, शत्रुनाशक, बड़ा

धार्मिक, युगप्रवर्तक, नवीन कार्य का सम्पादक, देव–पितृ कार्य में अश्रद्धा या परिवर्तनशील, आत्मीय जन द्वारा दुःखित, परन्तु धनी और सुखी होता है। उच्चस्थ शनि होने से—वैकुण्ठ से आने वाला या या वैकुण्ठ जाने वाला जीव होता है और प्राचीन धर्म का खण्डन करता है। स्वगृही होने से महाशिव–यज्ञकर्ता तथा राजचिन्ह से युक्त होता है, पिता की दीर्घायु होती है। पापयुक्त या निर्बल होने से पिता को अरिष्ट होता है। १६।२६ वें वर्ष में पितृ–कष्ट, २६ वें वर्ष में घाट–गोशाला का निर्माण कराता है।

(१०) कर्मस्थ होने से—नेता, विद्वान्, ज्योतिषी, राजयोगी, अधिकारी, चतुर, महत्त्वाकांक्षी, निरुद्योगी, परिश्रमी, नीतिज्ञ, नम्र, चतुर, शूर–वीर, प्रियवक्ता, कृपण, कृषक, भाग्यवान्, उदर–विकार, राजमात्य, धनवान्, परदेशवासी, ग्रामादि का नायक, राजमंत्री, दण्डाधिकारी (न्यायाधीश), किन्तु संग्राम से अनभिज्ञ होता है। यदि नीचस्थ या शत्रुगृही हो तो, क्रूर, कृपण, पचिद्दंता, सेवा द्वारा धन-संगृही, जवा या जननेन्द्रिय रोग। मीनस्थ शनि, सन्यास योग कारक। पापयुक्त होने से कार्यों में विघ्न-बाधाएँ। शुभयुक्त होने से कार्य में सफलता। दशमस्थ शनि, ५४ वें वर्ष में शत्रु या शस्त्र से भय, २५ वें वर्ष में गंगास्नान, तीर्थयात्रा अथवा धार्मिक कृत्य होते हैं। प्राय स्त्री को कष्ट होता है।

(११) लाभस्थ होने से—चिरायु, क्रोधी, चंचल, शिल्पी, सुखी, योगाभ्यासी, नीतिवान, परिश्रमी, व्यवसायी, स्थिर चित्त, स्थिर धन, भूमि द्वारा धनलाभ, कृषक, भूमिस्वामी, काले पदार्थों के लाभ से सुख, विद्वान्, पुत्रहीन, कन्या सुख, रोगहीन, बलवान, राजद्वार में सम्मानित होता है। उच्च या स्वगृही हो तो विद्वान्, भाग्यवान्, अत्यन्त धनवान् और वाहनादि-सुख सम्पन्न होता है।

(१२) व्ययस्थ होने से—अपस्मार, उन्मादरोगी, व्यर्थ व्यय करने वाला, व्यसनी, दुष्ट, कटुभाषी, अविश्वासी, दयारहित, धनहानि, आलसी, कुसंगी, नीचकर्म रत, खर्चीला स्वभाव (अमितव्ययी), मातुलकष्ट, मातुलरहित, प्रवास-प्रिय, नीच-अनुचर-युक्त। कोई कभी अंगहीन। अशुभग्रह से युक्त होने के कारण, आकस्मिक घटना, अग्नि या राजकोप से नेत्रहीन, व्यापार में हानि, अनेक कार्यों में प्रवृत्ति। शुभग्रह-युक्त होने से नेत्र-सुख, किन्तु, दुष्ट-कार्यों में द्रव्य-व्यय अधिक, धनहीनता का अनुभव। ४५ वें वर्ष मे स्त्री को पीड़ा होना सम्भव है।

नोट—यह शनि जिस भाव में बैठता है उस भाव–सम्बधी किसी कार्य की वृद्धि अवश्य करता है, तथा जहाँ देखता है, उस भाव की हानि करता है।

[राहु–फल]

(१) लग्नस्थ होने से—दुष्ट, स्वार्थी, राजद्वेषी, नीचकर्मरत, मनस्वी, दुर्बल, कामी, अल्पसंततियुक्त, साहसी, स्ववाक्यपालक, चतुर, रोगी, अधर्मी, मित्रविरोधी, विवाद में विजयी, स्वजन-वंचक, संतान-हीन, स्त्री का गर्भपात, वैद्य, डाक्टर शरीर-विशेषज्ञ, संगीत-प्रिय, शिर में वेदना या रोग, १।२।३।४।५।६।१० राशिस्थ राहु हो तो नौकरी से धन-लाभ, भोगी, विलासी, महानुभूति-पूर्ण होता है। मेष-कर्क-सिंह राशिस्थ राहु में स्वर्ण-लाभ-विशेष। शुभ-दृष्ट राहु से मुख में चिन्ह। ५ वें वर्ष में महाकष्ट होता है।

(२) धनभावस्थ होने से—परदेशगामी, अल्पमतति, कुटुम्बहीन, कटुभाषी, अल्पधनी, संग्रहशील, निन्दित–भाषी, घूमने वाला, पुत्र-चिन्ता-युक्त, धनहीन, कठोर, मात्सर्य–युक्त, मछली, माँस, चर्म, नखादि के क्रय–विक्रय द्वारा या चौर कार्य से लाभवान, पापयुक्त होने से ओष्ठ में चिन्ह, १२ वें वर्ष में द्रव्य का विनाश। राजकोप–भाजन बनता है।

(३) तृतीयस्थ होने से—योगाभ्यासी, दृढ़विवेकी, अरिष्टनाशक, प्रवासी, बलवान्, विद्वान्, व्यवसायी यशस्वी, पराक्रमी, ऐश्वर्यवान्, सुख-विलासादि सम्पन्न, साहसी, बहुशत्रुयुक्त, किन्तु [illegible]

रोगी, कर्णरोग, विस्मृति अधिक, भाई एवं पशुओं की मृत्यु, प्राय भ्रातृ-सुख हीन अल्प-संतान विजाति लघु भ्रम का लाभ अधिक। शुभयुक्त होने से कण्ठ में चिन्ह। तृतीयस्थ होने से १२।१३ वें वर्ष में भ्रातृ सुख होता है।

(४) चतुर्थस्थ होने से—असन्तोषी दुःखी मातृक्लेश क्रूर कपटी उदरव्याधियुक्त मिथ्याचारी, अल्पभाषी भ्रमण शील, मित्र पुत्र एवं आत्मीय जनों से रहित दो स्त्री या दो मातायें, भामूपरयुक्त सेवक-सुख। १।२।४ राशिस्थ राहु से बन्धु सुख अन्यथा बन्धु-पीड़ित। पापयुक्त राहु से अवश्य माता को दुःख किन्तु शुभदृष्ट, शुभयुक्त होने से माता को पीड़ा नहीं होती। चतुर्थस्थ राहु से ८ वें वर्ष में भाई की हानि सम्भव है।

(५) पुत्रस्थ होने से—मतिमन्द धनहीन शीघ्र सन्तानोत्पत्ति होने का योग कुल और धन का नाशक, सन्तान हानि या अभाव कुमार्गी क्रोधी मित्र-रहित कुटिल भ्रान्त चित्त वायुरोग उदरशूल राजकोप अल्पाचारी भाग्यवान् कार्यकर्ता शास्त्रप्रिय मंत्रापाय द्वारा (नागदेव या विष्णु-पूजा द्वारा) पुत्र-प्राप्ति सम्भव कर्कस्थ राहु में पुत्रप्राप्ति-सुख सम्भव अन्यथा हीन मलिन पुत्रों का उत्पादक। सिंहस्थ राहु में कभी-कभी पुत्रसुख। ५ वें वर्ष में बन्धुहानि सम्भव है।

(६) षष्ठस्थ होने से—विधर्मियों द्वारा लाभ, निरोगी शत्रुहन्ता कमर दर्द या पीड़ित अरिष्ट-विनाशक, पराक्रमी गम्भीर सुखी ऐश्वर्यवान विद्वान्, बली नीच या म्लेच्छ द्वारा प्रभुता-शाली, बड़े-बड़े कार्य करने वाला राजवत् प्रतिष्ठित शत्रु पर अनायास विजय धनलाभ स्त्री-हीन पशुभय चचेरे या फुफेरे भाई-युक्त। चन्द्र-युक्त राहु में राजरानी से भाग करने वाला, चोर धनहीन होता है। २१।३७ वें वर्ष में कलह और शत्रुभय होता है।

(७) सप्तमस्थ होने से—स्त्रीनाशक, व्यापार का हानिकारक, भ्रमणशील वातरोग दुष्कर्मी, चतुर लोभी जननेन्द्रिय रोग प्रमेह विधवा से सम्बन्ध विवाह के समय से स्त्री को रोग द्विभार्या योग पहिली को रक्ताधिक्यरोग दूसरी को पक्वान्न-विकार कलह-प्रिया स्त्री क्रोधिनी विवाद-शीला प्रचण्डरूपा सर्पिणी स्वभाव वाली कभी-कभी स्त्री से मतभेद। पापयुक्त होने से कुटिला पापिनी दुःशीला गण्ड-माला-रोग-युक्ता भार्या का संयोग ; परन्तु शुभग्रह-युक्त होने से पूर्वोक्त दोष नहीं होते तथा द्विभार्या-योग भी कम सम्भव रहता है। २७ वें वर्ष से स्त्री को कष्ट होता है।

(८) अष्टमस्थ होने से—पुष्ट देही गुप्तरोगी क्रोधी व्यर्थभाषी मूर्ख उदररोग कामी उन्मादक, पापी गुप्त प्रमेह, अण्डवृद्धि बवासीर रोगादि भय, ३२ वें वर्ष में जीवन (आयु) की आशङ्का। शुभयुक्त होने से २४ वें वर्ष में जीवन की आशङ्का। रन्ध्रेश बली-ग्रह-युक्त हो तो ६ वें वर्ष में मृत्यु-भय होता है।

(९) भाग्यस्थ होने से—धर्मात्मा किन्तु दुर्बुद्धि नीच धर्मानुरागी पवित्रता रहित धर्म-कर्म-विहीन, मन्द-बुद्धि अल्प सुख-भागी भ्रमण शील दरिद्र बन्धु जनों से हीन। स्त्री निःसन्तान अधार्मिका अनुदार। १९ या २९ वें वर्ष में पिता का अरिष्ट होता है। प्रवासी वातरोग, व्यर्थ परिश्रमी तीर्थाटनशील और भाग्यहीन होता है।

(१०) कर्मस्थ होने से—आलसी वाचाल अनियमित कार्यकर्ता मितव्ययी संतानकष्ट विद्वान शूर धनवान्, रोगी, वात-व्याधि से पीड़ित शत्रुनाशक, मन्त्री अथवा उच्चाधिकारी, पुर या ग्राम-समूह का नायक (नेता), काव्य नाटक, छन्द-शास्त्र का ज्ञाता, रसिक, अत्यन्त भ्रमणशील पितृ-सुख-रहित जलादि निर्माता कर्ता। मीनस्थ में गृहादि सुख। शुभ युक्त होने से सुन्दर ग्राम का निवासी काव्य शासक। ४४ वें वर्ष में राज या शत्रु द्वारा संकट आता है। १।२।३।४।५।६।११।१२ राशिस्थ राहु में प्राय शुभ फल होते हैं। बलवान् राहु से लाभ होता है। चन्द्र-राहु योग से राजयोग होता है।

(११) लाभस्थ होने से—कभी थोड़ा लाभ एव कार्य में सफलता पाने वाला, धन-धान्य-सुख, राजद्वार से धन एवं प्रतिष्ठा-प्राप्ति, वस्त्र, स्वर्ण, अन्नादि का स्वामी, पशु एवं वाहन से युक्त, युद्ध में विजयी, सन्तानयुक्त, म्लेच्छशासक द्वारा सम्मानित, ४५ वें वर्ष में पुत्र तथा धन का अतुल सुख होता है। मन्दगति, लाभहीन, परिश्रमी, अरिष्टनाशक, सन्तानकष्ट और व्यवसाय-युक्त होता है।

(१२) व्ययस्थ होने से—नीच वृत्ति, प्रपंची, कपटी, कुलघ्न, दम्भी, कृपण, नेत्ररोगी, चर्मरोगी, प्रवासी, पैर में चोट लगना, स्त्री की चिन्ता, अल्पसन्तान, ४५ वें वर्ष में स्त्री को पीडा होती है। मतिमन्द, मूर्ख, परिश्रमी, सेवक, व्ययकर्ता, चिन्ताशील और कामी होता है।

[केतु-फल]

(१) लग्नस्थ होने से—दुर्वल शरीर, कमर में दर्द, वात-व्याधि, उद्विग्न-चित्त, स्त्री-चिन्ता-निमग्न, मिथ्याभाषी, चञ्चल, भीरु, दुराचारी, मूर्ख, शत्रु-युक्त, हाथों से पसीना निकलना। किसी शुभ या पापग्रह की दृष्टि हो तो मुँह मे कुछ चिन्ह। ५ वें वर्ष मे महाकष्ट होता है। कार्य में हानि (असफलता), शरीरकष्ट, मध्य में मृत्युभय किन्तु वृश्चिक मे हो तो सुखकारक होता है।

(२) धनस्थ होने से—दुष्टात्मा, कुटुम्वविरोधी, मुखरोगपीड़ा, नीच सगति, जातिवर्ग या समीपस्थ जनों से विरोध, स्पष्टवक्ता, राजभीरु, विरोधी लोगों का घृणा-पात्र, राजकोप से धन-धान्यादि की क्षति। यदि केतु, स्वगृही (५।६।८।६ राशिस्थ) हो अथवा शुभग्रह की राशि में हो तो सुख-सम्पन्न, किन्तु १२ वें वर्ष में द्रव्य-विनाश होता है।

(३) भ्रातृस्थ होने से—तेजस्वी, वहनोई की चिन्ता, भोगी, ऐश्वर्यवान्, वली, स्थिरवृत्ति-रहित, चंचल, वातरोगी, व्यर्थवादी, भूतप्रेत-भक्त, सर्व-प्रिय, मानसिक-चिन्ता-युक्त, भ्रातृ-सुख का अभाव, वहिन का सुख, वाहु-पीड़ा। सिंह, कन्या, वृश्चिक, धनु राशिस्थ हो तो सुख-युक्त। किन्तु स्थितिवश कुछ उदासीनता वनी ही रहती है। शुभयुक्त होने से कण्ठ में चिन्ह। १२।१३ वें वर्ष में भाई का सुख होता है। चन्द्रयुक्त केतु में दो भाई का सुख, अन्य भाइयों की मृत्यु, ३६ वें वर्ष में भ्रातृकष्ट और लक्ष्मीवान् होता है।

(४) सुखस्थ होने से—मातृ-सुख-रहित, मित्र-विहीन या मित्र से दुःखी, पिता को क्लेशकर, भ्रातृ-रहित, चचल, वाचाल, कार्यहीन, निरुत्साही, कलह-प्रिय, विप द्वारा कष्ट। भाई रोगी तथा दुर्वल। सिंह-वृश्चिकस्थ केतु हो तो माता-पिता और मित्र से सुख, किन्तु चिर-काल तक नहीं। धनु राशिस्थ केतु में मिश्रित फल। पापयुक्त केतु मे माता को दुःख। शुभयुक्त-दृष्ट केतु में माता का सुख। ८ वें वर्ष में भाई की हानि सम्भव है।

(५) पुत्रस्थ होने से—कुवुद्धि, कुचाली, वातरोगी, विदेश-गामी, सुखी, वली, वन्धुजनों से प्रीति, वीर होकर भी दासवृत्ति, सन्तान कम, सन्तानों में सवसे वड़ी कन्या, विद्या या ज्ञान रहित, गिरने या किसी पदार्थ के आघात से उदर-पीडा। पापयुक्त हो तो माता को निश्चय कष्ट, शुभयुक्त-दृष्ट में माता का सुख। ५ वें वर्ष में वन्धु-हानि होती है।

(६) षष्ठस्थ होने से—वातविकार, झगड़ालू, भूतप्रेत जनित रोगों से रोगी, मितव्ययी, सुखी, अरिष्टनिवारक स्वस्थ या व्याधि-रहित, पशु-सुख, धनी, जातिवर्ग में मुखिया, वाचाल, स्त्री-प्रिय, शत्रुनाशक, मातृपक्ष (ननिहाल) से अपमान। चन्द्रयुक्त हो तो राजपत्नी से सयोग, धनहीन, चोर-वृत्ति। २१।३७ वें वर्ष में कलह और शत्रुभय होता है।

(७) दारस्थ होने से—मतिमन्द, मूर्ख, शत्रुभीरु, सुखहीन, शत्रुद्वारा धन-नाश, स्त्री को पीड़ा, नीच या विधवा या क्रोधिनी स्त्री से संग, जलभय, गुप्त रूप से पापाचारी, भ्रमणशील। वृश्चिकस्थ में लाभ।

स्त्री-चिन्ता, व्याकुलता द्विभार्या योग पहिली स्त्री की मृत्यु के बाद दूसरी स्त्री को गुल्मरोग। पापयुक्त हो तो स्त्री को गण्डमाला रोग। शुभयुक्तसे मात्र एक ही स्त्री। ३७ वें वर्ष में स्त्री को कष्ट। मूत्राशय रोग। वीर्यनाश से क्षीण शरीर होना सम्भव है।

(८) रन्ध्रस्थ होने से—दुर्बुद्धि तेजहीन कुप्रसंगति, स्त्रीद्वेषी चालाक गुदारोग नेत्ररोग वाहन-भय, धर्मनाश अकारण लोगों का घृणा-पात्र स्त्री-पुत्रादि को रोग पीड़ा, १।२।३।६।८।६ राशिस्थ केतु हो तो धनलाभ। शुभयुक्त हो तो २५ वें वर्ष में अरिष्ट। रन्ध्रेश स्वस्थ या बलीग्रह-युक्त हो तो ६० वर्ष की आयु होती है।

(६) नवमस्थ होने से—सुखाभिलाषी व्यर्थ परिश्रमी अपयशी, बाल्यावस्था में पिता का कष्ट समाज से उपहास दानादि शुभ-क्रिया से हीन, धर्मभ्रष्ट, पुत्र तथा भ्रातृ चिन्ता युक्त, वायुरोग किन्तु ज्वरादि-रहित (साधारण कष्ट) अच्छी मस्तिष्क-शक्ति, म्लेच्छ द्वारा भाग्य-वृद्धि, ११।२६ वें वर्ष में पिता का क्लेश होता है।

(१०) कर्मस्थ होने से—पितृद्वेषी दुर्भागी मूर्ख व्यर्थ परिश्रमी, अभिमानी परस्त्रीगामी स्वाधकमयुक्त, माता को कष्ट नेत्ररोग, राजकोप कफप्रकृति वायुविकार, वाहन कष्ट शत्रु पर विजयी गुदारोग पिता के सुख का अभाव। कन्यास्थ केतु में अधिक कष्ट शुभाशुभ फल युक्त। पिता के दुःख तथा दुर्भाग्य का कारक। १।२।८ राशिस्थ केतु से शत्रुनाश आशायें पूर्ण सुखी ईश्वर-भक्त। शुभयुक्त होने से सुन्दर स्थान में वास तथा काव्य में रुचि ५४ वें वर्ष में शस्त्र या शत्रु से भय होता है।

(११) आयस्थ होने से—बुद्धिहीन निज की हानि करने वाला वातरोगी अरिष्टनाशक, मधुरभाषी विद्वान् दर्शनीय रूपवान् भोगी, तेजस्वी उत्तम वस्त्रादि सुख धन-धान्य-सम्पन्न, पुत्रसुख-रहित, बुरे कुटुम्ब वाला और गुदा-रोग होता है। प्रायः ४५ वें वर्ष में धन-पुत्रादि का अतुल सुख होता है।

(१२) व्ययस्थ होने से—खर्चीला स्वभाव, चिन्ता-युक्त, सनकी परदेशवासी शत्रु पर विजयी पैर नेत्र, बस्ति-भाग और गुदा म रोग। मोक्षाधिकारी। ५५ वें वर्ष में स्त्री को पीड़ा होती है। चंचलबुद्धि, धूर्त ठग अविश्वासी तथा भूत-प्रेत आदि द्वारा जनता को ठगने वाला होता है।

नोट—

पूर्वोक्त ग्रह-फल प्रायः ठीक घटित होते हैं। किन्तु कभी-कभी ग्रहों पर दृष्टि तथा भावेश के तारतम्यानुसार कुछ परिवर्तित होकर फल घटित हो जाते हैं। ये फल ज्योतिष-विद्वानों ने अन्तर्दृष्टि द्वारा तात्त्विक गुण द्वारा तथा उपमान न्याय द्वारा तीन प्रकार से निर्धारित किये हैं। यदि संसार के प्रत्येक ज्योतिष-मर्मज्ञ अपनी-अपनी कुण्डली का प्रमाणित फल लिखकर एकत्र करें तो विशेष विकसित फलों का अनुसन्धान हो सकता है।

संसार के ज्योतिषी सूर्य, चन्द्र मंगल बुध गुरु शुक्र और शनि से प्रभावान्वित हैं। जिसमें सूर्य-मंगल वाले ज्योतिषी गणितज्ञ एवं शेष वाले फलितज्ञ होते हैं। बुध वाले गणित-फलित (दोनों) के वेत्ता होते हैं। शनि वाले ज्योतिषी प्रायः पोंगापंथी तथा बुध वाले फलितज्ञ ज्योतिषी अत्यन्त चालाक होते हैं। चूँकि शनि का सम्बन्ध मन्त्रशास्त्र से है अतएव शनि वाले ज्योतिषी, अन्तर्दृष्टि से मन्त्रसाधक तथा बाह्यदृष्टि से ज्योतिषी बनते हैं। जहाँ तक अपराधी जीवन का सम्बन्ध है वहाँ शनि-बुध का ही विशेष प्रभाव रहता है। शनि वाले ज्योतिषी प्रायः गणितज्ञ नहीं हो पाते। वे केवल मुहूर्तकालिक फलित के अपूर्ण ज्ञाता हो सकते हैं। चक्र १० में सूर्य का मुख्य प्रभाव फिर मंगल-बुध-गुरु-शुक्र का न्यूनाधिक प्रभाव है। दशमेश (मंगल), बुध के नवांश में है। यह बुध सूर्य से तेज पा रहा है।

द्वादश-राशिस्थ-ग्रह-फल

[सूर्य-राशि-फल]

(१) मेषस्थ सूर्य—मंगलवत् प्रभाव से पूर्ण। धनवान्, विद्वान्, सेनापति, भाग्यवान्, नेता, दुबला-पतला, चौड़ा कन्धा, पीत नेत्र, श्रम से अस्वस्थता, किसी भी बीमारी के पूर्व शिरोरोग, रक्त-दोष, कब्जियत। तर भोजन आवश्यक। शुक्ल तथा रक्त वर्ण की वस्तुएं शुभ। प्रवाल धारण शुभ। स्वामी भौम। मंगलवार शुभ। शुक्रवार अशुभ। २।३।१७।१८ वें वर्ष में जलभय ७।१६।१७ वें वर्ष में अन्य रोग। ५० वें वर्ष में चोर से कष्ट। अंक ३ शुभ। अपने विचार के पुरुष से मित्रता, सत्यप्रिय होने से—असत्य-भाषी मित्र का परित्याग करने वाले, शत्रु-संख्या से मित्र संख्या अधिक, शिल्प या कृषि व्यापार। कभी नटखट-स्वभाव, अतएव सर्वदा किसी उचित कार्य में व्यस्त रहने में कल्याण। डर-धमकी से प्रतिकूल परिणाम दिखाने वाले। धार्मिक, अभिमानी, धन-लाभ, महत्त्वाकांक्षी, कुटुम्बीय-सुख, साहसी, प्रसिद्ध, चतुर, बुद्धिमान्, भ्रमण-शील, अल्पधनी, शस्त्रास्त्रधारी, भूमिपति (सद्गृहस्थ), रक्त या पित्त विकार से रोग। परमोच्च होने से बहुधनी उत्तमोत्तम फल। गम्भीर, आत्मबली, स्वाभिमानी, प्रतापी, चतुर, युद्धप्रिय, साहसी, शूर-वीर और उदार होता है।

(२) वृषस्थ सूर्य—शुक्रवत् प्रभाव से पूर्ण। दृढप्रतिज्ञ (हठीले), सन्तोषी, श्रमिक-स्वभाव, सेवा-भाव, गले तथा हृदय के रोगी। हल्का भोजन हितकर। पाचन-क्रिया का विगाड़। किसी भी बीमारी के पूर्व कण्ठ-पीड़ा, ३ रे वर्ष में अग्निभय, ६।१० वें वर्ष में ऊंचे से गिरना, १६ वे वर्ष में सर्पभय, २५ वें वर्ष में जलभय, ३०।३३।४६।५२।५३ वर्ष में अन्य रोग। नवीन विचारकों से मैत्री। मित्रों पर शासन के इच्छुक, किन्तु इससे शत्रु-संख्या में वृद्धि। व्यर्थ वाचाल या गुप्तचर कार्य करने वालों से विरोध। मित्रों पर प्रेम। उदर-पोषण-मात्र का व्यापारी। धन का संचय करना उपेक्ष्य। स्वामी शुक्र। शुक्रवार शुभ। मंगलवार अशुभ। अंक ६ शुभ। संगीत, साहसी कार्य, सरकारी नौकरी से लाभ। यदि स्त्री हो तो एक धाय या नर्तकी। प्रेम में सर्वस्व खो बैठना। हीरा या सुवर्ण धारण शुभ। स्त्री या संतति का कष्ट, स्थावरवस्तु-कष्ट, घरू चिन्ता, वस्त्र का उत्तम सुख, शय्यादि-सुख-सम्पन्न, पशु सुख, योग्य कर्मचारी, जलभय, सुगंध-पदार्थ का व्यापारी, स्त्रियों से शत्रुता, स्त्रियों से अनादर पाने वाला, स्वाभिमानी व्यवहार-कुशल, शान्त पापभीरु और मुख-रोगी होता है।

(३) मिथुनस्थ सूर्य—बुधवत् प्रभाव से पूर्ण। मिश्रित (गर्म-नर्म) स्वभाव। अस्थिर विचार। कई उद्योग या व्यापार। सुगमता से कार्य पटु। वक्ता। एकाग्रचित्त होना, हितकर। स्मरण-शक्ति-तीव्र। साहित्यिक ज्ञानोपार्जन से आसक्ति। शिल्प कला। निर्बल शरीर। तीव्र दृष्टि, नेत्र, कृष्ण-पीत। विचार-ग्रस्त। हृदय-रोग। अनेक उलझनों से चिन्तित। कभी अधीर। तीक्ष्ण पदार्थ हानिकर। सफेद-लाल-रंग शुभ। कमल-पुष्प शुभ। स्वामी बुध। बुधवार शुभ। गुरुवार अशुभ। अंक ४ शुभ। ५।६।१०।११।१४।१८।२०।२८।४६।५३ वें वर्ष में अशुभ फल। दूसरे को शीघ्र मोहित करना, मित्र अधिक, स्नेही, दयालु, परोपकारी। अपनी चापलूसी कराना पसन्द। किसी एक विषय पर अधिक वाद-विवाद करना। मित्रों पर आघात। मित्रों पर अधिक विश्वास करना, हानिकर है। मित्र द्वारा विश्वास-घात। सामाजिक तथा साहित्यिक कार्यों में सफलता। अचानक लाभ। विवाह द्वारा लाभ। रुई व्यापार में लाभ। सट्टे द्वारा हानि। घरू कलह। फुर्तीले या चतुर। एकाग्र होने पर नई खोज। कार्य को अधूरा छोड़ने की बुरी आदत, जिसे पूरा करने की आदत डालिए। साहित्य-प्रेमी, प्राचीन संस्कृति में श्रद्धा, धनसुख, यश, विद्वान्, गणितज्ञ, धनी, विख्यात, नीति-युक्त, विनयी, शीलवान, अद्भुत वाणी बोलने वाला, धन तथा विद्या उपार्जन में निमग्न रहता है। विवेकी, बुद्धिमान, मधुर-भाषी, नम्र, प्रेमी, धनी, ज्योतिषी-प्रेमी, इतिहास-प्रेमी और उदार होता है।

(४) कर्कस्थ सूर्य—चन्द्रवत् प्रभाव से पूर्ण। आपकी बात काटने से हृदय पर भारी आघात। स्मरण-शक्ति तीव्र जिससे बचपन की भी बातों को याद रख सकेंगे। किसी बात को एक बार समझ जाने पर भूल नहीं करते। अस्वस्थ। चिन्ता-त्याग हितकर। पाचन-शक्ति की कमजोरी। उदर-रोग। बाग में घूमना हितकर। प्राकृतिक-दृश्य देखना स्वास्थ्य के लिए अत्यन्त लाभदायक। धन-संग्रह की चिन्ता। जिससे अपचन रोग। हरा बैंगनी रंग शुभ। अंक २ शुभ। ७।११।१२।१८।२०। ३१।३२।४५।५२ में वर्ष में अशुभ फल। स्वामी चन्द्र। सोमवार शुभ। शनिवार मध्यम। शुक्रवार अशुभ। मित्रों के साथ आपके भाव अस्थिर। स्वार्थी स्वभाव। मित्रों से हानि। पुस्तक-लेखक। दत्त-चित्त होकर कार्यकर्ता। आपत्ति आने पर भी कार्य करते रहना—एक मात्र लक्ष्य। चाहे अन्तिम फल हानिकारक ही क्यों न हो। सामाजिक कार्य से लाभ। मैनेजर, कप्तान आदि उच्च पदस्थ। कर्क वृत्त पर व्यापार हितकर। अस्थिर विचार आप स्वाभिमानी कठोर अन्तर्यामी दयालु उदार कल्पनाशील। दाह क्रिया और वृद्ध-सहवास अहितकर। अत्यधिक मोह करना आपकी उन्नति में बाधक है। मित्रों से विरोध अधिकारियों की कृपा क्रोध अधिक, स्त्री-चिन्ता क्रूर या तीक्ष्ण स्वभाव दरिद्र परकार्यकर्ता (परतन्त्र या नौकर) खेद युक्त यात्रा अधिक, पिता की आज्ञा को उल्लंघन करने वाले होते हैं कीर्तिमान् लब्ध-प्रतिष्ठ, कार्यपरायण चंचल साम्यवादी परोपकारी इतिहासज्ञ और कफ-रोगी होते हैं।

(५) सिंहस्थ सूर्य—सूर्यवत् प्रभाव से पूर्ण। धनी पूज्य, लब्धप्रतिष्ठ, सुन्दर व्यभिचारी, कामी, ऐश्वर्यवान् उच्च विचार तृष्णायुक्त दृढ़ प्रतिज्ञ, शीघ्र-निर्णायक, दयावान् शूर-वीर। धार्मिक, विश्वासात्मक बुद्धि, स्वस्थता किन्तु कभी हृदयरोग खाँसी का भय। अग्निभय। विश्राम आवश्यक। उष्णपदार्थ हानिकर। रक्त-शोधक पदार्थ हितकर। लाल, हरा रंग शुभ। हीरा कस्तूरी, माणिक्य धारण शुभ। स्वामी सूर्य। रविवार शुभ। शुक्रवार अशुभ। अंक एक शुभ। मित्र अधिक—किन्तु सच्चे कम। मित्रों से हृदय की गुप्त बात मत बताइये; अन्यथा हानि ही होगी। कभी-कभी जल्दबाजी में काम करके पछताना। बिना सोचे-समझे, कभी शीघ्रता से 'हस्ताक्षर' न कीजिए। द्रव्य अधिक मिलेगा; परन्तु उदारता के कारण संचित न रह सकेगा। खर्चीला स्वभाव। कभी अचानक द्रव्य-लाभ। लाटरी आदि द्यूत विचारों पर मत दीजिए। किसी कम्पनी के संचालक, मैनेजर, डॉक्टर, फौजी ऑफिसर जालिम जगहों में काम करना पसन्द। अधिकप्रेमी (कामुक)। शान्त वातावरण में अधिक उच्च-विचार। प्रेमपूर्ण-मिलनसार। आत्मविश्वास ही आपका सहायक। शासक-बुद्धि किन्तु स्वयं आज्ञा न मानने वाले। बहुधा आराम-प्रिय। कभी आलसी सुस्त। आप पर विजय करने के लिए प्रेम और दया आवश्यक है। सफलता प्रभावपूर्ण साहसी राजसम्मान, द्रव्यलाभ चतुर, कला-कुशल स्थिरबुद्धि, परोपकारी सामर्थ्यवान् यशस्वी। वन पर्वतादि स्थल में रहस्यता तथा अभिरुचि रहेगी। योगाभ्यासी सत्संगी पुरुषार्थी धैर्यशाली तेजस्वी, उत्साही गम्भीर और क्रोधी होता है।

(६) कन्यास्थ सूर्य—बुधवत् प्रभाव से पूर्ण। प्रत्येक काम में नुक्ता-चीनी (व्यंग-निरीक्षण) करने वाले यहाँ तक कि स्वयं अपने ही कार्य से असन्तोष। सावधानी से कार्य करने की प्रवृत्ति। व्यवसाय में उन्नति। आप चाहें तो ब्रह्मचारी भी रह सकते हैं। मादक-पदार्थ हानिकर। एकान्त-वास-प्रिय। प्राकृतिक दृश्य-दर्शन हितकर। सादा भोजन और शुद्ध-वायु-स्थल में निवास आपकी युवावस्था को चिर-स्थिर रख सकता है। संगीतप्रेमी। नीला, काला सुनहला रंग शुभ। अंक ४ शुभ। बुधवार शुभ। गुरुवार अशुभ। ३।५।८।१३।१४।२६।३२।३३।४२।५१ वें वर्ष में अशुभफल। मित्रों पर अत्यधिक विश्वास और एकाएक किसी अल-पत्र (वहटोर आदि) पर हस्ताक्षर करना—कामों अहितकारी है। कम-दम

वाणिज्य, बैंक, एजेण्ट, क्रय-विक्रय (आढ़त), फोटोग्राफी (चित्र), शिल्प या साहित्य लाभकारक। स्वामी बुध। किसी पत्र-पत्रिका के सम्पादक। शिक्षा से अधिक आप, अनुभव-शील। रूपवती स्त्री से विशेष सुख। किन्तु आप, तर्क (विवाद) प्रिय, अतएव व्यापार-कार्य अहितकर। बीमारी में मुक्त-वायु सेवन तथा एकान्त-वास श्रेयस्कर रहेगा। सत्कर्मी, देवभक्त, द्रव्य-लाभ, स्त्री-सुख, यश, हर्ष यात्रा अधिक। चित्रकारी, काव्य, गणित और लिखाई-पढाई के काम में कुशल (चतुर), मृदु-भाषी, राजद्वार से धनी या लाभयुक्त। धनोपार्जन मे निमग्न। किसी मात्रा मे मातावत् या किसी स्त्री की आकृतिवत्, रूपवान् होता है। मन्दाग्निरोगी, शक्तिहीन, लेखन-कुशल, दुर्बल और वकवादी होता है।

(७) तुलास्थ सूर्य—शुक्रवत् प्रभाव से पूर्ण। स्वामी शुक्र। देशभक्त, अन्वेषक, निष्पक्षपाती, उत्तम दयालु, (दुख में भी सहायक)। अनुभव-शक्ति श्रेष्ठ। स्वास्थ्य साधारण अच्छा। शीत तथा उच्चस्थान (पर्वतादि) हानिकर। गुलाबी, नीला रंग शुभ। हीरा धारण शुभ। दूधिया पत्थर, कवच के समान लाभदायक। शुक्रवार शुभ, रविवार अशुभ। अंक ६ शुभ। २।४।७।८।१२।१६।२०।२१।३३।४१।५१ वें वर्ष में अशुभफल। अनेक व्यक्तियों से मित्रता। धनी या पठित व्यक्तियों से मेल जोल, सम्मान-प्राप्ति। किन्तु स्वभाव जाँचकर मित्रता के इच्छुक। दयालु-स्वभाव होने के कारण, अनजान मनुष्य से भी मित्रता। मित्र, आपको, बहुधा झुकायेंगे। किसी भी मित्र के साथ, सख्ती (कठोरता) का व्यवहार मत कीजिए, अन्यथा शत्रु-संख्या की वृद्धि। व्यापार, शिक्षा, शिल्प, संगीत, साहित्य-कार्य लाभप्रद। द्रव्य-खर्च अधिक। संचय में कठिनता। किसी काम को दूसरे दिन के लिए टालने की बुरी आदत। आप, कर्ज-सम्बन्ध में सर्वदा सचेत रहिए, क्योंकि आप, एक भुलक्कड़ जीव हैं, साथ ही, मित्रगण, इसी (धनादि) के द्वारा दुख के कारण बन जायँगे। तीव्र-स्वभाव या मनमानी करने वाले। अभिभावकों के ध्यान न देने पर, आपके, कपट-युक्त हो जाने की सम्भावना है। चोर या अग्निभय, स्त्री या धन का कष्ट, स्त्री द्वारा या स्त्रीकारण से अपमान, मृत्यु-भय। यह सूर्य, नीचस्थ होने से साहसी, किन्तु राज-कोप-भाजन, विरोधी, पापकर्मा, कलह-प्रवीण, पर-कार्य-कर्ता, धन-हीन, कभी-कभी मद्य-पान-कर्ता, मद्य-निर्माता, स्वर्णकार, मार्ग चलने वाला (यात्रिक) होता है। किन्तु उच्च नवांश में होने से शुभ-फल होते हैं। आत्मबलहीन, मन्दाग्निरोगी, परदेशाभिलाषी व्यभिचारी और मलिन होता है।

(८) वृश्चिकस्थ सूर्य—भौमवत् प्रभाव से पूर्ण। भौम स्वामी। भय और दुख के समय में भी, आप अधीर नहीं होते एवं उनसे छुटकारा पाने का उपाय सोचते हैं। शीतलता, स्वस्थताकारक। किन्तु जलभय का ध्यान रखे। मंगल, गुरुवार शुभ। अंक ३ शुभ। शुक्रवार अशुभ। १।१३।१५।२५।३५।४५ वें वर्ष में अशुभ फल। मित्र एवं शत्रु की समान-संख्या। अधिकतर चापलूस मित्रों का सहवास; इनसे गुप्त-बात छिपाते रहिए। अभिमानी। उत्तरार्ध जीवन मे सफलता। उचित तथा पर्याप्त व्यापार के पूर्व, आप कई धंधे करेंगे। खानदानी जायदाद की प्राप्ति, किन्तु अदालती आदि झगड़ों के बाद। यात्राएँ अधिक। सामाजिक कार्य, डाक्टर, इञ्जीनियर, शिक्षाकार्य लाभप्रद। दूसरे से कही बात का विश्वास न करके, विचार के बाद, विश्वास कीजिए। गर्म स्वभाव। दृढ़-प्रतिज्ञ। गहरे पानी में नहाना अहितकर। प्रेम द्वारा आप पर विजय पायी जा सकती है। विषैली वस्तु से हानि, अग्निभय, शस्त्र-भय, अपमान, आदरणीय, परन्तु कलह-प्रिय, कृपण, क्रोधी, माता-पिता का विरोधी, साहसी, क्रूर, धनलाभ में व्यस्त, शस्त्रास्त्र प्रयोजक, विषवस्तु-व्यापार से लाभ होता है। गुप्त उद्योगी, उदररोगी, लोकमान्य, क्रोधी, साहसी, लोभी और चिकित्सक होते हैं।

(९) धनुस्थ सूर्य—गुरुवत् प्रभाव से पूर्ण। गुरु-स्वामी। मौका पाते ही सत्कार्य में न चूकिए। व्यापार में लाभ। प्रत्येक कार्य में सफलता। दूरदर्शी किन्तु क्रोधी। तीव्र शब्दोच्चारण से हानि-सम्भव।

स्वस्थता। फेफड़े के रोग में—प्रातः पर्यटन साधारण व्यायाम (प्राणायाम योगासन), ऊँचे स्थान पर निवास—लाभदायक। मंद—धनु संक्रांति के समय में ग्राम स्वस्थ। सोमवार गुरुवार रविवार शुभ। शुक्रवार अशुभ। अंक ४ शुभ। दूसरे के कहने की अपेक्षा—स्वयं विचार कर कार्य करना हितकर। सूर्य-प्रकाश लाभप्रद। पीतवर्ण और सुवर्णधारण शुभ। ४।११।१६।२४।६।४०।४० में वर्ष में अशुभ-फल। मित्र अधिक और वे आप पर विश्वास करेंगे। असत्य व्यवहार से शत्रुता। अन्याय-विरोधी। दूसरे की इच्छाओं को समझने की सुगमता। मित्रों के लिए आप स्वयं आपत्ति सहने को तैयार। आप बड़े आशावादी। शुभ या तीर्थ की यात्रा अधिक। माता-पिता के भक्त। धन के लेन-देन की अधिकता के स्थान पर कार्यच्युक, (बैंकर रोकड़िया खजांची) अधिकारियों के के दबाव से रहित धार्मिक विचार फौजी ऑफिसर चित्रकार शिक्षा-कार्य लाभ-प्रद। भविष्य के लिए अच्छे-अच्छे मसौदे (प्लान्स) तैयार करना या शक्तिमान्। आत्माभिमानी। दबाव पड़ने से लड़ाकू प्रवृत्ति। दयालु स्वभाव। आपको मनमानी करने में सभी का सहायता देना चाहिए—इससे आपकी उन्नति होगी। *फलतः द्रव्यलाभ सम्मान कुटुम्बीय सुख, आनन्द यश, अति* बुद्धिमान् धनी संतोषी तीक्ष्ण स्वभाव मित्रों का हित करने वाले सज्जना से पूजित शिल्पज्ञ या साधारण पथिक होता है। राजा द्वारा भी धन-लाभ सम्भव है। बुद्धिमान् योग्याभासी विवेकी धनी आस्तिक, व्यवहार-कुशल, दयालु और शान्त होता है।

(१०) मकरस्थ सूय—शनिवत् प्रभाव से पूर्ण। शनि स्वामी। किसी भी बात पर बहुत अधिक चिन्ता करने से बीमारी का भय। *शान्ति और धैर्य के द्वारा रोग-नाश। हलका भोजन हितकर।* शनिवार शुभ। रविवार अशुभ। काला रंग शुभ। अंक ७ शुभ। ७।१०।१२।२०।२४।३१।४२।४८ में वर्ष में अशुभ फल। मधुर-भाषी। सामाजिक नेता। अल्प भाषण हितकर। स्वतन्त्रता-प्रिय। आलसी। राजदूत। फौजी ऑफिसर। साहसी तथा धैर्यवान् होना हितकर। दुर्बल। कष्टशील। प्रेम-पूर्वक वर्ताव एवं उचित-साधारण दबाव पाने से आपकी उन्नति होगी। असफलता, दुःख अपमान बदिमलता जनक-चिंता भय। क्रिया-कुशल श्रमशील उत्साह-उत्सव रहित नीच कर्मरत निन्दित अल्प धनी कुटुम्बियों से विरोध व्यापार या पराक्रम भाग्य वाला होता है। चंचल झगड़ालू, बहुभाषी दुराचारी तथा लोभी होता है।

(११) कुम्भस्थ सूय—शनिवत् प्रभाव से पूर्ण। शनि स्वामी। किसी भी विषय पर अधिक चिन्ताशील। उदासीनता ब्रह्मचर्य साधन की योग्यता। स्वास्थ्य साधारण ठीक। शीत हानिकर। साहित्यिक तथा सर्वदा नव विचारों पर मनन करने से स्वास्थ्य ठीक। नेत्र रोग। ४।१।१८।२८।३२।४।४० में वर्ष में अशुभ फल। शनिवार-बुधवार शुभ। सोमवार अशुभ। नीला रंग शुभ। अंक ८ शुभ। धनवान मनुष्य से आपकी मित्रता शीघ्र होगी। सामाजिक जीवन सुखमय। शत्रु से मित्र संख्या अधिक, किन्तु स्वार्थी मित्र अधिक। आप सत्य-प्रिय होंगे; किन्तु कटु-सत्य से बचिए अन्यथा मित्र भी शत्रु हो जायेंगे। संगीत शिल्प, साहित्य क्षेत्र, संघ-संचालन आदि कार्य लाभप्रद। समाज की पुरानी रूढ़ियों के विरोधक। मित्रों पर विचार के बाद विश्वास करें। एकान्त होना सुखकर। चतुरता-युक्त। आपके प्रति दया करने से आपकी उन्नति तथा सुखकारक। साधारण व्यायाम करना आवश्यक है, प्रसन्न-चित्त हृदय रोग सम्भव। धन की सञ्चय से नाश अपयश। पुत्र-मौत्रादि के लिए लालायित। दया-रहित। नीच कर्म निरत। शठ और मलिन-वेषी होता है। स्थिरचित्त कार्यरत क्रोधी तथा स्वार्थी होते हैं।

(१२) मीनस्थ सूर्य—गुरुवत् प्रभाव से पूर्ण। कृषि या व्यापार से धनोपार्जन, उन्नति-युक्त। स्वजनों से सुख पुत्र, भाग्य तथा धन से रहित। जलज वस्तु के व्यापार से लाभ। रक्तदोष। पित्तादिविकार से शरीर-कष्ट। लाभ

में बाधाएँ । गुरुस्वामी । गम्भीर । आपके विचारों का पता—दूसरों को नहीं लग पाता। कभी अधीर । निर्दय बर्ताव असह्य । पशुओं पर दयालु । सामाजिक कार्य में रुचि । धार्मिक-विचार, शान्त, उत्साही, निराशा से अस्वस्थता । प्रसन्न-मूर्ति वालों की मित्रता हितकर । रक्त शोधक पदार्थ हितकर । गुरुवार शुभ । बुधवार अशुभ । सफेद रंग शुभ । अंक ६ शुभ । ५ वें वर्ष में जलभय, ८ वें वर्ष में ज्वर, १८।२२।३३।४२।५१।५६ वें वर्ष में अशुभ फल । गहरे जल से दूर रहिए । शत्रु और मित्र संख्या समान । मित्रों पर विश्वास—किन्तु इनके कथनानुसार चलने में भय । नृत्य कला प्रिय । प्रशसा कराना प्रिय । धैर्यवान् । यन्त्र-विभाग, साहित्यिक कार्य, लाभ-प्रद । कभी हठीले । स्वतन्त्रता से कार्य करने में सफलता मिलती है । ज्ञानी, विवेकी, योगी, प्रेमी, बुद्धिमान्, यशस्वी, व्यापारी और ससुरालय से धन-लाभ होता है ।

[चन्द्र-राशि-फल]

(१) मेषस्थ चन्द्र—धनी, सन्तान सुख, तेजस्वी, परोपकारी, उत्तम कार्यासक्त, सुशील, राजप्रिय, गुणवान्, देव-गुरु-भक्त, उष्ण भोजी, अल्पाहारी, सेवक-प्रिय, जल-भीरु, चपल, कार्यारम्भ-प्रलापी, परदेशवासी, कृश शरीर, किंतु दृढशरीर, शीघ्रगामी, मानी, कठोर-चित्त, शुभकार्य में व्यय-कर्ता, यात्रा अधिक, कार्यारम्भ में घबडाने वाला, चंचल-धनी (कभी धनी, कभी निर्धन), कोई स्थिर सम्पत्ति-वान्, स्वोपार्जित कीर्तिमान, कभी चिडचिडा स्वभाव, शूर या उतावला, कुत्सित नख, शिर में व्रण, जल भय, उच्च स्थान से पतन, अच्छा स्वास्थ्य, ताम्रवर्णी नेत्र, वात रोग की आधिक्यता, द्विभार्या योग, अजीर्ण तथा उदर रोग, स्त्री के वशीभूत, मातृसुख-रहित, मातृ-व्यवहार आप पर निर्दय, कार्य-निपटाव में प्रधान, युद्ध विभाग या अन्य स्वतंत्र-व्यवसाय से उन्नति, अनेक मनुष्यों पर अधिकार या अपने व्यवसाय में उत्तम, मेष—कर्क-सिंह-वृश्चिक-धन-मीन राशि वाले मनुष्यों से मित्रता या व्यवहार सुखकर, प्राय स्वतंत्र व्यवसाय हितकर है । यशस्वी जीवन विशेष होता है ।

१।६।११ (नन्दा) तिथि, ३।६।८।१२।१४।१५ दिन-महीना-वर्ष में अशुभफल, १।७।८।१३ वें वर्ष में ज्वर । १६।१७ वें वर्ष में विषूचिका रोग । ३।१२ वें वर्ष में जलभय । २५ वें वर्ष से सन्तानोत्पत्ति या रतौंधी, नेत्र-ज्योति कम । ३२ वें वर्ष मे रोग या शस्त्र या शत्रुभय । रवि, सोम, गुरु, मगलवार शुभ, शेष वार अशुभ । नवीन चन्द्र दर्शन के बाद, लाल-वस्तु का दर्शन शुभकर होता है ।

(२) वृषस्थ चन्द्र—अल्प तेजस्वी, आलसी, श्रेष्ठकर्मत्यागी, प्रसन्नचित्त, कामी, दानी, सत्यवादी, धनी, आयुष्मान्, परोपकारी, माता-पिता और गुरु का भक्त, माननीय, मिष्टान्नभोजी, विलासी, अलकार-प्रिय, चतुर, चपल, राज-प्रिय, सभा-चतुर, सन्तोषी, शान्त-चित्त, वीर, बुद्धिमान्, सुशील, उत्तम वस्त्र और भोजन सम्पन्न, स्वकार्य में दृढ, परन्तु कभी-कभी कार्य मे उद्विग्न-चित्त, प्राचीन-सस्थाओं का अनुशीलक, मित्र-सम्पन्न, उदार, स्वजनों से दूर रहनेवाला, कुशल, देखने में सुन्दर, क्लेश-सहन-शील, दृढ-शरीर, नेत्र-रोगी, शीत एव अजीर्ण रोग से दुःखी, न्यायालय में दोषी ठहराया जाने वाला, पशुओं से डरने वाला, अधिक कफ प्रकृति, कफरोग, स्त्री-आज्ञाकारी एव कामी, दो या तीन स्त्रियों से सम्बन्ध, कन्या सन्तति अधिक, चित्रकला तथा सगीत-प्रिय, अकस्मात् धन-लाभ का सुयोग, सुखमय एवं अधिकार-पूर्ण जीवन, धन-गृह-भूमि आदि की प्राप्ति करने मे समर्थ, बाल्यावस्था में दुःखी, मध्य तथा वृद्धावस्था में सुखी होता है । स्त्री-पुत्र सुख, सवारी सुख और उत्कर्षमय होता है ।

४।६।१४ (रिक्ता) तिथि, १।१६।५५ दिन-मास-वर्ष में अशुभ-फल । प्रथम वर्ष मे रोग । तीसरे वर्ष में अग्निभय । ७ वें वर्ष में विसूचिकारोग । ६ वें वर्ष में व्यथा । १० वें वर्ष में रक्त-विकार । १२ वें वर्ष में वृक्ष या उच्चस्थान से पतन । १६ वें वर्ष में सर्पभय । १६ वें

वर्ष में रोग। २५ वें वर्ष में जलभय। ३० वें या ३२ वें वर्ष में कफरोग होता है। वृष-मिथुन-कन्या-मकर-कुम्भ राशि वाले मनुष्यों से मित्रता या व्यवहार सुखकर। बुध-शुक्र-शनि वार शुभ, शेष वार अशुभ। नवीन चन्द्र दर्शन के बाद, सफेद वस्तु का दर्शन हितकर है।

(३) मिथुनस्थ चन्द्र—ग्रामीण (साधारण) स्त्रियों में चतुर परदेश की इच्छा सुख सत्कार्यकर्ता, मातृ पितृभक्त यशस्वी विद्वान् दृढ़-मित्र, *मिष्टान्न-प्रेमी सुशील अल्पभाषी कुटुम्ब-पालक,* कौतुक-प्रेमी (जादूगरी में रुचि) रति-प्रिय गुणी बुद्धिमान् मर्मज्ञ भोगी दानी सद्धर्म-परायण, शान्त-चित्त मिष्ट भाषी कभी मिश्रित स्वभाव (क्रोधी या शांत), कुशाग्रबुद्धि, पुस्तक-प्रेमी मानसिक तथा शारीरिक कार्य में तत्पर विचक्षण यात्रा-प्रिय (*भ्रमण-शील*), कभी-कभी दृढ़-प्रतिज्ञ सब प्रिय गौरव-युक्त, दूत कार्य कर्ता हास्य और जुओं आदि का जानने वाला अधिक भोजन करने वाला (बहुभोजी) दृढ़-काय रूपवान हास्य-प्रिय नाक ऊंची बाल सुन्दर आँखें गुलाबी शरीर में *तिल या लहसुन के चिन्ह, काम-शास्त्र में निपुण स्त्री-प्रिय दो विवाह तक सम्भव स्त्री का विशेष* इच्छुक किन्तु सन्तानोत्पत्ति कम प्राय भाग्यवान् कम ही धनहीन अकस्मात् किसी अपरिचित स्थान से धन-लाभ एक से अधिक व्यवसाय या व्यापार में परिवर्तन होता है। बाल्यावस्था *में अतिसुखी मध्यावस्था में अल्पसुखी वृद्धावस्था में अतिदुःखी और नेत्र-चिकित्सक होता है।*

२।७।१२ (भद्रा) तिथि ८।१।२८।४८।४४ में दिन-मास-वर्ष में अशुभ फल। ४ थे वर्ष में वृक्ष या ऊँचाई से पतन सोलहवें वर्ष में शत्रुभय अट्ठारहवें वर्ष में कफरोग २ वें वर्ष में शरीरकष्ट ३८ वें वर्ष में मृत्यु-भय। रवि बुध शुक्रवार शुभ। सोमवार अशुभ। नवीन चन्द्र-दर्शन के बाद हरी-वस्तु का दर्शन शुभकर होता है। *वृष-मिथुन-कन्या सिंह-तुला राशि वाले मनुष्यों से मित्रता या व्यवहार* हितकर है।

(४) कर्कस्थ चन्द्र—भूमि सवारी गृह, माता आदि का सुख नवीन योजना से लाभ शीतरोग सत्कार्य में व्यय। परोपकारी वस्तु-संग्रह-कर्ता, गुणी माता-पिता और साधुओं का भक्त, शास्त्र-कुशल सुगन्ध पदार्थ प्रिय जल-क्रीड़ा-प्रेमी शीघ्र-गामी सुमित्रवान प्रेम के वशीभूत, मित्रों का प्रिय वाटिका-प्रेमी दयालु कुटुम्ब या मित्र द्वारा परित्यक्त मिलनसार प्रेमी अधिकारी वामांग में अग्निभय शिरा व्यथा अग्नि या जल से भय या उच्च स्थान से पतन, राजकोप द्वारा पीड़ा मध्यदेश कद, पुष्ट-कपोल सुन्दर रूप कफप्रकृति स्त्री प्रेमी स्त्री के वशीभूत स्त्री पतिव्रता तथा पति पर प्रेमाधिक्य कभी-कभी स्त्री तथा बान्धवों की संख्या अधिक, कई सन्तान किन्तु योग्य-सन्तान एक ही, अपनी इच्छा के विरुद्ध किसी पर-स्त्री से संग, किन्तु इस क्रिया में भय अधिक या अपमान प्राप्ति, *स्वपुरुषार्थ* द्वारा वंशोन्नति न समझे, किसी व्यापार द्वारा उन्नति। आपका सर्व-सम्मति द्वारा काम करना लाभप्रद धन की ह्रासोन्नति चित्रकारी कविता संगीत आदि से प्रेम जलाशय के समीप निवास या जल-यात्रा का प्रेमी तरल पदार्थ का व्यापारी *गणित एवं ज्योतिष का प्रेमी होता है। धनी श्रेष्ठबुद्धि,* जलविहारी कामी कृपण तथा कोई उन्मादरोगी होता है।

७।८।१२ (भद्रा) तिथि ११।२।१३।११।४२।५१ में दिन-मास-वर्ष में अशुभ-फल। प्रथमवर्ष में रोग ३ रे वर्ष में [illegible] में पीड़ा, २१ वें वर्ष में सर्पभय ३७ वें वर्ष में रोगभय। रविवार सोमवार *बुधवार शुभ*। शेष वार मध्यम। ३।५।७।६ राशिवाले मनुष्यों से मित्रता या व्यवहार करने में उत्तम सुख। शेष राशिवाले मध्यम। नवीन-चन्द्र-दर्शन के बाद सफेद-वस्तु-दर्शन करना हितकर है।

(५) सिंहस्थ चन्द्र—शारीरकष्ट किन्तु दृढ़देही स्वरूप बड़ा द्रव्यलाभ, [illegible] स्थिति धन-धान्य से युक्त लक्ष्मीवान *विद्वान् सवक्ता विशाल अहंकारी, निष्ठुर सुशील कृपण सत्यवादी* विदेश-यात्रा-प्रिय संग्राम-प्रिय शत्रु-विजयी वन-पर्वतादि में भ्रमण-शील तीक्ष्ण-स्वभाव दानी,

पराक्रमी, स्थिरबुद्धि, व्यर्थ तथा बहुत समय तक क्रोधयुक्त, वाग्मी, उदार, मानी, हिंसक या माँस-प्रिय, मानसिक दुःखी, बुद्धिमान्, निष्कपट, मातृ-प्रेमी, वस्त्र-सुगंधादि में अभिरुचि, कला-प्रेमी, गान-चित्र में प्रेम, सर्वदा उच्चपद के लिए प्रयत्न-शील, बाल्यावस्था में दो माताओं के दुग्ध-पान का अवसर, पुष्टशरीर, रूपवान्, विशाल और पीले नेत्र, बड़ी ठोढ़ी, हँसमुख, पीठ पर तिल या मसा आदि के चिन्ह, उदर के वाम-भाग में वातरोग। शिर, दाँत, गला एवं उदर-रोग से पीड़ित, भूख-प्यास तथा मानसिक व्यथा से पीडित, स्त्रियों से शत्रुता या मतभेद, अल्प सन्तान, दो बार चोर द्वारा हानि तथा अग्निभय होता है। मातृभक्त, गम्भीर और दानी होता है।

३।८।१३ (जया) तिथि, ५।२०।३० वें दिन-मास-वर्ष में अशुभ-फल। प्रथम वर्ष मे पिशाच-बाधा, ५ वें वर्ष में अग्नि-भय, ७ वें वर्ष में ज्वर-भय एव विसूचिकारोग, २० वें वर्ष में सर्प-भय, २१ वें वर्ष में पीडा, २८ वें वर्ष में अपवाद, ३२ वें वर्ष में रोगादि से पीड़ा। रविवार, सोमवार, मंगलवार, गुरुवार शुभ। मेष-कर्क-सिंह-वृश्चिक-धनु-मीन राशिवाले व्यक्तियों से मित्रता तथा व्यवहार शुभकर होता है। नवीन-चन्द्र-दर्शन के बाद, गुलाबी-वस्तु-दर्शन शुभकर है।

(६) कन्यास्थ चन्द्र—कुटुम्ब और मित्र को आनन्ददायक, अनेक दास-युक्त, परदेशवासी, धनी, अनेक विद्या में चतुर, देव-विप्र-भक्त, प्रिय-भाषी, धार्मिक, सुशील, लज्जालु, सत्यवादी, शास्त्रज्ञ, बुद्धिमान्, विद्याध्ययन में संलग्न, किन्तु अनेक शत्रु-युक्त, उन्नत-शरीर, कुछ गौर वर्ण, गला, बाहु, पीठ और गुह्यांग में तिल आदि के चिन्ह, कफ-प्रकृति, उदररोग, कामुकता अधिक, स्त्री का अच्छा स्वभाव नहीं होता, पुत्र से कन्याओं की संख्या अधिक, मित्र बहुत तथा नृत्य द्वारा आनद पाने वाला, औषधि या भोजन पदार्थ का व्यवसाय लाभप्रद। नौकरी मे शिक्षा कार्य विशेष हितकर। पराई सम्पत्ति का भोगने वाला एवं अपने आधीनस्थ व्यक्तियों के द्वारा भाग्यशाली होता है। सुन्दर, मधुरभाषी, सदाचारी, धीर, विद्वान् और सुखी होता है।

२।७।१२ (भद्रा) तिथि अथवा ४।६ एव कृष्ण पक्ष की तृतीया तिथि, २।१२।२२।३२।४२ वें दिन-मास-वर्ष में अशुभफल। तीसरे वर्ष में अग्निभय, पाँचवें वर्ष में नेत्रपीडा, ६।१३ वें वर्ष में किसी पदार्थ या दरवाजा आदि गिरने से भय, १५ वें वर्ष मे सर्पभय, २१ वें वर्ष में वृक्ष अथवा दीवाल आदि से पतन, ३० वें वर्ष में शस्त्रास्त्र-भय। रविवार, बुधवार, शुक्रवार शुभ। नवीन चन्द्र देखने के बाद, हरी-वस्तु-दर्शन करना शुभ। २।३।५।६।७ राशिवाले व्यक्तियों से मित्रता तथा व्यवहार शुभकारक है।

(७) तुलास्थ चन्द्र—सर्व-मान्य, भोगी, धार्मिक, चतुर, बुद्धिमान्, कला-चतुर, राज-प्रिय, मिष्टान्न-भोजी, विप्र-देव-पितृ-पूजक, गुरु-भक्त, वस्तु-सग्रही, विद्वान्, धनी, अत्यन्त बोलने वाला, मित्र-युक्त, सगीत, कविता और युद्ध का प्रेमी, कृपालु, किन्तु कार्य-प्रबन्ध में बड़ा-कड़ा, सभा-सोसाइटी और कम्पनी इत्यादि में रुचि रखने वाला, अपने जीवन के प्रत्येक कार्य में किसी दूसरे पर भरोसा रखने वाला एव अन्य प्रभावाश्रित, लम्बा किन्तु कृश-शरीर, साथ ही बलवान्, उन्नत नासिका वाला, अगहीन, वायु-प्रकृति, शिर, उदर और चर्म-रोग सम्भव, जलभय, स्त्री के आधीन, बहु स्त्री भोगी अथवा दो विवाह, अल्प सन्तान, बन्धुओं से त्यक्त, कृषि या व्यापार द्वारा लाभ, किसी साझे के कार्य से सफलता मिलती है। उन्नतशरीर, आस्तिक, अन्नदाता, धनी, भूपति और परोपकारी होता है।

४।६।१४ (रिक्ता) तिथि, ६।१६।२६।३६।४६।५६ वें दिन-मास-वर्ष म अशुभ फल। प्रथम वर्ष में ज्वर, तीसरे वर्ष में अग्निभय, पाँचवें वर्ष में ज्वर-पीड़ा, १५ वें वर्ष में ज्वर-पीड़ा, २५ वें वर्ष में अधिक कष्ट। २।३।७।१०।११ राशिवाले मनुष्यों से मित्रता एव व्यवहार करना सुखकर। नवीन चन्द्रमा देखने के बाद, सफेद-वस्तु-दर्शन शुभकर है। शुक्र-शनि-बुधवार शुभ हैं।

(८) वृश्चिकस्थ चन्द्र—क्रोधी वैर-विरोध करने वाला, कलह-कर्ता, विश्वास-घातक, मित्र द्रोही स्वामी से विरोध, असन्तोषी, परकार्य में विघ्न-कर्ता पापी क्रूर, पराक्रमी, चतुर, शत्रु-कुल-नाशक, अनेक भृत्यों से युक्त पिता और गुरु के सुख से रहित राजानुगृहीत श्वेत-वस्त्र का अभिलाषी भावक-पदार्थ में रुचि स्वावलम्बी परिश्रमी छाती और नेत्र बड़े पैर गोल मुख पर तिलादि के कोई चिन्ह, किसी दीर्घकालीन रोग से मृत्यु कामासक्ति स्त्री पतिव्रता एक पुत्र और एक कन्या से सुख किसी को दो स्त्री या चार भाई का सुयोग तथा व्यापार लाभदायक होता है। नास्तिक लोभी बन्धुहीन और परस्त्रीरत होता है।

१।६।११ (नन्दा) तिथि ७।१२।२१।३२।४२।५२ वें दिन-मास-वर्ष में अशुभफल। प्रथम वर्ष में ज्वर तीसरे वर्ष में अग्निभय पाँचवें वर्ष में ज्वर-भय, १५ वें वर्ष में सामान्य पीड़ा २७ वें वर्ष में अधिक कष्ट। १।४।३।८।६।१२ राशिवाले व्यक्तियों से मित्रता तथा व्यवहार सुखकर। रविवार-सोमवार-मंगलवार-गुरुवार शुभ। नवीन चन्द्र देखने के बाद, लाल-वस्तु-दर्शन या पुत्र-मुख देखना शुभकर है।

(९) धनुस्थ चन्द्र—विद्वान धार्मिक राज-सम्मान-युक्त जन-प्रिय देव-भक्त सभा में व्याख्यान देने वाला श्रेष्ठ पवित्र काव्य-कुशल ढीठ कुल-दीपक दानी भाग्यवान् सच्चा-मित्र साहसी निष्कपट विनीत दयावान स्पष्ट वक्ता क्लेश सहन वाला शान्त-स्वभाव, तपस्वी अल्प-भाषी पक्की निर्मल-बुद्धि कोमल-भाषी मितव्ययी धनी, कामवत्सर प्रेम के वशीभूत दूर्दर्शी भविष्य वक्ता धन प्रमाण से किसी के वश में न आने वाला, मोटा मुख कान बड़े ओष्ठ मोटे नाक मोटी दाँत बड़े किसी अंग में तिलादि के चिन्ह, पैर के तलवे छोटे तीन विवाह तक सम्भव, स्त्री-लोलुप सन्तान कम अनेक विद्याओं का अभ्यासी कई प्रकार के व्यवसाय करने वाला (नौकरी द्वारा उन्नति नहीं), बाल्यावस्था में धनी होता है। सुन्दर रूप शिल्पज्ञ एवं शत्रुविनाशक होता है।

३।८।१३ (जया) तिथि, ८।२८।३६।४८ वें वर्ष में अशुभ-फल। प्रथम वर्ष में शरीर-पीड़ा १३ वें वर्ष में महादुःख। रविवार सोमवार मंगलवार, गुरुवार शुभ। १।४।३।८।६।१२ राशि वाले व्यक्तियों से मित्रता तथा व्यवहार सुखकर। नवीन चन्द्र देखने के बाद पीत-वस्तु देखना शुभकर है।

(१०) मकरस्थ चन्द्र—गम्भीर विद्वान् राजप्रिय दयावान् सत्य-वक्ता दानी आलसी गान-विद्या-निपुण क्रोधी दम्भी श्रुतिधर—एक ही बार देखने-सुनने से याद रखने वाला भाग्यवान् काव्य-कुशल लोभी आलसी दयालु, दृढ-प्रतिज्ञ दूसरे के मानसिक भाव पर निस्पृह, प्रभाव-शाली निश्चय स्वाभिमान किन्तु कोई कुविख्यात कोई सुविख्यात या कोई उच्चपदाधिकारी अपने व्यवहार द्वारा शत्रु की उत्पत्ति जिससे बड़ी हानि सुन्दररूप सोम्य शरीर कटि-भाग पतला आँखें सुन्दर कण्ठकाल गर्दन में तिलादि के चिह्न जल-भय या शीतरोग स्त्री रूपवती तथा पुत्रवती स्त्री-पुत्र पर आसक्ति स्त्री हीनवय की या बड़ी आयुवाली अथवा ऐसी ही अन्य स्त्री से संग तथा अपने कुल में उत्तमवृत्ति करने वाला होता है। प्रसिद्ध, धार्मिक, कवि क्रोधी लोभी और संगीतज्ञ होता है।

४।६।१४ (रिक्ता) तिथि ३।११।२१ वें दिन-मास-वर्ष में अशुभफल। पाँचवें वर्ष में पीड़ा सातवें वर्ष में जल-भय १ वें वर्ष में वृक्ष या ऊँचे स्थान से पतन १२ वें वर्ष में शस्त्रभय २ वें वर्ष में ज्वर-रोग ७५ वें वर्ष में हाथ पैर में पीड़ा ३५ वें वर्ष में वामांग में अग्नि-भय। बुध-शुक्र-शनिवार शुभ। ५।३।६।७।११ राशिवाले व्यक्तियों से मित्रता तथा व्यवहार लाभदायक। नवीन चन्द्र-दर्शन के बाद नील या कृष्णवर्णी-वस्तु-दर्शन शुभकर है।

(११) कुम्भस्थ चन्द्र—दयालु, दानी, मिष्ठान्न-भोजी, धर्म-कार्य में शीघ्रता करने वाला, प्रिय-भाषी, आलसी, प्रसन्न-चित्त, विचक्षण-बुद्धि, मित्र-प्रिय, शत्रु-विजयी, पर-स्त्री, पर-धन और पाप में आसक्ति, मार्ग चलने में समर्थ, यात्रा-प्रिय, दौरे का काम पसन्द, सुगन्ध-प्रिय, अत्यन्त कामी, सभा-सोसाइटी से प्रेम रखने वाला, निर्धन, क्रमश. आर्थिक क्षीणता, दुर्बल शरीर या कृश शरीर, लम्बे अवयय युक्त शरीर, बाल रूखे, किसी ऊँचे स्थान से पतन एवं जल-भय, काँख, पैर और मुख मे तिलादि के चिह्न, कफादि रोग से पीडा, स्त्री के संग बुरा व्यवहार, दो स्त्रियों का योग, किसी अन्य स्त्री पर भी प्रेमासक्त, अल्प-सन्तति सुख, दूसरे के पुत्रों पर स्नेह, विद्या-विभाग, कला और राजनैतिक कामों में अभिरुचि, साथ ही किसी शुभ-मण्डली का सदस्य होता है। उन्मत्त, सूक्ष्मदेही, मद्यपी, आलसी, शिल्पी और दुःखी होता है।

३।८।१३ (जया) तिथि, ५।१५।२५।३५।४५ वें दिन मास-वर्ष में अशुभफल। प्रथम वर्ष मे पीड़ा, ५ वें वर्ष मे अग्निभय, १२ वें वर्ष मे सर्प या जल-भय, २८ वें वर्ष मे चोर द्वारा धन-हानि। ३० वें वर्ष के बाद उन्नति। जीवन में कभी हानि, कभी वृद्धि। बुध शुक्र-शनिवार शुभ। २।३।६।७।१०।११ राशिवाले व्यक्तियो से मित्रता तथा व्यवहार करना शुभप्रद। नवीन चन्द्र दर्शन के उपरान्त, कृष्ण-वस्तु देखना शुभकारक होता है।

(१२) मीनस्थ चन्द्र—धनी, मान्य, नम्र, भोगी, प्रसन्न-चित्त, माता पिता, देव, विप्रादि का भक्त, उदार, सुगन्ध-प्रिय, जितेन्द्रिय, गुणी, चतुर, निर्मल-बुद्धि, शस्त्रविद्या-कुशल, शत्रु-विजयी, खरा (ईमानदार), अत्यन्त निष्कपट (भोला), धार्मिक, विद्वान्, उत्तम वाचा-शक्ति वाला, लेखक या काव्य-संगीतादि-प्रिय, सहज में ही निरुत्साह एवं उदास हो जाने वाला, कभी-कभी मादक-द्रव्य एव दुष्टाचार की ओर झुकाव, निर्बल, उत्तम रूपवान, सुन्दर दृष्टि युक्त, किन्तु देखने में उतना सुन्दर नहीं होता, ऊँचे स्थान से गिरने का भय, कफ से पीडित, चार विवाह तक सम्भव, स्त्री के वशीभूत, स्त्री से प्रीतियुक्त, सभी पुत्र अच्छे, जलोत्पन्न पदार्थ, पर-धन और गडे हुए धन का उपभोग प्राप्त करता है। शिल्पकार, सुदेही, शास्त्रज्ञ, धार्मिक, अतिकामी और प्रसन्नमुख होता है।

५।१०।१५।३० (पूर्णा) तिथि, ५।१०।१६।२७।५३ वें दिन-मास-वर्ष मे अशुभफल। ५ वें वर्ष में जलभय, ८ वें वर्ष मे ज्वर पीड़ा, २२ वें वर्ष में महान् कष्ट, २४ वें वर्ष में पूर्व दिशा की यात्रा होती है। १।४।५।८।६।१२ राशिवाले व्यक्तियों से मित्रता तथा व्यवहार करना लाभदायक है। रविवार, सोमवार, मगलवार, गुरुवार शुभ। किसी यात्रा के समय, किसी वृद्ध मनुष्य पर दृष्टि पडना अशुभ है। नवीन चन्द्र-दर्शन के बाद, पीली वस्तु देखना शुभकर है।

[भौम-राशि-फल]

(१) मेषस्थ भौम—मधुर-भाषी, साहसी, धनी, राजपूज्य, भूमिसुख, सेनापति या व्यापारी या कृषि या भ्रमण द्वारा लाभ। सत्यवक्ता, तेजस्वी, शूरवीर, नेता, दानी, राजमान्य और लोकमान्य होता है।

(२) वृषस्थ भौम—कामी स्त्रियों के आधीनस्थ, पर-स्त्री और परगृह-भोगी, मित्रों से कुटिल, कपटी, कर्कश-स्वभाव, सुन्दर वेश-धारी, स्वगृह तथा स्वधन से कम सुखी, पुत्र की ओर से कष्ट पानेवाला या पुत्रद्वेषी, प्रवासी, सुखहीन, पापी, लड़ाकू प्रकृति और वचक होता है।

(३) मिथुनस्थ भौम—कृपण, दीन-भाषी, याचक, तेजस्वी, पुत्रवान्, मित्र-रहित, कुटुम्ब में कलह, यांत्रिक, युद्ध मे निपुण, अनेक कलाओं का जानकार, शिल्पकार, प्रवासी, कार्यदक्ष, जनहितैषी और सुखी होता है।

(४) कर्कस्थ भौम—अनेक शत्रुओं के उपद्रव से शान्ति अथवा शत्रुभाव-रहित परगृहवासी, दीन अथवा मति-हीन, स्त्री-कलह अधिक, दुर्जन किन्तु बुद्धिमान् (चतुर), धनी माता आदि द्वारा धन-लाभ, सुखाभिलाषी दीन सेवक, कृपक रोगी और दुष्ट होता है।

(५) सिंहस्थ भौम—स्त्री पुत्रादि से सुखी साहसी, क्लेशों का सहने वाला शत्रु पर विजय पाने वाला, उद्यमी, निर्धन धनीवियुक्त, वन-भ्रमण-शील सन्तान कम, शूरवीर, सदाचारी, परोपकारी कार्य में निपुण और स्नेहशील होता है।

(६) कन्यास्थ भौम—मित्रों का सत्कार करने वाला बहुत धनों का साथी पूजा आदि करने तथा कराने में तत्पर तथवा पुत्रवान् गानप्रिय युद्ध (मुकदमा विवाद) में निपुण, दीन भाषी, लोकमान्य व्यवहार-कुशल, पापभीरु शिल्पज्ञ और सुखी होता है।

(७) तुलास्थ भौम—खर्चीला स्वभाव, अंग-कष्ट मित्रों के साथ कुटिल स्त्री के आधीन स्त्री-पक्ष से दुःखी, कामी श्रेष्ठजनों का विरोधी प्रवासी वक्ता और परधनापहारी होता है।

(८) वृश्चिकस्थ भौम—विष, अग्नि शस्त्र से भय राजसेवक सेना से या राजा से या भ्रमण से धनलाभ सैनिक या व्यापारी चोरों का नेता पातकी, शठ और दुराचारी होता है।

(९) धनुस्थ भौम—सुखी जीवन, शत्रु-विजयी, यशस्वी सलाह देने में चतुर (मन्त्री) श्रेष्ठ, स्त्रियों के संग भ्रमणप्रिय उत्तम वाहन सुख परन्तु व्रण (घाव) रोग से दुःखी कठोर शठ क्रूर परिश्रमी और पराधीन होता है।

(१०) मकरस्थ भौम—राजा या राजा-तुल्य शूरवीर, कर्तव्यपरायण राजमान्य संग्राम में पराक्रमी स्त्री-पुत्र से सुखी स्वजनों की सहायता का अभाव, धनी सम्पत्ति प्राप्त, पराक्रमी, नेता ऐश्वर्यशाली सुखी और महत्त्वाकांक्षी होता है।

(११) कुम्भस्थ भौम—दुर्जनों की संगति विनयरहित तीक्ष्ण-स्वभाव, स्वजनों से प्रतिकूल मिथ्याभाषी किन्तु बहु सन्तति वाला आचारहीन मत्सरवृत्ति सट्टे से धननाश अचानक धन खर्च करने वाला व्यसनी और लोभी होता है।

(१२) मीनस्थ भौम—शत्रु-विजयी सुखी, सलाहकार (मन्त्री) यशस्वी व्यसनयुक्त दुष्ट या दयारहित, भ्रष्ट-बुद्धि दूर देश की यात्रा करने वाला रोगी प्रवासी मान्त्रिक, बन्धुद्वेषी नास्तिक, हठी मूर्ख और वाचाल होता है।

[बुध-राशि-फल]

(१) मेषस्थ बुध—दुष्ट चंचल कलही निर्दयी जुआरी ऋणी नास्तिक, दम्भी, बहुत भोजन करने वाला मिथ्यावादी प्रायः जन्म समय में निर्धनी, कृशदेही चतुर, प्रेमी, नट सत्यप्रिय ऋणी और लेखक होता है।

(२) वृषस्थ बुध—विद्वान दानी, गुणी, कला-कुशल धनोपार्जन करने वाला गुरु-भक्त, उपदेशक, भाई एवं पुत्रादि से सुखी शाक्त व्यायामप्रिय, धनवान् गम्भीर मधुरभाषी विलासी और रतिशास्त्रज्ञ होता है

(३) मिथुनस्थ बुध—सुखी प्रियभाषी किन्तु मिथ्यावादी, शास्त्र गीत, नृत्य, लेखनकला एवं चित्र आदि कार्यों में निपुण भोजन तथा निवास-स्थान का सुख कभी-कभी दो माताएँ भी सम्भव मधुरभाषी लब्धप्रतिष्ठ वक्ता अल्पसन्तानवान्, विवेकी और सदाचारी होता है।

(४) कर्कस्थ बुध—जलज वस्तुओं से धनलाभ बन्धुवैरी दुश्चरित्रवाला सवाकार्य परदेशवास, संगीत-प्रिय, कामी, किन्तु अन्त में दुःखों से निवृत्ति पाने वाला वाचाल, गायक, कीरत और प्रसिद्ध होता है।

(५) सिंहस्थ बुध—स्त्री का आज्ञापालक, स्त्री के प्रति प्रीति अधिक, किन्तु स्त्री का अप्रिय, निर्धन, सुखरहित, सन्तानकष्ट, सदा घूमने वाला, बन्धुजनों का वैरी, मिथ्याभाषी, शत्रु-पीड़ित, कुकर्मी, ठग और कामुक होता है।

(६) कन्यास्थ बुध—मधुरभाषी, चतुर, लेखन में प्रवीण, उन्नतिशील, दानी, अनेक उद्योगों का जानकार, निर्भय, सद्गुणों से भूषित, बुद्धिमान्, सम्पादक, राजमान्य, सुखी, वंशवृद्धिकारक, शत्रुनाशक, सुन्दर स्त्री का सुख, वक्ता, कवि और साहित्यिक होता है।

(७) तुलास्थ बुध—विद्वान्, वक्ता, असत्यवादी, उपदेशक, स्त्री-पुत्र से सुखी, दानी, कारीगर, खर्चीला स्वभाव, शिल्पज्ञ, चतुर, व्यापार-दक्ष, आस्तिक, कुटुम्बवत्सल और उदार होता है।

(८) वृश्चिकस्थ बुध—जुआड़ी, ऋणी, आलसी, पूजित, नास्तिक, मिथ्यावादी, जन्म समय निर्धनी, परिश्रमी, गृह-भूमि युक्त, व्यसनी, दुराचारी, मूर्ख और भिक्षुक बनता है।

(९) धनुस्थ बुध—कुलपालक, राजपूजित विद्वान्, उचित-वाक्य-भाषी, दानी, कारीगर, विभव-युक्त, उदार, प्रसिद्ध, लेखक, वक्ता और सम्पादक होता है।

(१०) मकरस्थ बुध—शिल्पी, पराधीन, क्षीणकाय, बुद्धि-हीन, शत्रु-पीडित ऋणी, आज्ञाकारी, कुलहीन, दु शील, मिथ्याभाषी, मूर्ख और डरपोक होता है।

(११) कुम्भस्थ बुध—शिल्पी, पराधीन, गृह-कलह, शत्रुओं से दु खी, कुटुम्बहीन और अल्पधनी होता है।

(१२) मीनस्थ बुध—सेवक, परधनरक्षक (खजाञ्ची आदि), चित्रकार, देशभक्त, उत्तम स्त्री-सुख, सदाचारी, भाग्यवान्, प्रवास में सुखी, धनसंग्रही, कार्यदक्ष, मिष्टभाषी, सहनशील और स्वाभिमानी होता है।

[गुरु-राशि-फल]

(१) मेषस्थ गुरु—उदार, विभवयुक्त, बुद्धिमान्, स्त्री एवं पुत्र से सुखी, तेजस्वी, क्षमाशील, प्रसिद्ध, सेनापति अधिकारी, बहु शत्रु-युक्त, विवादी, वकील, तर्कज्ञ, न्यायप्रिय, ऐश्वर्यशाली, यशस्वी और विजयी होता है।

(२) वृषस्थ गुरु—धन, वाहन और यश से युक्त, शत्रु पर पराक्रम दिखाने वाला, गुरुजन तथा ईश्वर का प्रेमी, मित्र एवं सन्तान से सुखी, आस्तिक, पुष्टशरीर, सदाचारी, धनवान्, चिकित्सक और विद्वान् होता है।

(३) मिथुनस्थ गुरु—मिष्टभाषी, शीलवान, हितैषी, सन्तान तथा मित्र से सुखी, काव्य में रुचि, रत्न-व्यापारी या कृषि से लाभ, विज्ञान-विशारद, अनायास धनलाभ, लोकमान्य, लेखक और व्यवहार कुशल होता है।

(४) कर्कस्थ गुरु—सुशील, चतुर, विद्वान्, राजप्रिय, ऐश्वर्यवान्, मन्त्री, शासक, सुखी, पुत्र, धन, स्त्री और ऐश्वर्य से युक्त, बुद्धिमान्, शास्त्र एवं कला में निपुण, वाहन सुख, मिष्टभाषी, सदाचारी, सत्यवक्ता, महायशस्वी, साम्यवादी, सुधारक और योगी होता है।

(५) सिंहस्थ गुरु—पर्वत, कोट (किला) एवं वन का स्वामी, पराक्रमी, पुष्ट शरीर, दानी, मधुरभाषी, जनसमूह का अधिकारी (नेता), शत्रु का धनहारक, स्त्री, पुत्र और ऐश्वर्य से युक्त तथा विख्यात होता है।

(६) कन्यास्थ गुरु—बहु मित्र वाला, वस्त्र एवं सुगन्धादि से सुखी, दानी, पुत्रवान्, शत्रु-विजयी, सुखी, भोगी, विलासी, चित्रकला में निपुण और चंचल होता है।

(७) तुलास्थ गुरु—देवभक्त, श्रेष्ठजन सेवक, धार्मिक वृत्ति, चतुर, धन-सुख, मित्र तथा सन्तान से युक्त, दानी, साहसी, बुद्धिमान, व्यापार कुशल, कवि, लेखक, सम्पादक और सुखी होता है।

(८) वृश्चिकस्थ गुरु—स्त्री पुत्रादि युक्त, महाधनी, तेजस्वी उदार प्रसिद्ध, मिथ्यावादी, सबों से दुःखी, शासक, कार्यकुशल, राजमन्त्री और पुण्यात्मा होता है।

(९) धनुस्थ गुरु—राजा या राजा-तुल्य, भूमिस्वामी मन्त्री, सेनापति बहु-ऐश्वर्य-युक्त, धन-वाहनादि से सुखी, दानी बुद्धिमान्, धर्माचार्य, दम्भी धूर्त और रतिप्रेमी होता है।

(१०) मकरस्थ गुरु—नीच कर्म में तत्पर, बुद्धिहीन, मानसिक दुःखी, भ्रमणशील स्वार्थ-साधन में चतुर दूसरे के कार्य का नाश करने वाला, द्रव्यहीन प्रवासी व्यय परिश्रमी, चंचल चित्त और मूर्ख होता है।

(११) कुम्भस्थ गुरु—दाँत और उदर के रोग, अन्य प्रकार से सुखी, धन, पुत्र और स्त्री आदि से युक्त। मतान्तर से धनहीन रोगी कृपण पापी कुभोजन पाने वाला डरपोक, प्रवासी, कपटी और रोगी होता है।

(१२) मीनस्थ गुरु—भूमि स्वामी, राजा, मन्त्री सेनापति आदि राजा-तुल्य धनी दानी, परन्तु कामी प्रायः उत्तम निवास-स्थल का सुख संतक, शासक गर्वहीन शान्त दयालु व्यवहार-कुशल और साहित्य प्रेमी होता है।

[शुक्र—राशि—फल]

(१) मेषस्थ शुक्र—पर स्त्री के प्रेम में धन-व्यय करने वाला कुल-कलंकी भ्रमण-शील शत्रु-रहित गृह-ग्रामादि का स्वामी काव्य-प्रिय विश्वासहीन दुराचारी, झगड़ालू और वेश्यागामी होता है।

(२) वृषस्थ शुक्र—स्वबुद्धि द्वारा धनोपार्जन करने वाला राजाओं से पूज्य बन्धुओं में प्रधान या विशेष गुणी प्रसिद्ध निर्भय, कृषि स्त्री, सुगन्ध-द्रव्य मित्रादि से सुखी सुन्दर, ऐश्वर्यवान, दानी साहित्यिक, सदाचारी परोपकारी और अनेक शास्त्रज्ञ होता है।

(३) मिथुनस्थ शुक्र—विद्वान् कला-निपुण, राजसेवक, संगीत-प्रिय मिष्ट-भाषी, मिष्टान्न प्रिय धनी बुद्धिमान् चित्रकला निपुण साहित्यिक, कवि प्रेमी सज्जन और लोकहितैषी होता है।

(४) कर्कस्थ शुक्र—डरपोक (भीरु) गुणी मिष्टभाषी उत्तम कार्यों में चित्त लगाने वाला प्रायः दो स्त्री का भोगी धार्मिक, दाता सुन्दर सुख और धन का इच्छुक तथा नीतिज्ञ होता है।

(५) सिंहस्थ शुक्र—स्त्री के धन से धनी सम्मान और सुख पाने वाला अल्प सन्तान स्वजन या शत्रु द्वारा भी सुखी सन्ताप पाने वाला, उपकारी किन्तु चिन्तातुर और शिरपीड़ा होता है।

(६) कन्यास्थ शुक्र—नीच धर्माचारी अल्पभाषी तीर्थयात्री धनी सभापति अतिकामी सुखी, भोगी रोगी वीर्यहीन और सट्टे द्वारा धन का नाशक होता है।

(७) तुलास्थ शुक्र—राजा का प्रिय बन्धुओं में प्रधान, प्रसिद्ध, कवि, निर्भय, अनेक विचित्र वस्त्र सुख, धन एवं पुत्रादि से युक्त, प्रवासी यशस्वी, कापुरुष विलासी और कला-निपुण होता है।

(८) वृश्चिकस्थ शुक्र—दुष्टा स्त्री या पर-स्त्री में आसक्ति तथा धन-व्यय करने वाला कुल-कलंकी, व्यसनी, कलह-प्रिय जीव हिंसक, अल्पधनी, आजन्म रोगी कुकर्मी नास्तिक, क्रोधी ऋणी दरिद्री, गुप्तरोगी और स्त्रीद्वेषी होता है।

(९) धनुस्थ शुक्र—गुणी धनी, स्त्री-पुत्र से प्रसन्न राजा मन्त्री उत्तम शील-स्वभाव काव्य-प्रिय, विरक्त, स्वोपार्जित द्रव्य द्वारा पुण्य करने वाला, विद्वान्, लोक-प्रिय राजमान्य और सुखी होता है।

(१०) मकरस्थ शुक्र—सर्वप्रिय स्त्री के आधीनस्थ, भोगी, परस्त्री या वृद्धा स्त्री से संगति अपव्ययी एकान्त निवासी चिन्ता से दुःखी बलहीन कृपण, हृदयरोगी, दुःखी और मानी होता है।

(११) कुम्भस्थ शुक्र—सर्वप्रिय, स्त्री के आधीनस्थ, निन्दित स्त्री या कुमारी कन्या से प्रीति, अच्छे कर्म से विमुख, धन नाश करने वाला, चिन्ता युक्त, रोग से सन्तप्त, धर्म हीन और मलिन बुद्धि वाला होता है।

(१२) मीनस्थ शुक्र—विद्वान्, धनी, विलासी, संगीतप्रिय, कामी, भाग्यवान्, सम्मानयुक्त, धन-लाभ करने वाला, सर्व-प्रिय, शीलवान्, शत्रु से भी धन पाने वाला, दान-शील, शिल्पज्ञ, शान्त, धनी, कार्यदक्ष, कृषि-कर्म का मर्मज्ञ, जौहरी और भूमिस्वामी होता है।

[शनि-राशि-फल]

(१) मेषस्थ शनि—मूर्ख, कपटी, मित्ररहित, भ्रमण-शील, सब का विरोधी, शान्तिरहित, निर्धनता के कारण दुर्बल शरीर, आत्मबलहीन, व्यसनी, निर्धन, दुराचारी, लम्पट और कृतघ्न होता है।

(२) वृषस्थ शनि—अल्प धनी, अगम्य स्त्रियों का प्रिय, स्त्री सुख से रहित, बुद्धिहीन, सन्तान कष्ट युक्त, असत्यभाषी, द्रव्यहीन, मूर्ख और वचन-हीन होता है।

(३) मिथुनस्थ शनि—धन, पुत्र, बुद्धि आदि का सुख, लज्जा से रहित, हास्य-विलास-प्रिय, सर्वदा भ्रमण करने वाला, परदेश वासी, कपटी, दुराचारी, पाखण्डी, निर्धनी और कामी होता है।

(४) कर्कस्थ शनि—माता और पुत्र को कष्ट, निर्धन, मूर्ख, विलास में व्ययकर्ता, शत्रु पर विजयी, दुर्बल शरीर, बाल्यावस्था में दुःखी, प्राज्ञ, उन्नतिशील और विद्वान् होता है।

(५) सिंहस्थ शनि—अपकीर्ति युक्त, लिखने में बड़ा प्रवीण, कलह-प्रिय, शील-रहित, नीति-रहित, सुख-हीन, स्त्री पुत्रादिकों से दुःख पाने वाला, लेखक, अध्यापक और कार्यदक्ष होता है।

(६) कन्यास्थ शनि—लज्जारहित, सुख, धन, पुत्र का अल्प सुख या कष्ट अधिक, मित्रों का विरोधी, निर्बल शरीर, कोई बलवान्, मितभाषी, धनवान्, सम्पादक, लेखक, परोपकारी और निश्चित कार्यकर्ता होता है।

(७) तुलास्थ शनि—राजा, जाति या ग्राम या नगर का नायक, भूमिपति, कृषक, लब्ध-प्रतिष्ठ, धनी, यशस्वी, कुलश्रेष्ठ, दानी, कामी, अपमानित, सुभाषी, स्वाभिमानी और उन्नतिशील होता है।

(८) वृश्चिकस्थ शनि—कठोरचित्त, बन्धन या ताडन का दुःख-भोगी, चचल, विष, अग्नि, शस्त्र से भय, शत्रु एव रोग से पीडित, लोभी, धननाशकर्ता, पुत्र सुख रहित, स्त्रीहीन, क्रोधी और हिंसक होता है।

(९) धनुस्थ शनि—सुन्दर, स्त्री-पुत्र-धनादि से सुखी, राजा का विश्वास-पात्र, नगर या ग्राम में प्रधान, प्रसिद्ध, यशस्वी, सदाचारी, सन्तोषी, अन्तिम जीवन में अधिक सुखी और पुत्र के यश से प्रसिद्ध होता है।

(१०) मकरस्थ शनि—राजप्रिय, सम्मानित, प्रधानपद, धन-ऐश्वर्य-भोग का चिरकाल तक सुख, सुगन्ध से विभूषित, नेत्र-ज्योति कम, मिथ्याभाषी, आस्तिक, परिश्रमी, शिल्पकार और प्रवासी होता है।

(११) कुम्भस्थ शनि—धनी, भोगी, उत्तम मित्र युक्त, व्यसनी, श्रेष्ठ कार्यों से विमुख, शत्रु से पीड़ित, ग्रामादि में प्रधान, दूसरे के धन का अधिकारी, नास्तिक और परिश्रमी होता है।

(१२) मीनस्थ शनि—राजगुणी, राजा का विश्वास-पात्र, स्थान का प्रधान, उपकारी, व्यवहार-कुशल, शीलवान्, गुणी, तेजस्वी, अन्तिम जीवन में सुख, सुन्दर स्त्री-पुत्रादि से सम्पन्न, हतोत्साही, अविचारी और कोई शिल्पकार होता है।

[राहु-राशि-फल]

मेष—पराक्रमहीन आलसी अविवेकी, शिरो व्यथा कामाग्नि से पीड़ित, विवाद में विजयी दीर्घरोगी।
वृष—सुखी चंचल, कुरूप, धनवान, शूरवीर लंपट वाचाल धननाशक कमी दरिद्र, मित्र-वार्ता न मानने वाला।
मिथुन—योगाभ्यासी गायक, बलवान् दीर्घायु, बाहुबल अधिक, प्रतापी विरत-बन्धु बुद्धि-चातुर्य-युक्त विवेकी।
कर्क—उदररोगी धनहीन कपटी, पराजित मित्रयुक्त, स्त्रीप्राप्ति पिता माता को क्लेश शीत-वात-विकार।
सिंह—चतुर नीतिज्ञ, सत्पुरुष, विचारक, सन्तान की चिन्ता अधिक राजदण्ड-भय, पशु से मृत्यु कुक्षिपीड़ा।
कन्या—लोकप्रिय, मधुरभाषी, कवि लेखक, गायक कोई बल या बुद्धि से हीन शत्रु या रोग का विनाश।
तुला—अल्पायु, दन्तरोगी, मृतधनाधिकारी कार्यकुशल स्त्री की हानि अग्नि या वायु से कष्ट सन्तप्त।
वृश्चिक—धूर्त निर्धन रोगी धननाशक, राजा तथा विद्वान् से सम्मानित धनी लोक-विरोध ग्रन्थि-रोग।
धनु—बाल्यावस्था में सुखी, दत्तक जाने वाला मित्रद्रोही संकल्प युक्त सत्याग्रही बन्धुओं पर अतिस्नेह।
मकर—मित्रद्रोही मितव्ययी या कृपण कुटुम्ब-रहित, धन मान प्रताप सुख आदि की क्षीणता, आलस्य।
कुम्भ—मितव्ययी, कुटुम्ब-रहित दन्तरोगी, विद्वान लेखक, उपदेश से कल्याण परदेश में प्रतिष्ठा शत्रुनाश।
मीन—आस्तिक कुलीन शान्त कथाप्रिय, दक्ष, संचय में विघ्न उच्च स्थान से पतन भ्रमण में असफलता।

राहु में विशेषता

यह ग्रह, जिस राशि में या जिस ग्रह के साथ होता है, उन्हीं के तत्त्व-गुण द्वारा फलों का विकाश करता है। सूर्य या चन्द्र से १३ अंश आगे-पीछे राहु हो तो सूर्य अथवा चन्द्र के फलों में बाधा (अनुकूल या प्रतिकूल) उपस्थित करता है। यथा—तृतीय भाव में मेष का चन्द्र हो तो शत्रुनाश रोगनाश भगिनीनाश (पष्ठेश तथा क्षीण चन्द्र तृतीयस्थ होने से, चन्द्र के फलों को राहु ने विनाश किया किन्तु भगिनीनाश (प्रतिकूल) एवं शत्रुनाश आदि (अनुकूल) फल होते हैं। वृष मिथुन कर्क सिंह, कन्या वृश्चिक का राहु प्रायः अच्छे फल करता है। वृष का राहु अष्टमस्थ होने पर भी मारक न होकर अति धनलाभ कराता है। सिंह या वृश्चिक का लग्नस्थ राहु स्वकायपरिपालक बनाता है। व्ययस्थ राहु तथा व्ययेश अष्टमस्थ हो तो निश्चय ही हीनांग (हीनांग) करता है। सू मं बु रा केतु म से कोई ग्रह यदि मेष-वृष-धनु राशि पर, २-४-६-११ वें भाव में हो तो राज दण्ड मिलता है।

[केतु-राशि-फल]

मेष—चंचल बहुभाषी सुखी सहनशील कठोर रोगी भोग-भीरु व्याकुलता धीचिन्ता मामा को कष्ट।
वृष—दुखी निरुद्यमी आलसी वाचाल धन-धान्य की हानि कुटुम्ब विरोध राजा द्वारा लाभ में बाधा।
मिथुन—वातविकारी रोग अल्प सन्तोषी दाम्भिक, अल्पायु, क्रोधी शत्रुनाश विवादी या वक्ता भय से व्याकुल।
कर्क—वातविकारी रोग, भूत प्रेत से पीड़ित माता को कष्ट धार्मिक क्षति मित्र या पिता से दुःख अस्थिरता।
सिंह—बहुभाषी डरपोक असहिष्णु, सर्पदंशन का भय कदाचित् उदर में वायु रोग या चोट बुद्धि विपरीत।
कन्या—मन्दाग्नि सदारोगी मूर्ख व्यर्थवादी शत्रुनाश मातृकुल से अपमान गुदा या नेत्र म रोग पशु सुख।
तुला—कुष्ठरोगी दाद-खाज से पीड़ित कामी क्रोधी दुःखी भाग में क्लेश की सम्भावना व्याकुलता चोरभय।
वृश्चिक—क्रोधी कुष्ठरोगी वाचाल राजप्रिय धन लाभ से सामर्थ्य कोई धन और सन्तान से पूर्ण सुखी।
धनु—मिथ्यावादी चंचल धूर्त धमनाश तीर्थयात्रा म्लेच्छ से लाभ वायुरोग दान कार्य में निन्दा।
मकर—प्रवासी परिश्रमशील तेजस्वी पराक्रमी, पिता को कष्ट माता का विनाश, वाहन से कंधा में चोट।
कुम्भ—कर्णरोगी, दुखी श्रमणशील, व्यय अधिक, धनी भाषण-कुशल विद्वान, दीर्घजीव तेजस्वी, उदर-रोगी।
मीन—कर्णरोगी प्रवासी चंचल कार्यपरायण सुन्दर नेत्र शिक्षित उत्तम कार्य में व्यय शत्रुनाश गुप्तांग में रोग।

भावेश-मात्रस्थ-फल

[लग्नेश-फल]

लग्न में—आरोग्य, बलवान्, दृढ़ शरीर, रूपवान्, सम्मानयुक्त, चंचल, मन्त्री, सुखी, विलासी, धनी, सत्कर्मशील, विख्यात, दो भार्यायुक्त, कुलदीपक, प्रथम सन्तान पुत्र, दीर्घायु और भूपति होता है।

द्वितीय में—धार्मिक, स्थूल शरीर, स्थान का प्रधान, सत्कर्मपरायण, दीर्घायु, कुटुम्ब का सुख, सुशील, स्त्रीगुणवती, लाभयुक्त, प्रथम सन्तान कन्या धनी के वशीभूत, उच्च घराने में जन्म और विद्या साधारण होती है।

तृतीय में—बन्धुओं में श्रेष्ठ, मित्रयुक्त, धर्मात्मा, दानी, पराक्रमी, अनेक सम्पत्ति वाला, दो भार्या, लग्नेश निर्बल, हो तो अपवित्र। शुभग्रह की दृष्टि हो तो मधुर-भाषी, भाइयों का पूरा सुख न हो, प्रथम संतान पुत्र और अपने उद्योग से सुखी होता है।

चतुर्थ में—राजा का प्रिय, गुणी, दीर्घायु, बहुमित्र युक्त, मातृ-पितृ भक्त, सुखी, विलासी, वाहन-सुख, भोजन सुख, पिता धनी, प्रथम सन्तान पुत्र, कभी किसी को कन्या और इसे, गृह-कार्य की चिन्ता रहती है।

पंचम में—पुत्रवान्, दानी, विख्यात, सुशील, सत्कर्म-तत्पर, त्यागी, क्षमावान, दीर्घायु, संतान को कष्ट, अच्छा स्वर, गान-कला में आसक्ति, ज्ञानी, मानी, विचक्षणबुद्धि से लाभ और प्रथम सन्तान पुत्र होता है।

षष्ठ में—निरोगी, भूमिस्वामी, सबल, कृपण, शत्रुहन्ता, धनी, भूमि का लाभ, पुत्र, माता, मामा, पशु से सुखी, अपने द्वारा शत्रु बनाने वाला, क्रोधी, शत्रु-पीड़ित, स्वस्थता कम, कभी कार्य में असफलता, प्रथम सन्तान पुत्र, कुत्ते से भय, शुनक-भय और स्वजनों को कष्टदायक होता है।

सप्तम में—तेजस्वी, शीलवान, सच्चरित्र, विनयी, रूपवान्, स्त्री शीलवती, रूपवती, तेजस्विनी, किन्तु पति के सामने ही स्त्री की मृत्यु, व्यापार द्वारा धनवृद्धि, भ्रमण-अधिक और प्रथम सन्तान सुशीला कन्या होती है।

अष्टम में—कृपण, धनसंचयी, दीर्घायु, शुभ दृष्ट होने से बुद्धिमान्, यशस्वी, सौम्यस्वभाव, क्रोधी, कभी-कभी जुआँ से लाभयुक्त, अल्पायु, स्त्री तथा भूमिधन में रुचि और प्रथम सन्तान कन्या होती है।

नवम में—वक्ता, तेजस्वी, सुखी, शीलवान्, पुण्यात्मा, यशस्वी, राजपूज्य, प्रतिष्ठित, धार्मिक, भाई एवं मित्र से सुखी, भाग्यवान्, धनवान्, तीर्थयात्री, प्रथम सन्तान पुत्र और प्रसिद्ध होता है।

दशम में—विद्वान्, शीलवान्, राजा का मित्र, गुरुजन अर्थात् माता आदि का सेवक, उनसे सुखी, राज्य या समृद्धियुक्त, विख्यात, भोगी, सत्कर्मशील, भाई युक्त, भाग्यवान् और प्रथम सन्तान पुत्र होता है।

लाभ में—मित्र अधिक, पुत्रवान्, अर्थशास्त्र-निपुण, विख्यात, तेजस्वी, बलवान्, दीर्घजीवी, वाहनादि सुख, विवेकी (निर्बल लग्नेश में निर्बल फल), धन लाभयुक्त, व्यापार में धनवृद्धि, प्रथम सन्तान पुत्र और आरोग्यता रहती है।

व्यय में—कटुभाषी, विरोधी, विदेशवासी, सगोत्रियों से मतभेद, जैसा लाभ, वैसा ही खर्च अर्थात् आवश्यक कार्यों में धन का अभाव नहीं होता, कार्य में असफलता जिससे महाकष्ट, धूर्त, वाक्चतुर, प्रथम सन्तान पुत्र, गर्वित और भ्रमणशील होता है।

[राहु-राशि-फल]

मेष—पराक्रमहीन आलसी अविवेकी, शिरो व्यथा कामाग्नि से पीड़ित, विवाद में विजयी दीर्घरोगी।
वृष—सुखी चंचल, कुरूप, धनवान्, शूरवीर लंपट वाचाल धननाशक, कभी दरिद्र, मित्र-वार्ता न मानने वाला।
मिथुन—योगाभ्यासी गायक, बलवान् दीर्घायु, बाहुबल अधिक, प्रतापी विरत-बन्धु, बुद्धि-चातुर्य-युक्त विवेकी।
कर्क—उदररोगी धनहीन कपटी पराजित मित्रयुक्त स्त्रीप्राप्ति पिता-माता को क्लेश शीत-वात-विकार।
सिंह—चतुर नीतिज्ञ सत्पुरुष, विचारक, सन्तान की चिन्ता अधिक राजदण्ड-भय, क्षुधा से मृत्यु कुक्षिपीड़ा।
कन्या—लोकप्रिय, मधुरभाषी, कवि लेखक, गायक, कोई वस्तु या बुद्धि से हीन शत्रु या रोग का विनाश।
तुला—अल्पायु, दन्तरोगी, मृतधनाधिकारी कार्यकुशल स्त्री की हानि अग्नि या वायु से कष्ट सन्ताप।
वृश्चिक—धूर्त निर्धन रोगी, धननाशक, राजा तथा विद्वान् से सम्मानित धनी लोक-विरोध ग्रन्थि-रोग।
धनु—बाल्यावस्था में सुखी, दत्तक जाने वाला, मित्रद्रोही संकल्प युक्त प्रवासी बन्धुओं पर अविश्वास।
मकर—मित्रद्रोही मितव्ययी या कृपण कुटुम्ब-रहित, धन मान प्रताप सुख आदि की क्षीणता, वातभय।
कुम्भ—मितव्ययी कुटुम्ब-रहित दन्तरोगी, विद्वान् लेखक, उपदेश से कल्याण परदेश में प्रतिष्ठा शत्रुनाश।
मीन—आस्तिक, कुलीन, शान्त कलाप्रिय, धन संचय में विघ्न उच्च स्थान से पतन भ्रमण में असफलता।

राहु में विशेषता

यह ग्रह, जिस राशि में या जिस ग्रह के साथ होता है, उन्हीं के तत्त्व-गुण द्वारा फलों का विकाश करता है। सूर्य या चन्द्र से १२ अंश आगे-पीछे राहु हो तो सूर्य अथवा चन्द्र के फलों में बाधा (अनुकूल या प्रतिकूल) उपस्थित करता है। यथा—तृतीय भाव में मेष का चन्द्र हो तो शत्रुनाश रोगनाश भगिनीनाश (पहेला तथा क्षीण चन्द्र तृतीयस्थ होने से, चन्द्र के फलों को राहु ने विनाश किया किन्तु भगिनीनाश (प्रतिकूल) एवं शत्रुनाश आदि (अनुकूल) फल होते हैं। वृष मिथुन कर्क, सिंह, कन्या वृश्चिक का राहु प्रायः अच्छे फल करता है। वृष का राहु अष्टमस्थ होने पर भी मारक न होकर अति धनलाभ कराता है। सिंह या वृश्चिक का लग्नस्थ राहु स्वबाल्यपरिपालक बनाता है। व्ययेश राहु तथा व्ययेश अष्टमस्थ हो तो निश्चय ही कीर्णांग (हीनांग) करता है। सू. मं. श. रा. क्रमश: में से कोई ग्रह यदि मेष-वृष-धनु राशि पर २-४-६-१२ वें भाव में हो तो राज दण्ड मिलता है।

[केतु-राशि-फल]

मेष—चंचल बहुभाषी सुखी, सहनशील कठोर रोगी भोग-भीरु व्याकुलता कोचिन्ता माता को कष्ट।
वृष—दुःखी निरुद्यमी आलसी वाचाल धन-धान्य की हानि कुटुम्ब-विरोध राजा द्वारा काम में बाधा।
मिथुन—वातविकारी रोग अल्प सन्तोषी दाम्भिक, अल्पायु, क्रोधी शत्रुनाश विवादी या वक्ता भय से व्याकुल।
कर्क—वातविकारी रोग भूत-प्रेत से पीड़ित माता को कष्ट धार्मिक कार्य मित्र या पिता से दुःख अस्थिरता।
सिंह—बहुभाषी डरपोक, असहिष्णु, सर्पदंशन का भय कलाविज्ञ उदर में वायु रोग या चोट बुद्धि विपरीत।
कन्या—मन्दाग्नि सदारोगी मूर्ख, अपव्ययी शत्रुनाश मातृकुल से अपमान गुदा या नेत्र में रोग पशु सुख।
तुला—कुष्ठरोगी दाद-खाज से पीड़ित कामी, क्रोधी दुःखी मार्ग में क्लेश स्त्री सम्बन्ध में व्याकुलता चोरभय।
वृश्चिक—क्रोधी कुष्ठरोगी वाचाल, राजप्रिय धन लाभ में बाधायें कोई धन और सन्तान से पूर्ण सुखी।
धनु—मिथ्यावादी चंचल धूर्त धननाश तीर्थयात्रा म्लेच्छ से लाभ बाहुरोग दान कार्य में निन्दा।
मकर—प्रवासी परिश्रमशील तेजस्वी पराक्रमी, पिता को कष्ट माता का विनाश वाहन से जंघा में चोट।
कुम्भ—कर्णरोगी, दुःखी भ्रमणशील व्यय अधिक, धनी मायण-दुराल विद्वान् दरोगीक तेजस्वी उदर-रोगी।
मीन—कर्णरोगी, प्रवासी, चंचल, कार्यपरायण सुन्दर नेत्र शिक्षित उत्तम कार्य में लाभ शत्रुनाश गुदा में रोग।

भावेश-भावस्थ-फल

[लग्नेश-फल]

लग्न में—आरोग्य, बलवान्, दृढ़ शरीर, रूपवान्, सम्मानयुक्त, चंचल, मन्त्री, सुखी, विलासी, धनी, सत्कर्मशील, विख्यात, दो भार्यायुक्त, कुलदीपक, प्रथम सन्तान पुत्र, दीर्घायु और भूपति होता है।

द्वितीय में—धार्मिक, स्थूल शरीर, स्थान का प्रधान, सत्कर्मपरायण, दीर्घायु, कुटुम्ब का सुख, सुशील, स्त्रीगुणवती, लाभयुक्त, प्रथम सन्तान कन्या धनी के वशीभूत, उच्च घराने में जन्म और विद्या साधारण होती है।

तृतीय में—बन्धुओं में श्रेष्ठ, मित्रयुक्त, धर्मात्मा, दानी, पराक्रमी, अनेक सम्पत्ति वाला, दो भार्या, लग्नेश निर्बल, हो तो अपवित्र। शुभग्रह की दृष्टि हो तो मधुर-भाषी, भाइयों का पूरा सुख न हो, प्रथम संतान पुत्र और अपने उद्योग से सुखी होता है।

चतुर्थ में—राजा का प्रिय, गुणी, दीर्घायु, बहुमित्र युक्त, मातृ-पितृ भक्त, सुखी, विलासी, वाहन-सुख, भोजन सुख, पिता धनी, प्रथम सन्तान पुत्र, कभी किसी को कन्या और इसे, गृह-कार्य की चिन्ता रहती है।

पंचम में—पुत्रवान्, दानी, विख्यात, सुशील, सत्कर्म-तत्पर, त्यागी, क्षमावान, दीर्घायु, संतान को कष्ट, अच्छा स्वर, गान-कला मे आसक्ति, ज्ञानी, मानी, विचक्षणबुद्धि से लाभ और प्रथम सन्तान पुत्र होता है।

षष्ठ में—निरोगी, भूमिस्वामी, सबल, कृपण, शत्रुहन्ता, धनी, भूमि का लाभ, पुत्र, माता, मामा, पशु से सुखी, अपने द्वारा शत्रु बनाने वाला, क्रोधी, शत्रु-पीड़ित, स्वस्थता कम, कभी कार्य में असफलता, प्रथम सन्तान पुत्र, कुत्ते से भय, शुनक-भय और स्वजनों को कष्टदायक होता है।

सप्तम में—तेजस्वी, शीलवान, सच्चरित्र, विनयी रूपवान्, स्त्री शीलवती, रूपवती, तेजस्विनी, किन्तु पति के सामने ही स्त्री की मृत्यु, व्यापार द्वारा धनवृद्धि, भ्रमण-अधिक और प्रथम सन्तान सुशीला कन्या होती है।

अष्टम में—कृपण, धनसचयी, दीर्घायु, शुभ दृष्ट होने से बुद्धिमान्, यशस्वी, सौम्यस्वभाव, क्रोधी, कभी-कभी जुओं से लाभयुक्त, अल्पायु, स्त्री तथा भूमिधन में रुचि और प्रथम सन्तान कन्या होती है।

नवम में—वक्ता, तेजस्वी, सुखी, शीलवान्, पुण्यात्मा, यशस्वी, राजपूज्य, प्रतिष्ठित, धार्मिक, भाई एव मित्र से सुखी, भाग्यवान्, धनवान्, तीर्थयात्री, प्रथम सन्तान पुत्र और प्रसिद्ध होता है।

दशम में—विद्वान्, शीलवान्, राजा का मित्र, गुरुजन अर्थात् माता आदि का सेवक, उनसे सुखी, राज्य या समृद्धियुक्त, विख्यात, भोगी, सत्कर्मशील, भाई युक्त, भाग्यवान् और प्रथम सन्तान पुत्र होता है।

लाभ में—मित्र अधिक, पुत्रवान्, अर्थशास्त्र-निपुण, विख्यात, तेजस्वी, बलवान्, दीर्घजीवी, वाहनादि सुख, विवेकी (निर्बल लग्नेश में निर्बल फल), धन लाभयुक्त, व्यापार में धनवृद्धि, प्रथम सन्तान पुत्र और आरोग्यता रहती है।

व्यय में—कटुभाषी, विरोधी, विदेशवासी, सगोत्रियों से मतभेद, जैसा लाभ, वैसा ही खर्च अर्थात् आवश्यक कार्यों में धन का अभाव नहीं होता, कार्य में असफलता जिससे महाकष्ट, धूर्त, वाक्चतुर, प्रथम सन्तान पुत्र, गर्वित और भ्रमणशील होता है।

[धनेश-फल]

लग्न में—कृपण, व्यवसायी, धनी, धन न खर्च करने वाला (संचयी), भोगी राजा से माननीय, सुकर्मी स्त्री के नेत्र सुन्दर स्वार्थी श्रेष्ठ वंश में जन्म कुटुम्ब चिन्ता जिसमें अधिक परिश्रम निष्ठुर कामी और परकाम करता है।

द्वितीय में—प्रसिद्ध धनवान् धार्मिक बहु लाभयुक्त, लोभी दानी कुटुम्ब युक्त, जितेन्द्रिय हो स्त्री का योग सन्तान रहित कामी वंशवृद्धि का सुख धन-संग्रह-कर्ता निष्ठुर कामी और सेवावृत्ति करता है।

तृतीय में—व्यापारी कलह-प्रिय विनय-हीन। सूर्य हो तो बन्धु वैरी। मंगल हो तो चोर। शनि हो तो बन्धुहीन। पापग्रह हो तो उद्योगी पराक्रमी विजयी धनगर्वित। शुभग्रह हो तो उद्योगी कलह-प्रिय चोर चंचल धन-धान्य का सुख और २८-४०-४८ वें वर्ष में विशेष सुखी होता है।

चतुर्थ में—पिता के धन का भोगी साझे में व्यापार करने वाला सत्यवादी दयालु, तेजस्वी दीर्घायु। पापग्रह हो तो इसकी दशान्तर्दशा में माता को पीड़ा। शुभग्रह दृष्ट हो तो शुभफल। पापदृष्ट हो तो रोगी तथा दरिद्र होता है। धनेश केन्द्र में तथा केन्द्रेश षष्ठभाव में हो तो धनाढ्य होता है। निष्ठुर कामी और सेवावृत्ति करता है।

पंचम में—अच्छी सन्तति वाला कृपण सुखी श्रेष्ठ कार्य करने से प्रसिद्ध विलासी निष्ठुर परकाम सेवक सुखी। शुभग्रह से दृष्ट या युक्त हो तो उदार। क्रूरयुत या दृष्ट हो तो कृपण सन्तान-दुःखी और दुष्ट किन्तु विद्या द्वारा धनलाभ करता है।

षष्ठ में—धन संग्रह में निपुण भूमिस्वामी शत्रु द्वारा धनहानि रिपुहन्ता कलत्र। पापयुक्त या दृष्ट हो या धनेश पापग्रह हो तो धनहीन सदा शत्रु पीड़ित परन्तु शत्रु विजयी पराक्रमी कष्ट से जीवन निर्वाह, कष्ट से धनलाभ और गुप्त अंग में रोग होता है।

सप्तम में—स्त्री धन संग्रह करने वाली श्रेष्ठ विलास-भोग वाली आनन्ददायिनी। धनेश पापग्रह हो तो स्त्री वन्ध्या। स्वयं जातक रूपवान् निष्ठुर कामी सेवावृत्ति करने वाला चिन्तायुक्त, धनसंग्रही रोगयुक्त या वैद्य। स्त्री माता और सास के सुख से रहित पूर्वार्जित धन में कलह और व्यय होता है।

अष्टम में—कलह-प्रिय आत्मघात करने की इच्छा विलासी रूपवान् धनी भार्या-सुख में न्यूनता मित्र द्वारा धनलाभ बड़े भाई से रहित भूमि से लाभ और गड़े धन की प्राप्ति सम्भव है।

नवम में—शुभयुक्त-दृष्ट में दानी पुण्य कार्य में निरत प्रसिद्ध भाग्यवान् बली आदि शुभफल होते हैं। पाप संयोग से-कृपण या दरिद्र। धनेश शुभग्रह हो तो सुखी धनी प्रसिद्ध। पापग्रह हो तो भिक्षुकवृत्ति। बाल्यावस्था में रोगी पश्चात् सुखी केशरोगी और विदेश-भ्रमण से अधिक लाभ होता है।

दशम में—राज सम्मान मातृ-पितृ पालक, यशस्वी रूपवान पण्डित मानी कामी बहु स्त्री-युक्त राजद्वार से धन लाभ। धनेश शुभग्रह हो तो मातृ-पितृ-पालक। पापग्रह हो तो मातृ-पितृ-द्रोही पुत्र-रहित भाग्ययुक्त होता है। प्रायः प्रसिद्ध धनी, निष्ठुर कामी और सेवावृत्ति करता है।

लाभ में—उद्यमशील व्यवहार-कुशल धनी विद्वान्, मन्त्री, यशस्वी भोगी आश्रितों का प्रतिपालक, बाल्यावस्था में (कुछ शीघ्र) विवाह धनवृद्धि, धनलाभ और मित्र-द्वारा सहायता मिलती है।

व्यय में—परदेश में धनलाभ करने वाला पापी-कपटी-म्लेच्छों की संगति क्रूर बली। शुभग्रह हो तो शुभफल; किन्तु पुत्र-प्रिय धन-संग्रह में विघ्न सहस्रपति तक सम्भव खर्च से चिन्तित कुटुम्ब का सुख और व्यर्थ में धनहानि होती है।

[तृतीयेश-फल]

लग्न में—पापग्रह हो तो लम्पट, दो भाई का योग शुभ। वाचाल, स्वजनों में फूट डालने वाला, सेवावृत्ति, कुमित्रों से युक्त, मित्रों से कटुभाषी, क्रूर, परन्तु पण्डित। शुभग्रह में शुभफल, स्वभुजार्जित धन का सुख, साहसी तथा सुखी होता है। सन्तानोत्पत्ति में विलम्ब या हानि होती है। बड़े भाई को कष्ट, योगी, महत्त्वाकाक्षी और छोटे भाई का सुख होता है।

द्वितीय में—भिक्षुक, निर्धन, अल्पायु, बन्धु-विरोधी। शुभग्रह हो तो बली तथा प्रभाव-शील। धन-संग्रह में कठिनता होती है। सन्तानोत्पत्ति में विलम्ब अथवा हानि होती है। भाई का शत्रु, मामा को कष्ट, शत्रु से कलह और यश-प्राप्ति दुर्लभ होती है।

तृतीय में—साधारण बली, सर्वप्रिय, गुरु-देव-भक्त, राजकृपा, शुभाचारी, मन्त्री (प्रधान के बाद द्वितीय पद), राजद्वार से धन-लाभ, बन्धुहानि, साहसी, पराक्रमी एव स्वतंत्र-विचार का होता है। सन्तानोत्पत्ति में विलम्ब या हानि होती है। बडे भाई को कष्ट, योगी, महत्त्वाकाक्षी और साहसी होता है।

चतुर्थ में—पिता एव भाई को सुखदायक, माता का वैरी, पितृधननाशक। पापग्रह हो तो पिता के धन का भोगी। प्रायः सुखी, अपने उद्योग से उन्नति-शील तथा राजसम्मान पाता है। छोटे भाई का सुख, दो भाई का योग शुभ। कोई भाई का शत्रु और धनी होता है।

पंचम में—अच्छे बन्धु वाला, सुत या भाई द्वारा पालित, परोपकारी, विषयभोगी, क्षमावान्, सुन्दर, दीर्घायु, अपने उद्योग से उन्नतिशील, राज-सम्मान तथा इसकी सन्तान बलिष्ठ होती है।

षष्ठ में—बन्धु-विरोधी, नेत्ररोगी, रोगी, भूमि-स्वामी, धनी, शत्रुपीडित, खरीद-बिक्री का व्यापारी, माता के के कुल से सुख का अभाव, भाई का शत्रु, मामा को कष्ट, शत्रुकलह और यश-प्राप्ति दुर्लभ होती है।

सप्तम में—स्त्री रूपवती, सौभाग्य-युक्ता। क्रूरग्रह हो तो स्त्री, देवर के साथ रहने वाली। स्वयं जातक की (राजाद्वारा) मृत्यु, बाल्यावस्था में कष्टभोगी, बडे भाई को कष्ट, योगी, महत्त्वाकाक्षी, साहसी होता है, छोटे भाई का सुख, दो भाई का योग शुभ, शत्रुविजयी, परिश्रम से विवाह और परदेश-वासी होता है।

अष्टम में—क्रोधी, मृत भाई का जन्म, पापग्रह होने से ८ वर्ष तक दु ख। आयु रहने पर बाहुकष्ट। शुभग्रह हो तो धनी परन्तु रोगी। भाई को कष्ट, कार्यों में भय और कभी-कभी धनलाभ भी होता है।

नवम में—बन्धु द्वारा परित्यक्त, वनादि में निवास, पुत्रवान्, पराक्रमी। शुभग्रह हो तो सहोदर-प्रिय एवं अच्छे भाई, स्त्री द्वारा भाग्योदय, प्रवासी, धार्मिक किन्तु सुख में भी दु ख-दर्शक होता है।

दशम में—भोगी, मातृभक्त, राजपूज्य, बन्धु एव स्त्रीवर्ग का प्रिय, बड़ा भाग्यशाली, बली, पवित्र, दृढ़-संकल्प वाला, मित्रयुक्त, स्त्री क्रूर स्वभाव वाली, अपने उद्योग से सुखी और राजसम्मान पाता है। बड़े भाई को कष्ट, योगी, महत्त्वाकाक्षी, साहसी, छोटे भाई को सुख और कभी दो भाई का योग होता है।

लाभ में—राजद्वार से लाभ, बन्धु का परोपकारी, राजा से माननीय, भोगी, स्वभुजार्जित धन-सुख, किन्तु रोगी और मित्रों से सहायता मिलती है।

व्यय में—मित्र विरोधी, बन्धुओं को कष्टदायक, बन्धुओं से दूर रहने वाला, प्रवासी, खर्चीला-स्वभाव, पिता का बुरा स्वभाव। पापग्रह होने से माता को कष्ट एव राजा से भय। स्त्री द्वारा भाग्योदय, धार्मिक किन्तु सुख में भी दु ख-दर्शक होता है। अपने उद्योग से धनी तथा कोई भाई का अल्प सुख पाता है।

नोट—तृतीयेश, वृश्चिक राशिस्थ हो अथवा तृतीयेश, लग्न या तृतीय भाव से त्रिक में हो तो प्रायः सहोदर का सुख नहीं होता।

[सुखेश-फल]

लग्न में—पिता-पुत्र में परस्पर स्नेह कभी पिता की ओर से शत्रुता पिता के नाम से इसकी ख्याति रोगहीन भोगी यशस्वी विद्वान् सभा में मूक और पितृ-धन का त्यागी होता है।

द्वितीय में—पिता का विरोधी। शुभग्रह हो तो पितृपालक, विख्यात। हाँ पिता को इसके धन का सुख नहीं होगा। चतुर्थेश शुभग्रह युक्त हो तो पितृभक्त, धनी विद्वान्। पापयुक्त हो तो कृपण, पितृविरोधी किन्तु धन-धान्य का सुख पाता है।

तृतीय में—मातृ-पितृ-हन्ता या माता-पिता का शत्रु या नाशक, परन्तु पितृ-बन्धु का प्रतिपालक, विख्यात-कुल, साहस एवं पराक्रम। शुभग्रह युक्त हो तो अनेक मित्र एवं स्वार्जित धन का सुख। निरोगी धनी और यशी होता है।

चतुर्थ में—भूमिस्वामी मानी, धार्मिक, सुखी विख्यात पितृ-भक्त पिता के लिए लाभदायक, सेवकयुक्त वाहनसुख चतुर शीलवान धनी मन्त्री और चतुर होता है।

पंचम में—पितृ-धन का भोगी धार्मिक, सर्वजन-प्रिय राजा द्वारा विख्यात सत्पुत्रवान पुत्रपालक, पुत्री की दीर्घायु, वा कन्या-रहित होता है।

षष्ठ में—पितृ-सम्पत्ति-नाशक, पितृ-विरोधी पितृ-दोष-कारक, बहु-शत्रु-युक्त। शुभग्रह हो तो इसका पुत्र धन-संचयी होगा। पापग्रह हो तो मामा द्वारा दुःख यात्रा अधिक, माता का शत्रु तथा मित्र-रहित होता है।

सप्तम में—विद्वान् पितृ-धन-त्यागी वैद्यक जानने वाला सभा में मूक, देववत् आकृति धनी स्त्री-प्रिय। पापग्रह हो तो पुत्रवधू से विरोध दुष्ट या कठोरचित्त। शुभग्रह हो पुत्रवधू-पालक, भूपति और कामातुर होता है।

अष्टम में—पापग्रह हो तो क्रूर रोगी दरिद्र कुकर्मी मृत्यु-प्रिय पिता से अल्पसुख। शुभग्रह-युक्त हो तो वाहनादि नाश मातृकष्ट कोश-हानि जलभय भूमि से लाभ कभी उत्तम स्थिति की हानि होती है। जारज या नपुंसक होता है।

नवम में—भाग्यवान् विद्वान् पितृ-धर्म-पालक पितृ-भक्त, मनुष्यों का स्वामी तीर्थयात्री क्षमाशील परदेश में सुखी भूमि-विक्रय से लाभ न हो मातृ-पितृ-विरोधी किन्तु धार्मिक होता है।

दशम में—राजसम्मान सुखी प्रसन्न-चित्त क्षमाशील माता-पिता से सुखी। पापयुक्त होने से विपरीत फल। सुखेश पापग्रह हो तो मातृ-त्यागी अपनी कन्या का प्रिय। शुभग्रह हो तो अन्य का सेवक होता है।

लाभ में—धनी स्वभुजार्जित धन-लाभ पितृ-पालक परदेशयात्री उदार गुणी दानी। सुखेश पापग्रह हो तो जार-पुत्र मित्ररोगी किन्तु यशस्वी होता है। कभी आकस्मिक लाभ भी होता है।

व्यय में—परदेशवासी दुःखी पितृ-सुख-हीन। सुखेश पापग्रह हो तो जातक जारज या नपुंसक। पापयुक्त हो तो पिता परदेशवासी। शुभयुक्त हो तो पिता सुखी। घर बनाने में अधिक खर्च होता है। १२ वर्ष तक में माता की मृत्यु। किसी को दूसरी माता से भाई का सुयोग होता है। १८ से ३६ वर्ष तक के मध्य में पिता की मृत्यु सम्भव है।

नोट—चतुर्थ भाव में मंगल भूपन देता है। गुरु-शुक्र, मातृकष्टदायक है। राहु माता को शरीरकष्ट। चतुर्थेश शुक्र होकर चतुर्थस्थ हो तो मन्त्री व मातृसुख वाहनसुख और मकान का निर्माण कराता है। चतुर्थेश लग्नस्थ हो तो उत्तम स्थिति की हानि और कभी भूमि द्वारा लाभ देता है।

[पुत्रेश-फल]

लग्न में—बुद्धिमान्, विख्यात, शास्त्रवेत्ता, कृपण, स्वार्थी, संगीत-प्रिय, सुकर्मकर्ता, विद्या एवं मन्त्र का प्रेमी, २२ वर्षायु में सुतोत्पत्ति तथा पुत्र भी राजविद्या में चतुर, स्वय को साधारण विद्या, गणित या यज्ञकार्य में संल्लग्न, दो सन्तान का सुख, कभी पुत्रशोक और धार्मिक होता है।

द्वितीय में—धनी, संगीत-प्रिय, उच्चपदस्थ, विख्यात, कुलपति से द्रव्यलाभ, कुटुम्बविरोधी, दुःखी-चित्त, क्रोधी, कास-श्वास-रोगी। पापग्रह हो तो धनहीन। शुभयुक्त हो तो द्रव्याधीश, पुत्रवान, दीर्घायु तथा अनेक कन्याएँ होती हैं।

तृतीय में—मिष्टभाषी, बन्धुओं में यशस्वी, मायावी, पराक्रमी। इसकी सन्तान, अपने चाचा का पालन करेंगी, आप किसी को कुछ न देंगे। शुभग्रह हो तो शुभकार्य में सिद्धि, सुखी, शान्त, नम्र किन्तु सन्तान-कष्ट होता है।

चतुर्थ में—बुद्धिमान्, मन्त्री, पितृ-व्यापार में आसक्ति, माता एवं गुरु का भक्त, विद्वानों को धन देने वाला, धनाढ्य। यदि पचमेश के साथ चन्द्र हो और पचम में गुरु हो तो ३६ से ४२ वर्ष के मध्य पौत्री तथा ४५ वर्ष तक पौत्र होता है।

पचम में—बुद्धिमान, मानी, वाक्चतुर, सुतयुक्त, विख्यात, धनाढ्य, श्रेष्ठ, धार्मिक, किन्तु किसी पुत्र की अल्पायु। यदि पचमेश पचम में तथा चतुर्थ भाव में सुखेश के साथ चन्द्र हो और पंचम में गुरु हो तो ३६ से ४२ वर्ष के मध्य में पौत्री तथा ४५ वर्ष तक में पौत्र होता है।

षष्ठ में—शत्रुयुक्त, रोगी, कभी पुत्र-कन्या दोनों का सुख, सन्तान से विरोध, सन्तान से शत्रुता, मानहीन, धन-हीन, शत्रु से भी मिलने वाला, दोषयुक्त, दृढ़कार्य। पापयुक्त हो तो धन एवं पुत्ररहित, किसी का दत्तक पुत्र बने या स्वयं को दत्तकपुत्र लेना पड़े, बुद्धि-भ्रंश या साधारण विद्या योग होता है।

सप्तम में—स्त्री सुशीला, पुत्रवती, सुन्दरी, सौभाग्यवती, प्रियभाषिणी, ज्येष्ठ जनों की आज्ञाकारिणी, क्षीण कटि वाली। जातक मायावी, पिशुन (चुगलखोर), कृपण, विद्या-विवादी किन्तु सन्तान से सुखी होता है।

अष्टम में—सन्तान कार्य में अधिक खर्च, २५ वें वर्ष में या ३६ से ४० वर्ष तक सन्तान योग, स्त्री से दुःखी, कटुभाषी, धनहीन, मूर्ख. सन्तान या भाई अगहीन, अनेक कन्याओं का जन्म, सन्तान के २४ वें वर्ष में इसे महाकष्ट, सन्तान से विरोध, साधारण विद्यायोग, दो पुत्र का सुख। यदि सुतेश-रन्ध्रेश अन्योन्यभावस्थ हो तो पुत्र तथा विद्या का साधारण योग और कभी दो कन्या का सुख पाता है।

नवम में—बुद्धिमान्, विद्वान्, गणितज्ञ, कवि, राजमान्य, रूपवान्, नाटक-प्रिय, वाहनसुख, ग्रन्थ-रचयिता, कुल-दीपक, प्रसिद्ध। नवमेश-पुत्रेश अन्योन्यभावस्थ हों तो राजा या शिक्षक या उपदेशक होता है।

दशम में—सत्कर्मरत, विख्यात, मातृयुक्त, सुखी, राजातुल्य, सन्तान-युक्त, राजकर्मचारी, वनिता-प्रिय, ग्रन्थ-रचयिता, कुल-दीपक, अनेक प्रकार से धनलाभ, यशस्वी, कोई शिक्षक या उपदेशक, वेतन द्वारा सुख। दशमेश-सुतेश अन्योन्यभावस्थ—त्रिकोणेश से दृष्ट होने पर राजा होता है।

लाभ में—शूर, विद्वान्, धनी, पुत्रवान, ग्रन्थकर्ता, जन-वल्लभ, सत्कर्म-फल-भोगी, गीतज्ञ, कला-निपुण और बहुमित्र-युक्त होता है।

व्यय में—पापग्रह हो तो सन्तान-रहित। शुभग्रह हो तो पुत्रवान्, किन्तु सुत से सन्ताप, परदेश-गामी। अधिक व्यय करने वाला, दो कन्याओं से सुखी, ४१ से ४४ वर्ष तक के मध्य में दो पुत्र भी हो सकते हैं किन्तु स्त्री को महाकष्ट होता है। पुत्रचिन्ता अवश्य। कुबुद्धि के कारण संकट एवं पुत्रहानि होती है।

नोट—(१) पचमेश के साथ राहु होने से पुत्र-कन्या दोनों का जन्म किन्तु किसी सन्तान की हानि होती है।
(२) यदि पंचमेश या चतुर्थेश के साथ बुध या लग्नेश, लग्न या सुखभाव में बलिष्ठ हो, पाप-दृष्ट न हो तो, सन्तान तथा विद्या द्वारा यशस्वी होता है।

[पंचमेश-फल]

लग्न में—स्वस्थ सबल बंधसरीस रिपुहन्ता वाचाल, कुटुम्ब को कष्टदायक, निर्भय परा-मोहने-मुग्ध, धनी, दुखी पुत्र के लिए दुःखी, अस्वस्थ या अपयशभोगी तथा कोई कुकर्मों का शौकीन होता है।

द्वितीय में—दुष्ट चतुर, धन-संग्रही उच्चपदस्थ, विख्यात वाचाल रोगी कठिनता से धन-संग्रह में समर्थ, कृश शरीर परदेश में सुखी, एकनिष्ठ पुत्रद्वारा धननाश, गृह-कलह, धन प्राप्ति में विघ्न तथा कोई धनहीन होता है।

तृतीय में—क्रोधी, धनी भाइयों से त्यक्त, पिशुन, क्षमाशील, कुसंगति, पितार्जित धन का नाशक। पापग्रह हो तो स्वजनों को कष्टदायक, पितृ-धन-विनाशी ग्रामवासियों को कष्टदायक और प्रायः पराधीन (नौकरी) जीवन होता है।

चतुर्थ में—पिता-पुत्र में परस्पर कलह, पिता रोगी पिता के धन की हानि, विवाद-युक्त, पिता के धन से धनी मातृकष्ट अस्थिर लक्ष्मी मनस्वी क्रोधी पिशुन (चुगलखोर) और शत्रुनाश करता है।

पंचम में—पिता-पुत्र में विरोध पुत्रहीन राजकोप। पापयुक्त हो तो पुत्र-मृत्यु। शुभयुक्त हो तो धनी स्वकार्य में चतुर दयालु सुखी, अस्थिर धन और सौम्य स्वभाव वाला होता है।

षष्ठ में—रोगी, सुखी, कृपण, दुःस्थान में निवास आजन्म दुःखी नहीं होता (कभी सुखी) जातिवर्ग से शत्रुता, स्त्री अनुरागी तथा अन्य लोगों से भी मित्रता होती है।

सप्तम में—पापग्रह हो तो स्त्री-प्रचण्ड स्वभाव वाली, बड़ी विरोधिनी, तापकारिणी। शुभग्रह हो तो स्त्री वन्ध्या रोगिणी या स्त्री का गर्भपात। पापयुक्त हो तो स्त्री कामातुरा कलहकारिणी। शुभयुक्त हो तो सन्तान-युक्त यशस्वी धनी गुणी मानी शत्रुनाश, किन्तु शत्रु अधिक होते हैं। गृह-कलह-युक्त और कुकर्मों का शौकीन होता है।

अष्टम में—रोगी जीव-हिंसक, परस्त्रीगामी। सूर्य हो तो पशुभय राजभय। चन्द्र हो तो आत्महत्या या हठात् मृत्यु। मंगल हो तो स्त्री को सर्पभय। बुध हो तो स्त्री को विषभय। गुरु हो तो शत्रु-पीड़ा दुष्ट-भय। शुक्र हो तो नेत्रपीड़ा। शनि हो तो संग्रहणी रोग, वातदोष स्त्री को क्लेश। गुप्त-धन का लाभ हो किन्तु अल्पायु या रोगी रहता है।

नवम में—पापग्रह हो तो विकलांग विरुद्ध-वादी मायक, गुरु-देवता आदि की अवज्ञा करने वाला पुत्रहीन, धन पुत्र सुखादि से विहीन काष्ठ-पाषाणादि का व्यापारी कभी हानि कभी लाभ और शत्रु का विनाश होता है।

दशम में—माता का अप्रिय या विरोधी धार्मिक, पुत्रपालक, व्यापार में परिवर्तन साहसी परदेश में सुखी वक्ता एवं स्वकर्म-नैष्ठिक। शुभग्रह हो तो कुछ शुभफल। शुभयुक्त हो तो पुत्र द्वारा स्वयं का पालन स्वयं पितृघाती अन्य मनुष्यों का पालक शत्रुनाश, राजदण्ड और अधिक धन-व्यय होता है।

लाभ में—धनी गुणी, मानी, साहसी, सन्तानरहित। पापग्रह हो तो शत्रु से मृत्युभय चोरभय पशु से लाभ दुष्ट-संगति। शुभयुक्त हो तो शुभफल। सन्तान कष्ट या पुत्र-मृत्यु और कुकर्मों का शौकीन होता है। प्रायः रिपु नष्ट हो जाते हैं।

व्यय में—पुत्रकष्ट पशुनाश द्रव्यहानि जीवहिंसक, परस्त्रीगामी, रोगी, धन-धान्य के लिए उद्योगी लक्ष्मी से मदान्ध राजदण्ड योग और अधिक व्यय होता है॥

[सप्तमेश-फल]

लग्न में—परस्त्रीगामी, भोगी, रूपवान , स्त्री-लोलुप, विचक्षण, धीर, वातरोग से पीडित, दो भार्या का योग, ३६ से ४० वर्ष तक के मध्य समय में स्त्री को मृत्युवत कष्ट होता है।

द्वितीय में—सुखहीन, दीर्घसूत्री, आलसी, अनेक स्त्रीसंयोग, सुतविहीन। स्त्री की दुष्टप्रकृति, दुःखिनी बुद्धिमती, गर्व से पति की अवज्ञा करने वाली, आपका धन, स्त्री के हाथ में रहेगा, स्त्री कार्य में अधिक व्यय होता है। शुभग्रह से स्त्री सुलक्षणा, पति की भाग्य बढाने वाली एवं वंशवृद्धि करने वाली होती है।

तृतीय में—पुत्र, बन्धु आदि का प्रिय, दुःखी, आत्म-निर्भर-शक्ति-सम्पन्न, स्त्री-मृतपुत्रा, कभी कन्यासुख, देवार्चन से पुत्रसुख। पापग्रह हो तो स्त्री रूपवती एव देवर से प्रेम किन्तु मृतपुत्र का जन्म होता है।

चतुर्थ में—चचल, स्नेही, पितृ-वैर-साधक, धर्मात्मा, सत्यवादी, दन्त-रोगी, पिता कठोरभापी किन्तु पुत्र-वधू का पालक, स्त्री पतिव्रता, मतान्तर से किसी की स्त्री दुश्चरित्रा होती है।

पंचम में—भाग्यशील, पुत्रवान्, साहसी, गुणी, धनी, यशी, मानी, किन्तु दुष्ट-बुद्धि। आपका पुत्र, अपनी माता का पालक, सन्तानरहित या विवाहरहित या स्त्री को कष्ट होता है।

षष्ठ में—स्त्री के साथ शत्रुता, स्त्री रोगिणी अथवा क्रोधवती। पापग्रह हो तो क्षयरोग का भय अथवा मृत्यु। स्त्री का अल्प सुख, ३६ वर्ष तक दो स्त्री का योग, स्वयं रोगी, स्त्री-प्रिय किन्तु भार्या-चिन्ता रहती है।

सप्तम में—प्रेमी, निर्मल-स्वभाव, प्रसन्न-चित्त, कृपालु, तेजस्वी, स्वस्थ, शीलवान, यशस्वी, प्रियभापी. दीर्घायु, परस्त्रीगामी, वातरोगी, दो स्त्री का योग और पुत्र-कन्या का सुख होता है।

अष्टम में—वेश्यागामी, परस्त्री-प्रेमी, स्व-स्त्री से विरोध, कलही, क्रोधी, स्त्री रोगिणी। स्वयं रोगी किन्तु स्त्री-लोलुप, नित्य ही भार्या-चिन्ता, कभी-कभी स्त्री का थोडा सुख मिलता है और विवाह में अधिक खर्च होता है।

नवम में—तेजस्वी, शीलवान्, कला-निपुण, स्त्री शीलवती, तेजस्विनी। पापग्रह हो तो स्त्री विकृत रूपवाली, या वन्ध्यावत्। लग्नेश की दृष्टि हो तो तपोबल से भाग्यवान्, प्रबल तार्किक। अनेक स्त्री सयोग, स्त्री-कार्य में सर्वदा अधिक व्यय तथा दीर्घसूत्री होता है।

दशम में—राजविद्रोही, लम्पट, कठोर-भाषी, क्रूरप्रकृति। पापग्रह हो तो ससुर महादुष्ट, किन्तु जातक, ससुर एव दुष्टजनों का अनुचर, अपने कुटुम्ब एव स्त्री से प्रेम-रहित। मतान्तर से-सत्यवादी, धर्मात्मा, दन्तरोगी किन्तु स्त्री पतिव्रता, व्यापार में आसक्ति। मतान्तर से किसी की स्त्री दुश्चरित्रा तथा मृतपुत्र का जन्म होता है।

लाभ में—स्त्री रूपवती, शुभशीलयुक्ता, भक्ता, प्रसव समय में विशेप प्रेम करने वाली। कभी किसी स्त्री की प्रसव काल में मृत्यु। स्त्री-मृतवत्सा, कन्या सुख। देवार्चन से पुत्रसुख। स्त्री को पिता की ओर से किसी प्रकार का सन्देह रहे। २० वर्ष तक में विवाह हो जाता है।

व्यय में—गृह, बन्धु से रहित, खर्च से व्याकुल, चोरभय। स्त्री चंचला, दुर्मुखी, अपव्यय करनेवाली, कभी घर से भी निकल जा सकती है। दरिद्र, कृपण, वस्त्र से जीविका, निर्धनी और जार-कन्या ही स्त्री होती है।

नोट—यदि सप्तमेश, सूर्य-मगल के साथ लग्नस्थ हो तो कन्या जन्म अधिक अथवा स्त्री वन्ध्या होती है। सप्तम भाव में वृष, कर्क, कन्या, वृश्चिक, मकर में से कोई राशि हो तो किसी की स्त्री, घर से भाग जा सकती है।

[रन्ध्रेश-फल]

लग्न में—बहुविघ्नयुक्त, दीर्घरोगी चोर, शुभ-भोजन-हीन, दुःखी, ज्वररोगी, राजकृपा से धनलाभ हो मार्गयोग वाद-विवाद से युक्त होता है। यदि सूर्य-युक्त हो तो २४-२८-३१ वें वर्ष में देहकष्ट तथा ४८ वर्ष की पूर्णायु, अन्यथा ७१ वर्ष की पूर्णायु होती है।

द्वितीय में—शिक्षित या साक्षर होते हुए भी चोर-प्रकृति। शुभग्रह हो तो शुभफल किन्तु अन्त में राजभय से मृत्यु तक सम्भव। पापग्रह हो तो अल्पायु, धनलाभ में असमर्थ अनेक शत्रुयुक्त, परधनापहारी। गया हुआ द्रव्य पुनः न मिले। ६४ वर्ष की आयु और १२-२४-२८ वें वर्ष में महाकष्ट होता है।

तृतीय में—बन्धु मित्र का विरोधी अंगहीन, दुर्बल, चंचल, सहोदर-हीन कटु-भाषी ६४ वर्ष की आयु, २४-३२-३६ वें वर्ष में महाकष्ट। कुमार्ग से धनलाभ पराधीनजीविका और भ्रातृसुखरहित होता है।

चतुर्थ में—पैतृक धन का नाशक, अथवा पिता-पुत्र में मतभेद पिता रोगी, अचानक (सट्टा, लाटरी पड़ा हुआ भूमिष्ठ द्रव्य, वसीयतनामा द्वारा) द्रव्यलाभ होता है। ७१ वर्ष की आयु। यदि सूर्य हो तो २४-२८-३६ वें वर्ष में देहकष्ट एवं ४८ वर्ष की पूर्णायु होती है।

पंचम में—पुत्रमृत्यु या पुत्र का कपटी स्वभाव स्थिर-बुद्धि, चंचल प्रकृति, द्रव्य-युक्त। शुभग्रह हो या शुभयुक्त हो तो पुत्रादि की वृद्धि एवं शीलयुक्त सन्तति, जुआँ खेलने वाला (सट्टा-लाटरी आदि का शौकीन)।

षष्ठ में—सूर्य हो तो राजविद्रोही, चन्द्र से रोगी मंगल से क्रोधी बुध से सर्पभय गुरु से शरीरकष्ट, शुक्र से नेत्ररोगी शनि से दुःखी, मुखरोगी, शुभ-दृष्ट चन्द्र से कष्टरहित। राहु-बुध योग से कष्ट या अल्पायु योग। ६० वर्ष की पूर्णायु तथा जल या सर्प से भय होता है।

सप्तम में—गुह्यरोगी दुष्ट-स्त्री-संयोग। पापग्रह हो तो पापी विरोधी, मार्गद्वेषी तथा द्वेष से मृत्यु तक सम्भव दो विवाह। मंगल-रन्ध्रेश योग में अच्छी स्त्री द्वारा चित्त शान्ति। ७१ वर्ष की पूर्णायु। यदि सूर्ययुक्त हो तो २४-२८-३१ वें वर्ष में देहकष्ट तथा ४८ वर्ष की पूर्णायु होती है। शुभ भाव में धन का नाश होता है।

अष्टम में—राहु-बुध योग से कष्ट व्यापारी व्याधि रहित, कूटनीतिज्ञ विख्यात कपटी कुल में जन्म स्त्री दुश्चरित्रा ४६ वर्ष की पूर्णायु। लग्नेश युक्त हो तो दीर्घायु होती है। रन्ध्रेश चन्द्र हो तो १२ वें वर्ष में पितृकष्ट होता है। इसकी अल्पायु नहीं होती।

नवम में—हिंसक पापी संग-रहित बन्धु-हीन स्नेह-शून्य पूज्य व्यक्तियों से विरोध मुखरोगी माता या पिता का अल्प सुख। ७१ वर्ष की पूर्णायु। ४ से ८ वर्ष तक भयंकर कष्ट होता है। स्त्री-मृतवत्सा या वन्ध्या होती है।

दशम में—राजकर्मचारी दुष्ट आलसी क्रूर, बन्धु-रहित माता की अचिरायु, बारह पुत्र-सुखी। ७१ वर्ष की पूर्णायु। यदि सूर्य-युक्त हो तो २४-२८-३१ वें वर्ष में देहकष्ट तथा ४८ वर्ष की पूर्णायु होती है।

लाभ में—बाल्यकाल में दुःखी पश्चात् सुखी। शुभग्रह हो तो दीर्घायु। पापग्रह हो तो अल्पायु, नीच-संगति, अस्थिर लक्ष्मी। ६४ वर्ष की आयु। २४-३२-३६ वें वर्ष में महाकष्ट होता है।

व्यय में—चोर क्रूर नीच आत्मलाभ से हीन विकल-देह, स्वेच्छाचारी कटु-भाषी चतुर किन्तु बाघ सर्प मृगादि रक्षादि द्वारा मृत्यु तक सम्भव अथवा मृतशरीर का भक्षण, काक आदि पक्षिगण करते हैं। ६ वर्ष की पूर्णायु होती है।

नोट—अष्टमेश केन्द्र में हो लग्नेश निर्बल हो तो २० या ३२ वर्ष की पूर्णायु होती है। रन्ध्रेश नीचस्थ हो रन्ध्र भाव में पापग्रह हों, लग्नेश निर्बल हो तो अल्पायु। रन्ध्रेश पापयुक्त हो, रन्ध्र भाव में पापग्रह हों व्यय में क्रूरग्रह हों तो जन्म समय में (शीघ्र) मृत्यु होती है।

नवमेश–फल

लग्न में—बुद्धिमान्, ज्येष्ठजन तथा देवों का भक्त, अल्प-भू-सम्पत्ति, वीर, कृपण, परिमितभोजी, पवित्र, राजकर्मचारी, विद्वान्, भाग्यवान्, धनाढ्य। लग्नेश-नवमेश अन्योन्यभावस्थ होने से धार्मिक एवं राज-सम्मानयुक्त तथा परदेशवासी होता है। लग्नस्थ नवमेश पर गुरु की दृष्टि हो तो राजा द्वारा वन्दनीय। सुखेश-भाग्येश लग्नस्थ हों तो सर्वसम्पत्ति युक्त और वाहन से सुखी होता है।

द्वितीय में—विख्यात, शीलवान्, धनवान्, विद्वान्, सत्यवादी, पुण्यात्मा, मानी, सत्पुत्रवान, शान्ति-साधन मे तत्पर, पशु का स्वामी, पशु द्वारा चोट या विकलांग होना सम्भव, १६ से २५ वर्ष तक कष्ट, ततः सुखी होता है। धनेश-भाग्येश अन्योन्यभावस्थ होने से ३२ वर्षायु से भाग्योदय, वाहन, कीर्तियुक्त होता है, अन्यथा सदा भाग्य-चिन्तक होता है।

तृतीय में—अनेक पत्नी वाला, बन्धु तथा स्त्री का प्रिय, सदाचारी, धनी, गुणी, विद्वान, सदा भाग्यचिन्तक होता है।

चतुर्थ में—पितृ-भक्त, पितृ-यश से विख्याति, उत्तम कार्यासक्त, भूसम्पत्तिवान्, अधिकारी, बन्धु-वर्ग का उपकारी, देव-पूजा-रत, तीर्थयात्री, मन्त्री, सेना आदि का कार्यकर्ता, भाग्यवान्, धनाढ्य, वक्ता, क्रोधी और साहसी होता है।

पंचम में—रूपवान्, पुत्रयुक्त, यशस्वी, देव-गुरु-भक्त, सुशील, बुद्धिमान्, भाग्यशील, गम्भीर, धैर्ययुक्त और मनुष्यों का प्रिय होता है।

षष्ठ में—शत्रु के निकट नम्र, धर्म-हीन, विलासिता से अशक्त-शरीर, निद्रालु (आलसी), निन्दित कीर्तियुक्त, भाग्य-हीन, मामा के सुख से विहीन और जेष्ठ भाई का सुख नहीं होता।

सप्तम में—स्त्री सत्यभाषिणी, रूपवती, मिष्ट-भाषिणी, सुशीला, पुण्यवती, श्रीमती। जातक बातचीत करने में चतुर, भाग्यवान् और धनाढ्य होता है।

अष्टम में—जीवहिंसक, गृह-बन्धु-रहित, दुष्ट, क्रूर, पुण्य-विहीन, कुसंगतियुक्त। पापग्रह हो तो नपुंसक। सुखेश-नवमेश रन्ध्रस्थ हों तो, भाग्य-विहीन (दरिद्र), पापी, अज्ञानी और परान्न-भोजी होता है। शुभ सयोग से भाग्यवान् हो सकता है।

नवम में—बन्धु-प्रेमी, अतिबली, दाता, देव-गुरु-भक्त, कलत्र-प्रेमासक्त, विवाद से दूर, स्वजन-प्रेमी, सुन्दर रूपवाले, धन-धान्ययुक्त, अनेक भाइयों का सुख, गुणी। नवमेश-लग्नेश अन्योन्यभावस्थ होने से परदेश में राजमानयुक्त तथा धार्मिक होता है।

दशम में—राजकर्मचारी, इससे धनी, धर्मद्वारा विख्यात, मातृ-सेवक, कर्मवीर, सद्धर्म-शील, क्रोध-रहित, मन्त्री या सेनापति, वाक्चतुर (हाजिर जवाब), समय पर अच्छी सूझ-बूझ वाला, भाग्यवान, वक्ता, क्रोधी, साहसी। कर्मेश-भाग्येश के सम्बन्ध से राजयोग होता है।

लाभ में—धनी, राजकृपा से लाभ, धार्मिक, पुण्य-कर्म से विख्यात, दानी, स्नेही, धैर्ययुक्त, गम्भीर, दीर्घायु-भोगी और मनुष्यों का प्रिय होता है।

व्यय में—सुन्दर, विद्वान्, विदेश में सम्मानित। पापग्रह हो तो मन्दबुद्धि या धूर्त-प्रकृति। भाग्यहीन, मामा तथा बड़े भाई के सुख से रहित होता है।

नोट—भाग्येशस्थ राशीश सूर्य में २२ वें वर्ष, चन्द्र में २४ वें वर्ष, मंगल में २८ वें वर्ष, बुध में ३२ वें वर्ष, गुरु में १६ वें वर्ष, शुक्र में २५ वें वर्ष, शनि में ३६ वें वर्ष के लगभग, भाग्य-कर्म-व्यापार में उन्नति होती है। भाग्यभाव या भाग्येश या कर्मभाव में या कर्मेश या भाग्येशस्थ राशीश या कर्मेशस्थ राशीश के साथ यदि, राहु या केतु हों तो ४२ वें वर्ष के लगभग उन्नति होती है।

[दशमेश-फल]

लग्न में—मातृ-वैरी लोभी, पितृ-भक्त बाल्यावस्था में पितृ-रहित तथा रोगी, पश्चात् सुखी, कवि और सर्वदा धनवृद्धि होती है।

धन में—माता से पालित, माता का अनिष्टकारी, अल्पधनी अल्प-कर्मी लोभी। शुभग्रह या शुभयुक्त हो तो सुखी, धनी, गुणी धार्मिक, स्वयं तथा माता-पिता के लिए शुभफल मनस्वी और सभी सुखों से सम्पन्न होता है।

तृतीय में—माता तथा स्वजनों से विरोध मातुल द्वारा प्रतिपालित बड़ा कार्य करने में असमर्थ सेवा-कर्म-निरत गुणी मनस्वी वाग्मी, सद्धर्म-रत मनस्वी और सभी सुखों से सम्पन्न होता है।

चतुर्थ में—माता-पिता को सुख सबको आनन्ददायक राज-कृपा ज्ञानी, धार्मिक, सुखी और पराक्रमी होता है।

पंचम में—विद्वान्, राज-कृपा, शुभकार्यकर्ता, गीत-नाद-प्रिय, अल्पसुखी, भाग्यवान् सत्यवादी, आपके पुत्र का पालन आपकी माता करेगी धनी, सन्तान-सुखी। गुरु से युक्त हो तो ११ से १६ वर्ष तक में ही उन्नतिशील होता है।

षष्ठ में—निजगुण द्वारा विख्यात राज-कृपा पितृ धन-भोगी। पापग्रह हो तो बाल्यावस्था में कष्ट, पश्चात् निरोगी विवाह युक्त, कामासक्त सुखी धनी, सत्य-प्रिय शत्रु से बचने पर दीर्घायुभोगी। शत्रु या राजा से भय होता है।

सप्तम में—स्त्री पुत्रवती सत्यभाषिणी, रूपवती अपनी सास की सेवा में निरत। स्वयं मनस्वी गुणवान्, धार्मिक और सभी सुखों से सम्पन्न होता है।

अष्टम में—चोर, धूर्त मिथ्यावादी दुष्ट माता को सन्तापकारी किन्तु दीर्घायु नहीं पाता। शुभग्रह होने से शुभफल। कोई राजाद्वारा भय-कष्ट पाता है।

नवम में—अच्छे बन्धु से युक्त, सच्चरित्र, शीलवान्, मित्रयुक्त, पराक्रमी, धनी। माता शीलवती, धार्मिका सत्यवादिनी सुन्दरी। स्वयं राजयोग से युक्त और वेतन द्वारा सुख पाता है।

दशम में—माता को सुखदायक, मातृकुल को अधिक सुखदायक, देवार्चनरत धर्मात्मा सत्यवादी बुद्धिमान् चतुर, बली राजा से माननीय धनलाभयुक्त, सुखी ज्ञानी और पराक्रमी होता है।

लाभ में—सम्मानयुक्त दीर्घायु, मातृ-सुख विशेष, विजयी धन-लाभकर्ता सन्तान-युक्त सेवकयुक्त चातुर्य-गुण-सम्पन्न। माता सुखिनी मानिनी आपके सन्तान की पालिका। धनी और सुखी होता है।

व्यय में—बली सत्कर्मचारी, कुटिल—बुद्धि, कर्कश स्वभाव मातृ—सुख—रहित। पापग्रह हो तो विदेश यात्री शत्रु या राजा से भय होता है। पिता की चिन्ता अधिक, २८ वें वर्ष में धन-चिन्ता अधिक और ३६ वें वर्ष में धनी होता है।

नोट—

यदि कर्मेश सूर्य हो तो २२ वें वर्ष चन्द्र हो तो २४ वें वर्ष मंगल हो तो २८ वें वर्ष, बुध हो तो ३२ वें वर्ष गुरु हो तो १६ वें वर्ष शुक्र हो तो २५ वें वर्ष शनि हो तो ३६ वें वर्ष के लगभग व्यापार भाग्य कर्म में उन्नति होती है। राहु-केतु के कारण ४२ वें वर्ष में उन्नति होती है। (जबकि कर्मभाव/या कर्मेशस्थ राशीश के साथ राहु-केतु बैठा हो)।

[लाभेश-फल]

लग्न में—अल्पायु, कला-कुशल, वीर, दानी, स्वजन-प्रिय, सौभाग्यशाली, पुत्रवान्, राजकृपा, वाग्मी, विद्वान्, काव्य-प्रेमी, प्रतिदिन उन्नतिशील। तृष्णा-दोष के कारण मृत्यु। धनी, सात्विक, महान्, समदृष्टिवाला, वक्ता और कौतुकी होता है।

द्वितीय में—पापग्रह हो तो अल्पायु, दरिद्र, चोर, दु:खी, रोगी, अल्प-भोजी, लाभ-व्यय समान। शुभग्रह हो तो दीर्घायु, धनी, प्राय. अनेक सुखभोगी, कवि, पुत्रवान्, धार्मिक और सफल जीवन होता है। कोई व्यापार द्वारा बहुत धन लाभ करता है।

तृतीय में—शुभग्रह हो तो बन्धुपालक, प्रेमी, अच्छे बन्धु वाला, रिपु-कुल-हन्ता, तीर्थ-यात्री, अनेक-कार्य-कुशल, शूलरोगी। पापग्रह हो तो बन्धुवैर तथा ध्वंसकारी किन्तु बहुधन लाभकारी होता है। कठिनता से धन का सचय कर पाता है।

चतुर्थ में—दीर्घायु, पितृ-भक्त, समयोपयोगी कार्यकर्ता, धार्मिक, धनलाभ, सुभग, सुन्दर, पुत्रवान्, ४० वें वर्ष में विशेष लाभ होता है। मातृ सुख, राजा से सुख, उन्नतिशील, हर्षित तथा यशस्वी होता है।

पंचम में—पिता-पुत्र में परस्पर-स्नेह, पितृ-तुल्य गुणी, अल्पाहारी। मतान्तर से अल्पायु या तृष्णाजीवी। क्रूरग्रह होने से विपरीतफल। प्राय. अनेक सुख-सम्पन्न, पुत्रवान्, धार्मिक, सफलता पूर्ण जीवन होता है। ४० वें वर्ष में विशेष लाभ होता है। विद्वान्, सत्कार्यकर्ता तथा हर्षित होता है।

षष्ठ में—शत्रु अधिक, दीर्घरोगी, वैरी, चतुर, सेनाकार्य में पटु। चोर द्वारा मृत्यु सम्भव। पापग्रह हो तो देश-देशान्तर में भ्रमण-शील, विदेश में चोर भय अथवा मृत्यु। शत्रुभय या शत्रुद्वारा धनहानि होती है। धनप्राप्ति में बाधा किन्तु मातुल सुख पाता है।

सप्तम में—तेजस्वी, सुशील, दीर्घायु, धनी, पदाधिकारी, एक स्त्री वाला। पापग्रह हो तो शुभफल। ४० वें वर्ष में विशेष लाभ होता है। स्त्री द्वारा लाभ, विवाह के बाद लाभोन्नति, किन्तु कोई भ्रष्ट-बुद्धि होता है।

अष्टम में—अल्पायु, दीर्घरोगी, मृतवत् जीवन, दु:खी। स्त्री दीर्घजीविनी नहीं होती। स्वय उदार और गुणी होते हुए मूर्खतापन्न। शुभग्रह हो तो शुभफल। पुत्रद्वारा धनलाभ का सुयोग आता है। कभी अकल्पित लाभ, सत्कार्यकर्ता, चंचल चित्त, जिससे अपयश मिलता है।

नवम में—शास्त्रज्ञ, धर्मप्रसिद्ध, गुरु-देव-भक्त, राजपूज्य, धनी, चतुर, सत्यवादी, स्वधर्माचारी। पापग्रह हो तो बन्धु तथा व्रतादि नियम से रहित। ४० वें वर्ष में विशेष धन लाभ होता है। धर्मकार्य से लाभ, राजवत् सुखी, और उपदेशक होता है।

दशम में—माता का भक्त, धर्मात्मा, बुद्धिमान्, विद्वान्, पितृद्वेषी, दीर्घायु, धनी, राजपूज्य, चतुर, सत्यवादी, स्वधर्म-रत, माता का आज्ञा-पालक, ४० वें वर्ष में विशेष धन लाभ होता है।

लाभ में—दीर्घायु, रूपवान्, सुकर्मी, सुशील, आनन्ददायक, पुत्र-पौत्रादियुक्त, वाहन-वस्त्रादि का सुख, भोले-भाले लोगों की सगति-प्रिय, वाग्मी, विद्वान्, कवि, धनलाभ अधिक और विद्या-सौख्य होता है।

व्यय में—निजोपार्जित धन-भोगी, स्थिर-प्रकृति, उत्पाती, मानी, जितेन्द्रिय, दु:खी, अल्पधनी, दूसरे जनों को कष्टदायक तथा कृपण या बहु-व्ययी होता है। धन सचय होना कठिन, कुसंगति तथा विलासी होने से कष्ट होता है।

[व्ययेश-फल]

लग्न में—विदेशवासी मिष्ट-भाषी सुन्दर, परिवाररहित (सहायक रहित), निम्नसीय, क्रोधयुक्त, किन्तु नपुंसकवत्, विवादानुरक्त, कष्टरोगी, दुर्बल धन-विद्या-हीन और स्त्री सुख का अभाव होता है।

द्वितीय में—कृपण, सौम्य-भाषी चतुर शत्रुविजयी, देवभक्त धार्मिक, गुणी। मंगल हो तो पशु के साथ कुकर्मी राजा या अग्नि द्वारा धनहानि। विष्णुभक्त, शुभ शत्रुपीड़ा, कभी धन की चिंता तथा अपयोग करता है।

तृतीय में—धनी होकर भी कृपण, स्वशरीरपोषक, बन्धुजनों में अनुरक्त, सहोदर भाई कम। पापग्रह हो तो बन्धुरहित, स्त्री या सन्तान से विरोध, दो भार्या योग स्वामी तथा गुरु से द्वेष करता है।

चतुर्थ में—कृपण, सुकर्मी, दुःखी, स्वस्थ, दृढ़संकल्पी व्यापार या कृषि द्वारा धन लाभ। पुत्र के कारण मृत्यु अथवा माता की मृत्यु चाहने वाला होता है।

पंचम में—सत् पुत्रवान्, पितृभक्त, लक्ष्मी-भोगी, धन-रहित। पापग्रह हो तो सुतरहित या दुष्ट पुत्र हो या दत्तक-पुत्र लेना पड़े और किसी प्रकार से पुत्र-शोक-युक्त होता है।

षष्ठ में—पापग्रह हो तो निन्दित प्रकृति, नेत्ररोगी, अल्पायु। शुभ हो तो बुद्धिमान्, किन्तु अन्धा एवं पुत्र-रहित। माता की मृत्यु चाहने वाला, क्रोधी, सन्तान-कष्ट और परस्त्रीगामी होता है।

सप्तम में—वाचाल, दुश्चरित्र निन्दित-प्रकृति, कपटी, दुराचारी, घर का मुखिया। पापग्रह हो तो स्त्री की मृत्यु। शुभग्रह हो तो वेश्या की मृत्यु, मतान्तर से वेश्या द्वारा धनलाभ या दुर्बल, कष्टरोगी, धन-विद्या-हीन और स्त्री के सुख का अभाव होता है।

अष्टम में—दरिद्र, मनोरथ असफल धैर्य-बुद्धि, मध्यकभाषी (अल्पायी)। शुभग्रह हो तो धनसंग्रह करने में चतुर, प्रिय-भाषी गुणी धार्मिक, विष्णुभक्त, गुप्तशत्रु से पीड़ा तथा धन की चिन्ता रहती है।

नवम में—तीर्थयात्रा से धनलाभ स्थिर-बुद्धि पशुसुख। पापग्रह हो तो धन का व्यर्थ खर्च, स्त्री तथा सन्तान से विरोध अपने ही शरीर का पोषक दो भार्या योग स्वामी तथा गुरु से द्वेष करता है।

दशम में—परस्त्री-विमुख पवित्र धनसंचयी पुत्रवान्। माता-कठोरभाषिणी। व्यापार या कृषि से धन-लाभ। पुत्रसुखरहित। पंचम में गुरु हो और व्ययेश दशम में हो तो ४६ से ५ वर्ष के मध्य में पुत्र को मृत्युवत् कष्ट होता है।

लाभ में—सुकुमार शरीर दीर्घायु, स्थान का प्रधान अव्यवस्थ दानी, सत्यभाषी विख्यात सन्तानसुखरहित या दत्तक-पुत्र की आवश्यकता होती है।

व्यय में—विभूतियुक्त भी कृपण, बुद्धिमान्, सामाजिक कार्यकर्ता, पशुसंग्रही भूमिधनी, दीर्घायु। मतान्तर से पापी मातृ-विरोधी क्रोधी संतान-दुःखी, परस्त्रीगामी माता की मृत्यु चाहने वाला होता है। शत्रु-हन्ता और राजद्वार में विजयी होकर धन-धान्य की प्राप्ति करता है।

सार—(१) लग्नेश-व्ययेश-धनेश तीनों लग्न में हों तो धंग-भंग होता है।

(२) व्ययेश पापयुक्त हो, व्यय में पापसंयोग हो या दृष्टि हो तो देश-देशान्तर की यात्रा करता है। अधिक खर्च के कारण, धन की चिन्ता होती है। गुप्तशत्रु से पीड़ा तथा नेत्ररोग होता है।

(३) व्ययेश तथा शनि ३, ६ ७, ६, ११ १२ वें भाव में हो, अथवा व्यय में चरग्रह (चं० बु गु) हो, व्यय में चर राशि (१ ४, ७, १०) हो, षष्ठेश या अष्टमेश शनि से युक्त-दृष्ट हो तो अनेक देश की यात्रा होती है। जब दशमेश, जलचर राशि (४ ८, ९ ११ १२) में चन्द्र से युक्त-दृष्ट हो तो समुद्र-यात्रा होती है। जब दशमेश या व्ययेश की स्थिति वायुराशि (३, ७, ११) में शनि से दृष्ट-युक्त हो तो वायुयान की यात्रा होती है।

प्रत्येक भाव पर ग्रह-दृष्टि-फल

[तनु भाव पर ग्रह-दृष्टि-फल]

सूर्य—देश-विदेश में भ्रमण, अच्छे कर्मों द्वारा सुख, साधुसेवी, मन्त्रज्ञ, वेदान्ती, पितृभक्त, राजमान्य, चिकित्सक, पूर्व कृत पुण्य का विनाश, गृह का सुख किन्तु रोग से पीड़ित रहता है। भाग्यहीन, धर्महीन, स्त्री-सुख-रहित, गुदा में रोग, रजोगुणी, नेत्ररोगी और सामान्य धनी होता है।

चन्द्र—शरीर में विकलता, मार्ग गमन अधिक, जलसुख, सरल स्वभाव, सुन्दर कलाभिज्ञ, क्रय (खरीद) वृत्ति होती है। प्रवासी, व्यवसायी, भाग्यवान्, स्त्री प्रेमी, कृपण और आडम्बरयुक्त होता है।

मंगल—पित्तप्रकोप, संग्रहणी रोग, पैर-नेत्र में पीड़ा, आपके जीवन के सामने ही तनयादि का विनाश होता है। पुत्रसुखरहित, स्त्रीहानि, जीवित पुत्र रहते हुए भी, पुत्रों से सुख नहीं मिल पाता।

बुध—व्यापार या राजाश्रय से उन्नति, स्वजनों का सुख, कन्या का जन्म, सन्तान, स्त्री आदि का सुख दीर्घायु सन्तति और स्वयं भी चिरायु-भोगी होता है।

गुरु—गृह-सम्बन्धी अधिक सुख, भाग्यवान्। अन्य बलिष्ठ ग्रहों से युक्त होने पर चिरायु तथा खर्चीला स्वभाव होता है। स्त्री का अनेक सुख, बलवान्, सुन्दर मकान तथा वस्त्र-भूषण आदि का सुख होता है।

शुक्र—सुन्दर शरीर, अनेक भोगादि सुख, स्त्रीसुख, सुन्दर रूप, भाग्यवान्, सत्कर्मशील एवं गुण-युक्त होता है।

शनि—शरीरकष्ट, अग्निभय, वातरोगी, साधारण गुणी या निर्गुणी, स्थान-निर्माता होता है। तीसरे वर्ष में देह-पीड़ा, धनहानि, मित्र-दुःख। शनि की दशा में शनिवार को मृत्यु-भय होता है।

राहु—शरीरसुखरहित, रोगी और शीतला आदि द्वारा मुख में चिन्ह होते हैं।

[द्वितीय भाव पर ग्रह-दृष्टि-फल]

सूर्य—धन तथा कुटुम्ब का सामान्य सुख, नेत्ररोगी, पशु का व्यवसायी, सचित धननाशक, परिश्रम से थोड़ा लाभ, पिता को कष्ट, पितृधन की हानि, अपने पराक्रम से जीविका, गुप्तांग में पीड़ा होती है। गुदा में रोग, कष्ट सहने वाला, अपने वचनों से उन्नति-शील, चोर या राजा द्वारा धनहानि तथा दिनों-दिन धन-क्षय होता रहता है।

चन्द्र—कुटुम्ब का अत्यन्त सुख, अपने वश की उन्नति, शरीरकष्ट, जल तथा लोहादि द्वारा ८-१० वें वर्ष में पीड़ा होती है। चाँदी, स्वर्ण, रत्नादि द्वारा धनलाभ, कपूर, चन्दनादि का सुख मिलता है। सन्तति से सामान्य सुखी, धनहानि, जलभय, चोट-घाव द्वारा शरीरकष्ट होना सम्भव है।

मंगल—कुटुम्ब सम्बन्धी कष्ट, दिनों-दिन लाभ का ह्रास, गुदा तथा उदर में रोग द्वारा पीड़ा होती है। देह-पीड़ा, नेत्रकष्ट, भार्या एवं भाइयों से विरोध होता है।

बुध—धन का अतुल सुख, भाग्यवान्, चिरायु और सकल-भोग-विलास से सम्पन्न रहता है।

गुरु—धन का संग्रह, अतिभाग्यवान्, बुद्धिमान्, स्वजनों को पूर्ण सुखदायक होता है। पिता के धन की हानि, विद्या-विनय-सम्पन्न, सर्वमान्य किन्तु स्वजनों के द्वारा सुख नहीं मिलता।

शुक्र—दिनोदिन धन की उन्नति, स्वजनों को सुखदायक, परिश्रमी, अपने मित्रों के शत्रु का विनाश करता है। चाँदी-मोती आदि के व्यापार से लाभ, प्रसिद्ध, धनी, मधुर-भाषी और सभा-चतुर होता है।

शनि—धनविनाश, स्वजनों से विरोध, १३ वें वर्ष में जल या वायु या वातरोग द्वारा पीड़ा होती है।

राहु—कुटुम्ब सम्बन्धी कष्ट, ८ या १४ वें वर्ष में जलभय, पाषाणादि मृत्युभय होता है।

[तृतीय भाव पर ग्रह–दृष्टि–फल]

सूर्य—कुलीन, राजमान्य उद्यमी शासक, नेता पराक्रमी बड़े भाई द्वारा सुख का विनाश या बड़े भाई को कष्ट, राजमय शत्रुनाशक, पराक्रमी काम में तिरस्कार भाग्य-हीन होता है। यदि बड़ा भाई जीवित रहे तो वह बड़ा प्रभावशाली होता है। राजा द्वारा विजयी किन्तु कुटुम्ब में कलह होता है।

चन्द्र—बहिनों का सुख-सौभाग्य, धार्मिक, प्रवासी अधिक बहन तथा कम भाई वाला, क्षीण पराक्रमी, पूर्वधन द्वारा धनवृद्धि, निज पराक्रम से ही सुख, बाल्यावस्था में निर्धनी या धन-सुख-रहित पश्चात् सुखी, २ भाई ३ बहिन का सुख पाता है। २४ वर्षायु से पराक्रमी, सत्संगति प्रिय और मिलनसार होता है।

मंगल—पराक्रम द्वारा सफलता, परदेश में राजा द्वारा सम्मान सहोदरों को कष्ट और दो बहिनों का सुख होता है।

बुध—भाई-बहिनों का सुख व्यापार करने वाला विचक्षण, चतुर, मीठभाषी, उद्योगी और धार्मिक होता है।

गुरु—भाइयों का सुख पराक्रम वृद्धि, नौकरों का सुख पितृधनभोगी, पिता के सुख से रहित गर्वित, स्वजनों से प्रेम, यशस्वी होता है। भाग्यवान् धन-वाहनादि का सुख और मकान का सुख मिलता है।

शुक्र—भाई-बहिनों का सुख पराक्रमवृद्धि, भृत्यादि सुख पुष्ट शरीर कन्या सन्तान अधिक परदेश में राजा द्वारा पूज्य होता है।

शनि—अति पराक्रमी बलवान्, भाई-नौकर के सुख से रहित कष्टमयजीवन किन्तु वाहनादि का सुख मिलता है।

राहु—पराक्रम द्वारा सफलता, मन से सुखी पुत्रकष्ट चोर-अग्नि-सर्प-राजा आदि से भय होता है। भाई के द्वारा सुखहानि अथवा सहोदरों को कष्ट मिलता है।

[चतुर्थ भाव पर ग्रह–दृष्टि–फल]

सूर्य—२७–३१ वर्षायु तक सुखहानि सामान्यतः मातृसुख, २२ वर्ष के बाद अनेक सुख, स्वाभिमानी, माता को कष्ट व सुखहानि मित्ररहित यश, सुख धनलाभ पुत्र आदि से युक्त सुखी राजमान्यता वाहन-नाश किन्तु अनेक स्त्रीयुक्त होता है।

चन्द्र—बहिन-भाई की हानि यश सुख धनलाभ पुत्र से युक्त, वातरोगी पिता आदि बड़ों का सुख नहीं मिलता। मधुर-भाषक से राजा का प्रिय नौकर-मकान-वाहन-स्त्री का सुख २४ वर्षायु से सुखी राजमान्य कृषक और मातृसेवक होता है।

मंगल—चौथे वर्ष में माता को कष्ट राजकृपा, भूमि से सुख देखने मात्र से रिपु-विनाश स्त्री संयोग में विघ्न, कष्ट से विवाह, ससुर का प्रिय स्त्री-सुख-विहीन भाई से प्रेम व सुखहानि और परदेश-वासी होता है।

बुध—माता का अतुल सुख राज्यादि सुख, धनवृद्धि, पैतृक सम्पत्ति की उन्नति काम-लोलुप होता है। बन्धु से सन्ताप, पशुसुख, उत्तम वाहन सुख, भाई से सुख और वक्ता होता है।

गुरु—माता-पिता का सुख वाहन सुख, पण्डित, विद्वान्, धनी स्वजनों द्वारा प्रतिष्ठा होती है। अनेक मित्र बाल्यावस्था में दुःखी किन्तु उत्तरार्ध जीवन में सुखी होता है।

शुक्र—माता का सुख, कर्मवीर, धनाढ्य यश, सुख वाहन से युक्त होता है। स्त्री तथा सास का सुख २६ वें वर्ष से सुखवृद्धि, परस्त्रीभोगी, राजपूज्य और चिरायु पाता है।

शनि—माता-पिता को कष्ट माता की मृत्यु, ४–१६ वें वर्ष में रोग द्वारा मृत्युभय होता है। स्त्री संयोग के कारण, दरिद्र या दुर्योग में पीड़ा नीचसंगति, दुराचारिणी स्त्री से संयोग और साधारण यशस्वी होता है।

राहु—माता को कष्ट, पुत्र का उदय, क्रोध द्वारा भाग्यवृद्धि, विजय, कृषि या उदर में रोग दुःख और भाई या मित्र को पीड़ा होती है।

[पंचम भाव पर ग्रह–दृष्टि–फल]

सूर्य—प्रथम सन्तान की हानि, २०–२१ वें वर्ष के लगभग सन्तानप्राप्ति, वातरोग से पीड़ा, कुटुम्ब तथा घर का अल्प सुख, स्त्री सुख का ह्रास, विस्मरण बुद्धि वाला होता है। पुत्र के लिए चिन्तित, मन्त्र-शास्त्रज्ञ, विद्वान् और सेवावृत्ति करता है।

चन्द्र—कन्या का जन्म, मित्रों द्वारा सुख, वंश में राजा के तुल्य या प्रधान, परदेश में व्यापार द्वारा जीविका होती है। व्यवहार कुशल, बुद्धिमान्, प्रथम पुत्र सन्तति, कलाप्रिय और सफेद वस्तु से लाभ होता है।

मंगल—प्रथम सन्तान की हानि, गर्भपात, जठराग्नि प्रबल तथा भोजन के लिए भ्रमण करता है।

बुध—चार कन्याओं की उत्पत्ति के बाद पुत्र होता है, बुद्धिमान्, यशस्वी एवं ऐश्वर्यवान् होता है।

गुरु—सन्तान का अतुल सुख, शास्त्रज्ञ, लक्ष्मी, विद्या तथा आयु की वृद्धि होती है। विनय-सम्पन्न, बुद्धिमान्, उत्तम सलाहकार (मन्त्री), मकान सुख और सफलता के समय कुछ उत्पात हो जाता है।

शुक्र—पहिले पुत्र, फिर कन्या पैदा होती हैं, धनाढ्य, धान्य-संग्रही, शास्त्रज्ञ तथा सुखी होता है। अनेक कन्याओं का सौभाग्य, सुन्दर स्त्री का सुख और अध्ययन–शील होता है।

शनि—सन्तानकष्ट, स्थिरचित्त, यशस्वी, आमाशय रोग, चिरायु, धनी और धार्मिक होता है।

राहु—सन्तानकष्ट, अल्पभाग्ययुक्त, कभी राजा द्वारा विजयी, श्रम करने पर भी विद्या निष्फल या अल्पविद्या, मन्द–बुद्धि, स्मरणशक्तिरहित और देशान्तर–भ्रमण करता है।

[षष्ठ भाव पर ग्रह–दृष्टि–फल]

सूर्य—शत्रुनाशक, नेत्र में रोग, माता का सुख नहीं हो पाता। पिता को दुःखी करने वाला होता है। दुःखी, ऋणी और मातुल का नाशक या कष्टदायक होता है।

चन्द्र—शत्रुवर्ग की वृद्धि, कफ रोग, क्षयरोग, वीर्यनाश। गुरु के साथ होने से अनेक रोग होते हैं। शान्त, रोगी, शत्रुओं से कष्ट पाने वाला, गुप्तरोगाक्रान्त, अधिक व्ययी और २४ वर्षायु में जलभय सम्भव है।

मंगल—शत्रुवर्ग को दलित करने वाला, मामा के सुख से रहित, लोहा–शस्त्र-अग्नि-रुधिरविकार रोगादि से पीड़ित होता है।

बुध—मामा का विशेष सुख, परछिद्रान्वेषी, परकार्यकर्ता किन्तु अनेक शत्रुओं से घिरा रहता है।

गुरु—शत्रुनाशक, परिस्थिति का विनाशक, सम्पत्तिक्षयकारक, मामा को कष्ट किन्तु मामा के द्वारा सुखी होता है। रोगी, माता को कष्ट, दृढशरीर और क्रोधी स्वभाव वाला होता है।

शुक्र—मामा द्वारा अत्यन्त सुखी, जनवर्ग से पूज्य, शत्रु का विनाशक, शरीरकष्ट, पुत्रवृद्धि और बुद्धि का विकाश होता है। कभी कोई सन्तान का कष्ट, शत्रु से भय, भ्रमित बुद्धि वाला होता है।

शनि—मामा तथा शत्रु का विनाशक, पैर-नेत्र-मुख में व्रण (घाव) से पीड़ा, कठोरभाषी और ज्वर या प्रमेह से रोगी होता है।

राहु—शत्रु-हन्ता। खलग्रह के साथ होने से धनहानि, दुष्टों द्वारा धननाश, गुणी और विनम्र किन्तु बल और वीर्य की हानि होती है।

[सप्तम भाव पर ग्रह-दृष्टि-फल]

सूर्य—काम (वीर्य) नाश, स्त्री को कष्ट, शत्रु से दुःखी, पाण्डु (पीला) शरीर किन्तु चतुर बुद्धि वाला व्यापारी २२-२४ वें वर्ष में स्त्रीकष्ट, व्यापारी, चपलस्वभाव, पूर्वार्ध में दुःखी और पश्चात् सुखी होता है।

चन्द्र—स्त्री रूपवती गुणवती चपला, गजगामिनी, चंचलता युक्त, स्वयं अन्य के छिद्रान्वेषण करनेवाला एवं कुशील (दुष्ट) होता है। परस्त्रीभोगी अनिश्चित वाणी वाला होता है। स्वयं भी सुन्दर, सुखी, सत्यवादी व्यापार द्वारा धन-संचय करने वाला किन्तु कृपण होता है।

मंगल—स्त्री का विनाश मार्ग में भय स्त्री से कलह, बस्ति-व्याधि से दुःखित और दो भार्याओं का योग होता है।

बुध—स्त्री सुख, चिरायुभोगी सुन्दर या मधुर शरीर, कला-निपुण, धन-धान्य-भागी किन्तु स्त्री-भोग में अल्प मति (इच्छा) वाला होता है।

गुरु—स्त्री-पुत्रादि सुख, व्यापार में लाभ प्रतिष्ठा की वृद्धि, धार्मिक, विद्वान् भाग्यवान्, धनाढ्य, गुणी और सुखी होता है।

शुक्र—स्त्री-पुत्रादि सुख अनेक सन्तान युक्त। शुभ से युक्त होने पर व्यापार में सुख, निर्मल-बुद्धि वाला होता है। पुत्र की जीविका पराधीन (नौकरी से) होती है।

शनि—स्त्री को मृत्युतुल्य शारीरकष्ट कुरूपा स्त्री पाण्डुरोगी ज्वर, अतीसार, संग्रहणी रोग होता है। स्त्री-बड़े पेट-नाभि वाली या परपुरुषगामिनी होती है।

राहु—कामदेव की जागृति अधिक, अपने कार्मों को सिद्ध करने वाला (हठी)। इसकी दशा में स्त्री की मृत्यु अथवा स्वयं को शारीरकष्ट होता है।

[अष्टम भाव पर ग्रह-दृष्टि-फल]

सूर्य—गुदा में रोग पितृ-धर्म से विरुद्ध, राजभय परस्त्री-सेवी होता है। शिरपीड़ा, भगन्दर, संग्रहणी बवासीर रोग सम्भव होते हैं। व्यभिचारी, मिथ्याभाषी पाखण्डी और निन्दितकर्म करता है।

चन्द्र—मृत्युतुल्य कष्ट व्याधिभय, जलभय, अरिष्टकारक धन-धान्य का नाशक होता है। ८ वा २० वें वर्ष में जल-घात सम्भव है। पितृधननाशक कुटुम्बविरोधी नेत्ररोगी और लम्पटी होता है।

मंगल—प्रसन्नचित्त किन्तु बस्तिव्याधियुक्त, नीचभय, धन-धान्यादि का नाश मार्ग में चोर द्वारा हानि धन का खर्च बवासीर, संग्रहणी भगन्दर, रक्तस्राव आदि रोग चिन्तायुक्त और धन-कुटुम्ब का अल्पसुख पाता है।

बुध—चिरायुभोगी, राजा द्वारा या कृषि द्वारा जीविका परदेशवासी किन्तु परदेश में पर्वत के समीप मृत्यु-योग उपस्थित होता है।

गुरु—८ वें वर्ष में मृत्युतुल्य रोग से पीड़ा राजभय दूसरे मनुष्य द्वारा कष्ट, मतिनाश, द्रव्यहीन, किसी स्त्री द्वारा भय गुप्तांग में पीड़ा या व्रण (अवटफोड़ा) की वृद्धि होती है।

शुक्र—रागवृद्धि, कठिनता से धनलाभ कुबुद्धि द्वारा कष्ट मतिनाश द्रव्यहीन किसी स्त्री द्वारा भय गुप्तांग में रोग, सन्तान और कठिनता से धन का सुख तथा प्रतिदिन उद्वेग-चिन्ता बढ़ती रहती है।

शनि—जल या लोह से भय २० वें वर्ष की आयु में मृत्युतुल्य रोग होता है। मूल-पीड़ा अपनी तामस बुद्धि के के कारण राजदण्ड द्रव्यहीन और नर-घातक होता है।

राहु—वैराहानि दुःखी व्याधिकष्ट नीचकर्म द्वारा जीविका करता है। पशु द्वारा कष्ट, बवासीर संग्रहणी [illegible] आदि रोग सम्भव होते हैं।

[नवम भाव पर ग्रह-दृष्टि-फल]

सूर्य—स्त्री के सुख से विहीन, पापबुद्धि, पुण्य-रहित, वृद्धावस्था में सभी सुख होते हैं। पूर्व दिशा में भाग्योदय होता है। धर्मभीरु, बड़े भाई या साले के सुख से रहित होता है।

चन्द्र—परदेश यात्रा, किसी धनी व्यक्ति द्वारा सुखवृद्धि, बन्धुजनों से सुख, दया और द्रव्य से हीन किन्तु यशस्वी होता है। तीर्थसुख मिलता है। धर्मात्मा, भाग्यशाली, भ्रातृरहित और बुद्धिमान् होता है।

मंगल—भाग्य में उन्नति, साले के सहित रहने पर सत्यानाश या साले को नेत्ररोग, धार्मिक, सुखी और कोई उग्रबुद्धि वाला होता है।

बुध—पुत्र का सुख, भाग्यवान, परदेश में राजसम्मानयुक्त, निरन्तर सुखी रहता है। भ्रमयुक्त या ज्वर रोग होता है।

गुरु—धनवृद्धि, सुख, राजा से मनोरथ की पूर्णता, शास्त्रज्ञ, राज्य-धन से युक्त, निरेच्छुक, सहोदर का सुख, धार्मिक और राजपूज्य होता है।

शुक्र—भाग्यवृद्धि, परदेश में धन का लाभ, राजा द्वारा विजयी और २५ वें वर्ष में उन्नति होती है।

शनि—भाग्यवश कोई यशस्वी होता है। प्राय. अपयश पाता है। बन्धुरहित, परदेश में सुखी, पराक्रमी किन्तु धर्म से विहीन और म्लेच्छ द्वारा भाग्योदय करता है।

राहु—नववधू का भोगी, भाइयों द्वारा कष्ट, पुत्रादि युक्त होकर सुखी होता है। मित्रपीड़ा, म्लेच्छ-शासक द्वारा उन्नति और विजय पाता है।

[दशम भाव पर ग्रह-दृष्टि-फल]

सूर्य—कार्य में सफलता, बाल्यावस्था में माता को भय। स्वगृही या उच्च का हो तो माता, वाहन आदि का सुख, राजमान्य और धनी होता है।

चन्द्र—पशु द्वारा आजीविका, स्त्री-पुत्र-धनादि का सुख, पिता के भाई का सुख, धर्म-रहित होता है। धर्मान्तर में दीक्षा लेने वाला, पितृविरोधी और चिडचिडे स्वभाव वाला होता है।

मंगल—अनेक सिद्धियों से सुखी, पराक्रमी, श्रेष्ठ, प्रतापी। इसकी दशा में भाग्योदय। ४ वर्ष की आयु तक में कभी पिता को कष्ट होता है।

बुध—कर्मवीर, काव्य-प्रेमी, पण्डित, राजपूज्य, सुखदायक, उद्योगी, पैतृकधन पाने वाला, विना अधिकार के भी राजा से मान और पिता का सुख होता है।

गुरु—कार्य में सफलता, राजमहल का सुख, अपने पूर्वजों से भी अधिक सुखी, दिव्यगृह का निवासी, आपका पुत्र—दान और धर्म से रहित होता है। किसी को सन्तानकष्ट और कोई कृपण होता है।

शुक्र—अपने गाँव में या राजा के द्वारा कार्य की सफलता, पुत्र एवं भाई का सुख, मातृकष्ट और शिरपीड़ा होती है।

शनि—पिता की हानि, माता को थोड़ा सुख, कर्महानि, अल्पायु, यदि जीवित रहे तो भाग्यवान् होता है।

राहु—कार्य में सफलता, बाल्यावस्था में पिता की मृत्यु, माता को थोड़ा ही सुख मिलता है। किसी की माता दीर्घायु पाने वाली और व्यापार का विनाश (कर्म-हीन) होता है।

[लाभ भाव पर ग्रह–दृष्टि–फल]

सूर्य—सकल वस्तु का लाभ, व्याधियुक्त, प्रथम सन्तान को कष्ट, कमजोरी, सुबुद्धिमान् होता है। धनलाभ, प्रसिद्ध व्यापारी विद्वान् कुलीन और धर्मात्मा होता है।

चन्द्र—धनलाभ, व्याधिनाश सुवर्णवृद्धि, पुत्रसुख, सर्वत्र लाभ कन्या का सुख होता है। अधिक कन्या सन्तति, कुशल व्यवसायी और मित्रप्र भी होता है।

मंगल—आयुवृद्धि, धनलाभ, स्त्री का गर्भपात वृद्धावस्था में पुत्रसुख और पशु द्वारा सुखी होता है।

बुध—मान्यलाभ अनेक सुख धान्यवृद्धि, धनलाभ, बुद्धिमान् शासक प्रसिद्ध, कन्या अधिक होती हैं। ३२ वें वर्ष से सम्पत्ति होती है।

गुरु—दीर्घायुभोगी स्त्री-पुत्र-धनादि का सुख, व्याधिरहित, कान्तियुक्त और विजयी होता है।

शुक्र—धनलाभ, सुखी, ग्रामनायक, स्वजन-पालक पूर्वजों के व्यापार को करता है। वस्त्र, चाँदी, मोती आदि से लाभ होता है।

शनि—दुष्ट या खल जनों से लाभ सन्तान से थोड़ा सुख धान्यसुख और पवित्र होता है। पशु द्वारा लाभ काली वस्तु से सुख किन्तु किसी सन्तान से विरोध होता है।

राहु—आयु पूर्ण, धनलाभ, राजा द्वारा सुख और अपनी सम्पत्ति में तत्पर रहता है।

[व्यय भाव पर ग्रह–दृष्टि–फल]

सूर्य—स्थानभंग शुभकार्य में व्यय मामा को कष्ट, सवारी सुख पदहानि यात्रा परिवर्तन दूसरे के वाहन का सुख रुपया-वृद्धि सवारी से भय सींग वाले पशुओं से कष्ट ८ या १२ वें वर्ष में मृत्यु-भय होता है। नेत्ररोगी और कान या नाक पर तिल या मस्से का चिह्न होता है।

चन्द्र—पिता के सुख की हानि माता को सुख शत्रुनाश, नेत्र चंचल, चतुर धन खर्च करने वाला असत्य-भाषी होता है। शत्रु द्वारा धनहानि चिन्तायुक्त, राजमान्य और अन्तिम जीवन में सुखी होता है।

मंगल—पिता का कष्ट, नेत्रपीड़ा, राजा द्वारा विजय, शत्रु-हन्ता किन्तु कभी दूसरों के द्वारा सुख का विनाश होता है।

बुध—व्यय अधिक, विवाहादि मंगल कार्य अधिक होते हैं। स्वजनों से विरोध शस्त्र का कुयोग और घाव या वायु-विकार द्वारा हृदय में दारुण कष्ट होता है।

गुरु—देव-विप्र-कार्य में खर्च अधिक, अनेक कष्ट सहने वाला शत्रु-पीड़ित स्वार्थी किन्तु बुद्धिमान् होता है।

शुक्र—धार्मिक कार्यों में खर्च अधिक, कुटुम्ब का सुख जल से मृत्यु-भय स्त्री को कष्ट अनेक कष्ट, शत्रु से दुःखी अपने काम का मित्र (स्वार्थी) बुद्धि-युक्त और चतुर होता है।

शनि—धन विनाशक, खर्च अधिक, स्त्री-पुत्रादि का अल्प सुख युद्ध में विजयी कभी दुष्टों के द्वारा मानसिक कष्ट या धन-हानि और शरीर क्लेश होता है।

राहु—रूपक, रागरहित युद्ध में शत्रु का विनाशक, विकलता युक्त, किन्तु कोई सुखी भी होता है। कामी, बधिर कुल-कलंककारक होता है।

राशिस्थ ग्रहों पर ग्रह-दृष्टि-फल

[मेष-वृश्चिकस्थ सूर्य पर ग्रह-दृष्टि-फल]

चन्द्र की—धार्मिक बुद्धि, दान-कर्ता, भृत्यादि सुख, सुन्दर शरीर और कुटुम्ब का प्रेमी होता है।
मंगल की—क्रूर-स्वभाव, पराक्रमी, युद्ध में गम्भीर, नेत्र या पैर के तलुए लाल और बलवान् होता है।
बुध की—बल, धन और सुख से रहित, नौकरी से जीविका, परदेशवासी, मलिन बुद्धि और शत्रुयुक्त होता है।
गुरु की—दानी, दयालु, राजमन्त्री, न्यायाधीश (जुडीशियल अधिकारी), प्रसिद्ध और कुलदीपक होता है।
शुक्र की—नीचवर्ग की स्त्रियों से प्रेम, दीन, धनरहित, शत्रुयुक्त और चर्मरोगी होता है।
शनि की—उत्साहरहित, मलिन-बुद्धि, दु खी, मतिहीन और आलसी होता है।

[वृष-तुलास्थ सूर्य पर ग्रह-दृष्टि-फल]

चन्द्र की—सुन्दर स्त्रियों से प्रीति, अनेक स्त्री युक्त, मधुरभाषी और जल-विभाग से जीविका होती है।
मंगल की—सग्राम में धैर्ययुक्त, बलवान्, प्रतापी, एकहरा शरीर, आनन्दयुक्त और धन-मान पाता है।
बुध की—संगीत-निपुण, कविता करने वाला, उत्तम लेखक, पत्र-सम्पादक और प्रसन्न-चित्त होता है।
गुरु की—मित्र तथा शत्रुयुक्त, राजकर्मचारी, भीरु, धनादि का सुख, रूपवान् और राजा को प्रसन्न करता है।
शुक्र की—सुन्दर नेत्र, राजा या राजमन्त्री, अनेक स्त्री युक्त, किन्तु चिन्ता-युक्त एवं भीरु होता है।
शनि की—नीचवृत्ति, धनहीन, आलसी, मलिन, स्त्री से विरोध, वृद्धा-स्त्री में आसक्ति और रोगी होता है।

[मिथुन-कन्यास्थ सूर्य पर ग्रह-दृष्टि-फल]

चन्द्र की—शत्रुपीड़ित, मित्र से दु खी, परदेश-निवासी, धनहीन और उदास-चित्त रहता है।
मंगल की—शत्रु से डरने वाला, कलह-प्रिय, दीन, धन-हीन, युद्ध में कायर, लज्जा-युक्त और आलसी होता है।
बुध की—राजा की प्रसन्नता से सन्तान की उन्नति, ऐश्वर्य-वृद्धि और कृशशरीर वाला होता है।
गुरु की—विद्वान्, गुप्त-मन्त्री, स्वतन्त्रता-प्रिय, विदेश-यात्री और गुप्त कर्मचारी होता है।
शुक्र की—परदेशवासी, चतुर, विलासी प्रकृति, विष-अग्नि-शस्त्र द्वारा चिन्ह-युक्त और राजकर्मचारी होता है।
शनि की—धूर्त-बुद्धि, भृत्यादि से सुखी, मन्दबुद्धि, स्वजनों से विरोध और उदासीन-वृत्ति रहती है।

[कर्कस्थ सूर्य पर ग्रह-दृष्टि-फल]

चन्द्र की—धनाढ्य, जलविभाग या मोती आदि का व्यापारी, राजतुल्य सुखी, मन्त्री किन्तु कूटनीतिज्ञ होता है।
मंगल की—शरीर रोगी, व्रण (घाव), भगदर, बवासीर आदि से पीड़ा और स्वजनों से विरोध होता है।
बुध की—विद्या, यश, सम्मान से विख्यात, कान्तियुक्त, राजकृपा से मनोरथ पूर्ण और शत्रुरहित होता है।
गुरु की—उत्तम पुरुष, राजमन्त्री, सुप्रसिद्ध और अनेक कलाओं का जानकार होता है।
शुक्र की—स्त्रियों का सेवक, स्त्री के द्वारा वस्त्राभूषण-धन का लाभ, परकार्यकर्ता, युद्ध-वीर और मधुरभाषी होता है।
शनि की—पिशुन (चुगलखोर), वात-कफ रोगी, परकार्यनाशक और चालाक तथा लड़ाकू होता है।

[सिंहस्थ सूर्य पर ग्रह-दृष्टि-फल]

चन्द्र की—बुद्धिमान्, अच्छी स्त्री वाला, कफरोग, राज-कृपा, धूर्त, गम्भीर, धन-लाभ और प्रसिद्ध होता है।
मगल की—बड़ा धूर्त, अनेक स्त्रियों से प्रेम, कफप्रकृति, अति-क्रूर, शूरवीर और बड़ा उद्योगी या मन्त्री होता है।
बुध की—विद्वान्, लेखक, धूर्त, पराक्रमी और विद्वानों का पोषक होता है।
गुरु की—मन्दिर, बाग, जलाशय का निर्माता, ज्येष्ठजन तथा स्वजनों से प्रेम और अति बुद्धिमान् होता है।
शुक्र की—चर्मरोगी, क्रोध से अपमानित, निर्लज्ज, स्वजनों से दूर, आनन्दरहित और निर्दयी होता है।
शनि की—परकार्यनाशक, चतुर, दुष्टप्रकृति, मूर्ख और सबों को कष्टदायक होता है।

[धनु-मीनस्थ सूर्य पर ग्रह-दृष्टि-फल]

चन्द्र की—रूपवान् पुत्रयुक्त, मधुर-भाषी कुलीन बुद्धिमान् भाग्यशाली और आनन्ददायक होता है।
मंगल की—युद्ध में यशस्वी, विजयी वक्ता धन-लाभ चंचल स्थिरजीविका और उग्र-पुरुष होता है।
बुध की—मधुरभाषी सर्व कविता, कर्ता, इतिहासज्ञ, धातु-क्रिया या मन्त्र का जानकार और सम्मान-युक्त होता है।
गुरु की—राजमन्त्री विद्वान् कुलानुसार प्रधानपदस्थ, कला-कुशल, धन-युक्त और वाहन का सुख पाता है।
शुक्र की—सुन्दर-स्त्री-भोगी सुगन्ध और वस्त्र-भूषण आदि का प्रेमी होता है।
शनि की—मलिनचित्त, पराभभोजी नीच-वृत्ति और पशुओं का प्रेमी होता है।

[मकर-कुम्भस्थ सूर्य पर ग्रह-दृष्टि-फल]

चन्द्र की—कपटी, स्त्री के कारण धन और सुख का विनाश चतुर और बुद्धिमान होता है।
मंगल की—शत्रुकलह से धन-विनाश शत्रु से सन्ताप, रोगी, चिन्तातुर और पागलवृत्ति वाला होता है।
बुध की—नपुंसकप्रकृति, परधननाशक सज्जनतारहित किन्तु शूर-वीर होता है।
गुरु की—सत्कार्यकर्ता बुद्धिमान् नर-पालक, यशस्वी और मनमौजी (स्वतन्त्र) होता है।
शुक्र की—रत्न-व्यापारी और उत्तम स्त्रियों के द्वारा धन-लाभ से सुखी होता है।
शनि की—पराक्रम द्वारा शत्रु विजयी प्रतापी, राजा की कृपा सम्मान-युक्त, मिलनसार और प्रसन्नचित्त होता है।

[मेषस्थ चन्द्र पर ग्रह-दृष्टि-फल]

सूर्य की—क्रूर-स्वभाव नम्र के प्रति दयालु अन्यथा कठोर पंडित राजपूज्य और युद्ध-प्रिय होता है।
मंगल की—विष-अग्नि-शस्त्र-वायु द्वारा शरीर में पीड़ा मूत्रकृच्छ्र दाँत और नेत्र के रोग होते हैं।
बुध की—अनेक विद्याओं का प्रमुख विद्वान् वक्ता, यशस्वी, धनी, कवि गुणी और सत्संगति-युक्त होता है।
गुरु की—भृत्यादि का सुख धनी मन्त्री सेनापति और किसी विभाग का प्रधान-पुरुष होता है।
शुक्र की—स्त्री-पुत्र-धन-रत्नादि का सुख व्याख्यान-कुशल प्रसन्न-चित्त गुणज्ञ और मान्यशील होता है।
शनि की—रोगी निर्धनी, असत्य-भाषी द्वेषकारक, दुःखी और मलिन-बुद्धि वाला होता है।

[वृषस्थ चन्द्र पर ग्रह-दृष्टि-फल]

सूर्य की—कृषि-कर्ता अनेक मनुष्य या पशु से सुखी, मन्त्री वाहनसुख, धनलाभ और कार्य-पटु होता है।
मंगल की—अतिकामी सज्जन-मित्र पवित्र माता को कष्ट और हास्यप्रिय होता है।
बुध की—प्रायश्चित्त बुद्धि वाला दयालु आनन्द-प्रिय गुणवान् और प्रसन्न चित्त रहता है।
गुरु की—सर्वदा सुखी यशस्वी धार्मिक, माता-पिता का सेवक और प्रसिद्ध पुरुष होता है।
शुक्र की—वस्त्र-भूषण-वाहन-गृह-आसन-शय्या-सुगन्ध-पदार्थ एवं पशु का सुख भोगता है।
शनि की—धनहीन माता का अनिष्टकारक, स्त्री-द्वेषी, सुत-मित्र बन्धु-सुखयुक्त। १५ अंश तक चन्द्र हो तो माता
का कष्ट एवं १५ अंश से अधिक चन्द्र हो तो पिता से वियोग होता है।

[मिथुनस्थ चन्द्र पर ग्रह-दृष्टि-फल]

सूर्य की—प्राज्ञ धनहीन मानसिक सन्ताप किन्तु दूसरों को प्रसन्न करने वाला रूपवान और धार्मिक होता है।
मंगल की—उदार स्वभाव चतुर शूर-वीर बुद्धिमान धनी शीघ्र प्रसन्न वाला और वाहन-सुखी होता है।
बुध की—द्रव्योपार्जन में चतुर विजयी गम्भीर राजकृपा भाग्यवान और सदाचारी तथा उदार-मना होता है।
गुरु की—विद्या-विनययुक्त धनी भाग्यवान् प्रसिद्ध सत्यवादी रूपवान वक्ता और यशस्वी होता है।
शुक्र की—सुन्दर स्त्री का सुख सुगन्ध-पदार्थ वस्त्र-भूषणादि का सुख, वाहन-युक्त तथा अनेक सुख-भोगी होता है।
शनि की—धन स्त्री पुत्र वाहनादि से विहीन अपमानित, बन्धुकष्ट शत्रु अधिक और भाग्यहीन होता है।

[कर्कस्थ चन्द्र पर ग्रह–दृष्टि–फल]

सूर्य की—धनहीन, दुर्गरक्षक (पुलिस विभाग), अधिकारी, दन्द-फन्द करने वाला और सहनशील होता है।
मगल की—चतुर, शूर-वीर, माता का विरोधी और दुर्बल शरीर (इकहरा वदन) वाला होता है।
वुध की—स्त्री, पुत्र, धनादि का सुख, मन्त्री या सेनापति, नीतिज्ञ, तर्कपण्डित, बुद्धिमान् और सुखी होता है।
गुरु की—राजगुण युक्त, नीति-शास्त्रज्ञ, सुखी, श्रेष्ठ, पराक्रमी, महान् पुरुष और राजाधिराज होता है।
शुक्र की—उत्तम रत्न, सुवर्णादि धन का स्वामी, सुन्दर स्त्री, आभूषणादि का सुख और कोई वेश्या-गामी होता है।
शनि की—असत्यवादी, माता से विरोध, भ्रमण-शील, धनहीन तथा पापी-स्वभाव वाला होता है।

[सिंहस्थ चन्द्र पर ग्रह–दृष्टि–फल]

सूर्य की—उत्तम गुणी, राजा का प्रिय-पात्र, उच्चपदस्थ, वीर किन्तु पापाचारी और विलम्ब से सन्तान-सुख होता है।
मगल की—मन्त्री या सेनापति, धन-वाहन-स्त्री-पुत्रादि का सुख और उत्तम पुरुष होता है।
वुध की—धन, स्त्री, पुत्र, वाहनादि से सम्पन्न, स्त्री प्रकृति, स्त्री का सेवक और स्त्री का आज्ञाकारी होता है।
गुरु की—अनेक शास्त्रों का श्रवण-शील, धर्मात्मा, राजा का प्रधान कार्य-कर्ता, पुत्रसुख और राज्यसुख पाता है।
शुक्र की—स्त्री सम्बन्ध से धनवान्, गुणज्ञ, गुणवती स्त्री का सेवक, विद्वान् तथा मिलनसार होता है।
शनि की—कृषि कर्म में चतुर, स्त्री सुख रहित, पुलिस पदाधिकारी, असत्य-भाषी और अल्प धन सुख होता है।

[कन्यास्थ चन्द्र पर ग्रह–दृष्टि–फल]

सूर्य की—कोषाध्यक्ष, प्रसिद्ध, प्रामाणिक बुद्धि वाला, स्त्री–हीन, भक्तियुक्त और विशेष शुभ कार्य करता है।
मगल की—हिंसक, वीर, राजा का आश्रयी, विजयी, शिल्पकार्य में पटु, शिक्षित किन्तु माता को कष्ट देता है।
वुध की—ज्योतिष या कविता जानने वाला, कला–विज्ञ, विवाद से विजयी, चतुर और सगीत-प्रिय होता है।
गुरु की—अनेक भाइयों का सुख, राजप्रिय, प्रामाणिक जीविका युक्त, शुद्ध–हृदय, यशस्वी और धनी होता है।
शुक्र की—वेश्यागामी, स्त्री के वशीभूत, राजा द्वारा धनलाभ, भूषणादि प्रिय, धनी और चतुर होता है।
शनि की—धनहीन या बुद्धिहीन, स्त्रीद्वारा धनलाभ, विस्मययुक्त, माताहीन, दुःखी और स्त्री के वशीभूत होता है।

[तुलास्थ चन्द्र पर ग्रह–दृष्टि–फल]

सूर्य की—भ्रमण-कर्ता, रोगी, निर्धन, सुन्दर, स्त्री-पुत्रहीन, मित्र सुखी तथा शत्रु से सन्ताप पाता है।
मंगल की—परधन हरण करने की इच्छा, विषयों से सन्तप्त, तीक्ष्णस्वभाव, परस्त्रीप्रेमी और बुद्धिमान् होता है।
वुध की—अनेक कलाओं का जानकार, धन–धान्ययुक्त, वक्ता, विद्वान्, प्रसिद्ध और मृदु-भाषी होता है।
गुरु की—वस्त्र भूषणादि का सुख, चतुर, व्यापार क्रिया में पटु और सर्वत्र सम्मानित होता है।
शुक्र की—चतुर, अनेक व्यापार द्वारा धनलाभ, राजप्रीति, सम्पादक, पुष्टशरीर और प्रसन्न-चित्त होता है।
शनि की—धनाढ्य, प्रिय-भाषी, वाहन-सुख, भृत्यादि युक्त किन्तु स्त्री विषयक सुखहीन होता है।

[वृश्चिकस्थ चन्द्र पर ग्रह–दृष्टि–फल]

सूर्य की—अप्रामाणिक, धनाढ्य, स्वेच्छाचारी, उद्दण्ड, सैनिककार्य, सुखरहित और उद्योगी पुरुष होता है।
मगल की—युद्ध मे वीर, यशस्वी, गौरवपूर्ण, राजद्वार से धनलाभ और राजतुल्य सुखी होता है।
वुध की—भाषण-कुशल, वीर, गीत-नाद-प्रिय, चतुर, युक्तिवादी और यमल (जुड़ेले) सन्तान वाला होता है।
गुरु की—चतुर, दूसरे की इच्छा पर चलने वाला, सत्कर्मचारी, धनी और अधूरा काम छोडने वाला होता है।
शुक्र की—प्रसन्न-चित्त, यशस्वी, तीव्र बुद्धि, धन, वाहनादि का सुख किन्तु स्त्रीसयोग में धननाश करता है।
शनि की—धर्मभ्रष्ट, धनहीन, दुष्ट सन्तति, निर्बल, क्षयरोगी, कृपण और असत्यभाषी होता है।

[धनुस्थ चन्द्र पर ग्रह-दृष्टि-फल]

सूर्य की—प्रतापी यशस्वी धन-लाभ वाहनसुख युद्ध में विजयी, सुखी, राजनीति और मिलनसार होता है।
मंगल की—प्रतापी, सेनापति धनाढ्य भूषणादि सुख और वस्त्रादि युक्त होता है।
बुध की—बड़े अच्छे ढंग से बोलने वाला, अनेक सेवकादि संयुक्त और ज्योतिष या शिल्प-शास्त्रज्ञ होता है।
गुरु की—उच्चपदाधिकारी, मन्त्री आदि पदस्थ धनी शुद्ध-हृदय वाला रूपवान् तथा सुखी होता है।
शुक्र की—धनी, सन्तान से युक्त, धार्मिक, सदा सुखी कामी और अच्छे मित्रों का सुख पाता है।
शनि की—सत्यवादी शास्त्र में श्रद्धा रखने वाला भाषण-पटु, प्रतापी प्रिय-भाषी प्रसिद्ध और सौम्य पुरुष होता है।

[मकरस्थ चन्द्र पर ग्रह-दृष्टि-फल]

सूर्य की—निर्धन मलिन, भ्रमण-शील, बुद्धिहीन दीन, दुःखी किन्तु शिल्पकार होता है।
मंगल की—अतिक्रोधी वाहन-युक्त चतुर, अति उदार, स्त्री पुत्र और धनादि का सदा सुख-भोगी होता है।
बुध की—बुद्धिहीन धनरहित गृह-त्यागी स्त्री-पुत्रादि-विहीन, भ्रमण-प्रिय सत्य रहित और चंचल होता है।
गुरु की—राजा द्वारा पुत्रवत् माननीय सत्यवादी, गुणज्ञ, स्त्री पुत्र मित्रादि से युक्त और यशी होता है।
शुक्र की—उत्तम नीतिज्ञ धन वाहन, उत्तम स्त्री, पुत्र वस्त्र और आभूषणादि सर्व सुखों से युक्त होता है।
शनि की—आलसी धन एवं पराक्रम से रहित, व्यसनों से सम्पन्न परस्त्रीभोगी और असत्यवादी होता है।

[कुम्भस्थ चन्द्र पर ग्रह-दृष्टि-फल]

सूर्य की—कृषि-कर्ता, चमत्कारी कार्य-कर्ता राज्याश्रयी, धार्मिक, मन्द-बुद्धि किन्तु शूर-वीर होता है।
मंगल की—घर एवं धन का त्यागी वियोगी वाचाल कठिन श्रमकर्ता मूर्ख किन्तु सत्यवक्ता होता है।
बुध की—भोजन-विधि ज्ञाता मधुर-भाषी स्त्रियों का प्रिय और उनकी चतुरता को जानने वाला होता है।
गुरु की—ग्राम भूमि गृह बाग सुन्दर स्त्री आदि का सुख-भोगी, कुलीन और सरल-जीवन वाला होता है।
शुक्र की—मित्र पुत्र घर स्त्री सुखादि से विहीन शुद्ध-विचार दीन नीचप्रकृति, भीरु और पापी होता है।
शनि की—परद्वारा सुख एवं लाभ दुष्टा स्त्री से प्रेम अधर्मी और मल-केशयुक्त मलिन शरीर वाला होता है।

[मीनस्थ चन्द्र पर ग्रह-दृष्टि-फल]

सूर्य की—सुखी सेनापति धनाढ्य अतिकामी किन्तु सत्कर्म करने वाला होता है।
मंगल की—व्यभिचारिणी स्त्री की संगति सुख-रहित पापकर्मसेवी शत्रुयुक्त किन्तु अति सुखी होता है।
बुध की—श्रेष्ठ स्त्री-पुत्र से युक्त प्रतिष्ठावान धनाढ्य, राज-कृपा-युक्त और अति सुखी होता है।
गुरु की—उदार-चित्त रूपवान् सुन्दर स्त्री-पुत्र का सुख धनी और कुलीन या राजतुल्य स्थिति होती है।
शुक्र की—उच्च संगीत विद्या का प्रेमी प्रसिद्ध, वेश्या-विलासी प्रसन्न-चित्त सुशील और धनाढ्य होता है।
शनि की—कामातुर स्त्री-पुत्र-बुद्धि-सुख से रहित विकल, माता का शत्रु और कुरूपा स्त्री का प्रेमी होता है।

[मेष-वृश्चिकस्थ मंगल पर ग्रह-दृष्टि-फल]

सूर्य की—चतुर वत्सवत्सल माता का सेवक, धनाढ्य मन्त्री उदार-मना न्यायाधीश और प्रसिद्ध होता है।
चन्द्र की—परस्त्रीप्रेमी शूर-वीर चोरों को मारने वाला मातृभक्त स्वजनों का शत्रु ईर्षालु और कन्या-प्रिय होता है।
बुध की—वेश्या से धन लेने की इच्छा रखने वाला चतुर, परधन-हर्ता धूर्त कामी और द्वेषी होता है।
गुरु की—सम्पत्ति-कर्ता अधिकारी चोर से भी मित्रता भाग्यवान् स्वजनप्रिय और ऐश्वर्य युक्त होता है।
शुक्र की—मंगलासक्त प्रिय स्त्री का अनुगामी यात्रा में आतुर और कोई स्त्री के कारण बन्धन-भोगी होता है।
शनि की—मित्रहीन माता से वियोग कुटुम्ब-विरोधी, परस्त्रीभोगी और चोरों के मारने में वीर होता है।

[वृष-तुलास्थ मंगल पर ग्रह-दृष्टि-फल]

सूर्य की—स्त्री विरोध से वन-पर्वत-गुफा का निवासी, शत्रुहीन, क्रोधी और गम्भीर होता है।
चन्द्र की—माता का विरोधी, युद्ध-भीरु (डरपोक), अनेक स्त्रियों का सेवी और रूपवान् होता है।
बुध की—शास्त्रज्ञ, विवाद-प्रिय, वाग्मी, धन का अल्पलाभ, रूपवान्, कोमलशरीर और अल्प सन्तान होती है।
गुरु की—कुटुम्ब में प्रीति, भाग्यवान्, संगीतज्ञ, नृत्य विद्या का जानकार, सुखी, धनी और प्रसिद्ध होता है।
शुक्र की—भाग्यवान्, प्रधान पदाधिकारी, सेनापति, महान् सुख युक्त और प्रसिद्ध कीर्ति वाला होता है।
शनि की—प्रसिद्ध, नम्र, सत्सगति, पवित्र, शास्त्राभ्यासी, नायक, सुखी और विद्वान् होता है।

[मिथुन–कन्यास्थ मंगल पर ग्रह–दृष्टि–फल]

सूर्य की—विद्वान्, ऐश्वर्य युक्त, पराक्रमी, वन-पर्वत-बाग-दुर्ग के निवास में रुचि, बली और गौरव पूर्ण होता है।
चन्द्र की—राजा का अगरक्षक या पुररक्षक स्त्री से सन्तोषी, पराक्रमी, धनी और सुन्दर कन्या होती है।
बुध की—वाचाल, गणितज्ञ, काव्य या लेखनकला में पटु, असत्य-मधुर-भाषी और सहनशील होता है।
गुरु की—राजकर्मचारी, कार्य-कुशल, नायक और न्याय या तर्क शास्त्र के सम्बन्ध से विदेश–वासी होता है।
शुक्र की—सर्व सिद्धि सुख, अपनी स्त्री से सुखी, ऐश्वर्य-भोगी, रक्ताग और उत्तम वस्त्रान्न-भोगी होता है।
शनि की—शूर-वीर, मलिन, आलसी, खदान या वन-पर्वत का निवासी, कृपिकर्ता किन्तु दुःख-भोगी होता है।

[कर्कस्थ मंगल पर ग्रह–दृष्टि–फल]

सूर्य की—पित्त विकार से दुःखी, गम्भीर, न्यायाधीश (जुडीशियल अधिकारी), बली और तेजस्वी होता है।
चन्द्र की—अनेक व्याधियों से पीड़ित, नीचाचरण, कुरूपवान् और नष्ट-वस्तु का पश्चात्ताप करने वाला होता है।
बुध की—मित्रहीन, छोटा कुटुम्ब या कुल, पापी, दुष्ट-चित्त, मलिन, स्वजनों से तिरस्कृत और निर्लज्ज होता है।
गुरु की—राजमन्त्री, प्रसिद्ध पुरुष, विद्वान्, महामानी (गर्वित), त्यागी एव भोग-रहित होता है।
शुक्र की—स्त्रियों के सम्बन्ध में धन का खर्च अधिक और सदा अनर्थों को बढ़ाने वाला होता है।
शनि की—जलज पदार्थ, चावल आदि वस्तु द्वारा लाभ, रूपवान् और राजद्वार से धनलाभ करता है।

[सिंहस्थ मगल पर ग्रह–दृष्टि–फल]

सूर्य की—स्वजन तथा मित्र का सुख, इनका हितकारी, शत्रुविरोधी, पशुस्थान, वन, पर्वत का वासी होता है।
चन्द्र की—बली, रूपवान्, कठोर प्रकृति, माता का सेवक, स्वकार्य-साधक, बुद्धिमान् और यशस्वी होता है।
बुध की—अनेक कला-प्रिय, काव्य-रुचि, चतुर, शीघ्रग्राही और कई कार्यों की सिद्धि प्राप्त करता है।
गुरु की—बुद्धिमान्, राजा का मित्र, सेनापति, मनुष्यों के कार्य सफल करनेवाला, सर्वप्रिय और विद्वान् होता है।
शुक्र की—अनेक स्त्रियों का भोगी, अभिमानी, रूपवान्, धनवान्, काम-शक्ति-प्रबल और बलिष्ठ होता है।
शनि की—दूसरे के घर में निवास, चिन्तातुर, दुर्बल, निर्धनी, वृद्धाचरण, भ्रमण-शील और दुःखी होता है।

[धनु–मीनस्थ मंगल पर ग्रह–दृष्टि–फल]

सूर्य की—वन-पर्वत-दुर्ग आदि का निवासी, क्रोधी, भाग्यवान्, लोगों के द्वारा सम्मानित और नायक होता है।
चन्द्र की—विद्वानों का प्रेमी, राजविद्रोही, युद्ध-प्रिय, चतुर, बुद्धिमान् और त्यागी होता है।
बुध की—चतुर, शिल्प-कला-प्रवीण या अनेक विद्या कुशल, सदिच्छावाला, शान्त और मेधावी होता है।
गुरु की—स्त्रीरहित, सुखहीन, शत्रु से विवाद, धनाढ्य, व्यायाम करनेवाला और स्थान-भ्रष्ट हो-जाता है।
शुक्र की—उदार-मना, विषयासक्त, आभूषणधारक, भाग्यवान् और अनेक स्त्रियों का भोगी होता है।
शनि की—श्यामवर्ण, कुरूपवान्, भटकने वाला, दुःखी, परकार्यकर्ता और अन्य धर्मों का सेवक होता है।

[मकर–कुम्भस्थ मंगल पर ग्रह–दृष्टि–फल]

सूर्य की—स्त्री-पुत्र-धनादि से सुखी तीक्ष्ण स्वभाव, शूर-वीर, और श्यामवर्ण या कुरूपवान् होता है।
चन्द्र की—आभूषण-प्रिय मातृ-सुख-रहित स्थान-भ्रष्ट, क्षणिक-मैत्री उदार और बलवान् होता है।
बुध की—मिथ्याभाषी भ्रमणशील, धनवान पराक्रमी कपटी, निर्भयी किन्तु अधर्माचारी होता है।
गुरु की—रूपवान् दीर्घायुभोगी, अधर्म से दूर राजकृपायुक्त, गुणी और स्थिरता से कार्यारम्भ करता है।
शुक्र की—भाग्यशाली सुखी स्त्री के वश में रहने वाला अनेक सुखभोगी धनाढ्य और युद्ध का प्रेमी होता है।
शनि की—राजा के समान धनाढ्य अनेक सम्पत्ति, स्त्री–विरोध बुद्धिमान और संग्राम का प्रेमी होता है।

[मेष–वृश्चिकस्थ बुध पर ग्रह–दृष्टि–फल]

सूर्य की—कुटुम्ब प्रेमी सत्यवक्ता विलासी राजा से माननीय और अनेक सुख भोगी होता है।
चन्द्र की—गीतादि प्रिय कामिनी स्त्रियों में आसक्ति कपटी सेवक, वाहनसुख और मलिनवृत्ति वाला होता है।
मंगल की—राज कृपा, धनी, शूर कलाभिज्ञ चतुर युद्धप्रेमी मधुर-भाषी किन्तु क्षुधा से पीड़ित होता है।
गुरु की—सुखी, चतुर सत्यभाषी स्त्रीपुत्रयुक्त हास्य मुखी, धनाढ्य अच्छे केश और अधिक रोमयुक्त होता है।
शुक्र की—स्त्री-लोलुप गुणी सम्मानी मर्यादायुक्त बुद्धिमान, नम्र मित्र-प्रिय और राजकर्मचारी होता है।
शनि की—बड़ा उद्यमी क्रोधी कुटुम्ब में कलह दुष्ट-बुद्धि अति दुःखी और हिंसा के कार्य करता है।

[वृष–तुलास्थ बुध पर ग्रह–दृष्टि–फल]

सूर्य की—दरिद्र दुःखी रोग से पीड़ित, परोपकारी शान्त प्रकृति और उत्तम-मन वाला होता है।
चन्द्र की—महाप्रपंची धनी अल्पभाषी, मन्त्री भक्ति-कर्ता निरोगी दृढ़-देह और कुटुम्बमें प्रसिद्ध होता है।
मंगल की—राजा से अपमानित रोग से पीड़ित मित्र से मतभेद, शत्रुओं से दुःखी तथा विषय-हीन होता है।
गुरु की—पुर ग्रामादि का नायक, चतुर गुण-ग्राहक मिलनसार बुद्धिमान तथा प्रसिद्ध होता है।
शुक्र की—रूपवान्, वस्त्राभूषण से शोभित स्त्रियों का आकर्षण करने वाला और भाग्यशाली होता है।
शनि की—स्त्री, पुत्र, धन, वाहनादि से दुःखी, संतापयुक्त बन्धु शोक रोगी या मलिन-चित्त वाला होता है।

[मिथुन–कन्यास्थ बुध पर ग्रह–दृष्टि–फल]

सूर्य की—सत्यवक्ता उत्तमशीलाचारवान् माननीय सम्पादन कार्यकर्ता शान्त-स्वभाव, औरमृदुभाषी होता है।
चन्द्र की—वाचाल मधुरवक्ता विवाद-प्रिय राजा का अंगरक्षक शासक, दृढ़ शरीर और कार्य पटु होता है।
मंगल की—प्रसन्न-चित्त हास्य-प्रिय कपटी कला-कुशल राजकार्य में प्रवीण और सबों का प्रिय होता है।
गुरु की—धनाढ्य पराक्रमी राज-कृपा उच्चाधिकारी विद्वान प्रसिद्ध शास्त्रज्ञ और बुद्धिमान् होता है।
शुक्र की—राजा का वकील (एलची), विजयी संधि कराने में चतुर उत्तम स्त्री में आसक्ति और बुद्धिमान् होता है
शनि की—आरम्भकृत कार्य का पूर्णकर्ता नम्र धनाढ्य वाहन-सुख और वस्त्राभूषण से युक्त रहता है।

[कर्कस्थ बुध पर ग्रह–दृष्टि–फल]

सूर्य की—रंगाई-धुलाई, पुष्पकार्य सजावट रसमलने का काम करने वाला या इनका व्यापारी होता है।
चन्द्र की—स्त्री के लिए कपटी, अधिक व्यय दुर्बल रोगी और स्त्री के लिए सन्तप्त रहता है।
मंगल की—अल्प विद्या सुख चोरों से प्रीति शूर-वीर मृदु-भाषी और असत्याचरण में प्रवीण होता है।
गुरु की—अति बुद्धिमान चतुर कार्य-कर्ता (प्रबन्ध-कुशल), भाग्यवान् वाक्पटु माननीय और विद्वान् होता है।
शुक्र की—प्रिय-भाषी सुन्दर गीत-नृत्यादि का प्रेमी कला-कुशल वाद्य-कला में पटु और भाग्यवान् होता है।
शनि की—गुणहीन कुटुम्ब-रहित असत्य भाषी दम्भी, कृतघ्न पापबुद्धि और गुणवानों का विरोधी होता है।

[सिंहस्थ बुध पर ग्रह-दृष्टि-फल]

सूर्य की—निर्दयी, चालाक, द्वेषी, ईर्षा करने वाला, हिंसक, क्रूर, कपटी और क्षुद्र-विचार वाला होता है।
चन्द्र की—रूपवान्, बुद्धिमान्, गीत-नृत्यादि का प्रेमी, श्रेष्ठ आजीविका, कवि, धनी और सदाचारी होता है।
मंगल की—दुःखी, मूर्ख, नपुंसक या क्षयरोगी, निर्बल, धन-धान्य का कष्ट और कल्पित अंग वाला होता है।
गुरु की—कोमल तथा निर्मल स्वभाव, कुलीन, सुन्दर नेत्र, विद्वान्, प्रतापी और धन-वाहनादि से सुखी होता है।
शुक्र की—रूपवान, प्रिय-भाषी, वाहन-युक्त, धनलाभ, गम्भीर-स्वभाव और राजा या मन्त्री होता है।
शनि की—मलिन वेष, स्वेद की दुर्गन्ध से युक्त शरीर, कुरूपवान्, क्रोधी और सुख-विहीन होता है।

[धनु-मीनस्थ बुध पर ग्रह-दृष्टि-फल]

सूर्य की—शूर-वीर, पथरी-प्रमेहादि रोग युक्त, किन्तु मनोद्वेग से निवृत्ति पाकर, शान्ति-प्राप्ति करता है।
चन्द्र की—अच्छा सम्पादक, महात्मा और सज्जनों की संगति, सुखी, सुकुमार और धनी होता है।
मंगल की—चोरों का या चोरी के द्रव्य का लेखा-जोखा करने वाला किन्तु धन-धान्य से विहीन होता है।
गुरु की—विज्ञानवेत्ता, ज्ञानी, कुल-भूषण, कोषाध्यक्ष (खजाञ्ची), जन-पालक और अच्छा लेखक होता है।
शुक्र की—प्रधान पदस्थ, राजकार्य का गणितज्ञ (एकाउन्टेन्ट जनरल), चोरों का प्रेमी, धनी और वीर होता है।
शनि की—अधिक भोजन करने वाला, बुरी चेष्टा, वन-पर्वतादि का इच्छुक और कार्य में अनुपयोगी होता है।

[मकर-कुम्भस्थ बुध पर ग्रह-दृष्टि-फल]

सूर्य की—अपनी भाग्य से प्रतापी, मल्ल-कुशल, शिक्षित, कुटुम्ब-युक्त, अति-भोजन-कर्ता और निष्ठुर होता है।
चन्द्र की—जलमार्ग का व्यापारी, पुष्प-कन्द-मूल, शराब, सोडा-वाटर आदि तरल पदार्थ का व्यापारी होता है।
मंगल की—लज्जा या आलस्य से नम्र स्वभाव वाला, सौम्यमूर्ति, चंचल-वाणी और धन-धान्ययुक्त होता है।
गुरु की—धन-धान्य-वाहनादि का सुख, पुर-ग्रामादि का प्रमुख-पुरुष और अतिबुद्धिमान् होता है।
शुक्र की—क्षुद्र मनुष्यों की संगति, कुरूपवान्, बुद्धि-विहीन, अनेक सन्तान युक्त और पदाधिकारी होता है।
शनि की—सुखरहित, पापकर्मा, दरिद्र, दुःखी, मजदूर (लेबर) और दुष्टों की संगति करता है।

[मेष-वृश्चिकस्थ गुरु पर ग्रह-दृष्टि-फल]

सूर्य की—सत्यवादी, धार्मिक, विख्यात, भाग्यशाली, नम्र प्रकृति किन्तु रोग युक्त शरीर होता है।
चन्द्र की—प्रसिद्ध, स्त्रियों का प्रिय, श्रेष्ठजनानुरागी, इतिहास या काव्य मे रुचि, धनी और चतुर होता है।
मंगल की—क्रूर, धूर्त, गर्व-हन्ता, राजाश्रययुक्त और अनेक मनुष्यों का पालक होता है।
बुध की—सदाचारी, सत्यभाषी, परछिद्रान्वेषी, नम्रजन का मित्र, धूर्त (अतिचतुर) और कपटी होता है।
शुक्र की—सुगन्ध पदार्थ, शय्या, भूषण, आसन, गृह, वस्त्र और स्त्री आदि के सुख से सम्पन्न होता है।
शनि की—लोभी, क्रूर, हठी, मलिन, मित्र-विहीन और सन्तान-रहित होता है।

[वृष-तुलास्थ गुरु पर ग्रह-दृष्टि-फल]

सूर्य की—युद्ध-विजयी, देह में घाव के चिन्ह, रोगी, सेवकादिसुख, वाहन-युक्त और राजमन्त्री होता है।
चन्द्र की—सत्य-प्रिय, नम्र, परोपकारी, धनाढ्य, भाग्यशील, माता का सेवक और स्त्रियों का प्रिय होता है।
मंगल की—मृदुभाषी, भाग्यवान्, सन्तानसुखी, किसी कन्या का प्रेमी, बुद्धिमान, धनाढ्य और सुखी होता है।
बुध की—विद्वान्, भाग्यवान, राजद्वार से धनलाभ, कला-निपुण, चतुर, मिष्ट-भाषी और गुणी होता है।
शुक्र की—उत्तम जीविका वाला, धनाढ्य, ऐश्वर्यवान और वस्त्र तथा शय्या आदि से सुखी होता है।
शनि की—स्त्री-पुत्रादि का सुख, चतुर, धन-धान्ययुक्त, पुर-ग्रामादि या उत्सव में प्रमुख, भ्रमण-सुखी होता है।

[मिथुन-कन्यास्थ गुरु पर ग्रह-दृष्टि-फल]

सूर्य की—स्त्री पुत्र, मित्र धनादि का श्रेष्ठसुख उत्तम प्रतिष्ठायुक्त तथा अच्छे कुटुम्ब वाला होता है।
चन्द्र की—गुणज्ञ, परोपकारी, गौरवयुक्त, माता की कृपा, धनसुखी और स्त्री-पुत्रादि से सम्पन्न होता है।
मंगल की—संग्राम में विजयी, देह में घाव के चिन्ह, पराक्रमी धनयुक्त और लोगों से सम्मानित होता है।
बुध की—स्त्री पुत्र, मित्र और धनादि से सम्पन्न ज्योतिष या शिल्पकार्य में प्रवीण और नियम-निर्माता होता है।
शुक्र की—स्त्री, पुत्र धन महल मन्दिर धर्मशाला जलाशय कृषि आदि से सम्पन्न होता है।
शनि की—राजपूज्य, उत्सवादि में तत्पर आनन्दयुक्त, गुणी पुर-ग्रामादि का नायक और सुन्दर शरीर होता है।

[कर्कस्थ गुरु पर ग्रह-दृष्टि-फल]

सूर्य की—पहले स्त्री, पुत्र धन के सुख से हीन हो जाता है, पश्चात् इनसे सुखी, प्रसिद्ध और नायक होता है।
चन्द्र की—भाण्डार का अध्यक्ष (स्टोर कीपर) रूपवान स्त्री, पुत्र धनादि का सुख और वाहन-युक्त होता है।
मंगल की—स्त्री, पुत्र वस्त्र, भूषणादि का उत्तम सुख गुणी शूर-वीर और शरीर में व्रण के चिन्ह होते हैं।
बुध की—मित्र की सहायता से सुख लाभ सन्मार्ग में बुद्धि प्रतापी और राजमन्त्री (सलाहकार) होता है।
शुक्र की—स्त्री का अनेक सुख ऐश्वर्यवान, वस्त्राभूषण से सुखी और बड़ा भाग्यवान् होता है।
शनि की—सम्मान प्राप्ति सेनापति, पुर-ग्रामादि का नायक, धनाढ्य और वृद्धावस्था में अधिक सुख पाता है।

[सिंहस्थ गुरु पर ग्रह-दृष्टि-फल]

सूर्य की—अर्थी स्वभाव प्रसिद्ध, धूर्त, राजद्वार से धन लाभ और शुभ काम में चित्त लगाता है।
चन्द्र की—प्रसन्नचित्त, सन्देहात्मक बुद्धि मलिन और किसी स्त्री के द्वारा भाग्यवान् होता है।
मंगल की—श्रेष्ठ जनों से माननीय, अच्छे काम करने वाला चतुर बुद्धिमान् शुद्धहृदय, शूर-वीर होता है।
बुध की—गृह मंदिर धर्मशाला आदि का निर्माता गुणज्ञ, राजमन्त्री, मृदु-भाषी और प्रसिद्ध होता है।
शुक्र की—राजद्वार से सम्मान, पटुबुद्धि, स्त्रियों में अभिरुचि गुण-ग्राहक, भाग्यवान् और बलिष्ठ होता है।
शनि की—सुख विहीन, मलिन-चित्त, बोलने में चतुर दुर्बल शरीर और उदासीन रहने वाला होता है।

[धनु-मीनस्थ गुरु पर ग्रह-दृष्टि-फल]

सूर्य की—राजद्रोही, मित्रों से उदासीन या वैरभाव शत्रुओं से सन्तप्त, धनहीन और वस्तुओं से त्यक्त होता है।
चन्द्र की—अनेक प्रकार से सुखी मित्र अधिक, स्त्रियों का प्रिय और धन-मान-पद से गर्वित होता है।
मंगल की—युद्ध-कार्य में कुशल युद्ध के कारण शरीर में व्रण-चिन्ह, हिंसक, क्रोधी और परोपकारी होता है।
बुध की—राजद्वार से पदप्राप्ति, स्त्री पुत्र, धन, ऐश्वर्य आदि से सम्पन्न परोपकारी और आनन्द-भोगी होता है।
शुक्र की— सुखी धनाढ्य, बुद्धिमान्, प्रसन्न-चित्त, चतुर दीर्घायु-भोगी भाग्यशील और दोष-रहित होता है।
शनि की—अधिकार से भ्रष्ट, सम्मान से रहित, युद्ध में पराजित, मलिन, धनहीन और भययुक्त होता है।

[मकर-कुम्भस्थ गुरु पर ग्रह-दृष्टि-फल]

सूर्य की—प्रसन्न-मुख सुन्दर वाणी परोपकारी उच्चकुल में जन्म माननीय, विद्वान् और श्रेष्ठ पुरुष होता है।
चन्द्र की—माता-पिता का भक्त, कुल-पालक, तीव्र-बुद्धिवाला अच्छा स्वभाव धर्मात्मा और अभिमानी होता है।
मंगल की—राजकृपा से धनलाभ, सम्मानित सुखी शूर-वीर गर्वित सुवेश और प्रसिद्ध होता है।
बुध की—शान्त प्रकृति सदैव स्त्री के वश में रहनेवाला और इसकी धर्म-काम में अधिक रुचि रहती है।
शुक्र की—विद्या विवेक, धन पुत्र आदि से सम्पन्न राजा से इच्छापूर्ति सम्मानित और सुख भोगी होता है।
शनि की—मनोरथ की सफलता उत्तमगती धन-धान्य से युक्त विद्वान् पशु सुख और श्रेष्ठ पुरुष होता है।

[मेष-वृश्चिकस्थ शुक्र पर ग्रह-दृष्टि-फल]

सूर्य की—राज-प्रसन्नता, स्त्री के कारण दुःखी, धन-नाश, स्त्रियों के कपट का जानकार और चतुर होता है।
चन्द्र की—माननीय, चल-चित्त, कामातुर होने से रोगी, अधम शरीर और नीच स्त्री का स्वामी होता है।
मंगल की—धन, मान, सुख आदि से रहित, दीन-मलीन और परकार्य करने वाला मनुष्य होता है।
बुध की—दुष्ट-प्रकृति, धन तथा कुटुम्ब से रहित, बुद्धि-बल-विहीन, कपटी, क्रोधी और परधन हरण करता है।
गुरु की—स्त्री, पुत्र, धन, ऐश्वर्य आदि से सुखी, रूपवान्, नम्र, उदार-मना और सुन्दर नेत्रवाला होता है।
शनि की— धनी होकर दरिद्री, दिखे, शान्त, मलिन, आलसी, मित्रों से सहायता और सलाहकार होता है।

[वृष-तुलास्थ शुक्र पर ग्रह-दृष्टि-फल]

सूर्य की—श्रेष्ठ स्त्री का सुख, धनाढ्य, पशु वाहनादि सुख और स्त्री के कारण अपने कुटुम्बियों से दवा रहता है।
चन्द्र की—परस्त्री गामी, कुल-पालक, शुद्ध-चित्त, उत्तम भाषण-कर्ता, पुत्रहीन, धनाढ्य और सुन्दर होता है।
मंगल की—गृह-सुख-त्यागी, युद्ध में अपमानित, प्रमादवश सब नष्ट कर देने वाला और कामी-पुरुष होता है।
बुध की—गुणी, भाग्यशाली, कामी, मनोहर स्वभाव, पराक्रमी, दृढता-युक्त और सुख-सम्पन्न होता है।
गुरु की—वाहनसुख, धनाढ्य, स्त्री-सौभाग्य-भोगी, नम्र, विलासी, पुत्र-सुख और वैभववान् होता है।
शनि की—वाहन-सुख, धनाढ्य, स्त्री-सुख से रहित, असफल स्त्री के वशीभूत, स्थान-भ्रष्ट और रोगी होता है।

[मिथुन-कन्यास्थ शुक्र पर ग्रह-दृष्टि-फल]

सूर्य की—अन्तःपुर (जनानखाना) का अधिकारी, शान्त-स्वभाव, गुणी, शास्त्रज्ञ और धनवान् होता है।
चन्द्र की—उत्तम वस्त्राभूषण से सुखी, कमल-नेत्र, सुकेश, रूपवान, शय्या, भोजन, वाहनादि से सम्पन्न होता है।
मंगल की—भाग्यशाली, काम-कला में प्रवीण और स्त्री के सम्बन्ध से धन का अधिक खर्च होता है।
बुध की—बुद्धिमान्, वाहन सुख, धन की वृद्धि, सेनापति, कुटुम्ब-सुखी और चतुर होता है।
गुरु की—अपने बुद्धि-बल से सम्पत्तियुक्त, हास्य-मुख, उत्तम शान्त मन वाला और बुद्धिमान् होता है।
शनि की—मान-हीन, चंचल प्रकृति, अति दुःखी, लोगों से त्यक्त, द्वेष-पूर्ण-जीवन और मूर्ख होता है।

[कर्कस्थ शुक्र पर ग्रह-दृष्टि-फल]

सूर्य की—स्त्री-द्वेष से विनाश, किन्तु अच्छे कर्म करने वाली, सुन्दर, धनाढ्य और क्रोधिनी स्त्री मिलती है।
चन्द्र की—पहले कन्या, पश्चात् पुत्र जन्म, धनलाभ, माता को सुखदायक, भाग्यवान और श्रेष्ठ पुरुष होता है।
मंगल की—कलाभिज्ञ, धनाढ्य, भाग्यशाली, स्त्री के कारण दुःखी शत्रुहीन, निज बुद्धि-बल से सुखी होता है।
बुध की—विद्वान, गुणज्ञ, स्त्री-पुत्र के दुःख से दुःखी, धनाढ्य और अधिक भ्रमण करने से सुखी होता है।
गुरु की—चतुर, विद्वान्, नम्र, स्त्री, पुत्र, धनादि से सम्पन्न, सेवक, मित्र-युक्त और राज-पूज्य होता है।
शनि की—व्यर्थ उद्योगशील, धन-हीन, स्त्री के वश में रहनेवाला, पद-च्युत, चल-चित्त और कुरूपवान होता है।

[सिंहस्थ शुक्र पर ग्रह-दृष्टि-फल]

सूर्य की—धनाढ्यों की समता करने की इच्छा, स्त्री द्वारा धनी, पशु द्वारा सुख-लाभ और कामी होता है।
चन्द्र की—विमाता-युत, स्त्री से मतभेद, स्त्री के कारण दुःखी, चतुर और बुद्धिमान होता है।
मंगल की—राजपूज्य, धन-धान्य-सम्पन्न, व्यसन से सन्तप्त, प्रसिद्ध, भाग्यवान और परदारप्रेमी होता है।
बुध की—धनलाभ युत, व्यभिचार के कारण प्रतिष्ठा का विनाश, समर्थ, शठ, वीर, असत्यवादी होता है।
गुरु की—मन्त्री (सलाहकार) धनाढ्य, वाहनसुख, स्त्री, पुत्र, सेवक सम्पन्न और न्यायाधिकारी होता है।
शनि की—राजा या राजतुल्य न्यायाधीश (चीफ जस्टिस), विख्यात, रूपवान् और विषय-पति होता है।

[धनु-मीनस्थ शुक्र पर ग्रह-दृष्टि-फल]

सूर्य की—कपटी, बुद्धिमान भाग्यशाली, पराक्रमी धनाढ्य वीर और विदेशी यात्राओं में रुचि रखता है।
चन्द्र की—राजा का मित्र धनाढ्य नम्र-स्वभाव भोगी गम्भीर, विख्यात, बलिष्ठ और प्रतापी होता है।
मंगल की—निर्भय हास्य-युक्त, धन-युक्त, स्त्री के द्वारा धनी, पुण्यात्मा वाहन-सुख और पशु-पालक होता है।
बुध की—उत्तम वाहन धन वस्त्र, भूषणादि से सुखी एवं मिष्ठान्न-भोजी होता है।
गुरु की—स्त्री, पुत्र यश धन, वाहन वस्त्र, भूषणादि से सम्पन्न और ऐश्वर्यवान् होता है।
शनि की—उत्तम सुख भोगी क्रीड़ा या कौतुक प्रेमी और धन-धान्य-सम्पन्न होता है।

[मकर-कुम्भस्थ शुक्र पर ग्रह-दृष्टि-फल]

सूर्य की—धैर्यवान् धनी सत्य-भाषी सुख-सम्पन्न वीर किन्तु कामातुर होता है।
चन्द्र की—तेजस्वी, पराक्रमी, रूपवान् धनसुख वाहन-युक्त, वीर तथा माननीय होता है।
मंगल की—परिश्रम या रोग से सन्तप्त, स्त्री-मृत्यु के पश्चात् अनर्थकारी और तीर्थ-यात्रिक होता है।
बुध की—विद्वानों का गुण-ग्राही धनाढ्य हास्य-युक्त चतुर वाक्पटु, मर्यादा-शील और सुखी होता है।
गुरु की—सुगन्ध पदार्थ वस्त्र संगीत नृत्य आदि का ज्ञाता सुख-भोगी और सुन्दर स्त्री वाला होता है।
शनि की—प्रसन्नचित्त अनेक प्रकार से लाभ, स्त्री-पुत्र वाहनादि सुख, किन्तु मलिन या श्याम शरीर होता है।

[मेष-वृश्चिकस्थ शनि पर ग्रह-दृष्टि-फल]

सूर्य की—पशु-सम्पत्ति-युक्त कृषि कर्मचारी श्रेष्ठ जीविका युक्त और पुण्य-कर्म में तत्पर रहता है।
चन्द्र की—वाचाल, नीच-संगति क्रूर-स्वभाव, द्रव्य, सुख, धन से विहीन नीच या कुरूपा स्त्री का प्रेमी होता है।
मंगल की—मितभाषी धन-रहित काम में बाधा हिंसक, चोरों का प्रधान, विख्यात और प्रेमी होता है।
बुध की—चोरी करने वाला स्त्री-पुत्रादि के सुख से हीन बहु-भोजी और सुख-विभव का विनाश करता है
गुरु की—सुखी धनी राजमन्त्री उच्चपदाधिकारी और ग्राम-सम्पन्न होता है।
शुक्र की—यात्राएँ अधिक, वृद्धा-स्त्रियों से प्रेम शोभारहित, दुःखी-चित्त चपल और कुरूपवान् होता है।

[वृष-तुलास्थ शनि पर ग्रह-दृष्टि-फल]

सूर्य की—अध्ययन-कुशल उत्तम-भाषण-कर्ता पराम-भोक्ता धन-हीन और शान्त-स्वभाव का होता है।
चन्द्र की—राज-कृपा से उच्चपदाधिकारी अच्छे कुटुम्ब वाला और स्त्री-रत्नादि से सम्पन्न होता है।
मंगल की—युद्ध-प्रिय युद्ध-इतिहास-वेत्ता, बकवादी आनन्दी-स्वभाव किन्तु संग्राम में कायर होता है।
बुध की—स्त्रियों में आसक्ति, हास्य-विनोदी नाटकादि में रुचि नपुंसकों से मैत्री और स्त्री का सेवक होता है।
गुरु की—उद्योग में तत्पर दूसरे का उपकार करनेवाला, पर दुःख से दुःखी और सर्व लोक-प्रिय होता है।
शुक्र की—रत्नादि धनसम्पन्न स्त्री-सुख बहुयात्री वस्त्र या तरल वस्तु का व्यापारी और राजमान पाता है।

[मिथुन-कन्यास्थ शनि पर ग्रह-दृष्टि-फल]

सूर्य की—सुख-रहित नीचकर्मकर्ता क्रोधी अधर्मी द्रोही महादरिद्री, क्लेश सहनेवाला और गम्भीर होता है।
चन्द्र की—प्रसन्न-चित्त राजकृपा अधिकारी अन्तःपुर (जनानखाना) का सेवक और सुरूपवान् होता है।
मंगल की—बुद्धिमान् प्रबन्ध-कुशल विविध प्रसिद्ध गौरवपूर्ण और बोझ उठाने की शक्ति वाला या मल्ल होता है।
बुध की—धनाढ्य बुद्धिमान् नम्र युद्ध-वेत्ता संगीत-प्रिय नृत्यकारा शिल्पकार या दस्तीनिपर होता है।
गुरु की—राजाश्रय गुणज्ञ सज्जनों का मित्र, मनमौजी और गुप्तधन से धनी होता है।)
शुक्र की—भूषण-रचना में चतुर, सत्कारकर्ता, धार्मिक स्त्रियों का प्रेमी किन्तु योगी या योगाचार्य होता है।

दृष्टि-सम्बन्ध

जब दृष्टा (देखने वाला) ग्रह, दृश्य (जिसे देखाजाय) ग्रह पर, दीप्तांश अवधि में, दृष्टि डालेगा, तभी पूर्ण दृष्टि होगी। पूर्व में आक्रमणदृष्टि और उपरान्त में निष्क्रमणदृष्टि रहेगी। ३०-३६-४५ वाली ही दृष्टि, सूर्य-बुध-शुक्र में परस्पर सम्भव रहेगी।

दृष्टि के भेद (पाश्चात्य मत)

	संस्कृत नाम		अंशान्तर		अंग्रेजी नाम		
(१)	एकराश्यन्तर दृष्टि	=	३०	=	(सेमी सेक्स्टाइल)	=	(अल्प शुभ)
(२)	षट्त्रिंशांशान्तर दृष्टि	=	३६	=	(सेमी कीन्टाइल)	=	(अल्प शुभ)
(३)	पंचचत्वारिंशांशान्तर दृष्टि	=	४५	=	(सेमी स्क्वायर)	=	(अशुभ)
(४)	द्विराश्यन्तर दृष्टि	=	६०	=	(सेक्स्टाइल)	=	(सर्वदा शुभ)
(५)	द्विसप्तत्यंशान्तर दृष्टि	=	७२	=	(कीन्टाइल)	=	(अल्प शुभ)।
(६)	चतुष्कोण दृष्टि	=	९०	=	(स्क्वायर)	=	(महाअशुभ)
(७)	त्रिकोण दृष्टि	=	१२०	=	(ट्राइन)	=	(उत्तम, शुभ)
(८)	सार्धत्रिकोण दृष्टि	=	१३५	=	(सेक्स्क्वीकोड्रट)	=	(अशुभ)
(९)	षड्न पंचराश्यन्तर दृष्टि	=	१४४	=	(बिक्वीन्टाइल)	=	(अल्प शुभ)
(१०)	पंचराश्यन्तर दृष्टि	=	१५०	=	(क्वीनकक्स)	=	(अल्प शुभ)
(११)	सप्तम दृष्टि	=	१८०	=	(अपोजीशन)	=	(ग्रहाधीन शुभाशुभ)
(१२)	समक्रान्ति	=	१	=	(पेरलल)	=	(ग्रहाधीन शुभाशुभ)
(१३)	युति	=	०	=	(कंजंक्शन क्लोज)	=	(ग्रहाधीन शुभाशुभ)
(१४)	संयोग	=	५	=	(कंजंक्शन)	=	(ग्रहाधीन शुभाशुभ)

ताजिक मत से दृष्टि

				अंशान्तर	कलात्मक दृष्टि	(फल)
(१) मित्र-दृष्टि	प्रत्यक्ष स्नेहा —	५।९	वें भाव	१२०	४५	(उत्तम)
	गुप्त स्नेहा —	३।११	,,	६०	४०।१०	(शुभ)
(२) शत्रु-दृष्टि	गुप्त वैरा —	४।१०	,,	९०	१५	(अशुभ)
	प्रत्यक्ष वैरा —	१।७	,,	१८०	६०	(अशुभ)
(३) सम-दृष्टि	समफलप्रदा	२।१२	,,	३०	१५	(अल्प अशुभ)
		६।८	,,	१५०	३०	(अशुभ)

दृष्टि-साधन

जब दो ग्रहों की परस्पर दृष्टि देखना हो, तब जो दृष्टि देखना हो, उस दृष्टि के अंश (दीप्तांश) दृष्टा (ग्रह-स्पष्ट) में जोड़ दे, उन्हीं अंशादिकों के समान जो ग्रह हो, उसी ग्रह पर दृष्टि होगी। इन्हीं पूर्व-पर अंशों के ऋण-धन करने पर क्रमशः आक्रमण और निष्क्रमण दृष्टि सिद्ध होती है। यथा—(ग्रह-स्पष्ट चक्र २३ पृष्ठ १५० में) शुक्र स्पष्ट १।२६।२० है और गुरु स्पष्ट ३।२४।३३ है; इनमें द्विराश्यन्तर दृष्टि (त्रिरेकादश)=६० अंश वाली सम्भव है। अतएव—शुक्र + २ राशि= (१।२६।२० + २ राशि) = ३।२६।२० पर कोई ग्रह होने पर, शुक्र का ६० अंशात्मक दृष्टि-सम्बन्ध रहेगा। ३।२६।२० – ६ अंश=३।२०।२० और ३।२६।२०+८ अंश= ४।४।२० अर्थात् ३।२०।२० से ३।२६।२० तक कोई ग्रह होने पर, शुक्र की आक्रमणदृष्टि तथा ३।२६।२० से ४।४।२० तक कोई ग्रह होने पर, शुक्र की निष्क्रमणदृष्टि रहेगी। जब कि, गुरु ३।२४।३३ है तो, गुरु पर, शुक्र की ६० अंशात्मक आक्रमणदृष्टि है।

नवम-वर्तिका=ज्योतिष का भाग्य

दशम-वार्तिका

ग्रह–त्रय

सभी जीव, अनेक लक्षणों से युक्त होते हैं। किसी का कोई, एक स्थिर लक्षण नहीं। यथा—अमुक गौ, बड़ी साधु है, अमुक व्यक्ति, बड़े गौ हैं आदि। इसी प्रकार मनुष्य में मित्रपक्ष का फल होता है और तारीख, मास, ग्रहादि द्वारा अनेक प्रभाव–कारण से, फल-स्वरूप अनेक लक्षण युक्त, जीव हो जाते हैं। जो लक्षण अधिक (शुभ-अशुभ), जीव में दृष्टि-गोचर होता है वही, विशेष रूप से विकाश पाते हैं एवं जीव के उसी लक्षण को, तारीख, मास, ग्रह आदि पुनः-पुनः वर्णन करते हैं। जिन लक्षणों में न्यूनता (कम-वर्णन) मिलें, उनका प्रकाश, जीवन में कम या नहीं दिखेगा। साधक-बाधक कारणों पर ध्यान देकर फलों का निश्चय करना चाहिए। आगे हर्षल, नेपच्यून और प्लूटो के भी फलों का वर्णन किया जा रहा है। जन्मपत्री में इनकी स्थिति तथा दृष्टि जानने की विधि, पहिले लिखी जा चुकी है। यहाँ उनके फलों का वर्णन किया जा रहा है।

[हर्शल यूरेनस, प्रजापति, वरुण]

अन्य ग्रहों की अपेक्षा, इसका स्वरूप और गुण जानना, गहन है। जितने व्यक्तियों में असाधारणता (विशेषता) और विलक्षणता देखने में आती है, वह सब, इसी ग्रह के कारण होता है। प्रायः तत्त्व-ज्ञानी व्यक्तियों की कुण्डली में हर्शल की ही प्रबलता दृष्टि-गोचर होगी। इसी ग्रह की शुभ प्रबलता के सहयोग से व्यक्ति, तत्त्व-ज्ञान कर सकता है। वर्तमान समय में जैसी अध्यात्म-शास्त्र की प्रगति हो रही है, वह, इसी ग्रह के कारण है। यह वृश्चिक में उच्च का एवं कुम्भ में स्वगृही माना जाता है इसका गुण-धर्म, शनि की भाँति, विद्वानों ने बताया है। यह ग्रह वायु राशि (मिथुन, तुला और कुम्भ) में हर्षित रहता है, क्योंकि शनि, वायुतत्त्व प्रधान है। कुण्डली के १।३।५।७।६।१० वें भाव में, जब यह ग्रह आता है; तभी फलों का विशेष अनुभव होता है।

(१) यह ग्रह लग्न में अनिष्ट फल देता है परन्तु लग्न से अधिक सप्तम में और सप्तम से अधिक दशम में पहुँचने पर यह ग्रह, अधिक अशुभ फल देते हुए, अनुभव में आया है। हाँ, १।७।१० वें भाव में जब वायु राशि (३।७।११) का हर्षल हो तो इसका अनिष्ट फल स्वल्प हो जाता है। शुभग्रह या शुभदृष्टि से भी अनिष्ट फल क्षीण हो जाता है। व्यक्ति, अनेक शास्त्रों का अध्यवसायी होता है।

(२) यह अग्नि राशि (१।५।६) में हो तो हठी, कुशाग्रबुद्धि, महत्त्वाकांक्षी, अति साहसी (संकटों से निर्भीक) और सहसा संकट में कूद पड़ने वाला मनुष्य होता है; परन्तु इससे आकस्मिक सकटों द्वारा कष्ट अधिक मिलता है। यह जल राशि (४।८।१२) में हो तो कामी, दुराग्रही तथा दुष्टस्वभाव का मनुष्य होता है। भूमि राशि (२।६।१०) वाला हर्षल, अशुभकारक है। इस ग्रह के स्थानफल ही (राशिस्थ फल की अपेक्षा) विशेष प्रकाशित होते हैं। हर्शल के पीड़ित होने पर मनुष्य, वाचाल, अभिमानी, और कुशाग्रबुद्धि (चालाक,बुद्धि) वाला हो जाता है। इस ग्रह का प्रधान धर्म है,'आकस्मिक बात खड़ी कर देना'। इसका प्रभाव, आश्चर्य युक्त स्थानों में, अद्भुत मनुष्यों में, गुप्त विद्या के स्थानों में, चमत्कारी वस्तुओं में, जादू (मैस्मरेजम-हिप्नाटिज्म) आदि स्थानों में विशेष होता है।

(३) यह ग्रह, अत्यल्प समय में ही प्रभाव करने वाला होता है। यथा भूकम्प, तूफान, जहाज डूबना, बम-विस्फोट होना, रेडियो का ब्राडकास्ट, टेलीग्राफ, रेलवे, वायुयान, जलस्थ-वाहन, टेलीविजन और रेडियो चलाने वाले कारखाने, तथा इनसे सम्बन्धित व्यक्तियों पर, इसका प्रभाव विशेष होता है। इसके सहयोग से स्वतन्त्रता की धूम,-देशाभिमान- सत्ता, उत्तरदायित्व स्थान, नवीन शोध,

राज्य-क्रान्ति, नवीन राज्य स्थापना, अद्भुतविद्या, अद्भुत मनुष्य, शोधन-कार्य, अन्वेषण कार्य, प्राचीन विद्या, कला का संशोधन, नवीन कल्पना, अभूतपूर्व लक्षण, अघोर (क्रूर) महत्त्वाकांक्षा आदि गुण-धर्म होते हैं। सन् १६४२ से सन् १६४६ तक, यह ग्रह मिथुन राशि में था। इसके लिए मिथुन राशि, वलवती राशि होती है अतएव उन सात वर्षों में 'क्या-क्या उतार-चढ़ाव हुए, क्या-क्या शोध किये गये'—ये आप सब लोग प्रत्यक्ष देख ही चुके हैं। इस समय में अनेक राष्ट्रों के रंग बदल गये, स्थान का नकशा बदल दिया गया, दास-प्रथा का अन्त होने लगा, प्रत्येक राष्ट्र, अपना निर्णय करने के लिए अधिकार प्राप्त किये इत्यादि समकक्ष के फल आपको तुला एवं कुम्भराशिस्थ हर्शल होने पर भविष्य में दिखेंगे, जो कि सन् १६६८ के अक्टूबर से सन् १६७५ के अक्टूबर तक तथा सन् १६६६ के फरवरी से सन् २००३ के एप्रिल तक के समय में रहेंगे। इसी प्रकार आगे के वर्षों में वायुराशिस्थ हर्शल, अनेक शास्त्रीय शोध एवं महान् परिवर्तन करता हुआ दृष्टि-गोचर होगा।

(४) सार्वजनिक संस्था (निगम-जनपद आदि), व्यापारिक मण्डल, सेंडीकेट्स, नवीन तथा आश्चर्यकारक शोध, नवीन-नवीन उद्योग-धन्धे, वैद्यक या डाक्टरी मत से नवीन उपचार पद्धति, विद्युत् एवं रेडियम के प्रयोग, वायोलेट (किरण), डेथर्म (मृत्यु कारक तन्तु) में, इसी ग्रह के प्रभाव दिखाई देते हैं।

(५) जब यह कुण्डली के १।३।८ वें भावों में आ जाता है तब शास्त्राभ्यास या गुप्त-विद्या में मनुष्य का मन लगता है। वृश्चिक राशि में जब यह ग्रह आजाता है तब बौद्धिक चातुर्य का विशेष प्रकाश करता है। ऐसे व्यक्ति, देश के प्रधान-पुरुष, कर्तव्य-शील, समाज सुधारक और नम्रतायुक्त होते हैं।

(६) जब यह, कुण्डली के किसी भाव में शुभग्रह की दृष्टि (शुभदृष्टि) संयोग में आ जाता है तब, अपूर्वशोधकबुद्धि, अत्युच्च कल्पना और नवीन अन्वेषण की योग्यता, मनुष्य को प्रदान करता है। बुद्धिमन्त एवं विलक्षण स्वभाव करना, लहरी जीवन, कानून तोड़ने वाले, स्थापित संस्था के विनाश के कारण, मनुष्य की आश्चर्यकारक शक्ति को बनाना, इसी ग्रह के काम हैं। जन्म कुण्डली के १।२।५।६ वें भाव में स्थित हर्शल, दूसरे मनुष्य पर छापा मारकर, अपने कार्य-साधन की शक्ति देता है। स्वाभाविक रूप से यह ग्रह, जलतत्त्व (शीत गुण-धर्म) का होता है; किन्तु इस ग्रह में शीतत्व अनियमित है। मिश्रित रंग वाला है। मनुष्य के मन एवं मज्जातन्तु पर, इसका प्रभाव विशेष पड़ता है।

(७) जन्म कुण्डली में जब यह ग्रह, बलिष्ठ होता है तब मनुष्य को नवीन शोध का पात्र बनाता है। मनुष्य को प्रतिभा-सम्पन्न कर देता है। जब यह केन्द्र (१।४।७।१० वें भाव) में हो और सूर्य-चन्द्र-गुरु से शुभयोग बनाता हो तो ऐसा मनुष्य, किसी की संस्था का प्रमुख होने योग्य होता है। इसे राजकीय सेवावृत्ति में या सार्वजनिक संस्था में उच्चपद प्राप्त होता है। यह ग्रह, शरीर के मध्य, स्नायुजाल (नर्व्हस सिस्टम) या किसी मशीन के स्नायु (नर्व्हस), मेदे को ढकने वाले तथा मध्य के ज्ञान-तन्तुओं में, प्रभाव डालता है। तात्पर्य यह है कि, स्नायु-जाल में इसकी शुभाशुभ क्रिया, शीघ्र हो सकती है।

(८) उदररोग, हिचकी, अंगकम्पन, आकस्मिक क्रिया; मुखरोग, पक्षाघात, मूर्च्छा (हिस्टीरिया), विष, व्रण (कैन्सर), भ्रम, अंग की अकड़न, एकाध अवयव की विकृति होना, अंग वृद्धि होना, पेट में वायु भरना, दुर्गन्धयुक्त वायु का संचय होना (अपानवायु का शुद्ध परिष्कार न होना) आदि, हर्शल के दुष्परिणाम हैं। इन रोगों के वैद्यों या डाक्टरों पर, इसी ग्रह की कृपा होती है।

(९) जिनका जन्म २२ जुलाई से २२ अगस्त के मध्य में होता है, उनपर इस ग्रह का विशेष प्रभाव पड़ता है। १।४।१०।१३।१६।२२।२८।३१ तारीखें, प्रत्येक मास की शुभ होती हैं। अंक १ या ४ शुभ होता है। नीलम या अलेक्जेण्ड्रा रत्न शुभ, रविवार शुभ, नीला, काला या जामुनी रंग का पदार्थ शुभ होता है।

भावस्थ हर्शल फल

(१) लग्नभावस्थ—अपेक्षाकृत विचित्रमनुष्य, धनी, किन्तु बड़ा हठी, दुराचारी और ढोंगी होता है। गूढ़ तथा आध्यात्मिक विद्या का प्रेमी, विशेष कल्पना करने वाला, गम्भीर, स्वच्छन्दाचारी, वाक्चतुर, स्वतन्त्र विचार वाला, स्वाभिमानी, द्वेष रखने वाला, चंचल स्वभाव, उतावली प्रकृति, किसी भी स्थिति में रखा जाय, किन्तु असंतुष्ट, अच्छे बुरे का विचार न करने वाला, मनमानी करने वाला, लड़ाकू या भ्रमण-प्रिय, किसी पर विश्वास न रखने वाला, कुछ निर्लज्ज, मर्यादा-रहित, कुटुम्बियों से वैर-विरोध करने वाला या उनका संग त्यागने वाला होता है। परन्तु यह अपने जीवन काल में विलक्षण कार्य करता है। इसके मन की तरंगे बार-बार बदलती हैं। निश्चय किये हुए विचार, इसके एकाएक बदल जाते हैं। ऐसे मनुष्य के प्रति, यदि आप यह निश्चिय कर लें कि, यह 'अमुक समय पर, अमुक कार्य कर देगा' तो आपका अनुमान, समय आने पर ठीक न निकल सकेगा। ऐसा व्यक्ति, चाहे जितना सात्विक ढंग का हो परन्तु उसके कथनानुसार, उसका आचरण होना सम्भव नहीं। इस पर भरोसा करके, किसी की आशा की पूर्ति नहीं हो पाती। ये अपने मित्र से भी, छोटी सी बात पर शत्रुता कर लेने में नहीं हिचकिचाते। प्रायः ये अपने कुटुम्ब से अलग रहते हैं।

यह ग्रह लग्नस्थ होते हुए राश्यानुसार, अंग-अवयव में किसी प्रकार की विकृति उत्पन्न कर देता है। यह मनुष्य, इस ग्रह के प्रभाव से, चमत्कारिक एवं असाधारण अनुभव करने वाला, फल-ज्योतिष या अन्य गूढ़ विद्या का जानकार, किसी भी विद्या कार्य में शीघ्र सफलता पाने वाला और बड़ा चतुर होता है। दूसरे अनुकूल ग्रह या बुध या गुरु के शुभसंयोग से हर्शल, मनुष्य को अलौकिक बुद्धिमान् बना देता है। वृष राशि के हर्शल वालों के साथ, विचार के साथ व्यवहार कीजिए, क्योंकि उनका स्वभाव आलसी एवं आराम-प्रिय होता है। मकरराशिस्थ हर्शल हो तो व्यक्ति में प्रशंसा-योग्य गुण, प्रायः कम ही हो पाते हैं।

लग्न में वृश्चिकराशि का हर्शल, शस्त्रकर्म, सर्जरी (चीर-फाड़-कार्य), पदार्थविज्ञानशास्त्र में सहायक होता है। ऐसे व्यक्ति, एम. एस. या एम. एस. सी. हों तो अति उत्तम होता है। इसके द्वारा नवीन-खोज होती है। कर्क या मीन राशि का हर्शल (वृश्चिक के कार्यों को छोड़कर), अन्य शास्त्रों में प्रवीणता देता है। मिथुन, तुला, कुम्भ का हर्शल, कल्पना तथा बुद्धि कार्य में सहायक होता है। कुम्भ राशि का हर्शल, कानून बनाने वाला (जूरिस्ट) मनुष्य बना देता है। कुम्भ में शनि, हर्शल के साथ हो तो फेडरल कोर्ट के वकील अथवा प्रिवी कौंसिल के कार्यकर्ता होते हैं। प्रायः जलराशिस्थ (४।८।१२) हर्शल, शास्त्रज्ञ, तत्त्व-वेत्ता, संसार में विलक्षण क्रांति लाने वाले लोगों को सहायता देता है। अग्नि राशिस्थ (१।५।९) हर्शल, विलक्षण शरीर वाले, तीव्र वक्तृत्वशक्ति वाले, बुद्धिचातुर्य से दूसरों पर विजय पाने वाले लोगों की सहायता करता है। मकर-सिंह राशि वाला हर्शल, कर्तव्यशील अधिकारी बनाता है। इसी प्रकार मिथुन वाला हर्शल, वकील, अध्यापक व शास्त्रज्ञ बनाता है। मेष-वृष-कन्या-धनु राशि वाला हर्शल, शुभफल नहीं करता। इनमें उतावलापन, क्रोध-युक्त, ब्याज खाने वाली या दलाली या घूसखोरी प्रकृति बनाता है; और इस व्यक्ति के द्वारा संसार का कोई काम नहीं हो सकता है। हाँ, जब लग्नस्थ हर्शल, शुभराशि का, शुभसम्बन्ध-युक्त हो तो ऐसे व्यक्ति, दूसरों पर प्रभाव डालने वाले अथवा आकर्षण-शक्ति वाले होते हैं।

मतान्तर से अग्निराशिस्थ (१।५।९) हर्शल, अविचारी, हठी, साहसी, मनमानी कार्य करने वाला, जिस बात को पकड़ ले, उसे न छोड़ने वाला (टेकी), महत्त्वाकांक्षी, उतावला, कठोर प्रकृति, चमत्कारी और विचित्र वस्तु का प्रेमी, तथा इनकी खोज में तत्पर, अस्थिर-चित्त, फलित-ज्योतिष का जानकार, बड़े-बड़े कामों में उलट-फेर कर देने वाला, स्वतन्त्र बुद्धि वाला, कल्पना-शक्ति विशेष

या उत्तम बुद्धिमान् और वाद-विवाद में अभिरुचि रखने वाला मनुष्य बनाता है। भूमिराशिस्थ (२।६।१०) हर्शल, द्वेष रखने वाला, मत्सर करने वाला, अच्छे पदार्थों का भोगी, हठी, क्षण में अप्रसन्न होने वाला, पिशुनता (चुगली) करने वाला और कामी होता है। वायुराशिस्थ (३।७।११) हर्शल, कुछ अभिमानी, चंचल बुद्धि, शास्त्रप्रेमी, भोगी, विद्याभ्यासी, विद्वान्, गूढ़-शास्त्र तथा गुप्त विषयों का अन्वेषक, चतुर, स्वतन्त्र, उच्चविचार वाला, 'मैं बड़ा हूँ या ज्ञाता हूँ—' ऐसे भाव सदा दिखाने वाला, 'न भूतो न भविष्यति' ऐसी बातें झोंकने वाला, अच्छा युक्ति-वादी, नवीन कल्पना करने वाला, थोड़ी देर बाद क्या करेगा-इसका भरोसा न देने वाला, किन्तु सत्यवक्ता बनाता है। जलराशिस्थ (४।८।१२) हर्शल, क्षुद्र स्वभाव वाला, दुराग्रही, कपटी, ढोंगी, वाचाल, कुसंग-प्रिय, अतिकामी, द्वेष-पूर्ण-प्रकृति, स्वार्थी, स्वल्प गुणी और व्यवहार शून्य बनाता है।

(२) द्वितीयस्थ—सूर्य-चन्द्र-गुरु में से किसी से शुभयोग हो तो, आकस्मिक द्रव्य-लाभ के अनेक अवसर आते हैं। शेयर्स के द्वारा भी लाभ होता है। जो व्यापार साधारण लोग नहीं करते, वे व्यापार किये जा सकते हैं जैसे नाटक सिनेमा आदि। द्वितीयस्थ हर्शल, साम्पत्तिक स्थिति को अनियमित करता है, यह कभी अकल्पित लाभ या कभी अकल्पित हानि दे देता है। अनेक समय आर्थिक संकट खड़ा कर देता है। परन्तु अन्य शुभ योगों के कारण, प्राचीन वस्तु या चमत्कारिक वस्तु द्वारा लाभ देता है। अतीन्द्रियज्ञान (फलित-ज्योतिष या विचित्र कल्पना के उपन्यास-लेख) देता है। अन्वेषण-शक्ति को प्रबल करता है। हाँ, इस ग्रह का कुटुम्ब में दूषित परिणाम होता है। कुटुम्बीजनों में एक-दो की मृत्यु कर देता है। जब सूर्य-मंगल-शनि-राहु-केतु आदि पापग्रह के पापसंयोग में धनस्थ हर्शल होता है, तब तो कुटुम्ब-विनाश के कारण, उत्पन्न कर देता है। प्रायः हैजा-प्लेग आदि द्वारा, जब कुटुम्ब-विनाश होता है तब, ऐसी ही अशुभस्थिति हर्शल की होती है। दूसरी विशेषता हर्शल की यह भी है कि, स्त्री को अवश्य हानिकर होता है। अतएव धनस्थ हर्शल देखकर आप; कुटुम्ब के कई या एक-दो की अकस्मात् मृत्यु अवश्य समझिए। पैतृक-धन की प्रचुरता तो देता नहीं, आर्थिकस्थिति साधारण, स्वभुजार्जित धन से सुखी करता है (यदि मंगल-शनि-राहु-चन्द्र द्वारा अशुभसंयोग न हो; अन्यथा धनकष्ट भी देता है)। रेलवे कम्पनी के अधिक वेतन वाले लोगों की कुण्डली में धनस्थ हर्शल ही सहायता देता है। प्राचीन-वस्तु-खोज, पुस्तकसंग्रहालय, म्यूजियम (अजायब घर) के कार्य-कर्ताओं पर धनस्थ हर्शल का प्रभाव होता है। मनोरंजन-संस्था (नाटकादि) में रुचि देता है। जलराशि (४।८।१२) का हर्शल, स्थावर-सम्पत्ति की वृद्धि करता है। यदि पापसंयोग वाला हर्शल हो तो जायदात पर ऋण होता है और ऋण के मुआवजे में जायदात निकल जाती है। वायु राशि (३।७।११) का हर्शल, उद्योग-धन्धे में सफलता, यश और प्रचुर-लाभ देता है। वक्री हर्शल, धनभाव में हानि-कारक होता है।

(३) तृतीयस्थ—नई खोज, शास्त्राभ्यास, बौद्धिक उन्नति, साइन्स के विद्यार्थियों को सफलता और आर्ट के विद्यार्थियों को असफलता देता है। वायु या जलराशि (३-४-७-८-११-१२) वाला हर्शल, बुद्धिमत्ता और स्मरण-शक्ति में उत्तमता देता है। व्यक्ति को विद्याभ्यासी बनाता है। यदि मंगल-चन्द्र-शनि के द्वारा, हर्शल का अशुभ संयोग हो तो, प्रवास के समय में अपघात (अकालमृत्युभय) सम्भव रहता है, वहाँ से तथा मित्रों से मतभेद होता है, इनके द्वारा आशा की पूर्ति नहीं हो पाती। वक्री हर्शल को, शनि से अशुभसंयोग हो तो, भाई-बन्धुओं से हानि कराता है; वर्षों तक पत्र-व्यवहार भी बन्द रहता है और, रेलवे द्वारा यात्राएँ अधिक होती हैं। जब शनि या नेपच्यून या बुध से हर्शल का अशुभसंयोग होता है तब व्यक्ति, अनेक उत्थान-पतन करने वाला, पक्की बुद्धि वाला, बड़ी-बड़ी कम्पनी या लिमिटेड कम्पनी की स्थापना करने वाला, प्रास्पेक्टस् (नियमावली) तैयार करने वाला या इन कामों में सफलता एवं यश पाने वाला, संसार की पुरानी [illegible]

ही कुछ प्रबल कल्पनाओं का करने वाला होता है। तृतीयस्थ हर्शल वाले एक प्रकार से विचित्र होते हैं और इनके हाथ से नई-खोज होना सम्भव रहता है। नेपच्यून के शुभसयोग से, इनके हाथों द्वारा अलौकिक कार्य हो सकता है, तथा नेपच्यून के अशुभसंयोग से इनके द्वारा कोई विशेष कार्य नहीं हो पाता।

मतान्तर से तृतीयस्थ हर्शल, भाई बहिन आदि (स्वजनों) से त्रासदायक शास्त्र रुचि, ज्योतिष आदि गुप्त-विद्या में प्रेम, चमत्कारिक या नवीन आविष्कृत वस्तु-समह करने म सहायक होता है। बार बार स्थानान्तर करना, कौन धन्धा करें, क्या निश्चय करें, किन्तु शीघ्र निश्चय न हो सके, यात्रा-इच्छा अधिक, अस्थिरता, स्वतन्त्र-विचारक, हठी, हस्ताक्षर सुन्दर न हो सकें, पड़ोसी-सहयोगी मित्र आदिकों से त्रास, अपने ही लेख या हस्ताक्षर या पत्रव्यवहार से हानि देने वाला और भाई-बहिन की अकस्मात् मृत्यु देने वाला, तृतीयस्थ हर्शल होता है।

(४) चतुर्थस्थ—कौटुम्बिक स्थिति प्रतिकूल, रोगावस्था, जीवन म उठा पटक अधिक, घात-पतनादि आकस्मिक दु खकारक, माता पिता का अल्प सुख, माता पिता से मतभेद, जन्म स्थान में घरू विशेष आपत्ति, स्थावर-जगम सम्पत्ति में विवाद, त्रास या सन्ताप, वृद्धावस्था मे दु ख सकट देने वाला (अशुभ राशिस्थ या पापसयोग से), हर्शल होता है। शुभसंयोग से बुढ़ापा, सुखपूर्वक बीतता है, विशेष अनिष्ट फल नहीं हो पाते। चतुर्थस्थ हर्शल के कारण, अल्पकाल म माता की अकस्मात् मृत्यु होती है। सूर्य या चन्द्र के सयोग होने पर, स्वल्पान्तरकाल में माता पिता की मृत्यु देता है। प्राय चतुर्थस्थ हर्शल, दशमस्थ शनि-चन्द्र या सूर्य-शनि या शनि मंगल हो—अथवा-दशमस्थ हर्शल, चतुर्थस्थ शनि चन्द्र, सूर्य शनि, मगल शनि सयोग हो तो स्वल्पान्तरकाल में माता पिता की अचानक (समकाल) मृत्यु होती है। चन्द्र से चतुर्थभाव में हर्शल होने के कारण भी अल्प काल में माता की अचानक मृत्यु होती है।

मतान्तर से चतुर्थस्थ हर्शल के कारण, जीवन म उतार-चढाव तथा इस व्यक्ति के द्वारा विचित्र अनुभव लोगों को मिलता है। जीवन का उत्तरार्ध, कष्टमय रहता है। जीवन के पूर्वार्ध में उत्तम भोगादि पाता है। पर, आखिरी स्थिति, अच्छी नहीं रह पाती। उत्तरार्ध जीवन में रोग सकट उपस्थित होते हैं। माता-पिता की आकस्मिक मृत्यु करता है। एक स्थान में बहुत समय तक नहीं रह पाता। जल राशि (२।४।६।८।१०।१२) का हर्शल, घर-द्वार आदि स्थावर-सम्पत्ति के लिए अनुकूल होता है। खेती के लिए जल व्यवस्था ठीक होती है। बाग बगीचा, भूमि आदि से लाभ होता है। नगर मे घर खरीदने या बनवाने से लाभ होता है। चन्द्र-सूर्य से दूषित हर्शल, पक्षपात कराता है। बुध से दूषित होने पर मानसिक क्लेश और भ्रम करता है। मगल से दूषित होने पर अपघात आदि द्वारा अचानक मृत्यु देता है। मनोनुकूल कुटुम्ब का सुख, चतुर्थस्थ हर्शल, नहीं होने देता, यदि साम्पत्तिक दशा अच्छी भी हो तो स्त्री का सुख नहीं देता। माता पिता से विरोध कराता है, ससार में सुखी होने के जो साधन हैं, उनका अभाव करता है। कभी-कभी व्यक्ति को एकान्त कर देता है।

(५) पचमस्थ—सन्तान का अभाव या सन्तति की अल्पायु करता है। सन्तान की मृत्यु, अकस्मात् और विचित्र ढंग (गर्भपात सन्तान को पिशाच-बाधा, धनुष्टकार रोग) से करता है। सन्तान की बुद्धि, अस्थिर कर देता है। तात्पर्य है कि, सन्तान-सुख में किसी न किसी प्रकार की बाधा उत्पन्न कर देता है। सट्टा, लाटरी, जुआँ आदि कार्यों म हानि ही देता रहता है, लाभ नहीं दे पाता। कामुक स्वभाव (रगीला), आराम प्रिय, क्रीड़ासक्त (खिलाड़ी), कार्यारम्भ के पूर्व, बकने वाला, फलित-ज्योतिष पर प्रीति वाला, नाटकादि कार्यों में अभिरुचि वाला तथा नाटकादि सम्बन्ध से भयकर आपत्ति भोगने वाला, व्यक्ति होता है। एकादशभावस्थ हर्शल का भी यही ढग होता है। एकादश भाव को कोई विद्वान् 'पुत्र-वधू' या 'मित्र' का स्थान मानते हैं, अतएव पुत्रवधू या मित्र की अचानक मृत्यु, एकादशस्थ हर्शल करता है।

मतान्तर से विलक्षण, किन्तु बुध-गुरु की बलिष्ठता से उत्तम-बुद्धि; अन्यथा बुद्धि का दुरुपयोग करने वाला होता है। जल या अग्नि राशि, (१।४।५।८।६।१२) का हर्शल, विद्या में बाधा उत्पन्न करता है। दीनों का रुपया-दो रुपया, धनिकों का लाखों रुपया, सट्टा, जुआँ, लाटरी, फ्यूचर, वायदा के व्यापार और रेश में बरबाद होता है। इनके हर्शल प्रायः २-५-७ वें भावों में मिलेगा। पंचमस्थ हर्शल, सूर्य, चन्द्र, गुरु, शुक्र में से किसी से शुभसंयोग करता हो या द्वितीयेश की शुभदृष्टि में हो तो रेश द्वारा लाभ होता है, अन्यथा हानि होती है। हाँ, थोड़े समय, कुछ लाभ, सट्टा से भी हो सकता है। पंचम स्थान, संसार के विषय-सुखों का साधन है, इसमें हर्शल आने पर, नियम प्रतिकूल, गुप्त-कार्य या विपय-वासना में प्रवृत्ति कराता है। वक्री हर्शल, शुक्र, मंगल, चन्द्र में से किसी से बिगड़ा (अशुभसंयोग) हो तो अधिक सन्तति-सुख, चोरी से या गुप्त सम्बन्ध से होता है। ऐसे लोग गुप्त रीति से स्त्री (मिस्ट्रेस) रखकर, विषय-वासना की तृप्ति करते हैं। शुक्र के संयोग से मनुष्य, अतिकामी हो जाता है। पंचमस्थ हर्शल से शुक्र का अशुभसंयोग होने पर, बचपन से या अस्वाभाविक रीति से वीर्य-पात करने की बुरी आदत पड़ जाना सम्भव रहता है। हर्शल-शुक्र का अशुभसंयोग, कहीं पर हो, तभी ऐसा सम्भव हो जाता है। मंगल की अशुभ दृष्टि, शुक्र-हर्शल पर हो तो अनिष्ट फल उत्पन्न होते रहते हैं।

(६)–षष्ठस्थ–अपने हाथ के नीचे अच्छे नौकर नहीं मिल पाना, तथा नौकरों के द्वारा हानि होती है। शनि, राहु, नेपच्यून की अशुभदृष्टि से—चोरी द्वारा धन-हानि, मामा-मौसी के द्वारा धनहानि अथवा मामा-मौसी के प्रसन्नार्थ अधिक द्रव्य-व्यय होता है। शरीर में मज्जातन्तु (नर्व्हस-सिस्टम) दुर्वल हो जाते हैं, तथा इनके विकार से होने वाले सभी रोग होते हैं। हर्शल का विशेष प्रभाव, वायु पर होता है और वायु के द्वारा जीवन-शक्ति या शारीरिक शक्ति मिलती है; अतएव जब षष्ठस्थ हर्शल, जल या अग्नि राशि (१।४।५।८ गुरु राशि रहित) में हो अथवा किसी भी राशि का वक्री हो, तथा बुध-सूर्य-शनि-चन्द्र की अशुभदृष्टि हो तो अपस्मार (मृगी), फेफड़े के रोग, मूर्च्छा (हिस्टीरिया) अकड़न (ट्रान्स). भ्रम-बुद्धि-समान विकार उत्पन्न होते हैं। नेपच्यून से युति होने पर, आरोग्यता नहीं रह पाती। शनि की अशुभदृष्टि में हर्शल हो तो अत्यन्त अशुभ होता है। जीवन संकट-मय रहता है, आरोग्यता के लिए व्यापार (नौकरी आदि) छोड़ना पड़ता है। आरोग्य होने पर भी उद्योग-धन्धों की प्रवल प्रगति नहीं कर पाता। शीत द्वारा बचाव रखना चाहिए। सन्धिवात (गठिया आदि) होने की बड़ी सम्भावना रहती है।

मतान्तर से मामा-मौसी-काकी में से किसी की अकस्मात् मृत्यु, शरीर में विचित्र रोग हो, जिसे वैद्य या डाक्टर भी अनेक समय चिकित्सा करने पर, नहीं समझ पाते हैं। नौकर सरीखे मनुष्यों पर विश्वास करने से हानि होती है।

(७)–सप्तमस्थ—दाम्पत्य-सुखनाशक, अतिव्यय करनेवाला, अनैतिक विचार वाला, स्त्री-पुरुष के मध्य कलह, स्त्री-वियोग, स्त्री से शत्रुता, निर्दयी स्वभाव वाली स्त्री; स्वयं की व्यभिचारी प्रकृति, दीवानी मुकदमा में धन-हानि, पराजय, अपयश, प्रत्येक धन्धा करने में असफलता, वरीक्षा (वर-दीक्षा) होने के बाद विघ्न, विवाह में कलह, सार्वजनिक कार्यों में अपयश, स्त्री को पिशाच-बाधा या मृगीरोग या क्षयरोग अथवा स्त्री-त्याग (डाईव्होर्स), स्त्री की बुद्धि अस्थिर तथा स्त्री की अचानक मृत्यु तक होती है। स्वयं का परदेशवास या यात्राएँ अधिक और प्रवल-शत्रुओं से कलह होता है।

मतान्तर से सप्तमस्थ हर्शल, विवाह-सुख नहीं दे पाता। विलम्ब से विवाह होता है। स्त्री संयोग में अड़चनें आती हैं। स्त्री तो बुद्धिमती मिलती है। देखने में सुन्दर होती है। वक्री हर्शल हो या शुक्र-चन्द्र की अशुभदृष्टि में हो तो अच्छा दाम्पत्य-सुख नहीं मिल पाता। स्त्री रोगिणी या नित्य खट-पट (कलह)

पीड़ा, अग-भंग, दुर्गति, शय्या आदि के सुख से विहीनता, अकस्मात् विचित्र संकट, मामा-मौसी-काकी आदि में से किसी की शीघ्र, अचानक मृत्यु, हर्शल करता है।

मतान्तर से गुप्त-शत्रु-पीड़ा, बन्धन-योग, व्यापारिक ऋण, दिवालियापन, सट्टा, जुआँ, वायदा के काम करने वालों को हानि, विद्यार्थियों को ऐसी अड़चनें आ जावें, जिससे परीक्षा में इच्छानुकूल सफलता न मिल सके। यह स्थान दुःख, बन्दीवास (जेल), गुप्त-शत्रु, वैराग्य, योगाभ्यास आदि का है। हर्शल वक्री या पापदृष्टि योग में हो तो, यातना, दुःख, अपमान और आशा का अचानक विनाश होता है। नौकरी वालों को सावधान रहना चाहिए, इन्हें गुप्त-शत्रु द्वारा कब हानि पहुँच जाय, इसका निश्चय नहीं। हर्शल पर, शनि, नेपच्यून या मगल से केन्द्र योग हो तो जेल यातना होती है। व्यापारादि में पैसा डूब जाता है। ऐसे-ऐसे रोग उत्पन्न होते हैं, जिनके कारण महीनों तक अस्पताल में रहना पड़ता है। यदि योगाभ्यास की प्रबल इच्छा उत्पन्न हो जाती है तो सफलता तथा दिगन्त तक यश फैल जाता है।

राशिस्थ हर्शल फल

मेष—यह अग्नि राशि है, इसमें हर्शल हो तो, कुछ उन्नतदेह, सुडौल व पुष्ट शरीर, पिंगल वर्ण के बड़े नेत्रवाला, ताम्र या श्यामवर्ण, महत्त्वाकांक्षी, अभिमानी, शीघ्र क्रोध करने वाला व्यक्ति होता है।

वृष—यह भूमि राशि है, इसमें हर्शल हो तो, ठिगना (नाटा) शरीर, किन्तु पुष्ट, केशकाले, नेत्रकाले, नेत्र के ऊपर-नीचे का भाग ऊँचा (उठा हुआ), आकृति निस्तेज, श्यामवर्ण, लम्बोगर्दन, साधारण स्थूलशरीर, क्रोधी, वृथाभिमानी, कामी, हिंसक, विश्वासघातक, घूँस (रिश्वत) खानेवाला और बहुधा आराम-प्रिय होता है।

मिथुन—यह वायु राशि है, इसमें हर्शल हो तो, उन्नतदेह, समान-शरीर (न तो अधिक दुर्बल और न अधिक पुष्ट) सुडौल-शरीर, शीघ्रगामी, कठोर दृष्टि, निस्तेज नेत्र, भूरे केश, चपल स्वभाव, चतुर शास्त्राभ्यासी, सुन्दर स्वभाव, लहरी (मनमौजी) ढग का व्यवहार (चाल-चलन), उदार प्रकृति और उत्तम कल्पना-शक्ति वाला होता है।

कर्क—यह जल राशि है, इसमें हर्शल हो तो ठिगना-शरीर, सुपुष्ट देही, क्षीण कान्ति, भूरे केश, कठोर नेत्र, गर्वित, आनन्द-प्रिय, स्वच्छन्द, व्यसनासक्त, मादक-पदार्थ-भोगी, शील-रहित, क्रोधी, किसी की बात न सहने वाला और सन्ताप-युक्त होता है।

सिंह—यह अग्नि राशि है, इसमें हर्शल हो तो, उन्नत-देह, चौड़ा वक्ष-स्थल, पुष्ट कन्धे, भूरी मूँछ वाला, शीघ्रगतिशील, उदार-स्वभाव, विस्तृत हृदय वाला, वीरता प्रिय और बल का गर्व करने वाला होता है।

कन्या—यह भूमि राशि है, इसमें हर्शल हो तो, ठिंगना-शरीर, नेत्रकाले, तथा तरल, छोटे अवयव, नवीन-वस्तुओं का प्रेमी, लहरी स्वभाव, शास्त्रीय या गुप्त बात जानने का इच्छुक, व्यवहारशून्य, क्षुद्र-स्वभाव, शास्त्राभ्यासी और विद्वान् होता है।

तुला—यह वायु राशि है, इसमें हर्शल हो तो, उन्नतदेह, पुष्ट शरीर, बलिष्ठ, गोल आकृति, तेजस्वी वर्ण, बड़ा उद्योगी, मानी, शीघ्रकोपी, महत्त्वाकांक्षी, चमत्कारी और आनन्द-प्रिय होता है।

वृश्चिक—यह जल राशि है, इसमें हर्शल हो तो, ठिगना शरीर, पुष्ट-देह, वक्ष स्थल चौड़ा, पुष्ट कन्धे, श्याम आकृति, नेत्र व केश काले, कपटी स्वभाव, वाचाल, व्यसनासक्त और कुत्सित व्यवहार करने वाला होता है।

धनु—यह अग्नि राशि है, इसमें हर्शल हो तो, लम्बा शरीर, पुष्टदेह, गौरवर्ण, सुन्दर आकृति, उन्नतमस्तक, या केश पीके वर्ण के, उदार-मना, स्पष्टवक्ता, व्यायाम या वीरता के खेल में अभिरुचि और आराम भोगने वाला होता है।

मकर—यह भूमि राशि है, इसमें हर्शल हो तो, मध्यम शरीर, लम्बी गर्दन, उन्नत मस्तक, नेत्र निस्तेज, केश काले, गर्वित, किन्तु गम्भीर-स्वभाव वाला होता है।

कुम्भ—यह वायु राशि है, इसमें हर्शल हो तो, मध्यम शरीर, चौड़ा-चेहरा, सुन्दर, भूरे केश, अत्यन्त कल्पना करने वाला, शास्त्रीय-विषय, नवीन विषय और गुप्त विषय के जानने में आसक्ति, मनमौजी ढंग तथा सुन्दर स्वभाव वाला होता है।

मीन—यह जल राशि है, इसमें हर्शल हो तो ठिगना शरीर, बेडौल शरीर, कान्ति क्षीण, रोगी, वक्रगति (गति में कुछ कोई दोष), कपटी, आलसी, उदासीन और लोगों को अप्रिय होता है।

शुभाशुभ दृष्टि (३०, ३६, ४५, ६०, ७२, ९०, १२०, १३५, १४४, १५०, १८०, समक्रान्ति (पेरलल) युति (कन्जंक्शन) आदि पहिले लिखे जा चुके हैं। पुनः मोटा-मोटी रीति से यह जान लीजिए कि, शुभदृष्टि (६०, १२० की), महार्थीन शुभाशुभदृष्टि (१८०, १, ०, ५ की), अल्पशुभदृष्टि (३०, ३६, ७२, १४४, १५० की), अशुभदृष्टि (४५, १३५ की) महा अशुभदृष्टि (९०, १८० की) होती है। समान राशि, अंश, कला, विकला में युति, समान राशि, अंश मात्र में समक्रांति (पेरलल) और ५ अंशांतर से, दो ग्रहों में संयोग (कंजंक्शन) होता है। आगे इन्हीं के आधार पर हर्शल के फल लिखे जा रहे हैं।

सूर्य-हर्शल युति या समक्रांति

(१) लग्न में हो तो, शूर-वीर, धैर्यवान्, उदार, निर्मल अन्तःकरण वाला, सर्वप्रिय और सभ्य होता है।

(२) द्वितीय या दशम भाव में हो तो एकदम ऐश्वर्य में उन्नति, प्रताप एवं प्रभाव की वृद्धि और यशस्वी हो जाता है, परन्तु कुछ दिन बाद, उस पर अनेक संकट आने लगते हैं और अवनति होती जाती है। ऐसे ही जीवन में अनेक बार उतार-चढ़ाव होते रहते हैं।

सूर्य-हर्शल अशुभदृष्टि योग

(३) संकट, अपयश, अपने बलिष्ट शत्रु से, सार्वजनिक संस्थाओं से, रेलवे कम्पनी से हानि, निराश जीवन। यह योग लग्न, द्वितीय, दशम भाव में अधिक अशुभ होता है।

सूर्य-हर्शल शुभदृष्टि योग

(४) अधिक लाभ के सुयोग, किसी भी धन्धे से, विशेषकर सार्वजनिक संस्थाओं से, सभा-सोसाइटी से, राजकीय सेवावृत्ति से लाभ होकर जीविका चलती है। पदाधिकारी होता है।

चन्द्र-हर्शल युति, समक्रान्ति या अशुभदृष्टि योग

(५) यात्रा या स्थानपरिवर्तन में अभिरुचि, स्वेच्छाचारी, दुर्विचार वाला, माता-पिता का अल्पसुख, वैवाहिक-सुख या स्त्री के लिए अशुभफल, विवाह के बाद कुसंगति द्वारा हानि, दाम्पत्य-विग्रह या वियोग होता है।

चन्द्र-हर्शल शुभदृष्टि योग

(६) विवाह के बाद व्यभिचारी वृत्ति, किन्तु अपनी स्त्री पर भी प्रेम रखेगा, १।३।६।१० वें भाव में यह योग हो तो, एक स्थान पर अधिक समय तक न ठहर सके (दिगन्त यशस्वी श्रीनारद मुनि के यही योग सम्भव है) दूर-दूर की यात्राएँ, नवीन-नवीन कल्पना करने वाला और गुप्त-विद्या में अभिरुचि होती है।

मंगल-हर्शल युति, अशुभदृष्टि योग

(७) कपटी, कठोर स्वभाव, छिद्रान्वेषी, चौर-कार्य में प्रवृत्ति, कारागार-भोगी, अपघात, आकस्मिक संकटों से पीड़ित होता है। यह योग १।३।६।१०।१२ वें भाव में होने पर होता है। सप्तमभाव में विशेष अशुभ सूचक होता है। वियोग, रोग, दुःख, मृत्यु के लक्षण प्रकट होते हैं। स्त्री-कारण से अपघात या हत्या तक हो जाती है। साझे के व्यापार में या दीवानी [illegible] और अपयश होता है।

मंगल-हर्शल शुभदृष्टि योग

(८) ढीठ, स्वाभिमानी, क्रोधी, हठी, शूर-वीर, उदार, शस्त्रकार्य या सेनाकार्य में यशस्वी होते हैं। वीरकार्य और साहसकार्य में सफलता मिलती है।

बुध-हर्शल युति, समक्रान्ति योग

(९) विद्वान्, उत्तम वक्ता, व्याख्या करने की शक्ति वाला, कला-भिज्ञ, यशस्वी होता है। ३-९ वें भाव में होने से ज्योतिष या अन्य गुप्त विद्या में अभिरुचि, विलक्षण स्वभाव, परन्तु लोग, इसपर अधिक टीका टिप्पणी करके, इसका उपहास करते हैं। कर्क और मीन राशिस्थ में ढोंगी, स्वार्थी, अपने ही वाक्यों की उपेक्षा करने वाला, तथा असत्य-वादी होता है। इसके सभी कार्य एवं बात, विश्वास के योग्य नहीं होता।

बुध-हर्शल अशुभदृष्टि योग

(१०) मनमौजी स्वभाव, स्वेच्छाचारी, कठोर तथा अश्लील भाषण करने वाला, दूसरे की त्रुटि ढूँढ़ने में आसक्ति, मातृभाषा की सेवा में महत्त्वाकांक्षा, लेखक या ग्रन्थ-कर्ता, किन्तु इसके लेख या ग्रन्थ पर लोगों की अनुकूलता नहीं होती, चारों ओर से प्रत्यालोचना होती है। ऐसे लेखादि व्यवसाय से, इसे हानि होती है। सार्वजनिक कार्यों में अपयश, तथा पुन इस क्षेत्र में प्रगति नहीं कर पाता।

बुध-हर्शल शुभदृष्टि योग

(११) साहित्य सेवा (लेख, ग्रन्थ) से लाभ, यश, तीव्र बुद्धि वाला, उत्तम वक्ता, अभ्यासी मनोवृत्ति वाला, चमत्कारी, विलक्षण, नवीन खोज की महत्त्वाकांक्षा होती है। यह योग यदि ३।७।११ राशिस्थ १।३।९ वें भाव में हो तो विशेष बलिष्ठ फल होते हैं।

गुरु-हर्शल अशुभदृष्टि योग

(१२) दीवानी मुकदमा में पराजय, जायदात में झगड़े, व्यापार में अव्यवस्था, अचानक घाटा लगना सम्भव है, किन्तु नौकरी द्वारा सुख होता है।

गुरु-हर्शल युति, समक्राति, शुभदृष्टि योग

(१३) अचानक धन-लाभ, किसी की सम्पत्ति पर अधिकार मिलता है। यह योग द्वितीय या अष्टम भाव में विशेष शुभकारक होता है। व्यापार म सफलता मिलती है। धार्मिक-प्रवृत्ति होती है। प्रतिष्ठा बढाने वाले कार्य करने की इच्छाएँ होती हैं।

शुक्र-हर्शल युति, समक्राति योग

(१४) १।३।९ वें भाव म हो तो, अच्छा गायक, उत्तम वक्ता, ललित कला (गाना बजाना, चित्र) में निपुण, रसिक, आनन्द-भोगी, किन्तु व्यभिचारी होता है। सप्तम स्थान म यह योग अशुभ है; स्त्री का प्रेम, पूर्ण रीति से नहीं भोग पाता।

शुक्र-हर्शल अशुभदृष्टि योग

(१५) कई बार विवाह निश्चित होकर, छूट जाते हैं। स्त्री का पूरा प्रेम नहीं मिलता। विषय-वासना की तृप्ति के लिए अन्य स्त्री के पास जाना पडता है। प्रेम म फँसकर द्रव्य की हानि होती है। १।२।५ वें भाव में यह योग बलिष्ठ होता है।

शुक्र-हर्शल शुभदृष्टि योग

(१६) स्त्री के प्रति लालायित, स्त्रियों को कैसे आकृष्ट किया जाय--इस कला म निपुण होता है। यदि यह योग वायु या अग्नि (१।३।५।७।९।११) राशि म हो तो गायक, प्रत्येक बाजा बजाने में पटु, सुन्दर स्वभाव अनेक कलाओं का जानने वाला तथा चतुर होता है।

शनि-हर्शल युति, समक्रान्ति, अशुभदृष्टि योग

(१७) मन पर बुरा प्रभाव पड़ता है। जिस राशि में हों, उस राश्यानुसार अंग में कोई विचित्र पीड़ा होती है। १।२।७ वें भाव में यह योग होने पर विशेष प्रभाव करता है। प्रत्येक भावस्थ के विभिन्न फल, इस प्रकार होते हैं—

(लग्न) वाचाल, चंचल-वृत्ति, द्वेषी, त्रुटि ढूँढ़ने वाला और घूँस खाने वाला होता है।
(धन) आर्थिक-संकट या हानि तथा सर्वदा दरिद्रता का अनुभव होता रहता है।
(तृतीय) ज्योतिष या अन्य गुप्त-विद्या के जानने की इच्छा और भाई-बन्धु सम्बन्धी को क्लेश होता है।
(चतुर्थ) वायुराशि में अल्प अशुभ। शेष राशिस्थ में जीवन के उत्तरार्ध में दरिद्रता और दुःख होते हैं।
(पंचम) सन्तान सम्बन्धी अशुभफल होता है। विद्या, बुद्धि और स्मरण शक्ति में ह्रास तथा कुवृत्ति होती है।
(षष्ठ) भयंकर तथा अधिक दिन तक ठहरने वाला रोग होता है; और अविश्वासी नौकर मिलते हैं।
(सप्तम) दीवानी दावे में हानि, पराजय, अपयश, व्यापार में घाटा, दाम्पत्य कष्ट से न्यायालय में जाना पड़ता है।
(अष्टम) ससुराल या स्त्री द्वारा धन नहीं मिलता, स्त्री-धन की हानि या अचानक मृत्यु होना सम्भव रहता है।
(नवम) शास्त्राभ्यास की अधिक इच्छा, मानसिक उन्नति, बुद्धि-वृद्धि, किन्तु धार्मिक श्रद्धा में कमी होती है।
(दशम) अपयश अधिक, राज्य-कार्य में हानि, कारागार योग, राजभय, बाल्यकाल में पिता की मृत्यु होती है।
(लाभ) मित्र या पुत्रवधू से मतभेद, भय, हानि, मिथ्यापवाद और बड़े भाई को कष्ट होता है।
(व्यय) गुप्त-शत्रु उत्पन्न होते हैं, शत्रु से कलह, यात्रा में हानि और चोर या राजा द्वारा हानि होती है।

शनि-हर्शल शुभदृष्टि योग

(१८) इच्छा-शक्ति प्रबल होती है। विशेष शुभफल तो नहीं होता, किन्तु अन्य बुरे फल भी नहीं उत्पन्न होते।

नेपच्यून-हर्शल शुभदृष्टि योग

(१९) शोधक, कल्पना-कर्ता, कला-कुशल, वेदान्त या गुप्त-शास्त्र में अभिरुचि, गुप्त बात का अन्वेषण करने वाला होता है।

(२०) अशुभदृष्टि के योग, युति और समक्रांति के फल, प्रतिकूल होते हैं।

हर्शल का गोचर-भ्रमण

(२१) पूर्वोक्त लग्नादि द्वादशभावस्थ फल की भाँति गोचर-फल जानिए। जन्मलग्न से या चन्द्रलग्न से १-२-३-४-५-६-७-८-९-१०-११-१२ वें स्थान पर, हर्शल के भ्रमणकाल में, जन्मनक्षत्र के चरण से फल समझना चाहिए, पूरी राशि से नहीं। यथा—

किसी का जन्म, अश्विनी के चतुर्थ चरण (मेष राशि) में है, तो ०।१०।० से १।१०।० तक प्रथम। १।१०।० से २।१०।० तक द्वितीय। ततः सन् १९५० के मई में २।१०।० पर हर्शल आने से तृतीय प्रारम्भ हुआ। जन्म लग्न कुम्भ है और राशि मेष है तथा गोचर द्वारा हर्शल मिथुन में है; अतएव लग्न से पंचम में तथा राशि से तृतीय में हर्शल, वर्तमान है। इसका फल—

(क) पंचमस्थ होने से हर्शल, फलित ज्योतिष पर प्रीति देता है। उत्तम कल्पना शक्ति देता है। चूँकि, मिथुन राशि का हर्शल है अतः सन्तान आदि का अशुभ फल नहीं करता और विलक्षण बुद्धि बनाता है।

(ख) तृतीयस्थ तथा वायुराशि में होने से हर्शल, नई खोज, शास्त्राभ्यास, बौद्धिक उन्नति और साइन्स (विज्ञान) में सफलता देता है। वायु राशि वाला हर्शल, बुद्धि तथा स्मरण-शक्ति में उत्तमता देता है। व्यक्ति को विद्याभ्यासी बनाता है। तृतीयस्थ हर्शल वाले, एक प्रकार से विचित्र होते हैं और इनके हाथ से नई खोज होना सम्भव रहता है। चमत्कारिक या नवीन-वस्तु के संग्रह करने में, हर्शल सहायक होता है। इसी कारण से यह ग्रन्थ सन् १९५० से १९५७ तक में लिखा गया।

मंगल-हर्शल शुभदृष्टि योग

(८) ढीठ, स्वाभिमानी, क्रोधी, हठी, शूर-वीर, उदार, शस्त्रकार्य या सेनाकार्य म यशस्वी होते हैं। वीरकार्य और साहसकार्य मे सफलता मिलती है।

बुध-हर्शल युति, समक्रान्ति योग

(९) विद्वान्, उत्तम वक्ता, व्याख्या करने की शक्ति वाला, कला-भिज्ञ, यशस्वी होता है। ३-९ वें भाव में होने से ज्योतिष या अन्य गुप्त विद्या मे अभिरुचि, विलक्षण स्वभाव, परन्तु लोग, इसपर अधिक टीका टिप्पणी करके, इसका उपहास करते हैं। कर्क और मीन राशिस्थ में ढोंगी, स्वार्थी, अपने ही वाक्यों की उपेक्षा करने वाला, तथा असत्य-वादी होता है। इसके सभी कार्य एवं बात, विश्वास के योग्य नहीं होती।

बुध-हर्शल अशुभदृष्टि योग

(१०) मनमौजी स्वभाव, स्वेच्छाचारी, कठोर तथा अश्लाल भाषण करने वाला, दूसरे की त्रुटि ढूँढ़ने मे आसक्ति, मातृभाषा की सेवा में महत्त्वाकाक्षा, लेखक या ग्रन्थ-कर्ता, किन्तु इसके लेख या ग्रन्थ पर लोगों की अनुकूलता नहीं होती, चारों ओर से प्रत्यालोचना होती है। ऐसे लेखादि व्यवसाय से, इसे हानि होती है। सार्वजनिक कार्यों मे अपयश, तथा पुन इस क्षेत्र में प्रगति नहीं कर पाता।

बुध-हर्शल शुभदृष्टि योग

(११) साहित्य सेवा (लेख, ग्रन्थ) से लाभ, यश, तीव्र बुद्धि वाला, उत्तम वक्ता, अभ्यासी मनोवृत्ति वाला, चमत्कारी, विलक्षण, नवीन खोज की महत्त्वाकाक्षा होती है। यह योग यदि ३।७।११ राशिस्थ १।३।९ वें भाव म हो तो विशेष बलिष्ठ फल होते हैं।

गुरु-हर्शल अशुभदृष्टि योग

(१२) दीवानी मुकदमा मे पराजय, जायदात में झगडे, व्यापार में अव्यवस्था, अचानक घाटा लगना सम्भव है, किन्तु नौकरी द्वारा सुख होता है।

गुरु-हर्शल युति, समक्रांति, शुभदृष्टि योग

(१३) अचानक धन-लाभ, किसी की सम्पत्ति पर अधिकार मिलता है। यह योग द्वितीय या अष्टम भाव म विशेष शुभकारक होता है। व्यापार म सफलता मिलती है। धार्मिक-प्रवृत्ति होती है। प्रतिष्ठा बढाने वाले कार्य करने की इच्छाएँ होती हैं।

शुक्र-हर्शल युति, समक्रांति योग

(१४) १।३।९ वें भाव म हो तो, अच्छा गायक, उत्तम वक्ता, ललिता कला (गाना बजाना, चित्र) म निपुण, रसिक, आनन्द-भोगी किन्तु व्यभिचारी होता है। सप्तम स्थान में यह योग अशुभ है; स्त्री का प्रेम, पूर्ण रीति से नहीं भोग पाता।

शुक्र-हर्शल अशुभदृष्टि योग

(१५) कई बार विवाह निश्चित होकर, छूट जाते हैं। स्त्री का पूरा प्रेम नहीं मिलता। विषय-वासना की तृप्ति के लिए अन्य स्त्री के पास जाना पडता है। प्रेम म फँसकर द्रव्य की हानि होती है। १।२।५ वें भाव म यह योग बलिष्ठ होता है।

शुक्र-हर्शल शुभदृष्टि योग

(१६) स्त्री के प्रति लालायित, स्त्रियों को कैसे आकृष्ट किया जाय—इस कला म निपुण होता है। यदि यह योग वायु या अग्नि (१।३।५।७।९।११) राशि म हो तो गायक, प्रत्येक बाजा बजाने में पटु, सुन्दर स्वभाव अनेक कलाओं का जानने वाला तथा चतुर होता है।

शनि-हर्शल युति, समक्रान्ति, अशुभदृष्टि योग

(१७) मन पर बुरा प्रभाव पड़ता है। जिस राशि में हों, उस राश्यानुसार अंग में कोई विचित्र पीड़ा होती है। १।२।७ वें भाव में यह योग होने पर विशेष प्रभाव करता है। प्रत्येक भावस्थ के विभिन्न फल, इस प्रकार होते हैं—

(लग्न) वाचाल, चंचल-वृत्ति, द्वेषी, त्रुटि ढूँढ़ने वाला और घूँस खाने वाला होता है।
(धन) आर्थिक-संकट या हानि तथा सर्वदा दरिद्रता का अनुभव होता रहता है।
(तृतीय) ज्योतिष या अन्य गुप्त-विद्या के जानने की इच्छा और भाई-बन्धु सम्बन्धी को क्लेश होता है।
(चतुर्थ) वायुराशि में अल्प अशुभ। शेष राशिस्थ में जीवन के उत्तरार्ध में दरिद्रता और दुःख होते हैं।
(पंचम) सन्तान सम्बन्धी अशुभफल होता है। विद्या, बुद्धि और स्मरण शक्ति में ह्रास तथा कुवृत्ति होती है।
(षष्ठ) भयंकर तथा अधिक दिन तक ठहरने वाला रोग होता है; और अविश्वासी नौकर मिलते हैं।
(सप्तम) दीवानी दावे में हानि, पराजय, अपयश, व्यापार में घाटा, दाम्पत्य कष्ट से न्यायालय में जाना पड़ता है।
(अष्टम) ससुराल या स्त्री द्वारा धन नहीं मिलता, स्त्री-धन की हानि या अचानक मृत्यु होना सम्भव रहता है।
(नवम) शास्त्राभ्यास की अधिक इच्छा, मानसिक उन्नति, बुद्धि-वृद्धि, किन्तु धार्मिक श्रद्धा में कमी होती है।
(दशम) अपयश अधिक, राज्य-कार्य में हानि, कारागार योग, राजभय, बाल्यकाल में पिता की मृत्यु होती है।
(लाभ) मित्र या पुत्रवधू से मतभेद, भय, हानि, मिथ्यापवाद और बड़े भाई को कष्ट होता है।
(व्यय) गुप्त-शत्रु उत्पन्न होते हैं, शत्रु से कलह, यात्रा में हानि और चोर या राजा द्वारा हानि होती है।

शनि-हर्शल शुभदृष्टि योग

(१८) इच्छा-शक्ति प्रबल होती है। विशेष शुभफल तो नहीं होता, किन्तु अन्य बुरे फल भी नहीं उत्पन्न होते।

नेपच्यून-हर्शल शुभदृष्टि योग

(१९) शोधक, कल्पना-कर्ता, कला-कुशल, वेदान्त या गुप्त-शास्त्र में अभिरुचि, गुप्त बात का अन्वेषण करने वाला होता है।

(२०) अशुभदृष्टि के योग, युति और समक्रांति के फल, प्रतिकूल होते हैं।

हर्शल का गोचर-भ्रमण

(२१) पूर्वोक्त लग्नादि द्वादशभावस्थ फल की भाँति गोचर-फल जानिए। जन्मलग्न से या चन्द्रलग्न से १-२-३-४-५-६-७-८-९-१०-११-१२ वें स्थान पर, हर्शल के भ्रमणकाल में, जन्मनक्षत्र के चरण से फल समझना चाहिए, पूरी राशि से नहीं। यथा—

किसी का जन्म, अश्विनी के चतुर्थ चरण (मेष राशि) में है, तो ०।१०।० से १।१०।० तक प्रथम। १।१०।० से २।१०।० तक द्वितीय। ततः सन् १९५० के मई में २।१०।० पर हर्शल आने से तृतीय प्रारम्भ हुआ। जन्म लग्न कुम्भ है और राशि मेष है तथा गोचर द्वारा हर्शल मिथुन में है; अतएव लग्न से पंचम में तथा राशि से तृतीय में हर्शल, वर्तमान है। इसका फल—

(क) पंचमस्थ होने से हर्शल, फलित ज्योतिष पर प्रीति देता है। उत्तम कल्पना शक्ति देता है। चूँकि, मिथुन राशि का हर्शल है अतः सन्तान आदि का अशुभ फल नहीं करता और विलक्षण बुद्धि बनाता है।

(ख) तृतीयस्थ तथा वायुराशि में होने से हर्शल, नई खोज, शास्त्राभ्यास, बौद्धिक उन्नति और साइन्स (विज्ञान) में सफलता देता है। वायु राशि वाला हर्शल, बुद्धि तथा स्मरण-शक्ति में उत्तमता देता है। व्यक्ति को विद्याभ्यासी बनाता है। तृतीयस्थ हर्शल वाले, एक प्रकार से विचित्र होते हैं और इनके हाथ से नई खोज होना सम्भव रहता है। चमत्कारिक या नवीन-वस्तु के संग्रह करने में, हर्शल सहायक होता है। इसी कारण से यह ग्रन्थ सन् १९५० से १९५७ तक में लिखा गया।

नेपच्यून [वरुण, इन्द्र]

(१) मीन राशि में स्वगृही तथा जलराशि (४।८।१२) में बलिष्ठ होता है। इसका गुण धर्म, गुरु की भाँति है। इसके नाम वरुण या इन्द्र हैं और पुराणादि में वर्णित गुण-धर्मों के विकाश से इसका फलित, निश्चय किया गया है। मतान्तर से रात्रिसमय में जन्म हो और लग्न में मीन राशि हो अथवा दिनसमय में जन्म हो और गुरु ३।६।६।१२ वें भाव में हो तो नेपच्यून भी, लग्नेश होता है। यह वरुण ग्रह, जल के समान अस्थिर तथा बारम्बार विचारों में परिवर्तन कराने वाला होता है। यह जब, बलवान् होकर जातक को सहायता देता है तब, अन्त.सृष्टि या दैवी सृष्टि में कल्पना करने की प्रेरणा देता है। मन का वेग आध्यात्मिक मार्ग की ओर झुका देता है। परन्तु जब यह निर्बल होता है तब, बुरी वासना, कपट, लोभ, 'स्वय नष्ट. परान्नाशय' (अपनी नाक कटी तो दूसरे की भी नाक कटाओ) वाला स्वभाव बना देता है। इस ग्रह की प्रधानता वाले व्यक्ति, अनुकरणशील, भाषान्तर या अनुवाद करने में पटु, दूसरे की वस्तु को अपनी बनाने वाले, दूसरे के विचारों को अपने विचार बताने वाले होते हैं। कभी व्यर्थ सन्ताप एवं क्षोभ उत्पन्न करा देता है। लहराता भाग्य, क्षणिक कीर्ति आदि विलक्षण कार्य इसी के होते हैं। नेपच्यून, किसी पापग्रह की अशुभदृष्टि में आने पर, व्यक्ति, जिस किसी कार्य म हाथ डालता है, उसमें ही पराजय, असफलता, अपमान, सन्ताप और हानि होने में विलम्ब नहीं लगता।

(२) मानव-प्राणी के शरीरस्थ आकर्षण-धर्म का जो प्रभाव अभिसरण-धर्म पर पड़ता है उस पर, नेपच्यून का ही अधिकार रहता है। यदि आकर्षण-धर्म के प्रभाव से, अभिसरण का प्रतिबन्ध हो जाता है तो मज्जातन्तु तथा मेदे के बडे भाग मे क्षोभ होकर भयकर विकार उत्पन्न हो जाते हैं। कृशता, क्षीणता, पागलपन, वायुरोग, रक्ताल्पता और पोषण का अभाव आदि होता है। मस्तिष्क एव स्नायु भाग में विकार होकर शरीरकष्ट होता है। बिजली के तार-स्पर्श से रक्त का अभिसरण बन्द हो जाता है। आकर्षण प्रभाव से, अभिसरण प्रतिबन्ध होना अत्यन्त हानिप्रद है।

(३) चन्द्र-नेपच्यून की युति से मस्तिष्क विकार द्वारा मृत्यु तक हो जाती है। जब नेपच्यून के द्वारा चन्द्र-बुध पीड़ित होते हैं तब मज्जातन्तु में विकार उत्पन्न होते हैं। प्राय. ३।६ वें भाव में इस स्थिति का दुष्परिणाम अवश्य होता है। नेपच्यून, द्विस्वभाव (३।६।६।१२) राशिस्थ होने पर, मेद या मज्जातन्तु मे विकार उत्पन्न करता है। स्थिर (२।५।८।११) राशिस्थ हो तो मलोत्पादक अवयव में रोग उत्पन्न करता है। चर (१।४।७।१०) राशि में हो तो अभिसरण या पाचन-क्रिया सम्बन्धी विकृति देता है। लग्न या चन्द्र को, जब नेपच्यून पीड़ित करता है तब इन रोगों की सम्भावना विशेष होती है। बुध को पीडित करने पर मस्तिष्क रोग और चन्द्र को पीड़ित करने पर शारीरिक तथा मानसिक स्वास्थ्य की क्षीणता होती है।

(४) नेपच्यून जब, मानसिक शक्ति के कारक (चन्द्र-बुध-गुरु-शुक्र) के साथ शुभदृष्टि योग करता है तब, गुप्त-शास्त्रों में प्रीति, वेदान्त एव धार्मिक विषयों में प्रगति, अन्तर्ज्ञान, फलित-ज्योतिष, मैस्मरेज्म, टेलीपैथी, मृत्यु के बाद वाली विचित्र कल्पना आदि देता है। जब अग्नि या वायु राशिस्थ नेपच्यून, शुभदृष्टि योग मे आता है तब, अन्तर्ज्ञान-शक्ति प्राप्त कराता है। यह जब नवमस्थ होता है तब, विचित्र, चमत्कारिक, सुन्दर और भविष्य-सूचक स्वप्न आते हैं। यह जब चन्द्र की शुभदृष्टि सम्बन्ध मे होता है तब शुभफल देता है यह कर्क, मीन मे विशेष शुभ होता है। वृष-वृश्चिक-कन्या-मकर मे साधारण तथा मिथुन-तुला-कुम्भ में उग्र हो जाता है। स्वप्नों की गति—मैं मर्त्यलोक छोड़कर, अन्य लोक में हूं, सुस्वर गायन या सुन्दर कविता सुनना इत्यादि। जागते ही स्वप्न का स्मरण नहीं रहता। इधर-उधर भटकना, हवा मे उड़ना, समुद्र मे तैरना, अपना शरीर सो रहा है और हम, उसे देख रहे हैं इत्यादि, विचित्र स्वप्नों की गति होती है। मेष-सिंह-धनु में यह निर्बल हो जाता है।

(५) पंचमस्थ—सट्टा आदि द्वारा धनहानि, सन्तान द्वारा हानि, सन्तान को कष्ट, सन्तान से कष्ट, सन्तान द्वारा क्षोभ, पुत्र सन्तान अधिक, तीव्र-प्रेमी, यदि ध्यान दिया जाय तो कुख्यात न होकर, सुख्यात हो जाता है। नेपच्यून विगड़ा हो तो प्रेम जाल में फँस जाता है और ठगाया जाता है। अकल्पित धनलाभ, अविश्वासी, अनेक प्रकार के भय, कभी पशु-स्वभाव हो जाता है। शुभदृष्टि होने से, स्त्री के अनुभव विशेप प्राप्त होते हैं। मतान्तर से शुभदृष्ट नेपच्यून होने से प्रेमसम्बन्ध द्वारा विवाह होता है और सन्तति होती है। अशुभदृष्टि होने से विवाह सम्बन्धी निराशा होती है। पत्नी से प्रेम नहीं रह पाता। विषय-वासना अधिक होती है। कुमार्ग में पैसे का अपव्यय होता है।

(६) षष्ठस्थ—नौकर-चाकर द्वारा हानि, उन्नति में विघ्न, बन्धन, पराधीनता, दासत्व भावना, स्वास्थ्य खराब, आलस्य-वृद्धि, नौकरों से अविश्वास, प्रपंची, असाध्य रोग या वंशानुगत रोग होता है। शुक्र या मंगल या किसी पापग्रह की अशुभदृष्टि में होने से, व्यभिचार या अस्वाभाविक ढंग (गुदाभंजन, हस्तमैथुन, पशु सम्भोग आदि) से वीर्यनाश होने पर रोग उत्पन्न होता है। इतना आलसी होता है कि कोई काम हठ पूर्वक कराने से करता है। जलयात्रा या यार-दोस्तों के साथ सैर-सपाटे की यात्राएँ होती हैं। कविता या संगीत से प्रेम, मानसिक कल्पनाओं से युक्त, सगे-सम्बन्धियों से भय, विरोध, मार्ग में भटकना, अनेक कष्ट सहना, अपने ही हस्ताक्षर से हानि होना तथा प्रापंचिक स्वभाव होता है। कभी योगज्ञान की प्रवृत्ति देता है, कभी इसका विपरीत परिणाम होता है वायुराशि में उग्र होता है तथा साधु-संगति या योगज्ञान न होकर, केवल भटकना पड़ता है। जब भाग्येश के साथ होता है तब तो जीवन में भाग्यवर्धक कार्यों को प्रारम्भ कर, अन्त में भटकना ही हाथ लगता है। हलके (नीच) लोगों के सम्बन्ध से तथा नौकर-चाकर से अपमान या प्रेम-हानि होती है। मतान्तर से आरोग्यता-रहित, असाध्य-रोगी, आलसीपन से काम करने वाला और अच्छे नौकर नहीं मिलते हैं।

(७) सप्तमस्थ—सांसारिक आपत्तियाँ होती हैं। विरह का दुःख होता है। स्त्री से वियोग, स्त्री को त्यागपत्र देने की सम्भावना, प्रेम कार्यों में अस्थिरता, निर्बल मन, दो विवाह या दो प्रेमसम्बन्ध होते हैं। यदि नेपच्यून अधिक पीड़ित हो तो, हानि, अपयश, व्यभिचार में प्रवृत्ति होती है। किसी की स्त्री या प्रेम-सम्बन्ध, कुरूपा या अपंग (कानी, लूली, लँगड़ी, बहरी, गूँगी, अन्धी) स्त्री से होता है। ऐसी स्त्रियों का संयोग, विचित्र तथा असाधारण रीति से होता है। यह ग्रह, प्रत्येक बात में एकदम (अचानक) उत्तम या निकृष्ट फल दिखाता रहता है। जिसके कारण, बड़ी हानि (खतरा) उठाना पड़ता है। अधिक समय की बँधी आशा को, निराशा में परिणत कर देता है। कभी भाग्यहीन को भाग्यवान् बना देता है, कभी भाग्यवान् को भाग्यहीन कर देता है। जिसका नेपच्यून बहुत बिगड़ा हो उसे, विवाह नहीं करना चाहिए और परस्त्रीगमन की इच्छा तक, भूल से भी न करना चाहिए। मतान्तर से एक से अधिक स्त्री का संयोग, किसी को रोगिणी या बाँझपन के कारण, एक स्त्री के सामने ही, दूसरा विवाह करना पड़ता है। किसी को एक पत्नी-मृत्यु के बाद, दूसरी पत्नी मिलती है। विवाह के समय कोई विलक्षण घटना घटती है। नेपच्यून के बिगड़े होने पर, स्त्री में कोई स्वाभाविक दोष होता है। परन्तु, संसार में वह दोष प्रकट होता नहीं या प्रकट होकर, निन्दनीय नहीं होता। वैवाहिक सुख में बाधा होना निश्चित है तथा नैतिक आचरण में क्षीणता होती है।

(८) अष्टमस्थ—अपने जीवन में चमत्कारिक प्रसंग आते हैं। वसीयतनामा से लाभ-योग आता है। मृत्यु, मूर्च्छा, भ्रमादि रोग होते है। औषधि खाने में सावधान रहना चाहिए, भूल करने से पेट में पहुँचते ही औषधि, हानि पहुँचा सकती है। मतान्तर से अशुभदृष्टि वाला नेपच्यून—विल, ट्रस्ट, किसी की सम्पत्ति, मृत्यु-पत्र, स्त्री-धन इत्यादि के द्वारा, हानि पहुँचाता है। शुभदृष्टि हो तो पूर्वोक्त कारणों से लाभ होता है। दम्पति का धन अस्थिर रहता है। योग, ज्ञान, ध्यान, समाधि की ओर प्रवृत्ति, जल-

लग्नस्थ द्वादश राशिगत नेपच्यून फल

मेष—चतुर, कवि, क्लर्क (लिपिक), अस्थिरता किन्तु युक्तिवादी व्यक्ति होता है।
वृष—कारीगर, सुधरा हुआ, इन्द्रिय-लोलुप, उद्योगशील और कला-कुशल होता है।
मिथुन—आनन्द-प्रिय, शोधक, विद्वान, बुद्धिमान, चालाक, प्रत्युत्पन्नमति और कवि होता है।
कर्क—अस्वस्थ, गम्भीर, अगम्य, असि रर-प्रेमी, दयालु और धनी होता है।
सिंह—ऐतिहासिक वस्तु का प्रेमी, अधिक लेख लिखने वाला, साहसी और धैर्यवान् होता है।
कन्या—चिन्ता से व्यग्र, नीचकर्मी, आलस्य युक्त, शान्ति-प्रिय, भीरु, गूढ़ाशयी और कारीगर होता है।
तुला—कवि, शुद्ध संकल्प वाला, नम्र, सुधरे-विचार, कुछ इन्द्रिय-स्वादी और उग्र होता है।
वृश्चिक—गुप्त वास प्रिय, एकान्त की इच्छा, ऊंचे विचार वाला, अभिमानी किन्तु ठग होता है।
धनु—प्रेरणा से भरा हुआ, अकल्पकल्पक (शेख चिल्ली विचार वाला), परन्तु दयालु होता है।
मकर—अनैतिक ढग वाला, लोगों से विरोध, कुख्यात, गुण्डा या उाऊ प्रकृति, योजक तथा अविस्वार्थी होता है।
कुम्भ—उदारमना, दयालु, सृष्टि को जानने की इच्छा वाला, कुछ उग्र विचार वाला तथा अल्पधनी होता है।
मीन—पशु-पक्षी तक का प्रेमी, रसिक, दयालु किन्तु अव्यवस्थित विचार वाला होता है।

लग्नेश नेपच्यून फल

(१) लग्नस्थ—आध्यात्मिक विचार वाला, योगाभ्यासी, प्रख्यात, विचित्र स्वप्न-द्रष्टा, शुद्ध सकल्प वाला, अन्तर्ज्ञानी, विचारों में अस्थिरता, मनोबल की क्षीणता, मायावी स्वभाव, आपत्तियों से दूर रहने की इच्छा वाला, अन्ध, सगीतज्ञ और कला-कुशल होता है।

(२) धनस्थ—समुद्रीय कार्यों द्वारा (जल जहाज आदि), गुप्त नौकरी से, चिकित्सालय से, उन्माद-चिकित्सालय (पागलखाने) से, धर्मसंस्थाओं से, अनाथालय से और आरोग्यधाम से धन-लाभ हो सकता है। विचित्र तथा शङ्का-शील रीति से अकस्मात् धनप्राप्ति होती है। प्राय धनी होता है। यदि नेपच्यून पीड़ित हो तो ठग, प्रपंची, अविचारी, कल्पित, क्षुद्र, विरुद्धमार्ग के कार्यों में धनहानि या अधिक खर्च करने वाला होता है। मतान्तर से आर्थिक स्थिति सन्तोष-प्रद नहीं हो पाती लबाडियों द्वारा हानि होती है। यदि सूर्य चन्द्र गुरु की शुभदृष्टि हो तो अचानक द्रव्य की प्राप्ति होती है।

(३) तृतीयस्थ—कल्पना-शक्ति की उन्नति, धार्मिक विचार, योगज्ञानी, गुप्त-शास्त्रों में अभिरुचि, नवीन बात या इतिहास या लेख लिखने में मग्न, जल-यात्रा अधिक, कविता प्रेमी, स्वप्न-स्रष्टा, सगे-सम्बन्धियों से, बन्धु-बान्धवों से और यात्रा से विचित्र भय होता है। हस्ताक्षर करने वाली वस्तुओं में धोखा खा जाने वाला तथा प्रापचिक कार्यों म व्यस्तता होती है। मतान्तर से वाणी की तीव्रता होती है। बुध-शुक्र की शुभदृष्टि से कहानी या लघु-कथा लिखने वाला, गूढ़ तथा चमत्कारी शास्त्र सीखने की इच्छा वाला होता है। जलराशिस्थ होने से जलयात्रा या प्रवास अधिक होता है।

(४) चतुर्थस्थ—स्थावर सम्पत्ति या रादान के कार्यों मे धन हानि होती है। सूर्य, चन्द्र, लग्न से, इसका अशुभ सम्बन्ध हो तो कुटुम्ब में विग्रह, पृथक् भाव (बँटवारा) या दायाद भाग के झगड़े तथा स्वास्थ्य-हानि करता है। विमाता का सयोग होता है। निवास-स्थान मे हेर फेर (परिवर्तन), अव्यवस्था, बन्धन तथा परदेश मे हानि या मृत्यु होती है। शुभदृष्ट होने से किसी का सगृहीत धन मिलता है। वृद्धावस्था में कठिनाइयाँ आती हैं। विचित्र बन्धन या विशेष अप्रिय स्थान में जीवन व्यतीत होता है। पराधीन जीवन होता है। अनेक उपाधियुक्त, विचित्र तथा असाधारण अनुभवों का भोगी होता है। सूर्य-चन्द्र की अशुभदृष्टि से स्वास्थ्य बिगड़ता है। बुध से पीड़ित होने पर, मानसिक-अव्यवस्था होती है। मतान्तर से स्थावर-सम्पत्ति-सुख, बाग-बगीचा, भूमि से लाभ, खेती-बाड़ी में उन्नति किन्तु अधिकांश जीवन, गृह-सुख से रहित (परदेश भ्रमण) तथा अनेक अड़चनें आती हैं। शुभदृष्ट होने से सुख पूर्वक मृत्यु होती है।

(५) पंचमस्थ—सट्टा आदि द्वारा धनहानि, सन्तान द्वारा हानि, सन्तान को कष्ट, सन्तान से कष्ट, सन्तान द्वारा क्षोभ, पुत्र सन्तान अधिक, तीव्र-प्रेमी, यदि ध्यान दिया जाय तो कुख्यात न होकर, सुख्यात हो जाता है। नेपच्यून बिगड़ा हो तो प्रेम जाल में फँस जाता है और ठगाया जाता है। अकल्पित धनलाभ, अविश्वासी, अनेक प्रकार के भय, कभी पशु-स्वभाव हो जाता है। शुभदृष्टि होने से, स्त्री के अनुभव विशेष प्राप्त होते हैं। मतान्तर से शुभदृष्ट नेपच्यून होने से प्रेमसम्बन्ध द्वारा विवाह होता है और सन्तति होती है। अशुभदृष्टि होने से विवाह सम्बन्धी निराशा होती है। पत्नी से प्रेम नहीं रह पाता। विषय-वासना अधिक होती है। कुमार्ग में पैसे का अपव्यय होता है।

(६) षष्ठस्थ—नौकर-चाकर द्वारा हानि, उन्नति में विघ्न, बन्धन, पराधोनता, दासत्व भावना, स्वास्थ्य खराब, आलस्य-वृद्धि, नौकरों से अविश्वास, प्रपंची, असाध्य रोग या वंशानुगत रोग होता है। शुक्र या मंगल या किसी पापग्रह की अशुभदृष्टि में होने से, व्यभिचार या अस्वाभाविक ढंग (गुदाभंजन, हस्तमैथुन, पशुसम्भोग आदि) से वीर्यनाश होने पर रोग उत्पन्न होता है। इतना आलसी होता है कि कोई काम हठ पूर्वक कराने से करता है। जलयात्रा या यार-दोस्तों के साथ सैर-सपाटे की यात्राएँ होती हैं। कविता या संगीत से प्रेम, मानसिक कल्पनाओं से युक्त, सगे-सम्बन्धियों से भय, विरोध, मार्ग में भटकना, अनेक कष्ट सहना, अपने ही हस्ताक्षर से हानि होना तथा प्रापंचिक स्वभाव होता है। कभी योगज्ञान की प्रवृत्ति देता है, कभी इसका विपरीत परिणाम होता है वायुराशि में उग्र होता है तथा साधु-संगति या योगज्ञान न होकर, केवल भटकना पड़ता है। जब भाग्येश के साथ होता है तब तो जीवन में भाग्यवर्धक कार्यों को प्रारम्भ कर, अन्त में भटकना ही हाथ लगता है। हलके (नीच) लोगों के सम्बन्ध से तथा नौकर-चाकर से अपमान या प्रेम-हानि होती है। मतान्तर से आरोग्यता-रहित, असाध्य-रोगी, आलसीपन से काम करने वाला और अच्छे नौकर नहीं मिलते हैं।

(७) सप्तमस्थ—सांसारिक आपत्तियाँ होती हैं। विरह का दुःख होता है। स्त्री से वियोग, स्त्री को त्यागपत्र देने की सम्भावना, प्रेम कार्यों में अस्थिरता, निर्बल मन, दो विवाह या दो प्रेमसम्बन्ध होते हैं। यदि नेपच्यून अधिक पीड़ित हो तो, हानि, अपयश, व्यभिचार में प्रवृत्ति होती है। किसी की स्त्री या प्रेम-सम्बन्ध, कुरूपा या अपंग (कानी, लूली, लँगड़ी, बहरी, गूँगी, अन्धी) स्त्री से होता है। ऐसी स्त्रियों का संयोग, विचित्र तथा असाधारण रीति से होता है। यह ग्रह, प्रत्येक बात में एकदम (अचानक) उत्तम या निकृष्ट फल दिखाता रहता है। जिसके कारण, बड़ी हानि (खतरा) उठाना पड़ता है। अधिक समय की बँधी आशा को, निराशा में परिणत कर देता है। कभी भाग्यहीन को भाग्यवान् बना देता है, कभी भाग्यवान् को भाग्यहीन कर देता है। जिसका नेपच्यून बहुत बिगड़ा हो उसे, विवाह नहीं करना चाहिए और परस्त्रीगमन की इच्छा तक, भूल से भी न करना चाहिए। मतान्तर से एक से अधिक स्त्री का संयोग, किसी को रोगिणी या बाँझपन के कारण, एक स्त्री के सामने ही, दूसरा विवाह करना पड़ता है। किसी को एक पत्नी-मृत्यु के बाद, दूसरी पत्नी मिलती है। विवाह के समय कोई विलक्षण घटना घटती है। नेपच्यून के बिगड़े होने पर, स्त्री में कोई स्वाभाविक दोष होता है। परन्तु, संसार में वह दोष प्रकट होता नहीं या प्रकट होकर, निन्दनीय नहीं होता। वैवाहिक सुख में बाधा होना निश्चित है तथा नैतिक आचरण में क्षीणता होती है।

(८) अष्टमस्थ—अपने जीवन में चमत्कारिक प्रसंग आते हैं। वसीयतनामा से लाभ-योग आता है। मृत्यु, मूर्छा, भ्रमादि रोग होते है। औषधि खाने में सावधान रहना चाहिए, भूल करने से पेट में पहुँचते ही औषधि, हानि पहुँचा सकती है। मतान्तर से अशुभदृष्टि वाला नेपच्यून—विल, ट्रस्ट, किसी की सम्पत्ति, मृत्यु-पत्र, स्त्री-धन इत्यादि के द्वारा, हानि पहुँचाता है। शुभदृष्टि हो तो पूर्वोक्त कारणों से लाभ होता है। दम्पति का धन अस्थिर रहता है। योग, ज्ञान, ध्यान, समाधि की ओर प्रवृत्ति, जल-

लग्नस्थ द्वादश राशिगत नेपच्यून फल

मेष—चतुर, कवि, क्लर्क (लिपिक), अस्थिरता किन्तु युक्तिवादी व्यक्ति होता है।
वृष—कारीगर, सुधरा हुआ, इन्द्रिय-लोलुप, उद्योगशील और कला-कुशल होता है।
मिथुन—आनन्द-प्रिय, शोधक, विद्वान्, बुद्धिमान्, चालाक, प्रत्युत्पन्नमति और कवि होता है।
कर्क—अस्वस्थ, गम्भीर, अगम्य, अस्थिर-प्रेमी, दयालु और धनी होता है।
सिंह—ऐतिहासिक वस्तु का प्रेमी, अधिक लेख लिखने वाला, साहसी और धैर्यवान् होता है।
कन्या—चिन्ता से व्यग्र, नीचकर्मी, आलस्य युक्त, शान्ति-प्रिय, भीरु, गूढ़ाशयी और कारीगर होता है।
तुला—कवि, शुद्ध संकल्प वाला, नम्र, सुधरे-विचार, कुछ इन्द्रिय-स्वादी और उग्र होता है।
वृश्चिक— गुप्त-वास प्रिय, एकान्त की इच्छा, ऊंचे विचार वाला, अभिमानी किन्तु ठग होता है।
धनु—प्रेरणा से भरा हुआ, अकल्पकल्पक (शेख चिल्ली विचार वाला), परन्तु दयालु होता है।
मकर—अनैतिक ढंग वाला, लोगों से विरोध, कुख्यात, गुण्डा या खाऊ प्रकृति, योजक तथा अविस्वार्थी होता है।
कुम्भ—उदारमना, दयालु, सृष्टि को जानने की इच्छा वाला, कुछ उग्र विचार वाला तथा अल्पधनी होता है।
मीन—पशु-पक्षी तक का प्रेमी, रसिक, दयालु किन्तु अव्यवस्थित विचार वाला होता है।

लग्नेश नेपच्यून फल

(१) लग्नस्थ—आध्यात्मिक विचार वाला, योगाभ्यासी, प्रख्यात, विचित्र स्वप्न-द्रष्टा, शुद्ध सकल्प वाला, अन्तर्ज्ञानी, विचारों में अस्थिरता, मनोबल की क्षीणता, मायावी स्वभाव, आपत्तियों से दूर रहने की इच्छा वाला, अदृढ़, सगीतज्ञ और कला-कुशल होता है।

(२) धनस्थ—समुद्रीय कार्यों द्वारा (जल जहाज आदि), गुप्त नौकरी से, चिकित्सालय से, उन्माद-चिकित्सालय (पागलखाने) से, धर्मसंस्थाओं से, अनाथालय से और आरोग्याश्रम से धन-लाभ हो सकता है। विचित्र तथा शंका-शील रीति से अकस्मात् धनप्राप्ति होती है। प्रायः धनी होता है। यदि नेपच्यून पीड़ित हो तो ठग, प्रपंची, अविचारी, कल्पित, क्षुद्र, विरुद्धमार्ग के कार्यों में धनहानि या अधिक खर्च करने वाला होता है। मतान्तर से आर्थिक स्थिति सन्तोष-प्रद नहीं हो पाती. लवाड़ियों द्वारा हानि होती है। यदि सूर्य-चन्द्र गुरु की शुभदृष्टि हो तो अचानक द्रव्य की प्राप्ति होती है।

(३) तृतीयस्थ—कल्पना-शक्ति की उन्नति, धार्मिक विचार, योगज्ञानी, गुप्त-शास्त्रों में अभिरुचि, नवीन-बात या इतिहास या लेख लिखने में मग्न, जल-यात्रा अधिक, कविता प्रेमी, स्वप्न-द्रष्टा, सगे-सम्बन्धियों से, बन्धु-बान्धवों से और यात्रा से विचित्र भय होता है। हस्ताक्षर करने वाली वस्तुओं में धोखा खा जाने वाला तथा प्रापंचिक कार्यों में व्यस्तता होती है। मतान्तर से वाणी की तीव्रता होती है। बुध-शुक्र की शुभदृष्टि से कहानी या लघु-कथा लिखने वाला, गूढ़ तथा चमत्कारी शास्त्र सीखने की इच्छा वाला होता है। जलराशिस्थ होने से जलयात्रा या प्रवास अधिक होता है।

(४) चतुर्थस्थ—स्थावर सम्पत्ति या खदान के कार्यों में धन हानि होती है। सूर्य, चन्द्र, लग्न से, इसका अशुभ सम्बन्ध हो तो कुटुम्ब में विग्रह, पृथक् भाव (बंटवारा) या दायाद भाग के झगड़े तथा स्वास्थ्य-हानि करता है। विमाता का संयोग होता है। निवास-स्थान में हेर-फेर (परिवर्तन), अव्यवस्था, बन्धन तथा परदेश में हानि या मृत्यु होती है। शुभदृष्ट होने से किसी का संगृहीत धन मिलता है। वृद्धावस्था में कठिनाइयाँ आती हैं। विचित्र बन्धन या विशेष अप्रिय स्थान में जीवन व्यतीत होता है। पराधीन जीवन होता है। अनेक उपाधियुक्त, विचित्र तथा असाधारण अनुभवों का भोगी होता है। सूर्य-चन्द्र की अशुभदृष्टि से स्वास्थ्य बिगड़ता है। बुध से पीड़ित होने पर, मानसिक-अव्यवस्था होती है। मतान्तर से स्थावर-सम्पत्ति-सुख, बाग-बगीचा, भूमि से लाभ, खेती-बाड़ी में उन्नति किन्तु अधिकांश जीवन, गृह-सुख से रहित (परदेश भ्रमण) तथा अनेक अड़चनें आती हैं। शुभदृष्ट होने से सुख पूर्वक मृत्यु होती है।

(५) पंचमस्थ—सट्टा आदि द्वारा धनहानि, सन्तान द्वारा हानि, सन्तान को कष्ट, सन्तान से कष्ट, सन्तान द्वारा क्षोभ, पुत्र सन्तान अधिक, तीव्र-प्रेमी, यदि ध्यान दिया जाय तो कुख्यात न होकर, सुख्यात हो जाता है। नेपच्यून बिगड़ा हो तो प्रेम जाल में फँस जाता है और ठगाया जाता है। अकल्पित धनलाभ, अविश्वासी, अनेक प्रकार के भय, कभी पशु-स्वभाव हो जाता है। शुभदृष्टि होने से, स्त्री के अनुभव विशेष प्राप्त होते हैं। मतान्तर से शुभदृष्ट नेपच्यून होने से प्रेमसम्बन्ध द्वारा विवाह होता है और सन्तति होती है। अशुभदृष्टि होने से विवाह सम्बन्धी निराशा होती है। पत्नी से प्रेम नहीं रह पाता। विषय-वासना अधिक होती है। कुमार्ग में पैसे का अपव्यय होता है।

(६) षष्ठस्थ—नौकर-चाकर द्वारा हानि, उन्नति में विघ्न, बन्धन, पराधीनता, दासत्व भावना, स्वास्थ्य खराब, आलस्य-वृद्धि, नौकरों से अविश्वास, प्रपंची, असाध्य रोग या वंशानुगत रोग होता है। शुक्र या मंगल या किसी पापग्रह की अशुभदृष्टि में होने से, व्यभिचार या अस्वाभाविक ढंग (गुदाभंजन, हस्तमैथुन, पशुसम्भोग आदि) से वीर्यनाश होने पर रोग उत्पन्न होता है। इतना आलसी होता है कि कोई काम हठ पूर्वक कराने से करता है। जलयात्रा या यार-दोस्तों के साथ सैर-सपाटे की यात्राएँ होती हैं। कविता या संगीत से प्रेम, मानसिक कल्पनाओं से युक्त, सगे-सम्बन्धियों से भय, विरोध, मार्ग में भटकना, अनेक कष्ट सहना, अपने ही हस्ताक्षर से हानि होना तथा प्रापंचिक स्वभाव होता है। कभी योगज्ञान की प्रवृत्ति देता है, कभी इसका विपरीत परिणाम होता है वायुराशि में उग्र होता है तथा साधु-संगति या योगज्ञान न होकर, केवल भटकना पड़ता है। जब भाग्येश के साथ होता है तब तो जीवन में भाग्यवर्धक कार्यों को प्रारम्भ कर, अन्त में भटकना ही हाथ लगता है। हलके (नीच) लोगों के सम्बन्ध से तथा नौकर-चाकर से अपमान या प्रेम-हानि होती है। मतान्तर से आरोग्यता-रहित, असाध्य-रोगी, आलसीपन से काम करने वाला और अच्छे नौकर नहीं मिलते हैं।

(७) सप्तमस्थ—सांसारिक आपत्तियाँ होती हैं। विरह का दुःख होता है। स्त्री से वियोग, स्त्री को त्यागपत्र देने की सम्भावना, प्रेम कार्यों में अस्थिरता, निर्बल मन, दो विवाह या दो प्रेमसम्बन्ध होते हैं। यदि नेपच्यून अधिक पीड़ित हो तो, हानि, अपयश, व्यभिचार में प्रवृत्ति होती है। किसी की स्त्री या प्रेम-सम्बन्ध, कुरूपा या अपंग (कानी, लूली, लँगड़ी, बहरी, गूँगी, अन्धी) स्त्री से होता है। ऐसी स्त्रियों का संयोग, विचित्र तथा असाधारण रीति से होता है। यह ग्रह, प्रत्येक बात में एकदम (अचानक) उत्तम या निकृष्ट फल दिखाता रहता है। जिसके कारण, बड़ी हानि (खतरा) उठाना पड़ता है। अधिक समय की बँधी आशा को, निराशा में परिणत कर देता है। कभी भाग्यहीन को भाग्यवान् बना देता है, कभी भाग्यवान् को भाग्यहीन कर देता है। जिसका नेपच्यून बहुत बिगड़ा हो उसे, विवाह नहीं करना चाहिए और परस्त्रीगमन की इच्छा तक, भूल से भी न करना चाहिए। मतान्तर से एक से अधिक स्त्री का संयोग, किसी को रोगिणी या बाँझपन के कारण, एक स्त्री के सामने ही, दूसरा विवाह करना पड़ता है। किसी को एक पत्नी-मृत्यु के बाद, दूसरी पत्नी मिलती है। विवाह के समय कोई विलक्षण घटना घटती है। नेपच्यून के बिगड़े होने पर, स्त्री में कोई स्वाभाविक दोष होता है। परन्तु, संसार में वह दोष प्रकट होता नहीं या प्रकट होकर, निन्दनीय नहीं होता। वैवाहिक सुख में बाधा होना निश्चित है तथा नैतिक आचरण में क्षीणता होती है।

(८) अष्टमस्थ—अपने जीवन में चमत्कारिक प्रसंग आते हैं। वसीयतनामा से लाभ-योग आता है। मृत्यु, मूर्च्छा, भ्रमादि रोग होते हैं। औषधि खाने में सावधान रहना चाहिए, भूल करने से पेट में पहुँचते ही औषधि, हानि पहुँचा सकती है। मतान्तर से अशुभदृष्टि वाला नेपच्यून—विल, ट्रस्ट, किसी की सम्पत्ति, मृत्यु-पत्र, स्त्री-धन इत्यादि के द्वारा, हानि पहुँचाता है। शुभदृष्टि हो तो पूर्वोक्त कारणों से लाभ होता है। दम्पति का धन अस्थिर रहता है। योग, ज्ञान, ध्यान, समाधि की ओर प्रवृत्ति, जल-

भय, समाधि द्वारा विचित्र या असाधारण ढंग से मृत्यु, जीवित जमीन में गड़ने का मौका, अशुद्ध तथा विषैली औषधि से मृत्यु, मरणान्तर विचित्र दाह-क्रिया, विचित्र स्वप्न और दुःख-मय काल्पनिक तरंगे होती हैं। शुभदृष्टि होने से किसी की सम्पत्ति मिलती है।

(९) नवमस्थ—स्थल वा जलमार्ग की यात्राएँ, इनसे भय, कष्ट और उपद्रव होता है। असाधारण तथा गुप्त-विचारों की रीति-रिवाज या धार्मिक-प्रवृत्ति उत्पन्न करता है। भविष्यसूचक या शुद्धाभास स्वप्न होते हैं। अशुभदृष्टि होने से भय, उपद्रव अधिक और जाग्रतावस्था में या स्वप्नावस्था में काल्पनिक तरंगे बहुत उठती हैं। हृदय तरल व सरल, दयालु, दूसरे के विचारों की मान्यता देने वाला, आज्ञापालक, स्त्री पक्ष के मनुष्यों से और न्यायालय के कार्यों से कभी धनहानि, कष्ट तथा विचित्र अनुभव प्राप्त होता है। मतान्तर से यदि नेपच्यून, पृथ्वी या जल राशि का हो तो जीवन में चमत्कारिक अनुभव मिलते हैं। भविष्य-सूचक तथा विचित्र स्वप्न होते हैं। हाँ, हमें ऐसा अनुभव है कि आगे कही हुई बातें वायु तथा जल राशिस्थ नेपच्यून में विशेष पायी जाती हैं, क्योंकि यही राशियाँ गति-शील (अस्थिर) होती हैं, इसलिए आत्म साक्षात्कार, योगाभ्यास, ध्यान-धारणा में सफलता मिलती है। अशुभदृष्टि से रहित नेपच्यून होने पर, वाणी में तेजस्विता आती है, सीधी वाणी, शुद्ध भविष्य-सूचक होती है। कोई फलित-ज्योतिष के अभ्यासी होते हैं, इनकी ओजस्वी वाणी तथा भविष्य-कथन ठीक निकलता है, आध्यात्मिक ज्ञान की लालसा रहती है, ये लोग, पारलौकिक ज्ञान के लिए, गुरुदेव को ढूँढते रहते हैं और इन्हें योग्य-गुरु मिलता भी है, दूरवर्ती प्रवास होता है। यदि मंगल, शनि, हर्शल की अशुभदृष्टि, नेपच्यून पर हो तो जलयात्रा में धोखा होता है, अपघात का भय रहता है, स्थावर-सम्पत्ति (दीवानी दावा) सम्बन्धी हानि होती है।

(१०) दशमस्थ—जीवन में बहुत समय तक उद्योगादि कार्य में उतार-चढ़ाव होता रहता है। किसी को न करने वाले धन्धे भी करने पड़ते हैं। नौकरी, दुर्गम्य या झंझटी जगहों में होती है। अपना धर्म, साधारण लोगों से भिन्न होता है। आचार में भी भिन्नता पायी जाती है। शुभदृष्ट होने से राजकीय सेवाओं में शीघ्र उन्नति होती है। व्यापारियों को मुख्य धन्धा के साथ, दूसरा धन्धा भी करना पड़ता है और उसमें भी सफलता व यश मिलता है। मतान्तर से पीड़ित नेपच्यून में अपयश, निन्दा, कलंक, कुटुम्ब का क्लेश या वियोग, व्यापार में हताशा, माता पिता से विरोध या अवनति देता है। शुभदृष्टि होने से पैतृक सम्पत्ति का सुख, असाधारण कार्य से, जल सम्बन्ध से, व्यापार से या योग-ज्ञान द्वारा धनलाभ होता है। नेपच्यून, विचित्र व्यवहार वाला तथा शुभाशुभ दृष्टि सम्बन्ध से स्वास्थ्य पर शुभाशुभ परिणाम देता है। अशुभदृष्टि होने से विचित्र अनुभव, व्यापार में परिवर्तन, जल द्वारा (समुद्रादि से) हानि देता है।

(११) लाभस्थ—मित्रों से हानि और प्रति-प्रतिज्ञा (जमानत) करने से धोखा होता है। सदा अस्थिर मित्र मिलते हैं। पीड़ित नेपच्यून में, मित्रों के कार्यों द्वारा भयंकर उपद्रव होता है। स्त्रियों से क्षणिक सम्बन्ध होता है। कभी कुसंगति में पड़ जाता है। मतान्तर से अशुभ फल ही प्रायः होते हैं, आप्तवर्ग या बड़े भाई की हानि करता है, अच्छे मित्र नहीं मिल पाते, सत्संग मिलना कठिन होता है, धन-लाभ में न्यूनाधिकता (अस्थिरता) बनी रहती है।

(१२) व्ययस्थ—गुप्त-शत्रु द्वारा अचानक संकट उत्पन्न होता है। शनि, हर्शल, मंगल की अशुभदृष्टि हो तो कारागार-संयोग, एकान्त या गुप्त-वास में रुचि, पूर्वार्जित सम्पत्ति पर ऋण होता है। मतान्तर से गुप्त-शत्रु से भय, कपट, जल से हानि करता है। शुभदृष्ट नेपच्यून में शान्ति-पूर्वक, गुप्त-कार्यों से, सी. आई. डी. विभाग (गुप्तचर) से, गुप्त एजेंसियों से, दैविक मन्त्र-तन्त्र से सफलता तथा धनलाभ होता है। प्रायः ऐसे व्यक्ति, किसी गुप्त-मण्डली के सदस्य होते हैं। सारांश यह है कि, व्ययस्थ नेपच्यून शुभाशुभ योग से—गुप्त-तन्त्र से हानि या लाभ देता है। इसका अच्छा प्रभाव, पहिले से ज्ञात हो सकता है परन्तु इसका बुरा प्रभाव, मिट नहीं सकता। अच्छाई दिखने को तो दिख जाती है परन्तु, किसी

गुप्त-शत्रु के द्वारा, किसी भी विरुद्धक्रिया के कारण, गुप्त-तन्त्र में विकृति आना, तथा इसमें अचानक संकट हो सकते हैं।

भावस्थ नेपच्यून के अनुभूत-फल

(१) शुभ होने से धार्मिक प्रवृत्ति तथा अशुभ होने से स्वास्थ्य में बुराई उत्पन्न करता है।
(२) शुभ होने से साम्पत्तिक सुख तथा अशुभ होने से धनहानि, चिन्ता और उपद्रव होते हैं।
(३) शुभ होने से बन्धु-बान्धवों से सुख तथा अशुभ होने से धनहानि, चिन्ता और उपद्रव होते हैं।
(४) शुभ होने से संगृहीत धन का लाभ। अशुभ होने से सहोदर, पड़ोसी, हस्ताक्षर द्वारा हानि होती है।
(५) शुभ होने से सन्तानसुख, बुद्धिमान्। अशुभ से सन्तानकष्ट या सट्टादि से हानि एवं प्रेमी होता है।
(६) शुभ से अनैतिक या अस्वाभाविक आचार। अशुभ से नौकर से अप्रसन्न, उन्नति के समय विघ्न होता है।
(७) शुभ होने से दाम्पत्य सुख तथा अशुभ होने से दाम्पत्य-विच्छेद, वियोगी, सांसारिक दुःख मिलते हैं।
(८) शुभ होने से अचानक धनलाभ। अशुभ होने से अचानक धन में झगड़े और दाम्पत्य-कष्ट होते हैं।
(९) शुभ होने से शुभयात्रा, विद्वान्, धार्मिक। अशुभ होने से पागलपन, मार्ग में कष्ट, पाखण्डी होता है।
(१०) शुभ होने से व्यापार-नौकरी में उन्नति। अशुभ होने से अपयशी और व्यापार में अस्थिरता होती है।
(११) शुभ होने से मित्र या जमानत से सुख। अशुभ होने से मित्र, बड़े भाई और जमानत से दुःख होता है।
(१२) शुभ होने से गुप्त कार्यों में लाभ। अशुभ होनेसे मित्र या गुप्ततन्त्र से हानि, जेल या एकान्तवास होता है।

नेपच्यून के शुभाशुभ सम्बध की परिभाषा, पाश्चात्य मत के दृष्टि-विचार से कीजिए। शुभदृष्ट, शुभयुति, शुभसम्बन्ध, शुभयोग आदि शब्द, एक-समान समझिए।

द्वादश राशिस्थ नेपच्यून फल

मेषस्थ—इन्द्रिय-लोलुपता तथा प्रेम-व्यवहार में शुभाशुभ प्रेरणा देता है। गुप्त अनुभव एवं मान्यता होती है। केवल यात्रा करता है, अर्थात् भटकता है। दया, दान, उदारता और धार्मिक वृत्तियों की प्रधानता रहती है। अपने बल पर विश्वास करने वाला, स्वेच्छाचारी, साहसी, कार्यों में अग्रगामी, सुन्दर शरीर, मध्यम ऊँचा और कांति-रहित आकृति वाला होता है। मतान्तर से शुभदृष्टि हो तो विद्वान्, शिक्षक और मिलनसार होता है। अशुभदृष्ट हो तो, आकस्मिक संकट, राजकीय भय, कारागार और रोगादि अशुभफल होते हैं।

वृषस्थ—प्रेमी स्वभाव, कला-कौशल में रुचि, रहन-सहन सुन्दर तथा ठाठ-बाट का, भूमि द्वारा लाभ, परन्तु हठी स्वभाव या दृढ़-प्रतिज्ञ होता है। अशुभ सम्बधी नेपच्यून में विषय-वासना अधिक, अधिक भोजन करने से अनिष्ट, मादक पदार्थ का व्यसनी होता है। मतान्तर से धन लाभ तथा उन्नतिशील जीविका कार्य होता है; अन्यथा (अशुभ सम्बन्ध से) धन तथा व्यापारिक अवनति होती है। सौन्दर्य-प्रेमी, व्यभिचारी-वृत्ति, किन्तु सुशील, मित्रता करने योग्य, गम्भीर और आनन्द-प्रिय होता है। शुभ नेपच्यून, वैवाहिक सुख एवं मित्रों की सहायता देता है; अन्यथा इनमें शोक-परिणाम देता है। मध्यम देही, मोटा, चौड़ा और क्षीण कान्ति वाला शरीर होता है।

मिथुनस्थ—बुद्धि तथा कल्पना-शक्ति अच्छी, भविष्य-सूचक स्वप्न या संकेत पाने वाला, यात्रा की इच्छा वाला, मानसिक-शक्ति प्रबल, संगीत-प्रेमी, भाई का सुख, दयालु प्रकृति, सुन्दर तथा उन्नत शरीर, अच्छा स्वभाव और चतुर होता है। मतान्तर से प्रतिभा सम्पन्न बुद्धि, स्फूर्तिमय ज्ञान, मानसिक विकाश, विचित्र संकेत-स्वप्न, साहित्य-शास्त्र में अभिरुचि तथा गणितशास्त्र में प्रवीण होता है। अशुभ नेपच्यून में चंचल, तरंगी विचार, कल्पना-युक्त, सुख-दुःख का विचार करने वाला, अविश्वासी और भाई-बहिन से विरोध या इनकी हानि होती है।

कर्कस्थ—प्रेमी स्वभाव, कल्पना या बुद्धि की वृद्धि, अपने बाल बच्चों, घर-द्वार, परिवार का अधिक मोही, दूर जाने की इच्छा का विनाश, अपने आराम के लिए यात्रा की इच्छा होगी। जल-यात्रा होती है। यदि अशभ युक्त या दृष्ट नेपच्यून हो तो, औषधि से हानि, मादक पदार्थ सेवी, जीवन-स्थिति में अनेक परिवर्तन होते हैं। मतान्तर से धार्मिक तथा योग-मार्ग में प्रवृत्ति, मातृभक्त, माता से लाभ, गृह-वृद्धि या निर्माण में रुचि, दयालु, प्रेमी, गृह में परिवर्तन होता है। अशुभ दृष्टि से—घर में माया, प्रेत, शत्रु, मन्त्र-तन्त्रादि द्वारा बाधा और विचित्र अनुभव होता है। साधारण तौर से कर्क के नेपच्यून वाला, सुडौल शरीर, साधारण ऊँचाई और भव्य-आकृति का होता है।

सिंहस्थ—शुद्ध प्रेमी, दयालु, सभा-सोसायटी या कम्पनी में अभिरुचि, स्वच्छ अन्तःकरण वाला, खेल, तमाशे, नाटक, सिनेमा आदि के लिए लालायित, परोपकारी तथा उदार होता है। संगीत, कविता, चित्रकला में आसक्ति होती है। मध्यम शरीर, चौड़ा तथा मोटा मस्तक, साधारण सुन्दर आकृति वाला होता है। मतान्तर से समाज-प्रिय, सुखासक्त तथा इसकी स्त्री को संगीत में रुचि, व्यायाम तथा पुरुषोचित खेल पसन्द होते हैं। बिगड़े नेपच्यून में व्यसनी, व्यभिचारी, पराश्रलम्बी, परन्तु उन्नतजीविका या कर्मयुक्त, चंचल या अविश्वासी और हृदय में कपट रखने वाला होता है।

कन्यास्थ—बुद्धिमान्, सभ्य, गायन-कला में चतुर होता है। जो अल्पभाषी हो तो औषधि या रसायन शास्त्र में अभिरुचि होती है। यदि नेपच्यून अशुभ हो तो उदासीन, काल्पनिक, संकट, बिना रोग के अपने को रोगी मानने वाला, अत्यन्त स्वार्थी, ढोंगी, शुद्ध पाचनक्रिया से रहित होता है। मतान्तर से कन्याराशिस्थ नेपच्यून, निष्फल या अशुभ या नीचस्थ होता है यदि शुभदृष्ट हो तो लेखनकार्य, पोषणकार्य तथा औषधिकार्य में सफलता पाता है। कारीगरी या कविता का प्रेमी होता है। ऊँचे सुडौल शरीर वाला किन्तु कृष्णाकृति वाला होता है।

तुलास्थ—सुन्दर शरीर, कान्तियुक्त, कलाभिज्ञ, शोभायुक्त, कविता का प्रेमी, चतुर, कल्पना करने वाला, संगीत या चित्रकला का प्रेमी और स्त्री को आकर्षित करने वाला होता है। प्रेम, मित्रता, विवाह आदि सामान्य मैत्री से सुखी होता है। पापपीड़ित नेपच्यून न हो तो, उत्तम भाग्योदय करता है। साधारण सुन्दर, उच्च शरीर होता है। मतान्तर से शास्त्राभ्यासी, तर्कशास्त्र या न्याय-विभाग के कार्यों में सफलता, साझेदारी में लाभ होता है। अशुभदृष्टि से स्वभाव दुर्बल और परस्त्री से सम्बन्ध होता है।

वृश्चिकस्थ—भावुक, धार्मिक, गूढ़-शास्त्र या आध्यात्मिक-शास्त्र का अभ्यासी, शास्त्रीय विषय या संशोधन कार्य में रुचि, दृढ़-निश्चयी, खुले विचार वाला और शीघ्र-क्रोधी होता है। पापदृष्ट होने से विषयी, आचार-भ्रष्ट, व्यसनासक्त, जलभय या विष-औषधि से धोखा होता है। मतान्तर से दयालु, शुभवृत्ति, ज्ञान तथा सुख की वृद्धि करता है। विवाह से, साझे के व्यापार से, वसीयतनामा या दत्तक जाने से धनलाभ होता है। गुप्त अनुभव करने वाला, पुष्टशरीर, मोटा शरीर तथा श्यामवर्णी होता है।

धनुस्थ—मनबहलाव की यात्रा या हठ से यात्रा या किसी के भेजने से यात्रा होती है। धार्मिक विचार, गुप्त अन्वेषक, कविता-प्रेमी, शुद्ध सकल्प वाला, अच्छे अच्छे स्वप्न देखना, कला-कुशलता, शास्त्राभ्यास, भविष्य का बात जानना, ज्ञान के लिए ईश्वरी प्रेरणा होती है; लम्बा शरीर, पुष्टदेही, सुन्दर और भव्य मुखाकृति वाला होता है। मतान्तर से धार्मिक श्रद्धा, स्फूर्तिजन्य ज्ञान, योगाभ्यास, तीर्थयात्रा, तत्त्वज्ञाना, महत्त्वाकांक्षी और निश्चयी बुद्धि वाला होता है। पापग्रहदृष्ट होने से सट्टा, वायदा आदि कार्यों में हानि, भावना-प्रधान, चंचल, मार्ग में भय, भयानक स्वप्न, कल्पना तरंग में भ्रमित होता है।

मकरस्थ—व्यापार में उन्नति, सार्वजनिक कार्यों में सफलता, एकाग्रचित्त, ध्यानी तथा ईश्वरभक्त होता है। पापदृष्ट होने से उदासीन, अत्यन्त दुर्मुखी, कपटी, आप्तवर्ग से विरोध, स्पष्टवादी, व्यापार-धन्धे में असफलता होती है। मतान्तर से पिता द्वारा दुःख, बाल्यावस्था में कौटुम्बिक उपद्रव होता है। शुभदृष्ट होने से धनलाभ अधिक होता है। संगीत, कला, कारीगरी, शेयर होल्डर, बड़े व्यापार में लाभ होता है। साधारण ठिगना शरीर और श्यामवर्णी होता है।

कुम्भस्थ—मित्रता, लोकप्रियता, प्रेम और विवाह के लिए श्रेष्ठ है। उदारता, मोटा शरीर, दया, सुशीलता और मोही होता है। योगज्ञान में रुचि होती है। पापदृष्ट हो तो पूर्वोक्त वस्तुओं में प्रतिकूल फल देता है। प्रायः कुछ लम्बा शरीर, पुष्ट, सुन्दर, चौड़ी मुखाकृति वाला होता है। मतान्तर से सुधारक, उत्तम कार्य-कर्ता, स्वतन्त्र-बुद्धिमान्, अनेक मित्रयुक्त होता है। पापदृष्ट होने से अपयशी, निराशायुक्त, अनैतिक तथा अस्वाभाविक कार्य करने वाला होता है।

मीनस्थ—आध्यात्मिक विद्या, योगाभ्यास, परोपकार, दान धर्म में प्रवृत्ति, मनोविज्ञान शास्त्र का प्रेमी, समाज-प्रिय होता है। पापदृष्ट होने से दुष्ट स्वभाव, गुप्त-शत्रु से पीड़ा, विष-औषधि से धोखा, कारागार-भोगी या दुर्भाग्य-भोगी होता है। मतान्तर से उदारमना, गृह-रक्षक, दयालु होता है। दूसरे के दान वा सहायता से सुखी होता है। पापदृष्ट होने से धनहानि, भाग्यहानि, रोगयुक्त, उत्साह-भंग आदि अशुभफल करता है। ठिंगना शरीर किन्तु कान्तियुक्त आकृति वाला होता है।

राशिस्थ नेपच्यून के अनुभूत—फल

मेषस्थ—स्वेच्छाचारी, स्वबलाश्रयी, अग्रगामी और मदमत्त होता है।

वृषस्थ—धनाढ्य, किन्तु उद्धत तथा निरंकुश होता है।

मिथुनस्थ—बुद्धिमान्, अव्याहत गतिक (सर्वत्र जा सकने वाला), चतुर और चंचल होता है।

कर्कस्थ—मायावी, मोही, धनाढ्य, तामसी या आलसी और लज्जाशील होता है।

सिंहस्थ—उच्चाश्रयी, विश्वासी, निष्पक्षपाती, स्पष्ट विवेकी और सौम्यमार्गी होता है।

कन्यास्थ—विद्वान्, चतुर, कारीगर, भाषा ज्ञान में रुचि किन्तु द्वेष बुद्धि वाला होता है।

तुलास्थ—सावधान, सन्तुलन-शक्तियुक्त, भाषा ज्ञान में रुचि, कोमल हृदयवान्, गर्वित, चतुर और प्रेमी होता है।

वृश्चिकस्थ—खाने-पीने का मित्र, लज्जाशील, चालाक, छली या बनावटी कार्य करता है।

धनुस्थ—उदार, निष्पक्षपाती, अस्पष्ट विचारक, प्रामाणिक, नाटकादि में रुचि तथा निष्कपटी होता है।

मकरस्थ—धन-संग्रही, प्रेमी, अस्थिर-वृत्ति, अपयशी तथा खाने-पीने का मित्र होता है।

कुम्भस्थ—बुद्धिमान्, गुण-ग्राही, शोध-कार्य-कर्ता, लज्जाशील तथा शान्ति का इच्छुक होता है।

मीनस्थ—सौम्यमार्गी, सुखी, स्थिरवृत्ति, धैर्यवान् एवं सहनशील होता है।

सूर्य—नेपच्यून युति या शुभदृष्टि

(१)—योगवृत्ति एवं महत्त्वाकांक्षा में उन्नति, सुन्दरता, स्वच्छता, हास्य-विलास-प्रियता। यात्रा, सट्टा, वायदा, बैंक, प्रतिधनकार्य (मुआवजा), नाटकशाला, आनन्द-गृह आदि से लाभ, अन्य के संगृहीत धन का लाभ, और ऐश्वर्य की वृद्धि करता है। सौम्यमार्गी, उदार, दयालु, धार्मिक, भाग्यवान् बनाता है। मित्र-सुख, व्यभिचारीवृत्ति से दूर रहने का इच्छुक, इसमें कभी सफलता, कभी असफलता, भ्रातृवत् जगत् को समझने वाला, उत्तम स्वप्न द्रष्टा, स्वयं के तथा दूसरों के गुप्त-कार्यों का संग्रहकर्ता तथा आकर्षक होता है। दूसरों के जाल में फँसना तथा औषधि के आधीन रहना—ये दो कार्य वर्जित हैं। मतान्तर से मनोविज्ञान-शास्त्र, समाजशास्त्र, ज्योतिष या गणितशास्त्र आदि में उत्कट रुचि और प्रसिद्ध पुरुषोचित क्रीड़ा एवं गायन-शास्त्र का अभ्यासी होता है। व्यापार या नौकरी में यश तथा उन्नति होती है।

सूर्य—नेपच्यून अशुभदृष्टि

(२)—व्यापार में झंझट, लोकनिन्दा, अपयश, अधिकारी द्वारा हानि, व्यवहार शून्य होता है। अधिकारी पर विश्वास मत रखिए। लोभ-कामना-निष्फल, नवीन योजना नष्ट, उच्च या उत्तरदायित्व पद पर होते हुए भी भाग्य-रहित, पराधीन, अस्वस्थ, सहयोगी या अपरिचित व्यक्ति द्वारा ठगाया जाना, निराशा तथा शोक होता है। मतान्तर से नादप्रिय, (कला में स्वरपर्यन्त शिक्षा), उग्र-स्वभाव, अनैतिक प्रेमी, विचित्र स्वप्नद्रष्टा और व्यापारादि में

चन्द्र–नेपच्यून युति या शुभदृष्टि

(३)—कल्पना शक्ति युक्त, प्रत्येक कार्य का विचारक, संगीत नृत्य चित्रकला में रुचि, अध्यात्मज्ञान एवं योगाभ्यास में सफलता, मातृसुख, सन्तानसुख, माता से धनलाभ कराता है। मतान्तर से कल्पना करने वाला, संशोधन कार्य कर्ता, संकेत स्वप्न-द्रष्टा, स्फूर्तिजन्य ज्ञानी, दयालु, शराब, स्प्रिट, ताड़ी, रसद्रव्य, रासायनिक पदार्थ, औषधि तथा तरल पदार्थ के व्यापार से लाभ होता है।

चन्द्र–नेपच्यून अशुभदृष्टि

(४)—विश्वासघाती जन से हानि, लोकनिन्दा, किसी व्यविक्रम कार्य से अनिष्ट होते हैं। इसे प्रत्येक कार्य की चिन्ता ही बनी रहती है। वासना की ओर झुकाव होता है। अविवेकी कार्य से पश्चात्ताप होता है।

मंगल–नेपच्यून शुभदृष्टि

(५)—उदार, जल सम्बन्धी व्यापार में सुख, धार्मिक, अनुभवी, सहयोगियों पर प्रीति, नवीन-योजना बनाने वाला तथा सफलता युक्त, परिवर्तन का इच्छुक, तोड़ फोड़ के बाद सुखी, रंगों का परीक्षक और चित्रकला भिज्ञ होता है। मतान्तर से कार्य कुशल, तत्परतायुक्त, उद्योग शील, नवीन अन्वेषक, विमान कला में निपुण, वायुमार्गीय यात्रा की नौकरी में प्रगति शील होता है। पावर हाउस या किसी बिजली के कारखाने से उन्नति पाता है।

मंगल–नेपच्यून युति या अशुभदृष्टि

(६)—प्रत्येक कार्य में अतिशयता (आधिक्य), वैभवयुक्त, जड़तायुक्त, जलभय, तरल पदार्थ से भय, विषभय, अपनी महत्ता तथा कीर्ति को बढ़ाने वाला होता है। प्रत्येक प्रकार के कार्य-साधन की धुन सवार रहती है। प्रत्येक कम्पनी में घुसने की चेष्टा करता है। कभी दुष्टा के साथ कलह होता है। यदि मंगल स्वगृही या उच्च का हो तो, पूर्वोक्तभय न होकर प्रत्येक कार्य में न्यूनाधिक प्रवेश या सफलता पाता है। मतान्तर से मंगल की युति या अशुभदृष्टि के कारण, उपदंश समान रोग या विष औषधि से प्रकृति में व्यतिक्रम, जलभय, दूसरों के द्वारा ठगे जाना और स्वप्न-दोष आदि अशुभफल होते हैं।

बुध–नेपच्यून युति या शुभदृष्टि

(७)—बुद्धिमान् और स्थिर मन वाला, युक्तिवादी, गुप्त या दैवी विषय तथा आध्यात्मिक ज्ञान की ओर प्रवृत्ति, संकेत स्वप्न द्रष्टा, अन्तर्ज्ञानी, समाधि, ध्यानादि का प्रेमी, शुद्ध मन वाला, कवित्व शक्ति से सम्पन्न होता है। असाधारण उपचार या आरोग्य विधि का जानकार विश्वस्त-शक्ति (हिप्नाटिज्म) द्वारा रोगनाश करने की शक्ति रोगोपचारी प्राण-विनिमय (मैस्मरेज्म) विद्या का अभ्यास करता है। मानसिक-शक्ति-युक्त, मिलनसार, सूक्ष्मबुद्धि-युक्त स्मरण-शक्ति-युक्त, समुद्र यात्रा प्रेमी तथा व्यायाम प्राणायामादि में रुचि रखता है। मतान्तर से उत्तम बुद्धि वाला, संशोधन कार्य कर्ता, समाचार पत्र विभाग का कार्य कर्ता, प्रेस या पुस्तक सम्बन्धी व्यापार लाभदायक गुप्तचर विभाग में सफलता निश्चित विश्वस्त (कान्फिडेंशियल) कार्य में सफलता तथा इसमें पदवृद्धि होती है। कहानी-लेखक या नाटककार होता है।

बुध–नेपच्यून अशुभदृष्टि

(८)—स्मरण-शक्ति का ह्रास छल या व्यंग का वक्ता, निर्णयात्मक बुद्धि का अभाव होता है। अनुभवहीन, दुःस्वप्न दर्शन, भाई या नौकर चाकर के प्रपंच या गुप्त कार्य द्वारा हानि होती है। बारम्बार विचारों में परिवर्तन, समय पर अपना रंग बदलना, उपद्रव, कपट-जाल में फँसना, अपयश, भ्रमण, असम्भव कल्पना करने वाला होता है। यदि शास्त्राभ्यास में लगा रहे तो, मानसिक-स्थिति, यथाकथंचित् ठीक रह पाती है।

गुरु-नेपच्यून युति या शुभदृष्टि

(९)—धन लाभ, उत्तम, सदाचारी, प्रेमी, भक्ति या धर्म में रुचि, शुद्ध विचारक, सुस्वप्न-द्रष्टा, कल्पना-शक्ति उत्तम, संगति या सौन्दर्य का प्रेमी, सद्‌गृहस्थ, उदार, यशस्वी, यात्रा, कला, कविता, व्यायाम-प्राणायाम में रुचि होती है। तत्त्वज्ञानी, वेदान्त-परिशील, योगाभ्यासी, मनोविज्ञान-शास्त्रज्ञ, पारमार्थिक विद्या का अनुभवी होता है। धार्मिक संस्था के कार्य (देवस्थान के ट्रस्टी, रिसीवर्स, एडमिनिस्ट्रेटर्स आदि), चिकित्सालय (सेनीटोरियम, हास्पिटल), व्यायामशाला, यज्ञशाला, योग-साधन-शाला, आरोग्य-मण्डल, सार्वजानिक उद्यान आदि के कार्यों में यश तथा लाभ होता है। फलित-ज्योतिष, हस्तसामुद्रिक और व्याकरणादि शास्त्र का जानकार होता है।

गुरु-नेपच्यून अशुभदृष्टि

(१०)—पूर्वोक्त कार्यों में (गुरु-नेपच्यून युति वालों में) अपयश, योगभ्रष्ट होने का भय, जलभय होता है। योगाभ्यास करने वाले लोगों को योगाभ्यास में कोई भूल हो जाने से अथवा योग्य-गुरु न मिलने से, अयोग्य मार्ग-क्रम मिलने से, प्रकृति विगड़ कर, योग-भ्रष्ट होना सम्भव है। जल-यात्रियों को यह योग अशुभ तथा अपघात-कारक है। मतान्तर से योग या धर्म के अयोग्य सिद्धान्तों की चिन्तना (विचार), भ्रान्ति वा भ्रमण को उत्तेजना मिलती है जिससे अस्वस्थता, खर्चीला स्वभाव (अपव्ययी), जलभय, प्रमाण-हीन कार्य करने से भय होता है। यदि सत्य-भाषण तथा लेन-देन में शुद्ध चातुर्य का अभ्यास करें तो, कुछ सुख-लाभ अवश्य होता है।

शुक्र-नेपच्यून युति या शुभदृष्टि

(११)—संगीतज्ञ, कलाभिज्ञ, मिलनसार, सौन्दर्य-प्रेमी, किन्तु दो-तीन विवाह या प्रेम-सम्बन्ध होते हैं। प्रेम-लोलुप, कामातुर, स्त्री जाति की प्रशंसा से लोभ में फँसना, सुन्दरता की ओर वको-ध्यान (वगटुट) होना, विचित्रप्रेमी, तैराक न होते हुए भी जल-प्रेमी, जलाशय-विहार में रुचि, कृपिशास्त्र के ज्ञानी, सुस्वप्न-द्रष्टा, संगीत-नाटकादि में अभिरुचि, साझे के व्यापार, सुख-सम्पत्ति, कम्पनी के कार्य, मित्र-मण्डली, सार्वजनिक कार्य और लोक-प्रिय होने से धनलाभ करता है। उत्तम बुद्धिमान्, दयालु होता है। इसकी स्त्री को भी संगीत, प्रिय होता है। नाटक, सिनेमा तथा पेंटिंग कार्य लाभदायक होते हैं।

शुक्र-नेपच्यून अशुभदृष्टि

(१२)—दाम्पत्य-जीवन कष्टमय, विहार कार्य में अधिकता, अधिक खाने-पीने के कारण ही आरोग्यता-रहित एवं अपयशी होता है। बुद्धिरहित, कुसंगति, ठगों से हानि, दुर्भावना में अपव्यय, प्रेम कार्य में निराशा, शिथिलता, अस्थिरता, व्यभिचारी प्रकृति और विष द्वारा हानि होना सम्भव है।

शनि-नेपच्यून युति या शुभदृष्टि

(१३)—व्यापार-धन्धे में लाभ, तेल, स्टाक-शेयर्स या स्थावर-सम्पत्ति, संशोधनकार्य आदि से उन्नति होती है। ध्यान, स्मरण-शक्ति में उन्नति, विचारों में गम्भीरता, शुद्धमना, धनसुख, सांसारिक या पारलौकिक कार्यों में यश, सफलता और सुख मिलता है। आध्यात्मिक अनुभवी, अन्तर्ज्ञानी, शत्रुनाशक, योगाभ्यासी, असाधारण व्यापारी, जलद्रव्य या तरलपदार्थ आदि के व्यापारियों को लाभ होता है। स्वाधीन वासनाएँ रखना, वृद्ध-संगति, धन-विनिमय (मुआवजा), शेयर्स, वसीयतनामा, दत्तक जाना आदि से लाभ होता है। चाहे जितने विघ्न क्यों न आवे, निराशा क्यों न उत्पन्न हो जाय, तथापि जीवन में, विचित्रता से भरा हुआ उत्साह प्राप्त करता है, किन्तु कृपण स्वभाव या कठोर हो जाता है। लौकिक नियम में आलसी, किन्तु पारलौकिक नियम में दृढ़-प्रतिज्ञ होता है। मतान्तर से शनि-नेपच्यून युतिमात्र का वर्णन करना कठिन है; क्योंकि यह योग, मस्तिष्क-शक्ति को धार्मिकवृत्ति में जोड़ता है; अथवा इन दोनों में से, एक को बढ़ाता है और [illegible] है। बुध-शुक्र-गुरु की शुभता से

उन्नति तथा मंगल, शनि, राहु की अशुभता से अवनति होती है। यह शनि-नेपच्यून की युति, स्वतन्त्रता-नाशक है। व्यक्ति, सर्वदा गम्भीर विचारों में डूबता-उतराता रहता है।

शनि–नेपच्यून अशुभदृष्टि

(१४)—धन या जायदात की हानि होती है। लोगों द्वारा टीका-टिप्पणी एवं अपयश मिलता है। शका वा भयदायक कार्य करता है। अल्प समय में विख्यात-स्थिति ला सकता है। सर्वदा उदासीन, योगभ्रष्ट, कलह, विरोध तथा अधिकारियों की अनकृपा होती है। क्षुद्रविचार, उद्योग-धन्धा से रहित या क्षीण, दूसरे के बहकावे में आजाना, खाने-पीने का कष्ट और असाध्य रोग होता है।

हर्शल–नेपच्यून युति या शुभदृष्टि

(१५)—परमहंसवृत्ति, योगी, अन्त स्फूर्तियुक्त, शोधन तथा खोज–कार्य में प्रवीण, गुप्तशास्त्र में प्रगतिशील, योग, ध्यान, जप, समाधि आदि कार्यों का विचित्र अनुभवी, कठिन तपस्या करने वाले एवं कोई जगत्पूज्य होते हैं, परन्तु ये, किसी को ऐहिक सुख नही दे पाते। ३-६ वें भावस्थ तथा १।३।५।७।६।११ राशिस्थ नेपच्यून वालों को दैवी या गुप्त अनुभव, स्वप्नादि द्वारा मिलते हैं। युति तो, एक शताब्दी में, एक बार ही सम्भव है।

हर्शल–नेपच्यून अशुभदृष्टि

(१६)—पूर्वोक्त (युति या शुभदृष्टि वाली) बातों मे व्यतिक्रम, त्रास, भय और उपद्रव होता है। दुःखभोगी, आकस्मिक संकट और एकाध साधारण संस्था में, आजीवन सेवावृत्ति करनी पडती है।

विशेष

(१७)—नेपच्यून का भाग्याक २–७–६ है (यही मीन राशि के भाग्याक हैं)। इसका रत्न ओपल (दूधिया-रत्न) और स्फटिक मणि (शिव–धातु) है।

प्लूटो

(१) जिस प्रकार हर्शल का शनि–धर्म, नेपच्यून का वरुण–धर्म, राहु-केतु का दैत्य–धर्म बताया गया है, उसी प्रकार प्लूटो, भीतरी दुनियाँ या पाताल लोक का स्वामी तथा यम–धर्मी कहा गया है। प्लूटो—[लॉर्ड ऑफ अण्डर वर्ल्ड ऑर डेथ] का पता ई सन् १८५७ ई. में मिला, जब कि, भारत में गदर हो रहा था। इसका गृह, मेष और वृश्चिक अर्थात् मगल की राशियाँ हैं। लगभग २५ वर्ष (कम से कम) और ३३ वर्ष (अधिक से अधिक) तक प्लूटो, एक राशि मे रहता है। यह ग्रह, पचमस्तम्भी (फिफ्थ-कालमिस्ट) है। राज्य-चालक महान् पुरुषों की कुण्डली में, इसका अशुभ योग आने पर, उस राज्य में शत्रु की दृष्टि पड़ती है। प्लूटो, ई. १८५० से १८८५ तक वृषभ में। १८८५ से १९१४ तक मिथुन में। १९१५ से १९३६ तक कर्क में। १९४० से १९७५ तक सिंह मे रहेगा। शोध होने के बाद प्लूटो-शनि युति, दो बार (सन् १८८३ तथा १९१४ में) हुई। गुरु से युति १८८१ से १८८२ तक, १८९४, १९०६, १९१८ से १९१९ तक, १९३० से १९३१ तक, १९४३ में तथा १९५५ से १९५६ तक में सम्भव है। नेपच्यून से युति १८९१ और १८९२ में हुई।

(२) प्लूटो, हर्शल अथवा नेपच्यून से, युति के समय (१८८६ से १८९४ तक) में अत्यन्त अशुभ फल, केवल बुद्धि-जीवी व्यक्तियों पर दिखायी पड़ा था। परन्तु व्यक्ति की अपेक्षा समूह, वर्ग, समाज, देश, राष्ट्र-नेता लोगों में, अधिक प्रत्यक्ष दिखायी पड़ा था। प्लूटो का अशुभ परिणाम ही अधिक दृष्टि-गोचर होता है। क्योंकि शुभ होने पर जितना लाभ करता है उससे अधिक हानि, इसके अशुभ होने पर, हो जाती है। २२ मई १९४० ई० में प्लूटो का अशुभ योग हुआ था। उस समय महायुद्ध चल रहा था, जिसमें

संसार के सभी बड़े-बड़े राष्ट्र सम्मिलित थे। इस महायुद्ध के बाद; प्लूटो-भ्रमण (सिंहस्थ) से नवीन प्रणाली; प्रत्यक्ष रूप से दिखने लगी है। समाजवाद; वैयक्तिक राष्ट्रीयवाद की रचना हुई। व्यक्ति-स्वातन्त्र, राष्ट्रमान्य हुआ और इसकी असीम उन्नति हुई। किसी अंशों में सांइस (स्पार्टन) पद्धति का प्रचार हुआ।

(३) जिस प्रकार राज्य-चालक, सेनानायक तथा राष्ट्र-नियोजक लोगों को, शुभ प्लूटो, बलदायक है; उसी प्रकार गुप्त-मण्डल, अग्रगामी दल एवं क्रान्ति-कारक नायकों, सिनेमा के भूमिका-कारक (प्रसिद्ध अभिनेता आदि) विदेशों में खेलने वालों, समाज के प्रधान तथा चमकने वालों को भी बलदायक है। अशुभ होने पर इन्हें, हानिकारक भी है। अनियन्त्रित या राष्ट्र के मध्य में अनुत्तरदायित्व राज्य-पद्धति के निर्माण-कार्य में इसी का खेल होता है। अघटित घटनाओं पर, इसका प्रतिफल देखने को मिलता है। 'अधिक और क्या फल करता है'—यह देखना, वर्तमान तथा भविष्य में होने वाले ज्योतिर्विदों के हाथ में है। उत्तरोत्तर अनुभवों द्वारा, इसका विकाश करते रहना चाहिए।

(४) सभी कार्यों का अन्तिम परिणाम बताने की शक्ति, इसी में है; इसीलिए पाश्चात्य-ज्योतिषियों ने, इसे अष्टमेश मान लिया है। जब यह शुभ स्थिति में होता है तब, सामूहिक शक्ति, संस्था की प्रगति देने वाला, यश का अधिकारी, विद्युत के समान पारगामिनी उत्तमबुद्धि देता है। गुप्तकार्यालय, अन्तः स्फूर्ति, शास्त्रशोधकों को शोध-शक्ति, एकाग्रता, गाम्भीर्य, स्पष्टता, प्रामाणिक व्यवहार आदि गुण उत्पन्न करता है। साम्राज्यशाही, गुप्तखून, परराष्ट्रीय-वकील, राजनैतिक मानव को भगा ले जाना (पोलीटिकल किडनाप्पिंग), गुप्त वकील आदिकों का यह अधिपति (खलनायक) है। हास्योपहास और व्यंग आदि करने की प्रेरणा देता है।

(५) इसका विचार सायन सौरमास अथवा निरयण सौरमास के आधार पर करना चाहिए, अथवा लग्न से करना चाहिए। यथा, वर्तमान में प्लूटो, सायन सिंहस्थ है—

(१)	मेषस्थ	सूर्य (सायन)	या	मेष	लग्न वालों को	प्लूटो	पंचमेश हुआ	(क्योंकि सिंहस्थ है)
(२)	वृषस्थ	"	"	वृष	"	"	सुखेश	"
(३)	मिथुनस्थ	"	"	मिथुन	"	"	तृतीयेश	"
(४)	कर्कस्थ	"	"	कर्क	"	"	धनेश	"
(५)	सिंहस्थ	"	"	सिंह	"	"	लग्नेश	"
(६)	कन्यास्थ	"	"	कन्या	"	"	व्ययेश	"
(७)	तुलास्थ	"	"	तुला	"	"	लाभेश	"
(८)	वृश्चिकस्थ	"	"	वृश्चिक	"	"	राज्येश	"
(९)	धनुस्थ	"	"	धनु	"	"	भाग्येश	"
(१०)	मकरस्थ	"	"	मकर	"	"	अष्टमेश	"
(११)	कुम्भस्थ	"	"	कुम्भ	"	"	सप्तमेश	"
(१२)	मीनस्थ	"	"	मीन	"	"	षष्ठेश	"

अथवा

(६) सूर्य या लग्न से, प्लूटो जहाँ हो, उस स्थान में समझिए। यथा—

प्लूटो सन् १८५० के पूर्व, मेष में था, अतएव मेषस्थ सूर्य वालों को तथा मेष लग्न वालों को जन्मस्थ था। वृष में प्लूटो के आने पर, मेष सूर्य-लग्न वालों को द्वितीयस्थ था। मिथुन में प्लूटो के आने पर, मेष सूर्य-लग्न वालों को तृतीयस्थ था। कर्क में प्लूटो के आने पर, मेष सूर्य-लग्न वालों को चतुर्थस्थ था। सिंह में प्लूटो के आने पर, मेष सूर्य वालों को पंचमस्थ है, इत्यादि।

उन्नति तथा मंगल, शनि, राहु की अशुभता से अवनति होती है। यह शनि-नेपच्यून की युति, स्वतन्त्रता-नाशक है। व्यक्ति, सर्वदा गम्भीर विचारों में डूबता-उतराता रहता है।

शनि–नेपच्यून अशुभदृष्टि

(१४)—धन या जायदाद की हानि होती है। लोगों द्वारा टीका-टिप्पणी एवं अपयश मिलता है। शंका या भयदायक कार्य करता है। अल्प समय में विख्यात-स्थिति ला सकता है। सर्वदा उदासीन, योगभ्रष्ट, कलह, विरोध तथा अधिकारियों की अनकृपा होती है। क्षुद्रविचार, उद्योग-धन्धा से रहित या क्षीण, दूसरे के बहकावे में आजाना, खाने-पीने का कष्ट और असाध्य रोग होता है।

हर्शल–नेपच्यून युति या शुभदृष्टि

(१५)—परमहंसवृत्ति, योगी, अन्त. स्फूर्तियुक्त, शोधन तथा खोज-कार्य मे प्रवीण, गुप्तशास्त्र मे प्रगतिशील, योग, ध्यान, जप, समाधि आदि कार्यों का विचित्र अनुभवी, कठिन तपस्या करने वाले एवं कोई जगत्पूज्य होते हैं, परन्तु ये, किसी को ऐहिक सुख नही दे पाते। ३-६ वें भावस्थ तथा १।३।५।७।६।११ राशिस्थ नेपच्यून वालों को दैवी या गुप्त अनुभव, स्वप्नादि द्वारा मिलते हैं। युति तो, एक शताब्दी में, एक बार ही सम्भव है।

हर्शल–नेपच्यून अशुभदृष्टि

(१६)—पूर्वोक्त (युति या शुभदृष्टि वाली) बातों मे व्यतिक्रम, त्रास, भय और उपद्रव होता है। दुःखभोगी, आकस्मिक संकट और एकाध साधारण संस्था मे, आजीवन सेवावृत्ति करनी पड़ती है।

विशेष

(१७)—नेपच्यून का भाग्याक २-७-६ है (यही मीन राशि के भाग्यांक हैं)। इसका रत्न ओपल (दूधिया-रत्न) और स्फटिक-मणि (शिव-धातु) है।

प्लूटो

(१) जिस प्रकार हर्शल का शनि-धर्म, नेपच्यून का वरुण-धर्म, राहु-केतु का दैत्य-धर्म बताया गया है; उसी प्रकार प्लूटो, भीतरी दुनियाँ या पाताल लोक का स्वामी तथा यम-धर्मी कहा गया है। प्लूटो— [लॉर्ड ऑफ अण्डर वर्ल्ड ऑर डेथ] का पता ई सन् १८४७ ई. मे मिला, जब कि, भारत में गदर हो रहा था। इसका गृह, मेष और वृश्चिक अर्थात् मंगल की राशियाँ हैं। लगभग २५ वर्ष (कम से कम) और ३३ वर्ष (अधिक से अधिक) तक प्लूटो, एक राशि में रहता है। यह ग्रह, पंचमस्तम्भी (फिफ्थ-कालमिस्ट) है। राज्य-चालक महान् पुरुषों की कुण्डली में, इसका अशुभ योग आने पर, उस राज्य मे शत्रु की दृष्टि पड़ती है। प्लूटो, ई. १८५० से १८८४ तक वृषभ में। १८८४ से १६१४ तक मिथुन में। १६१५ से १६३६ तक कर्क में। १६४० से १६७५ तक सिंह में रहेगा। शोध होने के बाद प्लूटो-शनि युति, दो बार (सन् १८८३ तथा १६१४ में) हुई। गुरु से युति १८८१ से १८८२ तक, १८६४, १६०६, १६१८ से १६१६ तक, १६३० से १६३१ तक, १६४३ में तथा १६५५ से १६५६ तक में सम्भव है।' नेपच्यून से युति १८६१ और १८६२ में हुई।

(२) प्लूटो, हर्शल अथवा नेपच्यून से, युति के समय (१८८६ से १८६४ तक) में अत्यन्त अशुभ पक्ष, केवल बुद्धि-जीवी व्यक्तियों पर दिखायी पड़ा था। परन्तु व्यक्ति की अपेक्षा समूह, वर्ग, समाज, देश, राष्ट्र-नेता लोगों में, अधिक प्रत्यक्ष दिखायी पड़ा था। प्लूटो का अशुभ परिणाम ही अधिक दृष्टि-गोचर होता है। क्योंकि शुभ होने पर जितना लाभ करता है उससे अधिक हानि, इसके अशुभ होने पर, हो जाती है। २२ मई १६४० ई० में प्लूटो का अशुभ योग हुआ था। उस समय महायुद्ध चल रहा था, जिसमें

के इतिहास तथा व्यक्ति-विशेष का अध्ययन, एकत्र कर फलों का अनुमान कीजिए। यदि प्लूटो का स्वतन्त्र अध्ययन-ग्रन्थ तैयार किया जाय, तभी विवक्षित फल प्राप्त हो सकता है। अभी तो प्लूटो, अनुसन्धान-शाला की वस्तु है।

द्वितीय—सिंह राशि वाले को (२३ जुलाई से २२ अगस्त तक के मध्य में जन्म पाने वाले को), कन्यास्थ प्लूटो के समय में धनलाभ होता है। साहसी या निर्भय कार्य करने में, धन-व्यवहार या क्रय-विक्रय कार्य में, बाजार के भावों में चढ़ाव-उतार (एक्सचेञ्ज) करने में, प्लूटो, शक्ति देता है। हाँ, इसका अशुभफल, दिवालियापन, अविश्वास-पात्र बना देना, व्यक्ति या राष्ट्र में परिवतन कराना, एकाकी या तटस्थ वाले का विनाश होना, स्थिर जीवनवृत्ति में झंझट होना आदि, मुख्य गुणधर्म हैं।

तृतीय—शास्त्रीय विषयों में असाधारण बुद्धिमत्ता, शास्त्रार्थज्ञान-कुशलता, स्थापत्यकला में निपुणता, समाज या संस्था के संचालक होना, पूर्वस्थानापन्न होना, पुराना अधिकार प्राप्त करना आदि कार्यों में, प्लूटो, शक्ति देता है। इसका अशुभफल—बड़ों से या इष्टमित्रों से वैमनस्यता द्वारा प्रकट होता है।

चतुर्थ—स्थावर-सम्पत्ति से, खेती-बारी से, खाते-पीने की वस्तुओं से या इनके उत्पादन-क्षेत्र से, सहकारी या साझे या लिमिटेड कम्पनियों से लाभ हो सकता है, नवीन या क्रान्तिकारी विचारों में उन्नति होती है। इसका अशुभफल—पुरानी बातों में परिवर्तन द्वारा प्रकट होता है।

पंचम—अनेक प्रकार के सांसारिक (भौतिक, स्वाभाविक, स्थूल, अत्यावश्यक ढंग के) सुख होते हैं। इसका अशुभफल—भावना-प्रधान और कर्तव्य गौण (बिहैण्ड साइड), विकार-युक्त इच्छाएँ तथा सांसारिक सुख की क्षीणता द्वारा प्रकट होता है।

षष्ठ—इसमें प्लूटो, प्रायः अशुभ ही रहता है। व्यसनाशक्ति, नौकरों पर देख-रेख रखना, बड़ी संस्था का संचालन, पद या अधिकार की लोलुपता, स्वास्थ्यक्षीणता करता है। अपना भी काम न करने एवं दूसरों को भी कष्ट पहुँचाने की कला में चतुर होते हैं। 'स्वयं नष्टः परान्नाशय' वाली कहावत को चरितार्थ करने वाले होते हैं। शत्रुबुद्धियुक्त, पागल, मूर्ख एवं अनेक रोग या शत्रु से ग्रसित होते हैं।

सप्तम—विवाह तथा साझे के कार्यों में उन्नति देता है। व्यक्ति, सामाजिक कार्यों से उपेक्षित रहता है। यात्रा या नौकरी के कार्यों में सफलता, गृह-व्यवस्थापक, गृह-मन्त्री या कार्य में कुशल होता है परन्तु इसे, अपयश मिलने में विलम्ब नहीं लगता।

अष्टम—संकट, आपत्ति, उदासीनता, विध्वंसकता, गुप्तकष्ट, विचित्र मृत्यु आदि कुफल होते हैं। साझे से, गुप्तरीति (गड़ाधन, सट्टा, लाटरी, जुआँ आदि) से, वसीयतनामा या दत्तक जाने से, गुप्तकार्य (गुप्तचर विभाग, चोरी, वेश्या-सहयोगी आदि) से, वशीकरण (ब्लेक मेजिक) से, कीमियागीरी से, और अद्भुत कार्यों से लाभ एवं अभिरुचि होती है।

नवम—व्यवहार चतुर, समाज में अपने ज्ञानानुभव का उपयोग, स्वच्छान्तःकरण, मोख्तार या परराष्ट्रीय वकील बनने में, प्लूटो, बड़ी सहायता करता है। इसके प्रभाव से जगत्पूज्य, मार्ग-दर्शक, समाज या वर्ग के मान्य पुरुष, वीर-चक्राधिकारी, असीम कीर्तिशाली, जागृति-कर्ता होते हैं। किन्तु म्लेच्छ संग से ही उन्नति होती है। अशुभ प्लूटो में, संसार या परलोक का, कोई कार्य नहीं कर सकता।

दशम—पुरानेपन से युक्त, सनातनवादी, समाज के प्रधान होते हैं। अत्यन्त खट-पट करने वाले, प्रगतिशील कार्य मात्र में हाथ बँटाने वाले, शत्रु से बार-बार सामना करके, विजय पाने वाले होते हैं। प्लूटो के अशुभ प्रभाव से, नौकरी या व्यापार में झंझट, संकट, अपयश होता है। संकटापन्न (खतरे वाले) या सार्वजनिक कार्यों में अपघात, अविश्वास, अपयश तथा असफलता पाते हैं।

एकादश—गुप्तमैत्री-सम्बन्ध, अलौकिक रीति से धन-लाभ, गुप्त मण्डली का सदस्य, सन्तान तथा विद्या सम्बन्धी उन्नति देता है। प्लूटो के अशुभ प्रभाव द्वारा, लाभ या संचय में विघ्न होता है और इसके, सन्तान उत्पन्न न हो सकें या उत्पन्न होकर मृत्यु को प्राप्त होते जावें।

(७) जब लग्न से सप्तम पर्यन्त, सूर्य हो तो लग्न द्वारा, अन्यथा (सप्तम से लग्न पर्यन्त, सूर्य होने से) सूर्य द्वारा, आप, अपनी राशि जानिए। उस लग्न या सूर्य की राशि से, प्लूटो की राशि पर्यन्त गिन कर, लग्न-धन-तृतीय आदि भावस्थ, प्लूटो को समझिए। यथा—

(८) किसी की जन्म लग्न कुम्भ है तथा सूर्य पष्ठभाव में है, अतएव सूर्य से राशि न मान कर, जन्म लग्न से राशि मानी जायगी। क्योंकि सूर्य, लग्न से सप्तम के मध्य में अर्थात् पष्ठस्थ ही है। अतएव कुम्भ राशि (जन्म लग्न राशि) से मिथुन में प्लूटो होने पर पचम हुआ। सन् १८८५ से १९१४ तक मिथुन मे प्लूटो था तथा ई० १९१५ से ई० १९३९ तक कर्क में था। कुम्भ लग्न वाले का जन्म, ता १६ जुलाई १९११ ई में हुआ है। वर्तमान समय (१९४० से १९७५ तक) सिंह में प्लूटो है और अब (ई० १९५४) है, अतएव कुम्भ लग्न वाले को, सप्तमस्थ प्लूटो, चल रहा है। यह पौर्वात्य मत से आपको समझाया गया। अब आप आगे, पाश्चात्य मत से, केवल सायन सौरमासीय सूर्य को ही, राशि मान कर, प्लूटो का फल देखिए। यथा—कुम्भलग्न वाले का सायन सौरमास कर्क है, और प्लूटो (सायन स्थिति मे) सिंह पर है, अतएव द्वितीय-स्थानीय फल देखना उचित है न कि सप्तमस्थानीय। अन्यथा आगे लिखे गये फलो का ठीक अनुभव, आपको न मिल सकेगा। अस्तु।

प्रत्यक्ष-अनुभव

(९) लगभग सन् १८२० से १८५० ई० तक, मेष राशि में प्लूटो था, इस समय के अनुभव, इतिहास द्वारा एकत्र कीजिए। सन् १८५० से १८८५ ई० तक वृष राशि में प्लूटो था, इस समय के अनुभव, वर्तमान कुछ वृद्धजनो ने अवश्य ही प्रत्यक्ष देखा होगा, औद्योगिक तथा अर्थशास्त्र की उन्नति हुई थी। जिनका जन्म सायन मेष के सूर्य (२२ मार्च से १९ एप्रिल तक) में हुआ था, उनके धन स्थान (द्वितीयभाव) में प्लूटो था। उनमे जो समाजवाद का प्रसार कर रहे थे, उन्हे अधिक सफलता प्राप्त हुई होगी। सन् १८८५ से १९१४ तक, मिथुन में प्लूटो का भ्रमण होने से, मेष के सूर्य वालो के पराक्रम स्थान (तृतीयस्थ) होने के कारण, सामाजिक पुरानी पद्धति में अन्तर आकर, अग्रगामी (फारवर्ड ब्लाक) या नवीन नवीन मतवाद हुए। इसके परिणाम से ध्येयवाद या तत्समानलेख लिखे गये। प्लूटो ने, उनका पराक्रम बढा कर, भाग्योन्नति (प्रसाराधिक्य) किया, अपने अपने ध्येय को प्रकट करने मे अग्रसर हुए। प्रयत्न शक्ति का सदुपयोग किया गया। सन् १९१५ से १९३९ तक, प्लूटो का भ्रमण, कर्क में होने से (मेष के सूर्य वालों के) चतुर्थस्थ होने के कारण, पुराने लोगों या राष्ट्रों का उलट-पलट हो गया। क्रान्तिकारक मत फैलाने वाले, समाज के अन्दर या जाति या वर्ग का परस्पर सम्बन्ध जुटाकर, व्यवहार को पुष्ट किया और प्रगति-शील हुए। देखिए इतिहास ता० २२।४।१९४० ई० का—जिसमे विवेचना होने के उपरान्त, राष्ट्रों के भविष्य पर, स्थिर नियम बनाए जाने का प्रसार किया गया। सन् १९४० से १९७५ के मध्य मे, सिंहस्थ प्लूटो के समय, क्रमश स्थिरता के अनुभव दिखने लगे हैं। क्योंकि सिंह राशि, स्थिर, बलिष्ठ हृदय, सत्य प्रिय और निष्पक्षपाती होती है। प्रबन्ध-कुशलता का पूर्ण अनुभव, कन्यास्थ प्लूटो के समय मे, स्पष्ट दृष्टि गोचर होगा। हाँ, सिंहस्थ या कन्यास्थ समय के उत्पन्न व्यक्तियों की बुद्धि, प्रबन्ध कौशल्य में अधिक सफल होगी। मिथुनस्थ प्लूटो के समय वाले, चातुर्य-कला भिज्ञ, किन्तु द्विस्वभावी होते हैं। कर्कस्थ प्लूटो के समय वाले, चचल नृत्य या चित्र की रचना करने वाले, दृष्ट-वस्तु के पक्षपाती, आधुनिक तथा इच्छा करने पर धार्मिक होते हैं। वर्तमान मे अधिकाश राष्ट्रों के धुरीण व्यक्ति, मिथुनस्थ और कुछ कर्कस्थ, प्लूटो के समय वाले हैं।

जन्म के सायन सूर्य से द्वादशभावस्थ प्लूटो का फल

प्रथम—व्यक्तित्व, नीति विशेषता, संघ निर्माण-शक्ति और निश्चित मित्रता—इनमें मनुष्य कितना सफल हो सकता है—देखने के लिए प्लूटो के शुभाशुभ योग पर निर्धारित कीजिए। लगभग ३७५ वर्ष तक

सफलता पाने वाला, संघ, कम्पनी या मण्डल की स्थापना तथा प्रसार करने में पटु (योग्य) होता है। चतुष्कोणयोग हो तो, अविचारी, स्वेच्छाचारी, अविवेकी कार्य-कर्ता, ऐसा श्रेष्ठ अधिकारी, जो मुद्रण-कला का नियन्त्रक तथा आलोचना करने वाले के प्रति, विरुद्ध कानूनों का दुरुपयोग करने वाला, होता है।

[गुरु से]

(५)—युति या त्रिकोणयोग हो तो, संसार की झंझटें, गुँथे या उलझे प्रश्न-विचार, जो होते हैं, उनसे भी मार्ग निकालने वाले होते हैं। एक राष्ट्र को, दूसरे राष्ट्र से सहयोग की उन्नति तथा प्रसार होता है। पुनर्घटना के मार्ग-दर्शक तत्त्व, इसी युति के कारण, मिल पाते हैं। आर्थिक-व्यवहार तथा मुद्रा-प्रचलन सम्बन्धी निश्चित मार्ग आँकना, इसी योग का सुप्रभाव है। सट्टा, वायदा, जुआँ का प्रोत्साहन देना तथा भाग्यशाली प्रेम-सम्बन्ध करना आदि में, प्लूटो की युति, पूर्ण सहायक होती है। हाँ, प्लूटो का, धनस्थान से अशुभ योग होने पर, सट्टा आदि कार्यों में, यह शुभ परिणाम कम कर देता है। चतुष्कोणयोग हो तो, नौकरी या व्यापार, ऋण या धनलाभ का परस्पर सहयोग रहता है। आर्थिक स्थिति में, विलक्षण उतार-चढ़ाव होता है। यह योग, अपयशी होता है। पूर्ण सफलता देने के पूर्व ही, भाग्यनाश करता है। अधिकार वा भाग (हक्क) सम्बन्धी होने वाले झगड़ों से हानि होती है और अपने ही ऊपर आर्थिक-दबाव पड़ता है; स्वयं को ही, पैसे का भुगतान करना पड़ता है।

[शुक्र से]

(६)—युति हो तो, निराशा-मय जीवन, बिना विचारे आदेश देने के कारण, अपनी तथा लोगों की भावना में ठेस लगती है। अपने गर्वित वर्ताव के कारण, प्रेमी लोग, दूर हट जाते हैं, इष्ट मित्रों के द्वारा, त्यक्त-मार्गाचारी होता है। इसकी स्थिरता या स्थान, नष्ट हो जाता है। स्त्री या यात्रा या नौकरी के कार्य में बाधा एवं अपयश होता है। त्रिकोणयोग हो तो, परदुःखनिवारक, परोपकारी, दयालु तथा जीवों पर दया दिखाने वाला, कोई शुभकार्य होता है, श्रेष्ठ स्थान या अधिकार मिलता है, यह कोई प्रयत्न न करने पर भी, क्रमशः सरलता से प्राप्त होता है। प्रेम तथा कोमलविकार उत्पन्न होते रहते हैं। चतुष्कोण-योग हो तो, अत्यन्त अनिष्ट परिणाम होता है। अपने दुष्कर्म के कारण, लोगों की भावनाएँ, बिगड़ जाती हैं। जितनी शक्ति हो, उतना ही कठोर वर्ताव करता है। सत्ताधीश व्यक्ति हो तो, पाशविक अत्याचार करता है।

[शनि से]

(७)—प्लूटो की युति सन् १८८३ ई० तथा सन् १९१४ ई० में हुई थी। जिसके परिणाम स्वरूप, सन् १९१४ ई० में प्रथम महायुद्ध (जर्मन-युद्ध) प्रारम्भ हुआ था। सन् १९१८ में (जब गुरु की युति हुई, तब) समाप्त हुआ। युद्धान्तर्गत समय में धन-जनादि की हानि, कई देशों की हुई, जिससे ब्रिटिश-भारत भी अछूता न बचा था। अन्ततोगत्वा, 'इंगलैण्ड विजयी' शब्द, भारत के कोने-कोने में गूँज उठा, समाचारपत्रों का प्रसार बढ़ाया गया, साथ ही इन्फ्ल्यूञ्जा नामक महारोग ने, घर के घर साफ कर दिये। सन् १९१५ से कर्कस्थ प्लूटो की कुदृष्टि, भारत की राशि (मकर) पर पड़ी तथा सन् १९४० तक, भारत की धन-जन-हानि के साथ-साथ, जर्मन-जापान आदि, शून्य-विन्दु पर पहुँच गए। सन् १९४७ वाले अगस्त मास के प्रथम सप्ताह में, सायन सिंह पर, शनि-प्लूटो की पुनः युति हुई, तब से शीघ्र-शीघ्र, कितने परिवर्तन हो रहे हैं—इसे आप, देख ही रहे हैं। मेरी समझ में, शनि-प्लूटो की युति से, परिवर्तन, युद्ध, स्वस्थान-प्राप्ति, स्वस्थान में वापिस आना, सन्धि-पत्र द्वारा मुक्ति, अन्त में रोग या गृह-कलह द्वारा हानि, पुनः क्रमशः स्थिरता आदि, लक्षण प्रकट होते हैं। जैसा कि सन् १९१४ से १९२० तक एवं सन् १९४७ से १९५३ ई० तक, आपके दृष्टि-गोचर है। इसकी युति, ३० से ३६ वर्षान्तर में होना सम्भव है।

द्वादश—इस स्थान में प्लूटो, स्वगृही-भावना के समान, हर्षित होता है। गुप्त स्थान तथा गुप्तकार्यों में, इसका प्रभाव रहता है। सामाजिक तथा देशकार्य में सफलता मिलती है। परन्तु, व्यक्ति, स्वयं अपने जीवन भर, संकट ही पाता रहता है। अधिक धन का व्यय होता है, यात्रा के लिए पैर, उठा ही रहता है। सर्वदा अपनी चिंता न होकर, सामूहिक या कौटुम्बिक चिंता होती है। परोपकार या किसी के सहायतार्थ, कार्य करने में कारागार होता है, किन्तु बंधन या अपघात के समय में भी व्यक्ति, प्रसन्नचित्त रहता है।

प्लूटो का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध

(सूर्य से)

(१)—युति हो तो, व्यंगवक्ता, मर्मभेदी एवं तीर की भाँति घुस जाने वाला, भाषण-कर्ता, अपने जाल में लोगों को फँसाने की चेष्टा, विहार या यात्रा में अग्रगामी होता है। त्रिकोणयोग (नवम-पंचम, १२० अंशी) हो तो, संगठन करना, इससे अपना हित-साधन करना, नवीन समाज व्यवस्था करने में प्रधान, नवीन नियम या कानून बनाना, संगठन करने में चतुर तथा यशस्वी होता है, पदाधिकारी हो तो, अधिक सत्ताधीश होता है। चतुष्कोणयोग (चतुर्थ-दशम, ९० अंशी) हो तो, अनैतिक-विचार, प्राचीनता में लिप्त, नवीनता से विरोध, विचित्र या असाध्य रोग द्वारा अस्वस्थता, औषधि-सेवन अधिक तथा महीनों तक हॉस्पिटल में रहना पड़ता है।

[चन्द्र से]

(२)—युति हो तो, व्यापारिक तथा ऐहिक सुख पाने वाले, छली, भाषण या लेख करने वाले, निर्दयी, कठोर, सहारक वृत्ति वाले, परिस्थिति न देख कर, अव्यवहारी बर्ताव करने वाले होते हैं। त्रिकोणयोग (नवम-पंचम, १२० अंशी) हो तो जाति, संस्था, कम्पनी (वर्ग), गुट्ट का, संचालक, इसमें सफलता पाने वाला तथा कोई संगठन करने वाला होता है। साझे के व्यवहार में, संघ में या संघ के पृष्ठ-पोषक लोगों में, अथवा इनमें से, किसी के साथ प्रतिज्ञा या वचन-बद्धता में, यह योग सहायक होता है। चतुष्कोणयोग (चतुर्थ दशम, ९० अंश) हो तो, सामाजिक या अपनों से विरोध, नैतिक विरोध, नीच बर्ताव, गृह-कलह, जीवन में अनेक संकट, विचित्र अनुभव और शीघ्र-क्रोध के कारण, हानि होती है।

[मंगल से]

(३)—युति हो तो, अत्यन्त गुप्त बात, सरल रीति से प्रकट हो जाती है। मानसिक क्षोभ, अयोग्य याचना-कार्य में मानसिक संताप होता है। त्रिकोणयोग हो तो, अपने विचारों को निश्चित या स्थिर करने की या विचारानुसार कार्य करने की सामर्थ्य होती है। श्रेष्ठ जनों का आदर करता है। शासन कार्यों में आदेशक, शासक, साम्राज्यवादी (डिक्टेटर्स), मुख्यमन्त्री, राजप्रमुख होते हैं अथवा देश पर, इन्हीं के ढंग का प्रभाव होता है। स्वभाव में कठोर, शासक तथा अभिमानी होता है। चतुष्कोणयोग हो तो, भारी दुःख-स्वप्न होते हैं, स्वप्नदोष-भय होता है। अनुत्तरदायी तथा शासनात्मक वृत्ति होती है। पूर्ण तैयारी न होते हुए, शीघ्र ही पूर्व स्थान पर अधिकार प्राप्त कर लेता है। परन्तु, अल्पकाल ही स्थिरता होकर, अनन्तर पद-च्युत होता है।

[बुध से]

(४)—युति हो तो, अत्यन्त मनन-शक्ति वाला, व्यवहार-कुशल, कठोर बर्ताव, त्रुटि का अन्वेषक, अपने किये हुए काम में, कोई बड़ी भूल होने पर, लोगों के द्वारा प्रत्यालोचना का पात्र बनता है। वचन-बद्धता या लेख-बद्धता में हानि होती है। त्रिकोणयोग हो तो, व्यवहार-चतुर, निश्चयी स्वभाव होने के कारण, अनेक गुँथे हुए प्रश्नों को, सरलता से हल करने वाला, शान्त, निश्चयी, विचारकार्य में यशस्वी तथा

सफलता पाने वाला, संघ, कम्पनी या मण्डल की स्थापना तथा प्रसार करने में पटु (योग्य) होता है। चतुष्कोणयोग हो तो, अविचारी, स्वेच्छाचारी, अविवेकी कार्य-कर्ता, ऐसा श्रेष्ठ अधिकारी, जो मुद्रण-कला का नियन्त्रक तथा आलोचना करने वाले के प्रति, विरुद्ध कानूनों का दुरुपयोग करने वाला, होता है।

[गुरु से]

(५)—युति या त्रिकोणयोग हो तो, संसार की झंझटें, गुँथे या उलझे प्रश्न-विचार, जो होते हैं, उनसे भी मार्ग निकालने वाले होते हैं। एक राष्ट्र को, दूसरे राष्ट्र से सहयोग की उन्नति तथा प्रसार होता है। पुनर्घटना के मार्ग-दर्शक तत्त्व, इसी युति के कारण, मिल पाते हैं। आर्थिक-व्यवहार तथा मुद्रा-प्रचलन सम्बन्धी निश्चित मार्ग आँकना, इसी योग का सुप्रभाव है। सट्टा, वायदा, जुआँ का प्रोत्साहन देना तथा भाग्यशाली प्रेम-सम्बन्ध करना आदि में, प्लूटो की युति, पूर्ण सहायक होती है। हाँ, प्लूटो का, धनस्थान से अशुभ योग होने पर, सट्टा आदि कार्यों में, यह शुभ परिणाम कम कर देता है। चतुष्कोणयोग हो तो, नौकरी या व्यापार, ऋण या धनलाभ का परस्पर सहयोग रहता है। आर्थिक स्थिति में, विलक्षण उतार-चढ़ाव होता है। यह योग, अपयशी होता है। पूर्ण सफलता देने के पूर्व ही, भाग्यनाश करता है। अधिकार वा भाग (हक्क) सम्बन्धी होने वाले झगड़ों से हानि होती है और अपने ही ऊपर आर्थिक-दबाव पड़ता है; स्वयं को ही, पैसे का भुगतान करना पड़ता है।

[शुक्र से]

(६)—युति हो तो, निराशा-मय जीवन, बिना विचारे आदेश देने के कारण, अपनी तथा लोगों की भावना में ठेस लगती है। अपने गर्वित बर्ताव के कारण, प्रेमी लोग, दूर हट जाते हैं, इष्ट मित्रों के द्वारा, त्यक्त-मार्गाचारी होता है। इसकी स्थिरता या स्थान, नष्ट हो जाता है। स्त्री या यात्रा या नौकरी के कार्य में बाधा एवं अपयश होता है। त्रिकोणयोग हो तो, परदुःखनिवारक, परोपकारी, दयालु तथा जीवों पर दया दिखाने वाला, कोई शुभकार्य होता है, श्रेष्ठ स्थान या अधिकार मिलता है, यह कोई प्रयत्न न करने पर भी, क्रमशः सरलता से प्राप्त होता है। प्रेम तथा कोमलविकार उत्पन्न होते रहते हैं। चतुष्कोणयोग हो तो, अत्यन्त अनिष्ट परिणाम होता है। अपने दुष्कर्म के कारण, लोगों की भावनाएँ, बिगड़ जाती हैं। जितनी शक्ति हो, उतना ही कठोर बर्ताव करता है। सत्ताधीश व्यक्ति हो तो, पाशविक अत्याचार करता है।

[शनि से]

(७)—प्लूटो की युति सन् १८८३ ई० तथा सन् १९१४ ई० में हुई थी। जिसके परिणाम स्वरूप, सन् १९१४ ई० में प्रथम महायुद्ध (जर्मन-युद्ध) प्रारम्भ हुआ था। सन् १९१८ में (जब गुरु की युति हुई, तब) समाप्त हुआ। युद्धान्तर्गत समय में धन-जनादि की हानि, कई देशों की हुई, जिससे ब्रिटिश-भारत भी अछूता न बचा था। अन्ततोगत्वा, 'इंगलैण्ड विजयी' शब्द, भारत के कोने-कोने में गूँज उठा, समाचारपत्रों का प्रसार बढ़ाया गया, साथ ही इन्फ्ल्यूञ्जा नामक महारोग ने, घर के घर साफ कर दिये। सन् १९१५ से कर्कस्थ प्लूटो की कुदृष्टि, भारत की राशि (मकर) पर पड़ी तथा सन् १९४० तक, भारत की धन-जन-हानि के साथ-साथ, जर्मन-जापान आदि, शून्य-बिन्दु पर पहुँच गए। सन् १९४७ वाले अगस्त मास के प्रथम सप्ताह में, सायन सिंह पर, शनि-प्लूटो की पुनः युति हुई, तब से शीघ्र-शीघ्र, कितने परिवर्तन हो रहे हैं—इसे आप, देख ही रहे हैं। मेरी समझ में, शनि-प्लूटो की युति से, परिवर्तन, युद्ध, स्वस्थान-प्राप्ति, स्वस्थान में वापिस आना, सन्धि-पत्र द्वारा मुक्ति, अन्त में रोग या गृह-कलह द्वारा हानि, पुनः क्रमशः स्थिरता आदि, लक्षण प्रकट होते हैं। जैसा कि सन् १९१४ से १९२० तक एवं सन् १९४७ से १९५३ ई० तक, आपके दृष्टि-गोचर है। इसकी युति, ३० से ३६ वर्षान्तर में होना सम्भव है।

राशि में प्लूटो का, त्रिकोणयोग हो तो, दया-धर्म, मानवधर्म की उन्नति होती है। अनेक परोपकारिणी संस्थायें प्रचलित होती हैं। सामाजिक कार्यों में, सनातनवादी जनों को सफलता तथा आने वाले संकटों का मुँह तोड देने वाले 'यश' मिलते हैं। उत्कृष्ट घटनाओं की रचना होती है। चतुष्कोणयोग हो तो, वास्तववादी, निर्दय, चुगली करने की वृत्ति तथा इनसे होने वाले विकार द्वेष, झगड़े आदि, होते हैं। कुटुम्ब में मृत्यु होती है। संसार में अनेक उटपटाँग प्रसंग आते हैं, विध्वंसक प्रचार या आलोचना होती है। अधिकारियों के विरुद्ध, क्रान्ति (बगावत) होती है। नीच लोगों का सहयोग नहीं होता तथा अल्प-शक्ति वाले, दूर रखे जाते हैं।

[हर्शल से]

(८)—इसकी युति, लगभग ७० वर्षान्तर में होती है। सन् १८६० से सन् १६५३ तक के पंचांग देखने से पता चलता है कि, इन ६४ वर्ष के मध्य में युति नहीं हुई तथा सन् १६६० ६५ ई० के मध्य में, युति होना सम्भव है। क्योंकि, दिसम्बर १६५३ ई० में हर्शल २।२६।२४ है, तथा प्लूटो ४।१।४६ है, दोनों का अन्तरांश १।२।२२ है। युति का परिणाम, अत्यन्त अशुभ होता है। वायुप्रकृति में उत्तेजना देने वाला है। वायुयान के अधिक प्रसार के साथ-साथ, इनके द्वारा अपघात-संख्या की वृद्धि होगी। वृद्ध जन एवं मजदूर-वर्ग को अधिक कष्ट होगा। यह योग, सिंह राशि (अग्नि-तत्त्व) में होगा। इस युति के पूर्व, जन्म पाने वाले, ज्येष्ठजनों की सहायता न पा सकेंगे, अभाव का कारण, मृत्यु-विशेष है। नवीन कार्य-कर्ता, नवीन विचार, नवीन योजनाओं से भविष्य सुखमय दिखेगा। सिंह तथा कुम्भ, सायन सूर्य वाले व्यक्तियों की उन्नति-अवनति में विशेष प्रभाव पड़ेगा। परन्तु यह निश्चित है कि, उन्नति या अवनति, क्षति के उपरान्त ही होगी। सिंह और कुम्भ, पूर्व-पश्चिम की राशियाँ हैं या जिन स्थानों की अथवा जिन व्यक्तियों की सिंह, कन्या, कुम्भ, मकर, कर्क, वृष राशियाँ होंगी, उन्हें युति के कारण, अपनी उन्नति-अवनति के पूर्व, क्षति उठानी पड़ेगी। यदि त्रिकोणयोग हो तो, शुभ तथा बलिष्ठ योग होता है, इसके कारण अन्तःस्फूर्ति, योगाभ्यास, तत्त्वज्ञान, धार्मिक विचार या मत या संस्था में प्रगति होती है। बहुत दिनों का चलता हुआ, राजकीय-विवाद या सामाजिक-विवाद की शान्ति के लिए, शीघ्र ही मार्ग सूझता है, जिसके कारण देश तथा समाज का कल्याण होता है, यह योग, शास्त्राभ्यास, संशोधन, नवीन आविष्कार, नवीन-कल्पना के लिए सहायक होता है। चतुष्कोणयोग हो तो, महा अशुभकारक होता है। आकस्मिक परिवर्तन, देश के अन्दर, अपघात-संख्या की वृद्धि और अनुचित तथा समाज-घातक कार्य होते हैं।

[नेपच्यून से]

(६)—यह युति १८८६ ई० और १८६४ ई० में हुई थी। गुप्त तार्किकों की वृद्धि, मुख्य तथा महत्त्वकारक उद्देश्य लोलुपता, दिखाई पड़ती है। राजनीति में असत्य विधान (कूटनीति) का प्रसार किया जाता है। दूसरे देशों के भाषण (ब्राडकास्ट) तैयार कर, प्रचार में द्रव्य-व्यय किया जाता है। गुप्त-कार्यों की प्रगति होती है। परराष्ट्र के अध्ययन एवं मनन में समय लगाया जाता है। त्रिकोणयोग हो तो, पूँजीवाद और मजदूर वर्ग में ऐक्यता, उत्पादक एवं उत्पादन क्षेत्र के व्यक्ति, मिलकर प्रगति करते हैं, कम्यूनिस्ट-प्रसार में क्षीणता, दुर्भावना या दुर्घटना में न्यूनता होती है। चतुष्कोणयोग हो तो, पूँजीवाद से मजदूर वर्ग के झगड़े, साम्राज्यवाद से समाजवाद की टक्कर, दंगे, हड़ताल, बड़े-बड़े संघ या राज्य में उपद्रव और साथ ही दमन-चक्र का प्रयोग होता है।

—नोट—

प्लूटो के शुभाशुभ योग का विशेष परिणाम सन् १६३६ से सन् १६६० तक के इतिहास द्वारा आप, अध्ययन कीजिए। सन् १६४० से १६४७ तक पर, विशेष ध्यान रखिए। हो सके तो, सन् १६३० से वर्तमान तक के मध्य में होने वाले, राजतन्त्रीय महानुभावों की-पत्रिकायें, उदाहरणार्थ देखिए।

क्रिया में ग्रह

(१) इस शरीर के द्वारा, संसार में जितने कर्म करते हैं, उनमें ग्रहों का क्रम से, किसका, कौनसा कार्य होता है, उसे जानने के लिए प्रथम, ग्रहों के क्रियात्मक विकाश का जानना आवश्यक है; जिसे ज्योतिष-क्षेत्र में, आध्यात्मिक रूप से, इस प्रकार बताया गया है।

(२) क्रियाएँ, अन्तर्मुखी और बहिर्मुखी भेद से, दो प्रकार की होती हैं। कार्य-परायणता (स्थिरता), इच्छा, बुद्धि, नाड़ियाँ (कुण्डलिनी), अवरोध, विचार, संकेत, सुन्दरता और विकाश का, क्रमशः कार्य होकर, एक क्रिया पूर्ण होती है। योग का अर्थ ही अभ्यास है। योगी लोग, योग से तथा साधारण जन, अभ्यास से, अपनी क्रिया का सम्पादन करते हैं, किन्तु, दोनों के ही शरीर में, ग्रहों की प्रेरणा से एक-समान क्रियाएँ होती हैं। योगी, कुण्डलिनी को जागृत कर, क्रमशः मूलाधार, स्वाधिष्ठान, मणिपूरक, अनाहत, विशुद्ध और आज्ञा चक्रों को भेदन करा 'आनन्द' में पहुँचते हैं; जिनके अधिपति, सूर्य (द्रेष्काण), चन्द्र (होरा), मंगल (नवांश), बुध (त्रिशांश), गुरु (द्वादशांश), शुक्र (सप्तमांश) और शनि (लग्न) हैं। प्रत्येक क्रिया के द्वारा योगी, आनन्द को और साधारण जन, प्रसिद्धि को प्राप्त करते हैं। देहात्मक बुद्धि वाले, प्रसिद्धि को ही आनंद मानते हैं। किन्तु योगीजन, आनंद को ही प्रसिद्धि (सफलता) मानते हैं।

ग्रहों का क्रम (क्रिया में)

(३) शनि (स्थिरता), मंगल (इच्छा), बुध (बुद्धि), राहु (नाड़ियाँ), केतु (अवरोध), गुरु (विचार), चन्द्र (संकेत), शुक्र (सुन्दरता) और सूर्य (विकाश) है। हम पढ़ते हैं—अन्तर्मुखी क्रिया और हम लिखते हैं—बहिर्मुखी क्रिया हो जाती है। प्रत्येक क्रिया के करने के पूर्व, हमें स्थिरता लेना पड़ती है। स्थिरता के प्रतिरूप, निष्क्रियता, शयन, मृत्यु और आनन्द में है। स्थिरता लेने के बाद यदि, आगे का कार्य-क्रम रुक गया तो, इसके प्रतिरूप में, व्यक्ति, आ जाता है। साधारण जन, निष्क्रियता, शयन, मृत्यु तक जाकर रुकते हैं, किन्तु योगीजन, 'आनन्द' में विश्राम लेते हैं। स्थिरता, शनि का रूप है। इसके बाद मंगल, इच्छा को जागृत करता है। इसके बाद बुध, बुद्धि को जागृत करता है। इसके बाद राहु, नाड़ियों (कुण्डलिनी) का प्रतिनिधि है, इसे, मस्तिष्क-द्वार को खोलने वाला, कहा जा सकता है, इसे किसी ने 'दर्शन' कराने वाला भी कहा है। केतु को मल, सुप्तावस्था, ताला कहा गया है, जब बुध, प्रगति करता है, तब राहु ही, केतु रूपी ताला या अवरोध हटाकर, मस्तिष्क-द्वार खोल देता है। इसके बाद 'विचार' का प्रतिनिधि गुरु, जागृत होता है। इसके बाद संकेतात्मक रूप से क्रिया का चित्र, चन्द्र उपस्थित करता है (यहीं चन्द्र की मन संज्ञा हो जाती है)। इसके बाद उस चित्र में, सुन्दरता लाने का काम, शुक्र का है, प्रत्येक क्रिया के विकाश के पूर्व, शुक्र, उस क्रिया में सौष्ठव लाता है। इसके बाद सूर्य द्वारा विकाश (प्रसिद्ध) होता है। सूर्य, विष्णु, अविनाशी, नित्य, अक्षर और ब्रह्म माना गया है।

(४) क्रम से शनि, मंगल, बुध, राहु, केतु, गुरु, चन्द्र, शुक्र और सूर्य हैं। कभी-कभी ऐसा भी होता है कि, यदि शनि के बाद, मंगल जागृत न हुआ तो, जीवितावस्था में निष्क्रिय या सुप्त या मृत्यु को प्राप्त होंगे, इन क्रियाओं से स्थिरता हो जायगी। योगी जन, 'आनन्द' में जाकर, स्थिर हो जाते हैं। यदि शनि और मंगल जागृत हो गया और बुध जागृत न हुआ तो, अन्तर्धूम की भाँति, क्रोध बन जायगा। यदि शनि-मंगल-बुध जागृत हो गए और राहु का कार्य न हुआ, तो आप, अपने अन्दर समझ तो रहे हैं, किन्तु बोल नहीं सकते, पंचकर्मेन्द्रियों में से, किसी से कार्य न होगा। यदि शनि-मंगल-बुध-राहु जागृत हो गए और केतु स्थगित रहा तो, मस्तिष्क-द्वार में ताला ही लगा रहेगा। राहु (कुण्डलिनी) का स्थान, गुदा-द्वार के ऊपर, मेरुदण्ड (रीढ़) के अन्तिम भाग में है। इस प्रकार, चोटी के नीचे (मस्तिष्क-द्वार में) केतु का स्थान है, जैसे-जैसे राहु (कुण्डलिनी), ऊपर को चलता है, वैसे-वैसे केतु (अवरोध या ताला) - नीचे को खसकने लगता है। राहु-केतु की गति,

समान है। रीढ रूपी सीढ़ी द्वारा, राहु (नाड़ियों) और केतु (नाड़ियों के मध्य का द्रव पदार्थ या मल) का आवागमन होता है। रीढ रूपी सीढ़ी में, इन दोनों का आवागमन ही, षट्चक्र (मूलाधार आदि) का भेदन है। स्थूल रीति से, ज्ञान-तन्तु के स्पन्दन से मस्तिष्क में सचलन होता है। यदि केतु पर्यन्त, ग्रहों का कार्य हुआ और गुरु जागृत न हुआ तो, मस्तिष्क में विचार न होगा। अभ्यास के द्वारा प्राप्त, क्रियाओं के चित्रों का कोश, मस्तिष्क में, आवागमन करता है। यह अभ्यास, आज का ही नहीं, कल का भी, अर्थात् इसी जन्म का ही नहीं, पूर्व जन्मों का भी होता है। यदि गुरु पर्यन्त, ग्रह-कार्य हुआ और चन्द्र स्थगित रहा तो, आपका मन नहीं—ऐसी भाषा के भाव बन जायेंगे। यदि चन्द्र पर्यन्त, ग्रह-कार्य हुआ अर्थात् मन हो गया और शुक्र स्थगित रहा तो, आप, सुन्दरता न ला सकेंगे, हो सकता है कि, अशोभनीय भावना हो जाय। गुरु के द्वारा किये गये विचार में, शुक्र द्वारा सुन्दरता लाना पड़ेगा। रेशमी वस्त्र, किन्तु मलिन, बोल रहे हैं किन्तु अश्लील आदि। इसीलिए शुक्र को जागृत करना आवश्यक है। यदि शुक्र पर्यन्त, ग्रह-कार्य हुआ और सूर्य जागृत नहीं हुआ तो, सब कुछ होते हुए भी प्रकाश न कर सकेंगे, आपकी क्रिया, प्रसिद्ध न हो सकेगी। अन्ततो गत्वा सूर्य, अपने बल से, आपकी, प्रत्येक क्रिया को, प्रकाशित कर देता है।

प्राणी का जन्म

(१) सूर्य, चन्द्र और लग्न से मिलकर, प्राणी का जन्म होता है। चन्द्र का सहायक, मंगल और सूर्य का सहायक, शुक्र होता है। चन्द्र को माता, लक्ष्मी, भूमि का अंश, एवं मंगल को रज, तथा सूर्य को पिता, विष्णु और शुक्र को वीर्य कहा है। लग्न में सूर्य और भूमि है। माता-पिता, अपने-अपने पूर्वजों के मंगल-शुक्र समेत, सूर्य के विश्वसचारीकिरण (Comsic-Rays) से, आकाश मण्डल में सचारित प्राणी के कीटाणुओं को लेकर, आधान कर्म करते हैं। माता-पिता के, रश्मिप्रवाह वाले अमूर्तरक्तवर्ण (Intra-Red) से, धमनीव्यूह पर और अदृश्यनीललोहित (Ultra Violet) से, मस्तिष्क पर, परिणाम होता है, जिसके द्वारा दोनों के, इच्छाशक्ति और मनाकोश में सचलन होता है। विश्वसचारीकिरण की गति सर्वत्र अर्थात् मोटे से मोटे, शीशा-धातु के बने पदार्थ में भी घुस कर पार होती है। सूर्य (पिता), शुक्र (वीर्य) को, चन्द्र (माता) के, मंगल (रज) से सयोग कराता है। इसके बाद चन्द्र (माता), अपने गर्भ में, उस विशिष्ट प्राणी का पोषण कर, लग्न (भूमि) पर, सूर्य (प्रकाशित) कर देता है। माता-पिता के पास, सर्वदा आनुवंशिक शक्ति (Atavism-Power) रहती है। इन्हें, केवल आधान-कर्म के समय, विश्वसचारीकिरण से, प्राणी के आत्म-तत्त्व (Worms) को लेना पड़ता है।

(२) जब किसी प्राणी की मृत्यु हो जाती है, तब उसी समय, अन्त्येष्टि क्रिया के द्वारा, भाफ (बाष्प) में, उस प्राणी का आत्म-तत्त्व (Worms), वायु के साथ, आकाश-मण्डल में उड़ता है। उस भाफ के, स्थूलरूप से अन्य उपकरणों के साथ, बादल (धूम ज्योतिसलिलमरुताना सन्निपातो मेघ) बन जाते हैं। इस मेघवृष्टि से अन्न होता है और इस प्रकार भी अन्न में प्राणी के आत्मतत्त्व आ जाते हैं। अन्न के भोजन करने से, माता पिता में, प्राणी का आत्म-तत्त्व आ जाता है। आधान-कर्म के अन्त में, अन्न द्वारा प्राप्त, सम्पूर्ण आत्म-तत्त्व जब, मिल जाता है तब से, गर्भाधान-स्थिति हो जाती है। गीता में कहा गया है कि, "अक्षर से ब्रह्म, ब्रह्म से कर्म कर्म से यज्ञ, यज्ञ से मेघ, मेघ से अन्न और अन्न से प्राणी उत्पन्न होते हैं।"

(३) ज्योतिष शास्त्र में लिखा गया है कि, ऋतु (मंगल) और रेत (शुक्र) के सयोग बिना, आधान नहीं होता। जिस दिन के अन्न खाने से अन्न में विश्वसंचारकिरण की लाल और बैंगनी किरणों द्वारा, प्राणी का आत्म-तत्त्व आ जाता है, तभी गर्भाधान हो सकता है, अन्यथा मंगल-शुक्र, व्यर्थ चले जाते हैं।

(४) चन्द्र-मंगल के द्वारा, रजोदर्शन (Menstrual) होता है। चन्द्र, जलमय-रक्त और मंगल, पित्त (Bile) होता है। जब मंगल द्वारा, चन्द्र क्षुभित होता है; तब रजोदर्शन होता है। जब माता की

जन्मराशि से चन्द्र १,२,४,५,७,८,९,१२ वें स्थान में हो और ऐसे चन्द्र पर, मंगल की दृष्टि या संयोग हो, तो ऐसे समय में, जो रजोदर्शन होता है, वह गर्भाधान के योग्य होता है; अन्यथा निष्फल हो जाता है। रजोदर्शन के दिन से ४ रात्रि व्यतीत होने पर, ५ वीं रात्रि से लगभग १५ वीं रात्रि तक (गर्भाधान के योग्य रात्रियों में) जिस समय पिता की जन्म राशि से, चन्द्रमा ३।६।१०।११ वें भाव में हो और ऐसे चन्द्र को, वलिष्ठ गुरु और विपम राशि में स्थित सूर्य या बुध देखते हों या संयोग करें तो, ऐसे समय में आधान-कर्म योग्य; सूर्य (पिता) का शुक्र (वीर्य) होता है। प्राणी में, अच्छे संस्कारों के स्थापनार्थ चन्द्र, गुरु, सूर्य, बुध की शुभता आवश्यक है। बुध (बुद्धि), गुरु (विचार) चन्द्र, (माता, मन), सूर्य (पिता, प्रकाश, तेज) की बलिष्ठता से, प्राणी के आत्म-तत्त्व (Worms) शुद्ध हो जाते हैं।

(५) आधान करने के समय, पवित्र और शृंगार से युक्त, माता-पिता को चाहिये कि, शय्या, शुद्ध, कोमल परिधान-युक्त हो, दीवालों में योग्य-चित्र हों, शकर, घी, गुग्गुल और चन्दन का बुरादा मिलाकर आग में धूप दें या धूपवत्ती जला लें, हो सके तो, नवग्रह के मन्त्रों से हवन करें और अच्छी सन्तान-प्राप्ति के लिए, ईश्वर से प्रार्थना करें। आधान के पूर्व, दोनों को लघुशंका (Make Water) कर लेना चाहिए, किन्तु, आधान के बाद, तुरंत लघुशंका करने से, नपुंसकता और गुर्दे कमजोर होना, सम्भव रहता है। शक्तिवर्धक दूध आदि भोजन करने के तीन-चार घण्टे बाद, आधान करना चाहिये। आधान के बाद, कुनकुना सा दूध, शहद, मिश्री, इलायची डाल कर, धीरे-धीरे पीने से रूक्षता दूर होकर, खोयी हुई शक्ति, पुनः प्राप्त हो जाती है। दोनों को अश्लीलता-रहित, वातावरण बनाकर, अच्छी चर्चा करके, मन को प्रफुल्लित कर लेना, ताम्बूल खाना, आधान-कर्म के आगे-पीछे, अत्यन्त आवश्यक है। आधान-समय में, एक दूसरे के गुप्तांगदर्शन करना, वर्जित है। सब से अधिक आवश्यक है, 'मन के भावों का शुद्ध होना'—ऐसा सभी व्यक्ति कर सकते हैं।

(६) आधान-कर्म के, १२ घण्टे बाद तक गर्भाधान हो सकता है। मंगल (रज) वलिष्ठ होने से कन्या, शुक्र (वीर्य) वलिष्ठ होने से पुत्र और दोनों बराबर होने से नपुंसक प्राणी का आत्म-तत्त्व, उस गर्भ में आता है। गर्भ के प्रथम मास का स्वामी शुक्र होता है, इसमें कलल (शुक्र-शोणित मिश्रण=लाख के गहरे रंग के समान) रूप बनकर, तैयार होता है, लम्बाई १ शतांश मीटर, आँख के स्थान पर तिल-सम काले चिन्ह; वजन १ माशे तक हो जाता है। द्वितीय मास का स्वामी मंगल होता है, गर्भ की स्थिति, घनत्व में आने लगती है, लम्बाई ४ शतांश मीटर, वजन ३ माशे तक हो जाता है। तृतीय मास का स्वामी गुरु होता है, भ्रूण के बाहिरी अंकुर होने लगते हैं, लम्बाई ९ शतांश मीटर, कमल पूर्ण बन जाता है, नाल में बल पड़ने लगते हैं हाथ-पैर की अंगुलियाँ और उन पर नख का प्रारम्भ भाग प्रतीत होने लगता है, वजन ढाई छटाँक के लगभग हो जाता है। चौथे मास का स्वामी सूर्य या राहु होता है, हड्डियाँ बन जाती हैं, पुत्र-कन्या का भेद हो जाता है, लम्बाई १५ शतांश मीटर और वजन ४ छटाँक हो जाता है। पांचवें मास का स्वामी चन्द्र या केतु होता है, लाल रंग की त्वचा पैदा हो जाती है, उस पर बहुत सी सिकुड़न होने के कारण सूखा-सा प्रतीत होता है क्योंकि वसा नहीं होती, धड़ की अपेक्षा सिर बड़ा ज्ञात होता है, लम्बाई ९ इंच और वजन आध सेर हो जाता है। छठे मास का स्वामी शनि होता है, रोम उत्पन्न हो जाते हैं, पलकें खुल जाती हैं, केश सुनहले होते हैं, बुद्धि धारक अंग बनने लगते हैं, लम्बाई १२ इंच और वजन एक सेर हो जाता है। यदि इस समय बालक, गर्भाशय के बाहर आ जाय, तो कुछ घण्टे, जीवित रह सकता है। सातवें मास का स्वामी बुध होता है, चेतनता आ जाती है, लम्बाई १४ इंच, वजन डेढ़ सेर हो जाता है, बालक पूर्ण हो जाता है, सम्पूर्ण देह पर रोम भरे होते हैं, परन्तु पुष्टता नहीं हो पाती, मुख पर भी रोम रहते हैं। इस समय जन्म लेने पर, कुछ दिन या मास तक, जीवित रह सकता है। आठवें मास का स्वामी, आधान-कर्म के समय का लग्नेश होता है, मुख पर रोम लुप्त होने लगते हैं, नख, अँगुलियों के सिरे तक पहुँच जाते हैं।

कभी-कभी नर को एक अंड, अंडकोश में उतर आता है, लम्बाई १७ इंच और वजन २ सेर हो जाता है। नवें मास का स्वामी चन्द्र और दशवें मास का स्वामी सूर्य होता है, त्वचा के नीचे, वसा एकत्र हो जाती है, सभी अवयव पूर्ण और पुष्ट हो जाते हैं, लम्बाई २० इंच और वजन ढाई सेर हो जाता है। इसके अनन्तर, प्राणी का जन्म होता है।

आधान-काल ज्ञान

गर्भ में प्राणी के पोषण का समय २८० दिन माना गया है। प्रत्येक स्त्री को कम से कम २८ दिन और अधिक से अधिक ३१ दिन वाले, प्रतिमास में रजोदर्शन होता है। २८ दिन का मास मानकर, १० मास अर्थात् २८० दिन बताये हैं, किन्तु सूक्ष्म रीति से २७६ दिन से २९२ दिन तक, प्राणी का गर्भ में निवास, माना गया है। एक वर्ष म, चान्द्रगणना से ३५४ दिन एव सौरगणना से ३६५ दिन ६ घण्टे तथा सावनगणना से ३६० दिन होते हैं। जन्मनक्षत्र से कम, ४ से १० नक्षत्र तक में गर्भाधान होता है। जन्म के सूर्य वाले राशि-अश मे से लगभग ६ राशि १० अंश तक, कम करना पडता है और इसी के मध्य मे आधान-काल मिल जाता है। कृष्णपक्ष में जन्म हो तो, शुक्लपक्ष मे आधान-काल एव शुक्लपक्ष म जन्म हो तो, कृष्णपक्ष में आधान-काल होता है। जन्म-लग्न की राशि म, आधान-काल का चन्द्र और जन्म चन्द्र की राशि में, आधान-काल का लग्न होता है। ध्यान रहे कि, आधान-कर्म के, १२ घण्टे बाद तक, गर्भाधान हो सकता है।

"जन्मलग्नसमश्चन्द्रः जन्मचन्द्रसमस्तनुः ॥"— (आधाने)

आधाने यदि दृश्यते स्थिरगते चण्डीशचूडामणौ, नारीणां प्रसवस्तदा खलु भवेद् युग्माकपक्षैर्दिनैः।
सप्ताशीत्यधिकैश्च पक्षसहितैस्तस्मिँश्चरे चेत्रगे, चन्द्राष्टाक्षिदिनै रसातलभुजैर्वा द्विस्वभावे विधौ॥

अर्थात्—यदि जन्मकाल में स्थिरराशि का चन्द्र हो तो २९२ तिथि तक आधानकाल
" चरराशि " २८७ तिथि तक "
" द्विस्वभाव " २७६ से २८१ तिथि तक "

साराश यह है कि, २७६ दिन से २९२ दिन तक के मध्य समय मे, आधान काल माना गया है। इसी के मध्य में जन्मलग्नराशि का चन्द्र, मिल ही जाता है। परन्तु इसमें, कुछ मतभेद भी है—

यदि जन्म का चन्द्र चर में हो तो २७६ से २८१ दिन तक आधान काल
" स्थिर " २८२ से २८७ दिन तक "
" द्विस्वभाव " २८८ से २९२ दिन तक "

दिन घटाने का नियम

जितने दिन घटाना हो, उसमें ३६० का गुणा कर, ३६५ से भाग देने पर, लब्धि के दिनों को, मास-दिन बनाकर घटाइए। इस प्रकार २७६ दिन के ९ मास ३ दिन, २८२ दिन के ९ मास ८ दिन, २८७ दिन के ९ मास १४ दिन और २९२ दिन के ९ मास १९ दिन घटाना चाहिए।

उदाहरण १

देखिए पृष्ठ १३९ और १५२। इसमें स्थिरराशि का चन्द्र है, अतएव २८२ से २८७ दिन तक के मध्य में आधान हुआ होगा। ता० १४।६।१९२० में जन्म हुआ।

१४।६।१९२० ई० में स
९।८।० घटाया २८२ दिन=[१४ जून+२४३ दिन (अक्टूबर से मई तक)+२५ सित०]
५।१०।१९१९ ई० में से
५ घटाया (२८७ दिन)
३१।८।१९१९ ई०

ता. १४ जून १९२० में से २८२ दिन घटाने पर ५।६।१९१९ ई. हुआ।
ता. १४ जून १९२० में से २८७ दिन घटाने पर ३१।८।१९१९ ई. हुआ।

अतएव ता. ३१।८।१९१९ ई. से ५।६।१९१९ ई. तक के मध्य में आधान-काल होना चाहिए। जन्म-लग्न वृश्चिक होने से, आधान-काल में वृश्चिक का चन्द्र होना चाहिए। पूर्वोक्त आधान-काल के मध्य ता. १ से ३ तक (सितम्बर) १९१९ ई. को वृश्चिक का चन्द्र है। इस तीन दिनों में, जन्म का चन्द्र वृष में होने से, आधान-लग्न, वृष होना चाहिए। ता० ३ सितम्बर को वृषलग्न के समय, धनु का चन्द्र आ गया है, अतएव ता० १ और २ सितम्बर (सोमवार-मंगलवार) को ही आधान-काल सम्भव है। जन्म-लग्न है ७।८।५।० (पृष्ठ १५२ में) और लग्नभाव ६।२२।५६।४० से ७।२३।५६।४० तक है। लग्न ७।८।५।० के कारण, अनुराधा के द्वितीय चरण के चन्द्र में, वृष-लग्न जिस दिन हो, वही समय आधान का होना चाहिये, क्योंकि "जन्मलग्नसमश्चन्द्रः" कहा गया है. ऐसा योग ता० १ सितम्बर १९१९ ई० को ही है। सारांश यह है कि, ता० १४ जून १९२० ई० के जन्म पाने वाले प्राणी का आधान-काल, ता० १ सितम्बर १९१९ ई० को वृष-लग्न और वृश्चिक के चन्द्र-समय में हुआ।

आधान-काल १

संवत् १९७६ शके १८४१ भाद्रपद शुक्ल ७ सोमवार ता० १।९।१९१९ अनुराधा के चन्द्र और वृष लग्न में हुआ। इसका जन्म-काल, पृष्ठ १२६ के उदाहरण गणित में देखिए। आधान-काल की ग्रह-स्थिति इस प्रकार है—

वृष लग्न, सूर्य ४।१५, चन्द्र अनुराधा में, कर्क में मंगल, बुध और गुरु, सिंह में शुक्र और शनि तथा वृश्चिक में राहु है। इष्ट ४१।३६।३० लग्न १।४ (जन्म-चन्द्र १।२) है इस दिन ५।३० बजे शाम को चन्द्र ७।३।२१ था। दिनमान ३१।१५ [स्टै. टा० आधान काल १०।३५ P. M.], गणना से चन्द्र, अनुराधा के प्रथम चरण में आ रहा है और जन्म-लग्न, अनुराधा के द्वितीय चरण में है किन्तु, लग्न और चन्द्र का राशि-भेद नहीं है। इसमें पंचमेश (बुध) और सप्तमेश (मंगल) का संयोग, रन्ध्रेश (गुरु) से हो गया है; अतएव स्त्री-पुत्र के लिए शुभकारक नहीं। सूर्य-शुक्र-शनि का संयोग, चतुर्थभाव में भाग्य-राज्य-सुख के लिए शुभ है। लग्न में केतु शरीरकष्टकारक है। सप्तम में चन्द्र और राहु, भाई, पराक्रम, स्त्री, बल, रक्त, मन के लिए प्रतिकूल है। सूर्य (पिता) के साथ, षष्ठेश और शनि है तथा चन्द्र (माता) के साथ, राहु है एवं लग्न (प्राणी) के साथ, केतु (मलिनग्रह) है। इस प्रकार आधान-लग्न से भी फल निकालना चाहिए।

उदाहरण २

देखिए पृष्ठ २२६ में। इसमें चरराशि का चन्द्र है। अतएव २७६ से २८१ दिन के मध्य में आधान हुआ होगा। ता० १९।७।१९११ ई० में जन्म हुआ था।

ता० १९।७।१९११ ई० में से
 ३।९।० घटाया २७६ दिन = (१९ जुलाई + २४२ जून तक नवम्बर से + १५ अक्टूबर के)
 १६।१०।१९१० ई० में से
 ५ घटाया २८१ दिन
 ११।१०।१९१० ई०

ता० १९। ७।१९११ ई० में से २८१ दिन घटाने पर ११।१०।१९१०, ई० हुआ।
ता० १९। ७ ।१९११ ई० में से २७६ दिन घटाने पर १६।१०।१९१० ई० हुआ।

अतएव ता० ११।१०।१९१० ई० से ता० १६।१०।१९१० ई० तक के मध्य में, आधान-काल होना चाहिए। जन्म-लग्न कुम्भ होने से, आधान-काल में कुम्भ का चन्द्र होना चाहिए। जन्म-लग्न पूभा० के प्रथम चरण में है और जन्म-चन्द्र, अश्विनी के चतुर्थ चरण में है। ऐसा योग, ता० १५।१०।१९१०

ई० को आ गया है। जैसे उदाहरण एक में, जन्म-लग्न, अनुराधा के द्वितीय चरण में है, किन्तु आधान काल में चन्द्र, अनुराधा के प्रथम चरण में ही आ रहा है, इसी प्रकार, इस उदाहरण में भी, जन्म लग्न पूभा के प्रथम चरण की है परन्तु, आधान-काल का चन्द्र, शतभिषा के चतुर्थ चरण का आ रहा है, फिर भी दोनों उदाहरणों में जन्म चन्द्र के समान, आधान की लग्न आ जाती है। जन्म का चन्द्र अश्विनी के चतुर्थ चरण में होने से, आधान-लग्न भी, अश्विनी के चतुर्थ चरण में आ रही है। कानपुर प्रदेश में, जन्म-स्थान होने से, दिनमान २८।३६ इष्ट ३०।२२ सूर्य ५।२८।२२ लग्न ०।१७ है।

आधान-काल २

संवत् १९६७ शके १८३२ आश्विन शुक्ल १२ शनिवार, शतभिषा ३५।५० वा० १५।१०।१६।१० ई०, कुम्भ के चन्द्र और मेष लग्न में हुआ। मेष लग्न, शनि-राहु से युक्त कन्याराशि में सू. मं. बु. शु. और तुला में गुरु-केतु तथा कुम्भ में चन्द्र है। शनि राहु, शरीरकष्टदायक, पंचमेश-सप्तमेश अष्टमेश का योग पष्ठभाव में होने से, स्त्री-पुत्र के लिए कष्टदायक है। जैसे आधान-काल में भाग्येश, सप्तम में है और दशमेश तथा चन्द्रलग्नेश की दृष्टि, दशम में है, उसी प्रकार जन्मकाल में भी, भाग्येश सप्तम में और दशमेश तथा चन्द्रलग्नेश की दृष्टि, दशमभाव पर है, ऐसा योग, भाग्यवर्धक ही माना जायगा। शनि की दृष्टि, गुरु पर, आधान और जन्मकाल में एक समान है। आधान में, लग्नेश-तृतीयेश षष्ठेश का योग, षष्ठभाव में है, तथैव जन्मकाल में लग्नेश-तृतीयेश षष्ठेश का योग, तृतीय भाव में है। इस प्रकार, दोनों योग, एक समान हैं। जन्म काल में चन्द्र, अश्विनी में होने से, केतु दशा में जन्म हुआ, आधान का चन्द्र, शतभिषा में होने से, राहु दशा में आधान हुआ, दोनों एक सी दशाएं हैं। सूर्य (पिता) के साथ, चन्द्र (माता) का षडष्टक योग है।

इन दो उदाहरणों से प्रतीत होता है कि 'जन्मचन्द्रसमस्तनु" के अनुसार, जन्म-चन्द्र के राशि-अंश समान, आधान-लग्न आने के समय जन्मलग्नसमश्चन्द्र" के अनुसार, जन्म-लग्न के राशि अंश समान, आधान चन्द्र नहीं आ पाता। हाँ, आधान का चन्द्र, एक चरण पीछे आ जाता है, किंतु राशि-भेद नहीं होने पाता। हो सकता है कि, चन्द्र के गति भेद से, नौ मास का अन्तर, एक चरण में होता हो। अतएव 'सम' शब्द के अर्थ, केवल राशि की समानता मात्र है।

किसी आचार्य ने ऐसा भी बताया है कि, पूर्वोक्त प्रकार के गणित द्वारा, कभी जन्म चन्द्र से सातवें भाव का राशि में, आधान-लग्न हो जाती है। अतएव डाक्टर और वैद्यों का भी मत ठीक ही है जिन्होंने संयोग के अनन्तर १२ घण्टे में गर्भाधान हो सकना—कहा है। संयोग के अर्थ हैं नर-नारी का आधान-कर्म और गर्भाधान के अर्थ हैं शुक्र-रज मिलकर 'कलल' बनने का प्रारंभ होना। माता, पिता और भूमि के प्रतीक, चन्द्र और लग्न मात्र ही रहेंगे। लग्न में सूर्य और भूमि की सत्ता होने से, पिता और भूमि की प्रतीक, लग्न हो जाती है। संयोग-कर्म में, तीनों का संयोग होने से, चन्द्र और लग्न के द्वारा ही, आधान काल का गणित होता है। किसी भूमि में, सूर्य से चन्द्र का संयोग होता है और किसी भूमि में चन्द्र द्वारा प्राणी की उत्पत्ति होती है। आधान भूमि और जन्म-भूमि का अन्तर, चन्द्र द्वारा होता है। जिन व्यक्तियों के जन्म-लग्न या सातवें भाव में चन्द्र होता है उनकी आधान-भूमि और जन्म भूमि एक ही होती है, और ऐसे व्यक्ति, सम्भव है कि, कोई यात्रा पसन्द न करते हों किन्तु जिनका चन्द्र ३,७,९,१२ भाव में हो, वे यात्राएं बहुत करते होंगे, शेष मध्यम प्रकार से यात्रा-प्रेमी होंगे। यदि ३,७,९,१२ के स्वामी ३,७,९,१२ में ही आ जायँ तो वे, अत्यन्त यात्रा प्रेमी होंगे। ऐसे सभी विचार, आधान तथा जन्म (दोनों) से करना चाहिये।

दशम-पतिका = ज्योतिष का राज्य

एकादश-वर्तिका

लाभदायक स्थान का चुनाव

सभी व्यक्ति, एक ही स्थान (स्वदेश या जन्म-भूमि) में, न तो व्यापारिक सफलता पाते हैं और न स्वस्थता। इसका कोई कारण अवश्य है। जहाँ तक मेरी समझ है, भू-भाग गोल (सर्वत्र असमानता) होने से, प्रत्येक व्यक्ति, प्रत्येक स्थान में प्रगति-शील नहीं हो पाता और न उसकी प्रकृति के अनुकूल, जल-वायु ही मिल पाता है, जिससे स्वस्थ रह कर व्यापारिक सफलता कर सके। प्रतिकूल वातावरण में, व्यापार या स्वास्थ्य सम्बन्धी, अनुकूलता मिलना, प्रायः कठिन या असम्भव है। जब एक स्थान में, स्वास्थ्य ठीक न होने पर, दूसरे उपयोगी स्थान में जाने की अनुमति, चिकित्सा-शास्त्रज्ञ, आज भी देते पाये जाते हैं और ऐसा करने पर, उस अस्वस्थ व्यक्ति को, प्रायः सफलता भी मिलती है, तब क्यों न, ज्योतिषमतानुसार एक भूभाग से, दूसरे भूभाग में जाकर, व्यापारिक सफलता भी की जाय ? अवश्य की जानी चाहिए।

प्रत्येक व्यक्ति को, प्रत्येक क्षेत्र के अध्ययन के बाद, कुछ विचित्र अनुभव प्राप्त होते हैं। यदि एक समतल भूभाग में प्रयत्न करने पर भी, व्यापारिक असफलता मिल रही हो तो, उसे चाहिए कि, दूसरे समतल भूभाग में चला जावे। किस दिशा में जावे, कितनी दूर के भूभाग में जावे, किस नगर या गाँव में जावे ? इसका विचार करने के लिए, ज्योतिषशास्त्र में अनेक विधियाँ बतायी गयी हैं। जिनका अनुभव हमें, अपने जीवन में मिला है, उन्हीं का उल्लेख, यहाँ पर किया जा रहा है, शेष स्थल छोड़ दिये गये हैं।

दिशा-बोध

इसके जानने के लिए, आप दो विधियों पर विशेष ध्यान दीजिए। प्रथम तो यह है कि, अष्टकवर्ग-प्रकरण के द्वारा, समुदायाष्टकवर्ग की विधि से, जिस दिशा की रेखाएँ (दिशा योग संख्या से) अधिक हों, उसी दिशा में जाना चाहिए; अथवा सप्तकवर्ग बल द्वारा, सबसे अधिक बली ग्रह की राशि वाली दिशा में जाना चाहिए। यथा, सर्वाधिक बली ग्रह (सूर्य) कर्कस्थ हो तो, उत्तर या दक्षिण दिशा में जाना, उपयोगी रहेगा। क्योंकि, कर्कस्थ (उत्तर) सूर्य की दृष्टि, मकर (दक्षिण) पर भी होती है। प्रायः ३।७।६।१०।११।१२ वें भावों में, स्थित राशियों की दिशा में ही यात्राएँ होती हैं। यदि इसके साथ, प्रथम नियमान्तर्गत विचार के द्वारा 'एक-वाक्यता' मिल जाय, तो उस दिशा की यात्रा में अधिक सफलता मिलती है। दूसरा नियम, अनुभव-जन्य है, कि, आपने जब यह प्रश्न किया है कि, 'किस दिशा की यात्रा में व्यापारिक सफलता मिलेगी ?' तब उस समय, यह भी सम्भव है कि, आप बाल या कुमारावस्था को छोड़कर, युवावस्था में पदार्पण कर रहे होंगे, अथवा २४ से ३० वर्ष की आयु के मध्य में होंगे। प्रत्येक मनुष्य के जीवन में, इतनी अवस्था तक, किसी न किसी कारणवश, प्रायः सभी दिशाओं की यात्राएँ हो चुकी होती हैं। उन यात्राओं में, यह भी अनुभव होता है कि, अमुक दिशा की यात्रा में हमें, अधिक सफलता मिली है। बस, प्रायः उसी दिशा की यात्रा में, व्यक्ति को, व्यापार या स्वास्थ्य सम्बन्धी सफलता का मिलना सम्भव होता है। इन दो नियमों से, जब आप अनुभव करेंगे, तब एकवाक्यता वाली दिशा का निर्णय, उपयोगी होगा।

दिशा का भू-भाग

इसके जानने के लिए तो, आगे चलकर, सरलविधि लिख ही देंगे, किन्तु इसे समझने के लिए, अभी आपको थोड़ी कठिनता होगी। इसमें आवश्यक है, 'समतल' सीमा का ज्ञान। इसका ज्ञान करना, सिद्धान्त-विधि-गणित के आधार पर है। सिद्धान्त-ग्रन्थों में, कई प्रकार की विधि पायी जाती हैं; जो कि स्थूल दृष्टि से देखने पर, व्यक्ति, भ्रमित हो जाता है। भू-परिधि-मान की भिन्नता स्वल्पान्तर से है, जोकि उपेक्ष्य है।

ई० को आ गया है। जैसे उदाहरण एक में, जन्म-लग्न, अनुराधा के द्वितीय चरण में है, किन्तु आधान-काल में चन्द्र, अनुराधा के प्रथम-चरण में ही आ रहा है; इसी प्रकार, इस उदाहरण में भी, जन्म-लग्न पूभा. के प्रथम चरण की है परन्तु, आधान-काल का चन्द्र, शतभिषा के चतुर्थ चरण का आ रहा है; फिर भी दोनों उदाहरणों में जन्म-चन्द्र के समान, आधान की लग्न आ जाती है। जन्म का चन्द्र, अश्विनी के चतुर्थ चरण में होने से, आधान-लग्न भी, अश्विनी के चतुर्थ चरण में आ रही है। कानपुर प्रदेश में, जन्म-स्थान होने से, दिनमान २८।३६ इष्ट ३०।२२ सूर्य ५।२८।२२ लग्न ०।१२ है।

आधान-काल २

संवत् १९६७ शके १८३२ आश्विन शुक्ल १२ शनिवार, शतभिषा ३३।५० ता० १५।१०।१९१० ई० कुम्भ के चन्द्र और मेष लग्न में हुआ। मेष लग्न, शनि-राहु से युक्त, कन्याराशि में सू. मं. बु. शु. और तुला में गुरु-केतु तथा कुम्भ में चन्द्र है। शनि-राहु, शरीरकष्टदायक, पंचमेश-सप्तमेश-अष्टमेश का योग षष्ठभाव में होने से, स्त्री-पुत्र के लिए कष्टदायक है। जैसे आधान-काल में भाग्येश, सप्तम में है और दशमेश तथा चन्द्रलग्नेश की दृष्टि, दशम में है, उसी प्रकार जन्मकाल में भी, भाग्येश सप्तम में और दशमेश तथा चन्द्रलग्नेश की दृष्टि, दशमभाव पर है; ऐसा योग, भाग्यवर्धक ही माना जायगा। शनि की दृष्टि, गुरु पर, आधान और जन्मकाल में एक समान है। आधान में, लग्नेश-तृतीयेश-षष्ठेश का योग, षष्ठभाव में है; तथैव जन्मकाल में लग्नेश-तृतीयेश-षष्ठेश का योग, तृतीय भाव में है। इस प्रकार दोनों योग, एक समान हैं। जन्म काल में चन्द्र, अश्विनी में होने से, केतु दशा में जन्म हुआ; आधान का चन्द्र, शतभिषा में होने से, राहु दशा में आधान हुआ; दोनों एक सी दशाएँ हैं। सूर्य (पिता) के साथ, चन्द्र (माता) का षडष्टक योग है।

इन दो उदाहरणों से प्रतीत होता है कि "जन्मचन्द्रसमस्तनु." के अनुसार, जन्म-चन्द्र के राशि-अंश समान, आधान-लग्न आने के समय "जन्मलग्नसमश्चन्द्रः" के अनुसार, जन्म-लग्न के राशि-अंश समान, आधान-चन्द्र नहीं आ पाता। हाँ, आधान का चन्द्र, एक चरण पीछे आ जाता है, किंतु राशि-भेद नहीं होने पाता। हो सकता है कि, चन्द्र के गति-भेद से, नौ मास का अन्तर, एक चरण में होता हो। अतएव 'सम.' शब्द के अर्थ, केवल राशि की समानता मात्र है।

किसी आचार्य ने ऐसा भी बताया है कि, पूर्वोक्त प्रकार के गणित द्वारा, कभी जन्म-चन्द्र से सातवें भाव की राशि में, आधान-लग्न हो जाती है। अतएव डाक्टर और वैद्यों का भी मत ठीक ही है, जिन्होंने संयोग के अनन्तर १२ घण्टे में गर्भाधान हो सकना—कहा है। संयोग के अर्थ हैं नर-नारी का आधान-कर्म और गर्भाधान के अर्थ हैं शुक्र-रज मिलकर 'कलल' बनने का प्रारंभ होना। माता, पिता और भूमि के प्रतीक, चन्द्र और लग्न मात्र ही रहेंगे। लग्न में सूर्य और भूमि की सत्ता होने से, पिता और भूमि की प्रतीक, लग्न हो जाती है। संयोग-कर्म से, तीनों का संयोग होने से, चन्द्र और लग्न के द्वारा ही, आधान-काल का गणित होता है। किसी भूमि में, सूर्य से चन्द्र का संयोग होता है और किसी भूमि में चन्द्र द्वारा प्राणी की उत्पत्ति होती है। आधान-भूमि और जन्म-भूमि का अन्तर, चन्द्र द्वारा होता है। जिन व्यक्तियों के जन्म-लग्न या सातवें भाव में चन्द्र होता है, उनकी आधान-भूमि और जन्म भूमि एक ही होती है, और ऐसे व्यक्ति, सम्भव है कि, कोई यात्रा पसन्द न करते हों, किन्तु जिनका चन्द्र ३,७,९,१२ भाव में हो, वे यात्राएँ बहुत करते होंगे, शेष मध्यम प्रकार से यात्रा-प्रेमी होंगे। यदि ३,७,९,१२ के स्वामी ३,७,९,१२ में ही आ जायँ तो वे, अत्यन्त यात्रा-प्रेमी होंगे। ऐसे सभी विचार, आधान तथा जन्म (दोनों) से करना चाहिये।

दशम-नलिका = ज्योतिष का राज्य

एकादश-वर्तिका

लाभदायक स्थान का चुनाव

सभी व्यक्ति, एक ही स्थान (स्वदेश या जन्म-भूमि) में, न तो व्यापारिक सफलता पाते हैं और न स्वस्थता । इसका कोई कारण अवश्य है । जहाँ तक मेरी समझ है, भू-भाग गोल (सर्वत्र असमानता) होने से, प्रत्येक व्यक्ति, प्रत्येक स्थान में प्रगति-शील नहीं हो पाता और न उसकी प्रकृति के अनुकूल, जल-वायु ही मिल पाता है, जिससे स्वस्थ रह कर व्यापारिक सफलता कर सके । प्रतिकूल वातावरण में, व्यापार या स्वास्थ्य सम्बन्धी, अनुकूलता मिलना, प्रायः कठिन या असम्भव है । जब एक स्थान में, स्वास्थ्य ठीक न होने पर, दूसरे उपयोगी स्थान में जाने की अनुमति, चिकित्सा-शास्त्रज्ञ, आज भी देते पाये जाते हैं और ऐसा करने पर, उस अस्वस्थ व्यक्ति को, प्रायः सफलता भी मिलती है, तब क्यों न, ज्योतिषमतानुसार एक भूभाग से, दूसरे भूभाग में जाकर, व्यापारिक सफलता भी की जाय ? अवश्य की जानी चाहिए ।

प्रत्येक व्यक्ति को, प्रत्येक क्षेत्र के अध्ययन के बाद, कुछ विचित्र अनुभव प्राप्त होते हैं । यदि एक समतल भूभाग में प्रयत्न करने पर भी, व्यापारिक असफलता मिल रही हो तो, उसे चाहिए कि, दूसरे समतल भूभाग में चला जावे । किस दिशा में जावे, कितनी दूर के भूभाग में जावे, किस नगर या गाँव में जावे ? इसका विचार करने के लिए, ज्योतिषशास्त्र में अनेक विधियाँ बतायी गयी हैं । जिनका अनुभव हमें, अपने जीवन में मिला है, उन्हीं का उल्लेख, यहाँ पर किया जा रहा है, शेष स्थल छोड़ दिये गये हैं ।

दिशा-बोध

इसके जानने के लिए, आप दो विधियों पर विशेष ध्यान दीजिए । प्रथम तो यह है कि, अष्टकवर्ग-प्रकरण के द्वारा, समुदायाष्टकवर्ग की विधि से, जिस दिशा की रेखाएँ (दिशा योग संख्या से) अधिक हों, उसी दिशा में जाना चाहिए; अथवा सप्तकवर्ग बल द्वारा, सबसे अधिक बली ग्रह की राशि वाली दिशा में जाना चाहिए । यथा, सर्वाधिक बली ग्रह (सूर्य) कर्कस्थ हो तो, उत्तर या दक्षिण दिशा में जाना, उपयोगी रहेगा । क्योंकि, कर्कस्थ (उत्तर) सूर्य की दृष्टि, मकर (दक्षिण) पर भी होती है । प्रायः ३।७।९।१०।११।१२ वें भावों में, स्थित राशियों की दिशा में ही यात्राएं होती हैं । यदि इसके साथ, प्रथम नियमान्तर्गत विचार के द्वारा 'एक-वाक्यता' मिल जाय, तो उस दिशा की यात्रा में अधिक सफलता मिलती है । दूसरा नियम, अनुभव-जन्य है, कि, आपने जब यह प्रश्न किया है कि, 'किस दिशा की यात्रा में व्यापारिक सफलता मिलेगी ?' तब उस समय, यह भी सम्भव है कि, आप बाल या कुमारावस्था को छोड़कर, युवावस्था में पदार्पण कर रहे होंगे, अथवा २४ से ३० वर्ष की आयु के मध्य में होंगे । प्रत्येक मनुष्य के जीवन में, इतनी अवस्था तक, किसी न किसी कारणवश, प्रायः सभी दिशाओं की यात्राएँ हो चुकी होती हैं । उन यात्राओं में, यह भी अनुभव होता है कि, अमुक दिशा की यात्रा में हमें, अधिक सफलता मिली है । बस, प्रायः उसी दिशा की यात्रा में, व्यक्ति को, व्यापार या स्वास्थ्य सम्बन्धी सफलता का मिलना सम्भव होता है । इन दो नियमों से, जब आप अनुभव करेंगे, तब एकवाक्यता वाली दिशा का निर्णय, उपयोगी होगा ।

दिशा का भू-भाग

इसके जानने के लिए तो, आगे चलकर, सरलविधि लिख ही देंगे, किन्तु इसे समझने के लिए, अभी आपको थोड़ी कठिनता होगी । इसमें आवश्यक है, 'समतल' सीमा का ज्ञान । इसका ज्ञान करना, सिद्धान्त-विधि-गणित के आधार पर है । सिद्धान्त-ग्रन्थों में, कई प्रकार की विधि पायी जाती हैं; जो कि स्थूल दृष्टि से देखने पर, व्यक्ति, भ्रमित हो जाता है । भू-परिधि-मान की भिन्नता, स्वल्पान्तर से है, जोकि उपेक्ष्य है ।

भू-परिधि-मान

	सिद्धान्त	योजनों में	(मीलों में)
(१)	सूर्यसिद्धान्त या सिद्धान्ततत्त्वविवेक	२५२६।४६	(२५२६८)
(२)	सिद्धान्तशेखर	२५००।०	(२५०००)
(३)	सिद्धान्तशिरोमणि	२४८३।३०	(२४८३५)
(४)	केतकीग्रहगणित	२५००।०	(२५०००)
(५)	आधुनिक मत — बृहत् =	२४९२।३०	(२४९२५)
	लघु =	२४८३।०	(२४८३०)

योजन-मान

सिद्धान्तशेखर	आधुनिक
१६.८ इंच = १ हाथ	१२ इंच = १ फुट
४ हाथ = १ धनु	१८ इंच = १ हाथ
२००० धनु = १ क्रोश (कोश)	२ हाथ = १ गज
४ कोश = १ योजन	१७६० गज = १ मील
३२००० हाथ = १ योजन	६३३६० इंच = १ मील
३२००० × १६.८ = ६३३६०० इंच	३२००० × १८ = ५७६०००
६३३०६०÷ ६३३६० = १० मील = १ योजन	५७६०००÷६३३६०=९.०९·· मील=१ योजन

आधुनिक १७६० गज वाले मील के प्रमाण से, १० मील का, प्राचीन एक योजन का मान होता है।

'शून्याभ्रतत्त्वोन्मित (२५००) योजनानि विनिश्चितं भूपरिधेः प्रमाणम् ।'— केतकी।
'कक्ष्याम्बुग्रहधिष्ण्यबिम्बपरिधिव्यासादिसंचिन्तने ।'— सिद्धान्तशेखर।

अर्थात् केतकी और सिद्धान्तशेखर में २५०० योजन की भूपरिधि मानी गयी है और १६.८ इंच वाले हाथ की माप से, केवल कक्षा, जल, ग्रह, नक्षत्र, बिम्ब, परिधि और व्यास आदि का विचार करना चाहिए। व्यावहारिक कार्यों में तो, कुछ ऐसी (१८ इंच = १ हाथ) ही माप का प्रयोग करना पड़ेगा, जिसके अर्धांश-चतुर्थांश आदि सरलता से हो सकें।

गणित का एक सिद्धांत है कि, प्रत्येक गोल वस्तु का शतांश भाग, समतल (प्लैन) होता है। २५००० मील का शतांश भाग २५० मील हुआ, अतएव ढाई-ढाई सौ मील के, १०० समतल भाग, पृथ्वी के होते हैं। भूभाग के दो भाग करने पर पूर्वगोलार्ध और पश्चिमगोलार्ध होते हैं। इनके, भूमध्यरेखा से दो भाग करने पर पूर्वगोलार्ध में दो खण्ड तथा पश्चिमगोलार्ध में दो खण्ड (कुल चार खण्ड) हो जाते हैं। प्रत्येक खण्ड, ६२५० मील अथवा ९० अंश का हो जाता है। इस प्रकार, एक अंश में ६९ मील ३ फर्लांग १२२ गज ८८ इंच हो पाते हैं, जबकि १६.८ इंच का, एक हाथ मानते हैं। यदि १८ इंच का हाथ मानें तो—

२५०० × ९.०९ = २२७२५ मील की भूपरिधि
२२७२५ ÷४ = ५६८१ मील २ फर्लांग का एक खण्ड।
५६८१।२÷९० = ६३ मील १ फर्लांग का एक अंश।

स्केल-माप

यदि स्केल-माप, एक इंच में १६ खण्ड हों और २२ खण्ड में ६०० मील होते हों तो, भूमध्यरेखा से, उत्तर ६ अक्षांश से ३६ अक्षांश तक 'भारत' कितने मील का होगा ?

अक्षांश ३६-६ = ३० अंश । ७६ ÷ २२ = ३ लब्धि × ६०० = १८०० मील

३० अंश = ७६ खण्ड । शेष $\frac{१० \times ६००}{२२}$ = $\frac{२७२}{२०७२}$ मील

× × × ×

६६।३।१२२।८.८ × ३० (१६.८ इंच वाले हाथ से) = २०८३ मील २ फर्लांग १४६ गज २५.२ इंच

६३।१ × ३० (१८ इंच वाले हाथ से) = १८९३ मील ६ फर्लांग ।

इससे पता चलता है कि, आक्सफोर्ड एटलास के मैप-चित्र, १० मील वाले योजन मान कर तैयार किये जाते हैं, क्योंकि एटलास-माप से २०७२ मील, २०८३ मील वाले के लगभग है; (यह भिन्नता, मेरे ही स्केल-माप की हो सकती है) परन्तु ९ मील वाले योजन माप से, १८६४ मील ही, अपेक्षाकृत बड़े अन्तर से आ रहा है।

आधुनिक मत के लघुमान से, यदि आप माप करें तो, लगभग ठीक आजाता है । यथा,

२४८२० ÷ ३६० = ६८ मील ७ फर्लांग १७१ गज के लगभग में, १ अंश है; अतएव—

६८।७।१७१ × ३० अंश = २०६६।१।७० मील आदि 'भारत' है ।

परिधि-मान-साधन

भूत्रिज्या ३६७८.६ | भूव्यास = (त्रिज्या × २) = ७९५७.८ मील ।

'द्वाविंशतिघ्ने विहृतेऽथशैलैः ।'—लीलावती । (भूव्यास × २२) ÷ ७ = १७५०७१.६ ÷ ७ =२५०१०.२ मील = भूपरिधि । लीलावती के अनुसार, भूपरिधिसाधन, कुछ स्थूल हो जाता है । अतः १०.२ मील कम करके, सूक्ष्मपरिधिमान २५०० योजन (२५००० मील) का उपयोग किया गया है, जिसका शतांश भाग २५० मील 'समतल' होता है ।

वृत्त-परिज्ञान

अक्षांश से अक्षांश तक		वृत्त की राशि
५७।४६ से ६०।० तक		मेष
३५।३८ — ५७।४६		वृष
२३।२७ — ३५।३८		मिथुन
१४।५८ — २३।२७		कर्क
७।२६ — १४।५८	उत्तर	सिंह
०।० — ७।२६		कन्या
भूमध्यरेखा		
०।० — ७।२६		तुला
७।२६ — १४।५८	दक्षिण	वृश्चिक
१४।५८ — २३।२७		धनु
२३।२७ — ३५।३८		मकर
३५।३८ — ५७।४६		कुम्भ
५७।४६ — ६०।०		मीन

आप, अपनी राशि या अपनी राशि की मित्रराशि वाले वृत्त में, निवास करके व्यापार और स्वास्थ्य सम्बन्धी लाभ उठाइए ।

दिशा-बोध करने के उपरान्त, वृत्त-परिज्ञान से, वृत्त की अनुकूलता देखिए तथा इन दोनों के बाद, समतल भाग का परिवर्तन कीजिए। उदाहरण, एक व्यक्ति की अष्टकवर्ग के द्वारा, दक्षिण दिशा की रेखाएँ सर्वाधिक हुईं। सप्तवर्गबल के द्वारा, कर्कस्थ सूर्य बलिष्ठ हुआ; सूर्य की दृष्टि, मकर में होने से दक्षिण दिशा का बोध हुआ। दोनों मतों से, दक्षिणदिशारूपी एकवाक्यता भी हो गयी। अब इसे, वृत्त-परिवर्तन करना चाहिए। कानपुर २६।२८ अक्षांश पर होने से, मिथुन वृत्त पर है। जबलपुर अक्षांश २३।१० होने से, कर्क वृत्त पर है। कर्कस्थ सूर्य की बलिष्ठ राशि (कर्क के वृत्त) पर आ जाने से उन्नति होगी। कानपुर (२६।२८) से जबलपुर (२३।१०) दक्षिण है। पिछले पृष्ठों के अनुशीलन से दक्षिण दिशा, कर्क वृत्त एवं समतल भाग के परिवर्तन आदि की एकवाक्यता करके आप, दिशा और स्थान का निश्चय कर सकते हैं।

कानपुर का अक्षांश २६।२८
जबलपुर का अक्षांश <u>२३।१०</u>

कानपुर से जबलपुर की दूरी = ३।१८ × ६६।३।१२२।८८ = २२६ मी. १ फ. ७३ ग. १४·६ इंच

३६० ÷ १०० = ३ अंश ३६ कला का एक 'समतल' होता है। आकाश या भूभाग, ३६० अंश या २१६०० कला या १२९६००० विकला का माना जाता है। ३।३६ × ६६।३।१२२।८८ = २५० मील।

३।३६ × ६ = २१।३६ से २५।१२ अक्षांश के मध्य जबलपुर (७ वें समतल में)
३।३६ × ७ = २५।१२ से २८।४८ अक्षांश के मध्य कानपुर (८ वें समतल में)

सारांश यह है कि, ८ वें समतल पर कानपुर है और ७ वें समतल पर जबलपुर है। इस प्रकार, समतल परिवर्तन भी हो गया तथा दिशा का उदाहरण, पहिले लिख ही चुके हैं। इसी प्रकार आप, अपनी राशि के अनुकूल देश भी बदल सकते हैं। जिसकी जन्मपत्रिका में, बहुत दूर दिशा की यात्राओं के योग आते हों, कुछ शिक्षा-दीक्षा भी ऐसी ही हो, जिससे विदेशयात्रा सम्भव हो सके, तो उसे, देश बदलने की अनुकूलता को भी देखना चाहिए। ध्यान रहे कि, उत्तर-दक्षिण यात्रा के लिए अक्षांश निर्मित 'समतल' का परिवर्तन एवं पूर्व-पश्चिम यात्रा के लिए देशान्तर निर्मित 'समतल' का परिवर्तन करना चाहिए। शेष दिशाओं की यात्रा के लिए, दोनों 'समतल' का परिवर्तन करना आवश्यक होगा।

अक्षांश में समतल भाग

[भारतवर्ष]

पूर्वीगोलार्ध के उत्तर अक्षांशों में भारतवर्ष है, अतएव शून्य अक्षांश से ३६ अक्षांश तक ही मुख्य भारतवर्ष (व्यापारादि के लिए सम्भव) है। एक समतल भाग २५० मील का होता है।

[उत्तर-दक्षिण यात्रा के लिए]

अक्षांश से अक्षांश तक		समतल भाग
०।० — ३।३६		१ = (लगभग समुद्र)
३।३६ — ७।१२		२
७।१२ — १०।४८		३
१०।४८ — १४।२४		४
१४।२४ — १८।०		५
१८।० — २१।३६		६
२१।३६ — २५।१२	[जबलपुर २३।१०]	७
२५।१२ — २८।४८	[कानपुर २६।२८]	८
२८।४८ — ३२।२४		९
३२।२४ — ३६।०		१०

[पूर्व-पश्चिम यात्रा के लिए]
देशान्तर में समतल भाग

कुरुक्षेत्र, उज्जैन, लंका आदि क्षेत्ररेखा से, पूर्वापरखण्ड, निम्नप्रकार से होते हैं।

(पूर्व) देशान्तर से देशान्तर तक	समतल भाग
६१।२४ — ६५।०	१
६५।० — ६८।३६	२
६८।३६ — ७२।१२	३
७२।१२ — ७५।४८	४
७५।४८ — ७६।२४	५
७६।२४ — ८३।०	६
८३।० — ८६।३६	७
८६।३६ — ६०।१२	८
६०।१२ — ६३।४८	६
६३।४८ — ६७।२४	१०

नोट—

हमने 'क्षेत्र' शब्द का उपयोग, इसलिए किया है कि, कोई लंका की भूमि, देशान्तर ७५।५० पर ढूँढ़ने न बैठ जाय। क्षेत्र=राज्य। लंका के पास के समुद्री भाग में लंका का राज्य था, तथा आज भी है।

देशों की राशियाँ

मेष—अधिकांश ब्रिटेन, अधिकांश जर्मनी, कुछ पोलैण्ड, लेसर, पैलेस्टाइना।
वृष—कुछ जर्मनी, कुछ पोलैण्ड, आयलैंण्ड, ईरान (परसिया)।
मिथुन—उत्तरी अमेरिका, वेलजियम, इजिप्त (अफ्रीका)।
कर्क—न्यूयार्क, अफ्रीका, स्काटलैण्ड, हालैंण्ड, मैन्चेस्टर।
सिंह—इटली, फ्रान्स, रोम, शिकागो (चिकागो), बगदाद (ईराक)।
कन्या—कुछ ग्रीक, टर्की, स्विट्जलैंण्ड, फिनलैण्ड, मेसोपोटामिया।
तुला—आस्ट्रिया, चीन, जापान, तिब्बत, वर्मा, दक्षिणी अमेरिका।
वृश्चिक—नार्वे, ट्रान्सवाल, लिवरपूल।
धनु—स्पेन, अरब, आस्ट्रेलिया, हंगरी।
मकर—भारतवर्ष, अफगानिस्तान, सिन्ध, कुछ ग्रीक, आक्सफोर्ड।
कुम्भ—रसिया, स्वीडन, लिथूनिया, बलूचिस्तान।
मीन—पोर्तुगाल, पोर्तुगीज देश, गलेशिया, कुछ ब्रिटेन, ग्रीनलैण्ड।

देश राशि का नियम

राशियों के गुण-धर्म वाले, व्यक्तियों के देश को, उन्हीं राशियों में, निश्चित कर दिया गया है। इन राशियों के निश्चित करने में, वृत्त का आधार नहीं लिया गया है। कुछ लोग, पाकिस्तानको, उत्तराफाल्गुनी के तृतीय चरण (प-अक्षरारम्भ) में समझ कर, उसकी कन्या राशि निश्चित कर दिया है; किन्तु कन्या राशि के गुण-धर्म, पाकिस्तान में लेश-मात्र भी नहीं पाये जाते। कूर्म-चक्र के द्वारा, राशिवृत्त के द्वारा, देशों की राशियों के द्वारा—इन तीन प्रकार में से, किसी के भी द्वारा, पाकिस्तान की कन्या राशि नहीं हो पाती है। यदि पाकिस्तान के 'प' अक्षर के द्वारा, राशि निश्चित किया गया है तो, यह भी करना, सैद्धान्तिक नहीं। पाकिस्तान एक देश है, न कि ग्राम-नाम। ग्राम की राशि, ग्राम-नाम से मानना, युक्तियुक्त है, परन्तु देश-नाम के आधार पर, राशि निश्चित करने की, कोई विधि नहीं है। पूर्वोक्त 'देशों की राशियाँ' देश के नाम पर नहीं है। यथा, भारतवर्ष, हिन्दुस्थान, इण्डिया आदि नाम के किस पूर्वाक्षर से, मकर राशि हो रही है? बलूचिस्तान की कुम्भ राशि है और बलूचिस्तान की भाँति, कराँची भी कुम्भ में है। मिस्टर जिन्ना, कुम्भ राशि से प्रभावित थे। कूर्मचक्र के द्वारा अथवा नवग्रह-चक्र के पश्चिम में, शनि-स्थिति के कारण, पाकिस्तान की, कुम्भ राशि ही मानी जानी चाहिए।

ग्राम-चुनाव

देश-चुनाव तथा देश मे दिशा, राशिवृत्त, समतल आदि के निश्चय करने के उपरान्त, अब आप, उस गाव का चुनाव कीजिए, जिसमें रहकर व्यापारिक सफलता पायी जा सके। इसकी सरल से सरल, दो विधियाँ हैं। प्रथम तो यह देखिए कि, अपनी राशि से, यदि ग्राम की राशि—२।४।६।१०।११ वें हो तो उत्तम, १।४।७ वें हो तो मध्यम, ३।६।८।१२ वें हो तो हानिप्रद होती है। इसके विचार करने में आप, अपनी राशि, नित्य पुकारे जाने वाले नाम के द्वारा, निश्चित कीजिए, क्योंकि प्रत्येक गाँव की जन्मराशि जानना, असम्भव है, तथा एक की जन्मराशि और दूसरे की नित्य नामराशि द्वारा 'व्यत्यय-विचार' हो जाता है—

'जन्मभं जन्मधिष्ण्येन नामभं नामधिष्ण्यत:। व्यत्ययेन यदा योज्यं चोभयोर्मरणप्रद.॥'

देशे ग्रामे गृहे युद्धे सेवायां व्यवहारके। नामराशे. प्रधानत्वं जन्मराशिन्न चिन्तयेत्॥

अर्थात् देशकार्य, ग्रामकार्य, गृहकार्य, युद्धकार्य, सेवाकार्य और व्यवहार (व्यापार) कार्य में नाम-राशि के द्वारा विचार करना चाहिए, जन्म-राशि से नहीं।

उदाहरण

बालमुकुन्द (रोहिणी २ पाद=वृष राशि) से जबलपुर (उषा० ३ पाद=मकरराशि) नवम है, अतएव यह स्थान उत्तम है। मकर राशि के द्वारा, दक्षिण दिशा के मकर राशि वाले गाँव में शुभता रहेगी। इसकी जन्मपत्रिका (पृष्ठ २०६) मे, मकर राशि, व्यय भाव की है और व्यय भाव की राशि-दिशा में यात्रा होती है। सभी बातें आप, उदाहरण रूप में 'एकवाक्यता' देखते हुए, ध्यान दीजिए।

दूसरी विधि 'काकिणी' द्वारा बतायी गयी है। यह विधि, सरलता के साथ-साथ, कुछ स्थूल-सी है। इसके द्वारा फल, शीघ्र ही ज्ञात हो जाता है। यह वर्ग-प्रीति द्वारा निश्चित की गयी है। ग्राम-नाम और व्यक्ति-नाम के आधार पर, इसका विचार किया जाता है।

वर्ग-निरूपण

अवर्ग, कवर्ग, चवर्ग, टवर्ग, तवर्ग, पवर्ग, यवर्ग और शवर्ग मिलाकर, कुल आठ वर्ग होते हैं। इनमें सभी स्वर-व्यंजन आ जाते हैं। क्+ष=क्ष। त्+र=त्र। ज्+ञ=ज्ञ।

अवर्ग—अ आ इ ई उ ऊ ए ऐ ओ औ अः। क्ष=शवर्ग। त्र=यवर्ग। ज्ञ=चवर्ग।

कवर्ग—क ख ग घ ङ। चवर्ग—च छ ज झ ञ। टवर्ग—ट ठ ड ढ ण।

तवर्ग—त थ द ध न। पवर्ग—प फ ब भ म। यवर्ग—य र ल व। शवर्ग—श ष स ह।

बालमुकुन्द (पवर्ग) और जबलपुर (चवर्ग)

फल—शुभ हो तो धन-लाभ, अच्छी उन्नति, सर्वथा आनन्द।

अशुभ हो तो लाभ कम, कम उन्नति, सुख-दु.ख मिश्रित।

आगे 'काकिणी-चक्र' लिखा जा रहा है। उसके बाद, पृष्ठ ३६६ से, यह बताने का प्रयत्न करूँगा कि, 'आपकी राशि क्या है'? यहाँ (ग्राम-चुनाव मे) तो, जन्मराशि की आवश्यकता नहीं; फिर भी अन्य कार्यों में जन्म-राशि की आवश्यकता रहती है। किसी स्थानो पर, जब गोचर का फल, लग्नराशि द्वारा या सूर्यराशि द्वारा जानने का, लिखा मिलता है तब, साधारणजन, आश्चर्यान्वित हो जाते हैं; क्योंकि, उन्हें तो, केवल चन्द्र के द्वारा, राशि जानने की विधि-मात्र का ज्ञान है। एक बात पर, और भी, आपका ध्यान आकर्षित करना चाहता हूँ। वह बात यह है कि, भारत के ज्योतिष-ग्रन्थ (फलित), जिस संस्कृति पर, निर्माण किये गये थे, वर्तमान में, उस संस्कृति पर, भिन्नता आ गई है। आज ही नहीं, ई० ८ वीं शताब्दी से, प्रत्यक्षत संस्कृति का परिवर्तन प्रारम्भ हुआ। १७ वीं शताब्दी ई० मे फिर परिवर्तन हुआ। बीसवीं पराधं शताब्दी ई० से पुन. परिवर्तन हो रहा है। शिक्षा दीक्षा से व्यवहार बनता है और व्यवहार ही, संस्कृति हो जाती है। जब संस्कृत, फारसी, अंग्रेजी की क्रम से, (परिवर्तन समय मे) शिक्षा-दीक्षा दी गयी। तब ग्रह-फलों, मे गुणान्तर तो कम ही हुआ, किन्तु परिभाषान्तर, अत्यधिक हो गया। अतएव आधुनिक ग्रन्थों का भी अध्ययन तथा शैली जानना, परमावश्यक हो गया है।

काकिणी-चक्र

वर्ग	संख्या	१	२	३	४	५	६	७	८
अ	व्यक्ति नाम वर्ग	अ	क	च	ट	त	प	य	श
	ग्राम नाम वर्ग	अ	अ	अ	अ	अ	अ	अ	अ
	फल	शुभ	अशुभ	अशुभ	शुभ	शुभ	शुभ	अशुभ	शुभ
क	व्यक्तिनाम वर्ग	अ	क	च	ट	त	प	य	श
	ग्राम नाम वर्ग	क	क	क	क	क	क	क	क
	फल	शुभ	शुभ	अशुभ	शुभ	अशुभ	अशुभ	अशुभ	शुभ
च	व्यक्तिनाम वर्ग	अ	क	च	ट	त	प	य	श
	ग्राम नाम वर्ग	च	च	च	च	च	च	च	च
	फल	शुभ	शुभ	शुभ	अशुभ	अशुभ	अशुभ	शुभ	शुभ
ट	व्यक्तिनाम वर्ग	अ	क	च	ट	त	प	य	श
	ग्राम नाम वर्ग	ट	ट	ट	ट	ट	ट	ट	ट
	फल	अशुभ	अशुभ	शुभ	शुभ	अशुभ	अशुभ	शुभ	शुभ
त	व्यक्ति नाम वर्ग	अ	क	च	ट	त	प	य	श
	ग्राम नाम वर्ग	त	त	त	त	त	त	त	त
	फल	अशुभ	शुभ	शुभ	शुभ	शुभ	शुभ	अशुभ	अशुभ
प	व्यक्तिनाम वर्ग	अ	क	च	ट	त	प	य	श
	ग्राम नाम वर्ग	प	प	प	प	प	प	प	प
	फल	अशुभ	शुभ	शुभ	शुभ	अशुभ	शुभ	अशुभ	अशुभ
य	व्यक्तिनाम वर्ग	अ	क	च	ट	त	प	य	श
	ग्राम नाम वर्ग	य	य	य	य	य	य	य	य
	फल	शुभ	शुभ	अशुभ	अशुभ	शुभ	शुभ	शुभ	अशुभ
श	व्यक्ति नाम वर्ग	अ	क	च	ट	त	प	य	श
	ग्राम नाम वर्ग	श	श	श	श	श	श	श	श
	फल	अशुभ	अशुभ	अशुभ	अशुभ	शुभ	शुभ	शुभ	शुभ

अ, क, च, ट, त, प, य, और श वाले वर्ग को १ से ८ तक की संख्या में बोध कीजिए। व्यक्ति के वर्ग को दूनाकर, ग्राम का वर्ग जोड़कर ८ से भाग देने पर, 'व्यक्ति-शेष' होता है। ग्राम के वर्ग को दूनाकर, व्यक्ति का वर्ग जोड़कर, आठ से भाग देने पर, 'ग्राम-शेष' होता है। यदि ग्राम-शेष, (व्यक्ति शेष की अपेक्षा) अधिक होने पर, धन-लाभ का संकेत 'शुभ' तथा व्यक्ति-शेष (ग्राम-शेष की अपेक्षा) अधिक होने पर, धन-खर्च का संकेत 'अशुभ' लिखा गया है।

काकिणी-चक्र के देखने की विधि

व्यक्ति (आप) और ग्राम (स्थान)—दोनों के वर्ग जानने के उपरान्त, आप अपने वर्ग के नीचे, ग्राम के वर्ग वाले कोष्टक में देख कर, सरलता से फल जानिए। यथा—'च' वर्ग के सामने, 'प' के नीचे 'च' होने से अशुभ (फल) लिखा है।

प्रथम विधि (पृष्ठ ३६४ में वर्णित) के द्वारा, शुभ होने से, तथा द्वितीय विधि (काकिणी-चक्र) के द्वारा, अशुभ होने से, मध्यम फल होगा; अर्थात् धन-लाभ होकर, धन-खर्च भी होता जायगा।

— आपकी राशि क्या है ?—

जिस प्रकार भू-माप के लिए, मीलों के शिला-लेख (माइल-स्टोन) होते हैं, जिनके द्वारा, एक स्थान से, दूसरे स्थान की दूरी जानी जाती है, उसी प्रकार आकाश को ३६० अंश = १२६००० विकला में नापा गया है। जिस प्रकार २२० गज का फर्लांग तथा १७६० गज या ८ फर्लांग का एक मील मानते हैं; उसी प्रकार ८०० कला = ४८००० विकला का एक नक्षत्र मानते हैं। इस प्रकार १८०० कला = १०८००० विकला = सवा दो नक्षत्र = ३० अंश की, एक राशि मानते हैं एव ३६० अंश मे, बारह राशियाँ होती हैं।

राशि, वर्ग, संकुल, गण, समूह, ढेर आदि शब्द, एक ही अर्थ-सूचक हैं। आप किस राशि या वर्ग आदि के हैं अर्थात् आप मे, किस राशि या वर्ग आदि के, विशेष गुण-धर्म हैं; इसका निश्चय, परम्परागत, तीन प्रकार से होता है।

भारतवर्ष आदि (एशिया) मे, चन्द्र के द्वारा एवं योरोप मे सूर्य के द्वारा, राशि निश्चित करते हैं और लग्न के द्वारा, राशि निश्चय करने का नियम, सर्वत्र समान है।

भारत के समान, मुसलमानी प्रदेशों मे, चन्द्र के द्वारा तथा योरोप मे, सूर्य के द्वारा, राशि निश्चित की जाती है। योरोप के विशेष विद्वान् लोग, कभी लग्न के द्वारा, कभी सूर्य के द्वारा, राशि निश्चय करते हैं। जिसका नियम है कि, लग्न-स्पष्ट से सप्तम-स्पष्ट तक सूर्य हो तो, लग्न के द्वारा एवं सप्तम-स्पष्ट से लग्न-स्पष्ट तक सूर्य हो तो, सूर्य के द्वारा, राशि निश्चय करते हैं। परन्तु, साधारण तौर से सूर्य के द्वारा ही, राशि निश्चय करते हैं; चाहे किसी भाव मे सूर्य हो।

इस प्रकार आपकी, राशि निर्णय करने मे, सम्पूर्ण पृथ्वी पर, तीन विधियों का प्रसार है—सूर्य, चन्द्र और लग्न के द्वारा। इन तीनों में से, किसी को, अपनी राशि का अधिष्ठाता मानना पड़ता है। आत्मिक, मानसिक और शारीरिक गुण धर्म की विशेषता पर, राशि निश्चय करने की विधि, आज तक के विद्वानो ने बताया है। इनमे मानसिक (चन्द्र) क्षेत्र के द्वारा, भारतवर्ष आदि (एशिया) मे एवं आत्मिक (सूर्य) क्षेत्र के द्वारा, पाश्चात्य (योरोपीय) विद्वान्, राशि के जानने की विधि बताते हैं और अब तक, इसका रूप, परम्परागत हो गया है। लग्न द्वारा, राशि-निर्णय करने मे, कोई विशेष मतभेद नहीं है। ठीक भी है कि, सूर्य और चन्द्र ही, दो ग्रह ऐसे हैं जो, जीवन-शक्ति और बौद्धिक शक्ति, देने वाले हैं। सूर्य, पिता का और चन्द्र, माता का, सूर्य ब्रह्म का और चन्द्र, माया का प्रतिनिधित्व करता है। 'लग्नमात्मा मनश्चन्द्रः।' 'सूर्य आत्मा जगतस्थुषश्च।' 'लग्नं पूर्णं चिन्तयेद्देहभावम्।' —आदि वाक्यों के द्वारा, यही निष्कर्ष निकलता है कि, आत्मा (सूर्य) और मन (चन्द्रमा) एवं देह (लग्न) के स्वामी का ही विशेष आधिपत्य, इस शरीर मे, देखना पड़ता है। लग्न शब्द तो, सूर्य और भूमि द्वारा सम्पादित है। सूर्यक्रान्तिवृत्त का लम्ब-सूत्र, जिस क्षितिज-भाग का स्पर्श करता है उसे 'स्पर्श' न कह कर 'लग्न' (सलग्न = लगा हुआ), कहने की परिपाटी है और स्पर्श किये हुए, उस वर्ग का नाम, मेषादि बारह राशियों के नाम द्वारा, प्रकट किया जाता है।

यहाँ तक तो, आपकी समझ मे आ गया होगा कि, सूर्य, चन्द्र, लग्न की राशि द्वारा, अपनी राशि मानना चाहिए। परन्तु कब, कैसे, किससे का प्रश्न उठता है। लग्न मे मतभेद न होने के कारण, सूर्य-चन्द्र मात्र का विवेचन, आगे लिखा जा रहा है। इन्हीं दोनों पर, निम्न-लिखित निर्णय प्राप्त हो रहे हैं।

१. किसी भी परम्परा के प्रसार का कोई मुख्य कारण होता है। इतिहास में, एक लम्बे चक्कर के बाद, पता चलता है कि, वर्तमान मे ज्योतिष का प्राचीन ग्रन्थ 'सूर्य-सिद्धान्त' है और इसमे निशार्ध समय की गणना, प्रारम्भ की गयी है। यह ग्रन्थ, पूर्वीगोलार्ध के ७५।४० देशान्तर के लगभग, स्थान के आधार पर, रचा गया है। उस समय—

प्रात. (यमकोटि)	मध्याह्न (सिद्धपुर)	सायम् (रोमक)	निशार्ध (लंका)
पूर्वी देशान्तर १६५।४०	पश्चिमी देशान्तर १०४।१०	पश्चिमी देशांतर १४।१०	पूर्वी देशांतर ७५।४०

वर्तमान भारत में रात्रि थी, जो कि पूर्वी देशान्तर ६८ से ६६ तक वसा हुआ है। रात्रि के कारण, चन्द्र-प्रधान हो गया, किन्तु दिन वाले देशों में सूर्य-प्रधान हो गया। प्राचीन यमकोटि, सिद्धपुर, रोमक और लंका के वताये गये, देशान्तरों पर, आज समुद्र लहरा रहा है। ज्योतिष के आदि ग्रन्थ की रचना का समय, ऐतिहासिक स्मृति के लिए, चन्द्र द्वारा राशि वताने की परम्परा का प्रसार किया।

[क] इसमें, संक्षेप से ज्योतिप-विकास का इतिहास लिखा गया है। सिन्धुनद से वर्मा तक तथा हिमालय से भूमध्यरेखा तक के मध्य में, जो वर्तमान *'भारतवर्ष'* है; इसमें की सारी संस्कृति, *'स्वायम्भुव'* मनु से आज तक, अत्यन्त विश्वस्त प्रमाणों के द्वारा, ईसापूर्व ३१०२ वर्ष से ही प्रतीत हो रही है। स्वायम्भुव मनु से, जिस प्रकार, हम भारतवर्ष में 'मानव-काल' ऋग्वेद से पुराण तक के वर्णित आधारों पर, वता रहे हैं, उसी प्रकार, स्वायम्भुव मनु से पूर्व (कितना पूर्व ? हम नहीं कह सकते), *'देवकाल'* था। 'देवकाल' के समकाल में *'दैत्यकाल'* भी था; कहना यों चाहिए कि, दैत्यकाल पहिले और देवकाल वाद में था। हाँ, तो ईसापूर्व ३१०२ वर्ष से, इस भारतवर्ष में संस्कृति का प्रारम्भ हुआ; यही समय वेद, वेदांग—आदि का भी समय माना गया। *'आर्यज्योतिपकाल'* या वेदांगज्योतिपकाल भी, लगभग यही, ईसापूर्व ३१०२ वर्ष ही समझिए। प्राचीनता वताने के लिए, लम्बी-लम्बी असम्भाव्य संख्यावाले, युग-मान रख देने मात्र से तो, प्राचीनता न मानी जायगी। यथा, इसी *'जातक-दीपक'* ग्रन्थ में, लग्न-सारिणी के कोष्ठक (चार्ट), इस विधि से वनाये गये हैं कि, आप मुझ *'लेखक'* को, ई० वीसवीं शताव्दी के, लाखों वर्ष पूर्व में का, वता सकते हैं किन्तु तथ्यतः यह ग्रन्थ, ई० १६५०-१६५७ के मध्यकाल में लिखा और मुद्रित किया गया।

[ख] आज भारत से, चीन, ग्रीक, इजिप्त, इंगलैण्ड आदि देश, जो अलग समझे जा रहे हैं वे, सव एक दिन, *'आदित्य-सभ्यता'* के सूत्र में वँधे हुए थे। इस प्रकार ईसापूर्व २६३७ वर्ष से, *'चीन में'* प्रभवादि षष्टि-संवत्सरात्मक काल-पद्धति का प्रयोग, आज तक होता चला जा रहा है। इसके वाद ईसा पूर्व १२०० वर्ष में, भारत के *'गर्गाचार्य'* ने गर्गसंहिता की रचना किया। ई० पूर्व १५०० वर्ष से, *'भारत-योरोप का सम्वन्ध'* व्यापारिक आवागमन के रूप में प्रतीत हो रहा है। ई० पूर्व ६४०-५४६ वर्ष में *'थेल्स'* (ग्रीकवासी) ने, इजिप्त में जाकर, ज्योतिष का अध्ययन किया। इसने ई० पूर्व ५८५ वर्ष वाले *'सूर्यग्रहण'* का गणित किया था। ई० पूर्व ५७६-४७० वर्ष के मध्यकाल का *'पीथ्यागोरास'* (पीठगुरु) ग्रीकवासी ने, इजिप्त, नूतन *'खाल्डिया'* (वेवीलोन Babylon) और भारत के गंगातटवर्ती प्रवास में, ज्योतिप-ज्ञान पाया। ई० पूर्व ४६५-३८५ वर्ष के *'मेटन'* (ग्रीकवासी) ने, १६ वर्षीय 'सौर-चान्द्र' चक्र का शोध किया था, जो कि आज, भारत के केतकी-ग्रन्थ में वर्तमान है। ई० पूर्व ३२५ वर्ष में *'सिकन्दर'* (ग्रीकनरेश) ने भारत पर अभियान किया था। ई० पूर्व ३२१-२६७ वर्ष में *'चन्द्रगुप्त मौर्य'* का राज्यकाल, भारत में था। सिकन्दर के उत्तराधिकारी *'सिल्यूकस'* से, भारत का सम्पर्क, ई० पूर्व ३२३-३०० वर्ष में रहा था। ई० पूर्व १६०-१२० वर्ष के *'हिपार्कस'* (ग्रीकवासी) को, पाश्चात्य-ज्योतिपी, 'ज्योतिप का पिता' कहते हैं। *'टालेमी'* (ई० १००-१७० ग्रीकवासी) ने, *'सिंटाक्सिस'* नामक ज्योतिष-ग्रन्थ वनाया था।

[ग] चाक्षुप मन्वन्तर के 'उर' नामक नरेश-काल से, भारत का विदेशों से सम्वन्ध हुआ। ये आदित्य-सभ्यता वाले 'देव' कहाते थे और फारस (यमन) तथा अरव के मध्यवर्ती देश के निवासी, जो कि आदित्य-सभ्यता वाले (सुमेरियन), *'खाल्डियन'* (न कि खाल्डियन) कहाते थे। आद, आदम, रव (रवि), रा आदि, आदित्य के अर्थ-सूचक शब्द हैं। कालान्तर में जव इनके वंशजों ने, दैत्य (असुर) सभ्यता वाले देश (असीरिया) की राजधानी, *'वेवीलोन'* (Babylon, ईराक़) में निवास किया, तव असीरिया नाम, लुप्त-प्राय होकर, उस देश का नाम, *'खाल्डिया'* कहा जाने लगा था। पूर्वोक्त सिल्यूकस-चन्द्रगुप्त मौर्य के सम्वन्ध काल में, इन खाल्डियनों (नूतन असीरियनों) की साहित्य-

सामग्रियों का भी, आदान-प्रदान हुआ। इसी समय (सूर्य-सिद्धान्त ग्रन्थ के आधार पर) एक 'मय नामक' असीरियन (असुर) के द्वारा, एक *'पाण्डुलिपि'* (*ज्योतिष-सम्बन्धी-कृति*), कुसुमपुर=पटना (मौर्य-राजधानी) में आयी थी। किन्तु ई० पूर्व १२०० से ईसा के बाद ५०० वर्ष (१७०० वर्ष) तक के काल में, यहाँ (भारत) कोई ग्रन्थ नहीं बना।

[घ] वेदांग-ज्योतिष और गर्गसंहिता में ग्रह-गणित था नहीं; किन्तु, पूर्वोक्त 'पाण्डुलिपि' के द्वारा, *'आर्यभट्ट'* (ई० ४७६-५०० पटना-बिहार) ने, गुप्त-साम्राज्य-काल में *'सूर्य-सिद्धान्त'* ग्रन्थ की रचना किया। *'वराहमिहिर'* (ई० ४२१-४८५ उज्जैन), *'ब्रह्मगुप्त'* (ई० ५६८ भिनमाल), *'भास्कराचार्य'* (ई० १११४ बीड, मुगल-काल), *'गणेशदैवज्ञ'* (ई० १५२० कोंकणदेशी नाँदगाँव), *'केरो लक्ष्मण छत्रे'* (ई० १८२४-१८८३ कोंकणदेशी नाँदगाँव), *'पूर्णया सिद्धान्ती'* (ई० १८६८ पिठापुर-राजमहेन्द्री), *'चन्द्रशेखरसिंह'* सामन्त (ई० १८६६ कटक के राजवंशज एवं महामहोपाध्याय), *'वेंकटेश बापूशास्त्री केतकर'* (ई० १८६८) आदि ने, भारत में ज्योतिष का विकाश किया। *'शंकर बालकृष्ण दीक्षित'* (ई० १८६६) ने, *'भारतीय ज्योतिषशास्त्र का इतिहास'* नामक ग्रन्थ प्रकाशित किया।

[ङ] मुस्लिम काल में, बगदाद के खलीफा *'अल्मामून'* (ई० ८१८) ने, *'टालेमी'* (ग्रीकवासी ई० १००-१७०) के ग्रन्थानुसार, अरबी भाषा में *'अल्माजेस्त'* नामक ग्रन्थ बनाया। इसके बाद *थेबित* (ई० ८३६ बगदाद), *'अल्बतेनी'* (ई२ ८५०-६२६), *'अबूअलबेफा'* (ई० ६७५ बगदाद), *'अबूमुहम्मद'* (ई० ६६२ खोकन्द), *'अल्हासन'* (ई० ११ वीं शताब्दी), *'शियोनियद'* (ई० १२ वीं शताब्दी), *'नासिरुद्दीन'* (ई० १३ वीं शताब्दी), उलूगबेग (ई० १४४६ समरकन्द, तैमूरलंग का पौत्र) आदि ने, ज्योतिष का विकाश किया। मुस्लिम संस्कृति का प्रारम्भ, पैगम्बर मुहम्मद काल (ई० ५७१-६३२) से हुआ।

[च] चीन में, *'लीओहोंग'* (ई० २०६), *'यींग'* (ई० ७२०), *'कानिउकिङ्'* (ई० १२८०) आदि ने, ज्योतिष का विकाश किया। ई० १६६४ में, पेकिन-नगरस्थ, *'राज्य-ज्योतिष-मण्डल'* ने, ई० १६२४ से २०२१ ई० तक (३६७ वर्ष) का *'पचांग'* बनाकर रख दिया है।

[छ] योरोप में, *'टालेमी'* (ई० १००-१५० ग्रीकवासी) द्वारा कृत, ग्रह-गणित में अन्तर देखकर, स्पेन-नरेश *'अल्फोंसो'* ने टोलेडो नगरवासी *'मेलदून'* (ई० १२४०) के द्वारा *'अल्फोंसिने-टेबल्स्'* ग्रन्थ की रचना कराया। इसके बाद *'कोपर्निकस'* (ई० १४७२-१५४३) *मर्केटर'* (ई० १५५० फ्रान्स), *'टैकोब्राहे'* (ई० १५४६-१६०१ डेन्मार्क), *'नेपियर'* (ई० १६१४ स्काटलैण्ड), *'केप्लर'* (ई० १५७२-१६२५), *'ग्यालिलियो'* (ई० १५६४-१६४२ इटली), *'रामर'* (ई० १६४६-१७१६ डेन्मार्क), *'हाइजेन्स'* (ई० १६२६-१६६५ हालैण्ड), *'न्यूटन'* (ई० १६४२-१७२७ इंगलैण्ड), *'फ्लमस्टेड'* (ई० १६४६-१७१६ इंगलैण्ड), *'हाले'* (ई० १६५६-१७४२ इंगलैण्ड), *'ब्राडले'* (ई० १६६२-१७६२ इंगलैण्ड), *'लीवनिटश्र'* (ई० १६४६-१७१६ रसिया), *'क्लेरो'* (ई० १७१३-१७६५ फ्रान्स), *'डालाम्बेर'* (ई० १७१७-१७८३) *'आयलर'* (ई० १७०७-१७८३), *'लायांज'* (ई० १७३६-१८१३); *'लाप्लास'* (ई० १७४६-१८२७), *'काशी'* (ई० १७८६-१८५७), *'लीवेरियर'* (ई० १८११-१८७७), *'पांकारे'* (ई० १८५४-१६११), *'विलियम हर्शल'* (ई० १७३८-१८२२), *'डॉ० गाल'* (ई० १८४६ नेपच्यून-द्रष्टा) आदि ने, ज्योतिष का विकाश किया।

[ज] इस नं० २ के 'क' से 'छ' तक, लिखने के बाद पता चलता है कि, *'सूर्य-सिद्धान्त'* (ज्योतिष का आदि ग्रन्थ) के आधार पर, *'निशार्ध'* गणना के कारण, *'चन्द्र-प्रधान'* राशि मानने की परम्परा का विकास हुआ और योरोप में *'मध्याह्न-कालान'* गणना-क्रम के कारण, *'सूर्य-प्रधान'* राशि मानने की परम्परा का विकाश हुआ है। *'जातक-दीपक'* के लेख का ऐतिहासिक स्थल- *'जबलपुर'* है ऐसी स्मृति, इस 'ज' लेख के द्वारा, चिर-संचित रहेगी।

(५) पिपरिया (उलूक तीर्थ से ५ मील, नर्मदा के दक्षिण तट पर, मालवा-गुजरात सीमा पर) यहाँ पिप्पलाद ऋषि का आश्रम था। (६) पिपरियाघाट (मध्यप्रदेश के नरसिंहपुर जिले में, गरारू से ४ मील, नर्मदा के दक्षिण तट पर)। (७) पिप्पलेश्वर (मर्दाना से ६ मील, नर्मदा के उत्तर तट पर, मण्डलेश्वर से १२ मील, मध्यप्रदेश के इन्दौर जिले में)। यह अश्वत्थ शब्द का देश, भ्रमात्मक है।

२२. पांचाल —यह देश हिमालय से चम्बल नदी तक था। झेलम–चिनाब–व्यास–रावी–सतलज—इन पाँच नदियों के मध्यवर्ती, पांचाल थे, कालान्तर में यमुना–गंगा–गोमती–चौका–सरयू नामक पाँच नदियों के मध्य, पांचालों की बस्तियाँ हो गयीं। पांचाल राजधानी, अहिच्छत्र (अहिस्थल = रामनगर, उत्तरप्रदेश के बाँसबरेली जिले में, आँवला स्टेशन से ६ मील) में थी। कौरव–पाण्डव के अध्ययनकाल में, द्रुपद को पराजित कर, अहिच्छत्र में द्रोणाचार्य ने राजधानी बनायी। तब द्रुपद की राजधानी, काम्पिल्य = कम्पिला (उत्तरप्रदेशी फर्रुखाबाद जिले के, कन्नौज के पास) में हुई, इसी कम्पिला में द्रौपदी–स्वयम्वर हुआ था। इसीसे द्रौपदी, पांचाली भी कहाती थी। उत्तर पांचाल = रुहेलखण्ड। दक्षिण पांचाल = कन्नौज (गंगा) से चम्बल तक। श्रीरामकाल में अहिच्छत्रा नगरी = गोहाटी (आसाम) को कहते थे (वाल्मीकीय)।

२३. कंक —(एक प्रकार का पक्षी) लोहपृष्ठस्तु कंकः स्यात् (अमरकोश)। विराटनगर में युधिष्ठिर, कंक देशीय बनकर रहे थे। (१) लोहारू (राजपूताना में) (२) कंकाली टीला अथवा लोहवन (उत्तरप्रदेशी मथुरा के समीप)। लोहवन में, भगवान् कृष्ण ने लोहासुर को मारा था। (३) लोहार्गल = लोहागरजी (नवलगढ़ से २० मील, राजस्थान) यहाँ युधिष्ठिर द्वारा स्थापित, शिवमन्दिर तथा भीमसेन द्वारा स्थापित भीमेश्वर हैं। (४) लोहार्या (ब्राह्मण-गाँव से ६ मील, नर्मदा के दक्षिण तट पर; इन्दौर प्रान्त) यहाँ पाण्डव, वनवास-काल में आये थे।

२४. कुरु —(कुरुवाह्य = कुरुक्षेत्र) पंजाब के अम्बाला और कर्नाल जिले का भूभाग (सरस्वती और दृषद्वती [घग्गर] के मध्य का प्रदेश)। कुरु राजधानी या तीर्थ, क्षेत्र = थानेसर (स्थाणु तीर्थ = स्थाण्वीश्वर = स्थानेश्वर = थानेसर, पंजाब में)। परीक्षित (प्रथम) के पिता, कुरु (वायुपुराण) ने, यहाँ कृषिक्षेत्र (एग्रीकल्चर फार्म) बनाया था। कुरु से पूर्व, इस प्रदेश का नाम ब्रह्मावर्त था। ब्रह्मावर्त के बाद, ब्रह्मर्षि देश नाम पड़ा। क्रम से—ब्रह्मावर्त, ब्रह्मर्षि देश, कुरुक्षेत्र, धर्मक्षेत्र, सप्तसिन्धु आदि नाम हुए।

२५. कालकोटि —(कालकूट) (१) महाकाल वन में 'महाकाल' का मन्दिर (उज्जैन में) (२) उत्तरप्रदेशी बाँदा जिले में 'कालिंजर' ग्राम (यहाँ 'काल' का स्थान था)। श्रीशिव ने, काल को जीर्ण किया था।

२६. साकेत —(स्वर्ग) अयोध्या (उत्तरप्रदेश के फैजाबाद जिले में)

२७. कुकुर —पूर्वी राजपूताना का खण्ड (आनर्त का पड़ोसी)। मतान्तर से महीकण्ठ।

२८. पारियात्र —पुष्कर (अजमेर) से चम्बल तक के मध्यवर्ती पर्वत (अर्वली पर्वत)।

२९. औदुम्बर —(१) डलहौजी–बाकलोह (२) व्यास–रावी के मध्य (व्यासतट में कुलूत देश तथा रावी–तट में औदुम्बर देश था (३) उमरकण्टक (मारवाड़ में)।

३०. कापिष्ठल —(कपिस्थले भवः) कपिस्थल तीर्थ = कैथल (पंजाब के कर्नाल जिले में)।

३१. गजाह्वय —हस्तिनापुर (प्राचीन नाम नागपुर) नाग = हाथी = हस्ती (चन्द्रवंशी सुहोत्र का पुत्र एवं अजमीढ़ का पिता)। उत्तर प्रदेश के मेरठ से २२ मील पूर्वोत्तर, बुढ़गंगा के तट पर (वर्तमान गंगा से ५ मील, पश्चिम) इसी बुढ़गंगा में बाढ़ आकर, हस्तिनापुर नष्ट हो गया तब, पाण्डव-वंशी निचक्षु ने, वत्स (कौशाम्बी) में राजधानी बनाया।

बुद्ध के समकाल में थी। (२) वत्सग्राम=विछग्राम=भीटा (इलाहाबाद के इरादतगंज के पास। इसे वीथाव्यपट्टन भी कहा गया है। (३) वत्स-वन (उत्तरप्रदेशी मथुरा जिले के ब्रजमण्डल में) यहाँ ब्रह्मा ने बछड़े चुराये थे।

९. घोष —हरियाना प्रदेश (पंजाब में)। घोष आभीरपल्ली स्यात (अमरकोश)। आभीर=अहीर=ग्वाल। पल्ली=प्रदेश=मथुरा, हिसार, माण्टगोमरी, गुजरात (जिला), ग्वालियर आदि में ग्वालों का निवास रहा था। किन्तु मुख्य स्थान, हरियाना प्रदेश ही माना जायगा।

१०. यामुन —पूर्वी यमुना के तटवर्ती प्रदेश। इलाहाबाद (उत्तरप्रदेश) में एक तीर्थ स्थान 'यामुन' है।

११. *सारस्वत* —सरस्वती (कुरुक्षेत्र से भटनेर-हनुमानगढ़ तक) नदी के तटवर्ती प्रदेश। कुरुक्षेत्र=थानेसर (पंजाब में), भटनेर (बीकानेर में)।

१२. मत्स्य —जयपुर, अलवर, भरतपुर (राजपूताना में)। राजधानी मछेरी और विराटनगर (जयपुर से ४१ मील, उत्तर) में थी।

१३. *माध्यमिक* —नागरी (नगरिया), मेवाड़ के चित्तौड़ से ११ मील। इसे मध्यमिका और मध्यमक भी कहा है।

१४. *माथुरक* —ब्रज-मण्डल (८४ कोशी परिक्रमा) के स्थल। राजधानी मधुपुरी=शूरसेना=मथुरा (उत्तरप्रदेश में)। यहाँ मधुदैत्य के पुत्र, लवणासुर को, शत्रुघ्न ने पराजित किया था।

१५. *उपज्योतिष* —उत्तरकाशी (उत्तरप्रदेश के, टेहरी से ४२ मील)। इसका क्षेत्र .१० मील=१ योजन का है। यह वारणावत शिखर के ऊपर है।

१६. *धर्मारण्य* —(१) कण्वाश्रम [क] राजपूताना के कोटा से ४ मील दक्षिण पूर्व। [ख] मन्दावर या मदावर (उत्तर प्रदेश के बिजनौर जिले में, मालिनी=चुका नदी के तट पर)। (२) कुरुक्षेत्र। (३) गंगा-यमुना का मध्य भाग। (४) नैमिषारण्य। (५) बलिया-गाजीपुर-जौनपुर के जिलों का भूभाग। इनमें नं० ३ अधिक ठीक है। दुष्यन्त-शकुन्तला का मिलन, मदावर में हुआ था। (६) उत्तराखण्ड (यमुनोत्तरी, गंगोत्तरी, केदारनाथ, बदरीनाथ, नरनारायणाश्रम आदि)।

१७. *सूरसेना* —(देखिए नं० १४ माथुरक, इसे पुनरुक्ति किया है)। शत्रुघ्न ने विजय कर, मथुरा का नाम, शूरसेना रखा था (वाल्मीकीय)। कंस के पिता उग्रसेन के समकाल में, शूरसेन भी थे। शूरसेन, वसुदेव के पिता तथा कृष्ण के पितामह थे। किन्तु शत्रुघ्न (रामभ्राता) के पुत्र का भी नाम शूरसेन (श्रुतसेन) था। इसी के नाम पर मथुरा राज्य का नाम, शूरसेना था।

१८. *गौरग्रीव* —अद्रिगोत्रगिरिग्रावाचलशैलशिलोच्चयाः (अमरकोश)। जयपुर के आस-पास के श्वेतपर्वत। यहाँ शुद्ध-पाठ 'गौरग्राव' से, शेखावाटी के पर्वत हैं।

१९. *उद्देहिक* —बुलन्दशहर (उत्तरप्रदेश में) इसे उद्रेहिक भी कहा गया है। किन्तु उद्देहिक ही शब्द ठीक है।

२०. *पाण्डुगुड* —पाण्डुकेश्वर (उत्तरप्रदेश के गढ़वाल जिले में) यहीं पाण्डवों का जन्म हुआ था। पाण्डुकेश्वर को योगबदरी (ध्यान-बदरी) भी कहते हैं।

२१. *अश्वत्थ* —(१) असीरगढ़—(मध्यप्रदेशी निमाड़ जिले में), यहाँ अश्वत्थामा [महाभारत-वर्णित] की राजधानी थी। (२) अश्वत्थामा का स्थान—कानपुर जिले के बरराजपुर (शिवराजपुर) रेलवे स्टेशन से २ मील उत्तर में, तारापतिनिवादा गाँव से कुछ पश्चिम 'खेरेश्वर' महादेव का स्थान है; ये अश्वत्थामा द्वारा स्थापित किये गये थे, पास ही अश्वत्थामा का भी स्थान है। (३) अश्वतीर्थ—(गंगा-काली नदी के संगम पर, उत्तरप्रदेशी कन्नौज से ५ मील) इस तीर्थ में ऋचीक से सत्यवती (गाधि-पुत्री) के विवाह-प्रसंग का सम्बन्ध है। सत्यवती के पुत्र, जमदग्नि थे। अश्वत्थ के अर्थ पीपल (वृक्ष) है। अतएव (४) पिपरावाँ गाँव, उत्तरप्रदेशी गोरखपुर से ४६ मील नौगढ़ स्टेशन है; नौगढ़ से १३ मील उत्तर में पिपरावाँ गाँव है।

१५. अश्ववदन —(अश्वमुख) रोहिताश्वगढ़ (बिहार के शाहाबाद जिले में, रोहतास)। इस किले को हरिचन्द्र के पुत्र रोहिताश्व ने बनवाया था। ई. १५५३ में महाराज मानसिंह ने, दो लाख रुपया खर्च करके, इसका सुधार करवाया था।

१६. दन्तुरक —(१) समतट (देखिये नं. १३)। (२) दन्तुरा नदी=वैतरणी नदी (बंगाल में) (३) मरगुई आर्च (वर्मा में) (४) जगन्नाथ पुरी (उड़ीसा में)। यहां बुद्ध के दाँत रखने का स्थान और कलिंग की राजधानी रही थी। बुद्ध के दाँत रहने के कारण 'दन्तपुर' नाम था, ई. ३१८ में जगदीश-मूर्ति प्रगट हुई थी; तब जगन्नाथ (पुरी) नाम पड़ा।

१७. प्रागज्योतिष—(प्राग्ज्योतिषपुर) गोहाटी (आसाम में)। यहाँ कामरूप देश की 'कामाख्या' देवी हैं। ५१ पीठों में से, एक पीठ महाक्षेत्र है। यहाँ सती की योनि गिरी थी। आनन्दाख्य, प्राचीन मन्दिर ई० १५६४ में कालापहाड़ ने, तोड़ डाला था। यह नवीन मन्दिर, कुचविहार-नरेश ने बनवाया था। तन्त्र-साधना का प्रमुख स्थान है।

१८. लौहित्य —(लोहित्य=लोहित) लौहित्यगिरि से निकलने वाली लोहित नदी अथवा ब्रह्मपुत्र की सहायक नदी (पूर्वी आसाम में)।

१६. क्षीरोद —ब्रह्मपुत्रनद। "उत्तरे हिमवत्पार्श्वे क्षीरोदो नाम सागरः। आरब्धं मन्थनं तत्र देवदानवपूर्वकैः॥" इस क्षीरोद की प्रसिद्धि 'क्षीरसागर' है; किन्तु यह श्री विष्णु का शयन-स्थान नहीं था। इसे क्षीरोदसागर कहना चाहिए। श्री विष्णु-लक्ष्मी के निवास का क्षीरसागर 'अदन' (अरब) में था।

२०. समुद्र —(शिवसागर)। यह समुद्र शब्द, क्षीरोद के साथ भी है। यदि अलग माना जाय तो, शिव-सागर टाउन, पूर्वोत्तरी आसाम का रेलवे स्टेशन है।

२१. पुरुषाद —(महाभारत में एकचक्रा नगरी) मानव-भक्षी वकासुर 'आरा' (बिहार) में, भीम द्वारा मारा गया। आरा में बुद्ध के समय में भी 'मानव-भक्षी' रहते थे। 'अद् भक्षणे' धातु से युक्त=पुरुष+अद शब्द है। इसे पुरुष-भक्षक भी लिखा गया है।

२२. उदयगिरि —(१) भुवनेश्वर (उड़ीसा) से ७ मील पूर्व एक पर्वत। इसे कुमारीगिरि भी कहा गया है। (२) मध्यप्रदेश के भेलसा से ५ मील पश्चिम। चूँकि उदयगिरि शब्द, पूर्व दिशा में कहा गया है; इसलिए कुमारीगिरि ठीक है।

२३. भद्र —(१) शोणभद्र नद। (२) भद्रेश्वर=अनामदेश (इण्डोचायना) के 'मी-सोन' गाँव में। (३) भद्रेश्वर (बंगाल में) (४) भद्रकच्छ = शाहाबाद-पटना (बिहार में)। (५) भद्राक्ष (उड़ीसा में)। तथ्यतः 'भद्र' शब्द से शोणभद्र तटवर्ती (भद्रकक्ष) प्रदेश समझिए।

२४. गौडक —पूर्व गौड देश=बंगाल के ढाका, पावना, वोगरा, फरीदपुर, राजशाही के भूभाग। राजधानी लखनौती (लक्ष्मणावती), मालदा जिले में। [पुरुषपरीक्षा तथा अद्भुतसागर में वर्णित], गौड देश, मारवाड को न समझिए। "वंगदेशं समारभ्य भुवनेशान्तगं शिवे। गौडदेशः समाख्यातः सर्वविद्याविशारदः॥" स्कन्दपुराण। लक्ष्मणापुरी=लखनौती। अद्भुतसागर=(वल्लालसेनदेव विरचित मेदिनीय ज्योतिष ग्रन्थ)। पुरुषपरीक्षा (मैथिल महाकवि विद्यापति ठक्कुर रचित संस्कृत ग्रन्थ)। उत्तर गौड, दक्षिण गौड, पश्चिमगौड देश भी बताये गये हैं किन्तु यहां केवल पूर्वदेशीय 'गौड' लिखना ही आवश्यक है।

२५. पौण्ड्र —बंगाल के बाँकुरा-मिदनापुर का भूभाग। किसी समय गौड़ देश भी सम्मिलित था। पुण्ड्रवर्धन (पूर्णवर्धन) के समय, राजधानी 'पाण्डुआ' (बंगाल के मालदा से ६ मील उत्तर) में थी। कोटिवर्ष या पुण्ड्रवर्धनभुक्ति (बौद्धकालीन)=बंगाल के राजशाही-दीनाजपुर के भूभाग में।

२६. उत्कल —उड़ीसा प्रदेश।

३२. *मध्यप्रदेश* —पूर्वोक्त सभी स्थानों के सहित मध्यप्रदेश की सीमा—
"हिमवद्विन्ध्ययोर्मध्ये यत्प्राग्विनशनादपि । प्रत्यगेव प्रयागाच्च मध्यदेशः प्रकीर्तितः ॥"
अर्थात् हिमालय से विन्ध्याचल (नर्मदा) तक (उत्तर से दक्षिण) और प्रयाग से कुरुक्षेत्र तक (पूर्व से पश्चिम) मध्यदेश कहा गया है।

पूर्व देश [२]

(म. पूफा. पूषा. = शुक्र)

१. *अञ्जन* —(१) नीलाञ्जनानदी (बिहार के गया के पास) । (२) लोहतक झील से निकलने वाली 'सुरमा नदी' (पूर्वी आसाम में) । (३) आञ्जन ग्राम (राँची से लोहारडागा । लोहारडागा से पक्की सड़क गुमला तक, इसके मध्य, (गुमला से ८ मील पहिले ही) टोटो है। टोटो से ३ मील आञ्जन-ग्राम, छोटा नागपुर जिले में)।

२. *वृषभध्वज* —(१) वाराणसी के विश्वनाथ (सन् १६२६ ई. से बनारस का नाम, पुन. वाराणसी हो गया) । (२) विहार के राजगिर (राजगृह जरासन्ध राजधानी) में एक वृषभ पहाड़ी।

३. *पद्ममाल्यगिरि*-(मालकेतु) पटकाई पर्वत, आसाम में । इसी के पास, भारत-राज्य के पेट्रोल कारखाने हैं।

४. *व्याघ्रमुख* —(व्याघ्रसर) वक्सर (बिहार के शाहाबाद जिले में) यहाँ पाण्डव (भीम) द्वारा, मारे गये बकासुर का स्थान था (महाभारत में, एकचक्रा नगरी [आरा-बिहार] की कथा)

५. *सुह्म* —(पाठ-भ्रष्ट) इसे सुह्म देश समझिए । सुह्म=(१) राजधानी चटगाव (बंगाल) । (२) दामोदरनदी-हल्दीनदी के मध्य, राजधानी ताम्रलिप्ति (ई. पाचवीं शताब्दी में) । ताम्रलिप्ति = तमलुक (बंगाल के मिदनापुर जिले में) । यहाँ मोरध्वज (मयूरध्वज) की भी राजधानी थी । इन्हीं की सन्तान, वर्तमान बर्मा देश का राजवंश है।

६. *कर्वट* —(१) ताम्रलिप्ति राज्य (देखिए नं. ५) महाभारत में 'कर्वटाधिपति ताम्रलिप्त' का वर्णन है। (२) काशी (वाराणसी) में, एक 'काशी कर्वट' नामक स्थान है।

७. *चान्द्रपुर* —चाँदपुर (हाजीगंज से दक्षिण, बंगाल में)

८. *शूर्पकर्ण* —(सर्वतोभद्र में गजकर्ण) (१) करिग्राम (बंगाल के रंगपुर जिले में) । (२) कुण्डाग्राम= वैशाली = बनिया-बसाढ़ (बिहार के मुजफ्फरपुर जिले में) के पास—'हस्तीग्राम'। (३) गजकर्ण नामक वेदी का स्थान 'गया तीर्थ' (बिहार) में है।

९. *खस* —खासी पर्वत (आसाम में)।

१०. *मगध* —(१) दक्षिणी बिहार प्रान्त (राजधानी राजगृह और गया) (२) नवीन मगध = सम्पूर्ण बिहार प्रान्त (राजधानी राजगृह = जरासन्धराज्य । पटना में शिशुनागवंशी अजातशत्रु का राज्यभिषेक हुआ तथा इसके पौत्र (उदयाश्व) ने, पटना को बसाया (विस्तृत किया) तब, राजगृह की राजधानी छोड़ दी गयी थी।

११. *शिबिरगिरि*-(पाठभ्रष्ट)। शबरगिरि (शुद्ध) (१) शबरगिरि = सन्थाल परगना । (२) भुवनेश्वर के पास 'शबरदीपक' का स्थान था । (३) शैवलगिरि = रामगिरि = रामटेक (बम्बई के नागपुर जिले में)

१२. *मिथिला* —तीरभुक्ति (बौद्धकालीन) तिर्हुत = दरभंगा-भागलपुर के भूभाग, राजधानी जनकपुर (नैपाल में)। प्राचीन जनकराज्य = चम्पारन से दरभंगा तक, मुजफ्फरपुर से जनकपुर तक।

१३. *समतट* —२४ परगना, खुलना, बेकरगंज (बंगाल में)। इसे सुन्दर-वन तथा कजरी-वन भी कहा गया है। यहीं से गंगा की लगभग १५ धाराएँ, समुद्र में मिलती हैं। प्रथमधारा 'हुगली' नदी के नाम से, अन्त में गंगासागर तीर (सागर टापू) है। इसी धारा को भगीरथ ने निकाला था।

१४. *उड्र* —उड़ीसा प्रदेश । इसे औड्र या ओड्र देश भी कहा गया है।

९. आन्ध्र —(१) मद्रास के गोदावरी और कृष्णा जिले में (२) तेलंगाना = निमगिरि और तेल नदी के मध्य, अन्ध्रपुर में राजधानी थी, बाद में काजीपेट से ६ मील, वारंगल (एकशिला नगरी) में राजधानी हुई थी।

१०. चेदिक —(१) राजधानी चन्देली (ग्वालियर) में, शिशुपाल-राज्यकाल। (२) त्रिपुरी = तेवर, (मध्यप्रदेश के जबलपुर से १० मील पश्चिम)। बुन्देलखण्ड और मध्यप्रदेश में राज्य था। यह राज्य, दाहल (डहल) और महाकोशल नामक दो भागों में था। दोनों राजधानियों का नाम 'चेदिनगरी' रहा था। बाद में दो राजधानियाँ और हुईं (१) नगरीवा (नर्मदातट पर) (२) मणिपुर (सिरपुर) में।

११. ऊर्ध्वकण्ठ —महेन्द्र पर्वत (उड़ीसा के गंजाम जिले में)।

१२. वृष —(१) भोगनन्दीश्वर (मैसूर के नन्दी स्थान में)। किन्तु यह स्थान आग्नेय दिशा में नहीं हो सकता। (२) विहार के राजगिर में वृषभ पहाड़ी। यह स्थान, यथाकथंचित् होना, सम्भव है।

१३. नारिकेर —(१) उड़ीसा में नारियल-उत्पादक-क्षेत्र। (२) नेकोवार टापू।

१४. चर्मद्वीप —अण्डमान टापू।

१५. विन्ध्यान्तवासी—बुन्देलखण्ड-बघेलखण्ड, विन्ध्य-भारत, (विन्ध्याचल के देश)।

१६. त्रिपुरी —(नं. १० देखिए चेदिक)

१७. श्मश्रुधर —(१) जटाधर महादेव (मध्यप्रदेश के पचमढ़ी में)। (२) शुंगवंशी पुष्यमित्र काल (ई. पूर्व १८४-१४८) में यूनानी बस्ती, ग्वालियर की सिन्धु नदी के तट में। श्मश्रु = डाढ़ी के बाल।

१८ हेमकूट —आग्नेय दिशा में वर्फ या सुवर्ण का कोई पर्वत नहीं है : केवल उड़ीसा में, खण्डगिरि है।

१९. व्यालग्रीव —(शुद्धपाठ, व्यालग्राव)। शेषाचलम (मद्रास)।

२०. महाग्रीव —(शुद्ध पाठ महाग्राव)। महाग्राव = महेन्द्र पर्वत (महेन्द्रगिरि, उड़ीसा में)

२१. किष्किन्धा —उड़ीसा के विजयनगर के पास, निम्वपुर से एक मील पूर्व, एक स्थान (कहते हैं कि, यहाँ वालि का शव-दाह हुआ था)।

२२. अमरकण्टक —बघेलखण्ड में। रेवा = रीवाँ। इस देश की नदी का नाम भी रेवा है। इक्ष्वाकुवंशी पुरुकुत्स की पत्नी नर्मदा (नागकन्या) थी। इसी के नाम पर, रेवा का नाम, नर्मदा हो गया।

२३. कण्टकस्थल—कटक (वर्तमान उड़ीसा की राजधानी)।

२४. निषादराष्ट्र—विन्ध्यपर्वत और सतपुड़ा पर्वत के पूर्वीभाग।

२५. पुरिक —पुरी (जगन्नाथ), उड़ीसा में।

२६. दशार्ण —(देखिए मध्यदेश का नं. ६ संख्यात) यह देश, सीमा-स्थित समझिए।

२७. नग्नपर्ण —नागा-पर्वत (जबलपुर-मण्डला फोर्ट के मध्य-मार्ग में)।

२८. शवरपर्ण —(१) शैवलगिरि = रामगिरि = रामटेक (बम्बई के नागपुर जिले में)। इसी शैवलगिरि (शवरपर्ण) में, मठारवंशी शवरादित्य, ई. ८ वीं शताब्दी में, कलिंग-नरेश था। (२) प्राचीन शवरपर्ण = भुवनेश्वर (उड़ीसा में)।

दक्षिण देश [४]

(मृ. चि. ध. = मंगल)

१. लंका —वर्तमान सीलोन, राजधानी कोलिम्बो (दक्षिण भारत में)। पुराणमत से १००० मील लम्बी और ३०० मील चौड़ी भूमि (लंका की) थी। ज्योतिषमत से, शून्य अक्षांश के ७५।५० पूर्वी देशान्तर पर भी, लंका की भूमि या राज्य (क्षेत्र), उस समय में भी होना चाहिए, जब (ई. ४७६ से ४९९ के मध्य) सूर्यसिद्धान्त की रचना हुई थी। यहाँ पर विभीषण, महाभारत युद्धकाल में भी थे। भारत के समान, सुमात्राद्वीप में भी एक स्थान 'लंका' नामक

२७. काशी —वाराणसी में, काशीराज्य की राजधानी थी। काशी=एक राज्य (यह नगर नहीं)। किन्तु वर्तमान में काशी शब्द, वाराणसी में सीमित है। विभिन्न समय में काशीराज्य की सीमाएं, परिवर्तित होती रही हैं। स्थूलता से वाराणसी जिले का भूभाग समझिए। धन्वन्तरि (आयुर्वेदज्ञ) के वंशज, दिवोदास (प्रथम) ने, वर्तमान वाराणसी को बसाया था। दिवोदास, वैष्णवधर्मी था। इन पर शैवधर्मी हैहय वंशज भद्रसेन ने अभियान किया था। काशी के विषय में, अनेकों पृष्ठ लिखे जायें, तो भी उल्लेख, पूर्ण न होगा।

२८. मेकल —अमरकण्टक पर्वत (बघेलखण्ड में)।

२९. अम्बष्ठ —(१) ससरामा (बिहार के शाहाबाद जिले में)। (२) अम्बष्ठ=एक जाति [ब्राह्मण-पुत्र और वैश्य-कन्या से उत्पन्न सन्तति] (अमरकोश) (३) अग्निकेश्वर=ताम्रलिप्ति= तमलुक (बंगाल के मिदनापुर जिले में)।

३०. एकपद —देखिए नं० २१ पुरुपाद। आरा को एकचक्रा, एकपाद, एकचरण समझिए। (२) एकपद= पंगुदेश=कटापाद (उडीसा के कोरापुट जिले में, इन्द्रावती नदी के दक्षिण)।

३१. ताम्रलिप्ति —देखिए नं० ५ (सूक्ष्म=सुह्म)

३२. कोशलक —महाकोशल=महानदी के तट पर, उड़ीसा के सोनपुर में राजधानी, नागराज 'मण्टराज' का उड़ीसा के सम्बलपुर के भूभाग में राज्य था।

३३. वर्धमान —वर्दवान (बंगाल का एक जिला)।

३४. पूर्वदेश —पूर्वोक्त सभी स्थानों के सहित पूर्वदेश की सीमा—
"प्रयाग से अराकान तक (पश्चिम से पूर्व) और बिहार (दक्षिणी), उत्तरी बंगाल तथा उड़ीसा का कुछ भाग मिलाकर होता है।" कुछ स्थान, सीमा-गत होते हैं; जिनका वर्णन, पुनः पुनः आजाता है।

आग्नेय देश [२]

(गो. ह. श्र. = चन्द्र)

१. कोशल —महाकोशल=दक्षिणी कोशल (मध्यप्रदेश के बिलासपुर, रायपुर और उड़ीसा के सम्बलपुर। (श्रीराम के मातामह सुदास की राजधानी रायपुर जिले के श्रीपुर में थी)।

२. कलिंग —(१) मद्रास के उत्तरी सरकार जिले में (उडीसा के दक्षिण और द्रविड़ के उत्तर, पूर्वी समुद्र के तट तक) प्राचीन राजधानी दन्तपुर (जगन्नाथपुरी) में थी। कालिञ्जर (बौद्धकालीन)= कलिंगनगर=भुवनेश्वर (उड़ीसा के पुरी जिले में)।

३. बंग —दक्षिणी बंगाल, महानदी का भूभाग (यह देश, आग्नेय की उत्तरी सीमा का देश है)।

४ उपवंग —(१) गंगा डेल्टा के पूर्व का मध्यभाग (बंगाल में) (२) मैमनसिंह (३) सुन्दरवन (४) बन्दरवन (चटगाँव से पूर्व)। ये देश, आग्नेय की उत्तरी सीमा के देश हैं। (५) बंगाला=आसाम।

५. जठरांग —(अंगदेश का मध्यभाग) गंगा से हिमालय तक। अंगदेश (बिहार के भागलपुर और मुंगेर के भूभाग में था, राजधानी चम्पा=भागलपुर से ४ मील)। यह भी उत्तरी सीमा का देश है।

६. शौलिक —(शूलिक) स्थान-भ्रष्ट पाठ है। केवल काशी को समझकर सीमा देश रखिए।

७. विदर्भ —बरार, खानदेश, हैदराबाद, मध्यप्रदेश के भूभाग। राजधानी (१) कौंडिन्यपुर= कुण्डिनपुर=कुण्डलपुर (वर्धा-अमरावती के मध्य, आर्वी से ६ मील) (२) बीदर (विदर्भपुर), हैदराबाद में। इक्ष्वाकुवंशी अज की पत्नी (इन्दुमती), निषधराज नल की पत्नी (दमयन्ती) और श्री कृष्ण की पत्नी (रुक्मिणी), इसी विदर्भ के नरेशों की कन्याएँ थीं।

८. वत्स —(पाठ-भ्रष्ट) इसे वत्सगुल्म समझिए। वत्सगुल्म=वासिम (बरार के अकोला जिले में)। वत्स-ग्राम (देखिए नं० ८ मध्यदेश)।

१७. आकर —(खदानों का स्थान, जो कि इस दिशा में अनेक हैं)। आकर (एक राज्य)=पूर्वी मालवा, राजधानी विदिशा (भेलसा, मध्यप्रदेश में)

१८. वेणा —वैनगंगा (Wainganga) नदी (मध्यप्रदेश में)।

१९. आवन्तक —मालवा प्रान्त (मध्यप्रदेश में)।

२०. दशपुर —मन्दसोर (मध्यप्रदेश में) यह सीमावर्ती देश है।

२१. गोनर्द —सुरभिपट्टन=कोयम्बटूर (कुवत्तूर) मैसूर में। यहाँ सुरभि की राजधानी थी।

२२. केरलक —(केरल) तुंगभद्रा से कावेरी तक (मद्रास में), मलावार (त्रावणकोर-कनारा)।

२३. कर्णाट —कर्णाटक (कारोमण्डल, दक्षिण-भारत)।

२४. महाटवी —(देखिए नं० १० कंकट)।

२५. विचित्रकूट —(१) चित्रकूट (उत्तरप्रदेशीय बाँदा जिले में)। (२) सह्याचल में। (३) त्रिकूट (लंका में) (४) भुवनेश्वर (उड़ीसा में)।

२६. नासिक्य —(प्राचीन नाम सुगन्धा, यहाँ सती की नाक गिरी थी, ५२ पीठों में से एक पीठ-स्थान) नासिक (बम्बई प्रान्त में) । यह पश्चिम-भारत की 'काशी' है। शूर्पणखा के नाक-कान, यहीं काटे गये थे। श्रीराम ने, वनवास के १० वर्ष, यहीं पंचवटी में, कुटी बनाकर विताये थे।

२७. कोल्लगिरि —(१) कोडगु (मद्रास में)। (२) कोलाचल (मद्रास के त्रिवेन्द्रम जिले में)।

२८. चोल —कारोमण्डल तट, राजधानी कुम्भकोणम।

२९. चेर —मलावार (त्रावणकोर-कोचीन)।

३०. क्रौंचद्वीप —(शुद्धपाठ क्रौंचगिरि)। मल्लिकार्जुन से २४ मील 'कुमार-स्वामी' का स्थान—(मद्रास के कृष्णा जिले में) अथवा क्रौंचदुर्ग=हंसदुर्ग (मैसूर के चित्तलदुर्ग जिले में)।

३१. जटाधर —(१) (देखिए आग्नेय देश में नं० १७ श्मश्रुधर)। (२) जटातीर्थ (रामेश्वर में एक स्थान)।

३२. कावेरी —मद्रास-मैसूर के मध्य एक नदी (इसे अर्धगंगा नदी भी कहा गया है)।

३३. ऋष्यमूक —(मद्रास के होसपेट-विलारी की सीमा वाले, अनागन्दी नामक गाँव से डेढ़ मीलपर एक पर्वत)।

३४. वैडूर्य —(क) वैडूर्यमणि पर्वत= (१) सतपुड़ा पर्वत (पश्चिमीघाट का उत्तरी भाग) (२) मान्धाता (दक्षिण-मालवा) टापू (नर्मदा के मध्य) का भूभाग। (ख) वैडूर्यपट्टन=बीदर (दक्षिणी हैदराबाद) यहाँ अरुण ऋषि का आश्रम था।

३५. शंख —शंखतीर्थ=(१) रामेश्वरम में (२) पक्षीतीर्थ में (मद्रास के चिंगलेपुट स्टेशन से १० मील, समुद्रतट पर)। शंखोद्धार तीर्थ=शंखनारायण=शंखसरोवर [श्रीकृष्ण महल से डेढ़ मील] (वेटद्वारका में) श्रीकृष्णजी ने, अपने गुरु-पुत्र को, यहीं (शंखासुर) से छुड़ाया था। वेटद्वारका=कच्छ की खाड़ी में एक टापू। यह सीमावर्ती स्थान है।

३६. मुक्ता —(मुक्तागिरि) मेंड़गिरि (मध्यप्रदेश के एलिचपुर से १२ मील पूर्वोत्तर)। यहाँ केशर-वृष्टि रूपी, एक चमत्कार होता है।

३७. अत्रि —(इनकी पत्नी का नाम अनुसूया था) (१) चन्द्र के पिता, दैत्य- याजक, अत्रि (वेद कालीन) हैं, इनका स्थान, स्वर्गलोक=तपोभूमि=अत्रिपत्तन=आर्य-वीर्यान=अजरबेजान (ईरान) में था। (२) श्रीरामकालीन अत्रि का स्थान=चित्रकूट (उत्तरप्रदेशी बाँदा जिले में) और गोलगढ़ (काठियावाड़) में दत्तात्रेय-जन्म-भूमि। पुराणों में भ्रम=संकलन-कर्ताओं की अव्यवस्था। ब्रह्मपुत्र भृगु, भृगुपुत्र अत्रि, अत्रिपुत्र चन्द्र, चन्द्रपुत्र बुध को, वैवस्वत मनु की कन्या (इला) विवाही थी। इसी वैवस्वत-वंश में, वैवस्वत से ६३ वीं पीढ़ी में (पुराण मत से ६३, ५२, (३५ वाल्मीकीय), वायुपुराण में ३५ पीढ़ी पर) श्रीराम हुए। इस ३५ पीढ़ी में, ५४१ वर्ष राज्य-काल रहा है। वैवस्वत से, सूर्यवंश की

है। लंका = दूर देश। इसके नाम राक्षसपुरी, कुबेरपुरी, लंका, सीलोन (सिंहल द्वीप का का अपभ्रंश) हैं। सुवर्ण = सुन्दर (न कि सुवर्णधातु)। यहाँ ताँबे की खदानें हैं अतएव ताम्र का उपयोग अधिक, जो कि सुवर्ण-धातु के समान चमक देता है। यहाँ रामायण-वर्णित तथा अशोक-कालीन चिन्ह, अभी भी मिलते हैं। ताम्रपर्णी नदी भी है।

२. *कालाजिन* —(कृष्णाजिन) (१) कालहस्ती (मद्रास के नीलोर जिले में)। 'आर्द्रनागाजिनेच्छाम्।' (मेघदूत) अजिनम् = व्याघ्र-चर्म = कृष्णमृगचर्म। (२) कालिञ्जर = भुवनेश्वर (उड़ीसा)।

३. *सौरिकीर्ण* —(अन्धकवन) औरंगाबाद-औंध के मध्य (हैदराबाद, दक्षिण-भारत) मारीच-वध-स्थल (बम्बई के नासिक से दक्षिण, साईखेड़ा गाँव में)।

४ *तालिकट* —तालीकोट (बम्बई के बीजापुर जिले में)।

५. *गिरिनगर* —(पर्वतीय नगर अनेक थे और हैं)। गिरिनगर = गिरनार पर्वत (काठियावाड़ में)।

६. *मलय-दर्दुर* —(ये दो पर्वत, पास-पास हैं)। त्रावणकोर (मद्रास) की पहाड़ियाँ, पश्चिमीघाट का दक्षिणी भाग। 'शैलौ मलय-दर्दुरौ।' (रघुवंश, रघुदिग्विजय)

७. *महेन्द्र* —महेन्द्र पर्वत (उड़ीसा में)।

८. *मालिन्द्य* —(१) मलकूट = चोलराज्य (मद्रासी तन्जोर के चारों ओर)। (२) कर्दमान पर्वत (दक्षिण भारत)। (३) मलय पर्वत (त्रावणकोर [मद्रास] में)। मल = परिमल = चन्दन।

९. *मरुकच्छ* —(पाठ-भ्रष्ट)। भरुकच्छ अथवा भूकच्छ (शुद्ध)। भरुकच्छ = भड़ौच (गुजरात में)। भूकच्छ = (१) कच्छ (काठियावाड़ के उत्तर)। (२) समुद्र के किनारे की भूमि, जो कि लंका के उत्तर, कन्याकुमारी, रामेश्वर आदि दक्षिण-भारत में है।

१० *कंकट* —दण्डकारण्य, महाटवी, महाकान्तार, (दक्षिण भारत के वनप्रान्त)। दण्डकारण्य = इक्ष्वाकु-पुत्र (दण्ड) का राज्य, राजधानी मधुमत्त, विन्ध्याचल से जामखण्डी तक। महाटवी = पश्चिमघाट से भुवनेश्वर (उड़ीसा) तक अथवा हैदराबाद का भूभाग। महाकान्तार = मही नदी से केन नदी तक, जैसो-राज्य की राजधानी, नचना-गंज (बुन्देलखण्ड) में। यहाँ नागराजा व्याघ्रराज (व्याघ्रदेव) था।

११. *टंकण* —(इसके दो अर्थ हो सकते हैं) (१) 'टकः पाषाणदारणः' (अमरकोश)। टंक = टाँकी (छेनी) के द्वारा बनाये गये स्थान = अजन्ता-एलोरा आदि (औरंगाबाद-हैदराबाद में)। (२) 'टंकणस्तुत्थम्' (निघण्टु)। टंकण = तूतिया = नीलाथोथा। तूतिया, ताम्र-खान के पास ही निकलना सम्भव है, ताँबे का मैल या जंग ही तूतिया होता है; अतएव मद्रास के तूतीकोरन और ताम्रपर्णी नदी का भूभाग एवं लंका की ताम्रपर्णी नदी का भूभाग। ताम्रपर्णी नदी = (१) लंका में। (२) मद्रास के तिन्नेवेली (त्रिनावली) जिले की, ताँबर-वाली नदी।

१२. *वनवासी* —बनौसी (बम्बई के उत्तरी किनारा जिले में) श्रीराम का वनवास स्थल। धारवाड़ी कदम्बों की राजधानी।

१३. *शिबिक* —(सीमावर्ती देश) मेवाड़ राज्य, राजा उशीनर और शिवि की राजधानी, नागरी (नगरिया), चित्तौड़ से ११ मील पर। कालान्तर (महाराणा प्रताप-काल) में चित्तौड़ राजधानी। वर्तमान में उदयपुर (मेवाड़ की) राजधानी है। सन् १९४७ ई० के बाद, भारत की 'राज्य-पद्धति' समाप्त कर दी गयी।

१४. *फणिकार* —शेषाचलम और वेंकटगिरि (मद्रास में)।

१५. *कोंकण* —बम्बई प्रान्त का दक्षिणी भूभाग।

१६. *आभीर* —ताप्ती से देवगढ (झाँसी) तक। यह राज्य, कालान्तर में कई स्थानों में हुआ है। किन्तु, इस दिशा में, यही भूभाग बताना, आवश्यक है।

काञ्ची…।' आदि पाठ है; वह काञ्ची = काचिन = कोचिन = कोचीन (अपभ्रंश शब्द) हो गया है। संस्कृत वाले शब्द, अंग्रेजी में लिखते ही, कितने बिगड़ जाते हैं; यथा—बंगाल का 'चटगाँव' नगर है। किन्तु इसे अंग्रेजी में चित्तागंग (Chittagong) लिखते हैं। मथुरा सरीखे पवित्र नाम को मूत्र (Muttra) लिखते हैं। किन्तु अब मथुरा (Mathura) लिखा जाने लगा है; इत्यादि।

५३. *मरुचीपत्तन*—(मरीचिपत्तन या मारीचपत्तन शुद्ध-पाठ) 'मारीचोद्भ्रान्तहारीतामलयाद्रेरुपत्यका।' (रघुवंश, रघुदिग्विजय)। मलयपर्वत = (देखिए नं० ६)। मारीचवास = मारीचपत्तन = मिरजान-गोकर्ण (मद्रास के उत्तरी किनारा जिले में)। मारीचवधस्थल = बम्बई के नासिक से दक्षिण, अकोला गाँव से पश्चिम, साईखेड़ा गाँव में। (देखिए नं०.३)।

५४. *आर्यक* —(१) अर्कोट (मद्रास का एक जिला)। (२) आर्यक = आर्यराज्य = अगस्त्य मुनि का राज्य = नासिक के आस-पास था, राजधानी अकोला गाँव में (नासिक से २४ मील दक्षिण-पूर्व, प्रवर नदी के तट पर, संगमनेर से दक्षिण-पश्चिम)। (३) पाण्डव (भीम) के ससुर या घटोत्कच के मातामह का नाम भी, आर्यक था।

५५. *सिंहल* —लंका राज्य की सिंहलो भाषा के (बौद्धकालीन) ग्रन्थ, अभी भी मिलते हैं। सिंहल = लंकाराज्य।

५६. *ऋषभ* —(१) ऋषभ-राज्य लंका में था [स्कन्दपुराण, शतशृंग-कथा] (२) ऋषभतीर्थ = गुंजीगाँव उसभतीर्थ (मध्यप्रदेश के 'शक्ति' जिले में)। इसका नाम पुनः ऋषभतीर्थ हो गया है।

५७. *बलदेवपत्तन*—'नीलाम्बरो रौहिणेयस्तालांको मुसली हली।' (अमरकोश) (१) बाला जी (मद्रास के उत्तरी अर्कोट जिले में)। (२) मुसलीपट्टम = मछलीपट्टम (मद्रास)। (३) हलेविद (वेल्लूर से १० मील, उत्तर-पूर्व, मद्रास में)। (४) कांची (मद्रास से ४३ मील दक्षिण-पश्चिम)। (५) कुमारीतीर्थ = कन्या-कुमारी (दक्षिण-भारत)। (६) रामेश्वरम (दक्षिण-भारत)। (७) श्रीरंगम (मद्रास के त्रिचनापल्ली जिले में) कावेरी नदी के, श्रीरंगम टापू में। (८) गिरिनार पर्वत पर। (९) हरन हल्ली, हड़पाना हल्ली (मद्रास में)।

५८. दण्डकवन —(देखिए नं० १० कंकट)।

५९. *तिमिंगलाशन*—(तिमिंगल = लघुमत्स्य), (१) तेलंगाना = तैलंग = आन्ध्र (देखिए नं० ६ आन्ध्र, आग्नेय-देश में)। (२) तैमिंगलतीर्थ (बदरीनाथ मन्दिर के पीछे वाले पर्वत पर, नरनारायणाश्रम के पास, उत्तरप्रदेश के गढ़वाल जिले में, किन्तु यह स्थान, इस दिशा में नहीं हो सकता)। (३) मत्स्या = माछना नदी (बैतूल, मध्यप्रदेश में)।

६०. *भद्र* —सोनभद्रनद (सीमावर्ती)।

६१. *कच्छ* —(१) समुद्रतट की भूमि। (२) भद्रकच्छ (देखिए नं. २३ पूर्वदेश के भद्र का नं. ४)

६२. *कुञ्जरदरी* —(१) एलीफेण्टा (बम्बई में)। (२) हाथीगुफा (खारवेल की) भुवनेश्वर के पास, उदयगिरि में (उड़ीसा के पुरी जिले में)।

६३. *ताम्रपर्णी* —(देखिए नं० ११ टंकण)।

६४. *दक्षिणदेश*—नर्मदा से लंका तक, बरार, दक्षिण मध्यप्रदेश, मद्रास, हैदराबाद, बम्बई, मैसूर, लंका।

नैऋत्य देश [५]

(आर्द्रा स्वा. शत. = राहु)

१. *पल्हव* —(स्थानभ्रष्ट तथा पाठभ्रष्ट)। पल्हव-राजधानी, काबुल (अफगानिस्तान) में थी, अतएव स्थान-भ्रष्ट। यदि शुद्धपाठ पल्लव माना जाय तो—पल्लवराज्य = पेन्नार-पेलूर नदियों के के मध्य, राजधानी काञ्जीवरम् (मद्रास)। तो भी स्थान-भ्रष्ट। यदि शुद्धपाठ, पलक्क माना जाय तो—पलक्क राज्य = नीलोर-मैसूर के मध्य, राजधानी तमकुर (मद्रास)। तो भी स्थान-भ्रष्ट। यह शब्द दक्षिण या वायव्यदेशीय हो सकता है।

इतनी पीढ़ी (श्रीराम) तक, बुध के पितामह (अत्रि), कैसे जीवित रहे ? असम्भव। इसी प्रकार, अनेक भ्रमात्मक अर्थ प्रचलित हैं। स्वर्ग आदि के समान, कोई दुर्बोध शब्द आया कि, अध्यापक ने, विद्यार्थी को, आकाश की ओर इंगित कर, शून्य में भटका दिया। क्योंकि, उस अध्यापक ने 'सम्भव-शब्दार्थ' न करने' की शपथ खाली है। यथा—व्यवहार-शून्य ज्योतिषी, मुष्टि-प्रश्न का उत्तर 'मुट्ठी में पाषाण' गोल, छेदयुक्त=चक्की का पाट' बताता है, जबकि, व्यवहार-कुशल ज्योतिषी, ऐसे मुष्टि-प्रश्न का उत्तर 'रत्नजटित-मुद्रिका में' देता है। अस्तु।

३८. *वारिचर* —जलगाँव, मछलीपट्टम, लक्कादीव, मालदीव, मिनीकोयटापू (दक्षिण-भारत)।

३६. *त्रिवारिचर* —(१) लक्कादीव (लंका का एक खण्ड)। (२) मालदीव (माली-सुमाली दो भाई थे। [सुमाली=रावण-मतामह]। दोनों लका से भगाये जाने पर, माली, मालदीव [मालीद्वीप] में रहने लगा और सुमाली, सोमालीलैण्ड (अफ्रीका) और बलिद्वीप (आस्ट्रेलिया) में निवास किया था)। (३) मिनीकोय टापू=मैनाक पर्वत (लंका जाते समय, श्री हनुमान ने, इसी पर विश्राम किया था। ये तीनों टापू, मलाबार-कन्याकुमारी-लंका के पश्चिम समुद्र में, वर्तमान हैं।

४०. धर्मपट्टन —(१) कालीकट (मद्रास)। (२) धर्मपुर (बम्बई के नासिक से उत्तर)।

४१ *द्वीप* —दोआबा (दो नदियों के मध्य भूभाग को भी कहते हैं)। कहीं-कहीं द्वीप (समुद्र के मध्य का भूभाग=टापू) के स्थान में, दो नदियों के मध्य-भूभाग वाले स्थान समझना चाहिए। दक्षिण यात्रा में, ऐसे कई स्थान मिलेंगे जो कि, द्वीपवत् (दो नदियों के मध्य) हैं। यथा-श्रीरंगम टापू।

. *गणराज्य* —चोल, चेर, केरल, पाण्ड्य, पल्लव आदि (दक्षिण-भारत में)। इन सबों का 'स्थान-बोध' इसी लेख में हो जायगा।

४३. *कृष्णवेल्लूर*—(शुद्ध पाठ, कृष्णा और बेल्लूर) (१) कृष्णा=इस नाम से एक नदी और एक जिला, मद्रास में है। (२) बेल्लूर=बेलपुर=बिल्वपुर=वेल्लूर (मद्रास का एक जिला)। कृष्णवेल्लूर भी इसी वेल्लूर का नाम है।

४४. पिशिक —(पिथुण्ड)। लागूल (लागल) नदी के पास (*मद्रास के दक्षिणी गोदावरी जिले में*)। इस नगर को नष्ट करके, कलिंग-नरेश खारवेल (ई० प्रथम दशाब्दी) ने, कृषि-क्षेत्र बनवाया था; तब इसका नाम 'पिशिक' पड़ गया।

४५ *शूर्पाद्रि* —(१) सतपुडा पर्वत पर, नासिक के पास, शूर्पणखा का निवास था। (२) दहानू या शूर्पारक=सोपारा (बम्बई के थाना जिले में)। सोपारा प्राचीन बन्दरगाह था।

४६ *कुसुम-नग* —पुष्पगिरि (मद्रास-रायचूर लाइन पर, नन्दलूर से ३७ मील, पेनम नदी के तट पर)।

४७ *तुम्ब-वन* —(१) तुण्डी (तोण्डी) मद्रास के मदुरा से दक्षिण-पूर्व। (२) भूतपुरी के आस-पास (मद्रास के चिंगलेपुट जिले में)। (३) तिण्डीवनम (मद्रास के दक्षिणी अर्काट जिले में)। (४) तुमड़ी (चुड़ेश्वर से २ मील, नर्मदा तट पर)। यहाँ मुद्गल ऋषि ने तप किया था।

४८ *कार्मणेयक* —(इसका सूचक कोई स्थान, किसी भी दिशा में, नहीं मिल सका)।

४६. *याम्योदधि* —दक्षिण-भारत का महासागर।

५०. *तापसाश्रम* —पण्ढरपुर (बम्बई के शोलापुर जिले में)। इसे, ऋषिक+तापसाश्रम कहना चाहिए।

५१. *ऋषिक* —(स्थान-भ्रष्ट), ऋषिक=ऋषिकेश (इसे उत्तर दिशा में होना चाहिए)। 'ऋषिक देश में हरे घोड़े मिले' (महाभारत, सभापर्व, पाण्डव-दिग्विजय)। (यह दक्षिण देश का नहीं है)।

५२ *काञ्ची* —काञ्जीवरम (मद्रास से ४३ मील दक्षिण-पश्चिम)। रेलवे स्टेशन से २ मील, शिवकाँची और शिवकाँची से २ मील, विष्णुकाँची है। ज्योतिषग्रन्थ में जो 'पुरी राक्षसी देवकन्याव

काञ्ची···।' आदि पाठ है; वह काञ्ची = काचिन = कोचिन = कोचीन (अपभ्रंश शब्द) हो गया है। संस्कृत वाले शब्द, अंग्रेजी में लिखते ही, कितने बिगड़ जाते हैं; यथा—बंगाल का 'चटगाँव' नगर है। किन्तु इसे अंग्रेजी में चित्तागंग (Chittagong) लिखते हैं। मथुरा सरीखे पवित्र नाम को मूत्र (Muttra) लिखते हैं। किन्तु अब मथुरा (Mathura) लिखा जाने लगा है; इत्यादि।

५३. मरुचीपत्तन—(मरीचिपत्तन या मारीचपत्तन शुद्ध-पाठ) 'मारीचोद्भ्रान्तहारीतामलयाद्रेरुपत्यका।' (रघुवंश, रघुदिग्विजय)। मलयपर्वत = (देखिए नं० ६)। मारीचवास = मारीचपत्तन = मिरजान-गोकर्ण (मद्रास के उत्तरी किनारा जिले में)। मारीचवधस्थल = बम्बई के नासिक से दक्षिण, अकोला गाँव से पश्चिम, साईखेड़ा गाँव में। (देखिए नं० ३)।

५४. आर्यक —(१) अर्काट (मद्रास का एक जिला)। (२) आर्यक=आर्यराज्य = अगस्त्य मुनि का राज्य = नासिक के आस-पास था, राजधानी अकोला गाँव में (नासिक से २४ मील दक्षिण-पूर्व, प्रवर नदी के तट पर, संगमनेर से दक्षिण-पश्चिम)। (३) पाण्डव (भीम) के ससुर या घटोत्कच के मातामह का नाम भी, आर्यक था।

५५. सिंहल —लंका राज्य की सिंहली भाषा के (बौद्धकालीन) ग्रन्थ, अभी भी मिलते हैं। सिंहल = लंकाराज्य।

५६. ऋषभ —(१) ऋषभ-राज्य लंका में था [स्कन्दपुराण, शतशृंग-कथा] (२) ऋषभतीर्थ = गुंजीगाँव उसभतीर्थ (मध्यप्रदेश के 'शक्ति' जिले में)। इसका नाम पुनः ऋषभतीर्थ हो गया है।

५७. वलदेवपत्तन—'नीलाम्बरो रौहिणेयस्तालांको मुसली हली।' (अमरकोश) (१) वाला जी (मद्रास के उत्तरी अर्काट जिले में)। (२) मुसलीपट्टम = मछलीपट्टम (मद्रास)। (३) हलेविद (वेल्लूर से १० मील, उत्तर-पूर्व, मद्रास में)। (४) कांची (मद्रास से ४३ मील दक्षिण-पश्चिम)। (५) कुमारीतीर्थ = कन्या-कुमारी (दक्षिण-भारत)। (६) रामेश्वरम (दक्षिण-भारत)। (७) श्रीरंगम (मद्रास के त्रिचनापल्ली जिले में) कावेरी नदी के, श्रीरंगम टापू में। (८) गिरिनार पर्वत पर। (९) हरन हल्ली, हड़पाना हल्ली (मद्रास में)।

५८. दण्डकवन —(देखिए नं० १० कंकट)।

५९. तिमिंगलाशन—(तिमिंगल = लघुमत्स्य), (१) तेलंगाना = तैलंग = आन्ध्र (देखिए नं० ६ आन्ध्र, आग्नेय-देश में)। (२) तैमिंगलतीर्थ (वदरीनाथ मन्दिर के पीछे वाले पर्वत पर, नरनारायणाश्रम के पास, उत्तरप्रदेश के गढ़वाल जिले में, किन्तु यह स्थान, इस दिशा में नहीं हो सकता)। (३) मत्स्या = माछना नदी (वैतूल, मध्यप्रदेश में)।

६०. भद्र —सोनभद्रनद (सीमावर्ती)।

६१. कच्छ —(१) समुद्रतट की भूमि। (२) भद्रकच्छ (देखिए नं. २३ पूर्वदेश के भद्र का नं. ४)

६२. कुञ्जरदरी —(१) एलीफेण्टा (बम्बई में)। (२) हाथीगुफा (खारवेल की) भुवनेश्वर के पास, उदयगिरि में (उड़ीसा के पुरी जिले में)।

६३. ताम्रपर्णी —(देखिए नं० ११ टंकण)।

६४. दक्षिणदेश —नर्मदा से लंका तक, बरार, दक्षिण मध्यप्रदेश, मद्रास, हैदराबाद, बम्बई, मैसूर, लंका।

नैऋत्य देश [५]

(आर्द्रा स्वा. शत. = राहु)

१. पल्हव —(स्थानभ्रष्ट तथा पाठभ्रष्ट)। पल्हव-राजधानी, काबुल (अफगानिस्तान) में थी, अतएव स्थान-भ्रष्ट। यदि शुद्धपाठ पल्लव माना जाय तो—पल्लवराज्य = पेन्नार-पेलूर नदियों के के मध्य, राजधानी काञ्जीवरम् (मद्रास)। तो भी स्थान-भ्रष्ट। यदि शुद्धपाठ, पलक्क माना जाय तो—पलक्क राज्य = नीलोर-मैसूर के मध्य, राजधानी तमकुर (मद्रास)। तो भी स्थान-भ्रष्ट। यह शब्द दक्षिण या वायव्यदेशीय हो सकता है।

२. काम्बोज —काम्बे (खम्भात की खाड़ी, गुजरात में)।

३. सिन्धु —सिन्धुनद का दक्षिणी भाग, पश्चिमी हैदराबाद (करांची), सिन्ध देश का दक्षिणी भाग।

४ सौवीर —पंजाब के मुलतान जिले का भूभाग। सिन्धुनद और समुद्र के दोआवा में सेहवाँ-मोहन-जोदारो। सिन्धु-सौवीर नरेश 'जयद्रथ' पाण्डवकालीन था। यूनानी भाषा में 'महान्-जयद्रथ' को मोहानजोदरो लिखा, उसे अँग्रेजी में लिखा गया तब, मोहनजोदरो = मोहनजोदारो हो गया। महान् का मोहन हो गया। यथा—महान (Mohan मॅहान्) जयद्रथ का जोद्रथ, बाद में जोद्रथ का जोदड़ो बन गया (Jodartho) अँग्रेजी में जोदार्थो लिखा गया, भाषान्तर तथा उच्चारण भेद से अपभ्रंश हो गया। अँग्रेजी में, 'गायत्री मन्त्र' को 'गायट्री मन्ट्र' (Gayatri Mantra)। सतना Satana नामक स्थान का सटाना, सटना, साटना, साटन, सटन, सटान आदि प्रकार से उच्चारण बनता जाता है इत्यादि। आर्यमतावलम्बी, किसी अँग्रेज की शुद्धि कर, हिन्दू बनाकर, यदि गायत्री-मन्त्र का उपदेश करे तो, आजीवन, शुद्ध उच्चारण न कर सकेगा; इत्यादि।

५. वडवामुख —लालसागर (रेड-सी. अरब के दक्षिण)।

६. आरव —अरब देश (आ समन्तात् रवं शब्दं भवन्ति कुर्वन्ति वा यत्र सः आरवो देशः)। ऊर्व के पुत्र, औंर्व का अपभ्रंश, आरव हो गया। (भृगु-पुत्र च्यवन की शाखा में ऊर्व हुए थे) आरव, अरबी भाषा में, सूर्य को कहते हैं। अरब में आदित्यगणों का राज्य था। विष्णु-लक्ष्मी का निवास-स्थान, अदन (अरब) में था। शेषनाग का राज्य, लालसागर तट पर था। विष्णु (द्वादश आदित्यों में से, एक सर्व लघु आदित्य) ने, शेषनाग को विजित कर, राज्य तथा कन्या (लक्ष्मी) ले लिया। शेष-शय्या का अर्थ ही है कि, शेषनाग को पराजित किया। शिव ने नाग-जाति से मित्रता कर, हिमाचल (नागराज) से, कन्या (पार्वती) और कुछ राज्य-भूभाग 'कैलाश' लिया। शिव के भूषण-रूप, नागों का रहना, मित्रता का लक्षण है।

७. अम्बष्ठ —(१) गिरनार पर्वत का सहस्राम्रवन = कहसावन (काठियावाड में)। (२) गिरनार पर्वत पर अम्बा देवी का प्रसिद्ध स्थान है, इन्हें सनातनी तथा जैनी, दोनों पूजते हैं। (३) अमरेली (काठियावाड के बड़ौदा राज्य में)। (४) अमरेली (द्वारिकापुरी के पास, काठियावाड में)। (५) अम्बिका नदी (बम्बई के सूरत जिले में)।

८ कपिलनारी मुख—(कपिल ने, कभी विवाह नहीं किया, फिर 'कपिलनारी' कैसे? (शुद्धपाठ कपिलधारा) (१) बम्बई के नासिक से २४ मील पर, कपिलधारा नामक गाँव। (२) नर्मदा-उद्गम से ४ मील, पश्चिम छुटीपारी के पास, कपिलधारा। (३) ब्रह्मपुरी-विष्णुपुरी के मध्य, कपिला-नर्मदा का संगम है (दक्षिण मालवा के मान्धाता टापू में)।

९. आनर्त —(१) ऋतु-रहित देश = वृष्टि-रहित देश = मरुस्थल = राजपूताना का रेगिस्तान। (२) उत्तरी गुजरात में राज्य (राजधानी अनन्तपुर)। (३) गुजरात और मालवा (राजधानी द्वारिकापुरी)। (४) काठियावाड़-गुजरात (राजधानी चमत्कार नगर = आनन्दपुर = बड़ा नगर, उत्तरी गुजरात में) इसी 'नगर' के निवासी 'नागर-ब्राह्मण' वर्तमान में पाये जाते हैं। न० ३ में वैवस्वत मनु के पुत्र, शर्याति का राज्य था। शर्याति-पुत्र आनर्त था। आनर्त की बहिन सुकन्या (च्यवन ऋषि की पत्नी) थी। आनर्त के नाम पर, यह देश था।

१० फनगिरि —सिन्धुनद के मुहाना के पास एक पर्वत (सिन्ध-करांची)।

११ यवन —(१) यमन प्रान्त (अरब में), प्रसिद्ध हातिमताई, यहीं का था। (२) यवनपुर = जूनागढ़ (काठियावाड़ में)।

१२ माकर —माकरान (बलूचिस्तान में)।

१३. कर्णप्रावेय —(कर्णप्रावरक) पिण्डारक-तीर्थ (द्वारकापुरी से १६ मील पूर्व, गोलगढ़ के पास, काठियावाड़ में)।

यदि आप महाभारत के कर्णपर्व में, कर्ण का सारथी, शल्य होने पर; इनका परस्पर कटु-वार्तालाप पढ़िए तो, आपको ज्ञात हो जायगा कि, शल्य और पठानों की संस्कृति में, कोई भेद नहीं है। शल्य, वाल्हीकपति भी था। वाल्हीक = बलख (अफगानिस्तान में)। बलख से व्यास तट तक, वाल्हीक देश था।

वायव्य देश [७]

(अ० म० मू० = केतु)

१. *माण्डव्य* —(देखिए मध्यदेश का नं० ३)।

२. *तुषार* —तुषारो शीतलो शीतः हिमः (अमरकोश)। (१) बुखारा (उजवक, दक्षिणी रूस में) (२) बलख, बदख्शाँ, यूहेशी (अफगानिस्तान में)।

३. *तालहल* —(१) तालतोषक = तिब्बतप्रान्त (२) तालहल = [क] तालर पर्वत [ख] तात्रिज की व्यूवर झील [ग] वुलर झील और नमकसर।

४. *हल* —(यदि ताल + हल = तालहल समझा जाय तो) हल = हलक्षेत्र = कुरुक्षेत्र (देखिए नं० २४ कुरु, मध्यदेश में)। ताल शब्द के उपर्युक्त नं० ३ समझिए।

५. *मद्र* —(देखिए मध्यदेश का नं० १)।

६. *अश्मक* —स्वात घाटी के दक्षिण (पेशावर प्रदेश), राजधानी पुष्करावती = चारसद्दा (पेशावर के समीप, उत्तर-पश्चिम)। पुष्करावती (गन्धर्व = गान्धारराजधानी। गन्धर्वराज-कन्या, चित्रांगदा (रावण की द्वितीयपत्नी) थी। गन्धर्वों ने, भरत के मामा (युधाजित्) को मार डाला, तब भरत और भरतपुत्र पुष्कर ने, गन्धर्वों को पराजित कर, पुष्कर के नाम पर, पुष्करावती राजधानी हुई थी। देखिए वाल्मीकीय। पुष्कर के भाई, तक्ष ने तक्षशिला (रावलपिण्डी के पास) बसाया था। तक्षशिला-महाविद्यालय, मौर्यकाल में प्रसिद्ध था। विद्यालय के प्रधानाध्यापक, चाणक्य थे। चरक (आयुर्वेद-निष्णात), पुरुषपुर = पेशावर के निवासी थे।

७. *कुलूत* —(१) पंजाब के शिमला-समीप का पहाड़ी देश (कुलूपहाड़ी प्रसिद्ध)। (२) व्यास-रावी के मध्य (व्यास-तट पर कुलूत [कुलुध] था और रावी-तट पर उदुम्बर [औदुम्बर] था)। (३) गढ़वाल और सरहानपुर का भूभाग। (४) हिमालय में बन्दर पूँछ श्रेणी पर, पहाड़ी देश। इसे कुलिन्द = कुलूत = कुलुध = कौणिन्द = कुनिन्द कहा गया है।

८. *लहड़* —(१) लाहुर (लाहुड़), सीमा-प्रान्त के, पेशावर जिले में। लाहड़ी जाति का स्थान। व्याकरण-प्रणेता पाणिनि (ई० पूर्व ७०० वर्ष) का जन्मस्थान। (२) लाहौर (यह सर्वमान्य नहीं)।

९. *स्त्री-राज्य* —कुमायूँ-गढ़वाल (उत्तरप्रदेश)। कुरुक्षेत्र-युद्धकाल में, यहाँ की शासिका 'अमिला' थी।

१०. *नृसिंहवन* —(१) कटाक्ष के आस-पास। कटाक्ष = कटाछराज (पंजाब के झेलम जिले में)। नरमसिर (नृसिंह) = ईरान के परसा प्रान्त में। (३) नृसिंहमन्दिर = जोशीमठ (उत्तरप्रदेशी गढ़वाल जिले) में। (४) नृसिंहावतार = [क] कटाक्ष [ख] मुलतान (पंजाब)।

११. *खस (खस्थ)* —(१) खाशरूद, ईरान। (२) खास्त (सीमाप्रान्तीय उत्तरी वजीरिस्तान के उत्तर)।

१२. *वेणुमती* —वंतु = आक्सस नदी (उत्तरी अफगानिस्तान में)।

१३. *फल्गुलुका* —(शुद्धपाठ फल्गुतीर्थ) फलकीवन = फरल गाँव, शुक्रतीर्थ के पास, कुरुक्षेत्र में। इसे, सोमतीर्थ भी कहा गया है (पंजाब के थानेसर से १७ मील दक्षिण-पूर्व)।

१४. *गुरुहा* —गुरुशिखर, आबूपर्वत में (राजपूताना के सिरोही जिले में)।

१५. *मरुकुत्स* —मरुक् + उत्स। उत्सः प्रस्रवणम् (अमरकोश)। (१) आबू पर्वत। (२) साँभर-झील।

१६. *चर्मरंग* —चामरान (राजपूताना) में। चामड़िया जाति के मारवाड़ी होते हैं। वैसे, किसी पुराण या इतिहास-ग्रन्थ के द्वारा, यह स्थान नहीं मिल सका।

५. *अस्तगिरि* —(१) आबू पर्वत (२) सुलेमान पर्वत; इसे शल्यमान कहा गया है।

६. *अपरान्तक* —(अपरान्त) (१) कोंकण-मलावार (किन्तु ये, इस दिशा में अनावश्यक हैं)। (२) मस्कत (अरब के पूर्व-दक्षिण, समुद्रतट पर)

७. *शान्तिक* —(१) साँची (भेलसा के पास, मध्यप्रदेश में)। (२) शान्ति-धाम = बद्रीनाथ-धाम (गढ़वाल, उत्तरप्रदेश) (३) शान्तिपुर = [क] शोणितपुर (उत्तरप्रदेश के कुमायूँ में) [ख] बियाना (भरतपुर, राजपूताना) [ग] विजय-मन्दरगढ़ (बियाना से ६ मील)।

८. *हैहय* —खानदेश, औरंगाबाद, दक्षिण मालवा (राजधानी मान्धाता टापू में, नर्मदा के मध्य)।

९. *प्रशस्ताद्रि* —(१) आबू पर्वत [सनातन तथा जैन तीर्थ] (२) सुलेमान पर्वत (यहाँ शल्य का राज्य था, इसे शल्यमान् कहा जाता था, जब से मुस्लिम राज्य हुए, तब से भाषान्तर के कारण, सुलेमान कहने लगे। शल्य की कथाएँ और सुलेमान की कथाएँ एक समान, सूर्य और आद (आद=आदम=आदिम=आदित्य) की कथाएँ एक समान, पार्वती और हौवा की कथाएँ एक समान, शुक्र-मन्दिर और काबा की कथाएं एक समान मिलेंगी। यदि मुस्लिम-धर्म का, आदिम रूप अध्ययन करें तो, आपको शैव-धर्म का रूप, ज्ञात होने लगेगा; केवल भाषा-भेद है। काव्य (शुक्र) मन्दिर को आज, काबा (मक्कानगर का मुस्लिम-तीर्थ) कहते हैं; इत्यादि।

१०. *वोक्काण* —मक्का (अरब में)। इस नगर में भग (आदित्य) और मुनियों के मन्दिर ई० ७ वीं शताब्दी तक थे।

११. पंचनद —पंजाब की पाँचों नदियाँ मिलकर, जहाँ एक (चिनाव या सतलज) हो जाती है, उस स्थान से, सिन्धुनद के संगम तक के मध्य की भूमि को, पंचनद देश कहा गया है। आक्स्फोर्ड एटलास (इंगलिश) में 'पचनद' मुद्रित है। खैरपुर, अलीपुर, सितपुर, अहमदपुर आदि। सिन्धु से यमुना तक (उत्तरी पंजाब) को 'सप्त-सिन्धु' कहा गया है।

१२. *रमठ* —बलूचिस्तान।

१३. *पारत* —ईरान देश। इसे पारद भी कहा गया है।

१४. *तारक्षितिशृंग*—(तारक्षितिशृंग) तालरपर्वत और तारखाँ (तूरखाँ), दक्षिणी बलूचिस्तान में।

१५. *वैश्य* —महाजन (बीकानेर में)।

१६. कनक —कनकशृंगा = उज्जैन (मालवा में)। यहाँ दोनों कनक (सुवर्ण और धतूर) की बहुतायत थी। श्री महाकालेश्वर की सेवा के लिए, दोनों की आवश्यकता रहती थी। पौराणिक आख्यान तो, इससे भिन्न प्रकार के हैं।

१७ *शक* —(१) शकस्थान=सीसताँ (ईरान-अफगानिस्तान की सीमा पर)। (२) शकद्वीप = लरकाना-नवाबशाह (सिन्ध प्रान्त)। (३) शकराज्य—तक्षशिला (रावलपिण्डी) से दक्षिण भारत तक, समय-समय पर रहा है। बृहत्संहिता के लेखक वराहमिहिर, ५ वीं शकशताब्दी में हुए हैं। ई० पूर्व ७१-७७ वर्षों के मध्य, स्यालकोट से उज्जैन तक, शकों का राज्य था। ई० ७८ में, शक राजा चाष्टन ने, विक्रमादित्यवंशी रामदेव को परास्त कर, उज्जैन से काठियावाड़ तक, राज्य किया। पंजाब के स्यालकोट को, शल्य (पाण्डवकालीन) ने बसाकर, शल्यकृत (स्यालकोट, अपभ्रंश शब्द) नाम रखा था। इसी शल्यकृत को बौद्धग्रन्थों में शाकलद्वीप=शागल आदि लिखा गया। ई० पूर्व ७१ वर्ष के लगभग, रसालू (शालिवाहन) ने, स्यालकोट में राजधानी बनायी थी। वर्तमान में शक=शोके लोग, 'भोटिए' नाम से, मानसरोवर के आस-पास रहते हैं और काठगोदाम के मार्ग से, भारत में प्रवेश कर, व्यापार भी करते हैं।

१८. *निर्मर्यादम्लेच्छ*—पठानिस्तान (सीमाप्रान्त में)। शेख, सयद, मुगल, पठान नामक चार भेद से, आपके, ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र की भाँति होते हैं। म्लेच्छ = आर्येतर जाति। निर्मर्याद = शूद्रवत्।

यदि आप महाभारत के कर्ण पर्व में, कर्ण का सारथी, शल्य होने पर; इनका परस्पर कटु-वार्तालाप पढ़िए तो, आपको ज्ञात हो जायगा कि, शल्य और पठानों की संस्कृति में, कोई भेद नहीं है। शल्य, वाल्हीकपति भी था। बाल्हीक = बलख (अफगानिस्तान में)। बलख से व्यास तट तक, वाल्हीक देश था।

वायव्य देश [७]

(अ० म० मू० = केतु)

१. माण्डव्य —(देखिए मध्यदेश का नं० ३)।

२. तुषार —तुषारो शीतलो शीतः हिमः (अमरकोश)। (१) बुखारा (उजबक, दक्षिणी रूस में) (२) बलख, बदख्शाँ, यूहेशी (अफगानिस्तान में)।

३. तालहल —(१) तालतोपक = तिब्बतप्रान्त (२) तालहल = [क] तालर पर्वत [ख] तान्निज की व्यूवर झील [ग] वुलर झील और नमकसर।

४. हल —(यदि ताल + हल = तालहल समझा जाय तो) हल = हलक्षेत्र = कुरुक्षेत्र (देखिए नं० २४ कुरु, मध्यदेश में)। ताल शब्द के उपर्युक्त नं० ३ समझिए।

५. मद्र —(देखिए मध्यदेश का नं० १)।

६. अश्मक —स्वात घाटी के दक्षिण (पेशावर प्रदेश), राजधानी पुष्करावती = चारसद्दा (पेशावर के समीप, उत्तर-पश्चिम)। पुष्करावती (गन्धर्व = गान्धारराजधानी। गन्धर्वराज-कन्या, चित्रांगदा (रावण की द्वितीयपत्नी) थी। गन्धर्वों ने, भरत के मामा (युधाजित्) को मार डाला, तब भरत और भरतपुत्र पुष्कर ने, गन्धर्वों को पराजित कर, पुष्कर के नाम पर, पुष्करावती राजधानी हुई थी। देखिए वाल्मीकीय। पुष्कर के भाई, तक्ष ने तक्षशिला (रावलपिण्डी) के पास) वसाया था। तक्षशिला-महाविद्यालय, मौर्यकाल में प्रसिद्ध था। विद्यालय के प्रधानाध्यापक, चाणक्य थे। चरक (आयुर्वेद-निष्णात), पुरुषपुर = पेशावर के निवासी थे।

७. कुलूत —(१) पंजाब के शिमला-समीप का पहाड़ी देश (कुलूपहाड़ी प्रसिद्ध)। (२) व्यास-रावी के मध्य (व्यास-तट पर कुलूत [कुलुध] था और रावी-तट पर उदुम्बर [औदुम्बर] था)। (३) गढ़वाल और सरहानपुर का भूभाग। (४) हिमालय में वन्दर पूँछ श्रेणी पर, पहाड़ी देश। इसे कुलिन्द = कुलूत = कुलुध = कौणिन्द = कुनिन्द कहा गया है।

८. लहड़ —(१) लाहुर (लाहुड़), सीमा-प्रान्त के, पेशावर जिले में। लाहड़ी जाति का स्थान। व्याकरण-प्रणेता पाणिनि (ई० पूर्व ७०० वर्ष) का जन्मस्थान। (२) लाहौर (यह सर्वमान्य नहीं)।

९. स्त्री-राज्य —कुमायूँ-गढ़वाल (उत्तरप्रदेश)। कुरुक्षेत्र-युद्धकाल में, यहाँ की शासिका 'अमिला' थी।

१०. नृसिंहवन —(१) कटाक्ष के आस-पास। कटाक्ष = कटाछराज (पंजाब के झेलम जिले में)। नरमसिर (नृसिंह) = ईरान के परसा प्रान्त में। (३) नृसिंहमन्दिर = जोशीमठ (उत्तरप्रदेशी गढ़वाल जिले) में। (४) नृसिंहावतार = [क] कटाक्ष [ख] मुलतान (पंजाब)।

११. खस (खस्थ)—(१) खाशरूद, ईरान। (२) खास्त (सीमाप्रान्तीय उत्तरी वजीरिस्तान के उत्तर)।

१२. वेणुमती —वंक्षु = आक्सस नदी (उत्तरी अफगानिस्तान में)।

१३. फल्गुलुका —(शुद्धपाठ फल्गुतीर्थ) फलकीवन = फरल गाँव, शुक्रतीर्थ के पास, कुरुक्षेत्र में। इसे, सोमतीर्थ भी कहा गया है (पंजाब के थानेसर से १७ मील दक्षिण-पूर्व)।

१४. गुरुहा —गुरुशिखर, आबूपर्वत में (राजपूताना के सिरोही जिले में)।

१५. मरुकुत्स —मरुक् + उत्स। उत्सः प्रस्रवणम् (अमरकोश)। (१) आबू पर्वत। (२) साँभर-झील।

१६. चर्मरंग —चामरान (राजपूताना) में। चामड़िया जाति के मारवाड़ी होते हैं। वैसे, किसी पुराण या इतिहास-ग्रन्थ के द्वारा, यह स्थान नहीं मिल सका।

१७. एकविलोचन, १८. दीर्घग्राव, १९. दीर्घास्य, २०. दीर्घकेश —(एकाक्ष = शुक्रस्थान = मक्का [अरब] में) 1 एकविलोचन, दीर्घग्रीव (दीर्घग्राव शुद्धपाठ) दीर्घास्य, दीर्घकेश—ऐसे ४ शब्द, बृहत्संहिता में, यहाँ लिखे पाये जाते हैं। किन्तु इतिहास के ग्रन्थों में, बहुत चक्कर के बाद अर्थात् असामनीवंशीय तृतीय सम्राट् दारायवुस (दारियस ई० पूर्व ५२२–४८६ वर्ष) के दरबारी यूनानी-सैनिक, करयाएडा का स्काईलाक्ष (ई पूर्व ५१७ ने, भारतीय सिन्धुघाटी की खोज में, जो डायरी बनायी थी, उसमें एकाक्ष लोग, दीर्घग्रीव लोग दीर्घास्य, दीर्घकेश लोगों के स्थानों का वर्णन लिखा था। असामनी राज्य, परसिया में था। लम्बाक्ष, लम्बोदर, लम्बग्रीव, लम्बकेश, नामक शिव-पुत्र, हरिद्वार में (वायु २३) शब्दों के अर्थ पर, ध्यान देने से पता चलता है कि, ये सभी स्थान सिन्धुघाटी में ही होना चाहिए। अतएव, एकविलोचन = एकाक्ष = फरह (Forah) नदी (रमलशास्त्र में फरह, शुक्र को कहा गया है) बलूचिस्तान को वालोक्ष = बालाक्ष = बालाक्षि कहा गया है। इसी प्रकार सिन्धुघाटी वाले, दीर्घग्राव = हिन्दूकुश पर्वत, दीर्घास्य = खैबरघाटी, दीर्घकेश = पठानिस्तान समझिए। दीर्घग्रीव, दीर्घास्य, दीर्घकेश आदि के अर्थ बोधक व्यक्तियों का बाहुल्य, सीमाप्रान्त में वर्तमान है।

२१ शूलिक —(१) शूली बनाने वाले, शूली देने वाला दण्ड-विधान, सीमाप्रान्त से ही प्रचार हुआ। जैसे, त्रिशूल में तीन फल, नुकीले होते हैं; वैसे ही शूली में, एक ही फल, नुकीला होता है। शूली पाने वाले अपराधी को, शूली में चढ़ा देते थे अर्थात् शूली की नोक पर, अपराधी की गुदा रखाते थे और तब, अपराधी का शरीर-भार, नीचे आता-जाता था, अन्ततो गत्वा, शूली, गुदा से छिदकर, मस्तक फोड़ कर, ऊपर निकल आती थी। माण्डव्य ऋषि, शूली में चढ़ाये गये थे। सती-महिमा से, सूर्योदय न हो सका था। (२) शूली (नैमिषारण्य में)—वायु २३ अध्याय।

उत्तर देश [८]

(पुन, वि, पूभा, = गुरु)

१. कैलास —(कैलावर्त = कैलावत, बौद्धग्रन्थों में) कैलास पर्वत (तिब्बत के दक्षिण-पश्चिम में)। मानसरोवर, कैलास में ही है। कैलास चोटी २२०२८ फीट ऊँची। नन्दादेवी चोटी २५६४५ फीट ऊँची। गौरीशंकर चोटी २९००२ फीट ऊँची। कैलास की एक शाखा (क्रौंच पर्वत) पर मानसरोवर है। कैलास की परिक्रमा, २४ या ३२ मील की, ३ दिन में की जाती है।

२. हिमवान् —हिमालय पर्वत। यह १५०० मील की लम्बाई में है, जिसमें नैपाल, केदार, जालन्धर, कश्मीर, कूर्माचल आदि, ५ खण्ड हैं।

३ वसुमान् गिरि—मिथला राज्य के पर्वत।

४ धनुष्मान् गिरि—(१) मिथिला में, धनुषा नामक स्थान (२) वड़ालचा घाटी (हिमालय में) (३) चुरिया घाटी (नैपाल में)।

५ क्रौंचगिरि —(१) (देखिए नं० १ कैलास)। (२) क्रौंचवर्त्म (मेघदूत-वर्णित) -सफेदकोह (सीमाप्रान्त में)। (३) क्रौंचपदी = मानसरोवर झील का स्थान। (४) हिन्दूकुश के उत्तर, काराकोरम पर्वत।

६ मेरु —(१) ईरान-रूस के सीमान्त से, रुद्र-हिमालय तक। (२) स्वर्ग का सुमेरु देश = अरब देश है। (३) सुमेरु शब्द से उत्तरी ध्रुव भी समझिए। (४) सुवर्ण पर्वत सुमेरु = कूर्माचल (कुमायूँ-गढ़वाल के पर्वत)। (५) वायु पर्वत सुमेरु = उत्तरीध्रुव। (६) पाषाणमय सुमेरु = कालासमुद्र (एशिया माइनर) से चीनपर्यंत। (७) कश्यपऋषि-मेरु = कश्यपमेरु = कश्मीर प्रान्त (८) हेमपर्वत (सुमेरु) = कैलास। (९) सुमेरु पर्वत पर, ब्रह्मपुरी (कूर्माचल=कुमायूँ, उत्तरप्रदेश)। (१०) मेरु पर कश्यप ऋषि (कश्मीर)। (११) सुमेरु पर आदित्य का उदय या निवास या

परिक्रमा या भ्रमण (कश्मीर, अफ़गानिस्तान, सुलेमान पर्वत)। एक लेखक ने, जबलपुर में बैठकर लिखा कि, काशी पूर्व में है; किन्तु दूसरे लेखक ने, पटना में बैठकर लिखा कि, काशी पश्चिम में है। परन्तु, दोनों का लिखना ठीक है। अतएव कभी-कभी स्थान पर, ध्यान देकर, दिशा का निश्चित बोध कीजिए। एक सुमेरु, माला या तशबीह में रहता है। भक्तमाल-ग्रन्थ में गो० तुलसीदास, सुमेरु बनाये गये थे। सुमेरु=आदिभाग=उच्चभाग=श्रेष्ठभाग आदि के अर्थों में कहा जाता है।

७. उत्तर कुरु —(१) दक्षिणी रूस देश। (२) कार्दिस्तान (ईरान में)।

८. क्षुद्रमीन —मत्स्यदेश (देखिए मध्यदेश का नं० १२) (यह सीमावर्ती देश है)।

९. कैकय —(१) अफगानिस्तान का पश्चिमोत्तर भूभाग, राजधानी हिरात। इसके अनन्तर (२) व्यास-सतलज के मध्य में, केकय-राज्य। भरत-माता कैकेयी, इसी देश की थीं।

१०. वसाति —(१) चिनाव-सिन्धु-संगम से उत्तर (पंचनद देश)। आभीरों के बाद, वसाति राज्य हुआ (सिकन्दर अभियान काल ई० पूर्व ३२५ में) था। (२) वस्ती (उत्तरप्रदेश)।

११. यामुन —(यह शब्द मध्यदेश में भी आया है) अतएव, यहाँ 'पश्चिम-यमुनातट-वासी' अर्थ समझिए।

१२. भागप्रस्थ —(१) भागप्रस्थ=वागपत (उत्तरप्रदेशी मेरठ से ३० मील पश्चिम) (२) भोगवती=नागवासु का मन्दिर (इलाहाबाद में)।

१३. अर्जुनायन —यमुना नदी का पश्चिमी तट (मथुरा से दिल्ली तक)। भरतपुर से प्राप्त, सिक्कों में अंकित "आर्जुनायनानाञ्जयः" है।

१४. आग्नीध्र —(आग्नीन्ध्र, स्वायम्भुव मनु का पौत्र या प्रियव्रत का पुत्र, अग्नीन्ध्र था और अग्नीन्ध्र के पुत्र (आग्नीन्ध्र) नव थे। अग्नीन्ध्र का राज्य, जम्बूद्वीप=जम्मू (कश्मीर) में था। यदि, आग्नीध्र शब्द कहा जाय तो—उत्तरप्रदेशी टेहरी के श्रीनगर में, कमलेश्वर पीठ से ऊपर, दक्षिण दिशा में, वह्निपर्वत के निवासी, आग्नीध्र कहायेंगे।

१५. आदर्श —कैलासपर्वत, स्फटिकपर्वत, वर्फीलापर्वत। आदर्श=दर्पण। "कैलासस्य त्रिदशवनितादर्पणस्यातिथिःस्याः ॥ ६१ ॥" (पूर्व मेघदूत)

१६. अन्तर्द्वीप —कैलास के आस-पास की वस्तियाँ।

१७. त्रिगर्त —(१) सतलज-व्यास-रावी के मध्यदेश (जालन्धर-लाहौर)। इसे सेवित या सेवेत भी कहा गया है। (२) पठानकोट से कुल्लू तक, १५०×१०० मील का त्रिगर्त (काँगड़ा-क्षेत्र) है।

१८. तुरगानन —तुर्कमन प्रदेश (दक्षिणी रूस में)।

१९. अश्वमुख —सिकन्दर द्वारा स्थापित, झेलम जिले में 'बुसेफला' नामक यूनानी-वस्ती (अब नहीं है। बुसेफला, सिकन्दर के घोड़े का नाम था और वह घोड़ा, यहीं, मर गया था)।

२०. केशधर —(१) पठानिस्तान (सीमाप्रान्त में)। (२) काशगर (यारकन्द से उत्तर, सिंक्यांग में)। (३) काशीपुर (उत्तरप्रदेश के नैनीताल जिले में) अभी तक 'केशपुत्त' नामक, बौद्धकालीन स्थान का निर्णय, नहीं हो सका। केशधर=केशपुत्त (केश + पूत=पवित्र) नामक स्थान, काशीपुर है, क्योंकि यहाँ के, एक स्तूप में 'बुद्ध के केश' सुरक्षित हैं। पास ही प्राचीन भग्नावशेष भी हैं।

२१. चिपिटनासिक—तिब्बत और भूटान।

२२. दासेरक —दासका (पंजाब के स्यालकोट जिले में)।

२३. वाटधान —सतलज नदी के पूर्व का भूभाग, फीरोजपुर के दक्षिण (पंजाब में)

२४. शरधान —(१) केदारनाथ (उत्तरप्रदेश) के, केदार-कुण्ड में, कार्तिकेय का जन्म। शर-वन=काराकोरम पर्वत। यहाँ वैवस्वत मनु पुत्र, (इल) आकर, पररूप से स्त्री (इला) रूप में हो गया था।

२५. तक्षशिला —रावलपिण्डी जिले में।

२६. *पुष्करावर्त* —पुष्करावती (देखिए वायव्यदेश का नं. ६ अश्मक)।

२७. *कैलावत* —(देखिए नं० १ कैलास)।

२८. *काष्ठधान* —(शुद्धपाठ, काष्ठधाम)। काष्ठधाम=(१) कठुआ (कश्मीर के जम्मू जिले में)। (२) काठमाण्डू (नैपाल में)।

२९. *अम्बर* —आमेर का किला (जयपुर, राजपूताना)।

३० *मद्रक* —(देखिए मध्यदेश का नं० १ मद्र)।

३१ *मालव* —झेलम के पूर्वीतट पर और रावी-चिनाब संगम से उत्तर, दोआब में (लायलपुर)। (सिकन्दर अभियान काल ई० पूर्व ३२५)। सिकन्दर-मालव युद्ध हुआ था।

३२. *पौरव* —ययातिपुत्र, पुरु का राज्य (राजधानी प्रतिष्ठान=झूँसी, प्रयाग में)।

३३ *वत्स* —(देखिए मध्यदेश का नं० ८ वत्स)।

३४. *आर* —आरा (बिहार में)।

३५. *दण्ड* —(दण्डधार=दण्डपुर) बिहार नामक गाँव (बिहार प्रान्त के पटना जिले में)। ई० १२ वीं शताब्दी तक, यहाँ मगध की राजधानी रही। यहाँ दण्डी सन्यासी बस्तियाँ होने से दण्डपुर=दण्डधार नाम पड़ा। पालवंशी प्रथम राजा गोपाल ने, बौद्धमठ (बिहार) बनवाया। अतएव, दण्डपुर से दण्ड-बिहार नाम पड़ा, किन्तु अब केवल 'बिहार' नाम रह गया।

३६ *पिंगलक* —पीलीभीत या हरदोई (उत्तरप्रदेश में)।

३७. *माणहल* —(१) मनाल (बद्रीनाथ में)। (२) मानसरोवर झील। (३) मोहमण्डस (अफगानिस्तान में)।

३८. *हूण* —(१) हिरात=हरयू वाले हूण)। (२) सिन्धनद-झेलम नदी के मध्य। (३) गन्दगढ़-सेंधा नमक के पर्वत के मध्य का देश। (४) तुर्किस्तान, पश्चिमी तातार देश, कैस्पियन समुद्र का उत्तरी भाग मिलाकर। हूण, चीन से मानसरोवर, कश्मीर, कैस्पियन सागर तक बढ़े, फिर खैबरघाटी से घुसकर, कश्मीर की तराई से रावलपिण्डी तक फैल गये, तब सिन्ध झेलम के मध्य जम गये। ई० ४५६-४५८ के मध्य, गुप्त-हूण युद्ध हुआ। ई० ४६५ में, हूण तोरमाण=तुण्डमान था। भानुगुप्त (गुप्तसम्राट) के सेनापति, गोपराज को मारकर, ई० ५१० में, हूणों ने 'एरन' (मध्यप्रदेश के सागर जिले) में राजधानी बनाया। गुप्त-साम्राज्य (३२०—५५० ई०) मुख्य गुप्त-साम्राज्य (३२०-५३० ई०)। षट्दर्शन वर्धनयुग (ई० पू० ७०० से ई० पश्चात् २०० तक) बनाया गया। पौराणिकयुग (३२०—८०० ई०)।

३९. *ग्रहल* —(१) कुर्रम नदी। (२) कोहाट (सीमाप्रान्त)। (३) कोहकन्द की पहाड़ियाँ, कोहशाखा, इण्डस कोहिस्तान।

४० *शीतक* —बद्रीनाथ, तिब्बत, कैलास, केदार, गौरीशंकर, नैपाल।

४१ *माण्डव्य* —(देखिए मध्यदेश का नं० ३ माण्डव्य)।

४२ *भूपुर* —भूतस्थान=भूतान (अंग्रेजी में भूटान) राजधानी पुनाखा (पुण्याख्या पुरी)।

४३. *गान्धार* —गान्धारदेश, राजधानी कन्दहार (गान्धार का अपभ्रंश)। पेशावर से डेरागाजीखाँ तक।

४४ *यशाग्नि* —(१) पेशावर। (२) कीर्तिनगर (देवप्रयाग से १६ मील)। देवप्रयाग (उत्तरप्रदेश के गढ़वाल जिले में, हरद्वार से ४४ मील)। (३) कीर्तिपुर (पंजाब के होशियारपुर जिले में)। (४) कीर्तिपुर (उत्तरप्रदेशी देहरादून से एक मील)। नं० ३-४ सम्भव विक्रम गुप्त कालीन।

४५ *हेमताल* —(हिमताल) मानसरोवर झील।

४६ *राजन्यपर* —खैबर की घाटी और काबुल नदी।

४७ *गव* —(१) काठमाण्डू (नैपाल) के पास, गोपुच्छ पर्वत। (२) पंजाब का गुजरात जिला।

४८. यौधेय —(युधिष्ठिर-पुत्र यौधेय) (१) रावी से यमुना तक (२) सतलज काठे से नीचे, लुधियाना से अलवर तक, राजधानी यौधेयायन=लुधियाना।

४९. दासमेय —दासुया (पंजाव के जालन्धर जिले में)।

५०. श्यामाकत्तेप—धानकुटा (नैपाल में)।

५१. धूर्तदेश —'उन्मत्तः कितवो धूर्तो धत्तूरः कनकाह्वयः।' (अमरकोश)। 'धूर्तोऽक्षदेवी कितवोऽक्षधूर्तो द्यूत-कृत्समाः।' (अमरकोश)। ये दो वाक्य हैं। धूर्त=जुआड़ी। मामा शकुनि, बड़े जुआड़ी थे और इनका देश, गान्धार था, क्योंकि शकुनि की बहिन, गान्धारी थीं। अतएव धूर्तदेश= जुआड़िओं का देश=शकुनिदेश=गान्धारदेश। शकुनि, प्रायः हस्तिनापुर में ही, अड्डा जमाये रहते थे।

ईशान देश [९]

(श्ले. ज्ये. रे. = बुध)

१. मेरुक —(देखिए उत्तरदेश का नं० ६ मेरु)।

२. नष्टराज्य —गोवी या शामू का मरुस्थल (तिव्वत के उत्तर-पूर्व तथा चीन के उत्तरी भूभाग)।

३. पशुपाल —पशुपति महादेव (नैपाल के काठमाण्डू नगर में)।

४. कीर —(कीरग्राम=काँगड़ा, पंजाव में)। कीरग्राम में, वैजनाथ का मन्दिर है। पूर्वी वैजनाथ के मन्दिर का स्थान, उड़ीसा के 'देवघर' नामक स्थान को समझिए। 'चितायां वैद्यनाथोऽस्ति' देवघर वाला ही है।

५. काश्मीर —चीन देश। यदि कीरकाश्मीर शब्द को कीरक+आश्मीर कहा जाय तो, आश्मीर के अर्थ, पर्वतीय जन हो जाते हैं; अतएव ईशानदेशीय पर्वतीय-नगर समझिए। परन्तु काश्मीर, सिन्धुनदी का उद्गम-स्थल तथा चीन देश, दोनों को कहा गया है।

६. अभिसार —(१) सिन्धु-झेलम नदी के मध्य, पश्चिमोत्तर पंजाव में, यहाँ सिकन्दरकालीन राजा आम्भीक की राजधानी, तक्षशिला (रावलपिण्डी) में थी। (२) कोंकण और मलावार (दक्षिण भारत में)। किन्तु ये दोनों स्थान ईशान में नहीं हो सकते; अतएव (३) कामरूप देश= गोहाटी (आसाम) में सम्भव, समझिए।

७. दरद —(१) भूटान। (२) दरदलिंग=दार्जिलिंग (आसाम में)।

८. तंगण —तंगल पर्वत (उत्तरी तिव्वत में)।

९. कुलूत —(देखिए वायव्य देश का नं० ७ कुलूत)। यह स्थान, यहाँ नहीं हो सकता अथवा वायव्य-उत्तर-ईशान का सीमावर्ती स्थान समझिए।

१०. सैरन्ध्र —सरहिन्द (पंजाब में)। वनवास में द्रौपदी, सैरन्ध्री बनकर, विराट के भवन में रही थी। 'सैरन्ध्री परवेश्मस्था, स्ववशा शिल्पकारिका।' (अमरकोश)। चतुःषष्टिकलाभिज्ञा, रूपशीलादिशालिनी। प्रसाधनोपचारज्ञा 'सैरन्ध्री' परिकीर्तिता॥ (अमरकोश-टीका)।

११. वनराष्ट्र —सिलहट (आसाम में)।

१२. ब्रह्मपुर —(१) वलिया (उत्तरप्रदेश में)। (२) गढ़वाल-कुमायूँ (उत्तरप्रदेश में)। (३) वर्मा देश।

१३. दार्व —(१) दारुवन (देवदारु वन)। (२) दार्जिलिंग (आसाम में)। (३) देवदारुवन, गोपेश्वर (रतीश्वर) के स्थान में। गोपेश्वर=हिमालय के गढ़वाल में एक गाँव। यह, कामदेव का भस्म-स्थल है (स्कन्द-पुराण)।

१४. डामर —(तन्त्र-शास्त्रीय शब्द) (१) डाफला प्रान्त और (२) गोहाटी (आसाम में)।

१५. वनराज्य —(देखिए नं० ११ वनराष्ट्र)।

१६ *किरात* —(१) आसाम के नागप्रदेश, राजधानी कामाख्या चेत्र (गोहाटी) में थी (महाभारत)। (२) नैपाल से पूर्व का भूभाग, किरात-भूमि।

१७ *चीन* —प्रसिद्ध।

१८ *कौणिन्द* —(देखिए वायव्य देश का न० ७ कुलूत)।

१९ *भिल्लापलाल*—(१) सदियां (आसाम के पूर्वोत्तर)। (२) आसाम की नागा बस्तियाँ। भल्लदेश = बलख से झेलम तक था। कालान्तर में नाग लोग, आसाम तक बढ गये।

२० *जटासुर* —(१) मद्रकाधिपति जटासुर, युधिष्ठिर की राजसूय-यज्ञ में गया था (महाभारत)। (२) नैपाल के जनकपुर के पास 'जटेश्वर' नामक स्थान है। यहाँ जटासुर मारा गया था।

२१ *कुनट* —आसाम की नट जातियाँ।

२२ *खस* —खासी पर्वत (आसाम में) यह शब्द, पूर्व-पश्चिम-ईशान, तीन स्थानों में आया है। अतएव, खासी पर्वत, पूर्व ईशान का सीमावर्ती है।

२३ *घोष* —'घोष आभीरपल्ली स्यात्।' (अमरकोश)। गोयलपाड़ा-गोहाटी (आसाम)।

२४ *कुचिक* —कुच बिहार राज्य (बगाल के उत्तरी भूभाग में)।

२५ *एकचरण* —एकपाद पशुदेश, एकचक्रा, पुरपाद आदि शब्दार्थ से—'आरा' नगर (बिहार में)।

२६ *अनुविश्व* —ब्रह्मपुत्र तट पर, विश्वनाथ नामक एक नगर (आसाम में)।

२७ *सुवर्णभू* —बर्मा देश।

२८ *वसुधन* —मिथिला-राज्य (नैपाल बिहार में)।

२९ *दिविष्ठ* —देवागिरि (देवघर, बिहार उडीसा की सीमा में)।

३० *पौरव* —पारो (भूटान में)

३१ *चीरनिवसन*—(१) चेरापूँजी (आसाम में)। (२) बिहार प्रान्त के बौद्ध स्थल।

३२ *त्रिनेत्र* —(१) त्रिपुरा (पूर्वी बगाल में)। सीमावर्ती स्थान। (२) अनुविश्व (देखिए नं २६)।

३३ *मुञ्जाद्रि* —पटकाई हिल (पूर्वी आसाम में)।

३४ *गन्धर्व* —(१) इम्फाल मनीपुर (पूर्वी आसाम में) नृत्यशैली का स्थान। (२) मञ्चूरिया प्रदेश।

नोट—

पृष्ठ ३६६-४१८ में प्रदर्शित, लगभग ५०० स्थानों का परिचय है। किन्तु, हमारे पास १५००० स्थानों से युक्त 'स्थान-परिचय' ग्रन्थ, मुद्रण की प्रतीक्षा कर रहा है। अस्तु।

कूर्म-चक्र में, नक्षत्र-स्थापना का नियम कुछ मतभेद-युक्त है। क्योंकि, अभी तक के विद्वान, मध्यदेशाधिपति सूर्य मानते हुए भी कृत्तिकादित्रय नक्षत्र शब्द से कृत्तिका रोहिणी-मृगशिरा नक्षत्र की स्थापना करते हैं, किन्तु जबकि, सूर्य अधिपति है तब, कृत्तिकादित्रय शब्द से, कृत्तिका-उत्तराफाल्गुनी उत्तराषाढ नक्षत्र की स्थापना करना चाहिए। इसी प्रकार बृहत्संहिता में, आग्नेय दिशा में 'आश्लेषाद्ये त्रिके देशा।' पाठ कर दिया है जो कि, कर्मकाण्डमत से, भिन्न हो जाता है। कर्मकाण्ड के नवग्रह चक्र में, आग्नेय दिशा में, चन्द्र की स्थापना होती है, परन्तु बृहत्संहिता के 'आश्लेषाद्ये' पाठ के कारण, आग्नेय में, बुध की स्थापना हो जा रही है। यह अव्यवस्था, सकलनकर्ताओं एवं अनुवादकर्ताओं की ज्ञात हो रही है। पूर्वापर (ग्रन्थान्तर) वाक्यों का ध्यान दिये बिना, केवल 'मक्षिकास्थाने मक्षिका' रूपक में अनुवाद कर दिया। तथ्यतः भारत के आग्नेय देश में, जल (समुद्र) का बाहुल्य है, अतएव, *आग्नेयपति चन्द्र ही होना चाहिए, जैसा कि, कर्मकाण्ड में विधान भी है। इसी प्रकार बुध नपुसक या जड़ता का कारक है, इसे, ईशानपति मानना ठीक है, क्योंकि ईशान* में, पर्वतीय भाग अधिक है। जड़ = पाषाण। आगे 'देश-चक्र' में, इन विषयों का सुधार कर दिया गया है।

अंकों के मित्रादि

अंक	१	२	३	४	५	६	७	८	९
पति	+सू.	-चं. (के.)	+गु.	-सू. (रा.)	+बु.	+शु.	+चं.	-श.	+मं.
स्वांक	१	२	३	४	५	६	७	८	९
त्रिकोणांक	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८
मित्रांक	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७
उच्चांक	२८	२९	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६
शुभांक (तारीख)	१।१० १९।२८	२।११ २०।२९	३।१२ २१।३०	४।१३ २२।३१	५।१४ २३	६।१५ २४	७।१६ २५	८।१७ २६	९।१८ २७
मित्रांक	३।५ ७	४।५।६ ८।९	१।६ ७	२।५ ६।८	१।३ ६।७	१।३ ५।७	१।३ ५।६	५।६ ७	१।२ ३।७
सम	६।९	३	८।९	३	२।८।९	८।९	८।९	२।३।४	५।६।८
शत्रु	२।४	१	२	९	४	२	२	९	४
अतिशत्रु	८	७	४	१।७	×	४	४	१	×
वार	रविवार	सोमवार	गुरुवार	रविवार	बुधवार	शुक्रवार	सोमवार	शनिवार	मंगलवार

जन्म का अंक

यह दो प्रकार से बनाया जाता है। (१)—जिस तारीख में जन्म हो, केवल उसके द्वारा तथा (२)—तारीख-मास-सन् के योग द्वारा। यथा, तारीख १९ को जन्म है तो, १९ = १ + ९ = १० = १ + ० = १ अंक हो गया। दूसरे प्रकार से ता० १९।७।१९११ ई. का जन्म है; अतएव—

१ + ९ + ७ + १ + ९ + १ + १ = २९ = २ + ९ = ११ = १ + १ = २ (जन्म का) अंक हो गया।

नोट—

'अंकों के मित्रादि' चक्र में, अङ्क १-२ के नीचे, कृष्णपक्ष का वार तथा ४-७ के नीचे, शुक्लपक्ष का वार समझिए। इसके बाद, जन्म के अंक द्वारा, इस प्रकार उपयोग कीजिए; कि,

जिस वर्ष में, पूर्वोक्त (तारीख-मास-सन् को जोड़कर आये हुए) २ अंक के नीचे (उपर्युक्त-चक्र-द्वारा) के शुभांक और मित्रांक (२।११।२०।२९ और ४।५।६।८।९) आ जायँगे, वह वर्ष, किसी भी कारण से, शुभ व्यतीत होगा। इससे, प्रत्येक दिन का भी शुभाशुभ ज्ञात हो सकता है। यथा—

वर्ष का शुभांक

जिसका जन्म १९।७।१९११ ई. को हुआ है, उसका, तारीख १९।७।१९५६ ई. में, ४६ वाँ वर्ष प्रारम्भ होगा। यह कैसा रहेगा ? इसे जानने के लिए १९।७।१९५६ का योग कर = १ + ९ + ७ + १ + ९ + ५ + ६ = ३८ = ३ + ८ = ११ = १ + १ = २ रूढ़ि अंक (इस प्रकार) बनाइए। जन्म का और ४६ वें वर्ष का, अंक २ (एक-समान) आने से, इसका ४६ वाँ वर्ष शुभकारक रहेगा; अर्थात् ४६ वें वर्ष में, किसी प्रकार की, विशेष अच्छाई होगी। "फलतः यह ग्रन्थ, १९५७ ई० की द्वितीय तिमाही में प्रकाशित हुआ।"

बालमुकुन्द का नं० ७

सूर्यांक — ५ १ ५ ७ ३ ६ ३ १ ९ = ४० योग
वर्ण — B A L M U K U N D = बालमुकुन्द
चन्द्रांक — १ ७ ६ ५ ८ ९ ८ ७ ६ = ५७ योग

} =४०+५७=९७=९+७=१६
१६= १+६=७

इस प्रकार से, बालमुकुन्द का रूढ़ि अंक ७ बन गया।

जबलपुर का नं० ७

सूर्यांक — ९ १ ५ १ ५ ६ ३ ३ = ३३ योग
वर्ण — J A B A L P U R = जबलपुर
चन्द्रांक — ३ ७ १ ७ ६ ५ ८ ९ = ४६ योग

} =३३+४६=७९=७+९=१६
१६=१+६=७

व्यक्ति नाम और स्थान का, एक ही अंक आने से, इस व्यक्ति को, इस स्थान में शुभ होगा। क्योंकि, दोनों के ७ अंक का स्वामी, चन्द्र है। (देखिए, नीचे के चक्र में, सूर्यांक और पति)

हिन्दी वर्णमाला द्वारा

सूर्यांक	१	५.	६	९	३.	८.	८.	३.	९.	६	५	७
पति	सू.	बु.	शु.	मं०	गु	श.	श.	गु.	मं.	शु.	बु.	चं.
राशि	५	३.	२	१	९	१०	११	१२	८	७	६	४
	मा	का	इ	चू	ये	भो	गू	दी	तो.	रा	टो	ही
	मी	की	उ	चे	यो	ज	गे	दू	ना	री	प	हू
स्वर	मू	कु	ए	चो	भ	जी	गो	थ	नी	रू	पी	हे
	मे	घ	ओ	ला	भी	खी	सा	झ	नू	रे	पू	हो
और	मो	ङ	वा	ली	भू	खू	सी	ञ	ने	रो	प	डा
	टा	छ	वी	लू	ध	खे	सू	दे	नो	ता	ण	डी
व्यञ्जन	टी	के	वू	ले	फ	खो	से	दो	या	ती	ठ	डू
	टू	को	वे	लो	ढ	गा	सो	च	यी	तू	पे	डे
	टे	हा	वो	अ	भे	गी	दा	ची	यू	ते	पो	डो
चन्द्रांक	७	१	५	६	९	३	८	८	३	९	६	५

नोट— सूर्यांक या चन्द्रांक में १ से ९ तक के, अंकों में से २ और ४ के अंक नहीं हैं। क्योंकि ४ का स्वामी राहु और २ का स्वामी केतु होता है।

× × ×

आधा अक्षर को पूरा समझकर, उदाहरण की भाँति, अपने नाम और स्थान का रूढ़ि अंक बनाइए। यथा,

सूर्यांक — ६ ९ १ ५ ९ ८ = ३८
नाम — बा ल मु कु न् द = बालमुकुन्द
चन्द्रांक — ५ ६ ७ १ ३ ८ = ३०

} =३८+३०=६८=६+८=१४
१४=१+४=५ बुध

सूर्यांक — ८ ६ ९ ५ ६ = ३४
नाम — ज ब ल पु र = जबलपुर
चन्द्रांक — ३ ५ ६ ६ ९ = २९

} =३४+२९=६३=६+३=९ मंगल

जब, भारतीय नाम के अंक बनाना हो तो, इस वर्णमाला से बनाइए। बुध-गुरु सतोगुणी, सूर्य-चन्द्र-शुक्र रजोगुणी और मंगल-शनि-राहु-केतु तमोगुणी होते हैं।

अंकों के मित्रादि

अंक	१	२	३	४	५	६	७	८	९
पति	+सू.	-चं. (के.)	+गु.	-सू. (रा.)	+बु.	+शु.	+चं.	-श.	+मं.
स्वांक	१	२	३	४	५	६	७	८	९
त्रिकोणांक	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८
मित्रांक	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७
उच्चांक	२८	२९	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६
शुभांक (तारीख)	१।१० १९।२८	२।११ २०।२९	३।१२ २१।३०	४।१३ २२।३१	५।१४ २३	६।१५ २४	७।१६ २५	८।१७ २६	९।१८ २७
मित्रांक	३।५ ७	४।५।६ ८।९	१।६ ७	२।५ ६।८	१।३ ६।७	१।३ ५।७	१।३ ५।६	५।६ ७	१।२ ३।७
सम	६।९	३	८।९	३	२।८।९	८।९	८।९	२।३।४	५।६।८
शत्रु	२।४	१	२	९	४	२	२	९	४
अतिशत्रु	८	७	४	१।७	×	४	४	१	×
वार	रविवार	सोमवार	गुरुवार	रविवार	बुधवार	शुक्रवार	सोमवार	शनिवार	मंगलवार

जन्म का अंक

यह दो प्रकार से बनाया जाता है। (१)—जिस तारीख में जन्म हो, केवल उसके द्वारा तथा (२)—तारीख-मास-सन् के योग द्वारा। यथा, तारीख १९ को जन्म है तो, १९ = १ + ९ = १० = १ + ० = १ अंक हो गया। दूसरे प्रकार से ता० १९।७।१९११ ई. का जन्म है; अतएव—

१ + ९ + ७ + १ + ९ + १ + १ = २९ = २ + ९ = ११ = १ + १ = २ (जन्म का) अंक हो गया।

नोट—

'अंकों के मित्रादि' चक्र में, अङ्क १-२ के नीचे, कृष्णपक्ष का वार तथा ४-७ के नीचे, शुक्लपक्ष का वार समझिए। इसके बाद, जन्म के अंक द्वारा, इस प्रकार उपयोग कीजिए; कि,

जिस वर्ष में, पूर्वोक्त (तारीख-मास-सन् को जोड़कर आये हुए) २ अंक के नीचे (उपर्युक्त-चक्र-द्वारा) के शुभांक और मित्रांक (२।११।२०।२९ और ४।५।६।८।९) आ जायँगे, वह वर्ष, किसी भी कारण से, शुभ व्यतीत होगा। इससे, प्रत्येक दिन का भी शुभाशुभ ज्ञात हो सकता है। यथा—

वर्ष का शुभांक

जिसका जन्म १९।७।१९११ ई. को हुआ है, उसका, तारीख १९।७।१९५६ ई. में, ४६ वाँ वर्ष प्रारम्भ होगा। यह कैसा रहेगा ? इसे जानने के लिए १९।७।१९५६ का योग कर = १ + ९ + ७ + १ + ९ + ५ + ६ = ३८ = ३ + ८ = ११ = १ + १ = २ रूढ़ि अंक (इस प्रकार) बनाइए। जन्म का और ४६ वें वर्ष का, अंक २ (एक-समान) आने से, इसका ४६ वाँ वर्ष शुभकारक रहेगा; अर्थात् ४६ वें वर्ष में, किसी प्रकार की, विशेष अच्छाई होगी। "फलतः यह ग्रन्थ, १९५७ ई० की द्वितीय तिमाही में प्रकाशित हुआ।"

अंकों की विशेष संज्ञाएँ

धनात्मक—१, ३, ५, ६, ७, ६। ऋणात्मक—२, ४, ८। अग्नि—१, ५, ६। वायु—२, ६। जल—३, ७। पृथ्वी—४, ८। आकाश—०। शारीरिक—४, ५। मानसिक—१, ४, ८, २२। आत्मिक—२, ३, ५, ६। प्राज्ञ—७, ६, ११, २२। द्विस्वभाव—४, ५, २२। इच्छा पर प्रभाव—१, २, ३। व्यक्तित्व पर प्रभाव—१, ३, ६, ११, २२। लौकिक प्रभाव—३, ६, ११। आध्यात्मिक प्रभाव—१, ११, २२। भयकारक—१३, १४, १६, १६।

ता १६।७।१६११ में जन्म हुआ। १ (+सूर्य) +६ (+मंगल) +७ (+चन्द्र) +१ (+सू०) +६ (+मंगल) + १ (+ सू०) + १ (+ सू.) = २६ = (२ के+६ म०) से २+६=११ (१+सू. +१+सू) =२ [− च० (केतु)] का अंक बना।

अंकों का गुण-योग

तारीख		ग्रह	सांक-गुण
१	=	+सूर्य	१ रजोगुण
६	=	+मंगल	२ तमोगुण
७	=	+चन्द्र	३ रजोगुण
१	=	+सूर्य	४ रजोगुण
६	=	+मंगल	५ तमोगुण
१	=	+सूर्य	६ रजोगुण
१	=	+सूर्य	७ रजोगुण
२६	=	२—के +६+म०=	(रज ५ तम २)

गुण-योग का फल

यह व्यक्ति ५/७ रजोगुणी और २/७ तमोगुणी होगा। हिन्दी वर्णमाला के आधार पर, बालमुकुन्द का ५ अंक (पृष्ठ ४२०) अर्थात् बुध के गुण कार्य की प्रधानता रहेगी। ५ अंक के धनात्मक, अग्नि-तत्त्व, शारीरिक, आत्मिक, द्विस्वभाव आदि (विशेष-संज्ञा-द्वारा) गुण हैं। अतएव सृजन कार्य, उष्ण-तत्त्व, शारीरिक परिश्रम करने वाला, आत्मिक गुणों से युक्त और द्विस्वभावी ढंग का होगा।

दिन का अंक

अपने नाम का अंक बनाकर, किसी भी दिन की तारीख, मास, सन् जोडकर अंक बनाले। यदि, 'अंकों के मित्रादि चक्र' में, नाम वाले अंक के नीचे, दिन का अंक, शुभांक या मित्रांक हो तो, उस दिन शुभफल होता है। यथा—आज (५६ वर्षारम्भ) ता २०।७।१६५६=३०=३+०=३ 'दिन का' अंक हुआ। 'अंकों के मित्रादि' चक्र में, नाम (बालमुकुन्द) के अंक ५ के नीचे, दिन का अंक ३ मित्रांक है। अतएव, आज का फल, शुभ रहेगा। इसी प्रकार, शुभ-वर्ष, शुभ-मास, शुभ-तारीख (दिन) निकालकर, अपना-अपना अनुभव कीजिए।

नोट—

पृष्ठ ४२३ से 'नक्षत्र-विज्ञान' लिखा जा रहा है। शास्त्रकारों ने 'नक्षत्र-सूची' ज्योतिषी को 'निन्दित' माना है। नक्षत्र-सूची की परिभाषा—"(१) घर-घर जाकर, बिना पूँछे ही ज्योतिष-फल बताने वाला। (२) सिद्धान्त ग्रह-साधन तथा तिथ्यादि-साधन, न जानने वाला। (३) नक्षत्राधार से अतोपजास करने वाला। (४) नक्षत्र-पद्धति द्वारा, ज्योतिष-फल बताने वाला। (५) नक्षत्र, तिथि पुण्याह, मुहूर्त, मंगलकार्य (पुरोहिती-ज्योतिष) बताने वाला।" इस प्रकार नक्षत्र-सूची के ५ भेद, वाराहसंहिता, वराहमिहिर, सुमन्तु, महाभारत कश्यप, ब्रह्मपुराण, मनु, यम आदि द्वारा वर्णित हैं। परन्तु, वराह, वशिष्ठ, गर्ग, सूर्यसिद्धान्त, वाराहसंहिता, मनु, न्याय शास्त्र आदि के मत से, प्रश्न करने पर ही फल बताने वाला, सिद्धान्त-गणितज्ञ, त्रय-गणितज्ञ, वेध-गणितज्ञ, शास्त्रीय प्रमाण से शुद्ध मुहूर्त बताने वाला, नक्षत्र-सूची तो, होता ही नहीं, वरन्, वह यशस्वी होकर, परम-गति (ब्रह्मलोक) भी पाता है। हाँ, फलितज्ञ को चाहिए कि, वे फल— जिनके द्वारा, व्यक्ति या देश को हानि या दुःख हो जाय।'—न बतावें। अन्यथा 'अपाय ज्योतिषी' होता है। जैसे, जुआँ का मुहूर्त, चोरी करने का मुहूर्त, अमुक देश पर 'साढ़े-साती-शनि' है, स्वदेशीय कर्णधारों के दुर्योगों का, समाचार-पत्र-द्वारा, प्रचार करना, किसी कन्या या स्त्री के गुप्त-फल बताना, प्रत्येक दृष्टि-कोण से, नियम-विरुद्ध है।

नक्षत्र-विज्ञान

चक्र 'अ'

नक्षत्र	राश्यादितक	दशेश	गुण	अंग	जाति	नोट	नक्षत्र	राश्यादितक	दशेश	गुण	अंग	जाति
अश्विनी	०।१३।२०	केतु	तम	पादोपरि	पुरुष	मघा = ओठ और डाढ़ी.	स्वाती	६।२०।००	राहु	तम	छाती	स्त्री
भरणी	०।२६।४०	शुक्र	रज	पादतल	स्त्री		विशाखा	७।०३।२०	गुरु	सत	हृदय	स्त्री
कृत्तिका	१।१०।००	सूर्य	रज	शिर	स्त्री		अनुराधा	७।१६।४०	शनि	तम	उदर	पुरुष
रोहिणी	१।२३।२०	चन्द्र	रज	भाल	स्त्री		जेष्ठा	८।००।००	बुध	सत	दा बगल	स्त्री
मृगशिरा	२।०६।४०	मंगल	तम	भौंह	नपुं.		मूल	८।१३।२०	केतु	तम	बा. बगल	नपुं.
आर्द्रा	२।२०।००	राहु	तम	नेत्र	स्त्री		पूर्वाषा.	८।२६।४०	शुक्र	रज	पीठ	स्त्री
पुनर्वसु	३।०३।२०	गुरु	सत	नाक	पुरुष		उत्तराषा	९।१०।००	सूर्य	रज	कमर	स्त्री
पुष्य	३।१६।४०	शनि	तम	मुख	पुरुष		श्रवण	९।२३।२०	चन्द्र	रज	गुप्तांग	पुरुष
श्लेषा	४।००।००	बुध	सत	कान	स्त्री		धनिष्ठा	१०।०६।४०	मंगल	तम	गुदा	स्त्री
मघा	४।१३।२०	केतु	तम	डाढ़ी	स्त्री		शतभिषा	१०।२०।००	राहु	तम	दा. ऊरु	नपुं.
पूर्वाफा.	४।२६।४०	शुक्र	रज	दा. हाथ	स्त्री		पूर्वाभा.	११।०३।२०	गुरु	सत	बा. ऊरु	पुरुष
उत्तराफा.	५।१०।००	सूर्य	रज	बा. हाथ	स्त्री		उत्तराभा.	११।१६।४०	शनि	तम	पिंडुरी	पुरुष
हस्त	५।२३।२०	चन्द्र	रज	करांगुलि	पुरुष		रेवती	००।००।००	बुध	सत	गुल्फ	स्त्री
चित्रा	६।०६।४०	मंगल	तम	गला	स्त्री							

चक्र 'ब'

राशि	पति	जाति	स्थिति	अंग	गुण
मेष	मंगल	पुरुष	विषम	शिर	चर
वृष	शुक्र	स्त्री	सम	मुख	स्थिर
मिथुन	बुध	पुरुष	विषम	कन्धा	द्विस्वभाव
कर्क	चन्द्र	स्त्री	सम	छाती	चर
सिंह	सूर्य	पुरुष	विषम	हृदय	स्थिर
कन्या	बुध	स्त्री	सम	उदर	द्विस्वभाव
तुला	शुक्र	पुरुष	विषम	गुप्तांग	चर
वृश्चिक	मंगल	स्त्री	सम	पीठ	स्थिर
धनु	गुरु	पुरुष	विषम	ऊरु	द्विस्वभाव
मकर	शनि	स्त्री	सम	घुटना	चर
कुम्भ	शनि	पुरुष	विषम	पैर	स्थिर
मीन	गुरु	स्त्री	सम	चरण	द्विस्वभाव

नोट—

पृष्ठ २० का, चक्र ४ होते हुए भी, चक्र 'ब' को, अंग-विभाग जानने लिए लिखना पड़ा। अस्तु। आगे 'नक्षत्र-विज्ञान' की विशेषता से [ग्रह-स्पष्ट-द्वारा, उपर्युक्त चक्र 'अ' से, ग्रहों के नक्षत्र जानने के बाद] समझिए:—

"सूर्य, कृ. उफा. उषा. (तीनों) के प्रथम चरण में। मंगल, धनिष्ठा के आदि के दो चरण में। बुध, रेवती में। गुरु, पुन. वि. पूभा. (तीनों) के चौथे चरण में।"— अपनी, एक विशेषता रखते हैं। क्योंकि, इन नक्षत्रों में, जब इनकी ही दशा होती है और ये ग्रह, 'नवांश तथा दशा' के क्रम से, कोई उच्च, नीच, स्वगृही, [illegible]ही आदि संज्ञा में हो

चक्र 'स'

ग्रह	अंग	गुण	मित्र राशि	शत्रु राशि	उच्च राशि	नीच राशि	राशीश	श्रेष्ठ राशि	नक्षत्रेश	अवधि १ राशि में
सूर्य	उदर	रज	४।८।९।१२	२।१०।११	मेष	तुला	सिंह	सिंह	कृ. उफा. उपा.	१ मास
चन्द्र	वक्ष	रज	३।५।६	×	वृष	वृश्चिक	कर्क	कर्क	रो. ह. श्र.	२¼ दिन
मंगल	शिर	तम	५।९।१२	३।६	मकर	कर्क	मेष-वृश्चि.	वृश्चिक	मृ. चि. ध.	१½ मास
बुध	गला, कन्धा	सत	२।५।७	४	कन्या	मीन	मिथु.-कन्या	मिथुन	श्ले. ज्ये. रे.	१ मास
गुरु	कटि, गुप्तांग	सत	१।५।६।८	२।३।७	कर्क	मकर	धनु-मीन	धनु	पुन. वि. पूभा.	१३ मास
शुक्र	मुख	रज	३।९।१०।११	४।५	मीन	कन्या	वृष-तुला	तुला	भ. पूफा. पूषा	१ मास
शनि	ऊरु	तम	२।३	४।५।८	तुला	मेष	मक.-कुम्भ	मकर	पुष्य अनु. उ.	३० मास
राहु	पैर	तम	३।६।७।९ १०।१२	४।५	वृश्चिक	वृष	मकर	कर्क	आर्द्रा स्वा श.	१८ मास
केतु	पैर	तम	३।६।७।९ १०।१२	४।५	वृश्चिक	वृष	मेष	तुला	अ. म. मू.	१८ मास

नवांश–चक्र

नवांश में	(भेश केतु) तम	(भेश चन्द्र) रज	(भेश गुरु) सत	नक्षत्र का
मेष के	अ. म. मू.	रो. ह. श्र.	पुन. वि. पूभा.	प्रथम पाद
वृष के	"	"	"	द्वितीय "
मिथु के	"	"	"	तृतीय "
कर्क के	"	"	"	चतुर्थ "
नवांश में	**(भेश शुक्र) रज**	**(भेश मंगल) तम**	**(भेश शनि) तम**	**नक्षत्र का**
सिंह के	भ. पूफा. पूषा.	मृ. चि. ध	पुष्य अनु. उभा.	प्रथम पाद
कन्या के	"	"	"	द्वितीय "
तुला के	"	"	"	तृतीय "
वृश्चि. के	"	"	"	चतुर्थ "
नवांश में	**(भेश सूर्य) रज**	**(भेश राहु) तम**	**(भेश बुध) सत**	**नक्षत्र का**
धनु के	कृ. उफा उपा.	आर्द्रा स्वा. श.	श्ले. ज्ये. रे.	प्रथम पाद
मक. के	"	"	"	द्वितीय "
कुम्भ के	"	"	"	तृतीय "
मीन के	"	"	"	चतुर्थ "

भेश = नक्षत्र-पति। यदि कोई ग्रह, अश्विनी के प्रथम चरण में हो तो, मेष के नवांश में होगा, एवं रेवती के तीसरे चरण में हो तो, कुम्भ के नवांश में होगा। यदि सूर्य, अश्विनी-मघा-मूल के प्रथम चरण में हो तो, तामसिक उच्च में, रो. ह. श्र. के प्रथम चरण में हो तो, राजसिक उच्च में और पुन. वि. पूभा. के प्रथम चरण में हो तो, सात्त्विक उच्च में होगा। इसे आगे, चक्र 'द' से भी, स्पष्ट समझिए।

ग्रहों के, सत्त्व-रज-तम गुण वाले, उच्च-नीच नवांश

चक्र 'द'

उच्चग्रह	सत्त्व	रज	तम	चरण में	नवांश	नीचग्रह
सूर्य	पुन. वि. पूभा.	रो. ह. श्र.	अश्विनी मघा मूल के	प्रथम	मेष	शनि
चन्द्र	"	"	" "	द्वितीय	वृष	राहु-केतु
गुरु	"	"	" "	चतुर्थ	कर्क	मंगल
बुध	×	भ. पूफा. पूषा.	मृ.चि.ध.पुष्य.अनु.उभा"	द्वितीय	कन्या	शुक्र
शनि	×	"	" "	तृतीय	तुला	सूर्य
राहु-केतु	×	"	" "	चतुर्थ	वृश्चिक	चन्द्र
मंगल	श्ले. ज्ये. रे.	कृ. उफा. उषा.	आर्द्रा स्वाती शत. "	द्वितीय	मकर	गुरु
शुक्र	"	"	" "	चतुर्थ	मीन	बुध

अपेक्षा-कृत, बलिष्ठ-भाव

१२ वें की अपेक्षा ६ ठा बलिष्ठ, अशुभता में	१ ले की अपेक्षा ४ था, ५ वाँ बलिष्ठ, शुभता में
६ ठे " " ८ वाँ " "	४ थे " " ७ वाँ " "
११ वें " " ३ रा " "	५ वें " " ९ वाँ " "
३ रे " " ६ ठा " "	७ वें " " १० वाँ " "

फल-बोधक-नियम

(१) नक्षत्र, राशि, ग्रह आदि की विशेष संज्ञाएँ, चक्र अ, ब और स में दिखायी गयी हैं। प्रत्येक ग्रह की ७ वें भाव में, पूर्णदृष्टि होती है। साथ ही, मंगल की ४।८ वें, गुरु की ५।९ वें और शनि की ३।१० वें भी, पूर्ण-दृष्टि होती है। ६, ८, १२ भाव को त्रिकस्थान। ३, ६, ११ भाव को उपचय। १, ५, ९ भाव को त्रिकोण। १, ४, ७, १० भाव को केन्द्र और १ को लग्न कहते हैं। इतना जानने के उपरान्त, अग्रिम लेख पर ध्यान दीजिए।

(२) जब बुध और गुरु (सात्त्विक ग्रह), अपने सात्त्विक उच्चांश या नीचांश में होते हैं, तब इनका, सात्त्विक उच्च या नीच प्रभाव, व्यक्ति पर पड़ता है। यही जब, अपने राजसिक उच्चांश या नीचांश में होते हैं, तब इनका, राजसिक उच्च या नीच प्रभाव, व्यक्ति पर पड़ता है। यही जब, अपने तामसिक उच्चांश या नीचांश में होते हैं, तब, इनका तामसिक उच्च या नीच प्रभाव, व्यक्ति पर पड़ता है। ध्यान रहे कि, बुध-शनि-राहु-केतु, सात्त्विक उच्च नवांश में तो, हो ही नहीं सकते, परन्तु, सात्त्विक नीच नवांश में हो जाते हैं।

(३) जब शनि, राहु, केतु, अपने राजसिक उच्चांश या नीचांश में होते हैं तब, इनका प्रभाव, कुछ शुभता के साथ, व्यक्ति पर पड़ता है और जब ये, अपने तामसिक उच्चांश या नीचांश में होते हैं तब ये, अधिक प्रमाण से, तामसिक उच्च या नीच 'फल' करते हैं।

(४) जब सूर्य, चन्द्र, शुक्र, सात्त्विक उच्चांश या नीचांश में आ जाते हैं तब, इनका शुभफल और राजसिक में आने पर समफल तथा तामसिक में आने पर अशुभ फल, 'उच्च-नीच ढंग से' दिखलाते हैं।

(५) जो ग्रह, अपने ही गुण में रहे तो, वे, अपने मुख्य-गुण का प्रभाव दिखलाते हैं। दूसरे के गुणों में जाकर ग्रह, दूसरे के ही गुणों को अपनाने लगता है। सत्त्व से अभिप्राय है, पूर्ण शुभ। रज से अभिप्राय है,

शुभाशुभ। तम से अभिप्राय है, पूर्ण अशुभ। प्रत्येक ग्रह, अपने दशापति के आधार पर, फल करता है। किसी भाव का स्वामी, जब त्रिकेश की दशा में होता है तब, उस भाव का फल, अशुभ कर देता है; और जब, किसी भाव का स्वामी, त्रिकोणेश की दशा मे होता है तब, शुभफल देता है।

लग्नों के योगकारक, ग्रह, वार (भावेश), राशि और नक्षत्र

लग्न	ग्रह या वार	राशि	नक्षत्र
मेष	रवि, चन्द्र, गुरु	कर्क – सिंह – धनु	रो. हस्त, श्रवण, उफा. उषा.
वृष	रवि, बुध, शनि	मिथु.– कन्या – मक. – कुम्भ	पुष्य. अनु. उभा. उफा. उषा. रेव.
मिथुन	बुध, शुक्र, चन्द्र	कर्क – कन्या – तुला – मीन	रो. हस्त, श्रवण, पूफा. पूषा. रेवती
कर्क	गुरु	धनु – मीन	पुनर्वसु, विशाखा, पूभा
सिंह	गुरु	मेष – वृष – वृश्चि. – धनु	पुनर्वसु, विशाखा, पूभा.
कन्या	गुरु, शुक्र	वृष – मिथु. – तुला – धनु	पुनर्वसु, पूफा. पूषा.
तुला	चन्द्र, बुध, शनि	मिथु.– कर्क – मक. – कुम्भ	रेवती पुष्य अनु. उभा. रो. ह. श्रवण
वृश्चिक	रवि, चन्द्र, गुरु	कर्क – सिंह – मीन	पुन. पूभा. वि. रो. ह. श्र. उफा. उषा.
धनु	रवि, बुध, गुरु	मेष – सिंह – कन्या – मीन	पुन. पूभा. वि. रे. उफा. उषा.
मकर	बुध, शुक्र	वृष – कन्या – तुला	पुष्य, अनुराधा, उभा रेवती
कुम्भ	बुध, शुक्र	वृष – मिथु. – तुला	रेवती
मीन	चन्द्र, गुरु	कर्क – धनु	रो. हस्त, श्रवण, पुन. विशा पूभा.

योगकारक–सिद्धान्त

(१) मेष लग्न वाले को, सूर्य, चन्द्र, गुरु योगकारक हैं। रन्ध्रेश होने से मंगल, नाशकारक है तथा तृतीयेश–षष्ठेश होने से बुध, बाधाकारक है। यदि शुक्र, चन्द्र की दशा में हो तो, थोडा शुभ होगा; किन्तु सूर्य या गुरु की दशा में आने पर, प्रयत्न के बाद शुभफल देता है। यदि मेष लग्न वाले के सूर्य, चन्द्र, गुरु या इनमें से कोई, जब सूर्य या चन्द्र या गुरु की ही दशा मे आ जाते हैं तब, राजयोग (विशेष-सुख योग) के लक्षण दिखते हैं; अथवा मेष लग्न वाले के कोई ग्रह, सूर्य, चन्द्र, गुरु की दशा मे आने पर, अपेक्षाकृत, शुभ-लक्षण दिखाता है।

(२) लग्न से १, २, ४, ५, ७, ६, १० वें भाव के अधिपति, यदि ३, ६, ८, ११, १२ वें भाव के स्वामी न हों और लग्नेश के मित्र हों तथा लग्नेश को शुभता दे सकते हों तो, 'योगकारक' हो जाते हैं। नवमस्थ, *पुष्य का मंगल, उदररोग या वायुरोग करता है। लाभस्थ, धनिष्ठा का बुध, सूर्य के साथ हो तो,* शिर-पीड़ा होती है। चतुर्थस्थ, पूफा. का शुक्र, मधुमेह (डाईबिटीज) या जलविकार से रोग करता है। षष्ठेश, शुक्र भरणी में हो तो, गुप्तरोग होता है। त्रिकेश की दृष्टि, जिन–जिन भावों के स्वामियों पर होगी, उन–उन भावों की हानि मानी गयी है। यथा–(पृष्ठ २२६ में), इसमें, षष्ठेश चन्द्र की दृष्टि, द्वितीयेश-लाभेश पर होने से, *धन तथा लाभ की हानि, बताता है।*

(३) जातक ग्रन्थों के कोई योग, *आप, जब भी जन्म-चक्र मे देखें, उस समय, उनका बल अवश्य देखना चाहिए।* बल देखने के लिए, सबसे सरल पद्धति, नाक्षत्र–पद्धति (Stellar-System) ही है। किसी योग के, योगकारक ग्रह, जब किसी योगकारक ग्रह के ही नक्षत्र मे होंगे, तब, उनका शुभ-फल मिलेगा, अन्यथा नहीं। यथा, (पृष्ठ २२६ मे) इसमे, पहिला, "चन्द्र-गुरु का केन्द्रीय-योग होने से 'गजकेशरीयोग' बनता है।" परन्तु, चन्द्र अश्विनी (केतु दशा) और गुरु, स्वाती (राहुदशा) में होने से, *'गजकेशरीयोग' नष्ट हो गया। क्योंकि, कुम्भ लग्न वाले को, बुध-शुक्र ही योगकारक हैं;* (न कि, राहु-केतु योगकारक)। इसी

कुण्डली में, दूसरा 'नीचभंग-राजयोग' देखिए—"नीचस्थ शनि होने से; जबकि, चन्द्र से केन्द्र में मंगल (तद्राशिनाथ) और सूर्य (तदुच्चनाथ) है तो, नीचभंग-योगकारक, मंगल और सूर्य माने जायँगे।" ठीक है; परन्तु, ये मंगल अश्विनी (केतुदशा) और सूर्य पुनर्वसु (गुरुदशा=लाभेश) योग के नाशकारक बन गये। अतएव नीचभंग-राजयोग न हो सका। इसी कुण्डली में, एक तीसरा योग देखिए—"धर्मेश, लाभेश, धनेश में से, एक भी ग्रह, यदि, चन्द्र से केन्द्र में हो और लाभेश गुरु ही हो तो, 'अखण्डसाम्राज्य-पति' होता है।" यह योग भी 'गजकेशरीयोग' की भाँति (गुरु, राहुदशा में होने से) नष्ट हो गया।

(४) (पृष्ठ २२६ का) धनेश गुरु है, राहु दशा में। अतएव गुरु का जीव (देखिए पृष्ठ ४२८) हुआ राहु; और राहु है मेष राशि में; अतएव (मेषपति) मंगल हुआ, जीवेश। राहु है केतु दशा में; अतः गुरु के जीव (राहु) का शरीर हुआ केतु या मंगल। यह सात्त्विकी गुरु, पूर्ण तमोगुणी (राहु-मंगल-केतु के कारण) बन गया। "शरीर का प्रधान (मुख्य) गुण और जीव का गौण (साधारण) गुण माना जाता है।" जिससे, गजकेशरी, नीच-भंग-राजयोग, अखण्डसाम्राज्यपति आदि, अनेकों योग, गुरु के कारण, नष्ट हो गये। इसी उदाहरण में देखिए कि, कुम्भ लग्न में जन्म है तो, इस लग्न वाले के योगकारक, बुध और शुक्र हैं। अतएव बुधवार, शुक्रवार शुभ, वृष-मिथुन-तुला राशियाँ शुभ और रेवती नक्षत्र शुभ है। द्वितीय भाव में मीन है, इसके पूभा. उभा. रेवती में से, केवल रेवती नक्षत्र मात्र ले लिया गया। क्योंकि, पूभा. (गुरु), उभा. (शनि) की दशा त्याज्य हैं। इसका बुध है, पंचमेश और शुक्र है, नवमेश। अतएव बुध-शुक्र योगकारक है। इसके बुध-शुक्र (दोनों), अपनी-अपनी दशाओं में भी हैं। बुध (श्लेषा= बुध) और शुक्र (पूफा.=शुक्र)। ये दोनों चतुर्थेश-पंचमेश होने से 'विद्या-वुद्धि' प्रदान कर रहे हैं।

(५) पृष्ठ १५२ में, जन्म-चक्र २४ में देखिये, केतु से राहु तक के मध्य में, सूर्यादि सभी ग्रह आ जाने के कारण 'कालसर्पयोग' हो जाता है। इसका फल है अल्पायु या निर्धनता। पृष्ठ १५० में, ग्रह-स्पष्ट-चक्र २३ के द्वारा, राहु (वि.=गुरुदशा) और केतु (भर.=शुक्रदशा) में है। कालसर्पयोगकारक राहु, विशाखा (गुरु दशा) में होने से, योग के दुष्फल न होकर, लक्ष्मी- (लक्ष) पति और चिरायु का भोग कर रहा है। तात्पर्य यह है कि, शुभ और अशुभ योग, अपने योगकारक, नक्षत्रेश के कारण, 'फल' घटित करते हैं। इसका राहु है, गुरु (पंचमेश) की दशा में और गुरु है, कर्क में तथा बुध है निधनेश की दशा में। अतः राहु का गुरु (जीव), चन्द्र (जीवेश) और बुध (शरीर) है। बुध, रन्ध्रेश है, अतः इसकी चिरायु रहते हुए, शरीर-कष्ट और लक्षाधीश होते हुए, आर्थिक-संकट रहेगा। इसी प्रकार, प्रत्येक योगों का बलाबल देखकर 'फल' का अनुसन्धान करना चाहिए।

उदाहरण—युक्त नियम

(१) कर्क लग्न वाले को, नवमेश गुरु, योगकारक होता है। यदि गुरु, हस्त के ४ थे पाद में हो तो, कर्क के नवांश में होने से, राजसिक उच्च का होकर, शुभकारक रहेगा।

(२) मेष लग्न वाले को, नवमेश गुरु, योगकारक है। यदि गुरु, अश्विनी के ४ थे पाद में हो तो, कर्क के नवांश में होते हुए भी, तामसिक उच्च का होकर, अशुभकारक रहेगा।

(३) कर्क लग्न वाले को, दशमस्थ मेष का चन्द्र, अश्विनी के दूसरे पाद में होने से, (वृष के नवांश में) उच्च नवांश का होगा। किन्तु, केतु दशा में होने से, तामसिक उच्च (अशुभ) हो गया।

(४) मीन लग्न वाले को, पंचम में उच्च का गुरु, यदि पुष्य (शनिदशा) में हो और लाभस्थ चन्द्र, यदि, उषा. (षष्ठेश सूर्य की दशा) में हो तो, इसका 'गजकेशरीयोग' नष्ट हो गया।

(५) सिंह लग्न वाले को, धनस्थ कन्या का बुध, हस्त (व्ययेश = चन्द्रदशा) में होने से, इसका धन और लाभ भाव नष्ट हो गया।

(६) मीन लग्न वाले को, लग्नस्थ उच्च का शुक्र, उभा. (व्ययेश=शनिदशा) में होने से, इसका शुक्र, उच्चस्थ होते हुए भी, नष्ट हो गया।

(७) तुला लग्न वाले को, दशमस्थ कर्क का शुक्र, पुष्य (चतुर्थेश-पंचमेश=शनिदशा) में होने से, शुक्र, तामसी होकर, अशुभफलकारक बन गया।

(८) मेष लग्न वाले को, नवमस्थ धनु का गुरु, उषा. के प्रथम पाद में है, जिससे सूर्यदशा में गुरु हो गया। परन्तु, सूर्य सिंह राशि का, शनि के साथ बैठा है। चूँकि स्वगृही सूर्य की अपेक्षा, शनि निर्बल है; अतएव गुरु का फल शुभ होगा। इसी उदाहरण में, जब मकर का सूर्य-शनि हो तब, यदि गुरु, सूर्य दशा में हो, तो यह सूर्य, स्वगृही शनि के साथ होने से, सूर्य निर्बल हो गया और गुरु का फल अशुभ कर दिया। इसी उदाहरण में, जब गुरु, सूर्य की दशा में हो, मकर का शनि दशम में हो, और मीन का सूर्य हो; तब, गुरु के दशेश सूर्य पर, स्वगृही शनि की दृष्टि होने से, गुरु का फल अशुभ हो गया। इसी उदाहरण में, जब नवमस्थ गुरु, सूर्य की दशा में हो और सूर्य, शनि की दशा में हो तब, गुरु का फल शुभ (पंचमेश सूर्य के कारण) और अशुभ [सूर्य, लाभेश (शनि) की दशा में होने से] फल देगा। यदि इसी उदाहरण में, गुरु हो, सूर्य दशा में। किन्तु, सूर्य, तुला का हो तो, नीचस्थ सूर्य के कारण, गुरु का फल अशुभ हो गया। यदि इसी नीचस्थ सूर्य पर, चतुर्थेश (चन्द्र, मेषस्थ) की पूर्णदृष्टि हो तो, गुरु का फल शुभ हो जायगा। इस प्रकार, ग्रह को शुभाशुभ स्थिति देखिए।

(९) वृश्चिक लग्न वाले को, लग्नस्थ चन्द्र, जेष्ठा में हो और जेष्ठापति (बुध), धनभावस्थ गुरु के साथ हो तो, चन्द्र के लिए, अष्टमेश बुध की दशा, अशुभ सूचक है। परन्तु, धनेश-पंचमेश (स्वगृही गुरु) के साथ होने से, नीचस्थ चन्द्र का, शुभफल ही होगा।

ग्रह का जीव और शरीर (Soul and Body of The Planets)

भावेश (ग्रह) का नक्षत्रेश ही, भाव (ग्रह) का जीव (Soul) होता है; और जीव का नक्षत्रेश ही, भाव (ग्रह) का शरीर (Body) होता है। यथा—

(१) धनु लग्न वाले को, सप्तमेश बुध, श्रवण (चन्द्र–दशा) में होने से, दारा–भाव का जीव, चन्द्र हुआ; और चन्द्र, भरणी (शुक्र दशा) में होने से, दारा का शरीर, शुक्र हुआ।

(२) धनु लग्न वाले को, सप्तमेश बुध, श्रवण (चन्द्र–दशा) में होने से, दारा का जीव, चन्द्र होना चाहिए, परन्तु, यदि चन्द्र है, मेषस्थ मंगल के साथ। तो स्वगृही बलिष्ठ मंगल, चन्द्र के तेजस्व को नाशकर, स्वयं जीव बन गया, अतएव, इसमे दारा का जीव होगा मंगल (न कि चन्द्र)। यदि यह मंगल है, कृत्तिका (सूर्य–दशा) में तो, दारा का शरीर होगा, सूर्य।

(३) धनु लग्न वाले को, वृश्चिक का बुध, ज्येष्ठा (बुध दशा) में होने से, दारा का स्वामी बुध ही, दारा का जीव हुआ। यह बुध, वृश्चिकस्थ है; अतएव दारा का शरीर, (वृश्चिकेश के कारण) मंगल होगा।

(४) मीन लग्न वाले को, लग्न में गुरु, पूभा (गुरु–दशा) में होने से, दशम–भाव का जीव और शरीर, गुरु ही रहेगा।

(५) पूर्वोक्त प्रकार से लग्न (अपना), तृतीय (भाईका), चतुर्थ (माताका), पंचम (पुत्रका), सप्तम (दाराका) नवम (पिताका) जीव और शरीर जानना चाहिए। पृष्ठ २२६ के, नवम भाव का जीव, शुक्र और शरीर बुध है। इसमें नवमेश शुक्र, पूफा. (शुक्र दशा) में होने के कारण, नं० ३ की भाँति, सिंहस्थ शुक्र का शरीर, सूर्य होना चाहिए; परन्तु सूर्य है बुध के साथ। चूँकि, सूर्य–बुध (दोनों) कर्क में होने से (मित्र के घर में होने से) समान है, तब सूर्य, पुन. (गुरुदशा) और बुध, श्लेषा (बुधदशा) में होने से, बुध प्रबल होकर, नवम भाव का शरीर बन गया। जबकि, बुध, अष्टमेश है तब; शुक्र महादशा के बुधान्तर में, पिता की मृत्यु होना चाहिए। वर्तमान गणित के अनुसार संवत् १६८४।२।२१ से संवत् १६८८।०।२१ तक, शुक्र में बुध का अन्तर था। परन्तु, पिता की मृत्यु, संवत् १६८४।०।२ के दिन ही, मकरराशि के चन्द्र में हो गयी। हो सकता है कि, विंशोत्तरीदशा का स्थूल-गणित हो; इष्टकाल, (पूर्ण सूक्ष्म) न बन सका हो। अस्तु, बुधान्तर से पितृ-वियोग, 'स्पष्ट' है। इसी प्रकार,

लग्नेश शनि है, शुक्रदशा में (जीव=शुक्र) और शुक्र का शरीर हुआ बुध। शुक्र, सूर्य, चन्द्र, मंगल की महादशा में बुध का अन्तर, इसे, गम्भीर रोगी बना देता रहा है। आगे, राहु-महादशा में बुधान्तर, शरीर के लिए, प्रबल कष्टकारक रहेगा।

(६) मिथुन लग्न वाले को, कर्क का चन्द्र, पुष्य (रन्ध्रेश=शनिदशा) में होने से या तो पैतृक-सम्पत्ति न होगी, अथवा अपने हाथ से, उसका विनाश करेगा।

(७) धनु लग्न वाले को, वृश्चिक का शनि, ज्येष्ठा (सप्तमेश=बुध दशा) में होने से, पैतृक-सम्पत्ति का सौख्य होगा; क्योंकि शनि, धनेश है।

(८) वृष लग्न वाले को, मिथुन का बुध, पुनर्वसु (रन्ध्रेश=गुरुदशा) में होने से, पैतृक-सम्पत्ति के द्वारा कष्ट एवं कठिनाइयाँ आयेंगी।

(९) कर्क लग्न वाले को, लग्न में सूर्य, पुष्य (रन्ध्रेश=शनिदशा) में होने से, पैतृक-सम्पत्ति में, सूर्य का अशुभ फल दिखेगा। दूसरा कारण शनि, सूर्य का शत्रु भी है।

(१०) सिंह लग्न वाले को, कन्या का बुध, चित्रा (भाग्येश=भौमदशा) में होने से, शुभफल होना चाहिए; परन्तु, मंगल से, बुध की शत्रुता है; अतः अशुभ ही फल होगा।

(११) वृश्चिक लग्न वाले को, धनु का गुरु, पूषा. (व्ययेश=शुक्रदशा) में होने से, अशुभ फल देगा। दूसरा कारण, शुक्र की गुरु से शत्रुता है। पैतृक-सम्पत्ति, समाप्त होगी।

(१२) वृश्चिक लग्न वाले को, षष्ठ भाव में गुरु, कृत्तिका (दशमेश=सूर्य दशा) में होने से, धनभाव का शुभ फल होगा। यहाँ, सूर्य से, गुरु की मित्रता है।

(१३) तुला लग्न वाले को, वृश्चिक का मंगल, विशाखा (षष्ठेश=गुरुदशा) में होने से, धन-सम्बन्धी, मंगल का, अशुभफल रहेगा।

(१४) कोई ग्रह, १, २, ४, ५, ७, ९, १० वें भावेश की दशा में हो; और वह मित्र-ग्रह की दशा हो, ३, ६, ८, ११, १२ वें भाव के स्वामी की दशा में न हो तो, उस ग्रह का शुभफल होता है। तथाच ३, ६, ८, ११, १२ वें भावेश से दृष्ट भी न हो, तो उस ग्रह का शुभफल होता है।

(१५) जब मंगल, बुध दशा में हो तो, मंगल, शुभफलदायक और जब बुध, मंगल की दशा में हो तो, बुध, अशुभफलदायक हो जाता है। जब गुरु, शुक्र दशा में हो तो, गुरु अशुभफलदायक; किन्तु शुक्र जब, गुरुदशा में हो तब, शुक्र शुभफलदायक होगा। जब बुध, शनिदशा में हो तो, बुध अशुभफलदायक, जब शनि, बुध दशा में हो, तब शनि, शुभफलदायक होगा। गुरु, शनिदशा में अशुभ और शनि, गुरुदशा में शुभ। तामसिक ग्रह, रज या सत्त्व गुणी हो जाय अथवा राजसिक ग्रह, सतोगुणी हो जाय तब, शुभ। सतोगुणी ग्रह, यदि रज या तम में जाय अथवा रजोगुणी ग्रह, तमोगुणी हो जाय तब, अशुभ। जब चन्द्र, बुध दशा में हो तब शुभ; किन्तु बुध, यदि चन्द्रदशा में हो तो, अशुभ हो जायगा। जब शनि, ३, ६, ८, ११, १२ वें भाव का स्वामी हो तब अशुभ फल देता है। जब बुध-गुरु ३, ६, ८, ११, १२ वें भाव के स्वामी हों तो, अशुभ; परन्तु ये, दोनों जब, पंचमेश-नवमेश हो जाते हैं तब, बुध-गुरु शुभ हो जाते हैं। तृतीयेश-दशमेश मंगल, अशुभ होता है। रन्ध्रेश मंगल, अशुभ। लग्नेश मंगल-शुक्र शुभ होते हैं। वृष-तुला-वृश्चिक लग्न वाले को, मंगल-शुक्र शुभ होता है। मकर कुम्भ का शुक्र व्ययस्थ हो तो, अशुभ हो जाता है।

(१६) तुला लग्न वाले को, तृतीयस्थ गुरु, पूषा. (लग्नेश=शुक्रदशा) में होने से बहिन, का सुख होगा। भाई का सुख न होगा; क्योंकि गुरु से, शुक्र की शत्रुता है। शुक्रदशा में गुरु, अपेक्षाकृत शुभ। स्त्री-ग्रह की दशा में होने से, बहिन का सुख देगा।

(१७) वृष लग्न वाले को, लग्न में कृत्तिका का मंगल, धन भाव में मिथुन के सूर्य-बुध और सप्तम भाव में वृश्चिक का चन्द्र, ज्येष्ठा में है। जब इसका तृतीयेश चन्द्रमा ज्येष्ठा (बुधदशा) में और मंगल,

कृत्तिका (सूर्यदशा) में है और के सूर्य-बुध, धन भाव में हैं; तब स्वगृही बुध की दशा वाले, चन्द्र के दोप, नष्ट हो गये। क्योंकि, सूर्यदशा वाले मंगल की दृष्टि, चन्द्र पर है। इसमें मंगल की दृष्टि से, चन्द्र की हानि; किन्तु बुधदशा में होने से, चन्द्र की वृद्धि हो रही है। धनेश, स्वगृही बुध के साथ, चतुर्थेश सूर्य बैठा है। अतएव, तृतीयेश चन्द्र का फल, शुभ होकर, अनुज का सुख देगा।

(१८) यदि चतुर्थेश, ३, ६, ८, १२ का स्वामी न हो, १, २, ४, ५, ७, ६, १०, ११ वें भाव के स्वामी की दशा में हो, चतुर्थेश या दशापति स्वगृही हो तो, अध्ययन के लिए शुभ है। मातृकारक चन्द्र, विद्याकारक चतुर्थेश, वाहनकारक शुक्र, भूमिकारक मंगल की शुभता से, चतुर्थभाव की शुभता होती है।

(१६) मेप लग्न वाले को, चतुर्थेश चन्द्र, वृश्चिक=अनु. (शनिदशा) में है और शनि, दशमस्थ होकर, चतुर्थभाव को देख रहा है; अतएव चन्द्र, शुभ होकर, विद्या देगा। दशमेश तथा मकर का शनि, बलिष्ठ होता है। चन्द्र से शनि को शत्रुता नहीं (शनि से, चन्द्र की शत्रुता है), अपेक्षाकृत, ऐसा चन्द्र शुभ है।

(२०) चतुर्थभाव विद्या का, पंचमभाव बुद्धि का, दशमभाव परीक्षोत्तीर्णता (Qualification) का है। जब सूर्य और लाभेश का सम्बन्ध, चतुर्थभाव या चतुर्थेश से हो तो, राज-भाषा के लिए शुभ है।

(२१) तुला लग्न वाले को, पंचम में स्वगृही शनि, पूभा. (गुरुदशा) में है। गुरु है—तृतीयेश-षष्ठेश (अशुभ)। चतुर्थभाव में मकर का सूर्य है। अष्टमभाव में चन्द्र, रोहिणी (अपनी दशा) में है। इसकी बुद्धि, कठोर होगी, अध्ययन में मन न लगा सकेगा। कारण, चतुर्थेश शनि, अशुभ (गुरु की) दशा में है। यद्यपि लाभेश सूर्य, चतुर्थ में है, दशमेश चन्द्र, अपनी ही दशा में है, परन्तु चतुर्थेश-पंचमेश, अशुभ दशा में होने से, चतुर्थ में शत्रुगृही सूर्य होने से, चन्द्रमा अष्टम में होने से, सूर्य, चन्द्र, शनि (तीनों ही) बिगड़ गये; और अध्ययन में बाधाकारक-योग बनाने में, लग गये।

(२२) वृश्चिक लग्न वाले को, शनि-चन्द्र चतुर्थ में हैं। शनि है पूभा (गुरुदशा) में। गुरु है पंचमेश और चन्द्र है नवमेश। इस कारण पंचमेश-नवमेश से सम्बन्धित शनि, इसे विद्वान् और राजा बनायेगा।

(२३) तुला लग्न वाले को, षष्ठ-भाव में, मीन का शनि, रेवती (नवमेश=बुधदशा) में होने से, यह विद्वान् होगा।

(२४) जब सप्तमेश, शनि या बुध की दशा में हो तब, वह व्यक्ति, कोमल-तथा सन्तानोत्पादिका शक्ति से रहित होता है। यदि ऐसे योग में, शनि या बुध, अपनी ही दशा में हों अथवा शनि, बुधदशा में या बुध, शनि-दशा में हो, और फिर यदि शनि या बुध अशुभ भावों में, बिना किसी बलिष्ठ ग्रह से सम्बन्धित या दृष्टि-युक्त हों तो, ऐसे शनि या बुध निष्फल होते हैं। उसके, सन्तानोत्पादिका-शक्ति नहीं होती।

(२५) मिथुन लग्न वाले को, पंचम में तुला के सूर्य और बुध हैं। बुध है विशाखा (गुरुदशा) में, अतएव इसके पुत्र, कन्या-लग्न में (बुध के कारण) और धनु लग्न में (गुरु के कारण) होंगे। पंचम में, नीचस्थ सूर्य से, अपेक्षाकृत, बुध ही, बलिष्ठ है। क्योंकि बुध, सप्तमेश-दशमेश (गुरु) की दशा में है।

(२६) पिता का द्वितीयेश और पुत्रों का नवमेश, एक ही ग्रह के नक्षत्रों में, प्रायः रहता है। इसके लिए आप, तीन योगों पर ध्यान दीजिए—यथा, (क) पिता का द्वितीयेश चन्द्र, पुष्य में है; तो, (ख) प्रथम पुत्र का नवमेश शुक्र, पुष्य में है। इसी प्रकार, (ग) दूसरे पुत्र का नवमेश सूर्य, पुष्य में है।

(२७) मकर लग्नवाले के, पंचमेशशुक, तृतीयेश-व्ययेश गुरु के साथ, व्यय में हो तो, इसका, बालक गूँगा होगा।

(२८) वृष लग्न वाले के, पंचमेश बुध, पुनर्वसु (रन्ध्रेश-लाभेश=गुरुदशा) में होने से, गूँगा बालक होगा।

(२६) जब द्वितीयेश और सप्तमेश, ३, ६, ८, ११, १२ वें भावेश की दशा में हो तो, स्त्री-सम्बन्धी दुःख मिलता है। स्त्री को बीमारी होती है, स्त्री-मृत्यु हो जा सकती है, सम्बन्ध-विच्छेद भी हो सकता है।

(३०) जिस नक्षत्र में जन्म हो, उस नक्षत्र से, नौ नक्षत्र तक के नाम, क्रमशः जन्म, सम्पत्ति, विपत्ति, क्षेम, प्रत्यरि, साधक, वध, मित्र और अतिमित्र होते हैं। इसी क्रम से, तीन-तीन नक्षत्रों के, एक ही स्वामी होने से, नौ ग्रहों की, नौ संज्ञाएँ, नामार्थरूप में फल करती हैं। लग्न या चन्द्र के नक्षत्र से—१, १०, १६ वाँ नक्षत्र, त्रिकोण माना जाता है। १-७-१४-२१ वाँ नक्षत्र, केन्द्र माना जाता है। चन्द्र या लग्न की दशा से ३-५-७ वीं दशा में, आने वाला ग्रह भी, अशुभ फलदायक होता है।

उदाहरण

[क] जन्म-चक्र के जो ग्रह, जिन नक्षत्रों में बैठे होंगे, उसी नक्षत्र के, वाम भाग में लिखे फल के समान 'फल' करते हैं। इसी प्रकार, आपके जन्म-नक्षत्र से ❀ ३, ५, ७, १२, १४, १६, २१, २३, २५ वें नक्षत्र पर, गोचर द्वारा, जोभी ग्रह आ जायगा, उसी समय में, वह ग्रह, विपत्ति, प्रत्यरि (शत्रु), वध रूपी गुणों वाला, अपने गुणों के समान फल देगा। शेष नक्षत्रोंमें शुभ-फल रहता है। इसी प्रकार, जन्म-लग्न-स्पष्ट के नक्षत्र से, क्रमशः नक्षत्र रखकर, देखिए कि, जन्म कुण्डली का कौन ग्रह, कैसे फल वाले नक्षत्र में है। उसी के समान, उस ग्रह का फल होता है।

क्रम	फल	१ आवृत्ति ६	२ आवृत्ति १८	३ आवृत्ति २७	नक्षत्र पति
१	जन्म	अश्वि.	मघा	मूल	केतु
२	सम्पत्ति	भर.	पूफा.	पूषा.	शुक्र
३	विपत्ति❀	कृत्ति. ❀	उफा. ❀	उषा. ❀	सूर्य
४	क्षेम	रोहि.	हस्त	श्रव.	चन्द्र
५	प्रत्यरि❀	मृग.	चित्रा ❀	धनि ❀	मंगल
६	साधक	आर्द्रा	स्वाती	शत.	राहु
७	वध ❀	पुन. ❀	विशाखा❀	पूभा. ❀	गुरु
८	मित्र	पुष्य	अनु.	उभा.	शनि
९	अतिमित्र	श्लेषा	ज्येष्ठा	रेव.	बुध

[ख] उदाहरण (पृष्ठ २२६), सूर्य = पुनर्वसु। चन्द्र = अश्विनी। मंगल = अश्विनी। बुध = श्लेषा। गुरु = स्वाती। शुक्र = पूफा। शनि = भरणी। राहु = अश्विनी। केतु = स्वाती। लग्न = पूभा. में हैं। इनमें, लग्न और सूर्य = वध नक्षत्र में, (चन्द्र = सर्वदा जन्म नक्षत्र में), मंगल-राहु = जन्म नक्षत्र में, बुध-शुक्र-शनि = सम्पत्ति नक्षत्र में, गुरु-केतु = साधक नक्षत्र में है। नक्षत्र-संज्ञा के समान ही, इनके फल होते हैं।

[ग] विशेष संज्ञा (श्री) —

सतयुग	=	४।६।१२	राशियाँ	गुरु-राहु ग्रह	पद्मिनी
त्रेतायुग	=	१।५।८।१०	"	सू. मं. के. "	चित्रणी
द्वापरयुग	=	२।३।६	"	चं. बुध "	शंखिनी
कलियुग	=	७।११	"	शु. श. "	हस्तिनी

इनके (श्री) द्वारा, नायक, नायिका, युग आदि के गुण समझे जाते हैं। फल कहते समय, राशि और ग्रह के गुण समझकर, युग के फलानुसार प्रकृति, आचार, विचार का कथन करना चाहिए। किन्तु, सँभलकर···। किसी को बुरा समझते हुए भी, बुरा कहिए नहीं, उसके साथ, बुरा व्यवहार भी मत कीजिए।

[घ] विशेष संज्ञा (ॐ)—[ये, नक्षत्र की ही संज्ञाएँ हैं इन्द्र = भोगी। योगी = राजा। रोगी = यम।

ॐ चक्र

१. अश्वि. (भोगी = इन्द्र)। मघा (रोगी = यम) । मूल (योगी = राजा)
२. भर. (भोगी = इन्द्र)। पूफा. (रोगी = यम) । पूषा. (योगी = राजा)
३. कृत्ति. (योगी = राजा)। उफा. (रोगी = यम) । उषा. (भोगी = इन्द्र)
४. रोहि. (भोगी = इन्द्र) । हस्त (योगी = राजा)। श्रव. (रोगी = यम)
५. मृग. (रोगी = यम) । चित्रा (भोगी = इन्द्र) । धनि. (योगी = राजा)
६. आर्द्रा (योगी = राजा)। स्वाती (रोगी = यम) । शत. (भोगी = इन्द्र)
७. पुन. (भोगी = इन्द्र) । विशा. (रोगी = यम) । पूभा. (भोगी = इन्द्र)
८. पुष्य (भोगी = इन्द्र) । अनु. (रोगी = यम) । उभा. (योगी = राजा)
९. श्लेषा (योगी = राजा)। ज्येष्ठा (भोगी = इन्द्र)। रेव. (रोगी = यम)

सूर्य—मेष में योगी = राजा। वृष में भोगी = इन्द्र। सिंह में योगी = राजा। कन्या में भोगी = इन्द्र। धनु में भोगी = इन्द्र मकर में रोगी = यम। ग्रह, नक्षत्र के चरण-भेद से, गुण हो जाते हैं। यथा—कृत्तिका में सूर्य, मेष-वृष पर रहेगा; परन्तु प्रथम चरण में योगी = राजा। २-३-४ थे चरण में भोगी = इन्द्र हो जाता है। इसी प्रकार, चरण-भेद से, सूर्य के नक्षत्रों की संज्ञा पर ध्यान रखिए।

[भारत में] अप्राप्य-वस्तु, आपके समक्ष प्रस्तुत किया। इसका दुरुपयोग होने से, कर्ता, देश, साहित्य को हानि होना, सम्भव है। इस विषयक, कुछ हस्त लिखित प्रतियाँ मात्र, श्रेष्ठ साधकों के पास, गुप्त-सुरक्षित हैं। यदि, स्वतन्त्र-लेखनी की अबाध-गति, कर दी जाय तो, यह शरीर? बहुत-कुछ लिखकर, भारत के चरणों में दे सकता है। शुभम्।

[एक] सात्त्विक-शत्रु-शुभ। राजसिक-शत्रु=मध्यम। तामसिक-शत्रु=अशुभ। सात्त्विक-मित्र=अतिशुभ। राजसिक मित्र=शुभ। तामसिक मित्र साधारण। पृष्ठ ४३१ में [ॐ] लेख, भूमि चन्द्र देवता से अनुबद्ध, यशदायक, राजसिक-मित्र है। [पृष्ठ २२६ में] कुण्डली का सूर्य, भोगी है, जोकि सात्त्विक-राजसिक-मित्र है। बुध, योगी=राजा है, यह भी सात्त्विक-राजसिक-मित्र है। सूर्य-बुध, चन्द्र (यश) से अनुबद्ध हैं [छन्द शास्त्र, अध्यात्म-शास्त्र]।

ग्रहों का दशाओं में स्वभाव

(१) जब सूर्य चन्द्र बुध-गुरु ये, मंगल-शनि राहु-केतु की दशावाले होते हैं तब, तामसिक स्वभाव से, बुरे फल (Bad-Results) देते हैं।

(२) जब सूर्य, चन्द्र या गुरु का दशा का होता है तब, राजसिक स्वभाव से, अच्छा और उत्तम (Good and fine) फल देता है।

(३) जब सूर्य, अपनी या बुधदशा का हो जाता है तब, सात्त्विकस्वभाव से, अच्छा (Good) फल देता है।

(४) जब चन्द्र, अपनी या गुरुदशा का हो तब, राजसिकस्वभाव से, बहुत अच्छा (Very Good) फल देता है।

(५) जब चन्द्र, सूर्य या बुधदशा का हो, तब, सात्त्विकस्वभाव से, शुभ (Good) फल होता है।

(६) जब मंगल, सूर्य या बुध या राहुदशा का हो तब, राजसिकस्वभाव से, बहुत अच्छा (Best), अत्यन्त अच्छा (Better) और अच्छा (Good) फल, क्रमशः देता है।

(७) जब बुध, अपना या गुरु या चन्द्रदशा का होता है तब, सात्त्विकस्वभाव से, प्रथम द्वितीय-तृतीय श्रेणी का, शुभतापूर्ण फल देता है।

(८) जब बुध, शुक्रदशा का हो तब, राजसिकस्वभाव से, मध्यम (शुभाशुभ) फल देता है।

(९) गुरु, सूर्य या बुधदशा में सात्त्विक और चन्द्र या अपनी दशा में राजसिकस्वभाव से अच्छा फल देता है।

(१०) जब गुरु, राहुदशा का होता है, तब, तामस सात्त्विकस्वभाव से, बुरा फल देता है।

(११) जब शुक्र, बुध या सूर्य या राहुदशा का हो तब, राजसिकस्वभावसे, प्रथम द्वितीय-तृतीयश्रेणी शुभफल है।

(१२) जब शुक्र, गुरु या चन्द्रदशा का हो तब, सात्त्विकस्वभाव से, शुभाशुभ (Mixed) फल देता है।

(१३) जब शुक्र, शनि या अपना या मंगलदशा का होता है तब, तामसिकस्वभाव से, बुरा फल देता है।

(१४) शनि, [क] केतुदशा में अच्छा (Good), [ख] राहु और गुरुदशा में उत्तम (Fair) [ग] चन्द्रदशा में शुभाशुभ (Mexed) फल, सात्त्विक स्वभाव से, देता है।

(१५) जब शनि, अपनी या मंगल या शुक्रदशा का हो तब, राजसिकस्वभाव से, बुरा फल देता है।

देह-दशा-फल

(१) मेषलग्न वाले के, सूर्य, चन्द्र, गुरु में से कोई यदि, सूर्य-चन्द्र-गुरु की दशा में हो तो, अपनी दशा-अन्तर्दशा में शुभफल (अनुकूलता) देते हैं। यदि शुक्र, चन्द्रदशा में हो तो, थोड़ा शुभफल देगा। यदि शुक्र, सूर्य या गुरु की दशा में हो तो, प्रयत्न के बाद शुभफल होगा।

(२) वृषलग्न वाले के, शनि-राहु-बुध यदि, बुधदशा में हो, अथवा शनि-राहु यदि, राहु-केतु की दशा में हो और सूर्य, बुधदशा में हो तथा शुक्र यदि, सूर्य-बुध की दशा में हो तो, शुभ फल देंगे।

(३) मिथुनलग्न वाले के, बुध यदि, शुक्र-गुरु-बुधदशा में हो, तो सुखकारक होता है। यदि बुध, चन्द्रदशा में हो तो, शुभकारक होता है। यदि शुक्र, चन्द्र-बुध-गुरुदशा में हो तो, सौभाग्य-सूचक फल होते हैं। यदि शनि-राहु, बुध या गुरु की दशा में हो तो, शुभाशुभ फल होते हैं।

धर्मात्मा, वेद और धर्मग्रन्थों का प्रेमी या पढ़ने वाला। द्वितीय—गीत

अनु. —प्रथम—उच्चपदस्थ, सच्चरित्र, धर्मात्मा, वेद और धर्मग्रन्थों का प्रेमी या पढ़ने वाला। द्वितीय—गीत पर मुग्ध, कामी, कोर्ट में सम्मानित, दरबार में पूज्य। तृतीय—बुद्धिमान्, सुन्दर, शिल्पज्ञ, नीतिज्ञ। चतुर्थ—धोखा देने वाला, धूर्त, डरपोक।

ज्येष्ठा —प्रथम—अच्छा लेखक, अभिमानी। द्वितीय—संगीत पर मुग्ध, व्याख्यान-चतुर, रोगी। तृतीय—नेत्र-रोगी, नैतिक, पशु-पालक। चतुर्थ—क्रूर और ठग।

मूल —प्रथम—चिड़चिड़ा, व्याकुल, पित्त-रोगी। द्वितीय—पठित, उदर-रोगी, मिथ्यावादी, सब का प्रिय, रमणीय। तृतीय—जादू पढ़ने वाला, आलसी, कामी, सुन्दर रूप वाला। चतुर्थ—दृढ़ अंग वाला, शत्रु पर विजयी, गले का रोगी।

पूषा. —प्रथम—निष्फलता, ऊसरपन (रूक्ष), मध्यावस्था में चैतन्य, दूसरों की अपेक्षा सम्मानित। द्वितीय—दुश्चरित्र, अपने समान, संगति न करने वाला, साधारण मस्तिष्क वाला। तृतीय—धनी, हर वर्ष माता द्वारा हानि, कुष्ट-रोगी, चरित्रवान्। चतुर्थ—शूर-वीर, साहसी।

उषा. —प्रथम—सुन्दर, अच्छी समझ वाला, उदार, दानी, कारीगरी में चतुर। द्वितीय—कृपण, वार्तालाप में चतुर, दृढ़ अंग वाला, कठोर। तृतीय—अभिमानी, गम्भीर वाणी, मोटी देह वाला। चतुर्थ—पुष्ट जीवन शक्ति, विचित्र कामकाजी व्यक्ति, व्यापारी।

श्रवण —प्रथम—बुद्धिमान्, दीर्घ आकार वाला, अभिमानी, निष्फलता, ऊसरपन (रूक्ष)। द्वितीय—कामी, कृपण, किसी का मित्र नहीं। तृतीय—कामी, रोगी, धनी। चतुर्थ—दुश्चरित्र, धर्मात्मा, धनी, कृषक।

धनिष्ठा —प्रथम—सिद्धान्त-रहित, दीर्घ आकार वाला। द्वितीय—दुष्ट, ठग, दीन, स्थिर, चित्रकार के पास काम करने वाला। तृतीय—सम्मानित, सुन्दर, कृश। चतुर्थ—धनी, क्रूर, अभिमानी, ठग।

शतभिषा—प्रथम—सुन्दर, पशु-प्रिय, धर्मात्मा। द्वितीय—चिड़चिड़ा, ठग, अधर्मी। तृतीय—अच्छी चेष्टा का व्यक्ति, चिड़चिड़ा। चतुर्थ—योग्य-कार्य-कर्ता, सच्चरित्रवान्।

पूभा. —प्रथम—पुरोहित, स्त्री को पूज्य मानने वाला, पुष्ट, सन्तुष्ट। द्वितीय—अध्ययन से सम्बन्धित कार्य करने वाला, हताश, विश्राम-रहित। तृतीय—प्रसन्न-मुख, साहित्यिक, भ्रमण-कर्ता, कवि, चिड़चिड़ा, पैत्तिक-गुणी। चतुर्थ—सुन्दर और सम्मान-युक्त।

उभा. —प्रथम—चिड़चिड़ा, दानी, उदार, सन्देह-युक्त। द्वितीय—अति-क्रोधी, दीन, साहित्यिक, भ्रमणशील, बुद्धिमान्, सन्देह-युक्त। तृतीय—झुके मस्तक वाला, परोक्ष में हानि पहुँचाने वाला, क्षुद्र प्रकृति वाला, ईश्वर-भक्त। चतुर्थ—काव्य से प्रेम, बड़े कुटुम्ब वाला, चिड़चिड़ा।

रेवती —प्रथम—कलहकारी, अध्ययन-शील, हँसमुख, योग्य-साथी। द्वितीय—कृश, वीर, कामी, चिड़चिड़ा। तृतीय—कमजोर सिर वाला, दीन, बदला लेने में तत्पर। चतुर्थ—सम्मानित, शत्रुओं पर विजयी।

विंशोत्तरी में भारी-भ्रम

मद्रास के कुछ विशेषज्ञों को छोड़कर, शेष भारत और इंगलैण्ड में भी, वर्तमान समय तक प्रचलित, जिस प्रकार से विंशोत्तरी-दशा-पद्धति है, उसमें, एक भारी-भ्रम है। कुल दशावर्ष १२० बताये गये हैं और ९ ग्रहों का, विंशोत्तरी में उल्लेख है; यहाँ तक तो, सभी का एक मत है। पर, जब ९ नक्षत्रों के १२० वर्ष मान लिए जाते हैं। (जैसा कि वर्तमान में प्रचलित है) तो, २७ नक्षत्र में ३६० वर्ष हो जाते हैं। जबकि, २७ नक्षत्र = ९ ग्रह = १२० वर्ष होना चाहिए। क्योंकि, 'विंशोत्तरीशतवार्षिकीदशा' शब्द का संक्षेप में, मध्यमपदलोपी-समास करके 'विंशोत्तरी-दशा' शब्द लिखा गया है। ९ ग्रह, २७ नक्षत्र, १२० वर्ष का त्रैराशिक न करके, ९, २७, १२० का लघुतम = ३ × ३ × ३ × ४० = ३६० वर्षीया दशा का प्रयोग करना, युक्ति-संगत नहीं है। [देखिए आत्म-निवेदन के, विंशोत्तरी पद (Para) में] इसे, नक्षत्र रूप में, निम्न-प्रकार से, जानना चाहिए।

कृत्तिका —प्रथम—धर्मात्मा, शिक्षित, पशुप्रेमी, रोग-युक्त। द्वितीय—अधर्मी, चिड़चिड़ा स्वभाव, वेद-पुराणों में अविश्वास करने वाला। तृतीय—मन्द, वीर, दीर्घसूत्री, दुष्ट, दुश्चरित्र। चतुर्थ—दीन, रोग-युक्त, विषाद-युक्त, थोड़ा कलह-कारी।

रोहिणी—प्रथम—सुन्दर या पवित्र, रोगयुक्त, अतिचिन्तित, परिभ्रमण में रुचि, अस्थिर-मन। द्वितीय—धर्मात्मा, कोमल, सत्यवादी, अच्छा व्याख्यान देने वाला। तृतीय—गणितज्ञ, वाद्य-प्रिय, जादू या कौतुककार्य-कर्ता। चतुर्थ—विषयी और कृतघ्न।

मृगशिरा—प्रथम—धनी, दृढांग, शीघ्रकोपी, अधर्मी। द्वितीय—सत्यवादी, नम्र, अन्य जाति (पुरुष हो तो, स्त्री पर और स्त्री हो तो, पुरुष पर मुग्ध)। तृतीय—नम्र, आनन्दपूर्ण, धर्मात्मा, ईश्वर-दर्शन करने वाला। चतुर्थ—बुद्धिमान्, नम्र, धर्मात्मा, विषयी, चिड़चिडा स्वभाव, कपटी।

आर्द्रा —प्रथम—अन्य जाति (पुरुष हो तो, स्त्री और स्त्री हो तो, पुरुष) के समान, स्वच्छ-हृदय वाला। द्वितीय—चतुर, धूर्त, न्याय के अनुसार, विवाद-प्रिय। तृतीय—अशक्त, रोगयुक्त, चिड़चिड़ा, परोक्ष में हानि पहुँचाने वाला। चतुर्थ—सम्बन्धित जनों का विरोधी, मलिन, नीच-स्वभाव।

पुनर्वसु —प्रथम—दीर्घ आकार वाला, विषयी, बधिर। द्वितीय—आलसी, अधर्मी, विवाद युक्त। तृतीय—कुष्ट-रोगी परिभ्रमण में रुचि, अस्थिर-मन, दन्त-रोगी, लम्बा शरीर। चतुर्थ—सुन्दर या पवित्र, छोटी देह वाला, शुभकार्य में अभिरुचि।

पुष्य —प्रथम—आँत सम्बन्धी रोग, दयालु, परोपकारी, चिड़चिडा, चतुर, बुद्धिमान्। द्वितीय—युद्ध तथा व्यापार में मन्द, दूसरों को शिक्षा या उपदेश देने वाला। तृतीय—सम्बन्धी जन के समान, बुद्धिमान, हँसमुख। चतुर्थ—कलहकारी, चिड़चिड़ा, अन्य जाति (पुरुष हो तो, स्त्री पर और स्त्री हो तो, पुरुष) पर मुग्ध।

श्लेषा —प्रथम—धनी, स्त्रीवत् आकृति (कोमल), प्रसन्न-चित्त, विनोदी, अनेक कलाओं में अभिरुचि। द्वितीय—सुन्दर, धर्मात्मा, दुष्ट। तृतीय—युद्ध या मुकदमा में मन्दगति वाला। चतुर्थ—दुष्टसंगति वालों से अच्छी मित्रता, नीच जाति की स्त्री से प्रेम, रोग-ग्रस्त, अति-व्ययी।

मघा —प्रथम—रक्त-नेत्र, दूसरे के वाक्यों पर रहने वाला। द्वितीय—धन उड़ाने वाला (मुक्त-हस्त), कान का रोगी, मन्द-मति। तृतीय—पुष्टदेह, नम्र किन्तु दुराचारी। चतुर्थ—स्त्री के कथन पर चलने वाला, विश्राम-प्रिय, चर्म-रोग।

पूफा —प्रथम—धर्मात्मा, वीर, व्यापारी। द्वितीय—कृपण और अभाग्यवान्। तृतीय—सज्जन, आदरणीय। चतुर्थ—विषादपूर्ण, शरीर में घाव के चिन्ह।

उफा. —प्रथम—मधुर भाषी, वीर, मित्रता-योग्य। द्वितीय—दीन और मांस-भोजी। तृतीय—सत्य प्रिय, पशु-प्रेमी, धर्मात्मा। चतुर्थ—माता-पिता की समकालीन मृत्यु, न्द-प्रतिज्ञ, कृतघ्न।

हस्त —प्रथम—असत्यभाषी, अभिमानी और पशु पर मुग्ध। द्वितीय—गीत और नृत्य पर मुग्ध। तृतीय—चतुरवायुक्त, रोगी, व्यापारी। चतुर्थ—प्रसन्न मुख, माता से स्नेह पाने वाला, लम्बा शरीर।

चित्रा —प्रथम—नेत्ररोगी, टीका लिखने वाला (अनुवादक), परिभ्रमण में रुचि। द्वितीय—शारीरिक विलक्षण सुख, दान, लम्बा-शरीर, सन्देह-युक्त। तृतीय—वीरगाथा का अध्ययनशील, विचारक। चतुर्थ—शत्रु-विजेता, साहसी।

स्वाती —प्रथम—वीर, सर्वदा स्वप्न देखने वाला, ऊँचाई पर चित्त वृत्ति, व्याख्यान देनेवाला। द्वितीय—दृढ़-शरीर, कामी, सत्य भाषी। तृतीय—दुष्ट और कठोर हृदयवाला। चतुर्थ—चतुर, कामी, वार्तालाप में प्रवीण।

विशाखा—प्रथम—फलित ज्योतिष का जाननेवाला या अध्ययन करनेवाला, व्यापारी, भोला-भाला। द्वितीय—अपना ही राग अलापने वाला, जादूगरी का प्रेमी, कामी, सत्य प्रिय, कलहकारी, हर्षित। तृतीय—दृढ़ अंग वाला, दुश्चरित्र, लघु आकृति वाला, वार्तालाप में चतुर। चतुर्थ—धनी, बुद्धिमान, वार्तालाप में चतुर, व्याख्यान-कुशल।

द्वादश-वर्तिका

शरीर

"शरीरमाद्यं खलु धर्म-साधनम् ।"

द्वादश-भाव (व्यय-भाव), यात्रा का होता है। यात्राएँ, शरीर-द्वारा होती हैं। सभी कार्यों का क्रियात्मक-सम्पादन (भौतिक-रूप), शरीर, देह, तनु, जिसे कहते हैं, उसी से होता है। शरीर, अनेक कार्य-कारणों से सुखी और दुःखी हो सकता है। किन्तु मुख्य कारण, शरीर के दुःखादि में, एक मात्र, षष्ठ-स्थान (रिपु-भाव) है, जिससे, रोग, शत्रु, तथा आध्यात्मिकदृष्टि से कामादि षट् शत्रु द्वारा ही, शरीर को कष्ट मिलता है। यों तो, शरीर की स्वस्थता, तीन प्रकार से ही, हो पाती है अर्थात् यदि, शरीर को, शारीरिक-भोजन (अन्नादि), मानसिक-भोजन (मनोरंजनादि) और आध्यात्मिक-भोजन (ईश्वर-चिन्तनादि) मिलता रहे, तो शरीर, पूर्ण स्वस्थ रह सकता है। परन्तु, इनमें से 'वर्तमान-समय' एक भी भोजन पहुँचाने में, असमर्थ हो रहा है।

"मिथ्याहारविहाराभ्यां दोषा ह्यामाश्रया: स्थिता: ।" के आधार पर शरीर, रोग-युक्त हो जाता है। तब, वास्तव में शारीरिक कष्ट होता है। यदि शरीर, कष्ट से युक्त रहा, तो फिर, जीवन, (कार्य, धर्म) अव्यवस्थित हो जाना, अवश्यम्भावी है। ज्योतिष के द्वारा, रोग-शत्रु-बाधा को जानकर, उनके निवारण का उपाय, (आयुर्वैदिक, बौद्धिक, आध्यात्मिक आदि प्रकार से) करना चाहिए। जिससे कि, षष्ठ-भाव के कुप्रभाव से बचकर, शरीर का स्वास्थ्य पाकर, ऐहिक और पारलौकिक सौख्य का उपभोग कर सकें। इस क्षेत्र ने, एक स्थान पर लिखा, कि 'अमुक योग होने पर, वैद्य या डाक्टर, इस जातक के रोग का निदान, मृत्यु-पर्यन्त, नहीं कर पाते।' ठीक, ऐसे ही समय पर, बौद्धिक, आयुर्वैदिक उपायों से निराश-व्यक्ति, आध्यात्मिक उपायों द्वारा, सफलता पा सकता है। मन्त्रौषधि द्वारा उपाय करना चाहिए। (मन्त्रश्च औषधिश्च = मन्त्रौषधि:)।

सम्पूर्ण रोगों का वर्णन-क्षेत्र, आयुर्वेद ही है, ज्योतिष नहीं। फिर भी जो, अनेक रोगों का उल्लेख, इसमें आया है। जिसका संक्षेप में यों कहें कि, वात-पित्त-कफ तथा इनके मिश्रण से, अनेक रोगों की उत्पत्ति, उसी प्रकार होती है, जिस प्रकार, सात ग्रह, भिन्न-भिन्न होते हुए, एक राशि (मार्ग) में आकर, संयोग करते हैं तथा मिलकर, विभिन्न होते हुए, एक रूप में प्रभाव डालते हैं। अतएव अब हम, ग्रहों का वह प्रभाव लिखेंगे, जिससे, रोग उत्पन्न होकर, शरीर को कष्ट-युक्त बनाते हैं। शरीर, क्रिया है, ग्रह, कारण हैं, कर्ता—'हमारे किये कर्म-फल-दाता' ईश्वर है। स्थूल-दृष्टि से स्वयं, सूक्ष्म-दृष्टि से, ईश्वर ही 'कर्ता' है। रोग-योग लिखने के पूर्व, शरीर का विभाग, राशियों में इस प्रकार है।

शरीर-विभाग

राशि	कालांग	बाह्यांग	अन्तरंग	हड्डी-बन्ध
मेष	= शिर	= मुख-द्वार	= मेदा	= कनपटी की, मुख की हड्डी
वृष	= मुख	= गला	= श्वासनलिका, अन्ननलिका	= गर्दन की "
मिथु.	= गला, बाहु	= कन्धा, बाहु	= फुस्फुस, श्वास, रक्त	= कन्धे, गले, हाथ की "
कर्क	= वक्ष	= छाती, कोख	= कोष्ठ, पचनेन्द्रिय	= छाती की, कोख की "
सिंह	= हृदय	= मध्य, पंजर	= हृदय (हार्ट)	= } पीठ की "
कन्या	= उदर	= पेट, छोटी-बड़ी आँत	= छोटी-बड़ी आँत	= } पीठ की "
तुला	= कमर	= कमर, गुर्दा	= मूत्र-स्थली	= कमर की "
वृश्चि.	= गुप्तांग	= गुप्तेन्द्रिय, गुदा-द्वार	= गुप्तेन्द्रिय, मूत्राशय	= कटि की, नितम्ब की "
धनु	= जंघा	= जंघा, पीठ, गुर्दा	= शिरा, मज्जा	= जंघा की, गुर्दे की "
मक.	= घुटना	= कटोरी, घुटना	= हड्डी, जोड़	= घुटना की "
कुम्भ	= पिंडुरी	= पैर, घुट्ठवा, गुल्फ	= रक्त, रक्त-संचार	= घुटना के नीचे की "
मीन	= चरण	= चरण, तलवे	= लसदार पदार्थ	= पैर की "

नक्षत्र-दशा-मान

कृ.	रो.	मृ.	आ.	पुन.	पु.	श्ले.	म.	पूफा.	नक्षत्र
२	३	२	६	५	६	५	२	६	वर्ष
०	४	४	०	४	४	८	४	८	मास
उफा.	ह	चि.	स्वा.	वि	अनु	ज्ये.	मू.	पूषा.	नक्षत्र
२	३	२	६	५	६	५	२	६	वर्ष
०	४	४	०	४	४	८	४	८	मास
उषा	श्र.	ध.	श.	पूभा.	उभा.	रे.	अ.	भ.	नक्षत्र
२	३	२	६	५	६	५	२	६	वर्ष
०	४	४	०	४	४	८	४	८	मास
सू.	चं.	मं.	रा.	गु.	श.	बु.	के.	शु.	नक्षत्रेश
६	१०	७	१८	१६	१९	१७	७	२०	वर्ष

लघुपाराशरी मे लिखा है कि, "फलानि नक्षत्रदशाप्रकारेण निरूपमहे। दशा विंशोत्तरी चात्र ग्राह्या नाष्टोत्तरीमता ॥" भावकुतूहल में—"रसा आशा.शैला वसुविधुमिता भूपतिमिता, नवेला: शैलेला नगपरिमिता विंशतिमिता। रवाविन्दावारे तमसि च गुरौ भानुतनये, बुधे केतौ शुक्रे क्रमत उदिताः पाकशरदः॥" इस श्लोक-द्वारा, केवल सूर्य के ६ चन्द्र के १० मंगल के ७ राहु के १८ गुरु के १६ शनि के १९ बुध के १७ केतु के ७ और शुक्र के २० वर्ष हैं। इस प्रकार कृत्तिका, उत्तराफाल्गुनी और उत्तराषाढ़ में जन्म होने से, सूर्य की दशा ६ वर्ष की होती है। इससे ज्ञात होता है कि, कृत्तिका के २ वर्ष, उत्तराफाल्गुनी के २ वर्ष और उत्तराषाढ़ के २ वर्ष मिलाकर, कुल सूर्यदशा के ६ वर्ष हो पाते हैं। श्लोक मे भी 'नक्षत्र-दशा' शब्द है। यहाँ तक, सभी जन, ठीक समझ पा रहे हैं। किन्तु, आगे सूर्य के नक्षत्र, तीन न मानकर, केवल एक नक्षत्र में, सूर्यदशा वर्ष ६ समझ लेते हैं। यदि, एक नक्षत्र मे ६ वर्ष मान लिया जाय, तो सूर्य के तीन नक्षत्रों मे, सूर्यदशा वर्ष १८ हो जाते हैं। इस प्रकार से विंशोत्तरीशतवार्षिकी दशा न होकर, २७ नक्षत्रों मे ३६० वर्षीया दशा हो जाती है। परन्तु, ऐसा है नहीं। वास्तविक-उदाहरण देने मे, परम्परा की भूल चली आ रही है। [परम्परा, वह वस्तु है कि जिसके द्वारा, आज भी, धनुराशि के स्थान मे 'धनराशि' कहा जाता है। तथ्यतः, धनभाव है और धनुराशि है] इसी प्रकार ३६० का अर्थ है, केवल ९ ग्रह की व्याप्ति (३+६+०=९)। किन्तु, १२० का अर्थ है, केवल तीनों की (९ ग्रह, २७ नक्षत्र, १२० वर्ष) की व्याप्ति (१+२+०=३)। परम्परा और सिद्धान्त का अन्तर जानकर] हमारा निवेदन है कि, विद्वज्जन, इस पर ठीक विचार करके, परम्परा की भूल का सशोधन करना चाहिए। यों तो, हमने भी परम्परा के अनुसार (पृष्ठ २०५ मे), विंशोत्तरी-दशा का रूप, बताया है, किन्तु, वास्तविक तथ्य क्या है? इस पर विचार करने के लिए, इस लेख को लिखा गया है। उत्तर चाहिए? चाहे, कष्ट ही क्यो न उठाना पड़े, "भारत की माँग है।"

एकादश-वर्तिका = ज्योतिष में लाभ

द्वादश–वर्तिका

शरीर

"शरीरमाद्यं खलु धर्म-साधनम्।"

द्वादश-भाव (व्यय–भाव), यात्रा का होता है। यात्राएँ, शरीर–द्वारा होती हैं। सभी कार्यों का क्रियात्मक-सम्पादन (भौतिक–रूप), शरीर, देह, तनु, जिसे कहते हैं, उसी से होता है। शरीर, अनेक कार्य-कारणों से सुखी और दुःखी हो सकता है। किन्तु मुख्य कारण, शरीर के दुःखादि में, एक मात्र, षष्ठ-स्थान (रिपु-भाव) है, जिससे, रोग, शत्रु, तथा आध्यात्मिकदृष्टि से कामादि षट् शत्रु द्वारा ही, शरीर को कष्ट मिलता है। यों तो, शरीर की स्वस्थता, तीन प्रकार से ही, हो पाती है अर्थात् यदि, शरीर को, शारीरिक-भोजन (अन्नादि), मानसिक–भोजन (मनोरंजनादि) और आध्यात्मिक–भोजन (ईश्वर-चिन्तनादि) मिलता रहे, तो शरीर, पूर्ण स्वस्थ रह सकता है। परन्तु, इनमें से 'वर्तमान-समय' एक भी भोजन पहुँचाने में, असमर्थ हो रहा है।

"मिथ्याहारविहाराभ्यां दोषा ह्यामाश्रयाः स्थिताः।" के आधार पर शरीर, रोग–युक्त हो जाता है। तब, वास्तव में शारीरिक कष्ट होता है। यदि शरीर, कष्ट से युक्त रहा, तो फिर, जीवन, (कार्य, धर्म) अव्यव-स्थित हो जाना, अवश्यम्भावी है। ज्योतिष के द्वारा, रोग-शत्रु-बाधा को जानकर, उनके निवारण का उपाय, (आयुर्वेदिक, बौद्धिक, आध्यात्मिक आदि प्रकार से) करना चाहिए। जिससे कि, षष्ठ–भाव के कुप्रभाव से बचकर, शरीर का स्वास्थ्य पाकर, ऐहिक और पारलौकिक सौख्य का उपभोग कर सकें। इस क्षेत्र ने, एक स्थान पर लिखा, कि 'अमुक योग होने पर, वैद्य या डाक्टर, इस जातक के रोग का निदान, मृत्यु-पर्यन्त, नहीं कर पाते।' ठीक, ऐसे ही समय पर, बौद्धिक, आयुर्वेदिक उपायों से निराश-व्यक्ति, आध्यात्मिक उपायों द्वारा, सफलता पा सकता है। मन्त्रौषधि द्वारा उपाय करना चाहिए। (मन्त्रश्च औषधिश्च=मन्त्रौषधिः)।

सम्पूर्ण रोगों का वर्णन-क्षेत्र, आयुर्वेद ही है, ज्योतिष नहीं। फिर भी जो, अनेक रोगों का उल्लेख, इसमें आया है। जिसका संक्षेप में यों कहें कि, वात-पित्त-कफ तथा इनके मिश्रण से, अनेक रोगों की उत्पत्ति, उसी प्रकार होती है, जिस प्रकार, सात ग्रह, भिन्न-भिन्न होते हुए, एक राशि (मार्ग) में आकर, संयोग करते हैं तथा मिलकर, विभिन्न होते हुए, एक रूप में प्रभाव डालते हैं। अतएव अब हम, ग्रहों का वह प्रभाव लिखेंगे, जिससे, रोग उत्पन्न होकर, शरीर को कष्ट-युक्त बनाते हैं। शरीर, क्रिया है, ग्रह, कारण हैं, कर्ता—'हमारे किये कर्म-फल-दाता' ईश्वर है। स्थूल-दृष्टि से स्वयं, सूक्ष्म-दृष्टि से, ईश्वर ही 'कर्ता' है। रोग-योग लिखने के पूर्व, शरीर का विभाग, राशियों में इस प्रकार है।

शरीर–विभाग

राशि	कालांग	वाह्यांग	अन्तरंग	हड्डी-बन्ध
मेष	= शिर	= मुख–द्वार	= मेदा	= कनपटी की, मुख की हड्डी
वृष	= मुख	= गला	= श्वासनलिका, अन्ननलिका	= गर्दन की "
मिथु.	= गला, बाहु	= कन्धा, बाहु	= फुस्फुस, श्वास, रक्त	= कन्धे, गले, हाथ की "
कर्क	= वक्ष	= छाती, कोख	= कोष्ठ, पचनेन्द्रिय	= छाती की, कोख की "
सिंह	= हृदय	= मध्य, पंजर	= हृदय (हार्ट)	= } पीठ की "
कन्या	= उदर	= पेट, छोटी-बड़ी आँत	= छोटी-बड़ी आँत	= }
तुला	= कमर	= कमर, गुर्दा	= मूत्र-स्थली	= कमर की "
वृश्चि.	= गुप्तांग	= गुप्तेन्द्रिय, गुदा-द्वार	= गुप्तेन्द्रिय, मूत्राशय	= कटि की, नितम्ब की "
धनु	= जंघा	= जंघा, पीठ, गुर्दा	= शिरा, मज्जा	= जंघा की, गुर्दे की "
मक.	= घुटना	= कटोरी, घुटना	= हड्डी, जोड़	= घुटना की "
कुम्भ	= पिंडुरी	= पैर, घुटुवा, गुल्फ	= रक्त, रक्त-संचार	= घुटना के नीचे की "
मीन	= चरण	= चरण, तलवे	= लसदार पदार्थ	= पैर की "

शरीर में ग्रह-कार्य

सूर्य —जीवन और पुरुष के लिए आयु देनेवाला, रचना और उष्णता देनेवाला, हृदय, जीवन-शक्ति, रक्त, मेदा, पित्त, मेरुदण्ड, स्नायु, आत्मा, पुरुष के दक्षिणनेत्र, स्त्री के वामनेत्र पर, प्रभाव डालता है।

चन्द्र —स्त्री के लिए आयु देनेवाला, शरीर के सभी स्वाभाविक कार्य, शीत, तरल, एक-रूप करना, छाती, स्तन, पेट, रस-धातु, कफ, मन, पुरुष के वामनेत्र, स्त्री के दक्षिणनेत्र, वातश्लेषा, रक्त, मस्तिष्क, उदर, मूत्रस्थली पर, प्रभाव डालता है।

भौम —पित्त, मज्जा, पट्ठों की पुष्टता, शक्ति, रोग, अग्नि (उष्णता), धैर्य-भाव, रूक्ष, दाहक, नाक, कपाल, स्नायु-बन्ध, जननेन्द्रिय के बाहिरी-भाग पर, प्रभाव डालता है।

बुध —वाणी, पृथ्वी, त्रिदोष-धातु, जिव्हा, स्वरनलिका, मेदा, मन, स्वभाव (चंचलता), मज्जा-तन्तु, फुस्फुस, हाथ, मुख, केश, समधातु (त्रिदोष), संयोगी-ग्रह के कार्य पर, प्रभाव डालता है।

गुरु —आकाश, चर्बी, कफधातु, उदर, सौम्य, समधातु (त्रिदोष), समशीतोष्ण, रक्त, वीर्य, यकृत्, धमनी, शिरा, दाहिने कान पर, प्रभाव डालता है।

शुक्र —उष्ण, आर्द्र, गला, दाढ़ी, वक्ष, कपोल, वीर्य, वामकर्ण, जननेन्द्रिय का भीतरी भाग, कफ, स्वर-ध्वनि (संगीत), नेत्र पर, प्रभाव डालता है।

शनि —हड्डी, जोड़, प्लीहा, दाँत, घुटना, श्लेष्मा, वात, स्नायु, शल्य, शूल और रोग पर प्रभाव डालता है।

आरोग्यता

(१) पुरुष की कुण्डली में सूर्य, स्त्री की कुण्डली में चन्द्र (आयुर्दायक होने से) तथा लग्न पर, ध्यान देना चाहिए। यदि ये, किसी प्रकार बली या शुभयोग, दृष्टि से युक्त हों तो, आरोग्यता शीघ्र मिलती है। लग्न से, शरीर की शक्ति, शरीर-बाधा, शरीर के किस भाग में रोग हो सकता है—का विचार करना चाहिए।

(२) यदि लग्न में पुरुष (विषम) राशि हो तो, शरीर पुष्ट होने से, रोग हटाने की शक्ति होती है। इसी प्रकार यदि, लग्न में स्त्री (सम) राशि हो तो, शरीर की शक्ति कोमल होने से, हवा-पानी या सांसर्गिक-रोग होकर, देर में हटता है या असाध्य हो जाता है।

(३) अग्निराशि विशेष बलिष्ठ, इससे कम वायुराशि बलिष्ठ होती है। पृथ्वीराशि शरीर को पुष्ट तो, करती है, साथ ही, कम शक्ति के कारण, देर में रोग हटा पाती है। इसी प्रकार जलराशि, सर्वथा दुर्बल और रोग को हटाने की शक्ति भी, कम रखती है; अतएव कष्ट-साध्य या असाध्य रोग होते हैं।

(४) यदि लग्न से ४५-९०-१८० अंश के समीप, सूर्य हो तो, उष्ण-रोग होता है। इसी प्रकार यदि, चन्द्र हो तो, भीतरी-क्रिया में विकार होकर, शीत-रोग होता है।

लग्न-द्वारा रोग-ज्ञान

मेष —मेषराशि या मेषनवांश की लग्न हो तो, पुष्ट शरीर, उष्णता-युक्त, पूर्ण-जीवन शक्ति होती है। शिर, पेट, मूत्राशय में पीड़ा होना सम्भव है। शिर, आराम में नहीं रहता, उष्णता के विकार से रोग, ज्वर, खुजली, मुखरोग, व्रण, अग्निभय आदि होना, सम्भव हैं।

वृषभ —वृषराशि या वृषनवांश की लग्न हो तो, सुन्दर शरीर और पुष्टता मिलती है। किन्तु हृदय और गला, दुर्बल होता है, अतएव घटसर्प, श्वासनलिका-सूजन, घिस जाने से, रोग होते हैं। जब वृष का प्रभाव, वृश्चिक पर होने लगता है, तब, मलोत्सर्ग-क्रिया में अव्यवस्था, मूल-व्याधि, भीतर से शरीर को फोड़कर, बाहर आने वाले रोग, अपस्मार रोग आदि होते हैं। यदि, इसमें पापग्रह हो तो, रोग असाध्य हो जाता है।

मिथुन —मिथुनराशि या मिथुननवांश की लग्न हो तो, शरीर तो, मजबूत रहेगा, शरीर में स्वाभाविक शक्ति, उत्तम होती है। परन्तु, ऋतु-दोष तथा मानसिक-श्रम-द्वारा, मज्जा-तन्तु में विकार होकर, बिगड़ा स्वभाव,

चिड़चिड़ापन, भययुक्त, जातक होता है। फुस्फुस, हाथ, बाहु, कन्धा में रोग होता है, खाँसी, दमा, अशुद्धरक्त के द्वारा, शरीर-कष्ट होता है। इसमें, शनि-मंगल या शनि-चन्द्र हो और सूर्य को छोड़ कर, अन्य पापग्रह की दृष्टि हो तो, चय-रोग होता है। शनि-मंगल, श्वासोच्छ्वास-क्रिया, बिगाड़ता है।

कर्क —कर्कराशि या कर्कनवांश की लग्न हो तो, दुर्बल-शरीर, अधिक ग्रहण-शीलता होने के कारण, वाह्य परिस्थिति में कलह करने वाला, जल-वायु के परिवर्तन से रोग, प्रत्येक रोग शीघ्र, बढ़ जाता है। छाती, पेट में दुर्बलता, पेट में वायु-विकार, गैस बनना, पाचन-क्रिया में बिगाड़, जलोदर, सन्धि-वात, गण्डमाला रोग, मनोभावना कोमल होने से, थोड़ा रोग भी अधिक जान पड़े, पेटेण्ट औषधि का अधिक प्रयोग करने वाले, मानसिक दुर्बलता के कारण, प्रायः रोगी होते हैं।

सिंह —सिंहराशि या सिंहनवांश की लग्न हो तो बलिष्ठ शरीर, जीवन-शक्ति अधिक, हृदय का शीघ्र-प्रचलन, ब्लड-प्रेशर (रक्त-चाप), मूर्च्छा, पीठ के रोग, बाहरी सूजन (शोथ), कमर में पीड़ा, भयंकर पीड़ा, रोग तो, तीव्रता से होता है और शीघ्रता से दूर भी होता है। प्रायः कम ही, रोगी होते हैं।

कन्या —कन्याराशि या कन्यानवांश की लग्न हो तो, बँधा हुआ मोटा शरीर, रोग तो, शीघ्र दूर हो सकता है। मल-कोष्ठ की आँत (बड़ी आँत), दुर्बल होने से आम, शौच-क्रिया, बद्ध-कोष्ठता, पाचन-क्रिया, अग्निमान्द्य आदि रोग होते हैं; तथा शक्ति, चीण होती जाती है।

तुला —तुलाराशि या तुलानवांश की लग्न हो तो, शरीर, बँधा हुआ, रोग शीघ्र दूर हो सकता है। कमर में दुर्बलता, मूत्रपिण्ड के रोग, मधुमेह, मूत्रावरोध, त्वचा-रोग, दाद, खाज आदि रोग सम्भव हैं। किन्तु, शिर और पेट की क्रियाएँ ठीक रहती हैं।

वृश्चिक —वृश्चिकराशि या वृश्चिकनवांश की लग्न हो तो, शरीर मोटा, बेडौल होता है। मलोत्सर्ग, मूत्रोत्सर्ग, इन्द्रिय कमजोर, मूलव्याधि, शुक्र-दोष, उपदंश, हृदय और गले के रोग, आकर्षण-धर्म अधिक होने से, सांसर्गिक रोग अधिक सम्भव या राक्षसी पीड़ा होती है। शनि, मंगल, चन्द्र के संयोग से मादक पदार्थ, मदिरा का व्यसन, भोला या भूले मस्तिष्क वाला होता है।

धनु —धनुराशि या धनुनवांश की लग्न हो तो, पुष्ट-शरीर, नितम्ब या नितम्ब की हड्डी दुर्बल, आमवात, सन्धि-ज्वर, व्रण, हड्डी का टूटना या निकलना, फुस्फुस, मज्जातन्तु में बिगाड़ होता है।

मकर —मकरराशि या मकरनवांश की लग्न हो तो, दुर्बल शरीर, किसी मात्रा में अशक्त, उष्णता की कमी, शीत-वायु की अधिकता, सन्धि-वात, घुटने की पीड़ा, त्वचा-रोग, शीत-रोग, नाटा शरीर, ज्वर आने पर भी, ठण्डा शरीर, सन्निपात, निमोनिया का भय रहता है।

कुम्भ —कुम्भराशि या कुम्भनवांश की लग्न हो तो, शरीर मजबूत, किन्तु पैर, पेट, घुटना, गुर्दा दुर्बल, अशक्त, मज्जा-तन्तु रोग, रक्त-न्यूनता, पेट-ऐंठना, पैर में मोच, नेत्र-रोग, चमत्कारिक या विलक्षण रोग होना, सम्भव रहता है।

मीन —मीनराशि या मीननवांश की लग्न हो तो, अशक्त-प्रकृति, जीवन-शक्ति की कमी, देर तक रोग बना रहने वाला, पेट, आमवात, जलवात, पैर में पसीना निकलने से ठण्ढे, शीत लगने से पैर में रोग, जलोदर, सांक्रामिक-रोग, व्यसन में रुचि, मादक-पदार्थ-सेवी हो जाते हैं।

लग्न-सम्बन्ध

(१) गुरु-शुक्र के द्वारा, शुभ-सम्बन्ध, लग्न में होने से, निरोगी शरीर या रोग दूर करने की शक्ति होती है। इसी प्रकार, लग्न से यदि, सूर्य-चन्द्र का शुभ सम्बन्ध हो तो, सुन्दर शरीर और अवयव-क्रियाएँ ठीक होती हैं। मंगल के शुभ-योग से, शरीर में उष्णता की वृद्धि, जीवन-शक्ति अच्छी, उत्साह की वृद्धि होती है। शनि के शुभयोग से, हड्डी मजबूत तथा गठीला शरीर बनता है।

(२) जब लग्न से, गुरु-शुक्र का अशुभ सम्बन्ध होता है तब, अदूरदर्शिता या मिथ्या-आहार-विहार से, शरीर में रोग होते हैं। इसी प्रकार सूर्य-चन्द्र के [illegible] शरीर, अनियमित रहने से, शीत से

रोग होना, सम्भव है। मंगल के अशुभ योग से, व्रण या नया-ज्वर होता है। शनि के अशुभ योग से, दुर्बल शरीर, शीत द्वारा या देर तक रहने वाले, रोग होते हैं।

दृष्टि-द्वारा रोग [पाश्चात्य, पृष्ठ ३५२-३५३]

(१)	यदि सूर्य पर चन्द्र	की अशुभदृष्टि हो तो,		शीत-विकार और नेत्र-रोग होना, विशेष सम्भव रहता है।
(२)	"	भौम	"	उष्णता, उत्साह, दाहयुक्त ज्वर, व्रण या अपघात (एक्सीडेण्ट)।
(३)	"	गुरु	"	रक्तदोष, अपस्मार, धनी-खान-पान-वास से रोग, रक्ताधिक्य।
(४)	"	शुक्र	"	खान-पान की अव्यवस्था से साधारण रोग।
(५)	"	शनि	"	स्थिर या असाध्य रोग, तीव्ररोग, शीत या दरिद्रता से रोग।
(६)	यदि चन्द्र पर सूर्य		"	अशक्तता, शीत विकार। स्त्रियों के लिए अति अशुभ।
(७)	"	भौम	"	ताप, अपघात, दाहक रोग, हठ या अदूरदर्शिता से रोग।
(८)	"	बुध	"	मानसिक-त्रास अथवा मानसिक विकार द्वारा रोग होना, सम्भव है।
(९)	"	गुरु	"	यकृत रोग, रक्तदोष, धनीवत् या मसाले की वस्तु खाने से रोग।
(१०)	"	शनि	"	स्थिर रोग, शीत या आलस्य (धनी) से होने वाले रोग।

नोट—

[क] स्त्रियों के लिए 'चन्द्र' आयुर्दायक है। वृश्चिक तथा मकर का चन्द्र, दुर्बल होता है। वृश्चिक राशि की स्त्री का ऋतु-स्राव, ठीक नहीं हो पाता तथा इसी कारण से, प्रायः उसे, रोग उत्पन्न होते हैं। रोगों में, अनियमित रहने वाली, असमान प्रकृति, मेदाधिक्यता होती है। मकर राशि की स्त्री, अशक्त, आलसी, कोमल, छोटे-मोटे रोगों से घिरी हुई, मेदा-विकार या क्रूरता या रुक्षता वाली होती है।

[ख] इस दृष्टि-विचार के पूर्व, जो रोग के योग दिये गये हैं, वे, प्रायः साधारण हैं, कभी घटित होते हैं, कभी नहीं भी। क्योंकि, अन्यान्य 'बाधक-योग' (रोग-बाधक=आरोग्यदायक) भी मिल जाते हैं। परन्तु, लग्न-सम्बन्ध में, राशि-ग्रह का प्रभाव दिखाना, आवश्यक था। अतएव उन्हें, लिखना पड़ा। अब आगे, केवल रोग स्थान के आधार पर, रोग-विचार किया जायगा। जो कि, अधिक घटित होते रहते हैं।

रोग-स्थान

(१) कुण्डली के षष्ठ भाव को, रोग-स्थान कहते हैं। जातक को कौनसा रोग होगा, किस अंग में होगा, किस कारण से होगा? इत्यादि का निर्णय, इसी स्थान से किया जाता है। यह, रिपु-स्थान भी है। रोग भी, शरीर का 'रिपु' ही है। जैसे अष्टमभाव से, मृत्यु-कारण देखा जाता है; वैसे ही, षष्ठ-भाव से, रोग-कारण, देखा जाता है।

(२) यदि, षष्ठ-भाव में ग्रह हो तो, 'राशि-ग्रह-रोग' से, अन्यथा 'राशि रोग' से विचार कीजिए। हाँ, षष्ठ-भाव की राशि पर यदि, शुभग्रह की दृष्टि हो तो, जीवन में कभी-कभी रोग होगा और शीघ्र ही, दूर भी हो जायगा। यदि षष्ठ-भाव में मंगल, शनि या पापयुक्त बुध हो, तथा सूर्य-चन्द्र की अशुभ दृष्टि हो तो, कठिन रोग होता है। हाँ, सूर्य-चन्द्र को, आयुर्दायक कहा गया है; अतः इनके द्वारा, प्रायः कम ही रोग होता है। यदि लग्न बलिष्ठ हो, आयुर्दायक ग्रह (सूर्य-चन्द्र), पाप-दृष्टि-युति से रहित हों तो, अग्रिम योगों का, पूर्ण प्रभाव न होगा। अग्रिम योगों का तात्पर्य यह है कि, राशि द्वारा होने वाले रोग। हाँ, रोग न होकर, कभी उस अंग की निर्बलता मात्र होना, सम्भव है। यह नहीं, कि षष्ठ-स्थान की इन राशियों के द्वारा-सूचित, रोग-वृन्द से, प्रत्येक मनुष्य को, घिरा ही होना चाहिए। ग्रह और राशि मिल कर, मिश्रित-रोग होते हैं।

राशि-रोग

मेष —मेदाविकार, शिर शूल, आधा-शीशी, निद्रानाश, नेत्र और मुख के रोग होना, सम्भव है।

वृष —गले के रोग, घटसर्प, श्वासनली में सूजन, दाह-युक्त रोग—जिससे, हृदय और मल-मूत्र की क्रिया में

अव्यवस्था, भोजन करने या बोलने में कष्ट हो। यही रोग, वृश्चिक पर भी हो सकते हैं।

मिथुन —फुस्फुस (लँग्स) के रोग, खाँसी, दमा, श्वास-रोग, मज्जा-रोग, रक्तविकार-रोग।

कर्क —उदर-विकार, पाचन-क्रिया में गड़बड़, शरीर में मेद-वृद्धि, पेट में वायु-विकार (गैस बनना)।

सिंह —अनियमित विहार से रोग, रक्त-विकार, हृदय-रोग।

कन्या —उदर-रोग, बद्ध-कोष्ठता, आमांश-गड़बड़, अनपच।

तुला —मूत्रस्थल के रोग, मधुमेह, अति-मूत्र (बहुमूत्र), मूत्र-कृच्छ्र आदि रोग।

वृश्चिक —मलोत्सर्ग-क्रिया, जननेन्द्रिय, मूत्राशय के रोग, मूल-व्याधि, भगन्दर, गुप्तरोग।

धनु —हड्डी टूटना, मज्जा-रोग, क्षय, रक्त-दोष, यकृत-विकार, ऋतुदोष से हिस्टीरिया।

मकर —शीत-रोग, रक्त-संचार में विकृति, स्वेदोन्माद, सन्धिवात, आमवात, बद्ध-कोष्ठता, त्वचा-रोग।

कुम्भ —मानसिक रोग, रक्त-संचार कम, नेत्र-विकार, शरीर अकड़ना, पेट ऐंठना, रूक्षता या उष्णता भरना।

मीन —घृणित-रोग, खाज, नहरुवा (मध्यप्रदेशीय रोग) होना, शरीर में गाँठ होना, आँव के रोग, प्रवाही रस-रक्त बिगड़ना। यदि पापयुक्त हो तो, क्षय-रोग तक होना, सम्भव है।

राशि–ग्रह–रोग

मंगल —इसका मुख्य स्वभाव, उष्णता या दाह करना है। उष्णता सुखकारक, दाह कष्टकारक होती है। उष्णता से उत्साह, शक्ति, सत्य-प्रियता, नियमिता की वृद्धि होती है। परन्तु दाह, केवल रोग उत्पन्न कर, शारीरिक या मानसिक, कष्ट देती है। इसका दाहक स्वभाव, ज्वर, सांक्रामिक ताप, चर्मरोग, स्फोटकरोग, व्रण, चोट, तीक्ष्णरोग (भूतज्वर, क्रोधज्वर), कुछ देर तक रहने वाले रोग करता है। यदि षष्ठभाव में, शनि-मंगल या राहु-मंगल हो, अर्थात् इनकी, युति-दृष्टि हो तो, अधिक कष्टकारक रोग होते हैं। यदि मंगल, सूर्य से दृष्टि-युति करता हो तो, प्रायः उत्साह या उष्णता की तीव्रता बढ़ाकर, वीर-पुरुष बना देता है। अब आगे, षष्ठ-स्थान में स्थित, मंगल की राशि का प्रभाव, लिखा जा रहा है।

मेष —मेदाविकार, ज्वर, शिर में रक्तवाहिनी स्नायु का टूटना-बिगड़ना, शिर में रक्त-संचय (ब्लड-प्रेसर), शिरः-शोथ, दैवीरोग, शिर के किसी भाग में चोट, नेत्र-रोग होना, सम्भव है।

वृष —श्वासनलिका-दाह अथवा मूत्रस्थली में किसी रूप का रोग होना, सम्भव है।

मिथुन —खाँसी, फुस्फुस-दाह, निमोनिया, रक्त-विकार, पेट बढ़ना आदि रोगों के होने की सम्भावना है।

कर्क —मन्दाग्नि, अनपच से ज्वर, टाईफाइड (मोतीझिरा), आमज्वर, पित्त-विकार। स्त्री की कुण्डली में—यदि मंगल, अग्नि-राशि में (मेष-सिंह-धनु में), षष्ठस्थानस्थ हो तो, प्रसव-काल में, रक्त-स्राव अधिक, गर्भ-पात, प्रसवान्त-रोग, बालक को रोग होना, सम्भव है।

सिंह —हृदय का धड़धड़ाना, मलेरिया, झिल्ली-प्रदाह (फुस्फुसावरण-दाह) मूर्च्छा-रोग, ब्लड-प्रेसर होता है।

कन्या —अतीसार, अन्त्र-प्रदाह, कॉलरा (हैजा), अन्तर्दाह, आमाशय-रोग, आम-ज्वर।

तुला —मूत्रपिण्ड-सम्बन्धी कोई रोग।

वृश्चिक —भगन्दर, उपदंश, मूत्ररोग, रक्तविकार। स्त्री को प्रसूतिका, वात-ज्वर, रज या गर्भाशय के रोग।

धनु —जंघा, नितम्ब, फुस्फुस-दाह, ज्वर, गुदा-रोग।

मकर —सन्धि-वात, आमांश, त्वचा-रोग।

कुम्भ —स्थिर-ज्वर, मन्थर-ज्वर, विषम-ज्वर, देर तक रहने वाला रोग, हृदय-विकार।

मीन —क्षय, सांक्रामिक रोग, रक्त-न्यूनता।

बुध

इसका प्रभाव, मज्जा, बुद्धि, मेदा, ज्ञानतन्तु पर विशेष है। अतएव शिरपीड़ा, आधाशीशी, निद्रानाश, झपकी आना (तन्द्रारोग), आलस्य भरना, स्मरण-शक्ति का ह्रास, शिर भनभनाना, कुछ सुनाई न देना, चक्कर (फिट) आना, ये सब बुध-द्वारा रोग होते हैं अतिश्रम या अतिअभ्यास से होनेवाले रोग (अनपच, क्षुधानाश, मेदा-वृद्धि, प्यास बढ़ना) होते हैं। बुध-राशि का प्रभाव आगे लिखा जा रहा है।

मेप —शिर:शूल, आधाशीशी, निद्रानाश।
वृप —गले में घरघराहट, आवाज बैठना, श्वासनलिका मे सूजन, दाँत निकलते समय के विकार।
मिथुन —कन्धा दुखना, हाथ-पैर में ऐंठन, खाँसी, श्वास-क्रिया में अड़चन होना।
कर्क —पेट मे दर्द, मेदा-वृद्धि, अनपच, भरभराट या चिन्ता, व्याकुलता, अतिश्रम के रोग।
सिंह —हृदय-कम्प (बेमिग थाट्स) मूर्च्छा-रोग, मेरु या पीठ मे दर्द, पुट्ठे मे दर्द।
कन्या —उदरविकार, मलोत्सर्ग या आमाशय रोग, कृमि-वृद्धि (चुन्ना या पटेर होना)।
तुला —मूत्राशय रोग, मूत्रकृच्छ्र रोग (पेशाब के समय चिलकन)।
वृश्चिक—मूत्रपिण्डरोग, जननेन्द्रिय-रोग। स्त्रियों को, ऋतु-स्राव रोग।
धनु —जंघा, नितम्ब, कमर, गुर्दा आदि मे रोग।
मकर —सन्धि-वात, हाथ-पैर में सूजन, पीलपाँव, बद्धकोष्ठता, उदासीनता।
कुम्भ —पुरुषों को अशक्तता, वायु-विकार, रूक्षता। स्त्रियों को हिस्टीरिया।
मीन —क्षयरोग, हाथ-पैर (हथेली-तलवे) मे पसीना आना, शीत-वात, भौंरी या चक्कर आना।

गुरु —यह शुभग्रह है। अतः प्रायः रोग नहीं करता। हाँ, जब यह, सूर्य या चन्द्र से, अशुभ-युति-दृष्टि करता है, तभी रोग होना सम्भव है। षष्ठस्थानस्थ गुरु, मेद-वृद्धि करता है। कोई एकाध 'रस' अधिक कर देता है। केवल यकृत में विशेष प्रभाव रखता है। गुरु—राशि का प्रभाव, आगे लिखा जा रहा है।

मेप —शिर भन्नाना, मूर्च्छा आना, शिर में रक्त-संचय अधिक होना।
वृप —वात-रक्त-दोप, आलस्य या चैन से या धनी रहन-सहन से होने वाले रोग, घाय द्वारा रोग।
मिथुन —फुस्फुसावरण-प्रदाह (झिल्ली-दाह), छाती की दुर्बलता।
कर्क —अनपच, दाँत से रक्त गिरना (पीव आना), पायरिया, मेदवृद्धि, जलोदर रोग।
सिंह —अपस्मार, प्रदाह होना, आन्तरिक रूक्षता (ऊष्मा भरना) मेद-वृद्धि, फुस्फुस में दबाव, हृदय-कम्प होना।
कन्या —आँत की दुर्बलता, यकृत-रोग, यकृत-सूजन (लीवर बढ़ना) ग्रन्थि पड़ना (अपेनडेक्स)।
तुला —मूत्रपिण्ड के रोग, मधुमेह।
वृश्चिक—नाभिरोग (मूल-व्याधि) मूत्र-रोग, वीर्य-रोग, जननेन्द्रिय-व्रण, जलोदर के समान-रोग।
धनु —प्रायः रोग कम होना, गुर्दा, जंघा, नितम्ब में वजन होना।
मकर —उच्छ्वास-रोग, खाने-पीने मे आलस्य या अतिचार से चर्मरोग, रक्तप्रवाह मे असमानता।
कुम्भ —कमरपीड़ा, मेदावृद्धि, रूक्षता आना, वातविकार से दुर्बलता, रक्त-रस की न्यूनता।
मीन —प्रायः दुर्बलता, देखने में मोटापन।

शुक्र— यह शुभग्रह होने से, प्रायः रोग नहीं करता। परन्तु जब, पापयुति—दृष्टि से, इसमें अशुभता आजाती है तब, वीर्य-रोग उत्पन्न करता है। यह जब, वृश्चिक राशि में षष्ठस्थानस्थ होता है तब, गरमी, उपदंश। वायुराशि—(मिथुन. तुला. कुम्भ) में, विषय-वासना (स्त्रीसंग) की वृद्धि करता है। शुक्र प्रायः, जलरोग, गले की गाँठ (घुटकी) बढ़ना, मूत्र-वीर्य-दोप आदि करता है। यदि, शुभ-राशि में शुभयुक्त-दृष्ट शुक्र हो तो, रक्षक होता है। किन्तु, अशुभराशिस्थ, पापयुत-दृष्ट शुक्र, आगे लिखे गए, रोग उत्पन्न करता है। हाँ, स्त्रियों की कुण्डली में—जब शुक्र की अशुभ-दृष्टि, चन्द्र पर होती है तभी, उन्हें, आगे लिखे गए रोग, सम्भव हो सकते हैं।

मेप —श्वासकष्ट, त्वचारोग, कान्तिक्षय, खुजली रोग।
वृप —गला रोग, कपोल सूजन, घटसर्प, वाणी दोप।
मिथुन —श्वास-क्रिया में अव्यवस्था।
कर्क —अनपच, पेट मे अफरा होना।
सिंह —छाती में पीड़ा, मूर्च्छारोग।

कन्या —उदरविकार, कृमिरोग, अन्न पानादि से रोग, पार्थिवविकार से रोग, नाभिरोग।
तुला —मूत्राशय के रोग, मेद-रोग।
वृश्चि.—उपदंश, मूत्राशय की निर्बलता, गर्भाशय रोग, बच्चेदानी बिगड़ना, योनि-रोग।

धनु —गुर्दा-रोग, फुस्फुस की दुर्बलता।
मकर —घुटना दर्द, वमन होना, अफरा होना, कृमि-वृद्धि।
कुम्भ —रक्त-न्यूनता, हिस्टीरिया (भूतबाधा)।
मीन —जलवात (शीतवात), स्वेद-रोग होना।

शनि —ये शनि देवता हैं, रोगों के मुख्य कारण। आप, वायु-प्रधान हैं। अतएव—"पित्तःपंगुः कफः पंगुः पंगवो मलधातवः। वायुना यत्र नीयन्ते तत्र गच्छन्ति धातवः।" माधवनिदानकार ने कह कर, स्पष्ट कर दिया है कि, जब तक वायु अनुकूल रहे, तब तक मनुष्य क्या, संसार तक, स्वस्थ रहता है। शनि का मुख्य धर्म, शीत, वायु, रूक्षता, सुखाना, देर तक रहने वाले रोग करना है। शनि, षष्ठ-स्थान में या लग्न-लग्नेश, षष्ठ-षष्ठेश से कोई सम्बन्ध भर कर ले, कि, आपको शरीर-सुख नहीं देना—मुख्य कार्य रहेगा। यदि शनि की अशुभ-दृष्टि, सूर्य पर हो या लग्नांश से सप्तम (१८० अंश) पर शनि हो, तो शरीर, सर्वदा अस्वस्थ रहता है। शनि के समान, षष्ठ-स्थान में, अन्य कोई ग्रह अशुभता नहीं करते। ठण्ढ करना, शीत, उदासीनता, स्वेद, उन्माद, सर्ववातरोग, सन्धि-वात, आमवात, बधिरता, पक्षाघात, इनफ्ल्यूञ्जा, काला-ज्वर, त्वचा-रोग, क्षय, खाँसी, दमा, राजयक्ष्मा आदि हैं। आगे, शनि-राशि के रोग, लिखे जा रहे हैं।

मेष —शिरपीड़ा, उदर-रोग, शिर में शीत भरना, यकृत पीड़ा, दन्तरोग, शिर में वन पड़ना, बधिरता।
वृष —वट-सर्प, गाल में सूजन, बोल-बैठना, बधिरता, श्वासनलिका के रोग।
मिथुन —क्षय, निमोनिया, खाँसी, फुस्फुस क्रिया में अव्यवस्था।
कर्क —मन्दाग्नि, अनपच, उदर-शूल, दमा, श्लेष्मा सूखना, गर्भाशय-रोग।
सिंह —हृदय-रोग, कोख, पंजर, मेरुदण्ड अकड़ना, यकृत में विकार।
कन्या —बद्ध-कोष्टता, उदर में वायु भरना (गैस बनना), पाचन-क्रिया में गड़बड़ी।
तुला —शिर दुखना, मूत्राशय रोग, कमर दुखना, मूत्रावरोध, पथरी।
वृश्चिक —वातरक्त-विकार, बहुमूत्र, मूल-व्याधि, भगन्दर। स्त्री को—ऋतु-विकृति, गर्भाशय-रोग।
धनु —आम-रस का संचय, खाँसी, क्षय, मज्जातन्तु-रोग (तन्तु दुर्बलता), नितम्ब-जंघा में शूल।
मकर —सन्धिवात, काल-ज्वर, इन्फ्ल्यूञ्जा, चर्म-रोग, घुटने में दर्द, बद्ध-कोष्ठता।
कुम्भ —उदर बढ़ना या ऐंठना, अशक्ति, रक्त-न्यूनता, मेरुदण्ड-रोग, नेत्र-विकार, बिवाई फटना।
मीन —क्षय, सन्धिवात, पादतल में रोग, शीत-घात होना, सूजन होना।

राहु-केतु—षष्ठ-भाव में ये दोनों ग्रह, प्रायः अशुभ नहीं होते। जिसमें, षष्ठस्थ केतु का प्रभाव, नहीं के बराबर होता है। हाँ, जब सूर्य-केतु षष्ठ में हो तब सूर्य, पीड़ादायक हो जाता है। राहु तो केवल—मेष-कर्क-वृश्चिक-सिंह-मीन राशि का, षष्ठ-स्थान में, कभी थोड़ा-सा ही अशुभ हो पाता है; वह भी, शनि के समान ही जानिए। परन्तु, अधिकांशतः शुभ ही प्रभाव करता है। आगे—विभिन्न-रोगों में से, एक-एक रोग के कई योग, एकत्र करके, लिखे जा रहे हैं।

शिर-रोग

(१) यदि सूर्य या गुरु, लग्न में हों, इस पर मंगल,-शनि की दृष्टि-युति हो तो, शिर-रोग, रक्त-पित्त रोग, क्रोध-रोग, उन्माद-रोग, स्मृति-नाश, भ्रमित-चित्त, चोट के द्वारा विस्मृति-रोग होता है।

(२) यदि लग्न में शनि हो और मंगल, षष्ठ-सप्तम, त्रिकोण में हो, शनि-मंगल की युति-दृष्टि हो, तो मूर्च्छा, उन्माद, असह्य-पीड़ा, आप्रेशन (चीर-फाड़) होता है।

(३) यदि सूर्य-चन्द्र, एक साथ, धनु के पूर्वार्ध राशि में, लग्न या त्रिकोण में हों और गुरु, तृतीय या केन्द्र में हो तो, उन्माद-बुद्धि वाला होता है।

(४) यदि जन्म लग्न में, मेष-मकर-कुम्भ-मीन राशि हो; सूर्य-चन्द्र, त्रिकोण में हों, गुरु, तृतीय या केन्द्र में हो तो, उन्माद-बुद्धि, भ्रम-युक्त, संशयात्मक होता है।

(५) यदि चन्द्र-बुध, केन्द्रस्थ हों अथवा अशुभ-नवांश में हों; तो वह, भ्रम-युक्त या संशयात्मक होता है।

मेष —शिरःशूल, आधाशीशी, निद्रानाश।
वृष —गले मे घरघराहट, आवाज बैठना, श्वासनलिका मे सूजन, दाँत निकलते समय के विकार।
मिथुन —कन्धा दुखना, हाथ-पैर में ऐठन, खाँसी, श्वास-क्रिया में अड़चन होना।
कर्क —पेट मे दर्द, मेदा-वृद्धि, अनपच, भरभराट या चिन्ता, व्याकुलता, अतिश्रम के रोग।
सिंह —हृदय-कम्प (बेभिग थाट्स) मूर्च्छा-रोग, मेरु या पीठ में दर्द, पुट्ठे में दर्द।
कन्या —उदरविकार, मलोत्सर्ग या आमाशय रोग, कृमि-वृद्धि (चुन्ना या पटेर होना)।
तुला —मूत्राशय रोग, मूत्रकृच्छ्र रोग (पेशाब के समय चिलकन)।
वृश्चिक—मूत्रपिण्डरोग, जननेन्द्रिय-रोग। स्त्रियों को, ऋतु-स्राव रोग।
धनु —जंघा, नितम्ब, कमर, गुर्दा आदि मे रोग।
मकर —सन्धि-वात, हाथ-पैर मे सूजन, पीलपाँव, बद्धकोष्ठता, उदासीनता।
कुम्भ —पुरुषों को अशक्तता, वायु-विकार, रूक्षता। स्त्रियों को हिस्टीरिया।
मीन —क्षयरोग, हाथ-पैर (हथेली-तलवे) मे पसीना आना, शीत-वात, भौंरी या चक्कर आना।

गुरु —यह शुभग्रह है। अतः प्रायः रोग नहीं करता। हाँ, जब यह, सूर्य या चन्द्र से, अशुभ-युति-दृष्टि करता है, तभी रोग होना सम्भव है। षष्ठस्थानस्थ गुरु, मेद-वृद्धि करता है। कोई एकाध 'रस' अधिक कर देता है। केवल यकृत में विशेष प्रभाव रखता है। गुरु—राशि का प्रभाव, आगे लिखा जा रहा है।

मेष —शिर भन्नाना, मूर्च्छा आना, शिर मे रक्त-संचय अधिक होना।
वृष —वात-रक्त-दोष, आलस्य या चैन से या धनी रहन-सहन से होने वाले रोग, धाय द्वारा रोग।
मिथुन —फुस्फुसावरण-प्रदाह (झिल्ली दाह), छाती की दुर्बलता।
कर्क —अनपच, दाँत से रक्त गिरना (पीब आना), पायरिया, मेदवृद्धि, जलोदर रोग।
सिंह —अपस्मार, प्रदाह होना, आन्तरिक रूक्षता (उष्मा भरना) मेद-वृद्धि, फुस्फुस मे दबाव, हृदय-कम्प होना।
कन्या —आँत की दुर्बलता, यकृत-रोग, यकृत-सूजन (लीवर बढ़ना) ग्रन्थि पड़ना (अपेनडेक्स)।
तुला —मूत्रपिण्ड के रोग, मधुमेह।
वृश्चिक—नाभिरोग (मूल-व्याधि) मूत्र रोग, वीर्य-रोग, जननेन्द्रिय-व्रण, जलोदर के समान-रोग।
धनु —प्रायः रोग कम होना, गुर्दा, जंघा, नितम्ब मे वजन होना।
मकर —उच्छ्वास-रोग, खाने-पीने मे आलस्य या अतिचार से चर्मरोग, रक्तप्रवाह में असमानता।
कुम्भ —कमरपीड़ा, मेदावृद्धि, रूक्षता आना, वातविकार से दुर्बलता, रक्त-रस की न्यूनता।
मीन —प्रायः दुर्बलता, देखने में मोटापन।

शुक्र— यह शुभग्रह होने से, प्रायः रोग नहीं करता। परन्तु जब, पापयुति—दृष्टि से, इसमे अशुभता आजाती है तब, वीर्य-रोग उत्पन्न करता है। यह जब, वृश्चिक राशि मे षष्ठस्थानस्थ होता है तब, गरमी, उपदंश। वायुराशि—(मिथुन, तुला, कुम्भ) मे, विषय-वासना (स्त्रीसंग) की वृद्धि करता है। शुक्र प्रायः, जलरोग, गले की गाँठ (घुटकी) बढ़ना, मूत्र-वीर्य-दोष आदि करता है। यदि, शुभ-राशि में शुभयुक्त-दृष्ट शुक्र हो तो, रक्षक होता है। किन्तु, अशुभराशिस्थ, पापयुत-दृष्ट शुक्र, आगे लिखे गए, रोग उत्पन्न करता है। हाँ, स्त्रियों की कुण्डली में—जब शुक्र की अशुभ-दृष्टि, चन्द्र पर होती है तभी, उन्हे, आगे लिखे गए रोग, सम्भव हो सकते हैं।

मेष —श्वासकष्ट, त्वचारोग, कान्तिक्षय, खुजली रोग।
वृष —गला रोग, कपोल सूजन, घटसर्प, वाणी दोष।
मिथुन —श्वास-क्रिया में अव्यवस्था।
कर्क —अनपच, पेट मे अफरा होना।
सिंह —छाती मे पीड़ा, मूर्च्छारोग।

कन्या —उदरविकार, कृमिरोग, अन्न-पानादि से रोग, पार्थिवविकार से रोग, नाभिरोग।
तुला —मूत्राशय के रोग, मेद-रोग।
वृश्चि.—उपदंश, मूत्राशय की निर्बलता, गर्भाशय रोग, बच्चेदानी बिगड़ना, योनि-रोग।

धनु —गुर्दा-रोग, फुस्फुस की दुर्बलता।
मकर —घुटना दर्द, वमन होना, अफरा होना, कृमि-वृद्धि।
कुम्भ —रक्त-न्यूनता, हिस्टीरिया (भूतबाधा)।
मीन —जलवात (शीतवात), स्वेद-रोग होना।

शनि —ये शनि देवता हैं, रोगों के मुख्य कारण। आप, वायु-प्रधान हैं। अतएव—"पित्तःपंगुः कफः पंगुः पंगवो मलधातवः। वायुना यत्र नीयन्ते तत्र गच्छन्ति धातवः।" माधवनिदानकार ने कह कर, स्पष्ट कर दिया है कि, जब तक वायु अनुकूल रहे, तब तक मनुष्य क्या, संसार तक, स्वस्थ रहता है। शनि का मुख्य धर्म, शीत, वायु, रूक्षता, सुखाना, देर तक रहने वाले रोग करना है। शनि, षष्ठ-स्थान में या लग्न-लग्नेश, षष्ठ-षष्ठेश से कोई सम्बन्ध भर कर ले, कि, आपको शरीर-सुख नहीं देना—मुख्य कार्य रहेगा। यदि शनि की अशुभ-दृष्टि, सूर्य पर हो या लग्नांश से सप्तम (१८० अंश) पर शनि हो, तो शरीर, सर्वदा अस्वस्थ रहता है। शनि के समान, षष्ठ-स्थान में, अन्य कोई ग्रह अशुभता नहीं करते। ठण्ढ करना, शीत, उदासीनता, स्वेद, उन्माद, सर्ववातरोग, सन्धि-वात, आमवात, बधिरता, पक्षाघात, इनफ्ल्यूञ्जा, काला-ज्वर, त्वचा-रोग, क्षय, खाँसी, दमा, राजयक्ष्मा आदि हैं। आगे, शनि-राशि के रोग, लिखे जा रहे हैं।

मेष —शिरपीड़ा, उदर-रोग, शिर में शीत भरना, यकृत पीड़ा, दन्तरोग, शिर में घन पड़ना, बधिरता।
वृष —वट-सर्प, गाल में सूजन, बोल-बैठना, बधिरता, श्वासनलिका के रोग।
मिथुन —क्षय, निमोनिया, खाँसी, फुस्फुस क्रिया में अव्यवस्था।
कर्क —मन्दाग्नि, अनपच, उदर-शूल, दमा, श्लेष्मा सूखना, गर्भाशय-रोग।
सिंह —हृदय-रोग, कोख, पंजर, मेरुदण्ड अकड़ना, यकृत में विकार।
कन्या —बद्ध-कोष्टता, उदर में वायु भरना (गैस बनना), पाचन-क्रिया में गड़बड़ी।
तुला —शिर दुखना, मूत्राशय रोग, कमर दुखना, मूत्रावरोध, पथरी।
वृश्चिक —वातरक्त-विकार, बहुमूत्र, मूल-व्याधि, भगन्दर। स्त्री को—ऋतु-विकृति, गर्भाशय-रोग।
धनु —आम-रस का संचय, खाँसी, क्षय, मज्जातन्तु-रोग (तन्तु दुर्बलता), नितम्ब-जंघा में शूल।
मकर —सन्धिवात, काल-ज्वर, इन्फ्ल्यूञ्जा, चर्म-रोग, घुटने में दर्द, बद्ध-कोष्ठता।
कुम्भ —उदर बढ़ना या ऐंठना, अशक्ति, रक्त-न्यूनता, मेरुदण्ड-रोग, नेत्र-विकार, बिवाई फटना।
मीन —क्षय, सन्धिवात, पादतल में रोग, शीत-वात होना, सूजन होना।

राहु-केतु—षष्ठ-भाव में ये दोनों ग्रह, प्रायः अशुभ नहीं होते। जिसमें, षष्ठस्थ केतु का प्रभाव, नहीं के बराबर होता है। हाँ, जब सूर्य-केतु षष्ठ में हो तब सूर्य, पीड़ादायक हो जाता है। राहु तो केवल—मेष-कर्क-वृश्चिक-सिंह-मीन राशि का, षष्ठ-स्थान में, कभी थोड़ा-सा ही अशुभ हो पाता है; वह भी, शनि के समान ही जानिए। परन्तु, अधिकांशतः शुभ ही प्रभाव करता है। आगे—विभिन्न-रोगों में से, एक-एक रोग के कई योग, एकत्र करके, लिखे जा रहे हैं।

शिर-रोग

(१) यदि सूर्य या गुरु, लग्न में हों, इस पर मंगल,-शनि की दृष्टि-युति हो तो, शिर-रोग, रक्त-पित्त रोग, क्रोध-रोग, उन्माद-रोग, स्मृति-नाश, भ्रमित-चित्त, चोट के द्वारा विस्मृति-रोग होता है।

(२) यदि लग्न में शनि हो और मंगल, षष्ठ-सप्तम, त्रिकोण में हो, शनि-मंगल की युति-दृष्टि हो, तो मूर्च्छा, उन्माद, असह्य-पीड़ा, आप्रेशन (चीर-फाड़) होता है।

(३) यदि सूर्य-चन्द्र, एक साथ, धनु के पूर्वार्ध राशि में, लग्न या त्रिकोण में हों और गुरु, तृतीय या केन्द्र में हो तो, उन्माद-बुद्धि वाला होता है।

(४) यदि जन्म लग्न में, मेष-मकर-कुम्भ-मीन राशि हो; सूर्य-चन्द्र त्रिकोण में हों, गुरु, तृतीय या केन्द्र में हो तो, उन्माद-बुद्धि, भ्रम-युक्त, संशयात्मक होता है।

(५) यदि चन्द्र-बुध, केन्द्रस्थ हों अथवा अशुभ-नवांश में हों; तो वह, भ्रम-युक्त या संशयात्मक होता है।

मेष —शिरःशूल, आधाशीशी, निद्रानाश।
वृष —गले में घरघराहट, आवाज बैठना, श्वासनलिका मे सूजन, दाँत निकलते समय के विकार।
मिथुन —कन्धा दुखना, हाथ-पैर में ऐंठन, खाँसी, श्वास-क्रिया में अड़चन होना।
कर्क —पेट मे दर्द, मेदा-वृद्धि, अनपच, भरभराट या चिन्ता, व्याकुलता, अतिश्रम के रोग।
सिंह —हृदय-कम्प (वेभिंग थाट्स) मूर्च्छा-रोग, मेरु या पीठ मे दर्द, पुट्ठे में दर्द।
कन्या —उदरविकार, मलोत्सर्ग या आमाशय रोग, कृमि-वृद्धि (चुन्ना या पटेर होना)।
तुला —मूत्राशय रोग, मूत्रकृच्छ्र रोग (पेशाब के समय चिलकन)।
वृश्चिक—मूत्रपिण्डरोग, जननेन्द्रिय-रोग। स्त्रियों को, ऋतु-स्राव रोग।
धनु —जंघा, नितम्ब, कमर, गुर्दा आदि में रोग।
मकर —सन्धि-वात, हाथ-पैर में सूजन, पीलपॉव, बद्धकोष्ठता, उदासीनता।
कुम्भ —पुरुषों को अशक्तता, वायु-विकार, रूक्षता। स्त्रियों को हिस्टीरिया।
मीन —क्षयरोग, हाथ-पैर (हथेली-तलवे) मे पसीना आना, शीत-वात, भौंरी या चक्कर आना।

गुरु —यह शुभग्रह है। अतः प्रायः रोग नहीं करता। हाँ, जब यह, सूर्य या चन्द्र से, अशुभ-युति-दृष्टि करता है, तभी रोग होना सम्भव है। षष्ठस्थानस्थ गुरु, मेद-वृद्धि करता है। कोई एकाध 'रस' अधिक कर देता है। केवल यकृत में विशेष प्रभाव रखता है। गुरु—राशि का प्रभाव, आगे लिखा जा रहा है।

मेष —शिर भन्नाना, मूर्च्छा आना, शिर मे रक्त-संचय अधिक होना।
वृष —वात-रक्त-दोष, आलस्य या चैन से या धनी रहन-सहन से होने वाले रोग, धाय द्वारा रोग।
मिथुन —फुस्फुसावरण-प्रदाह (झिल्ली-दाह), छाती की दुर्बलता।
कर्क —अनपच, दाँत से रक्त गिरना (पीव आना), पायरिया, मेदवृद्धि, जलोदर रोग।
सिंह —अपस्मार, प्रदाह होना, आन्तरिक रूक्षता (ऊष्मा भरना) मेद-वृद्धि, फुस्फुस मे दबाव, हृदय-कम्प होना।
कन्या —ऑत की दुर्बलता, यकृत-रोग, यकृत-सूजन (लीवर बढ़ना) ग्रन्थि पड़ना (अपेनडेक्स)।
तुला —मूत्रपिण्ड के रोग, मधुमेह।
वृश्चिक—नाभिरोग (मूल-व्याधि) मूत्र-रोग, वीर्य-रोग, जननेन्द्रिय-व्रण, जलोदर के समान-रोग।
धनु —प्रायः रोग कम होना, गुर्दा, जंघा, नितम्ब मे वजन होना।
मकर —उच्छ्वास-रोग, खाने-पीने मे आलस्य या अविचार से चर्मरोग, रक्तप्रवाह मे असमानता।
कुम्भ —कमरपीड़ा, मेदावृद्धि, रूक्षता आना, वातविकार से दुर्बलता, रक्त-रस की न्यूनता।
मीन —प्रायः दुर्बलता, देखने में मोटापन।

शुक्र— यह शुभग्रह होने से, प्रायः रोग नहीं करता। परन्तु जब, पापयुति—दृष्टि से, इसमे अशुभता आजाती है तब, वीर्य-रोग उत्पन्न करता है। यह जब, वृश्चिक राशि मे षष्ठस्थानस्थ होता है तब, गरमी, उपदंश। वायुराशि—(मिथुन. तुला, कुम्भ) मे, विषय-वासना (स्त्रीसंग) की वृद्धि करता है। शुक्र प्रायः, जलरोग, गले की गाँठ (घुटकी) बढ़ना, मूत्र-वीर्य-दोष आदि करता है। यदि, शुभ-राशि मे शुभयुक्त-दृष्ट शुक्र हो तो, रक्षक होता है। किन्तु, अशुभराशिस्थ, पापयुत-दृष्ट शुक्र, आगे लिखे गए, रोग उत्पन्न करता है। हाँ, स्त्रियों की कुण्डली में—जब शुक्र की अशुभ-दृष्टि, चन्द्र पर होती है तभी, उन्हें, आगे लिखे गए रोग, सम्भव हो सकते हैं।

मेष —श्वासकष्ट, त्वचारोग, कान्तिक्षय, खुजली रोग।
वृष —गला रोग, कपोल सूजन, घटसर्प, वाणी दोष।
मिथुन —श्वास-क्रिया में अव्यवस्था।
कर्क —अनपच, पेट में अफरा होना।
सिंह —छाती में पीड़ा, मूर्च्छारोग।
कन्या —उदरविकार, कृमिरोग, अन्न पानादि से रोग, पार्थिवविकार से रोग, नाभिरोग।
तुला —मूत्राशय के रोग, मेद-रोग।
वृश्चि.—उपदंश, मूत्राशय की निर्बलता, गर्भाशय रोग, बच्चेदानी बिगड़ना, योनि-रोग।

(४) यदि दक्षिणचक्रार्ध में, अन्धांश का सूर्य, पापदृष्ट हो तथा दिन में जन्म हो तो, दाहिनेनेत्र में रोग, कष्ट या काणाक्ष (काना) होता है। (५) जब सूर्य-चन्द्र की एकांश में युति होती है तब चन्द्र 'दग्ध' होता है। ऐसा दग्ध या क्षीणचन्द्र, अन्धांश का होकर, दक्षिणचक्रार्ध में बैठा हो तो, वामनेत्र, नष्ट होता है। (६) यदि वामचक्रार्ध में अन्धांश का सूर्य तथा दिन में जन्म हो तो, दाहिने नेत्र में दोष होता है। (७) यदि योग ६ में रात्रि का जन्म हो तो, वामनेत्र में रोग होता है।

अन्ध-योग

नोट—इन योगों में, सूर्य या चन्द्र का अन्धांश में ही होना, आवश्यक नहीं है। शनि, मंगल, राहु, केतु के द्वारा, सूर्य, चन्द्र, शुक्र पीड़ित होने पर, प्रायः नेत्ररोग होते हैं। इसी प्रकार, द्वितीय-द्वादश, पंचम-नवम, षष्ठ-अष्टम-भाव द्वारा, नेत्र का विचार किया जाता है।

(१) यदि सूर्य, धनु के प्रथम अंश में हो, शनि से दृष्ट हो तो, अन्धा होता है। (२) यदि क्षीण-चन्द्र, धनु में, शनिदृष्ट तथा गुरु-शुक्र से अदृष्ट हो तो, अन्धा होता है। (३) यदि सूर्य से दूसरे भाव में, चन्द्र, क्रूरग्रह के साथ हो तो, अन्धा होता है। (४) यदि दशमस्थ चन्द्र, पापदृष्टि-युक्त, दृष्टि-शुभ रहित हो तो, अन्धा होता है। (५) यदि नीच चन्द्र, पापदृष्ट होकर, ६-१२ वें भाव में हो तो, अन्धा होता है। (६) यदि सूर्य से अस्त, मंगल, लग्न में हो तो, अन्धा होता है। (७) यदि चतुर्थ-पंचम में, पापग्रह हो तथा चन्द्र त्रिक में, शुभग्रह से अदृष्ट हो तो, अन्धा होता है। (८) यदि ७ वें योग में, शुभदृष्टयुक्त हो तो, अन्धा नहीं होता। (९) यदि लग्नेश-युक्त, सूर्य हो और धनेश, त्रिक में हो तो, जन्मान्ध होता है। (१०) यदि १, २, ५, ७, ९ वें भावाधीश, त्रिक में हो तो, जन्मान्ध होता है। (११) यदि पंचमेश या रन्ध्रेश के साथ शुक्र, लग्न में हो तो, किसी मनुष्य के द्वारा, अन्धा किया जाता है। (१२) यदि सूर्य-चन्द्र-मंगल-शनि, किसी प्रकार से २।६।८।१२ वें भाव में हो तो, उनमें से, बलिष्ठग्रह के अनुसार, वात-पित्तादि दोष से, अन्धा होता है। (१३) यदि पूर्वोक्त योग (१२) के ग्रह, ३।५।९।११ वें स्थान में हों तो, बलीग्रह के दोष से, अन्धा होता है। (१४) यदि शनि-भौम के साथ चन्द्र, त्रिक में हो तो, अन्धा होता है। (१५) यदि लग्न से दूसरे भौम, बारहवें शनि, छठवें चन्द्र, आठवें सूर्य हो तो, अन्धा होता है। (१६) यदि शुक्र-स्थित राशि से, दूसरे भौम, बारहवें शनि, छठवें चन्द्र, आठवें सूर्य हो तो, अन्धा होता है। (१७) यदि सूर्य-राहु लग्न में, शनि-मंगल त्रिकोण में हों तो, अन्धा होता है। (१८) धनेश-व्ययेश, शुक्र और लग्नेश, त्रिक में हो तो, नेत्र-हीन हो जाता है।

(१९) चन्द्र-शुक्र, पापयुक्त, धनस्थ हों तो, नेत्रहीन हो जाता है। (२०) यदि लग्न से, पंचमभाव के पद-लग्न में राहु हो. इस पर सूर्य की दृष्टि (चक्र ४२ के अनुसार) हो, तो नेत्र-नाश होता है। (२१) यदि सूर्य-चन्द्र, तृतीय या केन्द्र में हो और भौम, केन्द्र में हो या पापराशि में हो तथा भौम पर पापग्रह की दृष्टि हो, शुभग्रह त्रिक में हों, सूर्य, दशम में हो तो, अन्धा होता है। (२२) यदि पाप-दृष्ट शनि, चतुर्थभाव में हो तो, अन्धा होता है। (२३) यदि शुभदृष्टि-रहित चन्द्र, शत्रुराशि में हो तो, नेत्र-नाश हो जाता है। (२४) तुला लग्न या मीन लग्न में जन्म हो, सूर्य-चन्द्र, रन्ध्रस्थ हों, शनि, त्रिक में हो तो, अन्धा होता है। (२५) यदि चन्द्र-मंगल-शनि, त्रिक में हों तो, अन्धा होता है। (२६) यदि, शनि-मंगल से दृष्ट, सिंह राशि का सूर्य-चन्द्र, लग्न में हो तो, जन्मान्ध होता है। (२७) यदि (योग २६ में) एक ही ग्रह की दृष्टि हो तो, जन्म के बाद, अन्धा हो जाता है। (२८) यदि शुक्र, लग्नेश-व्ययेश-धनेश के साथ, त्रिक में हो तो, अन्धा होता है। (२९) यदि लग्नेश के साथ सूर्य-शुक्र, त्रिक में हो तो, अन्धा होता है। (३०) यदि चन्द्र-शुक्र, किसी भी पापग्रह के साथ, धनस्थ (द्वितीयस्थ) हो तो, नेत्रहीन होता है। (३१) यदि द्वितीयेश, शनि-मंगल, गुलिक के साथ, पापयुक्त हो तो, अन्धा होता है। (३२) यदि द्वितीयभाव में, शनि से दृष्ट, कई पापग्रह हों तो, अन्धा होता है। (३३) यदि द्वितीयेश का नवांशेश, पापयुक्त, पापराशि में हो और धनेश, सू. मं. श. या गुलिक से दृष्ट हो तो, अन्धा होता है। (३४) यदि लग्नेश के साथ, धनेश भी त्रिक में हो, तो नेत्र-ज्योति में न्यूनता होती है। (३५) यदि सूर्य-चन्द्र एक साथ, कर्क या सिंह में हों, मंगल-शनि से दृष्ट हों तो, ज्योति में न्यूनता होती है तथा जातक के नेत्र से, जल-प्रवाह होता रहता है।

(६) यदि चन्द्र, पापयुक्त हो और राहु, लग्न से, ५।८।१२ वें हो तो, क्रोधोन्माद, कलह-प्रिय होता है।
(७) यदि चन्द्र-सूर्य-मंगल, लग्न या अष्टम या पापयुक्त हों तो मृगी या अन्य शिर रोग होता है।
(८) यदि चन्द्र-बुध केन्द्र में, पापग्रह से दृष्ट हों, ५।८ वें भाव में पापग्रह हों तो, मृगी-रोग होता है।
(९) यदि चन्द्र-शनि-मंगल की युति-दृष्टि हो तो, उन्माद, मूर्ख, कभी-कोई, जन्म का पागल होता है।
(१०) यदि क्षीण-चन्द्र, शनि से युक्त, द्वादश भाव में हो तो, मूर्च्छा रोग होता है।
(११) यदि बुध, लग्नेश या रन्ध्रेश के साथ हो या चन्द्र लग्नेश या षष्ठेश के साथ हो तो, उन्माद-रोग होता है।
(१२) यदि बुध, लग्नेश या षष्ठेश के साथ, त्रिक में हो तो, उन्माद रोग होता है।
(१३) यदि लग्न में पापग्रह हो और चन्द्र, ६-८वें भाव में हो तो, मूर्च्छा-रोग होता है।
(१४) यदि लग्न में चन्द्र, पापयुत-दृष्ट हो और ६ ८ वें भाव में पापग्रह हो तो, मूर्च्छा-रोग होता है।
(१५) यदि तृतीय भाव में, पापग्रह हो तो, विस्मृति या उपेक्षा-बुद्धि होती है।
(१६) यदि शनि-चन्द्र, एक साथ, भौम-दृष्ट हों तो, मृगी-रोग होता है।
(१७) यदि अष्टम में चन्द्र-राहु हों तो मृगी-रोग होता है।
(१८) यदि चन्द्र-शुक्र, एक साथ केन्द्र में हों और अष्टम में कोई पापग्रह हो तो, मृगी-रोग होता है।
(१९) यदि शनि-मंगल का योग, छठवें भाव में हो तो, मृगी-रोग होता है।
(२०) यदि ग्रहण समय में जन्म हो, ६।८वें शनि-मंगल हो, १।५।९ वें गुरु न हो तो, मृगी-रोग होता है।
(२१) यदि छठवे भाव मे चन्द्र, लग्न में राहु हो तो, मृगी-रोग होता है।
(२२) यदि तृतीयेश का नवांशेशस्थ राशीश, केन्द्र में पापयुक्त हो तो, मस्तक-रोग होता है।
(२३) यदि शनि-मंगल-राहु, एक साथ हों तो, मस्तक-रोग होता है।
(२४) यदि लग्नेश, बुध के साथ, भौम-राशि (१।८) में हो तो, मुख-रोग होता है।
(२५) यदि धनेश और बुध, राहु या केतु के साथ हो अथवा राहुस्थ राशीश के साथ हो तो, तालु-रोग होता है।
(२६) यदि सूर्य-मंगल, धनभाव में हो तो, मुख-रोग होता है।

चक्रार्ध

वामचक्रार्ध—दशमभाव-स्पष्ट से चतुर्थभाव-स्पष्ट तक।
दक्षिण चक्रार्ध—चतुर्थभाव-स्पष्ट से दशमभाव-स्पष्ट तक।

अन्धांश में नेत्र-रोग

१—सूर्य-चन्द्र, अन्धांश में होने से अथवा सूर्य-चन्द्र-शुक्र और द्वितीय-द्वादशभाव जब, मंगल-शनि से पीड़ित होते हैं तब, नेत्र-रोग होता है। सूर्य पुरुष का दाहिना-नेत्र तथा स्त्री का वाम-नेत्र एवं चन्द्र, पुरुष का, वाम-नेत्र एवं स्त्री का दाहिना-नेत्र, प्रभावित करता है। धनभाव=दाहिना नेत्र तथा द्वादशभाव=वाम नेत्र होता है। लग्नेश और शुक्र भी नेत्र के कारक हैं।

अन्धांश-चक्र ६१

राशि	सूर्य-चन्द्र के अन्धांश	क्षीण-चन्द्र के अन्धांश
वृ.	६ से १० तक	२१।२२।२६
मि.	९ से १५ तक	×
क.	१८।२७।२८	१९।२०
सिं.	१८।२७।२८	१० से १६ तक
कं.	×	१९।२०।२१
वृ.	११।१०।२७।२८	×
ध.	×	२० से २३ तक
म.	२६ से २९ तक	१।२।४।५
कुं.	८।१०।१८।१९	×

२—(क) सूर्य, अन्धांश में होकर, दक्षिणचक्रार्ध में बैठा हो और दिन का इष्टकाल हो तो, दाहिने नेत्र में रोग, दोष, कष्ट होता है।
(ख) पूर्वोक्त योग में यदि, रात्रि का इष्टकाल हो तो, वाम-नेत्र में कष्ट होता है।
३—(क) चन्द्र, अन्धांशमें होकर, वामचक्रार्धमें बैठा हो और रात्रि का इष्टकाल हो तो, वाम-नेत्र-रोग होते हैं।
(ख) पूर्वोक्त योग में यदि, दिन का इष्टकाल हो तो, दाहिने-नेत्र में रोगादि होवे हैं।

(४) यदि दक्षिणचक्रार्ध में, अन्धांश का सूर्य, पापदृष्ट हो तथा दिन में जन्म हो तो, दाहिनेनेत्र में रोग, कष्ट या काणत्व (काना) होता है। (५) जब सूर्य-चन्द्र की एकांश में युति होती है तब चन्द्र 'दग्ध' होता है। ऐसा दग्ध या क्षीणचन्द्र, अन्धांश का होकर, दक्षिणचक्रार्ध में बैठा हो तो, वामनेत्र, नष्ट होता है। (६) यदि वामचक्रार्ध में अन्धांश का सूर्य तथा दिन में जन्म हो तो, दाहिने नेत्र में दोष होता है। (७) यदि योग ६ में रात्रि का जन्म हो तो, वामनेत्र में रोग होता है।

अन्ध-योग

नोट—इन योगों में, सूर्य या चन्द्र का अन्धांश में ही होना, आवश्यक नहीं है। शनि, मंगल, राहु, केतु के द्वारा, सूर्य, चन्द्र, शुक्र पीड़ित होने पर, प्रायः नेत्ररोग होते हैं। इसी प्रकार, द्वितीय-द्वादश, पंचम-नवम, षष्ठ-अष्टम-भाव द्वारा, नेत्र का विचार किया जाता है।

(१) यदि सूर्य, धनु के प्रथम अंश में हो, शनि से दृष्ट हो तो, अन्धा होता है। (२) यदि क्षीण-चन्द्र, धनु में, शनिदृष्ट तथा गुरु-शुक्र से अदृष्ट हो तो, अन्धा होता है। (३) यदि सूर्य से दूसरे भाव में, चन्द्र, क्रूरग्रह के साथ हो तो, अन्धा होता है। (४) यदि दशमस्थ चन्द्र, पापदृष्टि-युक्त, दृष्टि-शुभ रहित हो तो, अन्धा होता है। (५) यदि नीच चन्द्र, पापदृष्ट होकर, ६-१२ वें भाव में हो तो, अन्धा होता है। (६) यदि सूर्य से अस्त, मंगल, लग्न में हो तो, अन्धा होता है। (७) यदि चतुर्थ-पंचम में, पापग्रह हो तथा चन्द्र त्रिक में, शुभग्रह से अदृष्ट हो तो, अन्धा होता है। (८) यदि ७ वें योग में, शुभदृष्टियुक्त हो तो, अन्धा नहीं होता। (९) यदि लग्नेश-युक्त, सूर्य हो और धनेश, त्रिक में हो तो, जन्मान्ध होता है। (१०) यदि १, २, ५, ७, ९ वें भावाधीश, त्रिक में हो तो, जन्मान्ध होता है। (११) यदि पंचमेश या रन्ध्रेश के साथ शुक्र, लग्न में हो तो, किसी मनुष्य के द्वारा, अन्धा किया जाता है। (१२) यदि सूर्य-चन्द्र-मंगल-शनि, किसी प्रकार से २।६।८।१२ वें भाव में हो तो, उनमें से, बलिष्ठग्रह के अनुसार, वात-पित्तादि दोष से, अन्धा होता है। (१३) यदि पूर्वोक्त योग (१२) के ग्रह, ३।५।९।११ वें स्थान में हों तो, बलीग्रह के दोष से, अन्धा होता है। (१४) यदि शनि-भौम के साथ चन्द्र, त्रिक में हो तो, अन्धा होता है। (१५) यदि लग्न से दूसरे भौम, बारहवें शनि, छठवें चन्द्र, आठवें सूर्य हो तो, अन्धा होता है। (१६) यदि शुक्र-स्थित राशि से, दूसरे भौम, बारहवें शनि, छठवें चन्द्र, आठवे सूर्य हो तो, अन्धा होता है। (१७) यदि सूर्य-राहु लग्न में, शनि-मंगल त्रिकोण में हों तो, अन्धा होता है। (१८) धनेश-व्ययेश, शुक्र और लग्नेश, त्रिक में हो तो, नेत्र-हीन हो जाता है।

(१९) चन्द्र-शुक्र, पापयुक्त, धनस्थ हों तो, नेत्रहीन हो जाता है। (२०) यदि लग्न से, पंचमभाव के पद-लग्न में राहु हो. इस पर सूर्य की दृष्टि (चक्र ४२ के अनुसार) हो, तो नेत्र-नाश होता है। (२१) यदि सूर्य-चन्द्र, तृतीय या केन्द्र में हो और भौम, केन्द्र में हो या पापराशि में हो तथा भौम पर पापग्रह की दृष्टि हो, शुभग्रह त्रिक में हों, सूर्य, दशम में हो तो, अन्धा होता है। (२२) यदि पाप-दृष्ट शनि, चतुर्थभाव में हो तो, अन्धा होता है। (२३) यदि शुभदृष्टि-रहित चन्द्र, शत्रुराशि में हो तो, नेत्र-नाश हो जाता है। (२४) तुला लग्न या मीन लग्न में जन्म हो, सूर्य-चन्द्र, रन्ध्रस्थ हों, शनि, त्रिक में हो तो, अन्धा होता है। (२५) यदि चन्द्र-मंगल-शनि, त्रिक में हों तो, अन्धा होता है। (२६) यदि, शनि-मंगल से दृष्ट, सिंह राशि का सूर्य-चन्द्र, लग्न में हो तो, जन्मान्ध होता है। (२७) यदि (योग २६ में) एक ही ग्रह की दृष्टि हो तो, जन्म के बाद, अन्धा हो जाता है। (२८) यदि शुक्र, लग्नेश-व्ययेश-धनेश के साथ, त्रिक में हो तो, अन्धा होता है। (२९) यदि लग्नेश के साथ सूर्य-शुक्र, त्रिक में हो तो, अन्धा होता है। (३०) यदि चन्द्र-शुक्र, किसी भी पापग्रह के साथ, धनस्थ (द्वितीयस्थ) हो तो, नेत्रहीन होता है। (३१) यदि द्वितीयेश, शनि-मंगल, गुलिक के साथ, पापयुक्त हो तो, अन्धा होता है। (३२) यदि द्वितीयभाव में, शनि से दृष्ट, कई पापग्रह हों तो, अन्धा होता है। (३३) यदि द्वितीयेश का नवांशेश, पापयुक्त, पापराशि में हो और धनेश, सू. मं. श. या गुलिक से दृष्ट हो तो, अन्धा होता है। (३४) यदि लग्नेश के साथ, धनेश भी त्रिक में हो, तो नेत्र-ज्योति में न्यूनता होती है। (३५) यदि सूर्य-चन्द्र एक साथ, कर्क या सिंह में हों, मंगल-शनि से दृष्ट हों तो, ज्योति में न्यूनता होती है तथा जातक के नेत्र से, जल-प्रवाह होता रहता है।

काण-योग

(१) यदि लग्नस्थ चन्द्र या भौम को, गुरु या शुक्र देखता हो तो, काना होता है। (२) यदि चन्द्र-भौम, अष्टमस्थ हों और दिन में जन्म हो तो, काना होता है। (३) यदि सप्तमस्थ भौम हो के, सिंहस्थ चन्द्र को देखता हो तथा नवमेश १।४।८।१० राशि में हो तो, काना होता है। (४) यदि सूर्य-चन्द्र, व्यय में हों तो, काना होता है। यदि एक ही हो तो, नेत्ररोग होता है। (५) यदि शनि-मंगल से दृष्ट, सिंहस्थ सूर्य, लग्न में हो तो, दाहिने नेत्र से, काना होता है। (६) यदि नवमस्थ सूर्य-शनि, शुभग्रह से अदृष्ट हों तो, वामनेत्र से काना होता है। (७) यदि सूर्य-चन्द्र, षष्ठ-द्वादश में, किसी क्रम से हों तो, सपत्नीक वामनेत्र से काना होता है। (८) यदि सूर्य-चन्द्र, द्वितीय-अष्टम में, किसी क्रम से हों तो, सपत्नीक, दाहिने नेत्र से काना होता है। (६) यदि, सूर्य-चन्द्र त्रिक में हो तो, षष्ठस्थ पापग्रह की दशान्तर्दशा में, वाम-नेत्र-कष्ट होता है। (१०) पूर्वोक्त योग (६) में, अष्टमस्थ पापग्रह की दशान्तर्दशा में, दाहिना-नेत्र-कष्ट होता है। (११) यदि सिंह-लग्न में चन्द्र, शनि-भौम से दृष्ट हो तो, वामनेत्र से काना होता है।

नेत्र के अन्य रोग

(१) यदि षष्ठेश, मेष-वृश्चिक में, पापदृष्ट हो एवं शुभदृष्ट न हो तो नेत्र में 'फूली' होती है। (२) चन्द्र-शुक्र के साथ, धनेश, लग्नस्थ हो तो, उसे 'रतौंधी' आती है। यदि धनेश उच्च हो या शुक्र न होकर अन्य ग्रह हो तो, 'रतौंधी' नहीं आती। (३) यदि बलहीन सूर्य, वक्रीग्रह की राशि में हो और चन्द्र, भौम से आक्रान्त, कर्कराशि में या धनुराशि के अन्तिम (धनु) नवांश में हो तो, अन्धा होता है। इस योग में यदि, सूर्य की दृष्टि हो तो, 'रतौंधी' आती है। यदि, शनि की दृष्टि हो तो 'दिनौंधी' आती है। (४) यदि पापदृष्ट, भौम-शुक्र, सप्तमभाव में हों तो, रतौंधी आती है। (५) यदि व्यय में, चन्द्र हो तो, वाम-नेत्र पीड़ा। सूर्य हो तो, दक्षिण-नेत्र पीड़ा होती है। परन्तु, शुभदृष्ट या युक्त होने से पीड़ा नहीं होती। (६) यदि व्यय में, मंगल हो तो, वामनेत्र-पीड़ा और शनि हो तो, दक्षिण-नेत्र-पीड़ा होती हैं। (७) यदि, द्वितीयभाव में पापग्रह हो और धनेश पर, शुभदृष्टि हो तो, निमीलिताक्ष (चोंधा, चिमधा) होता है। (८) यदि सूर्य-चन्द्र, सिंह लग्न में, शुभ-पाप-दृष्ट हों तो, निमीलिताक्ष (चोधा) होता है। (६) द्वितीयेश का नवांशेश, पापयुक्त और चतुर्थ में, कोई अन्य पापग्रह हो तो, नेत्ररोग होता है। (१०) यदि शनि, गुलिक से दृष्ट तथा सूर्य-मंगल-केतु के साथ, द्वितीयेश भी हो तो, पित्तविकार, उष्णता, कामलारोग अथवा किसी अन्य प्रकार की शारीरिक व्यथा से, अत्यन्त बुरे प्रकार का, नेत्ररोग होता है। (११) यदि धनेश और नेत्रकारक-ग्रह, पापदृष्ट-युक्त हो तो, नेत्र-ज्योति में न्यूनता होती है। (१२) यदि षष्ठ-भाव में पापग्रह हो तो, वामनेत्र की ज्योति नष्ट होती है। (१३) अष्टम भाव में पापग्रह हो तो, दाहिने नेत्र की ज्योति नष्ट होती है। (चक्र २४ में, योग १२,१३ घटित कीजिए)। (१४) यदि सूर्य, लग्न या सप्तम में, शनि से दृष्ट-युक्त हो तो, दाहिने नेत्र की ज्योति नष्ट होती है। (१५) सूर्य, लग्न या सप्तम में, शनि से दृष्ट-युक्त, राहु-भौम के साथ हो तो, वाम-नेत्र की ज्योति नष्ट होती है।

नोट—लग्न-स्पष्ट से सप्तम-स्पष्ट तक, अदृश्य-चक्रार्ध तथा सप्तम-स्पष्ट से लग्न-स्पष्ट तक, दृश्य-चक्रार्ध होता है।

(१६) यदि लग्नेश और सूर्य-शुक्र, अदृश्य-चक्रार्ध में हों तो, नेत्र-ज्योति अच्छी नहीं होती। (१७) चन्द्र के साथ, मंगल-गुरु-शुक्र-बुध में से कोई हों तो, उष्णता से, शोक से, कामविकार से, शस्त्र से, (इनमें, किसी कारण से) नेत्र-रोग होता है। (१८) यदि षष्ठेश, वक्रीग्रह की राशि में हो तो, नेत्र-रोग होता है। (१६) यदि द्वितीयेश, शनि-मंगल-मान्दि (गुलिक) के साथ, धन (द्वितीय) स्थान में हो तो, नेत्ररोग होता है। (२०) यदि द्वितीय-भाव में कोई पापग्रह, शनि से दृष्ट भी हो तो, नेत्र-रोग होता है। (२१) यदि सूर्य-चन्द्र, नवम भाव में हो तो, धनी एवं नेत्ररोगी होता है। (२२) यदि ६।८ वे भाव में या वक्रीग्रह की राशि में, सूर्य-चन्द्र हो तो, वक्र-नेत्री (ऐंचा-ताना) होता है। (२३) यदि दूसरे-बारहवें या छठवें-आठवें भाव में कोई वक्रीग्रह हो तो, वक्र-नेत्री (ऐंचा-ताना) होता है। (२४) यदि सूर्य की अग्रिम राशि में, मंगल हो तो, कान्ति-हीन, नेत्र होते हैं अथवा बुध हो तो, नेत्र में कोई चिन्ह होता है। (२५) यदि पापदृष्ट शुक्र, लग्न या

अष्टमभाव में हो तो, नेत्र से आँसू (जल) वहता रहता है। (२६) यदि कोई पापग्रह, द्वितीयेश होकर, त्रिकस्थ हो तो, विना किसी प्रत्यक्ष कारण के, नेत्र-रोग होता है। (२७) यदि धनेश, सूर्य-मंगल से दृष्ट या युक्त हो तो, नेत्रकोण, लाल (डोरेदार) होते हैं। (२८) यदि पापयुक्त सूर्य, व्यय या त्रिकोण में हो तो, नेत्र-विकार होता है। (२९) यदि योग २८ में शनि भी साथ में हो तो, नेत्र-रोग होता है।

नेत्र के शुभ-योग

(क) यदि नेत्र-कारक (सूर्य-चन्द्र-शुक्र, धनेश, व्ययेश) ग्रह वली हों; द्वितीय-भाव या द्वादश-भाव में ग्रह हो, द्वितीयेश, शुभग्रह के साथ हो के अथवा लग्नेश, नेत्रकारक वली ग्रह से दृष्ट या युक्त हो अथवा द्वितीय-द्वादश में, शुभग्रह हों तो, नेत्र सुख, सुन्दर-नेत्र, बड़े-नेत्र, अधिक ज्योति-युक्त नेत्र, आकर्षक नेत्र आदि प्रकार से, उत्तम-नेत्र होते हैं। (ख) यदि सप्तवर्ग-वल द्वारा, सूर्य वली हो तो, अतिज्योतियुक्त-नेत्र, चन्द्र हो तो, कोमल-भोले नेत्र, भौम हो तो, प्रभाव डालने वाले नेत्र, बुध हो तो, चालाक नेत्र, गुरु हो तो, पुण्डरीकाक्ष (कमलपत्राक्ष), शुक्र हो तो, आकर्षक (रसीले) नेत्र, शनि हो तो, स्थिर-नेत्र (निरीह) होते हैं। (वलीग्रह = सप्तवर्ग द्वारा, सर्वाधिक वली ग्रह)।

कर्ण-रोग

(१) यदि मान्दि या गुलिक के साथ, मंगल तृतीय में हो तो, कर्ण-रोग होता है। (२) यदि तृतीय भाव में कोई पापग्रह, पापदृष्ट हो तो, कर्ण-रोग होता है। (३) यदि तृतीयेश, क्रूर षष्ट्यंश में हो तो, कर्ण-रोग होता है। (४) यदि ३।११वें भाव में पापग्रह, शुभदृष्टि-रहित हों तो, कर्ण-रोग होता है; (५) यदि मंगल, धनेश के साथ, लग्न में हो तो, कर्ण-पीड़ा होती है। (६) यदि शनि-मंगल-धनेश, लग्न में हों अथवा द्वितीयेश-षष्ठेश लग्न में हों अथवा मंगल-गुलिक, व्यय में हों तो, कर्ण-पीड़ा या कर्ण-विनाश होता है। (७) यदि चन्द्र पर, शनि की दृष्टि हो और सूर्य-शुक्र की दृष्टि, लग्न पर न हो तो, कर्ण-विनाश होता है। (८) यदि शुक्र, षष्ठेश हो के, लग्न में हो, इस पर, चन्द्र एवं पापग्रह की दृष्टि हो तो, दक्षिणकर्णरोग होता है। (९) यदि षष्ठेश, और बुध, ४।६ वें भाव में, शनि से दृष्ट हों तो, वधिर (वहरा) होता है। (१०) यदि षष्ठेश और बुध, शनि से दृष्ट, त्रिक में हो तो, वधिर होता है। (११) यदि षष्ठेश बुध हो तो, बुध और षष्ठस्थान को, यदि शनि-दृष्टि (१८० अंश वाली) हो तो, वधिर होता है। (१२) तृतीयेश-षष्ठेश, और शनि-मंगल-बुध, इनके पीड़ित होने पर, कर्ण-दोष होते हैं। (१३) यदि पूर्ण-चन्द्र के साथ भौम, षष्ठभाव में हो तो, वधिर होता है। (१४) यदि बुध छठवें, शुक्र दशवें तथा रात्रि में जन्म हो तो, वामकर्णरोग होता है। (१५) यदि क्षीण-चन्द्र, लग्न में हो तो, जातक ऊंचा सुनने वाला (वधिर) होता है। (१६) यदि चन्द्र-बुध-गुरु-शुक्र, एक साथ स्थित हों तो, वधिर होता है। (१७) यदि षष्ठ में पापग्रह हो, बुध त्रिक में हो, मंगल दूषित हो गया हो, तृतीय-भाव पापयुक्त-दृष्ट हो तो, वधिर होता है। (१८) यदि प्रेतपुरीश में स्थित भौम, तीसरे भाव में हो तो, कर्ण-रोग होता है। (१९) यदि लग्न में या चरराशि का केतु, पाप-दृष्ट हो तो, कर्ण-रोग होता है या कर्ण-कर्तन होता है।

दन्त-रोग

(१) यदि चन्द्र या राहु, व्यय या त्रिकोण में हो और सूर्य, सप्तम या अष्टम में हो तो, नेत्र या दन्त-रोग होते हैं। (२) यदि योग नं० १ के ग्रह (चं. रा. सू.), नीचनवांश में हो तो, दन्त-रोग होता है। (३) यदि शुभदृष्टि-रहित, कोई पापग्रह, सप्तम में हो तो, सुन्दर-दन्त-पंक्ति नहीं होती। (४) यदि धनेश, राहु के साथ त्रिक में हो और राहुस्थ-राशीश, द्वितीयेश के साथ हो तो, द्वितीयेश की महादशा में, राहुस्थ राशीश की अन्तर्दशा आनेपर, दन्त-रोग होता है तथा बुध की अन्तर्दशा में जीभ-रोग होना सम्भव है। (५) यदि द्वितीयेश, षष्ठेश के साथ हो अथवा द्वितीयेशस्थ राशीश, अपने नवांशेश के साथ हो तो, इन्हीं ग्रहों की दशान्तर्दशा में, दाँत उखाड़े जाते हैं या दाँत गिरते हैं। (६) यदि लग्न में, मेष-वृष-वृश्चिक राशि, पापग्रह से दृष्ट हो तो, सुन्दर दाँत नहीं होते। (७) यदि लग्न में गुरु-राहु हों या षष्ठ में शुक्र हो या षष्ठ में, राहु-केतु हो तो, दन्तरोग होता है।

काण-योग

(१) यदि लग्नस्थ चन्द्र या भौम को, गुरु या शुक्र देखता हो तो, काना होता है। (२) यदि चन्द्र-भौम, अष्टमस्थ हों और दिन में जन्म हो तो, काना होता है। (३) यदि सप्तमस्थ भौम हो के, सिंहस्थ चन्द्र को देखता हो तथा नवमेश १।५।८।१० राशि में हो तो, काना होता है। (४) यदि सूर्य-चन्द्र, व्यय में हो तो, काना होता है। यदि एक ही हो तो, नेत्ररोग होता है। (५) यदि शनि-मंगल से दृष्ट, सिंहस्थ सूर्य, लग्न में हो तो, दाहिने नेत्र से, काना होता है। (६) यदि नवमस्थ सूर्य-शनि, शुभग्रह से अदृष्ट हों तो, वामनेत्र से काना होता है। (७) यदि सूर्य-चन्द्र, षष्ठ-द्वादश में, किसी क्रम से हों तो, सपत्नीक वामनेत्र से काना होता है। (८) यदि सूर्य-चन्द्र, द्वितीय-अष्टम में, किसी क्रम से हों तो, सपत्नीक, दाहिने नेत्र से काना होता है। (९) यदि, सूर्य-चन्द्र त्रिक में हो तो, षष्ठस्थ पापग्रह की दशान्तर्दशा में, वाम-नेत्र-कष्ट होता है। (१०) पूर्वोक्त योग (९) में, अष्टमस्थ पापग्रह की दशान्तर्दशा में, दाहिना-नेत्र-कष्ट होता है। (११) यदि सिंह-लग्न में चन्द्र, शनि-भौम से दृष्ट हो तो, वामनेत्र से काना होता है।

नेत्र के अन्य रोग

(१) यदि षष्ठेश, मेष-वृश्चिक में, पापदृष्ट हो एवं शुभदृष्ट न हो तो नेत्र में 'फूली' होती है। (२) चन्द्र-शुक्र के साथ, धनेश, लग्नस्थ हो तो, उसे 'रतौंधी' आती है। यदि धनेश उच्च हो या शुक्र न होकर अन्य ग्रह हो तो, 'रतौंधी' नहीं आती। (३) यदि बलहीन सूर्य, वक्रीग्रह की राशि में हो और चन्द्र, भौम से आक्रान्त, कर्कराशि में या धनुराशि के अन्तिम (धनु) नवांश में हो तो, अन्धा होता है। इस योग में यदि, सूर्य की दृष्टि हो तो, 'रतौंधी' आती है। यदि, शनि की दृष्टि हो तो 'दिनौंधी' आती है। (४) यदि पापदृष्ट, भौम-शुक्र, सप्तमभाव में हों तो, रतौंधी आती है। (५) यदि व्यय में, चन्द्र हो तो, वाम-नेत्र पीड़ा। सूर्य हो तो, दक्षिण-नेत्र-पीड़ा होती है। परन्तु, शुभदृष्ट या युक्त होने से पीड़ा नहीं होती। (६) यदि व्यय में, मंगल हो तो, वामनेत्र-पीड़ा और शनि हो तो, दक्षिण-नेत्र-पीड़ा होती हैं। (७) यदि, द्वितीयभाव में पापग्रह हो और धनेश पर, शुभदृष्टि हो तो, निमीलिताक्ष (चौंधा, चिमधा) होता है। (८) यदि सूर्य-चन्द्र, सिंह लग्न में, शुभ-पाप-दृष्ट हों तो, निमीलिताक्ष (चौंधा) होता है। (९) द्वितीयेश का नवांशेश, पापयुक्त और चतुर्थ में, कोई अन्य पापग्रह हो तो, नेत्ररोग होता है। (१०) यदि शनि, गुलिक से दृष्ट तथा सूर्य-मंगल-केतु के साथ, द्वितीयेश भी हो तो, पित्तविकार, उष्णता, कामलारोग अथवा किसी अन्य प्रकार की शारीरिक व्यथा से, अत्यन्त बुरे प्रकार का, नेत्ररोग होता है। (११) यदि धनेश और नेत्रकारक-ग्रह, पापदृष्ट-युक्त हो तो, नेत्र-ज्योति में न्यूनता होती है। (१२) यदि षष्ठ-भाव में पापग्रह हो तो, वामनेत्र की ज्योति नष्ट होती है। (१३) अष्टम भाव में पापग्रह हो तो, दाहिने नेत्र की ज्योति नष्ट होती है। (चक्र २४ में, योग १२,१३ घटित कीजिए)। (१४) यदि सूर्य, लग्न या सप्तम में, शनि से दृष्ट-युक्त हो तो, दाहिने नेत्र की ज्योति नष्ट होती है। (१५) सूर्य, लग्न या सप्तम में, शनि से दृष्ट-युक्त, राहु-भौम के साथ हो तो, वाम-नेत्र की ज्योति नष्ट होती है।

नोट—लग्न-स्पष्ट से सप्तम स्पष्ट तक, अदृश्य-चक्रार्ध तथा सप्तम स्पष्ट से लग्न-स्पष्ट तक, दृश्य-चक्रार्ध होता है।

(१६) यदि लग्नेश और सूर्य-शुक्र, अदृश्य-चक्रार्ध में हो तो, नेत्र-ज्योति अच्छी नहीं होती। (१७) चन्द्र के साथ, मंगल-गुरु-शुक्र-बुध में से कोई हों तो, उष्णता से, शोक से, कामविकार से, शस्त्र से, (इनमें, किसी कारण से) नेत्र-रोग होता है। (१८) यदि षष्ठेश, वक्रीग्रह की राशि में हो तो, नेत्र-रोग होता है। (१९) यदि द्वितीयेश, शनि-मंगल-मान्दि (गुलिक) के साथ, धन (द्वितीय) स्थान में हो तो, नेत्ररोग होता है। (२०) यदि द्वितीय-भाव में कोई पापग्रह, शनि से दृष्ट भी हो तो, नेत्र-रोग होता है। (२१) यदि सूर्य-चन्द्र, नवम भाव में हो तो, धनी एवं नेत्ररोगी होता है। (२२) यदि ६।८ वें भाव में या वक्रीग्रह की राशि में, सूर्य-चन्द्र हो तो, वक्र-नेत्री (ऐंचा-ताना) होता है। (२३) यदि दूसरे-बारहवें या छठवें-आठवें भाव में कोई वक्रीग्रह हो तो, वक्र-नेत्री (ऐंचा-ताना) होता है। (२४) यदि सूर्य की अग्रिम राशि में, मंगल हो तो, कान्ति-हीन, नेत्र होते हैं अथवा बुध हो तो, नेत्र में कोई चिन्ह होता है। (२५) यदि पापदृष्ट शुक्र, लग्न या

अष्टमभाव में हो तो, नेत्र से आँसू (जल) बहता रहता है। (२६) यदि कोई पापग्रह, द्वितीयेश होकर, त्रिकस्थ हो तो, विना किसी प्रत्यक्ष कारण के, नेत्र-रोग होता है। (२७) यदि धनेश, सूर्य-मंगल से दृष्ट या युक्त हो तो, नेत्रकोण, लाल (डोरेदार) होते हैं। (२८) यदि पापयुक्त सूर्य, व्यय या त्रिकोण में हो तो, नेत्र-विकार होता है। (२६) यदि योग २८ में शनि भी साथ में हो तो, नेत्र-रोग होता है।

नेत्र के शुभ-योग

(क) यदि नेत्र-कारक (सूर्य-चन्द्र-शुक्र, धनेश, व्ययेश) ग्रह वली हों; द्वितीय-भाव या द्वादश-भाव में ग्रह हो, द्वितीयेश, शुभग्रह के साथ हो के अथवा लग्नेश, नेत्रकारक वली ग्रह से दृष्ट या युक्त हो अथवा द्वितीय-द्वादश में, शुभग्रह हों तो, नेत्र सुख, सुन्दर-नेत्र, वड़े-नेत्र, अधिक ज्योति-युक्त नेत्र, आकर्षक नेत्र आदि प्रकार से, उत्तम-नेत्र होते हैं। (ख) यदि सप्तवर्ग-वल द्वारा, सूर्य वली हो तो, अतिज्योतियुक्त-नेत्र, चन्द्र हो तो, कोमल-भोले नेत्र, भौम हो तो, प्रभाव डालने वाले नेत्र, वुध हो तो, चालाक नेत्र, गुरु हो तो, पुण्डरीकाक्ष (कमलपत्राक्ष), शुक्र हो तो, आकर्षक (रसीले) नेत्र, शनि हो तो, स्थिर-नेत्र (निरीह) होते हैं। (वलीग्रह = सप्तवर्ग द्वारा, सर्वाधिक बली ग्रह)।

कर्ण-रोग

(१) यदि मान्दि या गुलिक के साथ, मंगल तृतीय में हो तो, कर्ण-रोग होता है। (२) यदि तृतीय भाव में कोई पापग्रह, पापदृष्ट हो तो, कर्ण-रोग होता है। (३) यदि तृतीयेश, क्रूर षष्ट्यंश में हो तो, कर्ण-रोग होता है। (४) यदि ३।११वें भाव में पापग्रह, शुभदृष्टि-रहित हों तो, कर्ण-रोग होता है; (५) यदि मंगल, धनेश के साथ, लग्न में हो तो, कर्ण-पीड़ा होती है। (६) यदि शनि-मंगल-धनेश, लग्न में हों अथवा द्वितीयेश-षष्ठेश लग्न में हों अथवा मंगल-गुलिक, व्यय में हों तो, कर्ण-पीड़ा या कर्ण-विनाश होता है। (७) यदि चन्द्र पर, शनि की दृष्टि हो और सूर्य-शुक्र की दृष्टि, लग्न पर न हो तो, कर्ण-विनाश होता है। (८) यदि शुक्र, षष्ठेश हो के, लग्न में हो, इस पर, चन्द्र एवं पापग्रह की दृष्टि हो तो, दक्षिणकर्णरोग होता है। (९) यदि षष्ठेश, और बुध, ४।६ वें भाव में, शनि से दृष्ट हों तो, वधिर (वहरा) होता है। (१०) यदि षष्ठेश और बुध, शनि से दृष्ट, त्रिक में हो तो, वधिर होता है। (११) यदि षष्ठेश बुध हो तो, बुध और षष्ठस्थान को, यदि शनि-दृष्टि (१८० अंश वाली) हो तो, वधिर होता है। (१२) तृतीयेश-षष्ठेश, और शनि-मंगल-बुध, इनके पीड़ित होने पर, कर्ण-दोष होते हैं। (१३) यदि पूर्ण-चन्द्र के साथ भौम, षष्ठभाव में हो तो, वधिर होता है। (१४) यदि बुध छठवें, शुक्र दशवें तथा रात्रि में जन्म हो तो, वामकर्णरोग होता है। (१५) यदि क्षीण-चन्द्र, लग्न में हो तो, जातक ऊंचा सुनने वाला (वधिर) होता है। (१६) यदि चन्द्र-बुध-गुरु-शुक्र, एक साथ स्थित हों तो, वधिर होता है। (१७) यदि षष्ठ में पापग्रह हो, बुध त्रिक में हो, मंगल दूषित हो गया हो, तृतीय-भाव पापयुक्त-दृष्ट हो तो, वधिर होता है। (१८) यदि प्रेतपुरीश में स्थित भौम, तीसरे भाव में हो तो, कर्ण-रोग होता है। (१९) यदि लग्न में या चरराशि का केतु, पाप-दृष्ट हो तो, कर्ण-रोग होता है या कर्ण-कर्तन होता है।

दन्त-रोग

(१) यदि चन्द्र या राहु, व्यय या त्रिकोण में हो और सूर्य, सप्तम या अष्टम में हो तो, नेत्र या दन्त-रोग होते हैं। (२) यदि योग नं० १ के ग्रह (चं. रा. सू.), नीचनवांश में हो तो, दन्त-रोग होता है। (३) यदि शुभदृष्टि-रहित, कोई पापग्रह, सप्तम में हो तो, सुन्दर-दन्त-पंक्ति नहीं होती। (४) यदि धनेश, राहु के साथ त्रिक में हो और राहुस्थ-राशीश, द्वितीयेश के साथ हो तो, द्वितीयेश की महादशा में, राहुस्थ राशीश की अन्तर्दशा आनेपर, दन्त-रोग होता है तथा बुध की अन्तर्दशा में जीभ-रोग होना सम्भव है। (५) यदि द्वितीयेश, षष्ठेश के साथ हो अथवा द्वितीयेशस्थ राशीश, अपने नवांशेश के साथ हो तो, इन्हीं ग्रहों की दशान्तर्दशा में, दाँत उखाड़े जाते हैं या दाँत गिरते हैं। (६) यदि लग्न में, मेष-वृष-वृश्चिक राशि, पापग्रह से दृष्ट हो तो, सुन्दर दाँत नहीं होते। (७) यदि लग्न में गुरु-राहु हों या षष्ठ में शुक्र हो या षष्ठ में, राहु-केतु हो तो, दन्तरोग होता है।

नासिका-रोग

(१) यदि व्यय में, पापग्रह या षष्ठ में चन्द्रमा या अष्टम में लग्नेश और शनि हों, तथा ये सब, पापनवांश में हों, तो पीनस-रोग, नासिका-विच्छेद, घ्राण-शक्ति की न्यूनता होना, सम्भव है। (२) यदि लग्न में मंगल, षष्ठ भाव में शुक्र हो तो, आप्रेशन या किसी अन्य कारण से, नासिका-रोग-कष्ट या विच्छेद होता है।

वाणी-रोग

(१) यदि बुधाष्टक-वर्ग बनाने पर, बुध-स्थित-राशि से, द्वितीय राशि में, कोई रेखा न हो (शून्य हो) तो, गूँगा होता है। (२) यदि द्वितीयेश, गुरु के साथ, अष्टमभाव में हो तो, गूँगा होता है। परन्तु, इन दोनों में से, कोई उच्चादि शुभता रखता हो तो, गूँगा नहीं होता। (३) यदि बुध—४।८।१२ वें भाव में हो और चन्द्र से दृष्ट सूर्य, चतुर्थ में हो तो, अस्पष्ट-स्वर (हकलाना) होता है। (४) यदि शुक्लपक्ष का जन्म हो और चन्द्र-मंगल, लग्नस्थ हो तो, अस्पष्ट-स्वर (हकलाना) होता है। (५) यदि पापग्रह, ४।८।१२ राशि में हों तथा चन्द्र, पापदृष्ट हो तो, गूँगा होता है। (६) यदि चन्द्र पर, शुभग्रह की दृष्टि हो तो, अधिक काल या ५ वर्षायु के बाद, स्वर-स्पष्ट (बोलना) होता है। (७) यदि चन्द्र से दृष्ट बुध, सूर्य सान्निध्य से अस्त होकर ४।८।१२ राशिस्थ हो तो, जाभ में दोष होता है। (८) यदि षष्ठेश और बुध, ४।८।१२ वें भाव में हो, पापदृष्ट हों तो, गूँगा होता है। (९) यदि षष्ठेश और बुध, लग्नस्थ पापदृष्ट हों तो, गूँगा होता है। (१) यदि बुध, १०–११ राशि में हो तो, अच्छी बोली नहीं होती। (११) देखिए न० ४ दन्तरोग।

वक्ता-योग

(१) यदि नवमेश चन्द्र, धनभाव में हो तो, वक्ता, वाग्मी, व्याख्याता, मनोहर भाषी आदि होता है। (२)यदि धनेश, केन्द्र-त्रिकोण में, शुभग्रह के साथ हो तो, व्याख्याता होता है। (३) यदि धनेश, शुभग्रह होके, केन्द्र-त्रिकोण म हो तो वाग्मी होता है।

कण्ठ-रोग

(१) यदि तृतीयेश, बुध के साथ हो तो, कण्ठ-रोग होता है। (२) यदि कोई नीच या शत्रुगृही ग्रह, सूर्य से अस्त हो तो, रिपुद्वारा कण्ठ-रोग होता है अथवा रोग-कारण से बहुत धन व्यय (खर्च) होता है। (३) यदि तृतीय में कोई पापग्रह, किसी पापग्रह से दृष्ट-युक्त या मान्दि के साथ हो तो, कण्ठ-रोग होता है। (४) यदि चन्द्रमा, चतुर्थभाव की नवांश-राशि का होकर, चतुर्थ में हो अर्थात् चतुर्थभाव में वर्गोत्तमी चन्द्र हो और कोई पापग्रह साथ में हो तो, कण्ठरोग होता है। (५) यदि लग्नेश, सूर्य के साथ, त्रिक म हो तो, ताप गण्ड रोग (६) यदि लग्नेश के साथ चन्द्र त्रिक म हो तो, जलगण्डरोग। (७) लग्नेश षष्ठेश चन्द्र त्रिकस्थ हो तो कफगण्डरोग। (८) कारकांश लग्न से, मकर राशि होने से, वातगण्ड (दुष्ट ग्रन्थि रोग या गलगण्ड) रोग होता है। [नोट—गण्डरोग में, मूक या बधिर हो जाता है।] (९) यदि मंगल शनि का योग ६।१२ वे भाव में हो तो, गण्डमाला रोग होता है।

वक्षस्थल-रोग

(१) यदि सूर्य-चन्द्र, अन्योन्याश्रय सम्बन्ध करते हों तो, क्षयरोग होता है। (२) यदि सूर्य कर्कांश म, चन्द्र सिंहांश (नवांश) में हो तो, क्षय-रोग होता है। (३) यदि सूर्य के साथ चन्द्र, कर्क या सिंह में हो तो, क्षय रोग या अत्यन्त कृश शरीर होता है। यह रोग, प्राय श्रावण भाद्रपद मास की अमावास्या के समीप होना, सम्भव रहता है। (४) यदि सूर्य-चन्द्र, स्वगृही हों तो, रक्त पित्त रोग होता है और प्राय रक्त-वमन से क्षय हो जाता है। (५) यदि गुरु अष्टमस्थ हो तो, रोग निदान करने में अत्यन्त कठिनाइयाँ होती हैं। वैद्य-डाक्टर, रोग का निदान, स्थिर नहीं कर पाते। (६) यदि गुरु या चन्द्र, जलराशि का अष्टमभाव में पापदृष्ट हो तो, क्षय-रोग होता है। (७) यदि शनि-मंगल के मध्य, चन्द्रमा हो और मकरस्थ सूर्य हो तो, कास-श्वास, क्षय, प्लीहा, गुल्मरोग होते हैं। किसी का मत है कि,

लग्न में चन्द्र, होना चाहिए। (८) यदि योग ७, चतुर्थभाव में हो तो, क्षयरोग होता है। (९) यदि षष्ठभाव में चन्द्रमा, शनि-मंगल से घिरा हो, सूर्य मकरस्थ हो तो, फेफड़े की सूजन (ब्रोंकाइटीज) होती है। (१०) योग ९, अष्टमभाव में हो तो, गण्डमाला नामक, क्षयरोग होता है। (११) यदि चन्द्र, सूर्य के साथ मकरस्थ होकर, शनि-मंगल से घिरा हो तो, दमारोग होता है। (१२) यदि चन्द्र, दो पापग्रहों से घिरा हो, शनि सप्तम में हो तो दमा, गुल्म, क्षय, प्लीहारोग होता है। (१३) यदि राहु या केतु अष्टम में हो, गुलिक केन्द्र में हो, लग्नेश अष्टम में हो तो, क्षयरोग होता है। (१४) यदि षष्ठभाव में, सूर्य-राहु से दृष्ट-शनि या मंगल हो तो, क्षय या दमारोग होता है। (१५) यदि सूर्य-गुरु-शनि, एकसाथ चतुर्थ या सप्तम या अष्टम में हों तो, क्षय-रोग या हृदयरोग होता है। (१६) यदि मंगल-बुध षष्ठभाव में, चन्द्र-शुक्र से दृष्ट हों तो, क्षय-रोग होता है। इस योग में, बुध पर शुक्र की दृष्टि, ३०-३६-४५ वाली ही हो सकती है, सप्तम-दृष्टि असम्भव है। (१७) यदि गुलिक के साथ शनि, षष्ठभावस्थ हो, सूर्य-मंगल-राहु से दृष्ट हो, शुभदृष्टि-युति न हो तो, कास-श्वास, क्षय, कफादिरोग सम्भव हैं। (१८) यदि राहु-मंगल योग, चतुर्थ या पंचमभाव में हो तो, क्षयरोग होता है।

(१९) शुभांश (नवांश) के न होकर तथा सूर्य-चन्द्र से दृष्ट हो के, षष्ठभाव में मंगल-बुध हों तो, क्षयरोग होता है। इस योग में, सूर्य-बुध की सप्तम-दृष्टि, असम्भव है अतः ३०-३६-४५ अंश की दृष्टि का, उपयोग कीजिए। (२०) केतु की दृष्टि-युति, षष्ठेश या सप्तमेश से हो तो, क्षयरोग होता है। (२१) यदि छठवें-आठवें भाव की जलराशि में, किसी पापग्रह के साथ क्षीण चन्द्र हो तो, क्षयरोग होता है। (२२) यदि लग्नस्थ सूर्य पर, भौम की दृष्टि हो तो दमा, क्षय, प्लीहा, गुल्म, गुदारोग से पीड़ित होता है। (२३) यदि लग्नेश-युक्त चन्द्र, षष्ठभाव में हो तो, क्षय, शोथ (सूजन) रोग होता है। (२४) यदि शुक्र-युक्त लग्नेश, त्रिक में हो तो, क्षयरोग होता है। (२५) यदि शनि या गुरु, षष्ठेश होकर, पापदृष्ट, चतुर्थ भावस्थ हो तो, हृदय-कम्प (धड़के का) रोग होता है। (२६) यदि षष्ठेश सूर्य, पापयुक्त होकर, चतुर्थ भाव में हो तो, हृदय-रोग होता है। (२७) यदि मंगल-गुरु-शनि, चतुर्थभाव में हों तो, हृदय-रोग तथा व्रण होता है। (२८) यदि चतुर्थ में राहु हो, लग्नेश निर्बल और पापदृष्टि-युत हो तो, हृदय-शूल-रोग होता है। (२९) यदि सप्तमेश के साथ पंचमेश, षष्ठभाव में हो और पंचम या सप्तम में पापग्रह हों तो, उदरपीड़ा तथा हृदयरोग होता है। (३०) यदि तृतीयेश, राहु-केतु के साथ हो तो, हृदय-दोष से, मूर्च्छा होती है। (३१) यदि, चतुर्थ-पंचम में पापग्रह हों तथा पंचमभाव पापषष्ट्यंश में हो एवं शुभग्रह की दृष्टि-युति से रहित हो तो, हृदय-रोग होता है। (३२) यदि पंचमेश और पंचम भाव, पापग्रहसे घिरा हो (पंचमभाव पापकर्तरी में हो या दो पापग्रहों से घिरा हो) तो, हृदयरोग होता है। कर्तरीयोग, जब भाव के व्यय स्थान में मार्गीग्रह एवं भाव के धन-स्थान (द्वितीय) में, वक्री-ग्रह हो तब, कर्तरीयोग होता है। शुभग्रह में शुभकर्तरी, पापग्रह में पापकर्तरी, शुभाशुभग्रह में शुभाशुभ-कर्तरी होता है। (३३) यदि, पंचमेश व्यय में हो या पंचमेश-द्वादशेश एक साथ, त्रिक में हों तो, हृदय-रोग होता है। (३४) यदि पंचमेश का नवांशेश, पापदृष्ट-युक्त हो तो, हृदयरोग या हठी या कठोर-हृदय वाला होता है। (३५) यदि कारकांश लग्न से, चतुर्थभाव में मंगल, व्यय में राहु हो तो, क्षयरोग होता है। (३६) यदि शनि-मंगल की दृष्टि, लग्न पर हो तो, क्षय-कास-श्वास रोग होता है। (३७) यदि शनि-चन्द्र पर, भौमदृष्टि हो तो, यकृत्, संग्रहिणीरोग (इण्टर टी. बी.), क्षयरोग होता है। (३८) यदि कर्क का बुध हो तो, क्षयरोग होता है।

उदर-रोग

["सर्वेषामेव रोगाणां निदानं कुपिता मलाः।" मलाः=धातूनाम्मलाः]

(१) यदि अष्टमेश निर्बल हो, अष्टम में पापग्रह, पापदृष्ट हो, लग्न पर पापग्रह की दृष्टि हो तो, ऐसा रोग होता है जिसमें, भोजन करने में असमर्थ हो जाता है। मन्दाग्नि रोगादि। (२) यदि सूर्य-चन्द्र-मंगल, षष्ठभावस्थ हों तो, वायुगोला, ज्वर-युक्त फोड़ा-फुन्सी होते हैं। (३) यदि मकर-कुम्भ राशि का क्षीण-चन्द्र, पापग्रह के साथ, लग्न में अथवा छठवें-आठवें भाव में हो तो, वायु विकार या प्लीहा रोग होता है। (४) यदि मंगल लग्न में, षष्ठेश निर्बल हो तो, गुल्म (विद्रधि), वायुगोला, अजीर्ण,

नासिका-रोग

(१) यदि व्यय में, पापग्रह या षष्ठ में चन्द्रमा या अष्टम में लग्नेश और शनि हों; तथा ये सब, पापनवांश में हों, तो पीनस-रोग, नासिका-विच्छेद, घ्राण-शक्ति की न्यूनता होना, सम्भव है। (२) यदि लग्न में मंगल, षष्ठ भाव में शुक्र हो तो, आप्रेशन या किसी अन्य कारण से, नासिका-रोग-कष्ट या विच्छेद होता है।

वाणी-रोग

(१) यदि बुधाष्टक-वर्ग बनाने पर, बुध-स्थित-राशि से, द्वितीय-राशि में, कोई रेखा न हो (शून्य हो) तो, गूँगा होता है। (२) यदि द्वितीयेश, गुरु के साथ, अष्टमभाव में हो तो, गूँगा होता है। परन्तु, इन दोनों में से, कोई उच्चादि शुभता रखता हो तो, गूँगा नहीं होता। (३) यदि बुध—४।८।१२ वें भाव में हो और चन्द्र से दृष्ट सूर्य, चतुर्थ में हो तो, अस्पष्ट-स्वर (हकलाना) होता है। (४) यदि शुक्लपक्ष का जन्म हो और चन्द्र-मंगल, लग्नस्थ हों तो, अस्पष्ट-स्वर (हकलाना) होता है। (५) यदि पापग्रह, ४।८।१२ राशि में हों तथा चन्द्र, पापदृष्ट हो तो, गूँगा होता है। (६) यदि चन्द्र पर, शुभग्रह की दृष्टि हो तो, अधिक काल या ५ वर्षायु के बाद, स्वर-स्पष्ट (बोलना) होता है। (७) यदि चन्द्र से दृष्ट बुध, सूर्य सान्निध्य से अस्त होकर ४।८।१२ राशिस्थ हो तो, जीभ में दोष होता है। (८) यदि षष्ठेश और बुध, ४।८।१२ वें भाव में हो, पापदृष्ट हो तो, गूँगा होता है। (९) यदि षष्ठेश और बुध, लग्नस्थ पापदृष्ट हों तो, गूँगा होता है। (१०) यदि बुध, १०-११ राशि में हो तो, अच्छी बोली नहीं होती। (११) देखिए नं० ४ दन्तरोग।

वक्ता-योग

(१) यदि नवमेश चन्द्र, धनभाव में हो तो, वक्ता, वाग्मी, व्याख्याता, मनोहर-भाषी आदि होता है। (२) यदि धनेश, केन्द्र-त्रिकोण में, शुभग्रह के साथ हो तो, व्याख्याता होता है। (३) यदि धनेश, शुभग्रह होके, केन्द्र-त्रिकोण में हो तो, वाग्मी होता है।

कण्ठ-रोग

(१) यदि तृतीयेश, बुध के साथ हो तो, कण्ठ-रोग होता है। (२) यदि कोई नीच या शत्रुगृही ग्रह, सूर्य से अस्त हो तो, विषद्वारा कण्ठ-रोग होता है अथवा रोग-कारण से बहुत धन-व्यय (खर्च) होता है। (३) यदि तृतीय में, कोई पापग्रह, किसी पापग्रह से दृष्ट-युक्त या मान्दि के साथ हो तो, कण्ठ-रोग होता है। (४) यदि चन्द्रमा, चतुर्थभाव की नवांश-राशि का होकर, चतुर्थ में हो अर्थात् चतुर्थभाव में वर्गोत्तमी चन्द्र हो और कोई पापग्रह साथ में हो तो, कण्ठरोग होता है। (५) यदि लग्नेश, सूर्य के साथ, त्रिक में हो तो, ताप-गण्ड-रोग (६) यदि लग्नेश के साथ चन्द्र त्रिक में हो तो, जलगण्डरोग। (७) लग्नेश-षष्ठेश-चन्द्र त्रिकस्थ हो तो कफगण्डरोग। (८) कारकांश लग्न में, मकर राशि होने से, वातगण्ड (दुष्ट-ग्रन्थि रोग या गलगण्ड) रोग होता है। [नोट—गण्डरोग में, मूक या बधिर हो जाता है।] (९) यदि मंगल शनि का योग ६।१२ वें भाव में हो तो, गण्डमाला रोग होता है।

वक्षस्थल-रोग

(१) यदि सूर्य-चन्द्र, अन्योन्याश्रय-सम्बन्ध करते हों तो, क्षयरोग होता है। (२) यदि सूर्य कर्कांश में, चन्द्र सिंहांश (नवांश) में हो तो, क्षय-रोग होता है। (३) यदि सूर्य के साथ चन्द्र, कर्क या सिंह में हो तो, क्षय-रोग या अत्यन्त कृश शरीर होता है। यह रोग, प्रायः श्रावण भाद्रपद मास की अमावास्या के समीप होना, सम्भव रहता है। (४) यदि सूर्य-चन्द्र, स्वगृही हों तो, रक्त-पित्त रोग होता है और प्रायः रक्त-वमन से क्षय हो जाता है। (५) यदि गुरु अष्टमस्थ हो तो, रोग निदान करने में अत्यन्त कठिनाइयाँ होती हैं। वैद्य-डाक्टर, रोग का निदान, स्थिर नहीं कर पाते। (६) यदि गुरु या चन्द्र, जलराशि का अष्टमभाव में पापदृष्ट हो तो, क्षय-रोग होता है। (७) यदि शनि-मंगल के मध्य, चन्द्रमा हो और मकरस्थ सूर्य हो तो, कास-श्वास, क्षय, प्लीहा, गुल्मरोग होते हैं। किसी का मत है कि,

लग्न में चन्द्र, होना चाहिए। (८) यदि योग ७, चतुर्थभाव में हो तो, क्षयरोग होता है। (९) यदि षष्ठभाव में चन्द्रमा, शनि-मंगल से घिरा हो, सूर्य मकरस्थ हो तो, फेफड़े की सूजन (ब्रोंकाइटीज) होती है। (१०) योग ९, अष्टमभाव में हो तो, गण्डमाला नामक, क्षयरोग होता है। (११) यदि चन्द्र, सूर्य के साथ मकरस्थ होकर, शनि-मंगल से घिरा हो तो, दमारोग होता है। (१२) यदि चन्द्र, दो पापग्रहों से घिरा हो, शनि सप्तम में हो तो दमा, गुल्म, क्षय, प्लीहारोग होता है। (१३) यदि राहु या केतु अष्टम में हो, गुलिक केन्द्र में हो, लग्नेश अष्टम में हो तो, क्षयरोग होता है। (१४) यदि षष्ठभाव में, सूर्य-राहु से दृष्ट–शनि या मंगल हो तो, क्षय या दमारोग होता है। (१५) यदि सूर्य–गुरु–शनि, एकसाथ चतुर्थ या सप्तम या अष्टम में हो तो, क्षय-रोग या हृदयरोग होता है। (१६) यदि मंगल–बुध षष्ठभाव में, चन्द्र-शुक्र से दृष्ट हों तो, क्षय-रोग होता है। इस योग में, बुध पर शुक्र की दृष्टि, ३०-३६-४५ वाली ही हो सकती है, सप्तम-दृष्टि असम्भव है। (१७) यदि गुलिक के साथ शनि, षष्ठभावस्थ हो, सूर्य-मंगल-राहु से दृष्ट हो, शुभदृष्टि-युति न हो तो, कास-श्वास, क्षय, कफादिरोग सम्भव हैं। (१८) यदि राहु–मंगल योग, चतुर्थ या पंचमभाव में हों तो, क्षयरोग होता है।

(१९) शुभांश (नवांश) के न होकर तथा सूर्य-चन्द्र से दृष्ट हो के, षष्ठभाव में मंगल-बुध हों तो, क्षयरोग होता है। इस योग में, सूर्य-बुध की सप्तम-दृष्टि, असम्भव है अतः ३०-३६-४५ अंश की दृष्टि का, उपयोग कीजिए। (२०) केतु की दृष्टि–युति, षष्ठेश या सप्तमेश से हो तो, क्षयरोग होता है। (२१) यदि छठवें–आठवें भाव की जलराशि में, किसी पापग्रह के साथ क्षीण चन्द्र हो तो, क्षयरोग होता है। (२२) यदि लग्नस्थ सूर्य पर, भौम की दृष्टि हो तो दमा, क्षय, प्लीहा, गुल्म, गुदारोग से पीड़ित होता है। (२३) यदि लग्नेश-युक्त चन्द्र, षष्ठभाव में हो तो, क्षय, शोथ (सूजन) रोग होता है। (२४) यदि शुक्र-युक्त लग्नेश, त्रिक में हो तो, क्षयरोग होता है। (२५) यदि शनि या गुरु, षष्ठेश होकर, पापदृष्ट, चतुर्थ भावस्थ हो तो, हृदय-कम्प (धड़के का) रोग होता है। (२६) यदि षष्ठेश सूर्य, पापयुक्त होकर, चतुर्थ भाव में हो तो, हृदय-रोग होता है। (२७) यदि मंगल–गुरु–शनि, चतुर्थभाव में हों तो, हृदय–रोग तथा व्रण होता है। (२८) यदि चतुर्थ में राहु हो, लग्नेश निर्बल और पापदृष्टि-युत हो तो, हृदय–शूल–रोग होता है। (२९) यदि सप्तमेश के साथ पंचमेश, षष्ठभाव में हो और पंचम या सप्तम में पापग्रह हों तो, उदरपीड़ा तथा हृदयरोग होता है। (३०) यदि तृतीयेश, राहु–केतु के साथ हो तो, हृदय–दोष से, मूर्च्छा होती है। (३१) यदि, चतुर्थ–पंचम में पापग्रह हों तथा पंचमभाव पापषष्ट्यंश में हो एवं शुभग्रह की दृष्टि-युति से रहित हो तो, हृदय-रोग होता है। (३२) यदि पंचमेश और पंचम भाव, पापग्रहसे घिरा हो (पंचमभाव पापकर्तरी में हो या दो पापग्रहों से घिरा हो) तो, हृदयरोग होता है। कर्तरीयोग, जब भाव के व्यय स्थान में मार्गीग्रह एवं भाव के धन–स्थान (द्वितीय) में, वक्री-ग्रह हो तब, कर्तरीयोग होता है। शुभग्रह में शुभकर्तरी, पापग्रह में पापकर्तरी, शुभाशुभग्रह में शुभाशुभ-कर्तरी होता है। (३३) यदि, पंचमेश व्यय में हो या पंचमेश-द्वादशेश एक साथ, त्रिक में हों तो, हृदय-रोग होता है। (३४) यदि पंचमेश का नवांशेश, पापदृष्ट–युक्त हो तो, हृदयरोग या हठी या कठोर-हृदय वाला होता है। (३५) यदि कारकांश लग्न से, चतुर्थभाव में मंगल, व्यय में राहु हो तो, क्षयरोग होता है। (३६) यदि शनि-मंगल की दृष्टि, लग्न पर हो तो, क्षय-कास-श्वास रोग होता है। (३७) यदि शनि-चन्द्र पर, भौमदृष्टि हो तो, यकृत्, संग्रहिणीरोग (इण्टर टी. वी.), क्षयरोग होता है। (३८) यदि कर्क का बुध हो तो, क्षयरोग होता है।

उदर–रोग

["सर्वेषामेव रोगाणां निदानं कुपिता मलाः।" मलाः = धातूनाम्मलाः]

(१) यदि अष्टमेश निर्बल हो, अष्टम में पापग्रह, पापदृष्ट हो, लग्न पर पापग्रह की दृष्टि हो तो, ऐसा रोग होता है जिसमें, भोजन करने में असमर्थ हो जाता है। मन्दाग्नि रोगादि। (२) यदि सूर्य-चन्द्र-मंगल, षष्ठभावस्थ हों तो, वायुगोला, ज्वर–युक्त फोड़ा-फुन्सी होते हैं। (३) यदि मकर-कुम्भ राशि का क्षीण-चन्द्र, पापग्रह के साथ, लग्न में अथवा छठवें-आठवें भाव में हो तो, वायु विकार या प्लीहा रोग होता है। (४) यदि मंगल लग्न में, षष्ठेश निर्बल हो तो, गुल्म (विद्रधि), वायुगोला, अजीर्ण,

मन्दाग्नि रोग होता है। (५) यदि, लग्न मे, राहु या पापग्रह हो, अष्टम में शनि हो तो, उदर रोग होता है। (६) चन्द्रमा, पाप-युक्त और दृष्ट होकर, षष्ठ-भाव मे हो तो, वायुरोग होता है। (७) यदि मंगल, पापयुक्त-दृष्ट होकर, सप्तमभाव में हो तो, रक्तविकार या पित्त-प्रकोप होता है। (८) यदि योग ७ में, मंगल न होकर, बुध हो तो, वात-कफ रोग होता है। (९) यदि योग ७ में मंगल न होकर, शुक्र हो तो, अतीसार, पेचिश रोग होता है। (१०) यदि योग ७ में, मंगल न होकर; शनि हो तो, गुल्म-रोग होता है। (११) यदि, धनेश के साथ गुरु, द्वितीयभावस्थ हो तो, वायुरोग होता है। (१२) यदि लग्न में गुरु और सप्तम में शनि होतो, वायुरोग, मस्तिष्क-विकार, मूर्च्छा, मृगी, उन्माद होता है [पृष्ठ ४४३ मे नं. १] । (१३) यदि पापांश(नवांश) का चन्द्र, षष्ठस्थ-पापदृष्ट हो तो, वायु-विकार होता है। (१४) यदि सूर्य, पापदृष्ट हो के, षष्ठस्थ हो और षष्ठेश किसी पापग्रह के साथ हो तो, पित्त-प्रकोप होता है। (१५) यदि लग्नेश, नीचराशि या शत्रुराशि का हो, चतुर्थ में भौम हो, शनि पापदृष्ट हो तो, वायुगोला होता है। (१६) यदि षष्ठेश-द्वादशेश, अन्योन्यभावस्थ हों (राशिस्थ नहीं) तो, उदर-पीड़ा, मन्दाग्नि रोग होता है। (१७) यदि षष्ठभाव का नवांशेश, सूर्य या चन्द्र हो तो, अनपच और मन्दाग्नि रोग होता है। (१८) यदि चन्द्र-गुरु, षष्ठ-भाव मे हों तो, इनकी दशान्तर्दशा मे उदर-रोग होता है। (१९) यदि चन्द्र, षष्ठेश होकर, पापदृष्ट हो तो, प्लीहा (ताप-तिल्ली) रोग होता है। (२०) चन्द्र, लग्नेश या सप्तमेश होकर, पापदृष्ट हो तो, प्लीहा रोग होता है। (२१) यदि लग्न और षष्ठ-भाव का नवांशेश, चन्द्र हो तो, चन्द्र, षष्ठेश, लग्नेश की दशान्तर्दशाओं में, अजीर्ण तथा मन्दाग्नि रोग होता है।

(२२) सूर्य राहु से दृष्ट, शनि-मंगल षष्ठस्थ हो, लग्नेश निर्बल हो तो, चिर-रोगी होता है। (२३) यदि शनि कर्कस्थ, चन्द्र मकरस्थ (अन्योन्यराशिस्थ) हो तो, जलोदर रोग होता है। (२४) यदि शनि या गुरु, षष्ठेश होकर, चतुर्थ भाव में हों तो, कृष्ण-पित्त रोग होता है। (२५) यदि लग्नेश, गुरु के साथ त्रिक में हो तो, आमाशय रोग होता है। (२६) यदि शनि युक्त चन्द्र पर, भौमदृष्टि हो तो, संग्रहिणी रोग जनित क्षयरोग (इण्टर टी. बी.) होता है। (२७) यदि सप्तम मे, राहु या केतु हो तो, उदररोग या स्त्री को रोग होता है। (२८) यदि लग्न में चन्द्र, सप्तम में शनि हो तो, उदर रोग (मन्दाग्नि, वायुशूल, जलोदर, कठोदर) होता है। (२९) यदि शुक्र-मंगल, सप्तम में हों तो, वीर्य-रोग, उष्णता या हिमांग-रोग या स्त्री को रोग होता है। (३०) यदि कर्क-वृश्चिक-कुम्भ नवांश का शनि-चन्द्र हो तो, वात गुल्म (वायुगोला) होता है। (३१) यदि कारकांश लग्न से, पाँचवें केतु हो तो, संग्रहणी रोग होता है। (३२) यदि धनभावस्थ शनि-राहु हो अथवा लग्न में राहु-बुध तथा सप्तम में शनि-मंगल हो तो, संग्रहणी या अतीसार रोग होता है। (३३) यदि ६ या १२ वें भाव में, मंगल-शनि हों तो, शूल रोग होता है। (३४) यदि सिंहराशिस्थ चन्द्र, पापयुक्त या दृष्ट हो तो, शूल रोग होता है। (३५) यदि लाभेश, तृतीयस्थ हो तो, शूल रोग होता है। (३६) यदि सिंहस्थ शुक्र, केन्द्र-त्रिकोण में हो, तृतीय भाव में गुरु, हो तो, शूलरोग होता है। (३७) यदि लग्नेश सप्तम में, क्रूर-दृष्ट हो, शुभदृष्ट न हो तो, प्लीहारोग होता है। (३८) यदि चन्द्रस्थ राशीश और षष्ठेश पर, क्रूरग्रह की दृष्टि हो तो, प्लीहारोग होता है। (३९) यदि चन्द्र, शनि-मंगल के मध्य मे हो, मकरस्थ सूर्य हो तो, प्लीहा या कास-श्वास रोग होता है। (४०) यदि पंचम में, शनि-चन्द्र हो तो, प्लीहा रोग होता है।

गुप्त-रोग

गुप्तरोग के अर्थ हैं, प्रमेह, बवासीर, भगन्दर, मूत्रेन्द्रिय रोग, उपदंश, आँत-रोग, अण्ड-कोश रोग, योनि-रोग इत्यादि। मूत्रस्थली के रोग, प्रायः १२ प्रकार के होते हैं। (क) वातकुण्डली—वायुकोप से, बस्ति-स्थान में, पेशाब का गोलाकार होकर, टिकना। (ख) वातष्ठीला—वायुकोप से, बस्तिस्थान मे, पेशाब को, गाँठ या गोलाकार होकर, टिकना। (ग) वातबस्ति—मूत्रवेग के कारण, बस्ति की वायु से, बस्ति का मुख बन्द होकर, पेशाब रुकना। (घ) मूत्रातीत—थोड़ा-थोड़ा, बार-बार पेशाब लगना। (ङ) मूत्रजठर—मूत्र प्रवाह रुकने से, अधोवायु विकार होकर, नाभि के नीचे दर्द होना। (च) मूत्रोत्संग—उतरा हुआ पेशाब, वायु की अधिकता से, मूत्रनाल या बस्ति में, एकाएक रुकना तथा पुनः बड़े वेग से, कभी-कभी रक्त भी लिए हुए निकलना।

(छ) मूत्रक्षय—रूक्षता के कारण, वायु-पित्त योग से, दाह होते हुए, मूत्र का सूखना। (ज) मूत्र-ग्रन्थि—पथरी होने के कारण, पेशाब निकलने में अत्यधिक कष्ट होना। (झ) मूत्र-शुक्र—शकर जाना, मधुमेह, मूत्र के साथ या आगे-पीछे वीर्य का निकलना (ञ) उष्ण-वात—व्यायाम, अतिश्रम, अग्नि या सूर्य की उष्णता (धूप) के कारण पित्तकोप होकर, वस्ति में, वायु से आवृत हो, पेशाब रुकना, दाह होना, (कड़क होना)। मूत्र, पीला या लाल, थोड़ा-सा होना। (ट) पित्तज मूत्रौकसाद—पेशाब में जलन होना, गाढ़ा होना, गहरा लाल निकलना। (ठ) कफज मूत्रौकसाद—सफेद और चिकना (लुआबदार) पेशाब, कष्ट से निकलना।

(१) यदि षष्ठेश, बुध या राहु के साथ होकर, लग्न में हो तो, जननेन्द्रिय का आप्रेशन होता है। (२) यदि षष्ठेश–भौम का योग हो, शुभग्रह की दृष्टि न हो तो, जननेन्द्रिय रोग होता है। (३) यदि चन्द्र, कर्क-वृश्चिक-कुम्भ के नवांश में, शनि के साथ हो तो, जननेन्द्रिय, भगन्दर, अर्श (बवासीर) रोग होते हैं। (४) यदि चन्द्र, पापग्रह और अष्टमेश के साथ हो तथा अष्टमेश पर राहु की दृष्टि हो तो, गुदारोग होता है। (५) यदि अष्टम में, तीन या चार पापग्रह हों तो, गुदा रोग होता है। यदि एक भी शुभग्रह हो तो, कम सम्भव है। (६) यदि चन्द्र, कर्क या वृश्चिक राशि में या कर्क–वृश्चिक नवांश में, पापदृष्ट-युक्त हो तो, गुप्त रोग होता है। अन्य मत से, शनि द्वारा दृष्ट या युक्त होने से, यह योग लागू होता है। (७) यदि चन्द्र, जलराशि में, चन्द्रस्थराशीश षष्ठभाव में, जलराशिस्थग्रह की दृष्टि हो तो, मूत्रकृच्छ्ररोग (कष्ट से थोड़ा-थोड़ा पेशाब होना) होता है। सुश्रुत के मतानुसार, शर्करा-मधुमेह, मूत्रकृच्छ्र के भेद हैं। (८) पूर्वोक्त सातवें योग में 'ग्रह' के स्थान में जलराशिस्थ बुध की दृष्टि हो तो, मूत्रकृच्छ्र रोग होता है। (९) यदि चतुर्थेश-सप्तमेश, त्रिक या शत्रुराशि में, पापदृष्ट हों तो, मूत्र–स्थली रोग होते हैं। (१०) यदि तृतीयेश के साथ, मंगल-बुध भी लग्न में हों तो, मूत्रकृच्छ्र रोग होता है। (११) यदि षष्ठेश या सप्तमेश, व्ययेश के साथ, शनि से दृष्ट हो तो, मूत्रकृच्छ्र रोग या प्रमेह होता है। कभी प्रमेहदोष से, लकवा भी हो जाता है। (१२) यदि तृतीयेश के साथ, मंगल-बुध-शनि भी लग्न में हो तो, पथरी-रोग होता है। (१३) यदि राहु, अष्टम में हो तो, गुदारोग, प्रमेह, अण्डवृद्धि, अर्शरोग होना सम्भव है तथा ३२ वर्षायु में मृत्युभय होता है। परन्तु, शुभ-ग्रह युक्त होने से, २५ वें वर्ष में मृत्युभय होता है। (१४) यदि लग्नेश और धनेश, शुक्रवर्ग (षड्वर्ग) में हो तो, जननेन्द्रिय रोग होता है। (१५) यदि राहु, अष्टमस्थ राशि के नवांश में हो और अष्टमेश, ४।१२ वें भाव में हो तो, जननेन्द्रियरोग होता है। (१६) यदि शुक्र, त्रिक में या षष्ठेश के साथ हो तो, जननेन्द्रिय पीड़ा होती है। (१७) यदि लग्नेश और षष्ठेश, बुध तथा राहु के साथ हो तो, जननेन्द्रिय रोग होता है। (१८) यदि शनि-मंगल से दृष्ट या युक्त होकर, सप्तम में शुक्र हो तो, जननेन्द्रिय रोग होता है। (१९) यदि लग्नेश, षष्ठस्थ हो और षष्ठेश के साथ बुध हो तो, जननेन्द्रिय रोग होता है। (२०) यदि राहु–मंगल–शनि, एक साथ लग्न में हों तो, अण्ड-वृद्धि रोग होता है। (२१) यदि २० वाँ योग षष्ठ–भाव में हो तो, अण्ड-वृद्धि रोग होता है। (२२) यदि राहु-गुरु का योग, लग्न में हो तो, अण्ड-वृद्धि रोग होता है। (२३) यदि राहु-मंगल, षष्ठ–भाव में हों तो, अण्ड-वृद्धि होती है। (२४) यदि लग्नेश-राहु-मान्दि, अष्टमस्थ हों तो, अण्ड–वृद्धि होती है। (२५) यदि सूर्य–गुरु–राहु, तृतीय भाव में हों तो, अण्ड-वृद्धि होती है। (२६) यदि लग्न में राहु, त्रिकोण में गुलिक, अष्टम में शनि-मंगल हों तो, अण्ड-वृद्धि होती है।

(२७) यदि लग्नेश, राहु-केतु या पापग्रह के साथ हो तो, अण्ड–वृद्धि होती है। (२८) यदि लग्न का नवांशेश, राहु-मंगल-शनि-मान्दि के साथ हो तो, अण्ड-वृद्धि होती है। (२९) यदि राहु, अष्टमेश के साथ हो तो, अण्ड–वृद्धि होती है। (३०) यदि शनि-राहु का योग हो तो, अण्ड–वृद्धि होती है। (३१) यदि शनि-मंगल अष्टमस्थ हों तो, वात प्रकोप से अण्ड–वृद्धि होती है (फालेरिया रोग)। (३२) यदि शुक्र-मंगल, एक साथ मेष या वृश्चिक में हो तो, भूमि-दोष या वात-दोष से अण्ड-वृद्धि होती है। (३३) यदि चन्द्र-मंगल, एक साथ, मेष या वृष में, गुरु और शनि से दृष्ट हों तो, वीर्य-दोष से अण्ड-वृद्धि होती है। (३४) यदि मंगल, लग्न में हो तो, चोट या अन्य कारण से, नाभि, गुल्म, अण्ड में शोथ (फूलना) होता है (३५) यदि लग्नेश और मंगल-बुध, त्रिकस्थ हों या एक साथ होकर, षष्ठ-भाव को देखते हों तो, गुप्तरोग, बवासीर होते हैं। (३६) यदि भौम से

मन्दाग्नि रोग होता है। (५) यदि, लग्न में, राहु या पापग्रह हो, अष्टम में शनि हो तो, उदर रोग होता है। (६) चन्द्रमा, पाप-युक्त और दृष्ट होकर, षष्ठ भाव में हो तो, वायुरोग होता है। (७) यदि मंगल, पापयुक्त-दृष्ट होकर, सप्तमभाव में हो तो, रक्तविकार या पित्त प्रकोप होता है। (८) यदि योग ७ में, मंगल न होकर, बुध हो तो, वात-कफ रोग होता है। (९) यदि योग ७ में मंगल न होकर, शुक्र हो तो, अतीसार, पेचिश रोग होता है। (१०) यदि योग ७ में, मंगल न होकर; शनि हो तो, गुल्म-रोग होता है। (११) यदि, धनेश के साथ गुरु, द्वितीयभावस्थ हो तो, वायुरोग होता है। (१२) यदि लग्न में गुरु और सप्तम में शनि होतो, वायुरोग, मस्तिष्क-विकार, मूर्च्छा, मृगी, उन्माद होता है [पृष्ठ ४४३ में नं. १]। (१३) यदि पापांश(नवांश) का चन्द्र, षष्ठस्थ-पापदृष्ट हो तो, वायु विकार होता है। (१४) यदि सूर्य, पापदृष्ट हो के, षष्ठस्थ हो और षष्ठेश किसी पापग्रह के साथ हो तो, पित्त-प्रकोप होता है। (१५) यदि लग्नेश, नीचराशि या शत्रुराशि का हो, चतुर्थ में भौम हो, शनि पापदृष्ट हो तो, वायुगोला होता है। (१६) यदि षष्ठेश-द्वादशेश, अन्योन्यभावस्थ हों (राशिस्थ नहीं) तो, उदर-पीड़ा, मन्दाग्नि रोग होता है। (१७) यदि षष्ठभाव का नवांशेश, सूर्य या चन्द्र हो तो, अनपच और मन्दाग्नि रोग होता है। (१८) यदि चन्द्र-गुरु, षष्ठ-भाव में हों तो, इनकी दशान्तर्दशा में उदर-रोग होता है। (१९) यदि चन्द्र, षष्ठेश होकर, पापदृष्ट हो तो, प्लीहा (ताप-तिल्ली) रोग होता है। (२०) चन्द्र, लग्नेश या सप्तमेश होकर, पापदृष्ट हो तो, प्लीहा रोग होता है। (२१) यदि लग्न और षष्ठ-भाव का नवांशेश, चन्द्र हो तो, चन्द्र, षष्ठेश, लग्नेश की दशान्तर्दशाओं में, अजीर्ण तथा मन्दाग्नि रोग होता है।

(२२) सूर्य-राहु से दृष्ट, शनि-मंगल षष्ठस्थ हो, लग्नेश निर्बल हो तो, चिर-रोगी होता है। (२३) यदि शनि कर्कस्थ, चन्द्र मकरस्थ (अन्योन्यराशिस्थ) हो तो, जलोदर रोग होता है। (२४) यदि शनि या गुरु, षष्ठेश होकर, चतुर्थ भाव में हों तो, कृष्ण पित्त रोग होता है। (२५) यदि लग्नेश, गुरु के साथ त्रिक में हो तो, आमाशय रोग होता है। (२६) यदि शनि युक्त चन्द्र पर, भौमदृष्टि हो तो, संग्रहिणी रोग जनित क्षयरोग (इण्टर टी. बी.) होता है। (२७) यदि सप्तम में, राहु या केतु हो तो, उदररोग या स्त्री को रोग होता है। (२८) यदि लग्न में चन्द्र, सप्तम में शनि हो तो, उदर रोग (मन्दाग्नि, वायुशूल, जलोदर, कठोदर) होता है। (२९) यदि शुक्र-मंगल, सप्तम में हो तो, वीर्य-रोग, उष्णता या दिमाग-रोग या स्त्री को रोग होता है। (३०) यदि कर्क-वृश्चिक-कुम्भ नवांश का शनि-चन्द्र हो तो, वात गुल्म (वायुगोला) होता है। (३१) यदि कारकांश लग्न से, पाँचवें केतु हो तो, संग्रहणी रोग होता है। (३२) यदि धनभावस्थ शनि-राहु हो अथवा लग्न में राहु-बुध तथा सप्तम में शनि मंगल हो तो, संग्रहणी या अतीसार रोग होता है। (३३) यदि ६ या १० वें भाव में, मंगल शनि हों तो, शूल रोग होता है। (३४) यदि सिंहराशिस्थ चन्द्र, पापयुक्त या दृष्ट हो तो, शूल रोग होता है। (३५) यदि लाभेश, तृतीयस्थ हो तो, शूल रोग होता है। (३६) यदि सिंहस्थ शुक्र, केन्द्र त्रिकोण में हो, तृतीय भाव में गुरु, हो तो, शूलरोग होता है। *(३७) यदि लग्नेश सप्तम में, क्रूर-दृष्ट हो, शुभदृष्ट न हो तो, प्लीहारोग होता है। (३८) यदि चन्द्रस्थ राशीश और षष्ठेश पर, क्रूरग्रह की दृष्टि हो तो, प्लीहारोग होता है। (३९) यदि चन्द्र, शनि-मंगल के मध्य में हो, मकरस्थ सूर्य हो तो, प्लीहा या कास श्वास रोग होता है। (४०) यदि पंचम में, शनि-चन्द्र हो तो, प्लीहा रोग होता है।*

गुप्त-रोग

गुप्तरोग के अर्थ हैं, प्रमेह, बवासीर, भगन्दर, मूत्रेन्द्रिय रोग, उपदंश, आँत-रोग, अण्ड-कोश रोग, योनि-रोग इत्यादि। मूत्रस्थली के रोग, प्राय. १२ प्रकार के होते हैं। (क) वातकुण्डली—वायुकोप से, वस्ति-स्थान में, पेशाब का गोलाकार होकर, टिकना। (ख) वातष्ठीला—वायुकोप से, वस्तिस्थान में, पेशाब की, गाँठ या गोलाकार होकर, टिकना। (ग) वातवस्ति—मूत्रवेग के कारण, वस्ति की वायु से, वस्ति का मुख बन्द होकर, पेशाब रुकना। (घ) मूत्रातीत—थोड़ा-थोड़ा, बार-बार पेशाब लगना। (ङ) मूत्रजठर—मूत्र प्रवाह रुकने से, अधोवायु विकार होकर, नाभि के नीचे दर्द होना। (च) मूत्रोत्संग—उतरा हुआ पेशाब, वायु की अधिकता से, मूत्रनाल या वस्ति में, एकाएक रुकना तथा पुन. बड़े वेग से, कभी कभी रक्त भी

(१) शनि-शुक्र का द्विर्द्वादश योग हो तो, नपुंसक के समान होता है। इसमें संग-शक्ति तो, होती है, परन्तु, सन्तानोत्पदक-शक्ति नहीं होती। (२) षष्ठेश-बुध-राहु, एक साथ होकर, लग्नेश से सम्बन्धित हों तो, नपुंसक होता है। (३) चन्द्र, समराशि में हो और बुध विषमराशि में हो, दोनों पर मंगल की दृष्टि हो तो, नपुंसक होता है। (४) लग्न में समराशि हो, चन्द्र विषमराशि के विषमनवांश में हो, चन्द्र पर, भौम-दृष्टि हो तो, नपुंसक होता है। (५) यदि लग्न-चन्द्र, विषमराशि में, सूर्य से दृष्ट हों तो, नपुंसक होता है। (६) यदि शुक्र-शनि, दशम या अष्टम में एक साथ हों, शुभग्रह-दृष्ट न हो अथवा नीचस्थ-शनि, छठवें हो तो, नपुंसक होता है। (७) यदि शुक्र, वक्रीग्रह की राशि में हो तो, भोगद्वारा स्त्री को सन्तुष्ट नहीं कर पाता। (८) यदि लग्नेश स्वगृही हो, सप्तम में शुक्र हो तो भी, योग ७ वें के समान फल होता है। (९) यदि चन्द्र, शनि के साथ, मंगल से चौथे-दशवें हो तो, योग ७ वें के समान फल होता है। (१०) यदि तुलास्थ चन्द्र को, मंगल या सूर्य या शनि देखे तो, नपुंसक होता है। (११) यदि मंगल, विषमराशि में, सूर्य से दृष्ट हो तो, नपुंसक होता है। (१२) यदि विषमराशिस्थ मंगल की दृष्टि, समराशिस्थ सूर्य पर हो तो, नपुंसक होता है। (१३) यदि सप्तमेश, शुक्र के साथ, षष्ठभाव में हो तो, जातक की स्त्री नपुंसक होती है अथवा स्वयं जातक, अपने स्त्री के प्रति, नपुंसक होता है। (१४) यदि बुधराशि (३-६) का षष्ठेश, लग्न में हो और बुध से दृष्ट या युक्त हो तो, स्त्री-पुरुष (दोनों) नपुंसक होते हैं। (१५) यदि मिथुन या कन्याराशि में शनि, षष्ठेश होकर, मंगल के साथ हों तो, पुरुष नपुंसक होता है। किन्तु, उसकी स्त्री, नपुंसक नहीं होती।

(१६) जब सप्तमेश या शुक्र या दोनों, अग्निराशि (१-५-९ राशि) में हों तो कामशक्ति बलिष्ठ; किन्तु गम्भीर तथा कम अपराध करने वाले होते हैं। यदि वायुराशि (३-७-११) में योग हो तो, विषय-वासना अधिक तथा अधिक अपराध करने वाले होते हैं। (१७)—"यदि शनिर्मदने हिमदीधितेः करतलेन हि वीर्यपरिच्युतिः।" यदि चन्द्र-शनि की परस्परदृष्टि (१८० अंशान्तर) हो तो, स्वहस्त द्वारा वीर्य-च्युति करता है। इस योग में, युति नहीं लिखा। परन्तु, शनि-चन्द्र की युति से भी ऐसा ही हो सकता है। हाँ, लाभ, सुख, दशमभाव में, चन्द्र की युति, चाहे दोषयुक्त न होती हो। किन्तु, अन्यत्र, इस युति का परिणाम, शुभ नहीं होता। कल्पना, कोमलता, मनोहर चित्र तथा सौन्दर्य का कारक, चन्द्र, होता है। हठ, अन्धकार, विनाश, स्थिरवृत्ति के कारण, दूषित कल्पना में दृढ़ता एवं अधिक काल तक वृत्ति रखना, शनि का धर्म है। इन दोनों के बिना मिले, "अन्धकार या विनाश-कल्पना को देर तक रखकर, हठ-भाव जमाना" अन्य कौन कर सकता है। अतः चन्द्र-शनि का योग, शुभ नहीं। इन बौद्धिक दुरभिसन्धियों पर, दूषित शनि का प्रभाव रहता है। दूसरा नम्बर चन्द्र का है। क्योंकि चन्द्र, कल्पना-मात्र कराता है (१८) चन्द्र-नेपच्यून युति से, अतिशय विषयी होने के कारण, स्त्रीवत् आचारी, हस्त-मैथुन, गुदा-भंजन कराने वाला आदि, प्रकृति-विरुद्ध मैथुन-सेवी होता है। वृष-सिंह-कन्या धनु-मीन, लग्न वाले की पत्रिका में, यह युति या अशुभ-दृष्टि हो अथवा इन राशियों में, यह युति हो तो, गुदाभंजन कराने वाले (Passive-Agent) होते हैं। शेष राशि के युति वाले अथवा चन्द्र-मंगल युति वाले, ऐसा कर्म करने वाले (Active-Agent) होते हैं। इस प्रकार, बुद्धि से सूक्ष्म अनुसन्धान द्वारा, फलों का निश्चय करना चाहिए।

व्रण [घाव या फोड़ा]

(१) यदि लग्न में, सूर्य या मंगल, सूर्य-शनि से या चन्द्र-शनि से दृष्ट हो तो, चेचक रोग होता है। (२) यदि सूर्य या मंगल, १-२-७-८ वें भाव में हो, मंगल या सूर्य से दृष्ट हो तो, अग्निभय या लघुचेचक रोग होता है। (३) यदि शनि अष्टम में, मंगल सप्तम या नवम में हो तो, चेचक रोग होता है। (४) यदि सप्तमस्थ-षष्ठेश पर, मंगल की दृष्टि हो तो, चेचक रोग होता है। (५) यदि लग्नेश-षष्ठेश से, मंगल की युति हो तो, चेचक, रक्त-विकार, चर्मरोग, मारपीट के द्वारा व्रण होते हैं। (६) यदि बलिष्ठ शनि, मंगल के साथ, तृतीय भाव में हो तो, कण्डु रोग (चर्मरोग, रक्त-विकार) होता है। (७) यदि ३।४।७।८।११।१२ राशिस्थ, चन्द्र सप्तम में, कर्क-नवांशस्थ शनि से दृष्ट हो तो, दाद रोग होता है। (८) यदि केतु या मंगल, लग्न से

दृष्ट चन्द्र, षष्ठ या अष्टम भाव में हो तथा लग्न में शनि हो तो, बवासीर रोग होता है। (३७) यदि क्रूर या पापग्रह, अष्टमेश होके सप्तमस्थ हो, शुभदृष्ट न हो तो, बवासीर रोग होता है। (३८) यदि दिन में जन्म हो और वृश्चिकस्थ शनि, सप्तमभावस्थ हो तथा मंगल नवमस्थ हो तो, अर्शरोग होता। (३९) यदि लग्नेश के साथ, शनि-मंगल भी व्यय में हो अथवा लग्नेश एवं मंगल की दृष्टि, शनि पर हो तो, अर्शरोग होता। (४०) यदि वृष का शनि लग्न मे हो, सप्तम में मंगल हो, लग्न या शनि पर, गुरु की दृष्टि न हो तो, अर्श-रोग होता है। (४१) यदि लग्न मे शनि, सप्तम में मंगल हो तो, अर्श रोग होता है। (४२) यदि पापदृष्ट शनि, व्यय भाव में हो तो, अर्श रोग होता है। (४३) यदि लग्नेश पर, मंगल की दृष्टि हो तो, अर्श रोग होता है। (४४) यदि मंगल, वृश्चिक में हो और गुरु-शुक्र की दृष्टि, लग्न पर न हो तो, अर्श-रोग होता है। (४५) दिन में जन्म हो और सप्तम में शनि हो तो, अर्श रोग होता है (४६) यदि वृश्चिक का मंगल, नवम भाव में, शनि सप्तम में हो तो, अर्श रोग होता है। (४७) यदि षष्ठ भाव में, अकेला मंगल हो तो, अर्श रोग होता है।

(४८) यदि सिंह राशि के, लग्नेश, मंगल, बुध, ४।१२ वें भाव हो तो, गुदारोग होता है। (४९) यदि लग्न में शनि हो (किन्तु उच्च का न हो) तो, भगन्दर रोग होता है। (५०) यदि लग्नेश १।३।६।८ राशिस्थ, शत्रुग्रह से दृष्ट हो तो, गुदा के समीप या अर्धांग रोग होता है। (५१) यदि गुरु, षष्ठेश और अष्टमेश के साथ, सप्तम या अष्टम या व्यय में हो तो, भगन्दर या अर्श रोग होता है। (५२) यदि रन्ध्रभाव में ३-४ पापग्रह हो तो, गुप्तांग रोग होता है। (५३) यदि लग्नेश और मंगल, बुध-युक्त दृष्ट या कन्या-राशि में हो तो, भगन्दर आदि, गुदा रोग होते हैं। (५४) यदि सूर्य-चन्द्र-मंगल-शनि, एक साथ ७।६।८।१२ वें भावस्थ हो या पृथक्-पृथक् हो तो, वीर्य-विकार होता है। (५५) यदि सूर्य-शनि-शुक्र, एक साथ पंचम मे हो तो, प्रमेह या सूजाक रोग होता है। (५६) यदि लग्नस्थ सूर्य, सप्तमस्थ भौम हो तो, प्रमेह रोग होता है। (५७) यदि दशमस्थ भौम, शनि से युक्त या दृष्ट हो तो, प्रमेह रोग होता है। (५८) यदि ३।४ पापग्रह, ६।७ वे भावस्थ हों तो, स्त्री के मूत्रकृच्छ्र रोग होता है। (५९) पुरुष-कुण्डली द्वारा—यदि, मंगल-राहु, सप्तमस्थ हों तो, उसकी स्त्री के मासिक-धर्म में, रक्त-प्रवाह अधिक होता है। (६०) स्त्री कुण्डली द्वारा—यदि सप्तमस्थ राशि हो, भौम की नवांश राशि हो और सप्तम-भाव पर, शनि की दृष्टि हो अथवा सूर्य और बुध की दृष्टि हो तो, योनि या गर्भाशय रोग होता है। स्त्री रोगों पर, द्वितीय भाग मे, विशेष-विचार किया गया है।

नपुंसक-योग

जननेन्द्रिय रोगों मे मे, सबसे बड़ा रोग, यही है। पुरुष की सन्तानोत्पादक-शक्ति के अभाव को, नपुंसकता कहते हैं। चन्द्र-मंगल-सूर्य-लग्न से, इस का विचार किया जाता है। [मेषस्थ (विषम) सूर्य, वृश्चिकस्थ (सम) चन्द्र की, परस्पर-दृष्टि, जैमिनि मत [पृष्ठ १८७] द्वारा हो सकती है। मिथुनस्थ (विषम) सूर्य, कन्या-मीनस्थ (सम) चन्द्र की परस्पर-दृष्टि। सिंहस्थ सूर्य, मकरस्थ चन्द्र की परस्पर-दृष्टि। तुलास्थ सूर्य, वृषस्थ चन्द्र की परस्पर-दृष्टि। धनु राशिस्थ सूर्य, कन्या-मीनस्थ चन्द्र की परस्पर-दृष्टि। कुम्भस्थ सूर्य, कर्कस्थ चन्द्र की परस्पर-दृष्टि। इसी प्रकार, बुध-शनि, मंगल-सूर्य आदि की दृष्टि देखिए। तथाच—मिथुनस्थ बुध पर, कन्या-राशिस्थ शनि की परस्पर-दृष्टि के साथ, केवल शनि, दशम दृष्टि से, बुध को देख रहा है। जैमिनि-दृष्टि तथा पाश्चात्य मत की दृष्टि-(पृष्ठ ३५३) का उपयोग करके इन योगों पर ध्यान दीजिए; अन्यथा परस्पर-दृष्टि होना, असम्भव है] निम्न-लिखित योगों का मिलान, आयुर्वेद-शास्त्र-वर्णित, षट्-नपुंसक-निदान से, होता है।

(अ)	सूर्य	विषमराशि में और चन्द्र	समराशि में,	परस्पर-दृष्ट-युक्त	हों तो,	नपुंसक होता है।
(इ)	बुध	"	शनि	"	"	"
(उ)	मंगल	"	सूर्य	"	"	"
(ए)	लग्न, चन्द्र	"	मंगल	"	"	"
(ऐ)	चन्द्र	"	बुध	"	(दोनों) मंगलदृष्ट	" है।

(ओ) लग्न, चन्द्र, शुक्र, विषमराशि मे तथा विषमनवांश मे·······

ग होता है।

ा दृष्ट हो तो, केशरोग (खल्वाट)
ा दरिद्र या साधू होता है। ऐसा
क्रूरदृष्ट हो तो, खल्वाट होता है।

म्भावना रहती है। (२) लग्न में
र्य होने से रक्तकुष्ट, मंगल होने से
जब तक लग्नस्थ पापग्रह, पीड़ित,
में होने से, कुष्ट होना, असम्भव है।
मंगल-शनि, कर्क-मकर-मीन के नवांश
न, एक साथ कर्क-वृश्चिक-मीन में हों
प या वृष में हो तो, कुष्टरोग होता है।
, रक्तकुष्टी तथा महापातकी होता है।
ातकुष्ट होता है। (८) चन्द्र-मंगल-शुक्र-
व्रणादि होते हैं; जिससे, मरणान्त कष्ट
, षष्ठस्थ हो तो, सोफ (कुष्ट का एक नाम)
दृष्ट हों तो, पाण्डु-कुष्टरोग होता है।
होता है। इस योग से, छः प्रकार के योग
न्द्र, सप्तम में सूर्य हो तो, श्वेतकुष्ट होता
१।४।८ भावस्थ) से, कुष्टरोग होना, सम्भव
ा, लग्न वलिष्ठ होकर, आरोग्यता रहती है।
है। (१५) १।६।८ भावेश, शनि या मंगल के
पंचम (पापग्रह) नवांश में या धनु के पंचम
ा होकर, मंगल-शनि से दृष्ट या युक्त हो तो,
की दृष्टि हो तो, कुष्ट न होकर, केवल चर्मरोग
दृष्ट, राहु-केतु के साथ हो तो, कुष्ट रोग
या नवम भाव में हो, उस पर पापग्रह की
स्थ चन्द्र के साथ, राहु या शनि हो, किन्तु लग्नेश
लग्नेश के साथ राहु-सूर्य-मंगल-शनि में से कोई हो
हों से बताया गया है, अतएव १२ प्रकार के योग
ा के साथ चन्द्र भी हो, शनि की दृष्टि हो
भौम-दृष्ट पष्ठेश, राहु-युक्त, सप्तम-भाव में
। (२३) पाप-दृष्ट, षष्ठेश (गुरु या शुक्र) लग्नस्थ
ं, क्रूर ग्रह हों तो, एक प्रकार का, चकत्ता कुष्ट होता
श्वेत कुष्ट, दाद, खुजली, मन्दाग्नि रोग होता है।
गल-चन्द्र-राहु या केतु एक साथ, किसी भाव में

छठवें या आठवें भाव मे हो तो, चर्मरोग होता है। (९) यदि मंगल-शनि, ६-१२ वें भाव में हो तो, व्रण होता है। कठिन व्रण या आप्रेशन होता है। (१०) यदि, षष्ठेश के साथ, मंगल हो तो, चर्मरोग होता है (११) यदि, बुध-राहु-षष्ठेश-लग्नेश एक साथ हो तो, चर्म रोग होता है, (एक्जिमा सम्भव है)। (१२) पापग्रह, षष्ठेश होकर १-८-१० वे भाव में हो तो, चर्म रोग होता है। (१३) यदि षष्ठेश, शत्रुगृही, नीच, वक्री, अस्त हो तो चर्मरोग होता है। (१४) यदि षष्ठेश, पापग्रह के साथ हो, इस पर लग्नस्थ-रन्ध्रस्थ दशमस्थ पापग्रह की दृष्टि हो तो. चर्मरोग होता है। (१५) यदि शनि अष्टमस्थ और मंगल सप्तमस्थ हों तो, १५ से ३० वर्ष तक, मुख पर फुन्सी होती हैं। कभी व्रण भी हो सकता है। (१६) यदि लग्नेश, मंगल के साथ, पापदृष्ट-युक्त होके, लग्नस्थ हो तो, पत्थर या किसी शस्त्र द्वारा, शिर में व्रण होते हैं। (१७) यदि लग्नेश, पापदृष्ट शनि के साथ, लग्नस्थ हो या लग्न में कोई पापग्रह हो तो, शिर में चोट द्वारा या अग्नि-द्वारा, शरीर में व्रण होता है। (१८) यदि षष्ठेश, पापग्रह-युक्त, शुभग्रहदृष्टि-रहित, लग्न या त्रिक-भावस्थ हो तो, व्रणादि होते हैं। (१९) यदि षष्ठेश, लग्न मे, राहु-केतु के साथ हो तो, व्रण होते हैं। (२०) यदि षष्ठेश, पापयुक्त, शुभदृष्टि-रहित, दशमभाव में हो तो, स्फोटक (चेचक या विष-वस्तु द्वारा) रोग या युद्ध में भय (व्रण) होता है। (२१) यदि शनि-मंगल-गुरु एक साथ, चतुर्थभाव में हो तो, अत्यन्त दुखदायी व्रण या हृदय रोगी होता है। (२२) यदि वृश्चिकस्थ भौम पर, शुभग्रह की दृष्टि न हो तो, व्रण, घाव, फोड़ा-फुन्सी होती है। (२३) यदि केतु-शनि, सप्तम में हो अथवा लग्नेश के साथ, मंगल त्रिकस्थ हो तो, व्रणरोग; अथवा षष्ठेश के साथ सूर्य, लग्न या अष्टम मे हो तो, मस्तक मे घाव; अथवा लग्नेश मंगल होकर, पंचम में पापयुक्त हो तो, पत्थर या शस्त्र से व्रण; अथवा लग्न मे मंगल और सातवें गुरु या शुक्र हो तो, शिर मे अनेक व्रण होते हैं। (२४) यदि पापयुक्त चन्द्र, नवमस्थ हो तो, कण्डुरोग होता है। (२५) त्रिक में चन्द्र-राहु हो तो, स्फोटक (शीतला या विष-वस्तु द्वारा) रोग होता है।

पित्तादि दोष

(१) सूर्य, पापदृष्ट या युक्त, षष्ठस्थ हो तो, पित्त की अधिकता से रोग होता है। (२) अष्टम में सूर्य, धनभाव मे पापग्रह और मंगल निर्बली हो तो, पित्ताधिक्यता से रोग होता है। (३) लग्नेश-बुध, त्रिकभावस्थ हों तो, पित्तजनित असावधानी से रोग। यदि नीचस्थ शनि भी साथ में हो तो, वायुकोप होता है। (४) सूर्य-बुध-शुक्र, षष्ठभावस्थ हो तो, रोग द्वारा स्त्री को विपत्ति होती है। (५) पापनवांशगत मंगल-बुध, षष्ठस्थ हों, चन्द्र-शुक्र की दृष्टि हो तो, श्लेष्मा-विकार होता है। (६) चन्द्र, पापयुक्त या दृष्ट, अष्टमस्थ हो तो, वातरोग होता है। (७) चन्द्र, पापदृष्ट या युक्त, षष्ठस्थ हो, मंगल सप्तम मे हो तो, रक्त-विकार या पित्त-विकार होता है। (८) योग ७ वें मे, मंगल न होकर, बुध हो तो, वायु-कफ जनित रोग; शनि हो तो, गुल्मरोग, शुक्र हो तो, अतीसार रोग; राहु-केतु हो तो, पिशाच दोष से रोग; सूर्य-शनि का योग हो तो, कफरोग होता है। (९) सूर्य-बुध-गुरु, षष्ठभावस्थ हो तो, रोग-रहित होता है।

पिशाच-दोष

पित्तादि दोष का ८ वाँ योग भी देखिए। (१) राहु-ग्रस्त चन्द्रमा, लग्न मे हो और त्रिकोण मे शनि-मंगल हो तो, पिशाच को इष्टदेव मानता है। (२) षष्ठेश, १।७।१० वें भावस्थ हो, लग्न पर भौम की दृष्टि हो तो, जादू-टोना से पीड़ा होती है। (३) लग्नेश, मंगल के साथ केन्द्र में हो, षष्ठेश लग्न मे हो तो, जादू-टोना से पीड़ा होती है। (४) गुरु, १।४।१० वें भावस्थ हो, केन्द्र मे मान्दि हो तो, किसी देवता के साक्षात्कार द्वारा, पीड़ा होती है। (५) शनि सप्तम मे हो, पापदृष्ट चन्द्र हो, चरराशिस्थ शुभग्रह, लग्न में हो तो, भूतादि दर्शन से पीड़ा होती है। (६) शनि-राहु, लग्न में हों तो, पिशाच-बाधा होती है। (७) चन्द्र-राहु, लग्न में हो, शनि-मंगल त्रिकोण में हो तो, प्रेतादि से पीड़ा होती है। (८) निर्बली चन्द्र, शनियुक्त अष्टमस्थ हो तो, पिशाच-बाधा होती है। (९) शनि-राहु लग्नस्थ हो तो, पिशाच-बाधा होती है। (१०) लग्नस्थ केतु, पापयुक्त या दृष्ट हो तो, पिशाच-बाधा या चोर-भय होता है। (देखिए, भय-योग नं. २३)।

ओष्ठ-रोग

षष्ठ-भाव में, राहु या केतु हो तो, ओष्ठ-रोग; अथवा दन्तच्छद रोग होता है।

खल्वाट योग (केश-रोग)

(१) कर्क-सिंह-कन्या-वृश्चिक-धनु राशि की लग्न में चन्द्र, भौम से दृष्ट हो तो, केशरोग (खल्वाट) होता है। यदि खल्वाट, १८ वर्ष के पूर्व हो जाय तो, धनी या विद्वान्; अन्यथा दरिद्र या साधू होता है। ऐसा पाश्चात्य सामुद्रिक-शास्त्र (पामिस्ट्री) का मत है। (२) लग्न में वृष-धनु राशि, क्रूरदृष्ट हो तो, खल्वाट होता है।

कुष्ट-रोग

(१) लग्न-चन्द्र-मंगल के दूषित होने पर, प्रायः इस रोग की सम्भावना रहती है। (२) लग्न में पापग्रह हो, कोई स्वगृही न हो तो, कुष्ट रोग होना, सम्भव रहता है। सूर्य होने से रक्तकुष्ट, मंगल होने से श्वेतकुष्ट, शनि-राहु-केतु होने से नीलकुष्ट होना, सम्भव है। ध्यान रहे कि, जब तक लग्नस्थ पापग्रह, पीड़ित, निर्बल, रोग कारक ग्रह से दृष्ट न होगा, तब तक केवल एक ग्रह मात्र, लग्न में होने से, कुष्ट होना, असम्भव है। अन्य मत से, लग्न में पापग्रह या षष्ठेश सूर्यादि होना चाहिए। (३) चन्द्र-मंगल-शनि, कर्क-मकर-मीन के नवांश में हों, शुभदृष्ट-युक्त न हो तो, कुष्टरोग होता है। (४) चन्द्र-मंगल-शनि, एक साथ कर्क-वृश्चिक-मीन में हों तो, रक्त-विकार से कुष्टरोग होता है। (५) योग के ४ थे के ग्रह, मेष या वृष में हो तो, कुष्टरोग होता है। (६) चन्द्र-मंगल-शुक्र-शनि, एक साथ, कर्क-वृश्चिक-मीन में हों तो, रक्तकुष्टी तथा महापातकी होता है। (७) चन्द्र-सूर्य, किसी पापग्रह के साथ, कर्क-वृश्चिक-मीन में हो तो, श्वेतकुष्ट होता है। (८) चन्द्र-मंगल-शुक्र-शनि, पीड़ित होकर जलराशि में हों तो, लूताकुष्ट होता है अर्थात् ऐसे व्रणादि होते हैं; जिससे, मरणान्त कष्ट होता है (गलित-कुष्ट का लक्षण)। (९) शुक्र या गुरु, पापग्रह से दृष्ट, षष्ठस्थ हो तो, सोफ (कुष्ट का एक नाम) रोग होता है। (१०) चरराशिस्थ शुक्र-चन्द्र, एक साथ पापग्रह से दृष्ट हों तो, पाण्डु-कुष्टरोग होता है। (११) षष्ठेश, राहु-केतु के साथ, १-८-१० वें भावस्थ हो तो, कुष्टरोग होता है। इस योग से, छः प्रकार के योग बन जाते हैं। (१२) मंगल-शनि, दूसरे या बारहवें हों, लग्न में चन्द्र, सप्तम में सूर्य हो तो, श्वेतकुष्ट होता है। (१३) चन्द्र-बुध-राहु-सूर्य-मंगल-शनि—इनके मिश्रण (विशेषतः १।४।८ भावस्थ) से, कुष्टरोग होना, सम्भव है। कभी, चर्मरोग बढ़कर शान्त हो जाता है। क्योंकि, किसी के द्वारा, लग्न वलिष्ठ होकर, आरोग्यता रहती है।

(१४) चन्द्र-गुरु षष्ठस्थ हों तो, साधारण-सा कुष्ट होता है। (१५) १।६।८ भावेश, शनि या मंगल के साथ हों तो, साधारण कुष्ट होता है। (१६) चन्द्र, किसी राशि के पंचम (पापग्रह) नवांश में या धनु के पंचम नवांश (सिंहांश) में हो अथवा चन्द्र, मेष-कर्क-मीन के नवांश का होकर, मंगल-शनि से दृष्ट या युक्त हो तो, कुष्टरोग होता है। किसी का मत है कि, यदि चन्द्र पर, शुभग्रह की दृष्टि हो तो, कुष्ट न होकर, केवल चर्मरोग होता है। (१७) चन्द्र या बुध (लग्नेश होकर)—शनि से दृष्ट, राहु-केतु के साथ हो तो, कुष्ट रोग होता है। (१८) वृष, कर्क, वृश्चिक, मकर राशि, पंचम या नवम भाव में हो, उस पर पापग्रह की युति या दृष्टि हो तो, कुष्ट रोग होता है। (१९) लग्नस्थ चन्द्र के साथ, राहु या शनि हो, किन्तु लग्नेश साथ में न हो तो कुष्ट रोग होता है। (२०) चन्द्र या बुध या लग्नेश के साथ राहु-सूर्य-मंगल-शनि में से कोई हो तो, श्वेत कुष्ट होता है। इसमें तीन ग्रहों का योग, चार ग्रहों से बताया गया है, अतएव १२ प्रकार के योग बनेंगे। (२१) लग्नेश, मंगल या बुध हो, ऐसे लग्नेश के साथ चन्द्र भी हो, शनि की दृष्टि हो या केतु साथ में हो तो, कुष्ट रोग होता है। (२२) भौम-दृष्ट षष्ठेश, राहु-युक्त, सप्तम-भाव में हो तो, किसी रोग, से अङ्ग-भङ्ग होकर, कुष्ट रोग होता है। (२३) पाप-दृष्ट, षष्ठेश (गुरु या शुक्र) लग्नस्थ हो तो, सोफ (कुष्ट) रोग होता है। (२४) मीन-कर्क-वृश्चिक में, क्रूर ग्रह हों तो, एक प्रकार का, चकत्ता कुष्ट होता है। (२५) लग्नेश, पापयुक्त-दृष्ट होकर, अष्टम में हो तो, श्वेत कुष्ट, दाद, खुजली, मन्दाग्नि रोग होता है। (२६) लग्नेश और बुध, राहु या केतु के साथ हो अथवा मंगल-चन्द्र-राहु या केतु एक साथ, किसी भाव में

छठवें या आठवें भाव में हो तो, चर्मरोग होता है। (९) यदि मंगल-शनि, ६-१२ वें भाव में हो तो, व्रण होता है। कठिन व्रण या आप्रेशन होता है। (१०) यदि, षष्ठेश के साथ, मगल हो तो, चर्मरोग होता है। (११) यदि, बुध-राहु-षष्ठेश-लग्नेश एक साथ हो तो, चर्म रोग होता है, (एक्जिमा सम्भव है)। (१२) पापग्रह, षष्ठेश होकर १-८-१० वें भाव में हो तो, चर्म रोग होता है। (१३) यदि षष्ठेश, शत्रुगृही, नीच, वक्री, अस्त हो तो चर्मरोग होता है। (१४) यदि षष्ठेश, पापग्रह के साथ हो, इस पर लग्नस्थ-रन्ध्रस्थ दशमस्थ पापग्रह की दृष्टि हो तो. चर्मरोग होता है। (१५) यदि शनि अष्टमस्थ और मंगल सप्तमस्थ हों तो, १५ से ३० वर्ष तक, मुख पर फुन्सी होती हैं। कभी व्रण भी हो सकता है। (१६) यदि लग्नेश, मंगल के साथ, पापदृष्ट-युक्त होके, लग्नस्थ हो तो, पत्थर या किसी शस्त्र द्वारा, शिर में व्रण होते हैं। (१७) यदि लग्नेश, पापदृष्ट शनि के साथ, लग्नस्थ हो या लग्न में कोई पापग्रह हो तो, शिर में चोट द्वारा या अग्नि-द्वारा, शरीर में व्रण होता है। (१८) यदि षष्ठेश, पापग्रह युक्त, शुभग्रहदृष्टि-रहित, लग्न या त्रिक-भावस्थ हो तो, व्रणादि होते हैं। (१९) यदि षष्ठेश, लग्न में, राहु-केतु के साथ हो तो, व्रण होते हैं। (२०) यदि षष्ठेश, पापयुक्त, शुभदृष्टि-रहित, दशमभाव में हो तो, स्फोटक (चेचक या विष-वस्तु द्वारा) रोग या युद्ध में भय (व्रण) होता है। (२१) यदि शनि-मंगल-गुरु एक साथ, चतुर्थभाव में हो तो, अत्यन्त दुखदायी व्रण या हृदय रोगी होता है। (२२) यदि वृश्चिकस्थ भौम पर, शुभग्रह की दृष्टि न हो तो, व्रण, घाव, फोड़ा-फुन्सी होती है। (२३) यदि केतु-शनि, सप्तम में हो अथवा लग्नेश के साथ, मंगल त्रिकस्थ हो तो, व्रणरोग; अथवा षष्ठेश के साथ सूर्य, लग्न या अष्टम में हो तो, मस्तक में घाव; अथवा लग्नेश मंगल होकर, पंचम में पापयुक्त हो तो, पत्थर या शस्त्र से व्रण; अथवा लग्न में मंगल और सातवें गुरु या शुक्र हो तो, शिर में अनेक व्रण होते हैं। (२४) यदि पापयुक्त चन्द्र, नवमस्थ हो तो, कष्टुरोग होता है। (२५) त्रिक में चन्द्र-राहु हो तो, स्फोटक (शीतला या विष-वस्तु द्वारा) रोग होता है।

पित्तादि दोष

(१) सूर्य, पापदृष्ट या युक्त, षष्ठस्थ हो तो, पित्त की अधिकता से रोग होता है। (२) अष्टम में सूर्य, धनभाव में पापग्रह और मंगल निर्बली हो तो, पित्ताधिक्यता से रोग होता है। (३) लग्नेश-बुध, त्रिकभावस्थ हों तो, पित्तजनित असावधानी से रोग। यदि नीचस्थ शनि भी साथ में हो तो, वायुकोप होता है। (४) सूर्य-बुध-शुक्र, षष्ठभावस्थ हो तो, रोग द्वारा स्त्री को विपत्ति होती है। (५) पापनवांशगत मंगल-बुध, षष्ठस्थ हों, चन्द्र-शुक्र की दृष्टि हो तो, श्लेष्मा-विकार होता है। (६) चन्द्र, पापयुक्त या दृष्ट, अष्टमस्थ हो तो, वातरोग होता है। (७) चन्द्र, पापदृष्ट या युक्त, षष्ठस्थ हो, मंगल सप्तम में हो तो, रक्त-विकार या पित्त-विकार होता है। (८) योग ७ वें में, मंगल न होकर, बुध हो तो, वायु-कफ जनित रोग; शनि हो तो, गुल्मरोग; शुक्र हो तो, अतीसार रोग; राहु-केतु हो तो, पिशाच दोष से रोग; सूर्य-शनि का योग हो तो, कफरोग होता है। (९) सूर्य-बुध-गुरु, षष्ठभावस्थ हो तो, रोग-रहित होता है।

पिशाच-दोष

पित्तादि दोष का ८ वाँ योग भी देखिए। (१) राहु-ग्रस्त चन्द्रमा, लग्न में हो और त्रिकोण में शनि-मंगल हो तो, पिशाच को इष्टदेव मानता है। (२) षष्ठेश, १।७।१० वें भावस्थ हो, लग्न पर भौम की दृष्टि हो तो, जादू-टोना से पीड़ा होती है। (३) लग्नेश, मंगल के साथ केन्द्र में हो, षष्ठेश लग्न में हो तो, जादू-टोना से पीड़ा होती है। (४) गुरु, १।४।१० वें भावस्थ हो, केन्द्र में मान्दि हो तो, किसी देवता के साक्षात्कार द्वारा, पीड़ा होती है। (५) शनि सप्तम में हो, पापदृष्ट चन्द्र हो, चरराशिस्थ शुभग्रह, लग्न में हो तो, भूतादि दर्शन से पीड़ा होती है। (६) शनि-राहु, लग्न में हों तो, पिशाच-बाधा होती है। (७) चन्द्र-राहु, लग्न में हो, शनि-मंगल त्रिकोण में हो तो, प्रेतादि से पीड़ा होती है। (८) निर्बली चन्द्र, शनियुक्त अष्टमस्थ हो तो, पिशाच-बाधा होती है। (९) शनि-राहु लग्नस्थ हों तो, पिशाच-बाधा होती है। (१०) लग्नस्थ केतु, पापयुक्त या दृष्ट हो तो, पिशाच-बाधा या चोर-भय होता है। (देखिए, भय-योग नं. २३)।

(१५) सूर्य, मंगल-शनि, एक साथ षष्ठस्थ हों तो, लँगड़ा होता है। (१६) पापदृष्ट-शनि, षष्ठेश के साथ, व्यय-भाव में हो तो, लँगड़ा होता है। (१७) यदि १।४।८।१०।१२ राशिमें, पापयुक्त शनि-चन्द्र, नवमस्थ हों तो, लँगड़ा (खञ्ज) होता है। (१८) पापदृष्ट-अष्टमेश, नवमेश, किसी पापग्रह के चतुर्थ स्थान में हों तो, जंघा-वैकल्य होता है। (१९) सूर्य-शनि लग्न में, चन्द्र-शुक्र से दृष्ट हों और सूर्यग्रहण का समय हो तो, अपयश या लिंग कटता है। (२०) लग्नस्थ शुक्र पर, शनि की दृष्टि हो तो, कमर में विकलता होती है। (२१) चतुर्थ में शुक्र हो और किसी भाव में, एक साथ मंगल-बुध-गुरु-शनि हों तो, कमर, हाथ, पैर, विकल होते हैं। (२२) सूर्य-चन्द्र-शनि एक साथ, छठवें या आठवें भाव में हों तो, बाहु-पीड़ा होती है। (२३) तृतीय भाव में पापग्रह हों तो, बाहु-पीड़ा, बन्धु-पीड़ा, विस्मृति रोग होते हैं। (२४) सूर्य-चन्द्र एक साथ, केन्द्र में या अष्टम में हों तो, विकलांग तथा 'किं कर्तव्य विमूढ़' भाव होता है। (२५) पापदृष्ट मंगल, त्रिकोण में हो तो, विकलांग होता है। (२६) सप्तमेश या शुक्र, पापदृष्ट-युक्त, निर्बल, अस्त, नीच के हों तो, विकलांग होता है। (२७) योग २६ वाँ हो तो, कभी-कभी स्वयं विकलांग न होकर, स्त्री विकलांग होती है। (२८) सभी पापग्रह केन्द्र में हों तो, सर्वांग विकल होता है। (२९) लग्नेश गुरु पर, शनि की दृष्टि हो तो, वात रोग होता है। (३०) लग्नेश गुरु का, शनि से (चार प्रकार में से कोई) सम्बन्ध हो तो, वात रोग होता है। (३१) यदि (क) गुरु लग्न में, मंगल सप्तम में (ख) शनि-मंगल लग्न में, गुरु सप्तम में, (ग) लग्नेश गुरु पर, मंगल की दृष्टि (घ) लग्नेश गुरु का, मंगल से सम्बन्ध हो तो, वातरोग होता है। (३२) गुरु लग्न में, शनि सप्तम में हो तो, वातरोग होता है। (३३) पापदृष्ट शुक्र-मंगल, सप्तम में हो तो, वातरोग या अण्ड-वृद्धि रोग होता है। (३४) लग्नेश और भौम त्रिक में हो तो, गठिया या शस्त्र से घाव होता है। (३५) लग्नेश, गुरु के साथ, त्रिक में हो तो, गठिया होता है। (३६) मंगल-बुध-शुक्र एक साथ अथवा सूर्य-चन्द्र-बुध-शुक्र एक साथ हों तो, हीनांग होता है। (३७) केतुयुक्त षष्ठेश, पाप या भौम से दृष्ट सप्तमस्थ हो तो, षष्ठेश की दशान्तर्दशा में हीनांग होता है। (३८) यदि सूर्य-शुक्र एक साथ, ५।७।९ वें भाव में हों तो, उसकी स्त्री हीनांग होती है। (३९) सप्तमस्थ शनि हो तो, स्त्री को वात रोग होता है। (४०) व्ययेश निर्बल हो, क्रूरग्रह की राशि या नवांश या नीचांश में हो तो, अंग-विकलता होती है। (४१) व्यय में पापग्रह, व्ययेश पापयुक्त हो तो, अंग-वैकल्य होता है। (४२) सूर्य से दूसरे शनि, दशवें चन्द्रमा, सातवें मंगल हो तो, अंग-वैकल्य होता है। (४३) नीचांशस्थ षष्ठेश, शनि युक्त हो तो, ८४ प्रकार के वायु रोगों में से, कोई वायु रोग होता है। (४४) ५।७।९वें भाव में मंगल, लग्न में शनि या शनि-युक्त क्षीण-चन्द्र, व्यय में हो तो, वात रोग होता है।

नोट—इनमें ४-५-६ योग द्वारा, कभी-कभी गर्भ से ही, बाहु-पाद-मस्तक-विहीन ही, जन्म होता है।

भय-योग

[गृह, जल, चोर, अग्नि, पशु आदि का भय]

(१) लग्न में राहु हो और लग्नेशस्थ-राशि बली हो तो, सर्प-भय होता है। (२) लग्नेश-षष्ठेश, राहु-केतु के साथ हो तो, सर्प, चोर, अग्नि, पशु से भय होता है। (३) लग्न में राहु, लग्नेश-तृतीयेश का योग हो तो, सर्प-भय होता है। (४) यदि सूर्य-शनि-राहु, एक साथ सप्तम में हों तो, सर्प-द्वारा पीड़ा होती है। (सोते समय सर्प का काटना)। (५) पापग्रह से युक्त या दृष्ट शनि, द्वितीय भाव में हो तो, कुत्ते द्वारा पीड़ा होती है। (६) द्वितीयेश के साथ, शनि हो अथवा शनि पर, द्वितीयेश की दृष्टि हो तो, श्वान-भय होता है। (७) लग्न पर, मंगल-सूर्य की दृष्टि हो, गुरु-शुक्र की दृष्टि न हो तो, बैल (साँड़) या अन्य पशु से भय होता है। (८) व्यय या चतुर्थ भाव में, चन्द्र-मंगल-बुध-शुक्र-शनि के संयोग से, श्वान-भय होता है। (९) तृतीयेश के साथ, गुरु भी लग्नस्थ हो तो, चतुष्पाद जीव से या गाय-बैल से पीड़ा होती है। (१०) धनु-मीन में बुध, मकर-कुम्भ में मंगल हो तो, वन्य-पशु (व्याघ्रादि) से भय होता है। (११) चन्द्र-मंगल एक साथ, छठवें या आठवें भावस्थ हों तो, सर्प-भय होता है। (१२) धनभाव में राहु और गुलिक हो तो, सर्प-भय होता है। (१३) तृतीयेश के साथ, राहु भी लग्नस्थ हो तो, सर्प-भय होता है। (१४) मंगल और गुलिक, एक साथ २ या ८ वें भाव में हो, धनेश से दृष्ट हो तो, शृगाल (सियार, लेड़इया) से भय होता है।

हो तो, श्वेत-कुष्ट होता है। (२७) सूर्य-मंगल-शनि, एक साथ किसी भाव में हों तो, कुष्ट रोग होता है (२८) पापग्रहों से घिरा चन्द्र, लग्नस्थ हो तो, श्वेतकुष्ट होता है। (२९) कारकांश लग्न से, चतुर्थ भाव में चन्द्रमा, केतु दृष्ट हो तो, नील कुष्ट होता है। (३०) जब योग २९ में, केतु-दृष्टि न होकर, शुक्र-दृष्टि हो तो, श्वेत कुष्ट होता है। (३१) लग्नेश या चन्द्र, मंगल-राहु या केतु से युक्त हो तो, शरीर के एकांग में, श्वेत-कुष्ट होता है। (३२) व्ययस्थ शनि, लग्नस्थ चन्द्र, धनस्थ मंगल, सप्तमस्थ सूर्य हो तो, श्वेत-कुष्ट होता है। (३३) लग्नस्थ भौम, चतुर्थस्थ शनि, अष्टमस्थ सूर्य हो तो, कुष्ट रोग होता है। (३४) मेषस्थ बुध, दशमस्थ चन्द्र, शनि-भौम का योग, कहीं भी हो या दशम में हो तो, कुष्ट रोग होता है। (३५) मिथुन, कर्क, मीन के नवांश में, चन्द्र-शनि एक साथ, भौम-युक्त या दृष्ट हो तो. कुष्ट रोग होता है। (३६) वृष, कर्क, वृश्चिक, मकर राशिस्थ पापग्रह, त्रिकोण में हों या त्रिकोण को देखें तो, कुष्ट रोग होता है।

नोट—आयुर्वेद में ३६ प्रकार के कुष्ट रोग बताये गये हैं। जिसमें दाद, खाज, छाजन, उकौता आदि चर्मरोग के प्रकार भी सम्मिलित हैं। अतएव व्रण, चर्मरोग, कुष्ट रोग, एक समान योगों पर, विचार पूर्वक निश्चय करना चाहिए। जब कोई मनुष्य, गुरु से कपट, मित्र से चोरी या कृतघ्नता करता है तब उसे, कुष्ट रोग का कष्ट होता है। इस रोग वाले को, सूर्य की उपासना करना चाहिए। जब चन्द्र, अत्यन्त दूषित हो जाता है तब कंजो आँख या सूर्यमुखी (बाल सफेद, क्षीण नेत्र-ज्योति, सर्वांग में समान श्वेत-कुष्ट) वाला बच्चा, जन्म लेता है।

अङ्ग-वैकल्य

आयुर्वेद में वात-पित्त-कफ—इन्हीं तीनों धातुओं के भेदोपभेद से, सभी रोगों की उत्पत्ति बतायी गयी है। न्याय-दर्शन-शास्त्र में वायु को पञ्चभूतों में एक, कहा है। इसका गुण, स्पर्श बताया है। ज्योतिष-शास्त्र में, शनि का वायुतत्त्व तथा गुरु का आकाशतत्त्व (असीम) कहा गया है। आयुर्वेद में—शरीर के अन्दर की वह वायु, जिसके विकार से अनेक रोग उत्पन्न होते हैं, उसे वात-रोग कहते हैं। शरीर में, इस वायु का स्थान, 'पक्वाशय' माना गया है। शरीर में सभी धातुओं एवं मलादि का परिचालन, इसी से होता है। इन्द्रियों के कार्यों का भी 'यही' मूल है। अतएव पक्षाघात (लकवा, फालिज) आदि, वायु-रोग के अन्तर्गत हैं। जो कुपित वायु, शरीर के अर्धांग में भरकर, उसकी स्नायुओं का शोषण करके, सभी बन्ध और मस्तिष्क को शिथिल कर देता है। जिससे, उसके पार्श्ववर्ती सब अंग, निश्चेष्ट हो जाते हैं; उसे, ज्योतिष शास्त्र में 'विकलाङ्ग' होना बताया है। प्रद्दोष के तारतम्यानुसार, वातरोग के अनेक भेदों में से गठिया, लकवा, अङ्गशिथिलता, लॅंगड़ापन, किसी चोट या आप्रेशन द्वारा 'विकलांग' का अनुमान करना पड़ता है।

(१) गुरु-शनि एक साथ हों, चन्द्रमा (अधज्योति का) दशमस्थ हो, मंगल सप्तमस्थ हो तो, अंग में विकलता (गठिया-लकवादि) होना, सम्भव है। (२) शनि, मंगल-राहु के साथ, सप्तम में हो अथवा निर्बल शनि हो तो, विकलाङ्ग होता है। (३) शनि से द्वितीयस्थ सूर्य हो, दशम में चन्द्र, सप्तम में मंगल हो तो, विकलांग होता है। किसी मत से, धनभाव में सूर्य का होना आवश्यक है। (४) पंचमभाव के द्रेष्काण में मंगल हो, सूर्य-चन्द्र-शनि से दृष्ट हो तो, बाहु-रहित होता है। (५) योग ४ था, नवम भाव के द्रेष्काण में हो तो, पाद-रहित होता है। (६) योग ४ था, लग्न के द्रेष्काण में हो तो, मस्तक-रहित होता है। (७) राहु-केतु लग्न में हो, और लग्नेश त्रिकस्थ हो तो, लग्नेश की दशा में तथा लग्नेशस्थ भाव से, षष्ठेश की अन्तर्दशा में, किसी अंग से विहीन होता है। (८) गुरु तृतीय में, शनि नवम में हो अथवा गुरु व्यय में, शनि रन्ध्र में हो तो, हाथ कट जाता है। (९) चन्द्र-मंगल-गुरु एक साथ, सप्तम या अष्टमस्थ हों तो, हाथ कट जाता है। यदि शुभदृष्टि-युति हो तो, यह दुर्भाग्य नहीं होने पाता। (१०) दशम में, बुध-शनि-राहु हों तो, हाथ कट जाता है। (११) मंगल-बुध एक साथ, छठवें या आठवें भाव में हो तो, चोर द्वारा, हाथ-पैर नष्ट होते हैं। (१२) सिंह का शनि, मेष-वृश्चिक का गुरु, पापयुक्त हो तो, हाथ काटा जाता है। (१३) शत्रुराशिस्थ शनि, शुक्र के साथ, शत्रुग्रह से दृष्ट हो तो, पैर काटा जाता है। (१४) मंगल-शनि-राहु, एक साथ षष्ठस्थ हों तो, लँगड़ा होता है।

(१५) सूर्य, मंगल-शनि, एक साथ पष्ठस्थ हों तो, लँगड़ा होता है। (१६) पापदृष्ट-शनि, षष्ठेश के साथ, व्यय-भाव में हो तो, लँगड़ा होता है। (१७) यदि १।४।८।१०।१२ राशिमें, पापयुक्त शनि-चन्द्र, नवमस्थ हों तो, लँगड़ा (खञ्ज) होता है। (१८) पापदृष्ट-अष्टमेश, नवमेश, किसी पापग्रह के चतुर्थ स्थान में हों तो, जंघा-वैकल्य होता है। (१९) सूर्य-शनि लग्न में, चन्द्र-शुक्र से दृष्ट हों और सूर्यग्रहण का समय हो तो, अपयश या लिंग कटता है। (२०) लग्नस्थ शुक्र पर, शनि की दृष्टि हो तो, कमर में विकलता होती है। (२१) चतुर्थ में शुक्र हो और किसी भाव में, एक साथ मंगल-बुध-गुरु-शनि हों तो, कमर, हाथ, पैर, विकल होते हैं। (२२) सूर्य-चन्द्र-शनि एक साथ, छठवें या आठवें भाव में हों तो, बाहु-पीड़ा होती है। (२३) तृतीय भाव में पापग्रह हों तो, बाहु-पीड़ा, बन्धु-पीड़ा, विस्मृति रोग होते हैं। (२४) सूर्य-चन्द्र एक साथ, केन्द्र में या अष्टम में हों तो, विकलांग तथा 'किं कर्तव्य विमूढ़' भाव होता है। (२५) पापदृष्ट मंगल, त्रिकोण में हो तो, विकलांग होता है। (२६) सप्तमेश या शुक्र, पापदृष्ट-युक्त, निर्बल, अस्त, नीच के हों तो, विकलांग होता है। (२७) योग २६ वाँ हो तो, कभी-कभी स्वयं विकलांग न होकर, स्त्री विकलांग होती है। (२८) सभी पापग्रह केन्द्र में हों तो, सर्वांग विकल होता है। (२९) लग्नेश गुरु पर, शनि की दृष्टि हो तो, वात रोग होता है। (३०) लग्नेश गुरु का, शनि से (चार प्रकार में से कोई) सम्बन्ध हो तो, वात रोग होता है। (३१) यदि (क) गुरु लग्न में, मंगल सप्तम में (ख) शनि–मंगल लग्न में, गुरु सप्तम में, (ग) लग्नेश गुरु पर, मंगल की दृष्टि (घ) लग्नेश गुरु का, मंगल से सम्बन्ध हो तो, वातरोग होता है। (३२) गुरु लग्न में, शनि सप्तम में हो तो, वातरोग होता है। (३३) पापदृष्ट शुक्र-मंगल, सप्तम में हो तो, वातरोग या अण्ड-वृद्धि रोग होता है। (३४) लग्नेश और भौम त्रिक में हो तो, गठिया या शस्त्र से घाव होता है। (३५) लग्नेश, गुरु के साथ, त्रिक में हो तो, गठिया होता है। (३६) मंगल-बुध-शुक्र एक साथ अथवा सूर्य-चन्द्र-बुध-शुक्र एक साथ हों तो, हीनांग होता है। (३७) केतुयुक्त षष्ठेश, पाप या भौम से दृष्ट सप्तमस्थ हो तो, षष्ठेश की दशान्तर्दशा में हीनांग होता है। (३८) यदि सूर्य-शुक्र एक साथ, ५।७।९ वें भाव में हों तो, उसकी स्त्री हीनांग होती है। (३९) सप्तमस्थ शनि हो तो, स्त्री को वात रोग होता है। (४०) व्ययेश निर्बल हो, क्रूरग्रह की राशि या नवांश या नीचांश में हो तो, अंग–विकलता होती है। (४१) व्यय में पापग्रह, व्ययेश पापयुक्त हो तो, अंग–वैकल्य होता है। (४२) सूर्य से दूसरे शनि, दशवें चन्द्रमा, सातवें मंगल हो तो, अंग–वैकल्य होता है। (४३) नीचांशस्थ षष्ठेश, शनि युक्त हो तो, ८४ प्रकार के वायु रोगों में से, कोई वायु रोग होता है। (४४) ५।७।९वें भाव में मंगल, लग्न में शनि या शनि–युक्त क्षीण–चन्द्र, व्यय में हो तो, वात रोग होता है।

नोट—इनमें ४–५–६ योग द्वारा, कभी–कभी गर्भ से ही, बाहु–पाद–मस्तक–विहीन ही, जन्म होता है।

भय–योग

[गृह, जल, चोर, अग्नि, पशु आदि का भय]

(१) लग्न में राहु हो और लग्नेशस्थ–राशि बली हो तो, सर्प-भय होता है। (२) लग्नेश-षष्ठेश, राहु-केतु के साथ हो तो, सर्प, चोर, अग्नि, पशु से भय होता है। (३) लग्न में राहु, लग्नेश-तृतीयेश का योग हो तो, सर्प-भय होता है। (४) यदि सूर्य-शनि-राहु, एक साथ सप्तम में हों तो, सर्प-द्वारा पीड़ा होती है। (सोते समय सर्प का काटना)। (५) पापग्रह से युक्त या दृष्ट शनि, द्वितीय भाव में हो तो, कुत्ते द्वारा पीड़ा होती है। (६) द्वितीयेश के साथ, शनि हो अथवा शनि पर, द्वितीयेश की दृष्टि हो तो, श्वान-भय होता है। (७) लग्न पर, मंगल-सूर्य की दृष्टि हो, गुरु–शुक्र की दृष्टि न हो तो, बैल (साँड़) या अन्य पशु से भय होता है। (८) व्यय या चतुर्थ भाव में, चन्द्र-मंगल-बुध-शुक्र-शनि के संयोग से, श्वान-भय होता है। (९) तृतीयेश के साथ, गुरु भी लग्नस्थ हो तो, चतुष्पाद जीव से या गाय-बैल से पीड़ा होती है। (१०) धनु–मीन में बुध, मकर-कुम्भ में मंगल हो तो, वन्य-पशु (व्याघ्रादि) से भय होता है। (११) चन्द्र-मंगल एक साथ, छठवें या आठवें भावस्थ हों तो, सर्प-भय होता है। (१२) धनभाव में राहु और गुलिक हो तो, सर्प-भय होता है। (१३) तृतीयेश के साथ, राहु भी लग्नस्थ हो तो, सर्प-भय होता है। (१४) मंगल और गुलिक, एक साथ २ या ८ वें भाव में हो, धनेश से दृष्ट हो तो, शृगाल (सियार, लेड़इया) से भय होता है।

(१५) सूर्ययुक्त षष्ठेश, धनभावस्थ हो तो, शृगालादि पशु से भय होता है। (१६) यदि कर्क या सिंह में, एक साथ सूर्य-चन्द्र-राहु हो तो, पशुभय होता है। (१७) षष्ठेश, शनि-राहु या केतु के साथ हो तो, मृग (हरिण) से भय होता है। (१८) लग्नेश-षष्ठेश से युक्त, गुरु भी हो तो, गज (हाथी) से भय होता है। (१९) लग्नेश-षष्ठेश से युक्त, चन्द्र भी हो तो, अश्वभय होता है। (२०) सूर्य, ४।८।९ वें भाव में हो तो, पुराना घर गिरने से दबने का भय होता है। (२१) कारकांश लग्न में कर्क राशि हो तो, जलभय होता है। (२२) लग्न में पापग्रह हो, गुलिक त्रिकोणस्थ हो तो, चोर या अग्नि से भय होता है। (२३) लग्न में केतु, पापयुक्त या दृष्ट हो तो, चोरभय या पिशाच-बाधा होती है। (देखिए पिशाच दोष नं० १०) (२४) षष्ठेश, राहु या केतु से युक्त हो तो, सर्प, चोर या अग्नि से भय होता है। (२५) नवमेश, षष्ठस्थ होकर, षष्ठेश से दृष्ट या युक्त हो तो, चोर या अग्नि से भय होता है। (२६) षष्ठेश, शनि-मंगल से युक्त हो तो, चोरअग्निभय होता है। (२७) लग्न-अष्टम-सप्तम में सूर्य, भौम-दृष्ट हो तो, फोड़ा-फुन्सी, अग्नि या दुष्टजन से भय होता है। (२८) १।२।७।८ वें भाव में, भौम को सूर्य देखता हो तो, फोड़ा-फुन्सी, अग्नि या दुर्जन से भय होता है। (२९) १।६।७।१२ वे भावस्थ, गुलिक-मंगल को सूर्य देखता हो तो, फोड़ा, अग्नि, दुर्जन से भय होता है। (३०) षष्ठेश, भौमयुक्त हो तो, अग्निभय होता है। (३१) लग्नस्थ क्रूरग्रह (सूर्य-राहु) पर, पापग्रह (मं. श. के.) की दृष्टि हो तो, अग्निभय होता है। (३२) क्षीणचन्द्र दशमस्थ हो, भौम नवमस्थ हो, शनि लग्नस्थ हो, सूर्य पंचमस्थ हो तो, धूमाग्निभय, कारागार (बन्धन), चोट द्वारा पीड़ा होती है। (देखिए कारागार योग १४)। (३३) नवम में मंगल हो तो, अग्नि या विष से भय होता है। (३४) लग्नस्थ मंगल-शनि पर, सूर्य की दृष्टि हो तो, शस्त्रभय होता है। (३५) षष्ठेश, षष्ठस्थ हो तो, जाति शत्रु-भय होता है। (३६) पंचमेश, ६ या १२ वे भावस्थ हो तो, पुत्र से शत्रुता तथा भय होता है। (३७) लग्नेश-पंचमेश की परस्पर शत्रुता हो अथवा पंचमेश षष्ठस्थ होकर, लग्नेश से दृष्ट हो तो, पुत्र-शत्रुता से भय होता है। (३८) लग्नेश से, सुखेश-लाभेश की शत्रुता हो अथवा सुखेश, पापग्रह से युक्त हो अथवा लग्नेश से, षष्ठभाव में, सुखेश हो अथवा सुखेश, षष्ठभाव में हो तो, माता की शत्रुता से भय होता है। (३९) लग्नेश-दशमेश की, परस्पर शत्रुता हो अथवा लग्न या लग्नेश से, षष्ठ भाव में, दशमेश हो अथवा त्रिकस्थ पंचमेश पर, लग्नेश की या राहु-मंगल की दृष्टि हो तो, पिता की शत्रुता से भय होता है। (४०) षष्ठेश निर्बली, शत्रुदृष्ट-युक्त या पापदृष्ट-युक्त हो तो, शत्रु-भय होता है।

कारागार (बन्धन, जेल, रोग) योग

(१) एक-एक या दो-दो या तीन-तीन ग्रह एक साथ—दूसरे-बारहवें या तीसरे-ग्यारहवें या चौथे-दशवें या पाचवें-नवें या छठवें-आठवें हों तो, शृंखला (जञ्जीर, हथकड़ी) से बद्ध-योग होता है। पापग्रहयोग में बन्धन, शुभग्रह योग में, छुटकारा भी होना बताया गया है। यदि, दोनों स्थानों में शुभग्रह ही हों तो, रोग-बन्धन में पड़कर, कुछ काल के लिये साधारण स्वतन्त्रता नष्ट हो जाती है। स्वतन्त्रता का विनाश ही, बन्धन है। कारागार में राजा द्वारा, रोग-ग्रस्त दशा में, वैद्य-डाक्टर द्वारा, स्वतन्त्रता का विनाश होता है। साधारण रूप से चलना-फिरना, मिलना-जुलना, खाना-पहिनना, आदि बातों में, जब स्वतन्त्रता नष्ट होती है तभी, कारागार या रोग-ग्रस्त स्थिति होती है। कर्म-बन्धन (देह-धारण), विदेशी राज्य (त्रिकाश-बन्धन) भी होते हैं। जब उन पापग्रहों के साथ शुभग्रह भी हों, शुभग्रह की दृष्टि हो अथवा जिन स्थानों में पापग्रह हों, उनके स्वामी, किसी शुभग्रह से दृष्टि-युति करते हों तो, छुटकारा, साधारण बन्धन (नजरबन्द) या परोपकार-बन्धन (दुष्कर्म में नहीं) या असत्य-अपराध पर, मुकदमा होना आदि प्रभाव होते हैं। (२) दूसरे-बारहवें या पाँचवें-नवें भाव में पापग्रह हों अर्थात् १ या २ या ३ या ४ स्थानों में, पापग्रह हों तो, बन्धन-भोगी होता है। यदि इन स्थानों में, धनु-मेष-वृष राशि हो तो, रज्जु (रस्सी) से बन्धन होता है। शृंखला (जंजीर) रज्जु (रस्सी) द्वारा, दो भेद, बन्धन के बताये गये हैं। परन्तु है एक ही बात।

(३) सरलता के लिए, स्थानों के नाम द्विर्द्वादश, चतुर्थ-दशम, त्रिकोण, रिपु-रन्ध्र कहिए तो, अधिक अच्छा रहेगा। यदि इनमें, एक या अधिक स्थानों में पापग्रह हों अथवा इन स्थानों में, पापग्रह की दृष्टि हो, अथवा इन भावेशों के साथ, पापग्रह का सम्बन्ध हो तो, कारागार, हवालात, राजदण्ड, द्रव्यदण्ड होता है। कृपया, इस योग का फल, खूब सोच-समझकर कहियेगा। क्योंकि प्रायः सभी कुण्डलियों में, लागू हो जायगा। बन्धन के लिए, युगुल स्थान (द्विर्द्वादश आदि) तथा रोग के लिए, एक ही स्थान पर ध्यान देना पड़ेगा। (४) जन्मलग्न मिथुन-कन्या-तुला-कुम्भ हो तो, शृंखला-बन्धन। कर्क-मकर-मीन में, किले के अन्दर बन्धन। धनु-मेष-वृष में, रज्जुबन्धन। वृश्चिक में नजरबन्द या द्रव्य-दण्ड होता है। सिंह लग्न वाला तो, स्वयं बन्धन करने वाला हो सकता है। यह योग तभी लागू होंगे, जब पूर्वोक्त तीन प्रकार में से, कोई योग लागू हों। (५) चतुर्थ भाव में, सूर्य या मंगल हों और दशम में शनि हो तो, कारागार या फाँसी होती हैं। (६) लग्नेश, षष्ठेश के साथ, केन्द्र-त्रिकोण में राहु-केतु से दृष्ट या युक्त हो तो, बन्धन होता है। (७) लग्नेश, षष्ठेश के साथ, शनि एक साथ नवम में हो तो, बन्धन होता है। (८) सूर्य-शुक्र-शनि, एक साथ नवम में हो तो, घृणित कार्य में राजदण्ड होता है। (९) द्वितीय-पंचम में पापग्रह हों तो, बन्धन, धनबन्धन, द्रव्य-दण्ड, ऋणी को जेल, जुर्माना के बदले जेल, चोर को जेल (धन के कारण) होती है। (१०) बुधदोष के कारण, व्यापारी, वकील, डाक्टर को राजदण्ड। शनि के कारण, चोर या साधु को राजदण्ड। मंगल के कारण, डकैत या कत्ल करने वाला या राजा को राजदण्ड होता है। ब्लेक-मार्केटिंग, धोखा देना, बुध का काम। अन्धेरे में या विश्वासघात करना, शनि का काम। वीरता करना, मंगल का काम है। अन्य ग्रह वाले, प्रायः अपराधी नहीं होते। शनि और मंगल के कारण, जेल भरी रहती है। शरीफ-बदमाश, बुध के कारण होते हैं। (११) नवम-द्वादश में, पापग्रह हों तो, बन्धन होता है। (१२) सर्प-निगड-आयुध, द्रेष्काण में लग्न हो और द्रेष्काणेश पर, पापग्रह की दृष्टि हो तो, कारागार होता है। सर्प में कारागार। निगड में बेड़ी-बन्धन। आयुध में बेंत आदि लघुदण्ड। (१३) यदि बारहवें भाव में पापराशि, पापयुक्त-दृष्ट, व्ययेश का नवांशेश पापग्रह हो, सूर्य निर्बल (नीच, नीचांश, ग्रहण-समय, पापदृष्ट, पापयुक्त) हो तो, कारागार होता है। (१४) पाप-युक्त-दृष्ट चन्द्र दशम में, मंगल नवम में, शनि लग्न में, सूर्य पंचम में हो तो, कारागार में चोट द्वारा या धूमाग्नि द्वारा मृत्यु होती है।

नोट—सर्प —वृश्चिक का पहिला-दूसरा, कर्क का दूसरा-तीसरा, मीन का तीसरा द्रेष्काण। अथवा कर्क का द्वितीय, वृश्चिक का प्रथम, मीन का अन्तिम द्रेष्काण।
आयुध—वृश्चिक का द्वितीय द्रेष्काण।
निगड —मकर का प्रथम द्रेष्काण। मतान्तर से, वृश्चिक का द्वितीय भी।
विहंग —सिंह का प्रथम द्रेष्काण। मतान्तर से, मकर का प्रथम भी।

चिन्ता-योग

(१) लग्नेश और चन्द्रमा, जिस स्थान में बैठता है या जिस भाव को देखता है, उस भाव के पदार्थों की चिन्ता, जीवन में विशेष होती है। (२) दशम में मंगल हो तो, स्थान या घर या पद या खेती की चिन्ता होती है अथवा त्रिक में मंगल हो तो, सुख की चिन्ता होती है अथवा त्रिक में गुरु हो तो, वाहन-आभूषण-वस्त्र की चिन्ता होती है अथवा त्रिक में चन्द्र-शुक्र हो तो, राजचिन्ह की चिन्ता होती है। (३) गुरु ५।७।९ वें भावस्थ हो तो, पुत्र की चिन्ता होती है। (४) पंचम भाव में बुध हो तो, बुद्धि या परीक्षा, विवाद-विजय, व्यापारिक, कूटनीति कार्य, चौर कार्य की चिन्ता होती है। (५) त्रिकोण में सूर्य हो तो, पिता या बन्धु की चिन्ता होती है। (६) ५।७ वें भावस्थ शुक्र हो तो, यात्रा की चिन्ता होती है। (७) अष्टमस्थ बुध हो तो, मुक्ति, ईश्वर, मृत्यु की चिन्ता और व्ययस्थ बुध में, ऋण की चिन्ता होती है। ये योग, प्रश्न-लग्न द्वारा भी देखकर मूक-प्रश्न बता सकते हैं।

जन्मर्च द्वारा रोग-ज्ञान

अ. —वातज्वर, अधांगपीड़ा, मतिभ्रम, निद्रानाश
भ. —तीव्रज्वर, आलस्य, छर्दि आदि अनेक रोग
कृ. —अतिदाह, उदरशूल, नेत्रपीड़ा, अनिद्रा
रो. —ज्वर, कुक्षिशूल, शिरपीड़ा, प्रलाप
मृ. —त्रिदोषरोग, चर्मरोग, अधांग-पीड़ा
आ. —ज्वर, सर्वांग-पीड़ा, त्रिदोष, अनिद्रा
पुन. —ज्वर, कटिपीड़ा, शिररोग
पु. —ज्वर, शूल, महाकष्टकारी रोग
श्ले —सर्वांग-पीड़ा, पैर के रोग, मृत्यु-सम कष्ट
म —अधांग-पीड़ा, शिर-पीड़ा
पूफा.—ज्वर, शिररोग, सर्वांग-पीड़ा
उफा.—कुक्षिशूल, ज्वर, सर्वांग-पीड़ा
हस्त.—अपच, उदरशूल, स्वेद, सर्वांग पीड़ा
चि. —अनेक रोग, महाकष्ट
स्वा. —अनेक व्यथाएँ
वि. —कुक्षिशूल, सर्वांग-पीड़ा
अनु. —तीव्रज्वर, शिरपीड़ा, सर्वांग-कष्ट
ज्ये. —व्याकुलता, पित्तरोग, कम्पन
मू —उदररोग, मुखरोग, त्रिदोष-ज्वर
पूषा. —शिरपीड़ा, कम्पन, महाकष्ट
उषा. —उदरशूल, कटिपीड़ा, प्रलाप
श्र. —अतीसार, सर्वांग-पीड़ा, त्रिदोष-ज्वर
ध. —मूत्रकृच्छ्, रक्तातिसार, ज्वर, कम्पन
श. —वातज्वर, कष्ट, सन्निपात-भय
पूभा. —शिरपीड़ा, त्रिदोष, वमन, व्यग्रता
उभा —शूलज्वर, अतीसार, कामला, वातरोग
रे. —चित्तविक्षिप्त, ज्वर, ऊरुशूल, वात-पित्त रोग

नोट— पृष्ठ २२६ का, अश्विनी नक्षत्र है।

लग्न या चन्द्र द्वारा रोग

मेष —शिररोग, विषमज्वर, मृगी, स्वप्नदोष, अनिद्रा, नेत्ररोग।
वृष —मुखरोग, व्रण, शोथ, मेद-वृद्धि, कण्ठनली रोग, मस्तिक के अधोभाग के रोग।
मिथु.—वक्षस्थल, गठिया, निमोनिया, आमवात, क्षय, श्वास-कासादि, फुस्फुस रोग।
कर्क —हृदय, कैन्सर, जलोदर, विस्फोटक, उदररोग।
सिंह—भुजा, अग्निमान्द्य, अजीर्ण, निर्बलता, मधुमेह, हृदयरोग, यकृतविकार।
कन्या—बद्धकोष्ठता, गुप्त, आँतरोग, वीर्यदोष, प्लीहा।
तुला —वस्ति, गुर्दे के रोग, चर्म।
वृश्चि.—मूत्राशय, क्षत, स्नायुरोग, भगन्दर, रक्त-पित्त, मल-मूत्र रोग।
धनु —जंघा, अपस्मार, पक्षाघात, नितम्ब-पीड़ा, घुटने के रोग, धमनियों में विकार।
मकर—घुटना, कुष्टरोग, श्लीपद (हाथीपाँव), दन्त-रोग, अस्थि-सन्धि रोग।
कुम्भ—पिंडुरी, सहसा-क्षत, माँस-क्षत, स्नायु रोग, श्वासनली रोग, रक्त-विकार।
मीन —पैर, क्षय, रसवाहिनी-नाडी-विकार। राजयक्ष्मा, आँत का क्षयरोग।

केवल ग्रह द्वारा रोग

सूर्य —आत्मा, पित्त, हृदय, मस्तिष्क, हृदस्फूटन, ज्वर, अस्थि, मर्मस्थल पीड़ा, भाद्रपद के रोग।
चन्द्र —मन, वक्षस्थल, गर्भाशय, रक्तग्रन्थि, शीत, वातकफ, ज्वर, पाचन-विकार, सावन के रोग।
मंगल—पित्त, कान, नख, कपाल, माँसपेशी, ज्वर, वमन, स्नायु, शोथ, वैशाख-मार्गशीर्ष के रोग।
बुध —उदर, बुद्धि, जीभ, फेफड़ा, आँव, स्नायु, पित्त, त्रिदोष, मूर्छा, चर्म, आषाढ़-आश्विन के रोग।
गुरु —जंघा, गुर्दे, मांस, मेद, वायु, रक्त, धमनियाँ, निमोनिया, चर्बीवृद्धि, स्थूलता, पौष-चैत्र के रोग।
शुक्र —वीर्य, गर्भाशय, नेत्र, वातस्थल, उत्पादक-स्थल, कफ-वात, फेफड़ा, रसनली, ज्येष्ठ-कार्तिक के रोग।
शनि —पैर, घुटने, वायु-पित्त, सर्वांगपीड़ा, मज्जारोग, कफ सूखना, रूक्षता, माघ-फाल्गुन के रोग।
राहु —वात-पित्त, व्याकुलता, पैर रोग, वायु रोग, मज्जा रोग, श्लेष्मा रोग, रूक्षता के रोग।
केतु —वात-समान रोग, सर्वांग-कष्ट, पैर रोग, वायु रोग, मज्जा रोग, श्लेष्मा-विकार, रूक्षता के रोग।

द्रेष्काण द्वारा रोग

पहिले बताया जा चुका है कि, प्रत्येक राशि के तीन-तीन द्रेष्काण होते हैं। आगे वाले चक्र ६२ में देखिए। यदि किसी लग्न के प्रथम द्रेष्काण में जन्म हो तो, प्रथम द्रेष्काण के अंगों को लिखकर, जिस भाव के,

जिस द्रेष्काण में, जो ग्रह बैठा हो, उस ग्रह को, उसी द्रेष्काण में लिखकर, ग्रह के अनुसार, अंग में तिलादि का ज्ञान करना चाहिए। इसी प्रकार, द्वितीय द्रेष्काण में जन्मवाले के लिए, द्वितीय द्रेष्काण के, अंग-विभाग पर एवं तृतीय द्रेष्काण में, तृतीय अंग-विभाग पर, ग्रह-स्थापन करके, फल जानिए। जिस द्रेष्काण में पापग्रह हो या पापग्रह की दृष्टि हो तो, उस द्रेष्काण के अंग में व्रण होना, सम्भव है। यदि इस पापग्रह पर, शुभदृष्टि या युति हो तो, तिल-मसा-लहसुन आदि चिन्ह होता है। यदि ग्रह स्वगृही, स्थिरराशि, स्थिरनवांश में हो और साथ में शनि हो तो, वह चिन्ह जन्म से ही होता है; अन्यथा जन्म के बाद, ग्रह-कृत घाव (व्रण), योगकारक ग्रह की दशान्तर्दशा में होता है।

ग्रह-चिन्ह

सूर्य —लकड़ी द्वारा चोट, पशु के आघात से घाव होता है। चन्द्र —(क्षीण होने पर) जल-जन्तु के द्वारा, सींगवाले पशु के आघात से, तरल-पदार्थ (तिजाब आदि) से घाव होता है। मंगल—व्रण, फोड़ा–फुन्सी, अग्नि, विष (सर्पादि), शस्त्रद्वारा घाव होता है। बुध—(सपाप) भूमि पर गिरने से (पतनात्), ढेला-ईंट की चोट से घाव होता है। शनि—पत्थर की चोट से, जल या शीत-विकार से, वातरोग द्वारा घाव होता है। सूर्य-चन्द्र—शत्रुगृही या पापगृही हो तो, व्रण तथा शुभदृष्ट युति होने से, तिल–मसा आदि होता है। गुरुशुक्र या पूर्णचन्द्र या शुभबुध की युति या दृष्टि से, कोई चिन्ह (व्रण) नहीं हो पाता। हाँ, कभी तिलादि होना सम्भव है। यदि किसी द्रेष्काण-अंग के, तीन-ग्रह शुभ या पाप हों, इनके साथ चौथा ग्रह बुध हो तो, उस अंग में घाव, अवश्यम्भावी है।

अंग–द्रेष्काण–चक्र ९२

क्रम	भाव	प्रथम द्रेष्काण	द्वितीय द्रेष्काण	तृतीय द्रेष्काण	क्रम	भाव	प्रथम द्रेष्काण	द्वितीय द्रेष्काण	तृतीय द्रेष्काण
१	लग्न	... मस्तक	वाँया नेत्र	वाँया नेत्र	१९	दारा	... मुख	दाहिनी दाढ़ी	दाहिनी दाढ़ी
२	”	... कण्ठ	... कण्ठ	” कन्धा	२०	”	... नाभी	... नाभि	दाहिना पेट
३	”	... वस्ति	... वस्ति	... वस्ति	२१	”	... सुत्री	... सुत्री	... सुत्री
४	धन	दाहिना नेत्र	... मस्तक	... मस्तक	२२	आयु	वाँया दाढ़ी	... मुख	.. मुख
५	”	” कन्धा	दाहिना कन्धा	... कण्ठ	२३	”	” पेट	वायाँ पेट	... नाभि
६	”	” लिंग	” लिंग	दाहिनालिंग	२४	”	” पिंडुरी	” पिंडुरी	वायाँ पिंडुरी
७	भ्रातृ	” कान	” नेत्र	” नेत्र	२५	धर्म	” गाल	” दाढ़ी	” दाढ़ी
८	”	” भुजा	” भुजा	” कन्धा	२६	”	” हृदय	” हृदय	” पेट
९	”	” अण्ड	” अण्ड	” अण्ड	२७	”	” घुटना	” घुटना	” घुटना
१०	सुख	” नाक	” कान	” कान	२८	कर्म	” नाक	” गाल	” गाल
११	”	” पञ्जर	” पञ्जर	” भुजा	२९	”	” पञ्जर	” पञ्जर	” हृदय
१२	”	” जंघा	” जंघा	” जंघा	३०	”	” जंघा	” जंघा	” जंघा
१३	सुत	” गाल	” नाक	” नाक	३१	लाभ	” कान	” नाक	” नाक
१४	”	” हृदय	” हृदय	” पञ्जर	३२	”	” भुजा	” भुजा	” पञ्जर
१५	”	” घुटना	” घुटना	” घुटना	३३	”	” अण्ड	” अण्ड	” अण्ड
१६	रिपु	” दाढ़ी	” गाल	” गाल	३४	व्यय	” नेत्र	” कान	” कान
१७	”	” पेट	” पेट	” हृदय	३५	”	” कन्धा	” कन्धा	” भुजा
१८	”	” पिंडुरी	” पिंडुरी	” पिंडुरी	३६	”	” लिंग	” लिंग	” लिंग

जन्मर्क्ष द्वारा रोग-ज्ञान

अ. —वातज्वर, अर्धांगपीड़ा, मतिभ्रम, निद्रानाश
भ. —तीव्रज्वर, आलस्य, छर्दि आदि अनेक रोग
कृ. —अतिदाह, उदरशूल, नेत्रपीड़ा, अनिद्रा
रो. —ज्वर, कुक्षिशूल, शिरपीड़ा, प्रलाप
मृ. —त्रिदोषरोग, चर्मरोग, अर्धांग-पीड़ा
आ. —ज्वर, सर्वांग-पीड़ा, त्रिदोष, अनिद्रा
पुन. —ज्वर, कटिपीड़ा, शिररोग
पु —ज्वर, शूल, महाकष्टकारी रोग
श्ले —सर्वांग-पीड़ा, पैर के रोग, मृत्यु-सम कष्ट
म —अर्धांग-पीड़ा, शिर-पीड़ा
पूफा.—ज्वर, शिररोग, सर्वांग-पीड़ा
उफा.—कुक्षिशूल, ज्वर, सर्वांग-पीड़ा
हस्त.—अपच, उदरशूल, स्वेद, सर्वांग पीड़ा
चि —अनेक रोग, महाकष्ट
स्वा. —अनेक व्यथाएँ
वि. —कुक्षिशूल, सर्वांग-पीड़ा
अनु. —तीव्रज्वर, शिरपीड़ा, सर्वांग-कष्ट
ज्ये. —व्याकुलता, पित्तरोग, कम्पन
मू —उदररोग, मुखरोग, त्रिदोष-ज्वर
पूषा. —शिरपीड़ा, कम्पन, महाकष्ट
उषा. —उदरशूल, कटिपीड़ा, प्रलाप
श्र. —अतीसार, सर्वांग-पीड़ा, त्रिदोष-ज्वर
ध. —मूत्रकृच्छ्र, रक्तातिसार, ज्वर, कम्पन
श. —वातज्वर, कष्ट, सन्निपात-भय
पूभा.—शिरपीड़ा, त्रिदोष, वमन, व्यग्रता
उभा —शूलज्वर, अतीसार, कामला, वातरोग
रे. —चित्तविक्षिप्त, ज्वर, ऊरुशूल, वात-पित्त रोग

नोट— पृष्ठ २२६ का, अश्विनी नक्षत्र है।

लग्न या चन्द्र द्वारा रोग

मेष —शिररोग, विषमज्वर, मृगी, स्वप्नदोष, अनिद्रा, नेत्ररोग।
वृष —मुखरोग, व्रण, शोथ, मेद-वृद्धि, कण्ठनली रोग, मस्तिक के अधोभाग के रोग।
मिथु.—वक्षस्थल, गठिया, निमोनिया, आमवात, क्षय, श्वास-कासादि, फुस्फुस रोग।
कर्क —हृदय, कैन्सर, जलोदर, विस्फोटक, उदररोग।
सिंह—भुजा, अग्निमान्द्य, अजीर्ण, निर्बलता, मधुमेह, हृदयरोग, यकृतविकार।
कन्या—बद्धकोष्ठता, गुप्त, आँतरोग, वीर्यदोष, प्लीहा।
तुला —वस्ति, गुर्दे के रोग, चर्म।
वृश्चि.—मूत्राशय, क्षत, स्नायुरोग, भगन्दर, रक्त-पित्त, मल-मूत्र रोग।
धनु —जंघा, अपस्मार, पक्षाघात, नितम्ब-पीड़ा, घुटने के रोग, धमनियों में विकार।
मकर—घुटना, कुष्टरोग, स्लीपद (हाथीपाँव), दन्त-रोग, अस्थि-सन्धि रोग।
कुम्भ—पिंडुरी, सहसा-क्षत, माँस क्षत, स्नायु रोग, श्वासनली रोग, रक्त-विकार।
मीन —पैर, क्षय, रसवाहिनी-नाडी-विकार। राजयक्ष्मा, आँत का क्षयरोग।

केवल ग्रह द्वारा रोग

सूर्य —आत्मा, पित्त, हृदय, मस्तिष्क, हृड्फूटन, ज्वर, अस्थि, मर्मस्थल पीड़ा, भाद्रपद के रोग।
चन्द्र —मन, वक्षस्थल, गर्भाशय, रक्तग्रन्थि, शीत, वातकफ, ज्वर, पाचन-विकार, सावन के रोग।
मंगल—पित्त, कान, नख, कपाल, माँसपेशी, ज्वर, वमन, स्नायु, शोथ, वैशाख-मार्गशीर्ष के रोग।
बुध —उदर, बुद्धि, जीभ, फेफड़ा, आँत, स्नायु, पित्त, त्रिदोष, मूर्छा, चर्म, आषाढ़-आश्विन के रोग।
गुरु —जंघा, गुर्दे, मांस, मेद, वायु, रक्त, धमनियाँ, निमोनिया, चर्बीवृद्धि, स्थूलता, पौष-चैत्र के रोग।
शुक्र —वीर्य, गर्भाशय, नेत्र, वातस्थल, उत्पादक-स्थल, कफ-वात, फेफड़ा, रसनली, ज्येष्ठ-कार्तिक के रोग।
शनि —पैर, घुटने, वायु-पित्त, सर्वांगपीड़ा, मज्जारोग, कफ सूखना, रूक्षता, माघ-फाल्गुन के रोग।
राहु —वात-पित्त, व्याकुलता, पैर रोग, वायु रोग, मज्जा रोग, श्लेष्मा रोग, रूक्षता के रोग।
केतु —वात-समान रोग, सर्वांग-कष्ट, पैर रोग, वायु रोग, मज्जा रोग, श्लेष्मा-विकार, रूक्षता के रोग।

द्रेष्काण द्वारा रोग

पहिले बताया जा चुका है कि, प्रत्येक राशि के तीन-तीन द्रेष्काण होते हैं। आगे वाले चक्र ६२ में देखिए। यदि किसी लग्न के प्रथम द्रेष्काण में जन्म हो तो, प्रथम द्रेष्काण के अंगों को लिखकर, जिस भाव के,

अंग-प्रमाण-चक्र ६४

भाव		अंग	राशि		दीर्घादि	ग्रह दीर्घादि
लग्न	=	शिर, मस्तिष्क	मेष	=	छोटी	सूर्य =सम
धन	=	मुख, गला	वृष	=	छोटी	चन्द्र =बड़े
भ्रातृ	=	वक्ष, फेफड़ा	मिथुन	=	सम	मंगल=छोटे
सुख	=	छाती, हृदय	कर्क	=	सम	बुध =सम
सुत	=	कुक्षि, पीठ	सिंह	=	बड़ी	गुरु =छोटे
रिपु	=	कमर, आँत	कन्या	=	बड़ी	शुक्र =सम
दारा	=	वस्ति (नाभि से लिंग तक)	तुला	=	बड़ी	शनि =बड़े
आयु	=	लिंगादि गुप्तांग	वृश्चिक	=	बड़ी	राहु =सम
धर्म	=	ऊरू (जंघा)	धनु	=	सम	केतु =छोटे
कर्म	=	जानु (घुटना)	मकर	=	सम	
लाभ	=	जंघा (पिंडुरी)	कुम्भ	=	छोटी	
व्यय	=	गुल्फ और चरण	मीन	=	छोटी	

[चक्र २४ द्वारा]

भाव	राशि	प्रमाण	अंग	ग्रह	प्रमाण
लग्न	८	बड़ा	शरीर या शिर	चं. शु. गुरु दृष्टि	बड़ा, सम, छोटा
धन	९	सम	मुख, गला	सू. बु. भौम दृष्टि	सम, सम, छोटा
भ्रातृ	१०	सम	वक्ष	गुरु-दृष्टि	छोटा
सुख	११	छोटा	छाती	शनि-दृष्टि	बड़ा
सुत	१२	छोटा	कुक्षि	मं. गु. दृष्टि	छोटा-छोटा
रिपु	१	छोटा	कमर	भौमदृष्टि, केतु-स्थिति	छोटा-छोटा
दारा	२	छोटा	वस्ति	शनिदृष्टि, चं. शु. स्थिति	बड़ा, बड़ा, सम
आयु	३	सम	गुप्तांग	सूर्य, बुध	सम-सम
धर्म	४	सम	जंघा	गुरु	छोटा
कर्म	५	बड़ा	घुटना	शनि	बड़ा
लाभ	६	बड़ा	पिंडुरी	मंगल	छोटा
व्यय	७	बड़ा	पैर	राहु	सम

विधि

पहिले जन्म-लग्न की राशि, लग्न पर युक्त-दृष्ट ग्रह के द्वारा, शरीर का अनुपात (प्रमाण) देखिए। उसी अनुपात से, उसके अंगादि छोटे-बड़े होंगे। यथा—

बड़ी राशि और बड़ा ग्रह, लग्न में हो तो, उसके अनुपात से, बड़ा शरीर होगा। छोटी राशि में, बड़ा ग्रह और बड़ी राशि में, छोटे ग्रह के अनुपात (बलानुसार) से, शरीर एवं अंग का प्रमाण होता है।

नोट— चक्र ९५ के पूर्व तक, अनेकानेक रोगों के कारण, कष्ट-योग लिखे गए हैं। किन्तु इतने ही प्रकार से, शरीर-कष्ट नहीं होते (जीवन में समय-समय पर, इन योगों के रोग होते हैं जिनके द्वारा कभी-कभी मृत्यु हो सकती है अथवा स्वल्प-काल रोग रहकर, फिर शरीर, स्वस्थ हो जाता है)। किन्तु चक्र ९५ से, लिखे गये योगों में, प्रायः मृत्यु या मरणान्त-कष्ट होता है। कभी-कभी ये, योग भी स्वल्प-मात्रा में हो पाते हैं; किन्तु, ऐसा अवसर कम ही मिलता है।

विशेष

यदि षष्ठभाव में कोई पापग्रह हो तो, उस अंग में घाव होना, विशेष सम्भव है। यदि इस पापग्रह पर, शुभ दृष्टि हो तो, तिल मसा आदि होते हैं। यदि शुभग्रह भी (पापग्रह के) साथ हो तो, उस अंग में केश अधिक होते हैं। हाँ, जब शुक्र अशुभ (पापयुक्त-दृष्ट, निर्बल-नीच-अस्त-त्रिकेश) होकर, जिस द्रेष्काण अंग में होगा, उसमें घाव होता है। शीत, वीर्य, सक्रामक कारण से घाव होना है। जब शुक्र पर, शुभग्रह की दृष्टि हो तब, तिल या मसा होते हैं। शुक्र, जब शुभग्रह के साथ होता है, तब शुभ-सूचक चिन्ह होता है। शुक्र, सूर्य के आगे पीछे पाँच अंश तक हो या अशुभनवांश में हो तो, अति अशुभ होता है। यदि मुख मध्य में तिल हो तो, लिंग में अवश्य ही तिल होता है। नेत्र के नीचे, यदि तिल हो तो, कोख (कुक्षि) में, अवश्य ही तिल होता है। जिसका जन्म, मूल नक्षत्रों (अश्विनी-आश्लेषा-मघा-ज्येष्ठा-मूल-रेवती) में हो तो, भुजा में तिल होता है। यदि पूर्वाषाढ में जन्म हो तो, लहसुन होता है।

उदाहरण अंग-द्रेष्काण ६३

[चक्र ४४ (पृष्ठ १४०) और ३८ (पृष्ठ १८४) द्वारा]

क्रम	अंग	ग्रह	फल	क्रम	अंग	ग्रह	फल
१	मस्तक		चन्द्र-दृष्टि	१९	दा मुख	चन्द्र	जल जन्तु, पशु तरलपदार्थ
२	कण्ठ			२०	" नाभि	शनि दृष्टि	
३	बस्ति		गुरु-शुक्र-दृष्टि	२१	" गुल्फ	शुक्र	शीत वीर्यदोष, सक्रामक
४	दा नेत्र		सूर्य-दृष्टि	२२	बा दाढ़ी	सूर्य	काष्ठ या पशु आघात
५	" कन्धा		बुध-दृष्टि	२३	" पेट	बुध	पतन से, ढेला से चोट
६	" लिंग		भौम-दृष्टि	२४	" पिंडुरी		
७	" कान			२५	" गाल		
८	" भुजा			२६	" हृदय		
९	" अण्ड		गुरु-दृष्टि	२७	" घुटना	गुरु	तिलादि या कोई चिन्ह नहीं
१०	" नाक			२८	" नाक		
११	" पञ्जर		शनि-दृष्टि	२९	" पञ्जर	शनि	पत्थर चोट, शीतवात रोग
१२	" जंघा			३०	" जंघा		
१३	" गाल			३१	" कान		
१४	" हृदय			३२	" भुजा		
१५	" घुटना		गुरु-भौम दृष्टि	३३	" अंड	मंगल	व्रण अग्नि, विष-शस्त्र से
१६	" दाढ़ी			३४	" नेत्र		
१७	" पेट			३५	" कन्धा	शनि-दृष्टि	
१८	" पिंडुरी	भौम केतु	पतन, शस्त्र-घाव, रोग	३६	" लिंग	राहु	पतन, शस्त्र-घाव, रोग

आपका जन्म लग्न ७।८ होने से, प्रथम द्रेष्काण में जन्म हुआ। अतएव, प्रथम द्रेष्काण के अंग पर ग्रह स्थिति, इस प्रकार जमाने से 'दृष्टि' देखने में सरलता रहेगी। जिस प्रकार ग्रह स्थिति का फल लिखा है। इसी प्रकार आप, उन ग्रहों की दृष्टि का फल समझिए। हाँ, गुरुयुति या दृष्टि में ध्यान रखिए। तीसरे और इक्कीसवें द्रेष्काण में, शुक्र-प्रभाव से व्रण होना, सम्भव है। किन्तु तीसरे द्रेष्काण पर, गुरु की दृष्टि भी है, अतः बस्ति भाग में रोग तो न होगा। परन्तु, गुल्फ (पैर के गांठ या गुल्फ) में रोग भय, व्रण आदि होना, सम्भव है। इसी प्रकार, मंगल स्थान (३३ वें) में व्रण होगा। किन्तु १५ वें में गुरु की दृष्टि, शुभकारक है।

अंग-प्रमाण-चक्र ९४

भाव		अंग	राशि		दीर्घादि	ग्रह दीर्घादि
लग्न	=	शिर, मस्तिष्क	मेष	=	छोटी	सूर्य =सम
धन	=	मुख, गला	वृष	=	छोटी	चन्द्र =वड़े
भ्रातृ	=	वक्ष, फेफड़ा	मिथुन	=	सम	मंगल=छोटे
सुख	=	छाती, हृदय	कर्क	=	सम	बुध =सम
सुत	=	कुक्षि, पीठ	सिंह	=	वड़ी	गुरु =छोटे
रिपु	=	कमर, आँत	कन्या	=	वड़ी	शुक्र =सम
दारा	=	वस्ति (नाभि से लिंग तक)	तुला	=	वड़ी	शनि =वड़े
आयु	=	लिंगादि गुप्तांग	वृश्चिक	=	वड़ी	राहु =सम
धर्म	=	ऊरू (जंघा)	धनु	=	सम	केतु =छोटे
कर्म	=	जानु (घुटना)	मकर	=	सम	
लाभ	=	जंघा (पिंडुरी)	कुम्भ	=	छोटी	
व्यय	=	गुल्फ और चरण	मीन	=	छोटी	

[चक्र २४ द्वारा]

भाव	राशि	प्रमाण	अंग	ग्रह	प्रमाण
लग्न	८	वड़ा	शरीर या शिर	चं. शु. गुरु दृष्टि	वड़ा, सम, छोटा
धन	९	सम	मुख, गला	सू. बु. भौम दृष्टि	सम, सम, छोटा
भ्रातृ	१०	सम	वक्ष	गुरु-दृष्टि	छोटा
सुख	११	छोटा	छाती	शनि-दृष्टि	वड़ा
सुत	१२	छोटा	कुक्षि	मं. गु. दृष्टि	छोटा-छोटा
रिपु	१	छोटा	कमर	भौमदृष्टि, केतु-स्थिति	छोटा-छोटा
दारा	२	छोटा	वस्ति	शनिदृष्टि, चं. शु. स्थिति	वड़ा, वड़ा, सम
आयु	३	सम	गुप्तांग	सूर्य, बुध	सम-सम
धर्म	४	सम	जंघा	गुरु	छोटा
कर्म	५	वड़ा	घुटना	शनि	वड़ा
लाभ	६	वड़ा	पिंडुरी	मंगल	छोटा
व्यय	७	वड़ा	पैर	राहु	सम

विधि

पहिले जन्म-लग्न की राशि, लग्न पर युक्त-दृष्ट ग्रह के द्वारा, शरीर का अनुपात (प्रमाण) देखिए। उसी अनुपात से, उसके अंगादि छोटे-वड़े होंगे। यथा—

वड़ी राशि और वड़ा ग्रह, लग्न में हो तो, उसके अनुपात से, वड़ा शरीर होगा। छोटी राशि में, वड़ा ग्रह और वड़ी राशि में, छोटे ग्रह के अनुपात (वलानुसार) से, शरीर एवं अंग का प्रमाण होता है।

नोट— चक्र ९५ के पूर्व तक, अनेकानेक रोगों के कारण, कष्ट-योग लिखे गए हैं। किन्तु इतने ही प्रकार से, शरीर-कष्ट नहीं होते (जीवन में समय-समय पर, इन योगों के रोग होते हैं जिनके द्वारा कभी-कभी मृत्यु हो सकती है अथवा स्वल्प-काल रोग रहकर, फिर शरीर, स्वस्थ हो जाता है)। किन्तु चक्र ९५ से, लिखे गये योगों में, प्रायः मृत्यु या मरणान्त-कष्ट होता है। कभी-कभी ये, योग भी स्वल्प-मात्रा में हो पाते हैं; किन्तु, ऐसा अवसर कम ही मिलता है।

विशेष-रोग-योग

(१) षष्ठेश, चन्द्र के साथ, लग्न या अष्टम भाव में हो तो, मुख पर व्रण होता है।

(२) षष्ठेश, मगल के साथ, लग्न या अष्टम भाव मे हो तो, कण्ठ पर व्रण होता है।

(३) षष्ठेश, बुध के साथ, लग्न या अष्टम भाव मे हो तो हृदय पर व्रण होता है।

(४) षष्ठेश, गुरु के साथ, लग्न या अष्टम भाव में हो तो, नाभि से नीचे व्रण होता है।

(५) षष्ठेश, शुक्र के साथ, लग्न या अष्टम भाव में हो तो, नेत्र पर व्रण होता है।

(६) षष्ठेश, शनि के साथ, लग्न या अष्टम भाव मे हो तो, पैर पर व्रण होता है।

(७) षष्ठेश, राहु केतु के साथ, लग्न या अष्टम भाव में हो तो, मुख पर व्रण होता है।

(८) मगल ३।६।११ वें भावस्थ हो और व्यय में शुक्र हो तो, वाम कुक्षि (पार्श्व-भाग) म व्रण होता है।

(९) बुध ३।६।११ वें भावस्थ हो और व्यय मे चन्द्र गुरु हो तो, गुदारोग, भगन्दर, बालतोड (व्रण) होता है।

(१०) पापयुक्त या दृष्ट षष्ठेश, दशम भाव मे हो तो, दशम राशि द्वारा कालाग-खण्ड (पृष्ठ ४३७) मे व्रण होता है।

(११) लग्नेश पर, शनि राहु-केतु की युति दृष्टि हो तो, सक्रामक रोग या चोर-अन्त्यज द्वारा कष्ट होता है।

(१२) पापयुक्त शनि, व्यय या त्रिकोण मे हो तो, नित्यरोगी या अनेक रोगवान् होता है।

(१३) अष्टमेश त्रिकस्थ हो तो, नित्यरोगी होता है।

(१४) लाभेश, षष्ठस्थ हो तो, अनेक रोग होते हैं।

(१५) षष्ठस्थ शनि मंगल, सूर्य से दृष्ट हों, लग्नेश निर्बल हो तो, दीर्घकाल तक रहने वाला रोग होता है।

(१६) षष्ठेश, तीसरे भाव मे हो तो, नाभि रोगी (नाभि का सरकना) होता है।

(१७) षष्ठभाव मे शनि हो तो, पैर मे रोग होता है।

(१८) रन्ध्रेश, राहु-केतु से युक्त हो तो, चातुर्थिक (चौथिया) ज्वर रोग होता है।

(१९) लग्नस्थ चन्द्र, पापयुक्त या दृष्ट हो तो, शीत-रोग होता है।

(२०) लग्नेश-सप्तमेश की परस्पर शत्रुता हो तो, स्त्री द्वारा शत्रुता से भय, हानि, अनादर होता है।

ग्रह-चक्र ६५

सूर्य	शिर	अग्नि	अस्थि	प्राणाधार,मार्मिक शक्ति	पित्त
चन्द्र	मुख	जल	रक्त	पालन, पुष्टता	वातश्लेष्मा
भौम	कान	अग्नि	स्नायु	शोथ, दाह	पित्त
बुध	पेट	भूमि	चर्म	स्नायु-शक्ति	त्रिदोष
गुरु	गुर्दा	वायु आकाश	माँस,चर्बी	रक्ताधिक्य, स्थूलता	कफ
शुक्र	नेत्र	जल	वीर्य	अन्तर्गत रस	वात कफ
शनि	पैर	वायु	मज्जा	प्रगाढता	वायु
राहु	सर्वांग	वायु	रक्त	मस्तिष्क, चर्म, पैर	वात रक्त
केतु	रक्त	वायु	रक्त	चर्म	वात रक्त

नोट—

प्रायः किसी भी पत्रिका मे, अनेक रोगों के संयोग, पूर्वोक्त योगों द्वारा मिलेंगे। तब प्रश्न है कि, क्या सभी लोगो के, सभी रोग होंगे ? प्रायः ऐसा नहीं हो पाता। क्योंकि, जिन योगो के साथ, सूर्य-चन्द्र-लग्न-लग्नेश-गुरु-शुक्र की बलवत्ता काम करेगी, उन रोगों का अभाव या न्यूनता रहेगी। तात्पर्य यह कि, लग्न-लग्नेश के साथ, किसी ग्रह का बलीपन, रोगयोगों का बाधक (आरोग्यकारक) भी होता है। अतएव, लग्न और लग्नेश की पुष्टता पर, अवश्य ध्यान दीजियेगा। एक बार पुन , पिछले योगों का सिंहावलोकन करते हुए, निर्णय-विधि पर, अनुमान ठहराइये। अतः पहिले आप, ग्रह-पर ध्यान दीजिए। निर्णय के लिए 'पुनरुक्ति' दोष न मानियेगा।

सारांश

सूर्य— बली हो तो अस्थि पुष्ट, निर्बल हो तो मस्तिष्क में दुर्बलता। पीड़ित हो तो, राजकोप, शिरपीड़ा, पित्तज्वर, मृगी, क्षयरोग, उदर-हृदयरोग, नेत्र-रोग, चर्मरोग, अस्थिरोग, शूलरोग होते हैं।

चन्द्र—बली हो तो, ठीक रक्त-संचार होने से आरोग्यता। पाप होने से, मूत्रकृच्छ्र, नासिका, कफ, पीनस, पाण्डु, स्त्री-संग, अतीसार, मन्दाग्नि, रक्तविकार, मुख, जल, वातश्लेष्मा आदि के विकार से रोग होते हैं।

मंगल—बली हो तो अस्थि मजबूत। दोषी होने से अण्डकोशवृद्धि, कफ, फोड़े-फुन्सी आदि रक्त-विकार, पित्त-वायु, कुष्ठ, शस्त्रादि भय, स्नायु में उत्तेजना, अग्नि, शोथ, दाह आदि रोग होते हैं।

बुध— बली हो तो सुन्दर, चर्मरोग-रहित। अशुभ होने से उदर, गुप्तांग, वायु, त्रिदोषज्वर (न्युमोनिया, टाइफाइड) मन्दाग्नि, शूल, संग्रहणी, कुष्ठ, चर्म, कामला, पाण्डु, कण्ठ-नासिका, भूमिविकार, स्नायुरोग, मूर्च्छा (हिस्टीरिया) आदि रोग होते हैं।

गुरु— बली हो तो मस्तिष्क शक्तिवान्। दोषी हो तो, प्लीहा, दुर्बुद्धि, ज्वर, कफ, मस्तिष्क-विकार, मूर्च्छा, कर्ण, मानसिक कष्ट, गुर्दा, वायु, पतनभय, माँस-चर्बी, रक्ताधिक्य, स्थूलता से रोग होते हैं।

शुक्र— बली हो तो वीर्यपुष्टि से आरोग्यता, काम-शक्ति में उत्तेजना। दोषी हो तो, स्त्री-संग से जननेन्द्रिय रोग, मादक-द्रव्य से, पाण्डु, मूत्र, कफ-वायु, जल (शीत), अन्तर्गतरस के रोग होते हैं।

शनि—बली हो तो, स्नायुबन्ध दृढ़, मजबूत शरीर। दोषी होने से, अपराधीकार्य, वायु-कफ, गठिया, उदर, पक्षाघात, अंग-भंग, दरिद्रता, पैर, मज्जाविकार, कफ सूखने वाले (पागल, आत्म-हत्या) रोग होते हैं।

राहु —प्रायः अनुकूल होता है। विपरीत होने से मृगी, चेचक, कुष्ठ, कृमि, पैर में रोग, सर्प-भय, हत्या या आत्मघात रोग होते हैं अथवा शनिवत् रोग हो सकते हैं।

केतु —रक्त-वायु विकार से कण्डु, चेचक तथा राहु—शनि के समान प्रभाव होता है।

नोट—शुभग्रह, केन्द्रेश होने से अनिष्टकारी। पापग्रह, केन्द्रेश होने से शुभकारी। त्रिकोणेश सर्वदा शुभ। त्रिकेश सर्वदा अशुभ। द्वितीयेश—तृतीयेश—लाभेश शुभाशुभ। उच्चादिग्रह शुभ। नीचादिग्रह अशुभ।

चक्र ९६

राशि	भाव	वहिरंग	अन्तरंग	तत्त्व	धातु	हड्डी एवं मांस
मेष	लग्न	शिर	मस्तिष्क, भेजा	अग्नि	पित्त	जीवनी—शक्ति
वृष	धन	मुख	नेत्र, अन्त्र, कण्ठनली	भूमि	वात	हड्डी एवं मांस
मिथुन	भ्रातृ	गला-भुजा	रक्त-श्वास नलियाँ	वायु	श्लेष्मा	श्वास—क्रिया
कर्क	सुख	वक्षस्थल	फेफड़ा	जल	पित्त	रक्त—संचार
सिंह	सुत	हृदय, पीठ, मेरुदण्ड	आँत, आमाशय, हृदय	अग्नि	वात	जीवनी—शक्ति
कन्या	रिपु	पेट का बाहिरी भाग	अतड़ियाँ	भूमि	श्लेष्मा	हड्डी एवं मांस
तुला	दारा	कमर	गुर्दा	वायु	पित्त	श्वास—क्रिया
वृश्चिक	रन्ध्र	जननेन्द्रिय, गुर्दा	गुप्तांग, गुदा का भीतरी भाग	जल	वात	रक्त—संचार
धनु	धर्म	जंघा, नितम्ब (ऊरू)	जंघा, नितम्ब की स्नायुएँ	अग्नि	श्लेष्मा	जीवनी—शक्ति
मकर	कर्म	घुटना के ऊपर (जानु)	घुटने के जोड़ की हड्डी	भूमि	पित्त	हड्डी एवं मांस
कुम्भ	लाभ	कटोरी (घुटना) (जंघा)	जोड़-बन्ध, हड्डी, नसें	वायु	वात	श्वास—क्रिया
मीन	व्यय	गुल्फ (गुट्टा) चरण, अंगुली	जोड़, नसें	जल	श्लेष्मा	रक्त—संचार

विशेष-रोग-योग

(१) षष्ठेश, चन्द्र के साथ, लग्न या अष्टम भाव मे हो तो, मुख पर व्रण होता है।

(२) षष्ठेश, मंगल के साथ, लग्न या अष्टम भाव मे हो तो, कण्ठ पर व्रण होता है।

(३) षष्ठेश, बुध के साथ, लग्न या अष्टम भाव मे हो तो, हृदय पर व्रण होता है।

(४) षष्ठेश, गुरु के साथ, लग्न या अष्टम भाव में हो तो, नाभि से नीचे व्रण होता है।

(५) षष्ठेश, शुक्र के साथ, लग्न या अष्टम भाव मे हो तो, नेत्र पर व्रण होता है।

(६) षष्ठेश, शनि के साथ, लग्न या अष्टम भाव मे हो तो, पैर पर व्रण होता है।

(७) षष्ठेश, राहु-केतु के साथ, लग्न या अष्टम भाव में हो तो, मुख पर व्रण होता है।

(८) मगल ३।६।११ वें भावस्थ हो और व्यय में शुक्र हो तो, वाम-कुक्षि (पार्श्व-भाग) मे व्रण होता है।

(९) बुध ३।६।११ वें भावस्थ हो और व्यय में चन्द्र-गुरु हो तो, गुदारोग, भगन्दर, बाल-तोड (व्रण) होता है।

(१०) पापयुक्त या दृष्ट षष्ठेश, दशम भाव में हो तो, दशम राशि द्वारा कालांग-खण्ड (पृष्ठ ४३७) मे व्रण होता है।

(११) लग्नेश पर, शनि-राहु-केतु की युति-दृष्टि हो तो, संक्रामक रोग या चोर-अन्त्यज द्वारा कष्ट होता है।

(१२) पापयुक्त शनि, व्यय या त्रिकोण में हो तो, नित्यरोगी या अनेक रोगवान् होता है।

(१३) अष्टमेश त्रिकस्थ हो तो, नित्यरोगी होता है।

(१४) लाभेश, षष्ठस्थ हो तो, अनेक रोग होते हैं।

(१५) षष्ठस्थ शनि-मंगल, सूर्य से दृष्ट हों, लग्नेश निर्बल हो तो, दीर्घकाल तक रहने वाला रोग होता है।

(१६) षष्ठेश, तीसरे भाव मे हो तो, नाभि-रोगी (नाभि का सरकना) होता है।

(१७) षष्ठभाव में शनि हो तो, पैर मे रोग होता है।

(१८) रन्ध्रेश, राहु केतु से युक्त हो तो, चातुर्थिक (चौथिया) ज्वर रोग होता है।

(१९) लग्नस्थ चन्द्र, पापयुक्त या दृष्ट हो तो, शीत-रोग होता है।

(२०) लग्नेश-सप्तमेश की परस्पर शत्रुता हो तो, स्त्री द्वारा शत्रुता से भय, हानि, अनादर होता है।

ग्रह-चक्र ६५

सूर्य	शिर	अग्नि	अस्थि	प्राणाधार, मार्मिक शक्ति	पित्त
चन्द्र	मुख	जल	रक्त	पालन, पुष्टता	वातश्लेष्मा
भौम	कान	अग्नि	स्नायु	शोथ, दाह	पित्त
बुध	पेट	भूमि	चर्म	स्नायु-शक्ति	त्रिदोष
गुरु	गुर्दा	वायु-आकाश	माँस, चर्बी	रक्ताधिक्य, स्थूलता	कफ
शुक्र	नेत्र	जल	वीर्य	अन्तर्गत रस	वात-कफ
शनि	पैर	वायु	मज्जा	प्रगाढ़ता	वायु
राहु	सर्वांग	वायु	रक्त	मस्तिष्क, चर्म, पैर	वात रक्त
केतु	रक्त	वायु	रक्त	चर्म	वात-रक्त

नोट—

प्रायः किसी भी पत्रिका मे, अनेक रोगों के संयोग, पूर्वोक्त योगों द्वारा मिलेंगे। तब प्रश्न है कि, क्या सभी लोगों के, सभी रोग होंगे ? प्रायः ऐसा नहीं हो पाता। क्योंकि, जिन योगों के साथ, सूर्य-चन्द्र-लग्न-लग्नेश-गुरु-शुक्र की बलवत्ता काम करेगी, उन रोगों का अभाव या न्यूनता रहेगी। तात्पर्य यह कि, लग्न-लग्नेश के साथ, किसी ग्रह का बलीपन, रोगयोगों का बाधक (आरोग्यकारक) भी होता है। अतएव, लग्न और लग्नेश की पुष्टता पर, अवश्य ध्यान दीजियेगा। एक बार पुनः, पिछले योगों का सिंहावलोकन करते हुए, निर्णय-विधि पर, अनुमान ठहराइये। अतः पहिले आप, ग्रह-पर ध्यान दीजिए। निर्णय के लिए 'पुनरुक्ति' दोष न मानियेगा।

सारांश

सूर्य— बली हो तो अस्थि पुष्ट, । निर्बल हो तो मस्तिष्क में दुर्बलता । पीड़ित हो तो, राजकोप, शिरपीड़ा, पित्तज्वर, मृगी, क्षयरोग, उदर-हृदयरोग, नेत्र-रोग, चर्मरोग, अस्थिरोग, शूलरोग होते हैं।

चन्द्र—बली हो तो, ठीक रक्त-संचार होने से आरोग्यता । पाप होने से, मूत्रकृच्छ, नासिका, कफ, पीनस, पाण्डु, स्त्री-संग, अतीसार, मन्दाग्नि, रक्तविकार, मुख, जल, बातश्लेष्मा आदि के विकार से रोग होते हैं।

मंगल—बली हो तो अस्थि मजबूत । दोषी होने से अण्डकोशवृद्धि, कफ, फोड़े-फुन्सी आदि रक्त-विकार, पित्त-वायु, कुष्ट, शस्त्रादि भय, स्नायु में उत्तेजना, अग्नि, शोथ, दाह आदि रोग होते हैं।

बुध— बली हो तो सुन्दर, चर्मरोग-रहित । अशुभ होने से उदर, गुप्तांग, वायु, त्रिदोषज्वर (न्युमोनिया, टाइफाइड) मन्दाग्नि, शूल, संग्रहणी, कुष्ठ, चर्म, कामला, पाण्डु, कण्ठ-नासिका, भूमिविकार, स्नायुरोग, मूर्च्छा (हिस्टीरिया) आदि रोग होते हैं।

गुरु— बली हो तो मस्तिष्क शक्तिवान । दोषी हो तो, प्लीहा, दुर्बुद्धि, ज्वर, कफ, मस्तिष्क-विकार, मूर्च्छा, कर्ण, मानसिक कष्ट, गुर्दा, वायु, पतनभय, माँस-चर्बी, रक्ताधिक्य, स्थूलता से रोग होते हैं।

शुक्र— बली हो तो वीर्यपुष्टि से आरोग्यता, काम-शक्ति में उत्तेजना । दोषी हो तो, स्त्री-संग से जननेन्द्रिय रोग, मादक-द्रव्य से, पाण्डु, मूत्र, कफ-वायु, जल (शीत), अन्तर्गतरस के रोग होते हैं।

शनि—बली हो तो, स्नायुबन्ध दृढ, मजबूत शरीर । दोषी होने से, अपराधीकार्य, वायु-कफ, गठिया, उदर, पक्षाघात, अंग-भंग, दरिद्रता, पैर, मज्जाविकार, कफ सूखने वाले (पागल, आत्म-हत्या) रोग होते हैं।

राहु —प्रायः अनुकूल होता है। विपरीत होने से मृगी, चेचक, कुष्ट, कृमि, पैर में रोग, सर्प-भय, हत्या या आत्मघात रोग होते हैं अथवा शनिवत् रोग हो सकते हैं ।

केतु —रक्त-वायु विकार से कण्डु, चेचक तथा राहु-शनि के समान प्रभाव होता है।

नोट—शुभग्रह, केन्द्रेश होने से अनिष्टकारी । पापग्रह, केन्द्रेश होने से शुभकारी । त्रिकोणेश सर्वदा शुभ । त्रिकेश सर्वदा अशुभ । द्वितीयेश-तृतीयेश-लाभेश शुभाशुभ । उच्चादिग्रह शुभ । नीचादिग्रह अशुभ ।

चक्र ९६

राशि	भाव	वहिरंग	अन्तरंग	तत्त्व	धातु	हड्डी एवं मांस
मेष	लग्न	शिर	मस्तिष्क, भेजा	अग्नि	पित्त	जीवनी-शक्ति
वृष	धन	मुख	नेत्र, अन्त्र, कण्ठनली	भूमि	वात	हड्डी एवं मांस
मिथुन	भ्रातृ	गला-भुजा	रक्त-श्वास नलियाँ	वायु	श्लेष्मा	श्वास-क्रिया
कर्क	सुख	वक्षस्थल	फेफड़ा	जल	पित्त	रक्त-संचार
सिंह	सुत	हृदय, पीठ, मेरुदण्ड	आँत, आमाशय, हृदय	अग्नि	वात	जीवनी-शक्ति
कन्या	रिपु	पेट का बाहिरी भाग	अतड़ियाँ	भूमि	श्लेषा	हड्डी एवं मांस
तुला	दारा	कमर	गुर्दा	वायु	पित्त	श्वास-क्रिया
वृश्चिक	रन्ध्र	जननेन्द्रिय, गुर्दा	गुप्तांग, गुदा का भीतरी भाग	जल	वात	रक्त-संचार
धनु	धर्म	जंघा, नितम्ब (ऊरू)	जंघा, नितम्ब की स्नायुएँ	अग्नि	श्लेष्मा	जीवनी-शक्ति
मकर	कर्म	घुटना के ऊपर (जानु)	घुटने के जोड़ की हड्डी	भूमि	पित्त	हड्डी एवं मांस
कुम्भ	लाभ	कटोरी (घुटना) (जंघा)	जोड़-बन्ध, हड्डी, नसें	वायु	वात	श्वास-क्रिया
मीन	व्यय	गुल्फ (गुट्टा) चरण, अंगुली	जोड़, नसें	जल	श्लेष्मा	रक्त-संचार

निर्णय-विधि

(१) षष्ठ-स्थान से रोगादि, अष्टम स्थान से मृत्यु, द्वादश स्थान से विनाश का विचार किया जाता हैं। षष्ठ-स्थान, पेट, यकृत (लीवर) का है। सभी रोगों का कारण—धातुओं के मल हैं और मल-सचय का स्थान 'उदर' है। अतएव सर्वप्रथम, पाचन-क्रिया का सुव्यवस्थित होना, चिकित्सा-शास्त्र का, मुख्य लक्ष्य होता है। तब यह सिद्ध हुआ कि, षष्ठ-भाव, षष्ठेश, बुध और कन्याराशि के दोष के कारण से, पेट का बिगड़ना, रोगभय, राजभय, शत्रुभय होना, सम्भव रहता है। जो कि, अनुचित आहार, विहार(आचरण) से दोष, आमाशय मे टिके रहते हैं।

(२) [देखिए चक्र २४] सूर्य-बुध (मिथुन)=वायुतत्त्व। चन्द्र-शुक्र (वृष)=भूमितत्त्व। मंगल (कन्या)= भूमितत्त्व। गुरु (कर्क)=जलतत्त्व। शनि (सिंह)=अग्नितत्त्व। राहु (तुला) =वायुतत्त्व। केतु (मेष)=अग्नि-तत्त्व। लग्न (वृश्चिक) =जलतत्त्व। तात्पर्य यह है कि, वायुतत्त्व के ३ ग्रह, भूमितत्त्व के ३ ग्रह, जलतत्त्व के २ ग्रह, अग्नितत्त्व के २ ग्रह है। षष्ठ मे, अग्नितत्त्व, अष्टम मे वायुतत्त्व है। अत वायुतत्त्व प्रमुख तथा जलतत्त्व द्वितीय श्रेणी का मानिए। इन्हीं दो तत्त्वों के विकार से, रोगों की उत्पत्ति हो सकती है। पृष्ठ १६-२० से तत्त्व जानिए।

(३) सूर्य, लग्न, षष्ठस्थ (राशि, ग्रह, दृष्टा-ग्रह) सम्बन्धी, पाचों ग्रहों के तत्त्व में से, अधिक तत्त्व वाले ग्रह के आधार पर रोग होता है। यथा, [देखिए चक्र २४]। सूर्य=वायु। लग्न=जल। मेष=अग्नि। केतु= वायु। मंगल=अग्नि। तात्पर्य यह है कि, वायुतत्त्व अधिक होने से वायु रोग। यदि दोनों नियमों से एक ही तत्त्व निकले तो, निश्चय ही जानिए। यदि दोनों में भिन्नता आवे तो, न ३ प्रधान रहेगा। अत सर्वदा, इससे अवश्य देखिए। यदि पीड़ाकारक ग्रह, भूमि या जल राशि में हो तो श्लेष्मा, (कफ) विकार। अग्निराशि मे पित्त विकार। वायु राशि मे वायु विकार रोग होता है। हाँ, अग्नि या वायुतत्त्व के कारण, कभी-कभी रक्ताधिक्य, रक्तप्रकोप, रक्त चाप, रक्त-पित्त आदि रोग हो जाते हैं।

त्रिकेश-विचार

१. षष्ठ-अष्टम-द्वादश (त्रिक) के स्वामी, जिस भाव मे होते हैं, वहाँ वे, उस अग में कष्ट करते हैं।

२. जिस भाव का स्वामी, त्रिक में पड़ता है; उस भाव के अग मे पीड़ा होती है। स्पष्ट यों है कि, सप्तमेश, षष्ठ में हो तो, सप्तमभाव तथा राशि के अगों मे पीड़ा होगी।

३. त्रिकेश जिस भाव में हो तो, यदि उस भाव का स्वामी, त्रिक मे स्थित हो तो, निर्दिष्ट अंग में अवश्य ही पीड़ा होगी। जैसे—अष्टमेश, षष्ठभाव मे हो तो, आँत, आमाशय आदि की पीड़ा।

४ यदि त्रिकेश, त्रिकस्थ हो अथवा स्वगृही होकर त्रिकस्थ हो तो, पीड़ा न होकर, प्राय: पूर्ण स्वस्थ होता है। यहाँ कभी अस्वस्थता का कारण है कि, जो ग्रह, दो-दो राशिपति होते हैं, वह स्वगृही होने पर, दूसरी राशि का स्वामी बनकर, त्रिकस्थ होता है। अतएव हमने, प्राय. शब्द का उपयोग किया। तात्पर्य है कि, कम ही अस्वस्थता होती है।

५. त्रिकेश, त्रिकस्थ न होकर, अन्य भावों में हो, स्वगृही भी न हो, किन्तु त्रिकेशस्थ-राशीश, यदि स्वगृही हो तो, स्थायी पीड़ा नहीं होती।

६. त्रिकेश, त्रिकस्थ न होकर, अन्य भाव में हो तो, यदि त्रिकेशस्थ-राशीश, त्रिकस्थ न होकर, त्रिकेशस्थ भाव पर, दृष्टि डालता हो तो, स्थायी पीड़ा नहीं होती। यथा कुम्भ लग्न में जन्म हो। व्ययेश शनि, तृतीय में हो और तृतीयेश मंगल, नवम में बैठकर, तृतीय भाव पर दृष्टि डाले तो, तृतीय भाव की पीड़ा 'स्थायी' न होगी।

७. एक साधारण नियम पर आप, अवश्य ध्यान रखिए, कि, जिस भाव का स्वामी अस्त, नीच, नीचांश, निर्बल (सप्तवर्ग द्वारा), पीड़ित (पापयुक्त-दृष्ट) हो तो, उस भाव-राशि वाले अंग में पीड़ा होती है।

८. यथा, मिथुन राशि का बुध अष्टम में हो तो, स्वगृही होने से, लाभेश (कन्या) भी बुध है। और लाभेश बुध (रन्ध्रस्थ होने से) का फल, लाभ

भाव को अशुभ होना चाहिए; किन्तु ऐसा न होकर, लाभभाव-राशि के अंग में, अल्प या स्पर्शमात्र दोष हो सकता है। सर्वदा नहीं। परन्तु जब, षष्ठेश-लग्नेश, मंगल (वृश्चिक लग्न में जन्म), लाभ भाव में होगा तब, योग नं० ३ के अनुसार, उस लाभ-भावांग में, पीड़ा अवश्य होगी [देखिए चक्र २४]।

९. त्रिकेश दोष, मंगल-शुक्र-शनि को, कभी-कभी नहीं होता। यथा—मेष-वृश्चिक लग्न में, जन्म होने से मंगल को, वृष-तुला लग्न में जन्म होने से शुक्र को, कुम्भ लग्न में जन्म होने से शनि को, त्रिकेश दोष नहीं होता।

१०. "स एव शुभसन्धाता लग्नाधीशोऽपि चेत्स्वयम्।" द्वारा, योग ८ में दिखाये गए, मंगल का दोष नहीं रहता। सारांश यह है कि, लाभभावांग की पीड़ा, सर्वदा (स्थायी) नहीं रह सकती। फिर भी, लग्न-लग्नेश का सम्बन्ध, त्रिक या त्रिकेश से, किसी प्रकार न हो तो, प्रायः रोग की सम्भावना नहीं रहती।

११. जब त्रिकेशस्थ राशीश, त्रिकेश के साथ बैठकर, जितने ग्रह, जितने भाव, उसकी दृष्टि या युति में आयेंगे, उन सबों पर, त्रिकेश का दोष फेंकता रहेगा। [पृष्ठ २२६ का चन्द्र]

लग्नेश-षष्ठेश-युति

१. लग्नेश-षष्ठेश-सूर्य साथ हों तो, ज्वर, पित्त, रक्त, क्षय, हड्डी रोग, जीवन-शक्ति की कमी।

२. लग्नेश-षष्ठेश-चन्द्र साथ हों तो, जलभय, हैजा, जलोदर, शीतरोग, चेचक, खाँसी, श्वासरोग।

३. लग्नेश-षष्ठेश-भौम साथ हों तो, स्फोटक, व्रण, घाव, फोड़ा, चर्मरोग, युद्ध में पीड़ा।

४. लग्नेश-षष्ठेश-बुध साथ हों तो, पित्तरोग, अरुचि, वमन, अफरा, वायु भरना, उदररोग,

५. लग्नेश-षष्ठेश-गुरु साथ हों तो, रोगरहित, या कभी-कभी साधारण अस्वस्थता।

६. लग्नेश-षष्ठेश-शुक्र साथ हों तो, स्त्री को रोग या वीर्य या मूत्र रोग।

७. लग्नेश-षष्ठेश-शनि साथ हों तो, वातरोग, उदररोग, अनपच, पेट गड़गड़ाना, स्तम्भ-वायु।

८. लग्नेश-षष्ठेश-राहु या केतु साथ हों तो, शिर-व्यथा, वायुरोग, चौराग्निभय, (केन्द्र में, कारागार)।

९. लग्नस्थषष्ठेश से, मंगल का सम्बन्ध हो तो, आकस्मिकघटना, चीरफाड़, आप्रेशन, हत्या, स्फोटक।

१०. लग्नस्थषष्ठेशसे, बुधका सम्बन्ध हो तो, गुप्तरोग।

११. लग्नस्थषष्ठेश से, गुरुका सम्बन्ध हो तो, स्वस्थता या रोगादि से शीघ्र मुक्ति।

१२. लग्नस्थषष्ठेशसे, शुक्रका सम्बन्ध हो तो, मिथ्या आहार-विहार द्वारा रोग।

१३. लग्नस्थषष्ठेशसे, शनि का सम्बन्ध हो तो, जननेन्द्रिय-आप्रेशन, कठिन व्याधि, कभी-कभी जननेन्द्रिय का कटना होता है।

१४. षष्ठभाव से, शनि का सम्बन्ध हो तो, उदर-पीड़ा या अनपच होती है।

१५. षष्ठेश, किसी पापग्रह के साथ, लग्न में हो तो व्रण। पंचम में हो तो पुत्र को या स्वयं को व्रण। इसी प्रकार चतुर्थ में माता को, सप्तम में स्त्री को, नवम में मामा को, तृतीय में अनुज को, लाभ में ज्येष्ठज को, अष्टम में स्वयं को व्रण या गुदाव्रण (भगन्दर) होता है।

१६. शनि-मंगलका त्रिकोणयोग हो तो, वायुरोग।

१७. चतुर्थस्थ शनि हो तो नेत्ररोग, अग्निभय, आघात होता है।

१८. शुक्र के साथ सप्तमेश, षष्ठस्थ हो तो, स्त्री नपुंसक होती है। (पुरुष कुण्डली द्वारा)।

१९. लग्नेश, भौम के साथ, त्रिकस्थ हो तो, गठिया, व्रण, शस्त्रभय होता है। इसी प्रकार बुध साथ हो तो पित्तरोग, गुरु हो तो, आमाशय रोग, शुक्र हो तो क्षयरोग तथा शनि-राहु-केतु हो तो, चोर-चाण्डालादि का भय होता है।

२०. षष्ठेश (मंगल) से, स्त्री को सर्पभय। षष्ठेश (बुध) से, स्त्री को विषभय। षष्ठेश (चन्द्र) से, हठात् मृत्यु योग। षष्ठेश (सूर्य) से वन्य पशु भय या राजभय होता है।

२१. इतना देखने से, आपको निश्चित बोध होगा कि, इस शरीर के किस अंग में किस रोग का, निश्चित प्रभाव होगा। अब रोग के सिवाय, अन्य कारण (अष्टमभाव सम्बन्धी अपघात-योग), आगे लिखे जा रहे हैं।

निर्णय-विधि

(१) षष्ठ-स्थान से रोगादि, अष्टम स्थान से मृत्यु, द्वादश स्थान से विनाश का विचार किया जाता हैं। षष्ठ-स्थान, पेट, यकृत (लीवर) का है। सभी रोगों का कारण—धातुओं के मल हैं और मल-संचय का स्थान 'उदर' है। अतएव सर्वप्रथम, पाचन-क्रिया का सुव्यवस्थित होना, चिकित्सा-शास्त्र का, मुख्य लक्ष्य होता है। तब यह सिद्ध हुआ कि, षष्ठ-भाव, षष्ठेश, बुध और कन्याराशि के दोष के कारण से, पेट का बिगड़ना, रोगभय, राजभय, शत्रुभय होना, सम्भव रहता है। जो कि, अनुचित आहार, विहार(आचरण) से दोष, आमाशय में टिके रहते हैं।

(२) [देखिए चक्र २४] सूर्य-बुध (मिथुन)=वायुतत्त्व। चन्द्र-शुक्र (वृष)=भूमितत्त्व। मंगल (कन्या)= भूमितत्त्व। गुरु (कर्क)=जलतत्त्व। शनि (सिंह)=अग्नितत्त्व। राहु (तुला) =वायुतत्त्व। केतु (मेष)=अग्नि-तत्त्व। लग्न (वृश्चिक) =जलतत्त्व। तात्पर्य यह है कि, वायुतत्त्व के ३ ग्रह, भूमितत्त्व के ३ ग्रह, जलतत्त्व के २ ग्रह, अग्नितत्त्व के २ ग्रह हैं। षष्ठ में, अग्नितत्त्व, अष्टम में वायुतत्त्व है। अत वायुतत्त्व प्रमुख तथा जलतत्त्व द्वितीय श्रेणी का मानिए। इन्हीं दो तत्त्वों के विकार से, रोगों की उत्पत्ति हो सकती है। पृष्ठ १६-२० से तत्त्व जानिए।

(३) सूर्य, लग्न, षष्ठस्थ (राशि, ग्रह, दृष्टा-ग्रह) सम्बन्धी, पाचों ग्रहों के तत्त्व में से, अधिक तत्त्व वाले ग्रह के आधार पर रोग होता है। यथा, [देखिए चक्र २४]। सूर्य=वायु। लग्न=जल। मेष=अग्नि। केतु= वायु। मंगल=अग्नि। तात्पर्य यह है कि, वायुतत्त्व अधिक होने से वायु रोग। यदि दोनों नियमों से एक ही तत्त्व निकले तो, निश्चय ही जानिए। यदि दोनों में भिन्नता आवे तो, न ३ प्रधान रहेगा। अत. सर्वदा, इससे अवश्य देखिए। यदि पीडाकारक ग्रह, भूमि या जल राशि में हो तो श्लेष्मा, (कफ) विकार। अग्निराशि में पित्त-विकार। वायु राशि में वायु विकार रोग होता है। हाँ, अग्नि या वायुतत्त्व के कारण, कभी-कभी रक्ताधिक्य, रक्तप्रकोप, रक्त चाप, रक्त-पित्त आदि रोग हो जाते हैं।

त्रिकेश-विचार

१. षष्ठ-अष्टम-द्वादश (त्रिक) के स्वामी, जिस भाव में होते हैं, वहाँ वे, उस अंग में कष्ट करते हैं।

२. जिस भाव का स्वामी, त्रिक में पड़ता है, उस भाव के अंग में पीड़ा होती है। स्पष्ट यों है कि, सप्तमेश, षष्ठ में हो तो, सप्तमभाव तथा राशि के अंगों में पीड़ा होगी।

३. त्रिकेश जिस भाव में हो तो, यदि उस भाव का स्वामी, त्रिक में स्थित हो तो, निर्दिष्ट अंग में अवश्य ही पीड़ा होगी। जैसे—अष्टमेश, षष्ठभाव में हो तो, आँत, आमाशय आदि की पीडा।

४ यदि त्रिकेश, त्रिकस्थ हो अथवा स्वगृही होकर त्रिकस्थ हो तो, पीड़ा न होकर, प्रायः पूर्ण स्वस्थ होता है। यहाँ कभी अस्वस्थता का कारण है कि, जो ग्रह, दो-दो राशिपति होते हैं, वह स्वगृही होने पर, दूसरी राशि का स्वामी बनकर, त्रिकस्थ होता है। अतएव हमने, प्रायः शब्द का उपयोग किया। तात्पर्य है कि, कम ही अस्वस्थता होती है।

५. त्रिकेश, त्रिकस्थ न होकर, अन्य भावों में हो, स्वगृही भी न हो, किन्तु त्रिकेशस्थ-राशीश, यदि स्वगृही हो तो, स्थायी पीड़ा नहीं होती।

६. त्रिकेश, त्रिकस्थ न होकर, अन्य भाव में हो तो, यदि त्रिकेशस्थ-राशीश, त्रिकस्थ न होकर, त्रिकेशस्थ भाव पर, दृष्टि डालता हो तो, स्थायी पीड़ा नहीं होती। यथा कुम्भ लग्न में जन्म हो। व्ययेश शनि, तृतीय में हो और तृतीयेश मंगल, नवम में बैठकर, तृतीय भाव पर दृष्टि डाले तो, तृतीय भाव की पीड़ा 'स्थायी' न होगी।

७. एक साधारण नियम पर आप, अवश्य ध्यान रखिए, कि,जिस भाव का स्वामी अस्त,नीच, नीचांश, निर्बल (सप्तवर्ग द्वारा), पीड़ित (पापयुक्त-दृष्ट) हो तो, उस भाव-राशि वाले अंग में पीड़ा होती है।

८. यथा, मिथुन राशि का बुध अष्टम में हो तो, स्वगृही होने से. लाभेश (कन्या) भी बुध है। और लाभेश बुध (रन्ध्रस्थ होने से) का फल, लाभ

भाव को अशुभ होना चाहिए; किन्तु ऐसा न होकर, लाभभाव-राशि के अंग में, अल्प या स्पर्शमात्र दोष हो सकता है। सर्वदा नहीं। परन्तु जब, षष्ठेश-लग्नेश, मंगल (वृश्चिक लग्न में जन्म), लाभ भाव में होगा तब, योग नं० ३ के अनुसार, उस लाभ-भावांग में, पीड़ा अवश्य होगी [देखिए चक्र २४]।

९. त्रिकेश दोष, मंगल-शुक्र-शनि को, कभी-कभी नहीं होता। यथा—मेष-वृश्चिक लग्न में, जन्म होने से मंगल को, वृष-तुला लग्न में जन्म होने से शुक्र को, कुम्भ लग्न में जन्म होने से शनि को, त्रिकेश दोष नहीं होता।

१०. "स एव शुभसन्धाता लग्नाधीशोऽपि चेत्स्वयम्।" द्वारा, योग ८ में दिखाये गए, मंगल का दोष नहीं रहता। सारांश यह है कि, लाभभावांग की पीड़ा, सर्वदा (स्थायी) नहीं रह सकती। फिर भी, लग्न-लग्नेश का सम्बन्ध, त्रिक या त्रिकेश से, किसी प्रकार न हो तो, प्रायः रोग की सम्भावना नहीं रहती।

११. जब त्रिकेशस्थ राशीश, त्रिकेश के साथ बैठकर, जितने ग्रह, जितने भाव, उसकी दृष्टि या युति में आयेंगे, उन सबों पर, त्रिकेश का दोष फेंकता रहेगा। [पृष्ठ २२६ का चन्द्र]

लग्नेश-षष्ठेश-युति

१. लग्नेश-षष्ठेश-सूर्य साथ हों तो, ज्वर, पित्त, रक्त, क्षय, हड्डी रोग, जीवन-शक्ति की कमी।

२. लग्नेश-षष्ठेश-चन्द्र साथ हों तो, जलभय, हैजा, जलोदर, शीतरोग, चेचक, खाँसी, श्वासरोग।

३. लग्नेश-षष्ठेश-भौम साथ हों तो, स्फोटक, व्रण, घाव, फोड़ा, चर्मरोग, युद्ध में पीड़ा।

४. लग्नेश-षष्ठेश-बुध साथ हों तो, पित्तरोग, अरुचि, वमन, अफरा, वायु भरना, उदररोग,

५. लग्नेश-षष्ठेश-गुरु साथ हों तो, रोगरहित, या कभी-कभी साधारण अस्वस्थता।

६. लग्नेश-षष्ठेश-शुक्र साथ हों तो, स्त्री को रोग या वीर्य या मूत्र रोग।

७. लग्नेश-षष्ठेश-शनि साथ हों तो, वातरोग, उदररोग, अनपच, पेट गड़गड़ाना, स्तम्भ-वायु।

८. लग्नेश-षष्ठेश-राहु या केतु साथ हों तो, शिर-व्यथा, वायुरोग, चौराग्निभय, (केन्द्र में, कारागार)।

९. लग्नस्थषष्ठेश से, मंगल का सम्बन्ध हो तो, आकस्मिकघटना, चीरफाड़, आप्रेशन, हत्या, स्फोटक।

१०. लग्नस्थषष्ठेशसे, बुधका सम्बन्ध हो तो, गुप्तरोग।

११. लग्नस्थषष्ठेश से, गुरुका सम्बन्ध हो तो, स्वस्थता या रोगादि से शीघ्र मुक्ति।

१२. लग्नस्थषष्ठेशसे, शुक्रका सम्बन्ध हो तो, मिथ्या आहार-विहार द्वारा रोग।

१३. लग्नस्थषष्ठेशसे, शनि का सम्बन्ध हो तो, जननेन्द्रिय-आप्रेशन, कठिन व्याधि, कभी-कभी जननेन्द्रिय का कटना होता है।

१४. षष्ठभाव से, शनि का सम्बन्ध हो तो, उदर-पीड़ा या अनपच होती है।

१५. षष्ठेश, किसी पापग्रह के साथ, लग्न में हो तो व्रण। पंचम में हो तो पुत्र को या स्वयं को व्रण। इसी प्रकार चतुर्थ में माता को, सप्तम में स्त्री को, नवम में मामा को, तृतीय में अनुज को, लाभ में ज्येष्ठज को, अष्टम में स्वयं को व्रण या गुदाव्रण (भगन्दर) होता है।

१६. शनि-मंगलका त्रिकोणयोग हो तो, वायुरोग।

१७. चतुर्थस्थ शनि हो तो नेत्ररोग, अग्निभय, आघात होता है।

१८. शुक्र के साथ सप्तमेश, षष्ठस्थ हो तो, स्त्री नपुंसक होती है। (पुरुष कुण्डली द्वारा)।

१९. लग्नेश, भौम के साथ, त्रिकस्थ हो तो, गठिया, व्रण, शस्त्रभय होता है। इसी प्रकार बुध साथ हो तो पित्तरोग, गुरु हो तो, आमाशय रोग, शुक्र हो तो क्षयरोग तथा शनि-राहु-केतु हो तो, चोर-चाण्डा-लादि का भय होता है।

२०. षष्ठेश (मंगल) से, स्त्री को सर्पभय। षष्ठेश (बुध) से, स्त्री को विषभय। षष्ठेश (चन्द्र) से, हठात् मृत्यु योग। षष्ठेश (सूर्य) से वन्य पशु भय या राजभय होता है।

२१. इतना देखने से, आपको निश्चित बोध होगा कि, इस शरीर के किस अंग में किस रोग का, निश्चित प्रभाव होगा। अब रोग के सिवाय, अन्य कारण (अष्टमभाव सम्बन्धी अपघात-योग), आगे लिखे जा रहे हैं।

अपघात-योग [सवारी द्वारा]

(१) मंगल चतुर्थ मे, चन्द्र धनस्थ, सूर्य कर्मस्थ हो तो, हाथी या घोड़े या किसी सवारी द्वारा अपघात योग। (२) दशम मे सूर्य, चतुर्थ में मंगल हो तो, किसी सवारी से गिरना या टकराना, चोट से अपघात योग। (३) लग्नेश-अष्टमेश के साथ, चतुर्थेश या अन्य कई ग्रह हों तो, सामूहिक (रेल, जहाज, बस, यान, भूकम्प, हैजा, प्लेग आदि) अपघात योग। अथवा क्षीण चन्द्र, चतुर्थस्थ हो तो, वाहन द्वारा अपघात योग। (४) अष्टमेश के साथ, कई ग्रह हों अथवा अष्टम स्थान में बहुत ग्रह हो तो, सामूहिक अपघात योग। (५) अष्टम में शनि हो तो, सवारी गाड़ी द्वारा अपघात योग। (६) शनि युक्त सुखेश, षष्ठस्थ हो तो, सवारी द्वारा अपघात योग। (७) चन्द्र-भौम एक साथ, अष्टम या केन्द्र में हो तो, वाहन द्वारा अपघात योग।

[पशु द्वारा]

(१) कर्क या सिंह का चन्द्र, ७।८ वें भावस्थ, राहु के साथ हो तो, पशु द्वारा अपघात योग। (२) सूर्य दशम मे, मंगल चतुर्थ में, लग्न में बुध, मंगल के साथ कोई शुभग्रह न हो तो, पशु द्वारा अपघात योग। वर्छी से व्रण। (३) सूर्य-चन्द्र का योग, छठवें या आठवें भाव में हो तो, सिंहादि पशु द्वारा अपघात योग। (४) चतुर्थ में मंगल, दशम में शनि हो तो, सिंहादि पशु द्वारा अपघात योग। (५) दशमस्थ मंगल, सप्तमस्थ सूर्य हो तो, कुत्ते द्वारा अपघात योग। (६) लग्न पर सूर्य और भौम की दृष्टि हो तथा गुरु शुक्रकी दृष्टि न हो तो, साँड़ द्वारा अपघातयोग। (७) धन मीन का बुध, मकर-कुम्भ का मंगल हो तो, वन्यपशु द्वारा अपघात योग। (८) षष्ठ या अष्टम में, सूर्य-चन्द्र योग हो तो, गज द्वारा अपघात योग। (९) मंगल-राहु, अष्टम मे हो तो, शृंगी-नखी-दन्ती-अपद-षट्पद-चतुष्पद, वन्य या ग्राम्य पशु द्वारा अपघात योग।

नोट—

(क) यदि जन्म समय विषघटी हो तो, विष, अग्नि, क्रूरजीव द्वारा अपघात-योग।

(ख) सर्वर्क्ष के षोडशांश भाग समय तक, नक्षत्र घटी के उपरान्त विष-घटी रहती है। यथा—चक्र २४

$$\text{सर्वर्क्ष} \frac{५६।३३}{१६} = ३ \text{ घटी } ३२ \text{ पल}$$

(ग) जन्मर्क्ष कृत्तिका. की ३० घटी से ३३ घटी ३२ पल तक विष घटी रहेगी। गतर्क्ष २६।५८ विष-घटी से पूर्व ही था। अतएव, विष-घटी में जन्म नहीं हुआ।

(घ) लग्नेश, शुभयुक्त केन्द्र में हो या बली चन्द्र, केन्द्र-त्रिकोण में हो तो, विष घटी का दोष नहीं होता।

विष-घटी-साधन

नक्षत्र	सर्वर्क्ष का षोडशांश
अश्विनी	५० घटी के बाद
भ. पूपा. उभा.	२४ "
कृ. पुन. म. रे.	३० "
रोहिणी	४० "
मृ. स्वा. वि. ज्ये.	१४ "
आर्द्रा, हस्त	२१ "
पुष्य, पूफा. चित्रा उषा	२० "
श्लेषा	३२ "
उफा शत.	१८ "
अनु. श्रवण ध.	१० "
मूल	५६ "
पूर्वाभाद्रपद	१६ "

[सर्प या विष द्वारा]

(१) आर्द्रा, श्लेषा, पूफा, पूषा, पूभा, स्वाती, ज्येष्ठा नक्षत्र के समय, विषपदार्थसेवन द्वारा अपघात योग। (२) विष-घटी या पूर्वोक्त नक्षत्रों के समय यदि, सर्प कुत्ता-शृगाल काटे तो, इनके विष द्वारा अपघात योग। (३) नवमस्थ वृष-तुला का सूर्य, चन्द्र से दृष्ट या युक्त हो तो, सर्प द्वारा अपघात योग। (४) अष्टमाथ राहु पर, पापग्रह की दृष्टि हो तो, सर्प द्वारा या फोड़ा द्वारा अपघात योग। (५) शत्रुराशि वाले शुभग्रह, त्रिकस्थ

हों और भौम, शत्रुगृही-शत्रुयुक्त भी हो तो, सर्प द्वारा अपघात योग। (६) राहु-शुक्र का योग, दशम भाव में हो तो, सर्प द्वारा अपघात योग। (७) कारकांश-लग्नस्थ सूर्य पर, पापग्रह की दृष्टि हो तो, सर्पदंश द्वारा अपघात योग। (८) दशम में सूर्य, चतुर्थ में मंगल, अष्टम में शनि हो तो, सर्पदंश द्वारा अपघात योग। (६) शनि-सूर्य-राहु सप्तम में हो तो, सर्पदंश द्वारा अपघात योग।

[विष–अग्नि–शस्त्र द्वारा]

(१) षष्ठेश या रन्ध्रेश या मंगल, तृतीयेश से युक्त हो और शनि, गुलिक के साथ क्रूरांश में हो तो, युद्ध में अपघात योग। (२) चन्द्र लग्न में, शनि चतुर्थ में, मंगल दशम में हो तो, युद्ध में अपघात योग। (३) पापग्रह से घिरा तथा पापदृष्ट, कन्या का चन्द्र चतुर्थभाव में हो तो, अस्त्र (बन्दूक) द्वारा अपघात योग। (४) विषघटी में जन्म हो, पापग्रह अष्टम में हो तो, विष या बन्दूक द्वारा अपघात योग। (५) लग्न-नवांश-राशि से दशमनवांशेश, शनियुक्त या त्रिक में हो तो, विष द्वारा अपघात योग। (६) धनेश-षष्ठेश-शनि, एक साथ त्रिक में हो तो, विष से अपघात योग। (७) लग्न में चन्द्र, निर्बली सूर्य अष्टम में, द्वितीय–चतुर्थ में कोई पापग्रह हो तो, हाथ और नेत्रों से हीन होकर, बड़े कष्ट से अपघात अथवा विष से अपघात योग। (८) सुख में मंगल, सप्तम में सूर्य, अष्टममें शनि-चन्द्र हो तो, विशेष प्रकार के भोजनसे (विष द्वारा) अपघात योग। (६) षष्ठेश-रन्ध्रेश-राहु, एक साथ षष्ठ में हो तो चोर से या शस्त्र से अपघात योग। (१०) मंगल–बुध एक साथ, छठवें या आठवें हो तो, चोर द्वारा हाथ-पैर नष्ट होकर अपघात योग। (११) पापग्रह के नवांशस्थ, मकर-कुम्भ राशि का चन्द्र हो तो, अग्नि, शस्त्र या पतन से अपघात योग। (१२) पापग्रहों से घिरा, पापग्रह की राशि या मेष-वृश्चिक में चन्द्र हो तो, शस्त्र या अग्नि से अपघात योग। (१३) चन्द्र, मेष–वृश्चिक-मकर-कुम्भ का होकर, पापग्रहों से घिरा, पापदृष्ट हो तो, अग्नि, शस्त्र, बन्दूक से अपघात योग। (१४) क्षीणचन्द्र दशम में, मंगल नवम में, शनि लग्न में हो तो, धुएँ से व्याकुल होकर या अग्नि से या बन्धन से या चोट से अपघात योग। (१५) मेष-वृश्चिक का चन्द्र पापयुक्त हो तो, अग्नि या शस्त्र से अपघात योग। (१६) चन्द्र लग्न में, निर्बली सूर्य अष्टम में, गुरु अकेला या पापयुक्त व्यय में, चतुर्थ में पापग्रह हों तो, रात्रि समय, किसी नीच जाति के शस्त्र से या सोने के स्थान से गिर कर अपघात योग। (१७) लग्नेश–रन्ध्रेश, पापयुक्त या राहु-केतु युक्त षष्ठस्थ हो तो, चोर से, शस्त्र से, युद्ध में अपघात योग। (१८) १।४।८।१० वें भाव में शुभग्रह, पापदृष्ट हों तो, बर्छी से अपघात योग। (१६) वृष–तुला में, शनि–चन्द्र एक साथ या पृथक् हों तो २८ वें वर्ष में तलवार से अपघात योग। (२०) नवमस्थ मंगल और सूर्य-शनि-राहु, कहीं एकत्र हों (शुभदृष्ट न हों) तो, बाण से अपघात योग।

(२१) लग्नेश-रन्ध्रेश निर्बल हो, षष्ठेश-भौम युति हो तो, युद्ध में शस्त्र से अपघात योग। (२२) पापचन्द्र दशम में, मंगल नवम में, शनि लग्न में, सूर्य पंचम में हो तो, कारागार में चोट से या धूमाग्नि द्वारा अपघात योग। (२३) शनि–मंगल-राहु अष्टम में हों तो, शस्त्र से अपघात योग। (२४) सुखेश–केतु षष्ठस्थ हों तो, शस्त्र से अपघात योग। (२५) लग्न में शनि-मंगल, अष्टम में चन्द्र हो तो, शस्त्र से अपघात योग। (२६) यदि लग्न में सूर्य, कन्याराशिस्थ चन्द्र पर, पापग्रह की दृष्टि हो तो, युद्ध से या जल से अपघात योग। (२७) अष्टम में क्षीण-चन्द्र के साथ, मंगल-राहु-शनि हो तो, जल, पिशाचदोष, अग्नि से अपघात योग। (२८) शनि द्रेष्काणेश, मंगल से युक्त, दृष्ट, मेष-वृश्चिक राशि या नवांश में हो तो, शस्त्र या शत्रु से अपघात योग। (२६) व्यय में मंगल, अष्टम में शनि हो तो, अति अनुचित या कष्टप्रद अपघात योग। (३०) षष्ठस्थ भौम हो तो, दुर्मरण (कष्टप्रद) अपघात योग। (३१) लग्न के द्वादशांश राशि के चौथे या दशवें भाव में सूर्य हो तो, राज–गृह में अपघात योग। (३२) चन्द्र–बुध, षष्ठ या अष्टम में हो तो, विष से अपघात योग। (३३) नवमस्थ पापग्रह (शुभग्रह की दृष्टि-रहित) हो तो, बाण से अपघात योग। (३४) अष्टम में सूर्य-बुध हों अथवा सूर्य-मंगल लाभ में हो तो, विष-अग्नि-शस्त्र से अपघात योग। (३५) अष्टम में मंगल हो तो, अग्नि से अपघात योग। (३६) १।५।८ राशिस्थ शनि, पापयुक्त हो तो, भुजा कटने का अपघात योग।

(३७) शत्रुगृही शनि पर, शुक्र की दृष्टि या युति हो तो, हाथ कटने का अपघात योग। (३८) सूर्य-चन्द्र-मंगल-राहु, एकत्र अष्टम में हों तो, कर-पाद कटने का अपघात योग। (३९) धनेश-शनि-मंगल, एकत्र लग्न में हो तो, कान कटने का अपघात योग। (४०) रन्ध्रस्थ शुभग्रह, पापयुक्त-दृष्ट हो तो, शस्त्र या शत्रु द्वारा अपघातयोग।

[वज्रपात–पर्वतादि द्वारा]

(१) सूर्य-चन्द्र-मंगल-शनि, एकत्र अष्टम या त्रिकोण में हों तो, वज्रपात (बिजली) से या दीवाल गिरने से, तूफान से अपघात योग। (२) लग्नस्थ सूर्य, पंचमस्थ शनि, अष्टमस्थ चन्द्र, नवमस्थ भौम हो तो, वज्र या वृक्ष गिरने से अपघात योग। (३) चतुर्थ-दशम में, मंगल-सूर्य शनि हो तो, शूली (फाँसी) से, पर्वत से गिरना, वज्रपात द्वारा अपघात योग। (४) सूर्य लग्न में, ४।८ वें शनि-मंगल-६ वें चन्द्र हो तो, वज्रपात या पर्वत द्वारा या वृक्ष द्वारा या हल के फार की चोट से अपघात योग। (५) कारकांश-लग्न में धनुराशि हो तो, वाहन द्वारा या उच्च स्थान से पतन द्वारा अपघात योग। (६) दशम में सूर्य, चतुर्थ में मंगल हो तो, पाषाण द्वारा अपघात योग। (७) सूर्य-मंगल चतुर्थ में हो तो, पाषाण-द्वारा अपघात योग। (८) सुखेश, दशमेश से दृष्ट-युक्त हो तो, पाषाण-द्वारा अपघात योग। (९) सुखेश, शनि-राहु-युक्त, भौम दृष्ट हो तो, पाषाण द्वारा अपघात योग। (१०) सातवें-ग्यारहवें राहु हो तो, काष्ठ या पाषाण द्वारा अपघात योग। (११) शनि-सूर्य-राहु, लग्नस्थ हों तो, वृक्ष द्वारा अपघात योग। (१२) लग्नेश-षष्ठेश-रन्ध्रेश-मंगल एकत्र हों तो, वज्रपात, पर्वत, दीवाल गिरने से अपघात योग। (१३) सूर्य-मंगल दशम या चतुर्थ में हो तो, शिला (पाषाण) की चोट से अपघात योग। (१४) एकत्र लग्नेश-सूर्य, मकर-कुम्भ में हो तो, वज्रपात द्वारा अपघात योग।

[विभिन्न कारण से अपघात]

(१) सूर्य-चन्द्र, कन्याराशिस्थ हों तो, स्वजन द्वारा अपघात योग। (२) सूर्य-शनि, अष्टम भावस्थ हो तो, विभूति (धनादि) द्वारा अपघात योग। (३) मंगल-बुध, सप्तम-दशम में एकत्र या पृथक् हों तो, यन्त्र (मशीन) द्वारा अपघात योग। (४) सूर्य-मंगल सप्तमस्थ, शनि अष्टमस्थ, पाप-चन्द्र चतुर्थस्थ हों अथवा पक्षी द्रेष्काण में लग्न हो तो, पक्षी द्वारा अपघात योग। इस योग के अपघात में, शव का अग्नि आदि संस्कार न होकर, पक्षी-भक्षण द्वारा शव-संस्कार होता है। प्रायः वन में या तूफान, भूकम्प, मेला, युद्ध-स्थल, पर्वत, नदी आदि एकान्त-स्थल में अपघात योग। (५) लग्न में शनि-चन्द्र हों, सप्तम में मंगल हो तो, यन्त्र (मशीन) द्वारा अपघात योग। (६) अष्टम में पापग्रह, रन्ध्रेश व्यय या केन्द्र में, लग्नेश निर्बल हो तो, कुमार्गी होने से अपघात योग। (७) दशम में मकर-कुम्भ गत (पापी) चन्द्र, मेष-वृश्चिक में सूर्य हो तो, विष्ठा के मध्य अपघात योग। (८) पापचन्द्र दशम में, सूर्य सप्तम में, मंगल चतुर्थ में हो तो, विष्ठा के मध्य अपघात योग। (९) तुलास्थ मंगल मेष-वृश्चिक में, वृषस्थ सूर्य, मकर-कुम्भस्थ चन्द्र हो तो, मल-मूत्रादि के मध्य अपघात योग। (१०) तुलास्थ मंगल, मेषस्थ शनि, कुम्भ-मकरस्थ चन्द्र हो तो, विष्ठा के मध्य अपघात योग। (११) शत्रुगृह से दृष्ट, शनि-राहु लग्नस्थ हो तो, पाप-कर्म द्वारा अपघात योग। (१२) शुक्र-स्थित राशि से, चौथे-आठवें, सूर्य-मंगल-शनि हों तो, अग्नि-द्वारा, उसकी स्त्री का अपघात। (१३) शुक्र के द्विर्द्वादश में, पापग्रह हों अर्थात् दो पापग्रह के मध्य में शुक्र हो तो, उसकी स्त्री का उच्चस्थान से पतन द्वारा अपघात योग। अथवा वैसे शुक्र पर, किसी शुभग्रह की दृष्टि न हो तो, उसकी स्त्री का (फाँसी लगाकर) अपघात योग। (१४) मीनस्थ सूर्य-चन्द्र (फाल्गुन-चैत्र अमावास्या के समीप) लग्नस्थ हो, पापयुक्त हो, अष्टम में पापग्रह हो तो, किसी स्त्री द्वारा अपघात योग। (१५) सूर्य लग्न में, कन्याराशिस्थ चन्द्र सप्तम में, शुक्र मेष में हो तो, किसी स्त्री द्वारा अपघात योग। (१६) सूर्य लग्न में, कन्याराशि का पापयुक्त चन्द्र सप्तम में, शुक्र मेष में हो तो, किसी स्त्री के कारण, गृह या मन्दिर में अपघात योग। (१७) लग्नेश-रन्ध्रेश-सप्तमेश एकत्र हों तो, स्त्री सहित अपघात योग। (१८) लग्नेश, केतु के साथ हो, इसके दोनों ओर (द्विर्द्वादश) में, पापग्रह हों और अष्टम में पापग्रह हो तो, माता के कोप से अपघात योग। (१९) नवमेश, सूर्य, मंगल, एकत्र नवमस्थ हो, लग्नेश-सप्तमेश मित्र हों तो, दम्पती का अपघात योग।

[जल-द्वारा]

(१) सूर्य लग्न में, पाप-दृष्ट कन्या का चन्द्र हो तो, जल द्वारा या युद्ध द्वारा या सम्बन्धी-जन द्वारा. अपघात योग। (२) सूर्य-चन्द्र लग्न में, अन्य सभी ग्रह द्विस्वभाव में पाप दृष्ट हों तो, जलजन्तु द्वारा अपघात योग। (३) सूर्य-चन्द्र (मीन या) द्विस्वभाव राशिस्थ लग्न में हों, दो पापग्रह से दृष्ट हों तो, जल द्वारा अपघात योग। (४) सूर्य-चन्द्र (कन्या या) द्विस्वभावस्थ हो, पापदृष्ट या सहित हो तो, जल द्वारा अपघात योग। (५) शनि-चन्द्र, चतुर्थ या त्रिकमें हों और अष्टमेश एवं अष्टमभाव, पाप घेरे में हों तो, नदी या समुद्र में अपघात योग। (६) रन्ध्रेश (४।७।८।१०।११।१२ जलराशिस्थ) ४।६।१२ वें भाव में हों तो. सर्प-सिंह-मृग-कूप द्वारा अपघात योग। (७) शनि चतुर्थस्थ, चन्द्र सप्तमस्थ, मंगल दशमस्थ हो तो, कूप (कुआँ) द्वारा अपघात योग। (८) चतुर्थभावस्थ, लग्नेश-चतुर्थेश, दशमेश से दृष्ट हों तो, जल द्वारा अपघात योग। (९) चतुर्थेशस्थ राशीश पर, चतुर्थेश की दृष्टि या युति हो तो, जल-द्वारा अपघात योग। (१०) क्षीणचन्द्र, शनि या मंगल-राहु से युक्त, रन्ध्रस्थ हो तो, जल, अग्नि, पिशाच दोष से अपघात योग। (११) नीच, अस्त, पराजित ग्रह, चतुर्थ में हो, पष्ठस्थान में जलराशि हो तो, जल द्वारा अपघात योग। (१२) चन्द्र मकर में, शनि कर्क में हो तो, जलोदर या जल द्वारा अपघात योग। (१३) क्षीण-चन्द्र अष्टमस्थ हो तो, जल-द्वारा अपघात योग। (१४) लग्नेश निर्बल हो, चतुर्थ में पापग्रह हो तो, जल-द्वारा अपघात योग। (१५) सुखेश निर्बल हो, चतुर्थ में पापग्रह हो तो, जल-द्वारा अपघात योग (१६) सुखेश. पापयुक्त, केन्द्रस्थ हो तो, जल-द्वारा अपघात योग।

[महानिद्रा का स्थान]

(१) चौथे-दशवें पापग्रह हों, क्षीण-चन्द्र, छठवें या आठवें हो तो, शत्रु के षड्यन्त्र से तीर्थ में अपघता योग। (२) नवमेश नवमस्थ हो तो, तीर्थ या गंगा किनारे महानिद्रा (मृत्यु) होती है। (३) नवमेश नवम को, लग्नेश लग्न को, रन्ध्रेश रन्ध्र को देखता हो तो, शुभ तीर्थ में महानिद्रा। (४) अष्टमेश शुभग्रह हो, अष्टम में शुभग्रह हों तो, तीर्थ में महानिद्रा। (५) अष्टमेश नवमस्थ पर, शुभचन्द्र-बुध-गुरु-शुक्र की दृष्टि हो तो, द्वारकापुरी या तीर्थ में महानिद्रा। (६) अष्टमेश या लग्न से २२ वें द्रेष्काणपति, बुध या शुक्र होकर, नवमस्थ हो तो, द्वारकापुरी या तीर्थ में महानिद्रा। (७) अष्टमेश या लग्न से २२ वाँ द्रेष्काणेश गुरु, नवमस्थ हो तो, प्रयाग तीर्थ में महानिद्रा। (८) पूर्वोक्त सातवें योग में, चन्द्र हो तो, काशी तीर्थ में महानिद्रा। (९) पूर्वोक्त सातवें योग में, मंगल हो तो, परदेश में महानिद्रा। (१०) अष्टमभाव में चरराशि हो तो, जन्म स्थान से बाहर, अन्य देश में महानिद्रा। यदि स्थिरराशि हो तो, स्वगृह में। यदि द्विस्वभावराशि हो तो, जहाँ न घर हो और न परदेश (स्थिर रूप से) न हो, वहाँ महानिद्रा। (११) रन्ध्रेश पापग्रह होकर लग्नस्थ, लग्नेश से दृष्ट हो तो, अचानक अपने घर में महानिद्रा। हाँ, यदि ऐसे अष्टमेश पर, पापग्रह की दृष्टि भी हो तो, स्वजनों से रहित स्थान में महानिद्रा। (१२) नवमेश गुरु, अष्टमस्थ हो तो, शान्तिपूर्वक अपने घर में महानिद्रा। (१३) रन्ध्रेश पापग्रह, सप्तमस्थ हो तो, मार्ग (यात्रा करने) में महानिद्रा (१४) मंगल, नवम में हो तो, मार्ग में महानिद्रा। अथवा शनि, चरराशि या चरांश में हो तो, दूर-देश में महानिद्रा। (१५) नवमेश चन्द्र, रन्ध्रस्थ हो तो, विष्णु तीर्थ में महानिद्रा। (१६) नवमेश शुक्र रन्ध्रस्थ हो तो, काशीतीर्थ में महानिद्रा। (१७) नवमेश शुभग्रह रन्ध्रस्थ, शुभयुक्त-दृष्ट हो तो, काशीतीर्थ में महानिद्रा। (१८) तीनग्रह एकत्र हों, किन्तु चन्द्र न हो तो, सहस्रों पापों से विमुक्त होकर, गंगातीर में महानिद्रा। (१९) अष्टमेश, शुभग्रह, केन्द्रस्थ हो तो, ईश्वर का यश-गायन करते-करते, सुन्दर तीर्थ में महानिद्रा। (२०) शनि लग्न में, भौम व्यय में, सू. चं. बु. सप्तम में हो तो, विदेश में, मन्दिर में, वाटिका में महानिद्रा। (२१) सू. मं. व्यय में, चं. रा. सप्तम में, गुरु केन्द्र में हो तो, शुभस्थान, देवमन्दिर, वाटिका में महानिद्रा। (२२) रन्ध्रेश उच्च या स्वगृही हो तो, तीर्थ में महानिद्रा। (२३) गुरु या शुक्र के साथ लग्नेश हो तो, तीर्थ में महानिद्रा। (२४) सूर्य-राहु एकत्र हों तो, तीर्थ या पर्वत पर महानिद्रा। (२५) नवमस्थ गुरु हो तो, तीर्थ में महानिद्रा। (२६) बुध-शुक्र नवमस्थ हों तो, मार्ग या शिवालय या द्वारकापुरी में महानिद्रा। (२७) नवमेश लग्नस्थ हो तो, तीर्थ में महानिद्रा। (२८) नवमेश

(३७) शत्रुगृही शनि पर, शुक्र की दृष्टि या युति हो तो, हाथ कटने का अपघात योग। (३८) सूर्य-चन्द्र-मंगल-राहु, एकत्र अष्टम में हों तो, कर-पाद कटने का अपघात योग। (३९) धनेश शनि मंगल, एकत्र लग्न में हो तो, कान कटने का अपघात योग। (४०) रन्ध्रस्थ शुभग्रह, पापयुक्त-दृष्ट हो तो, शस्त्र या शत्रु द्वारा अपघातयोग।

[वज्रपात-पर्वतादि द्वारा]

(१) सूर्य चन्द्र-मंगल शनि, एकत्र अष्टम या त्रिकोण में हों तो, वज्रपात (बिजली) से या दीवाल गिरने से, तूफान से अपघात योग। (२) लग्नस्थ सूर्य, पंचमस्थ शनि, अष्टमस्थ चन्द्र, नवमस्थ भौम हो तो, वज्र या वृक्ष गिरने से अपघात योग। (३) चतुर्थ-दशम में, मंगल-सूर्य शनि हो तो, शूली (फांसी) से, पर्वत से गिरना, वज्रपात द्वारा अपघात योग। (४) सूर्य लग्न में, ४।८ वें शनि-मंगल-९ वें चन्द्र हो तो, वज्रपात या पर्वत द्वारा या वृक्ष द्वारा या हल के फार की चोट से अपघात योग। (५) कारकांश-लग्न में धनुराशि हो तो, वाहन द्वारा या उच्च स्थान से पतन द्वारा अपघात योग। (६) दशम में सूर्य, चतुर्थ में मंगल हो तो, पाषाण द्वारा अपघात योग। (७) सूर्य-मंगल चतुर्थ में हो तो, पाषाण द्वारा अपघात योग। (८) सुखेश, दशमेश से दृष्ट युक्त हो तो, पाषाण-द्वारा अपघात योग। (९) सुखेश, शनि राहु-युक्त, भौम दृष्ट हो तो, पाषाण द्वारा अपघात योग। (१०) सातवें ग्यारहवें राहु हो तो, काष्ठ या पाषाण द्वारा अपघात योग। (११) शनि-सूर्य राहु, लग्नस्थ हों तो, वृक्ष द्वारा अपघात योग। (१२) लग्नेश षष्ठेश-रन्ध्रेश-मंगल एकत्र हों तो, वज्रपात, पर्वत, दीवाल गिरने से अपघात योग। (१३) सूर्य मंगल दशम या चतुर्थ में हो तो, शिला (पाषाण) का चोट से अपघात योग। (१४) एकत्र लग्नेश सूर्य, मकर-कुम्भ में हो तो, वज्रपात द्वारा अपघात योग।

[विभिन्न कारण से अपघात]

(१) सूर्य-चन्द्र, कन्याराशिस्थ हों तो, स्वजन द्वारा अपघात योग। (२) सूर्य-शनि, अष्टम भावस्थ हों तो, विभूति (धनादि) द्वारा अपघात योग। (३) मंगल-बुध, सप्तम-दशम में एकत्र या पृथक् हों तो, यन्त्र (मशीन) द्वारा अपघात योग। (४) सूर्य-मंगल सप्तमस्थ, शनि अष्टमस्थ, पाप-चन्द्र चतुर्थस्थ हों अथवा पक्षी द्रेष्काण में लग्न हो तो, पक्षी द्वारा अपघात योग। इस योग के अपघात में शव का अग्नि आदि संस्कार न होकर, पक्षी-भक्षण द्वारा शव-संस्कार होता है। प्रायः वन में या तूफान भूकम्प, मेला, युद्ध-स्थल, पर्वत, नदी आदि एकान्त-स्थल में अपघात योग। (५) लग्न में शनि-चन्द्र हों सप्तम में मंगल हो तो, यन्त्र (मशीन) द्वारा अपघात योग। (६) अष्टम में पापग्रह, रन्ध्रेश व्यय या केन्द्र में लग्नेश निर्बल हो तो, कुमार्गी होने से अपघात योग। (७) दशम में मकर-कुम्भ गत (पापी) चन्द्र, मेष-वृश्चिक में सूर्य हो तो, विष्ठा के मध्य अपघात योग। (८) पापचन्द्र दशम में, सूर्य सप्तम में मंगल चतुर्थ में हो तो, विष्ठा के मध्य अपघात योग। (९) तुलास्थ मंगल मेष वृश्चिक में, वृषस्थ सूर्य, मकर-कुम्भस्थ चन्द्र हो तो, मल-मूत्रादि के मध्य अपघात योग। (१०) तुलास्थ मंगल, मेषस्थ शनि, कुम्भ-मकरस्थ चन्द्र हो तो, विष्ठा के मध्य अपघात योग। (११) शत्रुग्रह से दृष्ट, शनि राहु लग्नस्थ हो तो पाप-कर्म द्वारा अपघात योग। (१२) शुक्र स्थित राशि से, चौथे-आठवें, सूर्य-मंगल-शनि हों तो अग्नि द्वारा, उसकी स्त्री का अपघात। (१३) शुक्र के द्विर्द्वादश में, पापग्रह हों अर्थात् दो पापग्रह के मध्य में शुक्र हो तो, उसकी स्त्री का उच्चस्थान से पतन द्वारा अपघात योग। अथवा वैसे शुक्र पर, किसी शुभग्रह की दृष्टि न हो तो, उसकी स्त्री का (फांसी लगाकर) अपघात योग। (१४) मीनस्थ सूर्य चन्द्र (फाल्गुन-चैत्र अमावास्या के समीप) लग्नस्थ हों, पापयुक्त हो, अष्टम में पापग्रह हो तो, किसी स्त्री द्वारा अपघात योग। (१५) सूर्य लग्न में, कन्याराशिस्थ चन्द्र सप्तम में, शुक्र मेष में हो तो, किसी स्त्री द्वारा अपघात योग। (१६) सूर्य लग्न में, कन्याराशि का पापयुक्त चन्द्र सप्तम में, शुक्र मेष में हो तो, किसी स्त्री के कारण, गृह या मन्दिर में अपघात योग। (१७) लग्नेश रन्ध्रेश-सप्तमेश एकत्र हों तो, स्त्री सहित अपघात योग। (१८) लग्नेश, केतु के साथ हो, इसके दोनों ओर (द्विर्द्वादश) में, पापग्रह हों और अष्टम में पापग्रह हो तो, माता के कोप से अपघात योग। (१९) नवमेश सूर्य, मंगल, एकत्र नवमस्थ हो, लग्नेश-सप्तमेश मित्र हों तो, दम्पती का अपघात योग।

[जल-द्वारा]

(१) सूर्य लग्न में, पाप-दृष्ट कन्या का चन्द्र हो तो, जल द्वारा या युद्ध द्वारा या सम्बन्धी-जन द्वारा. अपघात योग। (२) सूर्य-चन्द्र लग्न में, अन्य सभी ग्रह द्विस्वभाव में पाप दृष्ट हों तो, जलजन्तु द्वारा अपघात योग। (३) सूर्य-चन्द्र (मीन या) द्विस्वभाव राशिस्थ लग्न में हों, दो पापग्रह से दृष्ट हों तो, जल द्वारा अपघात योग। (४) सूर्य-चन्द्र (कन्या या) द्विस्वभावस्थ हो, पापदृष्ट या सहित हों तो, जल द्वारा अपघात योग। (५) शनि-चन्द्र, चतुर्थ या त्रिकमें हों और अष्टमेश एवं अष्टमभाव, पाप घेरे में हों तो, नदी या समुद्र में अपघात योग। (६) रन्ध्रेश (४।७।८।१०।११।१२ जलराशिस्थ) ४।६।१२ वें भाव में हों तो. सर्प-सिंह-मृग-कूप द्वारा अपघात योग। (७) शनि चतुर्थस्थ, चन्द्र सप्तमस्थ, मंगल दशमस्थ हो तो, कूप (कुआँ) द्वारा अपघात योग। (८) चतुर्थभावस्थ, लग्नेश-चतुर्थेश, दशमेश से दृष्ट हों तो, जल द्वारा अपघात योग। (९) चतुर्थेशस्थ राशीश पर, चतुर्थेश की दृष्टि या युति हो तो, जल-द्वारा अपघात योग। (१०) क्षीणचन्द्र, शनि या मंगल-राहु से युक्त, रन्ध्रस्थ हो तो, जल, अग्नि, पिशाच दोष से अपघात योग। (११) नीच, अस्त, पराजित ग्रह, चतुर्थ में हो, षष्ठस्थान में जलराशि हो तो, जल द्वारा अपघात योग। (१२) चन्द्र मकर में, शनि कर्क में हो तो, जलोदर या जल द्वारा अपघात योग। (१३) क्षीण-चन्द्र अष्टमस्थ हो तो, जल-द्वारा अपघात योग। (१४) लग्नेश निर्बल हो, चतुर्थ में पापग्रह हो तो, जल-द्वारा अपघात योग। (१५) सुखेश निर्बल हो, चतुर्थ में पापग्रह हो तो, जल-द्वारा अपघात योग (१६) सुखेश. पापयुक्त, केन्द्रस्थ हो तो, जल-द्वारा अपघात योग।

[महानिद्रा का स्थान]

(१) चौथे-दशवें पापग्रह हों, क्षीण-चन्द्र, छठवें या आठवें हो तो, शत्रु के षड्यन्त्र से तीर्थ में अपघात योग। (२) नवमेश नवमस्थ हो तो, तीर्थ या गंगा किनारे महानिद्रा (मृत्यु) होती है। (३) नवमेश नवम को, लग्नेश लग्न को, रन्ध्रेश रन्ध्र को देखता हो तो, शुभ तीर्थ में महानिद्रा। (४) अष्टमेश शुभग्रह हो, अष्टम में शुभग्रह हों तो, तीर्थ में महानिद्रा। (५) अष्टमेश नवमस्थ पर, शुभचन्द्र-बुध-गुरु-शुक्र की दृष्टि हो तो, द्वारकापुरी या तीर्थ में महानिद्रा। (६) अष्टमेश या लग्न से २२ वें द्रेष्काणपति, बुध या शुक्र होकर, नवमस्थ हो तो, द्वारकापुरी या तीर्थ में महानिद्रा। (७) अष्टमेश या लग्न से २२ वाँ द्रेष्काणेश गुरु, नवमस्थ हो तो, प्रयाग तीर्थ में महानिद्रा। (८) पूर्वोक्त सातवें योग में, चन्द्र हो तो, काशी तीर्थ में महानिद्रा। (९) पूर्वोक्त सातवें योग में, मंगल हो तो, परदेश में महानिद्रा। (१०) अष्टमभाव में चरराशि हो तो, जन्म स्थान से बाहर, अन्य देश में महानिद्रा। यदि स्थिरराशि हो तो, स्वगृह में। यदि द्विस्वभावराशि हो तो, जहाँ न घर हो और न परदेश (स्थिर रूप से) न हो, वहाँ महानिद्रा। (११) रन्ध्रेश पापग्रह होकर लग्नस्थ, लग्नेश से दृष्ट हो तो, अचानक अपने घर में महानिद्रा। हाँ, यदि ऐसे अष्टमेश पर, पापग्रह की दृष्टि भी हो तो, स्वजनों से रहित स्थान में महानिद्रा। (१२) नवमेश गुरु, अष्टमस्थ हो तो, शान्तिपूर्वक अपने घर में महानिद्रा। (१३) रन्ध्रेश पापग्रह, सप्तमस्थ हो तो, मार्ग (यात्रा करने) में महानिद्रा (१४) मंगल, नवम में हो तो, मार्ग में महानिद्रा। अथवा शनि, चरराशि या चरांश में हो तो, दूर-देश में महानिद्रा। (१५) नवमेश चन्द्र, रन्ध्रस्थ हो तो, विष्णु तीर्थ में महानिद्रा। (१६) नवमेश शुक्र रन्ध्रस्थ हो तो, काशीतीर्थ में महानिद्रा। (१७) नवमेश शुभग्रह रन्ध्रस्थ, शुभयुक्त-दृष्ट हो तो, काशीतीर्थ में महानिद्रा। (१८) तीनग्रह एकत्र हों, किन्तु चन्द्र न हो तो, सहस्त्रों पापों से विमुक्त होकर, गंगातीर में महानिद्रा। (१९) अष्टमेश, शुभग्रह, केन्द्रस्थ हो तो, ईश्वर का यश-गायन करते-करते, सुन्दर तीर्थ में महानिद्रा। (२०) शनि लग्न में, भौम व्यय में, सू. चं. बु. सप्तम में हो तो, विदेश में, मन्दिर में, वाटिका में महानिद्रा। (२१) सू. मं. व्यय में, चं. रा. सप्तम में, गुरु केन्द्र में हो तो, शुभस्थान, देवमन्दिर, वाटिका में महानिद्रा। (२२) रन्ध्रेश उच्च या स्वगृही हो तो, तीर्थ में महानिद्रा। (२३) गुरु या शुक्र के साथ लग्नेश हो तो, तीर्थ में महानिद्रा। (२४) सूर्य-राहु एकत्र हों तो, तीर्थ या पर्वत पर महानिद्रा। (२५) नवमस्थ गुरु हो तो, तीर्थ में महानिद्रा। (२६) बुध-शुक्र नवमस्थ हों तो, मार्ग या शिवालय या द्वारकापुरी में महानिद्रा। (२७) नवमेश लग्नस्थ हो तो, तीर्थ में महानिद्रा। (२८) नवमेश

(३७) शत्रुगृही शनि पर, शुक्र की दृष्टि या युति हो तो, हाथ कटने का अपघात योग। (३८) सूर्य-चन्द्र-मंगल-राहु, एकत्र अष्टम में हों तो, कर-पाद कटने का अपघात योग। (३९) धनेश-शनि-मंगल, एकत्र लग्न में हों तो, कान कटने का अपघात योग। (४०) रन्ध्रस्थ शुभग्रह, पापयुक्त-दृष्ट हो तो, शस्त्र या शत्रु द्वारा अपघातयोग।

[वज्रपात-पर्वतादि द्वारा]

(१) सूर्य-चन्द्र-मंगल-शनि, एकत्र अष्टम या त्रिकोण में हों तो, वज्रपात (बिजली) से या दीवाल गिरने से, तूफान से अपघात योग। (२) लग्नस्थ सूर्य, पंचमस्थ शनि, अष्टमस्थ चन्द्र, नवमस्थ भौम हो तो, वज्र या वृक्ष गिरने से अपघात योग। (३) चतुर्थ-दशम में, मंगल-सूर्य शनि हो तो, शूली (फाँसी) से, पर्वत से गिरना, वज्रपात द्वारा अपघात योग। (४) सूर्य लग्न में, ५।८ वें शनि-मंगल-९ वें चन्द्र हो तो, वज्रपात या पर्वत द्वारा या वृक्ष द्वारा या हल के फार की चोट से अपघात योग। (५) कारकांश-लग्न में धनुराशि हो तो, वाहन द्वारा या उच्च स्थान से पतन द्वारा अपघात योग। (६) दशम में सूर्य, चतुर्थ में मंगल हो तो, पाषाण द्वारा अपघात योग। (७) सूर्य-मंगल चतुर्थ में हो तो, पाषाण-द्वारा अपघात योग। (८) सुखेश, दशमेश से दृष्ट-युक्त हो तो, पाषाण-द्वारा अपघात योग। (९) सुखेश, शनि-राहु-युक्त, भौम दृष्ट हो तो, पाषाण द्वारा अपघात योग। (१०) सातवें-ग्यारहवें राहु हो तो, काष्ठ या पाषाण द्वारा अपघात योग। (११) शनि-सूर्य-राहु, लग्नस्थ हों तो, वृक्ष द्वारा अपघात योग। (१२) लग्नेश-षष्ठेश-रन्ध्रेश-मंगल एकत्र हों तो, वज्रपात, पर्वत, दीवाल गिरने से अपघात योग। (१३) सूर्य-मंगल दशम या चतुर्थ में हो तो, शिला (पाषाण) की चोट से अपघात योग। (१४) एकत्र लग्नेश-सूर्य, मकर-कुम्भ में हो तो, वज्रपात-द्वारा अपघात योग।

[विभिन्न कारण से अपघात]

(१) सूर्य-चन्द्र, कन्याराशिस्थ हों तो, स्वजन द्वारा अपघात योग। (२) सूर्य-शनि, अष्टम भावस्थ हो तो, विभूति (धनादि) द्वारा अपघात योग। (३) मंगल-बुध, सप्तम-दशम में एकत्र या पृथक् हों तो, यन्त्र (मशीन) द्वारा अपघात योग। (४) सूर्य-मंगल सप्तमस्थ, शनि अष्टमस्थ, पाप-चन्द्र चतुर्थस्थ हों अथवा पक्षी द्रेष्काण में लग्न हो तो, पक्षी द्वारा अपघात योग। इस योग के अपघात में, शव का अग्नि आदि संस्कार न होकर, पक्षी-भक्षण द्वारा शव-संस्कार होता है। प्रायः वन में या तूफान, भूकम्प, मेला, युद्ध-स्थल, पर्वत, नदी आदि एकान्त-स्थल में अपघात योग। (५) लग्न में शनि-चन्द्र हों, सप्तम में मंगल हो तो, यन्त्र (मशीन) द्वारा अपघात योग। (६) अष्टम में पापग्रह, रन्ध्रेश व्यय या केन्द्र में, लग्नेश निर्बल हो तो, कुमार्गी होने से अपघात योग। (७) दशम में मकर-कुम्भ गत (पापी) चन्द्र, मेष-वृश्चिक में सूर्य हो तो, विष्ठा के मध्य अपघात योग। (८) पापचन्द्र दशम में, सूर्य सप्तम में, मंगल चतुर्थ में हो तो, विष्ठा के मध्य अपघात योग। (९) तुलास्थ मंगल मेष-वृश्चिक में, वृषस्थ सूर्य, मकर-कुम्भस्थ चन्द्र हो तो, मल-मूत्रादि के मध्य अपघात योग। (१०) तुलास्थ मंगल, मेषस्थ शनि, कुम्भ-मकरस्थ चन्द्र हो तो, विष्ठा के मध्य अपघात योग। (११) शत्रुगृह से दृष्ट, शनि-राहु लग्नस्थ हो तो, पाप-कर्म द्वारा अपघात योग। (१२) शुक्र-स्थित राशि से, चौथे-आठवें, सूर्य-मंगल-शनि हों तो, अग्नि-द्वारा, उसकी स्त्री का अपघात। (१३) शुक्र के द्विर्द्वादश में, पापग्रह हों अर्थात् दो पापग्रह के मध्य में शुक्र हो तो, उसकी स्त्री का उच्चस्थान से पतन द्वारा अपघात योग। अथवा वैसे शुक्र पर, किसी शुभग्रह की दृष्टि न हो तो, उसकी स्त्री का (फाँसी लगाकर) अपघात योग। (१४) मीनस्थ सूर्य-चन्द्र (फाल्गुन-चैत्र अमावास्या के समीप) लग्नस्थ हो, पापयुक्त हो, अष्टम में पापग्रह हो तो, किसी स्त्री द्वारा अपघात योग। (१५) सूर्य लग्न में, कन्याराशिस्थ चन्द्र सप्तम में, शुक्र मेष में हो तो, किसी स्त्री द्वारा अपघात योग। (१६) सूर्य लग्न में, कन्याराशि का पापयुक्त चन्द्र सप्तम में, शुक्र मेष में हो तो, किसी स्त्री के कारण, गृह या मन्दिर में अपघात योग। (१७) लग्नेश-रन्ध्रेश-सप्तमेश एकत्र हों तो, स्त्री सहित अपघात योग। (१८) लग्नेश, केतु के साथ हो, इसके दोनों ओर (द्विर्द्वादश) में, [illegible] और अष्टम में पापग्रह हो तो, माता के कोप से अपघात योग। (१९) नवमेश, सूर्य, मंगल, [illegible] -सप्तमेश मित्र हों तो, दम्पती का अपघात योग।

[जल-द्वारा]

(१) सूर्य लग्न में, पाप-दृष्ट कन्या का चन्द्र हो तो, जल द्वारा या युद्ध द्वारा या सम्बन्धी-जन द्वारा अपघात योग। (२) सूर्य-चन्द्र लग्न में, अन्य सभी ग्रह द्विस्वभाव में पाप दृष्ट हों तो, जलजन्तु द्वारा अपघात योग। (३) सूर्य-चन्द्र (मीन या) द्विस्वभाव राशिस्थ लग्न में हों, दो पापग्रह से दृष्ट हों तो, जल द्वारा अपघात योग। (४) सूर्य-चन्द्र (कन्या या) द्विस्वभावस्थ हो, पापदृष्ट या सहित हो तो, जल द्वारा अपघात योग। (५) शनि-चन्द्र, चतुर्थ या त्रिकमें हों और अष्टमेश एवं अष्टमभाव, पाप घेरे में हों तो, नदी या समुद्र में अपघात योग। (६) रन्ध्रेश (४।७।८।१०।११।१२ जलराशिस्थ) ४।६।१२ वें भाव में हों तो. सर्प-सिंह-मृग-कूप द्वारा अपघात योग। (७) शनि चतुर्थस्थ, चन्द्र सप्तमस्थ, मंगल दशमस्थ हो तो, कूप (कुआँ) द्वारा अपघात योग। (८) चतुर्थभावस्थ, लग्नेश-चतुर्थेश, दशमेश से दृष्ट हों तो, जल द्वारा अपघात योग। (९) चतुर्थेशस्थ राशीश पर, चतुर्थेश की दृष्टि या युति हो तो, जल-द्वारा अपघात योग। (१०) क्षीणचन्द्र, शनि या मंगल-राहु से युक्त, रन्ध्रस्थ हो तो, जल, अग्नि, पिशाच दोष से अपघात योग। (११) नीच, अस्त, पराजित ग्रह, चतुर्थ में हो, षष्ठस्थान में जलराशि हो तो, जल द्वारा अपघात योग। (१२) चन्द्र मकर में, शनि कर्क में हो तो, जलोदर या जल द्वारा अपघात योग। (१३) क्षीण-चन्द्र अष्टमस्थ हो तो, जल-द्वारा अपघात योग। (१४) लग्नेश निर्बल हो, चतुर्थ में पापग्रह हो तो, जल-द्वारा अपघात योग। (१५) सुखेश निर्बल हो, चतुर्थ में पापग्रह हो तो, जल-द्वारा अपघात योग (१६) सुखेश. पापयुक्त, केन्द्रस्थ हो तो, जल-द्वारा अपघात योग।

[महानिद्रा का स्थान]

(१) चौथे-दशवें पापग्रह हों, क्षीण-चन्द्र, छठवें या आठवें हो तो, शत्रु के षड्यन्त्र से तीर्थ में अपघता योग। (२) नवमेश नवमस्थ हो तो, तीर्थ या गंगा किनारे महानिद्रा (मृत्यु) होती है। (३) नवमेश नवम को, लग्नेश लग्न को, रन्ध्रेश रन्ध्र को देखता हो तो, शुभ तीर्थ में महानिद्रा। (४) अष्टमेश शुभग्रह हो, अष्टम में शुभग्रह हों तो, तीर्थ में महानिद्रा। (५) अष्टमेश नवमस्थ पर, शुभचन्द्र-बुध-गुरु-शुक्र की दृष्टि हो तो, द्वारकापुरी या तीर्थ में महानिद्रा। (६) अष्टमेश या लग्न से २२ वें द्रेष्काणपति, बुध या शुक्र होकर, नवमस्थ हो तो, द्वारकापुरी या तीर्थ में महानिद्रा। (७) अष्टमेश या लग्न से २२ वाँ द्रेष्काणेश गुरु, नवमस्थ हो तो, प्रयाग तीर्थ में महानिद्रा। (८) पूर्वोक्त सातवें योग में, चन्द्र हो तो, काशी तीर्थ में महानिद्रा। (९) पूर्वोक्त सातवें योग में, मंगल हो तो, परदेश में महानिद्रा। (१०) अष्टमभाव में चरराशि हो तो, जन्म स्थान से बाहर, अन्य देश में महानिद्रा। यदि स्थिरराशि हो तो, स्वगृह में। यदि द्विस्वभावराशि हो तो, जहाँ न घर हो और न परदेश (स्थिर रूप से) न हो, वहाँ महानिद्रा। (११) रन्ध्रेश पापग्रह होकर लग्नस्थ, लग्नेश से दृष्ट हो तो, अचानक अपने घर में महानिद्रा। हाँ, यदि ऐसे अष्टमेश पर, पापग्रह की दृष्टि भी हो तो, स्वजनों से रहित स्थान में महानिद्रा। (१२) नवमेश गुरु, अष्टमस्थ हो तो, शान्तिपूर्वक अपने घर में महानिद्रा। (१३) रन्ध्रेश पापग्रह, सप्तमस्थ हो तो, मार्ग (यात्रा करने) में महानिद्रा (१४) मंगल, नवम में हो तो, मार्ग में महानिद्रा। अथवा शनि, चरराशि या चरांश में हो तो, दूर-देश में महानिद्रा। (१५) नवमेश चन्द्र, रन्ध्रस्थ हो तो, विष्णु तीर्थ में महानिद्रा। (१६) नवमेश शुक्र रन्ध्रस्थ हो तो, काशीतीर्थ में महानिद्रा। (१७) नवमेश शुभग्रह रन्ध्रस्थ, शुभयुक्त-दृष्ट हो तो, काशीतीर्थ में महानिद्रा। (१८) तीनग्रह एकत्र हों, किन्तु चन्द्र न हो तो, सहस्रों पापों से विमुक्त होकर, गंगातीर में महानिद्रा। (१९) अष्टमेश, शुभग्रह, केन्द्रस्थ हो तो, ईश्वर का यश-गायन करते-करते, सुन्दर तीर्थ में महानिद्रा। (२०) शनि लग्न में, भौम व्यय में, सू. चं. बु. सप्तम में हो तो, विदेश में, मन्दिर में, वाटिका में महानिद्रा। (२१) सू. मं. व्यय में, चं. रा. सप्तम में, गुरु केन्द्र में हो तो, शुभस्थान, देवमन्दिर, वाटिका में महानिद्रा। (२२) रन्ध्रेश उच्च या स्वगृही हो तो, तीर्थ में महानिद्रा। (२३) गुरु या शुक्र के साथ लग्नेश हो तो, तीर्थ में महानिद्रा। (२४) सूर्य-राहु एकत्र हों तो, तीर्थ या पर्वत पर महानिद्रा। (२५) नवमस्थ गुरु हो तो, तीर्थ में महानिद्रा। (२६) बुध-शुक्र नवमस्थ हों तो, मार्ग या शिवालय या द्वारकापुरी में महानिद्रा। (२७) नवमेश लग्नस्थ हो तो, तीर्थ में महानिद्रा। (२८) नवमेश

और चन्द्र रन्ध्रस्थ हों तो, सुखपूर्वक महानिद्रा। (२६) नवमेश बुध हो अथवा शुभदृष्ट बुध रन्ध्रस्थ हो तो, तीर्थ मे महानिद्रा। (३०) जन्म लग्न में चरराशि हो तो स्वदेश में, द्विस्वभावराशि हो तो विदेश मे, स्थिर राशि हो तो, मार्ग में महानिद्रा। (३१) अष्टमेश या शनि चरराशि या चरनवांश में हो तो विदेश में, स्थिर हो तो स्वदेश (स्वगृह) में, द्विस्वभाव हो तो मार्ग (यात्रावस्था) में महानिद्रा।

[राजकोप-शस्त्र-फाँसी द्वारा]

(१) चतुर्थ मे भौम, सप्तम में सूर्य, दशम में शनि हों तो, राजकोप, शस्त्र, अग्नि द्वारा अपघात योग। (२) सिंह का भौम, मेष-वृश्चिक का सूर्य, अष्टमेश से केन्द्र मे हों तो, राजकोप द्वारा अपघात योग। (३) मंगल-शनि अन्योन्य राशि मे हों, अथवा रन्ध्रेश से युक्त केन्द्र में हो तो, राजकोप द्वारा अपघात योग, अथवा शनि-मङ्गल रन्ध्र मे हों तो, ऊँचा बँधने से (फाँसी आदि से) अपघात योग। (४) मङ्गल-शनि अन्योन्य-राशि या नवांश मे हों, रन्ध्रेश केन्द्रस्थ हो तो, राजकोप द्वारा अपघात योग। (५) त्रिकोण में पापग्रह, शुभदृष्ट न हों तो, बन्धन (जेल) द्वारा अपघात योग। (६) सप्तमस्थ सूर्य, राहु-केतु युक्त हो, रन्ध्र में शुक्र, लग्न मे पापग्रह हो तो, बन्धन-द्वारा अपघात योग। (७) लग्न या चन्द्र से त्रिकोण मे पापग्रह हों, मङ्गल रन्ध्रस्थ हो तो, बन्धन या उद्वेग द्वारा अपघात योग। (८) अष्टमभाव का द्रेष्काण, सर्प-पाश-निगड हो तो, कारागार मे महानिद्रा या अपघात योग। (९) लग्न-त्रिकोण मे, पापग्रह या सू. श. मं. हों तथा क्षीण चन्द्र साथ हो तो, शूली (फाँसी) या आकस्मिक घटना या बेरसों पर अपघात योग। (१०) सूर्य चतुर्थस्थ, भौम दशमस्थ, क्षीणचन्द्र से दृष्ट हो तो, फाँसी द्वारा कारागार मे अपघात योग। (११) चतुर्थ मे भौम, दशम मे सूर्य या शनि हो तो, शूली या पर्वत द्वारा अपघात योग। (१२) सूर्य-मङ्गल एकत्र या पृथक् चतुर्थ-दशम में हो तो, पर्वत द्वारा या शूली से अपघात योग। (१३) पापयुक्त क्षीण चन्द्र, लाभ या त्रिकोण मे हो तो, शूली से अपघात योग। (१४) चतुर्थ मे मङ्गल या सूर्य हो तथा क्षीणचन्द्र-शनि युक्त हो, लग्न-त्रिकोण में पापग्रह हों तो, शूली से अपघात योग। (१५) चतुर्थ में मङ्गल, दशम में शनि हो तो, शूली से अपघात योग। (१६) मेष-वृष-मिथुन मे सभी ग्रह हों (राहु-केतु नहीं) तो, शूली से अपघात योग।

(१७) त्रिकोणस्थ क्षीणचन्द्र, शुभदृष्ट न हो तो, बन्धन से अपघातयोग। (१८) रन्ध्र-द्रेष्काणेश, पापग्रह होकर, चन्द्र से अष्टम मे हो तो, बन्धन से अपघात योग। (१९) लग्न नवांश का दशमेश, राहु-केतु युक्त हो तो फाँसी से अपघात योग। (२०) धनेश और षष्ठेश या लग्नेश-धनेश, राहु या केतु युक्त, त्रिकस्थ हों तो, फाँसी से अपघात योग। (२१) चतुर्थ या दशम मे मङ्गल-क्षीणचन्द्र एक साथ, शनि से दृष्ट हो तो लाठी आदि की मार से अपघात योग। (२२) पापचन्द्र अष्टम में, सूर्य लग्न या सुख में, शनि सुख या लग्न मे, मङ्गल दशम में हो तो, लाठी की मार से अपघात योग। (२३) षष्ठेश से युक्त शुक्र हो तथा पाप-नवांश के शनि या सूर्य-राहु युक्त हो तो, शिर कटने से अपघात योग। (२४) शनि नवम में, गुरु तीसरे मे अथवा दोनों अष्टम या व्यय में हों तो, हाथ कटने से अपघात योग। (२५) राहु-शनि-बुध दशमस्थ हों तो, हाथ में बड़ा-फोड़ा, चीर फाड़, आप्रेशन से अपघात योग। (२६) लग्न में शनि, राहुयुक्त क्षीणचन्द्र सप्तमस्थ हो, नीचस्थ शुक्र हो तो, हाथ-पैर कटने से अपघात योग। (२७) षष्ठेश शुक्रयुक्त हो और पाप राशिस्थ शनि या राहुयुक्त सूर्य हो तो, शिर कटने से अपघात योग। (२८) रन्ध्रेश सूर्य, शुक्र-दृष्ट हो अथवा राहु-युक्त शनि, क्रूरषष्ट्यंश का हो तो, शिर कटने से अपघात योग। (सूर्य पर शुक्रदृष्टि, पाश्चात्य मत से हो सकेगा) (२९) गुरु-शुक्र की दृष्टि, सूर्य पर हो और शनि, मङ्गल या राहु से युक्त हो तो, शिर कटने से अपघात योग। (३०) राहु कर्क में, चन्द्र सिंह मे अथवा चन्द्र-राहु रन्ध्रस्थ हों तो, शिर कटने से अपघात योग। (३१) सूर्य चतुर्थ मे, शनिदृष्ट-मङ्गल दशम में, क्षीणचन्द्र से युक्त या दृष्ट गुरु हो तो काष्ठ से अपघात योग। (३२) चन्द्र से त्रिकोण में, पापयुति-दृष्टि हो और लग्न का २२ वाँ द्रेष्काण, सर्प-निगड-पाश हो तो, फाँसी लगाकर, आत्म-हत्या से अपघात योग। (३३) रन्ध्रेश-भौमयुक्त लग्न में हो और चतुर्थ-दशम या त्रिकोण में पापग्रह हों तो, फाँसी लगाकर (आत्म-हत्या) अपघात योग। (३४) धनेश

और रन्ध्रेश राहु या केतु युक्त त्रिकस्थ हों तो, फाँसी लगाकर आत्महत्या से अपघात योग। (३५) लग्नेश से दृष्ट, चन्द्र-शनि-मान्दि-राहु एकत्र, त्रिकस्थ हों तो, कष्टयुक्त अपघात योग। (३६) शनि, रन्ध्र में, निर्बल चन्द्र दशम में, सूर्य चतुर्थ में हों तो, अचानक काष्ठ से अपघात योग। (३७) क्षीणचन्द्र, सुख या रन्ध्र में, शनि सप्तम में, मङ्गल द्वितीय में हों तो, काष्ठप्रहार से अपघात योग। (३८) सूर्य चतुर्थ में, शनि से दृष्ट मङ्गल दशमस्थ हों तो, काष्ठादि प्रहार से अपघात योग। (३९) सूर्य सुख में, मङ्गल कर्म में, पाप चन्द्रयुक्त, शनिदृष्ट हों तो, गिरने से या काष्ठ-प्रहार से अपघात योग। (४०) शुभदृष्टिरहित शनि लग्न में, क्षीण चन्द्र-राहु-सूर्य एकत्र हों तो, नाभि से ऊपरी भाग में, शस्त्राघात से अपघात योग। (४१) बुध-शनि, रन्ध्रस्थ हों तो, बन्धन या शूली से अपघात योग।

[अजीर्ण द्वारा]

(१) गुरुयुक्त लग्नेश, षष्ठस्थ हों तो, अजीर्ण द्वारा अपघात योग। (२) लग्नेश-सुखेश-गुरु, एकत्र हों तो, अजीर्ण द्वारा अपघात योग। (३) धनेश-सुखेश-रन्ध्रेश, रन्ध्रस्थ हों तो, अजीर्ण द्वारा अपघात योग (४) लग्नेश-धनेश-सुखेश एकत्र हों तो, अजीर्ण द्वारा अपघात योग। (५) धनेश-सुखेश-सप्तमेश एकत्र हों तो, अजीर्ण से अपघात योग।

[क्षयरोग द्वारा]

(१) पापदृष्ट शुक्र, रन्ध्र में हो तो, प्रमेह, वात, क्षयरोग द्वारा अपघात योग। (२) पापदृष्ट, जलराशिस्थ गुरु-चन्द्र रन्ध्रस्थ हों तो, क्षयरोग द्वारा अपघात योग। (३) लग्नेश, राहु-केतु युक्त रन्ध्रस्थ हो, केन्द्र में मान्दि हो तो, क्षयरोग द्वारा अपघात योग। (४) सूर्य और राहु से दृष्ट, मंगल और शनि षष्ठस्थ हों तो, क्षय रोग द्वारा अपघात योग। (५) सूर्य-राहु-गुरु, सप्तम या अष्टम में हों तो, क्षय रोग से अपघात योग। (६) शुक्र और चन्द्र से दृष्ट, (पाश्चात्त्य मत दृष्टि) मंगल और बुध, षष्ठस्थ हों तो, क्षयरोग द्वारा अपघात योग (७) षष्ठेश या सप्तमेश के साथ केतु हो या केतु की दृष्टि हो तो, क्षयरोग द्वारा अपघात योग। (८) षष्ठ या अष्टम में, जलराशिस्थ क्षीणचन्द्र पापयुक्त हो तो, क्षय रोग द्वारा अपघात योग। (९) सूर्य-चन्द्र अन्योन्याश्रय योग में हों तो, क्षय रोग या रक्त-पित्त-प्रकोप द्वारा अपघात योग। (१०) सूर्य-चन्द्र, अन्योन्य-नवांश में हों तो, क्षय रोग द्वारा अपघात योग। (११) सूर्य-चन्द्र एकत्र, कर्क या सिंह में हों तो, दुर्बल शरीर या कभी-कभी क्षय रोग द्वारा अपघात योग।

[विभिन्न योग द्वारा]

(१) धनभाव में शनि, चतुर्थ में चन्द्र, दशम में मंगल हों तो, घाव द्वारा अपघात योग। (२) क्षीणचन्द्र पर, बली भौम की दृष्टि हो तो, कृमि, घाव, गुदारोग, अर्श, भगन्दर, शस्त्र, अग्नि द्वारा अपघात योग। (३) शनि द्वितीय में, चन्द्र सुख में, भौम कर्म में हो तो, कृमि-कृत घाव, चीरफाड़ (आप्रेशन) द्वारा अपघात योग। (४) बली शनि से दृष्ट, क्षीणचन्द्र, रन्ध्रस्थ हो तो, चीरफाड़, नेत्ररोग, भगन्दर द्वारा अपघात योग। (५) क्षीणचन्द्र पर, बली भौम की दृष्टि हो, शनि रन्ध्रस्थ हो तो, अर्श, भगन्दर, आँत, कृमि रोग, शस्त्र, दाहक पदार्थ (तेजाब आदि) द्वारा अपघात योग। (६) लग्नेश या लग्ननवांशेश भौम हो, सूर्य लग्नस्थ हो, क्षीण चन्द्र-राहु एकत्र हों, बुध सिंह राशि या सिंहांश में हो तो, पेट फट जाने से अपघात योग। (७) मं. श. रा. युक्त, क्षीण चन्द्र, त्रिकस्थ हो तो, भयानक अपस्मार (मृगी) रोग से अपघात योग। (८) कन्याराशिस्थ चन्द्र, भौम-युक्त हो, त्रिक में शनि-राहु हों तो, रक्त-शोफ या रक्त-विकार या धनुष-टंकार (टिटनस या शार्टेज ऑफ ब्लड) द्वारा अपघात योग। (९) क्षीणचन्द्र, भौमयुक्त हो, त्रिक में शनि-राहु हों तो, उन्माद या विषूचिका आदि द्वारा अपघात योग। (१०) शनि-चन्द्र कर्कस्थ हों तो, लँगड़ा होने के बाद महानिद्रा या अपघात योग। (११) शनि धन में, चन्द्र सुख में, भौम दशम में हो तो, मुख में कृमि रोग द्वारा अपघात योग। (१२) धनस्थ पापग्रह हो, रन्ध्रस्थ निर्बली सूर्य या निर्बली भौम हो तो, पित्त-विकार से अपघात योग। (१३) रन्ध्रस्थ राहु, पापग्रह से दृष्ट हो तो, पित्तप्रकोप या चेचक द्वारा अपघात योग।

(१४) चन्द्र (११।६।८।१० राशिस्थ) शुभता रहित, पापग्रहों से घिरा हो तो, अग्नि या सन्निपात-ज्वर से अपघात योग। (१५) पापदृष्ट बुध, सिंहस्थ हो तो, त्रिदोष-ज्वर द्वारा अपघात योग। (१६) अष्टम में राहु या केतु हो तो, चातुर्थिक ज्वर द्वारा अपघात योग। (१७) अष्टमेश के साथ राहु-या केतु हो, अष्टमभाव क्रूरषष्ट्यंश में हो तो, चातुर्थिक ज्वर द्वारा अपघात योग। (१८) सूर्य से दृष्ट भौम, षष्ठस्थ हो तो, कफ या अतीसार द्वारा अपघात योग। (१९) चतुर्थस्थ, सूर्य-भौम, दशमस्थ शनि हो तो, शूलरोग द्वारा अपघात योग। (२०) पापयुक्त क्षीणचन्द्र, लग्न या त्रिकोण में हो तो, शूलरोग द्वारा अपघात योग (२१) चतुर्थ में सूर्य, दशम में भौम हो, इन पर पापचन्द्र की दृष्टि हो तो शूल रोग द्वारा अपघात योग।

[बुद्धि-रोग]

(१) पापराशिस्थ चन्द्र पर, सूर्य-मंगल की दृष्टि हो तो, ब्रह्म-हत्या करने वाला। (२) शनि-सूर्य-मंगल एकत्र हों तो ब्रह्म-हत्या करने वाला। (३) सूर्य-मंगल गुरु एकत्र हों तो, ब्रह्म हत्या करने वाला। (४) पाप ग्रहराशिस्थ (पापराशिस्थ) चन्द्र पर, सूर्य-मंगल-शनि की दृष्टि हो तो, गो-हत्या करने वाला। (५) लग्नेश मंगल की पूर्णयुति (एकांश में) हों तो, क्रूर हत्या करने वाला (अनेक जीवनाशक)। (६) पापयुक्त गुरु, नीचस्थ हो सूर्य नीचस्थ हो तो, बाल हत्या करने वाला। (७) पापग्रह केन्द्र में, पापदृष्ट शुक्र अष्टम हो तो, गौ मृगादि की हत्या करने वाला। (८) पापदृष्ट चन्द्र-बुध, (शुभदृष्टिरहित) दशमस्थ हों तो, पक्षी हत्या करने वाला।

नोट—होमियोपैथी में, आत्म हत्या या अन्य हत्या करना, एक रोग माना गया है। ऐसा, रक्त-दोष के कारण, क्रोधावेश या पागल हो जाने पर, करता है। उसकी अनेक औषधि भी बतायी हैं। ज्योतिष शास्त्रानुसार, अशुभ मंगल के कारण, ऐसी बुद्धि वाला हो जाता है। बुध से बौद्धिक हानि, शनि से धनहानि, मंगल से शरीरहानि [कारणों से], ऐसा अवसर आ जाता है।

[रन्ध्रस्थ-ग्रह द्वारा]

(१) प्राय देखा जाता है कि, यदि अष्टमभाव में कोई शुभग्रह हो तो सुखयुक्त महानिद्रा (मृत्यु) होता है। हाँ, जब पापग्रह बैठता है तब, कष्टयुक्त महानिद्रा होती है। जो ग्रह अष्टमस्थ हो, उसी के धातु-प्रकोप द्वारा अथवा उस ग्रह की जाति-अनुसार, मनुष्य के आघात से महानिद्रा होती है। (२) अष्टमस्थ सूर्य में अग्नि-पित्त-ज्वरादि से। चन्द्र में जल, अतीसार, रक्त-विकार से। मंगल में शस्त्र, अचानक कारण हैजा प्लेगादि से। बुध में ज्वर, चेचकादि से। गुरु में जिस रोग का निदान कठिन हो। शुक्र में प्यास (तृषा), वीर्यरोग से। शनि में क्षुधा या अधिक भोजन से, महानिद्रा होती है। विशेष चक्र ६७ में देखिए।

चक्र ६७

अष्टमस्थ ग्रह	सूर्य (अग्नि)	चन्द्र (जल)	मंगल (शस्त्र)	बुध (ज्वर)	गुरु (कठिन निदान)	शुक्र (प्यास)	शनि (भूख)
उच्च	अग्निप्रवेश से	नल से	युद्ध से	ज्वर से	अनेक रोग से	तृष्णा या लाभ	भूख से
नीच	दावाग्नि से	स्त्री कारण	शत्रु से	ज्वर से	सगोत्र से	त्रिदोष से	बन्धुवर्ग से
उच्चांश	लज्जा से	हाथकी चोट	गोरक्षा करने से	कफरोग से	शूल रोग से	मुखरोग से	उपवास से
नीचांश	दम्भ से	पित्त कफ से	विप्र, शस्त्र से	महारोग से	हैजा से	हैजा से	शत्रु द्वारा
मित्रराशि	विषभोजन से	उदररोग से	काष्ठ द्वारा	मुखरोग से	मृत्यु, शोक से	सर्प द्वारा	महाहृद्रोग
शत्रुराशि	रक्तविकार से	गुप्तरोग से	गुप्तरोग से	बन्धन से	स्वामी द्वारा	विष-कण्ठ से	अश्व द्वारा
मित्रांश	बन्धन से	गुदारोग से	जल कुआँ से	नेत्ररोग से	रक्त-प्रकोप से	विष द्वारा	पक्षी द्वारा
शत्रुांश	क्षय, श्वास से	पशु द्वारा	विषभोजन से	उदररोग से	राजकोप से	स्त्री कारण	गज से
स्वगृही	उष्णता से	क्षयरोग से	चोर द्वारा	पाद व्रण से	अधिकभोजन से	अतिकष्ट से	गधे से
वर्गोत्तम	लौह से	पशु द्वारा	दीवालगिरने से	वातरोग से	अश्व द्वारा	मकड़ीके घाव से	घाव से
शुभ षड्वर्ग	प्रमाद से	तलवार से	आत्म हत्या से	वातरोग से	कर्णरोग से	दन्तरोग से	अनशनव्रत से
क्रूर षड्वर्ग	अग्नि से	सन्निपात से	पाषाण द्वारा	वियोग से	अतीसाररोग	वन्यपशु से	क्षय रोग से

[रन्ध्र-दृष्टा ग्रह द्वारा]

सूर्य—अग्नि या पित्त-प्रकोप । चन्द्र—जल या कफ रोग । मंगल—शत्रु, अस्त्र, उष्णता । बुध—ज्वर, त्रिदोष । गुरु—अज्ञातरोग, कफरोग । शुक्र—प्यास, वात-कफ रोग । शनि—भूख, वायु रोग । इन ग्रहों का दृष्टि-फल, अष्टमस्थ ग्रहों के समान है । अष्टमस्थ राशि द्वारा । (शरीर-विभाग पृष्ठ ४३७ से) तथा ग्रहों से (पूर्वोक्त चक्र ६७ से) जानकर, साथ ही महानिद्रा के योगों का ध्यान रखकर अनुमान कीजिए । यथा, [चक्र २४] मिथुनस्थ सूर्य-बुध से [क] गला, कन्धा, बाहु, फुस्फुस, श्वास, रक्त, गले, कन्धे, हाथ की अस्थि [ख] शिर, अग्नि, अस्थि, पित्त [ग] पेट, चर्म, स्नायु, त्रिदोष, इन तीनों कारणों में बुध [ग के कारण ही] बलिष्ठ हैं ।

लग्न का २२ वाँ द्रेष्काण

लगभग अष्टमभाव का द्रेष्काण होता है । तात्पर्य यह है कि, अष्टमेश और अष्टमभाव का द्रेष्काणेश, इन दोनों में, जो बली होगा, उसी के आधार पर, मृत्यु-कारण-अनुमान किया जाता है । जब अष्टमभाव पर, पापयुति-दृष्टि हो तो, अष्टम-द्रेष्काण के आधार पर अनुमान करना, आगे चक्र ६८ में लिखा गया है ।

चक्र ६८

क्रम	राशि	द्रेष्का. राशि	कारण	क्रम	राशि	द्रेष्का. राशि	कारण
	मेष				तुला		
१	१	१	बिच्छू-सर्प, द्विपद, पित्तरोग से	१९	१	७	स्त्री से, पशु, ऊँचे से गिरना ।
२	२	५	जल या जलजन्तु से	२०	२	११	उदर रोग से
३	३	९	बावली, तालाब, कूप, नदी से	२१	३	३	तुम्बी आदि लघु प्रहार से
	वृष				वृ.		
४	१	२	अश्व-ऊँट, गधा आदि पशु से	२२	१	८	शस्त्र, विष, स्त्री के अन्न खाने से
५	२	६	पित्त, अग्नि, चोर, बकरी आदि से	२३	२	१२	श्वान आदि पशु द्वारा
६	३	१०	वाहन या युद्ध से	२४	३	४	हाथी, ऊँट, मृग, पशु से
	मिथुन				धनु		
७	१	३	बुरी बीमारी, श्वास, कफ रोग से	२५	१	९	वात-प्रकोप से
८	२	७	साँड़ आदि पशु या ऊँचे से गिरना	२६	२	१	विष, अग्नि, मल-मूत्रादि से
९	३	११	वन्यपशु या ऊँचे से गिरना	२७	३	५	उदररोग, जलजीव से
	कर्क				मकर		
१०	१	४	कण्ठरोग, मन्दाग्नि, शस्त्राघात से	२८	१	१०	शूकरादि पशु या राजकोप से
११	२	८	लाठी, मुक्का, लात के आघात से	२९	२	२	जलजीव; कोड़ा-बेंत आघात से
१२	३	१२	अजीर्ण,दस्त, प्लीहा, गुल्म,मूर्छा,प्रमेह	३०	३	६	चोर, शस्त्र, गिरने से
	सिंह				कुम्भ		
१३	१	५	विष, जल, रोग, हिंसक पशु से	३१	१	११	जलजीव, स्त्री, विष से
१४	२	९	जलजीव, हृदयरोग से	३२	२	३	गुदारोग या कामान्धता से
१५	३	१	गुदारोग, विष, शस्त्राघात से	३३	३	७	पशु या मुखरोग से
	कन्या				मीन		
१६	१	६	चोर, अग्नि, पक्षी, शिररोग से	३४	१	१२	संग्रहणी रोगसे
१७	२	१०	प्यास, सर्प, दंशजीव, अश्व से	३५	२	४	प्रमेह या गुल्म रोग से
१८	३	२	पशु, जल, शस्त्र, स्त्री के अन्न खाने से	३६	३	८	जल,अर्श,मलमूत्र,कोहनी,घुटनारोग।

[अष्टमस्थ-राशि या नवांश द्वारा]

मेष —ज्वर, विष, उदर-पित्त-अग्नि से।
वृष —त्रिदोष, दाह, जलन, शोक से।
मिथुन—श्वास, कास, शूलादि रोग से।
कर्क —मन्दाग्नि, अरुचि से।
सिंह —फोडा, शस्त्र, ज्वर से।
कन्या —जठराग्नि, गुप्तरोग, युद्ध, पतन से।
तुला —मूर्खता से, ज्वर, सन्निपात से।
वृश्चि.—पाण्डु या संग्रहणी रोग से।
धनु —वृक्ष, जल, शस्त्र, काष्ठ से।
मकर —अरुचि, मतिभ्रम, सर्प, पशु से।
कुम्भ —सर्प, पशु, शस्त्र, ज्वर, क्षय, श्वासरोग से।
मीन —मार्ग में, सर्प, जलजीव, मेघ-प्रकोप से।

[लग्नेश के नवांश द्वारा]

मेष —ज्वर, पित्त, जठराग्निदोष से
वृष — दमा, शूल, प्रमेह, सन्निपात स
मिथुन—शिर-पीडा, श्वास रोग से
कर्क —वात रोग, उन्माद रोग से
सिंह —विस्फोटक, घाव, विष, शस्त्र, ज्वर से
कन्या —गुप्तांग रोग, जठराग्नि विकार से
तुला —शोक, बुद्धिदोष, पशु ज्वर से
वृश्चि.—पत्थर, शस्त्र, पाण्डु, समहणी से
धनु —कष्टप्रद गठिया, विष, शस्त्र से
मकर —व्याघ्रादि पशु, शूल (कोलिक), अरुचि से
कुम्भ —स्त्री स. श्वास, ज्वर से
मीन —जल, संग्रहणी रोग से

[गुलिकांश से सप्तमस्थ ग्रह द्वारा]

गुलिक नवांश राशि से, ७ वें बली शुभग्रह होने से, सुखपूर्वक मृत्यु होती है। किन्तु, पापग्रह सूर्य हो तो राजकोप, जलजीव से, मंगल हो तो युद्ध, कलह, ईर्षा से, शनि हो तो चोर, दानव, सर्प, हिंसक पशु या बुरे प्रकार से मृत्यु होती है।

नोट—रोग, अपघात, मृत्यु, कुमार्ग पर बुद्धि होने के, अनेकानेक योग, यहाँ दिखाये गये हैं। परन्तु, इतने ही 'अल' नहीं हैं। ग्रन्थान्तरों मे, और भी अनेकानेक योग भरे पड़े हैं। जिनका इकट्ठा करना, एक मनुष्य क, एक जीवन का काम नहीं है। आयुर्वेद (वैद्य, डाक्टर, सर्जिकल, फिजिकल, होमियोपैथी, बायोलाजी) और ज्योतिष (फलित, प्रश्न, रमल, सामुद्रिक) द्वारा अच्छा ज्ञान होने पर और भी योगों का अनुसन्धान किया जा सकता है। हवाई जहाज का गिरना। (उच्चात् पतनम्) (अग्नि-भयम्) (वाहन-भयम्) बाम्ब, टैंक, तोप, आदि (अग्नि, शस्त्र, युद्ध) मादक पदार्थ, रासायनिक पदार्थ (विष) गदर, भूकम्प, बलवा, अकालपीडित, नदी बाढ, ओला आदि से मृत्युएँ, आकस्मिक घटना, सामूहिक मृत्यु आदि समझकर, युक्ति से निर्णय कीजिए।

पाश्चात्य मत

(१) प्राय, सूर्य, रन्ध्रेश या अष्टमस्थानस्थ ग्रह के अशुभ-योग होने के कारण, मृत्यु सम्भव होती है। (२) यदि शनि, षष्ठाष्टम स्थान में हो तो मृत्यु, पुराने रोग से, स्थिररोग से होना, सम्भव है। शनि, जिस राशि मे हो, प्राय उसी राशि-सूचित, उसी अंग के द्वारा मृत्यु सम्भव है। (३) यदि मंगल, षष्ठाष्टम स्थान मे हो तो मृत्यु, सांक्रामिक रोग, हैजा, प्लेग, दैवी—(आकस्मिक) चेचक, सन्निपात, ज्वर, अग्नि, शस्त्र, दाहक रोग मे सम्भव है। (४) गुरु-शुक्र, अष्टमभाव मे हो तो शान्तिपूर्वक (वेदना रहित), मृत्यु होती है। (५) पुरुष कुण्डली की अपेक्षा, स्त्री की कुण्डली मे सूर्य यदि, अष्टमभाव मे हो तो, अधिक अशुभ होता है। प्रसूति रोग, त्रासदायक, वेदनायुक्त स्थिति मे मृत्यु होती है। (६) मृत्यु जानने के लिए, चतुर्थेश और चतुर्थ भाव पर भी ध्यान दीजिए। क्योंकि, यह पाताल स्थान, अन्तकाल का दर्शक होता है। (७) मृत्यु, किस समय होगी ? यह वर्षफल या ग्रहों का दृष्टिकोण जानने पर भी निश्चित करना, असम्भव, नहीं तो अत्यन्त कठिन अवश्य है। (८) पुरुष के लिए सूर्य, स्त्री के लिए चन्द्र ही, आयु प्रदाता होता है। हाँ, जब सूर्य या चन्द्र से, शनि-

मंगल-राहु-केतु का अशुभ योग, जन्मलग्न-लग्नेश, वर्षलग्न-वर्षलग्नेश, वर्षेश के समीप हो (अर्थात् उदित भाग में हो) तभी, आकस्मिक अपघात या मृत्यु होना, पुरुष या स्त्री के लिए सम्भव है। (६) बहुधा सम्भव है कि जब, शनि या मंगल, सूर्य-चन्द्र से अशुभ योग करता है, अथवा लग्न पर, पापग्रह की दृष्टि होती है, तभी पुरुष या स्त्री की मृत्यु होती है। यदि ऐसा (सम्भव) योग, स्थिरराशि में हो तो, व्यभिचार से, गला दबने से, मकान गिरने पर शरीर दबने से मृत्यु होती है। १।२।५।६।१० राशिस्थ शनि हो तो, दंशन (सर्पादि) से मृत्यु होती है। वृश्चिक में शनि हो तो, सर्प से मृत्युयोग (अष्टमभाव में हो या सूर्य-चन्द्र से, अशुभ योग करता हो तभी)। अष्टमस्थ जलराशि का शनि, सूर्य से अशुभदृष्टियोग करता हो तब, जल से मृत्यु-योग सम्भव है। चरराशि में शनि हो तो, मकान गिरने से मृत्यु होती है। (१०) मंगल, अष्टमभाव में हो, आयुर्दायक ग्रह से अशुभदृष्टियोग करता हो तो, युद्ध में मृत्यु, शस्त्राघात से या अन्य किसी कारण से, रक्त-स्राव होकर मृत्यु। ऐसा मंगल, वृश्चिकराशि में हो तो, शस्त्रक्रिया (आप्रेशन) से मृत्यु होती है। ऐसा मंगल, अग्नि-राशि में हो तो, अग्नि द्वारा मृत्युयोग। यदि अष्टमभाव में ३।६।११ राशि व धनु के पूर्वार्ध भाग में मंगल होकर, आयुर्दायक ग्रह से, अशुभदृष्टियोग करता हो तो, युद्ध से, शत्रु से, विपरीत बुद्धि से, स्फोटक द्रव्य से, रेलवे अपघात से, मोटर अपघात से, आत्महत्या से, डाक्टर-वैद्य की भूल द्वारा औषधि सेवन से मृत्यु होती है।

विविध—योग

(१) शनि से चतुर्थ भाव में बुध हो तो, थोड़ा कम सुनने वाला होता है। (२) बारहवें शुक्र हो तो, बायें कान से कम सुनाई देता है। (३) वायु या भूमि राशि का शनि, पापदृष्ट-युक्त हो तो, ४० वर्ष के बाद बधिर (बहिरा) होता है। मंगल से दृष्ट या युक्त हो तो कान में व्रण होता है, मैल निकलता है। तृतीयस्थ शनि-मंगल हो तो, कान में फोड़ा या पीब बहती है। (४) मेषस्थ शनि-चन्द्र, लग्न में हो अथवा मेषस्थ चन्द्र-शुक्र हो, छठवें भाव में बुध हो अथवा मेष-कर्क का शुक्र लग्न में हो, अथवा लग्न में चन्द्र-शुक्र हो, अथवा लग्न में चन्द्र, आठवें बुध हो तो, उसका मुख, दुर्गन्धि-युक्त होता है। (५) द्वितीयभाव में मंगल, बुध, शनि, राहु, जल या अग्नि राशि में हो तो, बोलने में स्पष्ट स्वर नहीं होता। (६) लाभेश षष्ठस्थ हो तो, प्रायः रोगयुक्त। (७) बारहवें शनि, पापयुक्त हो तो, अत्यन्त रोगी, बीमारी के कारण, व्यापार में अव्यवस्था, अधिक समय तक अस्पताल में ही पड़े रहना (स्थिररोगी) होता है। (८) सूर्य-गुरु-शनि, एकत्र चतुर्थभाव में १।३।५।६।१० राशिस्थ हों तो, हृदयरोग द्वारा, अचानक मृत्यु होती है। (६) यदि योग ८ वाँ छठवें या आठवें भाव में हो तो, आकस्मिक मृत्यु हो जाती है।

नोट—लग्न से सप्तम तक अनुदित (अदृश्य) और सप्तम से लग्न तक उदित (दृश्य) भाग होता है। आगे दी गई राशियाँ, यदि लग्न में हों तो, सामान्यतः लग्न से विचार कीजिए। परन्तु यदि, उदित भाग में सूर्य (किन्तु स्त्री के लिए चन्द्र) हो तो, सूर्य (चन्द्र) की राशि द्वारा ही विचार कीजिए [लग्न द्वारा नहीं]।

मेष

यह बुद्धि-दर्शक राशि है। इसका प्रभाव, शिर पर विशेष होता है। इस राशि की लग्न या सूर्य होने से, सुन्दर आकृति वाला होता है। इसे नाटक, तमाशा, गाना-बजाना, नाद (आवाज कार्य) के कारण, जागरण न करना चाहिए। इसे, मस्तिष्क या मानसिक तथा शारीरिक विश्राम, अत्यन्त आवश्यक होता है। निद्रा लाने के लिए, मादक पदार्थ का, कभी-भी सेवन न करना चाहिए। यथा-सम्भव, शान्त-स्थिति में रहना चाहिए। शारीरिक या मानसिक परिश्रम अधिक हो जाने पर, शीघ्र ही स्वास्थ्य बिगड़ने का भय रहता है। अतः नियमित विश्राम करना ही चाहिए। सात्त्विक भोजन, वनस्पति आहार, चना का प्रयोग, समुचित करना चाहिए। माँसाहार, स्वल्प मात्रा में, कभी-कभी कर सकता है, किन्तु, करना ही आवश्यक नहीं। शुद्ध वायु सेवन, साधारण व्यायाम उचित है। उत्तेजक, मादक, गरिष्ठ, मसालेदार पदार्थ, हानिकारक हैं।

इस राशि का गुणधर्म उष्ण है, अतः उष्णविकार से प्रकृति में अव्यवस्था होती है। यदि मंगल हो तो, गृह-कलह, शत्रु-बाधा, उतावली या अविचारी बुद्धि होती है; अतः हठ और ईर्षा के त्याग से स्वस्थता रहेगी। यदि मेष लग्न (मेषस्थ सूर्य के साथ) में बुध हो तो, पढ़ने वाला, जोर से पढ़ता है; परन्तु, इसे धैर्य से पढ़ना चाहिए अर्थात् पढ़ने-लिखने के सभी कार्य, धैर्य से करना चाहिए, रात्रि में, बुद्धि-कार्य नहीं करना चाहिए। यदि गुरु हो तो, रक्त शुद्धि रखना चाहिए। यदि शुक्र हो तो, कान्तिवर्धक, केशवर्धक (सुवासित) तेल का उपयोग नहीं करना चाहिए, हाँ, आयुर्वेद मत से, औषधि-तेल उपयोग कर सकते हैं। यदि शनि हो तो, शीत से सावधान रहिए, मस्तिष्क और कान के रोगों पर ध्यान रखिए, बधिरता, मूर्च्छा, लकवा होना, सम्भव है।

वृष

इस राशि मे, जीवनशक्ति पूर्ण होती है। हृदय और गले की बीमारी होना, सम्भव है। इस राशि से प्रभावित जातक, सुख (चैन) पूर्वक रहने वाला, आराम-पसन्द ही होता है। यह राशि, लग्न में या सूर्य युक्त (स्त्री के लिए चन्द्र युक्त) हो तो, व्यायाम आवश्यक है। यह राशि, शरीर में मेद-वृद्धि करती है, भूख अच्छी लगती है। यदि इस राशि वाला व्यायाम न करता हो, उसे पौष्टिक पदार्थ या चर्बी बढ़ाने वाले पदार्थ, अधिक न खाना चाहिए। खाने-पीने पर, नियमित ध्यान रखना चाहिए। हृदय रोग होने का भय रहता है, अतएव, दौड़ना, हाँफने वाले कार्य, बहुत बोलने वाले कार्य, चिल्लाना आदि वर्जित है। मन उदास होने पर, गाना गाने (मध्यम स्वर से उचित) या सुनने से मन, आनन्दित तथा आराम पायगा। इस राशि वाले को, गाने का बड़ा चाव (शौक) होता है। मादक पदार्थ वर्जित है। केवल हृदय-गति को समुचित रखने के लिए, उत्तेजक औषधि का प्रयोग किया जा सकता है। भूख अच्छी होते हुए, यथा-सम्भव उष्णतावर्धक, चर्बी बढ़ाने वाले, शकर के पदार्थ (बादाम आदि), थोड़े, उपयोग कर सकते हैं। परन्तु आसव-अरिष्ट (माल्ट) का उपयोग, कदापि न करना चाहिए। भोजन में, अधिक नमक प्रयोग कीजिए, जिससे गला साफ-स्वस्थ रहे। इस राशि का गुण-धर्म, ठंढा और रूखा है। यात्रा (बाहरी प्रान्त) आदि वेला में, थोड़ा-सा उत्तेजक पदार्थ सेवन करना, श्रेष्ठ है। इस राशि के लग्न मे होने पर या सूर्य के साथ मगल हो तो, अच्छा गला नहीं रह पाता, बारम्बार आवाज बिगड़ने की सम्भावना रहती है। यदि बुध हो तो, अतिशय गाने से या बहुत बोलने से (वक्ता या गायक की) आवाज बिगड़ने का भय रहता है। यदि गुरु हो तो, कृपया थोडी आराम-पसन्दगी कम कीजिए, तब स्वास्थ्य अच्छा रहेगा। यदि शुक्र हो तो, गले म रूमाल आदि से पट्टा कसिये, नहीं तो शीत के कारण कष्ट होगा। यदि शनि हो तो, गले का विकार होना, अधिक सम्भव है, अतएव गल-पट्टा बाँधने का सर्वदा ध्यान रखिए।

मिथुन

यह राशि, बड़ी बुद्धि-शालिनी है। शरीर शक्ति की अपेक्षा, बुद्धि-शक्ति, अधिक होती है। हाँ, फेफड़ा और मज्जातन्तु दुर्बल होते हैं। अतः ऐसा व्यायाम (प्राणायामादि) करे, जिससे शुद्ध हवा से श्वास-क्रिया, समुचित रह सके। यह राशि, लग्न में या सूर्ययुक्त (स्त्री के चन्द्र युक्त) हो, तभी इसके फल होते हैं। भय, मस्तिष्क या मानसिक अस्वस्थता के कारण, मज्जातन्तु दुर्बल होते हैं, घूमने फिरने-टहलने से स्वस्थता रहेगी। मानसिक कार्य, अधिक न करना चाहिए। प्राय उष्ण (ऊनी) वस्त्रोपयोग, छाती ढकने के लिए, करते रहना चाहिये, जिससे फेफड़े में बल पहुँचता रहे, अन्यथा श्वासनली मे विकार होगा। पौष्टिक-पदार्थ का, अधिक उपयोग करना चाहिए। जिससे मेदा, रक्त, ताम्रधातु की स्वस्थता हो सके। उत्तेजक और चर्बी बढ़ाने वाले (तेलदार) पदार्थ आवश्यक नहीं। हाँ, फल और दूध, उत्तम भोजन रहेगा। रात्रि में कठोर एव रूखे अन्न के पदार्थ, नहीं खाना चाहिए। इस राशि का गुण-धर्म, उष्ण-आर्द्र है। यदि मगल हो तो अति अशुभ, फेफड़ा अत्यन्त दुर्बल हो जाता है, खाँसी का रोग, जम जाने की सम्भावना रहती है। यदि बुधयुक्त

हो तो, फेफड़े पर अधिक ध्यान रखिए, अधिक व्यायाम करना चाहिए। यदि गुरु हो तो श्रेष्ठ, केवल खाने-पीने का थोड़ा नियम अवश्य रखिए। यदि शुक्र हो तो, रक्त-विकार से चर्मरोग होना, सम्भव है। यदि शनि हो तो, प्रायः शरीर या प्रकृति अस्वस्थ रहती है, शीत विकार होने का भय रहता है।

कर्क

यह राशि दुर्वल (निर्वल) है, परन्तु वाहरी दृष्टि से; जातक मोटा होता है। यह राशि, लग्न में या सूर्य युक्त (स्त्री-चन्द्र युक्त) हो तो, शरीर में प्रायः पाचन-क्रिया की गड़बड़ी रहती है। अतएव अतिशय पाचक (पका अन्न) हलका अन्न (पदार्थ) खाना चाहिए। कच्चे पदार्थ, तले पदार्थ, द्विदल पदार्थ, मूल (जड़) पदार्थ न खाना चाहिए। मादक पदार्थ सर्वदा वर्जित हैं। सभी प्रकार के भय, आलस्य, अतिश्रम से यथा-सम्भव दूर रहिए; अन्यथा पाचन-क्रिया विगड़ती चली जायगी। प्रकृति (स्वास्थ्य) विगड़ने पर, जल का किनारा, नदी या समुद्रीय प्रदेश उत्तम हैं। नौका-विहार श्रेष्ठ है। इस राशि वाले, प्रायः सन्देहास्पद बुद्धि वाले, हो जाते हैं। अतएव किसी भी रोग के लक्षण, पढ़ते-सुनने-देखने पर, उस रोग को, अपने शरीर में भी है, समझने वाले, हो जा सकते हैं। सारांश यह है कि, अल्परोगी या विना रोग के ही, अपने को रोगी समझने वाले, होते हैं। वीर-गाथा सुनना-देखना श्रेयस्कर है। अकल्प-कल्पना तथा सर्वदा शंकितबुद्धि से सचेत रहिए। अनेक प्रकार के औषधि-सेवन करना, हानिकर है। हाँ, ऊषा-पान (प्रातः विना भोजन किये, शौचादि के उपरान्त, ताजा जल पीना अथवा सायंकाल, एक ताम्रपात्र में जल भरकर, काष्ठ (पटा) पर रखे, प्रातः सोकर उठने से पूर्व, शय्या में ही वैठे, ताम्रपात्र का जल पीना—इस विधि में कोई भूल न कीजिए। परन्तु ऊषा-पान, प्रारंभ में एक छटाँक से, क्रमशः वढ़ाकर सेर भर तक कर सकते हो) करने के वाद, चने के पदार्थ अवश्य खाना चाहिए। इससे पाचन-शक्ति वढ़ेगी। इस राशिका गुण-धर्म, शीत-आर्द्र है। मुख्य प्रभाव, पाचनशक्ति तथा मन पर रहता है। इसमें मंगल हो तो, सांक्रमिक रोग का विशेष भय रहता है; क्योंकि इनकी कोमल प्रकृति होती है। स्त्रियों को प्रसूतिज्वर (सेप्टिक प्वाईजनिंग) का अधिक भय होता है; अतएव अधिक स्वच्छता रखने का प्रवन्ध कीजिए। यदि बुध हो तो श्रेष्ठ; केवल कल्पनाशक्ति का व्यर्थ (अपव्यय) प्रयोग करता है। यदि गुरु हो तो शरीर आरोग्य, किन्तु उच्चरीति का रहन-सहन होने के कारण, आराम-पसन्द (आलस्य), दुर्गुण आ जाता है। यदि शुक्र हो तो, जागरण करने के कारण अथवा अनियनित विहार (वर्ताव) करने के कारण, स्वास्थ्य विगड़ता जाता है। यदि शनि हो तो, अत्यन्त अशुभ होता है, पाचन-क्रिया का सुधार होना कठिन, शीतरोगों का दौरदौरा अधिक, अन्त्रसम्बन्धी, अधिक कठोरता हो जा सकती है; जिस पर, सर्वदा ध्यान रखना चाहिए।

सिंह

राशिचक्र के मध्य में यह राशि, लग्न में या सूर्य-चन्द्र युक्त हो तो, खाने-पीने में अधिक श्रम या समय नहीं लगाना चाहिए। इसे नियमित रखना चाहिए। एकाध दुर्गुण आने पर उन्हें, छोड़ने में असमर्थ होता है। उष्ण पदार्थ तथा मादक वस्तुओं का एकदम परित्याग करना चाहिए। भोजन परिमाण में, कमी करनी चाहिए। इस राशि का गुण-धर्म, उष्ण है अतएव उष्णपदार्थ प्रयोग होने से, प्रकृति (स्वास्थ्य) विगड़ने का भय रहेगा। इसमें यदि मंगल हो तो, अतिशय उतावला या अतिकामी होता है। यदि बुध हो तो, वक्ता होने पर, वोलने में कमी करनी चाहिए, क्योंकि छाती पर अधिक जोर पड़ने से कमजोरी आयेगी। यदि गुरु हो तो, आरोग्यता रहेगी, हाँ, खाने-पीने का शुमार (क्रम) नहीं होता। यदि शुक्र हो तो, श्रेष्ठ। यदि शनि हो तो, शारीरिक परिश्रम अधिक नहीं हो पाता अथवा जीवन में अनेक आपत्तियाँ आती हैं; जिनके कारण, धैर्य छूटता जाता है, । हाँ, ऐसे (शनि वाले) व्यक्ति को, थोड़ी (उचित) मात्रा में, मद्य या अन्य उत्तेजक-पदार्थ का प्रयोग करना, आवश्यक है।

कन्या

इस राशि की शक्ति, शरीर द्वारा नहीं जानी जा सकती। हाँ, जब कोई प्रबन्धकार्य हो तब, इसी राशि वाला, अधिक शक्तिमान् रहेगा। क्योंकि इसका प्रभाव मन पर विशेष होता है। [illegible]

स्थिति, अत्यन्त सुन्दर होती है। शरीर का कोई भाग, इसका दुर्बल होता है या हो सकता है, जिसके लिए, समय, वायु, भोजन-पदार्थ में परिवर्तन करना चाहिए। ऐसा करने से, स्वास्थ्य में सुधार होता रहेगा। जहाँ तक हो सके, औषधि-प्रयोग, न करना चाहिए। भोजन व व्यवहार (दिनचर्या) में नियमित होते ही, ऐसे व्यक्ति स्वस्थ रह सकते हैं। ऐसे व्यक्ति जब, भीड़-भाड़ के कार्य में शीघ्रता करना; ऐसा प्रबन्ध, इतने समय में हो ही जाना चाहिए आदि वातावरण में, स्वस्थ रहते हैं। हाँ, जब व्यापार में शिथिलता या नौकरी में कोई (पद व आर्थिक) उन्नति नहीं दिखती, तभी कन्याराशि वाले, लोगों की प्रकृति बिगड़ने लगती है। कन्याराशि का गुण-धर्म, शीत और रूक्ष है। इसका मुख्य परिणाम, पाचन-क्रिया पर होता है। यदि कन्याराशि (कुण्डली के किसी भाव में) हो तो, ध्यान दीजिए कि, पापग्रह युक्त, दृष्ट, अस्त, नीचादि ग्रह संयोग, त्रिकस्थ आदि तो, नहीं है। क्योंकि कन्याराशि, किसी भाव में आने पर, पापादि संयोग द्वारा, पाचन-क्रिया की अव्यवस्था, सूचित करेगी [विशेषतः पापसंयोग युक्त षष्ठ, सप्तम, अष्टम तथा व्यय, लग्न, धन भाव में] तात्पर्य यह है कि, पापयुक्त-दृष्ट, कन्याराशि की स्थिति व दृष्टि (समक्रान्ति), पाचन-क्रिया का बिगाड़ दिखायेगी अवश्य। जब आप परिश्रम करेंगे अधिक, और भोजन मिलेगा कम, तथा खायेंगे खूब। किन्तु, प्रातः से सायं पर्यन्त जमीन में (मोटर या गद्दी के कारण) एक कदम न रखेंगे, तभी स्वास्थ्य खराब होगा। स्वामी का, मोटर होने के कारण तथा सेवक का, मोटर न होने के कारण, स्वास्थ्य खराब रहेगा। यदि कन्याराशि (लग्न या सूर्यस्थ) में, मंगल हो तो, सांक्रामिक रोग-भय होता है। यदि बुध हो तो, उत्तम स्वास्थ्य, केवल मानसिक भय के कारण, स्वास्थ्य बिगड़ने की सम्भावना होती है। यदि गुरु हो तो, श्रेष्ठ प्रकृति (स्वस्थ)। यदि शुक्र हो तो, अनियमित दिनचर्या रहती है। यदि शनि हो तो, उदास प्रकृति (स्वभाव), जिससे कभी अच्छाई नहीं हो पाती।

तुला

यह बौद्धिक राशि है। इसके समान सन्तुलित-बुद्धि, अन्य कोई नहीं पाता। इसका मुख्य प्रभाव, मूत्राशय पर रहता है। इस राशि वाले, अत्यन्त शान्त, निरोगी होते हैं। इसमें बवण्डर नहीं उठते। यह राजगुणों में, एक गुण-सुव्यवस्थापन—विशेष रखती है। ऐसे व्यक्ति महत्त्वाकांक्षी, बड़ी सुखेच्छा वाले होते हैं; जिसके कारण, कभी-कभी स्वास्थ्य बिगड़ जाता है। इस राशि में, जीवन शक्ति अधिक होने के कारण, कुछ ही समय विश्राम मिल जाने पर, स्वास्थ्य झटपट सुधरने लगता है। तुला राशि की स्त्रियों को, केश-प्रसाधन में, अनेक प्रकार के सुगन्धित तैल, पसन्द होते हैं, जिसके कारण, विपरीत परिणाम होता है, स्वास्थ्य-हानि होती है। इस राशि वालों को, अशुद्ध पानी पीने के कारण आन्त्र-ज्वर (टाइफाइड) होने का भय रहता है। मध्यम (युवा) अवस्था में ही, कमर-दर्द प्रारम्भ हो जा सकता है। जिसके कारण, मूत्राशय पर बुरा असर होता है; जिससे सावधान रहिए। भोजन सादा व हलका (सुपाच्य) करना चाहिए। शकर, सिरका (अरिष्ट) आदि तीक्ष्ण पदार्थ, अधिक खाना वर्जित है। ऊषा-पान तथा शाकादि की अपेक्षा, द्विदल धान्य का अधिक उपयोग करना चाहिए। इस राशि का गुण-धर्म, उष्ण-आर्द्र है। इसमें यदि मंगल हो तो, सांक्रामिक रोग होना, सम्भव हैं। यदि बुध हो तो, अतिशय मानसिक भय के कारण, स्वास्थ्य बिगड़ता है; यदि गुरु हो तो, उच्च-प्रकार का रहन-सहन हो जाता है; जिससे भविष्य में स्वास्थ्य ठीक नहीं रह पाता। यदि शुक्र हो तो, आरोग्यता स्थिर रखने के लिए, मीठे पदार्थों का अधिक उपयोग नहीं करना चाहिए तथा मूल (आलू, घुइयाँ, मूली, शकरकन्द, रतालू आदि) पदार्थ वर्जित हैं। यदि शनि हो तो, अत्यन्त दूषित होता है, क्योंकि लग्न में तो, केवल स्त्री, काम-शक्ति में अव्यवस्था उत्पन्न करता है। परन्तु, जब सूर्य के साथ हो जायगा, तब शरीर में स्वास्थ्य-कारक क्रियाएँ, बिगाड़ देगा।

वृश्चिक

इस राशि में, जीवन-शक्ति अच्छी होती है। इसका प्रभाव, मलोत्सर्ग क्रिया पर, हृदय और गले पर विशेष होता है। इस राशि के लोगों के रोग, नियमित रहन-सहन के द्वारा, शीघ्र दूर हो सकते हैं। हाँ, लग्नस्थ

होने की अपेक्षा, यदि रविस्थ-राशि वृश्चिक हो तो, विषय-वासना अधिक होती है; और भोगादि तृप्ति में व्यवधान (बाधा) पड़ने पर, स्वास्थ्य बिगड़ जाता है। ऐसे व्यक्तियों को, अपने साथी के या स्पर्शजन्य (सांक्रामिक) रोग, शीघ्र ही घेरना चाहते हैं। प्लेगादि सांक्रामिक रोग-वातावरण से दूर रहने पर, आरोग्यता रहती है। उष्ण तथा उत्तेजक पदार्थ वर्जित हैं। ताजे, ठण्डे जल से स्नान करना हितकर है। इस राशि का गुण-धर्म, शीत है। इस राशि में मलोत्सर्ग क्रिया अथवा जननेन्द्रिय रोग अधिक होते पाये जाते हैं। यदि लग्न में या सूर्ययुक्त वृश्चिक राशि में शुक्र-युक्त मंगल हो तो सांक्रामिक, उष्णविकार, गुप्तेन्द्रिय रोग, उपदंश आदि रोग होना, प्रायः सम्भव है; अथवा अनियमित वर्ताव (दिनचर्या) के कारण, रोगों का उद्गम होता है। यदि बुध हो तो व्यक्ति, भोला या भूला हुआ, विस्मृति-युक्त तथा अनुत्साहित रहता है, आलस्य से ओत-प्रोत, अतिशय मानसिक उत्कण्ठा के कारण, शरीर व स्वास्थ्य बिगड़ जाता है। यदि गुरु हो तो, मेद-वृद्धि अधिक होती है। यदि शुक्र हो तो, दिनचर्या ठीक नहीं रहती, जिससे शरीरकष्ट भोगना पड़ता है। यदि शनि हो तो, मल-मूत्र-अवरोध से, अनेक विकार होते हैं। चन्द्र या गुरु युक्त वृश्चिक में, कभी-कभी हस्त-मैथुन या इसी प्रकार (गुदा-मैथुनादि सरीखी) अशुभ-विचार-धारा के कारण, स्वास्थ्य खराब होता जाता है। वृश्चिक लग्न या वृश्चिक के सूर्य के मिश्रण के साथ, चन्द्र या गुरु या दोनों के मिश्रण से, अनुचित प्रकार द्वारा वीर्य-नाश होना, सम्भव होता है।

धनु

[अनेक पण्डित-संज्ञा व्यक्ति 'धन' शब्द का उपयोग, इस क्षेत्र में, इस ढंग से करते हैं कि, कभी किसी की समझ में, धन (अर्थ), धन (राशि), धन (लग्न), धन (भाव) का बोध होने लगता है। यथा—धन-भाव, (में) धनुराशि (हो तो—) धन (होता है) के स्थान में, द्रव्य, अर्थ आदि की वृद्धि लिखकर, स्पष्टभाव प्रयोग कीजिए। 'धन की वृद्धि' शब्द के अर्थ हैं धन की वृद्धि या धनभाव की (कुटुम्ब, आभूषण, कोश आदि की) वृद्धि। धनुराशि, धन-भाव में होने से, धन-वृद्धि। राशि, भाव, द्रव्य-सूचक, भिन्न संकेत रखिए तथा धन और धनु का अभ्यास अवश्य रखिए] यह बलिष्ठ राशि है। धनु राशि का प्रभाव, ऊरू (जंघा) और नितम्ब भाग पर विशेष रहता है। अन्तरंग में, मेरु-दण्ड की समाप्ति (भाग) और मज्जातन्तु है। ऐसे व्यक्ति को मर्दाने (वीर-क्रीड़ा) खेल तथा ताल-नाद वाले वाद्य (तबला, ढोलक, मृदंग, नक्कारा आदि), विशेष प्रिय होते हैं। अतिश्रम करने पर ही, स्वास्थ्य उत्तम रहता है। धनु लग्न वाले, जब तक योगासन, प्राणायाम आदि, कुछ समय न कर लें, तब तक शारीरिक-क्रिया स्वस्थ नहीं रहता। उन्हें, उल्लंघन-शक्ति भी प्राप्त होती है। जैसा कि, धनु-राशि का गुण तथा राशीश गुरु का आकाशतत्त्व है। धनु-लग्न या धनुराशिस्थ सूर्य वाले, होते हुए जातक यदि, पूर्वोक्त गुण न ला सके हों तो, प्रयत्न कीजिए, शीघ्र सफलता मिलेगी। हाँ, धनुराशि वाले का, किसी अन्यकारण से, जब स्वास्थ्य बिगड़ना प्रारम्भ हो, तब खुली हवा, व्यायाम (प्राणायामादि), वेदान्त-परिशील होने से, स्वास्थ्य सुधरने लगेगा। [मैंने 'व्यायाम' शब्द का जो उपयोग किया है; उससे यह न समझ लेना कि, दण्ड पेलते हुए स्वास्थ्य सुधरेगा, न, कभी नहीं। स्वास्थ्य के अर्थ हैं— शारीरिक और मानसिक स्वस्थता। पहलवानों को शारीरिक स्वास्थ्य तो, यथासम्भव प्राप्त हो जाता है, हो सकता है; किन्तु मानसिक स्वास्थ्य का नितान्त-अभाव। क्यों ?। वर्तमान व्यायाम-पद्धति, बुद्धि-नाशक। शिर में अधिक श्रम-बोझ पड़ने से, ज्ञानतन्तु कठोर हो जाते हैं। पाँच दण्ड (बिना शिर हिले) और पच्चीस बैठक या १० मिनट प्राणायाम-योगासन, दो मील पैदल घूमना आदि यथोचित प्रकार के (शरीर शक्ति के अनुसार) व्यायाम हितकर हैं] इस धनु राशि वाले को अपघात (हड्डी टूटना, सवारी से भय), व्रण होने का भय रहता है। दंशक जीव द्वारा भय, बैल-घोड़ा का पदाघात (एकलत्ती-दुलत्ती लगने) से रक्त-स्राव अधिक होना, तथा अन्य प्रकार से भी, रक्त-क्षय की रक्षा करना चाहिए। इस राशि का गुण-धर्म, उष्ण-रूक्ष है। यदि मंगल हो तो, खेल या सवारी-बेला में दुःखापत्ति होती है। यदि बुध हो तो, अतिशय अभ्यास के कारण, स्वास्थ्य बिगड़ सकता है। यदि गुरु हो तो, उत्तम स्वास्थ्य, अधिक भोजन करने से, कभी स्वास्थ्य बिगड़ना, सम्भव है। यदि शुक्र हो तो, काम-विकार द्वारा रोग तथा शनि हो तो, सन्धिवात, शीतज्वर, हैजा हो जाना [illegible]

मकर

यह अति दुर्बल राशि है। ऐहिक अथवा पारलौकिक या दोनों के कार्यों मे दुर्बलता प्रकट होती है। इसका प्रभाव, जानु (घुटना) तथा त्वचा पर होता है। जिससे ऐसा व्यक्ति, प्रायः उदासीन वृत्ति वाला होता है। अत्यन्त समाधान वृत्ति हो जाती है। ठंढे से, विशेष प्रीति (रुचि) होती है। बद्धकोष्ठता होने पर, सौम्य-रेचक एरण्डल-तैल (कास्टर आयल) का उपयोग, कभी, थोड़ा-सा किया जा सकता है। उत्तेजक तथा उष्ण-पदार्थ हितकर हैं। थोड़ा मादक-पदार्थ, हितकर हो सकता है। अत्यन्त आनन्दमय संगति में समय बिताने से-प्रकृति (स्वभाव-स्वास्थ्य) पर उत्तम परिणाम होता है। कान्तिवर्धक तैलादि के पदार्थ, वर्जित हैं। क्योंकि, ऐसा करने से चर्मरोग होना, सम्भव हैं। इस राशि का गुण-धर्म, शीत है। इसमें जीवन-शक्ति की बड़ी कमी होती है। युद्धादि कार्यों में ऐसे व्यक्ति, सफल नहीं होते, वीरता-पूर्ण कार्य, कम ही कर पाते हैं। यदि मंगल हो तो, श्रेष्ठ प्रकृति (स्वस्थता), पैर-सम्बन्धी मात्र रोग हो सकते हैं। यदि बुध हो तो भ्रमणशील, अत्यन्त उदासपन की वृत्ति होती है। यदि गुरु हो तो, रक्त-सामर्थ्य अधिक नहीं होती। यदि शुक्र हो तो, अतिशय सुखी रहन-सहन के कारण, स्वास्थ्य का बिगड़ना, सम्भव है। यदि शनि हो तो, आरोग्यता, थोड़ा कष्ट, पैर में साधारण-कष्ट-मात्र हो सकता है।

कुम्भ

इस राशि मे, जीवन-शक्ति अधिक है। यह पुरुष-राशि है। इसमे बौद्धिक सामर्थ्य भी अधिक होती है। इसका प्रभाव, रक्त तथा जंघा-(घुटना से नीचे का भाग = पिंडुरी) पर अधिक होता है। रक्त-शुद्धि का सर्वदा ध्यान रखना चाहिए। रक्त-शुद्धि के लिए, औषधि-प्रयोग आवश्यक है, अथवा बौद्धिक कार्य करने से भी स्वास्थ्य ठीक रहेगा। शिर-वेदना होना, सम्भव है, जिससे नेत्ररोग की परीक्षा, उत्तम चिकित्सक द्वारा होते रहना चाहिये। पौष्टिक और मेदा को उत्तेजना देने वाले पदार्थ, अधिक खाना चाहिए। इस राशि का गुण-धर्म, उष्ण है। यदि मंगल हो तो अशुभ है, सांक्रामिक रक्त-विकार होना सम्भव है। यदि बुध हो तो, अनेक कुतर्क, मन में उठते हैं; जिससे मन, अत्यन्त सशंकित रहता है, जिसका परिणाम, स्वास्थ्य पर बुरा होता है। यदि गुरु हो तो, अतिशय विद्वान्, आरोग्यता रहती है। यदि शुक्र हो तो, शीत-विकार, अतिशय परिश्रम के कारण, शिर-पीड़ा होती है। यदि शनि हो तो, आरोग्यता, कभी अपघात का भय हो सकता है।

मीन

यह स्त्री राशि है। दुर्बल (निर्बल) शक्ति। इसका प्रभाव, चरण-तल, शरीर के रस भाग पर विशेष होता है। अतिशय मानसिक उत्कण्ठा (उतावली) के कारण, स्वास्थ्य बिगड़ जाता है। पैर में शीत रोग होना, सम्भव रहता है, अथवा पैर मे शीत लगने से, अन्य सम्भावित रोग भी हो जा सकते हैं। पैर, अत्यन्त उठाकर (देख-भाल कर), रखना चाहिए। आहार सम्बन्धी, विशेष ध्यान रखना चाहिये। स्वच्छता रखना, परमावश्यक है। इस राशि वाले व्यक्ति, मादक-पदार्थ में विशेष रुचि रखते हैं। वृश्चिक राशि की भाँति, इस राशि मे भी, सांक्रामिक रोगों का भय रहता है। मुख्य दुर्गुण, भोलापन, भूला-सा, उत्साह-रहित होता है। अपने कामों में, अपने शरीर-स्वास्थ्य पर कम हो या नहीं-सा, ध्यान रखते हैं; जिसमे अनेक रोगों से घिर जाते हैं। अधिक अन्न नहीं पचता; अतएव हलका भोजन करना चाहिये। इस राशि का गुण धर्म, शीत है। यदि मगल हो तो, मादक पदार्थ का व्यसन होता है; इससे स्वस्थता होती है। यदि बुध हो तो, पैर उठावदार होते हैं। यदि गुरु हो तो, आरोग्यता; किन्तु, पौष्टिक औषधि का सेवन करते रहना चाहिए। यदि शुक्र हो तो, खाने-पीने की मात्रा का ध्यान रखना चाहिए, अधिक खाने-पीने तथा मादक-पदार्थ सेवन से, स्वास्थ्य बिगड़ने की सम्भावना रहती है। यदि शनि हो तो, अत्यन्त अशुभ होता है, शीत-रोग होना, सम्भव है।

शस्त्र-क्रिया (आप्रेशन) में वर्जित समय

पृथ्वी के अत्यन्त समीप (लगभग २३२००० मील) चन्द्र होने से, प्रकृति पर विशेष प्रभाव डालता है। अतएव चन्द्र-भ्रमण के समय में, राशि-सूचक अंगों पर, औषधि प्रयोग से या शस्त्र-क्रिया प्रयोग से, कैसा होता है? इस पर भी ज्योतिष-शास्त्रकारों ने ध्यान दिया है; जिसका विकशित प्रभाव, आपके शब्दों में, निम्न-लिखित होता है। इसका सम्बन्ध, मुहूर्त-प्रकरणान्तर्गत है; किन्तु, शरीर-व्यवस्था के उपयोगार्थ, हम इसे, यहीं लिख रहे हैं। निम्न-राशिस्थ, चन्द्र-समय में प्रयोग-परिणाम देखिए।

चन्द्र-परिणाम

मेष —शिर, नेत्र, दाँत सम्बन्धी आप्रेशन या औषधि-प्रयोग वर्जित।

वृष —गला, गर्दन, मुख का रक्त निकालना या जड़ाऊ काम करना वर्जित।

मिथुन—हाथ-पैर की हड्डी विठाना, ड्रेसिंग करना, इनका आप्रेशन या औषधि-प्रयोग वर्जित।

कर्क —पेट के आप्रेशन या औषधि-प्रयोग वर्जित।

सिंह —पीठ, मेरुदण्ड पर औषधि-प्रयोग या आप्रेशन वर्जित।

कन्या—मल-कोष्ठ, आँत के आप्रेशन या औषधि प्रयोग वर्जित।

तुला —मूत्राशय, जननेन्द्रिय, गुदारोग में औषधि प्रयोग या आप्रेशन वर्जित।

वृश्चिक-मूल-व्याधि, अपेण्डेसायटिस (आँत-पुच्छ) मूत्राशय, गुप्तांग पर औषधि-आप्रेशन वर्जित।

धनु —हाथ, पैर, नितम्ब, जंघा का औषधि-प्रयोग, शस्त्र-क्रिया, हड्डी विठाना, ड्रेसिंग करना वर्जित।

मकर —घुटना, चर्मरोग पर आप्रेशन, इन्जेक्शन, औषधि-प्रयोग वर्जित।

कुम्भ —पिंडुरी तथा मज्जातन्तु पर औषधि-प्रयोग या आप्रेशन वर्जित।

मीन —चरण और तलुओं पर औषधि-प्रयोग या आप्रेशन वर्जित।

मेष-वृष-मकर राशिस्थ चन्द्र समय में दी गई औषधि, उत्तेजक या वमनकारक होती है; ठीक काम नहीं करती। जब लग्नेश व चन्द्र, अनुदित भाग में हो; तब जुलाब लेना, श्रेष्ठ है। वमन करने वाली औषधि, जब लग्नेश व चन्द्र, उदित भाग में हो तब, ठीक व शीघ्र गुण करती है। रक्त निकलवाना या जुलाब लेना या दोनों कार्य, जलराशिस्थ चन्द्र में, अधिक गुणकारी होते हैं। वृश्चिक-राशिस्थ चन्द्र में, मलोत्सर्गक या स्वेदकारक औषधि, शीघ्र लागू होती है। सभी प्रकार की औषधि खाने के लिए, कर्क-मीन राशिस्थ चन्द्र का समय, विशेष श्रेष्ठ होता है; क्योंकि, इन दोनों राशियों में ग्रहण-शक्ति अधिक होती है। वृषभ, कन्या, मकर राशि से, सूर्य का योग (अंशात्मक युति), केन्द्र-योग, प्रतियोग (१८० अंश की दृष्टि) हो तो, शिर-भाग का आप्रेशन, वर्जित है। वृष-गत चन्द्र (शुक्लपक्ष-मात्र) अथवा उदित-भागस्थ चन्द्र में, नेत्र का आप्रेशन होना, श्रेयस्कर होता है; परन्तु चन्द्र पर, पापग्रह की दृष्टि न होना चाहिए।

प्रश्न-लग्न द्वारा

पंचम स्थान, पंचमेश के द्वारा, औषधि के उचित-अनुचित प्रभाव जाने जा सकते हैं। (१) रोग-कारक ग्रह यदि, मिथुन, तुला, मीन, धनु (जुड़ी राशि) में हो तो, रोग उलटने (स्वस्थ होकर, पुनः अस्वस्थ होने का) भय रहता है। (२) षष्ठेशस्थ राशि-सूचक अंग में, यदि रोग हुआ तो, तीव्र रोगों में—जिस दिन, जिस समय, रोग हुआ हो, उससे (उस समय के चन्द्रराश्यादि से), आगे ४५, ९०, १३५, १८० अंश में, चन्द्र बढ़ता (पहुँचता) है तब, उस समय के निश्चित लक्षण द्वारा, रोगी का रोग, साध्य या असाध्य है?—समझा जा सकता है। (३) जन्म-चक्र के जिस ग्रह द्वारा रोग उत्पन्न हुआ हो, वह ग्रह, लग्नेश से, जब युति, केन्द्रयोग, प्रतियोग करेगा; उन समयों में, षष्ठेश से, जब-जब चन्द्र का अशुभ योग होगा; तब-तब स्वास्थ्य बिगड़ेगा तथा शुभयोग (चन्द्र का) होने पर, स्वास्थ्य सुधरेगा। प्रायः मृत्यु-समय में, लग्नेश और रोगकारक-ग्रह एवं षष्ठेश से, चन्द्र का अशुभ-योग उपस्थित हो ही जाता है।

सूर्य-परिणाम

(१) पुरुष की कुण्डली में, सूर्य की राशि-भाव देखिए। सूर्य बलिष्ठ हो, किसी भी ग्रह की अशुभ दृष्टि न हो, गुरु की शुभ-दृष्टि हो तो, जीवन-समय अधिक होता है। (२) यदि सूर्य निर्बल राशिस्थ हो; गुरु, शुभ-दृष्टि-रहित; पापग्रह की अशुभ-दृष्टि-युक्त हो तो, स्वास्थ्य बिगड़ता रहता है। (३) यदि गुरु की शुभ-दृष्टि हो, पापग्रह की अशुभ-दृष्टि-युति हो तो, निदान-कर्ता वैद्य को चाहिए कि, ऐसे रोगी के रोग पर, विशेष अध्ययन करना चाहिए; क्योंकि ऐसे ही समय में (निदान-निश्चय में) बड़ी भूल होना, सम्भव रहता है। (४) यदि कोई ग्रह, सूर्य को दुर्बल कर रहे हों; और सूर्य, अनुदित में हो; ग्रह उदित में हो तो स्वास्थ्य, अत्यन्त बिगड़ता रहता है। (५) यदि ग्रह अनुदित में, सूर्य उदित में हो तो, अशुभ-दृष्टि-योग का विशेष प्रभाव नहीं हो पाता। (६) जब शनि-मंगल (दोनों), सूर्य से अशुभ योग करते हों तो, स्वास्थ्य पर विशेष प्रभाव नहीं हो पाता; क्योंकि शनि का अशुभ प्रभाव; मंगल के कारण नहीं-सा होकर, शरीर के अन्तर्गत, उष्णता (जीवन-शक्ति), अधिक भर देता है। (७) जब सूर्य पर, मंगल की अशुभ-दृष्टि-युति आदि हो तब, इन दोनों से त्रिकोण में कोई ग्रह हो; अथवा मंगल पर, सूर्य का शुभ योग हो, तब मंगल ही, अपने अशुभ प्रभाव द्वारा संक्रामिक रोग, विषम-ज्वर, अपघात, मृत्यु आदि ला देता है। (८) शुभग्रह-दृष्टि-युति-रहित सूर्य, षष्ठस्थ हो तो, दुर्बल प्रकृति (अस्वस्थ) कर देता है, जिसके दुष्परिणाम स्वरूप, जीवन भर किसी प्रकार का झगड़ा, अधिक दिन ठहरने वाले या कष्टदायक (भयकारक) रोग, बनाये रखता है। (९) सूर्य पर, शुभ-दृष्टि-योग से, अशुभफल में कमी तथा अशुभ-दृष्टि-योग से, अशुभता में वृद्धि होती है।

द्वादश-राशिस्थ-सूर्य

मेष —बलिष्ठ शरीर, जीवनशक्ति पूर्ण, रोग कम, आरोग्यता अधिक। अशुभ सूर्य में ज्वर, शिर-नेत्र रोग।

वृष —स्वास्थ्य उत्तम, हृदय-विकार सम्भव, मृगी-मूर्च्छा का भय। शनि की अशुभ-दृष्टि से आकस्मिक मृत्यु तक होना, सम्भव है।

मिथुन—प्रायः आरोग्य, फेफड़ा, रक्त, मज्जा के रोग होना, सम्भव है। अशुभ-स्थानस्थ, पापदृष्टि-युक्त हो तो, क्षय, फेफड़ा, रक्त-दोष होना, सम्भव है।

कर्क —निर्बल शरीर, पाचन-क्रिया गड़बड़ हो सकती है। शनि-दृष्टि से सन्धि-वात, मलेरिया, आमरोग, स्थिर (दिनारू) रोग होते हैं।

सिंह —अत्यन्त बलिष्ठ, प्रायः आरोग्यता रहती है। शनि के अशुभ प्रभाव से हृदय रोग होना, सम्भव है।

कन्या —कोमल-प्रकृति (नाजुक), आँत तथा पाचन-क्रिया निर्बल, अत्यन्त कोष्ठ-बद्धता, फेफड़ा अशक्त, पेट के विकार होते हैं।

तुला —शरीर निरोगी। मूत्रपिण्ड तथा कमर दुर्बल। मधुमेह, चर्मरोग, शिर, पेट के रोग, आन्तरिक विकार, अधिक होते हैं।

वृश्चिक-बलिष्ठ स्वभाव स्वस्थता, जीवनशक्ति पूर्ण। दाहक, तीव्र रोग होना, सम्भव है। गला, हृदय, मल, आमाशय, संक्रामिक, मूल-व्याधि, भगन्दर, हड्डी-व्रण (नासूर), अन्य व्रण, मूत्ररोग होते हैं। कारण, माहक-शक्ति अधिक होती है।

धनु —बलिष्ठ, प्रायः आरोग्य, रक्त, मज्जातन्तु निर्बल, फेफड़ा पुष्ट, अतिश्रम से दुर्बलता, अपघात-भय।

मकर —दुर्बल, जीवन-शक्ति कम, आँत, पाचन क्रिया निर्बल, शीतरोग, खाने-पीने की अव्यवस्था से सन्धि-वात, स्थिररोग, कोष्ठबद्धता। शनि-दृष्टि से स्वेदोन्माद, भूतज्वर का भय रहता है।

कुम्भ —स्वास्थ्य ठीक, रक्त-सचार गड़बड़, पेट, पैर में पीड़ा, नेत्र, हृदय, मन-विकार से निर्बलता होती है।

मीन —निर्बलता, जीवन-शक्ति कम, संक्रामिक, क्षय, रक्त, पाचन-क्रिया का बिगड़ना, सम्भव है।

स्वर–विज्ञान

यह, प्रत्येक व्यक्ति के लिए, नित्य उपयोगी है। इसके द्वारा स्वास्थ्य, आयु और कार्य–सिद्धि होती है। एक अहोरात्र = २४ घण्टे = १४४० मिनट = ६० घटी = ३६०० पल = २१६०० श्वास (प्राण = असु) होते हैं।

मूलाधार	=सूर्य	=दक्षिणनेत्र	=द्रेष्काण	=पृथ्वी	=२१६०० x ३६० x ६ = ४६६५६०००
स्वाधिष्ठान	=चन्द्र	= वामनेत्र	=होरा	=जल	=२१६०० x ३६० x १० = ७७७६००००
मणिपूरक	=मंगल	= रक्त	=नवांश	=अग्नि	=२१६०० x ३६० x ७ = ५४४३२०००
अनाहत	=बुध	= मांस	=त्रिशांश	=वायु	=२१६०० x ३६० x १७ = १३२१९२०००
विशुद्ध	=गुरु	= मांस–रस	=द्वादशांश	=आकाश	=२१६०० x ३६० x १६ = १२४४१६०००
आज्ञा	=शुक्र	= हड्डी	=सप्तांश	=जल	=२१६०० x ३६० x २० = १५५५२००००
अरविन्द	=शनि	= मज्जा	=गृह	=वायु	=२१६०० x ३६० x १९ = १४७७४४०००
कुण्डलिनी	=राहु	= स्नायु	=सन्धि	=वायु	=२१६०० x ३६० x १८ = १३९९६८०००
मस्तिष्कद्वार	=केतु	= स्नायु-द्रव	=सन्धि	=वायु	=२१६०० x ३६० x ७ = ५४४३२०००
					वर्ष १२० = ९३३१२०००० असु

स्वर–नाड़ी

इड़ा	= पित्त	= सूर्य	= दक्षिणस्वर
पिंगला	= कफ	= चन्द्र	= वामस्वर
सुषुम्णा	= वायु	= राहु	= दोनोंस्वर

नोट

[देखिए, प्रलय-पद] इसमें १२८ वर्षीय सूर्य–नति–गति ९३५०२ ००३२ बतायी गयी है; और यहाँ, १२० वर्ष के मानव-असु ९३३१२०००० आ रहे हैं [९+३+३+१+२ = १८ = ९]

स्वरोदय–समय

प्रत्येक व्यक्ति की नासिका में, दो छिद्र होते हैं। दाहिने छिद्र से दक्षिण-स्वर तथा वाम छिद्र से वाम-स्वर निकलता है। दोनों छिद्र से एक साथ निकलने पर, सुषुम्णा (कुण्डलिनी) नाड़ी का स्वर होता है। वाम-स्वर का उदय, शुक्लपक्ष की १, २, ३, ७, ८, ९, १३, १४, १५ और कृष्णपक्ष की ४, ५, ६, १०, ११, १२ तिथि के सूर्योदय समय से होता है। इसी प्रकार, दक्षिण-स्वर का उदय, शुक्लपक्ष की ४, ५, ६, १०, ११, १२ और कृष्णपक्ष की १, २, ३, ७, ८, ९, १३, १४, ३० तिथि के सूर्योदय समय से होता है। [यहाँ, सूर्योदय के समय जो तिथि हो, उसी को २४ घण्टे तक समझना चाहिए] प्रत्येक (दक्षिण-वाम) स्वर, स्वाभाविक गति से एक घण्टा = ९०० श्वास रहता है। इस एक घण्टे में, २० मिनट पृथ्वी, १६ मिनट जल, १२ मिनट अग्नि, ८ मिनट वायु, ४ मिनट आकाश तत्त्व रहता है।

स्वर–परिवर्तन

जब विपरीत स्वर चलता है तब उसे, बदलना पड़ता है। यदि दक्षिण-स्वर का उदय करना हो तो, बायाँ हाथ नीचे, दाहिना हाथ ऊपर करके (दाहिनी करवट से) लेटना चाहिए। यदि वाम-स्वर का उदय करना हो तो, दाहिना हाथ नीचे, बायाँ हाथ ऊपर करके (बायीं करवट से) लेटना चाहिए। ऐसा करने से १५ मिनट के अन्दर ही, अभीष्ट-स्वर आ जाता है। ध्यान, धारणा, परमात्म–चिन्तन आदि, सुषुम्णा-स्वर में, सर्व दिन में, सर्व-तत्त्व में (आकाश-तत्त्व में विशेष) करना, उचित है।

वाम-स्वर के २० कार्य

[सोम-बुध-गुरु-शुक्रवार को पृथ्वी या जल तत्त्व में]

(१) शान्तिकर्म (२) पौष्टिककर्म (३) मैत्रीकर्म (४) प्रभु-दर्शन (५) योगाभ्यास (६) दिव्य औषधि-सेवन (७) रसायनकर्म (८) भूषणधारण (९) वस्त्रधारण (१०) विवाह (११) दान (१२) आश्रम-प्रवेश (१३) भवन-निर्माण (१४) जलाशय (१५) बाग-वाटिका (१६) यज्ञ (१७) सम्मेलन (१८) ग्राम का बसाना (१९) दूर-यात्रा (दक्षिण या पश्चिम की) (२०) पानी पीना या पेशाब जाना—नामक कार्य करना, उचित हैं।

दक्षिण-स्वर के २० कार्य

[रवि-मंगल शनिवार को अग्नि या वायु तत्त्व में]

(१) कठिन (क्रूर) कर्म (२) शस्त्राभ्यास (३) शास्त्राभ्यास(दीक्षा) (४) संगीत (५) वाहन (६) व्यायाम (७) नौका रोहण (८) यन्त्र-तन्त्र रचना (९) पर्वत या किले पर चढ़ाई (१०) विषय-भोग (११) युद्ध (१२) पशु-पक्षी का क्रय-विक्रय (१३) काटना-छाँटना (१४) कठोर यौगिक साधना (१५) राजदर्शन (१६) विवाद (१७) किसी के समीप जाना (१८) स्नान (१९) भोजन (२०) पत्रादि लेखन कार्य करना, उचित है।

कार्य, सन्तान, भाग्य के स्वर

जो कार्य दक्षिण-स्वर और अग्नि वायु तत्त्व में बताये गये हैं वे, पृथ्वी जल तत्त्व में भी किये जा सकते हैं। × × × अभीष्ट कार्य सिद्धि के लिए, जिस ओर का स्वर चल रहा हो, उसी ओर का पैर, पहिले उठा कर चलना चाहिए [परन्तु चलने के समय, पृथ्वी या जल का तत्त्व होना चाहिए], फिर अमुक के पास पहुँच कर, जिस ओर का स्वर चल रहा हो, उसी ओर, उस व्यक्ति को रख कर, बातचीत करने से, आपका, अभीष्ट मनोरथ सिद्ध होगा। × × × पुरुष का दक्षिणस्वर और स्त्री का वामस्वर हो और उस समय पृथ्वी तत्त्व हो या पृथ्वी-जल का संगम हो तथा ऋतु धर्म से ८,१०,१२,१४,१६ वीं रात्रि हो तो, उस गर्भाधान से उत्तम गुण शील-युक्त पुत्र होता है। इसी प्रकार, पुरुष का वामस्वर और स्त्री का दक्षिणस्वर हो, उस समय पृथ्वी जल तत्त्व हो और ऋतु-धर्म से ५,९,१५ वीं रात्रि हो तो, उस गर्भाधान से उत्तम गुण शील-युक्ता पुत्री होती है। × × × दिन हो या रात, इडा या सुषुम्णा स्वर में अग्नि तत्त्व हो तो, वन्ध्या भी सन्तानवती हो सकती है। × × × अपना भाग्योदय करने के लिए, दो नियम धारण कीजिए (१) नित्य ही सूर्योदय से आधा घण्टा पूर्व, उठना ही चाहिए (२) सबेरे उठने के समय, बिस्तर पर आँख खुलते ही, जिस ओर का स्वर चल रहा हो, उसी ओर का हाथ, अपने मुख पर फेर कर, शय्या पर बैठ जाइए। बाद में शय्या पर से उतरते समय, उसी हाथ से, पृथ्वी को स्पर्श-प्रणाम करके, उसी स्वर की ओर वाले पैर को पहिले, भूमि पर रखना चाहिए। ऐसा नित्य करने से अवश्य भाग्योदय होगा।

आपत्ति की सूचना

जब शुभाशुभ परिणाम होने वाला होता है। तब, स्वर का समय तथा अवधि में परिवर्तन हो जाता है। (१) शुक्ल प्रतिपदा को वामस्वर का उदय न होकर, दक्षिणस्वर का उदय हो तो, उस पक्ष में (पूर्णिमा तक) उष्णविकार, कलह या हानि होती है। (२) कृष्ण प्रतिपदा को दक्षिणस्वर का उदय न होकर, वामस्वर का उदय हो तो, उस पक्ष में (अमावास्या तक) शीतविकार, आलस्य या हानि होती है। (३) इसी प्रकार यदि, लगातार दो पक्ष तक, विपरीत (उलटे) स्वर का उदय हो तो, स्वयं पर विशेष आपत्ति, प्रियजन की

की बीमारी या मृत्यु होती है। (४) यदि, लगातार तीन पक्ष तक विपरीत स्वर का उदय हो तो, अपनी मृत्यु को निकट समझना चाहिए। (५) यदि, केवल तीन दिन तक, विपरीत स्वर का उदय हो तो, कलह या रोग की सम्भावना होती है। (६) यदि, लगातार एक मास तक, विपरीत काल में वाम-स्वर का उदय हो तो, महारोग की सम्भावना होती है। × × × सर्वदा शुभफल, वामस्वर के परिवर्तन से तथा अशुभफल, दोनों स्वरों के परिवर्तन से हुआ करते हैं। शुभफल (१) वामस्वर, लगातार १ घण्टा ३६ मिनट तक चले तो, अचिन्त्य वस्तु की प्राप्ति; (२) ३ घण्टा १२ मिनट तक चले तो, सुखादि की प्राप्ति; (३) ५ घण्टा ३६ मिनट तक चले तो, प्रेम-मैत्री आदि की प्राप्ति; (४) २४ घण्टे तक चले तो, ऐश्वर्य-वैभव की प्राप्ति। (५) यदि दो दिन तक, आधे-आधे प्रहर, दोनों स्वर चलते रहें तो, यश और सौभाग्य की वृद्धि होती है। (६) यदि दिन में वामस्वर तथा रात्रि में दक्षिणस्वर चलता रहे तो, आयु की वृद्धि होती है। अशुभफल—(१) वामस्वर, लगातार ४ घण्टे तक चले तो, शरीर-कष्ट, (२) ४ घण्टे ४८ मिनट तक चले तो, शत्रु-उद्वेग; (३) एक या दो या तीन दिन तक चले तो, महारोग (४) ५ दिन तक चले तो, व्याकुलता (५) एक मास तक चले तो, धनहानि होती है। दक्षिण स्वर, (१) लगातार १ घण्टा ३६ मिनट तक चले तो, कुछ बिगाड़ या वस्तु-विनाश (२) ५ घण्टा तक चले तो, सज्जन से द्वेष (३) ८ घण्टे २४ मिनट तक चले तो, सज्जन का विनाश। (४) २४ घण्टे तक चले तो, मृत्यु की सूचना, समझना चाहिए।

मृत्यु का ज्ञान

(१) यदि, लगातार, दाहिना स्वर ८ प्रहर तक चले तो, ३ वर्ष में मृत्यु। (२) १६ प्रहर तक चले तो, दो वर्ष में मृत्यु। (३) ३ दिन ३ रात (२४ प्रहर) तक चले तो, एक वर्ष में मृत्यु। (४) दिन में दक्षिण और रात्रि में वाम-स्वर, यदि एक मास तक चले तो, ६ मास में मृत्यु। (५) दक्षिणस्वर, २० अहोरात्र तक चले तो, ३ मास में मृत्यु। (६) यदि सुषुम्णा, २ घण्टे चल कर, न बदले तो, तत्काल मृत्यु होती है। (७) अपने नेत्रों से, अपनी नाक न दिखे तो, ३ दिन में मृत्यु। (८) बिना कारण, स्थूल या कृश शरीर हो जाय तो, एक मास में मृत्यु। (९) स्नान के बाद, हृदय-पैर-कपाल का जल, अस्वाभाविक ढंग से सूख जाय तो, तीन मास में मृत्यु होना, सम्भव है। मृत्यु-ज्ञान के दो विशेष चिन्ह—(क) दाहिने हाथ की मुट्ठी बाँधकर, नाक की ठीक सीध में कपाल पर रखकर, नीचे की ओर, उसी हाथ की कोहनी तक देखने से, हाथ, बहुत पतला, दृष्टि-गोचर होता है। इस प्रकार देखने से, जिस दिन मणिबन्ध (कलाई) न दिखे और मुट्ठी, हाथ से अलग प्रतीत हो तो, उस दिन से ६ मास, आयु के शेष समझना चाहिए। (ख) आँखें बन्द करके, अँगुली से, नासिका के पास, आँख का कोना दबावे तो, जिस दिन आँख का तारा न दिखे, उस दिन से १० दिन, आयु के शेष समझना चाहिए।

स्वर से औषधि

रोग, स्वर की अव्यवस्था से होता है। अतएव स्वर को बदल कर, सुव्यवस्थित कर लेना चाहिए। (१) ज्वर में, जब इसका प्रारम्भिक रूप हो तब, जो स्वर चल रहा हो, उसे बन्द कर दें अर्थात् दूसरी करवट लेट जाँय, जब तक स्वस्थता न मिले, तब तक, इसी करवट से लेटिए, अन्यथा बैठिए [बैठने पर, बन्द करने वाले छिद्र में, बहुत ही स्वच्छ रुई लगा दीजिए] (२) शिरपीड़ा में, बराबर भूमि में शवासन की भाँति, सीधे लेट जाइए। दोनों हाथों को नीचे लम्बा फैला दीजिए। किसी दूसरे के द्वारा, दोनों हाथों की कोहनियों के एक अंगुल ऊपर, रस्सी द्वारा, जोर से (यथा सम्भव) कसकर बँधवा लीजिए, ५-७ मिनट में पीड़ा दूर हो जायगी। (३) यदि आधासीसी हो तो, उस दशा में, जिस ओर की शिरपीड़ा हो, केवल उसी ओर की, हाथ की कोहनी को बँधवाना चाहिए। यदि दूसरे दिन, पुनः आधासीसी की पीड़ा हो, और पहिले दिन जो, स्वर चल रहा था, वही दूसरे दिन भी चल रहा हो तो, कोहनी के बाँधने के साथ-साथ, वह स्वर भी, बहुत ही स्वच्छ रुई से बन्द कर देना चाहिए। (४) अजीर्ण, जिन्हें सर्वदा अपचन का रोग रहता हो तो, उन्हें सर्वदा दक्षिणस्वर के समय,

वाम-स्वर के २० कार्य

[सोम-बुध-गुरु-शुक्रवार को पृथ्वी या जल तत्त्व में]

(१) शान्तिकर्म (२) पौष्टिककर्म (३) मैत्रीकर्म (४) प्रभु-दर्शन (५) योगाभ्यास (६) दिव्य औषधि-सेवन (७) रसायनकर्म (८) भूषणधारण (९) वस्त्रधारण (१०) विवाह (११) दान (१२) आश्रम-प्रवेश (१३) भवन-निर्माण (१४) जलाशय (१५) बाग-वाटिका (१६) यज्ञ (१७) सम्मेलन (१८) ग्राम का बसाना (१९) दूर-यात्रा (दक्षिण या पश्चिम की) (२०) पानी पीना या पेशाब जाना—नामक कार्य करना, उचित हैं।

दक्षिण-स्वर के २० कार्य

[रवि-मंगल शनिवार को अग्नि या वायु तत्त्व में]

(१) कठिन (क्रूर) कर्म (२) शस्त्राभ्यास (३) शास्त्राभ्यास(दीक्षा) (४) संगीत (५) वाहन (६) व्यायाम (७) नौका रोहण (८) यन्त्र-तन्त्र रचना (९) पर्वत या किले पर चढ़ाई (१०) विषय-भोग (११) युद्ध (१२) पशु पक्षी का क्रय-विक्रय (१३) काटना-छाँटना (१४) कठोर यौगिक साधना (१५) राजदर्शन (१६) विवाद (१७) किसी के समीप जाना (१८) स्नान (१९) भोजन (२०) पत्रादि लेखन कार्य करना, उचित है।

कार्य, सन्तान, भाग्य के स्वर

जो कार्य दक्षिण स्वर और अग्नि-वायु तत्त्व मे बताये गये हैं वे, पृथ्वी-जल तत्त्व मे भी किये जा सकते हैं। × × × अभीष्ट कार्य-सिद्धि के लिए, जिस ओर का स्वर चल रहा हो, उसी ओर का पैर, पहिले उठा कर चलना चाहिए [परन्तु चलने के समय, पृथ्वी या जल का तत्त्व होना चाहिए], फिर अमुक के पास पहुँच कर, जिस ओर का स्वर चल रहा हो, उसी ओर, उस व्यक्ति को रख कर, बातचीत करने से, आपका, अभीष्ट मनोरथ सिद्ध होगा। × × × पुरुष का दक्षिणस्वर और स्त्री का वामस्वर हो और उस समय पृथ्वी तत्त्व हो या पृथ्वी-जल का संगम हो तथा ऋतु धर्म से ८,१०,१२,१४,१६ वीं रात्रि हो तो, उस गर्भाधान से उत्तम गुण-शील युक्त पुत्र होता है। इसी प्रकार, पुरुष का वामस्वर और स्त्री का दक्षिणस्वर हो, उस समय पृथ्वी-जल तत्त्व हो और ऋतु-धर्म से ५,९,१५ वीं रात्रि हो तो, उस गर्भाधान से उत्तम गुण-शील-युक्ता पुत्री होती है। × × × दिन हो या रात, इडा या सुषुम्णा स्वर में अग्नि तत्त्व हो तो, वन्ध्या भी सन्तानवती हो सकती है। × × × अपना भाग्योदय करने के लिए, दो नियम धारण कीजिए (१) नित्य ही सूर्योदय से आधा घण्टा पूर्व, उठना ही चाहिए (२) सवेरे उठने के समय, बिस्तर पर आँख खुलते ही, जिस ओर का स्वर चल रहा हो, उसी ओर का हाथ, अपने मुख पर फेर कर, शय्या पर बैठ जाइए। बाद में शय्या पर से उतरते समय, उसी हाथ से, पृथ्वी को स्पर्श-प्रणाम करके, उसी स्वर की ओर वाले पैर को पहिले, भूमि पर रखना चाहिए। ऐसा नित्य करने से अवश्य भाग्योदय होगा।

आपत्ति की सूचना

जब शुभाशुभ परिणाम होने वाला होता है। तब, स्वर का समय तथा अवधि में परिवर्तन हो जाता है। (१) शुक्ल प्रतिपदा को वामस्वर का उदय न होकर, दक्षिणस्वर का उदय हो तो, उस पक्ष में (पूर्णिमा तक) उष्णविकार, कलह या हानि होती है। (२) कृष्ण प्रतिपदा को दक्षिणस्वर का उदय न होकर, वाम-स्वर का उदय हो तो, उस पक्ष में (अमावास्या तक) शीतविकार, आलस्य या हानि होती है। (३) इसीप्रकार यदि, लगातार दो पक्ष तक, विपरीत (उलटे) स्वर का उदय हो तो, स्वयं पर विशेष आपत्ति, प्रियजन की

की बीमारी या मृत्यु होती है। (४) यदि, लगातार तीन पक्ष तक विपरीत स्वर का उदय हो तो, अपनी मृत्यु को निकट समझना चाहिए। (५) यदि, केवल तीन दिन तक, विपरीत स्वर का उदय हो तो, कलह या रोग की सम्भावना होती है। (६) यदि, लगातार एक मास तक, विपरीत काल में वाम-स्वर का उदय हो तो, महारोग की सम्भावना होती है। × × × सर्वदा शुभफल, वामस्वर के परिवर्तन से तथा अशुभफल, दोनों स्वरों के परिवर्तन से हुआ करते हैं। शुभफल (१) वामस्वर, लगातार १ घण्टा ३६ मिनट तक चले तो, अचिन्त्य वस्तु की प्राप्ति; (२) ३ घण्टा १२ मिनट तक चले तो, सुखादि की प्राप्ति; (३) ५ घण्टा ३६ मिनट तक चले तो, प्रेम-मैत्री आदि की प्राप्ति; । (४) २४ घण्टे तक चले तो, ऐश्वर्य-वैभव की प्राप्ति। (५) यदि दो दिन तक, आधे-आधे प्रहर, दोनों स्वर चलते रहें तो, यश और सौभाग्य की वृद्धि होती है। (६) यदि दिन में वामस्वर तथा रात्रि में दक्षिणस्वर चलता रहे तो, आयु की वृद्धि होती है। अशुभफल—(१) वामस्वर, लगातार ४ घण्टे तक चले तो, शरीर-कष्ट, (२) ४ घण्टे ४८ मिनट तक चले तो, शत्रु-उद्वेग; (३) एक या दो या तीन दिन तक चले तो, महारोग (४) ५ दिन तक चले तो, व्याकुलता (५) एक मास तक चले तो, धनहानि होती है। दक्षिण स्वर, (१) लगातार १ घण्टा ३६ मिनट तक चले तो, कुछ बिगाड़ या वस्तु-विनाश (२) ५ घण्टा तक चले तो, सज्जन से द्वेष (३) ८ घण्टे २४ मिनट तक चले तो, सज्जन का विनाश। (४) २४ घण्टे तक चले तो, मृत्यु की सूचना, समझना चाहिए।

मृत्यु का ज्ञान

(१) यदि, लगातार, दाहिना स्वर ८ प्रहर तक चले तो, ३ वर्ष में मृत्यु। (२) १६ प्रहर तक चले तो, दो वर्ष में मृत्यु। (३) ३ दिन ३ रात (२४ प्रहर) तक चले तो, एक वर्ष में मृत्यु। (४) दिन में दक्षिण और रात्रि में वाम-स्वर, यदि एक मास तक चले तो, ६ मास में मृत्यु। (५) दक्षिणस्वर, २० अहोरात्र तक चले तो, ३ मास में मृत्यु। (६) यदि सुषुम्णा, २ घण्टे चल कर, न बदले तो, तत्काल मृत्यु होती है। (७) अपने नेत्रों से, अपनी नाक न दिखे तो, ३ दिन में मृत्यु। (८) बिना कारण, स्थूल या कृश शरीर हो जाय तो, एक मास में मृत्यु। (९) स्नान के बाद, हृदय-पैर-कपाल का जल, अस्वाभाविक ढंग से सूख जाय तो, तीन मास में मृत्यु होना, सम्भव है। मृत्यु-ज्ञान के दो विशेष चिन्ह—(क) दाहिने हाथ की मुट्ठी बाँधकर, नाक की ठीक सीध में. कपाल पर रखकर, नीचे की ओर, उसी हाथ की कोहनी तक देखने से, हाथ, बहुत पतला, दृष्टि-गोचर होता है। इस प्रकार देखने से, जिस दिन मणिबन्ध (कलाई) न दिखे और मुट्ठी, हाथ से अलग प्रतीत हो तो, उस दिन से ६ मास, आयु के शेष समझना चाहिए। (ख) आँखें बन्द करके, अँगुली से, नासिका के पास, आँख का कोना दबावे तो, जिस दिन आँख का तारा न दिखे, उस दिन से १० दिन, आयु के शेष समझना चाहिए।

स्वर से औषधि

रोग, स्वर की अव्यवस्था से होता है। अतएव स्वर को बदल कर, सुव्यवस्थित कर लेना चाहिए। (१) ज्वर में, जब इसका प्रारम्भिक रूप हो तब, जो स्वर चल रहा हो, उसे बन्द कर दें अर्थात् दूसरी करवट लेट जाँय, जब तक स्वस्थता न मिले, तब तक, इसी करवट से लेटिए, अन्यथा बैठिए [बैठने पर, बन्द करने वाले छिद्र में, बहुत ही स्वच्छ रुई लगा दीजिए] (२) शिरपीड़ा में, बराबर भूमि में शवासन की भाँति, सीधे लेट जाइए। दोनों हाथों को नीचे लम्बा फैला दीजिए। किसी दूसरे के द्वारा, दोनों हाथों की कोहनियों के एक अंगुल ऊपर, रस्सी द्वारा, जोर से (यथा सम्भव) कसकर बँधवा लीजिए, ५-७ मिनट में पीड़ा दूर हो जायगी। (३) यदि आधासीसी हो तो, उस दशा में, जिस ओर की शिरपीड़ा हो, केवल उसी ओर की, हाथ की कोहनी को बँधवाना चाहिए। यदि दूसरे दिन, पुनः आधासीसी की पीड़ा हो, और पहिले दिन जो, स्वर चल रहा था, वही दूसरे दिन भी चल रहा हो तो, कोहनी के बाँधने के साथ-साथ, वह स्वर भी, बहुत ही स्वच्छ रुई से बन्द कर देना चाहिए। (४) अजीर्ण, जिन्हें सर्वदा अपचन का रोग रहता

भोजन करना चाहिए और भोजन के पश्चात् १५-२० मिनट, बायीं करवट लेटने से अपेक्षाकृत, शीघ्र लाभ होगा। पुराना अपचन मिटाने के लिए, नित्य १०-१५ मिनट तक पद्मासन में बैठकर, नाभि पर दृष्टि-स्थिर रखने से, एक सप्ताह में आशातीत लाभ होता है। (५) दाँत का दुखना या हिलना, शौच तथा पेशाब के समय, दाँत पर दाँत रखकर, जोर से दबाये रखना चाहिए। (६) छाती-पीठ-कमर-पेट आदि की पीड़ा में, जो स्वर चल रहा हो, उसे एकदम बन्द कर देना चाहिए अर्थात् रुई भी लगाइए और करवट भी बनाकर लेटिए। (७) दमा, इसका जब दौरा हो और श्वास फूलने लगे, तब जो स्वर चलता हो, उसे बन्द कर देना चाहिए। १०-१५ मिनट में लाभ हो जायगा। इस रोग को जड़ से विनाश करने के लिए, लगातार एक मास तक, चलते हुए स्वर को बन्द करके, दूसरा चलाने का अभ्यास, नित्यप्रति जितना अधिक हो सके, उतना अधिक करते रहने से दमा नष्ट हो जाता है। जितना शीघ्र अभ्यास बढ़ेगा, उतना ही शीघ्र लाभ होगा। (८) परिश्रम की थकावट को दूर करने के लिए या धूप की गरमी को शान्त करने के लिए, थोड़ी देर तक, दाहिनी करवट से लेटकर, दाहिने स्वर को जाग्रत करना चाहिए। (९) दिन में प्रत्येक समय, स्वर बदलने का जितना ही अधिक अभ्यास बढ़ाया जाय तो, चिर-यौवन रह सकता है। (१०) शीत रोगों की औषधि, दक्षिणस्वर में तथा उष्णरोगों की औषधि, वामस्वर में सेवन करना चाहिए।

दीर्घायु का उपाय

प्रायः श्वास की साधारण गति का प्रमाण, बाहर आते हुए १२ अंगुल तथा अन्दर जाते हुए १० अंगुल होता है और इस क्रिया में ४ सेकेण्ड का समय लगता है। इस गति का प्रमाण, कम करने से मनुष्य, दीर्घायु-भोगी हो सकता है। धातुदौर्बल्य आदि रोग वाले की श्वास गति का प्रमाण अधिक तथा समय कम लगता है। श्वास-गति, (१) गायन काल में १६ अंगुल (२) भोजन काल में २० अंगुल (३) गमन काल में २४ अंगुल (४) शयन काल में ३० अंगुल (५) मैथुन काल में ३६ अंगुल (६) व्यायाम आदि श्रम-काल में, और भी अधिक प्रमाण बढ़ जाता है। यदि, १२ अंगुल से घटाकर श्वास-गति, ११ कर ले तो, स्थिर-प्राण १० में महानन्द की प्राप्ति, ९ में कवित्व-शक्ति, ८ में वाक्सिद्धि, ७ में दूर-दृष्टि, ६ में आकाश-गमन, ५ में प्रचण्ड वेग, ४ में अष्टसिद्धि, ३ में नवनिधि, २ में रूप-परिवर्तन, १ में अदृश्य होने की शक्ति तथा नखाग्र-सम श्वास-गति हो जाय तो, अमर हो सकता है।

स्वर से प्रश्न

(१) कार्य, सिद्ध होगा ? प्रश्न में यदि, वामस्वर के पृथ्वी-जल तत्त्व का उदय हो तो, कार्य सफल होगा। अग्नि, वायु, आकाश तत्त्व में, कार्य असफल होगा।

(२) यदि प्रश्न-कर्ता, उत्तर-दाता के दाहिनी ओर बैठकर, प्रश्न करे और उस समय उत्तर-दाता का वामस्वर हो तो, कार्य असफल होगा। दक्षिणस्वर हो तो, कार्य सफल होगा।

(३) उत्तर दाता के स्वर की ओर बैठकर प्रश्न-कर्ता प्रश्न करे तो, उसका कार्य सफल होगा।

(४) यदि वामस्वर हो और प्रश्न-कर्ता, ऊपर से, सामने से, बायीं ओर से, प्रश्न करे तो, कार्य सफल होगा।

(५) यदि प्रश्न-कर्ता, बायीं ओर से आकर, दाहिनी ओर बैठकर, प्रश्न करे और उत्तर-दाता का वामस्वर हो तो, कार्य का विनाश होगा।

(६) पूर्वोक्त जो, ५ प्रश्नोत्तर बताये गये हैं वे, उत्तर-दाता के वामस्वर के आधार पर हैं। यदि उत्तर-दाता का दक्षिणस्वर हो तो, जहाँ वाम है, वहाँ दक्षिण समझकर, उत्तर, ज्यों के त्यों दिये जा सकते हैं।

(७) प्रश्न-कर्ता, जिस ओर आकर बैठे, उसी ओर का स्वर, यदि उत्तर-दाता का हो तो, कार्य-सिद्धि होती है। परन्तु पृथ्वी या जल तत्त्व का होना, आवश्यक है।

(८) रोग-प्रश्न, बायीं ओर से किया जाय और उत्तर-दाता का दक्षिणस्वर हो तो, रोगी का विनाश होता है। इसमें यदि वामस्वर हो और पृथ्वी तत्त्व हो तो, रोगी, एक मास में स्वस्थ हो जायगा। सुषुम्णा स्वर हो, गुरुवार और वायु-तत्त्व हो तो, रोगी स्वस्थ हो जायगा। सुषुम्णास्वर हो, शनिवार और आकाश-तत्त्व हो तो, रोगी की मृत्यु हो जाना, सम्भव है।

स्वर से गर्भ-प्रश्न

(१) वन्द स्वर की ओर से, प्रश्न किया जाय तो, गर्भ है, समझना चाहिए; अन्यथा नहीं। (२) यदि, प्रश्न-कर्ता का वाम स्वर हो और उत्तर-दाता का दक्षिणस्वर हो तो, पुत्र की अल्पायु समझना चाहिए। (३) यदि प्रश्न-कर्ता और उत्तर-दाता (दोनों) का दक्षिणस्वर हो तो, पुत्र की चिरायु समझना चाहिए। (४) प्रश्न-कर्ता का दक्षिणस्वर और उत्तर-दाता का वामस्वर हो तो, पुत्री की अल्पायु समझना चाहिए। (५) यदि, दोनों का वामस्वर हो तो, पुत्री की चिरायु होगी। (६) यदि, सुषुम्णा में प्रश्न किया जाय तो, गर्भपात या मातृकष्ट होगा। (७) यदि गर्भ-प्रश्न के समय, आकाश-तत्त्व हो तो, गर्भपात होगा।

स्वर से प्रवासी-प्रश्न

(१) प्रश्न-समय, वामस्वर में, पृथ्वीतत्त्व हो तो, प्रवास में कुशलता; (२) जलतत्त्व हो तो, मार्ग में पानी की बाढ़; (३) अग्नितत्त्व हो तो, प्रवास में कष्ट; (४) वायुतत्त्व हो तो, प्रवासी, आगे चला गया है; (५) आकाशतत्त्व हो तो, प्रवासी, रोगी हो गया है। (६) सुषुम्णा और आकाश-पृथ्वी का संगम हो तो, प्रवासी की मृत्यु। (७) दक्षिणस्वर में, पृथ्वीतत्त्व हो तो, प्रवासी, परदेश में स्थिर है; (८) जलतत्त्व हो तो, प्रवासी, सुखी; (९) अग्नितत्त्व हो तो, प्रवासी, रोगादि कष्टों से मुक्त है। (१०) वायुतत्त्व हो तो, प्रवासी, अन्यत्र चला गया है; (११) आकाशतत्त्व हो तो, प्रवासी की मृत्यु हो चुकी, समझना चाहिए।

स्वर से युद्ध-प्रश्न

यदि, प्रश्न-कर्ता और उत्तर-दाता के विपरीत स्वर हों तो, पृथ्वीतत्त्व में पेट में घाव, जलतत्त्व में पैर में घाव, अग्नितत्त्व में छाती में घाव, वायुतत्त्व में जाँघ में घाव, आकाशतत्त्व में मस्तक में घाव लगा, समझना चाहिए। सुषुम्णा में प्रश्न हो तो उसे, मृत्यु या वन्धन में समझना चाहिए। यदि प्रश्न-कर्ता और उत्तर-दाता का एक ही स्वर हो तो, कुशलता समझना चाहिए।

स्वर का तत्त्व-ज्ञान

[क] अभ्यास के बाद, मुख-स्वाद से, तत्त्व-ज्ञान किया जा सकता है। पृथ्वी का मधुर, जल का कसेला, अग्नि का तीखा, वायु का खट्टा और आकाश का कटु स्वाद होता है। लवण, पंचतत्त्वात्मक होता है।

[ख] दोनों हाथों के दोनों अँगूठों से, दोनों कानों के छिद्र, दोनों तर्जनियों से दोनों आँखें, दोनों मध्यमाओं से दोनों नासिका-छिद्र, दोनों अनामिकाओं तथा कनिष्ठाओं से मुख वन्द करने पर, यदि पीला रंग दिखे तो, पृथ्वीतत्त्व की, श्वेतरंग से जलतत्त्व की, लालरंग से अग्नितत्त्व की, हरे या मेघरंग (काले) से वायुतत्त्व की और रंग-विरंग से आकाशतत्त्व की, उपस्थिति समझना चाहिए।

भोजन करना चाहिए और भोजन के पश्चात् १५-२० मिनट, बायीं करवट लेटने से अपेक्षाकृत, शीघ्र लाभ होगा। पुराना अपचन मिटाने के लिए, नित्य १०-१५ मिनट तक पद्मासन में बैठकर, नाभि पर दृष्टि-स्थिर रखने से, एक सप्ताह में आशातीत लाभ होता है। (५) दाँत का दुखना या हिलना, शौच तथा पेशाब के समय, दाँत पर दाँत रखकर, जोर से दबाये रखना चाहिए। (६) छाती-पीठ-कमर-पेट आदि की पीड़ा में, जो स्वर चल रहा हो, उसे एकदम बन्द कर देना चाहिए अर्थात् रुई भी लगाइए और करवट भी बनाकर लेटिए। (७) दमा, इसका जब दौरा हो और श्वास फूलने लगे, तब जो स्वर चलता हो, उसे बन्द कर देना चाहिए। १०-१५ मिनट में लाभ हो जायगा। इस रोग को जड़ से विनाश करने के लिए, लगातार एक मास तक, चलते हुए स्वर को बन्द करके, दूसरा चलाने का अभ्यास, नित्यप्रति जितना अधिक हो सके, उतना अधिक करते रहने से दमा नष्ट हो जाता है। जितना शीघ्र अभ्यास बढ़ेगा, उतना ही शीघ्र लाभ होगा। (८) परिश्रम की थकावट को दूर करने के लिए या धूप की गरमी को शान्त करने के लिए, थोड़ी देर तक, दाहिनी करवट से लेटकर, दाहिने स्वर को जाग्रत करना चाहिए। (९) दिन में प्रत्येक समय, स्वर बदलने का जितना ही अधिक अभ्यास बढ़ाया जाय तो, चिर-यौवन रह सकता है। (१०) शीत रोगों की औषधि, दक्षिणस्वर में तथा उष्णरोगों की औषधि, वामस्वर में सेवन करना चाहिए।

दीर्घायु का उपाय

प्रायः श्वास की साधारण गति का प्रमाण, बाहर आते हुए १२ अंगुल तथा अन्दर जाते हुए १० अंगुल होता है और इस क्रिया में ४ सेकेण्ड का समय लगता है। इस गति का प्रमाण, कम करने से मनुष्य, दीर्घायु-भोगी हो सकता है। धातुदौर्बल्य आदि रोग वाले की श्वास गति का प्रमाण अधिक तथा समय कम लगता है। श्वास-गति, (१) गायन काल में १६ अंगुल (२) भोजन काल में २० अंगुल (३) गमन काल में २४ अंगुल (४) शयन काल में ३० अंगुल (५) मैथुन काल में ३६ अंगुल (६) व्यायाम आदि श्रम-काल में, और भी अधिक प्रमाण बढ़ जाता है। यदि, १२ अंगुल से घटाकर श्वास-गति, ११ कर ले तो, स्थिर प्राण १० में महानन्द की प्राप्ति, ९ में कवित्व-शक्ति, ८ में वाक्सिद्धि, ७ में दूर-दृष्टि, ६ में आकाश-गमन, ५ में प्रचण्ड वेग, ४ में अष्टसिद्धि, ३ में नवनिधि, २ में रूप-परिवर्तन, १ में अदृश्य होने की शक्ति तथा नखाग्र-सम श्वास-गति हो जाय तो, अमर हो सकता है।

स्वर से प्रश्न

(१) कार्य, सिद्ध होगा ? प्रश्न में यदि, वामस्वर के पृथ्वी-जल तत्त्व का उदय हो तो, कार्य सफल होगा। अग्नि, वायु, आकाश तत्त्व में, कार्य असफल होगा।

(२) यदि प्रश्न-कर्ता, उत्तर-दाता के दाहिनी ओर बैठकर, प्रश्न करे और उस समय उत्तर-दाता का वामस्वर हो तो, कार्य असफल होगा। दक्षिणस्वर हो तो, कार्य सफल होगा।

(३) उत्तर-दाता के स्वर की ओर बैठकर प्रश्न-कर्ता प्रश्न करे तो, उसका कार्य सफल होगा।

(४) यदि वामस्वर हो और प्रश्न-कर्ता, ऊपर से, सामने से, बायीं ओर से, प्रश्न करे तो, कार्य सफल होगा।

(५) यदि प्रश्न-कर्ता, बायीं ओर से आकर, दाहिनी ओर बैठकर, प्रश्न करे और उत्तर-दाता का वामस्वर हो तो, कार्य का विनाश होगा।

(६) पूर्वोक्त जो, ५ प्रश्नोत्तर बताये गये हैं वे, उत्तर-दाता के वामस्वर के आधार पर हैं। यदि उत्तर-दाता का दक्षिणस्वर हो तो, जहाँ वाम है, वहाँ दक्षिण समझकर, उत्तर, ज्यों के त्यों दिये जा सकते हैं।

(७) प्रश्न-कर्ता, जिस ओर आकर बैठे, उसी ओर का स्वर, यदि उत्तर-दाता का हो तो, कार्य-सिद्धि होती है। परन्तु पृथ्वी या जल तत्त्व का होना, आवश्यक है।

(८) रोग-प्रश्न, बायीं ओर से किया जाय और उत्तर-दाता का दक्षिणस्वर हो तो, रोगी का विनाश होता है। इसमें यदि वामस्वर हो और पृथ्वी तत्त्व हो तो, रोगी, एक मास में स्वस्थ हो जायगा। सुषुम्णा स्वर हो, गुरुवार और वायु-तत्त्व हो तो, रोगी स्वस्थ हो जायगा। सुषुम्णास्वर हो, शनिवार और आकाश-तत्त्व हो तो, रोगी की मृत्यु हो जाना, सम्भव है।

स्वर से गर्भ-प्रश्न

(१) बन्द स्वर की ओर से, प्रश्न किया जाय तो, गर्भ है, समझना चाहिए; अन्यथा नहीं। (२) यदि, प्रश्न-कर्ता का वाम स्वर हो और उत्तर-दाता का दक्षिणस्वर हो तो, पुत्र की अल्पायु समझना चाहिए। (३) यदि प्रश्न-कर्ता और उत्तर-दाता (दोनों) का दक्षिणस्वर हो तो, पुत्र की चिरायु समझना चाहिए। (४) प्रश्न-कर्ता का दक्षिणस्वर और उत्तर-दाता का वामस्वर हो तो, पुत्री की अल्पायु समझना चाहिए। (५) यदि, दोनों का वामस्वर हो तो, पुत्री की चिरायु होगी। (६) यदि, सुषुम्णा में प्रश्न किया जाय तो, गर्भपात या मातृकष्ट होगा। (७) यदि गर्भ-प्रश्न के समय, आकाश-तत्त्व हो तो, गर्भपात होगा।

स्वर से प्रवासी-प्रश्न

(१) प्रश्न-समय, वामस्वर में, पृथ्वीतत्त्व हो तो, प्रवास में कुशलता; (२) जलतत्त्व हो तो, मार्ग में पानी की बाढ़; (३) अग्नितत्त्व हो तो, प्रवास में कष्ट; (४) वायुतत्त्व हो तो, प्रवासी, आगे चला गया है; (५) आकाशतत्त्व हो तो, प्रवासी, रोगी हो गया है। (६) सुषुम्णा और आकाश-पृथ्वी का संगम हो तो, प्रवासी की मृत्यु। (७) दक्षिणस्वर में, पृथ्वीतत्त्व हो तो, प्रवासी, परदेश में स्थिर है; (८) जलतत्त्व हो तो, प्रवासी, सुखी; (६) अग्नितत्त्व हो तो, प्रवासी, रोगादि कष्टों से मुक्त है। (१०) वायुतत्त्व हो तो, प्रवासी, अन्यत्र चला गया है; (११) आकाशतत्त्व हो तो, प्रवासी की मृत्यु हो चुकी, समझना चाहिए।

स्वर से युद्ध-प्रश्न

यदि, प्रश्न-कर्ता और उत्तर-दाता के विपरीत स्वर हों तो, पृथ्वीतत्त्व में पेट में घाव, जलतत्त्व में पैर में घाव, अग्नितत्त्व में छाती में घाव, वायुतत्त्व में जाँघ में घाव, आकाशतत्त्व में मस्तक में घाव लगा, समझना चाहिए। सुषुम्णा में प्रश्न हो तो उसे, मृत्यु या बन्धन में समझना चाहिए। यदि प्रश्न-कर्ता और उत्तर-दाता का एक ही स्वर हो तो, कुशलता समझना चाहिए।

स्वर का तत्त्व-ज्ञान

[क] अभ्यास के बाद, मुख-स्वाद से, तत्त्व-ज्ञान किया जा सकता है। पृथ्वी का मधुर, जल का कसेला, अग्नि का तीखा, वायु का खट्टा और आकाश का कटु स्वाद होता है। लवण, पंचतत्त्वात्मक होता है।

[ख] दोनों हाथों के दोनों अँगूठों से, दोनों कानों के छिद्र, दोनों तर्जनियों से दोनों आँखें, दोनों मध्यमाओं से दोनों नासिका-छिद्र, दोनों अनामिकाओं तथा कनिष्ठाओं से मुख बन्द करने पर, यदि पीला रंग दिखे तो, पृथ्वीतत्त्व की, श्वेतरंग से जलतत्त्व की, लालरंग से अग्नितत्त्व की, हरे या मेघरंग (काले) से वायुतत्त्व की और रंग-विरंग से आकाशतत्त्व की, उपस्थिति समझना चाहिए।

प्रसादाद्विश्व-निर्मातुः कृपालोज्योतिषात्मनः ।
गुणीनां गणनारम्भे गरिमद्गगनोच्चगे ॥

देवेज्यनासरे कामे, शुक्ले फाल्गुन-मासिके ।
गतौ दक्षिणतोऽङ्कानां नख-चन्द्र-त्रि-विक्रमे ॥

इन्द्र—धातृ—भग-त्वष्टृ-मित्रावरुण—अर्यमन् ।
विवस्वत् सवितृ पूषन्-नंशुमद्विष्णु—रूपकः ॥

द्वादशादित्यसङ्क्राम्यो ग्रन्थो द्वादशवार्तिकः ।
जातकदीपको जातोऽशेषो वै शेष-शायिनम् ॥

नेहरू-मन्त्रिणे राज्ये भारते भारतीमुखे ।
मुकुन्दे कुन्द-माधुर्ये सुकृतैः प्रकटीकृते ॥

" जयतु जातक-दीपक "

—: आकांक्षा :—

[पं० श्री द्वारकाप्रसाद शास्त्री, जमुनिया, बरेला, जबलपुर]

आलोचक,

समालोचना चाहिए ।
प्रत्यालोचना के लिए, आप पर,
कोई प्रतिबन्ध नहीं । जिससे, उभय-लाभ
हो सके; उतने अक्षर (ब्रह्म), अवश्य उपयोग
कीजिए। पंच-तत्त्व निर्मित शरीर (ग्रन्थ) के लिए,
पंचगव्य, पंचामृत (दोनों ही) उपयोगी हैं। आवश्यक सब है;
किन्तु सबका लिखना, सदा साध्य नहीं । इसलिए, कुछ लिखा गया
है। व्यावहारिक परिचय, उत्तमांग (शिर) द्वारा, किया जा सकता है ।
भद्रा-ज्ञान, वर्जितविधानाश्रयी है । अमृतसिद्धि-ज्ञान, विहित-विधानाश्रयी है ।
बन्धन हेय, स्वतन्त्रता प्रिय होती है। जो कि, आपका आश्रय पाकर, मुखरित होगी ।
विराट् पुरुष की जीवन-शक्ति (सूर्य-तत्त्व) का परमाणु-वर्ष, कल्याणकारी बनाइए ।

आपका :—

'यथा-रुचि'

लेखक-परिचय

[श्री महेशप्रसाद धुराटिया (B. A.), साठिया कुआँ, जबलपुर]

प्रिय-बन्धु,

मुझे, यदि लेखक का शत्रु न माना जावे तो, मित्र, कैसे माना जा सकता है ? जबकि, इस लेख में, जो लिखा जा रहा है; वह सब इतना गुप्त था कि, पाँच लाख की जन-संख्या का यह नगर, जिसमें 'क्षिति-जल-पावक-गगन-समीरा' की इकाई का जन्तु हो,लेखककी उन सभी प्रमुख गुप्तबातोंकी जानकारी कर सका है;जिनका सम्बन्ध मुख्य लेखक से है। "आयुर्वित्तं गृहच्छिद्रं मन्त्रमैथुनभेषजम्। तपोदानापमानं च नव गोप्यानि यत्नतः॥" (पञ्चतन्त्र) अपना हो या पराया; किन्तु, आयु, धन, घर का भेद, मन्त्र, मैथुन, भेषज, तप, दान, अपमान आदि ६ विषयों को गुप्त रखना चाहिए।—जानकर भी, प्रकाश कर रहे हैं। फिर भी मुझे, मित्र-संख्या-वृद्धि का अर्थक समझा जावे,—निर्णय के लिए, पाठक की रुचि ही, विधान है।

लेखक के, आयु-विषय में, मैं चाहे कितना ही ठीक लिख सकूँ। किन्तु, स्वयं लेखक का नाम, उसकी आयुमान का बाधक बन कर, आगे, आड़े आ जाता है। अतएव, इसे केवल 'ग्रह × तत्त्व' समझिए। सीधी भाषा में, 'इसकी सम्पूर्ण आयु, ग्रहों के तत्त्व समझने में व्यय की गयी'—कहा जा सकता है। धन तो, 'विदुषां सारस्वतम्' रहता है। जिसमें, ज्योतिषी को तो, सभी का हर्मकोप देखना पड़ता है। जिसके उपलक्ष में, बीसवीं शताब्दी, श्रद्धा देती है और पारिश्रमिक, निराकार बैंकों में स्थायी कर देती है। इस लेखक में, सबसे बड़ा दुर्गुण यही है कि, उस भारी-भरकम प्राप्त श्रद्धा से, मासिक-व्यय का, अधूरा चित्र भी नहीं बना पाता। मन्त्र लेने के लिए, चेला तो, मिलते नहीं और गुरु से वो स्वयं, लेखक ही अध्ययन करता रहता है। मैथुन की बात बताने का, भला मुझे क्या अधिकार है ? उनके साथी से पूँछिए। भेषज पाने के लिए, गत १२ वर्ष से स्वयं ही पात्र बन चुका है; परन्तु, पित्त-भय से, पित्त में घुसा रहता है। तप तो, निश्चित ज्ञात है कि, कभी नहीं करते। सर्वदा वेद-वेदांग, लिखते-पढ़ते रहते हैं। जबकि, पृथ्वी को आवश्यक नहीं। दान तो, दे नहीं सकते। हाँ, ज्ञान-दान में चूकते नहीं। कहते हैं कि, ज्ञान-दान से, निश्चित मानव-योनि मिलती है। इसीलिए, लेखक को अभी, पशु-योनि में रहना पड़ रहा है; जिसमें, 'क्षुद्र-मात्र' हो जाना, आवश्यक रहता है। अपमान तो, हमारे द्वारा उनकी भाग्य में था, जिसे हम, अंकित कर ही रहे हैं। 'जो कि प्रमाणित रहे और समय पर सुनाय दे।' अस्तु।

सारांशतः आयु, धन, मन्त्र, मैथुन (पुत्र), भेषज, तप, दान आदि-स्वरूप, यह ग्रन्थ है। अब रह गया, सबसे अधिक गुप्त 'घर का भेद'। उसे ही तो, लिखने के लिए, मुझे भी लेखकावतार लेना पड़ा। लेखक का शरीर-निर्माण, कानपुर में हुआ। किन्तु जबलपुर में, शरीर-निर्माण के सिवाय, अन्य सब कुछ हुआ। इसी प्रकार अध्ययन भी, दोनों स्थानों में। नींव की ईंटें, प्रथम स्थान में एवं प्रत्यक्ष-भवन की ईंटें, द्वितीय स्थान में पकायी गयीं। ग्रन्थ के विषय में, इतना ही कहा जा सकता है कि, "इतनी सुस्पष्ट एवं परिशिष्ट की जोड़ कर, सुन्दर शृंखला, किसी ने नहीं बनायी थी, जिसके द्वारा सरलता से पुष्टता-युक्त, जन्म-पत्रिका की नींव रखी जा सके; और जातक के पक्ष, दीप-प्रकाशवत् (स्पष्ट) दृष्टि-पथ में आ सकें।"

घर का भेद

यह दो शाखाओं में है। भारतीय और अमेरिकन। भारतीय शाखा में लेखक है। (१) श्री पं० गयाप्रसाद त्रिपाठी (प्रथम) [आत्मज पृष्ठ ४४] (२) श्री पं० शिवदत्त जु त्रिपाठी [आत्मज] (३) श्री पं० मंगलप्रसाद त्रिपाठी। [आत्मज] [४] श्री पं० गयाप्रसाद त्रिपाठी (द्वितीय) (५) पं० श्री यमुनाप्रसाद त्रिपाठी (लेखक के ज्येष्ठ-भ्राता) (६) इन ज्येष्ठ की धर्मपत्नी, [illegible], [illegible], [illegible], [illegible] हैं, और लेखक की धर्मपत्नी, मनोरमा तथा विभा ([illegible]) हैं। [illegible], अपने

मातुल-गृह तिलशहरी (पृष्ठ ४४) में, नं० ५ के लेखक-युगुल-भ्राता, अपने मातुल-गृह, मन्धना (पृष्ठ ५६) में, नं ६ के ज्येष्ठज-जात, तिलशहरी में और लेखक-जात, अपने मातुल-गृह (बारी-भीतरगाँव, कानपुर) में अवतरित हुए। पूर्वोक्त सभी प्राणी, एक मात्र, संस्कृत-विद्याध्यायी, सुसंस्कृत बने। लेखक को आनुवंशिक-शक्ति (Atavism-Power) से वेद, व्याकरण, ज्योतिष, पुराण, तन्त्र, साहित्य, कर्मकाण्ड आदि का ज्ञान, गर्भस्थ-काल में मिला। जिनका विकाश, जबलपुर में हुआ। इनमें से, लेखक के मस्तिष्क में, ज्योतिष और इतिहास (पुराण), अधिक भर गया। ज्योतिष के कुछ कण, अपने मातामह के निराकार-शरीर (मातृ-शक्ति) से भी प्राप्त हुए। [इस ग्रन्थ में, ज्योतिष के बाद, इतिहास का भी उल्लेख है]

अमेरिकन शाखा में, श्री पं० मंगलप्रसाद त्रिपाठी के भतीजे, श्री पं० चन्द्रशेखर शर्मा, आर्य थे। इनका आद्यन्त विन्दु-स्थल, जाजमऊ है। यथा-ज्ञात, इनकी सन्ततियाँ (१) सावित्री, जिनका सतत-संगी, पं० श्री रामनारायणप्रसाद R. N. Prasad हैं—(इसमें प्रसाद की स्पेलिंग, भारतीय उच्चारण के आधार पर है) इनकी कृति, नार्थ अमेरिका से प्रिण्ट, इंगलिश भाषा में, सत्यनारायण-कथा, लेखक के पास है। (२) पं० श्री परमानन्द शर्मा (लेखक से, एक वर्ष ज्येष्ठ)। (३) पं० श्री रेवतीरमण शर्मा (लेखक का अनुज)। (४) अज्ञात-नाम, किन्तु इसकी, युगुल-मूर्ति (रेवतीरमण की बहिन तथा बहनोई) का छाया-चित्र (Photo), लेखक के पास है। लेखक, अपने अमेरिकन चाचा की कुछ वस्तुएँ, पासपोर्ट (Passport), २ डिक्सनरी बुक, एक गणित-ज्योतिष-ग्रन्थ (सूर्यसिद्धान्त) के साथ, उनकी धार्मिक-संस्कृति (भारतीय आर्य-समाज एवं कांग्रेस द्वारा सुधार-धर्म) भी रखता है। इससे पता चलता है कि, इन दोनों शाखाओं में, केवल भारतीय-रक्त है। व्यावहारिक में, दैशिक-वातावरण का प्रयोग, सभी को करना ही पड़ता है। उतनी दूर होने पर भी, उनकी भारतीय संस्कृति, केवल उनके नामों द्वारा स्पष्ट हो रही है [अन्यथा मिस्टर Greatest-Pleasure सरीखा, कोई क्राइस्ट-नेम होता जबकि, यह लेखक मुझ सरीखे मार्कण्डेय का आराध्य-विन्दु हो चुका है]

लेखक की स्मृतियाँ

"बीते हुए सुखों का स्मरण करना, दुःख-कारण है। किन्तु, बीते हुए दुःखों का स्मरण करना, सुख-मूल है।" ऐसा मनोविज्ञान का मत है। ता० १८।७।१८७६ ई० को चाचा चन्द्रशेखर का जन्म। १८८२ ई० में श्री पं. गयाप्रसाद त्रिपाठी (द्वितीय या लेखक-पिता) का जन्म। १८६३ ई० में, चाचा चन्द्रशेखर, भारत छोड़कर, दक्षिणी अफ्रीका (डमरा देश) गये। [गये नहीं, हठात् जाना पड़ा। 'स्वकर्मसूत्रे ग्रथितो हि लोकः।'] १८६६ ई० में युक्ति-द्वारा, डमरा देश से ब्रिटिश-गयाना पहुँच गये। वहाँ समय आने पर, एक सारस्वत-कन्या से विवाह एवं सन्तानादि हुए। 'सूर्योदय' नामक, एक मासिक-पत्र निकाला। 'ईश्वर-सन्तति को ढाई वर्ष का नरक' नामक एक पुस्तक भी लिखा [यह नरक, वैरिस्टर गान्धी (१८६३-१८६६ ई०) के अफ्रीका-स्थल हैं] वहाँ, क्राइस्ट मत का खण्डन कर, आर्य-मत तथा हिन्दी-भाषा का प्रचार, आजीवन करते रहे थे। १८६८ ई० में, मन्धना-निवासी श्री पं० भानुप्रताप अवस्थी की ज्येष्ठ-पुत्री (प्रथम-सन्तति) जानकी देवी, लेखक के पैतृक-गृह को पुष्पित किया [समय आने पर, अपने एक कण से इन्होंने, इस ग्रन्थकार का शरीर बना दिया]। ई० १८६६-१६०० के मध्य श्री पं० मंगलप्रसाद त्रिपाठी (लेखक-पितामह) और श्री पं० भानुप्रताप अवस्थी (लेखक-मातामह) की मृत्यु हो गयी। १६०२ ई० में, चाचा चन्द्रशेखर का प्रथम पत्र (जाने के ६ वर्ष बाद) अपने चाचा [स्व० पं० मंगलप्रसाद] के नाम, तिलशहरी आया। फलतः वह पत्र, लेखक-पिता के हस्ताग्र हुआ। ता० २६।७।१६०४ को पं० यमुनाप्रसाद त्रिपाठी का जन्म। १६१० ई० में पं० श्री परमानन्द का अमेरिका में जन्म हुआ।

ता० १६।७।१६११ में, इस लेखक का जन्म हुआ। ता० १४।८।१६११ को, १८ वर्ष बाद, चाचा चन्द्रशेखर भारत आकर, अपने चचेरे छोटे भाई (लेखक-पिता) से तिलशहरी में मिले। तब, लेखक-पिता ने कहा था कि, "भरत-मिलाप तो १४ वर्ष में हुआ था। किन्तु, मेरा भ्रातृ-मिलाप, १८ वर्ष में हुआ।" ता० १५।८।१६११ ई० को, लेखक की मूल-(अश्विनी) शान्ति के दिन (लेखक की २७ दिनायु) में, चाचा

चन्द्रशेखर की गोदी में, लेखक को लिटा दिया गया था। तब, चाचा को कहना पड़ा था कि, 'एक वर्षीय, एक बालक (परमानन्द) ने, मुझे, अपने देश (अमेरिका) से निकाल दिया और इस बालक (बालमुकुन्द) ने मुझे, अपने देश (भारत) मे खींचकर बुला लिया। इसलिए यह बालक, "बहुत अच्छा" है।' ई० १६१२ मार्च में, चाचा चन्द्रशेखर ने, पुनः अमेरिका के लिए, प्रस्थान कर, कलकत्ता पहुँच जहाज की प्रतीक्षा में ही थे कि, इधर १०।४।१६१२ ई० को लेखक-माता की मृत्यु और ११।४।१६१२ ई० को लेखक-पितामही की मृत्यु हो गयी। जिसकी सूचना पहुँचने के दो दिन पूर्व उन्हें लेकर, उनका जहाज कलकत्ता छोड़ चुका था। अघटनघटनावश, लेखक-शरीर के पालन का भार, लेखक-मातामही को उठाना पड़ा, जिसमें उन्हें, अत्यन्त कठिनता भोगनी पड़ी थी। ई० १६१६ मे लेखक-विमाता का आगमन हुआ [जो कि, अभी विद्यमान हैं]। १६२७ ई० मे लेखक (भारत) का, चाचा (अमेरिका) से प्रथम पत्र-व्यवहार हुआ। ता० १४।४।१६२८ ई० को लेखक-पिता की मृत्यु हो गयी। ता० ३०।४।१६२८ ई० को लेखक का प्रथम विवाह, दीपापुर, नर्वल, कानपुर निवासी प० श्री रामलाल अवस्थी की पुत्री (प्रथम सन्तति) से हुआ। लेखक, अपने उस संगी को 'राम' कहता था। इस समय लेखक, अत्यन्त अस्त-व्यस्त था। ता० २६।४।१६३२ ई० को लेखक का प्रवासारम्भ, जबलपुर मे हुआ। इसी यात्रा में लेखक, दो मास में ३०० मील की पदाति-यात्रा करके आया था। जिसे लेखक, सर्वदा भूलने का प्रयत्न करता रहता है। ता० १२।५।१६३२ ई० से जबलपुरीय कर्मवीर-प्रेस मे कार्यारम्भ किया और वहीं १६३३ ई० से विक्रम-विजय-पंचाग का सम्पादन किया।

१६३५ ई० में लेखक-मातामही की मृत्यु हो गयी। १६३६ ई० मे चाचा चन्द्रशेखर ने, ब्रिटिश-गयाना से द्वितीय बार भारत के लिए प्रस्थान किया [ता० २५।८।१६३८ ई० का कलकत्ता द्वारा प्राप्त, चाचा चन्द्रशेखर का पासपोर्ट है] ता० ८।६।१६३८ ई० को लेखक-पत्नी की मृत्यु हो गयी [किन्तु, लेखक को अभी तक, चाचा-दर्शन नहीं हुआ था] ता० ७।२।१६३६ ई० को, लेखक की २७ दिनायु वाली स्मृति जगाने के लिए आर्य-चाचा, लेखक के पास, तिलशहरी पहुँचे। तब उनके चरणों में शिर रखकर लेखक ने कहा था कि, "मेरे पिता, स्वर्ग से पुनः आगये।"—सुनकर, चाचा 'आर्द्र' हो गये थे (आर्द्र = State of Being Piteous)। घण्टे दो घण्टे वार्तालाप के बाद उन्हें, ज्ञात हो गया कि, उनका लघु-भतीजा (लेखक), उच्च-गणना-योग्य है। ता० ७।५।१६३६ ई० में (लेखक के द्वितीय विवाह अवसर मे) आर्य चाचा चन्द्रशेखर ने, अपने अलौकिक आनन्द का 'यज्ञ' कर दिया था। लेखक, अपनी इस वर्तमान संगिनी [बारी-भीतरगाँव, कानपुर निवासी पं० श्री ब्रह्मादीन पाण्डेय की प्रिय-पुत्री] को 'भगवान' कहता है। किन्तु वे, लेखक को 'भगवान्' समझती हैं। ता० १८।८।१६३६ को लेखक, अपने सम्पादकी कार्य के लिए, जबलपुर चला आया इसी वर्ष में बाराणसीय ज्योतिष-शास्त्री की परीक्षा भी, लेखक ने दिया, जिसमें, उत्तीर्ण भी हुआ। इसी वर्ष मे 'ज्योतिर्विवेक-रत्नाकर' नामक ज्योतिष ग्रन्थ (५०० पृष्ठीय ५ × ७ इंच) लिखा। प्रकाशित भी हुआ। किन्तु, पारिश्रमिक-दाता (प्रकाशक) की 'वदामि तु ददामि नो।' वाली नीति के कारण, ६ वर्ष अवैतनिक कार्य करने के पश्चात्, मई १६४१ ई० में, लेखक, जबलपुर छोड़कर, नर्मदा-दक्षिण-भारत-भाग की यात्रा के लिए, वैरग चल दिया। दिसम्बर १६४१ में, जबलपुर के कर्मवीर-प्रेस अधिपति पं० लक्ष्मीप्रसाद पाठक की मृत्यु हो गयी। फलतः आज वहाँ की सारी व्यवस्था छिन्न भिन्न हो गयी है। ता० २५।४।१६४४ ई० को 'लेखक, जबलपुर आया और प्रसंगवश (पूर्व परिचित, कर्मवीर प्रेस के, एक कम्पोजीटर छेदीलाल द्वारा) इस ग्रन्थ के प्रकाशक महोदय से मिला। बहुत शीघ्र उपयोगी वार्तालाप हुआ और ५ मिनट बाद, लेखक को 'भुवन-मार्तण्ड-पचांग' की निर्माण-योजना मे लग जाना पड़ा। जो कि, आज भी करते चले जा रहे हैं।

ता० १५।६।१६३६ को जबलपुर में, लेखक ने, अपने विदेशीय, भारतीय-संस्कृति-युक्त, चाचा चन्द्रशेखर के अन्तिम पत्र का दर्शन किया। जिसमें, लेखक-ज्येष्ठज प० श्री परमानन्द की सूचना के साथ, चाचा का मन्तव्य था कि, "७१ गाँव के सिवाय, ६४ गाँव के निर्माण में, अभी (परमानन्द को), ५०० + ३०० डालर (भारतीय साढ़े तीन रुपये के समान, अमेरिकन सिक्का) व्यय करना, आवश्यक है। तदुपरान्त ३००

डालर भेजेंगे। तब, हम (चन्द्रशेखर) और तुम (बालमुकुन्द) अमेरिका चलेंगे।" किन्तु, दिसम्बर १६३६ ई० में आर्य चाचा, अपने जाजमऊ में, जान्हवी-ज्योति हो गये। फलतः लेखक-ज्येष्ठज पं० श्री यमुनाप्रसाद त्रिपाठी द्वारा सूचना पाकर ता० २२।४।१६४० ई० का प्रेषित-परमानन्द-पत्र, अमेरिका से चलकर ता० ११।७।१६४० ई० में, लेखक को (कानपुर में) हस्तगत हुआ। "From:—Pn. Chandrashekhar Sharma, Importer of Indian Goods, 64 Village (P. O. Benab) Corentyne, Berbice, British-Guiana (S. A.)। सेवा में—पं० श्री यमुनाप्रसाद बालमुकुन्द त्रिपाठी, तिलशहरी, कानपुर, भारत।" लेखक को, इस पत्र की सबसे अधिक मर्मीली स्मृति, प्रो. पं० श्री भास्करानन्द शर्मा (आर्य M. A. B. L. व्यास) के तत्त्वावधान में, पं० श्री परमानन्द शर्मा द्वारा आयोजित, चतुर्वेदीय-यज्ञ (पितृ-श्राद्ध = The Obsequial Ceremony of A Father) में पठित, १६-१२ मात्रा वाले हर-गीतिका के चार छन्द हैं। [त्रुटियों के लिए क्षमा-याचना…………।]

'महेश'

श्री चन्द्रशेखर आर्य, जो थे, वेद-धर्मी, बंकटी,
बर्बिस जनों की मण्डली में, पोप-जन के संकटी।

जब, वर्ण ब्राह्मण का छिपाकर, बन 'कुली' मति-भ्रान्ति से,
नरक, डमरा-देश काटे, वर्ष ढाई क्रान्ति से ॥१॥

फिर बुद्धि-कौशल से गयाना-ब्रिटिश के सुख-योग से,
दो बार भारत में पधारे, पूर्व के संयोग से।

थे अटल-धार्मिक, वेद के सब, कर्म को करते रहे,
जो आप लोगों के दिलों में, सर्वदा भरते रहे ॥२॥

जब ईसवी के वर्ष छत्तिस, हो विदा, प्रिय-वर्ग से,
सब छोड़, पुत्री, पुत्र अपने, भारती-उत्सर्ग से।

सन्यास लेकर देश भारत, जाय गंगा-तीर में,
दे भस्म अन्तिम देह डाली 'वैदिकी' शुभ-नीर में ॥३॥

है ईश से विनती हमारी, इस पिता के कर्म से,
'हो सद्गमन उनका' हमारे, शान्ति, आत्मिक धर्म से।

ये भिन्न-संगी, बन्धु उनके, 'अब गये' जो छोड़ के,
सब सौख्य 'परमानन्द' पावें, भिन्नता को जोड़ के ॥४॥

'संकलन-कर्ता'

-ः पं० श्री जवाहरलाल नेहरू ः-

[प्रधान–मन्त्री, भारत]

ता० १४।११।१८८६ ई० टाइम १।५ ए. एम. (प्रयाग) गुरुवार [कहीं पर इष्ट ४१।३८।३० होने से, कर्क लग्न का जन्म वताया गया है (सूर्य ६।२६।५४) कहीं सूर्य भी वृश्चिक का आ गया है] राहु महादशा ता० २५।११।१९५१ ई० से ता० २५।११।१९६६ ई० तक रहेगी। जन्म–चक्र का राहु २।१२ [आर्द्रा में राहु]। श्लेषा के द्वितीय चरण मे जन्म। इनका बुध, स्वाती मे होने से 'बुधान्तर' रोग कारक रहेगा।

इनका राहु, आर्द्रा नक्षत्र मे है अर्थात् राहु, अपनी दशा में होने से योगी (राजा) वनाता है [पृष्ठ ४३१ ॐ चक्र]। सिंह लग्न में जन्म होने से त्रेतायुगीय जातक है। त्रिकोणेश, गुरु की पूर्ण-दृष्टि, राहु पर है। लाभस्थ मिथुन (उच्चस्थ) मे राहु, अपनी दशा मे, गुरु से दृष्ट है। अतएव सर्वोत्कृष्ट उन्नति की महादशा राहु की है ही, साथ ही प्रत्यक्ष प्रमाण–दायक, उनका पद–कार्य है। कान्फ्रेंस पद में देखिए तो, ज्ञात होगा कि, बुध के समक्ष चन्द्र–मंगल है। और राहु के समक्ष केतु, होता ही है। आयु–ज्ञान पद से ज्ञात होता है कि, श्लेषा (बुध–दशा) मे जन्म होने से, चन्द्र–मंगल की दशान्तर्दशाएँ, आयु–वाधक होती हैं। एक विशेष बात है कि, यदि लग्न मे चन्द्र होता तो, ऐसा स्वास्थ्य मिलना कठिन था। किन्तु लग्नस्थ शनि ने इन्हे, स्वास्थ्य और आयु (दोनों) दिया। ता० २५।५।६२ से १३।६।६३ तक राहु मे केतु अन्तर, (कालसर्पयोग के कारण) तथा ता० ७।५।६७ से २५।११।१९६६ तक (राहु के चन्द्र-मगलान्तर) मे, इनके स्वास्थ्य का प्रतिकूल वातावरण रहेगा। तथ्यतः ऐसे जीव, अमर होते हैं। केवल भीष्म-पितामह की भाँति, इच्छानुसार शरीर–त्याग करते हैं। इनका चन्द्रमा, बुध दशा मे है तो चन्द्र की आत्मा (Soul) हुआ बुध। और बुध है स्वाती (राहु दशा) मे; अतएव चन्द्र का शरीर (Body) हुआ राहु। राहु-चन्द्र का दशान्तर्दशा सम्बन्ध-काल, शरीर-त्याग की अनुकूलता ला देता है। जिसकी प्रतीक्षा, कोई भारतीय नहीं करना चाहता। शुभम्।

'संकलन–कर्ता'